



ΙΩΑΝΝΟΥ ΣΤΟΒΑΙΟΥ
ΑΝΘΟΛΟΓΙΟΝ

IOANNIS STOBAEI
FLORILEGIUM

RECOGNOVIT

AUGUSTUS MEINEKE

VOL. I.





LIPSIAE

SUMPTIBUS ET TYPIS B. G. TEUBNERI

MDCCCLV.

DISCREPANTIA LECTIONIS A TEXTU GAISFORDI.



P. 1, 11. *Τημενιδῶν*] *Τημενίδων*

P. 2, 6. *ἀσφαλείας*] *εὐγενείας* ex Orione 8. *λειουμένη*] *τελουμένη* ex Orione, Christianus Wordsworth ad Theocritum p. 36 *μειουμένη*. vera scriptura adhuc latet 10. *καλὸν*] malim *καλῶν* 11. *Εὐριπίδου Ἀντιόπη*] *Εὐριπίδου Ἡρακλείδαις* cod. A. excidit fortasse Heraclidarum vs. 625. *ἁ δ' ἀρετὰ βαίνει διὰ μόχθων* 12. *τὰς δὲ χρή σ' ἀσκεῖν*] *τὰς χρή σ' ἀσκεῖν* cod. A. correxit G. Dindorfius 16—18. Gesnerus addidit ex Tit. CVIII, 25 20—29. haec Gesnerum e Gnomologio addidisse intellexit Gaisfordus; corruptos hic illic versus, facile emendandos, intactos reliqui

P. 3, 1. *Ἀνανέωσις*] *Ἀνανεούσῃ* posui, quo ducit m. Gesneri *in Ananeusa*, Schowius *ἐν Ἀνανεούσᾳ*, cod. Ven. a Kirchhoffio inspectus *Ἀνανεούσης*. verum videri *Ἀνανέωσις*, quod Gaisfordus edidit, monstrare conatus sum Hist. crit. com. p. 472 2. *ὅταν*] *ὅταν δ'* 8. *δὲ ἐθίζεο*] imo *δ' εἰθίζεο* 13. *μήτ' ἀλογίστως*] malim *μηδ' ἀλογίστως* 16—32. e Gnomologio addidit Gesnerus, Aristotelis hymnum e Diogene Laertio

P. 4, 18. **φρόνησις**] **ἡ φρόνησις** e Barocc. 19. **ἀνδρεία**] cod. A **ἀνδρία**, quam formam a codd. oblatam ubique revocavi 21. **ἡ** accessit e Barocc.

P. 5, 2. **φόβων**] excidisse videtur **καὶ μάλιστα** 7. **τὰς ἐπιθυμίας ὁρμώσας**] **τὴν ἐπιθυμίαν ὁρμῶσαν** ex A et Barocc. 9. **ψυχῆς,**] dele comma 11. **τῆς ψυχῆς**] **ψυχῆς** ex Barocc. 14. **ἢ δυστυχίαν**] **καὶ δυστυχίαν** e Barocc. 20. **δειλία δὲ**] adde **ἐστι** ex Barocc. 21. **καὶ μάλιστα** accessit e Barocc. 26. **μὴ κωλύοντος τοῦ λόγου**] **κωλύοντος τοῦ λογισμοῦ** e Barocc.

a*

P. 6, 4. τὸ κρῖναι] τὸ εὖ κρῖναι Halmius 15. δύνασθαι acc. e Barocc. 16. μετρίας seclusi 21. τῶν πρὸς τὸν θάνατον] τῶν περὶ θάνατον e Barocc. 21. 22. ἐν τοῖς δεινοῖς acc. ex A et Barocc. 23. διασωθῆναι] σωθῆναι ex A et Barocc. 25. αἱρεῖσθαι] προαιρεῖσθαι e Barocc. 26. καὶ δύνασθαι acc. ex A et Barocc. 27. ἔτι τε] ἔτι δὲ ex Barocc. 28. ἡ μεγαλοψυχία] ἥ τε φιλοπονία ex Barocc. aliisque libris 32. ἀταξίαν] ἀδοξίαν e Barocc. παρὰ] περὶ ex A

P. 7, 1. τε add. ex Barocc. 4. 5. φαύλας ἀπολαύσεις ἡδονῶν] φαύλας ἡδονὰς καὶ ἀπολαύσεις ex Barocc. ὑπομονητικὸν] ὑπομενετικὸν ex Barocc. ἐπὶ τῷ] ἐπὶ τὸ Halmius 22. καθάριος] καθάρειος 25. ἥδιόν τι] ἴδιόν τι ex A et Barocc.

P. 8, 14. δὲ add. Halmius 20. ἐπὶ μικροῖς acc. ex A et Barocc. 32. φιλόσκωπτον] φιλοσκώπτην ex Barocc.

P. 9, 6. αἱρεῖσθαι et τὸ acc. ex Barocc.

P. 10, 12. ὑπεξαίρεσθαι] ἐξαίρεσθαι e Barocc. 21. εὐθείαις] ἠρεμαίαις ex AB 23. τὰ acc. e codd. 28. εὐγνωμονικόν] συγγνωμονικόν e Barocc. 29. 30. μνήμη ἀγαθὴ acc. ex A Bar. et B 31. φιλοξένιον] φιλόξενον

P. 11, 3. εἰρημένων] ψεγομένων ex AB 9. παραμένοντας] παραμενοῦντας 11. ἰσχὺν] ἰσχύειν e codd. Gesneri et Schowii

P. 12, 28. καταβλέπεται] καλὰ βλέπεται e marg. Gesneri. cod. A βλέπεται, quod fortasse tenendum

P. 13, 2. ἀνθρώποις] ἀνθρώποισι 3. ποιεῖσθαι] ποιέεσθαι 4. μοχθηρίαν] μοχθηρίην 5. ἀμείνω] malim ἀμείνονα 9. φιλεῖ] φιλέει 11. κινούμεναι] κινεόμεναι εἰσίν] εἰσί 12. τοῖς δυνατοῖς οὖν] τοῖσι δυνατοῖσι ὦν 13. τοῖς παρεοῦσιν] τοῖσι παρεοῦσι 14. θαυμαζομένων] θωυμαζομένων 15. διανοίᾳ] διανοίῃ 16. ἐννοούμενον] ἐννοεύμενον 19. θαυμάζων] θωυμάζων 22. ἐπικαινουργεῖν] ἐπικαινουργέειν 23. ὃ] ὧν ex A 24. δίζεσθαι] δίζησθαι 25. τοῖς] τοῖσι ἑαυτοῦ] ἑωυτοῦ ex A 27. καὶ add. Halmius 28. πρήσσῃ καὶ διάγῃ] πρήσσει καὶ διάγει Halmius

P. 14. in margine posita addidisse Gesnerum monuit Gaisfordus

P. 16, 23. σύμπαντας] πάντας ex A 26. συναπολειφθήσεται] συνυπολειφθήσεται Gesnerus

P. 17, 6. Σωκράτην] scribendum erat Σώπατρον. Iamblichi ad Sopatrum epistolam commemorat ipse Stobaeus XI, 14. XXXI, 9. LXXXI, 18 et Append. Flor. p. 49. Gaisf. ex eadem epistola ad Iamblichum derivata sunt quae leguntur I, 60. XXXVII, 33. CI, 23 14. Περικτυόνης] Περικτιόνης 15. συνέστα] συνέστακεν? 20. ἀριθμητικὰ] aliis locis ἀριθματικὰ 21. ἐπιστῆμαι καὶ] ἐπισταμονικὰ e cod. Schowii 22. γένη] aliis locis γένεα 24. ἀκοὴ] ἀκοὰ 25. συμβεβηκότα] συμβεβακότα 26—30. a Gesnero addita esse monuit Gaisfordus

P. 18, 7. γιγνομένων] scribendum ubique γινομένων 10. οἷός ἐστι] οἷός τ' ἐντὶ 11. ἀριθμάσασθαι] cod. Schowii εὐρυθμίσασθαι; hinc scripsi συναρθμήσασθαι 12. εἶναι] ἦμεν vel εἶμεν 14. ἐσσεῖται] ἐσεῖται per errorem illatum κατόψεσθαι] κατοψεῖσθαι Iacobsius πάντα τε τὰ] ex A 15. ἐκείνου] ἐκείνω 21. οἰκείας] rectius οἰκήας τᾶς ἀρετᾶς φύσιν] τᾶς φύσιος ἀρετὰν Alb. Frischingius 27. καὶ seclusi δὲ ἀρετὰ] δὲ ἀκρότας Gesnerus 28. φύσεως] φύσιος ἀνάγκη] ἀνάγκα

P. 19, 3. τὸ δὲ στέργεν — 5. τᾶς ψυχᾶς addidi e Brux. 6. ἃ μὲν ὦν] recte Hirschigius ὦν ἃ μὲν 7. τᾷ ψυχᾷ] τᾶς ψυχᾶς Hirschigius πλῆθος] malim πλᾶθος πρῶτα] malim πρᾶτα 16. ὅτι add. Hirschigius 17. ἐγκρατῆ] ἐπικρατῆ Hirschigius 18. μέρος, ψυχᾶς ἀκρασία] μέρος τᾶς ψυχᾶς τῶ λογιστικῶ, ἀκρασία Hirschigius. 24. ἀκρατία] ἀκρασία ex A 26. ἀποβαλὲν] ἀποβάλλεν 27. καὶ κακὰ addidi 31. ἀθρησάτω] ἀθρῆσαι

P. 20, 2. τῶ δὲ ἀλόγω — ἐπιθυματικὸν] haec legebantur p. 19, 32 post ἄλογον: transposuit Halmius 3. τούτου] imo τούτω πλασίον] malim πλατίον 11. ἀνδρία] ἁ ἀνδρία 13 et 32. ἐπιθυμητικῶ] aliis locis ἐπιθυματικὸν 14. τις] ποθ' Hirschig. 16. ἀκρατίαν — θηριότητα] ἀκρασίαν — θηριότατα 18. οὖν] ὦν προσέοικε] ποτέοικε 24. ἀκρατία] ἀκρασία 26. ὀνομάζεται] ὀνυμάζεται, quae forma etiam ceteris locis restituenda videtur 27. τῶν] τᾶν διαθέσεων] imo διαθεσίων 30. τοῦ] τῶ 31. γεννᾷ] γεννῇ 32. θηριότητα] rectius θηριό-

τατα 8. τῶν ἀρετῶν] τᾶν ἀρετᾶν 10. φρόνησις] φρόνασις ἀνδρεία] ἀνδρία 11. δικαιότης] δικαιότας 16. συναρμόζομεν] συναρμόζοντες Gesnerus 17. τὸ λόγον ἔχον] τὰ λόγον ἔχοντα ταύτας] τᾶς ex A 29. τοῦ] τῶ

P. 22, 1. κτασάμενον malim αὐτοῦ] αὐτῶ 6. οὖν] ὦν 7. λόγου καὶ προαιρέσεως καὶ δυνάμεως] repone formas doricas λόγω καὶ προαιρέσιος καὶ δυνάμιος 9. οὖν] ὦν 11. ὀνυμαίνονται] ante Canterum οὐ μαίνονται 15. ἀναιρεῖν] ἀνευρέν Halmius ἀδικεῖν] ἀδικέν 18. κερδαίνειν] κερδαίνεν 19. καθυπερέχειν] καθυπερέχεν 20. τοιγαροῦν] τοιγαρῶν γνωρίζειν] γνωρίζεν ἀντιθέμενοι] ἀντιθέμεν Hirschigius 24. διδάσκειν] διδάσκεν τοὺς νέους] τὼς νέως 27. ὅς addidit Halmius 28. ὀρθοπλοιεῖ] ὀρθοπλοεῖ 29. Θεαγοῦς] rectius Θεάγους

P. 23, 2. θεωροῦμεν καὶ λέγομεν] rectius θεωρεῦμες καὶ λέγομες 3. τοῦ] τῶ 7. θύμωσις] θυμὸς Halmius et Hirschigius 8. οὖν] delendum cum A, commate posito post ἐπιθυμία 9. ἤ] ἅ 10. κρατοῦσα] repone κρατέουσα vel κρατοῖσα τοῦ ἐπιθυματικοῦ] τῶ ἐπιθυματικῶ ἀδεῶς] εἴδεος? an cum Hirschigio μέρεος? οὖν] ὦν 13. ἀπέσπασται] ἀπόσπασται A, ἀπόσπαστα ἦ Halmius 14 et 25. τόκκα] τόκα 16. μερῶν] μερέων 17. τῇ κατοχῇ] τᾷ κατοχᾷ 21. φεύγειν] φεύγεν ἀκρατία] ἀκρασία 22. κρεῖσσον] κρέσσον 23. χέρηον] cod. A χαίρειν. malim χερῆον 24. συνευδοκῆται] malim συνευδοκῇ τε 28. ἀνδρειότης] ἀνδρειότας 30. τῆς ψυχῆς] τᾶς ψυχᾶς

P. 24, 4. ἀρετὰ] ἁρετὰ 6. γε οὖν] rectius γῶν φημίζεται] φατίζεται e codd. 9. τοῦ] τῶ ὑπάρχειν] ὑπάρχεν 10. αὐτῶν] ὀνυμάτων Hirschigius 12. ἤ] ἅ 17. 18. μεῖζον] μέζον 17. μεῖον] μῆον 18. μισαδονία] φιλαδονία Halmius 19. ἅ μὴ] ita Gaisfordus pro ἅ μέν, scripsi ἅ μὲν οὐ e Brux. 23. θεωρεῖν καὶ κρίνειν] θεωρὲν καὶ κρίνεν 24. γένηται, ἅ ἀρετὰ καλέεται] γένηται, καλέεται e cod. A 25. om. lac. Canterus supplet τὰ δεινά, ἀνδρεία· ὅκα δ' ἐν τῷ κατέχεν σαοφροσύνη] σαοφροσύνα 30. οὐκ] οὔτ'

P. 25, 2. 3 et 4. τοῦ] τῶ 7. ἐκτὸς] ἐντὸς Canterus 16. ἐοῖσα] ἔασα (ἔσσα?) ex A 17. δυνάμεων] imo δυναμίων 23. γὰρ abest 25. τοῦ θερμοῦ καὶ τοῦ ψυχροῦ καὶ

τοῦ ὑγροῦ καὶ τοῦ ξηροῦ] posui dor. genetivos 26. γίνεται] recte Hirschigius ἐγγίνεται 27. τοῦ θυμοῦ καὶ τῆς] τῶ θυμῶ καὶ τᾶς 30. ἐγγίγνονται] ἐγγίνονται 31. καὶ δυνάμει] delet Hirschigius δύναται] δυνατὸν Canterus

P. 26, 2. τοῦ] τῶ 3. θυμοῦ] θυμῶ 4. ἐμποιεῖ] malim ἐμποιέει 5. τῶν ἀλόγων] τῶ ἀλόγω 9. νοσεῖ] malim νοσέει 10. τοῦ] τῶ 15. ἐπικρατεῖ] malim ἐπικρατέει 16. ἀκρατίαν] ἀκρασίαν 17. λύπης] λύπας 18. ἀμπλακίσκοντι] ἀμβλακίσκοντι 21. πράσσειν] πράσσεν 22. ἡδονᾶς] ἁδονᾶς 24. ἐμπέσοι καὶ παρείτω] ἐμπεδοῖ καὶ παρίητι Badham 25. τοῦ] τῶ 27. ἀντέχειν] ἀντέχεν ἐπικρατεῖν] ἐπικρατὲν 32. τοῦ] τῶ

P. 27, 2. τὸ abest 8. ἀληθινὴ] ἀλαθινὰ 11. τοῦ] τῶ 17. τὸ abest 23. μείων] μήων? 25. καί τε νόσοι τε] καὶ ταὶ νόσοι δὲ Canterus 29. τὰ περὶ] ἁ περὶ Halmius τὰν διάθεσιν καὶ] διάθεσις ex A 31. τοῦ] τῶ

P. 28, 2. δαπάνῃ] δαπάνᾳ 5. τῶν ἄλλων διαθέσεων τῶν] τᾶν ἄλλων (imo ἀλλᾶν) διαθεσίων τᾶν 12. τὰν γραμμὰν] τὸ λαμπρὸν Gaisfordus; sufficiebat τὰ λαμπρά. Hirschigius τὰν χροιὰν 13. ἁπαλὸν] Valckenarius ἁπαταλὸν 14. σὺν τῇ χρηστότητι] σὺν τᾷ χρηστότατι. haec cum sequ. τῶν χρωμάτων Hirschigius delet 18. γενναθεῖσα] γεναθεῖσα Halmius 19. ἡρμοσμένον] ἁρμοσμένον 21. ἀφελεῖν] ἀφελὲν 22. οὔτε] οὐδὲ 30. κακῶς τε γὰρ] κακῶς γὰρ? 31. τὸν τυφλόν] addendum videtur αἰεὶ ἀνάγκα εἶμεν τυφλόν

P. 29, 1. λαμπρότητα] λαμπρότατα 3. κτῆσις] κτᾶσις ἀλλὰ χρᾶσις] ἀλλ' ἁ χρᾶσις 6. ἂν] τὰν 8. δήλεσθαι] δηλῆσθαι et δηλήσασθαι libri, corr. Iacobsius 14. τολμῶντι] τολμώντων Canterus 15. εἰπεῖν] εἰπέν θρασυνεέσθωσαν] fort. θρασυνεέσθων vel θρασυνέσθων, propter τολμώντων, si recte coniecit Canterus 19. ὀρίδδων] ὀριάδων libri, corr. Schowius 21. διαφόροις] ἀδιαφόροις Canterus 23. ἵεμεν] ἱέμεν 24. εἰς ἴσον] rectius ἐς ἴσον 28. γινώσκειν] γινώσκεν

P. 30, 3. παρὰ ταύτης] παρ' ἀρετᾶς Halmius 6. ἐστὶν ὅκ'] rectius ἔντι ὅκ' (pro ὅκ' cod. A ὅτε καὶ) 16. σεμνό-

τητα] *σεμνότατα* 17. *τῆς φύσεως*] *τᾶς φύσιος* 18. *μείονα*] *μήονα* *ἔστι δ' ὅκκα*] *ἔντι δ' ὅκα*? 21. *γενναθῆμεν*] *γεναθῆμεν* Halmius 25. *κε*] *κα*

P. 31, 2. *τοὺς*] *τὼς* (typothetae error *τὼ*) *συναγωνισαμένους*] *συναγωνισαμένως* (typ. error *συναγωνισαμένω*) 5. *ἕτερον* — *ἕτερον*] *ἅτερον* — *ἅτερον* 6. *ὧν*] *ἂν* *ἅτερον*] fort. delendum 8. *οὖν*] *ὦν* 9. *διὰ ἕτερον*] malim *δι' ἅτερον* 10. *ἡ*] *ἁ* 14. *προαιρετικὰ*] *προτρεπτικὰ* Halmius, *ποιητικὰ* Canterus 15. *αἱρετῶν*] *ἀτέρων* Halmius ex A, qui *ἑταίρων* 22. *δι' αὐτὸ*] *δι' αὔταυτο*? 23. *αὐτῷ*] *αὐτῶν* libri, corr. Gesnerus 30. *ἦμεν*] *τιμὲν* ante Canterum

P. 32, 10. *χρᾶται*] fort. *χρέεται* ut aliis locis 13. *ὧν ὅτι*] *ὅτι* 14. *ἀλλὰ*] *ἀλλ' ἢ* ex A et Brux. 17. *ζῶον*] scrib. ubique *ζῷον* 26. *φύσει*] *τοῖς φύσει* Hirschigius 27. *δορυφορεῖται*] *δορυφορεῖ δὲ* Halmius 30. *ἅ*] del. videtur.

P. 33, 1. *ἐστι*] imo *ἐντι* 2. *δεῖ*] *ἀεὶ* ante Canterum 4. *κυβερνάτης*] *κυβερνάτας* *ψυχᾶς δὲ*] *δὲ ψυχᾶς* *σωματούμενα*] *σωματουμένα* 13. *δαιμόνων*] *δαιμονίων* Canterus 30. *ὅτι*] *ὅθεν* Canterus

P. 34, 16. *πλείονες*] *πλήονες* malim 19. *αἱρέοντι*] *ἀεὶ ῥέοντι* ante Valckenarium; *ἀγρέοντι* Canterus 20. 21. *τὸ ποτιποιούμενον*] *τὸ τῶν ποτιποιουμένων* Hirschig. 26. *ἀληθινὰς*] *ἀλαθινὰς* 28. *ἁβατικᾶς* — *γεροντικᾶς*] *ἁβατικὰς* — *γεροντικὰς* Halmius 29. *παμπληθέας*] *παμπλαθέας*? 31. *ἀληθινᾶς*] imo *ἀλαθινᾶς*

P. 35, 1. *μεταπιπτούσας*] *μεταπιπτοίσας*? 4. *ἀποστεροῦμες*] *ἀποστερέομες*? 7. *εἰς*] videtur ubique *ἐς* reponendum 10. *ἀλαθινὰν κρίσιν*] *ἀλάθειαν κριτέον* Hirschig. 14. *ἐμποιεῖν*] *ἐμποιέν*? 18. *τε καὶ*] *ἔτι* ex A 24. *μένοντες*] *μὲν ὄντες* Schowius, *βαίνοντες* Iacobsius 11. *οὖν*] *ὦν*

P. 37, 6. *τὸν*] *τὴν* recte Peerlkamp 14. *τῆς σκέπης*] scrib. *τὴν σκέπην* ex A 15. *αὐτῆς*] *αὐτὸ* recte Iacobsius

P. 38, 12. *θάλπους*] ita recte A, vulgo *θάλπος* 21. *λίθων*] seclusi 23. *ὧν τε*] excidit *τε* per errorem typothetae

P. 39, 9. *τοῦ τι ἂν δρᾶσαι*] *τοῦ τι ἀντιδρᾶσαι* probabiliter Iacobsius 11. *καὶ ἐπιθυμέοιμι*] seclusit Cobetus 16. *δεδομένοις*] *διδομένοις* ex A 24. *μέχρι*] *ἄχρι* ex A 25. *τὰ μέτρια*] *μετὰ μέτρια* A, unde *τὰ μὲν μέτρια* Iacobsius

recte 31. *ἐχοίην*] *σχοίην* *μούνων δὲ τῶν*] *μούνων θ' αὐτῶν* vulgo, *μούνων θ' ἃ τῶν* A, corr. Valckenarius

P. 40, 1. 2. *ἃ δεῖ ἔσεσθαι*] *ἀεὶ ἐφίεσθαι* Iacobsius 19. *ἀκεσίμῳ*] *ἐναισίμῳ* Cobetus 23. *τὸν*] *τὸ* Halmius 26. *ποτε*] *κοτε* 27. *μέλοιμι*] *μέλοι μοι* Hirschigius 32. *ἀποστυγοίην*] ita Gaisf. pro vulgato *ἀποστυγείην*. cod. A *ἀποστυγέοιν* i. e. *ἀποστυγέοιμι*

P. 42, 30. uncis inclusa ex Holsteniana addidit Gaisfordus

P. 43, 27. *καθαρθείσῃ*] *καθαρθείσης* ante Gaisfordum

P. 55, 1. *μώεο*] *μῶσο*

P. 61, 17. *ἅπαντα*] *ἀπαντᾶ* ante Valckenarium *ἀνὴρ δικαίως τὸν τόκον*] ita Gaisfordus; vulgo *ἀνὴρ δικαίως αὐτῶν τὸν τόκον*, liber Venetus *ἀνὴρ δικαίως ἀντὶ τῶν τόκων*, itaque locus ita scribendus *ὅταν δανείζῃ τις πονηρῷ χρήματα, δίκαιος ἀντὶ τῶν τόκων λύπας ἔχειν.* atque ita voluit etiam Iacobsius 21. praepone *Ἀντιφάνους* e libro Ven. a Kirchhoffio inspecto

P. 62, 7. *κερδανεῖς*] *κερδανεῖ* Nauckius 23. *Ζηνοδότου*] *Ζήνωνος*? cf. Praef. Com. fr. vol. I p. X 24. *μὲν ἠρετὴ*] *ἀεὶ* vulgo, corr. Valckenarius

P. 63, 5. *εὐτυχίην*] *εὐτυχίαν* *δ'*] *τ'* e marg. Gesneri 10. *κακότητας ἐμοὶ*] *κακότητ' ἄσημον* Reisigius; fort. *κακότητας. ἐμοὶ* [*μὲν*] . . . . ut locus mutilus sit

P. 64, 1. *βλαβερώτερον*] *βλαβερώτατον* Nauckius 20. separavi haec a praecedenti fragmento 21. *ἄνθρωπον* add. Gesnerus *ἀλλὰ*] *ἀλλ' ἢ* 28. *λαγοί*] *λαγωοί* A, hinc posui *λαγῴ*

P. 65, 2. *συναγάγοι*] *συναγάγῃ* 3. *ἁπαξάπασιν*] *ἁπαξαπάσῶν*. Cf. Com. gr. IV p. 33 5. *καθενός, τοσούτους*] *καθ' ἕνα τοσούτους*? 19. *ληίζεσθαι*] imo *λήζεσθαι* 20. *προαιρεῖται*] imo *προῄρηται* ex A *μᾶλλον*] recte lacunam indicavit Meierus; v. Sauppium Orat. Att. II p. 272

P. 66, 8. *ἐκ τῆς ἐπιστολῆς*] nimirum Plutarchi 10. *φιλοσώματον*] Peerlkamp *φιλόσκωμμον*, sufficiebat *φιλοσκώμματον* 15. *κακομηχανώτατον*] *κακομήχανον* Duebnerus 20. *ῥᾴδιον*] *ῥηίδιον* *ἐπαινεῖν*] *ἐπαινέειν* 21. *ἤθους*] cod. A *ἦθος* i. e. *ἤθεος* 25. *Δίωνος ἐν τῷ π. δουλείας*] v. Dio Chrys. vol. I p. 265—288 Emp. ex quo non dubium videtur quin quae Stobaeus habet

adumbrata sint 27. πολλῶν ἐπιθυμιῶν] haec delenda videntur, quamvis legantur etiam Tit. LXII, 42

P. 67, 3. Σωκρατικοῦ] probabiliter Gaisfordus Κράτητος et 4. Κράτης

P. 69, 3. ἐλπίδας] ἐλπίδα A 23. deest lemma 27. γὰρ πρᾶγμ' ἔφυ] πρᾶγμ' ἐστὶ γάρ. V. Com. graec. IV p. 248

P. 70, 11. Θεοφορουμένῳ] Θεοφορουμένη 15. πανταπλείστων] πᾶσι πλείστων ex Orione 22. λογισμοῦ· τῷ δ. πράγματα ἕκαστός ἐστι καὶ] λογισμοῦ τῷ δ. πράγματα. Ἕκαστός ἐστι τῷ 25. σύμβουλος] βουλῆς Bentleius; rectius, ut videtur, Porsonus σύμβουλος· ὁ λογισμῷ διαφέρων

P. 71, 3. καὶ γὰρ εἰ] εἰ γὰρ εὖ ex A φρονεῖν] φρενῶν recte Valckenarius 5. ὁ νοῦς ἐν τῇ ψυχῇ] νοῦς ἐν ψυχῇ e Trinc. Aristotelis verba sunt in Top. I, 14 p. 288 Sylb. 6. 7. Haec ad unum fragmentum coniunxi. 8. ἡ ἀγαθὴ] ἀγαθὴ 12. τὸ φρονεῖν] Hermannus τό γε φρονεῖν, quod non sufficit 17. κἀποσώσαις] κἀποσῶσαι Porsonus 18. ἂν] ἦν 23. ἀδίκως] κακῶς ex XCIV, 4

P. 72, 2. ἀνανδρία τε] κἂν ᾖ σοφός τις ex XCI, 22. 5. κλεῖθρον] κλῆθρον 11. ἂν] ἦν 12. αὐξάνειν] αὔξαν' ἐν Bothius 29. γένηται] λέγηται

P. 73, 15. ὄρνισι μὲν] ὄρνισιν πολλὴν] πώλοις Sylburgius, λαγωοῖς Trinc. et Voss. 16. αὐτοχύτοις κεράεσσιν] αὐτοχύτως κέρατα καὶ e codd. quibusdam affert Bergkius p. 368 qui conicit ταῦροι δ' αὐχαλέοι κεράεσσιν. fort. ταύροις δ' αὐχαλέοισι (?) κεράατα

P. 74, 6. abest lemma 27. οὖσα] ἐοῦσα

P. 75, 3. Σωτάδου] vid. Anal. Alex. p. 246. 8. οὗ] ὅπου ante Brunckium 11. μηδὲν ἀτακτεῖν] Hermannus τὸ σὲ μηδὲν ἀτακτεῖν, Gaisfordus μηδέν ποτ' ἀτακτεῖν εἰς] πρὸς? 17. τύχης] ante Gesnerum ψυχῆς

P. 76, 10. σοφοὶ] delet Hirschigius 12. ἐπεμελοῦντο] ἐπιμελοῦνται?

P. 77, 10. ἐν μίνῳ] ex margine illatum et ex ἐν Μένωνι corruptum esse intellexit Gesnerus

P. 78, 14. προμαντικῆς] μαντικῆς Nauckius 27. οὐδὲ τὸ σῶμα αὐτὸ τὸ] τὸ σῶμα οὐ τὸ cod. A, quod revocandum 28. τις εἶναι] τις εὖ εἶναι A, τίς ἂν εἶναι scrib. e Damasc. τὴν ὑγείαν] malim sine articulo ὑγείαν (ὑγίειαν)

P. 79, 3. οὔτε] οὐδὲ 4. φαῦλος] αὐτὸς φαῦλος ut 2? 20. Ἀσφάλιον] rectius Ἀσφάλειον

P. 80, 17. τέρψεις] τέρψιες

P. 83, 9. εἴη] μηδὲ, et ita Halmius καὶ] ἐπὶ, Halmius κατὰ, qui mox ἐφικόμενος 15. ἀναγκαιότερα] ἀναγκαιότατα 25. ὕστερον] δεύτερον ex B ὁρίζειν] ὁρίζεν 28. εὐτυχίης] εὐτυχίας 30. ὑφ' ᾧ] ὑφ' ὦ 31. περασθήσεται] περανθήσεται

P. 84, 1. ἀπείρου] ἀπείρω 9. ταύταν] ταυτᾶν vel τουτᾶν? 11. 12. τῶν ὅλων] τῶ ὅλω Nauckius 14. οὐκ] οὔ κα? Halmius οὔ κεν 19. ἐούσας] ἐοίσας 22. ἄρχειν] ἄρχεν 23. ῥᾷον] ἔργον Halmius 25. ἐφ' ὅλω] ἐπὶ τῶ ὅλω Hirschigius οἴκω] βίω Hirschigius τε καὶ] τε γὰρ καὶ Hirschigius 26. σπωδᾶς] ἐπωδὰς vulgo, σπουδὰς Valckenarius, σπωδᾶς Hirschigius παιδείας] παιδιᾶς Hirschigius 27. ἀδονὰς] ἀδονᾶς Hirschigius 28. τυγχάνειν] τυγχάνεν 30. εὐτυχίας δὲ καὶ] δὲ om. A

P. 85, 5 et 6. ὅκκα] ὅκα, rectius ὁκὰ 10. αὔτ' ἂν] αὔτα Gaisfordus 20. ἂν] κα? 20. 21. φύσιος] εἰ φύσιος, Halmius φύσιος ὃς 23. νέων] recte νέω Hirschigius 26. λάβῃ] λάβοι e codd. Schowii 28. λαβεῖν] λαβέν 29. ἐπελθόντα μὲν] ἐπελθόντα, τὰ μὲν ex Ars.

P. 86, 22. πολυήκοον] φιλόλαλον scribendum ex A σῶμα ἔχειν] σῶμ' ἀσκεῖν? 23. πολυμαθῆ] ὀψιμαθῆ cll. XXIX, 68. ex quo κρεῖττον supplendum videtur πολὺ [κρεῖττον ὀψι]μαθῆ 24. καὶ κακίας ἀλλότριον] om. A 28. ἐχθρὸν πολέμιον] πολέμιον ἐχθρὸν Nauckius 29. ἄγαν φρονεῖν] ἄγαν ἀγανοφρονεῖν Valckenarius, ἄγαν φιλοφρονεῖσθαι margo Gesneri 30. χέρηον] ἄνοια A, ἄνοιαν B a m. s. et m. Gesneri

P. 87, 1. μεθύοντας] ex παροίνους i. e. παρ' οἴνους corruptum 2. καὶ αὐτὸς] dele μεθύειν] παροινεῖν e codd. 4. ἐπιμαίνεσθαι] ἐπιγέλα e codd. ἐπισημαίνεσθαι Cobetus 10. φεῦγε· αὔτη γὰρ] φεῦγε ἥτις e codd. 19. 20. χρῶ — αἰδοῦ] χρῶ τοῖς θεοῖς ὡς φίλοις· γονεῖς αἰδοῦ Valckenarius 20. γονεῖς — ποιοῦ om. A ποιοῦ. Ὃ δ' ἂν] imo ποιοῦ, ὃ δ' ἂν 21. ἴδῃς] εἰδῇς Halmius.

P. 88, 1. τὸ μὲν — ἀεὶ acc. e Brux. cf. V, 31 3. τραχὺς ὢν] τραχέσιν Nauckius 8. ζημίᾳ χρῶ acc. e Brux.

recte fortasse vulgo omittuntur 9. ὑβριζόμενος δὲ] δὲ om. A. cf. V, 26 16. ἐνενέγκῃς — τούτοις] εἰσενέγκῃς — τοιούτοις Hirschigius 19. κακὸν] βλαβερὸν ex A 21. 22. τὴν ἀτυχίαν] κακὰ ἐν οἴκῳ ex codd. 22. κρύπτε φθόνου χάριν coniungit Hirschigius, sed ut φθόνου χάριν explicationis causa addita et delenda putet 27. ἀπραγοῦντα] κακοπραγοῦντα vel δυσπραγοῦντα Gesnerus

P. 89, 5. καλοκαγαθίαν] ἴδια A, αἴδια Nauckius 5. ζήτει. Φίλει τὴν] pro his εὐσέβειαν enotatur ex A. fort. Θεράπευε εὐσέβειαν, παιδείαν 8. εὐσέβειαν fort. delendum; vide ad 5. 9. Τευταμίδης] Τευταμίδου A, Trinc. et Gesn. m. 17. πάντοτε] περὶ θεῶν ex A

P. 90, 12. εὐφρανῇς] εὐφράνῃς 27. πείνων ἅρμοζε] πᾶσιν ἁρμόζου scripsi fortasse iusto audacius, sed confirmat plane cod. Brux. pro πείνων cod. A πεινῶν, unus Schowii πένης ὤν, Wyttenbachius γάμον ἅρμοζε 23. εὐγένειαν] εὐσέβειαν?

P. 91, 13. καταθάρρει] καταρῶ ex codd. 16. χρήσιμα] χρόνῳ ex B 30. ἐπαγγέλλου] ἐπεγγέλα Hirschigius

P. 92, 2—7. accesserunt e Brux. 9. ἀφικνεῖται] ἀφικνέεται 16. σωφρονεῖν] imo σωφρονέειν 17. κατὰ] καλὰ Valckenarius 25. αὔξων] αὔξειν Nauckius 26. χρὴ] χρῆν?

P. 93, 24. προμελεῖσθαι] ἐπιμελεῖσθαι ex Trinc.

P. 95, 18. ἢ ἂν] κἂν e Dione

P. 96, 7. δυσπέλαστον] δυσπάλαιστόν ἐστιν Nauckius 11. πόσον] ὅσον? 15. πεπραγότες] πεπραχότες ex Ven. 18. κἀπικρύπτεσθαι] κἀποκρύπτεσθαι ex A. 19. Τημενίσιν] Τημενίδαις 25. κεῖσ'] κείσεαι ex libris 26. οὐδέποκ' εἰς] οὐδέποκα ex libris πεδέχεις] ante Salmasium μετέχεις 27. κὴν] recte libri κεὶν 28. πέδ'] παῖδ' ante Salmasium

P. 97, 6. φρονεῖν εὖ] εὖ Gesneri et Schowii codd. omittunt; versus non integer 7. no. 16 separavi a praecedentibus et praeposui Aeschyli nomen, quod male in libris sequenti fragmento adscriptum est; v. Hermannum Opusc. III p. 140 et ad Aeschyli fr. p. 381 16. τοῦ αὐτοῦ] Aeschyli esse probabiliter statuit Hermannus 18. εἰς συμφορὰν ἵστησι] Trinc. et codd. Schowii εἰ συμφορὰν καθίστησι, unus εἰς ἡδονὰς καθῆκε. hinc εἰς πημονὰς ἔστησε correxi in

Annal. Marburg. 1846 p. 1097. atque ita nunc etiam Hermannus Aesch. fr. l. l. πολλὴν] πολλὰ e cod. Schowii

P. 98, 1—10. a Gesnero addita esse suspicatur Gaisfordus 12. ἔμμεναι] ἴδμεναι e codd. Schowii 19. δηλουμένη] Φιλουμένη Bentleius 24. dele comma post πιμπλάναι 27. κεἴ σ᾽] κἂν εἴ σ᾽ ante Valckenarium 28. ἀμουσίαν] ἀμουσίας e marg. Gesneri

P. 99, 3. ἥκεις] εἴκεις recte Gesnerus 5. πολλὰ καὶ] τἀμὰ καὶ Berglerus, τἀμὰ δὲ Porsonus 6. ῥήματ᾽] ante Berglerum χρήματ᾽ 7. μαθόντες] παθόντες Valckenarius 9. ἐπιτιθῆται] ἐπιθῆται ante Iacobsium 11. πιθέσθε Valckenarius 12. φθονῆθ᾽ ante Dobraeum ἡμῶν] ante Valck. ὑμῶν 17. ἀφραδέῃ] ἀφραδέι Brunckius; v. Anal. Alex. p. 201 22. κατηφίῃ] κατηφείῃ 23. εὐόχθῃσι] εὐοχθῇσι ὀπάζει] ὀπάζῃ 26. ὑπεροπλίῃ τε καὶ] delevit τε Brunckius 27. ὑπὲρ αὐχένας ἴσχει] scripsi ὑπὲρ αὐχέν᾽ ἀνίσχει, sed rectius Anal. Alex. l. l. posui ὑπέραυχον ἀνίσχει 28. μνᾶται δ᾽ εὔπηχυν Ἀθήνην] ad Cotyn haec spectare cum Stephano existimavi Anal. l. l. sed fortasse de Oto cogitavit poeta ut in seqq. de Tantalo. cf. Apollodorus Bibl. I, 7, 4

P. 100, 2. αὖτε] malim αὖτις ut in fine versus 11. Ἀλεάδαις e Schowii codd. acc. 15. ἂν] ἦν 19. ἀλόγιστος] ἄλογος libri, ἄλογός τις Gaisford. οὔτοι] libri οὐ, quod οὐχὶ scripsi 20. Θετταλὴ] Θεττάλη 25. Ἐπιχάρμου] hoc lemma Grotius e coniectura posuisse videtur; libri Κερκίδου vel Κερκίδας, atque ita etiam Ven. a Kirchhoffio inspectus. iidem Κερκίδου sequenti loco adscriptum omittunt. nil impedit quo minus Cercidas notissimis Epicharmi verbis usus esse putetur. coniungenda igitur 42 et 43 ad unum Cercidae fragmentum. cf. Anal. Alex. p. 302 28. πῶς ἐνίδοιεν] πῶς κεν ἴδοιεν scripsi l. l.

P. 101, 2. παλῶ — δυσεκνίπτω τρυγός] ante Bentleium παλῷ — δυσεκνίπτῳ τρυγί 7. παῦρον] μέτρον edd. Theognidis 15. κοίτῃ] καὐτὴ Tyrwhittus 16. ὅπερ — κακῶν seclusit Cobetus.

P. 103, 3. μὴ ᾽πίστηται] male impressum μὴ ἐπίστηται ποδηγεῖν] ποδηγετεῖν Ecl. ph. II, 8, 2 ὀχέειν] ὀχεῖν 25. οὐδ᾽ οἱ] οὔθ᾽ οἱ 28. μετενδύματα] ἐπενδύματα Valckenarius

P. 104, 6. τὸν νόμον] νόμον 21. αἰσθητικὰ καὶ κόσμῳ] ἐσθῆτι καὶ κόσμῳ 24 et 25. τοῖς] τοῖσι 24. τύχης] ψυχῆς ante Grotium

P. 105, 2. δὲ] fort. del. 5. καὶ] τῶν? an καὶ τῶν? 7. Ἄνθρωποι] Ἀνόητοι? an Ἀνόημονες? 8. ζωῆς — δεδοικότες] haec ex A addita alii extricabunt; videtur nova sententia esse. intellegerem ἀνοήμονες ὀρέγονται γήραος θάνατον δεδοικότες, ut sit variatio eorum quae no. 81 leguntur 9. ἀνδάνουσιν] μανθάνουσιν Valckenarius; possis etiam κατάνουσι vel ἀνύουσι 30. ἐμπόδιον] ἐγκοπὴ ex Diog. Laert. IV, 50 Nauckius

P. 106, 2. ἰσχυρότερον] ψυχρότερον 9. πῇ δὲ ἐλεεινούς, πῇ δὲ μισητοὺς] transposui 12. δὲ οὐδέποτε] codd. δέ ποτε, unde Nauckius δ' οὔποτε 24. ἔχω] om. codd. unde Nauckius ἐγὼ οὐλότριχος vel ἐγὼ οὖλος τὰς τρίχας

P. 107, 1. τὰς addidi 8. τι] abundat

P. 108, 13. ταῖς συζητήσεσι] ταῖς σιζητήσεσι Trinc. corr. Hirschigius 14. τοῖσι ἀλόγοισι et ζωίων? 23. ὁκότε? 23 et 24. οὐκ αἰδέονται Iacobsius, οὔτε δέονται vulgo 30. σπουδαιότατα] σπουδαιέστατα? ut 24

P. 109, 11. ἀδικηθεὶς] Iacobsius δηχθείς. aut hoc aut infra ἀνταδικεῖ scrib. videtur 22. μὲν ἀφρόνων] μὲν codd. om. 23. ἱεροσύλων] ἱεροσύλοις e Porphyrio

P. 112, 2. ἐξαίρουσι] ἐξαιροῦσι 14. ἐγγινομένης] ἐγγενομένης 17. ἐλαίης] ἐλαίαις e Plutarcho κάρδαμον] καρδαμίδι e Plutarcho 29. ψυχῆς] τύχης

P. 113, 11. φόβος δὲ] φόβος 23. ἐστὶν ἀρετῆς] ἀρετῆς ἐστι ex marg. Gesneri σωφροσύνη] σώφρων γυνή. cf. Com. Gr. vol. IV p. 371 24. ἢ χάριεν] v. Com. Gr. vol. IV p. 372

P. 115, 4. ἀνιστῶσαι] ἀιστῶσαι Grotius 7. ὄντως δικαίως] ἀπ' ἀτρεκέως Valckenarius; fort. ἀπηλεγέως 8. εἵκεν] εἴπερ μισέεις] μισεῖς Grotius αὐτῶν] ἀτῶν? 15. τοῖς — ποιοῖτο] τοῖσι — ποιέοιτο 26. Θεοβούλου] vid. p. 88, 8

P. 116, 1. Χίλωνος] cf. p. 88, 1 7. ἑστήκει] hoc revocandum, ἕστηκεν Hermannus 8. ἐὰν] ἂν 9. εἰς — εἰς] ἐς — ἐς 10. θέλεις σχεῖν] θέλων ἔχειν Brunckius πλέον ἔχειν] πλέον σχεῖν Brunckius 26. ὑπὸ] delet Nauckius

P. 117, 23. *πατρὸς*] male impressum *πατέρος* *τέκνοις*] *τέκνοισι*

P. 118, 1. 2. *ἐπείσθη ἐκεῖνος. τὰ*] *πεισθεὶς ἐκεῖνος τὰ* m. Gesn. 18. *φαύλης καὶ ὀξίνην*] post *φαύλης* ind. lacunam 24. *ἐπιμείζονα ποιεῖ*] *ἐπιμέζονα ποιέει*

P. 119, 7. *διότι — ἀλλήλοις ποιοῦσιν, ἑαυτοὺς μακαρίζουσιν*] *διὰ τὸ — ἀλλήλους μακαρίζουσιν* ex A 13. *ὅτου*] *ὅπου* Sauppius

P. 120, 9. 10. *τοῖς ἄλλοις*] *τοὺς ἄλλους* 20—32. seclusit Gaisfordus utpote a Gesnero adiecta

P. 121, 6. *σωφροσύναν*] *σωφροσύνην* e Damasc. 8. *δὴ*] *δὲ* 17. *πᾶν*] recte Damasc. *μὲν* 26. *συναγωνιζομένης*] *συναγωνιζόμενος*? an *μετὰ* delendum? 29. *ἀφίησιν*] imo *ἐφίησιν*

P. 122, 5. *εἶδος*] *ἕδος* Nauckius 6. *ἀγαθὸν*] abundat

P. 123, 6. *ὑστερολόγου*] *δευτερολόγου* 10. *καὶ*] delet Nauckius 15. *φασὶ*] *φησὶ* 16. *ὠφελείας*] rectius *ὠφελίας* 23. *οὐ πᾶν τὸ*] *οὐκ ἂν τὸ* ante Dobraeum 28. *εἴης*] *εἷς* Halmius 31. *φύρδην*] *φύστην* Toupius, *φύρτην* codd.

P. 124, 10. *λέγει*] *λέγοι* Halmius *ἂν* vulgo om. 13. *ἀπατήσαντα*] *ἀπαντήσαντα* e codd. 16. *παράφρονοι*] *παράφοροι* 23. *ὥσπερ ὁ Σωκράτης*] delet Nauckius 27. *πῶς ἔχοντα*] i. e. *ὅπως οὖν ἔχοντα*, non debebat tentari

P. 125, 1. *μεθείλαντο*] *καθείλοντο* Nauckius 4. *ὃς* abest vulgo; nisi forte lin. 7. post *τάδε* aliquid excidit 6. *τὴν*] *τὸν* e Brux. 7. *πρὸς τάδε*] *προστὰς* Brux. *πρὸς τάδε* cum dicit ostendit locum acclivem 9. *καὶ* fort. del. sensus est *εἰ μὲν εὐδία ἦν, διεστείλω, εἰ δὲ ψῦχος, συνεστείλω* 10—11. *πρὸς τὰ — σύστειλον*] *πρὸς τὰ ὑπάρχοντα διάστειλαι καὶ σύστειλαι*? 13. *ἐργάζεσθαι . . . αι κρίνωμεν*] *ἐργάζεσθαι [ζημί]αν κρίνωμεν*, vel *ἐργάζεσθαι [ζημιοῦσθ]αι κρίνωμεν*, Iacobsius *ἐργάζεσθαι [ταλαιπωρεῖσθ]αι κρίνωμεν* 14. *τι*] abundat 18. *ὅτι ἐὰν*] *ὅτι ἂν* 18. 19. *διὸ ἅπερ*] *δι' ἅπερ* Nauckius 23. *ἐν εὐκολίᾳ*] *ἐν τῇ πάσῃ εὐκολίᾳ*? 27. *οὐ τὸ γῆρας, οὐ τὴν πενίαν*] *οὐ τὴν πενίαν, οὐ τὸ γῆρας*? 28. *καὶ τὴν*] *οὐ τὴν*

P. 126, 10. *ὧδε*] *τῷδε* 11. *τις*] om. A, recte ut videtur 17. *ἐνέγκαντα*] *ἐνεγκόντα* ut infra? *καὶ ἔτι*] *καὶ τί* ex m. Gesneri 24. *τί δεῖ*] *τίνα δεῖ*? 27. *ἢ*] *καὶ* Nauckius

ποῖον ἤ] ποῖόν τι 29. τοῦτο] τούτοις Nauckius 31. ἐκεῖνο] ἐκείνοις Nauckius πενία] τῇ πενίᾳ?

P. 127, 11. ἔρυμα] Iacobsius ἔμβα 16. οὐδὲ φιλοψυχῶ] ante haec verba fort. excidit aliquid in hanc sententiam: οὕτω καὶ τὸν βίον ἄχρηστον γενόμενον ἀποτίθεμαι ἀλλὰ καὶ] ἀλλὰ μὴ Nauckius 19. ἐξελθεῖν] fort. add. ἀλλ' οὐκ ἐξῆλθε 23. ἐστὶ] ἔτι 24. τῇ πρώτῃ . . . σίν] supplevit Iacobsius 27. ἀποκοτταβίσας] miro errore quae de Theramene narrantur Critiae poculum propinante ad Socratem transtulit 28—30. ὅρα — πεφρίκαμεν et 31. 32. ταχύ — κοιμηθείη secludenda esse intellexit etiam Cobetus V. L. p. 371

P. 128, 9. ἀποθέσθαι] ἐπιθέσθαι 17. ἐπιστᾶσα] imo ἐπιπτᾶσα 23. ὅρα παιδείαν] haec uncis secludenda; spuria esse vidit etiam Cobetus l. l. 31. ὅν κ'] ὅν κα?

129, 1. πρᾶτον] παρὰ τοῦ ante Gaisfordum 2. πολυπραγμονῇ] malim πολυπραγμονοῖ (—νοίη) propter ὁρμῴη etc, at insolenter αἴκα cum optativo coniunctum est 3. αὐτός τε μὴ προσκαλεόμενος] αὐτόν τε μὴ προκαλεόμενος Iacobsius 4. προεκαλέσσατο] προεκαλέσατο. sequentia alii expedient; non expedivit Iacobsius p. 48 12. καλωκἀγάθω] καλοκαγάθω 18. ὑπάρχει] ὑπάρχειν 21. οἷον τοῖς] οἷον ἐπὶ τοῖς?

P. 130, 18. τροφὴν δ'] τροφήν τ' 24. ὀνομάζειν] νομίζειν ex A 27. ἄλλων] Ἑλλήνων ex B

P. 131, 8. ὅτι τούτων] ὅτε τούτοις? ὅτε πόντον Iacobsius 27 et 28. κανονιστέον, ἢ τὰ] κανονιστέον ἢ τὰ 29. ἐστιν] nescio an delendum sit ἐπωδυνώτερον] ἐπιπονώτερον

P. 132, 1. αἱρεῖσθαι] αἱρέεσθαι 5. Λαμπρόκλειαν] Λαμπροκλέα Vind. quod probandum 23. ἂν] ἦν Πλάτων] A in marg. Διογένης

P. 133, 5. ἐπίκαιρον] ἐπὶ καίρου A, fort. ἐπικαίρου 16. τὴν κτῆσιν] excidit τὴν 24. ὁ λόγος] fort. delendum 26. Πέρσαις μὲν] μὲν om. A οὐκ] οὐκ ἂν 31. καλινδούμενον] κυλινδόμενον ex A

P. 134, 5. τὸν λογισμὸν] λογισμὸν 15. καὶ εὐτελείας] haec seclusi cum Hirschigio; nisi praestat 16. post ἀκοσμίας addere πολυτελείας 20. πότου] ποτοῦ 25. ἀνειμένας] πολυτελεῖς ex A 26. λαμπρὰς] ἱλαρὰς? 28. 29. ἔπειτα] ἐπεί τοι Iacobsius 29. βλάπτωνται] βλάπτονται ex A et Trinc. 31. μόνον acc. ex AB

P. 135, 1. *ἐπαινῇ*] *ἐπαίρῃ* duo codd. Schowii, quod recte praefert Hirschigius deletis infra verbis *ὁ ἔπαινος* *εὐφρασία*] corr. errorem *εὐκρασία* 5. *εὐθὺς*] *εὐθέως* A 8. *ἐπεὶ ἡ* addidi *πηδήσασα*] *ἐμπηδήσασα* Halmius, *ἐπιπηδήσασα* *εἰς* Iacobsius, cod. A *πηδήσασα* 12. *εὐφρανῇς*] *εὐφράνῃς* 20. *κυβερνᾷς τοῖς θεραπεύουσι*] *κοινωνεῖς τοῖς θεράπουσι* Gesnerus; *θεράπουσι* etiam B 26. *οὐδ'*] *οὔθ'*

P. 136, 5. *ἐν*] *ἐπ'* Halmius 6. *ἡνίκα*] *ἡνίκ' ἂν* Iacobsius 8. *τοῖς συνεδρίοις*] *ταῖς ἀνυδρίαις* ex A, revocanda vulgata 13. *ἀπειθεῖν*] probabiliter *ἀναπείθειν* Iacobsius 24. *βέλτιον*] *ἄριστον* ex A 27. *δουλεύεσθαι*] *δουλοῦσθαι* recte Hirschigius 29. *ἔοικας*] *κακίας* recte addit Hirschigius

P. 137, 2. *οὔτε*] *οὐδὲ* 3. *οὔτε*] *οὐδ' ὁ*, sufficit *οὐδὲ* ut Halmius voluit 6. *ὅστις θέλεις*] *εἰ βούλει* e codd. 10. *θεὸς — σωτὴρ*] *σωτὴρ — θεὸς* e corr. AB 12 *θέλεις*] *βούλει σοι* ex AB 16. *αὐλὴν*] fort. add. *τῇ οἰκίᾳ* 23. *ἀλλοῖον*] *ἀλλοῖον ὂν?* 28. *τοιγαροῦν*] *τοίνυν* ex A 29. *λυμεῶνας εἰσδεχόμενος*] transponit A

P. 138, 4. *θαυμάζῃς*] *θαυμάσῃς?* *πρῶτον*] *πρὸ τῶν* ex AB 5. *ἀξιωθήσῃ*] *καταφρονηθήσῃ* ex B, *καταφρονήσῃ* A, quod reponendum 17. *γιγνώσκειν*] *γινώσκειν*

P. 146, 11. *πράττειν* supplevit Gaisfordus 15. *ἀπορρεουσῶν*] scil. *κρηνῶν*, ellipsi aliunde mihi non cognita 20. *πόλεων*] *πολίων*

P. 147, 5. *ἔδοσαν*] *ἔδησαν* cod. Sch. et m. Gesn., fort. *ἐνέδησαν* 9. *καταδουλευόμενοι*] *καταδουλούμενοι* Damasc. *καταδουλεύμενοι* recte Hirschigius 13. *καταναγκάσαι*] *καταναγκάσει?* 26. *ἑτέροις συνέλκεις*] *ἑτέροισιν ἕλκεις*

P. 148, 9. *εἰθισμένον*] post hunc versum videtur alius excidisse 22. *γὰρ διοπετεῖς*] *διοπετεῖς γὰρ* Nauckius 26. *Ἀπολλόδωρος*] add. *ἐν Διαβόλῳ* cll. Hist. com. graec. p. 463

P. 149, 13. *εἶχον*] *ἔσχον* e Damasc. 15. *ἐδείκνυ'*] *ἐδείκνυ δ'* Grotius 20. *δ'* add. Wakefieldius, et sic Dam. 22. *ἔτεμνεν*] *ἔτεμν'* 28. *εἰ δέ τ' αἰτοίην*] *τάλαν αἰτῶ τι* cod. A. *ταῦτ' ἀλλ' ἂν αἰτῶντι* Damasc.

P. 150, 10. *τοῦ*] *τε* Damasc. 23. *ἀλλ' οὐκ*] ante haec fort. excidit *ἐν τῇ σκηνῇ* 26. *δίδοσθαι*] *δεδόσθαι?*

P. 151, 20. *φανερῶς*] *φανερῶς ἂν* vulgo et Damasc.

29. ὃ] οὐ Iacobsius 30. *καὶ τῶν*] *καὶ τὰ τῶν* ex A, *κατὰ τῶν* Iacobsius *μετὰ*] *ὧν μετὰ* Iacobsius

P. 152, 18. 19. *βλέπομεν*] *βλέπωμεν* ex A *αἰῶνα*] *μωρίαν* Iacobsius *ἔργα*] *ἀργίαν* recte Dübnerus 31. *ὑγιεινήν*] *ὑγιαίνειν* Nauckius

P. 153, 1. *τοῦ*] *τῶν*

P. 154, 2. *ξυνουσία*] *ξυνουσίη*

P. 155, 9. *οὐδ' ἂν*] *οὔτ' ἂν* *πλησιάζειν*] *πλησιάσαι* ex A

P. 156, 8. *δέ που*] *δήπου* Halmius 14. indicavi lacunam; fort. excidit *φανοῦνται* 21. indicavi lacunam; excidisse videtur aliquid in hanc sententiam *οὔτε γὰρ ἀμπέλῳ μάτην δεδόσθαι φύλλα*

P. 157, 16. 17. *καλλωπισμοῦ τοῦ τῶν γυναικῶν*] *τῶν γυναικῶν καλλωπισμοῦ* A 20. *οὕτως*] *οὕτως ἄνδρες* e Damasc. 23. *εὔοπτοι ὦσιν*] *εὔοπτά τε* vulgo, *εὔοπτά τοι ὦσι* Arsen. *εὔοπτα ὦσιν* Brux. ex em. 25. *καὶ αὐτῷ τῷ*] *καὶ αὐτὸ τὸ* A. fort. *καὶ δι' αὐτὸ τὸ* 32. *ἂν εἶναι*] om. *ἂν* A

P. 160, 19. *Εὐκλείδου*] ex Erotico; v. Exerc. in Athen. Sp. II p. 27 21. *εὔπιστος*] *εὔπειστος* (non *εὔσπειστος*, ut per errorem impressum est) Lobeck. ad Aiac. p. 140 22. *ἐν*] *ἐν δὲ*? 23. *ἄπιστος*] *ἄσπειστος* Lobeck. 24. *δὲ*] *δή*?

P. 161, 21. *ἐλευθέρως*] *ἐλευθέρῳ* Nauckius 27. *Κρεούσᾳ*] *Κρεούσῃ*

P. 162, 1. *Ἡρακλεῖ*] excidit fortasse sententia de fortitudine ex Hercule F. 132 3. *δ' οὐ δεινὸν*] *δὲ δειλὸν* Porsonus e Plutarcho 6. *κέμμανῆ*] *κάμαθῆ* Grotius 8. *ἔργον*] *ἀργὸν* Musgravius 20. *ἀνδρείᾳ*] *ἀνδρίᾳ* A 31. *ἔσθ' ὅτ'*] *εὔθ' ὅτ'* A, corr. Schneidewin

P. 163, 1. *σεῦ' ἠδ'*] *σεύηθ'* A, corr. Schneidewin 2. *βιαζομένου — βέλεα*] *βιαζόμενος* (e codd. Schowii) — *βέλεσιν* O. Schneiderus 8. *χρυσεόμιτρα*] *χρυσεομίτρα* 9. *ἂ ναίεις*] *ἂν αἴης* ante Grotium 13. *ἔχουσα* ante Grotium 29. *πέσῃς*] *πέσοι βέλος* ex Homero

P. 165, 19. *κρατῶν*] *κρατέων* scribendum erat et 20. *ἡδονέων* 20. *πολέων*] *πολίων*

P. 166, 12. *ταύταν ἢ ἐπὶ ταύταν*] *τὰν ἢ ἐπὶ τὰν* ex A. *ἐπὶ τᾶς* Hirschigius 29. *Κνίκου*] *Κνήμου* ex Thucydide

P. 167, 18. ἐτυράννεις] οὐκ ἐτυράννεις Wyttenbachius

P. 169, 2. τί με ἄγεις] τί με αὔεις correxi Annal. phil. Marburg. 1845 p. 1066

P. 171, 4. Χῖος] Κῷος? 17. προστρατοπεδεύσας] προσστρατοπεδεύσας recte Halmius 18. εἰ] ἦν

P. 172, 7. Δαρεῖος — βασιλεὺς] Δᾶτις — σατράπης Plutarchus 17. Παντελέου] Παντελείου ex A 25. ὑπὸ] ἐπὶ?

P. 174, 21. Θυραίαις] Θυρέας 25. διαφέρειν] Hirschigius διανέμειν. sed v. ad Stephanum Byz. p. 61, 6 et 292, 8 26. 27. Λακεδαιμόνιος στρατιώτης] Λακεδαιμονίων στρατηγὸς Barthius

P. 176, 15. ἀπαλλαχθήσεσθαι] ἀπαλλαγήσεσθαι ex codd. 18. εἰς] πρὸς codd. 26. μηδὲν] corr. errorem typothetae

P. 182, 1. χορὸς accessit e Vind. 3. ὑλακτῶ] ἀλυκτῶ Nauckius 17. λογίζεται] ληίζεται ex schol. Il. B, 833 Nauckius, rectius λωτίζεται Conington 22. ἀνέρος] ἀνδρὸς ex A. versus ex pluribus contractus videtur, nisi scribendum cum Nauckio ἀνὴρ δ' ὃς εἶναί φησιν, ἄνδρ' οὐκ ἄξιον

P. 183, 3. Ἀλκμαίωνος, quod vulgo abest, posui ex Vind. in quo est ακμ ς. Schowius Ἀλκμήνῃ, quod male secuti sunt editores Euripidis. locus ex Alcmaeonis oratione matris caedem defendente desumptus videtur 6. ἀνθρώπων] ἐνθρώσκων? 8. ἀθῶος] ἀθῷος Vind. τόνδε δεῖ μ' υπεκδραμεῖν] τοῦδε δεῖ μ' ὕπερ δραμεῖν? 10. τιθεμένην] recte Dobraeus κειμένην

P. 184, 4. Ἱεροκλέους] Ἱέρακος Pearsonus recte 11. ἄνθρωποι] ἂν ex A 20. βάλλουσιν] βαλοῦσιν 25. παντὶ] πάντως? an πάνυ τι? 30. φάγοιο] φάγοις

P. 187, 7. Ἀλωάδαι] Ἀλεάδαι 9. Ἰνοῦς add. ex Vind. 10. ἂν ἔχῃς add. Valckenarius ex XCIV, 6 18—29. a Gesnero addita esse monuit Gaisfordus

P. 188, 12. εὐνοίας] ἐννοίας A, ἀγνοίας Pflugkius τινός, οὐ] ita A, τινὸς μὴ vulgo, scripsi τι μὴ πονηρίᾳ] πονηρῶς ante Bentleium, πονηρᾶς A 13. τἄρ'] γάρ ante Gaisfordum 18. τὸ θεῖον] τό θ' ὅσιον? 24. τὰ δίκαια] τἄνδιχ' Musgravius

P. 189, 1. Καρχηδονίων] Καρχηδονίῳ 3. Κιθαρισταῖς] Κιθαριστῇ 10. φιλανθρώπους] fort. καλοὺς ἡμᾶς

e Sexto; cf. ad Menandri fab. inc. XXXIV 11. *Φιλήμονος ἐν Παλαμήδει*] *Philiscus Palamede* Grotius, e coniectura an e libris incertum; videtur ex Euripidis Palamede esse 12. *καὶ θεοῖς*] *κἂν θεοῖς*?

P. 192, 11. *ἐκ τοῦ α' πολιτείας* acc. e Vind.

P. 193, 14. *παρά τινος* add. A 26. *πρὸς*] *τῆς πρὸς* e Vind. 28. *Εὐριπίδου Αὔγης*] cf. quae scripsi Annal. Marburg. 1848 p. 1087

P. 194, 7. *τῇ δικαιοσύνῃ*] *τῆς δικαιοσύνης* ex A

P. 195, 20. *τῷ δὲ μὴ δικαίως χρωμένῳ*] haec e codd. Schowii addidi 23. *ἑταίραν*] *μάχαιραν* Halmius

P. 196, 12. *Ἐκ Πώλου*] *Ἐκ τῶν Πώλου* e Vind. id si in suo codice habuisset Photius Bibl. p. 114, 33 non finxisset, opinor, philosophum *Ἔκπωλος* 15. *ἄλλαν*] imo *ἀλλᾶν* 16. *ἀνδρεῖον*] *ἀνδρῆον*? 18. *δηλοφανέστερον*] expectes aut *δηλότερον* aut *ἐμφανέστερον* 20. *αὐταὶ*] *αὗται* 21. *ἕνα*] *ἓν* Orelli 22. *διαστραταγοῦσα*] *διαστραταγοῖσα*? 23. *γένους*] *γε νοῦς* codd. Schowii, *καὶ νοῦς* Iacobsius; *καὶ νῶς* scribendum esse docet cod. A *γένως* (o superscr.) 24. *ψαφιξαμένων*] *ψαφιξαμένω* Iacobsius 31. *γενομένα τε παρ' ἀνθρώποις*] aut corrupta haec sunt aut lacunosa, certe *τε* abundat *εἰ*] *ἢ* ante Galeum

P. 197, 3. *πασᾶν τε*] fort. add. *ἀρετᾶν* *πάντων*] fort. add. *ἀγαθῶν* *κα*] hoc addidi, *ἂν* Gaisfordus 26. *ἐπιθυμοῖ*] malim *ἐπιθυμοίη* 31. *ἀλλ' οὐδὲ*] quae abhinc sequuntur coniunxi cum superioribus, rem ipsam et codd. secutus.

P. 198, 22. *πᾶσα*] *πᾶσ' ἂν* Halmius (corrige erratum *πᾶσα ἂν*)

P. 199, 11. *περὶ τὸ*] *περί τι* Halmius 12. *ἔστι*] *ἔσται* ex A

P. 200, 2. *αὐτοῦ*] malim *σαυτοῦ* 14. 15. *οὐχ — προτάσεων*] haec secludenda

P. 233, 16. *ἐπινικῶν*] *ἐπινικίων*

P. 234, 6. *εἷς τις*] ante Abreschium *εἴ τις* 14. *Κολακείᾳ*] *Κόλακι* 24. *μὴ δίκαια*] cf. ad XCIII, 4

P. 235, 24. *εὑρεῖν* seclusi praeeunte Hirschigio 28. *ἐπιγιγνόμενος*] *ἐπιγινόμενος* *ἐς*] *ἐκ* recte Iacobsius *ἐπιθυμίαν*] *ἐπιθυμίην* 30. *ἀκέσασθαι*] *ἀκέεσθαι* ex A

P. 236, 3. *ἀνύσειεν*] *ἂν στήσειεν* cll. p. 235, 27. *ἂν σβέ-*

σειεν Cobetus anim. ad Orat. p. 61 4. *ἐπιγιγνόμενος*] *ἐπιγινόμενος* 6—9. apud Gaisfordum duo sunt fragmenta, quorum alterum desinit in *χρέεσθαι*. coniungenda haec esse intellexit Halmius, ante quem locus ita edebatur *Τὸ οἰκονομέειν — προνόου. τὸ δὲ μηδ' ὅλως ἐθέλειν ἐστὶ τ. δ. χρέεσθαι. Οὐδέποτε τῶν κτηθέντων — κτήσει*. confirmat emendationem Vind. in quo liquido scriptum est *οὐ δεποτεω των κτηθέντων*. easdem emendationes post Halmium fecit Cobetus l. l. 10. *τοῦ αὐτοῦ* add. Vind. 11. *φειδεύμενοι*] *φιλεύμενοι* ante Valckenarium 26. *Μίδου*] *Μίδεω* 27. *ψυχὴν*] *τύχην* Valckenarius *κεκτῆσθαι*] addendum videtur *λέγω*, nisi cum Valckenario scribere praestat *Ἶρον* ut habent fere codd., ceteris *ἢν — κεκτῆσθαι* deletis

P. 237, 5. *Σιμωνίδης*] malim *Σιμωνίδην* cum Nauckio 23. *Χρυσοῦ*] hoc deleto (potest enim ex praecedente *κρίτου* natum esse) et insertis post *ἔχειν* verbis *οὐκ ἔχοντα δέ*, satis probabilem sententiam restituas, non aptam tamen ad tituli huius argumentum *τί*] imo *τι* 26. *κόρῳ*] *λόγῳ* Iacobsius, *οὔρῳ* probabilius Hirschig.

P. 238, 3. *ἐκείνους μὲν γὰρ*] *καὶ ἐκείνους γὰρ* ex A, quo restituto iam apertum est verba *τούτους δ' ὕδατος*, quae inter *πλείονος* et *ἀμφοτέρους* vulgo leguntur, a codd. autem absunt, ab interpolatore addita esse 9. *τοὺς ἀναγκαίους*] *τὰς ἀνάγκας*? *σκύλων*] *σύλων* ex A 20. *εἰ στασιάσει*] *ἢ στασιάσαι* e codd. 23. *αὐτῷ*] abundat 24. *ὁ Γυγὼν*] *ὁ συνὼν* Leopardus 25. *Κεινέας*] rectius *Κινέας* 27. *τοῦ*] *τ̃* Vind. i. e. *τῶν*

P. 239, 16. *ἐν δ' ἀπομνημονευμάτων* acc. ex Vind.

P. 240, 17. *ἐσχάτου γήρως*] *ἐσχατογήρως* Valckenarius

P. 241, 1. *τέκνοις*] *τέκνοισι* 4. 6. *χρῄζει*] *χρηίζει* 7. *κακοηθίη*] *κακοθηγίη* vulgo; illud fere codices: neutrum ferri potest. fort. *κακογηθίη* ex B m. s. 11. *καὶ πολύπονον*] seclusi, om. A 15. *πληρώσεως, ἢ παρουσίας*] *ἢ πληρώσεως καὶ παρουσίας* recte Hirschigius 16. *καὶ τοῦ μὴ αἰσθάνεσθαι*] haec in marg. habet A. secludenda cum Hirschigio 28. *Αἰσωπίῃ*] *Αἰσωπηίῃ* vel *Αἰσωπείῃ* *γιγνομένη*] rectius *γινομένη*

P. 242, 4. *Ἰταλικοῦ*] *Ἰταλικῶν* 10. *ἐὰν*] *εἰ*? *ψέλλια*] *ψέλια* e Vind. 16. *χρυσίου*] *χρυσοῦ* ex A

P. 243, 10. ανοήτων] ἀνεκτῶν ante Gaisfordum 11. ὑπὲρ — εὐχῇ] haec seclusi; vidit etiam Iacobsius 26. ὡς Νίκανδρος — γράφουσιν] fort. docti glossatoris annotatio marginalis 30. ἀλλήλους] ἄλλους Iacobsius 31. προαπέθανον] πρῶτον ἀπέθανον ex A

P. 244, 7. ἐφίεται] volui ἐφίηται cum Wakefieldio 14. ὁδοὺς βιαίους] δυσβάτους Nauckius 17. ἐπαχθὴς] ἀπεχθὴς Nauckius 28. Μενάνδρου] Μιμνέρμου

P. 245, 1. Ὀλυμπιάδος] nulla fuit poetria Olympias; cod. A Ὀλυμπια^δ, Trinc. Ὀλύμπιαδου. lemma hoc fort. ad Pindari Olymp. I, 28 (βροτῶν φάτις ὑπὲρ τὸν ἀλαθῆ λόγον κτἑ.) spectat, ut is ipse locus exciderit; tum sequebatur ἀλάθεια θεῶν κτἑ. qui item Pindari locus videtur 2. μόνη — συνδιαιτωμένη] μόνα — συνδιαιτωμένα 5. ἀρχὰς ante Gaisfordum

P. 246, 5. χρῶ] χῶ e Sophocle et codd. Schowii 28. ἐκ τοῦ add. Vind.

P. 247, 14. ἀλήθεια] malim ἀληθεύειν 28. πόλει] rectius πόλι ξυγχωρεέτω μηδενὶ πλὴν] ξυγχωρεέτω, μηδενὸς πλὴν Iacobsius iuvante cod. A qui habet μηδὲν et msc. Schowii qui habent μηδενός. praeterea idem in Lectt. Stob. p. 61 ξυγχωρεέτω μηδενί, μηδενὸς πλὴν recte 30. τε] del. videtur ὠφελείη] ὠφελίη, quo ducit φιλίη in cod. A

P. 248, 1. ἀναγκαίης] recte ἀναγκαίη Koenius ad Greg. p. 393 et Iacobsius 7. ἢ] καὶ ex A 18. νοῆσαι] νοήσεται codd. Schowii Τάτιε] fort. ubique Τάτ scribendum, habetque id h. l. Trinc. 25. τῆς γραφῆς] τῇ γραφῇ e codd. Schowii 28. καὶ ὦτα] haec acc. ex cod. Schowii

P. 249, 3. ἀληθῶς] ἀληθὲς 9. ἐὰν] ἂν ex B 17. ἀκρότατον] ἄκρατον ex B 18. μὴ ὑπὸ] μήτε ὑπὸ 20. ἀγαθὸν] fort. del. 23. μήτε] μηδὲ πῶς] πῶς ἂν 27. 28. ἀληθὴς] ἀληθὲς?

P. 250, 6. 7. ἀληθὲς τί εἶναι. Τὸ μένον Nauckius 31. γίγνεσθαι] φθείρεσθαι Nauckius

P. 251, 18. ἐκ τῶν Ὁμήρου] suspicor Hermippi esse, cuius συναγωγὴν τῶν καλῶς ἀναφωνηθέντων ἐξ Ὁμήρου laudat Stobaeus Flor. V, 59

P. 252, 12. Ἀκρισίῳ add. ex Vind. 13. τοῦ αὐτοῦ

Ἀλεάδαις add. ex Vind. 20. δ' ἑλέσθαι] ἑλέσθαι codd. λέγεσθαι Nauckius 26. πιθανὸν] ψεῦδος Valckenarius 27. πιθανώτερον] πιθανωτέραν Salmasius

P. 253, 2. πού] πού τι Grotius

P. 255, 25. ἐκ τοῦ σοφιστοῦ acc. e Vind.

P. 259, 4. σφάλλῃ] σφαλῇ fere codd. 7. Ἰνοῦς acc. e Vind. 11. Τημενίσιν] Τημενίδαις 15. τῷ λαλοῦντι] τὠγκαλοῦντι Cobetus 17. χειροῖν] χεροῖν ex Vind. 18. εἰς] ἐς

P. 260, 9. μέχρι δὲ] δὲ om. codd. praeter B qui habet a m. s. 27. ἐπ' αὐτόν] ἐπεὶ αὐτόν ex A

P. 261, 9. ὀθνεῖα] ὀθνήια? 28. ἵνα σώσω fort. del.

P. 262, 1. ἐπεδίδου] ἐπεὶ ἐδίδου? εὐτυχίαν] ἐντυχίαν ex B 21. ἐπικαλύπτειν] καλύπτειν ex A

P. 263, 5. Ἀκαδημίᾳ] Ἀκαδημείᾳ 6. μὴ λόγων] meliore ordine A μὴ γένοιτο τοσαύτη λόγων ἀπορία

P. 264, 6. κρίνωσιν] κρινοῦσιν e B m. s. 7. μέλι] μὲν ante Wyttenbachium 18. τἀληθῆ] τἀληθέα 19. παντὸς] πάντα recte Iacobsius

P. 265, 3. πρὸς Ὧρον] Vind. πρ̂ om. Ὧρον, quod firmat Gaisfordi coniecturam: ἐκ τῆς Ἴσιδος πρεσβείας 18. κλεῖθρον] κλῆθρον 27. Νικολάου] de huius ecloga v. Fragm. Com. graec. IV p. 579.

P. 266, 17. μαθὼν] corrigunt παθὼν 21. ζηλοῖς] vulgo κλοῖς, Vind. ηλοῖς, corr. Valckenarius 25. ἀνώδυνα] A et Vind. ἄνω δία τ', unde posui ἀνοδίᾳ μασσωμένους] μασωμένους 27. ἐν τούτοισι δεῖ] εὔτονόν σε δεῖ?

P. 267, 4. ὁμιλεῖ] ὁμίλει ex B. versus hic ante 1. transponendus videtur 5. ταράττεται] παρατάττεται ex A 6. δείπνῳ] δειπνῶν 19. ἐκτρέφων] τρέφων Hirschigius

P. 268, 4. καταλύουσι] κατεσθίουσι ex A et Vind. κατανύουσι Iacobsius 8. συνήθη] νόσον addit Hirschigius 27. κολακεύουσι] κατανεύουσι?

P. 269, 11. λαγωοὺς] Socrates λαγὼς dixerat 12. πολλοὶ] κόλακες Hirschigius

P. 270, 6. πᾶσιν] πάσχειν 14. ἔνιοι] μὲν ἔνιοι σώζειν] ζῶσιν Grotius 16. Μενάνδρου] Φιλήμονος ex codd.

P. 271, 7. ζητεῖς] αἰτεῖς, et sic etiam Hirschigius 25. ἤ] ζ'

P. 272, 3. ἐὰν] ἂν οἷς ἔχωμεν, τοῖς γε] οἷς ἔχομεν τούτοισι scripsi, rectius tamen Porsonus οἷς μὲν ἔχομεν, τοῖσδε 4. ζητοῦμεν] ζητῶμεν Porsonus 11. vulgo praemittitur τοῦ αὐτοῦ i. e. Ἀπολλοδώρου. omittit lemma Vind. quo confirmatur quod Com. fragm. IV p. 456 dixi, non comici poetae haec esse sed scriptoris prosaici ἐγὼ γὰρ] ἔγωγ᾽ ἂν 16. οὔποτ᾽ αὐτὸν] αὐτὸν οὔποτ᾽ e codd. 23. δόμοις — πληρουμένοις] δόμους — πληρουμένους ex A

P. 273, 2. κέρδαινε, αἰσχύνου ante Bentleium. 2—4. δέ μοι τὸ μὴ δικαίως εὐτυχεῖν. ἔχει φόβον ὁ τρισκακοδαίμων] v. Com. graec. fr. IV p. 256 7. ἑψῆν] ἔχειν Vind. 21. εἰς ἅπαντα] εἰς πάντα? an cum Trinc. et B ἅπαντα? 23. ἃ δὲ μὴ σεαυτοῦ] εἰ δ᾽ οὐ σεαυτοῦ ex B, sed v. Com. graec. fr. IV p. 107 27. ἐγώ σέ] ἔγωγε Tyrwhittus

P. 274, 7. γνώμῃ] γνώμῃ μὴ ante Valckenarium 11. ἀπεστερέαται] ἀποστερέαται ante Schaeferum, ἀπεστερέεται Vind. 20 et 28. τοῦ αὐτοῦ acc. e Vind. 23. μόνου] μούνου 24. τυχεῖν ἑνὸς] μὴ ἀτυχεῖν ἑνὸς Iacobsius 29. χρηστή, ἐν καιρῷ δὲ] χρηστὴ ἐν καιρῷ, ἐν καιρῷ δὲ Iacobsius

P. 275, 7. ὡς add. Hirschigius, οἷον Iacobsius 22. Θεοκρίτου acc. e Vind. 27. καὶ (τοῦ θησαυρίζειν) αὐτοῦ] seclusa verba delevit Valckenarius τούτου] μόνου add. Vind. 28. προσθείη, χρήματα] προσθέῃ πρήγματα, quorum prius, προσθέῃ, etiam Halmius 29. εἰς] ἐς 30. μήκοτε] μηκέτι? ἀποφήνειε] ἀποφήναιο, Halmius ἀποφήνῃ

P. 276, 15. τοῦ φιλαργύρου] τῶν φιλαργύρων ex A 19. εὐφρανθησόμενον] εὐφραινόμενον ex A

P. 277, 5. ἀπαντήσας δὲ] delevit δὲ Sauppius; nisi fuit δὴ 14. ὅταν] ὅτῳ Sauppius 15. βούληται] βούλεται Sauppius 16. δὲ add. Sauppius 28. δέοντος] δοθέντος Nauckius

P. 278, 1. ὅστις] abhinc novum fragmentum ordiendum 3. Οἰδίποδι] acc. e Vind. 5—9 ad unum fragmentum coniungit Vind. ut suspicatus erat Nauckius Philol. IV p. 557. post primum versum indicavi lacunam 7. ἡ εὐτέλεια] οὖσα ἡ εὐτέλεια ante Grotium 9. Ἐρεχθεῖ add. Vind. 11. διωκάθειν] διωκαθεῖν 18. κτωμένου] χρωμένους ante Valckenarium

P. 279, 1. *τῶν — ἐπιστολῶν*] rectius fort. B *τῆς — ἐπιστολῆς*, quo ducit etiam A qui habet *του* (supra scr. *ῆς*)

P. 280, 3. *προεκφερόμενος*] *παρεκφερόμενος* recte Iacobsius

P. 281, 5. *χρημάτων*] *χρήμασιν* Gaisfordus in notis 22. *Χρύσιππος*] ante hoc nomen excidit numerus 29 24. lemma *Αἰλιανοῦ — ἱστορίας* vulgo n. 29 adscriptum huc rettulit Perizonius 26. *ἐκέκραγε*] ante Gaisfordum *κέκραγε*, qui voluit *ἐκεκράγει*, pro quo A *ἐκέκραγε*

P. 282, 2. *ὑπό τινος* add. ex A 30. *ὀνείδει ἢ*] *ὃν εἰδείη* e Xenophonte

P. 284, 26 et 30. *γιγνόμενα — γίγνοιτο*] *γινόμενα — γίνοιτο*

P. 285, 3. *ἡδονῶν*] imo *ἡδονέων* 8. *τοῦ ζώειν* secludi voluit Gaisfordus 23. *ἀνθρώπῳ· τοιαύτην δὲ εἶναι*] *ἀνθρώπῳ τῆς* [*μὴ*] *τοιαύτης. εἶναι δὲ* Gaisfordus in notis, partim e codd. qui habent *τῆς τοιαύτης εἶναι* pro *τοιαύτην δὲ εἶναι*

P. 286, 13. *εἴη*] *ἔφη* Halmius 16. *εἴη ἂν*] libri *εἰς πᾶν* et *εἶ πᾶν*, corr. Gatakerus 17. *ψυχὴ*] *ξηρὴ ψυχὴ* ante Wesselingium 30. *φάρυγγι*] *φάρυγι* e Vind.

P. 287, 12. *δύναμαι καὶ τράγου*] ingeniose et vere ut videtur Hirschigius *δυναίμαν κα τραγεῖν* *δέ γε*] om. *γε* A 26. *πόμασι*] *πώμασι*

P. 291, 19. *κακῶς*] *λόγους* recte Plut. et Clemens 23. *πέλας*] *πολλοὺς* ex A et Vind. 27. *καὶ*] *τοι* ex Athen. et Vind. qui habet *τιθὴ* (supra scr. *δή*) i. e. *τοι*

P. 292, 4. *πιόντος*] *πίνοντος* ante Bentleium, *πίοντος* Vind. 6. *τί δὴ*] *δὴ* delet Grotius, cf. Com. graec. fr. IV p. 48 10. *τοῦ αὐτοῦ*] hoc addidi ex Vind. qui confirmat quod conieceram l. l. p. 49. sequens fragm. Nauckius cum hoc ita coniungit

α΄. Πονηρὸς οἶνος οὗτός ἐστι, Νικοφῶν.
β΄. ἅπας πονηρὸς οἶνος ὁ πολύς ἐστ' ἀεί.

P. 293, 10. *τοῦ αὐτοῦ* acc. e Vind.

P. 294, 2. *λέγοντα νῦν*] *νῦν* add. Gesnerus; malui *λέγοντα καὶ* 3. *ὥστε πρὸς σέ με*] *ὥστε πρὸς ἐμὲ* cod. A, *ὡς τὸ πάρος σε* Iacobsius, ego Com. gr. IV p. 476 *ὡς ἔμπροσθε*, Cobetus utroque iuncto *ὡς τὸ πρόσθε* 7. *αὐτὴ*]

αὕτη 11. *δὲ*] *τε* 17. *ἄλλο νεόφρων*] *ἀλλ' ἐνεόφρων* Valckenarius 22. *μὲν θήρης*] *μενθήρης*, de quo cf. Anal. Alex. p. 365.

P. 295, 29. *ὑγιείην*] *ὑγιαίνειν* ex AB *εὐχαῖς*] *εὐχὴν* fere codd. i. e. *εὐχῇ* 30. *ἑαυτοῖς*] *ἑωυτοῖσι*

P. 296, 2. *ὑγείης*] *ὑγιείης* 14. *πῶς ἂν οἰνόφλυξ*] *ὑπό τινος οἰνόφλυγος* ex A 16. *ὑπ' αὐτοῦ*] *ὑπ' αὐτῶν* ex A. fort. *ὑπ' ἄλλων μεθυόντων* 17. *Ἀνάχαρσις ἔφη*] *ἔφη* om. A 18. *εἰ φησὶν*] *εἰ ἔφησεν* ex A 21. *ὅσοι* fort. *ἀνόητοι ὅσοι* 22. *βρώσεσιν ἢ πόσεσιν ἢ ἀφροδισίοις* vulgo 23. *πᾶσιν* — *βραχεῖαι* vulgo 24. *ἐσθίωσιν ἢ πίνωσιν* vulgo 25. *ἐπιθυμεῖν* vulgo 28. *ἐστιν* — *βραχεῖα* vulgo 29. *αὖθις* — *δεῖ* vulgo

P. 297, 7. *φεύξωνται*] *φεύξονται* Halmius 28. *ἀσκήσεως*] sequuntur vulgo *καθόλου μὲν ἴσως τὸ σωφρονεῖν*, quae B omittit et Gaisfordus seclusit

P. 298, 9. *παραπλεῖον*] *ἐπιπλεῖον* dubitanter Gaisfordus 28. *σίτων*] *σιτίων* e codd.

P. 299, 6. *θηρώμενοι*] *θηρώμενος* Nauckius

P. 301, 3. *οὐ μεμάθηκας*] *οὐκ ἔμαθες* e codd. 22. *πρὸς αὐτῆς*] *ὑπ' αὐτῆς* e Voss. in quo est . . *π' αὐτῆς*

P. 302, 10. *μὴ*] *μᾶλλον ἢ?* 13. *ἀλυσιτελῶς*] fort. add. *δ'* 15. *Ῥούφου ἐκ τῶν* add. ex Vind. 17. *ὑμῶν*] *ἡμῶν* ex Vind. et Trinc.

P. 303, 6. *αὐτῷ ἵνα, ἐν*] *αὐτῷ καλῶς ἐπ'* ex Epicteto 16. *ἔχουσιν*] *πάσχουσιν* Hirschigius

P. 304, 6. *προσέλθοι*] *προέλθοι?* 24. *γε*] *σὲ* codd. *παλαιοὺς*] *πολλοὺς*, quod etiam Hirschigius voluit 30. *ἀντιδήξηται*] *ἀντιδήξεται* ex A 31. *ἀντιποιήσῃ*] *ἀντιποιήσει*

P. 306, 22. *οὐδὲ εἷς φύεται*] *οὐδεὶς φαίνεται* ex emend. Grotii, quem imprudens secutus sum; cf. Fragm. com. gr. IV p. 252. fortasse scribendum *ὀργῇ πάρα λογισμός ποτ' οὐδεὶς φύεται* 24. *τι*] 27. *τὴν ὀργὴν*] *τῆς ὀργῆς* libri omnes, cf. Vind. Strab. p. 211

P. 307, 3. *Μενάνδρου* accessit e Vind. 12. *νόμον*] *νόον* Ahrens 20 et 21. separavi haec a praecedenti versu

P. 308, 8. *ἡβάτω, γέρον*] *ἡβάτω γέρων?* 9. *νυνὶ δεῖ*] *νῦν ἡδὺ* optime Nauckius, sed de hiatu comicis fortasse con cesso (Com. fr. III p. 81) in Sosiphane dubito; an igitur *νῦν*

ἡδύ γ'? Grotius νῦν δεῖ γὰρ 26. ἔντι γε] ἔστι δὲ omnes praeter B a m. s.

P. 309, 1. Ἀρχελάῳ acc. ex Vind. 3. εἰς αὐτὸν] εἰς ταυτὸν 12. ἐνδόκοισιν] e coniectura Valckenarii; ἐν δοκοῖσι codd. 13. μηδὲ] μήτε 25. αἳ δὲ ἀνούστερ' ἔτι] Gaisfordus αἳ δ' ἀνούστεραι πολὺ, rectius Cobetus αἳ δ' ἀνουστέρως ἔτι 26. καρτερόν] κατὰ τὸ καρτερόν Porsonus, rectius Bamberger et postea Cobetus πρὸς τὸ καρτερόν 27. ὅστις] coniunxi cum superioribus, ut est in codicibus.

P. 310, 3. ἢ 'ξαμαρτεῖν] ἐξαμαρτεῖν Porsonus 39. τοῦ αὐτοῦ acc. e Vind.

P. 312, 16. ἡ φυλακὴ] ἡ om. codd. 17. μείζω] μεῖζον e Plutarcho

P. 313, 2. ἄπονον] ἄτοπον e Brux. ut coniecerat Gaisfordus ἀφίησι] malim ἐφίησι προσλαβεῖν] προλαβεῖν, quod confirmat Brux. 18. τοῦ] τῶν e Trinc. 30. δυσμενοῦς] imo δυσμενέος

P. 314, 23. νόον] νοῦν 26. δὲ μή, οὐ] δὲ οὔ, οὐ Iacobsius, δι' ἃ vulgo, δ' οὐ Vind. 29. τοῖς] τοὺς

P. 315, 11. νόμιζε] ἐνόμιζε ex A 17. οἳ acc. ex A 23. διορθούμενον] διωθούμενον Wyttenbachius 25. τὰ προσφερόμενα] τὰ om. A

P. 316, 8. προαποπλούντων] προαποτελούντων Halmius, posui προαπλούντων ex Vind. 16. Κοτταβιζούσαις] Κωνειαζομένων, de quo cf. Com. gr. fr. IV p. 156 17. ἴδῃς] εἰδῇς? 24. ἄρ'] ἂν ante Porsonum 25. 27. Χίλωνος— Χίλωνι] Χείλωνος et Χείλωνι Vind.

P. 318, 17. ἀνέρρωσεν] ἀνερρώσθη

P. 319, 9. ἀγνοεῖ] ἀγνοῇ

P. 332, 5. μηδ' αὖ] μήτ' αὖ 16. πέτρινον] πτέρινον Casaubonus

P. 333, 22. τοὺς] delet Bevingius

P. 334, 6. ἂν] ἣν

P. 335, 11. βαρὺ τὸ] βαρύ τι ci. Wagner 25. ὅταν] ὅταν δ' 26. λαμπρῷ] λαμπρόν

P. 336, 1. κρίνει] κρινεῖ 7. τοῦ αὐτοῦ Αὔγης acc. e Vind. ubi Αὐγῆς. cf. Ephem. Marb. 1846 p. 1087 8. τοῦ αὐτοῦ Ἀλκμαίωνι acc. e Vind. ubi est ἀλ^x.

P. 337, 1. ἢ εἰς] ἢ om. cod. Schowii 10. Βάκχαις acc.

e Vind. 26. τάλαντ' ἐκεῖνα] τάλανθ' ἱκανὰ ante Grotium 27. ἂν ἀποθάνῃς] cf. Com. gr. fr. IV p. 157 28. μηδ'] μήτ'

P. 338, 13. Χορός acc. e Vind. 14. τὴν θνητὴν] τὴν om. A φύσιν] φύσιν, εὖ? nisi θνητὴν φύσιν ex θνητοὺς φύντας corruptum est 28. ἂν δ'] δ' om. Vind. 30. ἧς] corr. errorem ἧς χρόνων] τόκων?

P. 339, 5. τὰ ὀπίσω] τὠπίσω 8. τίν'] τι B, fort. τις 10. σεμνύνῃ] σεμνύνῃς nescio quis 15. πονῆσαν εὐτύχησεν.] πονήσαντες εὐτύχησεν A. scripsi olim Com. gr. fr. IV p. 143 πονήσαντ' εὐτυχεῖν, nunc posui πονήσαντας τυχεῖν, quod etiam Pflugkius voluit Sched. crit. p. 34 16. εὐδαιμονία εἴωθεν] εὐδαιμονίας εἴωθ'. vulgo hic versus cum lemmate Εὐριπίδου a praecedente separatus est; quod Com. gr. l. l. suspicatus sum, confirmat nunc Vind. qui lemma omittit et locum cum superiore coniungit ὑπερηφανίας] ὑπερηφανίαν? 28. προσέταξε καὶ τοὺς ἰδίους αὐτοῦ] προσέταξεν αὐτῷ τοὺς ἀγροὺς τοὺς ἰδίους ex A

P. 340, 2. οἳ περὶ] οἵπερ Halmius

P. 341, 1. εἰς] ἐς 2. κρείσσονι] imo κρέσσονι

P. 342, 11. οὐθεὶς ἐπ' αὐτοῦ] οὐδεὶς ἐφ' αὐτοῦ 15. ἐστὶ] ἔσται e codd.

P. 343, 3. ἢ τοὺς ὑφάντας] ἢ om. Vind. 16. ἱστορίας γ' acc. e Vind. 19. ἀνελοίατο] ἂν ἑλοίατο 22. ἐν ταυτῷ acc. e Vind. 29. ἐφ'] πρὸς ex A

P. 344, 1. μᾶλλον] ἄλλων Wyttenbachius

P. 347, 13. διακναιόμενοι] διακαιόμενοι e codd. 14. ἢ] καὶ A p. m.

P. 350, 21. ἀνάρετος] ἀνάρατος A 22. ὠδυνάσεις] ἃ δὲ μνᾶσις (μνᾶστις) Grotius θανάτοις] θνατοῖς Grotius εὐποτμότατε] εὐποτμοτάτα 27. Σάτυροι] Σατύρων 28. καὶ τὴν] καὶ om. A πάντ'] ἅπαντ' Wagner

P. 352, 6. αὐτὸς] αὐτοὺς ex A 8. ὡς] addidit Gaisfordus 22. ἱστορίας ς' acc. ex Vind.

P. 354, 16. γὰρ] addidit Grotius 21. δ'] addidit Grotius

P. 355, 2. νῦν] δὴ Voss. 13. πρός με πρὸς θεῶν θεοὺς] ita Grotius; revocavi librorum scripturam 22. πέλας ᾖ] περάσῃ? ἢ καὶ τῷ] libri ἢ καὶ τό, fort. ἢ διὰ τὸ vel ἢ καὶ [διὰ] τὸ

P. 356, 6. *τὸν μὲν γὰρ*] *γὰρ* libri om.

P. 357. Haec quantivis pretii ecloga quem auctorem habeat incertum est. Scriptores ionica dialecto usos Stobaeus praeter Heraclitum et Democritum ad partes vocat duos, Anaxarchum (Abderitam?) et Eusebium. Possit videri Eusebii esse, cuius locum de periurio posuit Stobaeus eiusdem tituli no. 13. Sed Eusebius in ceteris apud Stobaeum excerptis eam secutus est et dicendi et disserendi rationem, a qua nostrae eclogae color vehementer abhorret. Itaque non incredibile est esse Anaxarchi, cuius e scriptis quae attulit Stobaeus XXXIV, 19, ex libro *περὶ βασιλείας* ducta esse e Clemente Alexandrino constat. Atque ad hunc librum, in quo locus de fide servanda tractari potuit, fortasse ecloga nostra referenda est. 1. *βαναύσῳ τέχνῃ προσθάλψαντες*] ita ex A editum, vulgo *βασάνῳ* pro *βαναύσῳ*, B in marg. e nescio cuius coniectura *βασάνῳ προσάψαντες* (*προσθλίψαντες*?) 6. *ὅρκου ἐπιορκίης*] *ὅρκου ἐπιορκίην* Gesn. 8. *καθεστῶτος*] imo *κατεστεῶτος* 11. *ἡγείσθω*] *ἡγεέσθω* *διεστῶτας*] malim *διεστεῶτας* 12. *οὓς περσῶν ἐκτὸς ἀμηρύτους*] fort. *οὕσπερ ἐὼν ἐκτὸς* [*ἄτης*] *ἀμηρύτους* vel simile quid *ὁ θεὸς*] *ὁ ἄθεος* scr. e Damasc. 13. *παρεπιδημεῖν*] *παρεπιδημέειν* *ζώοις*] *ζωοῖς* vel *ζωιοῖς* volebam, non *ζωίοις*, ut male editum est 15. 16. *παρεπιδημίαν*] *παρεπιδημίην* Damasc. 17. *πόλεως*] imo *πόλιος* 18. *δὲ*] *δὴ* 19. *οὕτως ἔχοντα*] post *οὕτως* excidit fortasse *νόου* vel *διανοίης* vel simile quid 20. *ὡς τὰ*] *λώιστα* 23. *παραθέσει*] rectius *παραθέσι* 24. *εἰς*] *ἐς* Dam. *ἀμφιβολίην*] *ἀντιλογίην*?

ων

25. *μὲν οὖν*] *μὲν οὖν* A, hinc scripsi *μὲν ὦν* 27. *εἰς*] *ἐς* 30. *ἐδέσμευε*] *ἐδέσμευσε* Trinc. et Dam. 30. *κρύπτοι*] *κρύπτοιτο* A et Dam. 31. *παρῆν*] imo *παρέην* 32. *ἔκλυσιν*] dubitanter scripsi *ἤλυσιν* *διήρειδε τὸν*] *διηρείδετο* Iacobsius

P. 358, 1. *νάρθηκα*] *νάρθηκι* Iacobsius *νοσευτίην*] *αἰτίην* Valckenarius, *νοσηλείην* Iacobsius; locus nondum persanatus 2. *τοῦ νεὼ*] *τοῦ θεοῦ* *ποιεῖσθαι*] *ποιέεσθαι* 5. *δὲ τῶν ἑῶν χερῶν*] Dam. *δ' ἐν τῶ νεῶ χερῶν* 7. 8. *ὅπερ — ψεῦδος*] haec fort. sine causa seclusi 8. *βαρυνθεὶς*] fort. addendum *δὲ* 10. *ἔρευ*] *ἐρρύη*, quod iuvat

Dam. qui ἔρρις habet   παρακαταθήκης] hoc ex uno B dedit Gaisfordus, ceteri libri παραθήκης   11. οὖν] ὦν   14. ὅπῃ δὴ] Gaisfordus in notis ὁπηδεῖ, nisi fuit ὁποίῃ δὴ et in seqq. ἁπαντοίῃ scribendum est cum Iacobsio pro παντοίῃ   15. παντοίῃ τύχῃ] τύχῃ παντοίῃ ex A et Dam. φορὴ] φορῇ Dam.   15. αἰωρουμένη] αἰωρευμένη

Scrib. Berolini m. Maio MDCCCLV.

E R R A T A.

P. 1, 14. ὑπο pro ὑπὸ   10, 31. φιλεταῖρον pro φιλέταιρον   61, 16. post ἀεὶ comma delendum   127, 21. post διήγαγον pone comma pro signo interrogationis, et 21. vice versa   130. dele uncum et pone 31. ante ἀβίους   135, 1. ἀκρασία pro ἀφρασία   138, 4. μικρά, πρὸ pro μικρὰ πρὸ   166, 12. τᾶς pro τᾶς   196, 21. ἃ pro ἅ   274, 11. dele comma post χρέεσθαι

EX PHOTII BIBLIOTHECA

COD. CLXVII p. 112 Bekk.

Ἀνεγνώσθη Ἰωάννου Στοβαίου ἐκλογῶν ἀποφθεγμάτων ὑποθηκῶν βιβλία τέσσαρα ἐν τεύχεσι δυσί· προσφωνεῖ δὲ ταῦτα, δι' ὃν καὶ τὴν συνάθροισιν φιλοπονῆσαι λέγει, Σεπτιμίῳ ἰδίῳ υἱῷ. ἡ δὲ συναγωγὴ αὐτῷ ἔκ τε ποιητῶν καὶ ῥητόρων καὶ τῶν κατὰ τὰς πολιτείας λαμπρῶς βεβιωκότων ἐγένετο, ὧν, ὡς καὶ αὐτός φησι, τῶν μὲν τὰς ἐκλογὰς τῶν δὲ τὰ ἀποφθέγματα καί τινων ὑποθήκας συλλεξάμενος, ἐπὶ τῷ ῥυθμίσαι καὶ βελτιῶσαι τῷ παιδὶ τὴν φύσιν, ἀμαυρότερον ἔχουσαν, πρὸς τὴν τῶν ἀναγνωσμάτων μνήμην στείλειεν.

Ἔστι δὲ αὐτῷ τὸ μὲν πρῶτον βιβλίον φυσικόν, τοῦ δὲ δευτέρου τὸ μέν τι κατ' ἀρχὰς μέρος λογικόν, τὸ δὲ λοιπὸν καὶ πλεῖστον ἠθικόν· καὶ τὸ τρίτον δὲ καὶ τὸ τέταρτον πλὴν ὀλιγίστων ἠθικὰ καὶ πολιτικά. καὶ γὰρ τὸ μὲν πρῶτον ἔχει μὲν κεφάλαια ξ', οἷς καὶ τὰς τῶν παλαιῶν ἁρμόζει χρήσεις καὶ χρείας· ταῦτα δέ εἰσι μετὰ τὸ

Περὶ θεοῦ διαλαβεῖν, ὅτι δημιουργὸς τῶν ὄντων καὶ διέπει τὸ ὅλον τῷ τῆς προνοίας λόγῳ.

δεύτερον Περὶ τῶν νομιζόντων μὴ εἶναι πρόνοιαν, καὶ ἑπομένας ταύτῃ θείας ἐπὶ τῇ τοῦ παντὸς διοικήσει δυνάμεις.

εἶτα Περὶ δίκης παρὰ τοῦ θεοῦ τεταγμένης ἐποπτεύειν τὰ γινόμενα ὑπὸ τῶν ἀνθρώπων, τιμωρὸν οὖσαν τῶν ἁμαρτανόντων.

καὶ Περὶ ἀνάγκης θείας καθ' ἣν ἀπαραιτήτως τὰ κατὰ τὴν τοῦ θεοῦ γίνεται βούλησιν.

Περί τε εἱμαρμένης καὶ τῆς τῶν γινομένων εὐταξίας.

Περί τε τύχης ἢ ταυτομάτου.

καὶ Ὅτι ἀλόγιστος ἡ φορὰ τῆς τύχης.

Περί τε χρόνου οὐσίας καὶ μερῶν, καὶ πόσων εἴη αἴτιος.

καὶ Περὶ Ἀφροδίτης οὐρανίας καὶ ἔρωτος θείου.

δέκατον Περὶ ἀρχῶν καὶ στοιχείων καὶ τοῦ παντός.
εἶτα Περὶ ὕλης.
Περὶ ἰδέας.
Περὶ αἰτίων.
Περὶ σωμάτων καὶ περὶ τῆς τούτων τομῆς καὶ περὶ ἐλαχίστου.
Περὶ σχημάτων.
Περὶ χρωμάτων.
Περὶ μίξεως καὶ κράσεως.
Περὶ κενοῦ καὶ τόπου καὶ χώρας.
Περὶ κινήσεως.
εἰκοστὸν δὲ Περὶ γενέσεως καὶ φθορᾶς.
Περὶ κόσμου καὶ εἰ ἔμψυχος καὶ προνοίᾳ διοικούμενος, καὶ ποῦ ἔχει τὸ ἡγεμονικόν, καὶ πόθεν τρέφεται.
Περὶ τάξεως τοῦ κόσμου, εἰ ἓν τὸ πᾶν.
Περὶ τῆς οὐρανοῦ οὐσίας καὶ διαιρέσεως.
Περὶ οὐσίας ἄστρων καὶ σχημάτων, κινήσεώς τε καὶ ἐπισημασίας.
Περὶ οὐσίας ἡλίου καὶ μεγέθους σχήματός τε καὶ τροπῶν καὶ ἐκλείψεως καὶ σημείων καὶ κινήσεως.
Περὶ σελήνης οὐσίας, μεγέθους καὶ σχήματος φωτισμῶν τε καὶ περὶ ἐκλείψεως καὶ ἐμφάσεωςκαὶ περὶ ἀποστημάτων καὶ σημείων.
Περὶ γάλακτος.
Περὶ κομητῶν καὶ διαττόντων καὶ τῶν τοιούτων.
Περὶ βροντῶν, ἀστραπῶν, κεραυνῶν, πρηστήρων, τυφώνων.
τριακοστὸν δὲ Περὶ ἴριδος, περὶ ἅλω καὶ παρηλίου καὶ ῥάβδων, καὶ δὴ καὶ περὶ νεφῶν, ὀμίχλης, ὑετῶν, δρόσου, χιόνος, πάχνης, χαλάζης.
Περὶ ἀνέμων.
Περὶ γῆς, εἰ μία καὶ πεπερασμένη, καὶ [περὶ] ποίου μεγέθους, καὶ περὶ θέσεως αὐτῆς, καὶ περὶ σχήματος γῆς, καὶ πότερα μένει ἡ γῆ ἢ κινεῖται· περί τε σεισμῶν γῆς, καὶ περὶ θαλάττης, πῶς ἄμπωτις καὶ πλημμῦραι γίνονται.
Περὶ ὑδάτων.
Περὶ τοῦ παντός.
Περὶ φύσεως καὶ τῶν συμβαινόντων ἐξ αὐτῆς αἰτίων.

Περὶ τῆς τῶν ζώων γενέσεως καὶ τὰ ἑξῆς.
Πόσα γένη ζώων, καὶ εἰ πάντα λογικὰ καὶ αἰσθητά.
Περὶ ὕπνου καὶ θανάτου.
Περὶ φυτῶν.
Περὶ τροφῆς καὶ ὀρέξεως τῶν ζώων.
Περὶ φύσεως ἀνθρώπων.
Περὶ νοῦ.
Περὶ ψυχῆς.
Περὶ αἰσθήσεως καὶ αἰσθητῶν καὶ εἰ ἀληθεῖς αἱ αἰσθήσεις.
Πόσαι εἰσὶν αἱ αἰσθήσεις, καὶ ποίας οὐσίας καὶ ἐνεργείας ἑκάστη.
Περὶ ὁράσεως καὶ κατοπτρικῶν ἐμφάσεων.
Περὶ ἀκοῆς.
Περὶ ὀσφρήσεως.
Περὶ γεύσεως.
Περὶ ἁφῆς.
Περὶ φωνῆς, καὶ εἰ ἀσώματος ἡ φωνή, καὶ τί αὐτῆς τὸ ἡγεμονικόν.
Περὶ φαντασίας, καὶ κριτηρίου.
νθ΄ Περὶ δόξης.
καὶ ξ΄ Περὶ ἀναπνοῆς καὶ παθῶν.

καὶ τὰ μὲν τοῦ πρώτου βιβλίου κεφάλαια τοσαῦτα καὶ περὶ τούτων· καὶ δηλονότι φυσικά, πλὴν ἐνίων τῶν ἐν ἀρχῇ, ἃ μᾶλλον ἄν τις εἰς τὰ μετὰ τὰ φυσικὰ ἀνάξοι· τούτοις δέ, ὡς ἔφημεν, τὰς τῶν παλαιῶν δόξας, εἴτε συμφώνους οὔσας εἴτε καὶ διαφώνους, παρατίθησιν. ἐν μέντοι τούτῳ τῷ βιβλίῳ, πρὸ τοῦ τοῖς εἰρημένοις κεφαλαίοις ἐπιβαλεῖν, περὶ δύο κεφαλαίων διαλαμβάνει· ὧν τὸ μὲν ἔπαινός ἐστι φιλοσοφίας, καὶ οὗτος ἐκ διαφόρων αὐτῷ συνηρανισμένος, τὸ δὲ περὶ τῶν κατὰ αὐτὴν συνεστηκυιῶν αἱρέσεων, ἐν ᾧ καὶ περὶ γεωμετρίας καὶ μουσικῆς καὶ ἀριθμητικῆς δόξας παλαιὰς συναναγράφει.

τὸ δὲ δεύτερον βιβλίον συμπληροῦται μὲν κεφαλαίοις ϛ΄ καὶ μ΄. διαλαμβάνει δὲ πρῶτον μὲν

Περὶ τῶν τὰ θεῖα ἑρμηνευόντων, καὶ ὡς εἴη ἀνθρώποις ἀκατάληπτος ἡ τῶν νοητῶν κατὰ τὴν οὐσίαν ἀλήθεια.

εἶτα Περὶ διαλεκτικῆς.

καὶ Περὶ ῥητορικῆς.
καὶ Περὶ λόγου καὶ γραμμάτων.
Περὶ ποιητικῆς.
Περὶ χαρακτῆρος τῶν παλαιῶν.
Περὶ τοῦ ἠθικοῦ εἴδους τῆς φιλοσοφίας.
Περὶ τῶν ἐφ' ἡμῖν.
Ὅτι οὐδεὶς ἑκὼν πονηρός.
Ὁποῖον χρὴ εἶναι τὸν φιλόσοφον.
Ὅτι χρὴ σέβειν τὸ θεῖον.
Ὅτι τοῖς εὐσεβέσι καὶ δικαίοις βοηθεῖ τὸ κρεῖττον.
Περὶ μαντικῆς.
Ὅτι χρὴ περὶ πολλοῦ ποιεῖσθαι τὰς τῶν σοφῶν συνουσίας, ἐκκλίνειν δὲ τοὺς φαύλους καὶ ἀπαιδεύτους.
Περὶ τοῦ δοκεῖν καὶ τοῦ εἶναι· καὶ ὅτι οὐ τῷ λόγῳ χρὴ κρίνειν τὸν ἄνθρωπον, ἀλλὰ τῷ τρόπῳ.
Ὅτι οἱ ἄλλοις ἐπιβουλεύοντες ἑαυτοὺς λανθάνουσι καταβλάπτοντες.
Περὶ εὐδοξίας.
Περὶ φήμης.
Ὅτι μέτρον ἄριστον.
Ὅτι δυσκατόρθωτον ἡ ἀρετή, εὐμεταχείριστον δὲ ἡ κακία.
Ὅτι οὐ χρὴ λόγον ποιεῖσθαι περὶ τῆς τῶν ἀσυνέτων δοκιμασίας.
Ὅτι τὴν ὑπόκρισιν, τοῖς κεχρημένοις ἐπιβλαβῆ οὖσαν καὶ πρὸς οὓς γίνεται, τῆς ψυχῆς ἐκβλητέον.
Ὅτι οὐ χρὴ πολυπραγμονεῖν, φθόνου γὰρ καὶ διαβολῆς αἴτιον γίνεται τὸ τοιοῦτον.
Ὅτι ἐν οἷς πλημμελεῖ τις τὸ μεταμελεῖσθαι κάλλιστον.
Περὶ λοιδορίας, ὡς οὐκ ἀγαθόν.
Ὅτι ἐν τῷ λοιδορεῖσθαι χρὴ σκοπεῖν μὴ τοῖς αὐτοῖς περιπεπτώκαμεν ἐλαττώμασι.
Περὶ ἀνάγκης τῆς κατὰ τὸν βίον.
Ὅτι εὐκαίρως δεῖ πράττειν.
Περὶ τοῦ βούλεσθαι, ὅτι οὐ δεῖ ὡς ἔτυχεν ἀναβάλλεσθαι.
Ὅτι τὸ δυστυχῆσαι πολλάκις ἐπωφελὲς γίνεται, καὶ μάλιστα τοῖς ἄφροσι.
Περὶ ἀγωγῆς καὶ παιδείας.
Ὅτι κάλλιστον ἡ φιλία τῶν ἀγαθῶν.

Ὅτι ἡ ὁμοιότης τῶν τρόπων φιλίαν ἀπεργάζεται.
Ὅτι χρὴ ἐν ταῖς δυστυχίαις καὶ τοῖς κινδύνοις μη περιορᾶν τοὺς φίλους.
Ὅτι οὐ χρὴ συναδικεῖν τοῖς φίλοις.
Περὶ γνησίων καὶ ἀβεβαίων φίλων.
Ὅτι χρὴ ταχείας ποιεῖσθαι τὰς πρὸς τοὺς φίλους διαλλαγὰς τὰ ἁμαρτήματα αὐτῶν ῥᾷον φέροντας μετὰ τῆς ἀμνηστίας.
Ὅτι ἐν ταῖς ἀτυχίαις τοὺς γνησίους τῶν φίλων διαγινώσκομεν.
Φιλικὰ παραγγέλματα.
Περὶ ἔχθρας, καὶ τοῦ ὁποῖόν τινα χρὴ εἶναι πρὸς τοὺς ἐχθρούς.
Περὶ τοῦ πῶς ἔστιν ἀπ' ἐχθρῶν ὠφεληθῆναι.
Περὶ τοῦ εὐεργετεῖν.
Ὅτι μείζων ἡ χάρις ἐν καιρῷ δοθεῖσα.
Περὶ τοῦ ἀντευεργετεῖν.
Ὅτι τοὺς πονηροὺς οὐ χρὴ εὖ ποιεῖν, οὐδὲ παρ' αὐτῶν εὐεργετεῖσθαι.
Καὶ τὸ τελευταῖον Περὶ εὐχαριστίας,
ἐν οἷς καὶ τὰ τοῦ δευτέρου κεφάλαια.

Ἐν δὲ τῷ τρίτῳ περιέχεται κεφάλαια μβ'.

πρῶτον *Περὶ ἀρετῆς.* 1
εἶτα *Περὶ κακίας.* 2
Περὶ φρονήσεως. 3
Περὶ ἀφροσύνης. 4
Περὶ σωφροσύνης. 5
Περὶ ἀκολασίας. 6
Περὶ ἀνδρίας. 7
Περὶ δειλίας. 8
Περὶ δικαιοσύνης. 9
Περὶ πλεονεξίας καὶ ἀδικίας. 10
Περὶ ἀληθείας. 11
Περὶ ψεύδους. 12
Περὶ παρρησίας. 13
Περὶ κολακείας. 14
Περὶ ἀσωτίας. 15
Περὶ φειδωλίας. 16
Περὶ ἐγκρατείας. 17
Περὶ ἀκρασίας. 18
Περὶ ἀνεξικακίας. 19
Περὶ ὀργῆς. 20
Περὶ τοῦ γνῶθι σαυτόν. 21
Περὶ ὑπεροψίας. 22
Περὶ φιλαυτίας. 23
Περὶ τοῦ συνειδότος. 24
Περὶ μνήμης. 25
Περὶ λήθης. 26
Περὶ ὅρκου. 27

Τὰ δὲ τοῦ τετάρτου βιβλίου ἐστὶ ταῦτα·

Ὁμοῦ τὰ κεφάλαια τοῦ τετάρτου νη΄. τῶν δὲ τεσσάρων βιβλίων ση΄. οἷς παρατίθησιν, ὡς ἔφημεν, ὁ Ἰωάννης ἔκ τε

τῶν ἐκλογῶν καὶ τῶν ἀποφθεγμάτων καὶ τῶν ὑποθηκῶν δόξας τε καὶ χρήσεις καὶ χρείας. ἀγείρει δὲ ταύτας ἀπὸ μὲν

φιλοσόφων ἀπό τε
Αἰσχίνου τοῦ Σωκρατικοῦ καὶ
Ἀναξάρχου καὶ
Ἀναχάρσιδος
Ἀριστωνύμου καὶ
Ἀπολλωνίου
Ἀντισθένους καὶ
Ἀριστίππου
Ἀρίστωνος καὶ
Ἀριστοξένου καὶ
Ἀρχύτου
Ἀριστοτέλους
Ἀναξιμάνδρου
Ἀναξιμένους
Ἀρχελάου
Ἀναξαγόρα
Ἀρχαινέτου
Ἀρκεσιλάου
Ἀρριανοῦ
Ἀντιπάτρου Ἱστιαίου
Ἀντιφάνους
Ἀπολλοδώρου
Ἀριστάρχου
Ἀσκληπιάδου
Ἀρισταίου
Ἀρχεδήμου Ἑκαταίου
Ἀπολλοφάνους
Αἰγιμίου
Αἴσαρος
Ἀττικοῦ
Ἀμελίου
Ἀλβίνου
Ἀριστάνδρου
Ἁρποκρατίωνος
Ἀπελλοῦς
Ἀρισταγόρου
Ἀριστομβρότου
Ἀρχιμήδους
Βοηθοῦ
Βίαντος
Βηρώσου
Βερονίκης
Βροτίνου
Βίωνος
Γλαύγωνος
Δημώνακτος
Δημητρίου
Δαμίππου
Διογένους
Διοδώρου
Δημοκρίτου
Διοτίμου
Διοκλέους
Δαμαρμένους
Διδύμου
Δίωνος
Δίου
Εὐκλείδου
Εὐφράτου
Ἐπιχάρμου
Ἐπανδρίδου
Ἐρασιστράτου
Ἐκπώλου
Ἐπικούρου Γαργητίου
Ἐπικτήτου
Ἑρμοῦ
Ἐμπεδοκλέους
Ἐπικούρου Ἀθηναίου
Εὐσεβίου
Εὐρύσου
Ἐρατοσθένους
Εὐρυστράτου
Ἐκφάντου
Ἐπιδίκου
Εὐδόξου
Ἐπιγένους
Ἐνηνίου
Εὐρυφάμου
Ζαλεύκου
Ζήνωνος
Ζωροάστρου
Ἡρακλείδου
Ἡρακλείτου
Ἡροφίλου
Θεμιστίου
Θεοβούλου
Θεανοῦς
Θεάγους
Θεοφράστου
Θεοδώρου
Θάλητος
Θεοκρίτου
Θρασύλλου
Ἱερωνύμου
Ἱππίου
Ἰαμβλίχου
Ἱεροκλέους
Ἱππάλου
Ἴωνος
Ἱππώνου
Ἱέρακος
Ἱπποδάμου
Ἱππάσου
Ἰούγκου

Κρίτωνος
Κλεοβούλου
Κέβητος
Κορίσκου
Κλειτομάχου
Κριτολάου
Κλινίου
Καρνεάδου
Κλεάνθους
Καλλιμάχου
Κριτίου
Κράντορος
Καλλικρατίδου
Λευκίππου
Λουκίου
Λύσιδος
Λύκου
Λύκωνος
Λεωφάνους
Λογγίνου
Μεναίχμου
Μητροκλέους
Μετώπου
Μενεδήμου
Μουσωνίου
Μνησάρχου
Μελίσσου
Μητροδώρου
Μίλωνος
Μοδεράτου
Μαξίμου
Νικολάου
Νουμηνίου
Ναυμαχίου
Ναυκράτους
Νικίου
Νικοστράτου
Ξενοκράτους
Ξενοφάνους
Ὀνάτου
Ὀκέλλου
Ὀνήτορος
Παναkαίου
Πιττακοῦ
Περιάνδρου
Πυθαγόρου
Πλουτάρχου
Πεμπέλου
Πλάτωνος
Παναιτίου
Ποσειδωνίου
Περικτιόνης
Πορφυρίου
Παρμενίδου
Πολέμωνος
Πυθέου
Πώρου
Πολυβίου
Πλωτίνου
Πρωταγόρου
Πυθιάδος
Πύρρωνος
Ῥούφου
Ῥηγίνου
Σόλωνος
Σωτίωνος
Σωσιάδου
Σερήνου
Σωκράτους
Στίλπωνος
Σπευσίππου
Στράτωνος
Σκυθίνου
Σφαίρου
Σελεύκου
Σεβήρου
Τίμωνος
Τιμαίου
Ταύρου
Τιμαγόρου
Τέλητος
Ὑψαίου
Φιλοξένου
Φιλολάου
Φερεκύδου
Φαβωρίνου
Φίντιος
Χίωνος
Χρυσίππου
Χαρώνδου
Χίλωνος
καὶ κυνικῶν δὲ
Ἀντισθένους
Διογένους
Κράτητος
Ἡγησιάνακτος
Ὀνησικρίτου
Μενάνδρου
Μονίμου
Πολυζήλου
Ξανθίππου
Θεομνήστου

Καὶ τῶν μὲν φιλοσόφων, ἐξ ὧν τὴν συλλογὴν ἐποιήσατο, οὗτοι.

ποιηταὶ δὲ
Ἀθηνόδωρος
Ἀναξίλλης
Ἄρχιππος
Ἀπολλωνίδης
Ἀλκιδάμας

Ἀρισταῖος
Ἀντίμαχος
Ἀντιφάνης
Ἀρίσταρχος
Ἀρχίλοχος
Ἀχαιός
Αἰσχύλος
Ἀγάθων
Ἄλεξις
Ἀριστοκράτης
Ἄμφις
Ἀλκαῖος
Ἄρατος
Ἀστυδάμας
Ἀνδρόνικος
Ἀναξανδρίδης
Ἀριστοφάνης
Ἀράλοχος
Ἀπολλόδωρος
Ἀλέξανδρος
Ἀνακρέων
Ἀξίνικος
Ἀριστοφῶν
Βακχυλίδης
Βίων
Βίοτος
Βάθων
Δίφιλος
Διονύσιος
Δημήτριος
Δικαιογένης
Διόδωρος
Δίκτυς
Εὐθύδαμος
Εὔπολις
Εὔφρων
Ἐρατοσθένης
Ἐπίχαρμος
Εὔηνος
Εὐφορίων
Ἑρμόλοχος
Εὐριπίδης
Ζήνων
Ζηνόδοτος
Ζώπυρος
Ἡσίοδος
Ἡρώδης
Ἡνίοχος
Ἡλιόδωρος
Θεόδεκτος
Θέσπις
Θέογνις
Θεόκριτος
Θελέροφος
Ἰοφῶν
Ἱππόθοος
Ἱππῶναξ
Ἰσίδωρος
Ἱπποθόων
Ἰούλιος
Ἴων
Κλεάνθης
Κλεαίνετος
Καλλίμαχος
Κριτίας
Κλεόβουλος
Κρατῖνος
Καρκίνος
Κερκιδᾶς
Καλλίνικος
Κλεινίας
Κράντωρ
Κλειτόμαχος
Λίνος
Λικύμνιος
Λυκόφρων
Λεωνίδης
Λάων
Μένανδρος
Μύρων
Μοσχίων
Μένιππος
Μόσχος
Μίμνερμος
Μελινὼ
Μητρόδωρος
Μηνόφιλος
Νικόστρατος
Νικόλαος
Νεόφρων
Νικόμαχος
Ναυμάχιος
Νεοπτόλεμος
Ξενοφάνης
Ξέναρχος
Ὅμηρος
Ὀρφεύς
Ὀλυμπιάς
Πίνδαρος
Παρμενείδης
Ποσίδιππος
Πανσανίας
Πολυείδης
Πατροκλεύς
Πείσανδρος
Πανύασις
Πειρίθους
Πομπήιος
Ῥιανός
Σοφοκλῆς
Σωτάδης
Σιμωνίδης
Σωσιφάνης
Σιμύλος
Σωσίθεος
Σκλήριος
Σαπφώ

Σαραπίων
Σωσικράτης
Στασῖνος
Σώπατρος
Σθενίδης
Σουσαρίων
Στησίχορος
Τιμόστρατος
Τιμοκλῆς
Τυρταῖος
Τελέσιλλα
Ὑποβολιμαῖος
Ὑψαῖος
Φιλήτας
Φιλόξενος
Φιλιππίδης
Φρύνιχος
Φιλωνίδης
Φιλήμων
Φωκυλίδης
Φίλιππος
Φοινικίδης
Φιλίσκος
Φερεκράτης
Φανοκλῆς
Φίντυς
Φιλαῖος
Χαιρήμων
Χοίριλος
Χάρης.

Ἀλλὰ καὶ ποιηταί, ὧν χρήσεις τοῖς κεφαλαίοις παρέθηκεν, οὗτοι. ῥήτορες δὲ καὶ ἱστοριογράφοι βασιλεῖς τε καὶ στρατηγοί, καὶ γὰρ ἐκ τούτων μαρτυρίας συνήθροισεν, οἵδε

Ἀριστείδης
Ἀριστοκλῆς
Αἰλιανός
Αἰσχίνης
Ἀγάθων
Ἀντιφῶν
Ἀρχέλαος
Γάιος
Γοργίας
Δημοσθένης
Δημάδης
Δημάρατος
Ἔφορος
Ζώπυρος
Ἡρόδοτος
Ἡγησιάδης
Ἡγήσιος
Θουκυδίδης
Θησεύς
Θεόδωρος
Θράσυλλος
Θεόπομπος
Ἰσοκράτης
Ἰσαῖος
Κορνηλιανός
Καλλισθένης
Κλειτοφῶν
Κτησίας
Λυσίας
Νικίας
Ξενοφῶν
Ὄβριμος
Πολύαινος
Πρόδικος
Πρωταγόρας
Σώστρατος
Τιμαγόρας
Τρόφιμος
Ὑπερείδης
Φιλόστρατος
Χρύσερμος
Ἀλέξανδρος
Ἀγησίλαος
Ἀγαθοκλῆς
Ἀντίγονος
Ἆγις
Ἀγριππῖνος
Ἀναξίλαος
Ἀρχίδαμος
Διονύσιος
Δαρεῖος
Ἐπαμεινώνδας
Εὐδαμίδας
Θεμιστοκλῆς
Ἰφικράτης
Ἵππαρχος
Κότυς
Κλείταρχος
Λυκοῦργος
Λεωνίδης
Λάμαχος
Μαλλίας
Περικλῆς
Πύρρος
Πτολεμαῖος
Σεμίραμις
Σκηπίων
Σκίλλουρος
Τιμόθεος
Φίλιππος
Φωκίων
Φάλαρις
Χάριλλος
Χαρίας
Χάρης

Ἀριστοφάνης
Αἴσωπος
Ἀντιγενίδας
Ἀριστοτέλης
Ἀριστείδης ὁ δίκαιος
Ἀλκμαίων ἰατρός
Ἄντυλλος ἰατρός
Ἀρίμνηστος
Ἀπελλῆς
Βρύσων
Γλαύκων
Γαληνὸς ἰατρός
Δικαίαρχος
Δίων
Διονύσιος
Διοκλῆς ἰατρός
Εὐξίθεος
Ἕρμαρχος
Ἕρμιππος
Ἐρυξίμαχος
Εὐφρανίας
Ἐρασίστρατος ἰατρός
Εὐρυφῶν ἰατρός
Ἐρατοσθένης
Εὔβουλος
Θεόπομπος
Θεόκριτος
Θυμαρίδης
Θύνων
Ἱπποκράτης ἰατρός
Κάτων
Κηφισόδωρος
Κλεόστρατος
Κλειτόμαχος
Λικύμνιος
Μύσων
Μητρόδωρος
Μητροκλῆς
Νικόστρατος
Πραΰσίων
Σιμωνίδης
Σερίφιος
Σωτίων
Σώστρατος
Σπεύσιππος

Ἀλλὰ τὰ μὲν κεφάλαια, οἷς τὰς τῶν παλαιοτέρων ῥήσεις ἥρμοσεν Ἰωάννης ὁ Στοβαῖος, καὶ ἐξ ὧν ἀνδρῶν φιλοσόφων τε καὶ ποιητῶν ῥητόρων τε καὶ βασιλέων καὶ στρατηγῶν, ταύτας συνήθροισε, τοσαῦτα καὶ ἐκ τοσούτων.

Χρήσιμον δὲ τὸ βιβλίον τοῖς μὲν ἀνεγνωκόσιν αὐτὰ τὰ συντάγματα τῶν ἀνδρῶν πρὸς ἀνάμνησιν, τοῖς δ' οὐκ εἰληφόσι πεῖραν ἐκείνων, ὅτι διὰ συνεχοῦς αὐτῶν μελέτης οὐκ ἐν πολλῷ χρόνῳ πολλῶν καὶ καλῶν καὶ ποικίλων νοημάτων εἰ καὶ κεφαλαιώδη μνήμην καρπώσονται· κοινὸν δ' ἀμφοτέροις ἡ τῶν ζητουμένων, ὡς εἰκός, ἀταλαίπωρος καὶ σύντομος εὕρεσις, ἐπειδάν τις ἀπὸ τῶν κεφαλαίων εἰς αὐτὰ τὰ πλάτη ἀναδραμεῖν ἐθελήσειε· καὶ πρὸς ἄλλα δὲ τοῖς ῥητορεύειν καὶ γράφειν σπουδάζουσιν οὐκ ἄχρηστον τὸ βιβλίον.

ΙΩΑΝΝΟΥ ΣΤΟΒΑΙΟΥ
ΑΝΘΟΛΟΓΙΟΝ.

ΠΕΡΙ ΑΡΕΤΗΣ. Α.

---

1 Σοφοκλέους Ἐριφύλης.
Ἀρετῆς βέβαιαι δ' εἰσὶν αἱ κτήσεις μόναι.

2 Εὐριπίδου Ἀνδρομάχης (775).
Οὔ τοι λείψανα τῶν ἀγαθῶν
ἀνδρῶν ἀφαιρεῖται χρόνος· ἁ δ' ἀρετὰ
καὶ θανοῦσι λάμπει.

3 Εὐριπίδου Οἰδίποδος.
Οὔ τοι νόμισμα λευκὸς ἄργυρος μόνον
καὶ χρυσός ἐστιν, ἀλλὰ χἀρετὴ βροτοῖς
νόμισμα κεῖται πᾶσιν, ᾗ χρῆσθαι χρεών.

4 Εὐριπίδου Τημενιδῶν.
Ἀρετὴ δὲ κἂν θάνῃ τις οὐκ ἀπόλλυται,
ζῇ δ' οὐκ ἔτ' ὄντος σώματος· κακοῖσι δὲ
ἅπαντα φροῦδα συνθανόνθ' ὑπο χθονός.

5 Εὐριπίδου Ἱκετίδων (911).
Αἰσχύνεται δὲ τἀγάθ' ἀσκήσας ἀνὴρ
κακὸς κεκλῆσθαι πᾶς τις· ἡ δ' εὐανδρία
διδακτόν, εἴπερ καὶ βρέφος διδάσκεται

λέγειν ἀκούειν θ᾽ ὧν μάθησιν οὐκ ἔχει.
ἃ δ᾽ ἂν μάθῃ τις, ταῦτα σώζεσθαι φιλεῖ
πρὸς γῆρας. οὕτω παῖδας εὖ παιδεύετε.

6 *Οὐκ ἔστιν ἀρετῆς κτῆμα τιμιώτερον.*
οὐ γὰρ πέφυκε δοῦλον οὔτε χρημάτων
οὔτ᾽ εὐγενείας οὔτε θωπείας ὄχλου.

6ª *Ἀρετὴ δ᾽, ὅσῳ περ μᾶλλον ἂν χρῆσθαι θέλῃς,*
τοσῷδε μᾶλλον αὔξεται τελουμένη.

7 *Εὐριπίδου.*
Ἀρετὴ μέγιστον τῶν ἐν ἀνθρώποις καλόν.

8 *Εὐριπίδου Ἀντιόπη.*
Τρεῖς εἰσὶν ἀρεταὶ τὰς χρεών σ᾽ ἀσκεῖν, τέκνον,
θεούς τε τιμᾶν τούς τε θρέψαντας γονεῖς
νόμους τε κοινοὺς Ἑλλάδος· καὶ ταῦτα δρῶν
κάλλιστον ἕξεις στέφανον εὐκλείας ἀεί.

---

9 *Βακχυλίδου.*
Εἷς ὅρος, μία βροτοῖσιν ἐστὶν εὐτυχίας ὁδός, | θυμὸν εἴ τις ἔχων ἀπενθῆ δύναται διατελεῖν βίον.

10 *Ἴαμβοι.*
Ἀνάπαυσίς ἐστι τῶν κακῶν ἀπραξία. | ἃ μὴ προσήκει, μήτ᾽ ἄκουε μήθ᾽ ὅρα. | βέλτιόν ἐστι σῶμά γ᾽ ἢ ψυχὴν νοσεῖν. | εὔτακτον εἶναι τἀλλότρια δειπνοῦντα δεῖ. | ἐλευθέρου γὰρ ἀνδρὸς τἀληθῆ λέγειν. | ἐλεύθερον φύλασσε τὸν σαυτοῦ τρόπον. | σαυτὸν φύλαττε τοῖς τρόποις ἐλεύθερον. | ταμεῖον ἀρετῆς ἐστι σωφροσύνη μόνη. | ψυχῆς ἐπιμελοῦ τῆς σεαυτοῦ, καθὰ δύνῃ. | καλὸν φύουσι καρπὸν οἱ σεμνοὶ τρόποι. | καρπὸς δ᾽ ἀγαθός ἐστιν εὔτακτος βίος. | λάβε πρόνοιαν τοῦ προσήκοντος βίου. | μακάριος, ὅστις μακαρίοις ὑπηρετεῖ. | ὅπλον μέγιστόν ἐστιν ἡ ᾿ρετὴ βροτοῖς.

13 Φιλιππίδου Ἀνανεούσῃ.
Ὅταν δ' ἁμαρτάνῃς τι, χαῖρ' ἡττώμενος·
μάλιστα γὰρ οὕτω σῴζεται τὸ συμφέρον.

14 Ἐπιχάρμου.
Οὐ μετανοεῖν, ἀλλὰ προνοεῖν χρὴ τὸν ἄνδρα τὸν σοφόν.

15 Πυθαγόρου (Aur. carm. 9).
Κρατεῖν δὲ ἐθίζεο τῶνδε,
γαστρὸς μὲν πρώτιστα καὶ ὕπνου λαγνείης τε
καὶ θυμοῦ· πρήξεις δ' αἰσχρόν ποτε μήτε μετ' ἄλλου
μήτ' αὐτός· πάντων δὲ μάλιστ' αἰσχύνεο σαυτόν.
εἶτα δικαιοσύνην ἄσκει ἔργῳ τε λόγῳ τε.
μήτ' ἀλογίστως σαυτὸν ἔχειν περὶ μηδὲν ἔθιζε·
ἀλλὰ γνῶθι μὲν ὡς θανέειν πέπρωται ἅπασιν·
χρήματα δ' ἄλλοτε μὲν κτᾶσθαι φιλεῖ ἄλλοτ' ὀλέσθαι.

---

11 Ἴαμβοι. Εἰς ἄνδρας ἀγαθούς.
Ἀνὴρ δὲ χρηστὸς χρηστὸν οὐ μισεῖ ποτέ. | γνώμης γὰρ ἐσθλῆς ἔργα χρηστὰ γίγνεται. | ἐσθλῷ γὰρ ἀνδρὶ ἐσθλὰ καὶ διδοῖ θεός. | ζήλου τὸν ἐσθλὸν ἄνδρα, καὶ τὸν σώφρονα. | ἤθους δὲ βάσανός ἐστιν ἀνθρώποις χρόνος.

12 Ἀριστοτέλους ὕμνος εἰς Ἀρετήν.
Ἀρετὰ πολύμοχθε γένει βροτείῳ, | θήραμα κάλλιστον βίῳ. | σᾶς πέρι, παρθένε, μορφᾶς, | καὶ θανεῖν ζηλωτὸς ἐν Ἑλλάδι πότμος, | καὶ πόνους τλῆναι μαλεροὺς καὶ ἀκάμαντας. | τοῖον ἐπὶ φρένα βάλλεις | καρπὸν ἐς ἀθάνατον, | χρυσοῦ τε κρείσσονα καὶ γονέων | μαλακαυγητοῖό θ' ὕπνου. | σοῦ δ' ἕνεκ' ἐκ Διὸς Ἡρακλέης, | Λήδας τε κοῦροι πόλλ' ἀνέτλασαν, | ἔργοις ἀναγορεύοντες δύναμιν. | σοῖς δὲ πόθοις Ἀχιλλεὺς | Αἴας τ' Ἀΐδαο δόμους ἦλθον. | σᾶς δ' ἕνεκεν φιλίου μορφᾶς | Ἀταρνέως ἔντροφος | ἀελίου χήρωσεν αὐγάς. | τοὶ γὰρ ἀοίδιμος ἔργοις, | ἀθάνατοί τε μιν αὐξήσουσι | Μοῦσαι, Μναμοσύνας θύγατρες, | Διὸς ξενίου σέβας αὔξουσαι.

16 Θεόγνιδος (315).

Πολλοὶ μὲν πλουτοῦσι κακοί, ἀγαθοὶ δὲ πένονται.
  ἀλλ' ἡμεῖς τούτοις οὐ διαμειψόμεθα
τῆς ἀρετῆς τὸν πλοῦτον· ἐπεὶ τὸ μὲν ἔμπεδον αἰεί,
  χρήματα δ' ἀνθρώπων ἄλλοτε ἄλλος ἔχει.

17 Ἡσιόδου (Op. 287).

Τῆς δ' ἀρετῆς ἱδρῶτα θεοὶ προπάροιθεν ἔθηκαν
ἀθάνατοι· μακρὸς δὲ καὶ ὄρθιος οἶμος ἐπ' αὐτήν,
καὶ τρηχὺς τὸ πρῶτον· ἐπὴν δ' εἰς ἄκρον ἵκηται,
ῥηϊδίη δ' ἤπειτα πέλει, χαλεπή περ ἐοῦσα.

18 Ἀριστοτέλους περὶ ἀρετῆς.

Ἐπαινετὰ μέν ἐστι τὰ καλά, ψεκτὰ δὲ τὰ αἰσχρά· καὶ τῶν μὲν καλῶν ἡγοῦνται αἱ ἀρεταί, τῶν δὲ αἰσχρῶν αἱ κακίαι. ἐπαινετὰ δέ ἐστι καὶ τὰ αἴτια τῶν ἀρετῶν, καὶ τὰ παρεπόμενα ταῖς ἀρεταῖς, καὶ τὰ γινόμενα ἀπ' αὐτῶν, καὶ τὰ ἔργα αὐτῶν, ψεκτὰ δὲ τὰ ἐναντία. τριμεροῦς δὲ τῆς ψυχῆς λαμβανομένης κατὰ Πλάτωνα, τοῦ μὲν λογιστικοῦ ἀρετή ἐστιν ἡ φρόνησις, τοῦ δὲ θυμοειδοῦς ἥ τε πραότης καὶ ἡ ἀνδρία, τοῦ δὲ ἐπιθυμητικοῦ ἥ τε σωφροσύνη καὶ ἡ ἐγκράτεια, ὅλης δὲ τῆς ψυχῆς ἥ τε δικαιοσύνη καὶ ἡ ἐλευθεριότης καὶ ἡ μεγαλοψυχία. κακία δὲ τοῦ μὲν λογιστικοῦ ἡ ἀφροσύνη, τοῦ δὲ θυμοειδοῦς ἥ τε ὀργιλότης καὶ ἡ δειλία, τοῦ δὲ ἐπιθυμητικοῦ ἥ τε ἀκολασία καὶ ἡ ἀκρασία· ὅλης δὲ τῆς ψυχῆς ἥ τε ἀδικία καὶ ἡ ἀνελευθερία καὶ ἡ μικροψυχία.

ἔστι δὲ φρόνησις μὲν ἀρετὴ τοῦ λογιστικοῦ, παρασκευαστικὴ τῶν πρὸς εὐδαιμονίαν τεινόντων.

πραότης δ' ἐστὶν ἀρετὴ τοῦ θυμοειδοῦς, καθ' ἣν ὑπὸ ὀργῆς γίνονται δυσκίνητοι.

ἀνδρία δέ ἐστιν ἀρετὴ τοῦ θυμοειδοῦς, καθ' ἣν δυσέκπληκτοί εἰσιν ὑπὸ φόβων τῶν περὶ θάνατον.

σωφροσύνη δέ ἐστιν ἀρετὴ τοῦ ἐπιθυμητικοῦ, καθ' ἣν ἀνόρεκτοι γίνονται τῶν περὶ τὰς ἀπολαύσεις φαύλων ἡδονῶν.

ἐγκράτεια δέ ἐστιν ἀρετὴ τοῦ ἐπιθυμητικοῦ, καθ' ἣν κατέχουσι τῷ λογισμῷ τὴν ἐπιθυμίαν ὁρμῶσαν ἐπὶ τὰς φαύλας ἡδονάς.

δικαιοσύνη δέ ἐστιν ἀρετὴ ψυχῆς, διανεμητικὴ τῶν κατ' ἀξίαν.

ἐλευθεριότης δέ ἐστιν ἀρετὴ ψυχῆς εὐδάπανος εἰς τὰ καλά.

μεγαλοψυχία δέ ἐστιν ἀρετὴ ψυχῆς, καθ' ἣν δύναται φέρειν εὐτυχίαν καὶ δυστυχίαν καὶ τιμὴν καὶ ἀτιμίαν.

ἀφροσύνη δέ ἐστι κακία τοῦ λογιστικοῦ, αἰτία τοῦ ζῆν κακῶς.

ὀργιλότης δέ ἐστι κακία τοῦ θυμοειδοῦς, καθ' ἣν εὐκίνητοι γίνονται πρὸς ὀργήν.

δειλία δὲ κακία τοῦ θυμοειδοῦς, καθ' ἣν ἐκπλήττονται ὑπὸ φόβων καὶ μάλιστα τῶν περὶ θάνατον.

ἀκολασία δέ ἐστι κακία τοῦ ἐπιθυμητικοῦ, καθ' ἣν ὀρεκτικοὶ γίνονται τῶν περὶ τὰς ἀπολαύσεις φαύλων ἡδονῶν.

ἀκρασία δέ ἐστι κακία τοῦ ἐπιθυμητικοῦ, καθ' ἣν αἱροῦνται τὰς φαύλας ἡδονὰς κωλύοντος τοῦ λογισμοῦ.

ἀδικία δέ ἐστι κακία ψυχῆς, καθ' ἣν πλεονεκτικοὶ γίνονται παρὰ τὴν ἀξίαν.

ἀνελευθερία δέ ἐστι κακία ψυχῆς, καθ' ἣν αἱρετικοὶ γίνονται κέρδους αἰσχροῦ.

μικροψυχία δέ ἐστι κακία ψυχῆς, καθ' ἣν ἀδύνα-

τοί εἰσι φέρειν καὶ εὐτυχίαν καὶ ἀτυχίαν καὶ τιμὴν καὶ ἀτιμίαν.

ἔργα δὲ τῆς φρονήσεώς ἐστι τὸ εὖ βουλεύεσθαι, τὸ κρῖναι τὰ ἀγαθὰ καὶ τὰ κακὰ καὶ πάντα τὰ ἐν τῷ βίῳ αἱρετὰ καὶ φευκτά, τὸ χρῆσθαι καλῶς πᾶσι τοῖς ὑπάρχουσιν ἀγαθοῖς, τὸ ὁμιλῆσαι ὀρθῶς, τὸ συνιδεῖν τοὺς καιρούς, τὸ ἀγχινόως χρῆσθαι καὶ λόγῳ καὶ ἔργῳ, τὸ ἐμπειρίαν ἔχειν τῶν χρησίμων πάντων. μνήμη δὲ καὶ ἐμπειρία καὶ ἀγχίνοια καὶ δεξιότης καὶ εὐβουλία ἤτοι ἀπὸ φρονήσεως ἕκαστον αὐτῶν ἐστιν ἢ παρέπεται τῇ φρονήσει. καὶ τὰ μὲν αὐτῶν οἷον συναίτια τῆς φρονήσεως, καθάπερ ἡ ἐμπειρία καὶ ἡ μνήμη, τὰ δὲ οἷον μέρη, οἷον εὐβουλία τε καὶ ἀγχίνοια.

πραότητος δέ ἐστι τὸ δύνασθαι φέρειν μετρίως ἐγκλήματα καὶ ὀλιγωρίας [μετρίας], καὶ τὸ μὴ ταχέως ὁρμᾶν ἐπὶ τὰς τιμωρίας, καὶ δυσκίνητον εἶναι πρὸς τὰς ὀργάς, ἄπικρον δὲ τῷ ἤθει καὶ ἀφιλόνεικον ἔχοντα τὸ ἠρεμαῖον ἐν τῇ ψυχῇ καὶ στάσιμον.

ἀνδρίας δέ ἐστι τὸ δυσέκπληκτον εἶναι ὑπὸ φόβων τῶν περὶ τὸν θάνατον, καὶ τὸ εὐθαρσῆ εἶναι ἐν τοῖς δεινοῖς καὶ εὔτολμον πρὸς τοὺς κινδύνους, καὶ τὸ μᾶλλον αἱρεῖσθαι τεθνάναι καλῶς ἢ αἰσχρῶς σωθῆναι, καὶ τὸ νίκης αἴτιον εἶναι. ἔστι δὲ ἀνδρίας καὶ τὸ πονεῖν καὶ τὸ καρτερεῖν καὶ προαιρεῖσθαι καὶ δύνασθαι ἀνδραγαθίζεσθαι. παρέπεται δὲ τῇ ἀνδρίᾳ ἡ εὐτολμία καὶ ἡ εὐψυχία καὶ τὸ θάρσος, ἔτι δὲ ἥ τε φιλοπονία καὶ ἡ καρτερία.

σωφροσύνης δέ ἐστι τὸ μὴ θαυμάζειν τὰς ἀπολαύσεις τῶν σωματικῶν ἡδονῶν, τὸ εἶναι πάσης ἀπολαύσεως αἰσχρᾶς ἡδονῆς ἀνόρεκτον καὶ τὸ φοβεῖσθαι τὴν ἀδοξίαν καὶ τὸ τετάχθαι περὶ τὸν βίον ὁμοίως ἔν

τε μικροῖς καὶ μεγάλοις. παρέπεται δὲ τῇ σωφροσύνῃ εὐταξία κοσμιότης αἰδὼς εὐλάβεια.

ἐγκρατείας δέ ἐστι τὸ δύνασθαι κατασχεῖν τῷ λογισμῷ τὴν ἐπιθυμίαν ὁρμῶσαν ἐπὶ φαύλας ἡδονὰς καὶ ἀπολαύσεις, καὶ τὸ καρτερεῖν καὶ τὸ ὑπομενετικὸν εἶναι τῆς κατὰ φύσιν ἐνδείας τε καὶ λύπης.

δικαιοσύνης δέ ἐστι τὸ διανεμητικὸν εἶναι τοῦ κατ' ἀξίαν, τὸ σώζειν τὰ πάτρια ἔθη καὶ τὰ νόμιμα, τὸ σώζειν τοὺς γεγραμμένους νόμους, τὸ ἀληθεύειν ἐν τῷ διαφέροντι, τὸ διαφυλάττειν τὰς ὁμολογίας. ἔστι δὲ πρῶτα τῶν δικαίων τὰ πρὸς τοὺς θεούς, εἶτα πρὸς δαίμονας, εἶτα πρὸς πατρίδα καὶ γονεῖς, εἶτα πρὸς τοὺς κατοιχομένους· ἐν οἷς ἐστι καὶ εὐσέβεια, ἤτοι μέρος οὖσα τῆς δικαιοσύνης ἢ παρακολουθοῦσα. ἀκολουθεῖ δὲ τῇ δικαιοσύνῃ καὶ ἡ ὁσιότης καὶ ἡ ἀλήθεια καὶ ἡ πίστις καὶ ἡ μισοπονηρία.

ἐλευθεριότητος δέ ἐστι τὸ προετικὸν εἶναι χρημάτων εἰς τὰ ἐπαινετά, καὶ τὸ ἐπιδαψιλεῖν ἐπὶ τὸ εἰς δέοντα ἀναλωθῆναι, καὶ τὸ βοηθητικὸν εἶναι ἐν τῷ διαφόρῳ, καὶ τὸ φιλάνθρωπον, καὶ τὸ μὴ λαβεῖν ὅθεν μὴ δεῖ, καὶ ὅθεν δεῖ λαβεῖν. ἔστι δὲ ὁ ἐλευθέριος καὶ περὶ ἐσθῆτα καθάρειος καὶ περὶ οἴκησιν, κατασκευαστικός τε ὢν τῶν περιττῶν καὶ καλῶν καὶ διαγωγὴν ἐχόντων ἡδεῖαν ἄνευ τοῦ λυσιτελοῦντος, καὶ θρεπτικὸς τῶν ζώων τῶν ἴδιόν τι ἐχόντων ἢ θαυμαστόν. ἀκολουθεῖ δὲ τῇ ἐλευθεριότητι ἡ τοῦ ἤθους ὑγρότης, καὶ εὐαγωγία καὶ φιλανθρωπία καὶ τὸ εἶναι ἐλεητικὸν καὶ φιλόφιλον καὶ φιλόξενον καὶ φιλόκαλον.

μεγαλοψυχίας δέ ἐστι τὸ καλῶς ἐνεγκεῖν καὶ εὐψύχως καὶ ἀτυχίαν καὶ εὐτυχίαν καὶ τιμὴν καὶ ἀτιμίαν, καὶ τὸ μὴ θαυμάζειν μήτε τρυφὴν μήτε θεραπείαν μήτε ἐξουσίαν μήτε τὰς νίκας τὰς ἐναγωνίους,

ἔχειν δέ τι βάθος τῆς ψυχῆς καὶ μέγεθος. ἔστι δὲ ὁ μεγαλόψυχος οὐδὲ τὸ ζῆν περὶ πολλοῦ ποιούμενος οὐδὲ φιλόζωος, ἁπλοῦς δὲ τῷ ἤθει καὶ γενναῖος καὶ ἀδικεῖσθαι δυνάμενος καὶ οὐ τιμωρητικός. ἀκολουθεῖ δὲ τῇ μεγαλοψυχίᾳ ἁπλότης καὶ γενναιότης καὶ ἀλήθεια.

ἀφροσύνης δέ ἐστι τὸ κρῖναι κακῶς τὰ πράγματα, τὸ βουλεύεσθαι κακῶς, τὸ ὁμιλῆσαι κακῶς, τὸ χρῆσθαι κακῶς τοῖς παροῦσιν ἀγαθοῖς, τὸ ψευδῶς δοξάζειν περὶ τῶν εἰς τὸν βίον ἀγαθῶν καὶ καλῶν. παρακολουθεῖ δὲ τῇ ἀφροσύνῃ ἀπειρία ἀμαθία ἀκρασία ἐπαριστερότης ἀμνημοσύνη.

ὀργιλότητος δέ ἐστιν εἴδη τρία, ἀκροχολία πικρία βαρυθυμία. ἔστι δὲ τοῦ ὀργίλου τὸ μὴ δύνασθαι φέρειν μήτε τὰς μικρὰς ὀλιγωρίας μήτε τὰς ἐλαττώσεις, εἶναι δὲ κολαστικὸν καὶ ἄγριον καὶ εὐκίνητον πρὸς ὀργὴν καὶ ὑπὸ λόγου καὶ ἔργου τοῦ τυχόντος. ἀκολουθεῖ δὲ τῇ ὀργιλότητι τὸ πάροξυ τοῦ ἤθους καὶ εὐμετάβολον καὶ ἡ πικρολογία καὶ ἡ μεταμέλεια καὶ τὸ ἐπὶ μικροῖς λυπεῖσθαι καὶ ἥδεσθαι, καὶ ταῦτα πάσχειν ταχέως καὶ παρὰ βραχὺν καιρόν.

δειλίας δέ ἐστι τὸ ὑπὸ τῶν τυχόντων φόβων εὐκίνητον εἶναι καὶ μάλιστα τῶν περὶ θάνατον καὶ τὰς σωματικὰς πηρώσεις, καὶ τὸ ὑπολαβεῖν κρεῖττον εἶναι ὁπωσοῦν σωθῆναι ἢ τελευτῆσαι καλῶς. ἀκολουθεῖ δὲ τῇ δειλίᾳ μαλακία ἀνανδρία φιλοψυχία καὶ ἀπονία· ὕπεστι δέ τις καὶ εὐλάβεια καὶ τὸ ἀφιλόνεικον τοῦ ἤθους.

ἀκολασίας δέ ἐστι τὸ αἱρεῖσθαι τὰς ἀπολαύσεις τῶν ἡδονῶν τῶν βλαβερῶν καὶ αἰσχρῶν, καὶ ὑπολαμβάνειν εὐδαιμονεῖν μάλιστα τοὺς ἐν ταῖς τοιαύταις ἡδοναῖς ζῶντας, καὶ φιλόγελων εἶναι καὶ φιλοσκώ-

πτην καὶ φιλευτράπελον, καὶ ῥᾳδιουργὸν εἶναι ἐν τοῖς λόγοις καὶ ἐν τοῖς ἔργοις. ἀκολουθεῖ δὲ τῇ ἀκολασίᾳ ἀταξία ἀναίδεια ἀκοσμία τρυφὴ ῥᾳθυμία ἀμέλεια ὀλιγωρία ἔκλυσις.

ἀκρασίας δέ ἐστι τὸ κωλύοντος τοῦ λογισμοῦ τὰς ἀπολαύσεις τῶν ἡδονῶν αἱρεῖσθαι καὶ τὸ ὑπολαμβάνοντα κρεῖττον εἶναι μὴ μετασχεῖν αὐτῶν, μετέχειν δὲ μηδὲν ἧττον, καὶ τὸ οἴεσθαι μὲν δεῖν πράττειν καὶ τὰ καλὰ καὶ τὰ συμφέροντα, ἀφίστασθαι δὲ αὐτῶν διὰ τὰς ἡδονάς. ἀκολουθεῖ δὲ τῇ ἀκρασίᾳ μαλακία μεταμέλεια καὶ τὰ πλεῖστα τὰ αὐτὰ ἃ καὶ τῇ ἀκολασίᾳ.

ἀδικίας δέ ἐστιν εἴδη τρία, ἀσέβεια πλεονεξία ὕβρις. ἀσέβεια μὲν ἡ περὶ θεοὺς πλημμέλεια καὶ περὶ δαίμονας καὶ τοὺς κατοιχομένους καὶ περὶ γονεῖς καὶ πατρίδα, πλεονεξία δὲ ἡ περὶ τὰ συμβόλαια παρὰ τὴν ἀξίαν αἱρουμένη τὸ διάφορον, ὕβρις δὲ καθ' ἣν τὰς ἡδονὰς αὑτοῖς παρασκευάζουσιν, εἰς ὄνειδος ἄγοντες ἑτέρους. ὅθεν καὶ Εὔηνος περὶ αὐτῆς λέγει

ἥτις κερδαίνουσ' οὐδὲν ὅμως ἀδικεῖ.

ἔστι δὲ ἀδικίας τὸ παραβαίνειν τὰ πάτρια ἔθη καὶ τὰ νόμιμα, τὸ ἀπειθεῖν τοῖς νόμοις καὶ τοῖς ἄρχουσι, τὸ ψεύδεσθαι, τὸ ἐπιορκεῖν, τὸ παραβαίνειν τὰς ὁμολογίας καὶ τὰς πίστεις. ἀκολουθεῖ δὲ τῇ ἀδικίᾳ συκοφαντία ἀλαζονεία ἀφιλανθρωπία προσποίησις κακοήθεια πανουργία.

ἀνελευθερίας δέ ἐστιν εἴδη τρία, αἰσχροκέρδεια φειδωλία κιμβικία. ἔστι δὲ αἰσχροκέρδεια μὲν καθ' ἣν κερδαίνειν ζητοῦσι πανταχόθεν καὶ τὸ κέρδος τῆς αἰσχύνης περὶ πλείονος ποιοῦνται, φειδωλία δὲ καθ' ἣν ἀδάπανοι γίνονται τῶν χρημάτων εἰς τὸ δέον, κιμβικία δέ ἐστι καθ' ἣν δαπανῶσι μὲν κατὰ μικρὸν δὲ

καὶ κακῶς καὶ πλείω βλάπτονται, τῷ μὴ κατὰ καιρὸν ποιεῖσθαι τὸ διάφορον. ἔστι δὲ τῆς ἀνελευθερίας τὸ περὶ πλείστου ποιεῖσθαι χρήματα, καὶ τὸ μηδὲν ὄνειδος ἡγεῖσθαι τῶν ποιούντων κέρδος, καὶ βίος θητικὸς καὶ δουλοπρεπὴς καὶ ῥυπαρὸς καὶ φιλοτιμίας καὶ ἐλευθερίας ἀλλότριος. ἀκολουθεῖ δὲ τῇ ἀνελευθερίᾳ μικρολογία βαρυθυμία μικροψυχία ταπεινότης ἀμετρία ἀγένεια μισανθρωπία.

μικροψυχίας δέ ἐστι τὸ μήτε τιμὴν μήτε ἀτιμίαν μήτε εὐτυχίαν μήτε ἀτυχίαν δύνασθαι φέρειν, ἀλλὰ τιμώμενον μὲν ἀναχαυνοῦσθαι καὶ μικρὰ εὐτυχήσαντα ἐξαίρεσθαι, ἀτιμίαν δὲ μηδὲ τὴν ἐλαχίστην ἐνεγκεῖν δύνασθαι, ἀπότευγμα δὲ ὁτιοῦν ἀτυχίαν κρίνειν μεγάλην, ὀδύρεσθαι δὲ ἐπὶ πᾶσι καὶ δυσφορεῖν. ἔτι δὲ καὶ τοιοῦτός ἐστιν ὁ μικρόψυχος οἷος πάντα τὰ ὀλιγωρήματα καλεῖν ὕβριν καὶ ἀτιμίαν, καὶ τὰ δι᾽ ἄγνοιαν ἢ λήθην ἢ ἄνοιαν γινόμενα. ἀκολουθεῖ δὲ τῇ μικροψυχίᾳ μικρολογία μεμψιμοιρία δυσελπιστία ταπεινότης.

καθόλου δὲ τῆς μὲν ἀρετῆς ἐστι τὸ ποιεῖν σπουδαίαν τὴν διάθεσιν περὶ τὴν ψυχὴν ἠρεμαίαις καὶ τεταγμέναις κινήσεσι χρωμένην καὶ συμφωνοῦσαν κατὰ πάντα τὰ μέρη· διὸ καὶ δοκεῖ παράδειγμα πολιτείας ἀγαθῆς εἶναι σπουδαίας ψυχῆς διάθεσις. ἔστι δὲ τῆς ἀρετῆς τὸ εὐεργετεῖν τοὺς ἀξίους, καὶ τὸ φιλεῖν τοὺς ἀγαθούς, καὶ τὸ μισεῖν τοὺς κακούς, καὶ τὸ μήτε κολαστικὸν εἶναι μήτε τιμωρητικόν, ἀλλὰ προσηνῆ καὶ εὐμενικὸν καὶ συγγνωμονικόν. ἀκολουθεῖ δὲ τῇ ἀρετῇ χρηστότης ἐπιείκεια εὐγνωμοσύνη ἐλπὶς ἀγαθὴ μνήμη ἀγαθή· ἔτι δὲ καὶ τὰ τοιαῦτα, φιλοίκειον εἶναι καὶ φιλόφιλον καὶ φιλεταῖρον καὶ φιλόξενον καὶ φιλάνθρωπον καὶ φιλόκαλον, ἃ δὴ πάντα τῶν ἐπαινου-

μένων ἐστί· τῆς δὲ κακίας ἐστὶ τὰ ἐναντία, καὶ παρακολουθεῖ τὰ ἐναντία αὐτῇ. πάντα δὲ τὰ τῆς κακίας καὶ τὰ ἀκολουθοῦντα αὐτῇ τῶν ψεγομένων ἐστί.

19 *Πυθαγόρου.*

Ἄγρυπνος ἔσο κατὰ νοῦν· συγγενὴς γὰρ τοῦ ἀληθινοῦ θανάτου ὁ περὶ τοῦτον ὕπνος.

20 *Ἃ μὴ δεῖ ποιεῖν, μηδὲ ὑπονοοῦ ποιεῖν.*

21 *Ζητεῖν δεῖ καὶ ἄνδρα καὶ τέκνα καὶ φίλους τοὺς κατὰ τὴν ἀπαλλαγὴν τοῦ βίου παραμενοῦντας.*

22 *Πυθαγόρου.*

Ἰσχύειν τῇ ψυχῇ αἱροῦ μᾶλλον ἢ τῷ σώματι.

23 *Πέπεισο μὴ εἶναι σὸν κτῆμα ὅ περ μὴ ἐντὸς διανοίας ἔχεις.*

24 *Πρᾶττε μεγάλα μὴ ὑπισχνούμενος μεγάλα.*

25 *Τέκνα μάθε τίκτειν οὐ τὰ γηροβοσκήσοντα τὸ σῶμα, τὰ δὲ τὴν ψυχὴν θρέψοντα τῇ ἀϊδίῳ τροφῇ.*

26 *Τὰ ἐπίπονα τῶν ἡδέων μᾶλλον ἡγοῦ συντελεῖν εἰς ἀρετήν.*

27 *Χαλεπὸν πολλὰς ὁδοὺς ἅμα τοῦ βίου βαδίζειν.*

28 *Ψυχῆς πᾶν πάθος εἰς σωτηρίαν αὐτῆς πολεμιώτατον.*

29 *Πυθαγόρου.*

Πυθαγόρας ἔφη ὅτι χρὴ βίον αἱρεῖσθαι τὸν ἄριστον, ἡδὺν γὰρ αὐτὸν ἡ συνήθεια ποιήσει. πλοῦτος ἀσθενὴς ἄγκυρα, δόξα ἔτι ἀσθενεστέρα· τὸ σῶμα ὁμοίως, αἱ ἀρχαί, αἱ τιμαί· πάντα ταῦτα ἀσθενῆ καὶ ἀδύνατα. τίνες οὖν ἄγκυραι δυναταί; φρόνησις μεγαλοψυχία ἀνδρεία· ταύτας οὐδεὶς χειμὼν σαλεύει.

οὗτος θεοῦ νόμος, ἀρετὴν εἶναι τὸ ἰσχυρὸν καὶ βέβαιον μόνον, τὰ δ' ἄλλα λῆρον.

30 Ἀντισθένους.

Οὔτε συμπόσιον χωρὶς ὁμιλίας οὔτε πλοῦτος χωρὶς ἀρετῆς ἡδονὴν ἔχει.

31 Φωκίωνος.

Οὔτε ἐξ ἱεροῦ βωμὸν οὔτε ἐκ τῆς ἀνθρωπίνης φύσεως ἀφαιρετέον τὸν ἔλεον.

32 Διογένους.

Πυνθανομένου τινὸς πῶς ἄν τις ἑαυτοῦ διδάσκαλος γένοιτο; "εἰ ὑπὲρ ὧν ἐπιτιμᾷ τοῖς ἄλλοις" ἔφη "καὶ ἑαυτῷ ἐπιτιμῴη μάλιστα."

33 Σωκράτους.

Τοῦ βίου καθάπερ ἀγάλματος πάντα τὰ μέρη καλὰ εἶναι δεῖ.

34 Ἀνδριὰς μὲν ἐπὶ βάσεως, σπουδαῖος δὲ ἀνὴρ ἐπὶ καλῆς προαιρέσεως ἑστὼς ἀμετακίνητος ὀφείλει εἶναι.

35 Τὸν λιβανωτὸν τοῖς θεοῖς, τὸν δὲ ἔπαινον τοῖς ἀγαθοῖς ἀπονέμειν δεῖ.

36 Ἀπολογεῖσθαι μὲν γὰρ χρὴ ὑπὲρ τῶν ἀδίκως περὶ τὸ ἀδικεῖν αἰτίαν ἐχόντων, ἐπαινεῖν δὲ τοὺς ἐπ' ἀγαθῷ τινι διαφέροντας.

37 Σωκράτους.

Οὔτε ἵππος εὐγενὴς κρίνοιτ' ἂν ὁ πολυτελῆ σκευὴν ἔχων ἀλλ' ὁ τῇ φύσει λαμπρός, οὔτε ἀνὴρ σπουδαῖος ὁ πολύτιμον οὐσίαν κεκτημένος ἀλλ' ὁ τὴν ψυχὴν γενναῖος.

38 Τοῦ σοφοῦ στόματος ἀνοιχθέντος καθάπερ ἱεροῦ τὰ τῆς ψυχῆς καλὰ βλέπεται ὥσπερ ἀγάλματα.

39 Δημοκρίτου.

Ἀνθρώποισι ἁρμόδιον ψυχῆς μᾶλλον ἢ σώματος ποιέεσθαι λόγον. ψυχὴ μὲν γὰρ τελεωτάτη σκήνευς μοχθηρίην ὀρθοῖ, σκήνεος δὲ ἰσχὺς ἄνευ λογισμοῦ ψυχὴν οὐδέν τι ἀμείνω τίθησι.

40. Δημοκρίτου.

Ἀνθρώποισι γὰρ εὐθυμίη γίνεται μετριότητι τέρψιος καὶ βίου συμμετρίῃ, τὰ δὲ λείποντα καὶ ὑπερβάλλοντα μεταπίπτειν τε φιλέει καὶ μεγάλας κινήσιας ἐμποιέειν τῇ ψυχῇ. αἱ δ' ἐκ μεγάλων διαστημάτων κινεόμεναι τῶν ψυχέων, οὔτε εὐσταθέες εἰσὶ οὔτε εὔθυμοι. ἐπὶ τοῖσι δυνατοῖσι ὦν δεῖ ἔχειν τὴν γνώμην καὶ τοῖσι παρεοῦσι ἀρκέεσθαι, τῶν μὲν ζηλουμένων καὶ θωυμαζομένων ὀλίγην μνήμην ἔχοντα καὶ τῇ διανοίῃ μὴ προσεδρεύοντα, τῶν δὲ ταλαιπωρεόντων τοὺς βίους θεωρέειν, ἐννοεύμενον ἃ πάσχουσι κάρτα, ὅκως ἂν τὰ παρεόντα σοι καὶ ὑπάρχοντα μεγάλα καὶ ζηλωτὰ φαίνηται καὶ μηκέτι πλειόνων ἐπιθυμέοντι συμβαίνῃ κακοπαθέειν τῇ ψυχῇ. ὁ γὰρ θωυμάζων τοὺς ἔχοντας καὶ μακαριζομένους ὑπὸ τῶν ἄλλων ἀνθρώπων, καὶ τῇ μνήμῃ πᾶσαν ὥρην προσεδρεύων, ἀεὶ ἐπικαινουργέειν ἀναγκάζεται καὶ ἐπιβάλλεσθαι δι' ἐπιθυμίην τοῦ τι πρήσσειν ἀνήκεστον ὧν νόμοι κωλύουσιν. διόπερ τὰ μὲν μὴ δίζησθαι χρεών, ἐπὶ δὲ τοῖσι εὐθυμέεσθαι χρεὼν παραβάλλοντα τὸν ἑωυτοῦ βίον πρὸς τὸν τῶν φαυλότερον πρησσόντων, καὶ μακαρίζειν ἑωυτόν, ἐνθυμεύμενον ἃ πάσχουσι καὶ ὅκως αὐτέων βέλτιον πρήσσει τε καὶ διάγει. ταύτης γὰρ ἐχόμενος τῆς γνώμης εὐθυμότερόν τε διάξεις καὶ οὐκ ὀλίγας κῆρας ἐν τῷ βίῳ διώσεαι, φθόνον καὶ ζῆλον καὶ δυσμενίην.

41 Ἰσοκράτους Νικοκλῆς ἢ Κύπριοι (39 b).

Μὴ τὴν κακίαν οἴεσθε μᾶλλον τῆς ἀρετῆς ὠφελεῖν, τὸ δ' ὄνομα ἀτυχέστερον ἔχειν· ἀλλ' οἵων περ ὀνομάτων ἕκαστα τῶν πραγμάτων τετύχηκε, τοιαύτας ἡγεῖσθε καὶ τὰς δυνάμεις αὐτῶν εἶναι.

---

42 Ἰσοκράτους πρὸς Δημόνικον.

Τῆς ἀρετῆς οὐδὲν κτῆμα σεμνότερον οὐδὲ βεβαιότερόν ἐστι.

43 Ἐν ταυτῷ.

Ἡ δὲ τῆς ἀρετῆς κτῆσις, οἷς ἂν ἀκιβδήλως ταῖς διανοίαις συναυξηθῇ, μόνη μὲν συγγηράσκει, πλούτου δὲ κρείττων, χρησιμωτέρα δ' εὐγενείας ἐστίν, τὰ μὲν τοῖς ἄλλοις ἀδύνατα δυνατὰ καθιστῶσα, τὰ δὲ τῷ πλήθει φοβερὰ θαρσαλέως ὑπομένουσα, καὶ τὸν μὲν ὄκνον ψόγον τὸν δὲ πόνον ἔπαινον ἡγουμένη.

44 Ἰσοκράτους Παναθηναϊκοῦ.

Τίνας οὖν καλῶ πεπαιδευμένους; ἐπεὶ τὰς τέχνας καὶ τὰς ἐπιστήμας καὶ τὰς δυνάμεις ἀποδοκιμάζω. πρῶτον μὲν τοὺς καλῶς χρωμένους τοῖς πράγμασι τοῖς κατὰ τὴν ἡμέραν ἑκάστην προσπίπτουσι, καὶ τὴν δόξαν ἐπιτυχῆ τῶν καιρῶν ἔχοντας, καὶ δυναμένην ὡς ἐπὶ τὸ πολὺ στοχάζεσθαι τοῦ συμφέροντος· ἔπειτα τοὺς πρεπόντως καὶ δικαίως ὁμιλοῦντας τοῖς ἀεὶ πλησιάζουσι· καὶ τὰς μὲν τῶν ἄλλων ἀηδίας καὶ βαρύτητας εὐκόλως καὶ ῥᾳδίως φέροντας, σφᾶς δὲ αὐτοὺς ὡς δυνατὸν ἐλαφροτάτους καὶ μετριωτάτους τοῖς συνοῦσι παρέχοντας· ἔτι τοὺς μὲν τῶν ἡδονῶν ἀεὶ κρατοῦντας, τῶν δὲ συμφορῶν μὴ λίαν ἡττωμένους, ἀλλ' ἀνδρωδῶς ἐν αὐταῖς διακειμένους, καὶ τῆς φύσεως ἀξίους ἧς μετέχοντες τυγχάνομεν· τέταρτον, ὅπερ μέγιστον, μὴ διαφθειρομένους ὑπὸ τῶν εὐπραγιῶν μηδ' ἐξισταμένους αὑτῶν μηδὲ ὑπερηφάνους γιγνομένους, ἀλλ' ἐμμένοντας τῇ τάξει τῶν εὖ φρονούντων, καὶ μὴ μᾶλλον χαίροντας τοῖς διὰ τύχην ὑπάρξασιν ἀγαθοῖς ἢ τοῖς διὰ τὴν αὑτῶν φύσιν καὶ φρόνησιν ἐξ ἀρχῆς γιγνομένοις. τοὺς δὲ μὴ μόνον πρὸς ἓν τούτων ἀλλὰ πρὸς ἅπαντα ταῦτα τὴν ἕξιν τῆς ψυχῆς εὐάρμοστον ἔχοντας, τούτους φημὶ φρονίμους εἶναι καὶ τελείους ἄνδρας καὶ πάσας ἔχειν τὰς ἀρετάς.

45 *Ἰσοκράτους.*

Ἰσοκράτης εἶπεν ὅτι τὸν χρηστὸν καὶ ἀγαθὸν ἄνδρα δεῖ τῶν μὲν προγεγενημένων μεμνῆσθαι, τὰ δὲ ἐνεστῶτα πράττειν, περὶ δὲ τῶν μελλόντων φυλάττεσθαι.

46 *Ἐπικτήτου.*

Ὁ τύχῃ βίος συμπεπλεγμένος ἔοικε χειμάρρῳ ποταμῷ· καὶ γὰρ ταραχώδης καὶ ἰλύος ἀνάμεστος καὶ δυσέμβατος καὶ τυραννικὸς καὶ πολύηχος καὶ ὀλιγοχρόνιος.

47 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Ψυχὴ ὁμιλοῦσα ἀρετῇ ἔοικεν ἀενάῳ πηγῇ· καὶ γὰρ καθαρὸν καὶ ἀτάραχον καὶ πότιμον καὶ νόστιμον καὶ κοινωνικὸν καὶ πλούσιον καὶ ἀβλαβὲς καὶ ἀνώλεθρον.

48 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Εἰ βούλει ἀγαθὸς εἶναι, πρῶτον πίστευσον ὅτι κακὸς εἶ.

49 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Βέλτιον ὀλιγάκις πλημμελεῖν ὁμολογοῦντα σωφρονεῖν πλεονάκις ἢ ὀλιγάκις ἁμαρτεῖν λέγοντα πλημμελεῖν πολλάκις.

50 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Κόλαζε τὰ πάθη, ἵνα μὴ ὑπ' αὐτῶν τιμωρῇ.

51 *Μὴ οὕτω τὸ τῆς δόξης αἰσχύνου ὡς τὸ ἐκ τῆς ἀληθείας ἀπόφευγε.*

52 *Εἰ βούλει καλῶς ἀκούειν, μάθε καλῶς λέγειν, μαθὼν δὲ καλῶς λέγειν, πειρῶ καλῶς πράττειν, καὶ οὕτω καρπώσῃ τὸ καλῶς ἀκούειν.*

53 *Τοῦ αὐτοῦ Ἐγχειριδίου* (c. 42).

Ὅταν τις κακῶς τι ποιῇ ἢ κακῶς τι λέγῃ, μέμνησο ὅτι καθήκειν αὐτῷ οἰόμενος ποιεῖ. τί οὖν; ἀκολουθήσει τῷ σοι φαινομένῳ ἢ τῷ αὐτῷ; ἀλλὰ κακῶς αὐτῷ φαίνεται· τίς οὖν ἐξηπάτηται; ἐκεῖνος. τίς οὖν βέβλαπται; ὁ ἐξηπατημένος. καὶ γὰρ τὸ ἀληθὲς συμπεπλεγμένον ἐάν τις ὑπολάβῃ ψεῦδος, οὐ τὸ συμπεπλεγμένον βλάπτεται, ἀλλ' ὁ ὑπολαβών.

54 *Ἐλευθερία καὶ δουλεία τὸ μὲν ἀρετῆς ὄνομα τὸ δὲ κακίας, ἄμφω δὲ προαιρέσεως ἔργα. οἷς δὲ προαίρεσις οὐ κοινωνεῖ, τούτων ψαύει μὲν οὐδέτερον· ψυχὴ δὲ δεσπόζειν εἴωθε σώματος καὶ ὅσα τῶν ἀμφὶ σῶμα προαιρέσεως ἀκοινώνητα. οὐδεὶς γὰρ δοῦλος τὴν προαίρεσιν ὑπάρχων ἐλεύθερος.*

55 *Κακὸς δεσμὸς σώματος μὲν τύχη ψυχῆς δὲ κακία. ὁ μὲν γὰρ τὸ σῶμα λελυμένος τὴν δὲ ψυχὴν δεδεμένος, δοῦλος· ὁ δ' αὖ τὸ σῶμα δεδεμένος τὴν δὲ ψυχὴν λελυμένος, ἐλεύθερος.*

56 *Τὸν μὲν τοῦ σώματος δεσμὸν λύει καὶ φύσις διὰ θανάτου καὶ κακία διὰ χρημάτων, τὸν δὲ τῆς ψυχῆς ἀρετὴ διὰ μαθήσεως καὶ ἐμπειρίας καὶ ἀσκήσεως.*

57 *Εἰ βούλει ἀταράχως καὶ εὐαρέστως ζῆν, πειρῶ τοὺς συνοικοῦντάς σοι πάντας ἀγαθοὺς ἔχειν. ἕξεις δὲ ἀγαθούς, εἰ τοὺς μὲν ἑκόντας παιδεύοις τοὺς δὲ ἄκοντας ἀπολύοις. συμφεύξεται γὰρ τοῖς φυγοῦσιν ἡ μοχθηρία ἅμα καὶ ἡ κακία, συνυπολειφθήσεται δὲ τοῖς συμμένουσί σοι ἡ χρηστότης καὶ ἡ ἐλευθερία.*

58 *Ἐκ τῶν Ἰαμβλίχου* (Protr. 2 p. 14).

Ψυχῇ ζῶντας ἡμᾶς τῇ ταύτης ἀρετῇ ῥητέον εὖ ζῆν, ὡς ὀφθαλμοῖς ὁρῶντας τῇ τούτων ἀρετῇ καλῶς ὁρᾶν.

59 Τοῦ αὐτοῦ προτρεπτικῶν εἰς φιλοσοφίαν λόγων (ib. p. 16).

Καθάπερ εἰς ἄσυλον τέμενος τὴν ἀρετὴν ὁρμητέον, ὅπως εἰς μηδεμίαν ἀγεννῆ τύχης ὕβριν ὦμεν ἔκδοτοι.

60 Τοῦ αὐτοῦ πρὸς Σωκράτην περὶ ἀρετῆς.

Ψυχῆς μὲν οὖν ἂν εἴη ἀρετὴ τελεότης καὶ εὐμετρία τῆς ζωῆς, λόγου τε καὶ νοῦ καὶ διανοήσεως ἡ ἀκροτάτη καὶ καθαρωτάτη ἐνέργεια. τὰ δὲ ἔργα τῆς ἀρετῆς ἀγαθοειδῆ, κάλλιστα, νοερά, σπουδαῖα, πλήρη μεσότητος, εὐκαιρίας μετέχοντα, προηγούμενα, τέλους ἀρίστου στοχαζόμενα, χαρίεντα, ὅτι μάλιστα θεωρείσθω.

62 Περικτιόνης Πυθαγορείας περὶ σοφίας.

Γέγονε δὲ καὶ συνέστα ὁ ἄνθρωπος ποττὸ θεωρῆσαι τὸν λόγον τᾶς τῶν ὅλων φύσιος καὶ τᾶς σοφίας· ἔργον ἐστὶν αὐτῷ τούτῳ κτήσασθαι καὶ θεωρῆσαι τὰν τῶν ἐόντων φρόνασιν.

63 Ἐν ταυτῷ.

Γαμετρία μὲν ὦν καὶ ἀριθμητικὰ καὶ τἄλλα τὰ θεωρητικὰ καὶ ἐπισταμονικὰ περί τινα τῶν ἐόντων κατασχολέονται, ἁ δὲ σοφία περὶ πάντα τὰ γένη τῶν ἐόντων. οὕτως γὰρ ἔχει σοφία περὶ πάντα τὰ ἐόντα, ὡς ὄψις περὶ πάντα τὰ ὁρατά, καὶ ἀκοὰ περὶ πάντα τὰ ἀκουστά. τὰ δὲ συμβεβακότα τοῖς ἐοῦσιν ἃ μὲν

---

61 Ἀγαπητοῦ πρὸς Ἰουστινιανόν.

Σπούδαζε διαπαντός, καὶ ὥσπερ οἱ τὰς κλίμακας ἀναβαίνειν ἀρξάμενοι οὐ πρότερον ἵστανται τῆς ἐπὶ τὰ ἄνω φορᾶς πρὶν ἂν τῆς ἄκρας ἐφίκωνται βαθμίδος, οὕτω καὶ αὐτὸς ἔχου τῆς τῶν καλῶν ἀναβάσεως.

καθόλω πᾶσι συμβέβακεν, ἃ δὲ πλείστοις αὐτῶν, ἃ δὲ παρ' ἑνὶ ἑκάστῳ. τὰ μὲν ὦν καθόλω πᾶσιν συμβεβακότα συνιδὲν καὶ θεωρῆσαι τᾶς σοφίας οἰκῆον, τὰ δὲ τοῖς πλείστοις τᾶς περὶ φύσιν ἐπιστάμας, τὰ δ' ἴδια καθ' ἕκαστον τᾶς περί τι ἀφωρισμένον ἐπιστάμας. καὶ διὰ τοῦτο σοφία μὲν τὰς τῶν ἐόντων ἁπάντων ἀρχὰς ἀνευρίσκει, φυσικὰ δὲ τὰς τῶν φύσει γιγνομένων, γαμετρία δὲ καὶ ἀριθμητικὰ καὶ μουσικὰ τὰς περὶ τὸ ποσὸν καὶ τὸ ἐμμελές. ὅστις ὦν ἀναλῦσαι οἷός τ' ἐντὶ πάντα τὰ γένεα ὑπὸ μίαν καὶ τὰν αὐτὰν ἀρχάν, καὶ πάλιν ἐκ ταύτας συνθεῖναι καὶ συναρθμήσασθαι, οὗτος δοκεῖ καὶ σοφώτατος ἦμεν καὶ παναλαθέστατος, ἔτι δὲ καὶ καλὰν σκοπιὰν ἀνευρηκέναι, ἀφ' ἇς δυνατὸς ἐσεῖται τόν τε θεὸν κατόψεσθαι καὶ πάντα τὰ ἐν τᾷ συστοιχίᾳ τε καὶ τάξει τὰ ἐκείνω κατακεχωρισμένα.

64 *Μετώπου Πυθαγορείου Μεταποντίνου ἐκ τοῦ περὶ ἀρετῆς.*

Ἀρετά ἐντι ἀνθρώπω τελειότας φύσιος ἀνθρώπω. ἕκαστον γὰρ τῶν ἐόντων τέλειον καὶ ἄκρον γίνεται κаττὰν οἰκείαν τᾶς φύσιος ἀρετάν. ἵππω τε γὰρ ἀρετά ἐντι ἁ ἐς τὸ ἄκρον ἄγοισα τὰν τῶ ἵππω φύσιν, καὶ ἐπὶ τῶν μερέων δὲ τῶν καθ' ἕκαστον ὁ αὐτὸς λόγος. ὀπτίλων τε γὰρ ἀρετὰ ὀξυδορκία· αὐτὰ δ' ἀκρότας ἐντὶ τᾶς ὀφθαλμῶν φύσιος. καὶ ὠάτων ἀρετὰ ὀξυακοΐα· αὐτὰ δ' ἀκρότας ἐντὶ τᾶς ὠάτων φύσιος. καὶ ποδῶν ἀρετὰ ποδωκεία· [καὶ] αὐτὰ δ' ἀκρότας ἐντὶ τᾶς ποδῶν φύσιος. ἀνάγκα δ' ἀρετὰν πᾶσαν τρία ταῦτ' ἔχεν, λόγον καὶ δύναμιν καὶ προαίρεσιν· λόγον μέν, ᾧ κρίνει καὶ θεωρεῖ· δύναμιν δέ, ᾇ ἀντέχει καὶ κρατεῖ· προαίρεσιν δέ, ᾇ στέργει καὶ ἀγαπῇ. τὸ

μὲν ὦν κρίνεν καὶ θεωρὲν ἐντὶ τῶ διανοητικῶ μέρεος τᾶς ψυχᾶς, τὸ δ' ἀντέχεν καὶ κρατὲν ἴδιον τῶ ἀλόγω μέρεος τᾶς ψυχᾶς, τὸ δὲ στέργεν καὶ ἀγαπῆν κοινὸν καὶ τῶ διανοητικῶ καὶ τῶ ἀλόγω μέρεος τᾶς ψυχᾶς. συνέστακε γὰρ προαίρεσις ἐκ διανοίας καὶ ὀρέξιος· ἁ μὲν ὦν διάνοια ἀπὸ τῶ λογικῶ μέρεός ἐντι τᾶς ψυχᾶς, ἁ δὲ ὄρεξις ἀπὸ τῶ ἀλόγω. τὸ δὲ πλῆθος τᾶν ἀρετᾶν ἁπασᾶν ἐκ τῶν μερέων τᾶς ψυχᾶς κατίδοιτο κά τις, ὡσαύτως δὲ καὶ τὰν γένεσιν καὶ τὰν σύστασιν τᾶς ἀρετᾶς. ἐπὶ γὰρ τῶν μερέων τᾶς ψυχᾶς δύο τὰ πρῶτα, τὸ μὲν λογιστικὸν τὸ δ' ἄλογον. καὶ λογιστικὸν μέν, ᾧ κρίνομες καὶ θεωρέομες· ἄλογον δέ, ᾧ ὁρμῶμες καὶ ὀρεγόμεθα. ταῦτα δὲ ἀλλάλοις ἢ συμφωνοῦντι ἢ διαφωνοῦντι, ἁ δὲ μάχα καὶ διαφωνία γίνεται αὐτοῖς δι' ὑπερβολὰν καὶ ἔλλειψιν. φανερὸν ὦν ὅτι, ὅκκα μὲν τὸ λογιστικὸν μέρος τᾶς ψυχᾶς ἐπικρατῇ τῶ ἀλόγω, γίνεται καρτερία καὶ ἐγκράτεια· ὅκκα δὲ τὸ ἄλογον μέρος τᾶς ψυχᾶς τῶ λογιστικῶ, ἀκρασία καὶ μαλακία· ὅκκα δὲ τὸ μὲν ἄγηται τὸ δ' ἕπηται, καὶ ἀμφότερα συμφωνῇ ἀλλάλοις, τὸ τηνικαῦτα ἀρετά. ἁ μὲν ὦν καρτερία καὶ ἐγκράτεια γίνεται μετὰ λύπας· ἀλλ' ἁ μὲν καρτερία ἐν τῷ ἀντέχεν πόνῳ, ἁ δ' ἐγκράτεια ἐν τῷ ἀντέχεν ἁδονᾷ, ἁ δ' ἀκρασία καὶ μαλακία ἐν τῷ μὴ ἀντέχεν μηδὲ κρατέν. καὶ διὰ τοῦτο συμβαίνει φεύγεν τἀγαθὰ τὼς ἀνθρώπως διὰ λύπαν, ἀποβάλλεν δ' αὐτὰ διὰ ἁδονάν. καὶ τοὶ ἔπαινοι δὲ καὶ ψόγοι καὶ τὰ καλὰ πάντα [καὶ κακὰ] τὰ περὶ τὸν ἄνθρωπον γίνεται ἐν τούτοις τοῖς μέρεσι τᾶς ψυχᾶς. καὶ καθόλω μὲν ἁ τᾶς ἀρετᾶς σύστασις γίνεται τοῦτον τὸν τρόπον· τὰ δὲ εἴδεα αὐτᾶς καὶ τὰ μέρεα οὕτως κά τις ἀθρήσαι. ἐπεὶ γὰρ τᾶς ψυχᾶς δύο μέρεα, τὸ μὲν λογιστικὸν τὸ δὲ ἄλογον, καὶ τὸ μὲν

λογιστικόν ἐντι ᾧ κρίνομες καὶ θεωροῦμες, τὸ δ' ἄλογον ᾧ ὁρμῶμες καὶ ὀρεγόμεθα, τῶ δὲ ἀλόγω τὸ μὲν θυμοειδὲς τὸ δ' ἐπιθυματικόν, καὶ τούτου τὸ μὲν οἷον ἀμυντικὸν καὶ ὑπερμαχατικὸν ποττὼς πλασίον θυμοειδὲς ὀνυμάζεται, τὸ δ' οἷον ὀρεκτικὸν καὶ ποθητικὸν τᾶς οἰκείας τῶ σώματος συστάσιος ἐπιθυματικόν· φανερὸν ὡς κατὰ λόγον τοῖς μέρεσι τούτοις τᾶς ψυχᾶς καὶ τὸ πλᾶθος τᾶν ἀρετᾶν ἀκολούθακεν καὶ ταὶ διαφοραὶ καὶ ἰδιότατες αὐτῶν. τῶ μὲν γὰρ λογιστικῶ μέρεος τᾶς ψυχᾶς ἀρετὰ ἁ φρόνασις, κριτικὰ γὰρ ἐντὶ καὶ θεωρητικὰ ἕξις· τῶ δὲ θυμοειδέος ἁ ἀνδρία· ἕξις γὰρ ἐντὶ ἀντερειστικὰ καὶ ὑποστατικὰ τῶν δεινῶν· τῶ δ' ἐπιθυμητικῶ ἁ σωφροσύνα· μετριότας γὰρ ἐντὶ καὶ κατοχὰ ποθ' ἁδονὰν τὰν διὰ σώματος· ὅλας δὲ τᾶς ψυχᾶς ἁ δικαιοσύνα. φαῦλοι μὲν γὰρ τοὶ ἄνθρωποι γίνονται ἢ διὰ κακίαν ἢ δι' ἀκρασίαν ἢ διὰ θηριότατα· ἀδικοῦντι δ' ἀλλάλως ἢ διὰ κέρδος ἢ δι' ἁδονὰν ἢ διὰ φιλοτιμίαν. ἁ μὲν ὦν κακία τῶ λογιστικῶ μέρεος τᾶς ψυχᾶς ἐντὶν οἰκειοτέρα· ποτέοικε γὰρ ἁ μὲν φρόνασις τᾷ τέχνᾳ, ἁ δὲ κακία τᾷ κακοτεχνίᾳ· ἕξιν μαχανάσιος γὰρ ποθὲν εὑρίσκει τὸ ἄδικον· ἁ δ' ἀκρασία μᾶλλον τῶ ἐπιθυμητικῶ· ἐν γὰρ τῷ κρατὲν ἁδονᾶς ἁ ἐγκράτεια, καὶ ἐν τῷ μὴ κρατὲν ἁ ἀκρασία. ἁ δὲ θηριότας τῶ θυμοειδέος· ὅκκα γὰρ τᾷ ἐπιθυμίᾳ τῶ κακῶς ποιῆσαι χαρίζηταί τις, οὐχ ὡς ἄνθρωπος ἀλλ' ὡς θηρίον, τὸ τοιόνδε ὀνυμάζεται θηριῶδες. ἀκόλουθα δὲ καὶ τὰ ἀποτελέσματα τᾶν διαθέσεων τούτων, ἇν περ ἕνεκα πράσσοντι. ἁ μὲν γὰρ πλεονεξία ἀπὸ κακίας, ἁ δὲ κακία ἀπὸ τῶ λογιστικῶ μέρεος τᾶς ψυχᾶς. καὶ ἁ μὲν φιλοτιμία ἀπὸ τῶ θυμοειδέος· αὐτὰ δ' ἐν ὑπερβολᾷ γενομένα γεννῆ τὰν θηριότητα. πάλιν δὲ ἁ μὲν ἁδονὰ ἐν τῷ ἐπιθυμητικῷ,

σφοδρότερον δὲ μαστευομένα γεννῇ τὰν ἀκρασίαν. ὥστ' ἐπεὶ τὸ ἀδικὲν γίνεται δι' αἰτίας τοσαύτας, φανερὸν ὅτι τὸ δικαιοπραγὲν γίνεται διὰ τὰς ἴσας. φύσει γὰρ ἁ μὲν ἀρετὰ ἀγαθοποιὸς καὶ ὠφελητικά, ἁ δὲ κακία κακοποιὸς καὶ βλαπτικά. ἐπεὶ δὲ τῶν τᾶς ψυχᾶς μερέων τὸ μὲν ἐντὶ ἁγεόμενον τὸ δ' ἑπόμενον, αἱ δ' ἀρεταὶ καὶ αἱ κακίαι περὶ ταῦτα καὶ ἐν τούτοις· φανερὸν ὅτι καὶ τᾶν ἀρετᾶν ταὶ μὲν ἐντὶ ἁγεμονικαὶ ταὶ δ' ἑπητικαὶ ταὶ δὲ σύνθετοι ἐκ τούτων. ἁγεμονικαὶ μὲν οἷον ἁ φρόνασις, ἑπητικαὶ δὲ οἷον ἁ ἀνδρία καὶ σωφροσύνα, σύνθετοι δ' ἐκ τούτων οἷον ἁ δικαιότας. τὰ δὲ πάθεα τᾶς ἀρετᾶς ὕλα· περὶ ταῦτα γὰρ καὶ ἐν τούτοις ἁ ἀρετά. τῶν δὲ παθέων τὸ μὲν ἑκούσιον τὸ δ' ἀκούσιον· καὶ ἑκούσιον μὲν ἁδονά, ἀκούσιον δὲ λύπα. ταὐτὰ δὲ ταῦτα καὶ ἐπιτείνοντι καὶ ἀνίεντι τοὶ πολιτικοί, συναρμόζοντες τὰ ἄλογα μέρεα τᾶς ψυχᾶς ποτὶ τὰ λόγον ἔχοντα· τᾶς δὲ συναρμογᾶς ὅρος τὸ μήτε διὰ τὰν ἔνδειαν μήτε διὰ τὰν ὑπερβολὰν ἀπείργεσθαι τὸν νόον τὸ ἴδιον ἔργον ἐπιτελέν. συντέτακται γὰρ τὸ χέρηον ἕνεκα τῶ βελτίονος, ὡς ἐν μὲν τῷ κόσμῳ τὸ ἀειπαθὲς πᾶν μέρος ἕνεκα τῶ ἀεικινάτω, ἐν δὲ τᾷ συζυγίᾳ τῶν ζώων τὸ θῆλυ ἕνεκα τῶ ἄρρενος· τὸ μὲν γὰρ σπείρει τὰν ψυχὰν γεννῶν, τὸ δὲ μόνον τὰν ὕλαν παρέχεται τῷ γεννωμένῳ· ἐν δέ γε τᾷ ψυχᾷ τὸ ἄλογον τῶ λογικῶ. συντέτακται γὰρ καὶ ὁ θυμὸς καὶ ἁ ἐπιθυμία ποτὶ τὸ πρᾶτον μέρος τᾶς ψυχᾶς, τὸ μὲν ὥσπερ δορυφόρος τις καὶ σωματοφύλαξ, τὸ δ' ὡς οἰκονόμος καὶ οἰκουρὸς τῶν ἀναγκαίων· ὁ δὲ νόος ἐπ' ἄκρας τᾶς κορυφᾶς τῶ σώματος ἱδρυμένος καὶ ἔχων περιαυγέα καὶ διαυγέα τὰν ἔποψιν, μαστεύεται τὰν τῶν ἐόντων φρόνασιν· καὶ τοῦτ' ἔργον ἐντὶ αὐτῷ κατὰ φύσιν, τὸ μαστευσάμενον καὶ

κτησάμενον ἀκολουθῆσαι τοῖς βελτίοσιν αὐτῶ καὶ τιμιωτάτοις. ἀρχὰ γὰρ καὶ αἰτία καὶ κανών ἐντι τᾶς ἀνθρωπίνας εὐδαιμοσύνας ἁ τῶν θείων καὶ τιμιωτάτων ἐπίγνωσις.

65 *Κλεινίου Πυθαγορείου Ταραντίνου.*

Πᾶσα μὲν ὦν ἀρετὰ τελεοῦται, καθάπερ ἐν ἀρχᾷ διώρισται, ἐκ λόγω καὶ προαιρέσιος καὶ δυνάμιος. τούτων δὲ καθ' ἑαυτὸ ἕκαστον οὐκ ἀρετᾶς μέρος ἐντί, ἀλλ' αἴτιον ἀρετᾶς. ὅσοι μὲν ὦν ἔχοντι τὸ νοατικὸν καὶ γνωστικὸν μέρος αὐτᾶς, δεινοί τε καὶ συνετοὶ ὀνυμαίνονται· ὅσοι δὲ τὸ ἠθικόν τε καὶ προαιρετικόν, χρήσιμοί τε καὶ ἐπιεικέες. . . .

66 *Κλεινίου Πυθαγορείου Ταραντίνου ἐκ τῶν περὶ ὁσιότητος καὶ εὐσεβείας.*

Ὁπόσας δεῖ τὰς αἰτίας ἀνευρέν, δι' ἃς ἀδικὲν πέφυκεν ἄνθρωπος. αὗται δὲ τρεῖς τυγχάνοντι· φιλαδονία μὲν ἐν ταῖς ἀπολαύσεσι ταῖς διὰ σώματος, πλεονεξία δὲ ἐν τῷ κερδαίνεν, φιλοδοξία δὲ ἐν τῷ καθυπερέχεν τῶν ἴσων τε καὶ ὁμοίων. δεῖ τοιγαρῶν γνωρίζεν, ὅτι τούτοις ἀντιτιθέμεν οἷόν τέ ἐστιν, ἃ μὲν φόβον ἐμπαρασκευάζοντι τοῖς ἀνθρώποις, ἃ δὲ αἰσχύναν, ἃ δὲ καὶ ἐπιθυμίαν· φόβον μὲν δὴ τῶν νόμων, αἰσχύναν δὲ τῶν θεῶν, ἐπιθυμίαν δὲ τῶν λόγων. διδάσκεν ὦν δεῖ τὼς νέως ἐξ ἀρχᾶς τάν τε τῶν θεῶν τιμὰν καὶ τὰν τῶν νόμων· ἐκ τῶνδε γὰρ φανερὸν ἂν εἴη, ὅτι πᾶν ἔργον ἀνθρώπινον καὶ βίος ὃς ὁσιότατός τε καὶ εὐσεβείας μεθέξει, καὶ ὀρθοπλοεῖ.

67 *Θεαγοῦς Πυθαγορείου ἐκ τοῦ περὶ ἀρετῆς.*

Ἀρχαὶ τᾶς συμπάσας ἀρετᾶς τρεῖς, γνῶσις καὶ

δύναμις καὶ προαίρεσις. καὶ ἔντιν ἁ μὲν γνῶσις οἷον ὄψις ᾁ θεωροῦμεν καὶ κρίνομεν τὰ πράγματα, ἁ δὲ δύναμις οἷον ἀλκά τις τῶ σκάνεος ᾁ ὑφιστάμεθα καὶ ἐμμένομεν τοῖς πράγμασιν, ἁ δὲ προαίρεσις οἷον χεῖρες ψυχᾶς τινες αἷς ὁρμῶμεν καὶ ἀντιλαζύμεθα τῶν πραγμάτων. ἔχει δὲ καὶ ὁ τᾶς ψυχᾶς διάκοσμος οὕτως. τὸ μὲν γάρ τι αὐτᾶς ἐντι λογισμὸς τὸ δὲ θυμὸς τὸ δ' ἐπιθυμία. λογισμὸς μὲν ὦν ὁ κρατέων τᾶς γνώσιος, θυμὸς δὲ ὁ κρατέων τῶ μένεος, ἐπιθυμία δὲ ἁ κρατοῦσα τῶ ἐπιθυματικῶ ἀδεῶς. ὅκκαν ὦν ἐς τὸ ἓν τὰ τρία ταῦτα μολῇ μίαν ἐπιδεξάμενα συναρμογάν, τόκα δὲ γίνεται ἀρετὰ καὶ ὁμολογία ἐν τᾷ ψυχᾷ· ὅκκαν δὲ στασιάζοντα καὶ ἀπ' ἀλλάλων ἀπόσπαστα ᾖ, τόκα δὲ γίνεται κακία καὶ ἀναρμοστία ἐν τᾷ ψυχᾷ· καὶ ὅκκαν μὲν ὁ λογισμὸς ἐπικρατέῃ τῶν ἀλόγων μερέων τᾶς ψυχᾶς, τόκα δὲ γίνεται καρτερία καὶ ἐγκράτεια, καρτερία μὲν ἐν τᾷ κατοχᾷ τῶν πόνων, ἐγκράτεια δὲ ἐν τᾷ κατοχᾷ τῶν ἁδέων. ὅκκαν δὲ τὰ ἄλογα μέρεα τᾶς ψυχᾶς ἐπικρατέῃ τῶ λογισμῶ, τόκα δὲ γίνεται μαλακία καὶ ἀκρασία· μαλακία μὲν ἐν τῷ φεύγεν τὼς πόνως, ἀκρασία δὲ ἐν τῷ νικᾶσθαι ὑπὸ τῶν ἁδέων. ὅκκαν δὲ τὸ μὲν κρέσσον ἄρχῃ μέρος τᾶς ψυχᾶς τὸ δὲ χέρηον ἄρχηται, καὶ τὸ μὲν ἁγῆται τὸ δ' ἕπηται, ἀμφότερα δὲ συνευδοκῆται καὶ συνομολογῆται ἀλλάλοις, τόκα δὲ γίνεται ἀρετὰ καὶ παναγαθία περὶ ὅλαν τὰν ψυχάν. καὶ ὅκκὰν μὲν τὸ ἐπιθυματικὸν ἕπηται μέρος τᾶς ψυχᾶς τῷ λογιστικῷ, γίνεται σωφροσύνα· ὅκκαν δὲ τὸ θυμοειδές, ἀνδρειότας· ὅκκαν δὲ τὰ μέρεα πάντα, δικαιότας. αὕτα γάρ ἐντιν ἁ διείργουσα τάς τε κακίας πάσας τᾶς ψυχᾶς καὶ τὰς ἀρετὰς ἀπ' ἀλλάλων. καὶ ἔντιν ἁ δικαιότας οἷον σύσταμά τι τᾶς ἁρμογᾶς τῶν μερέων τᾶς ψυχᾶς καὶ

ἀρετὰ τελεία καὶ παννπερτάτα· πάντα γὰρ ἐν ταύτᾳ, τὰ δ' ἄλλ' ἀγαθὰ τᾶς ψυχᾶς οὐκ ἄτερθε ταύτας· διόπερ καὶ ἐν θεοῖς μέγα κράτος ἔχει ἁ δικαιότας καὶ ἐν ἀνθρώποις· τῶ γὰρ ὅλω καὶ τῶ παντὸς ἅδ' ἀρετὰ συνέχει τὰν κοινωνίαν καὶ τὰν ἐν θεοῖς καὶ τὰν ἐν ἀνθρώποις. θέμις γε οὖν φατίζεται παρὰ τοῖς οὐρανίοις θεοῖς, δίκα δὲ παρὰ τοῖς χθονίοις, νόμος δὲ παρὰ τοῖς ἀνθρώποις. ταῦτα δ' ἐντὶ σαμεῖα καὶ σύμβολα τῶ τὰν δικαιότατα παννπερτάταν ἀρετὰν ὑπάρχεν. καὶ ἄλλως δὲ πιστοῦται ὁ λόγος ἐξ ὀνυμάτων· ὄκκα μὲν γὰρ ὁ νόος τᾶς ψυχᾶς ἀμβλακίσκῃ, ὀνομάζεται ἁ τοιάδε διάθεσις ἀφροσύνα· ὄκκα δὲ ὁ θυμός, θρασύτας ἢ δειλία· ὄκκα δὲ ἐπιθυμία, ἀκρασία· καὶ ὄκκα μὲν ἐπὶ τὸ μῆον ἀμβλακίσκῃ ὁ νόος, ἀφροσύνα, ὄκκα δ' ἐπὶ τὸ μέζον, πανουργία· καὶ ὄκκα μὲν ἐπὶ τὸ μῆον ἀμβλακίσκῃ ὁ θυμός, δειλία, ὄκκα δ' ἐπὶ τὸ μέζον, θράσος· καὶ ὄκκα μὲν ἐπὶ τὸ μῆον ἀμβλακίσκῃ ἁ ἐπιθυμία, φιλαδονία· ὄκκα δ' ἐπὶ τὸ μέζον, ἀκολασία· ὅλως δὲ ἁ μὲν οὐ κατ' ὀρθὸν λόγον συναρμογά, κακία· αὕτα δέ, ἂν μηδένος ἕκατι γένηται, καλέεται ἀβελτηρία· ὄκκα δὲ φόβω, δειλία, ὄκκα δὲ ἁδονᾶς, ἀκολασία, ὄκκα δὲ κέρδεος, ἀδικία. ἁ δὲ κατ' ὀρθὸν λόγον αὐτᾶς σύνταξις, ὄκκα μὲν ἐν τῷ θεωρὲν καὶ κρίνεν γένηται, καλέεται φρόνασις· ὄκκα δὲ ἐν τῷ ὑφίστασθαι . . . . . τὰ ἁδέα, σαοφροσύνα· ὄκκα δ' ἐν τῷ κέρδεος ἀποσχέσθαι καὶ βλάβας τᾶς εἰς τὸν πλατίον, δικαιότας. ἁ δὲ κατὰ τὸν ὀρθὸν λόγον αὐτᾶς σύνταξις καὶ παρὰ τὸν ὀρθὸν λόγον παράβασις τῶ δέοντός ἐντι στοχασμὸς καὶ τῶ μὴ δέοντος ἐπίπτωσις. ἔντι δὲ τὸ μὲν δέον ὃ δεῖ ἦμεν· τοῦτο δὲ οὔτ' ἀφαιρέσιος οὔτε προσθέσιος δέεται· αὐτὸ γάρ ἐντιν ὃ δεῖ ἦμεν. τῶ δὲ μὴ δέοντος εἴδεε δύο, τὸ μὲν ὑπερ-

βολά, τὸ δὲ ἔλλειψις. καὶ ἁ μὲν ὑπερβολὰ τὸ πλέον τῶ δέοντός ἐντι, ἁ δ' ἔλλειψις τὸ ἔλαττον. ἁ δ' ἀρετὰ ἕξις τίς ἐντι τῶ δέοντος· διόπερ καὶ ἀκρότας καὶ μεσότας εὐθέως ἐντί· ἀκρότας μέν, διότι τῶ δέοντος ἔχεται, μεσότας δέ, ὅτι μεταξὺ τᾶς ὑπερβολᾶς καὶ τᾶς ἐλλείψιός ἐντιν. οὕτως γὰρ καὶ μεσότατες τυγχάνοντι καὶ ἀκρότατες· μεσότατες μέν, ὅτι ἐντὸς τᾶς ὑπερβολᾶς καὶ τᾶς ἐλλείψιος πίπτοντι· ἀκρότατες δέ, ὅτι οὔτε προσθέσιος οὔτ' ἀφαιρέσιος δέονται· αὐτὰ γὰρ ἐντὶ ταῦτα ἃ δεῖ αὐτὰ ἦμεν.

68 Ἐν ταυτῷ.

Ἐπεὶ δὲ ἁ τῶ ἤθεος ἀρετὰ περὶ πάθεα, τῶν δὲ παθέων ἁδονὰ καὶ λύπα ὑπέρτατα, φανερὸν ὅτι οὐκ ἐν τῷ ὑπεξελέσθαι τὰ πάθεα τᾶς ψυχᾶς, ἁδονὰν καὶ λύπαν, ἁ ἀρετὰ πέπτωκεν, ἀλλ' ἐν τῷ ταῦτα συναρμόζεσθαι. οὐδὲ γὰρ ὑγίεια, εὐκρασία τις ἔασα τῶν τῶ σώματος δυνάμεων, ἐν τῷ ὑπεξελέσθαι τὸ ψυχρὸν καὶ τὸ θερμὸν καὶ τὸ ὑγρὸν καὶ τὸ ξηρόν, πέπτωκεν, ἀλλ' ἐν τῷ ταῦτα συγκερασθῆμεν· ἔντι γὰρ οἷον συμμετρία τις τούτων· οὐδ' ἐν τᾷ μωσικᾷ ἐν τῷ ὑπεξελέσθαι τὸ ὀξὺ καὶ τὸ βαρὺ τὸ σύμφωνον πέπτωκεν, ἀλλ' ἐν τῷ ταῦτά πως συναρμόξασθαι. συναρμοσμένων [γὰρ] τῶ ὀξέος καὶ τῶ βαρέος τὸ μὲν σύμφωνον ἐναπολαμβάνεται, τὸ δὲ διάφωνον ἐκκρούεται· συναρμοσμένων δὲ καὶ τῶ θερμῶ καὶ τῶ ψυχρῶ καὶ τῶ ὑγρῶ καὶ τῶ ξηρῶ ἁ μὲν ὑγίεια γίνεται, ἁ δὲ νόσος ἀπόλλυται· συναρμοσμένων δὲ καὶ τῶ θυμῶ καὶ τᾶς ἐπιθυμίας αἱ μὲν κακίαι καὶ τὰ πάθεα ἐξαιρέονται, ταὶ δ' ἀρεταὶ καὶ τὰ ἤθεα ἐγγίνονται. ἰδιαίτατον δὲ τᾶς τῶ ἤθεος ἀρετᾶς ἁ προαίρεσις ἁ ἐν τοῖς καλοῖς. λόγῳ γὰρ καὶ δυνάμει συγχρέεσθαι δυνατὸν καὶ ἄνευ

ἀρετᾶς, προαιρέσει δὲ οὐ δυνατόν· τὸ γὰρ ἀξίωμα τῶ ἤθεος ἁ προαίρεσις σαμαίνει. διὸ καὶ μετὰ βίας μὲν ἐπικρατέων ὁ λογισμὸς θυμῶ καὶ ἐπιθυμίας ἐγκράτειαν καὶ καρτερίαν ἐμποιεῖ, μετὰ βίας δὲ πάλιν ἐκβιασθεὶς αὐτὸς ὑπὸ τῶ ἀλόγω ἀκρασίαν καὶ μαλακίαν. ταὶ δὲ τοιαῦται διαθέσιες τᾶς ψυχᾶς ἡμιτελέες μὲν ἀρεταί, ἡμιτελέες δὲ κακίαι τυγχάνοντι. ὁ μὲν γὰρ λογισμὸς ὑγιαίνει, τὰ δ' ἄλογα μέρεα τᾶς ψυχᾶς νοσεῖ. καὶ καθὸ μὲν ἄρχεται καὶ ἄγεται ὁ θυμὸς καὶ ἁ ἐπιθυμία ὑπὸ τῶ λόγον ἔχοντος μέρεος τᾶς ψυχᾶς, ἁ ἐγκράτεια καὶ ἁ καρτερία ἀρεταὶ τυγχάνοντι, καθὸ δὲ μετὰ βίας ἀλλ' οὐχ ἑκουσίως τοῦτο πράσσοντι, κακίαι τυγχάνοντι. δεῖ γὰρ τὰν ἀρετὰν μὴ μετὰ λύπας ἀλλὰ μεθ' ἁδονᾶς τὰ δέοντα πράσσεν. πάλιν δὲ καθὸ μὲν ἐπικρατεῖ ὁ θυμὸς καὶ ἁ ἐπιθυμία τῶ λογισμῶ, μαλακίαν καὶ ἀκρασίαν ἐπιφέροντα, κακίαι τινὲς τυγχάνοντι· καθὸ δὲ μετὰ λύπας χαρίζονται τοῖς πάθεσιν, εἰδότες ὅτι ἀμβλακίσκοντι τῷ ὑγιὲς ἦμεν τὸ ὄμμα τᾶς ψυχᾶς, ταύτᾳ δὲ οὐ κακίαι. πάλιν ὦν αὐτό γε τοῦτο φανερόν, ὅτι ἑκουσίως δεῖ τὰν ἀρετὰν τὰ δέοντα πράσσεν, τὸ μὲν ἀκούσιον οὐκ ἄνευ λύπας καὶ φόβω, τὸ δὲ ἑκούσιον οὐκ ἄνευ ἁδονᾶς καὶ φιλοφροσύνας. ἅμα δὲ καὶ ὁ λόγος ὁ τᾶς διαιρέσιος ἐμπεδοῖ καὶ παρίητι ταῦθ' οὕτως ἔχεν. ἁ μὲν γὰρ γνῶσις καὶ ἁ ὅρασις τῶν πραγμάτων τῶ λόγον ἔχοντος μέρεος ἐντὶ τᾶς ψυχᾶς, ἁ δὲ δύναμις τῶ ἀλόγω. τὸ γὰρ ἀντέχεν μὴ δύνασθαι τοῖς πόνοις, ἐπικρατὲν δὲ τᾶν ἁδονᾶν, οἰκεῖόν ἐντι τῶ ἀλόγω μέρεος τᾶς ψυχᾶς. ἁ δὲ προαίρεσις ἐν ἀμφοτέροις αὐτοῖς γίνεται, καὶ τῷ λόγον ἔχοντι μέρει τᾶς ψυχᾶς καὶ τῷ ἀλόγῳ· σύγκειται γὰρ ἐκ διανοίας καὶ ὀρέξιος, ὧν ἁ μὲν διάνοια τῶ λόγον ἔχοντός ἐντι, ἁ δ' ὄρεξις τῶ ἀλόγω.

διὸ καὶ ἀρετὰ πᾶσα ἐν συναρμογᾷ γίνεται τῶν μερέων τᾶς ψυχᾶς, καὶ τὸ ἑκούσιον δὲ καὶ τὸ προαιρετὸν πάντως ἐν τᾷ ἀρετᾷ.

69 Ἐν ταυτῷ.

Καθόλω μὲν ὦν ἀρετὰ συναρμογά τις ἐντὶ τῶν ἀλόγων μερέων τᾶς ψυχᾶς ποτὶ τὸ λόγον ἔχον. γίνεται δὲ αὐτὰ τῷ κατὰ τὰν ἁδονὰν καὶ τὰν λύπαν ὅρον ἐπιδέξασθαι τὸν τῶ δέοντος. οὐδὲν γὰρ ἅτερον ἀλαθινὰ ἀρετὰ εἰ μὴ ἕξις τῶ δέοντος· αὐτὸ δὲ τὸ δέον ἐντὶ ὅπερ δεῖ ἦμεν, τὸ δὲ μὴ δέον ὅπερ οὐ δεῖ ἦμεν. τῶ δὲ μὴ δέοντος εἴδεε δύο, τὸ μὲν ὑπερβολὰ τὸ δ' ἔλλειψις. καὶ ὑπερβολὰ μὲν ἐντὶ τὸ πλέον τῶ δέοντος, ἔλλειψις δὲ τὸ ἔλαττον τῶ δέοντος. τὸ δὲ δέον αὐτὸ ἐὸν ὅπερ δεῖ ἦμεν καὶ ἄκρον ἂν ὑπάρχοι καὶ μέσον· ἄκρον μὲν ὅτι οὔτ' ἀφαιρέσιος οὔτε προσθέσιος δέεται, μέσον δὲ ὅτι μεταξύ ἐντι τᾶς ὑπερβολᾶς καὶ τᾶς ἐλλείψιος. ἔχει δὲ τὸ δέον καὶ [τὸ] μὴ δέον πρὸς ἄλλαλα οὕτως ὥσπερ τὸ ἴσον καὶ τὸ ἄνισον, καὶ τὸ τεταγμένον καὶ τὸ ἄτακτον, ταῦτα δ' ἐντὶν ἀμφότερα τὸ πεπερασμένον καὶ τὸ ἄπειρον, καὶ διὰ τοῦτο τῶ ἀνίσω τὰ μέρεα λέγεται ποτὶ τὸ μέσον, ἀλλ' οὐ ποτ' ἄλλαλα. ἀμβλεῖά τε γὰρ ὀνομάζεται γωνία ἁ μέζων ὀρθᾶς, ὀξεῖα δὲ ἁ μείων ὀρθᾶς, καὶ μέζων μὲν εὐθεῖα ἁ ὑπερέχουσα τὰν ἐκ τῶ κέντρω· καὶ μακροτέρα μὲν ἁμέρα ἰσημερινᾶς. καὶ ταὶ νόσοι δὲ γίνονται τῶ σώματος διὰ τὸ θερμότερον ἢ κρυμωδέστερον γίνεσθαι τὸ σῶμα. τὸ μὲν γὰρ θερμότερόν ἐντι τὸ πλέον τῶ μετρίω, τὸ δὲ κρυμωδέστερον ἔλασσον τούτω. ἔχει δέ γε καὶ ἁ ψυχὰ καὶ ἁ περὶ αὐτὰν διάθεσις τὰν ἀναλογίαν ταύταν. ἁ μὲν γὰρ θρασύτας ἐντὶ ὑπερβολὰ τῶ δέοντος ἐν ὑποστάσει δεινῶν, ἁ δὲ δει-

λότας ἔλλειψις τῶ αὐτῶ. καὶ ἁ μὲν ἀσωτία ὑπερβολὰ τῶ δέοντος ἐν δαπάνᾳ χρημάτων, ἁ δ' ἀνελευθερία ἔλλειψις τῶ αὐτῶ. καὶ ἁ μὲν ὀργὰ ἐντὶ ὑπερβολὰ τῶ δέοντος ἐν ὁρμᾷ θυμῶ, ἁ δ' ἀναλγησία ἔλλειψις τούτω. ὁ δ' αὐτὸς λόγος καὶ ἐπὶ τᾶν ἄλλων διαθεσίων τᾶν ἀντικειμένων. δεῖ δ' ἕξιν τῶ δέοντος ὑπάρχοισαν τὰν ἀρετὰν καὶ μεσότατα τῶν παθέων μήτ' ἀπαθέα μήτ' ἐμπαθέα ἦμεν. ἁ μὲν γὰρ ἀπάθεια ἀπαρόρματον καὶ ἀνενθουσίαστον παρέχεται τὰν ψυχὰν ποτὶ τὸ καλόν, ἁ δ' ἐμπάθεια συντεταραγμένον καὶ ἀνεπιλόγιστον. δεῖ ὦν τὸ πάθος οὕτω παρεμφαίνεσθαι ἐν τᾷ ἀρετᾷ, ὥσπερ καὶ τὰν σκιὰν καὶ τὰ λαμπρὰ ἐπὶ τᾶς γραφᾶς· τὸ γὰρ ἔμψυχον καὶ τὸ ἁπαλὸν καὶ τὸ μεμιμαμένον τὰν ἀλάθειαν σὺν τᾷ χρηστότατι τῶν χρωμάτων μάλιστα γίνεται διὰ τούτων. ἔμψυχα δὲ ἐκ παρορμάσιος καὶ ἐνθουσιασμῶ ἀρετᾶς τᾶς κατὰ φύσιν τὰ πάθεα τᾶς ψυχᾶς. γίνεται γὰρ ἐκ τῶν παθέων ἁ ἀρετά, καὶ γεναθεῖσα πάλιν συναύξεται τούτοις, ὥσπερ καὶ τὸ καλῶς ἁρμοσμένον ἐκ τῶ ὀξέος καὶ βαρέος, καὶ τὸ εὔκρατον ἐκ τῶ θερμῶ καὶ ψυχρῶ, καὶ τὸ ἰσόρροπον ἐκ τῶ βαρέος καὶ κούφω. οὐκ ἀφελὲν ὦν δεῖ τὰ πάθεα τᾶς ψυχᾶς, οὐδὲ γὰρ ὠφέλιμον, ἀλλὰ συναρμόσασθαι ποτὶ τὸ λόγον ἔχον τῶ δέοντος καὶ τῶ μετρίω.

70 Ἀρχύτα Πυθαγορείου ἐκ τοῦ περὶ παιδεύσεως ἠθικῆς.

Φαμὶ τὰν ἀρετὰν ἦμεν ποττὸ μὴ κακοδαιμονεῖν ἱκανάν, τὰν δὲ κακίαν ποττὸ μὴ εὐδαιμονεῖν, αἴκα τὰς ἕξιας αὐτὰς κρίνωμες. αἰεὶ μὲν γὰρ κακοδαιμονεῖν ἀνάγκα τὸν κακόν, αἴτε ἔχῃ ὕλαν (κακῶς τε γὰρ αὐτᾷ χρέεται) αἴτε σπανίζῃ· ὡς καὶ τὸν τυφλόν, αἴτε

φῶς ἔχῃ καὶ λαμπρότατα ὁρατάν, αἴτε ἐν σκότει διατελῇ· οὐκ αἰεὶ δὲ εὐδαιμονεῖν τὸν ἀγαθόν. οὐ γὰρ ἁ κτᾶσις τᾶς ἀρετᾶς εὐδαιμονία ἧς, ἀλλ' ἁ χρᾶσις. καὶ γὰρ ὁ ἔχων τὰν ὄψιν οὐχ ὁρᾷ αἰεί· αἰ γὰρ μὴ ἔχῃ φῶς, οὐκ ὄψεται. δύο δ' ὁδοὶ τέμνονται ἐν βίῳ, ἃ μὲν σκυθρωποτέρα, τὰν ὁ τλάμων ἐβάδιζεν Ὀδυσσεύς, ἃ δὲ εὐδιεινοτέρα, τὰν ἐπορεύετο Νέστωρ. τὰν ὦν ἀρετάν φαμι δήλεσθαι μὲν ταύταν, δύνασθαι δὲ καὶ τήναν. ἀλλὰ τὰν εὐδαιμονίαν καρύσσει ἁ φύσις βίον εὐκταῖον καὶ εὐσταθέα, διὰ τὸ γνώμας τελεσθῆμεν· ὥστε ἃ μὴ δηλῆταί τις παριόντα, οὐκ εὐδαίμων μέν, οὐ μὰν πάντᾳ κακοδαίμων.

71 Ἐν ταυτῷ.

Μὴ ὦν ἄνοσον καὶ ἀνάλγητον τολμῶντι τὸν ἀγαθὸν εἰπέν, μηδὲ ἄλυπον θρασυνεέσθωσαν λέγεν· ὡς γὰρ σώματι ἀλγεινά τινα ἀπολείπομεν, οὕτω καὶ ψυχαῖς ἐπώδυνα. ἀλλὰ ταὶ μὲν ἀφρόνων λῦπαι ἀλόγιστοι πέλονται, ταὶ δὲ φρονίμων ἐς ὅσον κα λόγος ἐπιτρέποι ὁρίδδων τὰ πράγματα. ἀλλὰ μὰν καὶ τὸ καύχαμα αὐτῶν τᾶς ἀπαθείας ἐκλύει τᾶς ἀρετᾶς τὸ γενναῖον, αἴκα ἐν ἀδιαφόροις καὶ μὴ κακοῖς θανάτῳ τε καὶ ἀλγηδόνι καὶ πενίᾳ ἀντιβεβάκῃ. εὐκαταγώνιστα γὰρ τὰ μὴ κακά. ἀσκητέον ὦν ποττὰν μετριοπαθίαν ἵεμεν, ὡς τό τε ἀνάλγητον εἰς ἶσον τῷ ἐμπαθεῖ φεύγωμες, μηδὲ μέζον φύσιος τᾶς ἁμετέρας φθεγγώμεθα.

72 Τοῦ αὐτοῦ περὶ ἀνδρὸς ἀγαθοῦ καὶ εὐδαίμονος.

Πρῶτον μὲν ὦν χρὴ τοῦτο γινώσκεν, ὅτι ὁ μὲν ἀγαθὸς ἀνὴρ οὐκ εὐθέως εὐδαίμων ἐξ ἀνάγκας ἐστίν, ὁ δὲ εὐδαίμων καὶ ἀγαθὸς ἀνήρ ἐστιν. ὁ μὲν γὰρ εὐδαίμων ἐξ ἐπαινέτῶ καὶ μακαριστῶ γίνεται, ὁ δὲ ἀγα-

θὸς ἀνὴρ ἐξ ἐπαινετῶ μόνον. γίνεται δὲ ὁ μὲν ἔπαινος ἐπ' ἀρετᾷ, ὁ δὲ μακαρισμὸς ἐπ' εὐτυχίᾳ. καὶ ὁ μὲν ἀγαθὸς ἀνὴρ ἐπὶ τοῖς παρ' ἀρετᾶς ἀγαθοῖς γίνεται τοιοῦτος, ὁ δ' εὐδαίμων καὶ ἐπὶ τοῖς διὰ τύχαν· καὶ ὁ μὲν ἀγαθὸς ἀνὴρ ἀναφαίρετον ἔχει τὰν ἀρετάν, ὁ δ' εὐδαίμων ἐστὶν ὅκ' ἀφαιρέεται τὰν εὐδαιμοσύναν. τᾶς μὲν γὰρ ἀρετᾶς ἀνυπεύθυνος ἁ δύναμις, τᾶς δ' εὐδαιμοσύνας εὐθυνομένα. νόσοι τε γὰρ μακραὶ σώματος καὶ πηρώσιες αἰσθαταρίων ἀπομαραίνοντι τὰν εὐθάλειαν τᾶς εὐδαιμοσύνας.

73 *Ἐν ταυτῷ.*

Διαφέρει δὲ θεὸς ἀνθρώπω ἀγαθῶ, ὅτι θεὸς μὲν οὐ μόνον εἰλικρινῆ καὶ διυλισμέναν ἔχει τὰν ἀρετὰν ἀπὸ παντὸς τῶ θνατῶ πάθεος, ἀλλὰ καὶ τὰν δύναμιν αὐτᾶς ἄτρυτον πέπαται καὶ ἀνυπεύθυνον, ὡς πρὸς αἰωνίων ἔργων σεμνότατά τε καὶ μεγαλοπρέπειαν· ἄνθρωπος δ' οὐ μόνον τῷ θνατῷ τᾶς φύσιος καταστάματι μήονα ταύταν πέπαται, ἔστι δ' ὄκκα καὶ δι' ἀγαθῶν ἀμετρίαν καὶ διὰ συνήθειαν ἰσχυρὰν καὶ διὰ φύσιν μοχθηρὰν καὶ δι' ἄλλας αἰτίας πολλὰς ἀδυνατεῖ κατ' ἄκρας γεναθῆμεν παναλαθέως ἀγαθός.

74 *Ἐν ταυτῷ.*

Φαμὶ δὴ τὸν ἀγαθὸν ἄνδρα τοῦτον εἶμεν, τὸν πράγμασι μεγάλοις καὶ καιροῖς καλῶς χρεόμενον. οὗτος δέ κα εἴη ὁ εὐτυχίαν τε δυνάμενος καλῶς φέρεν καὶ πάλιν ἀτυχίαν, καὶ ὁ ἔν τε τοῖς καλοῖς καὶ τιμίοις ἄξιος γενόμενος τῶν ὑποκειμένων, καὶ μεταβαλοίσας τᾶς τύχας εὖ τὸ παρὸν ἐκδεχόμενος. εἰ δὲ συντόμως τε καὶ κεφαλαιωδῶς δεῖ φράσαι, ὁ ἐν πάντεσσι τοῖς καιροῖς καλῶς ἀγωνιζόμενος ἐκ τῶν ἐνδεχομένων,

καὶ μὴ μόνον αὔταυτον οὕτως διατιθείς, ἀλλὰ καὶ τὼ ἐμπιστεύσαντας αὐτῷ καὶ συναγωνισαμένω.

75 Ἐνταυτῷ.

Ἐπεὶ ὦν τῶν ἀγαθῶν ἃ μὲν αὐτά ἐντι δι' αὔταυτα αἱρετά, οὐ μὰν δι' ἅτερον, ἃ δὲ δι' ἅτερον, οὐ μὰν δι' αὔταυτα, εἴη ἂν καὶ τρίτον τι εἶδος ἅτερον ἀγαθῶν, ὃ καὶ δι' αὔταυτον αἱρετόν ἐντι καὶ δι' ἅτερον. τίνων ὦν ἐντὶ τὰ τοιαῦτα τῶν ἀγαθῶν, ἅπερ αὐτὰ δι' αὔταυτα αἱρετὰ πέφυκεν ἦμεν, οὐ μὰν διὰ ἕτερον; φανερὸν ὅτι ἁ εὐδαιμοσύνα. ταύτας γὰρ ἕνεκα τὰ ἄλλα αἱρεόμεθα, αὐτὰν δὲ ταύταν οὐδενὸς ἁτέρω. τίνα δὲ πάλιν ἐντί, ἃ δι' ἅτερον μὲν αἱρεόμεθα, οὐ μὰν δι' αὔταυτά γε; δᾶλον ὅτι τὰ ὠφέλιμα καὶ τὰ προτρεπτικὰ τῶν ἀγαθῶν, ἅπερ αἴτια γίνεται τῶν ἁτέρων, οἷον πόνοι μὲν σώματος καὶ γυμνάσια καὶ τρίψιες εὐεκτίας, ἀναγνώσιες δὲ καὶ μελέται καὶ ἐπιτηδεύσιες καλῶν καὶ ἀρετᾶς. τίνα δὲ καὶ δι' αὔταυτα αἱρετὰ καὶ τὰ δι' ἅτερον; . . . οἷον αἵ τε ἀρεταὶ καὶ αἱ ἕξιες αὐτῶν, καὶ αἱ προαιρέσιες, καὶ αἱ πράξιες, καὶ πᾶν τὸ ἐχόμενον τᾶς τῶ καλῶ οὐσίας. τὸ μὲν ὦν δι' αὔταυτο αἱρετόν, οὐ μὰν δι' ἅτερον, μονῆρες ἀγαθόν ἐντι καὶ ἕν· τὸ δὲ καὶ δι' αὐτὸ καὶ δι' ἅτερον, τριχᾷ δέδασται. τὸ μὲν γάρ τι αὐτῶ περὶ ψυχάν ἐστιν, τὸ δὲ περὶ σῶμα, τὸ δέ τι ἐκτός· περὶ ψυχὰν μὲν αἱ τᾶς ψυχᾶς ἀρεταί, περὶ σῶμα δὲ αἱ τῶ σώματος, ἐκτὸς δὲ φίλοι δόξα τιμὰ πλοῦτος. παραπλησίως δὲ καὶ τὸ δι' ἅτερον αἱρετόν· τὸ μὲν γάρ τι αὐτῶ τὰ ποιητικὰ τῶν τᾶς ψυχᾶς ἀγαθῶν, περὶ σῶμα δὲ τὰ τῶ σώματος, ἐκτὸς δὲ τὰ αἴτια πλούτω καὶ δόξας καὶ τιμᾶς καὶ φιλίας. ὅτι δὲ τὰν ἀρετὰν ἦμεν συμβέβακεν αὐτὰν δι' αὐταύταν αἱρετάν, δᾶλον καὶ ἐκ τῶνδε. εἰ γὰρ τὰ

καταδεέστερα τᾷ φύσει, λέγω δὴ τὰ σώματος ἀγαθά, αὐτὰ δι' αὕταυτα αἱρεόμεθα, κρέσσων δὲ ψυχὰ σώματος, φανερὸν ὅτι καὶ τὰ τᾶς ψυχᾶς ἀγαθὰ αὐτὰ δι' αὕταυτα ἀγαπέομες, ἀλλ' οὐ διὰ τὰ ἀποβαίνοντα ἀπ' αὐτῶν.

76 Ἐν ταυτῷ.

Τῷ δ' ἀνθρωπίνῳ βίῳ καιροὶ τρεῖς, ὃ μὲν ἐν εὐτυχίᾳ ὃ δὲ ἐν ἀτυχίᾳ ὃ δὲ μεταξὺ τούτων. ἐπεὶ ὦν ἀγαθὸς ἀνὴρ ὁ ἔχων ἀρετὰν καὶ ὁ χρεόμενος ἀρετᾷ, χρᾶται δὲ αὐτᾷ κατὰ τὼς τρεῖς καιρώς· ἢ γὰρ ἐν ἀτυχίᾳ ἢ ἐν εὐτυχίᾳ ἢ ἐν τοῖς μεταξὺ τούτων· καὶ ἐν ἀτυχίᾳ μέν ἐντι κακοδαίμων, ἐν δ' εὐτυχίᾳ εὐδαίμων, ἐν δὲ τᾷ μέσᾳ καταστάσει οὐκ εὐδαίμων· φανερὸν ὅτι οὐδὲν ἅτερόν ἐστιν εὐδαιμοσύνα ἀλλ' ἢ χρᾶσις ἀρετᾶς ἐν εὐτυχίᾳ. λέγομες δὲ νῦν εὐδαιμοσύναν τὰν τῶ ἀνθρώπω. ὁ δ' ἄνθρωπος οὐχ ἁ ψυχὰ μόνον, ἀλλὰ καὶ τὸ σῶμα· τὸ γὰρ ἐξ ἀμφοτέρων ζῶον καὶ τὸ ἐκ τοιούτων ἄνθρωπος. καὶ γὰρ εἰ τᾶς ψυχᾶς ὄργανον τὸ σῶμα πέφυκεν, ἀλλὰ καὶ τῶ ἀνθρώπω μέρος καὶ τοῦτο καὶ ἁ ψυχά. διὸ καὶ τῶν ἀγαθῶν ἃ μὲν ἔντι τῶ ἀνθρώπω ἃ δὲ τῶν μερέων. καὶ ἀνθρώπω μὲν ἀγαθὸν εὐδαιμοσύνα, τῶν δὲ μερέων τῶ ἀνθρώπω ψυχᾶς μὲν φρόνασις ἀνδρεία δικαιοσύνα σωφροσύνα, σώματος δὲ κάλλος ὑγίεια εὐεκτία εὐαισθησία. τὰ δὲ ἐκτός, πλοῦτος καὶ δόξα καὶ τιμὰ καὶ εὐγένεια, πέφυκεν ἐπιγένναμα ἦμεν τῶ ἀνθρώπω καὶ ἀκόλουθα τοῖς φύσει προϋφεστακόσιν ἀγαθοῖς, δορυφορεῖ δὲ τὰ μήονα τῶν ἀγαθῶν τὰ μέζονα· φιλία μὲν καὶ δόξα καὶ πλοῦτος σῶμα καὶ ψυχάν, ὑγίεια δὲ καὶ ἰσχὺς καὶ εὐαισθησία ψυχάν, φρόνασις δὲ καὶ ἀνδρία καὶ σωφροσύνα καὶ ἁ δικαιοσύνα τὸν νόον τᾶς ψυχᾶς, ὁ δὲ νόος τὸν θεόν·

οὗτος γὰρ ὁ κράτιστός ἐστι καὶ ὁ ἁγεμονεύων. καὶ τούτων ἕνεκα καὶ τὰ ἄλλα τῶν ἀγαθῶν δεῖ παρῆμεν. στρατεύματος μὲν γὰρ ἁγεῖται στραταγός, πλωτήρων δὲ κυβερνάτας, τῶ δὲ κόσμω θεός, τᾶς δὲ ψυχᾶς νόος, τᾶς δὲ περὶ τὸν βίον εὐδαιμοσύνας φρόνασις· οὐδὲν γὰρ ἅτερόν ἐστι φρόνασις εἰ μὴ ἐπιστάμα τᾶς περὶ τὸν βίον εὐδαιμοσύνας, ἢ ἐπιστάμα τῶν κατὰ φύσιν ἀνθρώπω ἀγαθῶν.

77 Ἐν ταυτῷ.

Καὶ θεῶ μὲν εὐδαιμοσύνα καὶ βίος ἄριστος, τῶ δ' ἀνθρώπω ἐξ ἐπιστάμας καὶ ἀρετᾶς καὶ τρίτω εὐτυχίας σωματουμένα παραγίνεται. λέγω δὲ σοφίαν μὲν ἐπιστάμαν τῶν θείων καὶ δαιμονίων, φρόνασιν δὲ τῶν ἀνθρωπίνων καὶ τῶν περὶ τὸν βίον· τὰς γὰρ λόγοις καὶ ἀποδείξεσιν ποτιχρωμένας ἀρετὰς δέον ἐπιστάμας ποταγορεύεν· ἀρετὰν δὲ τὰν ἠθικὰν καὶ βελτίσταν ἕξιν τῶ ἀλόγω μέρεος τᾶς ψυχᾶς, καθ' ἃν καὶ ποιοί τινες ἦμεν λεγόμεθα κατὰ τὸ ἦθος, οἷον ἐλευθέριοι δίκαιοι καὶ σώφρονες· εὐτυχίαν δὲ τὰν παρὰ τὸν λόγον τῶν ἀγαθῶν παρουσίαν καὶ μὴ δι' αὐτὸν γινομέναν. ἐπεὶ ὧν ἁ μὲν ἀρετὰ καὶ ἐπιστάμα ἐφ' ἁμῖν, ἁ δ' εὐτυχία οὐκ ἐφ' ἁμῖν· ἐν δὲ θεωρίαις καὶ πράξεσι τῶν καλῶν τὸ εὐδαιμονᾶν· αἳ δὲ θεωρίαι καὶ αἳ πράξιες ποτάντεις μὲν οὖσαι λειτουργίαν καὶ ἀνάγκαν ἐπιφέροντι, εὐοδοῦσαι δὲ διαγωγὰν καὶ εὐδαιμοσύναν· γίνεται δὲ ταῦτα ἐν εὐτυχίᾳ· φανερὸν ὅτι οὐδὲν ἅτερόν ἐστιν εὐδαιμοσύνα εἰ μὴ χρᾶσις ἀρετᾶς ἐν εὐτυχίᾳ.

78 Ἐν ταυτῷ.

Ὅτι ὁ ἀγαθὸς ἀνὴρ οὕτω διάκειται ποτ' εὐτυχίαν, ὥσπερ καὶ ὁ τῷ σώματι καλῶς ἔχων καὶ ῥωμαλέως.

καὶ γὰρ ἐκεῖνος οἷός τε καὶ θάλπος καὶ ψῦχος ὑπομένεν, καὶ βάρος ἆραι μέγα, καὶ πολλὰς ἁτέρας εὐχερῶς ὑπομένεν κακοπαθείας.

79 *Ἐν ταυτῷ.*

Ἐπεὶ ὦν εὐδαιμοσύνα χρᾶσις ἀρετᾶς ἐν εὐτυχίᾳ, περὶ ἀρετᾶς καὶ εὐτυχίας λέγωμες, καὶ πρῶτον περὶ εὐτυχίας. τῶν γὰρ ἀγαθῶν ἃ μὲν οὐκ ἐπιδέχεται ὑπερβολάν, οἷον ἀρετά· οὐ γὰρ ἔστιν ὑπερβάλλοισά τις ἀρετὰ καὶ ὑπερβαλλόντως τις ἀγαθός· ἁ γὰρ ἀρετὰ στάθμαν ἔχει τὸ δέον, καὶ ἔστι τῶ δέοντος ἕξις ἐν τοῖς πρακτοῖς· ἁ δ' εὐτυχία καὶ τὰν ὑπερβολὰν ἐπιδέχεται καὶ τὰν μήωσιν. ὑπερβάλλοισα δὲ γεννᾷ τινας κακίας, καὶ ἐξίστησι τὸν ἄνθρωπον ἐκ τᾶς κατὰ φύσιν ἕξιος, ὥστε πολλάκις ἀντιβαίνεν καὶ τᾷ συστάσει τᾶς ἀρετᾶς. καὶ οὐ μόνον ἁ εὐτυχία, ἀλλὰ καὶ ἅτεραι αἰτίαι πλείονες. οὐδέποκα γὰρ δεῖ θαυμαίνεν περὶ μὲν αὐλητικὰν ἦμέν τινας ἀλαζόνας, οἳ τὰ ποτ' ἀλάθειαν ἐάσαντες φαντασίᾳ τινὶ ψευδεῖ τὼς ἀμώσως αἱρέοντι, περὶ δὲ τὰν ἀρετὰν μὴ ἦμεν τὸ τοιοῦτον γένος, ἀλλ' ὅσῳ περ σεμνότερόν ἐστι, τοσούτῳ καὶ τὸ ποτιποιούμενον περὶ αὐτὰν πλέον ἦμεν γένος. πολλὰ γάρ ἐστι τὰ διαστρέφοντα τὰς περὶ τὰν ἀρετὰν ἐπιφανείας, ὧν ἓν μέν ἐστι τὸ τῶν ἐπιβουλευόντων καὶ ποτιποιουμένων γένος· ἅτερα δὲ φυσικὰ πάθεα παρακολουθέοντα ἐνιόκα ποιέοντι ἐναντίαν ἐπιπρέπειαν τᾶς ἀλαθινᾶς διαθέσιος· τινὰ δὲ καὶ δι' ἔθος συνεκτεθραμμένα ἐκ παλαιῶν χρόνων· οὐκ ὀλίγα δὲ καὶ δι' ἁλικίας ἁβατικάς τε καὶ γεροντικάς, καὶ δι' εὐτυχίας ἢ καὶ ἀτυχίας, καὶ δι' ἁτέρως παμπληθέας τρόπως. ὥστε οὐδέποκα δεῖ θαυμαίνεν, εἰ πάντ' ἀνεστραμμένως ἐνιόκα κρίνεται, τᾶς ἀληθινᾶς διαθέσιος

μεταπιπτούσας. ὥσπερ καὶ τέκτονα τὸν ἄριστον ἦμεν δοκέοντα πολλὰ ἐν τοῖς ὑποκειμένοις ἔργοις ὁρέομες ἁμαρτάνοντα, καὶ στραταγὸν καὶ κυβερνάταν καὶ γραφέα καὶ πάντας ἁπλῶς, καὶ ὅμως οὐκ ἀποστεροῦμες τᾶς ὑπαρχοίσας ἕξιος· οὕτως οὐδὲ τὸν ἀκολασταίνοντα ἔν τισι καιροῖς οὐδὲ τὸν ἀδικήσαντα οὐδὲ τὸν ἀποδειλιάσαντα εἰς τὼς κακὼς τακτέον ἄνδρας, οὐδὲ μὰν τὼς τούτων τι κατορθώσαντας εἰς τὼς ἀγαθώς· ἀλλὰ τοῖς τε φαύλοις τὸ τυχὲν ποτὲ δοτέον τοῖς τε ἀγαθοῖς τὸ διαμαρτάνεν· τὰν δὲ ἀλαθινὰν κρίσιν οὐ ποθ᾽ ἕνα καιρὸν ἐπιβλέποντας οὐδ᾽ ἐπὶ χρόνου τι πλᾶθος, ἀλλ᾽ ἐπὶ πάντα τὸν βίον. ὥσπερ δὲ τὸ σῶμα βλάπτει μὲν καὶ τὸ τᾶς ἐνδείας καὶ τὸ τᾶς ὑπερβολᾶς εἶδος, οὐ μὰν ἀλλὰ νόσως ἔτι μέζονας ἐμποιεῖν πέφυκεν ἁ ὑπερβολὰ καὶ τὰ καλεόμενα περισσώματα· οὕτω καὶ ψυχὰν βλάπτει μὲν καὶ τὸ τᾶς εὐτυχίας ἢ ἀτυχίας εἶδος ἀκαίρως παραγενόμενον, οὐ μὰν ἀλλὰ νόσως ἔτι μέζονας ποὲν πέφυκεν ἁ λεγομένα παρὰ πάντεσσιν εὐτυχία, ὥσπερ οἶνος καταμεθύσκουσα τοῖς ἀγαθοῖς τὰν διάνοιαν.

80 Ἀρχύτα Πυθαγορείου περὶ ἀνδρὸς ἀγαθοῦ καὶ εὐδαίμονος.

Ὅθεν οὐκ ἀτυχίαν ἐνεγκὲν ἐμμελῶς χαλεπώτερόν ἐστιν, ἀλλ᾽ εὐτυχίαν. πάντες μὲν γὰρ ἐν ἀτυχίᾳ μένοντες ὡς ἐπὶ πολὺ μέτριοι καὶ κόσμιοι τὸ ἦθος ἦμεν φαίνονται, ἐν δ᾽ εὐπραγίαις ἀνδρεῖοι μεγαλόφρονες μεγαλόψυχοι. δεινὰ γὰρ ἀτυχία συναγαγὲν καὶ καταρτίσαι τὰν ψυχάν, ἁ δ᾽ εὐπραγία τοὐναντίον ἐπᾶραι καὶ κενῶσαι. διὸ ποθεκτικοὶ μὲν ἅπαντες καὶ συνετοὶ τὸν τρόπον ἀτυχέοντες, ἐπιθετικοὶ δὲ καὶ θαρσαλέοι τὸν τρόπον εὐτυχέοντες.

81 *Ἐν ταὐτῷ.*

Ὅρος δέ ἐστιν εὐτυχίας, ἂν προέλοιτο ὁ ἀγαθὸς ἀνὴρ συνεργὸν αὐτῷ γενομέναν ποττὰς ἰδίας πράξιας· ὥσπερ καὶ μέγεθος ναῷ, καὶ μέγεθος παδαλίῳ, ᾧ καθικνεῖσθαι δύναται ὁ ἀγαθὸς κυβερνάτας μεγάλα πελάγεα διαπεραιούμενος καὶ μεγάλαν ναυκλαρίαν στελλόμενος. ἁ δ' ὑπερβολὰ τᾶς εὐτυχίας τοῖς ἀγαθοῖς οὐ κρατεῖσθαι πέφυκεν ὑπὸ τᾶς ψυχᾶς, ἀλλὰ κρατὲν αὐτᾶς. ὥσπερ γὰρ τὸ λαμπρὸν φάος μαραυγίαν περιτίθησι τοῖς ὀφθαλμοῖς, οὕτω καὶ ἁ ὑπερβάλλοισα εὐτυχία τῷ νόῳ τᾶς ψυχᾶς. καὶ περὶ μὲν ὦν εὐτυχίας ἅλις εἰρήσθω.

---

82 *Ὅτι ἀντακολουθοῦσιν αἱ ἀρεταί.*

Ὅτι ἀντακολουθοῦσιν αἱ ἠθικαὶ ἀρεταί, δεικτέον καὶ ἀπὸ τῆς προαιρέσεως. εἰ γὰρ ἡ ἀρετὴ μάλιστα τῇ προαιρέσει κρίνεται, ἡ δὲ ὀρθὴ προαίρεσις ἐκ φρονήσεως ἕπεται. τὸ γὰρ βουλεύεσθαι τῆς φρονήσεως καὶ ἠθικῆς ἀρετῆς, εἴγε δεῖ μὲν τῷ καλῶς βουλευομένῳ τὸν σκοπὸν ὀρθὸν κεῖσθαι, εἰς ὃν περὶ τῶν συντελούντων εἰς αὐτὴν βουλεύεται. ὁρίζεται δὲ ὁ σκοπὸς ὑπὸ τῆς ἠθικῆς ἀρετῆς· οὗ γὰρ ἐφιέμεθα, περὶ τούτου βουλευόμεθα· ἡ δὲ τῶν προσηκόντων ἔφεσις ἀπὸ τῆς ἠθικῆς ἀρετῆς, ὥσπερ εἶπεν Ἀριστοτέλης, οὐκ ἔστιν ἡ προαίρεσις ὀρθὴ ἄνευ φρονήσεως οὐδὲ ἄνευ ἀρετῆς· ἡ μὲν γὰρ τὸ τέλος, ἡ δὲ τὰ πρὸς τὸ τέλος ποιεῖ πράττειν. ἔτι εἰ ἀνάγκη μὲν ἡντινοῦν ἀρετὴν ἠθικὴν ἔχοντα φρόνησιν ἔχειν· εἴγε ἐστὶν ἠθικὴ ἀρετὴ πρακτικὴ τῶν ὡρισμένων φρονήσει τε καὶ τῷ ὀρθῷ λόγῳ· ἀνάγκη δὲ καὶ τὸν φρόνησιν ἔχοντα ἔχειν ἠθικὴν ἀρετήν· εἴγε οἰκεῖον τῇ φρονήσει τὸ ζητεῖν πῶς οἷόν τε τυχεῖν τοῦ δέοντος σκοποῦ, ὃν τῆς ἠθικῆς ὁρίσαι· αὐτὴ γὰρ τῆς ὀρεκτικῆς δυνάμεως ἀρετή. ταύτῃ γὰρ φρόνησίς τε καὶ δεινότης διαφέρουσιν· ᾗ ἡ μὲν φρόνησις τῶν πρὸς τὸν ὀρθὸν σκοπὸν φερόντων ἐστὶν εὑρετική τε καὶ ζητητική· ἡ δὲ δεινότης τῶν πρὸς τὸν τυχόντα. Alexandri Aphrod. Quaest. IV, 22.

83 *Μουσωνίου.*

Οὐκ ἔστι τὴν ἐνεστηκυῖαν ἡμέραν καλῶς βιῶναι μὴ προθέμενον αὐτὴν ὡς ἐσχάτην βιῶσαι.

84 *Μουσωνίου ἐκ τοῦ περὶ σκέπης.*

Ταῦτα μὲν περὶ τροφῆς εἶπεν. ἠξίου δὲ καὶ σκέπην τὸν σώφρονα τῷ σώματι ζητεῖν οὐ τὴν πολυτελῆ καὶ περιττήν· εὐθὺς γὰρ ἐσθῆτι καὶ ὑποδέσει τὸν αὐτὸν τρόπον ἔφη εἶναι χρηστέον ὅνπερ πανοπλίᾳ, φυλακῆς ἕνεκεν τοῦ σώματος ἀλλ' οὐκ ἐπιδείξεως. ὥσπερ οὖν ὅπλα κάλλιστα τὰ ἰσχυρότατα καὶ σώζειν μάλιστα δυνάμενα τὸν χρώμενον, οὐ τὰ περίβλεπτα καὶ λαμπρά, οὕτως ἀμπεχόνη καὶ ὑπόδεσις ἡ χρησιμωτάτη τῷ σώματι κρατίστη, καὶ οὐχ ἡ δυναμένη τὰς τῶν ἀνοήτων ὄψεις ἐπιστρέφειν. δεῖ γὰρ τῆς σκέπης αὐτῆς κρεῖττον ἀποφαίνειν τὸ σκεπόμενον καὶ ἰσχυρότερον, ἀλλ' οὐκ ἀσθενέστερόν τε καὶ χεῖρον. οἱ μὲν οὖν λειότητά τε καὶ ἁπαλότητα σαρκὸς διὰ τῶν σκεπασμάτων μηχανώμενοι χείρω τὰ σώματα ποιοῦσιν, εἴγε τὸ τεθρυμμένον σῶμα καὶ μαλακὸν πολὺ κάκιον τοῦ σκληροῦ τε καὶ διαπεπονημένου ἐστίν· οἱ δὲ ῥωννύντες καὶ κρατύνοντες τῇ σκέπῃ, οὗτοι τὰ σκεπόμενα μόνοι ὠφελοῦσιν. διὰ τοῦτο οὐδαμῶς καλὸν οὔτε ἐσθῆσι πολλαῖς κατασκέπειν τὸ σῶμα, οὔτε ταινίαις κατειλεῖν, οὔτε χεῖράς τε καὶ πόδας περιδέσει πίλων ἢ ὑφασμάτων τινῶν μαλακύνειν, τούς γε μὴ νοσοῦντας· οὐδ' ὅλως εἶναι ἀγεύστους καλὸν ψύχους τε καὶ θάλπους, ἀλλὰ ῥιγοῦν χρὴ τὰ μέτρια χειμῶνος καὶ ἡλιοῦσθαι θέρους, καὶ σκιατροφεῖσθαι ἥκιστα. καὶ τὸ μὲν ἑνὶ χρῆσθαι χιτῶνι τοῦ δεῖσθαι δυοῖν προτιμητέον, τοῦ δ' ἑνὶ χρῆσθαι χιτῶνι τὸ μηδενί, ἀλλὰ ἱματίῳ μόνον. καὶ τοῦ γε ὑποδεδέσθαι τὸ ἀνυποδε-

τεῖν τῷ δυναμένῳ κρεῖττον· κινδυνεύει γὰρ τὸ μὲν ὑποδεδέσθαι τῷ δεδέσθαι ἐγγὺς εἶναι, ἡ δ' ἀνυποδησία πολλήν εὐλυσίαν τινὰ καὶ εὐκολίαν παρέχει τοῖς ποσίν, ὅταν ἠσκημένοι ὦσιν. ὅθεν καὶ τοὺς ἡμεροδρόμους ὁρᾶν ἔστιν οὐ χρωμένους ὑποδήμασιν ἐν ταῖς ὁδοῖς, καὶ τῶν ἀθλούντων τοὺς δρομεῖς, οὐκ ἂν δυναμένους σώζειν τὸ τάχος, εἰ δέοι τρέχειν αὐτοὺς ἐν ὑποδήμασιν.

ἐπεὶ δὲ σκέπης ἕνεκα καὶ τὰς οἰκίας ποιούμεθα, φημὶ καὶ ταύτας δεῖν ποιεῖσθαι πρὸς τὸ τῆς χρείας ἀναγκαῖον, ὡς ἀπερύκειν μὲν κρύος, ἀπερύκειν δὲ θάλπος τὸ σφοδρόν, εἶναι δὲ ἡλίου καὶ ἀνέμων ἐπικούρημα τοῖς δεομένοις. καθόλου δὲ ὅπερ ἂν παρέχοι σπήλαιον αὐτοφυές, ἔχον μετρίαν ὑπόδυσιν ἀνθρώπῳ, τοῦτο χρὴ παρέχειν ἡμῖν τὴν οἰκίαν, τοσοῦτον εἴπερ ἄρα περιττεύουσαν, ὅσον καὶ ἀπόθεσιν τροφῆς ἀνθρωπίνης ἐπιτηδείαν ἔχειν. τί δ' αἱ περίστυλοι αὐλαί; τί δὲ αἱ ποικίλαι χρίσεις; τί δ' αἱ χρυσόροφοι στέγαι; τί δ' αἱ πολυτέλειαι τῶν λίθων, τῶν μὲν χαμαὶ συνηρμοσμένων, τῶν δ' εἰς τοίχους ἐγκειμένων, ἐνίων καὶ πάνυ πόρρωθεν ἠγμένων [λίθων] καὶ δι' ἀναλωμάτων πλείστων; οὐ ταῦτα πάντα περιττὰ καὶ οὐκ ἀναγκαῖα, ὧν χωρὶς καὶ ζῆν καὶ ὑγιαίνειν ἔστι, πραγματείαν δ' ἔχει πλείστην, καὶ διὰ χρημάτων γίνεται πολλῶν, ἀφ' ὧν ἄν τις ἐδυνήθη καὶ δημοσίᾳ καὶ ἰδίᾳ πολλοὺς ἀνθρώπους εὐεργετῆσαι; καίτοι πόσῳ μὲν εὐκλεέστερον τοῦ πολυτελῶς οἰκεῖν τὸ πολλοὺς εὐεργετεῖν; πόσῳ δὲ καλοκαγαθικώτερον τοῦ ἀναλίσκειν εἰς ξύλα καὶ λίθους τὸ εἰς ἀνθρώπους ἀναλίσκειν; πόσῳ δὲ ὠφελιμώτερον τοῦ περιβεβλῆσθαι μεγάλην οἰκίαν τὸ κεκτῆσθαι φίλους πολλούς; ὅπερ γίνεται τῷ προθύμως εὐεργετοῦντι. τί δ' ἂν

ὄναιτό τις τηλικοῦτον ἀπ᾽ οἰκίας μεγέθους τε καὶ κάλλους, ἡλίκον ἀπὸ τοῦ χαρίζεσθαι πόλει καὶ πολίταις ἐκ τῶν ἑαυτοῦ;

85 *Εὐσεβίου.*

Ἐχθρὸς γενοίμην μηδενός, φίλος δὲ τοῦ αἰεὶ καὶ παραμενέοντος· καὶ μήκοτε μὲν διενεχθείην πρὸς τοὺς οἰκειοτάτους, διενεχθεὶς δὲ διαλλαχθείην ὡς τάχιστα. μηδενὶ ἐπιβουλεύσαιμι, ἐπιβουλευόμενος δὲ ἄνευ ἀνάγκης τοῦ τι ἂν δρᾶσαι ἀνήκεστον ἀπαθὴς διαφύγοιμι. ὀργῆς κρατοίην. ἐρῴην [καὶ ἐπιθυμέοιμι] καὶ τυγχάνοιμι μούνων τῶν καλῶν, τῶν δὲ ἀπ᾽ ἐναντίης τῆς ἐπιθυμίης, μηδὲ ἁμαρτών κοτε ὥστε εὔξασθαι, τύχοιμι. βουλοίμην πάντας εὐτυχέειν, φθονήσαιμι μηδενὶ τῶν εὐτυχεόντων. μήκοτέ τις ἐμὲ τῶν νομιζομένων παραλόγως εὖ πρήσσειν ἐκπλήξειε μηδὲ ἀνιήσειε· τί γὰρ δεῖ τοῖς παρὰ τῆς τύχης διδομένοις φθονέειν; φίλοι δέ με καὶ οἱ κατ᾽ ἀξίην εὐτυχέοντες εὐφραίνοιεν. μήκοτε τῷ ἀπὸ οἰκείης γνώμης ἔχθρην κατ᾽ ἐμοῦ ἐπανελομένῳ δυστυχήσαντι ἐπησθείην. μήκοτε συγγνοίην ἐμωυτῷ κακοῦ τευ τινὶ αἰτίην παρασχόντι. λαθών κοτε ἐμωυτὸν ὡς παρὰ μέλος ἤτοι τὶ εἴπας ἢ πράξας, μὴ περιμείναιμι τοὺς μωμησομένους καὶ ἐπιπλήξοντας· αὐτὸς δὲ ἐμωυτὸν μωμησαίμην ἄχρι τοῦ ἀκέσασθαι. εἰδείην γενναίως φέρειν τὰ προσπίπτοντα, καὶ τὰ μέτρια ἐκδεχοίμην ὥσπερ αὐτῶν ἔχει ἡ φύσις, τοῖς δὲ ὑπερβάλλουσι μὴ καὶ τὸ παρ᾽ ἐμωυτοῦ προστιθείην. εὐτυχίην εἰδείην φέρειν σωφρόνως. μήκοτε ὑπὸ εὐπρηγίης ἐς ὑπερηφανίην ἄλογον ἀερθείην. πλοῦτον νομίζοιμι τὸν ἀρκέοντα βίῳ τῷ σώφρονι. ἄπαυστον καὶ ἀκόρεστον ἐπιθυμίην χρημάτων μὲν μήκοτε σχοίην, μούνων δὲ

τῶν ὠφελεόντων τὴν ψυχὴν μαθημάτων ἐθέλοιμι ἃ δεῖ ἔσεσθαι. νικῴην νίκην τὴν καὶ ἐμοὶ καὶ τῷ προσδιαλεγομένῳ ἀβλαβέα. φιλοτιμέεσθαι παρὰ καιρὸν πρὸς φίλους καὶ ἐν ταῖς ζητήσεσι φυλασσοίμην. μήκοτε καὶ παρὰ τὸ ἐμοὶ δοκέον ἐν ταῖς ζητήσεσι τοῦ νικᾶν ἕνεκα ἔριν ἀσπασαίμην. μήκοτε ἐπὶ βλάβῃ τοῦ ἀληθέος καὶ ὥστε παρ' ἃ αὐτὸς οἶδα παραλογίσασθαι τὸν προσδιαλεγόμενον ἐρίσαι ἐπαρθείην. τοῖς τὸ ἀληθὲς λόγοις ξυνιστᾶσιν ἀεὶ ξυμμαχοίμην. ἀκολάστου ἐπιθυμίης τι μήκοτε μηδὲ ἐννοηθείην. ξυνείην ἀεὶ τοῖς σώφροσιν· εἴη τέ μοι ἀεὶ προσδιαλέγεσθαι παρ' ὧν ἔστι τι πάντως ἀπελθεῖν χρηστὸν προσλαβόντι. μήκοτε ἐπαρθείην κέρδεος ἕνεκα πλημμελῆσαι. φίλους διαφερομένους καταρτίζοιμι. φίλοις δυνάμενος καὶ τοῖς δεομένοις τὰ δέοντα ἐπαρκέοιμι. φίλους ἐν κινδύνοις καταστάντας δυνάμενος ὠφελέειν μήκοτε ἐγκαταλείποιμι. φίλων ξυμφορὰς ἀφ' ὧν οἷόν τε ἐπανορθοῦσθαι προθυμοίμην. λυπεομένοισι παρεὼν ἐλαφρύνοιμι ἠπίῳ καὶ ἀκεσίμῳ λόγῳ τὰς ἀνίας. εἰδείην ἐμωυτὸν αἰδέεσθαι. τῶν καλῶν φιλομαθείην ἀσκέοιμι. ζητοίην μὴ τὰ περισσά, ἀλλὰ περὶ ὧν ἄριστον καὶ ἃ μαθὼν ὠφελησοίμην. θεοὺς τιμῴην καὶ νόμῳ πόλιος καὶ σπουδῇ οἰκείῃ νόῳ εὐσεβεῖ. ἀεὶ τὸ ἐν ἐμοὶ θυμούμενον ἡμεροίην. ἐθίζοιμι ἐμωυτὸν ἵλεω εἶναι καὶ μὴ πρὸς τὰ πρήγματα ἔχειν δυσκόλως. τίς πονηρός, καὶ τίνι τούτων τί κοτε πέπρηκται, μὴ μέλοι μοι· εἰδείην δὲ τοὺς ἀγαθούς, καὶ τούτους μεταδιώκοιμι. ὀφείλοιμι μηδενὶ μηδέν· εἰ δέ κοτε ὑπ' ἀνάγκης μεγάλης ἐς τοῦτο κατασταίην, γένοιτό μοι τάχιστα ἐλευθέρῳ γενέσθαι δυνηθῆναι. αἰνέοιμι τοὺς ἀγαθοὺς ἀφθόνως· φιλόψογον δὲ γλῶσσαν παντὸς ἀποστυγοίην. εἰδείην σιγᾶν περὶ ὧν ἄμεινον.

86 Σωκράτους.

Οὔτε ναῦν ἐξ ἑνὸς ἀγκυρίου οὔτε βίον ἐκ μιᾶς ἐλπίδος ὁρμιστέον.

87 Θεμιστίου ἐκ τοῦ Μετριοπαθοῦς ἢ Φιλοτέκνου (359 c. Hard.).

Οὕτω δὲ καὶ τῷ ἀνθρώπῳ ἐγκεχρῶσθαί ἐστιν ἀναγκαῖον ἡδονὴν καὶ λύπην καὶ ξύμπαντα τὰ ἄλλα παθήματα, πλείω δὲ καὶ ἐμμονωτέραν τὴν λύπην. καὶ τοῦτο αὖ πάλιν Αἴσωπος λέγει· τὸν γὰρ πηλὸν αὐτῷ ὁ Προμηθεύς, ἀφ' οὗ τὸν ἄνθρωπον διεπλάσατο, οὐκ ἐφύρασεν ὕδατι, ἀλλὰ δακρύοις. οὐχὶ οὖν ἐκκόπτειν αὐτὰ πειρᾶσθαι χρεών, ἀμήχανον γάρ. ἀλλ' εἴπερ ἄρα εἴη ἐπικόπτειν τε καὶ πραΰνειν, κοιμίζειν τε ἐφ' ὅσον δυνατόν, καὶ νουθετεῖν· ταύτην γὰρ εὐμενῶς προσίεται τὴν ἐπιμέλειαν. καὶ οὕτως σοι αὐτὰ παιδαγωγοῦντι ἀναφανήσεται χρήσιμά τε καὶ ὠφέλιμα ἀντὶ ἀχρήστων καὶ βλαβερῶν. οὐ γὰρ ὁ θεὸς αὐτὰ ἐνεκεράσατο τῷ ἀνθρώπῳ, ὅπως λώβην τε αὐτῷ καὶ αἶσχος προσθείη, ἀλλὰ καὶ ταῦτα πρὸς διαμονὴν καὶ σωτηρίαν τοῦ γένους προσύφηνέ τε καὶ προσῳκοδόμησε τῇ ψυχῇ· θυμὸν μέν, ὅπως ἂν τὰ βλάπτοντα ἀμυνώμεθα· ἐπιθυμίαν δὲ ἐδωδῆς καὶ ποτῶν πρὸς τὴν ξύμφυτον καὶ ἀναγκαίαν ἀπορροήν· καὶ οὕτω δὴ ἄλλο πρὸς ἄλλην τινὰ τεταγμένον τοῦ σώματος κῆρα. μένειν δὲ ἕκαστον χρὴ ἐν τῷ μέτρῳ· καὶ τὸ μέτρον τοῦτο ἑκάστου γίνεται ἀρετή· τοῦ μὲν θυμοειδοῦς ἀνδρία, τοῦ δὲ ἐπιθυμητικοῦ σωφροσύνη, τοῦ δ' αὖ φιλοχρημάτου καὶ φιλοκερδοῦς ἐλευθεριότης τε καὶ μεγαλοπρέπεια· ὅσον δὲ ἐπτόηται περὶ τιμὰς καὶ δυνάμεις καὶ προεδρίας, τούτου ἐστὶ τὸ μέτρον μεγαλοψυχία. εἰ δὲ ἀκόσμητα ἐαθείη καὶ ἀθε-

ράπευτα ὑπὸ τοῦ λόγου, καθάπερ φυτὰ ἥμερα καὶ χρηστά, ἐξαμελήσαντος γεωργοῦ, ἀπαγριοῦται εὐθὺς καὶ ἐξυβρίζει καὶ παραβλαστάνει τὰς κακίας καθάπερ ἀκάνθας χαλεπὰς καὶ φαρμακώδεις τοῖς τε ἄλλοις καὶ μάλιστα τῷ κεκτημένῳ. ἔστι δ' ἐφ' ὧν ἔμπαλιν καταφθίνει καὶ ἀπομαραίνεται εἴσω τῆς ἀκμῆς· καὶ δέονται οὗτοι τοῦ λόγου οὐ κολούοντος καὶ θλίβοντος καὶ πιέζοντος, ἀλλὰ τοῦ ἐπάρδοντός τε καὶ ἐπανάγοντος καὶ ἐρεθίζοντος πρὸς τὴν αὔξην τὴν ἐοικυῖαν. καὶ διὰ τοῦτο ἄρα ἑκάστην ἀρετὴν περικάθηνται ἔνθεν καὶ ἔνθεν δύο κακίαι, ἡ μὲν τὸ ἐνδεὲς τοῦ παθήματος ἀγαπῶσα, ἡ δὲ τὸ πλεονάζον ἀσπαζομένη. δεῖ δ' οὐ πρὸς τὰ φαῦλα καὶ διεστραμμένα ὁρῶντας ἅπαντα ὁμοίως ὑποπτεύειν καὶ ἐξελαύνειν, ἀλλὰ τὸ βούλημα ἐξετάζειν τῆς φύσεως, καὶ πρὸς ὅ τι ἕκαστον τῶν παθημάτων ἐνεφύτευσεν καὶ ἐνεσημήνατο τῇ ψυχῇ.

88 Πορφυρίου ἐκ τοῦ περὶ τῶν πρὸς τὰ νοητὰ ἀφορμῶν.

Ἄλλαι αἱ ἀρεταὶ τοῦ πολιτικοῦ, καὶ ἄλλαι αἱ τοῦ πρὸς θεωρίαν ἀνιόντος καὶ διὰ τοῦτο λεγομένου θεωρητικοῦ, καὶ ἄλλαι αἱ τοῦ ἤδη τελείου θεωρητικοῦ καὶ ἤδη θεατοῦ, καὶ ἄλλαι αἱ τοῦ νοῦ, καθὸ νοῦς, καὶ ἀπὸ ψυχῆς καθαροῦ. αἱ μὲν τοῦ πολιτικοῦ ἐν μετριοπαθείᾳ τοῦ ἀλόγου κείμεναι τῷ ἕπεσθαι καὶ ἀκολουθεῖν τῷ λογισμῷ τοῦ καθήκοντος κατὰ τὰς πράξεις. διὸ πρὸς κοινωνίαν βλέπουσαι τὴν ἀβλαβῆ τῶν πλησίον ἐκ τοῦ συναγελασμοῦ καὶ τῆς κοινωνίας πολιτικαὶ λέγονται. καὶ ἔστι φρόνησις μὲν περὶ τὸ λογιζόμενον, ἀνδρία δὲ περὶ τὸ θυμούμενον, σωφροσύνη δ' [ἐν ὁμολογίᾳ καὶ συμφωνίᾳ ἐπιθυμητικοῦ πρὸς λογισμόν, δικαιοσύνη δὲ] ἡ ἑκάστου τούτων ὁμοῦ οἰ-

κειοπραγία, ἀρχῆς πέρι καὶ τοῦ ἄρχεσθαι. αἱ δὲ τοῦ πρὸς θεωρίαν προκόπτοντος θεωρητικοῦ ἐν ἀποστάσει κεῖνται τῶν ἐντεῦθεν· διὸ καὶ καθάρσεις αὗται λέγονται ἐν ἀποχῇ θεωρούμεναι τῶν τοῦ σώματος πράξεων καὶ συμπαθειῶν τῶν πρὸς αὐτό. αὗται μὲν γὰρ τῆς ψυχῆς ἀφισταμένης πρὸς τὸ ὄντως ὄν, αἱ δὲ πολιτικαὶ τὸν θνητὸν ἄνθρωπον κατακοσμοῦσι. καὶ πρόδρομοι δὲ πολιτικαὶ τῶν καθάρσεων· δεῖ γὰρ κοσμηθέντα κατ' αὐτὰς ἀποστῆναι τοῦ σὺν σώματι πράττειν τι προηγουμένως. διὸ ἐν ταῖς καθάρσεσιν τὸ μὲν μὴ συνδοξάζειν τῷ σώματι, ἀλλὰ μόνον ἐνεργεῖν, ὑφίστησι τὸ φρονεῖν, ὃ διὰ τοῦ καθαρῶς νοεῖν τελειοῦται· τὸ δέ γε μὴ ὁμοπαθεῖν συνίστησι τὸ σωφρονεῖν, τὸ δὲ μὴ φοβεῖσθαι ἀφισταμένην τοῦ σώματος ὡς εἰς κενόν τι καὶ μὴ ὂν τὴν ἀνδρίαν. ἡγουμένου δὲ λόγου καὶ νοῦ καὶ μηδενὸς ἀντιτείνοντος, δικαιοσύνη τὸ τοιοῦτον. ἡ μὲν οὖν κατὰ τὰς πολιτικὰς ἀρετὰς διάθεσις ἐν μετριοπαθείᾳ θεωρεῖται, τέλος ἔχουσα τὸ ζῆν ὡς ἄνθρωπον κατὰ φύσιν· ἡ δὲ κατὰ τὰς θεωρητικὰς ἐν ἀπαθείᾳ, ἧς τέλος ἡ πρὸς θεὸν ὁμοίωσις. ἐπεὶ δὲ κάθαρσις ἣ μέν τις ἦν καθαίρουσα ἣ δὲ κεκαθαρμένων, αἱ καθαρτικαὶ ἀρεταὶ κατ' ἄμφω θεωροῦνται τὰ σημαινόμενα τῆς καθάρσεως· καθαίρουσί τε γὰρ τὴν ψυχὴν καὶ καθαρθείσῃ σύνεισι· τέλος γὰρ τὸ κεκαθάρθαι τοῦ καθαίρειν. ἀλλ' ἐπεὶ τὸ καθαίρειν καὶ κεκαθάρθαι ἀφαίρεσις ἦν παντὸς τοῦ ἀλλοτρίου, τὸ ἀγαθὸν ἕτερον ἂν εἴη τοῦ καθαίροντος· ὥστε γε πρὸς τῆς ἀκαθαρσίας ἀρκεῖ· ἀλλ' ἀρκέσει μὲν ἡ κάθαρσις, τὸ δὲ καταλειπόμενον ἔσται τὸ ἀγαθόν, καὶ οὐχ ἡ κάθαρσις. ἀλλὰ ἡ ψυχῆς φύσις οὐκ ἦν ἀγαθόν, ἀλλ' ἀγαθοῦ μετέχειν δυνάμενον καὶ ἀγαθοειδές· οὐ γὰρ ἂν ἐγένετο ἐν κακῷ. τὸ οὖν ἀγαθὸν

αὐτῇ ἐν τῷ συνεῖναι τῷ γεννήσαντι, κακία δὲ τὸ τοῖς ὑστέροις. καὶ διπλῇ γε κακία, τό τε τούτοις συνεῖναι καὶ μετὰ παθῶν ὑπερβολῆς· διόπερ αἱ πολιτικαὶ ἀρεταὶ μιᾶς γοῦν αὐτὴν κακίας ἀπαλλάττουσαι ἀρεταὶ ἐκρίθησαν καὶ τίμιαι, αἱ δὲ καθαρτικαὶ τιμιώτεραι καὶ τῆς ὡς ψυχικῆς κακίας ἀπαλλάττουσαι. δεῖ τοίνυν καθηραμένην αὐτὴν συνεῖναι τῷ γεννήσαντι. καὶ ἀρετὴ ἄρα αὐτῆς μετὰ τὴν ἐπιστροφὴν αὕτη, ἥπερ ἐστὶν ἐν γνώσει καὶ εἰδήσει τοῦ ὄντος· οὐχ ὅτι οὐκ ἔχει παρ᾽ αὐτῇ ταύτην, ἀλλ᾽ ὅτι ἄνευ τοῦ πρὸ αὐτῆς οὐχ ὁρᾷ τὰ αὐτῆς. ἄλλο οὖν γένος τρίτον ἀρετῶν μετὰ τὰς καθαρτικὰς καὶ τὰς πολιτικάς, νοερῶς τῆς ψυχῆς ἐνεργούσης· σοφία μὲν καὶ φρόνησις ἐν θεωρίᾳ ὧν νοῦς ἔχει, δικαιοσύνη δὲ ἐν οἰκειοπραγίᾳ μὲν ἐν τῇ πρὸς τὸν νοῦν ἀκολουθίᾳ καὶ τῷ πρὸς νοῦν ἐνεργεῖν. σωφροσύνη δὲ ἡ εἴσω πρὸς νοῦν στροφή· ἡ δὲ ἀνδρία ἀπάθεια, καθ᾽ ὁμοίωσιν τοῦ πρὸς ὃ βλέπει ἀπαθὲς ὂν τὴν φύσιν. καὶ ἀντακολουθοῦσί γε αὗται ἀλλήλαις ὥσπερ καὶ ἄλλαι. τέταρτον εἶδος ἀρετῶν τὸ τῶν παραδειγματικῶν, αἵπερ ἦσαν ἐν τῷ νῷ κρείττους οὖσαι τῶν ψυχικῶν, καὶ τούτων ὥσπερ παραδείγματα· ἐπιστήμη μὲν ἡ νόησις, σοφία δὲ γιγνώσκων ὁ νοῦς· τὸ δὲ πρὸς αὐτὸν ἡ σωφροσύνη, τὸ δὲ οἰκεῖον ἔργον ἡ οἰκειοπραγία, ἡ δὲ ἀνδρία ἡ ταυτότης καὶ τὸ ἐφ᾽ ἑαυτοῦ μένειν καθαρὸν διὰ δυνάμεως περιουσίαν. τέτταρα τοίνυν ἀρετῶν γένη πέφηνεν· [ὧν] αἱ μὲν ἦσαν αἱ τοῦ νοῦ αἱ παραδειγματικαὶ καὶ σύνδρομοι αὐτοῦ τῇ οὐσίᾳ· αἱ δὲ ψυχῆς πρὸς νοῦν ἐνορώσης ἤδη καὶ πληρουμένης ἀπ᾽ αὐτοῦ· αἱ δὲ ψυχῆς ἀνθρώπου καθαιρομένης τε καὶ καθαρθείσης ἀπὸ σώματος καὶ τῶν ἀλόγων παθῶν· αἱ δὲ ψυχῆς ἀνθρώπου κατακοσμούσης τὸν ἄνθρωπον, διὰ τοῦ τὰ

μέτρα τῇ ἀλογίᾳ ἀφορίζειν καὶ μετριοπάθειαν ἐνεργάζεσθαι. καὶ ὁ μὲν ἔχων τὰς μείζους ἐξ ἀνάγκης ἔχει καὶ τὰς ἐλάττους· οὐ μὴν καὶ ἔμπαλιν. οὐκ ἔτι μέντοι ὁ ἔχων τὰς μείζους ἐνεργήσει καὶ κατὰ τὰς ἐλάττους προηγουμένως, ἀλλὰ μόνον κατὰ περίστασιν τῆς γενέσεως. ἄλλοι γὰρ οἱ σκοποί, ὥσπερ εἴρηται, καὶ κατὰ γένος διάφοροι. τῶν μὲν γὰρ πολιτικῶν μέτρον ἐπιθεῖναι τοῖς πάθεσι πρὸς τὰς ἐν τοῖς κατὰ φύσιν ἐνεργείας· τῶν δὲ καθαρτικῶν, τελέως τῶν παθῶν ἀποστῆσαι, τὸ τέως μέτρον λαμβάνον· τῶν δὲ πρὸς νοῦν ἐνεργῆσαι, μηδὲ τοῦ ἀποστῆσαι ἐκ τῶν παθῶν εἰς ἔννοιαν ἐρχομένους· τῶν δὲ μηδὲ πρὸς νοῦν ἐχουσῶν τὴν ἐνέργειαν, ἀλλὰ τῇ αὐτοῦ οὐσίᾳ εἰς συνδρομὴν ἀφιγμένων. διὸ καὶ ὁ κατὰ μὲν τὰς πρακτικὰς ἐνεργῶν σπουδαῖος ἦν ἄνθρωπος, ὁ δὲ κατὰ τὰς καθαρτικὰς δαιμόνιος ἦν ἄνθρωπος ἢ καὶ δαίμων ἀγαθός, ὁ δὲ κατὰ μόνας τὰς πρὸς τὸν νοῦν θεός, ὁ δὲ κατὰ τὰς παραδειγματικὰς θεῶν πατήρ. ἐπιμελητέον οὖν μάλιστα τῶν καθαρτικῶν ἡμῖν, σκεψαμένοις ὅτι τούτων μὲν ἡ τεῦξις ἐν τῷ βίῳ τούτῳ, διὰ τούτων δὲ καὶ ἡ εἰς τὰς τιμιωτέρας ἄνοδος. διὸ θεωρητέον ἄχρι τίνος καὶ πόσον οἷά τε παραλαμβάνεσθαι ἡ κάθαρσις. ἔστι μὲν γὰρ ἐν ἀποστάσει σώματος καὶ τῆς ἀλόγου παθητικῆς κινήσεως. πῶς δ' ἂν γένοιτο καὶ ἄχρι τίνος, ῥητέον. πρῶτον μὲν οἷον θεμέλιος καὶ ὑποβάθρα τῆς καθάρσεως τὸ γνῶναι ἑαυτὸν ψυχὴν ὄντα ἐν ἀλλοτρίῳ τῷ πράγματι καὶ ἑτερουσίῳ συνδεδεμένον· δεύτερον δὲ τὸ ἀπὸ τούτου ὁρμώμενον τοῦ πείσματος συναγαγεῖν αὐτὸν ἀπὸ τοῦ σώματος (καὶ τοῖς μὲν τόποις) πάντως γε μὴν ἀπαθῶς πρὸς αὐτὸ διατιθέμενον. ἐνεργῶν μὲν γάρ τις συνεχῶς κατ' αἴσθησιν, εἰ καὶ μὴ μετὰ προσπαθείας καὶ τῆς

τοῦ ἥδεσθαι ἀπολαύσεως τοῦτο ποιεῖ, ἀλλ' οὖν ἐσκέδασται περὶ τὸ σῶμα, συναφὴς αὐτῷ κατὰ ταύτην γινόμενος, προσπάσχων δὲ ταῖς τῶν αἰσθημάτων ἡδοναῖς ἢ λύπαις σὺν προθυμίᾳ καὶ ἐπινεύσει συμπαθεῖ· ἀφ' ἧς δὴ μάλιστα διαθέσεως αὐτὸν προσήκει καθαίρειν. τοῦτο δ' ἂν γένοιτο, εἰ καὶ τὰς ἀναγκαίας τῶν ἡδονῶν καὶ τὰς αἰσθήσεις ἰατρείας ἕνεκα μόνον τις παραλαμβάνοι ἢ ἀπαλλαγῆς πόνων, ἵνα μὴ ἐμποδίζοιτο. ἀφαιρετέον δὲ καὶ τὰς ἀλγηδόνας· εἰ δὲ μὴ οἷόν τε εἴη, πράως οἰστέον ἐλάττους τιθέντα τῷ μὴ συμπάσχειν. τὸν δὲ θυμὸν ὡς οἷόν τε ἀφαιρετέον καὶ μελετητέον πάντῃ· εἰ δὲ μή, αὐτῷ γοῦν συναναμιγνύναι τὴν προαίρεσιν, ἀλλ' ἄλλου εἶναι τὸ ἀπροαίρετον· τὸ δ' ἀπροαίρετον ἀσθενὲς καὶ ὀλίγον· τὸν δὲ φόβον πάντῃ, περὶ οὐδενὸς γὰρ φοβήσεται· τὸ δ' ἀπροαίρετον καὶ ἐνταῦθα. χρηστέον δὴ ἄρα καὶ θυμῷ καὶ φόβῳ ἐν νουθετήσει· ἐπιθυμίαν δὲ παντὸς φαύλου ἐξοριστέον· σίτων δὲ καὶ ποτῶν οὐκ αὐτὸς ἕξει ἧπερ αὐτός· ἀφροδισίων τε τῶν φυσικῶν οὐδὲ τὸ ἀπροαίρετον, εἰ δ' ἄρα, ὅσον μέχρι φαντασίας προπετοῦς τῆς κατὰ τοὺς ὕπνους. ὅλως δ' αὐτὴ μὲν πάντων ἡ ψυχὴ νοερὰ τοῦ καθαιρομένου τούτων ἔστω καθαρά. βουλέσθω δὲ καὶ τὸ κινούμενον πρὸς τὸ ἄλογον τῶν σωματικῶν παθῶν ἀσυμπαθῶς κινεῖσθαι καὶ ἀπροσεκτῶς, ὥστε καὶ τὰς κινήσεις εὐθύς τε λύεσθαι τῇ γειτνιάσει τοῦ λογιζομένου.

89 *Πλάτωνος ἐκ τοῦ Φαίδωνος* (67 e).

Τῷ ὄντι ἄρα, ἔφη, ὦ Σιμμία, οἱ ὀρθῶς φιλοσοφοῦντες ἀποθνήσκειν μελετῶσι, καὶ τεθνάναι ἥκιστα αὐτοῖς ἀνθρώπων φοβερόν.

90 *Πλάτωνος ἐκ τοῦ Κλειτοφῶντος* (408 b).

Τούτοις δὴ τοῖς λόγοις παγκάλως λεγομένοις, ὡς διδακτὸν ἀρετή, καὶ πάντων ἑαυτοῦ δεῖ μάλιστα ἐπιμελεῖσθαι, σχεδὸν οὔτ' ἀντεῖπον πώποτε οὔτ' οἶμαι μή ποτε ὕστερον ἀντείπω.

91 *Πλάτωνος ἐκ τοῦ Μενεξένου ἢ Ἐπιταφίου* (240 d).

Ἀλλὰ πᾶν πλῆθος καὶ πᾶς πλοῦτος ἀρετῇ ὑπείκει.

92 *Πλάτωνος Πολιτείας ε'* (457).

Κάλλιστα γὰρ δὴ τοῦτο καὶ λέγεται καὶ λελέξεται, ὅτι τὸ μὲν ὠφέλιμον καλόν, τὸ δὲ βλαβερὸν αἰσχρόν. παντάπασι μὲν οὖν.

93 *Πλάτωνος ἐν Πολιτείᾳ πέμπτῃ* (452).

Ὅτι μάταιος ὃς γελοῖον ἄλλο τὶ ἡγεῖται ἢ τὸ κακόν· καὶ ὁ γελωτοποιεῖν ἐπιχειρῶν εἰς ἄλλην τινὰ ὄψιν ἀποβλέπων, ὡς γελοίου, ἢ τὴν τοῦ ἄφρονός τε καὶ κακοῦ· καὶ καλοῦ αὖ σπουδάζει εἰς ἄλλον τινὰ σκοπὸν στησάμενος ἢ τὸν τοῦ ἀγαθοῦ.

94 *Πλάτωνος Πολιτείας ε'* (450 d).

Ἐν γὰρ φρονίμοις τε καὶ φίλοις περὶ τῶν μεγίστων τἀληθῆ εἰδότα λέγειν ἀσφαλὲς καὶ θαρραλέον· ἀπιστοῦντα δὲ καὶ ζητοῦντα ἅμα τοὺς λόγους ποιεῖσθαι, ὃ δὴ ἐγὼ δρῶ, φοβερόν τε καὶ σφαλερὸν οὔ τι γέλωτα ὀφλεῖν.

95 *Πλάτωνος Νόμων ε'* (727 e).

Οὐδέ γε ὁπότ' ἂν χρήματά τις ἐρᾷ κτᾶσθαι μὴ καλῶς ἢ μὴ δυσχερῶς φέρῃ κτώμενος, δώροις ἄρα τιμᾷ τότε τὴν ἑαυτοῦ ψυχήν· παντὸς μὲν οὖν λείπει· τὸ γὰρ αὐτῆς τίμιον ἅμα καὶ καλὸν ἀποδίδοται σμικροῦ χρυσίου· πᾶς γὰρ ὅ τ' ἐπὶ γῆς καὶ ὑπὸ γῆς

χρυσὸς ἀρετῆς οὐκ ἀντάξιος. — Τίμιον εἶναι σῶμα οὐ τὸ καλὸν οὐδὲ ἰσχυρὸν οὐδὲ τάχος ἔχον οὐδὲ μέγα οὐδέ γε τὸ ὑγιεινόν, καί τοι πολλοῖς ἂν τοῦτό γε δοκοῖ· καὶ μὴν οὐδὲ τὰ τούτων γε ἐναντία· τὰ δ' ἐν τῷ μέσῳ ἁπάσης ταύτης τῆς ἕξεως ἐφαπτόμενα σωφρονέστατα ἅμα τε καὶ ἀσφαλέστατα εἶναι μακρῷ. τὰ μὲν γὰρ χαύνους τὰς ψυχὰς καὶ θρασείας ποιεῖ, τὰ δὲ ταπεινάς τε καὶ ἀνελευθέρους· ὡς δ' αὕτως ἡ τῶν χρημάτων καὶ κτημάτων κτῆσις καὶ τιμήσεων. κατὰ τὸν αὐτὸν ῥυθμὸν ἔχει· τὰ μὲν ὑπέρογκα γὰρ ἑκάστων τούτων ἔχθρας καὶ στάσεις ἀπεργάζεται ταῖς πόλεσι καὶ ἰδίᾳ, τὰ δ' ἐλλείποντα δουλείας ὡς ἐπὶ τὸ πολύ. μὴ δή τις φιλοχρηματείτω παίδων γε ἕνεκα ὅτι πλουσιωτάτους καταλείψει· οὔτε γὰρ ἐκείνοις οὔτε αὐτῇ πόλει ἄμεινον· ἡ γὰρ τῶν νέων ἀκολάκευτος οὐσία, τῶν δὲ ἀναγκαίων μὴ ἐνδεὴς αὐτὴ μουσικωτάτη τε καὶ ἀρίστη· ξυμφωνοῦσα γὰρ ἡμῖν καὶ συναρμόττουσα εἰς ταῦτα, ἄλυπον τὸν βίον ἀπεργάζεται. παισὶ δ' αἰδῶ χρὴ πολλήν, οὐ χρυσὸν καταλείπειν. οἰόμεθα δ' ἐπιπλήττοντες τοῖς νέοις ἀναισχυντοῦσι τοῦτο καταλείψειν· τὸ δ' ἔστιν οὐκ ἐκ τοῦ νῦν παρακελεύσματος τοῖς νέοις γιγνόμενον, ὃ παρακελεύονται λέγοντες ὡς δεῖ πάντα αἰσχύνεσθαι τὸν νέον. ὁ δὲ ἔμφρων νομοθέτης τοῖς πρεσβυτέροις ἂν μᾶλλον παρακελεύοιτο αἰσχύνεσθαι τοὺς νέους καὶ πάντων μάλιστα εὐλαβεῖσθαι μή ποτέ τις αὐτὸν ἴδῃ τῶν νέων ἢ καὶ ἐπακούσῃ δρῶντα ἢ λέγοντά τι τῶν αἰσχρῶν· ὡς ὅπου ἀναισχυντοῦσι γέροντες, ἀνάγκη καὶ νέους ἐνταῦθα εἶναι ἀναιδεστάτους. παιδεία γὰρ νέων διαφέρουσά ἐστιν ἅμα καὶ αὐτῶν, οὐ τὸ νουθετεῖν, ἀλλ' ἅπερ ἂν ἄλλον νουθετῶν εἴποι τις, φαίνεσθαι ταῦτα αὐτὸν δρῶντα διὰ βίου. —

Ἀλήθεια δὴ πάντων μὲν ἀγαθῶν θεοῖς ἡγεῖται, πάντων δὲ ἀνθρώποις, ἧς ὁ γενήσεσθαι μέλλων μακάριός τε καὶ εὐδαίμων ἐξ ἀρχῆς εὐθὺς μέτοχος εἴη, ἵνα ὡς ὅτι πλεῖστον χρόνον ἀληθὴς ὢν διαβιοῖ· πιστὸς γάρ. ὁ δὲ ἄπιστος, ᾧ φίλον ψεῦδος ἑκούσιον· ὅτῳ δὲ ἀκούσιον, ἄνους· ὧν οὐδέτερον ζηλωτόν. ἄφιλος γὰρ δὴ πᾶς ὅ γε ἄπιστος καὶ ἀμαθής· χρόνου δὲ προϊόντος γνωσθείς, εἰς τὸ χαλεπὸν γῆρας ἐρημίαν αὐτῷ πᾶσαν κατεσκευάσατο ἐπὶ τέλει τοῦ βίου, ὥστε ζώντων καὶ μὴ ἑταίρων καὶ παίδων σχεδὸν ὁμοίως ὀρφανὸν αὐτῷ γενέσθαι τὸν βίον. τίμιος μὲν δὴ καὶ ὁ μηδὲν ἀδικῶν· ὁ δὲ μηδ' ἐπιτρέπων τοῖς ἀδικοῦσιν ἀδικεῖν, πλέον ἢ διπλασίας τιμῆς ἄξιος ἐκείνου. ὁ μὲν γὰρ ἑνός, ὁ δὲ πολλῶν ἀντάξιος ἑτέρων, μηνύων τὴν τῶν ἄλλων τοῖς ἄρχουσιν ἀδικίαν· ὁ δὲ καὶ ξυγκολάζων εἰς δύναμιν τοῖς ἄρχουσιν, ὁ μέγας ἀνὴρ ἐν πόλει καὶ τέλειος, οὗτος ἀναγορευέσθω νικηφόρος ἀρετῇ. τὸν αὐτὸν δὴ τοῦτον ἔπαινον καὶ περὶ σωφροσύνης χρὴ λέγειν καὶ περὶ φρονήσεως καὶ ὅσα ἄλλα τις ἀγαθὰ κέκτηται, δυνατὰ μὴ μόνον αὐτὸν ἔχειν, ἀλλὰ καὶ ἄλλοις μεταδιδόναι. καὶ τὸν μὲν μεταδιδόντα ὡς ἀκρότατον χρὴ τιμᾶν· τὸν δ' αὖ μὴ δυνάμενον, ἐθέλοντα δέ, ἐᾶν δεύτερον· τὸν δὲ φθονοῦντα καὶ ἑκόντα μηδενὶ κοινωνὸν διὰ φιλίας γιγνόμενον ἀγαθῶν τινῶν, αὐτὸν μὲν ψέγειν· τὸ δὲ κτῆμα μηδὲν μᾶλλον διὰ τὸν κεκτημένον ἀτιμάζειν, ἀλλὰ κτᾶσθαι κατὰ δύναμιν. φιλονεικείτω δὲ ἡμῖν πᾶς πρὸς ἀρετὴν ἀφθόνως· ὁ μὲν γὰρ τοιοῦτος τὰς πόλεις αὔξει, ἁμιλλώμενος μὲν αὐτός, τοὺς ἄλλους δὲ οὐ κωλύων διαβολαῖς· ὁ δὲ φθονερός, τῇ τῶν ἄλλων διαβολῇ δεῖν οἰόμενος ὑπερέχειν, αὐτός τε ἧττον ξυντείνει εἰς ἀρετὴν τὴν ἀληθῆ, τούς τε ἀνθαμιλλω-

μένους εἰς ἀθυμίαν καθίστησι τῷ ἀδίκως ψέγεσθαι· καὶ διὰ ταῦτα ἀγύμναστον τὴν πόλιν ὅλην εἰς ἅμιλλαν ἀρετῆς ποιῶν, σμικροτέραν αὐτὴν πρὸς εὐδοξίαν τὸ ἑαυτοῦ μέρος ἀπεργάζεται. θυμοειδῆ μὲν δὴ χρὴ πάντα ἄνδρα εἶναι, πρᾶον δὲ ὡς ὅτι μάλιστα· τὰ γὰρ τῶν ἄλλων χαλεπὰ καὶ δυσίατα, ἢ καὶ τὸ παράπαν ἀνίατα ἀδικήματα, οὐκ ἔστιν ἄλλως ἐκφυγεῖν, ἢ μαχόμενον καὶ ἀμυνόμενον νικῶντα, καὶ τῷ μηδὲν ἀνιέναι κολάζοντα· τοῦτο δὲ ἄνευ θυμοῦ γενναίου ψυχὴ πᾶσα ἀδύνατος δρᾶν. τὰ δ' αὐτῶν, ὅσοι ἀδικοῦσι μέν, ἰατὰ δέ, γινώσκειν χρή, πρῶτον μέν, ὅτι πᾶς ὁ ἄδικος οὐχ ἑκὼν ἄδικος· τῶν γὰρ μεγίστων κακῶν οὐδεὶς οὐδαμῶς οὐδὲν ἑκὼν κέκτητο ἄν ποτε, πολὺ δὲ ἥκιστα ἐν τοῖς αὐτοῦ τιμιωτάτοις· ψυχὴ δ', ὡς εἴπομεν, ἀληθείᾳ γ' ἐστὶ πᾶσι τιμιώτατον· ἐν οὖν τῷ τιμιωτάτῳ τὸ μέγιστον κακὸν οὐδεὶς ἑκὼν μή ποτε λάβῃ, καὶ ζῇ διὰ βίου κεκτημένος αὐτό· ἀλλὰ ἐλεεινὸς μὲν πάντως ὅ γε ἄδικος, καὶ ὁ κακὰ ἔχων· ἐλεεῖν δὲ τὸν μὲν ἰάσιμα ἔχοντα ἐγχωρεῖ, καὶ ἀνείργοντα τὸν θυμὸν πραΰνειν καὶ μὴ ἀκροχολοῦντα γυναικείως πικραινόμενον διατελεῖν· τῷ δὲ ἀκράτως καὶ ἀπαραμυθήτως πλημμελεῖ καὶ κακῷ ἐφιέναι δεῖ τὴν ὀργήν. διὸ δὴ θυμοειδῆ πρέπειν καὶ πρᾷον ἑκάστοτε φαμὲν εἶναι δεῖν τὸν ἀγαθόν. πάντων δὲ μέγιστον κακὸν ἀνθρώποις τοῖς πολλοῖς ἔμφυτον ἐν ταῖς ψυχαῖς ἐστίν, οὗ πᾶς αὑτῷ συγγνώμην ἔχων, ἀποφυγὴν οὐδεμίαν μηχανᾶται. τοῦτο δ' ἐστὶν ὃ λέγουσιν, ὡς φίλος αὑτῷ πᾶς ἄνθρωπος φύσει τέ ἐστι, καὶ ὀρθῶς ἔχει τὸ δεῖν εἶναι τοιοῦτον· τὸ δὲ ἀληθείᾳ γε πάντων ἁμαρτημάτων διὰ τὴν σφόδρα ἑαυτοῦ φιλίαν αἴτιον ἑκάστῳ γίνεται ἑκάστοτε. τυφλοῦται γὰρ περὶ τὸ φιλούμενον ὁ φιλῶν, ὥστε τὰ δίκαια καὶ τὰ ἀγαθὰ

καὶ τὰ καλὰ κακῶς κρίνει, τὸ αὐτοῦ πρὸ τοῦ ἀληθοῦς ἀεὶ τιμᾶν δεῖν ἡγούμενος. οὔτε γὰρ ἑαυτόν, οὔτε τὰ ἑαυτοῦ χρὴ τόν γε μέγαν ἄνδρα ἐσόμενον στέργειν· ἀλλὰ τὰ δίκαια, ἐάν τε παρ' αὐτῷ ἐάν τε παρ' ἄλλῳ μᾶλλον πραττόμενα τυγχάνῃ. ἐκ ταυτοῦ δ' ἁμαρτήματος τούτου καὶ τὸ τὴν ἀμαθίαν τὴν παρ' αὐτῷ δοκεῖν σοφίαν εἶναι γεγονέναι πᾶσιν· ὅθεν οὐκ εἰδότες, ὡς ἔπος εἰπεῖν, οὐδέν, οἰόμεθα τὰ πάντα εἰδέναι· οὐκ ἐπιτρέποντες δὲ ἀλλήλοις ἃ μὴ ἐπιστάμεθα πράττειν, ἀναγκαζόμεθα ἁμαρτάνειν αὐτὸν πράττοντα. διὸ πάντα ἄνθρωπον χρὴ φεύγειν τὸ σφόδρα φιλεῖν αὐτόν, τὸ δ' αὐτοῦ βέλτιον διώκειν ἀεί, μὴ δὲ μίαν αἰσχύνην ἐπὶ τῷ τοιούτῳ προσποιούμενον.

96 *Τοῦ αὐτοῦ Νόμων ζ'* (808 b).

Ὕπνος γὰρ δὴ πολὺς οὔτε τοῖς σώμασιν οὔτε ταῖς ψυχαῖς ἡμῶν οὔτ' αὖ ταῖς πράξεσι ταῖς περὶ ταῦτα πάντα ἁρμόττων ἐστὶ κατὰ φύσιν. καθεύδων γὰρ οὐδεὶς οὐδενὸς ἄξιος, οὐδὲν μᾶλλον τοῦ μὴ ζῶντος· ἀλλ' ὅστις τοῦ ζῆν ἡμῶν καὶ τοῦ φρονεῖν μάλιστά ἐστι κηδεμών, ἐγρήγορε χρόνον ὡς πλεῖστον, τὸ πρὸς ὑγίειαν αὐτοῦ μόνον φυλάττων χρήσιμον. ἔστι δ' οὐ πολύ, καλῶς εἰς ἔθος ἰόν. ἐγρηγορότες δὲ ἄρχοντες ἐν πόλεσι νύκτωρ, φοβεροὶ μὲν κακοῖς πολεμίοις τε ἅμα καὶ πολίταις, ἀγαστοὶ δὲ καὶ τίμιοι τοῖς δικαίοις τε καὶ σώφροσιν, ὠφέλιμοι δὲ αὐτοῖς τε καὶ ξυμπάσῃ τῇ πόλει.

97 *Τοῦ αὐτοῦ ἐκ τοῦ περὶ ἀρετῆς* (379 b).

Πῶς οὖν ἄν, ὦ Σώκρατές, σοι δοκοῦσι γίγνεσθαι, εἰ μήτε φύσει μήτε μαθήσει γίγνονται· τίν' ἄλλον τρόπον γίγνοιντ' ἂν οἱ ἀγαθοί; οἶμαι μὲν οὐκ ἂν ῥᾳδίως αὐτὸ δηλωθῆναι· τοπάζω μέντοι θεῖόν τι

μάλιστα εἶναι τὸ κτῆμα, καὶ γίγνεσθαι τοὺς ἀγαθοὺς ὥσπερ οἱ θεῖοι τῶν μάντεων καὶ οἱ χρησμολόγοι. οὗτοι γὰρ οὔτε φύσει τοιοῦτοι γίγνονται οὔτε τέχνῃ, ἀλλ' ἐπίπνοι ἐκ τῶν θεῶν γιγνόμενοι τοιοῦτοί εἰσιν· οὕτω δὲ καὶ οἱ ἄνδρες οἱ ἀγαθοὶ λέγουσι ταῖς πόλεσιν ἑκάστοτε τὰ ἀποβησόμενα καὶ τὰ μέλλοντα ἔσεσθαι ἐκ θεοῦ ἐπιπνοίας πολὺ μᾶλλον καὶ ἐναργέστερον ἢ οἱ χρησμῳδοί. λέγουσι γάρ που καὶ αἱ γυναῖκες, ὅτι θεῖος ἀνὴρ οὗτός ἐστι, καὶ Λακεδαιμόνιοι ὅταν τινὰ μεγαλοπρεπῶς ἐπαινῶσι, θεῖον ἄνδρα φασὶν εἶναι· πολλαχοῦ δὲ καὶ Ὅμηρος τῷ αὐτῷ τούτῳ καταχρῆται καὶ οἱ ἄλλοι ποιηταί. καὶ ὅταν βούληται θεὸς εὖ πρᾶξαι πόλιν, ἄνδρας ἀγαθοὺς ἐνεποίησεν· ὅταν δὲ μέλλῃ κακῶς πράξειν πόλις, ἐξεῖλε τοὺς ἄνδρας τοὺς ἀγαθοὺς ἐκ ταύτης τῆς πόλεως ὁ θεός. οὕτως ἔοικεν οὔτε διδακτὸν εἶναι οὔτε φύσει ἀρετή, ἀλλὰ θείᾳ μοίρᾳ παραγίνεται κτωμένοις.

99 *Ξενοφῶντος ἐν β'* (6, 39) *ἀπομνημονευμάτων.*

Ὅσαι δὲ ἐν ἀνθρώποις ἀρεταὶ λέγονται, σκοπού-

---

98 *Περὶ τῆς ἀρετῆς βουλευόμεθα καὶ διαποροῦμεν, εἰ διδακτόν ἐστι τὸ φρονεῖν, τὸ δικαιοπραγεῖν, τὸ εὖ ζῆν, εἶτα θαυμάζομεν εἰ ῥητόρων μὲν ἔργα καὶ κυβερνητῶν καὶ οἰκοδόμων καὶ γεωργῶν μυρία γ' ἐστίν, ἀγαθοὶ δ' ἄνδρες ὀνομάζονται καὶ λέγονται μόνον, ὡς ἱπποκένταυροι καὶ γίγαντες καὶ κύκλωπες· ἔργον δ' ἀμεμφὲς εἰς ἀρετὴν καὶ ἀκέραιον οὐκ ἔστιν εὑρεῖν οὐδὲ πάθους ἀκέραιον ἦθος καὶ ἄθικτον. ἀλλ' εἰ καί τι καλὸν ἡ φύσις αὐτομάτως ἐκφέρει, τοῦτο πολλῷ τῷ ἀλλοτρίῳ, καθάπερ ὕλῃ καρπὸς ἀγρίᾳ καὶ ἀκαθάρτῳ μιγνύμενος, ἐξαμαυροῦται. ψάλλειν μανθάνουσιν ἄνθρωποι καὶ ὀρχεῖσθαι καὶ ἀναγινώσκειν γράμματα καὶ γεωργεῖν καὶ ἱππεύειν· ὑποδεῖσθαι μανθάνουσι, περιβάλλεσθαι, οἰνοχοεῖν διδάσκουσιν, ὀψοποιεῖν· ταῦτα ἄνευ τοῦ μαθεῖν οὐκ ἔστι χρησίμως ποιεῖν.* Plut. Mor. 439 a.

μενος εὑρήσεις πάσας μαθήσει τε καὶ μελέτῃ αὐξανομένας.

100 Ξενοφῶντος ἐν α' (6, 13) ἀπομνημονευμάτων.

Ὁ δὲ Σωκράτης πρὸς ταῦτα εἶπεν· Ὦ Ἀντιφῶν, παρ' ἡμῖν νομίζεται τὴν ὥραν καὶ τὴν σοφίαν ὁμοίως μὲν καλόν, ὁμοίως δὲ αἰσχρὸν διατίθεσθαι εἶναι. τήν τε γὰρ ὥραν ἐὰν μέν τις ἀργυρίου πωλῇ τῷ βουλομένῳ, πόρνον αὐτὸν ἀποκαλοῦσιν· ἐὰν δέ τις ὃν ἂν γνῷ καλόν τε κἀγαθὸν ἐραστὴν ὄντα, τοῦτον φίλον ἑαυτῷ ποιῆται, σώφρονα νομίζομεν· καὶ τὴν σοφίαν ὡσαύτως τοὺς μὲν ἀργυρίου τῷ βουλομένῳ πωλοῦντας σοφιστάς, ὥσπερ πόρνους, ἀποκαλοῦσιν· ὅστις δὲ ὃν ἂν γνῷ εὐφυῆ ὄντα, διδάσκων ὅ τι ἂν ἔχῃ ἀγαθόν, φίλον ποιεῖται, τοῦτον νομίζομεν, ἃ τῷ καλῷ κἀγαθῷ πολίτῃ προσήκει, ταῦτα ποιεῖν. ἐγὼ δ' οὖν καὶ αὐτός, ὦ Ἀντιφῶν, ὥσπερ ἄλλος τις ἢ ἵππῳ ἀγαθῷ ἢ κυνὶ ἢ ὄρνιθι ἥδεται, οὕτω καὶ ἔτι μᾶλλον ἥδομαι φίλοις ἀγαθοῖς· καὶ ἐάν τι σχῶ ἀγαθόν, διδάσκω καὶ ἄλλοις συνίστημι, παρ' ὧν ἂν ἡγῶμαι ὠφελήσεσθαί τι αὐτοὺς εἰς ἀρετήν. καὶ τοὺς θησαυροὺς τῶν πάλαι σοφῶν ἀνδρῶν, οὓς ἐκεῖνοι κατέλιπον ἐν βιβλίοις γράψαντες, ἀνελίττων κοινῇ σὺν τοῖς φίλοις διέρχομαι· καὶ ἄν τι ὁρῶμεν ἀγαθόν, ἐκλεγόμεθα· καὶ μέγα νομίζομεν κέρδος, ἐὰν ἀλλήλοις φίλοι γινώμεθα. ἐμοὶ μὲν δὴ ταῦτα ἀκούοντι ἐδόκει αὐτός τε μακάριος εἶναι καὶ τοὺς ἀκούοντας ἐπὶ καλοκαγαθίαν ἄγειν. καὶ πάλιν ποτὲ τοῦ Ἀντιφῶντος ἐρομένου αὐτόν, πῶς ἄλλους μὲν ἡγοῖτο πολιτικοὺς ποιεῖν, αὐτὸς δὲ οὐ πράττοι τὰ πολιτικά, εἴπερ ἐπίστατο; ποτέρως δ' ἄν, ἔφη, ὦ Ἀντιφῶν, μᾶλλον τὰ πολιτικὰ

πράττοιμι, εἰ μόνος αὐτὰ πράττοιμι, ἢ εἰ ἐπιμελοίμην τοῦ ὡς πλείστους ἱκανοὺς εἶναι πράττειν αὐτά;

101 Τοῦ αὐτοῦ ἐν τῷ δευτέρῳ (1, 18) ἀπομνημονευμάτων.

Ἔπειτα ὁ μὲν ἑκουσίως ταλαιπωρῶν ἐπ' ἀγαθῇ ἐλπίδι πονῶν εὐφραίνεται, οἷον οἱ τὰ θηρία θηρῶντες ἐλπίδι τοῦ λήψεσθαι ἡδέως μοχθοῦσι. καὶ τὰ μὲν τοιαῦτα ἆθλα τῶν πόνων μικροῦ τινος ἄξιά ἐστι· τοὺς δὲ πονοῦντας, ἵνα φίλους ἀγαθοὺς κτήσωνται ἢ ὅπως ἐχθροὺς χειρώσωνται ἢ ἵνα δυνατοὶ γενόμενοι καὶ τοῖς σώμασι καὶ ταῖς ψυχαῖς, καὶ τὸν ἑαυτῶν οἶκον καλῶς οἰκῶσι καὶ τοὺς φίλους εὖ ποιῶσι καὶ τὴν πατρίδα εὐεργετῶσι, πῶς οὐκ οἴεσθαι χρὴ τούτους καὶ πονεῖν ἡδέως εἰς τὰ τοιαῦτα καὶ ζῆν εὐφραινομένους, ἀγασαμένους μὲν ἑαυτούς, ἐπαινουμένους δὲ καὶ ζηλουμένους ὑπὸ τῶν ἄλλων; ἔτι δὲ αἱ μὲν ῥᾳδιουργίαι καὶ ἐκ τοῦ παραχρῆμα ἡδοναὶ οὔτε σώματι εὐεξίαν ἱκαναί εἰσιν ἐργάζεσθαι, ὥς φασιν οἱ γυμνασταί, οὔτε ψυχῇ ἐπιστήμην ἀξιόλογον οὐδεμίαν ἐμποιοῦσιν· αἱ δὲ διὰ καρτερίας ἐπιμέλειαι τῶν καλῶν τε κἀγαθῶν ἔργων ἐξικνεῖσθαι ποιοῦσιν, ὥς φασὶν οἱ ἀγαθοὶ ἄνδρες. λέγει δέ που καὶ Ἡσίοδος,

Τὴν μὲν γὰρ κακότητα καὶ ἰλαδόν ἐστιν ἑλέσθαι
ῥηϊδίως, λείη μὲν ὁδός, μάλα δ' ἐγγύθι ναίει.
τῆς δ' ἀρετῆς ἱδρῶτα θεοὶ προπάροιθεν ἔθηκαν
ἀθάνατοι· μακρὸς δὲ καὶ ὄρθιος οἶμος ἐς αὐτήν
καὶ τρηχὺς τὸ πρῶτον· ἐπὴν δ' εἰς ἄκρον ἵκηαι,
ῥηϊδίη δ' ἤπειτα πέλει χαλεπή περ ἐοῦσα.

μαρτυρεῖ δὲ καὶ Ἐπίχαρμος ἐν τῷδε·

Τῶν πόνων πωλοῦσιν ἡμῖν πάντα τἀγάθ' οἱ θεοί.

καὶ ἐν ἄλλῳ δὲ τόπῳ φησίν,

Ὦ πονηρὲ μὴ τὰ μαλακὰ μῶσο μὴ τὰ σκλήρ' ἔχῃς. καὶ Πρόδικος δ' ὁ σοφὸς ἐν τῷ συγγράμματι τῷ περὶ τοῦ Ἡρακλέους, ὅπερ δὴ καὶ πλείστοις ἐπιδείκνυται, ὡσαύτως περὶ τῆς ἀρετῆς ἀποφαίνεται, ὧδέ πως λέγων, ὅσα ἐγὼ μέμνημαι. φησὶ γὰρ Ἡρακλέα ἐπεὶ ἐκ παίδων εἰς ἥβην ὡρμᾶτο (ἐν ᾗ οἱ νέοι ἤδη αὐτοκράτορες γιγνόμενοι δηλοῦσιν εἴτε τὴν δι' ἀρετῆς ὁδὸν τρέψονται ἐπὶ τὸν βίον, εἴτε τὴν διὰ κακίας) ἐξελθόντα εἰς ἡσυχίαν καθῆσθαι, ἀποροῦντα ὁποτέραν τῶν ὁδῶν τράπηται· καὶ φανῆναι αὐτῷ δύο γυναῖκας προσιέναι μεγάλας· τὴν μὲν ἑτέραν εὐπρεπῆ ἰδεῖν καὶ ἐλευθερίαν φύσει, κεκοσμημένην τὸ μὲν σῶμα καθαριότητι, τὰ δὲ ὄμματα αἰδοῖ, τὸ δὲ σχῆμα σωφροσύνῃ· τὴν δὲ ἑτέραν τεθραμμένην εἰς πολυσαρκίαν τε καὶ ἁπαλότητα, κεκαλλωπισμένην τὸ μὲν χρῶμα, ὥστε λευκοτέραν καὶ ἐρυθροτέραν τοῦ ὄντος δοκεῖν φαίνεσθαι, τὸ δὲ σχῆμα, ὥστε δοκεῖν ὀρθοτέραν τῆς φύσεως εἶναι, τὰ δὲ ὄμματα ἔχειν ἀναπεπταμένα, ἐσθῆτα δὲ ἐξ ἧς μάλιστα ἡ ὥρα διαλάμποι· κατασκοπεῖσθαι δὲ θαμὰ ἑαυτήν, ἐπισκοπεῖν δὲ καὶ εἴ τις ἄλλος αὐτὴν θεᾶται, πολλάκις δὲ καὶ εἰς τὴν αὑτῆς σκιὰν ἀποβλέπειν. ὡς δὲ ἐγένοντο πλησιαίτερον τοῦ Ἡρακλέους, τὴν μὲν πρόσθεν ῥηθεῖσαν ἰέναι τὸν αὐτὸν τρόπον, τὴν δὲ ἑτέραν φθάσαι βουλομένην προσδραμεῖν τῷ Ἡρακλεῖ καὶ εἰπεῖν, ὁρῶ σε, ὦ Ἡράκλεις, ἀποροῦντα ποίαν ὁδὸν ἐπὶ τὸν βίον τραπῇς· ἐὰν ἐμὲ φίλην ποιησάμενος ἐπί θ' ἡδίστην καὶ ῥᾴστην ὁδὸν ἄξω σε· καὶ τῶν μὲν τερπνῶν οὐδενὸς ἄγευστος ἔσῃ, τῶν δὲ χαλεπῶν ἄπειρος διαβιώσῃ. πρῶτον μὲν γὰρ οὐ πολέμων οὐδὲ πραγμάτων φροντιεῖς, ἀλλὰ σκοπούμενος διέσῃ τι ἂν κεχαρισμένον ἢ σῖτον ἢ ποτὸν εὕροις, ἢ τι ἂν ἰδὼν ἢ ἀκούσας τερφθήσῃ, τινῶν

ὀσφραινόμενος ἢ ἁπτόμενος, τί δὲ παιδικοῖς ὁμιλῶν μάλιστα εὐφρανθείης, καὶ πῶς ἂν μαλακώτατα καθεύδοις, καὶ πῶς ἂν ἀπονώτατα τούτων πάντων τυγχάνοις. ἐὰν δέ ποτε γένηταί τις ὑποψία σπανίως ἀφ' ὧν ἔσται ταῦτα, οὐ φόβος μή σε ἀγάγω ἐπὶ τὸν πονοῦντα καὶ ταλαιπωροῦντα τῷ σώματι καὶ τῇ ψυχῇ ταῦτα πορίζεσθαι· ἀλλ' οἷς ἂν οἱ ἄλλοι ἐργάζωνται, τούτοις σὺ χρήσῃ, οὐδενὸς ἀπεχόμενος ὅθεν ἂν δυνατὸν ᾖ τι κερδᾶναι· πανταχόθεν γὰρ ὠφελεῖσθαι τοῖς ἐμοὶ συνοῦσι ἐξουσίαν ἐγὼ παρέχω. καὶ ὁ Ἡρακλῆς ἀκούσας ταῦτα, ἔφη, Ὦ γύναι, ὄνομα δέ σοι τί ἐστι; ἡ δέ, Οἱ μὲν ἐμοὶ φίλοι καλοῦσί με Εὐδαιμονίαν, οἱ δὲ μισοῦντές με ὑποκοριζόμενοι ὀνομάζουσι Κακίαν. καὶ ἐν τούτῳ ἡ ἑτέρα γυνὴ προσελθοῦσα εἶπεν· Καὶ ἐγὼ ἥκω πρός σε, ὦ Ἡράκλεις, εἰδυῖα τοὺς γεννήσαντάς σε καὶ τὴν φύσιν τὴν σὴν ἐν τῇ παιδείᾳ καταμαθοῦσα· ἐξ ὧν ἐλπίζω, εἰ τὴν πρὸς ἐμὲ ὁδὸν τράποιο, σφόδρα ἄν σε τῶν καλῶν καὶ σεμνῶν ἀγαθὸν ἐργάτην γενέσθαι, καὶ ἐμὲ ἔτι πολὺ ἐντιμοτέραν καὶ ἐπ' ἀγαθοῖς διαπρεπεστέραν φανῆναι. οὐκ ἀπατήσω δέ σε προοιμίοις ἡδονῆς, ἀλλ' ᾗπερ οἱ θεοὶ διέθεσαν, τὰ ὄντα διηγήσομαι μετὰ ἀληθείας. τῶν γὰρ ὄντων ἀγαθῶν καὶ καλῶν οὐδὲν ἄνευ πόνου καὶ ἐπιμελείας οἱ θεοὶ διδόασιν ἀνθρώποις· ἀλλ' εἴτε τοὺς θεοὺς ἵλεω εἶναί σοι βούλει, θεραπευτέον τοὺς θεούς· εἴτε ὑπὸ φίλων ἐθέλεις ἀγαπᾶσθαι, τοὺς φίλους εὐεργετητέον· εἴτε ὑπό τινος πόλεως ἐπιθυμεῖς τιμᾶσθαι, τὴν πόλιν ὠφελητέον· εἴτε ὑπὸ τῆς Ἑλλάδος πάσης ἄξιος ἐπ' ἀρετῇ θαυμάζεσθαι, τὴν Ἑλλάδα πειρατέον εὖ ποιεῖν· εἴτε γῆν βούλει σοι καρποὺς ἀφθόνους φέρειν, τὴν γῆν θεραπευτέον· εἴτε ἀπὸ βοσκημάτων οἴει δεῖν πλουτίζεσθαι, τῶν βοσκημάτων ἐπιμελητέον·

εἴτε διὰ πολέμου ὁρμᾷς αὔξεσθαι καὶ βούλει δύνασθαι τούς τε φίλους ἐλευθεροῦν καὶ τοὺς ἐχθροὺς χειροῦσθαι, τὰς πολεμικὰς τέχνας τάς τε παρὰ τῶν ἐπισταμένων μαθητέον καὶ ὅπως δεῖ αὐταῖς χρῆσθαι ἀσκητέον· εἰ δὲ τῷ σώματι βούλει δυνατὸς εἶναι, τῇ γνώμῃ ὑπηρετεῖν ἐθιστέον τὸ σῶμα καὶ γυμναστέον σὺν πόνοις καὶ ἱδρῶτι. καὶ ἡ Κακία ὑπολαβοῦσα εἶπεν, ὥς φησι Πρόδικος, Ἐννοεῖς, ὦ Ἡράκλεις, ὡς χαλεπὴν καὶ μακρὴν ὁδὸν ἐπὶ τὰς εὐφροσύνας ἡ γυνή σοι διηγεῖται· ἐγὼ δὲ ῥᾳδίαν καὶ βραχεῖαν ὁδὸν ἐπὶ τὴν εὐδαιμονίαν ἄξω σε. καὶ ἡ Ἀρετὴ εἶπεν, Ὦ τλῆμον, τί δὲ σὺ ἀγαθὸν ἔχεις, ἢ τί ἡδὺ; οἶσθα μηδὲν τούτων ἕνεκα πράττειν ἐθέλουσα, ἥ τις οὐδὲ τὴν τῶν ἡδέων ἐπιθυμίαν ἀναμένεις, ἀλλὰ πρὶν ἐπιθυμῆσαι πάντων ἐμπίπλασαι· πρὶν μὲν πεινῆν ἐσθίουσα, πρὶν δὲ διψῆν πίνουσα· ἵνα μὲν ἡδέως φάγῃς ὀψοποιοὺς μηχανωμένη, ἵνα δὲ ἡδέως πίῃς οἴνους τε πολυτελεῖς παρασκευάζει, καὶ τοῦ θέρους χιόνα περιθέουσα ζητεῖς· ἵνα δὲ καθυπνώσῃς ἡδέως, οὐ μόνον τὰς στρωμνὰς μαλακάς, ἀλλὰ καὶ τὰς κλίνας καὶ τὰ ὑπόβαθρα ταῖς κλίναις παρασκευάζεις· οὐ γὰρ διὰ τὸ πονεῖν, ἀλλὰ διὰ τὸ μηδὲν ἔχειν ὅ τι ποιήσεις, ὕπνου ἐπιθυμεῖς· τὰ δὲ ἀφροδίσια πρὸ τοῦ δεῖσθαι ἀναγκάζεις πάντα μηχανωμένη, καὶ γυναιξὶ τοῖς ἀνδράσι χρωμένη· οὕτως γὰρ παιδεύεις τοὺς ἑαυτῆς φίλους, τῆς μὲν νυκτὸς ὑβρίζουσα, τῆς δὲ ἡμέρας τὸ χρησιμώτατον κατακοιμίζουσα· ἀθάνατος δὲ οὖσα ἐκ θεῶν μὲν ἀπέρριψαι, ὑπὸ δὲ ἀνθρώπων ἀγαθῶν ἀτιμάζῃ· τοῦ δὲ πάντων ἡδίστου ἀκούσματος, ἐπαίνου σαυτῆς, ἀνήκοος εἶ, καὶ τοῦ πάντων ἡδίστου θεάματος· οὐδέποτε γὰρ σεαυτῆς ἔργον καλὸν τεθέασαι. τίς δ' ἄν σοι λεγούσῃ πιστεύσειε; τίς δ' ἂν δεομένῃ τινὸς ἐπαρ-

κέσειε; ἢ τίς ἂν εὖ φρονῶν τοῦ σοῦ θιάσου τολμήσειεν εἶναι; οἱ νέοι μὲν ὄντες τοῖς σώμασιν ἀδύνατοί εἰσι, πρεσβύτεροι δὲ γενόμενοι ταῖς ψυχαῖς ἀνόητοι· ἀπόνως μὲν λιπαροὶ διὰ νεότητος τρεφόμενοι, ἐπιπόνως δὲ αὐχμηροὶ διὰ γήρως περῶντες· τοῖς μὲν πεπραγμένοις αἰσχυνόμενοι, τοῖς δὲ πραττομένοις παροινούμενοι, τὰ μὲν ἡδέα ἐν τῇ νεότητι διαδραμόντες, τὰ δὲ χαλεπὰ εἰς τὸ γῆρας ἀποθέμενοι. ἐγὼ δὲ σύνειμι μὲν θεοῖς, σύνειμι δὲ ἀνθρώποις τοῖς ἀγαθοῖς· ἔργον δὲ καλὸν οὔτε θεῖον οὔτε ἀνθρώπινον χωρὶς ἐμοῦ γίγνεται· τιμῶμαι δὲ μάλιστα πάντων καὶ παρὰ θεοῖς καὶ παρ᾽ ἀνθρώποις οἷς προσήκει· ἀγαπητὴ μὲν γὰρ συνεργὸς τεχνίταις, πιστὴ δὲ φύλαξ οἴκων δεσπόταις, εὐμενὴς δὲ παραστάτης οἰκέταις, ἀγαθὴ δὲ συλλήπτειρα τῶν ἐν εἰρήνῃ πόνων, βεβαία δὲ τῶν ἐν πολέμῳ σύμμαχος ἔργων. ἔστι δὲ τοῖς ἐμοῖς φίλοις ἡδεῖα μὲν καὶ ἀπράγμων σίτων καὶ ποτῶν ἀπόλαυσις, ἀνέχονται γὰρ ἕως ἂν ἐπιθυμήσωσιν αὐτῶν, ὕπνος δὲ αὐτοῖς πάρεστιν ἡδίων ἢ τοῖς ἀμόχθοις, καὶ οὔτε ἀπολιπόντες αὐτὸν ἄχθονται οὔτε διὰ τοῦτον μεθιᾶσι τὰ δέοντα πράττειν. καὶ οἱ μὲν νέοι τοῖς τῶν πρεσβυτέρων ἐπαίνοις χαίρουσιν, οἱ δὲ γεραίτεροι ταῖς τῶν νέων τιμαῖς ἀγάλλονται· καὶ ἡδέως μὲν τῶν παλαιῶν πράξεων μέμνηνται, εὖ δὲ τὰς παρούσας ἥδονται πράττοντες, δι᾽ ἐμὲ φίλοι μὲν θεοῖς ὄντες, ἀγαπητοὶ δὲ φίλοις, τίμιοι δὲ πατρίσιν· ὅταν δὲ ἔλθῃ τὸ πεπρωμένον τέλος, οὐ μετὰ λήθης ἄτιμοι κεῖνται, ἀλλὰ μετὰ μνήμης τὸν ἀεὶ χρόνον ὑμνούμενοι θάλλουσι. τοιαῦτά σοι, ὦ παῖ πατέρων ἀγαθῶν Ἡράκλεις, ἔξεστι διαπονησαμένῳ τὴν μακαρίαν εὐδαιμονίαν κτήσασθαι. Οὕτω πως διοικεῖ Πρόδικος τὴν ὑπ᾽ ἀρετῆς Ἡρακλέους παίδευσιν.

102 Ξενοφῶντος ἀπομνημονευμάτων γ′ (9, 14).

Ἐρομένου δέ τινος αὐτὸν τί δοκοίη αὐτῷ κράτιστον ἀνδρὶ ἐπιτήδευμα εἶναι, ἀπεκρίνατο εὐπραξίαν. ἐρομένου δὲ πάλιν εἰ καὶ τὴν εὐτυχίαν ἐπιτήδευμα νομίζοι εἶναι, Πᾶν μὲν οὖν τοὐναντίον ἔγωγε, ἔφη, τύχην καὶ πρᾶξιν ἡγοῦμαι· τὸ μὲν γὰρ μὴ ζητοῦντα ἐπιτυχεῖν τινὶ τῶν δεόντων, εὐτυχίαν οἴομαι εἶναι· τὸ δὲ μαθόντα τὶ καὶ μελετήσαντα εὖ ποιεῖν, εὐπραξίαν νομίζω· καὶ οἱ τοῦτο ἐπιτηδεύοντες δοκοῦσί μοι εὖ πράττειν. καὶ ἀρίστους δὲ καὶ θεοφιλεστάτους ἔφη εἶναι ἐν μὲν γεωργίᾳ τοὺς τὰ γεωργικὰ εὖ πράττοντας, ἐν δ' ἰατρείᾳ τοὺς τὰ ἰατρικά, ἐν δὲ πολιτείᾳ τοὺς τὰ πολιτικά· τὸν δὲ μηδὲν εὖ πράττοντα, οὔτε χρήσιμον οὐδὲν ἔφη εἶναι οὔτε θεοφιλῆ.

103 Τοῦ αὐτοῦ ἐν δ′ (1, 1) ἀπομνημονευμάτων.

Οὕτω δὲ Σωκράτης ἦν ἐν παντὶ πράγματι καὶ πάντα τρόπον ὠφέλιμος, ὥστε τῷ σκοπουμένῳ τοῦτο καὶ εἰ μετρίως αἰσθανομένῳ φανερὸν εἶναι διότι οὐδὲν ὠφελιμώτερον ἦν τοῦ Σωκράτει συνεῖναι καὶ μετ' ἐκείνου διατρίβειν ὁπουοῦν καὶ ἐν ὁτῳοῦν πράγματι· ἐπεὶ καὶ τὸ ἐκείνου μεμνῆσθαι μὴ παρόντος οὐ μικρὰ ὠφέλει τοὺς εἰωθότας τε αὐτῷ συνεῖναι καὶ ἀποδεχομένους ἐκεῖνον. καὶ γὰρ παίζων οὐδὲν ἧττον ἢ σπουδάζων ἐλυσιτέλει τοῖς συνδιατρίβουσι. πολλάκις γὰρ ἔφη μὲν ἄν τινος ἐρᾶν, φανερὸς δ' ἦν οὐ τῶν τὰ σώματα πρὸς ὥραν, ἀλλὰ τῶν τὰς ψυχὰς πρὸς ἀρετὴν εὖ πεφυκότων ἐφιέμενος. ἐτεκμαίρετο δὲ τὰς ἀγαθὰς φύσεις ἐκ τοῦ ταχύτερον μανθάνειν οἷς προσέχοιεν καὶ μνημονεύειν ἃ ἂν μάθοιεν καὶ ἐπι-

θυμεῖν τῶν μαθημάτων πάντων δι' ὧν ἔστιν οἰκίαν τε καλῶς οἰκεῖν καὶ πόλιν καὶ τὸ ὅλως ἀνθρώποις τε καὶ τοῖς ἀνθρωπίνοις πράγμασιν εὖ χρῆσθαι. τοὺς γὰρ τοιούτους ἡγεῖτο παιδευθέντας οὐκ ἂν μόνον αὐτούς τε εὐδαίμονας εἶναι καὶ τοὺς οἴκους καλῶς οἰκεῖν, ἀλλὰ καὶ ἄλλους ἀνθρώπους καὶ πόλεις δύνασθαι εὐδαίμονας ποιεῖν. οὐ τὸν αὐτὸν δὲ τρόπον ἐπὶ πάντας ᾔει, ἀλλὰ τοὺς μὲν οἰομένους φύσει ἀγαθοὺς εἶναι μαθήσεως δὲ καταφρονοῦντας ἐδίδασκεν ὅτι αἱ ἄρισται δοκοῦσαι φύσεις μάλιστα παιδείας δέονται, ἐπιδεικνύων τῶν τε ἵππων τοὺς εὐφυεστάτους θυμοειδεῖς καὶ σφοδροὺς ὄντας, εἰ μὲν ἐκ νέων δαμασθεῖεν, εὐχρηστοτάτους καὶ ἀρίστους γιγνομένους, εἰ δὲ ἀγύμναστοι γένοιντο, δυσκαθεκτοτάτους καὶ φαυλοτάτους· καὶ τῶν κυνῶν τῶν εὐφυεστάτων φιλοπόνων τε οὐσῶν καὶ ἐπιθετικῶν τοῖς θηρίοις τὰς μὲν καλῶς ἀχθείσας ἀρίστας γίνεσθαι πρὸς τὰς θήρας καὶ χρησιμωτάτας, ἀναγώγους δὲ γινομένους ματαίους τε καὶ μανιώδεις καὶ δυσπειθεστάτας. ὁμοίως δὲ καὶ τῶν ἀνθρώπων τοὺς εὐφυεστάτους ἐρρωμενεστάτους τε ταῖς ψυχαῖς ὄντας καὶ ἐξεργαστικωτάτους ὧν ἂν ἐγχειρῶσι, παιδευθέντας μὲν καὶ μαθόντας ἃ δεῖ πράττειν, ἀρίστους τε καὶ ὠφελιμωτάτους γίνεσθαι· πλεῖστα γὰρ καὶ μέγιστα ἀγαθὰ ἐξεργάζεσθαι· ἀπαιδεύτους δὲ καὶ ἀμαθεῖς γενομένους κακίστους τε καὶ βλαβερωτάτους γίνεσθαι· κρίνειν γὰρ οὐκ ἐπισταμένους ἃ δεῖ πράττειν πολλάκις πονηροῖς ἐπιχειρεῖν πράγμασιν, μεγαλείους δὲ καὶ σφοδροὺς ὄντας δυσκαθέκτους τε καὶ δυσαποτρίπτους· διὸ πλεῖστά τε καὶ μέγιστα κακὰ ἐργάζεσθαι. τοὺς δὲ ἐπὶ πλούτῳ μέγα φρονοῦντας καὶ νομίζοντας οὐδὲν προσδεῖσθαι παιδείας, ἐξαρκέσειν δέ σφισι τὸν πλοῦτον οἰομένους

πρὸς τὸ διαπράττεσθαι ὅ τι ἂν βούλωνται, καὶ τιμᾶσθαι ὑπὸ τῶν ἀνθρώπων, ἐφρένου λέγων, ὅτι μωρὸς μὲν εἴη εἴ τις οἴεται καὶ μὴ μαθὼν τά τε ὠφέλιμα καὶ τὰ βλαβερὰ τῶν πραγμάτων διαγνώσεσθαι, μωρὸς δὲ εἴ τις μὴ διαγιγνώσκων μὲν ταῦτα, διὰ δὲ τὸν πλοῦτον ὅ τι ἂν βούληται ποριζόμενος οἴεται δυνήσεσθαι τὰ συμφέροντα πράττειν, ἠλίθιος δὲ εἴ τις μὴ δυνάμενος τὰ συμφέροντα πράττειν εὖ τε πράττειν οἴεται καὶ τὰ πρὸς τὸν βίον αὐτῷ ἱκανῶς ἢ καλῶς παρεσκευάσθαι, ἠλίθιος δὲ καὶ εἴ τις οἴεται διὰ τὸν πλοῦτον μηδὲν ἐπιστάμενος δόξειν τι ἀγαθὸς εἶναι, ἢ μηδὲν ἀγαθὸς εἶναι δοκῶν εὐδοκίμησεν.

ΠΕΡΙ ΚΑΚΙΑΣ. Β.

1 *Δημητρίου.*

Σφόδρ' εὐάλωτόν ἐστιν ἡ πονηρία·
εἰς γὰρ τὸ κέρδος μόνον ἀποβλέπουσ' ἀεί,
ἀφρόνως ἅπαντα καὶ προπετῶς συμπείθεται.

2 *Ἀξιονίκου.*

Ὅταν δανείζῃ τὶς πονηρῷ χρήματα
ἀνὴρ δικαίως τὸν τόκον λύπας ἔχει.

3 Ὅταν εὐπορῶν τις αἰσχρὰ πράττῃ πράγματα,
τί τοῦτον ἀπορήσαντα πράξειν προσδοκᾷς;

4 *Μενάνδρου Παλλακή.*

Πολλοὺς λογισμοὺς ἡ πονηρία κυκλοῖ.

5 *Μενάνδρου.*

Μισῶ πονηρόν, χρηστὸν ὅταν εἴπῃ λόγον.

6 *Μενάνδρου.*
Ἀσυλλόγιστόν ἐστιν ἡ πονηρία.

7 (Aeschyli fr. 163).
Θεὸς μὲν αἰτίαν φύει βροτοῖς,
ὅταν κακῶσαι δῶμα παμπήδην θέλῃ.

8 (Eurip. fr. Ix. 1. ?)
Τοῦ μὲν δικαίου τὴν δόκησιν ἄρνυσο·
τὰ δ' ἔργα τοῦ πᾶν δρῶντος ἔνθα κερδανεῖ.

9 *Σκληρίου.*
Πολλοῖσι θνητῶν ἡ μὲν ὄψις εὐγενής,
ὁ νοῦς δ' ἐν αὐτῇ δυσγενὴς εὑρίσκεται.

10 *Φιλιππίδου.*
Ὁ τραχύτατος δὲ συκοφάντης μνᾶς δύο
λαβὼν ἄπεισιν ἀρνίου μαλακώτερος.

11 *Ἡσιόδου Ἔργων* (190).
Οὐδέ τις εὐόρκου χάρις ἔσσεται οὐδὲ δικαίου,
οὐδ' ἀγαθοῦ· μᾶλλον δὲ κακῶν ῥεκτῆρα καὶ ὕβριν
ἀνέρα τιμήσουσι· δίκη δ' ἐν χερσὶ καὶ αἰδὼς
οὐκ ἔσται, βλάψει δ' ὁ κακὸς τὸν ἀρείονα φῶτα,
μύθοισι σκολιοῖς ἐνέπων, ἐπὶ δ' ὅρκον ὀμεῖται.
ζῆλος δ' ἀνθρώποισιν ὀιζυροῖσιν ἅπασιν
δυσκέλαδος, κακόχαρτος, ὁμαρτήσει στυγερώπης.

12 *Ζηνοδότου.*
Κηρύσσεται μὲν ἡρετή· κακὸς δ' ἀνὴρ
σιγηλὸν ἔσχε ζῶν τε καὶ θανὼν βίον.

13 *Ἡσιόδου Ἔργων* (270).
Νῦν δὴ ἐγὼ μήτ' αὐτὸς ἐν ἀνθρώποισι δίκαιος
εἴην μήτ' ἐμὸς υἱός· ἐπεὶ κακὸν ἄνδρα δίκαιον
ἔμμεναι, εἰ μείζω γε δίκην ἀδικώτερος ἕξει.

14 *Ἐν ταυτῷ* (346).

Πῆμα κακὸς γείτων ὅσσον τ' ἀγαθὸς μέγ' ὄνειαρ.
ἔμμορέ τοι τιμῆς ὅς κ' ἔμμορε γείτονος ἐσθλοῦ.

15 *Εὐριπίδου ἐκ Βελλεροφόντου.*

Οὐδέ ποτ' εὐτυχίαν κακοῦ ἀνδρὸς ὑπέρφρονά τ' ὄλβον
βέβαιον εἰκάσαι χρεών,
οὐδ' ἀδίκων γενεάν· ὁ γὰρ οὐδενὸς ἐκφὺς
χρόνος δικαίους ἐπάγων κανόνας
δείκνυσιν ἀνθρώπων κακότητας ἐμοί.

16 *Εὐριπίδου Μηδείας* (516).

Ὦ Ζεῦ, τί δὴ χρυσοῦ μέν, ὃς κίβδηλος ᾖ,
τεκμήρι' ἀνθρώποισιν ὤπασας σαφῆ,
ἀνδρῶν δ' ὅτῳ χρὴ τὸν κακὸν διειδέναι,
οὐδεὶς χαρακτὴρ ἐμπέφυκε σώματι.

17 *Τοῦ αὐτοῦ *Τενῦ.*

Φεῦ· οὐδὲν δίκαιόν ἐστιν ἐν τῷ νῦν γένει.

18 *Σοφοκλέους.*

Σκαιοῖσι πολλοῖς εἷς σοφὸς διόλλυται.

19 *Δίωνος ἐκ τοῦ Εὐβοϊκοῦ* (Or. 7, 137).

Ὡς οὔποτε φιλεῖ τὰ μοχθηρὰ μένειν ἐπὶ τοῖς αὐτοῖς, ἀλλ' ἀεὶ κινεῖται καὶ πρόεισιν ἐπὶ τὸ ἀσελγέστερον, μηδενὸς ἀναγκαίου μέτρου τυγχάνοντα.

20 *Φιλίππου.*

Φίλιππος ἐρωτώμενος ὑπὸ Βυζαντίων τί ἀδικηθεὶς πολιορκεῖ αὐτούς, εὐήθεις ἔφησεν εἶναι καὶ ὁμοίους τῷ εἴ τις ἔχων καλὴν γυναῖκα τοὺς ἐπικωμάζοντας ἐρωτῴη διὰ τί ἐπικωμάζουσιν.

21 *Θαλῆς ἐρωτηθεὶς τί βλαβερώτατον; ἔφη "κακία· καὶ γὰρ τὰ χρηστὰ βλάπτει παραγενομένη."*

22 *Δημοσθένους.*

Δημοσθένης ἔλεγεν ὡς πολλάκις ἐπιὸν αὐτῷ εὔξασθαι τοὺς πονηροὺς ἀπολέσθαι, καὶ φοβοῖτο μὴ ἔρημον ἄρδην ἐκ τῆς εὐχῆς ποιήσῃ τὴν πόλιν.

23 *Πυθαγόρου.*

Νόμου θείου τὸ φαῦλον ἀνήκοον, διὸ καὶ παρανομεῖ.

24 *Λυσίου.*

Ὅστις τοῦ μὲν μὴ ἀδικεῖν οὐ προνοεῖται τοῦ δὲ μὴ δοῦναι δίκην ἐπιμελεῖται, κακουργεῖ.

25 *Δημοσθένους Φιλιππικῶν* (115, 9 R.).

Ὁ γὰρ οἷς ἂν ἐγὼ ληφθείην ταῦτα πράττων καὶ κατασκευαζόμενος, οὗτος ἐμοὶ πολεμεῖ, κἂν μή πω βάλλῃ μηδὲ τοξεύῃ.

26 *Φιλήμονος Ἀγύρτου.*

Ὦ πῶς πονηρόν ἐστιν ἀνθρώπου φύσις
τὸ σύνολον· οὐ γὰρ ἄν ποτ' ἐδεήθη νόμου.

26[a] *Οἴει τι τῶν ἄλλων διαφέρειν θηρίων*
[ἄνθρωπον]; οὐδὲ μικρὸν ἀλλ' ἢ σχήματι·
πλάγι' ἐστὶ τἄλλα, τοῦτο δ' ὀρθὸν θηρίον.

27 *Φιλήμονος.*

Τί ποτε Προμηθεύς, ὃν λέγουσ' ἡμᾶς πλάσαι
καὶ τἄλλα πάντα ζῷα, τοῖς μὲν θηρίοις
ἔδωχ' ἑκάστῳ κατὰ γένος μίαν φύσιν;
ἅπαντες οἱ λέοντες εἰσὶν ἄλκιμοι·
δειλοὶ πάλιν ἑξῆς πάντες εἰσὶν οἱ λαγῴ.
οὐκ ἔστ' ἀλώπηξ ἡ μὲν εἴρων τῇ φύσει

ἡ δ' αὐθέκαστος· ἀλλ' ἐὰν τρισμυρίας
ἀλώπεκάς τις συναγάγῃ, μίαν φύσιν
ἁπαξαπασῶν ὄψεται τρόπον θ' ἕνα.
ἡμῶν δ' ὅσα καὶ τὰ σώματ' ἐστὶ τὸν ἀριθμὸν
καθενός, τοσούτους ἔστι καὶ τρόπους ἰδεῖν.

28 *Σοφοκλέους Αἴαντος* (1159).

Ἄπειμι· καὶ γὰρ αἰσχρὸν εἰ πύθοιτό τις
λόγοις κολάζειν, ᾧ βιάζεσθαι παρῇ.

29 *Ὁ αὐτὸς ἐν Φαίδρᾳ* (El. 1050).

Ἄπειμι τοίνυν· οὔτε γὰρ σὺ τἄμ' ἔπη
τολμᾷς ἐπαινεῖν, οὔτ' ἐγὼ τοὺς σοὺς τρόπους.

30 *Ἐπικτήτου.*

Αἰσχρὸν τοῖς τῶν μελιττῶν δωρήμασι γλυκάζοντα τὴν κατάποσιν τὸ τῶν θεῶν δῶρον τὸν λόγον πικράζειν τῇ κακίᾳ.

31 *Λυκούργου.*

Ὅσοι τοῖς ἀπὸ τῆς φύσεως ἀγαθοῖς ἐπὶ τὰ χείρω χρῶνται, τούτοις πολέμια τὰ εὐτυχήματά ἐστιν. ὡς εἴ τις ἀνδρεῖος ὢν λῄζεσθαι μᾶλλον ἢ στρατεύεσθαι προαιρεῖται, καὶ ἰσχυρὸς ὢν λωποδυτεῖν μᾶλλον ἢ συμβουλεύειν, ἢ καλὸς ὢν μοιχεύειν μᾶλλον ἢ γαμεῖν, οὗτος τῶν ἀπὸ τῆς φύσεως ἀγαθῶν ὑπαρξάντων προδότης ἐστίν.

32 *Μουσωνίου.*

Τί προβαλλόμεθα τοὺς τυράννους μακρῷ χείρονες αὐτῶν καθεστῶτες; τὰς γὰρ ὁμοίας αὐτοῖς ἔχομεν ὁρμὰς ἐν ταῖς οὐχ ὁμοίαις τύχαις.

33 *Θεοδώρου.*

Θεόδωρος ὁ Κυρηναϊκὸς Λυσιμάχου τοῦ βασιλέως

ἀπειλήσαντος αὐτὸν ἀναιρήσειν "ἐλελήθεις με" εἶπεν "οὐ βασιλέως ἀλλὰ κωνείου δύναμιν ἔχων."

34 *Θεοκρίτου.*

Θεόκριτος ἐρωτηθεὶς ποῖα τῶν θηρίων ἐστὶ τὰ χαλεπώτατα εἶπεν "ἐν μὲν τοῖς ὄρεσιν ἄρκτοι καὶ λέοντες, ἐν δὲ ταῖς πόλεσιν τελῶναι καὶ συκοφάνται."

35 *Ἐκ τῆς ἐπιστολῆς περὶ φιλίας.*

Κακίας αὐτῶν πλάσσονταί τινες ῥημάτων εὐπρεπείᾳ, τὸ μὲν φιλοσκώμματον ἁπλοῦν, τὸ δὲ φιλάργυρον προμηθὲς ἀποκαλούμενοι.

36 *Ἐν ταυτῷ.*

Πολύβουλον εἶναι καὶ πολύτροπον ἔνθα δεῖ καὶ τέχνης κατ' ἀλλοφύλων πολεμίων, χρήσιμον καὶ ἀναγκαῖον· ἐπίβουλον δ' ἦθος καὶ κακομηχανώτατον διὰ παντὸς ἔχειν καὶ κατὰ πάντων, οὐ τῇ τῶν ἀγχινόων, ὥς τινες οἴονται, τῇ δὲ τοῦ πονηροτάτου μερίδι προστίθημι.

37 *Δημοκρίτου.*

Ἔστι ῥηίδιον μὲν ἐπαινέειν ἃ μὴ χρὴ καὶ ψέγειν, ἑκάτερον δὲ πονηροῦ τινος ἤθεος.

38 *Διονυσίου Ἁλικαρνασέως.*

Ἀπὸ γὰρ τῆς αὐτῆς διανοίας οἱ ἄνθρωποι ἀπογιγνώσκουσί τε ἑαυτῶν καὶ ἑτέροις ἀπιστοῦσιν.

39 *Δίωνος ἐν τῷ περὶ δουλείας.*

Φησὶν ὁ Δίων· οἱ ἀγαθοὶ οἰκέται ἐλεύθεροι, οἱ δὲ πονηροὶ ἐλεύθεροι δοῦλοι πολλῶν ἐπιθυμιῶν.

40 *Ἰαμβλίχου ἐκ τῶν προτρεπτικῶν εἰς φιλοσοφίαν λόγων* (p. 18).

Ὁμοίως ἐπισφαλὲς μαινομένῳ δοῦναι μάχαιραν καὶ πονηρῷ δύναμιν.

41 Σωκρατικοῦ.

Σωκρατικὸς ὁ κυνικὸς ἀκούσας ποτὲ πονηροῦ τὸν τρόπον κακῶς λέγοντος Πλάτωνα "παῦσαι" ἔφη "οὔτε γὰρ κακῶς λέγων ἐκεῖνον πιστευθήσῃ οὔτε ἐκεῖνός σε ἐπαινῶν."

42 Σιμωνίδου.

Σιμωνίδης ὁ μελοποιὸς εἰπόντος τινὸς ὅτι πολλοὶ αὐτὸν παρ' αὐτῷ κακῶς λέγουσιν "οὐ παύσῃ" ἔφη "ποτὲ σὺ τοῖς ὠσί με βλασφημῶν;"

43 Ἀνάχαρσις.

Ἀνάχαρσις ὁ Σκύθης ἐρωτηθεὶς ὑπό τινος τί ἐστι πολέμιον ἀνθρώποις; "αὐτοὶ" ἔφη "ἑαυτοῖς."

44 Πλάτωνος πολιτείας γ' (405 a).

Τῆς δὲ κακῆς τε καὶ αἰσχρᾶς παιδείας ἐν πόλει ἆρα μή τι μεῖζον ἕξεις λαβεῖν τεκμήριον ἢ τὸ δεῖσθαι ἰατρῶν καὶ δικαστῶν ἄκρων μὴ μόνον τοὺς φαύλους τε καὶ χειροτέχνας, ἀλλὰ καὶ τοὺς ἐν ἐλευθέρῳ σχήματι προσποιουμένους τετράφθαι; ἢ οὐκ αἰσχρὸν δοκεῖ καὶ ἀπαιδευσίας μέγα τεκμήριον τὸ ἐπακτῷ παρ' ἄλλων ὡς δεσποτῶν τε καὶ κριτῶν τῷ δικαίῳ ἀναγκάζεσθαι χρῆσθαι καὶ ἀπορίᾳ οἰκείων; Πάντων μὲν οὖν, ἔφη, αἴσχιστον. Ἦ δοκεῖ σοι, ἦν δ' ἐγώ, τούτου αἴσχιον εἶναι τοῦτο; ὅταν δή τις μὴ μόνον τὸ πολὺ τοῦ βίου ἐν δικαστηρίοις φεύγων τε καὶ διώκων κατατρίβηται, ἀλλὰ καὶ ὑπὸ ἀπειροκαλίας ἐπ' αὐτῷ δὴ τούτῳ πεισθῇ καλλωπίζεσθαι ὡς δεινὸς ὢν περὶ τὸ ἀδικεῖν καὶ ἱκανὸς πάσας μὲν στροφὰς στρέφεσθαι, πάσας δὲ διεξόδους διεξελθὼν ἀποστραφῆναι

λογιζόμενος, ὥστε μὴ παρασχεῖν δίκας, καὶ ταῦτα σμικρῶν τε καὶ οὐδενὸς ἀξίων ἕνεκα, ἀγνοῶν ὅσῳ κάλλιον καὶ ἄμεινον τὸ παρασκευάζειν τὸν βίον αὑτῷ μηδὲν δεῖσθαι νυστάζοντος δικαστοῦ. Οὐκ ἀλλὰ τοῦτ', ἔφη, ἐκείνου ἔτι αἴσχιον.

45 Ξενοφῶντος ἐκ τῆς Κύρου ἀναβάσεως (II, 6, 21).

Μένων δ' ὁ Θετταλὸς δῆλος ἦν ἐπιθυμῶν μὲν πλούτου ἰσχυρῶς, ἐπιθυμῶν δὲ ἄρχειν ὅπως πλείω λαμβάνοι· ἐπιθυμῶν δὲ τιμᾶσθαι ἵνα πλείω κερδάνοι· φίλος τ' ἐβούλετο εἶναι τοῖς μέγιστον δυναμένοις ἵνα ἀδικῶν μὴ διδοίη δίκην, ἐπὶ δὲ τὸ κατεργάζεσθαι ὧν ἐπιθυμοίη συντομωτάτην ὁδὸν ᾤετο εἶναι διὰ τοῦ ἐπιορκεῖν τε καὶ ψεύδεσθαι καὶ ἐξαπατᾶν· τὸ δὲ ἁπλοῦν τε καὶ ἀληθὲς ἐνόμιζε τὸ αὐτὸ τῷ ἠλιθίῳ εἶναι. στέργων δὲ φανερὸς μὲν ἦν οὐδένα, ὅτῳ δὲ φαίη φίλος εἶναι, τούτῳ ἔνδηλος ἦν ἐπιβουλεύων. καὶ πολεμίου μὲν οὐδενὸς κατεγέλα, τῶν δὲ συνόντων πάντων ὡς καταγελῶν αἰεὶ διελέγετο. καὶ τοῖς μὲν τῶν πολεμίων κτήμασιν οὐκ ἐπεβούλευε· χαλεπὸν γὰρ ᾤετο εἶναι τὰ τῶν φυλαττομένων λαμβάνειν· τὰ δὲ τῶν φίλων μόνος ᾤετο εἰδέναι ὅτι ῥᾷστον ἀφύλακτα λαμβάνειν. καὶ ὅσους μὲν αἰσθάνοιτο ἐπιόρκους καὶ ἀδίκους ὡς εὖ ὡπλισμένους ἐφοβεῖτο, τοῖς δὲ ὁσίοις καὶ ἀλήθειαν ἀσκοῦσιν ὡς ἀνάνδροις ἐπειρᾶτο χρῆσθαι.

46 Πλάτωνος νόμων β' (661 c).

Ἐγὼ μὲν γὰρ λέγω σαφῶς, τὰ μὲν κακὰ λεγόμενα ἀγαθὰ τοῖς ἀδίκοις εἶναι τοῖς δὲ δικαίοις κακά, τὰ δὲ ἀγαθὰ τοῖς μὲν ἀγαθοῖς ὄντως ἀγαθὰ τοῖς δὲ κακοῖς κακά.

47 *Σωκράτους.*

Ταυτὸν ἐξ ἀσθενοῦς ἀγκυρίου σκάφος ὁρμίζειν καὶ ἐκ φαύλης γνώμης ἐλπίδα.

48 *Αἰσχίνου* (490 R.).

Καὶ γὰρ τοῦτ' ἄνθρωπος ἴδιον καὶ οὐ κοινὸν ποιεῖ· οἱ μὲν γὰρ ἄλλοι ἀλαζόνες, ὁπόταν τι ψεύδωνται, ἀόριστα καὶ ἀσαφῆ πειρῶνται λέγειν, φοβούμενοι τὸν ἔλεγχον· Δημοσθένης δὲ ὅταν ἀλαζονεύηται, πρῶτον μεθ' ὅρκου ψεύδεται ἐξώλειαν ἐπαρώμενος αὑτῷ, δεύτερον δὲ ἃ εἶδεν ἐσόμενα τολμᾷ λέγειν ὡς ποτὲ ἔσται, καὶ ὧν τὰ σώματα οὐχ ἑώρακε, τούτων τὰ ὀνόματα λέγει κλέπτων τὴν ἀκρόασιν, καὶ μιμούμενος τοὺς τἀληθῆ λέγοντας. Ἦ καὶ σφόδρα ἄξιός ἐστι μισεῖσθαι, ὅτι πονηρὸς ὢν καὶ τὰ τῶν χρηστῶν σημεῖα διαφέρει.

ΠΕΡΙ ΦΡΟΝΗΣΕΩΣ. Γ.

1 *Αἰσχύλου.*

Ἃ δεῖ παρὼν φρόντιζε, μὴ παρὼν ἀπῇς.
Ὁ χρήσιμ' εἰδώς, οὐχ ὁ πόλλ' εἰδώς, σοφός.

2 *Σοφοκλέους* (El. 1015).

Προνοίας οὐδὲν ἀνθρώποις ἔφυ
κέρδος λαβεῖν ἄμεινον οὐδὲ νοῦ σοφοῦ.

3 [*Εὐριπίδου.*]

Πολλαῖσι μορφαῖς οἱ θεοὶ σοφισμάτων
σφάλλουσιν ἡμᾶς, κρείσσονες πεφυκότες.

4 *Κἂν σφόδρα σαφῶς εἰδῇς τι, τὸν κρύπτοντά σε*
μηδέποτ' ἐλέγξῃς· δύσκολον πρᾶγμ' ἐστὶ γάρ,
ἃ λανθάνειν τις βούλεται, ταῦτ' εἰδέναι.

5 *Σοφοκλῆς Αἴαντι* (1246).
Ἐκ τῶνδε μέντοι τῶν τρόπων οὐκ ἄν ποτε
κατάστασις γένοιτ᾽ ἂν οὐδενὸς νόμου,
εἰ τοὺς δίκῃ νικῶντας ἐξωθήσομεν
καὶ τοὺς ὄπισθεν εἰς τὸ πρόσθεν ἄξομεν.
ἀλλ᾽ εἰρκτέον τάδ᾽ ἐστίν· οὐ γὰρ οἱ πλατεῖς
οὐδ᾽ εὐρύνωτοι φῶτες ἀσφαλέστατοι,
ἀλλ᾽ οἱ φρονοῦντες εὖ κρατοῦσι πανταχοῦ.
μέγας δὲ πλευρὰ βοῦς ὑπὸ σμικρᾶς ὅμως
μάστιγος ὀρθὸς εἰς ὁδὸν πορεύεται.

6 *Μενάνδρου Θεοφορουμένῃ.*
Ὁ πλεῖστον νοῦν ἔχων
μάντις τ᾽ ἄριστός ἐστι σύμβουλός θ᾽ ἅμα.

7 *Μενάνδρου.*
Ἆρ᾽ ἔστιν ἀγαθῶν πᾶσι πλείστων αἰτία
ἡ σύνεσις, ἂν ᾖ πρὸς τὰ βελτίω σοφή.

8 *Σοφοκλῆς Ἀλήτῃ.*
Ψυχὴ γὰρ εὔνους καὶ φρονοῦσα τοὔνδικον
κρείσσων σοφιστοῦ παντός ἐστιν εὑρετίς.

9 *Μενάνδρου Ἰμβρίοις.*
Οὐκ ἔστιν οὐδέν, πάτερ, ἐν ἀνθρώπου φύσει
μεῖζον λογισμοῦ τῷ διαθέσθαι πράγματα.
Ἕκαστός ἐστι τῷ λογίσασθαι κατὰ τρόπον,
ἄρχων, στρατηγός, ἡγεμὼν δήμου, πάλιν
βουλῆς· ὁ διαφέρων λογισμῷ πάντ᾽ ἔχει.

10 *Αἰσχύλου.*
Ἁμαρτάνει τοι καὶ σοφοῦ σοφώτερος.

11 *Μενάνδρου.*
Ἅπαντα δοῦλα τοῦ φρονεῖν καθίσταται.

12 Εὐριπίδου Ἀντιόπη.
Τὸ δ' ἀσθενές μου καὶ τὸ θῆλυ σώματος
κακῶς ἐμέμφθης· εἰ γὰρ εὖ φρονεῖν ἔχω,
κρεῖσσον τόδ' ἐστὶ καρτεροῦ βραχίονος.

13 Ὡς ὄψις ἐν ὀφθαλμῷ, νοῦς ἐν ψυχῇ.

14. 15. Ἐσθλοῦ γὰρ ἀνδρὸς τοὺς πονοῦντας ὠφελεῖν·
ἀλλ' ἡ φρόνησις ἁγαθὴ θεὸς μέγας.

16 Ἀγάθωνος.
Οὐ τῇ φρονήσει, τῇ τύχῃ δ' ἐσφάλμεθα.

17 Χαιρήμονος.
Οὐχ ὡς νομίζεις τὸ φρονεῖν εἶπας κακῶς.
Τό τοι κράτιστον πανταχοῦ τιμητέον.
Ὁ γὰρ φρονῶν εὖ πάντα συλλαβὼν ἔχει.

18 Εὐριπίδου Ἐρεχθέως.
Ὀρθῶς μ' ἐπήρου· βούλομαι δέ σοι, τέκνον,
(φρονεῖς γὰρ ἤδη κἀποσώσαι' ἂν πατρὸς
γνώμας φράσαντος, ἢν θάνω) παραινέσαι
κειμήλι' ἐσθλὰ καὶ νέοισι χρήσιμα.
βραχεῖ δὲ μύθῳ πολλὰ συλλαβὼν ἐρῶ.
πρῶτον φρένας μὲν ἠπίους ἔχειν χρεών·
τῷ πλουσίῳ τε τῷ τε μὴ διδοὺς μέρος
ἴσον, σεαυτὸν εὐσεβεῖν πᾶσιν δίδου.
δυοῖν παρόντοιν πραγμάτοιν, πρὸς θάτερον
γνώμην προσάπτειν τὴν ἐναντίαν * μίσει.
ἀδίκως δὲ μὴ κτῶ χρήματ', ἢν βούλῃ πολὺν
χρόνον μελάθροις ἐμμένειν· τὰ γὰρ κακῶς
οἴκους ἐσελθόντ' οὐκ ἔχει σωτηρίαν.
ἔχειν δὲ πειρῶ· τοῦτο γὰρ τό τ' εὐγενὲς
καὶ τοὺς γάμους δίδωσι τοὺς πρώτους ἔχειν.

ἐν τῷ πένεσθαι δ' ἐστὶν ἥ τ' ἀδοξία,
κἂν ᾖ σοφός τις, ἥ τ' ἀτιμία βίου.
φίλων δὲ τοὺς μὲν μὴ χαλῶντας ἐν λόγοις
κέκτησο, τοὺς δὲ πρὸς χάριν σὺν ἡδονῇ
τῇ σῇ πονηροὺς κλῇθρον εἰργέτω στέγης.
ὁμιλίας τε τὰς γεραιτέρους θέλε.
βραχεῖα τέρψις ἡδονῆς τίκτει λύπην.
ἐξουσίᾳ δὲ μή ποτ' ἐντυχών, τέκνον,
αἰσχροὺς ἔρωτας δημοτῶν διωκαθεῖν,
ὃ καὶ σίδηρον ἀγχόνας τ' ἐφέλκεται,
χρηστῶν πενήτων ἥν τις αἰσχύνῃ τέκνα.
καὶ τοὺς πονηροὺς μή ποτ' αὔξαν' ἐν πόλει·
κακοὶ γὰρ ἐμπλησθέντες ἢ νομίσματος
ἢ πόλεος ἐμπεσόντες εἰς ἀρχήν τινα,
σκιρτῶσιν ἀδίκως εὐτυχησάντων δόμων.
ἀλλ', ὦ τέκνον, μοι δὸς χέρ', ὡς θίγῃ πατήρ,
καὶ χαῖρ'· ὑπ' αἰδοῦς δ' οὐ λίαν ἀσπάζομαι·
γυναικόφρων γὰρ θυμὸς ἀνδρὸς οὐ σοφοῦ.

19 *Θεόγνιδος* (1163).

Ὀφθαλμοὶ καὶ γλῶσσα καὶ οὔατα καὶ νόος ἀνδρὸς
ἐν μέσσῳ στηθέων εὐξύνετος φύεται.

20 *Εὐριπίδου Πολυείδου.*

Ὅστις νέμει κάλλιστα τὴν αὑτοῦ φύσιν,
οὗτος σοφὸς πέφυκε πρὸς τὸ συμφέρον.

21 *Πυθαγόρου ἐκ τῶν χρυσῶν ἐπῶν* (21—26 et 39).

Πολλοὶ δ' ἀνθρώποισι λόγοι δειλοί τε καὶ ἐσθλοὶ
προσπίπτουσ', ὧν μήτ' ἐκπλήσσεο μήτ' ἄρ' ἐάσῃς
εἴργεσθαι σαυτόν. ψεῦδος δ' ἤν σοί τι λέγηται,
πράως εἴχ'· ὃ δέ τοι ἐρέω, ἐπὶ πᾶσι τελείσθω.
μηδεὶς μήτε λόγῳ σε παρείπῃ μήτε τι ἔργῳ

πρῆξαι μηδ' εἰπεῖν ὅ τι τοι μὴ βέλτερόν ἐστι.
πρῆσσε δὲ ταῦθ' ἅ σε μὴ βλάπτει, λόγισαι δὲ πρὸ ἔργου.

22 *Εὐριπίδου Πελιάσι.*
Πρὸς κέντρα μὴ λάκτιζε τοῖς κρατοῦσί σου.

23 *Μενάνδρου.*
Ὅταν ἕτερός σοι μηδὲ ἓν πλέον διδῷ,
δέξαι τὸ μόριον· τοῦ λαβεῖν γὰρ μηδὲ ἓν
τὸ λαβεῖν ἔλαττον πλεῖον ἔσται σοι πολύ.

24 *Πυθαγόρου.*
Ἰσχὺς καὶ τεῖχος καὶ ὅπλον σοφοῦ ἡ φρόνησις.

26 *Φωκυλίδου* (Pseudophoc. 124).
Ὅπλον τοι λόγος ἀνδρὶ τομώτερόν ἐστι σιδήρου.
ὅπλον ἑκάστῳ νεῖμε θεός, φύσιν ἠερόφοιτον
ὄρνισιν, πολλὴν ταχυτῆτ' ἀλκήν τε λέουσι,
ταύροις δ' αὐτοχύτοις κεράεσσιν, κέντρα μελίσσαις
ἔμφυτον ἄλκαρ ἔδωκε, λόγος δ' ἔρυμ' ἀνθρώποισι.
τῆς δὲ θεοπνεύστου σοφίης λόγος ἐστὶν ἄριστος.

---

25 *Γνῶμαι μονόστιχοι.*
Ἀγαθὸν μέγιστον ἡ φρόνησίς ἐστ' ἀεί. | ἀνδρὸς χαρακτὴρ ἐκ λόγου γνωρίζεται. | ἄριστόν ἐστι πάντ' ἐπίστασθαι καλά. | ἂν εὖ φρονῇς, τὰ πάντα γ' εὐδαίμων ἔσῃ. | ἀεὶ κράτιστόν ἐστι τἀσφαλέστατον. | ἔνιοι κακῶς φρονοῦσι πράσσοντες καλῶς. | ἐμπειρία γὰρ τῆς ἀπειρίας κρατεῖ. | βλέπων πεπαίδευμ' εἰς τὰ τῶν ἄλλων κακά. | ἡδύ γε πατὴρ φρόνησιν ἀντ' ὀργῆς ἔχων. | ἥδιστόν ἐστιν εὐτυχοῦντα νοῦν ἔχειν. | μισῶ σοφιστὴν ὅστις οὐχ αὑτῷ σοφός. | νοεῖν γάρ ἐστι κρεῖττον ἢ σιγὴν ἔχειν. | συνετὸς πεφυκὼς φεῦγε τὴν κακουργίαν. | ὁ παρ' ἡλικίαν νοῦς μῖσος ἐξεργάζεται. | οὐδεὶς ὃ νοεῖς οἶδεν, ὃ δὲ ποιεῖς βλέπει. | οὐ πανταχῇ δ' ὁ φρόνιμος ἁρμόττειν δοκεῖ. | τὸ μηδὲν εἰκῇ πανταχοῦ ἐστι χρήσιμον. | ψυχῆς μέγας χαλινὸς ἀνθρώποις ὁ νοῦς. | ὡς οὐδὲν ἡ μάθησις, ἢν μὴ νοῦς παρῇ.

βέλτερος ἀλκήεντος ἔφυ σεσοφισμένος ἀνήρ.
ἀγροὺς καὶ πόλιας σοφία καὶ νῆα κυβερνᾷ.

27 *Εὐριπίδου Ἀντιόπῃ.*
Ἐγὼ μὲν οὖν ᾄδοιμι καὶ λέγοιμί τι
σοφόν, ταράσσων μηδὲν ὧν πόλις νοσεῖ.

27[a] [*Εὐριπίδου Ἠλέκτρᾳ* 294.]
Ἔνεστι δ' οἶκτος ἀμαθίᾳ μὲν οὐδαμοῦ,
σοφοῖσι δ' ἀνδρῶν. καὶ γὰρ οὐδ' ἀζήμιον
γνώμην ἐνεῖναι τοῖς σοφοῖς λίαν σοφόν.

28 *Θεόγνιδος* (963).
Μή ποτ' ἐπαινέσσῃς πρὶν ἂν εἰδῇς ἄνδρα σαφηνέως
ὀργὴν καὶ θυμὸν καὶ τρόπον ὅντιν' ἔχει.
πολλοί τοι κίβδηλον ἐπίκλοπον ἦθος ἔχοντες
κρύπτουσ' ἐνθέμενοι θυμὸν ἐφημέριον.
τούτων δ' ἐκφαίνει πάντων χρόνος ἦθος ἑκάστου·
καὶ γὰρ ἐγὼ γνώμης πολλὸν ἄρ' ἐκτὸς ἔβην.

29 *Νόει, καὶ τότε πρᾶττε.*

30 *Βίαντος.*
Βραδέως ἐγχείρει τοῖς πραττομένοις, ἐγχειρήσας δὲ πρᾶττε βεβαίως.

31 *Θεοβούλου.*
Τὰ ἀφανῆ τοῖς φανεροῖς τεκμαίρου.

32 *Σωκράτης παρῄνει, ὡς ἥκιστα τοῖς δυνάσταις ἢ ὡς ἥδιστα ὁμιλεῖν.*

33 *Πρᾶττε ἀμεταμέλητα.*

34 *Δημοκρίτου.*
Σοφίη ἄθαμβος ἀξίη πάντων τιμιωτάτη ἐοῦσα.

35 *Δημοκρίτου.*

῞Ορος γὰρ συμφορέων καὶ ἀσυμφορέων τέρψις καὶ ἀτερπίη.

39 Σωτάδου.

Λύπη σε μακρὰν προφεύξεται ἀγαθὰ φρονοῦντα.
μιμοῦ τὸ καλόν, καὶ μενεῖς ἐν βροτοῖς ἄριστος.
νόμος ἐστὶ θεός, τοῦτον ἀεὶ πάντοτε τίμα.
ξένος ὀφείλεις εἶναι τῶν οὐ καλῶς φρονούντων.
οὗ καλῶς βιοῖς, παράμενε, κεὐτυχεῖς τὰ πάντα.
παρατήρει τὰ πάντων καλὰ καὶ ταῦτα σὺ μιμοῦ.
ῥῆσιν δ' ἀγαθὴν δεδομένην φύλασσε σαυτῷ.
σοὶ τοῦτο γενέσθω φίλον, μηδὲν ἀτακτεῖν,
τὴν ἡσυχίαν κατὰ βίον ἵνα πάντοτε τηρῇς.
ὑγιαίνειν εὔχου τοῖς θεοῖς, ἐφ' ὅσον ἔχεις ζῆν.

40 Ἐκ τῶν Ἀριστωνύμου τομαρίων.

Κυβερνήτου μὲν ἔργον ἀγαθοῦ εἰς τὰς τῶν πνευμάτων μεταβολὰς ἁρμόσασθαι, ἀνδρὸς δὲ σοφοῦ πρὸς τὰς τῆς τύχης.

41 Σωκράτους.

Ἐν μὲν τῷ καταπλεῖν πείθεσθαι τῷ κυβερνήτῃ, ἐν δὲ τῷ ζῆν τῷ λογίζεσθαι δυναμένῳ βέλτιον.

42 Ὁδὸν μὲν τὴν λειοτάτην ἐκλέγεσθαι, βίον δὲ τὸν ἀλυπότατον.

---

36 Ῥώμη δὲ μετὰ μὲν φρονήσεως ὠφέλησεν, ἄνευ δὲ ταύτης πλεῖον τοὺς ἔχοντας ἔβλαψε. (Isocrates ad Demon. §. 6.)

37 Βουλευόμενος παραδείγματα ποιοῦ τὰ παρεληλυθότα τῶν μελλόντων. (ibid. §. 34.)

38 Ὅπερ δὲ ὑπὲρ τῶν σεαυτοῦ μέλλεις τινὶ συμβουλεύεσθαι, σκόπει πρῶτον πῶς ὑπὲρ τῶν αὑτοῦ διῴκησεν. ὁ γὰρ κακῶς διανοηθεὶς ὑπὲρ τῶν ἰδίων οὐδέποτε καλῶς βουλεύσεται περὶ τῶν ἀλλοτρίων. (ibid. §. 35.)

43 *Μόνῳ τῷ λόγῳ καθάπερ ἐπιτρόπῳ σώφρονι παρακαταθετέον τὸν βίον καὶ τὴν νεότητα.*

44 *Καὶ ὑποδήματα καὶ βίος ἁρμόζων ἀλυπότερος.*

45 *Σωκράτους.*

Σωκράτης ἐρωτηθεὶς τί φρόνησις; "εὐαρμοστία" εἶπε "ψυχῆς." ὁ αὐτὸς ἐρωτηθεὶς τίνες φρόνιμοι; "οἱ μὴ ῥᾳδίως" εἶπεν "ἐξαμαρτάνοντες."

46 *Ἀντισθένης ἐρωτηθεὶς τί δή ποτε οὐχ οἱ πλούσιοι πρὸς τοὺς σοφοὺς ἀπίασιν ἀλλ' ἀνάπαλιν; εἶπεν "ὅτι οἱ σοφοὶ μὲν ἴσασιν ὧν ἐστὶν αὐτοῖς χρεία πρὸς τὸν βίον· οἱ δὲ οὐκ ἴσασιν· ἐπεὶ μᾶλλον σοφίας ἢ χρημάτων ἐπεμελοῦντο."*

---

47 *Πλουτάρχου* (virt. mor. cap. 5 p. 443 e).

Ἔστι τοίνυν τῶν πραγμάτων τὰ μὲν ἁπλῶς ἔχοντα τὰ δὲ πῶς ἔχοντα πρὸς ἡμᾶς· ἁπλῶς μὲν ουν ἔχοντα, γῆ, οὐρανός, θάλασσα· πῶς δὲ ἔχοντα πρὸς ἡμᾶς, ἀγαθόν, κακόν, αἱρετόν, φευκτόν, ἡδύ, ἀλγεινόν· ἀμφοῖν δὲ τοῦ λόγου θεωρητικοῦ ὄντος, τὸ μὲν περὶ τὰ ἁπλῶς ἔχοντα μόνον, ἐπιστημονικὸν καὶ θεωρητικόν ἐστι· τὸ δ' ἐν τοῖς πῶς ἔχουσι πρὸς ἡμᾶς, βουλευτικὸν καὶ πρακτικόν· ἀρετὴ δὲ τούτου μὲν ἡ φρόνησις, ἐκείνου δὲ ἡ σοφία. διαφέρει δὲ σοφίας φρόνησις, ᾗ τοῦ θεωρητικοῦ πρὸς τὸ πρακτικὸν καὶ παθητικὸν ἐπιστροφῆς καὶ σχέσεώς τινος γενομένης ὑφίσταται κατὰ λόγον ἡ φρόνησις. διὸ φρόνησις μὲν τύχης δεῖται, σοφία δὲ οὐ δεῖται πρὸς τὸ οἰκεῖον τέλος, οὐδὲ βουλῆς· ἔστι γὰρ περὶ τὰ ἀεὶ καὶ τὰ αὐτὰ ὡσαύτως ἔχοντα. καὶ καθάπερ ὁ γεωμέτρης οὐ βουλεύεται περὶ τοῦ τριγώνου, εἰ δυοῖν ὀρθαῖς ἴσας ἔχει τὰς ἐντὸς γωνίας, ἀλλ' οἶδεν (αἱ γὰρ βουλαὶ περὶ τῶν ἄλλοτε ἄλλως ἐχόντων, οὐ περὶ τῶν βεβαίων καὶ ἀμεταπτώτων)· οὕτως ὁ θεωρητικὸς νοῦς περὶ τὰ πρῶτα καὶ μόνιμα καὶ μίαν ἀεὶ φύσιν ἔχοντα μὴ δεχομένην μεταβολὰς ἐνεργῶν ἀπήλλακται τοῦ βουλεύεσθαι. τὴν δὲ φρόνησιν εἰς πράγματα πλάνης μεστὰ καὶ ταραχῆς καθιεῖσαν ἐπιμίγνυσθαι τοῖς τυχηροῖς πολλάκις ἀναγκαῖόν ἐστι καὶ τῷ βουλευτικῷ χρῆσθαι περὶ τῶν ἀδηλοτέρων· τῷ δὲ πρακτικῷ τὸ

49 *Πλουτάρχου εἰ ἡ τῶν μελλόντων πρόγνωσις ὠφέλιμος.*

Ἀλλὰ μὴν ἡ φρόνησις οὐ σωμάτων ἀλλὰ πραγμάτων ὄψις ἐστί, πρὶν ἐν αὐτοῖς γενέσθαι τὸν ἄνθρωπον, ὅπως ἄριστα χρήσεται τοῖς ἀπαντῶσι καὶ προστυγχάνουσι, παρέχουσα διασκοπεῖν τὸ μέλλον. τὸ μὲν οὖν σῶμα πρόσω μόνον ὠμμάτωται, τοῖς δ' ὄπισθεν τυφλόν ἐστιν ἀτεχνῶς· ἡ δὲ διάνοια καὶ τὰ παρῳχημένα βλέπειν τῇ μνήμῃ πέφυκεν. ὁ γὰρ ἐγκαθήμενος ἀεὶ καὶ οἰκουρῶν γραμματεύς, [ἐν μίνῳ] ὥς φησιν ὁ Πλάτων, οὗτός ἐστι, καὶ προγέγονας ἐνταῦθα τῆς ψυχῆς, εἴτε μέρος εἴτε ὄργανον, ὃ τῶν πραγμάτων ἀντιλαμβάνεται φερομένων, καὶ φυλάττει καὶ ἵστησι, καὶ κύκλον ποιεῖ τὸ παρῳχημένον ἐπιστρέφουσα, καὶ συνάπτουσα τῷ παρόντι, καὶ παραρρεῖν εἰς τὸ ἄπειρον οὐκ ἐῶσα καὶ ἀνύπαρκτον καὶ ἄγνωστον.

50 *Θεοφράστου.*

Χρὴ τοίνυν τὸν μέλλοντα θαυμασθήσεσθαι περὶ τὸ θεῖον φιλοθύτην εἶναι, μὴ τῷ πολλὰ θύειν ἀλλὰ τῷ πυκνὰ τιμᾶν τὸ θεῖον· τὸ μὲν γὰρ εὐπορίας, τὸ δ' ὁσιότητος σημεῖον. ἔπειτα γονεῖς γηροτροφεῖν καλῶς ταῖς τ' ἐκείνων βουλήσεσι τὸν αὑτοῦ βίον εὐπειθῆ κατασκευάζειν. ὁ γὰρ μὴ τοιοῦτος, ἀλλὰ τῶν τε τῆς φύσεως τῶν τε τῆς πόλεως νόμων ὀλιγωρῶν,

---

βουλευτικὸν ἐκδεχομένην ἐνεργεῖν ἤδη καὶ τοῦ ἀλόγου συμπαρόντος καὶ συνεφελκομένου ταῖς κρίσεσιν.

48 *Τοῦ αὐτοῦ* (Plut. cons. ad Apoll. cap. 4 p. 103 a).

Καὶ γὰρ περὶ τἀγαθὸν ἡ φρόνησις πραγματεύεται τετραχῶς, ἢ κτωμένη τἀγαθά, ἢ φυλάττουσα, ἢ αὔξουσα, ἢ χρωμένη δεξιῶς. οὗτοι τῆς φρονήσεως καὶ τῶν ἄλλων ἀρετῶν εἰσι κανόνες, οἷς πρὸς ἀμφότερα χρηστέον.

ἀμφοτέρους τοὺς τῆς δικαιοσύνης τρόπους παραβέβηκε. καὶ μὴν καὶ γυναικὸς καὶ παίδων ἐπιμελητέον καλῶς καὶ φιλανθρώπως· οἱ μὲν γὰρ εἰς τὸ γῆρας ἀμείβονται ταῖς θεραπείαις, ἡ δ' ἐν ταῖς νόσοις καὶ ταῖς καθ' ἡμέραν οἰκονομίαις ἀποδώσει τὴν εὐεργεσίαν. ἐὰν δέ τινι συμβάλλειν ἀνάγκη ᾖ, μετὰ τοῦ βεβαίου πειρῶ τοῦτο πράττειν· φρονιμωτάτου γὰρ ἀνδρὸς δανείσαντα φρονίμως, ἀπολαβεῖν φιλικῶς, ἢ συναλλάξαντα φιλανθρώπως, κομίσασθαι φιλαπεχθημόνως.

51 Δημοκρίτου.

Φρονήσιος ἔργον μέλλουσαν ἀδικίην φυλάξασθαι, ἀναλγησίης δὲ τὸ γενόμενον μὴ ἀμύνασθαι.

52 Ἐκ μὲν τῆς μαντικῆς πρόνοιαν ἔφασαν δεῖν ἐπιζητεῖν, ἐκ δὲ τῆς ἰατρικῆς τῆς τε προνοίας ἐπανόρθωσιν· ταῦτα γὰρ εἶναι πέρατα τῆς ἰατρικῆς ἐπιστήμης· ἐκ δὲ τῆς μουσικῆς αἴσθησιν ἀκριβῆ τε καὶ ἐπιστημονικήν, ἐκ δὲ τῶν μαθηματικῶν ὀνομαζομένων συλλογισμόν τε καὶ ἀπόδειξιν τῶν δι' αὐτῶν νοημάτων.

53 Ἀριστοτέλους.

Ἀριστοτέλης εἶπεν "ἐπειδὴ μὴ γίνεται τὰ πράγματα ὡς βουλόμεθα, δεῖ βούλεσθαι ὡς γίνεται."

54 Ἀριστοτέλους.

Νόμιζε τὴν εὐδαιμονίαν οὐκ ἐν τῷ πολλὰ κεκτῆσθαι γίγνεσθαι, ἀλλ' ἐν τῷ τῇ ψυχῇ εὖ διακεῖσθαι. καὶ γὰρ οὐδὲ τὸ σῶμα αὐτὸ τὸ λαμπρᾷ ἐσθῆτι κεκοσμημένον φαίη τις εἶναι μακάριον, ἀλλὰ τὸ τὴν ὑγείαν ἔχον καὶ σπουδαίως διακείμενον, κἂν μηδὲν τῶν προειρημένων αὐτῷ παρῇ· τὸν αὐτὸν δὲ τρόπον καὶ ψυχὴ ἐὰν ᾖ πεπαιδευμένη, τὴν τοιαύτην καὶ τὸν τοι-

οὗτον ἄνθρωπον εὐδαίμονα προσαγορευτέον ἐστίν, οὐκ ἂν τοῖς ἐκτὸς ᾖ λαμπρῶς κεκοσμημένος, αὐτὸς μηδενὸς ἄξιος ὤν. οὐδὲ γὰρ ἵππον, κἂν ψέλλια χρυσᾶ καὶ σκευὴν ἔχῃ πολυτελῆ φαῦλος ὤν, τὸν τοιοῦτον ἄξιόν τινος νομίζομεν εἶναι, ἀλλ' ὃς ἂν διακείμενος ᾖ σπουδαίως, τοῦτον μᾶλλον ἐπαινοῦμεν. ὥσπερ γὰρ εἴ τις τῶν οἰκετῶν αὐτοῦ χείρων εἴη, καταγέλαστος ἂν γένοιτο, τὸν αὐτὸν τρόπον οἷς πλείονος ἀξίαν τὴν κτῆσιν εἶναι συμβέβηκε τῆς ἰδίας φύσεως, ἀθλίους τούτους εἶναι δεῖ νομίζειν. καὶ τοῦτο κατ' ἀλήθειαν οὕτως ἔχει· τίκτει γάρ, ὥσπερ φησὶν ἡ παροιμία, κόρος μὲν ὕβριν, ἀπαιδευσία δὲ μετ' ἐξουσίας ἄνοιαν. τοῖς γὰρ διακειμένοις τὰ περὶ τὴν ψυχὴν κακῶς, οὔτε πλοῦτος οὔτε ἰσχὺς οὔτε κάλλος τῶν ἀγαθῶν ἐστιν· ἀλλ' ὅσῳ περ ἂν αὗται μᾶλλον αἱ διαθέσεις καθ' ὑπερβολὴν ὑπάρξωσι, τοσούτῳ καὶ πλείω καὶ μείζω τὸν κεκτημένον βλάπτουσι, χωρὶς φρονήσεως παραγενόμεναι.

55 Ἰαμβλίχου ἐκ τῆς ἐπιστολῆς πρὸς Ἀσφάλιον περὶ φρονήσεως.

Τὴν ἡγεμόν' οὖσαν τῶν ἀρετῶν φρόνησιν καὶ χρωμένην αὐταῖς ὅλαις, καθάπερ ὄμμα νοερόν, τάξεις τε καὶ μέτρα αὐτῶν καὶ τὴν ἐγκαιροτάτην διάθεσιν εὖ διακοσμοῦσαν, ἐπιδείκνυσιν ὁ λόγος ὑπ' αὐγὰς ἐν τῷ παρόντι. αὕτη τοίνυν προηγουμένη μὲν παραδέχεται τὴν ἀπογέννησιν ἀπὸ τοῦ καθαροῦ καὶ τελείου νοῦ· γενομένη δ' οὕτως εἰς αὐτὸν τὸν νοῦν ἀποβλέπει καὶ τελεοῦται ὑπ' αὐτοῦ μέτρον τε καὶ παράδειγμα αὐτὸν ἔχει κάλλιστον τῶν ἐν αὐτῇ πασῶν ἐνεργειῶν. εἰ δέ τις ἐστὶ καὶ πρὸς θεοὺς ἡμῖν κοινωνία, διὰ ταύτης μάλιστα τῆς ἀρετῆς αὕτη συνίστα-

ται, καὶ κατὰ ταύτην διαφερόντως πρὸς αὐτοὺς ἀφομοιούμεθα, ἀγαθῶν τε καὶ συμφερόντων καὶ καλῶν καὶ τῶν ἐναντίων διάγνωσις ἀπὸ ταύτης ἡμῖν πάρεστιν, ἔργων τε προσηκόντων κρίσις καὶ κατόρθωσις δι' αὐτὴν κατευθύνεται. καὶ συλλήβδην φάναι, κυβερνητική τις ἐστὶ τῶν ἀνθρώπων καὶ τῆς ὅλης ἐν αὐτοῖς διατάξεως ἀρχηγός, πόλεις τε καὶ οἴκους καὶ τὸν ἴδιον ἑκάστου βίον εἰς παράδειγμα τὸ θεῖον ἀναφέρουσα διαζωγραφεῖ κατὰ τὴν ἀρίστην ὁμοιότητα, τὸ μὲν ἐξαλείφουσα, τὸ δὲ ἐναπομοργνυμένη, τὰ δὲ ἀμφότερα συμμέτρως ἀπεικάζουσα. εἰκότως ἄρα καὶ θεοειδεῖς ἀπεργάζεται τοὺς ἔχοντας αὐτὴν ἡ φρόνησις.

56 Περιάνδρου.

Περίανδρος ἐρωτηθεὶς τί μέγιστον ἐν ἐλαχίστῳ εἶπε "φρένες ἀγαθαὶ ἐν σώματι ἀνθρώπου."

57 Δημοκρίτου.

Αἱ μεγάλαι τέρψιες ἀπὸ τοῦ θεᾶσθαι τὰ καλὰ τῶν ἔργων γίνονται.

58 Πλάτωνος (Phaedr. 239 a).

Φθονερὸν δὴ ἀνάγκη εἶναι, καὶ πολλῶν μὲν ἄλλων συνουσιῶν ἀπείργοντα καὶ ὠφελίμων, ὅθεν ἂν μάλιστα ἀνὴρ γένοιτο, μεγάλης αἴτιον εἶναι βλάβης· μεγίστης δὲ τῆς ὅθεν ἂν φρονιμώτατός τις εἴη· τοῦτο δὲ ἡ θεία φιλοσοφία τυγχάνει ὄν, ἧς ἐραστὴν παιδικὰ ἀνάγκη πόρρωθεν εἴργειν, περίφοβον ὄντα τοῦ καταφρονηθῆναι.

59 Τοῦ αὐτοῦ.

Πέφυκε ξυνιέναι εἰς τὸ αὐτὸ φρόνησίς τε καὶ δύναμις μεγάλη· καὶ ταῦτα ἄλληλα ἀεὶ διώκει καὶ ζητεῖ καὶ συγγίνεται.

60 *Πυθαγόρου.*

Ὑπομίμνησκε σεαυτὸν ὅτι πάντες ἄνθρωποι μέγιστον ἀγαθὸν τὴν φρόνησιν εἶναι λέγουσιν, ὀλίγοι δέ εἰσιν οἱ τὸ μέγιστον ἀγαθὸν τοῦτο κτήσασθαι εὐτονήσαντες.

61 *Σωκράτους.*

Σωκράτης ὁ φιλόσοφος, πολλὰ τῶν φίλων αὐτῷ πεμπόντων, ἐπειδὴ μηδὲν δεχόμενος ἐπὶ τούτῳ παρὰ τῆς Ξανθίππης εὐθύνετο, ἔφη "ἂν τὰ διδόμενα πάντα ἑτοίμως λαμβάνωμεν, οὐδ' αἰτοῦντες τοὺς διδόντας ἕξομεν."

62 *Διογένους.*

Ἔφη τις τὸν Διογένην ἀνόητον εἶναι· ὁ δὲ "ἀνόητος μὲν οὐκ εἰμὶ" ἔφη "τὸν δὲ αὐτὸν ὑμῖν νοῦν οὐκ ἔχω."

63 *Διογένους.*

Πωλούμενος ἐν Κορίνθῳ, ἐρομένου τοῦ κήρυκος "τί ἐπίστασαι;" "ἀνθρώπων" ἔφη "ἄρχειν." καὶ ὁ κήρυξ γελάσας "μέγα ἐπιτήδευμα πωλῶ, εἴ τις θέλει πρίασθαι κύριον."

64 *Γαΐου ὑπὲρ δεσποτῶν.*

Σωφρονέστερον δὲ οἶμαι τοῦ μετα τὸ παθεῖν ἐγκαλεῖν τὸ πρὶν παθεῖν φυλάξασθαι τὸ μὴ παθεῖν.

65 *Διονυσίου* (Plut. Mor. p. 175 f).

Ξένου τινὸς ἰδίᾳ φράσειν φάσκοντος αὐτῷ, ὅπως προειδήσει τοὺς ἐπιβουλεύοντας, ἐκέλευσεν εἰπεῖν. ὁ δὲ προελθὼν "δὸς" ἔφη "μοι τάλαντον, ἵνα δόξῃς μεμαθηκέναι τὰ σημεῖα τῶν ἐπιβουλευόντων." ἔδωκεν οὖν θαυμάζων τὴν μέθοδον τοῦ ἀνθρώπου.

66 *Χρυσίππου.*

Χρύσιππος ὁ στωϊκὸς ἔφη τὴν διάνοιαν εἶναι λόγου πηγήν.

67 Σωκράτους.

Ὥσπερ οἱ ἐν εὐδίᾳ πλέοντες καὶ τὰ πρὸς τὸν χειμῶνα ἔχουσιν ἕτοιμα, οὕτως οἱ ἐν εὐτυχίᾳ φρονοῦντες καὶ τὰ πρὸς τὴν ἀτυχίαν ἡτοιμάκασι βοηθήματα.

68 Ἡροδότου ἱστορίας ζ′ (16).

Ἶσον ἐκεῖνο, ὦ βασιλεῦ, παρ᾽ ἐμοὶ κέκριται φρονέειν τε εὖ καὶ τῷ λέγοντι χρηστὰ ἐθέλειν πείθεσθαι.

69 Ἡροδότου ἱστορίας γ′ (52).

Σὺ δὲ μαθὼν ὅσον φθονέεσθαι κρεῖσσόν ἐστιν ἢ οἰκτείρεσθαι, ἅμα τε ὁκοῖον ἐς τοὺς τοκέας καὶ ἐς τοὺς κρέσσονας τεθυμῶσθαι, ἄπιθι εἰς τὰ οἰκεῖα.

70 Πλάτωνος νόμων ιβ′ (963 c).

Οἷον ὅτε τέτταρα ἐφήσαμεν ἀρετῆς εἴδη γεγονέναι, δῆλον ὡς ἓν ἕκαστον ἀνάγκη φάναι, τεττάρων ὄντων. Τί μήν; Καὶ μὴν ἕν γε αὖ πάντα ταῦτα προσαγορεύομεν· ἀνδρίαν γὰρ φαμὲν ἀρετὴν εἶναι, καὶ τὴν φρόνησιν ἀρετήν, καὶ τὰ δύο τἆλλα, ὡς ὄντα οὐ πολλά, ἀλλ᾽ ἓν τοῦτο μόνον ἀρετήν. Πάνυ μὲν οὖν. Ἧι μὲν τοίνυν διαφέρετον αὐτοῖν τούτω τὼ δύο καὶ δύ᾽ ὀνόματα ἐλαβέτην καὶ τὰ ἄλλα, οὐδὲν χαλεπὸν εἰπεῖν· ᾗ δὲ ἐν ἀμφοῖν ἐπωνομάσαμεν ἀρετὴν καὶ τοῖς ἄλλοις, οὐκ εὐπετὲς ἔτι. Πῶς λέγεις; Οὐδὲν χαλεπὸν ὅ γε λέγω δηλῶσαι· διανειμώμεθα γὰρ ἀλλήλοις τὴν ἐρώτησιν καὶ ἀπόκρισιν. Πῶς αὖ φράζεις; Ἐρώτησόν με, τί ποτε ἓν προσαγορεύοντες ἀρετήν, ἀμφότερα δύο πάλιν αὐτὰ προσείπομεν, τὸ μὲν ἀνδρείαν, τὸ δὲ φρόνησιν. Ἐρῶ γάρ σοι τὴν αἰτίαν, ὅτι τὸ μέν ἐστι περὶ φόβον, οὗ καὶ τὰ θηρία

μετέχει τῆς ἀνδρείας, καὶ τά γε τῶν παίδων ἤθη τῶν πάνυ νέων· ἄνευ γὰρ λόγου καὶ φύσει γίγνεται ἀνδρεία ψυχή· ἄνευ δὲ αὖ λόγου ψυχὴ φρόνιμός τε καὶ νοῦν ἔχουσα οὔτ' ἐγένετο πώποτε οὔτ' ἔστιν οὐδ' αὖθίς ποτε γενήσεται, ὡς ὄντος ἑτέρου. Ἀληθῆ λέγεις.

71 *Πλάτωνος* (?).

Πῶς γάρ, ὦ φίλε, δύναιτο ἄν τις ἀρχόμενος ἀπὸ δόξης ψευδοῦς μηδὲ τῆς ἀληθείας ἐπὶ μικρὸν μέρος ἀφικόμενος, κτήσασθαι σχεδὸν φρόνησιν; Οὐδαμῶς.

72 *Σωκράτους.*

Ὥσπερ εἰς κενὸν σκάφος τὸ ἀπὸ τῆς φρονήσεως ἕρμα δεῖ προσεμβάλλειν.

73 Ὁ φρόνιμος ὥσπερ εἰς ὁδὸν εἰς τὸν βίον οὐ τὰ πολλοῦ ἄξια συντίθησιν ἐφόδια, ἀλλὰ τὰ ἀναγκαιότατα.

74 *Κρίτωνος ἤτοι Δαμίππου Πυθαγορείου ἐκ τοῦ περὶ φρονήσεως καὶ εὐτυχίας.*

Φρόνασις καὶ εὐτυχία ὧδέ ἔχοντι ποτ' ἄλλαλα. φρόνασις μὲν τὸ ῥητὸν καὶ λόγον ἔχον· τεταγμένον γάρ τι καὶ ὡρισμένον ἐντί· εὐτυχία δὲ τὸ ἄρρητον καὶ τὸ ἄλογον· ἄτακτον γάρ τι καὶ ἀόριστόν ἐντι. καὶ τὸ μὲν ἀρχᾷ καὶ δυνάμει πρᾶτον, τὸ δὲ ἀρχᾷ καὶ δυνάμει δεύτερον· τὸ μὲν γὰρ κυβερνῆν καὶ ὁρίζεν πέφυκε, τὸ δὲ κυβερνῆσθαι καὶ ὁρίζεσθαι. λαμβάνοντι μάντοι γε συναρμογὰν ἀμφότερα, φρονάσιος καὶ εὐτυχίας εἰς ταυτὸ συνδραμοίσας. αἰεὶ γὰρ δεῖ τὰν μὲν ῥητὰν καὶ λόγον ἔχοισαν φύσιν ἔχεν ὃ περανεῖ τε καὶ συντάξει, τὰν δὲ ἄρρητον καὶ ἄλογον ἔχεν ὑφ' ὦ περανθήσεταί τε καὶ συνταχθήσεται. ἔχει γὰρ οὕτως

ὁ λόγος κατὰ πάντων, ὅ τε τᾶς ἀπείρου φύσιος καὶ τᾶς περαινοίσας. τὰ μὲν γὰρ ἄπειρα φύσιν ἔχει περαίνεσθαί τε καὶ συντετάχθαι ὑπὸ τῶν λόγον ἐχόντων ἀεὶ καὶ φρόνασιν· ὕλας γὰρ καὶ οὐσίας ἔχοντι τάξιν· τὰ δὲ περαίνοντα ἐξ αὐτέων συντετάχθαι τε καὶ ὡρίσθαι· τέχνας γὰρ καὶ αἰτίας ἐνεργατικᾶς ἐπέχοντι τάξιν.

75 Ἐν ταυτῷ.

Ἁ δὲ συναρμογὰ ταυτᾶν τᾶν φυσίων κατ' ἄλλα καὶ ἄλλα γινομένα μεγάλαν καὶ ποικίλαν πεποίηκε τὰν διαφορὰν τῶν συναρμοσμένων. ἔν τε γὰρ τᾷ τῶ ὅλω περιοχᾷ συναρμογὰ ἀμφοτέρων τᾶν φυσίων, τᾶς τε ἀεικινάτω φύσιος καὶ τᾶς ἀειπαθέος, κόσμος ἐντί· ἄλλως γὰρ οὐκ ἐνεδέχετο σώζεσθαι τό τε ὅλον καὶ τὸ πᾶν, μὴ συναρμογὰν ἔχοντος τῶ γεννατῶ ποτὶ τὸ θεῖον καὶ τῶ ἀειπαθέος ποτὶ τὸ ἀεικίνατον. ἔν τε τῷ ἀνθρώπῳ ἁ συναρμογὰ τῶ ἀλόγω μέρεος τᾶς ψυχᾶς ποτὶ τὸ λόγον ἔχον, ἀρετά. οὔτε γὰρ ἐν τούτοις ἐνδέχεται, στάσιος ἐοίσας ἐν ἀμφοτέροις τοῖς μέρεσιν, ἀποτελεσθῆμεν ἀρετάν. καὶ ἐν πόλει δὲ τῶν μὲν ἀρχομένων ποτὶ τὼς ἄρχοντας ἀποτελεῖ κράτος καὶ ὁμόνοιαν· τὸ μὲν γὰρ ἄρχεν ἴδιον τῶ κρείσσονος, τὸ δ' ἄρχεσθαι ἔργον τῶ χείρονος, τὸ δὲ κρατὲν καὶ ὁμονοὲν κοινὸν ἀμφοτέρων. ὁ δὲ αὐτὸς τρόπος τᾶς ἐπὶ τῶ ὅλω καὶ τᾶς ἐπὶ τῶ οἴκω συναρμογᾶς· συντίθεταί τε καὶ συντάσσεται, σπωδᾶς καὶ παιδιᾶς ποτὶ λόγον ἐς τὸ αὐτὸ συνδραμοίσας, καὶ λύπας δὲ καὶ ἁδονᾶς καὶ εὐτυχίας καὶ ἀτυχίας. χρῄζει γὰρ ὁ βίος τυγχάνεν καὶ ἀνέσιος καὶ ἐπιτάσιος, καὶ σκυθρωπότατος καὶ διαχύσιος, καὶ εὐτυχίας καὶ ἀτυχίας. ἃ μὲν γὰρ συνέχεν καὶ συνάγεν δύναται τὸν νόον ἐς τὰν εὐμαχα-

νίαν καὶ ἐς τὰν φρόνασιν, ἃ δ' ἄμπαυσιν καὶ διάχυσιν παρεχόμενα καινότερον καὶ εὔψυχον αὐτὸν αὖ παρασκευάζοντι ποτὶ τὰς πράξιας. εἰ δὲ καὶ τὸ ἓν τούτων ἐνδυναστεύοι κατὰ τὸν βίον, ἑτερομερής τε καὶ ἑτεροκλινὴς γίνεται ὁ βίος, ὅκα μὲν ἐπὶ τὸ σκυθρωπόν τε καὶ χαλεπὸν καταφερόμενος, ὅκα δὲ ἐπὶ τὸ ἀνειμένον καὶ κοῦφον· ἁ δὲ συναρμογὰ τούτων ἁπάντων ὀφείλει γίνεσθαι ποτὶ τὰν φρόνασιν· αὐτὰ γὰρ ἁ διενεργοῦσα ἐντὶ τό τε ἄπειρον καὶ τὸ περαῖνον ἐν ταῖς πράξεσι, διόπερ καὶ τᾶν ἄλλαν ἀρετᾶν αὕτα ἁγεμών ἐντι καὶ μάτηρ. πᾶσαι γὰρ ποτὶ τὸν λόγον καὶ νόμον τὸν ταύτας συναρμοσμέναι τε καὶ συντεταγμέναι τυγχάνοντι. περαίνεται δὴ ὁ λόγος ἤδη μοι κατ' εὐθεῖαν· τὸ γὰρ ἄλογον καὶ τὸ ῥητὸν ἐν πᾶσιν ἔνι, καὶ τὸ μὲν ὁρίζει καὶ περαίνει, τὸ δ' ὁρίζεται καὶ περαίνεται, τὸ δ' ἐξ ἀμφοτέρων αὐτῶν συγκείμενον ἅ τε τῶ ὅλω καὶ τῶ παντὸς συναρμογά ἐντι.

76 Ἀρχύτα Πυθαγορείου ἐκ τοῦ περὶ ἀνδρὸς ἀγαθοῦ καὶ εὐδαίμονος.

Φρόνιμος δὲ ἀνὴρ οὕτως ἂν μάλιστα γένοιτο, εἰ φύσιος πρᾶτον εὐστόχω τε καὶ μναμονικᾶς καὶ φιλοπόνω τυχὼν ἐν λογισμοῖς τε καὶ μαθημάτεσσι καὶ ταῖς ποτ' ἀκρίβειαν θεωρίαις εὐθὺς ἐκ νέων γυμνάσαιτο τὰν διάνοιαν φιλοσοφίας ἁπτόμενος ὀρθᾶς, μετὰ δὲ ταύτας θεῶν τε καὶ νόμων καὶ βίων ἀνθρωπίνων ἐμπειρίαν λάβοι. δύο γάρ ἐντι ἐξ ὧν τῶ φρονίμω διάθεσις παραγίνεται, ὧν τὸ μέν ἐντι ἕξιν μαθηματικάν τε καὶ γνωστικὰν λαβέν, τὸ δὲ θεωρήματα καὶ πράγματα πολλὰ ἐπελθόντα, τὰ μὲν καὶ αὐτὸν ἰδόντα τὰ δὲ καὶ δι' ἑτέρω τινὸς τρόπω κατανοήσαντα. οὔτε γὰρ ὁ ἐν λογισμοῖς καὶ μαθημάτεσσι καὶ ταῖς ποτ' ἀκρί-

βειαν θεωρίαις εὐθὺς ἐκ νέων γυμνάσας τὰν διάνοιαν ἱκανός ἐντι ποτὶ φρόνασιν, οὔθ' ὁ τούτων μὲν ἀπολειφθείς, ἐν ἀκροαμάτεσσι δὲ πολλοῖς καὶ πραγμάτεσσιν ἀναστρεφθείς. ἀλλ' ὃ μὲν ἐν τῷ καθ' ἕκαστα κρίνεν τυφλὸς ἐγένετο τὰν διάνοιαν, ὃ δ' ἐν τῷ καθόλω θεωρὲν ἀεί. καθάπερ γὰρ ἐπὶ τῶν λογισμῶν τὰ μέρεα συντιθέντας τὸ ὅλον ἐξ αὐτῶν λογίζεσθαι, οὕτω καὶ ἐπὶ τῶν πραγμάτων δύναται ὁ μὲν λόγος τὰν καθόλω θεωρίαν ὑπογράφεν, ἁ δ' ἐμπειρία καθ' ἕκαστα κρίνεν.

77 Ἐπικτήτου.

Οὐδεὶς φιλοχρήματος καὶ φιλήδονος καὶ φιλόδοξος φιλάνθρωπος, ἀλλὰ μόνος ὁ φιλόκαλος.

78 Ὥσπερ οὐκ ἂν ἐβούλου ἐν νηῒ μεγάλῃ καὶ γλαφυρᾷ καὶ πολυχρύσῳ πλέων βαπτίζεσθαι, οὕτω μηδὲ ἐν οἰκίᾳ αἱροῦ ὑπερμεγέθει καὶ πολυτελεῖ αὐλιζόμενος χειμάζεσθαι.

79 Δημητρίου Φαληρέως τῶν ἑπτὰ σοφῶν ἀποφθέγματα.

α. Κλεόβουλος Εὐαγόρου Λίνδιος ἔφη.

Μέτρον ἄριστον. Πατέρα δεῖ αἰδεῖσθαι. Εὖ τὸ σῶμα ἔχειν καὶ τὴν ψυχήν. Φιλήκοον καὶ μὴ πολυήκοον. Ὀψιμαθῆ ἢ ἀμαθῆ. Γλῶσσαν εὔφημον κεκτῆσθαι. Ἀρετῆς οἰκεῖον [καὶ κακίας ἀλλότριον] ἀδικίαν μισεῖν. Εὐσέβειαν φυλάσσειν. Πολίταις τὰ βέλτιστα συμβουλεύειν. Γλώττης κρατεῖν. Βίᾳ μηδὲν πράττειν. Τέκνα παιδεύειν. Τύχῃ εὔχεσθαι. Ἔχθρας διαλύειν. Τὸν τοῦ δήμου ἐχθρὸν πολέμιον νομίζειν. Γυναικὶ μὴ μάχεσθαι μηδὲ ἄγαν φρονεῖν ἀλλοτρίων παρόντων· τὸ μὲν γὰρ ἐστι χέρηον, τὸ δὲ

μανίαν δύναται παρέχειν. Οἰκέτας μεθύοντας μὴ κολάζειν· εἰ δὲ μή, δόξεις καὶ αὐτὸς παροινεῖν. Γαμεῖν ἐκ τῶν ὁμοίων· ἐὰν γὰρ ἐκ τῶν κρειττόνων, δεσπότας, οὐ συγγενεῖς κτήσῃ. Μὴ ἐπιγέλα τῷ σκώπτοντι· ἀπεχθὴς γὰρ ἔσῃ τοῖς σκωπτομένοις. Εὐποροῦντα μὴ ὑπερήφανον εἶναι, ἀποροῦντα μὴ ταπεινοῦσθαι.

β. Σόλων Ἐξηκεστίδου Ἀθηναῖος ἔφη.

Μηδὲν ἄγαν. Κριτὴς μὴ κάθησο· εἰ δὲ μή, τῷ ληφθέντι ἐχθρὸς ἔσῃ. Ἡδονὴν φεῦγε ἥτις λύπην τίκτει. Φύλασσε τρόπου καλοκαγαθίαν ὅρκου πιστοτέραν. Σφράγιζε τοὺς μὲν λόγους σιγῇ, τὴν δὲ σιγὴν καιρῷ. Μὴ ψεύδου, ἀλλ' ἀλήθευε. Τὰ σπουδαῖα μελέτα. Τῶν γονέων μὴ λέγε δικαιότερα. Φίλους μὴ ταχὺ κτῶ, οὓς δ' ἂν κτήσῃ, μὴ ταχὺ ἀποδοκίμαζε. Ἄρχεσθαι μαθὼν ἄρχειν ἐπιστήσῃ. Εὐθύνας ἑτέρους ἀξιῶν διδόναι καὶ αὐτὸς ὕπεχε. Συμβούλευε μὴ τὰ ἥδιστα ἀλλὰ τὰ βέλτιστα τοῖς πολίταις. Μὴ θρασύνου. Μὴ κακοῖς ὁμίλει. Χρῶ τοῖς θεοῖς. Φίλους εὐσέβει. Γονεῖς αἰδοῦ. Νοῦν ἡγεμόνα ποιοῦ. Ὃ δ' ἂν ἴδῃς μὴ λέγε. Εἰδὼς σίγα. Τοῖς σεαυτοῦ πρᾶος ἴσθι. Τὰ ἀφανῆ τοῖς φανεροῖς τεκμαίρου.

γ. Χίλων υἱὸς Δαμαγήτου Λακεδαιμόνιος ἔφη.

Γνῶθι σαυτόν. Πίνων μὴ πολλὰ λάλει· ἁμαρτήσεις γάρ. Μὴ ἀπείλει τοῖς ἐλευθέροις· οὐ γὰρ καλόν. Μὴ κακολόγει τοὺς πλησίον· εἰ δὲ μή, ἀκούσῃ ἐφ' οἷς λυπηθήσῃ. Ἐπὶ τὰ δεῖπνα τῶν φίλων βραδέως πορεύου, ἐπὶ δὲ τὰς ἀτυχίας ταχέως. Γάμους εὐτελεῖς ποιοῦ. Τὸν τετελευτηκότα μακάριζε. Πρεσβύτερον σέβου. Τὸν τὰ ἀλλότρια περιεργαζόμενον

μίσει. Ζημίαν αἱροῦ μᾶλλον ἢ κέρδος αἰσχρόν· τὸ μὲν γὰρ ἅπαξ σε λυπήσει, τὸ δ' ἀεί. Τῷ δυστυχοῦντι μὴ ἐπιγέλα. Τραχέσιν ἥσυχον σεαυτὸν πάρεχε, ὅπως σε αἰσχύνωνται μᾶλλον ἢ φοβῶνται. Τῆς ἰδίας οἰκίας προστάτει. Ἡ γλῶσσά σου μὴ προτρεχέτω τοῦ νοῦ. Θυμοῦ κράτει. Μὴ ἐπιθύμει ἀδύνατα. Ἐν ὁδῷ μὴ σπεῦδε προάγειν μηδὲ τὴν χεῖρα κινεῖν· μανικὸν γάρ. Νόμοις πείθου. Ζημίᾳ χρῶ. Ἀδικούμενος διαλλάσσου, ὑβριζόμενος τιμωροῦ.

δ. Πιττακὸς Μυτιληναῖος.

Ἐγγύη, παρὰ δ' ἄτη. Φίλων παρόντων καὶ ἀπόντων μέμνησο. Μὴ τὴν ὄψιν καλλωπίζου, ἀλλ' ἐν τοῖς ἐπιτηδεύμασιν ἴσθι καλός. Μὴ πλούτει κακῶς. Μή σε διαβαλλέτω λόγος εἰς τοὺς πίστεως κεκοινωνηκότας. Κολακεύειν γονεῖς μὴ ὄκνει. Μὴ προσδέχου τὸ φαῦλον. Οἵους ἂν ἐράνους εἰσενέγκῃς τοῖς γονεῦσι, τοιούτους αὐτὸς ἐν τῷ γήρᾳ παρὰ τῶν τέκνων προσδέχου. Χαλεπὸν τὸ εὖ γνῶναι. Ἥδιστον τὸ ἐπιθυμίας τυχεῖν. Ἀνιαρὸν ἀργία. Βλαβερὸν ἀκρασία. Βαρὺ ἀπαιδευσία. Δίδασκε καὶ μάνθανε τὸ ἄμεινον. Ἀργὸς μὴ ἴσθι μηδ' ἂν πλουτῇς. Κακὰ ἐν οἴκῳ κρύπτε. Φθόνου χάριν μὴ οἰκτείρου. Μέτρῳ χρῶ. Μὴ πᾶσι πίστευε. Ἄρχων κόσμει σεαυτόν.

ε. Θαλῆς ὁ Μιλήσιος.

Καιρὸν γνῶθι. Ὃ μέλλεις ποιεῖν, μὴ λέγε· ἀποτυχὼν γὰρ καταγελασθήσῃ. Τοῖς ἐπιτηδείοις χρῶ. Ὅσα νεμεσᾷς τῷ πλησίον, αὐτὸς μὴ ποίει. Κακοπραγοῦντα μὴ ὀνείδιζε· ἐπὶ γὰρ τούτοις νέμεσις θεῶν κάθηται. Παρακαταθήκας ἀπόδος. Ἀνέχου ὑπὸ τῶν πλησίον [μικρά. Ἀγάπα τὸν πλησίον] μικρὰ ἐλατ-

τούμενος. Τὸν φίλον κακῶς μὴ λέγε, μὴ δ' εὖ τὸν ἐχθρόν· ἀσυλλόγιστον γὰρ τὸ τοιοῦτον. Δεινὸν τὸ συνιδεῖν τὸ μέλλον. Ἀσφαλὲς τὸ γενόμενον, ἀσαφὲς τὸ μέλλον. Πιστὸν γῆ, ἄπιστον θάλασσα, ἄπληστον κέρδος. Κτῆσαι ἀίδια. Θεραπείαν ζήτει. Φίλει τὴν παιδείαν σωφροσύνην φρόνησιν ἀλήθειαν πίστιν ἐμπειρίαν ἐπιδεξιότητα ἑταιρείαν ἐπιμέλειαν οἰκονομίαν τέχνην εὐσέβειαν.

ζ. Βίας Τευτάμου Πριηνεὺς ἔφη.

Οἱ πλεῖστοι ἄνθρωποι κακοί. Ἐς τὸ ἔσοπτρον ἐμβλέψαντα δεῖ, εἰ μὲν καλὸς φαίνῃ, καλὰ ποιεῖν, εἰ δὲ αἰσχρός, τὸ τῆς φύσεως ἐλλιπὲς διορθοῦσθαι τῇ καλοκαγαθίᾳ. Βραδέως ἐγχείρει, ὃ δ' ἂν ἄρξῃ διαβεβαιοῦ. Μίσει τὸ ταχὺ λαλεῖν, μὴ ἁμάρτῃς· μετάνοια γὰρ ἀκολουθεῖ. Μήτε εὐήθης ἴσθι μήτε κακοήθης. Ἀφροσύνην μὴ προσδέχου. Φρόνησιν ἀγάπα. Περὶ θεῶν λέγε ὡς εἰσὶ θεοί. Νόει τὸ πραττόμενον. Ἄκουε πολλά. Λάλει καίρια. Πένης ὢν πλουσίοις μὴ ἐπιτίμα, ἢν μὴ μέγα ὠφελῇς. Ἀνάξιον ἄνδρα μὴ ἐπαίνει διὰ πλοῦτον. Πείσας λάβε, μὴ βιασάμενος. Ὅταν ἀγαθὸν πράσσῃς, θεούς, μὴ σεαυτὸν αἰτιῶ. Κτῆσαι ἐν μὲν νεότητι εὐπραξίαν, ἐν δὲ τῷ γήραι σοφίαν. Ἕξεις ἔργῳ μνήμην, καιρῷ εὐλάβειαν, τρόπῳ γενναιότητα, πόνῳ ἐγκράτειαν, φόβῳ εὐσέβειαν, πλούτῳ φιλίαν, λόγῳ πειθώ, σιγῇ κόσμον, γνώμῃ δικαιοσύνην, τόλμῃ ἀνδρείαν, πράξει δυναστείαν, δόξῃ ἡγεμονίαν, φύσει εὐγένειαν.

η. Περίανδρος Κυψέλου Κορίνθιος ἔφη.

Μελέτα τὸ πᾶν. Καλὸν ἡσυχία. Ἐπισφαλὲς προπέτεια. Κέρδος αἰσχρὸν φύσεως κατηγορία. Δημο-

κρατία κρεῖττον τυραννίδος. Αἱ μὲν ἡδοναὶ θνηταί, αἱ δ' ἀρεταὶ ἀθάνατοι. Εὐτυχῶν μὲν μέτριος ἴσθι, ἀτυχῶν δὲ φρόνιμος. Φειδόμενον κρεῖττον ἀποθανεῖν ἢ ζῶντα ἐνδεῖσθαι. Σεαυτὸν ἄξιον παρασκεύαζε τῶν γονέων. Ζῶν μὲν ἐπαινοῦ, ἀποθανὼν δὲ μακαρίζου. Φίλοις εὐτυχοῦσι καὶ ἀτυχοῦσιν ὁ αὐτὸς ἴσθι. Ὃν ἂν ἑκὼν ὁμολογήσῃς πονηρόν, παράβαινε. Λόγων ἀπορρήτων ἐκφορὰν μὴ ποιοῦ. Λοιδόρει ὡς ταχὺ φίλος ἐσόμενος. Τοῖς μὲν νόμοις παλαιοῖς χρῶ, τοῖς δ' ὄψοις προσφάτοις. Μὴ μόνον τοὺς ἁμαρτάνοντας κόλαζε, ἀλλὰ καὶ τοὺς μέλλοντας κώλυε. Δυστυχῶν κρύπτε, ἵνα μὴ τοὺς ἐχθροὺς εὐφράνῃς.

80 *Σωσιάδου τῶν ἑπτὰ σοφῶν ὑποθῆκαι.*

Ἕπου θεῷ. Νόμῳ πείθου. Θεοὺς σέβου. Γονεῖς αἰδοῦ. Ἡττῶ ὑπὲρ δικαίου. Γνῶθι μαθών. Ἀκούσας νόει. Σαυτὸν ἴσθι. Γαμεῖν μέλλων καιρὸν γνῶθι. Φρόνει θνητά. Ξένος ὢν ἴσθι. Ἑστίαν τίμα. Ἄρχε σεαυτοῦ. Φίλοις βοήθει. Θυμοῦ κράτει. Φρόνησιν ἄσκει. Πρόνοιαν τίμα. Ὅρκῳ μὴ χρῶ. Φιλίαν ἀγάπα. Παιδείας ἀντέχου. Δόξαν δίωκε. Σοφίαν ζήλου. Καλὸν εὖ λέγε. Ψέγε μηδένα. Ἐπαίνει ἀρετήν. Πρᾶττε δίκαια. Φίλοις εὐνόει. Ἐχθροὺς ἀμύνου. Εὐγένειαν ἄσκει. Κακίας ἀπέχου. Κοινὸς γίνου. Ἴδια φύλασσε. Ἀλλοτρίων ἀπέχου. Εὔφημος ἴσθι. Ἄκουε πάντα. Φίλῳ χαρίζου. Μηδὲν ἄγαν. Χρόνου φείδου. Ὅρα τὸ μέλλον. Ὕβριν μίσει. Ἱκέτας αἰδοῦ. Πᾶσιν ἁρμόζου. Υἱοὺς παίδευε. Ἔχων χαρίζου. Δόλον φοβοῦ. Εὐλόγει πάντας. Φιλόσοφος γίνου. Ὅσια κρῖνε. Γνοὺς πρᾶττε. Φόνου ἀπέχου. Εὔχου δυνατά. Σοφοῖς χρῶ. Ἦθος δοκίμαζε. Λαβὼν ἀπόδος. Ὑφορῶ μηδένα. Τέχνῃ χρῶ. Ὃ μέλ-

λεις, δός. Εὐεργεσίας τίμα. Φθόνει μηδενί. Φυλακῇ πρόσεχε. Ἐλπίδα αἴνει. Διαβολὴν μίσει. Δικαίως κτῶ. Ἀγαθοὺς τίμα. Κριτὴν γνῶθι. Γάμους κράτει. Τύχην νόμιζε. Ἐγγύην φεῦγε. Πᾶσι διαλέγου. Ὁμοίοις χρῶ. Δαπανῶν ἄρχου. Κτώμενος ἥδου. Αἰσχύνην σέβου. Χάριν ἐκτέλει. Εὐτυχίαν εὔχου. Τύχην στέργε. Ἀκούων ὅρα. Ἐργάζου κτητά. Ἔριν μίσει. Ὄνειδος ἔχθαιρε. Γλῶσσαν ἴσχε. Ὕβριν ἀμύνου. Κρῖνε δίκαια. Χρῶ χρήμασιν. Ἀδωροδόκητος δοκίμαζε. Αἰτιῶ παρόντα. Λέγε εἰδώς. Βίας μὴ ἔχου. Ἀλύπως βίου. Ὁμίλει πράως. Πέρας ἐπιτέλει μὴ ἀποδειλιῶν. Φιλοφρόνει πᾶσιν. Υἱοῖς μὴ καταρῶ. Γλώττης ἄρχε. Σεαυτὸν εὖ ποίει. Εὐπροσήγορος γίνου. Ἀποκρίνου ἐν καιρῷ. Πόνει μετὰ δικαίου. Πρᾶττε ἀμετανοήτως. Ἁμαρτάνων μετανόει. Ὀφθαλμοῦ κράτει. Βουλεύου χρόνῳ. Ἐπιτέλει συντόμως. Φιλίαν φύλασσε. Εὐγνώμων γίνου. Ὁμόνοιαν δίωκε. Ἄρρητον μὴ λέγε. Τὸ κρατοῦν φοβοῦ. Τὸ συμφέρον θηρῶ. Καιρὸν προσδέχου. Ἔχθρας διάλυε. Γῆρας προσδέχου. Ἐπὶ ῥώμῃ μὴ καυχῶ. Εὐφημίαν ἄσκει. Ἀπέχθειαν φεῦγε. Πλούτει δικαίως. Δόξαν μὴ λεῖπε. Κακίαν μίσει. Μανθάνων μὴ κάμνε. Κινδύνευε φρονίμως. Φειδόμενος μὴ λεῖπε. Χρησμοὺς θαύμαζε. Οὓς τρέφεις, ἀγάπα. Ἀπόντι μὴ μάχου. Πρεσβύτερον αἰδοῦ. Νεώτερον δίδασκε. Πλούτῳ ἀπίστει. Σεαυτὸν αἰδοῦ. Μὴ ἄρχε ὑβρίζειν. Προγόνους στεφάνου. Θνῆσκε ὑπὲρ πατρίδος. Τῷ βίῳ μὴ μάχου. Ἐπὶ νεκρῷ μὴ γέλα. Ἀτυχοῦντι συνάχθου. Χαρίζου ἀβλαβῶς. Μὴ ἐπὶ παντὶ λυποῦ. Ἐξ εὐγενῶν γέννα. Ἐπαγγέλλου μηδενί. Φθιμένους μὴ ἀδίκει. Εὖ πάσχε ὡς θνητός. Τύχῃ μὴ πίστευε. Παῖς ὢν κόσμιος ἴσθι, ἡβῶν ἐγ-

κρατής, μέσος δίκαιος, πρεσβύτερος εὔλογος. Τελεύτα ἄλυπος. [Πλήθει ἄρεσκε. Μὴ λάλει πρὸς ἡδονήν. Ὁμολογίαις ἔμμενε. Θυσίας πρόσφερε κατὰ δύναμιν. Σεαυτῷ μὴ μάχου. Μὴ ἐπὶ παντὶ λυποῦ. Τῷ βίῳ μὴ ἄχθου. μὴ φιλαίτιος ἴσθι. Ἐπαγγέλλου μηδενὶ τὸ παράπαν. Χρόνου φείδου. Ἐνδαπανώμενος καὶ ἐφ' ἃ μὴ δεῖ, ὀλίγος ἔσῃ ἐφ' ἃ δεῖ.]

81 *Ἡρακλείτου.*

Ὁκόσων λόγους ἤκουσα, οὐδεὶς ἀφικνέεται ἐς τοῦτο, ὥστε γινώσκειν ὅτι σοφόν ἐστι πάντων κεχωρισμένον.

82 *Κρύπτειν ἀμαθίην κρέσσον ἢ ἐς τὸ μέσον φέρειν.*

83 *Ἀνθρώποις γίνεσθαι ὁκόσα θέλουσιν οὐκ ἄμεινον.*

84 *Νοῦσος ὑγιείην ἐποίησεν, ἡδὺ καὶ ἀγαθόν, λιμὸς κόρον, κάματος ἀνάπαυσιν. σωφρονεῖν ἀρετὴ μεγίστη, καὶ σοφίη ἀληθέα λέγειν καὶ ποιέειν κατὰ φύσιν ἐπαΐοντας. ξυνόν ἐστι πᾶσι τὸ φρονέειν. ξὺν νόῳ λέγοντας ἰσχυρίζεσθαι χρὴ τῷ ξυνῷ πάντων. ὅκως περ νόμῳ πόλις, καὶ πόλις ἰσχυροτέρως. τρέφονται γὰρ πάντες οἱ ἀνθρώπινοι νόμοι ὑπὸ ἑνὸς τοῦ θείου· κρατέει γὰρ τοσοῦτον ὁκόσον ἐθέλει, καὶ ἐξαρκέει πᾶσι καὶ περιγίνεται.*

85 *Σωκράτους.*

Ψυχῆς ἐστὶ λόγος ἑαυτὸν αὔξων. Ἐν τῷ βίῳ, καθάπερ ἐν δράματι, χρὴ τὰ πρῶτα λέγειν οὐ τὸν πλουσιώτατον, ἀλλὰ τὸν φρονιμώτατον.

86 *Σωκράτους.*

Καλὸν ἐπὶ μὲν τῆς ἑστίας φαίνεσθαι τὸ πῦρ λαμπρόν, ἐπὶ δὲ τῆς εὐτυχίας τὸν νοῦν.

87 *Δεῖ ὥσπερ εὐνομουμένης τῆς πόλεως φυγαδεύειν στασιαστὴν ἄνθρωπον, οὕτως ἐκ τῆς σωθησομένης ψυχῆς τὸν πρὸς τὰ φαῦλα κεκλικότα νοῦν.*

88 *Πλάτωνος* (Gorg. 448 c).

Πολλαὶ τέχναι ἐν ἀνθρώποις εἰσὶν ἐκ τῶν ἐμπειριῶν ἐμπείρως εὑρημέναι. ἐμπειρία μὲν γὰρ ποιεῖ τὸν αἰῶνα ἡμῶν πορεύεσθαι κατὰ τέχνην· ἀπειρία δὲ κατὰ τύχην. ἑκάστων δὲ τούτων μεταλαμβάνουσιν ἄλλοι ἄλλων ἄλλως· τῶν δὲ ἀρίστων οἱ ἄριστοι.

89 *Σὺ δὲ δὴ πρὸς θεῶν, ὦ παῖ, δυνατὸν ἡγεῖ τοῦτο; τάχα γὰρ ὑμεῖς μὲν ὀξύτερον οἱ νέοι πρὸς αὐτὸ βλέποιτε, ἡμεῖς δὲ ἀμβλύτερον. Τὸ ποῖον καὶ πρὸς τί μάλιστα λέγεις; οὐ γάρ πω κατανοῶ τὸ νῦν ἐρωτώμενον. Εἰ πάντα ἐπίστασθαί τινα ἄνθρωπόν ἐστι δυνατόν; Μακάριον μέντ' ἂν ἡμῶν, ὦ ξένε, ἦν τὸ γένος.* (Plato Soph. 232 e).

90 *Σωκράτους.*

Οὔτε ἵππῳ χωρὶς χαλινοῦ οὔτε πλούτῳ χωρὶς λογισμοῦ δυνατὸν ἀσφαλῶς χρήσασθαι.

91 *Ὁ βίος ὥσπερ ὄργανον ἀνέσει καὶ ἐπιτάσει ἁρμοττόμενος ἡδίων γίνεται.*

92 *Ἐπαινεῖν χρὴ τὸ κατὰ τέχνην γινόμενον.*

93 *Πλάτωνος* (?).

Μάλιστα ἐπιμελεῖσθαι χρή, ὅπως ἕκαστος ἡμῶν τῶν ἄλλων μαθημάτων ἀμελήσας τούτου τοῦ μαθήματος καὶ μιμητὴς καὶ μαθητὴς ἔσται, ἐάν ποθεν οἷός τ' ᾖ μαθεῖν καὶ ἐξευρεῖν τίς αὐτὸν ποιήσει δυνατὸν καὶ ἐπιστήμονα, βίον χρηστὸν καὶ πονηρὸν διαγινώσκοντα τὰ βελτίω ἐκ τῶν δυνατῶν ἀεὶ πανταχοῦ αἱρεῖσθαι.

94 *Τοῦ αὐτοῦ ἐκ τῶν Κλειτοφῶντος* (407 e).

Καὶ ὅταν λέγῃς ὡς ὅτῳ τὶς μὴ ἐπίσταται χρῆσθαι, κρεῖττον ἐᾶν τὴν τούτου χρῆσιν. εἰ δή τις μὴ ἐπίσταται ὀφθαλμοῖς χρῆσθαι μηδὲ ὠσὶ μηδὲ ξύμπαντι τῷ σώματι, τούτῳ μήτε ἀκούειν μήθ' ὁρᾶν μήτε ἄλλην χρείαν μηδεμίαν χρῆσθαι τῷ σώματι κρεῖττον ἢ ὁπηοῦν χρῆσθαι. καὶ δὴ καὶ περὶ τέχνην ὡσαύτως· ὅστις γὰρ ἂν δὴ μὴ ἐπίσταται τῇ ἑαυτοῦ λύρᾳ χρῆσθαι, δῆλον ὡς οὐδὲ τῇ τοῦ γείτονος, οὐδὲ ὅστις μὴ τῇ τῶν ἄλλων, οὐδὲ τῇ ἑαυτοῦ, οὐδὲ τῶν ὀργάνων ἄλλῳ οὐδὲ κτημάτων οὐδενί. καὶ τελευτᾷ δὴ καλῶς ὁ λόγος οὗτός σοι, ὡς ὅστις ψυχῇ μὴ ἐπίσταται χρῆσθαι, τούτῳ τὸ ἄγειν ἡσυχίαν τῇ ψυχῇ, καὶ μὴ ζῆν κρεῖττον ἢ ζῆν πράττοντι καθ' αὑτόν· εἰ δέ τις ἀνάγκη ζῆν εἴη, δούλῳ ἄμεινον ἢ ἐλευθέρῳ διάγειν τῷ τοιούτῳ τὸν βίον.

95 *Τοῦ αὐτοῦ Ἀλκιβιάδου* (146 c).

Οὐκ οὖν φαμὲν πάλιν τοὺς πολλοὺς διημαρτηκέναι τοῦ βελτίστου, ὡς τὰ πολλά γε, οἶμαι, ἄνευ νοῦ δόξῃ πεπιστευκότας; Φαμὲν γάρ. Λυσιτελεῖ ἄρα τοῖς πολλοῖς μήτε εἰδέναι μηδὲν μήτε οἴεσθαι εἰδέναι, εἴπερ γε προθυμήσονται μᾶλλον πράττειν ταῦθ' ἅττ' ἂν εἰδῶσιν ἢ οἰηθῶσιν εἰδέναι, πράττοντες δὲ βλάπτεσθαι τὰ πλείω μᾶλλον ἢ ὠφελεῖσθαι. Ἀληθέστατα λέγεις. Ὁρᾷς οὖν ὅτε γ' ἔφην κινδυνεύειν τότε τῶν ἄλλων ἐπιστημῶν κτῆμα, ἐάν τις ἄνευ τῆς τοῦ βελτίστου ἐπιστήμης κεκτημένος ᾖ, ὀλιγάκις μὲν ὠφελεῖν, βλάπτειν δὲ τὰ πλείω τὸν ἔχοντα αὐτό, ἆρ' οὐχὶ τῷ ὄντι ὀρθῶς ἐφαινόμην λέγων; Καὶ εἰ μὴ τότε, ἀλλὰ νῦν μοι δοκεῖ, ὦ Σώκρατες. Δεῖ ἄρα καὶ πόλιν καὶ ψυχὴν τὴν μέλλουσαν ὀρθῶς βιώσεσθαι

ταύτης τῆς ἐπιστήμης ἀντέχεσθαι, ἀτεχνῶς ὥσπερ ἀσθενοῦντα ἰατροῦ ἢ τινὸς κυβερνήτου τὸν ἀσφαλῶς μέλλοντα πλεῖν.

96 Φρόνησις, δύναμις ποιητικὴ καθ' αὑτὴν τῆς ἀνθρώπου εὐδαιμονίας· διάθεσις, καθ' ἣν κρίνομεν τί πρακτέον καὶ τί οὐ πρακτέον· ἐπιστήμη ἀγαθῶν καὶ κακῶν· ἐπιστήμη ποιητικὴ εὐδαιμονίας. (Plat. Defin. 411 d.)

97 Ἐπίστασαί τινας ἤδη βλαβέντας ὑπὸ ἐχθρῶν; Πῶς γὰρ οὔ; Τί δέ; ὑπὸ τῶν καλουμένων φίλων καὶ συνηθῶν ἢ καὶ ὑπὸ συγγενῶν τινων; ἐνίους καὶ ὑπὸ τῶν ἔγγιστα, ἀδελφῶν ἢ υἱῶν ἢ πατέρων; Ἔγωγε πολλούς. Τίς οὖν ἡ αἰτία, δι' ἣν οὐ μόνον οἱ ἐχθροὶ τοὺς ἐχθροὺς ἀδικοῦσιν, ἀλλὰ καὶ οἱ λεγόμενοι φίλοι ἀλλήλους, καὶ νὴ Δία πολλοὶ καὶ τῶν ὄντως ἀναγκαίων; Δῆλον ὡς ἡ κακία τῶν ἀνθρώπων, ὑφ' ἧς ἕκαστος, οἶμαι, καὶ αὐτὸς αὑτῷ ἐστὶ βλαβερός. Πάντας ἄρα τοὺς φίλους φυλάττεσθαι δεῖ καὶ μὴ πιστεύειν μηδὲν μᾶλλον, κἂν φίλος ἢ συνήθης ἢ αἵματος ἐγγὺς εἶναι δοκῇ; Πάντας, ὡς ὁ λόγος οὗτος φησίν. Οὐκ οὖν ὀρθῶς ἔγραψεν ὁ γράψας τοῦτο τὸ ἔπος, "νᾶφε καὶ μέμνησ' ἀπιστεῖν· ἄρθρα ταῦτα τῶν φρενῶν"; Ἴσως ὀρθῶς. (Dio Chrys. Or. 74, 1 p. 739 Emp.)

ΠΕΡΙ ΑΦΡΟΣΥΝΗΣ. Δ.

1 *Σοφοκλέους.*

Ἀλλ' οἱ κακῶς πράσσοντες οὐ κωφοὶ μόνον,
ἀλλ' οὐδ' ὁρῶντες εἰσορῶσι τἀμφανῆ.

2 *Εὐριπίδου.*

Τὸ μὴ εἰδέναι σε μηδὲν ὧν ἁμαρτάνεις
ἔκκαυμα τόλμης ἱκανόν ἐστι καὶ θράσους.

3 *Ἡσιόδου* (Op. 210).

Ἄφρων δ᾽ ὅς κε θέλῃ πρὸς κρείσσονας ἀντιφερίζειν,
νίκης τε στέρεται πρός τ᾽ αἴσχεσιν ἄλγεα πάσχει.

4 *Μενάνδρου.*

Ἄνοια θνητοῖς δυστύχημ᾽ αὐθαίρετον.

5 *Σοφοκλέους.*

Ὡς δυσπέλαστον ἀμαθία κακόν.

6 *Μενάνδρου.*

Τί σαυτὸν ἀδικῶν τὴν τύχην καταιτιᾷ;

7 *Τοῦ αὐτοῦ Στρατιώταις.*

Οὐδεὶς ξύνοιδεν ἐξαμαρτάνων πόσον
ἁμαρτάνει τὸ μέγεθος, ὕστερον δ᾽ ὁρᾷ.

8 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Χαλεπόν γε τοιαῦτ᾽ ἐστὶν ἐξαμαρτάνειν,
ἃ καὶ λέγειν ὀκνοῦμεν οἱ πεπραχότες.

9 *Εὐριπίδου Ἰνοῦς.*

Πολλοί γε θνητῶν τῷ θράσει τὰς συμφορὰς
ζητοῦσ᾽ ἀμαυροῦν κἀποκρύπτεσθαι κακά.

10 *Εὐριπίδου Τημενίδαις.*

Ἀσύνετος ὅστις ἐν φόβῳ μὲν ἀσθενής,
λαβὼν δὲ μικρὸν τῆς τύχης φρονεῖ μέγα.

11 *Τοῦ αὐτοῦ Αἰόλῳ.*

Κακῆς ἀπ᾽ ἀρχῆς γίνεται τέλος κακόν.

12 *Σαπφοῦς πρὸς ἀπαίδευτον γυναῖκα.*

Κατθανοῖσα δὲ κείσεαι, οὐδέποκα μναμοσύνα σέθεν
ἔσσετ᾽ οὐδέποκα ὕστερον· οὐ γὰρ πεδέχεις ῥόδων
τῶν ἐκ Πιερίας· ἀλλ᾽ ἀφανὴς κὴν Ἀίδα δόμοις
φοιτάσεις πεδ᾽ ἀμαυρῶν νεκύων ἐκπεποταμένα.

13 *Μενάνδρου.*
Τυφλόν τι τἀνόητον εἶναί μοι δοκεῖ.

14 *Χαιρήμονος.*
Οὐ ζῶσιν οἵ τι μὴ συνιέντες σοφόν.

15 *Τοῦ αὐτοῦ.*
Πρὶν γὰρ φρονεῖν καταφρονεῖν ἐπίστασαι.

16 *Αἰσχύλου.*
Οὐ χρὴ ποδώκη τὸν τρόπον λίαν φορεῖν.
σφαλεὶς γὰρ οὐδεὶς εὖ βεβουλεῦσθαι δοκεῖ.

16[a] *Ἡ βαρὺ φόρημ' ἄνθρωπος εὐτυχῶν ἄφρων.*

17 *Σοφοκλέους.*
Ἡ δὲ μωρία
μάλιστ' ἀδελφὴ τῆς πονηρίας ἔφυ.

18 *Εὐριπίδου* (Bacch. 480).
Δόξει τις ἀμαθεῖ σοφὰ λέγων οὐκ εὖ λέγειν.

19 *Τοῦ αὐτοῦ.*
Τὸ δ' ὠκὺ τοῦτο καὶ τὸ λαιψηρὸν φρενῶν
εἰς πημονὰς ἔστησε πολλὰ δὴ βροτούς.

20 *Τοῦ αὐτοῦ* (Iph. T. 1193).
Θάλασσα κλύζει πάντα τἀνθρώπων κακά.

21 *Αἰσχύλος ἐν Φρυξί.*

. . . .

21[a] *Πολλάκι τοι καὶ μωρὸς ἀνὴρ κατακαίριον εἶπεν.*

22 *Ἡσιόδου ἡμερῶν καὶ ἔργων* (293).
Κεῖνος μὲν πανάριστος, ὃς αὐτῷ πάντα νοήσῃ,
[φρασσάμενος τά κ' ἔπειτα καὶ ἐς τέλος ᾖσιν ἀμείνω.]
ἐσθλὸς δ' αὖ κἀκεῖνος, ὃς εὖ εἰπόντι πίθηται.
ὃς δέ κε μήτ' αὐτὸς νοέῃ μήτ' ἄλλου ἀκούων
ἐν θυμῷ βάλληται, ὃ δ' αὖτ' ἀχρήιος ἀνήρ.

23 *Σοφοκλέους Αἴαντος* (964).
Οἱ γὰρ κακοὶ γνώμαισι τἀγαθὸν χεροῖν
ἔχοντες οὐκ ἴσασι πρίν τις ἐκβάλῃ.

24 *Τοῦ αὐτοῦ* (Eur. Bacch. 369).
Μῶρα γὰρ μῶρος λέγει.

25 *Εὐριπίδου* (Herc. fur. 299).
Ἥκιστα· φεύγειν σκαιὸν ἄνδρ' ἐχθρὸν χρεών,
σοφοῖσι δ' εἴκειν καὶ τεθραμμένοις καλῶς.

26 *Σοφοκλέους* (El. 1047).
Βουλῆς γὰρ οὐδέν ἐστιν ἔχθιον κακῆς.

27 *Θεόγνιδος* (221).
Ὅστις τοι δοκέει τὸν πλησίον ἴδμεναι οὐδέν,
ἀλλ' αὐτὸς μοῦνος ποικίλα δήνε' ἔχειν,
κεῖνός γ' ἄφρων ἐστὶ νόου βεβλαμμένος ἐσθλοῦ.
ἴσως γὰρ πάντες ποικίλ' ἐπιστάμεθα.
ἀλλ' ὃ μὲν οὐκ ἐθέλει κακοκερδίῃσιν ἕπεσθαι,
τῷ δὲ δολοπλοκίαι μᾶλλον ἔτ' εἰσὶ φίλαι.

28 *Μενάνδρου.*
Εὐηθία μοι φαίνεται, Φιλουμένη,
τὸ νοεῖν μὲν ὅσα δεῖ, μὴ φυλάττεσθαι δ' ἃ δεῖ.

29 *Ἐπὰν ἐν ἀγαθοῖς εὐνοούμενός τις ὢν*
ζητῇ τὶ κρεῖττον ὧν ἔχει, ζητεῖ κακά.

30 *Εὐριπίδου.*
Οὐκ ἂν δυναίμην μὴ στέγοντα πιμπλάναι,
σοφοὺς ἐπαντλῶν ἀνδρὶ μὴ σοφῷ λόγους.

31 *Τοῦ αὐτοῦ.*
Εὖ γὰρ τόδ' ἴσθι, κεἴ σ' ἐλάνθανεν πάρος,
τὸ σκαιὸν εἶναι πρῶτ' ἀμουσίας ἔχει.

32 *Εὐριπίδου Ἀλεξάνδρου.*

Ὅθεν δὲ νικᾶν χρῆν σε, δυστυχεῖς, ἄναξ,
ὅθεν δέ σ' οὐ χρῆν, εὐτυχεῖς· δούλοισι γὰρ
τοῖς σοῖσιν ἥκεις, τοῖς δ' ἐλευθέροισιν οὔ.

33 Εὐπόλιδος.

Ἀλλ' ἀκούετ', ὦ θεαταί, τἀμὰ δὲ ξυνίετε
ῥήματ', εὐθὺ γὰρ πρὸς ὑμᾶς πρῶτον ἀπολογήσομαι,
ὅ τι παθόντες τοὺς ξένους μὲν λέγετε ποιητὰς σοφούς·
ἢν δέ τις τῶν ἐνθάδ' αὐτοῦ, μηδὲ ἓν χεῖρον φρονῶν,
ἐπιτιθῆται τῇ ποιήσει, πάνυ δοκεῖ κακῶς φρονεῖν,
μαίνεταί τε καὶ παραρρεῖ τῶν φρενῶν τῷ σῷ λόγῳ.
ἀλλ' ἐμοὶ πείθεσθε, πάντως μεταβαλόντες τοὺς τρόπους,
μὴ φθονεῖθ' ὅταν τις ἡμῶν μουσικῇ χαίρῃ νέων.

34 Ῥιανοῦ.

Ἦ ἄρα δὴ μάλα πάντες ἁμαρτίνοοι πελόμεσθα
ἄνθρωποι, φέρομεν δὲ θεῶν ἑτερόρροπα δῶρα
ἀφραδέι κραδίῃ. βιότοιο μὲν ὅς κ' ἐπιδευὴς
στρωφᾶται, μακάρεσσιν ἐπὶ ψόγον αἰνὸν ἰάπτει
ἀχνύμενος, σφετέρην δ' ἀρετὴν καὶ θυμὸν ἀτίζει,
οὐδέ τι θαρσαλέος νοέειν ἔπος, οὐδέ τι ῥέξαι
ἐρριγώς, ὅθι τ' ἄνδρες ἐχεκτέανοι παρέωσι,
καί οἱ θυμὸν ἔδουσι κατηφείη καὶ ὀιζύς.
ὃς δέ κεν εὐοχθῆσι, θεὸς δ' ἐπὶ ὄλβον ὀπάζῃ
καὶ πολυκοιρανίην, ἐπιλήθεται οὕνεκα γαῖαν
ποσσὶν ἐπιστείβει, θνητοὶ δέ οἱ εἰσὶ τοκῆες·
ἀλλ' ὑπεροπλίῃ καὶ ἁμαρτωλῇσι νόοιο
ἶσα Διὶ βρομέει, κεφαλὴν δ' ὑπὲρ αὐχέν' ἀνίσχει,
καί περ ἐὼν ὀλίγος, μνᾶται δ' εὔπηχυν Ἀθήνην,
ἠέ τιν' ἀτραπιτὸν τεκμαίρεται οὔλυμπόνδε,
ὥς κε μετ' ἀθανάτοισιν ἀρίθμιος εἰλαπινάζῃ.
ἡ δ' Ἄτη ἁπαλοῖσι μετατρωχῶσα πόδεσσι

ἄκρης ἐν κεφαλῇσιν ἀνώιστος καὶ ἄφαντος,
ἄλλοτε μὲν γραίῃσι νεωτέρη, ἄλλοτε δ' αὖτε
ὁπλοτέρῃσι γρηῢς ἐφίσταται ἀμπλακίῃσι,
Ζηνὶ θεῶν κρείοντι Δίκη τ' ἐπίηρα φέρουσα.

35 Μενάνδρου.
Οὐκ ἔστ' ἀνοίας οὐδέν, ὡς ἐμοὶ δοκεῖ,
τολμηρότερον.

36 Ἡσιόδου (Scut. 92).
Σχέτλιος, ἦ που πολλὰ μετεστοναχίζετ' ὀπίσσω,
ἣν ἄτην ἀχέων, ἣ δ' οὐ παλινάγρετός ἐστιν.

37 Σοφοκλέους Ἀλεάδαις.
Ἐνταῦθα μέντοι πάντα τἀνθρώπων νοσεῖ,
κακοῖς ὅταν θέλωσιν ἰᾶσθαι κακά.

38 Τοῦ αὐτοῦ.
Ταῦτ' ἐστὶν ἄλγιστ', ἣν παρὸν θέσθαι καλῶς
αὐτός τις αὑτῷ τὴν βλάβην προσθῇ φέρων.

39 Μενάνδρου.
Ὁ μὴ φέρων γὰρ εὖ τι τῶν ἐν τῷ βίῳ
ἀγαθῶν, ἀλόγιστός ἐστιν, οὐχὶ μακάριος.

40 Μενάνδρου Θεττάλη.
Μικρά γε πρόφασίς ἐστι τοῦ πρᾶξαι κακῶς.

41 Φιλήμονος.
Ἐπὰν ὁ νοῦς ᾖ μὴ καθεστηκώς τινι,
οὐκ ἔστ' ἀκούειν οὐδὲν αὐτὸν οὐδ' ὁρᾶν.

42 Ἐπιχάρμου.
Νοῦς ὁρῇ καὶ νοῦς ἀκούει.

43 Κερκίδου.
Πῶς κεν ἴδοιεν τὰν σοφίαν πέλας ἑστακυῖαν

ἀνέρες, ὧν τὸ κέαρ
παλῷ σέσακται καὶ δυσεκνίπτῳ τρυγός;

44 Παροιμία.

Ὄνος λύρας ἤκουε καὶ σάλπιγγος ὗς.

45 Θεόγνιδος (693).

Πολλούς τοι κόρος ἄνδρας ἀπώλεσεν ἀφραίνοντας·
γνῶναι γὰρ χαλεπὸν μέτρον, ὅτ' ἐσθλὰ παρῇ.

46 Ῥηγίνου ἐκ τοῦ περὶ φιλίας.

Καθάπερ τὸ τοῦ ἡλίου φῶς οὐκ ἔστι θεάσασθαι ἀσθενεῖ καὶ ἀδυνάτῳ τῇ ὄψει, οὕτω καὶ ἔτι μᾶλλον τὴν ἀλήθειαν οὐκ ἔστιν ἰδεῖν ἀσθενεῖ καὶ ἀδυνάτῳ τῇ διανοίᾳ.

47 Κορνηλιανοῦ κατὰ Βερονίκης.

Ἀλλ' ὅμως τὰ μεγάλα ταῦτα καὶ δεινὰ ὡμολόγει αὐτὴ καθ' αὑτῆς. τοῦτο γὰρ αὐτῶν καὶ μόνον τῇ προαιρέσει πρόσεστιν ἀγαθόν, ὅπερ ἐστὶ μέγιστον τῶν κακῶν, ὅτι περὶ ὧν πράττουσι κακῶς καὶ παρρησιάζονται.

48 Ἰσοκράτους Βουσίριδι (p. 221).

Γιγνώσκω μὲν οὖν ὅτι τοῖς πλείστοις τῶν νουθετουμένων ἔμφυτόν ἐστι, μὴ πρὸς τὰς ὠφελείας ἀποβλέπειν, ἀλλὰ τοσούτῳ χαλεπώτερον ἀκούειν τῶν λεγομένων, ὅσῳ περ ἂν τις αὐτῶν ἀκριβέστερον ἐξετάζῃ τὰς ἁμαρτίας.

49 Πλάτωνος ἐκ τοῦ Φαίδωνος (89 c).

Ἀλλὰ πρῶτον μὲν εὐλαβηθῶμεν τὶ πάθος μὴ πάθωμεν. τὸ ποῖον; ἦν δ' ἐγώ. μὴ γενώμεθα, ἦ δ' ὅς, μισολόγοι, ὥσπερ οἱ μισάνθρωποι γιγνόμενοι· ὡς οὐκ ἔστιν, ἔφη, ὅ τι ἂν τις μεῖζον τούτου κακὸν πάθοι ἢ λόγους μισήσας. γίγνεται δὲ ἐκ τοῦ αὐτοῦ

τρόπου μισολογία τε καὶ μισανθρωπία· ἥ τε γὰρ μισανθρωπία ἐνδύεται ἐκ τοῦ σφόδρα τινὶ πιστεῦσαι ἄνευ τέχνης καὶ ἡγήσασθαι παντάπασί γε ἀληθῆ εἶναι καὶ ὑγιῆ καὶ πιστὸν τὸν ἄνθρωπον, ἔπειτα ὀλίγον ὕστερον εὑρεῖν τοῦτον πονηρόν τε καὶ ἄπιστον, καὶ αὖθις ἕτερον. καὶ ὅταν τοῦτο πολλάκις πάθῃ τις καὶ ὑπὸ τούτων μάλιστα οὓς ἂν ἡγήσαιτο οἰκειοτάτους καὶ ἑταιροτάτους, τελευτῶν δὲ θαμὰ προσκρούων μισεῖ τε πάντας καὶ ἡγεῖται οὐδενὸς οὐδὲν ὑγιὲς εἶναι. ἢ οὐκ ᾔσθησαι σὺ οὕτω τοῦτο γιγνόμενον; πάνυ γε, ἦν δ' ἐγώ. οὐκ οὖν, ἦ δ' ὅς, αἰσχρόν, καὶ δῆλον ὅτι ἄνευ τέχνης τῆς περὶ τὰ ἀνθρώπεια ὁ τοιοῦτος χρῆσθαι ἐπεχείρει τοῖς ἀνθρώποις; εἰ γάρ που μετὰ τέχνης ἐχρῆτο, ὥσπερ ἔχει, οὕτως ἂν ἡγήσατο, τοὺς μὲν χρηστοὺς καὶ πονηροὺς ὀλίγους εἶναι σφόδρα ἑκατέρους, τοὺς δὲ μεταξὺ τοὺς πλείστους.

50 Ἐν ταυτῷ (91 a).

Ὡς κινδυνεύω ἐγὼ ἐν τῷ παρόντι περὶ αὐτοῦ τούτου οὐ φιλοσόφως ἔχειν, ἀλλ' ὥσπερ οἱ πάνυ ἀπαίδευτοι φιλονείκως. καὶ γὰρ ἐκεῖνοι ὅταν περί του ἀμφισβητῶσιν, ὅπῃ μὲν ἔχει περὶ ὧν ἂν ὁ λόγος ᾖ, οὐ φροντίζουσιν· ὅπως δὲ ἃ αὐτοὶ ἔθεντο ταῦτα δόξει τοῖς παροῦσι, τοῦτο προθυμοῦνται.

51 Δημοσθένους.

Δημοσθένης ὁ ῥήτωρ θεασάμενός τινα δημαγωγὸν ἀφυῆ μέγα βοῶντα ἔφη "ἀλλ' οὐ τὸ μέγα εὖ ἐστι, τὸ δὲ εὖ μέγα."

52 Κράτητος.

Κράτης ἀπείκαζε τοὺς ἀνοήτους τῶν ἀνθρώπων τοῖς τρυπάνοις· ἄνευ γὰρ δεσμοῦ καὶ ἀνάγκης μηδὲν ἐθέλειν τῶν δεόντων ποιεῖν.

53 *Δημοκρίτου.*

Ἀνθρώποισι κακὰ ἐξ ἀγαθῶν φύεται, ἐπήν τις τἀγαθὰ μὴ ἐπίστηται ποδηγετέειν μηδὲ ὀχέειν εὐπόρως.

54 *Βίωνος.*

Βίων ἔλεγε τοὺς γραμματικοὺς ζητοῦντας περὶ τῆς Ὀδυσσέως πλάνης μὴ ἐξετάζειν τὴν ἰδίαν, μηδὲ καθορᾶν ὅτι καὶ ἐν αὐτῷ τούτῳ πλανῶνται, πονοῦντες περὶ τὰ μηδὲν χρήσιμα.

55 *Πλάτωνος ἐκ τοῦ Κλειτοφῶντος* (407 e).

Καὶ ὁπόταν αὖ φῇς τοὺς ἀσκοῦντας μὲν τὰ σώματα, τῆς δὲ ψυχῆς ἠμεληκότας, ἕτερόν τι πράττειν τοιοῦτον, τοῦ μὲν ἄρξοντος ἀμελεῖν, περὶ δὲ τὸ ἀρξόμενον ἐσπουδακέναι.

56 *Ἡρακλείτου.*

Κακοὶ γίνονται ὀφθαλμοὶ καὶ ὦτα ἀφρόνων ἀνθρώπων ψυχὰς βαρβάρους ἐχόντων.

57 *Σωκράτους.*

Ὁ μὲν δειλὸς τῆς πατρίδος, ὁ δὲ φιλόδοξος τῆς πατρῴας οὐσίας ἐστὶ προδότης.

58 *Οἱ δραπέται κἂν μὴ διώκωνται φοβοῦνται, οἱ δὲ ἄφρονες κἂν μὴ κακῶς πράττωσι ταράττονται.*

59 *Ἐν μὲν ταῖς μέθαις παροινοῦσιν, ἐν δὲ ταῖς ἀτυχίαις παρανοοῦσιν οἱ ἀνόητοι.*

60 *Οὔθ᾽ οἱ ἄμουσοι τοῖς ὀργάνοις οὔθ᾽ οἱ ἀπαίδευτοι ταῖς ἀτυχίαις δύνανται συναρμόσασθαι.*

61 *Τῷ τῶν ἀπαιδεύτων βίῳ καθάπερ ὑποκριτῇ πολλὰ τύφου μετενδύματα παράκειται.*

62 *Τοῖς ἄφροσιν ὥσπερ τοῖς παιδίοις μικρὰ πρόφασις εἰς τὸ κλαίειν ἱκανή.*

63 *Οἱ μὲν ξένοι ἐν ταῖς ὁδοῖς, οἱ δὲ ἀπαίδευτοι ἐν τοῖς πράγμασι πλανῶνται.*

64 *Ταυτόν ἐστιν ἀρρωστοῦντι φορτίον ἀναθέσθαι καὶ ἀπαιδεύτοις εὐτυχίαν.*

65 *Οὔτε πλέοντας παρὰ τόπον ὁρμεῖν ἀσφαλές, οὔτε ζῶντας παρὰ νόμον βιοῦν ἀκίνδυνον.*

66 *Ὁ μὲν Πρωτεὺς τῇ μορφῇ, ὁ δ' ἀπαίδευτος τῇ ψυχῇ παρ' ἕκαστον ἀλλοιοῦται.*

67 *Πολλοὺς ὥσπερ ἀσθενοῦντας οὕτω καὶ εὐτυχοῦντας τὸ πλῆθος τῶν παρακειμένων λυπεῖ.*

68 *Φίλιππος τοὺς Ἀθηναίους εἴκαζε τοῖς ἑρμαῖς ὡς στόμα μόνον ἔχουσι καὶ αἰδοῖα μεγάλα.*

69 *Δημάδου.*

Δημάδης τοὺς Ἀθηναίους εἴκαζεν αὐλοῖς, ὧν εἴ τις ἀφέλοι τὴν γλῶτταν τὸ λοιπὸν οὐδέν ἐστι.

70 *Θεόκριτος γραμματοδιδασκάλῳ φαύλως ἀναγινώσκοντι προσελθὼν εἶπε "διὰ τί γεωμετρεῖν οὐ διδάσκεις;" τοῦ δ' εἰπόντος ὅτι οὐκ οἶδα, "καὶ τί τοῦτ';" εἶπεν· "οὐδὲ γὰρ ἀναγινώσκειν."*

71 *Δημοκρίτου.*

Εἴδωλα ἐσθῆτι καὶ κόσμῳ διαπρεπέα πρὸς θεωρίην, ἀλλὰ καρδίης κενεά.

72 *Λήθη τῶν ἰδίων κακῶν θρασύτητα γεννᾷ.*

73 *Ἀνοήμονες ῥυσμοῦνται τοῖσι τῆς τύχης κέρδεσι, οἱ δὲ τῶν τοιῶνδε δαήμονες τοῖσι τῆς σοφίης.*

74 *Τὸ χρῇζον οἶδεν ὁκόσον χρῄζει, ὁ δὲ χρῄζων οὐ γινώσκει.*

75 *Ἀνοήμονες τὸ ζῆν ὡς στυγέοντες ζῆν ἐθέλουσι δείματι ἀίδεω.*

76 *Ἀνοήμονες βιοῦσιν οὐ τερπόμενοι βιοτῇ.*

77 *Ἀνοήμονες νεότητος ὀρέγονται, οὐ τερπόμενοι δὲ νεότητι.*

78 *Ἀνοήμονες τῶν ἀπεόντων ὀρέγονται, τὰ δὲ παρεόντα καὶ παρῳχημένων κερδαλεώτερα ἐόντα ἀμαλδύνουσιν.*

79 *Ἄνθρωποι τὸν θάνατον φεύγοντες διώκουσι [ζωῆς ὀρέγονται γήραος θάνατον δεδοικότες].*

80 *Ἀνοήμονες οὐδὲ ἓν μανθάνουσι ἐν ὅλῃ τῇ βιοτῇ.*

81 *Ἀνοήμονες θάνατον δεδοικότες γηράσκειν ἐθέλουσι.*

82 *Δόξα καὶ πλοῦτος ἄνευ ξυνέσιος οὐκ ἀσφαλέα κτήματα.*

83 *Πολλοὶ πολυμαθέες νόον οὐκ ἔχουσι.*

84 *Διογένης.*

Ἐπεὶ δὲ ἐν τῇ στοᾷ ἀνάπαλιν περιπατοῦντος αὐτοῦ ἐγέλων τινές, "εἶτ' οὐκ αἰσχύνεσθε" εἶπεν "ὑμεῖς τὴν ἐν τῷ βίῳ ὁδὸν ἀνάπαλιν πορευόμενοι, ἐμοῦ τὴν ἐν τῷ περιπατεῖν κατεγνωκότες;"

85 *Σωκράτης ἰδὼν μειράκιον πλούσιον καὶ ἀπαίδευτον "ἰδού" ἔφη "χρυσοῦν ἀνδράποδον."*

86 *Διογένης ἔλεγε τοὺς ἀνθρώπους τὰ μὲν πρὸς τὸ ζῆν πορίζεσθαι, τὰ δὲ πρὸς τὸ εὖ ζῆν οὐ πορίζεσθαι.*

87 *Ἀριστοτέλους.*

Ἀριστοτέλης τοὺς τὰ ἐναργῆ πράγματα πειρωμένους δεικνύναι ὅμοιον ἔφη ποιεῖν τοῖς διὰ λύχνου τὸν ἥλιον φιλοτιμουμένοις δεικνύναι.

88 ***Βίωνος.***

Βίων ἐρωτηθεὶς τί ἐστιν ἄνοια εἶπε "προκοπῆς ἐγκοπή."

89 *Στίλπωνος Σωκρατικοῦ.*

Στίλπων ἐρωτηθεὶς τί ψυχρότερον ἀνδριάντος "ἄνθρωπος" εἶπεν "ἀναίσθητος."

90 *Κλεάνθους.*

Κλεάνθης ἔφη τοὺς ἀπαιδεύτους μόνῃ τῇ μορφῇ τῶν θηρίων διαφέρειν.

91 *Φαβωρίνου.*

Φαβωρῖνος εἶπε τοὺς ἀνθρώπους πῇ μὲν εἶναι γελοίους, πῇ δὲ μισητούς, πῇ δὲ ἐλεεινούς· γελοίους μὲν θρασύτητι μειζόνων ὀρεγομένους, μισητοὺς δὲ ἐπιτυχόντας, ἐλεεινοὺς δὲ ἁμαρτάνοντας· ζηλωτοὺς δὲ οὐδέποτε.

92 *Ἐπικτήτου.*

Εἰς συμπόσιον μὲν οὖν παρακληθέντες τῷ παρόντι χρώμεθα, εἰ δέ τις κελεύοι τὸν ὑποδεχόμενον ἰχθῦς αὐτῷ παρατιθέναι ἢ πλακοῦντας, ἄτοπος ἂν δόξειεν· ἐν δὲ τῷ κόσμῳ αἰτοῦμεν τοὺς θεοὺς ἃ μὴ διδόασι, καὶ ταῦτα πολλῶν ὄντων ἅ γε ἡμῖν δεδώκασι.

93 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Χαρίεντες, ἔφη, εἰσὶν οἱ μέγα φρονοῦντες ἐπὶ τοῖς οὐκ ἐφ' ἡμῖν. "ἐγώ σου" φησί "κρείττων εἰμί, ἀγροὺς γὰρ ἔχω πολλούς, σὺ δὲ λιμῷ παρατείνῃ." ἄλλος λέγει "ἐγὼ ὑπατικός εἰμι." ἄλλος "ἐγὼ ἐπίτροπος." ἄλλος "ἐγὼ οὔλας τρίχας ἔχω." ἵππος δ' ἵππῳ οὐ λέγει ὅτι "ἐγὼ κρείττων εἰμί σου· πολὺν γὰρ κέκτημαι χιλὸν καὶ κριθὰς πολλάς, καὶ χαλινοί μοι εἰσὶ χρυσοῖ καὶ ἐφίππια ποικίλα," ἀλλ' ὅτι "ὠκύτερός σου εἰμί." καὶ πᾶν ζῷον κρεῖττον καὶ χεῖρόν ἐστιν ἐκ τῆς ἑαυτοῦ ἀρετῆς καὶ κακίας. ἆρ' οὖν ἀνθρώπου μό-

νου ἀρετὴ οὐκ ἔστιν, ἀλλὰ δεῖ ἡμᾶς εἰς τὰς τρίχας ἀφορᾶν καὶ τὰ ἱμάτια καὶ τοὺς πάππους;

94 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Τῷ μὲν ἰατρῷ μηδὲν συμβουλεύοντι ἄχθονται οἱ κάμνοντες καὶ ἡγοῦνται ἀπεγνῶσθαι ὑπ' αὐτοῦ· πρὸς δὲ τὸν φιλόσοφον διὰ τί οὐκ ἄν τις οὕτω διατεθείη, ὥστε οἰηθῆναι ἀπεγνῶσθαι ὑπ' αὐτοῦ σωφρονήσειν, εἰ μηδὲν λέγοι τι πρὸς αὐτὸν τῶν χρησίμων;

95 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Οἱ τὸ σῶμα εὖ διακείμενοι καὶ καύματα καὶ ψύχη ὑπομένουσιν· οὕτω δὲ καὶ οἱ τὴν ψυχὴν καλῶς διακείμενοι καὶ ὀργὴν καὶ λύπην καὶ περιχάρειαν καὶ τἄλλα πάθη φέρουσι.

96 *Πλάτων* (Euthyphr. 3 a).

Βουλοίμην ἄν, ὦ Σώκρατες, ἀλλ' ὀρρωδῶ μὴ τοὐναντίον γένηται· ἀτεχνῶς γάρ μοι δοκεῖ ἀφ' ἑστίας ἄρχεσθαι κακουργεῖν τὴν πόλιν, ἐπιχειρῶν ἀδικεῖν σε. καί μοι λέγε, τί καὶ ποιοῦντά σε φησὶ διαφθείρειν τοὺς νέους; Ἄτοπα, ὦ θαυμάσιε, ὡς οὕτως ἀκοῦσαι· φησὶ γάρ με ποιητὴν εἶναι θεῶν· καὶ ὡς καινοὺς ποιοῦντα θεούς, τοὺς δ' ἀρχαίους οὐ νομίζοντα ἐγράψατο.

97 *Ἐν ταυτῷ* (Euthyphr. 3 c).

Ἀθηναίοις γάρ, ὡς ἐμοὶ δοκεῖ, οὐ σφόδρα μέλει ἄν τινα δεινὸν οἴωνται, μὴ μέντοι διδασκαλικὸν τῆς αὐτοῦ σοφίας· ὃν δ' ἂν καὶ ἄλλους οἴωνται ποιεῖν τοιούτους, θυμοῦνται, εἴτ' οὖν φθόνῳ, ὡς σὺ λέγεις, εἴτε δι' ἄλλο τι.

98 *Πλάτωνος ἐκ τοῦ Εὐθύφρονος.*

Ψυχὴν ἀνόητον αἰσχρὰν καὶ ἄμετρον θετέον.

99 *Νόσον μὲν ψυχῆς ἄνοιαν συγχωρητέον, δύο δὲ ἀνοίας γένη, τὸ μὲν μανίαν τὸ δὲ ἀμαθίαν* (Plat. Tim. p. 86 b).

100 *Εὐσεβίου.*

Ἄνθρωποι πολυμαθίης ἔχειν δόξαν ἢ τοῦ ἀληθίζεσθαι ἔρωτα πλεῦνα ἐκτέαται. πολλοὶ γοῦν τοῖς πρὸ ἑωυτῶν ἐναντίας δόξας συστησάμενοι τὴν γνῶσιν τοῦ ἀληθέος περὶ τῶν ἀναγκαιοτάτων ἀφείλοντο τῷ τὴν πίστιν αὐτῶν μὴ ἐν βεβαίῳ ἑστάναι, ὑπὸ δὲ τοῦ ἀπὸ τῆς προτέρης δόξης περιτρέψαι εἰς τοὐναντίον, λόγον παρασκευάσαντες ἐν τῷ ἀσταθμητοτάτῳ αἰωρέεσθαι.

101 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Πολλοὶ τῶν ἀνθρώπων ἐν ταῖσι ζητήσεσι τῶν πραγμάτων ὁμοίως τοῖς ἀλόγοις τῶν ζῴων, ὥσπερ ἐκεῖνα μαχόμενα, οὕτω καὶ αὐτοὶ μούνου τοῦ νικᾶν μεταποιέονται· ὅκως δὲ (τοῦ περ χρὴ πάντα ἄνδρα προμηθέεσθαι καὶ λέγοντα καὶ πρήσσοντα) μὴ παρὰ τὸ ξυμφέρον καὶ σφέων αὐτῶν καὶ τῶν παρεόντων, καὶ ὥστε μὴ τὸ ἀληθὲς αὐτὸ βλάψαι, οὐκέτι λόγον τούτου ποιέονται.

102 *Ἀνθρώποισιν ἔριδες προσφιλέες, καὶ τοῦ περὶ παντὸς τοῦ προτεθέντος ἀντιλέγοντας ἐθέλειν κρατέειν ἄπλετος καὶ ἄλογος ἐπιθυμίη· ὁπότε πολλοὶ οὐκ αἰδέονται καὶ κατὰ τῶν σπουδαιεστάτων καὶ τῶν οὐ χρὴ τῷ χείρονι λόγῳ νικᾶν, νικῶντες ἀξίην κεκλῆσθαι νίκην Καδμηίην.*

103 *Ἄνθρωποι τοὺς μὲν παρὰ φύσιν καὶ ἐν τεράτων λόγῳ ἐόντας ἀσπάζονται, καὶ μεγάλων χρημάτων ὠνεόμενοι ὡς ἐπὶ μεγίστῳ κτήματι χαίρουσι καὶ μεγαλοφρονέονται, περὶ δὲ τὰ σπουδαιότατα καὶ τὰ σμικρὰ ἄχθονται ἀναλίσκοντες.*

104 *Οἱ πλεῦνες τῶν ἀνθρώπων περὶ πάντα τὰ λοιπὰ φειδωλοὺς σφέας παρεχόμενοι καὶ εἰ δαπανοῖεν ἀσχάλλοντες, ὑπὲρ τοῦ παρὰ τῶν δήμων κροτηθῆναι καὶ τὰ ἐόντα σφι πάντα ἡδέως προΐενται.*

105 *Οἱ μάταιοι τῶν ἀνθρώπων τοὺς μὲν μεγάλα χρήματα ἔχοντας καὶ φαύλους ἐόντας τιμῶσί τε καὶ τεθωυμάκασι, τῶν δὲ σπουδαίων, ἐπειδὰν ἀχρηματίην καταγνῶσιν, ὑπερφρονέουσιν.*

106 *Ἐκ τῶν Ἀριστωνύμου τομαρίων.*

Πολλοὶ ἀδικηθέντες ὑπὸ ῥητόρων τοὺς υἱοὺς ῥήτορας διδάσκουσιν, οὐδεὶς δὲ ἀδικηθεὶς ὑπὸ λύκου αὐτὸς λύκος γίνεται καὶ ἀντιδάκνει.

107 *Ζήνωνος.*

Ζήνων δὲ ἔφη γελοῖον ἑκάστους μὲν τοῖς πράγμασιν ὡς δεῖ ζῆν μὴ προσέχειν, ὡς οὐκ εἰδότων, τὸν δὲ παρὰ πάντων ἔπαινον θαυμάζειν, ὡς ἐχόμενον κρίσεως.

108 *Σωκράτους.*

Οἱ μὲν ἀκρατεῖς ἐν ταῖς ἀρρωστίαις, οἱ δὲ ἄφρονες ἐν ταῖς ἀτυχίαις εἰσὶ δυσθεράπευτοι.

109 *Πυθαγόρου.*

Θυηπολίαι ἀφρόνων πυρὸς τροφή, τὰ δὲ ἀναθήματα ἱεροσύλοις χορηγία (Porph. ep. ad Marc. 19).

110 *Ἐκ τῶν Ἀρίστωνος ὁμοιωμάτων.*

Ἀρίστων ὁ Χῖος τοὺς περὶ τὰ ἐγκύκλια μαθήματα πονουμένους, ἀμελοῦντας δὲ φιλοσοφίας, ἔλεγεν ὁμοίους εἶναι τοῖς μνηστῆρσι τῆς Πηνελόπης, οἳ ἀποτυγχάνοντες ἐκείνης περὶ τὰς θεραπαίνας ἐγίνοντο.

111 *Ὁ αὐτὸς τοὺς πολλοὺς εἴκαξε τῷ Λαέρτῃ, ὅστις τῶν κατὰ τὸν ἀγρὸν ἐπιμελούμενος πάντων ὀλιγώρως*

εἶχεν ἑαυτοῦ· καὶ γὰρ τούτους τῶν κτημάτων πλείστην ἐπιμέλειαν ποιουμένους περιορᾶν τὴν ψυχὴν ἑαυτῶν πλήρη παθῶν ἀγρίων οὖσαν.

112 *Διογένους.*

Διογένης ἔλεγε διαπαλαίοντας μὲν πολλοὺς ὁρᾶν καὶ διατρέχοντας, διακαλοκαγαθιζομένους δὲ οὔ.

113 *Πλάτωνος* (Men. 77 b).

Ἆρα λέγεις τὸν τῶν καλῶν ἐπιθυμοῦντα ἀγαθῶν ἐπιθυμητὴν εἶναι; Μάλιστά γε. Ἆρα ὡς ὄντων τινῶν οἳ τῶν κακῶν ἐπιθυμοῦσιν, ἑτέρων δὲ οἳ τῶν ἀγαθῶν; οὐ πάντες, ὦ ἄριστε, δοκοῦσί σοι τῶν ἀγαθῶν ἐπιθυμεῖν; Οὐκ ἔμοιγε. Ἀλλά τινες τῶν κακῶν; Ναί. Οἰόμενοι τὰ κακὰ ἀγαθὰ εἶναι λέγεις, ἢ καὶ γινώσκοντες ὅτι κακά εἰσιν, ὅμως ἐπιθυμοῦσιν αὐτῶν; Ἀμφότερα ἔμοιγε δοκεῖ. Ἦ γὰρ δοκεῖ τις σοί, ὦ Μένων, γιγνώσκων τὰ κακὰ ὅτι κακά ἐστιν, ὅμως ἐπιθυμεῖν αὐτῶν; Μάλιστα. Τί ἐπιθυμεῖν λέγεις; ἦ γενέσθαι αὐτῷ; Γενέσθαι· τί γὰρ ἄλλο; Πότερον ἡγούμενος τὰ κακὰ ὠφελεῖν ἐκεῖνον ᾧ ἂν γένηται, ἢ γιγνώσκων τὰ κακὰ ὅτι βλάπτει ᾧ ἂν παρῇ; Εἰσὶ μὲν οἱ ἡγούμενοι τὰ κακὰ ὠφελεῖν, εἰσὶ δὲ καὶ οἱ γιγνώσκοντες ὅτι βλάπτει. Ἦ καὶ δοκοῦσί σοι γιγνώσκειν τὰ κακὰ ὅτι κακά ἐστιν, οἱ ἡγούμενοι τὰ κακὰ ὠφελεῖν; Οὐ πάνυ μοι δοκεῖ τοῦτό γε. Οὐκ οὖν δῆλον ὅτι οὗτοι μὲν οὐ τῶν κακῶν ἐπιθυμοῦσιν οἱ ἀγνοοῦντες αὐτά, ἀλλ' ἐκείνων ἃ ᾤοντο ἀγαθὰ εἶναι· ἔστι δὲ ταῦτά γε κακά· ὥστε οἱ ἀγνοοῦντες αὐτὰ καὶ οἰόμενοι ἀγαθὰ εἶναι δῆλον ὅτι τῶν ἀγαθῶν ἐπιθυμοῦσιν. ἢ οὔ; Κινδυνεύουσιν οὗτοί γε. Τί δαί; οἱ τῶν κακῶν μὲν ἐπιθυμοῦντες, ὥς φῂς σύ, ἡγούμενοι δὲ τὰ κακὰ βλάπτειν ἐκεῖνον ᾧ ἂν γίγνη-

ται, γιγνώσκουσι δήπου ὅτι βλαβήσονται ὑπ' αὐτῶν; Ἀνάγκη. Ἀλλὰ τοὺς βλαπτομένους οὗτοι οὐκ οἴονται ἀθλίους εἶναι καθόσον βλάπτονται; Καὶ τοῦτο ἀνάγκη. Τοὺς δὲ ἀθλίους οὐ κακοδαίμονας; Οἶμαι ἔγωγε. Ἔστιν οὖν ὅστις βούλεται ἄθλιος καὶ κακοδαίμων εἶναι; Οὔ μοι δοκεῖ, ὦ Σώκρατες. Οὐκ ἄρα βούλεται τὰ κακά, ὦ Μένων, οὐδείς, εἴπερ μὴ βούλεται τοιοῦτος εἶναι. τί γὰρ ἄλλο ἐστὶν ἄθλιον εἶναι ἢ ἐπιθυμεῖν τε τῶν κακῶν καὶ κτᾶσθαι; Κινδυνεύεις ἀληθῆ λέγειν, ὦ Σώκρατες, καὶ οὐδεὶς βούλεται τὰ κακά.

114 *Πλάτωνος ἐκ τῆς πρὸς τοὺς Δίωνος οἰκείους ἐπιστολῆς* (336 b).

Νῦν δὲ ἤ που τὶς δαίμων ἤ τὶς ἀλιτήριος ἐμπεσὼν ἀνομίᾳ καὶ ἀθεότητι καὶ τὸ μέγιστον τόλμαις ἀμαθίας, ἐξ ἧς πάντα κακὰ πᾶσιν ἐρρίζωται καὶ βλαστάνει καὶ εἰς ὕστερον ἀποτελεῖ καρπὸν τοῖς γεννήσασι πικρότατον, αὕτη πάντα τὸ δεύτερον ἀνέτρεψέ τε καὶ ἀπώλεσεν.

115 *Σωκράτους.*

Ὁ μὲν δειλὸς καθ' ἑαυτοῦ τὰ ὅπλα ἔχει, ὁ δὲ ἀνόητος τὰ χρήματα.

116 *Οὔθ' ὁ αὐστηρὸς οἶνος εἰς πόσιν εὔθετος οὔθ' ὁ ἄγροικος τρόπος εἰς ὁμιλίαν.*

117 *Πλουτάρχου ἐκ τοῦ περὶ εὐθυμίας* (466 b).

Ἀλλ' ὥσπερ οἱ δειλοὶ καὶ ναυτιῶντες ἐν τῷ πλεῖν ἀνομοιότερον οἰόμενοι διάξειν, ἐὰν εἰς γαῦλον ἐξ ἀκάτου καὶ πάλιν ἐὰν εἰς τριήρη μεταβῶσιν, οὐδὲν περαίνουσι, τὴν χολὴν καὶ τὴν δειλίαν συμμεταφέρον-

τες ἑαυτοῖς, οὕτως αἱ τῶν βίων ἀντιμεταλήψεις οὐκ ἐξαιροῦσι τῆς ψυχῆς τὰ λυποῦντα καὶ ταράττοντα· ταῦτα δέ ἐστιν ἀπειρία πραγμάτων, ἀλογιστία, τὸ μὴ δύνασθαι μηδὲ ἐπίστασθαι χρῆσθαι τοῖς παροῦσιν ὀρθῶς. ταῦτα καὶ πλουσίους χειμάζει καὶ πένητας, ταῦτα καὶ γεγαμηκότας ἀνιᾷ καὶ ἀγάμους· διὰ ταῦτα φεύγουσι τὴν ἀγοράν, εἶτα τὴν ἡσυχίαν οὐ φέρουσι· διὰ ταῦτα προαγωγὰς ἐν αὐλαῖς διώκουσι καὶ παρελθόντες εὐθὺς βαρύνονται. "δυσάρεστον οἱ νοσοῦντες ἀπορίας ὕπο·" καὶ γὰρ ἡ γυνὴ λυπεῖ καὶ τὸν ἰατρὸν αἰτιῶνται καὶ δυσχεραίνουσι πρὸς τὸ κλινίδιον, "φίλων δ' ὅ τ' ἐλθὼν λυπρὸς ὅ τ' ἀπιὼν βαρύς," ὡς ὁ Ἴων φησίν. εἶτα τῆς νόσου διαλυθείσης καὶ κράσεως ἑτέρας ἐγγενομένης ἦλθεν ἡ ὑγεία φίλα πάντα ποιοῦσα καὶ προσηνῆ· ὁ γὰρ χθὲς ᾠὰ καὶ ἀμύλια καὶ σίτινον ἄρτον διαπτύων σήμερον αὐτόπυρον ἐπ' ἐλαίαις ἢ καρδαμίδι ἐσθίει καὶ προθύμως. τοιαύτην ὁ λογισμὸς εὐκολίαν καὶ μεταβολὴν ἐγγενόμενος ποιεῖ πρὸς τὸν βίον.

118 Πλάτωνος ἐκ τοῦ Ἀλκιβιάδου β' (140 e).

Ἆρ' οὖν τούτους φρονίμους ὑπολαμβάνεις, οἳ ἂν εἰδῶσιν ἅττα δεῖ πράττειν ἢ λέγειν; Ἔγωγε. Ἄφρονας δὲ ποτέρους; ἆρά γε τοὺς μηδ' ἕτερα τούτων εἰδότας; Τούτους. Οὐκ οὖν οἵ γε μὴ εἰδότες μηδ' ἕτερα τούτων λήσουσιν αὑτοὺς καὶ λέγοντες καὶ πράττοντες ἅττα μὴ δεῖ; Φαίνεται.

119 Σωκράτους.

Οὔτε τὰ τοῦ Ἀχιλλέως ὅπλα τῷ Θερσίτῃ οὔτε τὰ τῆς τύχης ἀγαθὰ τῷ ἄφρονι ἁρμόττει.

120 Νοσοῦντος δίαιτα καὶ ἄφρονος εὐτυχία πολὺ ἔχει τὸ δυσάρεστον.

121 *Αἱ μὲν βρονταὶ μάλιστα τοὺς παῖδας, αἱ δ' ἀπειλαὶ τοὺς ἄφρονας καταπλήττουσιν.*

ΠΕΡΙ ΣΩΦΡΟΣΥΝΗΣ. Ε.

1 *Μενάνδρου Γεωργῷ.*
Οὗτος κράτιστός ἐστ' ἀνήρ, ὦ Γοργία,
ὅστις ἀδικεῖσθαι πλεῖστ' ἐπίσταται βροτῶν.

2 *Ἐγὼ δ'*
οὐδὲν πρεσβύτερον νομί-
ζω τῆς σωφροσύνης, ἐπεὶ
τοῖς ἀγαθοῖς ἀεὶ ξύνεστι. Eurip. inc. 11. D.

3 *Φόβος τὰ θεῖα τοῖσι σώφροσιν βροτῶν.*

4 *Μὴ πλοῦτον εἴπῃς· οὐχὶ θαυμάζω θεόν,*
ὃν καὶ κάκιστος ῥᾳδίως ἐκτήσατο. Eurip. Aeol. 5. D.

5 *Οὐκ ἔστ' ἀπ' ἔργων μὴ καλῶν ἔπη καλά.* Soph. fr. 664. D.

6 *Αἰαῖ τόδ' ἤδη θεῖον ἀνθρώποις κακόν,*
ὅταν τὶς εἰδῇ τἀγαθόν, χρῆται δὲ μή. Eurip. Chrys. 2. D.

7 *Ἐπεὶ τί δεῖ βροτοῖσι πλὴν δυοῖν μόνοιν,*
Δήμητρος ἀκτῆς πώματός θ' ὑδρηχόου; Eurip. inc. 12. D.

8 *Εἱμαρμένον δὲ τῶν κακῶν βουλευμάτων*
κακὰς ἀμοιβάς ἐστι καρποῦσθαι βροτοῖς.

9. 11 *Μενάνδρου.*
Ταμιεῖον ἀρετῆς ἐστὶν ἡ σώφρων γυνή.
Ἠ χάριεν ἔστ' ἄνθρωπος, ἂν ἄνθρωπος ᾖ.

---

10 *Εὔτακτον εἶναι τἀλλότρια δειπνοῦντα δεῖ.*
12 *Κλύειν τὸν ἐσθλὸν ἄνδρα χρὴ τῶν ἐν τέλει.*

13 *Σοφοκλέους* (Ai. 131).

Ὡς ἡμέρα κλίνει τε κἀνάγει πάλιν
ἅπαντα τἀνθρώπεια· τοὺς δὲ σώφρονας
θεοὶ φιλοῦσι, καὶ στυγοῦσι τοὺς κακούς.

14 *Σοφοκλέους.*

Χαίρειν ἐπ᾽ αἰσχραῖς ἡδοναῖς οὐ χρή ποτε.

15 *Εὐριπίδης Βάκχαις* (314).

Οὐχ ὁ Διόνυσος μὴ σωφρονεῖν ἀναγκάσῃ
γυναῖκας εἰς τὴν Κύπριν, ἀλλ᾽ ἐν τῇ φύσει
τὸ σωφρονεῖν ἔνεστιν εἰς τὰ πάντ᾽ ἀεί.

16 *Τοῦ αὐτοῦ Ἱππολύτῳ.*

Ὦ μάκαρ, οἵας ἔλαχες τιμάς,
Ἱππόλυθ᾽ ἥρως, διὰ σωφροσύνην.
οὔ ποτε θνητοῖς ἀρετῆς ἄλλη
δύναμις μείζων.
ἦλθε γὰρ ἢ πρόσθ᾽ ἢ μετόπισθεν
τῆς εὐσεβίας χάρις ἐσθλή.

17 *Εὐριπίδου.*

Τὰς συμφορὰς γὰρ τῶν κακῶς πεπραγότων
οὐ πώποθ᾽ ὕβρισ᾽ αὐτὸς ὀρρωδῶν παθεῖν.

18 *Δυοῖν λεγόντοιν, θατέρου θυμουμένου,*
ὁ μὴ ἀντιτείνων τοῖς λόγοις σοφώτερος. Eur. Protes. 2. D.

19 *Στέργοι δέ με σωφροσύνα*
δώρημα κάλλιστον θεῶν. Eur. Med. 635.

20 *Φεῦ φεῦ· τὸ σῶφρον ὡς ἁπανταχῇ καλόν,*
καὶ δόξαν ἐσθλὴν ἐν βροτοῖς κομίζεται. Eur. Hipp. 431.

21 *Εὐριπίδου Θησέως.*

Ἀλλ᾽ ἔστι δή τις ἄλλος ἐν βροτοῖς ἔρως
ψυχῆς δικαίας σώφρονός τε κἀγαθῆς.

22 *Λίνου.*

Φράζεο δὴ σπουδὴν ἐντυνάμενος δι᾽ ἀκουῆς
μύθων ἡμετέρων ἀτραπὸν περὶ παντὸς ἀληθῆ,
κῆρας ἀπωσάμενος πολυπήμονας, αἵ τε βεβήλων
ὄχλον αἰστῶσαι ἄταις περὶ πάντα πεδῶσι
παντοίαις, μορφῶν χαλεπῶν ἀπατήματ᾽ ἔχουσαι.
τὰς μὲν ἀπὸ ψυχῆς εἴργειν φυλακαῖσι νόοιο.
οὗτος γάρ σε καθαρμὸς ὄντως δικαίως ὁσιεύσει,
εἴ περ ἀληθείῃ μισεῖς ὀλοὸν γένος αὐτῶν.
νηδὺν μὲν πρώτιστ᾽ αἰσχρῶν δώτειραν ἁπάντων,
ἣν ἐπιθυμία ἡνιοχεῖ μάργοισι χαλινοῖς.

23 *Δημοκρίτου.*
Νόμῳ καὶ ἄρχοντι καὶ σοφωτέρῳ εἴκειν κόσμιον.

24 *Ἄριστον ἀνθρώπῳ τὸν βίον διάγειν ὡς πλεῖστα εὐθυμηθέντι καὶ ἐλάχιστα ἀνιηθέντι, τοῦτο δ᾽ ἂν εἴη, εἴ τις μὴ ἐπὶ τοῖσι θνητοῖσι τὰς ἡδονὰς ποιέοιτο.*

25 *Φαύλων ἔργων καὶ τοὺς λόγους παραιτητέον.*

26 *Θεοβούλου.*
Ἀδικούμενος διαλλάσσου, ὑβριζόμενος ἀμύνου.

27 ***Βίαντος.***
Οὕτω πειρῶ ζῆν ὡς καὶ ὀλίγον καὶ πολὺν χρόνον βιωσόμενος.

28 *Ζῆν κρεῖττόν ἐστιν ἐπὶ στιβάδος κατακείμενον καὶ θαρρεῖν ἢ ταράττεσθαι χρυσῆν ἔχοντα κλίνην* (Porphyr. Ep. ad Marc. c. 29).

29 *Ὧν ἡ τύχη κυρία δοῦναι καὶ ἀφελέσθαι οὐ δεήσῃ οὐδενός.*

30 *Ὧν τοῦ σώματος ἀπαλλαγεὶς οὐ δεήσῃ, ἐκείνων καταφρόνει πάντων· καὶ ὧν ἀπαλλαγεὶς δεήσῃ, πρὸς ταῦτά σοι ἀσκουμένῳ τοὺς θεοὺς παρακάλει γίνεσθαί σοι συλλήπτορας.*

31 *Χίλωνος.*

Ζημίαν αἱροῦ μᾶλλον ἢ κέρδος αἰσχρόν· τὸ μὲν γὰρ ἅπαξ σε λυπήσει, τὸ δὲ διαπαντός.

32 *Σωτάδου.*

Τῆς τύχης σκοπεῖν δεῖ τὸ μέγιστον ὡς ἔλαττον,
καὶ τὸ μὴ παρὸν μὴ θέλειν· οὐδὲ γὰρ σόν ἐστιν.
ἀμφότερα μένειν οὐκ οἶδεν· ἕστηκεν γὰρ οὐδέν.
ἂν πλούσιος ὢν καθ' ἡμέραν σκοπῇς τὸ πλεῖον,
ἐς τοσοῦτον εἶ πενιχρός, ἐς ὅσον εἶ περισσός.
ὡς πένης θέλων ἔχειν, καὶ πλούσιος πλέον σχεῖν,
ἴσον ἔχουσιν αὐτῶν αἱ ψυχαὶ τὸ μεριμνᾶν.

33 *Σωκράτους.*

Σωκράτης ἔλεγε δεῖν τὰς ἡδονὰς μὴ παρ' ἄλλων ἀλλὰ παρ' ἑαυτῶν θηρᾶσθαι, προδιατίθεσθαι δὲ τὸ σῶμα ὃν χρὴ τρόπον.

34 *Σωκράτους.*

Ὁ Σωκράτης ἔλεγεν θεοῦ μὲν εἶναι τὸ μηδενὸς δεῖσθαι, τὸ δ' ὡς ἐλαχίστων ἐγγυτάτω θεοῦ.

35 *Σωκράτους.*

Σωκράτης ἐρωτηθεὶς τίνων δεῖ μάλιστα ἀπέχεσθαι "τῶν αἰσχρῶν καὶ ἀδίκων" ἔφη "ἡδονῶν."

36 *Ἀλέξανδρος.*

Ἀλέξανδρος προτρεπομένων τινῶν αὐτὸν ἰδεῖν τὰς Δαρείου θυγατέρας καὶ τὴν κάλλει διαφέρουσαν εἰς γυναῖκα λαβεῖν, "αἰσχρὸν" ἔφη "τοὺς ἄνδρας νικήσαντας ὑπὸ γυναικῶν ἡττᾶσθαι."

37 *Σωκράτους.*

Ἡ αὐτάρκεια καθάπερ ὁδὸς βραχεῖα καὶ ἐπιτερπὴς χάριν μὲν ἔχει μεγάλην πόνον δὲ μικρόν.

38 *Δημοκρίτου.*

Τράπεζαν πολυτελέα μὲν τύχη παρατίθησιν, αὐταρκέα δὲ σωφροσύνη.

39 *Ἐκ τοῦ Ἐπικτήτου ἐγχειριδίου* (c. 33, 4).

Γέλως μὴ πολὺς ἔστω μηδ' ἐπὶ πολλοῖς.

40 Δείπνοις τοῖς ἔξω καὶ ἰδιωτικοῖς τὸ πολὺ ἀπόταξαι· ἂν δὲ γένηται καιρός, φυλάσσου. ἴσθι γὰρ ὅτι ἂν ἕτερος ᾖ μεμολυσμένος, καὶ τὸν ἕτερον ἐμπλησθῆναι ἀνάγκη, ὅταν γυμνοὶ συνδιατρίβωνται (ibid. 6).

41 *Διογένους.*

Δεινὸν ἔλεγεν ὁ Διογένης, εἰ οἱ μὲν ἀθληταὶ καὶ οἱ κιθαρῳδοὶ γαστρὸς καὶ ἡδονῶν κρατοῦσιν, οἳ μὲν τῆς φωνῆς χάριν οἳ δὲ τοῦ σώματος, σωφροσύνης δ' ἕνεκα οὐδεὶς τούτων καταφρονήσει.

42 *Πυθαγόρου.*

Ῥώμη ψυχῆς σωφροσύνη· αὕτη γὰρ ψυχῆς ἀπαθοῦς φῶς ἐστιν.

43 *Σωκράτους.*

Σωκράτης πρὸς τὸν πυθόμενον τίς πλουσιώτατος εἶπεν "ὁ ἐλαχίστοις ἀρκούμενος." αὐτάρκεια γὰρ φύσεώς ἐστι πλοῦτος.

44 *Δημοκρίτου.*

Πατέρος σωφροσύνη μέγιστον τέκνοισι παράγγελμα.

45 *Ἐκ τῶν Ἀριστωνύμου τομαρίων.*

Γυμναζόμενον φυλάξασθαι δεῖ τὸν κόπον, εὖ πράττοντα δὲ τὸν φθόνον.

46 *Ἐκ τῶν Σερήνου.*

Διονύσιος Ἀρίστιππον ἔπειθεν ἀποθέμενον τὸν

τρίβωνα πορφυροῦν ἱμάτιον περιβαλέσθαι, καὶ πεισθεὶς ἐκεῖνος τὰ αὐτὰ καὶ Πλάτωνα ποιεῖν ἠξίου. ὃ δὲ ἔφη "οὐκ ἂν δυναίμην θῆλυν ἐνδῦναι στολήν." καὶ Ἀρίστιππος τοῦ αὐτοῦ, ἔφη, ἐστὶ ποιητοῦ, "καὶ γὰρ ἐν βακχεύμασιν οὖσ' ἥ γε σώφρων οὐ διαφθαρήσεται."

47 *Ἐκ τῶν Σερήνου.*

Ἡ Φωκίωνος γυνὴ πρὸς τὴν ἐπιδεικνυμένην αὐτῇ τὸν κόσμον χρυσοῦν ὄντα καὶ διάλιθον "ἐμοὶ δ'" ἔφη "κόσμος ὑπέρλαμπρός ἐστι Φωκίων πένης ὢν καὶ εἰκοστὸν ἤδη τοῦτο ἔτος Ἀθηναίων στρατηγῶν."

48 *Ἐπαμεινώνδου.*

Πρέσβεις ἧκον παρὰ βασιλέως χρυσίον κομίζοντες βουλόμενοι δωροδοκῆσαι τὸν Ἐπαμινώνδαν. ὁ δὲ αὐτοὺς εἰς ἄριστον εἰσεδέξατο (ᾔδει γὰρ ἐφ' ᾧ τινι ἧκον) καὶ ἐκέλευσεν αὐτοὺς πρότερον ἀριστᾶν, εἶτα λέγειν περὶ ὅτου βούλοιντο. παρακειμένης δὲ τραπέζης φαύλης . . . καὶ ὀξίνην ἔπινον, οἳ μὲν οὐκ εἶχον ὅ τι καὶ εἴποιεν ἐπὶ τούτοις, ὃ δὲ μειδιάσας "ἄπιτε" ἔφη "καὶ λέγετε τῷ δεσπότῃ τῷ ὑμετέρῳ οἷα ἄριστα ἀριστῶ, καὶ συνήσει ὅτι ἔγωγ' οὐκ ἂν προδοίην τι ὁ τούτοις ἀρκούμενος."

49 *Δημοκρίτου.*

Σωφροσύνη τὰ τερπνὰ ἀέξει καὶ ἡδονὴν ἐπιμέζονα ποιέει.

50 *Ἐκ τῆς Νικολάου ἐθῶν συναγωγῆς.*

Ἀρίτονοι τῶν ἐμψύχων οὐδὲν ἀποκτείνουσι, τὰ δὲ κεράμεα τῶν χρηστηρίων ἐν χρυσοῖς ἐλύτροις φυλάττουσι.

51 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Δαρδανεῖς, Ἰλλυρικὸν ἔθνος, τρὶς ἐν τῷ βίῳ λούονται μόνον, ὅταν γεννῶνται καὶ ἐπὶ γάμοις καὶ τελευτῶντες.

52 *Κράτητος.*

Κράτης εἰς τὴν ἀγορὰν ἐμβαλὼν καὶ ὁρῶν τοὺς μὲν πιπράσκοντας τοὺς δὲ ὠνουμένους "οὗτοι" ἔφη "διὰ τὸ ἐναντίον πρᾶγμα ἀλλήλους μακαρίζουσιν· ἐγὼ δ' ἐμαυτόν, ὅτι ἀμφοτέρων ἀπήλλαγμαι, μήτε ὠνούμενος μήτε πωλῶν."

53 *Ἀντιφῶντος.*

Ὅστις δὲ τῶν αἰσχρῶν ἢ τῶν κακῶν μήτε ἐπεθύμησε μήτε ἥψατο, οὐκ ἔστι σώφρων· οὐ γάρ ἐσθ' ὅπου κρατήσας αὐτὸς ἑαυτὸν κόσμιον παρέχεται.

54 *Ἰσαίου.*

Ἡγοῦμαι μεγίστην εἶναι τῶν λειτουργιῶν τὸ καθ' ἡμέραν βίον κόσμιον καὶ σώφρονα παρέχειν.

55 *Ἰσοκράτους πρὸς Δημόνικον* (§. 21. 46. 16).

Ὑφ' ὧν κρατεῖσθαι τὴν ψυχὴν αἰσχρόν, τούτων ἐγκράτειαν ἄσκει, κέρδους ὀργῆς ἡδονῆς λύπης. ἔσῃ δὲ τοιοῦτος, ἐὰν κέρδη μὲν εἶναι νομίζῃς δι' ὧν εὐδοκιμήσεις ἀλλὰ μὴ δι' ὧν εὐπορήσεις. τῇ δὲ ὀργῇ παραπλησίως ἔχε εἰς τοὺς ἁμαρτάνοντας ᾗ περὶ σὲ τοὺς ἄλλους ἔχειν ἀξιώσειας. ἐν δὲ τοῖς τερπνοῖς, ἐὰν αἰσχρὸν ὑπολάβῃς τῶν μὲν οἰκετῶν ἄρχειν ταῖς δ' ἡδοναῖς δουλεύειν. ἐν δὲ τοῖς λυπηροῖς, ἐὰν τὰς τῶν ἄλλων ἐπιβλέπῃς ἀτυχίας καὶ σαυτὸν ὡς ἄνθρωπος ὢν ὑπομιμνήσκῃς. Μάλιστα δ' ἂν παροξυνθείης ὀρεχθῆναι τῶν καλῶν ἔργων, εἰ καταμάθοις ὅτι καὶ τὰς ἡδονὰς ἐκ τούτων γνησίως ἔχομεν. ἐν μὲν γὰρ τῷ ῥᾳθυμεῖν καὶ τὰς πλησμονὰς ἀγαπᾶν εὐθὺς αἱ λῦπαι

ταῖς ἡδοναῖς παραπεπήγασι· τὸ δὲ περὶ τὴν ἀρετὴν ἀεὶ πονεῖν καὶ σωφρόνως τὸν αὑτοῦ βίον οἰκονομεῖν, ἀεὶ τὰς τέρψεις εἰλικρινεῖς καὶ βεβαιοτέρας ἀποδίδωσι. Τοὺς μὲν θεοὺς φοβοῦ, τοὺς δὲ γονεῖς τίμα, τοὺς δὲ φίλους αἰσχύνου. τὰς ἡδονὰς θήρευε τὰς μετὰ δόξης· τέρψις γὰρ σὺν τῷ καλῷ μὲν ἄριστον ἄνευ δὲ τούτου κάκιστον.

56 Ἰσοκράτους Νικοκλῆς ἢ Κύπριοι (c. 13).

Ἃ πάσχοντες ὑφ' ἑτέρων ὀργίζεσθε, ταῦτα τοὺς ἄλλους μὴ ποιεῖτε.

59 Ἐκ τῆς Ἑρμίππου συναγωγῆς τῶν καλῶς ἀναφωνηθέντων ἐξ Ὁμήρου.

Δημήτριος ὁ Φαληρεὺς εἰς σωφροσύνην ἔλεγεν ταῦτα ποιεῖν "ἀσπάσιοι λέκτροιο παλαιοῦ θεσμὸν ἵκοντο."

60 Ἱέρακος ἐκ τοῦ περὶ δικαιοσύνης.

Ὅθεν τὴν λειπομένην ἀρετὴν ἐπιστῆσαι δεῖ τῇ τῶν ἡδονῶν φυλακῇ, μὴ συγχωροῦσαν ἀποδιδράσκειν

---

57 Ἀγαπητοῦ.

Βασιλέα σε κατὰ ἀλήθειαν ὁρίζομαι, ὡς βασιλεύειν καὶ κρατεῖν τῶν ἡδονῶν δυνάμενον καὶ τὸν στέφανον τῆς σωφροσύνης ἀναδησάμενον καὶ τὴν πορφύραν τῆς δικαιοσύνης ἀμφιεσάμενον. ἡ μὲν γὰρ ἄλλη ἐξουσία τὸν θάνατον ἔχει διαδοχήν, ἡ δὲ τοιαύτη βασιλεία τὴν ἀθάνατον σώζει διαμονήν· καὶ ἣ μὲν ἐν τῷ αἰῶνι τούτῳ λύεται ἣ δὲ τῆς αἰωνίου κολάσεως ῥύεται.

58 Κύριος μὲν πάντων ἐστὶν ὁ βασιλεύς, δοῦλος δὲ μετὰ πάντων ὑπάρχει θεοῦ. τότε δὲ μάλιστα κληθήσεται κύριος, ὅταν αὐτὸς ἑαυτοῦ δεσπόζῃ καὶ ταῖς ἀτόποις ἡδοναῖς μὴ δουλεύῃ, ἀλλὰ σύμμαχον ἔχων τὸν εὐσεβῆ λογισμόν, τὸν ἀήττητον αὐτοκράτορα τῶν ἀλόγων παθῶν, τοὺς πανδαμάτορας ἔρωτας τῇ πανοπλίᾳ τῆς σωφροσύνης καταγωνίζηται.

τῇ φρονήσει τὸ ἑαυτῆς ἔργον. ἕως μὲν γὰρ φρονεῖ τις, οὐδὲ ἀνακύπτειν συγχωρήσει ταῖς ἐπὶ τὰ τοιαῦτα φερούσαις ἐπιθυμίαις· ἐν δὲ τῷ καταδαρθάνειν ὑπὸ γοητείας ἐπανίστασθαι εἴωθεν ἀφροσύνη συγχορεύειν αὐτῇ παρακαλοῦσα τὴν ἀκολασίαν. ὅθεν τὴν ἀρετὴν τὴν ἀμφοτέρας φυγαδεύουσαν σωφροσύνην ἐκάλεσαν οἱ σοφοί, σωτηρίαν οὖσαν φρονήσεως· κυριώτερον δὲ κεκλήκασιν ποιητῶν παῖδες σαοφροσύνην· σαῶσαι γὰρ τὸ σῶσαι λέγουσι. τὴν οὖν σαοφροσύνην, τήρησιν οὖσαν φρονήσεως καὶ σωτηρίαν, ὅταν τις προσλάβῃ, τελείαν ἔσχε παρ' ἑαυτῷ τὴν τῆς δικαιοσύνης κτῆσιν· εἰ δὲ μή, σφάλλεται πολλὰ καὶ ἀδικεῖ πολυτρόπως, τὰ μὲν ὑπὲρ χρημάτων τὰ δὲ ὑπὲρ δόξης τὰ δὲ ὑπὲρ ἡδονῶν.

61 *Ἰαμβλίχου ἐκ τῆς ἐπιστολῆς τῆς περὶ σωφροσύνης.*

Πᾶσα μὲν γὰρ ἀρετὴ τὸ θνητοειδὲς πᾶν ἀτιμάζει, τὸ δὲ ἀθάνατον ἀσπάζεται· πολὺ δὲ διαφερόντως ἡ σωφροσύνη ταύτην ἔχει τὴν σπουδήν, ἅτε δὴ τὰς προσηλούσας τῷ σώματι τὴν ψυχὴν ἡδονὰς ἀτιμάζουσα καὶ ἐν ἁγνοῖς βάθροις βεβῶσα, ὥς φησι Πλάτων.

62 *Ἐν ταυτῷ.*

Πῶς γὰρ ἡ σωφροσύνη τελέους ἡμᾶς οὐ ποιεῖ τὸ ἀτελὲς καὶ ἐμπαθὲς ὅλον ἀφ' ἡμῶν ἐξορίζουσα; γνοίης δ' ἂν ὡς τοῦτο οὕτως ἔχει τὸν Βελλεροφόντην ἐννοήσας, ὃς μετὰ τῆς κοσμιότητος συναγωνιζομένης τὴν Χίμαιραν καὶ τὸ θηριῶδες καὶ ἄγριον καὶ ἀνήμερον φῦλον πᾶν ἀνεῖλεν. ὅλως γὰρ ἡ τῶν παθῶν ἄμετρος ἐπικράτεια οὐδὲ ἀνθρώπους ἀφίησιν εἶναι τοὺς ἀνθρώπους, πρὸς δὲ τὴν ἀλόγιστον αὐτοὺς ἕλκει φύσιν καὶ θηριώδη καὶ ἄτακτον.

63 Ἐν ταυτῷ.

Ἡ δὲ μέτροις ὡρισμένοις κατέχουσα τὰς ἡδονὰς εὐταξία σώζει μὲν οἴκους σώζει δὲ πόλεις κατὰ τὴν Κράτητος γνώμην· ἔτι δὲ πλησιάζει πως ἤδη πρὸς τὸ τῶν θεῶν εἶδος. τοιγαροῦν Περσεὺς ἐπ' αὐτὸ τὸ ἀκρότατον ἐλαύνων τῆς σωφροσύνης ἀγαθὸν ἡγουμένης τῆς Ἀθηνᾶς ἀπέκοψε τὴν Γοργόνα, τὴν εἰς τὴν ὕλην οἶμαι καθέλκουσαν καὶ ἀπολιθοῦσαν τοὺς ἀνθρώπους ἀνοήτῳ τῶν παθημάτων πλησμονῇ.

64 Ἐν ταυτῷ.

Ὅτι τοίνυν κρηπὶς τῆς ἀρετῆς, ὡς ἔλεγε Σωκράτης, ἡ ἐγκράτειά ἐστι τῆς γλυκυθυμίας· κόσμος δὲ τῶν ἀγαθῶν πάντων ἡ σωφροσύνη θεωρεῖται, ὥσπερ δὴ ἀπεφήνατο Πλάτων. ἀσφάλεια δὲ τῶν καλλίστων ἕξεων ἡ αὐτή ἐστιν ἀρετή, ὥσπερ ἐγὼ λέγω.

65 Ἐν ταυτῷ.

Ὃ δ' ἐστὶν ὄντως ὁμολογούμενον θαρρῶν διισχυρίζομαι, ὅτι δὴ δι' ὅλων τῶν ἀρετῶν τὸ κάλλος διατείνει τῆς σωφροσύνης καὶ συναρμόζει τὰς πάσας ἀρετὰς κατὰ μίαν ἁρμονίαν συμμετρίαν τε αὐταῖς καὶ κρᾶσιν πρὸς ἀλλήλας ἐντίθησι. τοιαύτη δὴ οὖν οὖσα καὶ ἀφορμὴν παρέχει ταῖς ὅλαις ὥστε ἐγγενέσθαι, καὶ ἐγγενομέναις αὐταῖς ἀσφαλῆ παρέχει σωτηρίαν.

66 Ἐν ταυτῷ.

Καὶ ἡ τῶν ὡρῶν τοῦ ἐνιαυτοῦ σύστασις καὶ ἡ τῶν στοιχείων πρὸς ἄλληλα σύγκρασις συμφωνίαν ἀποσώζει καλλίστην καὶ σώφρονα. καὶ τό γε πᾶν τοῦτο διὰ τὴν κοσμιότητα τῶν καλλίστων μέτρων κόσμος ἐπικαλεῖται.

67 Ἐκ τῶν τοῦ Τέλητος περὶ αὐταρκείας.

Δεῖ ὥσπερ τὸν ἀγαθὸν ὑποκριτὴν ὅ τι ἂν ὁ ποιητὴς περιθῇ πρόσωπον τοῦτο ἀγωνίζεσθαι καλῶς, οὕτω καὶ τὸν ἀγαθὸν ἄνδρα ὅ τι ἂν περιθῇ ἡ τύχη. καὶ γὰρ αὕτη, φησὶν ὁ Βίων, ὥσπερ ποιήτρια, ὅτε μὲν πρωτολόγου ὅτε δὲ δευτερολόγου περιτίθησι πρόσωπον, καὶ ὅτε μὲν βασιλέως ὅτε δὲ ἀλήτου. μὴ οὖν βούλου δευτερολόγος ὢν τὸ πρωτολόγου πρόσωπον· εἰ δὲ μή, ἀνάρμοστόν τι ποιήσεις. σὺ μὲν ἄρχεις καλῶς ἐγὼ δὲ ἄρχομαι, φησί, καὶ σὺ μὲν πολλῶν ἐγὼ δὲ ἑνὸς τουτουῒ παιδαγωγὸς γενόμενος, καὶ σὺ μὲν εὔπορος γενόμενος δίδως ἐλευθερίως, ἐγὼ δὲ λαμβάνω εὐθαρσῶς παρὰ σοῦ, οὐχ ὑποπίπτων οὐδὲ ἀγεννίζων οὐδὲ μεμψιμοιρῶν. σὺ κέχρησαι τοῖς πολλοῖς καλῶς ἐγὼ δὲ τοῖς ὀλίγοις· οὐ γὰρ τὰ πολυτελῆ φησὶ τρέφειν, οὐδὲ ἐκείνοις μὲν ἔστι μετ' ὠφελείας χρῆσθαι, τοῖς δὲ ὀλίγοις καὶ εὐτελέσι μετὰ σωφροσύνης οὐκ ἔστι καὶ ἀτυφίας. διὸ καὶ εἰ λάβοι, φησὶν ὁ Βίων, φωνὴν τὰ πράγματα ὃν τρόπον ἡμεῖς καὶ δύναιτο δικαιολογεῖσθαι, οὐκ ἂν εἴποι, φησίν, πρῶτον ἡ πενία "ἄνθρωπε, τί μοι μάχῃ;" ὥσπερ οἰκέτης πρὸς κύριον ἐφ' ἱερὸν καθίσας δικαιολογεῖται "τί μοι μάχῃ; μή τι σοὶ κέκλοφα; οὐ πᾶν τὸ προσταττόμενον ὑπὸ σοῦ ποιῶ; οὐ τὴν ἀποφορὰν εὐτάκτως σοι φέρω;" καὶ ἡ πενία εἴποι πρὸς τὸν ἐγκαλοῦντα "τί μοι μάχῃ; μὴ καλοῦ τινος δι' ἐμὲ στερίσκῃ; μὴ σωφροσύνης; μὴ δικαιοσύνης; ἀνδρείας; ἀλλὰ μὴ τῶν ἀναγκαίων ἐνδεὴς εἶς; οὐ μεσταὶ μὲν αἱ ὁδοὶ λαχάνων; πλήρεις δὲ αἱ κρῆναι ὕδατος; οὐκ εὐνάς σοι τοσαύτας παρέχω ὁπόση γῆ; καὶ στρωμνὰς φύλλα; ἢ εὐφραίνεσθαι μετ' ἐμοῦ οὐκ ἔστιν σοι; ἢ οὐχ ὁρᾷς γρᾴδια φύστην φαγόντα τερετίζοντα; ἢ οὐκ ὄψον ἀδάπανον καὶ ἀτρύ-

φερον παρασκευάζω σοι τὴν πεῖναν; ἢ οὐχ ὁ πεινῶν ἥδιστα ἐσθίει καὶ ἥκιστα ὄψου δεῖται; καὶ ὁ διψῶν ἥδιστα πίνει καὶ ἥκιστα τὸ μὴ παρὸν ποτὸν ἀναμένει; ἢ πεινᾷ τις πλακοῦντα ἢ διψᾷ χιόνα; ἀλλ' οὐ ταῦτα διὰ τρυφὴν ζητοῦσιν οἱ ἄνθρωποι; ἢ οἰκήσεις οὐ παρέχω σοι, πρῶτον μὲν χειμῶνος τὰ βαλανεῖα, θέρους δὲ τὰ ἱερά; ποῖον γάρ σοι τοιοῦτον οἰκητήριον, φησὶν ὁ Διογένης, τοῦ θέρους, οἷον ἐμοὶ ὁ παρθενὼν οὗτος, εὔπνους καὶ πολυτελής;" εἰ ταῦτα λέγοι ἡ πενία, τί ἂν ἔχοις ἀντειπεῖν; ἐγὼ μὲν γὰρ ἂν δοκῶ ἄφωνος γενέσθαι. ἀλλ' ἡμεῖς πάντα μᾶλλον αἰτιώμεθα ἢ τὴν ἑαυτῶν δυστροπίαν καὶ κακοδαιμονίαν, τὸ γῆρας, τὴν πενίαν, τὸν ἀπαντήσαντα, τὴν ἡμέραν, τὴν ὥραν, τὸν τόπον. διό φησιν ὁ Διογένης φωνῆς ἀκηκοέναι κακίας ἑαυτὴν αἰτιωμένης "οὔτις ἐμοὶ τῶνδ' ἄλλος ἐπαίτιος, ἀλλ' ἐγὼ αὐτή." παράφοροι δὲ πολλοὶ οὐχ ἑαυτοῖς ἀλλὰ τοῖς πράγμασι τὴν αἰτίαν ἐπάγουσιν. ὁ δὲ Βίων, ὥσπερ τῶν θηρίων, φησί, παρὰ τὴν λῆψιν ἡ δῆξις γίνεται, κἂν μέσου τοῦ ὄφεως ἐπιλαμβάνῃς, δηχθήσῃ, ἐὰν τοῦ τραχήλου, οὐδὲν πείσῃ· οὕτω καὶ τῶν πραγμάτων, φησί, παρὰ τὴν ὑπόληψιν ἡ ὀδύνη γίνεται, καὶ ἐὰν μὲν οὕτως ὑπολάβῃς περὶ αὐτῶν, ὥσπερ ὁ Σωκράτης, οὐκ ὀδυνήσῃ, ἐὰν δὲ ὡς ἑτέρως, ἀνιάσῃ, οὐχ ὑπὸ τῶν πραγμάτων ἀλλ' ὑπὸ τῶν ἰδίων τρόπων καὶ τῆς ψευδοῦς δόξης. διὸ δεῖ μὴ τὰ πράγματα πειρᾶσθαι μετατιθέναι, ἀλλ' αὑτὸν παρασκευάσαι πρὸς ταῦτα πῶς ἔχοντα, ὅπερ ποιοῦσιν οἱ ναυτικοί· οὐ γὰρ τοὺς ἀνέμους καὶ τὴν θάλατταν πειρῶνται μετατιθέναι, ἀλλὰ παρασκευάζουσιν αὑτοὺς δυναμένους πρὸς ἐκεῖνα στρέφεσθαι. εὐδία; γαλήνη; ταῖς κώπαις πλέουσι· κατὰ ναῦν ἄνεμος; ἐπῆραν τὰ ἄρμενα· ἀντιπέπνευκεν;

ἐστείλαντο, μεθείλαντο. καὶ σὺ πρὸς τὰ παρόντα χρῶ. γέρων γέγονας; μὴ ζήτει τὰ τοῦ νέου· ἀσθενὴς πάλιν; μὴ ζήτει τὰ τοῦ ἰσχυροῦ, φορτία βαστάζειν καὶ διατραχηλίζεσθαι, ἀλλ' ὥσπερ Διογένης, ὃς ἐπεί τις ὤθει καὶ ἐτραχήλιζεν ἀσθενῶς ἔχοντα, οὐ διετραχηλίζετο, ἀλλὰ δείξας αὐτῷ τὸν κίονα "βέλτιστε" ἔφη "τοῦτον ὤθει πρὸς τάδε." ἄπορος πάλιν γέγονας; μὴ ζήτει τὴν τοῦ εὐπόρου δίαιταν, ἀλλ' ὡς πρὸς τὸν ἀέρα φράττῃ (εὐδία, καὶ διεστείλω, ψῦχος, συνεστείλω), οὕτω καὶ πρὸς τὰ ὑπάρχοντα δι' εὐπορίαν διάστειλον, ἀπορίαν καὶ σύστειλον. ἀλλ' ἡμεῖς οὐ δυνάμεθα ἀρκεῖσθαι τοῖς παροῦσιν, ὅταν καὶ τρυφῇ πολὺ διδῶμεν, καὶ τὸ ἐργάζεσθαι [ζημί]αν κρίνωμεν καὶ τὸν θάνατον ἔσχατόν τι τῶν κακῶν. ἐὰν δὲ ποιήσῃ καὶ τῆς ἡδονῆς καταφρονοῦντά τινα, καὶ πρὸς τοὺς πόνους μὴ διαβεβλημένον, καὶ πρὸς δόξαν καὶ ἀδοξίαν ἴσως ἔχοντα, καὶ τὸν θάνατον μὴ φοβούμενον, ὅτι ἂν θέλῃς ἐξέσται σοι ἀνωδύνῳ ὄντι ποιεῖν. διὸ ἅπερ λέγω, οὐχ ὁρῶ πῶς αὐτὰ τὰ πράγματα ἔχει τι δύσκολον, ἢ γῆρας ἢ πενία ἢ ξενία. οὐκ ἀηδῶς γὰρ Ξενοφῶν "ἐάν σοι" φησί "δείξω δύο ἀδελφῶν τὴν ἴσην οὐσίαν διελομένων τὸν μὲν ἐν τῇ πάσῃ ἀπορίᾳ τὸν δὲ ἐν εὐκολίᾳ, οὐ φανερὸν ὅτι οὐ τὰ χρήματα αἰτιατέον ἀλλ' ἕτερόν τι;" οὕτως ἐάν σοι δείξω δύο πένητας, δύο γέροντας, δύο φεύγοντας, τὸν μὲν ἐν τῇ πάσῃ εὐκολίᾳ καὶ ἀπαθείᾳ ὄντα τὸν δὲ ἐν τῇ πάσῃ ταραχῇ, οὐ φανερὸν ὅτι οὐ τὸ γῆρας, οὐ τὴν πενίαν, οὐ τὴν ξενίαν αἰτιατέον ἀλλ' ἕτερόν τι; καὶ ὅπερ Διογένης ἐποίησεν πρὸς τὸν πολυτελῆ φάμενον πόλιν εἶναι τὰς Ἀθήνας· λαβὼν γὰρ αὐτὸν ἦγεν εἰς τὸ μυροπωλεῖον καὶ ἐπυνθάνετο πόσου τῆς κύπρου ἡ κοτύλη. "μνᾶς" φησὶν ὁ μυροπώλης· ἀνέκραγε "πολυ-

τελής γε ἡ πόλις." ἀπῆγεν αὐτὸν πάλιν εἰς τὸ μαγειρεῖον καὶ ἐπυνθάνετο πόσου τὸ ἀκροκώλιον. "τριῶν δραχμῶν." ἐβόα "πολυτελής γε ἡ πόλις." εἰς τὰ ἔρια πάλιν τὰ μαλακὰ καὶ πόσου τὸ πρόβατον. "μνᾶς" φησίν. ἐβόα "πολυτελής γε ἡ πόλις." "δεῦρο δή" φησί. κἀνταῦθα ἄγει αὐτὸν καὶ εἰς τοὺς θέρμους. "πόσου ἡ χοίνιξ;" "χαλκοῦ" φησίν· ἀνέκραγεν ὁ Διογένης "εὐτελής γε ἡ πόλις." πάλιν εἰς τὰς ἰσχάδας, "δύο χαλκῶν." "τῶν δὲ μύρτων;" "δύο χαλκῶν." "εὐτελής γε ἡ πόλις." ὃν τρόπον οὖν τῷδε οὐχ ἡ πόλις εὐτελὴς καὶ πολυτελής (ἐὰν μὲν γὰρ οὕτω τὶς ζήσῃ, πολυτελής, ἐὰν δὲ οὕτως, εὐτελής), οὕτω καὶ τὰ πράγματα, ἐὰν μέν τις αὐτοῖς οὕτω χρῆται, εὐπετῆ καὶ ῥᾴδια φανεῖται, ἐὰν δὲ οὕτως, δυσχερῆ. ἀλλ' ὅμως δοκεῖ μοι ἔχειν τι ἡ πενία δυσχερὲς καὶ ἐπίπονον, καὶ μᾶλλον ἄν τις ἐπαινέσειε τὸν μετὰ πενίας εὐκόλως γῆρας ἐνέγκαντα ἢ τὸν μετὰ πλούτου. καὶ τί ἔχει δυσχερὲς ἢ ἐπίπονον ἡ πενία; ἢ οὐ Κράτης καὶ Διογένης πένητες ἦσαν; καὶ πῶς ῥᾳδίως διεξήγαγον; ἄτυφοι γενόμενοι καὶ ἐπαῖται, καὶ διαίτῃ εὐτελεῖ καὶ λιτῇ δυνάμενοι χρήσασθαι. ἀπορία καὶ δάνεια περιέστηκεν; κόγχον καὶ κύαμον συνάγαγε, φησὶν ὁ Κράτης, καὶ τὰ τούτοις πρόσφορα· κἂν τάδε δράσῃς, ῥᾳδίως στήσεις τρόπαιον κατὰ πενίας. ἢ τί δεῖ μᾶλλον ἐπαινέσαι, τὸν μετὰ πενίας εὐκόλως γῆρας ἐνεγκόντα ἢ τὸν μετὰ πλούτου; ἔπειτα οὐδὲ γνῶναι ῥᾳδιέστερόν ἐστι, ποῖόν τι ἐστὶ πλοῦτος ἢ ποῖόν τι πενία· ἀλλὰ καὶ πλούτῳ πολλοὶ μετὰ γήρως δυσκόλως χρῶνται καὶ πενίᾳ ἀγεννῶς καὶ ὀδυρτικῶς· καὶ οὔτε τοῦτο ῥᾴδιον, ὥστε τῷ πλούτῳ ἐλευθερίως καὶ ἀφόρτως, οὔτε ἐκεῖνο, ὥστε πενίᾳ γενναίως, ἀλλὰ τοῦ αὐτοῦ ἀμφότερα, καὶ ὥσπερ τοῖς πολλοῖς δύναται κατὰ τρόπον,

οὕτω καὶ τοῖς ἀνάπαλιν. καὶ ἐὰν μὲν ἐκποιῇ πενητεύουσι μένειν ἐν τῷ βίῳ, εἰ δὲ μή, ῥᾳδίως ἀπαλλάττεσθαι ὥσπερ ἐκ πανηγύρεως οὕτω καὶ ἐκ τοῦ βίου. καθάπερ καὶ ἐξ οἰκίας, φησὶν ὁ Βίων, ἐξοικιζόμεθα, ὅταν τὸ ἐνοίκιον ὁ μισθώσας οὐ κομιζόμενος τὴν θύραν ἀφέλῃ, τὸν κέραμον ἀφέλῃ, τὸ φρέαρ ἐγκλείσῃ, οὕτω καὶ ἐκ τοῦ σωματίου ἐξοικίζομαι, ὅταν ἡ μισθώσασα φύσις τοὺς ὀφθαλμοὺς ἀφαιρῆται τὰ ὦτα τὰς χεῖρας τοὺς πόδας· οὐχ ὑπομένω, ἀλλ' ὥσπερ ἐκ συμποσίου ἀπαλλάττομαι οὐθὲν δυσχεραίνων οὕτω καὶ ἐκ τοῦ βίου, ὅταν ἡ ὥρα ᾖ. "ἔμβα πορθμίδος ἔρυμα." ὥσπερ ἀγαθὸς ὑποκριτὴς εὖ καὶ τὸν πρόλογον εὖ καὶ τὰ μέσα εὖ καὶ τὴν καταστροφήν, οὕτω καὶ ὁ ἀγαθὸς ἀνὴρ εὖ καὶ τὰ πρῶτα τοῦ βίου εὖ καὶ τὰ μέσα εὖ καὶ τὴν τελευτήν· καὶ ὥσπερ ἱμάτιον τρίβωνα γενόμενον ἀπεθέμην καὶ οὐ παρέλκω, οὐδὲ φιλοψυχῶ, ἀλλὰ καὶ δυνάμενος ἔτι εὐδαιμονεῖν ἀπαλλάττομαι, καθάπερ καὶ Σωκράτης. ἦν αὐτῷ ἐκ τοῦ δεσμωτηρίου, εἰ ἐβούλετο, ἐξελθεῖν, καὶ τῶν δικαστῶν κελευόντων ἀργυρίου τιμήσασθαι οὐ προσεῖχεν, ἀλλὰ τῆς ἐν πρυτανείῳ σιτήσεως ἐτιμήσατο· καὶ τριῶν ἡμερῶν αὐτῷ δοθεισῶν τῇ πρώτῃ ἔπιεν καὶ οὐ προσέμεινεν τῆς τρίτης ἡμέρας τὴν ἐσχάτην ὥραν παρατηρῶν εἰ ἔτι ἥλιος ἐπὶ τῶν ὀρῶν, ἀλλ' εὐθαρσῶς τῇ πρώτῃ, [καί, ὡς Πλάτων φη]σίν, οὐδὲν τρέψας οὔτε τοῦ προσώπου οὔτε τοῦ χρώματος, ἀλλὰ μάλα ἱλαρῶς τε καὶ εὐκόλως λαβὼν τὸ ποτήριον ἐξέπιεν, καὶ τὸ τελευταῖον ἀποκοτταβίσας "τουτί" φησίν "Ἀλκιβιάδῃ τῷ καλῷ." (ὅρα σχολὴν καὶ παιδείαν· ἡμεῖς δέ, κἂν ἄλλον ἴδωμεν, πεφρίκαμεν) καὶ μέλλων ἀποθνήσκειν, ἐκάθευδε βαθέως, ὥστε μόλις διεγεῖραι τινά (ταχύ γ' ἂν καὶ ἡμῶν τις ἂν κοιμηθείη). καὶ γυναικὸς χαλεπότητα πράως ἔφερε

κἀκείνης βοώσης οὐκ ἐφρόντιζεν, ἀλλὰ Κριτοβούλου εἰπόντος "πῶς ἀνέχῃ ταύτης συμβιούσης;" "πῶς δὲ σὺ τῶν παρὰ σοὶ χηνῶν;" "τί δέ μοι μέλει ἐκείνων" φησίν. "οὕτως οὐδ' ἐμοὶ ταύτης, ἀλλ' ἀκούω ὥσπερ χηνός." καὶ πάλιν παρειληφότος αὐτοῦ Ἀλκιβιάδην ἐπ' ἄριστον, ὡς ἐκείνη παρελθοῦσα τὴν τράπεζαν ἀνέτρεψεν, οὐκ ἐβόα οὐδ' ὠδυνᾶτο δεινοπαθῶν "ὢ τῆς παρανομίας," ὥστε ταύτῃ πάσχειν, ἀλλ' ἀναλέξας τὰ πεσόντα ἐπιθέσθαι πάλιν ἐκέλευσε τὸν Ἀλκιβιάδην· ὡς δὲ ἐκεῖνος οὐ προσεῖχεν ἀλλ' ἐγκαλυψάμενος ἐκάθητο αἰσχυνόμενος "προάγωμεν δὴ" φησίν "ἔξω· φαίνεται γὰρ ἡ Ξανθίππη ὀξυρεγμίᾳ σπαράσσειν ἡμᾶς." εἶτα μετ' ὀλίγας ἡμέρας αὐτὸς ἀριστῶν παρὰ τῷ Ἀλκιβιάδῃ, ὡς ἡ ὄρνις ἡ γενναία ἐπιπτᾶσα κατέβαλε τὸν πίνακα, συγκαλυψάμενος ἐκάθητο καὶ οὐκ ἠρίστα· ὡς δὲ ἐκεῖνος ἐγέλα καὶ ἐπυνθάνετο εἰ διὰ τοῦτο οὐκ ἀριστᾷ ὅτι ἡ ὄρνις ἐπιστᾶσα καταβάλοι "δῆλον ὅτι" φησί "σὺ μὲν πρώην Ξανθίππης ἀνατρεψάσης οὐκ ἐβούλου ἀριστᾶν, ἐμὲ δὲ οἴει νῦν ἀριστᾶν τῆς ὄρνιθος ἀνατρεψάσης; ἢ διαφέρειν τι ἐκείνην ὄρνιθος κορυζώσης ἡγῇ;" "ἀλλ' εἰ μὲν ὗς" φησίν "ἀνέτρεψεν, οὐκ ἂν ὠργίζου, οὐκ ἂν διηνέχθης;" "εἰ δὲ γυνὴ ὑώδης;" ὅρα παιδείαν.

68 *Ἐκ τοῦ Ἐπικτήτου ἐγχειριδίου* (c. 43).

Πᾶν πρᾶγμα καὶ πρόσωπον δύο ἔχει λαβάς, μιᾷ φορητόν, μιᾷ ἀφόρητον· ὁ ἀδελφὸς ἐὰν ἀδικῇ, ἔνθεν αὐτὸ μὴ λάμβανε ὅτι ἀδικεῖ, ἀλλ' ἐκεῖθεν ὅτι ἀδελφός· καὶ οὕτω λήψῃ αὐτὸ καθ' ὃ φορητόν ἐστι.

69 *Διωτογένεος Πυθαγορείου ἐκ τοῦ περὶ ὁσιότητος.*

Περὶ βίω ἐκλογισμὸς καθ' ὅν κ' εἴη ὁ ἀνθρώπινος

*βίος ὁσιώτατός τε καὶ νομιμώτατος. πρᾶτον μὲν αἴκα τις μὴ πολυπραγμονῇ μηδὲ ταχὺ ἐπὶ τὰς δίκας ὁρμῴη, ἀλλὰ πολὺν χρόνον ἀμβαλλόμενος αὐτός τε προσκαλεόμενος ἄνευ δίκας, ὥστε ὁ ἀντίδικος προεκαλέσατο ἐμμένεν· καὶ αἴκα τὰ πολλὰ * ἐξηταγόρεν τῷ πράγματι * καμαύλη ἀλλ' αὐτὸ τὸ πρᾶγμα. καὶ ἐπὶ μὲν τᾶς ἀλλοτρίας ζαμίας τὸ ἀκριβὲς μῷτο, ἐπὶ δὲ τᾶς ἰδίας τὸ μέτριον· τὸ γὰρ αὐτὸν παρ' αὑτῷ διαιτεῖσθαι μετριωτέρω ἤθεος. καὶ μὴ ἐπὶ τᾷ ζαμίᾳ οὕτως ὡς ἐπὶ τᾷ αἰσχύνᾳ λυποῖτο· τὸ μὲν γὰρ ἐπ' ἀργυρίῳ ὀδυνᾶσθαι φαύλω ἤθεος, τὸ δὲ ἐπὶ τᾷ αἰσχύνᾳ καὶ τᾷ ἀτιμίᾳ καλοκαγάθω.*

70 *Ἐκ τῶν Ἀριστοξένου Πυθαγορικῶν ἀποφάσεων.*

Τὴν ἀληθῆ φιλοκαλίαν ἐν τοῖς ἐπιτηδεύμασι καὶ ἐν ταῖς ἐπιστήμαις ἔλεγεν εἶναι· τὸ γὰρ ἀγαπᾶν καὶ στέργειν τῶν καλῶν ἐθῶν τε καὶ ἐπιτηδευμάτων ὑπάρχειν· ὡσαύτως δὲ καὶ τῶν ἐπιστημῶν τε καὶ ἐμπειριῶν τὰς καλὰς καὶ εὐσχήμονας ἀληθῶς εἶναι φιλοκάλους, τὴν δὲ λεγομένην ὑπὸ τῶν πολλῶν φιλοκαλίαν, οἷον τοῖς ἀναγκαίοις καὶ χρησίμοις πρὸς τὸν βίον γινομένην, λάφυρά που τῆς ἀληθινῆς κεῖσθαι φιλοκαλίας.

71 *Ἐκ τοῦ Ἐπικτήτου ἐγχειριδίου* (c. 33, 15).

Τὰ πολλὰ δὲ καὶ τὸ γελᾶν ἀπέστω καὶ τὸ γέλωτα κινεῖν· ὀλισθηρὸς γὰρ ὁ τόπος εἰς ἰδιωτισμόν, καὶ ἅμα τὴν αἰδῶ τὴν πρὸς σὲ τῶν πλησίον ἱκανὸς ἀνεῖναι καὶ διαφθεῖραι. καὶ ἄλλος παράκειται τόπος ἐπισφαλὴς ταῖς τοιαύταις ἀνέσεσι, τὸ εἰς αἰσχρολογίαν εὐκόλως προαγαγεῖν τὸν πλησίον. ὅταν οὖν τι συμβῇ τοιοῦτον, ἂν μὲν εὔκαιρον ᾖ, καὶ ἐπίπληξον τῷ αἰ-

σχρολογήσαντι· ἐὰν δὲ τοιαῦτα ᾖ τὰ πρόσωπα ὥστε μὴ καιρὸν εἶναι, τῷ ἀποσιωπῆσαι καὶ σκυθρωπάσαι καὶ ἐρυθριᾶσαι δῆλος γενοῦ δυσαρεστῶν τῷ ῥηθέντι.

72 *Πυθαγορικά.*

Καὶ μὴν οὐδέν ἐστιν οὕτω τῆς Πυθαγορικῆς φιλοσοφίας ἴδιον ὡς τὸ συμβολικόν, οἷον ἐν τελετῇ μεμιγμένον φωνῇ καὶ σιωπῇ διδασκαλίας γένος, ὥστε μὴ λέγειν "ἀείσω ξυνετοῖσι, θύρας δ' ἐπίθεσθε βέβηλοι," ἀλλ' αὐτόθεν ἔχειν φῶς καὶ χαρακτῆρα τοῖς συνήθεσι τὸ φραζόμενον, τυφλὸν δὲ καὶ ἄσημον εἶναι τοῖς ἀπείροις. ὡς γὰρ ὁ ἄναξ ὁ ἐν Δελφοῖς οὔτε λέγει οὔτε κρύπτει ἀλλὰ σημαίνει, κατὰ τὸν Ἡράκλειτον, οὕτω τῶν Πυθαγορικῶν συμβόλων καὶ τὸ φράζεσθαι δοκοῦν κρυπτόμενόν ἐστι καὶ τὸ κρύπτεσθαι νοούμενον.

73 *Ἐκ τῆς Νικολάου ἐθῶν συναγωγῆς.*

Γαλακτοφάγοι, Σκυθικὸν ἔθνος, ἄοικοί τε εἰσίν, ὥσπερ καὶ οἱ πλεῖστοι Σκυθῶν, τροφήν τ' ἔχουσι γάλα μόνον ἵππειον, ἐξ οὗ τυροποιοῦντες ἐσθίουσι καὶ πίνουσι, καὶ εἰσὶ διὰ τοῦτο δυσμαχώτατοι, σὺν αὑτοῖς πάντῃ τὴν τροφὴν ἔχοντες. οὗτοι καὶ Δαρεῖον ἐτρέψαντο. εἰσὶ δὲ καὶ δικαιότατοι, κοινὰ ἔχοντες τά τε κτήματα καὶ τὰς γυναῖκας, ὥστε τοὺς μὲν πρεσβυτέρους αὐτῶν πατέρας νομίζειν, τοὺς δὲ νεωτέρους παῖδας, τοὺς δ' ἥλικας ἀδελφούς. ὧν ἦν καὶ Ἀνάχαρσις, εἷς τῶν ἑπτὰ σοφῶν νομισθείς, ὃς ἦλθεν εἰς τὴν Ἑλλάδα, ἵνα ἱστορήσῃ τὰ τῶν Ἑλλήνων νόμιμα. [τούτων καὶ Ὅμηρος μέμνηται ἐν οἷς φησί

Μυσῶν τ' ἀγχεμάχων, καὶ ἀγαυῶν Ἱππημολγῶν,
γλακτοφάγων ἀβίων τε, δικαιοτάτων ἀνθρώπων.

ἀβίους δ' αὐτοὺς λέγει ἢ διὰ τὸ γῆν μὴ γεωργεῖν, ἢ

διὰ τὸ ἀοίκους εἶναι, ἢ διὰ τὸ χρῆσθαι τούτους μόνους τόξοις· βιὸν γὰρ λέγει τὸ τόξον.] παρὰ τούτοις οὐδὲ εἷς οὔτε φθονῶν, ὥς φασιν, οὔτε μισῶν οὔτε φοβούμενος ἱστορήθη, διὰ τὴν τοῦ βίου κοινότητα καὶ δικαιοσύνην. μάχιμοι δ' οὐχ ἧττον αὐτῶν αἱ γυναῖκες ἢ οἱ ἄνδρες, καὶ συμπολεμοῦσιν αὐτοῖς ὅταν δέῃ. καὶ διὰ τοῦτο Ἀμαζόνας γενναιοτάτας εἶναι, ὥστε ποτὲ ἐλάσαι μέχρι Ἀθηνῶν καὶ Κιλικίας, ὅτι τούτων παρῴκουν ἐγγὺς τῆς Μαιώτιδος λίμνης.

74 Αἰσχίνου ἐν τῷ κατὰ Τιμάρχου (p. 73 R.).

Οὕτω γὰρ χρὴ καθαρὸν εἶναι τὸν βίον τοῦ σώφρονος ἀνδρός, ὥστε μηδὲ δέχεσθαι δόξαν αἰτίας πονηρᾶς.

75 Ἐκ τοῦ Ἐπικτήτου ἐγχειριδίου (c. 15).

Ἐν συμποσίῳ σε οὕτω δεῖ ἀναστρέφεσθαι· περιφερόμενόν τι γέγονε κατὰ σέ; ἐκτείνας τὴν χεῖρα μετρίως ἔφαψαι· παρέρχεται; μὴ κάτεχε· οὔπω ἐλήλυθε; μὴ ἐπίβαλλε πόρρω τὴν ὄρεξιν, ἀλλ' ἐκδέχου κατὰ σὲ γενέσθαι αὐτό. οὕτω πρὸς πλοῦτον, οὕτω πρὸς ἀρχάς, οὕτω πρὸς γάμον, καὶ ἔσῃ ἄξιος συμπότης τῶν θεῶν. ἂν δὲ παρατεθέντων σοι μὴ λάβῃς, ἀλλ' ὑπερίδῃς, τότε οὐ μόνον τῶν θεῶν συμπότης ἔσῃ, ἀλλὰ συνάρχων· οὕτω γὰρ ποιῶν καὶ Διογένης καὶ Ἡράκλειτος καὶ οἱ ὅμοιοι ἀξίως θεῖοί τ' ἦσαν καὶ ἐλέγοντο.

76 Μουσωνίου.

Κἂν ἡδονῇ κανονιστέον ᾖ τὰ ἀρεστά, οὐδὲν τῆς σωφροσύνης ἥδιον, κἂν πόνῳ κανονιστέον ᾖ τὰ φευκτά, οὐδέν ἐστι τῆς ἀκρασίας ἐπιπονώτερον.

77 Δημοκρίτου.

Ἡδονὴν οὐ πᾶσαν, ἀλλὰ τὴν ἐπὶ τῷ καλῷ αἱρέεσθαι χρεών.

78 Τοῦ αὐτοῦ.

Δίκαιος ἔρως ἀνυβρίστως ἐφίεσθαι τῶν καλῶν.

79 Ξενοφῶντος ἐκ τῆς πρὸς Λαμπρόκλειαν ἐπιστολῆς.

Πρῶτον γὰρ ἂν δέξαιο Σωκράτους ὑπερφυὲς δίδαγμα, πλοῦτον μετρεῖν χρήσει. οὐ γὰρ ἔφη Σωκράτης εἶναι τὴν ὑπέρμετρον κτῆσιν πλοῦτον, τὸ δ' ὅσοις προσήκει χρῆσθαι, ἔπειτα δὲ τούτων μὴ διαμαρτάνειν. τῷ γὰρ ὄντι τούτους κεκλῆσθαι εὐπόρους, τοὺς δ' ἄλλους πένητας ἀπεκάλει, καὶ ἀνίατον αὐτοὺς ἔφασκε πενίαν πένεσθαι· ψυχῆς γὰρ εἶναι τὸ ἀρρώστημα, οὐ κτήσεως.

80 Ἐν ταυτῷ.

Κακὸν οὐδὲν φύεται ἐν ἀνδρὶ θεμέλια θεμένῳ σοφίας σωφροσύνην καὶ ἐγκράτειαν.

81 Σωκράτους.

Δεῖ ὥσπερ σειρῆνας τὰς ἡδονὰς παρελθεῖν τὸν σπεύδοντα τὴν ἀρετὴν ἰδεῖν ὥσπερ πατρίδα.

82 Ἐκ τῶν Σερήνου.

Εὐριπίδης εὐδοκίμησεν ἐν θεάτρῳ εἰπὼν "τί δ' αἰσχρὸν ἢν μὴ τοῖσι χρωμένοις δοκῇ;" καὶ Πλάτων ἐντυχὼν αὐτῷ "ὦ Εὐριπίδη" ἔφη "αἰσχρὸν τό γ' αἰσχρόν, κἂν δοκῇ κἂν μὴ δοκῇ."

83 Ἐκ τῶν Ἀριστοτέλους χρειῶν.

Γέλων ὁ Σικελίας τύραννος σαπρόστομος ἦν. ὡς οὖν τῶν φίλων εἶπέν τις αὐτῷ, ὠργίζετο τῇ γυναικὶ ὅτι οὐκ ἐμήνυσεν αὐτῷ· ἡ δὲ ἔφη "ᾤμην γὰρ καὶ τῶν λοιπῶν ὁμοίως ὄζειν τὸ στόμα."

84 Ἐπικτήτου.

Ἐξέταξε σαυτὸν πότερον πλουτεῖν θέλεις ἢ εὐδαιμονεῖν. καὶ εἰ μὲν πλουτεῖν, ἴσθι ὅτι οὔτε ἀγαθὸν οὔτε ἐπὶ σοὶ πάντῃ, εἰ δὲ εὐδαιμονεῖν, ὅτι καὶ ἀγαθὸν καὶ ἐπὶ σοί· ἐπεὶ τὸ μὲν τύχης ἐπίκαιρον δάνειον, τὸ δὲ τῆς εὐδαιμονίας προαιρέσεως.

85 Καθάπερ ἔχιν ἢ ἀσπίδα ἢ σκορπίον ἐν ἐλεφαντίνῃ ἢ χρυσῇ θεώμενος κίστῃ οὐ διὰ τὸ πολυτελὲς τῆς ὕλης ἀγαπᾷς καὶ εὐδαιμονίζεις, ἀλλ' ὅτι λυμαντικὴ ἡ φύσις ἐκτρέπῃ καὶ μυσάττῃ, οὕτω καὶ ἐπειδὰν ἐν πλούτῳ καὶ ὄγκῳ τύχης θεάσῃ κακίαν ἐνοῦσαν μὴ καταπλαγῇς τὸ περιλαμπὲς τῆς ὕλης, ἀλλὰ καταφρόνει τῆς ἐν τῷ τρόπῳ κιβδηλίας.

86 Ὁ πλοῦτος οὐ τῶν ἀγαθῶν, ἡ πολυτέλεια τῶν κακῶν, ἡ σωφροσύνη τῶν ἀγαθῶν. καλεῖ δὲ ἡ μὲν σωφροσύνη ἐπὶ τὴν εὐτέλειαν καὶ κτῆσιν τῶν ἀγαθῶν, ὁ δὲ πλοῦτος ἐπὶ τὴν πολυτέλειαν, καὶ ἀφέλκει τῆς σωφροσύνης. δυσχερὲς ἄρα πλουτοῦντα σωφρονεῖν ἢ σωφρονοῦντα πλουτεῖν.

87 Ὥσπερ εἰ ἐν νηὶ ἐσπάρης ἢ ἐτέχθης, οὐκ ἂν ἔσπευδες αὐτῆς κυβερνήτης ὑπάρχειν· οὔτε γὰρ ἐκεῖ σοι φύσει ἡ ναῦς συνέσται οὔτε ἐνταῦθα ὁ πλοῦτος, ἀλλὰ πάντῃ ὁ λόγος. ὅπερ οὖν σοι φυσικὸν καὶ συγγενές, ὁ λόγος, τοῦτο καὶ οἰκεῖον ἡγησάμενος τούτου ἐπιμελοῦ.

88 Ἐν Πέρσαις γεννηθεὶς οὐκ ἂν ἔσπευδες οἰκεῖν τὴν Ἑλλάδα ἀλλ' αὐτόθι διάγων εὐτυχεῖν· ἐν πενίᾳ δὲ γεννηθεὶς τί σπεύδεις πλουτεῖν ἀλλ' οὐκ αὐτόθι μένων εὐτυχεῖν;

89 Ὥσπερ ἐπὶ σμικροῦ σκίμποδος θλιβόμενον ὑγιαίνειν ἄμεινον ἢ ἐπὶ πλατείας κλίνης κυλινδόμενον νο-

σεῖν, οὕτω καὶ ἐν μικρᾷ περιουσίᾳ βέλτιον συστελλόμενον εὐθυμεῖν ἢ ἐν μεγάλῃ τυγχάνοντα δυσθυμεῖν.

90 Οὐ πενία λύπην ἐργάζεται ἀλλὰ ἐπιθυμία, οὐδὲ πλοῦτος φόβον ἀπαλλάττει ἀλλὰ λογισμός. κτησάμενος τοιγαροῦν λογισμὸν οὔτε πλούτου ἐπιθυμήσεις οὔτε πενίαν μέμψῃ.

91 Οὔτε ἵππος ἐπὶ φάτνῃ καὶ φαλάροις καὶ τάπησιν οὔτε ὄρνις ἐπὶ βρώμῃ καὶ καλιᾷ ὑψοῦται καὶ γαυριᾷ, ἀλλ᾽ ἄμφω ἐπὶ ὠκύτητι, ὃ μὲν ποδῶν ὃ δὲ πτερῶν. καὶ σὺ τοιγαροῦν μὴ ἐπὶ τροφῇ καὶ σκέπῃ καὶ ἁπλῶς τῇ ἔξωθεν περιουσίᾳ μάταια ὀγκοῦ ἀλλ᾽ ἐπὶ χρηστότητι καὶ εὐποιίᾳ.

92 Τὸ καλῶς ζῆν τοῦ πολυτελῶς διαφέρει· τὸ μὲν γὰρ ἐκ σωφροσύνης καὶ αὐταρκείας καὶ εὐταξίας καὶ κοσμιότητος [καὶ εὐτελείας] παραγίνεται, τὸ δὲ ἐξ ἀκολασίας καὶ τρυφῆς καὶ ἀταξίας καὶ ἀκοσμίας· τέλος δὲ τοῦ μὲν ἔπαινος ἀληθὴς τοῦ δὲ ψόγος. εἰ τοίνυν βούλει καλῶς ζῆν, μὴ ζήτει μετὰ πολυτελείας ἐπαινεῖσθαι.

93 Μέτρον ἔστω σοι παντὸς σίτου καὶ ποτοῦ ἡ πρώτη τῆς ὀρέξεως ἔμπλησις· ὄψον δὲ καὶ ἡδονὴ αὐτὴ ἡ ὄρεξις· καὶ οὔτε πλείονα τῶν δεόντων προσοίσῃ, οὔτε ὀψοποιῶν δεήσῃ, ποτῷ τε τῷ παραπεσόντι ἀρκεσθήσῃ.

94 Τὰς σιτήσεις ποιοῦ μὴ πολυτελεῖς καὶ σκυθρωπάς, ἀλλὰ καὶ λαμπρὰς καὶ εὐτελεῖς, ἵνα μήτε διὰ τὰ σωματικὰ αἱ ψυχαὶ ταράττωνται μήτε φενακιζόμεναι πρὸς τῶν ἡδονῶν τῶν σωματικῶν ὀλιγωρῶσιν, ἐπεί τοι βλάπτονται τρυφῶντα μὲν παραυτίκα νοσοῦντα δὲ εἰσαῦθις τὰ σώματα.

95 Φρόντιζε ὅπως σε μὴ τὰ ἐν τῇ γαστρὶ μόνον σι-

τία ἐπαινῇ, ἀλλ' ἡ ἐν τῇ ψυχῇ εὐκρασία, ἐπεὶ τὰ μὲν ἀποσκυβαλίζεται, καὶ συνεκρεῖ ὁ ἔπαινος, ἣ δὲ κἂν ἡ ψυχὴ χωρισθῇ διαπαντὸς ἀκήρατος μένει.

96 *Ἐν ταῖς ἑστιάσεσι μέμνησο ὅτι δύο ὑποδέχῃ, σῶμα καὶ ψυχήν, καὶ ὅ τι ἂν τῷ σώματι δῷς τοῦτο εὐθέως ἐξέχεας, ὅ τι δ' ἂν τῇ ψυχῇ διαπαντὸς τηρεῖς.*

97 *Μὴ συγκεράσας ἅμα ὀργὴν πολυτελείᾳ προσενέγκῃς, [ἐπεὶ ἡ] πολυτέλεια μὲν εἰσπηδήσασα τῷ σώματι μετ' οὐ πολὺ οἴχεται, ἡ δὲ ὀργὴ ἐνδῦσα τῇ ψυχῇ ἐπὶ τὸ μήκιστον μένει. σκόπει τοιγαροῦν ὅπως μὴ ὑπ' ὀργῆς ἐξαχθεὶς τοὺς δαιτυμόνας πολυτελῶς ὑβρίσῃς, ἀλλὰ μᾶλλον μεθ' ἡμερότητος εὐτελῶς εὐφράνῃς.*

98 *Αἰσχρὸν τοῖς τῶν μελιττῶν δωρήμασι γλυκάζοντα, τὴν κατάποσιν τὸ τῶν θεῶν δῶρον τὸν λόγον πικράζειν τῇ κακίᾳ.*

99 *Μελέτω σοι ἐν τοῖς σιτίοις, ὅπως σοι οἱ ὑπουργοῦντες μὴ πλείους τῶν ὑπουργουμένων ὑπάρχωσιν· ἄτοπον γὰρ ὀλίγαις στιβάσι πολλὰς δουλεύειν ψυχάς.*

100 *Ἄριστον μὲν εἰ κἀν ταῖς παρασκευαῖς χειρουργῶν κἀν ταῖς τροφαῖς ἑστιώμενος κυβερνᾷς τοῖς θεραπεύουσι τῶν παρόντων. εἰ δὲ τὸ τοιόνδε δυσχερὲς τῷ καιρῷ ὑπάρχοι, μέμνησο ὅτι μὴ κάμνων ὑπὸ καμνόντων ὑπουργῇ, ἐσθίων ὑπὸ μὴ ἐσθιόντων, πίνων ὑπὸ μὴ πινόντων, λαλῶν ὑπὸ σιωπώντων, ἀνειμένος ὑπὸ συνεσταλμένων· καὶ οὔτε αὐτὸς φλεγμήνας ἄτοπον πείσῃ οὔθ' ἕτερον ἀγριάνας χαλεπὸν ἐργάσῃ.*

101 *Ἐρίζειν καὶ φιλονεικεῖν πάντῃ μὲν ἄτοπον, μάλιστα δὲ ἐν ταῖς παρὰ πότον ὁμιλίαις ἀπρεπές. οὔτε γὰρ ἂν μεθύων νήφοντα διδάξειέ τις οὔτ' αὖ μεθύων πρὸς νήφοντος πεισθείη. ἔνθα δ' ἂν μὴ παρῇ πειθοῦς τέλος, εἰκῇ σε παρέχεις διατείνεσθαι.*

102 Οἱ τέττιγες μουσικοὶ οἱ δὲ κοχλίαι ἄφωνοι, χαίρουσι δὲ οἳ μὲν ὑγραινόμενοι οἳ δὲ ἀλεαινόμενοι. ἔπειτα προκαλεῖται τοὺς μὲν ἡ δρόσος, καὶ ἐπὶ ταύτῃ ἐκδύνουσι· τοὺς δ' αὖ διεγείρει ἀκμάζων ὁ ἥλιος, καὶ ἐπ' αὐτῷ ᾄδουσι. τοιγαροῦν εἰ βούλει μουσικὸς καὶ εὐάρμοστος ὑπάρχειν ἀνήρ, ἡνίκ' ἂν μὲν ἐν τοῖς πότοις ὑπὸ τοῦ οἴνου δροσισθῇ ἡ ψυχή, τότε αὐτὴν μὴ ἔα προϊοῦσαν μολύνεσθαι· ἀλλ' ἡνίκ' ἂν ἐν ταῖς ἀνυδρίαις ὑπὸ τοῦ λόγου διαπυρωθῇ, τότε θεσπίζειν καὶ ᾄδειν τὰ τῆς δικαιοσύνης κέλευε λόγια.

103 Τὸν προσομιλοῦντα τριχῇ διασκοποῦ, ἢ ὡς ἀμείνονα ἢ ὡς ἥττονα ἢ ὡς ἴσον. καὶ εἰ μὲν ἀμείνονα, ἀκούειν χρὴ καὶ πείθεσθαι αὐτῷ, εἰ δὲ ἥττονα, ἀπειθεῖν, εἰ δὲ ἴσον, συμφωνεῖν· καὶ οὔ ποτε ἁλώσῃ φιλονεικίας.

104 Ἄμεινον τῇ ἀληθείᾳ συγχωρήσαντα τὴν δόξαν νικᾶν ἢ τῇ δόξῃ συγχωρήσαντα πρὸς τῆς ἀληθείας ἡττᾶσθαι.

105 Ζητῶν τὴν ἀλήθειαν οὐ ζητήσεις τὸ ἐκ παντὸς τρόπου νικᾶν· καὶ εὑρὼν τὴν ἀλήθειαν ἕξεις τὸ μὴ νικᾶσθαι.

106 Ἡ ἀλήθεια παρ' αὐτῇ νικᾷ, ἡ δὲ δόξα παρὰ τοῖς ἔξω.

107 Ἄριστον μετὰ ἑνὸς ἐλευθέρου ζῶντα ἄφοβον καὶ ἐλεύθερον ὑπάρχειν ἢ μετὰ πολλῶν δουλεύειν.

108 Ὅπερ φεύγεις παθεῖν, τοῦτο μὴ ἐπιχείρει διατιθέναι· φεύγεις δὲ δουλείαν, φυλάσσου τὸ δουλεύεσθαι. ὑπομένων γὰρ δουλεύεσθαι, αὐτὸς ὑπάρχειν πρότερον ἔοικας δοῦλος· οὔτε γὰρ κακία ἀρετῇ κοινωνεῖ οὔτε ἐλευθερία δουλείᾳ.

109 Ὥσπερ ὁ ὑγιαίνων οὐκ ἂν ὑπὸ νοσούντων βούλοιτο θεραπεύεσθαι, οὐδὲ τοὺς συνοικοῦντας αὐτῷ νοσεῖν· οὕτως οὐδ' ὁ ἐλεύθερος ἀνάσχοιτ' ἂν ὑπὸ δούλων ὑπηρετεῖσθαι ἢ τοὺς συμβιοῦντας αὐτῷ δουλεύειν.

110 Εἰ βούλει δούλων ἐκτὸς ὑπάρχειν, αὐτὸς ἀπολύθητι δουλείας· ἔσῃ δ' ἐλεύθερος, ἂν ἀπολυθῇς ἐπιθυμίας. οὔτε γὰρ Ἀριστείδης οὔτε Ἐπαμεινώνδας οὔτε Λυκοῦργος πλουτοῦντες καὶ δουλευόμενοι ὃ μὲν δίκαιος ὃ δὲ σωτὴρ ὃ δὲ θεὸς προσηγορεύθησαν, ἀλλ' ὅτι πενόμενοι τὴν Ἑλλάδα δουλείας ἀπέλυον.

111 Εἰ βούλει σοι τὴν οἰκίαν εὖ οἰκεῖσθαι, μιμοῦ τὸν Σπαρτιάτην Λυκοῦργον· ὃν γὰρ τρόπον οὗτος οὐ τείχεσι τὴν πόλιν ἔφραξεν, ἀλλ' ἀρετῇ τοὺς ἐνοικοῦντας ὠχύρωσε καὶ διαπαντὸς ἐτήρησεν ἐλευθέραν τὴν πόλιν· οὕτω καὶ σὺ μὴ μεγάλην αὐλὴν περίβαλλε καὶ πύργους ὑψηλοὺς ἀνίστα, ἀλλὰ τοὺς ἐνοικοῦντας εὐνοίᾳ καὶ πίστει καὶ φιλίᾳ στήριζε, καὶ οὐδὲν εἰς αὐτὴν εἰσελεύσεται βλαβερόν, οὐδ' ἂν τὸ σύμπαν τῆς κακίας παρατάξηται στῖφος.

112 Μὴ πίναξι καὶ γραφαῖς τὴν οἰκίαν σου περίβαλλε, ἀλλὰ σωφροσύνῃ κατάγραφε· τὸ μὲν γὰρ ἀλλοῖον τῶν ὀφθαλμῶν ἐστὶν ἐπίκαιρος γοητεία, τὸ δὲ σύμφυτος καὶ ἀνεξάλειπτος καὶ ἀίδιος οἰκίας κόσμος.

113 Ἀντὶ βοῶν ἀγέλης πειρῶ φίλων ἀγέλας ἐναγελάξεσθαί σου τῇ οἰκίᾳ.

114 Ὥσπερ λύκος ὅμοιον κυνί, οὕτω καὶ κόλαξ καὶ μοιχὸς καὶ παράσιτος ὅμοιον φίλῳ. πρόσεχε τοίνυν μὴ ἀντὶ κυνῶν φυλάκων λάθῃς εἰσδεχόμενος λυμεῶνας λύκους.

115 Τὸ μὲν γύψῳ λευκανθίζουσαν σπουδάζειν θαυ-

μάξεσθαι τὴν οἰκίαν ἀπειροκάλου, τὸ δὲ ἦθος χρηστότητι κοινωνίας λαμπρύνειν φιλοκάλου τε ἅμα καὶ φιλανθρώπου.

116 Ἐὰν θαυμάζῃς τὰ μικρά, πρὸ τῶν μεγάλων καταφρονηθήσῃ· ἐὰν δὲ καταφρονήσῃς τῶν μικρῶν, μεγάλως θαυμασθήσῃ.

117 Οὐδὲν μικρότερον φιληδονίας καὶ φιλοκερδείας καὶ ἀλαζονείας· οὐδὲν κρεῖσσον μεγαλοψυχίας καὶ πραότητος καὶ φιλανθρωπίας.

118 Ξενοκράτους.

Χρημάτων αὐτῷ κομισθέντων ἀπ' Ἀλεξάνδρου, ἑστιάσας τοὺς κομίζοντας τὸν αὐτοῦ τρόπον "ἀπαγγείλατε" ἔφη "Ἀλεξάνδρῳ, ὅτι ἔστ' ἂν οὕτω ζῶ οὐ δέομαι ταλάντων πεντήκοντα." τοσαῦτα γὰρ ἦν τὰ πεμφθέντα.

119 Ἡρακλείτου.

Ἀνθρώποισι πᾶσι μέτεστι γινώσκειν ἑωυτοὺς καὶ σωφρονέειν.

120 Ἡρακλείτου.

Ἀνὴρ ὁκόταν μεθυσθῇ, ἄγεται ὑπὸ παιδὸς ἀνήβου σφαλλόμενος, οὐκ ἐπαΐων ὅκῃ βαίνει, ὑγρὴν τὴν ψυχὴν ἔχων. αὔη ψυχὴ σοφωτάτη καὶ ἀρίστη.

121 Ἐκ τῆς Νικολάου ἐθῶν συναγωγῆς.

Ἰβήρων αἱ γυναῖκες κατ' ἔτος ὅ τι ἂν ἐξυφήνωσιν ἐν κοινῷ δεικνύουσιν· ἄνδρες δὲ χειροτονητοὶ κρίναντες τὴν πλεῖστα ἐργασαμένην προτιμῶσιν. ἔχουσι δὲ καὶ μέτρον τι ζώνης, ἣ τὴν γαστέρα περιλαβεῖν ἂν μὴ δυνηθῶσιν, αἰσχρὸν ἡγοῦνται.

122 Θουκυδίδου δημηγορίας Λακεδαιμονίων (IV, 18).

Σωφρόνων δὲ ἀνδρῶν, οἵ τινες τἀγαθὰ ἐς ἀμφίβολον ἀσφαλῶς ἔθεντο, καὶ ταῖς ξυμφοραῖς οἱ αὐτοὶ εὐξυνετώτερον ἂν προσφέροιντο.

123 *Μενεδήμου.*

Μενέδημος νεανίσκου τινὸς εἰπόντος "μέγα ἐστὶ τὸ τυχεῖν ὧν ἄν τις ἐπιθυμῇ," εἶπε "πολλῷ μεῖζόν ἐστι τὸ μηδὲ ἐπιθυμεῖν ὧν μὴ δεῖ."

124 *Πλάτωνος ἐκ τῆς Σωκράτους ἀπολογίας* (29 a).

Τὸ γάρ τοι θάνατον δεδιέναι, ὦ ἄνδρες, οὐδὲν ἄλλο ἐστὶν ἢ δοκεῖν σοφὸν εἶναι μὴ ὄντα· δοκεῖν γὰρ εἰδέναι ἐστὶν ἃ οὐκ οἶδεν. οἶδε μὲν γὰρ οὐδεὶς τὸν θάνατον, οὐδ' εἰ τυγχάνει τῷ ἀνθρώπῳ πάντων μέγιστον ὂν τῶν ἀγαθῶν· δεδίασι δὲ ὡς εὖ εἰδότες ὅτι μέγιστον τῶν κακῶν ἐστι. καὶ τοῦτο πῶς οὐκ ἂν ἀμαθία ἐστὶν αὕτη ἡ ἐπονείδιστος, ἡ τοῦ οἴεσθαι εἰδέναι ἃ οὐκ οἶδεν; ἐγὼ δέ, ὦ ἄνδρες, τούτῳ καὶ ἐνταῦθα ἴσως διαφέρω τῶν πολλῶν ἀνθρώπων, καὶ εἰ δή τῳ σοφώτερός του φαίην εἶναι, τούτῳ ἄν, ὅτι οὐκ εἰδὼς ἱκανῶς περὶ τῶν ἐν ᾅδου, οὕτω καὶ οἴομαι οὐκ εἰδέναι· τὸ δὲ ἀδικεῖν καὶ ἀπειθεῖν τῷ βελτίονι καὶ θεῷ καὶ ἀνθρώπῳ ὅτι κακὸν καὶ αἰσχρόν ἐστιν οἶδα· πρὸ οὖν τῶν κακῶν ὧν οἶδα ὅτι κακά ἐστιν ἃ μὴ οἶδα, εἰ καὶ ἀγαθὰ ὄντα τυγχάνει, οὐδέποτε φοβήσομαι οὐδὲ φεύξομαι.

125 *Πλάτωνος ἐκ τῆς Σωκράτους ἀπολογίας* (30 a).

Οὐδὲν γὰρ ἄλλο πράττων ἐγὼ περιέρχομαι ἢ πείθων ὑμῶν καὶ νεωτέρους καὶ πρεσβυτέρους, μήτε σωμάτων ἐπιμελεῖσθαι μήτε χρημάτων πρότερον μήτε ἄλλου τινὸς οὕτω σφόδρα ὡς τῆς ψυχῆς, ὅπως ὡς

ἀρίστη ἔσται· λέγων ὅτι οὐκ ἐκ χρημάτων ἡ ἀρετὴ γίνεται, ἀλλ' ἐξ ἀρετῆς τὰ χρήματα, καὶ τἄλλ' ἀγαθὰ τοῖς ἀνθρώποις ἅπαντα καὶ ἰδίᾳ καὶ δημοσίᾳ.

126 Τοῦ αὐτοῦ (30 c).

Ἀλλὰ μηδαμῶς ποιεῖτε τοῦτο· εὖ γὰρ ἴστε, ἐὰν ἐμὲ ἀποκτείνητε τοιοῦτον ὄντα οἷον ἐγὼ λέγω, οὐκ ἐμὲ μείζω βλάψετε ἢ ὑμᾶς αὐτούς. ἐμὲ μὲν γὰρ οὐδὲν ἂν βλάψειεν οὔτε Μέλητος οὔτε Ἄνυτος· οὐδὲ γὰρ ἂν δύναιντο. οὐ γὰρ οἶμαι θεμιτὸν εἶναι ἀμείνονι ἀνδρὶ ὑπὸ χείρονος βλάπτεσθαι· ἀποκτείνειεν μέντἂν ἴσως ἢ ἐξελάσειεν ἢ ἀτιμάσειεν.

127 Πλάτωνος πολιτείας γ' (388 e).

Ἀλλὰ μὴν οὐδὲ φιλογέλωτας δεῖ εἶναι· σχεδὸν γὰρ ὅταν τις ἐφίῃ ἰσχυρῷ γέλωτι, ἰσχυρὰν καὶ μεταβολὴν ζητεῖ τὸ τοιοῦτο. Δοκεῖ μοι, ἔφη. Οὔτε ἄρα ἀνθρώπους ἀξίους λόγου κρατουμένους ὑπὸ γέλωτος, ἄν τις ποιῇ, ἀποδεκτέον· πολὺ δὲ ἧττον, ἐὰν θεούς.

Θάλλουσα λυπῇ τοὺς ἄγαν ὑπέρφρονας.

128 Πλάτωνος πολιτείας γ' (389 d).

Τί δαί; σωφροσύνης ἄρα οὐ δεήσει ἡμῖν τοῖς νεανίαις; Πῶς δὲ οὔ; Σωφροσύνης δὲ ὡς πλήθει οὐ τὰ τοιάδε μέγιστα, ἀρχόντων μὲν ὑπηκόους εἶναι, αὐτοὺς δὲ ἄρχοντας τῶν περὶ πότους καὶ ἀφροδίσια καὶ περὶ ἐδωδὰς ἡδονῶν; Ἔμοιγε δοκεῖ.

129 Τοῦ αὐτοῦ (Reip. IX 571 b).

Τῶν μὲν ἀναγκαίων ἡδονῶν τε καὶ ἐπιθυμιῶν δοκοῦσί τινες ἐμοὶ εἶναι παράνομοι, αἳ κινδυνεύουσιν ἐγγίνεσθαι μὲν ἐν παντί, κολαζόμεναι δὲ ὑπό τε τῶν νόμων, καὶ τῶν βελτιόνων ἐπιθυμιῶν, μετὰ λόγου, ἐνίων μὲν ἀνθρώπων ἢ παντάπασιν ἀπαλλάττεσθαι,

ἢ ὀλίγαι λείπεσθαι καὶ ἀσθενεῖς· τῶν δὲ ἰσχυρότεραι καὶ πλείους. Λέγεις δὴ τίνας, ἔφη, ταύτας; Τὰς περὶ τὸν ὕπνον, ἦν δ' ἐγώ, ἐγειρομένας, ὅταν τὸ μὲν ἄλλο τῆς ψυχῆς εὕδῃ, ὅσον λογικὸν καὶ ἥμερον καὶ ἄρχον ἐκείνου· τὸ δὲ θηριῶδές τε καὶ ἄγριον, ἢ σίτου ἢ μέθης πλησθέν, σκιρτᾷ τε καὶ ἀπωσάμενον τὸν ὕπνον ζητεῖ ἰέναι καὶ ἀποπιμπλάναι τὰ αὑτοῦ ἤθη· οἶσθ' ὅτι πάντα ἐν τῷ τοιούτῳ τολμᾷ ποιεῖν ὡς ἀπὸ πάσης λελυμένον τε καὶ ἀπηλλαγμένον αἰσχύνης καὶ φρονήσεως· μητρί τε γὰρ ἐπιθυμεῖ μίγνυσθαι, ὡς οἴεται, οὐδὲν ὀκνεῖ, ἄλλῳ τε ὁτῳοῦν ἀνθρώπων καὶ θεῶν καὶ θηρίων· μιαιφονεῖν τε ὁτιοῦν βρώματός τε ἀπέχεσθαι μηδενός· καὶ ἑνὶ λόγῳ, οὔτε ἀνοίας οὐδὲν ἐλλείπει οὔτ' ἀναισχυντίας. Ἀληθέστατα, ἔφη, λέγεις. Ὅταν δέ γ' οἶμαι ὑγιεινῶς τις ἔχῃ αὐτὸς αὑτοῦ καὶ σωφρόνως, καὶ εἰς τὸν ὕπνον ἴῃ, τὸ λογιστικὸν μὲν ἐγείρας αὑτοῦ, καὶ ἑστιάσας λόγων καλῶν καὶ σκέψεων, εἰς σύννοιαν αὐτὸς αὑτοῦ ἀφικόμενος· τὸ ἐπιθυμητικὸν δὲ μήτ' ἐνδείᾳ δοὺς μήτε πλησμονῇ, ὅπως ἂν κοιμηθῇ καὶ μὴ παρέχῃ θόρυβον τῷ βελτίστῳ χαῖρον ἢ λυπούμενον, ἀλλ' ἐῶν αὐτὸ καθ' ἑαυτὸ μόνον καθαρὸν σκοπεῖν καὶ ὀρέγεσθαι τοῦ αἰσθάνεσθαι ὃ μὴ οἶδεν, ἤ τι τῶν γεγονότων ἢ ὄντων ἢ καὶ μελλόντων· ὡσαύτως δὲ καὶ τὸ θυμοειδὲς πραΰνας, καὶ μή τισιν εἰς ὀργὴν ἐλθών, κεκινημένῳ τῷ θυμῷ καθεύδῃ, ἀλλ' ἡσυχάσας μὲν τὼ δύο εἴδη, τὸ τρίτον δὲ κινήσας, ἐν ᾧ τὸ φρονεῖν ἐγγίνεται, οὕτως ἀναπαύηται, οἶσθ' ὅτι τῆς ἀληθείας ἐν τῷ τοιούτῳ μάλιστα ἅπτεται, καὶ ἥκιστα παράνομοι τότε αἱ ὄψεις φαντάζονται τῶν ἐνυπνίων. Παντελῶς μὲν οὖν, ἔφη, οἶμαι οὕτω. ταῦτα μὲν τοίνυν ἐπιπλέον ἐξήχθημεν εἰπεῖν· ὃ δὲ βουλόμεθα γνῶναι, τόδ' ἐστίν, ὡς

ἄρα δεινόν τι καὶ ἄγριον καὶ ἄνομον ἐπιθυμιῶν εἶδος ἑκάστῳ ἔνεστι, καὶ πάνυ δοκοῦσιν ἡμῶν ἐνίοις μετρίοις εἶναι. τοῦτο δὲ ἄρα ἐν τοῖς ὕπνοις γίνεται ἔνδηλον.

130 Τοῦ αὐτοῦ ἐκ τοῦ συμποσίου (180 e).

Πᾶσα γὰρ πρᾶξις ὡδὶ ἔχει· αὐτὴ ἐφ' ἑαυτῆς πραττομένη οὔτε καλὴ οὔτε αἰσχρά, οἷον ὃ νῦν ἡμεῖς ποιοῦμεν, ἢ πίνειν ἢ ᾄδειν ἢ διαλέγεσθαι, οὐκ ἔστι τούτων αὐτὸ καθ' αὑτὸ καλὸν οὐδέν· ἀλλ' ἐν τῇ πράξει, ὡς ἂν πραχθῇ, τοιοῦτον ἀπέβη. καλῶς μὲν γὰρ πραττόμενον καὶ ὀρθῶς καλὸν γίγνεται, μὴ ὀρθῶς δὲ αἰσχρόν· οὕτω δὴ καὶ τὸ ἐρᾶν καὶ ὁ ἔρως οὐ πᾶς ἐστι καλὸς οὐδ' ἄξιος ἐγκωμιάζεσθαι, ἀλλ' ὁ καλῶς προτρέπων ἐρᾶν.

131 Πλάτωνος (Symp. 184 b).

Ἔστι γὰρ ἡμῖν νόμος, ὥσπερ ἐπὶ τοῖς ἐρασταῖς ἦν, δουλεύειν ἐθελοντὰς ἡντινοῦν δουλείαν παιδικοῖς, μὴ κολακείαν μηδὲ ἐπονείδιστον εἶναι· οὕτω δὴ καὶ ἄλλη μία μόνη δουλεία ἑκούσιος λείπεται οὐκ ἐπονείδιστος· αὕτη δ' ἐστὶν ἡ περὶ τὴν ἀρετήν. νενόμισται γὰρ δὴ ἡμῖν, ἐάν τίς τινα θέλῃ θεραπεύειν, ἡγούμενος δι' ἐκεῖνον ἀμείνων ἔσεσθαι, ἢ κατὰ σοφίαν τινὰ ἢ κατὰ ἄλλο ὁτιοῦν μέρος ἀρετῆς, αὕτη αὖ ἡ ἐθελοδουλεία οὐκ αἰσχρά ἐστιν οὐδὲ κολακεία.

132 Πλάτωνος ἐκ τοῦ Φαίδωνος (68 c).

Ἄριστον δὲ τὸ περὶ τὰς ἐπιθυμίας μὴ ἐπτοῆσθαι, ἀλλ' ὀλιγώρως ἔχειν καὶ κοσμίως.

133 Πλάτωνος (Charm. 173 c).

Εἰ δὲ βούλοιό γε καὶ τὴν μαντικὴν εἶναι, συγχωρητέον ἐπιστήμην τοῦ μέλλοντος ἔσεσθαι, καὶ τὴν σωφροσύνην αὐτῆς ἐπιστατοῦσαν, τοὺς μὲν ἀλαζόνας

ἀποτρέπειν, τοὺς δὲ ἀληθεῖς μάντεις καθιστάναι ἡμῖν προφήτας τῶν μελλόντων. κατεσκευασμένον δὴ οὕτω τὸ ἀνθρώπινον γένος, ὅτι μὲν ἐπιστημόνως ἂν πράττοι καὶ ζῴη, ἐγῷμαι· ἡ γὰρ σωφροσύνη φυλάττουσα οὐκ ἂν ἐῴη παρεμπίπτουσαν τὴν ἀνεπιστημοσύνην συνεργὸν ἡμῖν εἶναι.

134 *Ἔστι δὲ δή, ὡς ἔοικεν, ὃ νῦν λέγεις, ὅτι ἡδοναὶ εἰσί τινες αἳ μὲν ἀγαθαὶ αἳ δὲ κακαί· ἢ γάρ; Ναί. Ἆρ' οὖν ἀγαθαὶ μὲν αἱ ὠφέλιμοι, κακαὶ δὲ αἱ βλαβεραί; Πάνυ γε. Ὠφέλιμοι δὲ αἱ ἀγαθόν ποιοῦσαι, κακαὶ δὲ αἱ κακόν; Φημί. Ἆρ' οὖν τὰς τοιάσδε λέγεις, οἷον κατὰ τὸ σῶμα, ἃς δὴ νῦν λέγομεν ἐν τῷ ἐσθίειν καὶ πίνειν ἡδονάς, εἰ ἄρα τούτων αἱ μὲν ὑγίειαν ποιοῦσαι ἐν τῷ σώματι ἢ ἰσχὺν ἢ ἄλλην τινὰ ἀρετὴν τοῦ σώματος, αὗται μὲν ἀγαθαὶ αἱ δὲ τἀναντία τούτων κακαί; Πάνυ γε. Οὐκ οὖν καὶ λῦπαι ὡσαύτως αἳ μὲν χρησταί εἰσιν αἳ δὲ πονηραί; Πῶς γὰρ οὔ; Οὐκ οὖν τὰς μὲν χρηστὰς καὶ ἡδονὰς καὶ λύπας καὶ αἱρετέον ἐστὶ καὶ πρακτέον; Πάνυ γε. Τὰς δὲ πονηρὰς οὔ; Δῆλον γὰρ δή. Ἕνεκα γὰρ δήπου τῶν ἀγαθῶν ἅπαντα ἡμῖν πρακτέα ἐστί· — καὶ τῶν ἀγαθῶν ἄρα ἕνεκα δεῖ ὡς τἆλλα, καὶ τὰ ἡδέα πράττειν, ἀλλ' οὐκ ἀγαθὰ τῶν ἡδέων; Πάνυ γε. Ἆρ' οὖν παντὸς ἀνδρός ἐστιν ἐκλέξασθαι ποῖα ἀγαθὰ τῶν ἡδέων ἐστὶ καὶ ποῖα κακά; ἢ τεχνικοῦ δεῖ εἰς ἕκαστον; Τεχνικοῦ. Ἀναμνησθῶμεν δὴ ὧν αὖ ἐγὼ εἰς Πῶλον καὶ Γοργίαν ἐτύγχανον λέγων· ἔλεγε γὰρ αὐτός, εἰ μνημονεύεις, ὅτι εἶεν παρασκευαί, αἳ μὲν μέχρι ἡδονῆς αὐτὸ τοῦτο παρασκευάζουσαι ἀγνοοῦσαι δὲ τὸ βέλτιον καὶ τὸ χεῖρον, αἳ δὲ γινώσκουσαι ὅτι τε ἀγαθὸν καὶ ὅτι κακόν· καὶ ἐτίθουν τῶν μὲν περὶ τὰς*

ἡδονὰς τὴν μαγειρικὴν ἐμπειρίαν ἀλλ' οὐ τέχνην, τῶν δὲ περὶ τὸ ἀγαθὸν τὴν ἰατρικὴν τέχνην. Plat. Gorg. 499 c.

135 Πλάτωνος (Gorg. 507 c).

Ἐγὼ μὲν οὖν ταῦτα οὕτω τίθεμαι καί φημι ταῦτα ἀληθῆ εἶναι. εἰ δέ ἐστιν ἀληθῆ, τὸν βουλόμενον ὡς ἔοικεν εὐδαίμονα εἶναι, σωφροσύνην μὲν ἀσκητέον καὶ διωκτέον ἐστίν· ἀκολασίαν δὲ φευκτέον ὡς ἔχει ποδῶν ἕκαστος ἡμῶν· καὶ παρασκευαστέον ἑαυτὸν μάλιστα μὲν μηδὲν δεῖσθαι τοῦ κολάζεσθαι, ἐὰν δὲ δεηθῇ ἢ αὐτὸς ἢ ἄλλος τις τῶν οἰκείων ἢ ἰδιώτης ἢ πόλις, ἐπιθετέον δίκην καὶ κολαστέον, εἰ μέλλει εὐδαίμων εἶναι. οὗτος ἔμοιγε δοκεῖ σκοπὸς εἶναι, πρὸς ὃν βλέποντα δεῖ ζῆν· καὶ πάντα εἰς τοῦτο τὰ αὑτοῦ συντείνοντα καὶ τὰ τῆς πόλεως, ὅπως δικαιοσύνη παρέσται καὶ σωφροσύνη τῷ μακαρίῳ μέλλοντι ἔσεσθαι, οὕτω πράττειν· οὐκ ἐπιθυμίας ἐῶντα ἀκολάστους εἶναι καὶ ταύτας ἐπιχειροῦντα πληροῦν, ἀνήνυτον κακόν, λῃστοῦ βίον ζῶντα· οὔτε γὰρ ἂν ἄλλως ἀνθρώπῳ προσφιλὴς εἴη ὁ τοιοῦτος οὔτε θεῷ· κοινωνεῖν γὰρ ἀδύνατος. ὅτῳ γὰρ μὴ ἔνι κοινωνία, φιλία οὐκ ἂν εἴη. φασὶ δὴ σοφοί, ὦ Καλλίκλεις, καὶ οὐρανὸν καὶ γῆν καὶ θεοὺς καὶ ἀνθρώπους τὴν κοινωνίαν συνέχειν, καὶ φιλίαν καὶ κοσμιότητα καὶ σωφροσύνην καὶ δικαιότητα· καὶ τὸ ὅλον τοῦτο διὰ ταῦτα κόσμον καλοῦσιν, ὦ ἑταῖρε, οὐκ ἀκοσμίαν οὐδὲ ἀκολασίαν. σὺ δέ μοι δοκεῖς οὐ προσέχειν τὸν νοῦν τούτοις καὶ ταῦτα σοφὸς ὤν· ἀλλὰ λέληθέ σε ὅτι ἰσότης ἡ γεωμετρικὴ καὶ ἐν θεοῖς καὶ ἐν ἀνθρώποις μέγα δύναται· σὺ δὲ πλεονεξίαν οἴει δεῖν ἀσκεῖν, γεωμετρίας γὰρ ἀμελεῖς.

136 *Ἰαμβλίχου ἐκ τῆς ἐπιστολῆς τῆς πρὸς Ἀρετὴν περὶ σωφροσύνης.*

Τὰ αὐτὰ δὴ οὖν καὶ περὶ πασῶν τῶν δυνάμεων τῆς ψυχῆς ἀποφαίνομαι, τὴν συμμετρίαν αὐτῶν πρὸς ἀλλήλας καὶ εὐταξίαν θυμοῦ τε καὶ ἐπιθυμίας καὶ λόγου κατὰ τὴν προσήκουσαν ἑκάστῳ τάξιν εὐκοσμίαν· καὶ τούτων ἡ τοῦ ἄρχειν τε καὶ ἄρχεσθαι ἐν δέοντι γινομένη διανομὴ σωφροσύνη ἂν εἴη πολυειδής.

ΠΕΡΙ ΑΚΟΛΑΣΙΑΣ. ϛ.

1 *Σοφοκλέους.*

Σοφοκλῆν ἤρετό τις πρεσβύτην ὄντα, εἰ ἔτι πλησιάζοι γυναικί· ὃ δ' "εὐφήμει" ἔφη "ἀσμενέστατα ἀπέφυγον ὥσπερ λυττῶντα καὶ ἄγριον δεσπότην."

2 *Ἀντισθένους.*

Ἀντισθένης ἔλεγεν τὰς μὴ κατὰ θύραν εἰσιούσας ἡδονὰς ἀναγκαῖον μὴ κατὰ θύραν πάλιν ἐξιέναι· δεήσει οὖν τμηθῆναι ἢ ἐλλεβορισθῆναι.

3 *Διογένους.*

Διογένης τοὺς πολλοὺς ἔφασκεν ζῶντας μὲν ἑαυτοὺς σήπειν λουτροῖς τέγγοντας καὶ ἀφροδισίοις τήκοντας, ἀποθνήσκοντας δ' ἐν θυμιάμασι τὸ σῶμα κελεύειν ἀποτίθεσθαι, τοὺς δ' ἐν μέλιτι, ὑπὲρ τοῦ μὴ ταχέως κατασαπῆναι.

4 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Διογένης ἔλεγεν τῶν οἴκων ἔνθα πλείστη τροφὴ πολλοὺς μῦς εἶναι καὶ γαλᾶς· καὶ δὴ σώματα τὰ πολλὴν τροφὴν δεχόμενα καὶ νόσους ἴσας ἐφέλκεσθαι.

5 *Διογένης πρός τινα νέον περιττῶς καλλωπιζόμε-*

νου "εἰ μὲν πρὸς ἄνδρας, ἀτυχεῖς" εἶπεν, "εἰ δὲ πρὸς γυναῖκας, ἀδικεῖς."

6 Ἐρυξιμάχου.

Ἐρυξίμαχος τὴν συνουσίαν μικρὰν ἐπιληψίαν ἔλεγεν καὶ χρόνῳ μόνῳ διαλλάττειν.

7 Ἀντιφῶντος.

Ἔνθα τὸ ἡδύ ἐστι πλησίον που καὶ τὸ λυπηρόν· αἱ γὰρ ἡδοναὶ οὐκ ἐκ σφῶν αὐτῶν ἐκπορεύονται, ἀλλ' ἀκολουθοῦσιν αὐταῖς λῦπαι καὶ πόνοι.

8 Μουσωνίου.

Ἀρχὴ τοῦ μὴ κατοκνεῖν τὰ ἀσχήμονα [πράττειν] τὸ μὴ κατοκνεῖν τὰ ἀσχήμονα λέγειν.

9 Σωκράτους.

Σωκράτης ἔφη τοὺς μοιχοὺς ὅμοιόν τι ποιεῖν τοῖς μὴ βουλομένοις ἐκ τῶν ἀπορρεουσῶν πίνειν, ἀλλ' ἐκ τοῦ ὕδατος τοῦ ἐν τῷ βάθει χείρονος ὑπάρχοντος.

10 Σόλωνος.

Ἡδονὴν φεῦγε ἥ τις ὕστερον λύπην τίκτει.

11 Δημοκρίτου.

Ἔνιοι πολίων μὲν δεσπόζουσι, γυναιξὶ δὲ δουλεύουσι.

12 Πλάτωνος ἐκ τοῦ Φαίδωνος (68 e).

Καί τοι καλοῦσίν γε ἀκολασίαν τὸ ὑπὸ τῶν ἡδονῶν ἄρχεσθαι.

13 Εὐσεβίου.

Τῶν ταῖς αἰσχραῖς ἐπιθυμίαις ἐπιχειρεόντων ἐλεύθερον μηδένα νόμιζε. τῶν γὰρ τοὺς τῇ τύχῃ δούλους κεκτημένων πολὺ βαρυτέροις οὗτοι δεσπόταις τοῖς καταναγκάζουσι ταῦτα δουλεύουσιν.

14 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Γαστριμαργίη σῶμα πιαίνει, ἀλογίην ἀείρει, ψυχῆς δὲ τὸ κάλλιστον λογισμὸν κοιμίζει.

15 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Ψυχῇ σῶμα ἀνθρώπου ἔδοσαν οἱ θεοί, ὥστε τῇ ψυχῇ τὸ σῶμα ὑπηρετέεσθαι. οἱ δὲ πολλοὶ τὸ ἔμπαλιν ποιέουσι, σώματι πρὸς πάντα καὶ ἐς μοῦνα τὰ ἐκείνου ὑπουργήματα τὸ κρέσσον τῷ χείρονι καὶ θνητῷ ἀθάνατον ψυχὴν καταδουλεύμενοι.

16 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Ἀκολασίη ψυχὴν λυμαίνεται καὶ σῶμα διαφθείρει, τόπερ ἕνεκα τῆς ἡδονῆς καὶ ὥστε αὐτῷ χαρίζεσθαι τὸν ἔχοντά μιν καταναγκάσαι τὰ αἴσχιστα πάντα ποιέειν.

17 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Ἀκολασίη ψυχὴν ὥσπερ νῆα ἄνεμοι ὑπολαβόντες τῇδε καὶ τῇδε φορέοντες συγκλονέουσι καὶ ἀπειθέα ποιέουσι τῷ κυβερνήτῃ· οὕτω καὶ ψυχὴν δονέουσα καὶ ἀπειθέα νόῳ εἶναι καταναγκάζουσα εἰρηνεύειν καὶ ἐν τῷ εὐδίῳ καὶ ἀσφαλεστάτῳ ὁρμέειν οὐ ξυγχωρέει.

18 *Φιλήμονος.*

Σοὶ γὰρ τίς ἐστιν, εἰπέ μοι, παρρησία;
σὺ λαλεῖς ἐν ἀνθρώποισιν ὡς ἄνθρωπος ὤν,
τὸ δ' ὅλον περιπατεῖς, ἢ τὸν αὐτὸν ἀέρα
ἑτέροισιν ἕλκεις, εἰπέ μοι, τοιοῦτος ὤν;

19 *Κλεάνθους.*

Ὅστις ἐπιθυμῶν ἀνέχετ' αἰσχροῦ πράγματος,
οὗτος ποιήσει τοῦτ' ἐὰν καιρὸν λάβῃ.

20 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Πόθεν ποτ' ἆρα γίνεται μοιχῶν γένος;
ἐκ κριθιῶντος ἀνδρὸς ἐν ἀφροδισίοις.

21 *Εὔφρονος.*

Οὐκ ἔστι μοιχοῦ μεῖζον οὐδὲ ἓν κακόν·
ἐν ταῖς γὰρ ἑτέρων βούλετ' ἀτυχίαις τρυφᾶν.

22 *Εὐριπίδου Ἀντιόπη.*

Καὶ μὴν ὅσοι μὲν σαρκὸς εἰς εὐεξίαν
ἀσκοῦσι βίοτον, ἢν σφαλῶσι χρημάτων,
κακοὶ πολῖται· δεῖ γὰρ ἄνδρ' εἰθισμένον
ἀκόλαστον ἦθος γαστρὸς ἐν ταυτῷ μένειν.

23 *Ἀναξανδρίδου.*

Μηδέποτε δοῦλον ἡδονῆς σαυτὸν ποίει.
λάγνης γυναικός ἐστιν οὐκ ἀνδρὸς τόδε.

24 *Ἀλέξιδος.*

Φεῦγ' ἡδονὴν φέρουσαν ὕστερον βλάβην.

25 *Μενάνδρου Ὀργῇ.*

*Οὐκ ἔστι μοιχοῦ πρᾶγμα **
ἀτιμότερον· θανάτου γάρ ἐστιν ὤνιον.

26 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Ὄνειδος αἰσχρὸς βίος ὅμως κἂν ἡδὺς ᾖ.

27 *Ἀριστοφῶντος Ἰατροῦ.*

Αἱ τῶν ἑταιρῶν γὰρ διοπετεῖς οἰκίαι·
γεγόνασιν ἄβατοι τοῖς ἔχουσι μηδὲ ἕν.

28 *Ἀπολλόδωρος.*

Καὶ κλείεθ' ἡ θύρα μοχλοῖς· ἀλλ' οὐδὲ εἷς
τέκτων ὀχυρὰν οὕτως ἐποίησεν θύραν,
δι' ἧς γαλῆ καὶ μοιχὸς οὐκ εἰσέρχεται.

29 *Βάθωνος.*

Πολλῶν σφόδρ' ὄντων χἀτέρων ἐν τῷ βίῳ,

ἐφ' οἷς ἅπαντες εἰκότως θορυβούμεθα,
μάλιστ' ἐμοὶ δήπουθε κινοῦσιν χολὴν
οἱ τῶν τρόπων φάσκοντες ἐπιεικῶς ἐρᾶν,
καὶ λανθάνειν δοκοῦντες, ὅτι πεπλασμένως
τὸ πρᾶγμα παρακεντοῦσι κοὐκ ἀληθινῶς.
τίνα γὰρ ἔχει, πρὸς τῆς Ἀθηνᾶς, διαφορὰν
ὁ τῶν νεωτέρων τε καὶ λείων τρόπος
παρ' ὃν οἱ δασεῖς ἔχουσι καὶ προβεβηκότες;

30 Φοινικίδου.

Μὰ τὴν Ἀφροδίτην οὐκ ἂν ὑπομείναιμ' ἔτι,
Πυθιάς, ἑταιρεῖν· χαιρέτω· μή μοι λέγε,
ἀπέτυχον, οὐδὲν πρὸς ἐμέ, καταλῦσαι θέλω.
εὐθὺς ἐπιχειρήσασα φίλον ἔσχον τινὰ
στρατιωτικόν· διαπαντὸς οὗτος τὰς μάχας
ἔλεγεν, ἐδείκνυ δ' ἅμα λέγων τὰ τραύματα,
εἰσέφερε δ' οὐδέν. δωρεὰν ἔφη τινὰ
παρὰ τοῦ βασιλέως λαμβάνειν, καὶ ταῦτ' ἀεὶ
ἔλεγεν· διὰ ταύτην ἣν λέγω τὴν δωρεὰν
ἐνιαυτὸν ἔσχε μ' ὁ κακοδαίμων δωρεάν.
ἀφῆκα τοῦτον, λαμβάνω δ' ἄλλον τινά,
ἰατρόν. οὗτος εἰσάγων πολλούς τινας
ἔτεμν' ἔκαε· πτωχὸς ἦν καὶ δήμιος.
δεινότερος οὗτος θατέρου μοι κατεφάνη.
ὃ μὲν διήγημ' ἔλεγεν, ὃ δ' ἐποίει νεκρούς.
τρίτῳ συνέζευξ' ἡ τύχη με φιλοσόφῳ
πώγων' ἔχοντι καὶ τρίβωνα καὶ λόγον·
εἰς προῦπτον ἦλθον ἐμπεσοῦσα δὴ κακόν.
οὐδὲν ἐδίδου γάρ. τάλαν * αἰτῶ τι ἔφη
οὐκ ἀγαθὸν εἶναι τἀργύριον. ἔστω κακόν,
διὰ τοῦτο δός μοι, ῥῖψον· οὐκ ἐπείθετο.

31 Σωκράτους.

Οὔτε πῦρ ἱματίῳ περιστεῖλαι δυνατὸν οὔτε αἰσχρὸν ἁμάρτημα χρόνῳ.

32 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Τὸ μὲν πῦρ ὁ ἄνεμος, τὸν δὲ ἔρωτα ἡ συνήθεια ἐκκαίει.

33 *Ἐκ τῶν Σερήνου.*

Διογένης κατεγέλα τῶν τὰ μὲν ταμιεῖα κατασημαινομένων μοχλοῖς καὶ κλεισὶ καὶ σημάντροις, τὸ δὲ σῶμα τὸ αὑτῶν πολλαῖς θυρίσι καὶ θύραις ἀνοιγόντων διά τε στόματος καὶ αἰδοίων καὶ ὤτων καὶ ὀφθαλμῶν.

34 *Ζήνωνος.*

Ὁ Ζήνων ᾐτιᾶτο τοὺς πλείστους λέγων, ἐξὸν ἀπὸ τῶν πόνων τὰς ἡδονὰς φέρειν, ἀπὸ τῶν μαγειρείων λαμβάνοντας.

35 *Μουσωνίου.*

Μουσώνιος ἔλεγεν ὑπερβολὴν ἀναισχυντίας εἶναι τὸ πρὸς μὲν τὰς τῶν πόνων ὑπομονὰς μεμνῆσθαι τῆς τοῦ σώματος ἀσθενείας, πρὸς δὲ τὰς τῶν ἡδονῶν ἐκλανθάνεσθαι.

36 *Ἐκ τῶν Σερήνου.*

Περὶ Εὐριπίδου τις ἔλεγεν ὅτι μισογύνης εἴη· καὶ ὁ Σοφοκλῆς "ἀλλ' οὐκ ἔν γε τῇ κλίνῃ" ἔφη.

37 *Κλεάνθους.*

Κλεάνθης ἔλεγεν, εἰ τέλος ἐστὶν ἡ ἡδονή, πρὸς κακοῦ τοῖς ἀνθρώποις τὴν φρόνησιν δίδοσθαι.

38 *Διογένους.*

Διογένης "παρὰ μὲν τῶν θεῶν" φησίν "ὑγίειαν εὔχονται· πάντα δὲ οἱ πλεῖστοι τἀναντία τῇ ὑγιείᾳ πράττουσιν."

39 *Κράτης.*

Κράτης ἰδὼν χρυσῆν εἰκόνα Φρύνης τῆς ἑταίρας ἐν Δελφοῖς ἑστῶσαν, ἀνέκραγεν ὅτι τοῦτο τῆς Ἑλλήνων ἀκρασίας τρόπαιον ἕστηκεν.

40 *Αἰσώπου.*

Αἴσωπος πρὸς τὸν τῷ κάλλει κακῶς κεχρημένον εἶπεν "ὁποίῳ ἱματίῳ ἠμφιεσμένος κακῶς αὐτὸ ἀποδύῃ."

41 *Εἰς φιλοσοφίαν λόγων.*

Καὶ μὴν τό γε ἀκολασταίνειν πάλαι ψέγεται, ὅτι ἀνίεται ἐν τῷ τοιούτῳ τὸ ἐπιθυμητικὸν εἰς ἐλευθερίαν πέρα τοῦ δέοντος.

42 *Πλουτάρχου ἐκ τοῦ κατὰ ἡδονῆς.*

Ὅτι τὰ σώματα ἀνίησιν ἡ ἡδονὴ καθ' ἡμέραν ἐκμαλάττουσα ταῖς τρυφαῖς, ὧν ἡ συνέχεια παραιρεῖται τὸν τόνον, ἀναχαλῶσα τὴν ἰσχὺν αὐτῶν, ἐξ ὧν ῥᾳστώνη μὲν νόσων, ῥᾳστώνη δὲ καμάτων, προμελετώμενον δ' ἐν νεότητι γῆρας.

43 *Ἐν ταυτῷ.*

Θηρίον ἐστὶ δουλαγωγὸν ἡδονή, ἀλλ' οὐκ ἄγριον· εἴθε γὰρ ἦν, φανερῶς ἂν πολεμοῦσα ταχέως ἑάλω· νῦν δὲ καὶ ταύτῃ μισητότερον, ὅτι κλέπτει τὴν ἔχθραν ὑποδυομένη σχῆμα εὐνοίας. ὥστε διχῇ ἀποτρόπαιον, καὶ ὧν βλάπτει καὶ ὧν ψεύδεται.

44 *Ἐν ταυτῷ.*

Τὰς μὲν οὖν δικαίας ἡδονὰς οὐκ ἔτ' ἂν ἡδονὰς οὕτω καλέσαιμεν, οὔτε ἴσμεν, ἀλλὰ θεραπείας· ὅσαι δὲ παρὰ ταύτας, πᾶσαι ὕβρεις περιτταί εἰσι, πεπηρωμέναι, βιαζόμεναι, καὶ ταῖς ποικιλίαις κολακεύουσαι λανθάνουσι βλάπτουσαι. οὐ δὲ εἰς τὰ ἡμέτερα νόμος ὁ καὶ τὰ τῶν ἀλόγων ζώων, ὧν μετὰ τὸ ἀκέσα-

σθαι τὰς ἐπιθυμίας οὐδενὸς ὄρεξις, ἀλλὰ κόρος τῶν ἐπειγόντων ἀβιάστοις ἡδοναῖς.

45 Ἐν ταυτῷ.

Μή τις προδότας ἐπαινεῖ; τοιοῦτόν ἐστιν ἡ ἡδονή, προδίδωσι |τὰ τῆς ἀρετῆς. μή τις βασανιστάς; τοιοῦτόν ἐστιν τὸ ἥδεσθαι, βασανίζει τὰ τῆς σωφροσύνης. μή τις φιλαργυρίαν; ἀπλήρωτόν ἐστιν ἑκάτερον. τί τηλικούτῳ χαίρομεν θηρίῳ, ὃ κολακεῦον ἡμᾶς ἀναλίσκει;

46 Ἐν ταυτῷ.

Τί δ' οὐ πάντων ὁρώντων ἀκρατεύεις, ἀλλὰ καὶ σαυτὸν αἰδούμενος φεύγεις νυκτὶ καὶ σκότῳ τοῖς ἀμαρτύροις πιστεύων τὴν ὕβριν; οὐδεὶς γὰρ τῶν καλῶν ἔργων σκότος προβάλλει τὸ φῶς αὐτοῖς μαρτυρεῖν αἰσχυνόμενος, ἀλλ' ὅλον ἅμα τὸν κόσμον ἥλιον γενέσθαι πρὸς ἃ κατορθοῖ βούλοιτ' ἄν· ἅπασα δὲ κακία ὁρᾶσθαι γυμνὴ φυλάττεται σκέπην προβαλλομένη τὰ πάθη. ἀποκόψαντες οὖν αὐτὰ γυμνὰς βλέπομεν τὰς ἡδονάς· μεθύουσιν εἰς ἀναισθησίαν, λαγνεύουσιν εἰς * αἰῶνα, καθεύδουσιν εἰς ἔργα, οὐκ ἐπιστρέφονται πόλεων, οὐ φροντίζουσι γονέων, οὐκ αἰσχύνονται νόμους.

47 Πυθαγόρου.

Δουλεύειν πάθεσι χαλεπώτερον ἢ τυράννοις (Porph. ep. ad Marc. c. 34).

48 Τοῦ αὐτοῦ.

Ἐλεύθερον ἀδύνατον εἶναι τὸν πάθεσι δουλεύοντα καὶ ὑπὸ παθῶν κρατούμενον (Porph. ibid).

49 Ἐκ τῶν Σερήνου.

Χαλεπὸν ἔλεγεν εἶναι ὁ Πλάτων εὑρεῖν τοῖς μὲν ἀκολάστοις ἀγαθὴν ἡδονὴν τοῖς δὲ νοσοῦσιν ὑγιεινήν.

50 *Ἐκ τῶν Ἐπικτήτου.*

Τοὺς δυσχερεῖς δὲ φιλοσόφους εἰς μέσον ἄγοντες, οἷς οὐ δοκεῖ κατὰ φύσιν ἡδονὴ εἶναι, ἀλλ' ἐπιγίγνεσθαι τοῖς κατὰ φύσιν, δικαιοσύνῃ σωφροσύνῃ ἐλευθερίᾳ. τί ποτ' οὖν ἡ ψυχὴ ἐπὶ μὲν τοῖς τοῦ σώματος ἀγαθοῖς μικροτέροις οὖσι χαίρει καὶ γαληνιᾷ, ὥς φησιν Ἐπίκουρος, ἐπὶ δὲ τοῖς αὐτῆς ἀγαθοῖς μεγίστοις οὖσιν οὐχ ἥδεται; καί τοι καὶ δέδωκέ μοι ἡ φύσις αἰδῶ, καὶ πολλὰ ὑπερυθριῶ, ὅταν τι ὑπολάβω αἰσχρὸν λέγειν. τοῦτό με τὸ κίνημα οὐκ ἐᾷ τὴν ἡδονὴν θέσθαι ἀγαθὸν καὶ τέλος τοῦ βίου.

51 *Πυθαγόρου.*

Οὐδεὶς ἐλεύθερος ἑαυτοῦ μὴ κρατῶν.

52 *Διογένους.*

Διογένης οὐδὲν εὐωνότερον εἶναι μοιχοῦ διωρίζετο τὴν ψυχὴν τῶν δραχμῆς ὠνίων προϊεμένου.

53 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Διογένης ἐσθίειν ἔλεγε τοὺς ἀνθρώπους τοῦ ἥδεσθαι ἕνεκα, ἀποπαύεσθαι δὲ αὐτοῦ τούτου χάριν μὴ ἐθέλειν.

54 *Κάτωνος πρεσβυτέρου.*

Κάτων ὁ πρεσβύτερος τῆς πολυτελείας καθαπτόμενος εἶπεν ὡς χαλεπόν ἐστι λέγειν πρὸς γαστέρα ὦτα μὴ ἔχουσαν.

55 *Δημοκρίτου.*

Ἡμερήσιοι ὕπνοι σώματος ὄχλησιν ἢ ψυχῆς ἀδημοσύνην ἢ ἀργίην ἢ ἀπαιδευσίην σημαίνουσιν.

56 *Κάτωνος.*

Κάτων τοὺς σπουδάζοντας ἐν τοῖς γελοίοις ἔλεγεν ἐν τοῖς σπουδαίοις γίγνεσθαι καταγελάστους.

57 *Δημοκρίτου.*

Ξυνουσίη ἀποπληξίη σμικρή· ἐξέσσυται γὰρ ἄνθρωπος ἐξ ἀνθρώπου.

58 *Ἐκ τῶν Ἐπικτήτου ἀπομνημονευμάτων.*

Ἐν Ῥώμῃ αἱ γυναῖκες μετὰ χεῖρας ἔχουσι τὴν Πλάτωνος πολιτείαν, ὅτι κοινὰς ἀξιοῖ εἶναι τὰς γυναῖκας. τοῖς γὰρ ῥήμασι προσέχουσι τὸν νοῦν, οὐ τῇ διανοίᾳ τἀνδρός, ὅτι οὐ γαμεῖν κελεύων καὶ συνοικεῖν ἕνα μιᾷ εἶτα κοινὰς εἶναι βούλεται τὰς γυναῖκας, ἀλλ' ἐξαιρῶν τὸν τοιοῦτον γάμον καὶ ἄλλο τι εἶδος γάμου εἰσφέρων. καὶ τὸ ὅλον οἱ ἄνθρωποι χαίρουσιν ἀπολογίας τοῖς ἑαυτῶν ἁμαρτήμασι πορίζοντες. ἐπεί τοι φιλοσοφία φησὶν ὅτι οὐδὲ τὸν δάκτυλον ἐκτείνειν εἰκῇ προσήκει.

59 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Τῶν ἡδέων τὰ σπανιώτατα γιγνόμενα μάλιστα τέρπει.

60 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Εἴ τις ὑπερβάλλοι τὸ μέτριον, τὰ ἐπιτερπέστατα ἀτερπέστατα ἂν γένοιτο.

61 *Μουσωνίου ἐκ τῶν περὶ ἀφροδισίων.*

Μέρος μέντοι τρυφῆς οὐ μικρότατον κἂν τοῖς ἀφροδισίοις ἐστίν, ὅτι ποικίλων δέονται παιδικῶν οἱ τρυφῶντες οὐ νομίμων μόνον ἀλλὰ καὶ παρανόμων, οὐδὲ θηλειῶν μόνον ἀλλὰ καὶ ἀρρένων, ἄλλοτε ἄλλους θηρῶντες ἐρωμένους, καὶ τοῖς μὲν ἐν ἑτοίμῳ οὖσιν οὐκ ἀρκούμενοι, τῶν δὲ σπανίων ἐφιέμενοι, συμπλοκὰς δ' ἀσχήμονας ζητοῦντες, ἅπερ ἅπαντα μεγάλα ἐγκλήματα ἀνθρώπου ἐστί. χρὴ δὲ τοὺς μὴ τρυφῶντας ἢ μὴ κακοὺς μόνα μὲν ἀφροδίσια νομίζειν δίκαια τὰ ἐν γάμῳ καὶ ἐπὶ γενέσει παίδων συντελού-

μενα, ὅτι καὶ νόμιμά ἐστιν· τὰ δέ γε ἡδονὴν θηρώμενα ψιλὴν ἄδικα καὶ παράνομα, κἂν ἐν γάμῳ ᾖ. συμπλοκαὶ δ' ἄλλαι αἱ μὲν κατὰ μοιχείαν παρανομώταται, καὶ μετριώτεραι τούτων οὐδὲν αἱ πρὸς ἄρρενας τοῖς ἄρρεσιν, ὅτι παρὰ φύσιν τὸ τόλμημα· ὅσαι δὲ μοιχείας ἐκτὸς συνουσίαι πρὸς θηλείας εἰσὶν ἐστερημέναι τοῦ γίνεσθαι κατὰ νόμον, καὶ αὗται πᾶσαι αἰσχραί, αἵγε πράττονται δι' ἀκολασίαν· ὡς μετά γε σωφροσύνης οὔτ' ἂν ἑταίρᾳ πλησιάσαι ὑπομείνειέ τις, οὔτ' ἂν ἐλευθέρᾳ γάμου χωρὶς οὔτε μὰ Δία θεραπαίνῃ τῇ αὑτοῦ. τὸ γὰρ μὴ νόμιμον μηδ' εὐπρεπὲς τῶν συνουσιῶν τούτων αἶσχός τε καὶ ὄνειδος μέγα τοῖς θηρωμένοις αὐτάς· ὅθεν οὐδὲ πράττειν φανερῶς οὐδὲν ἀνέχεται τῶν τοιούτων οὐδείς, κἂν ἐπ' ὀλίγον ἐρυθριᾶν οἷός τε ᾖ, ἐπικρυπτόμενοι δὲ καὶ λάθρᾳ οἷγε μὴ τελέως ἀπερρωγότες ταῦτα τολμῶσιν. καίτοι τό γε πειρᾶσθαι λανθάνειν ἐφ' οἷς πράττει τις ὁμολογοῦντος ἁμαρτάνειν ἐστί. νὴ Δία, φησίν· ἀλλ' οὐχ ὥσπερ ὁ μοιχεύων ἀδικεῖ τὸν ἄνδρα τῆς διεφθαρμένης γυναικός, οὕτως καὶ ὁ τῇ ἑταίρᾳ συνὼν ἀδικεῖ τινὰ ἢ νὴ Δία τῇ μὴ ἐχούσῃ ἄνδρα· οὐδὲ γὰρ ἐλπίδα παίδων οὐδενὸς διαφθείρει οὗτος. ἐγὼ δὲ ἔχω μὲν λέγειν, ὡς πᾶς ὅστις ἁμαρτάνει καὶ ἀδικεῖ εὐθύς, εἰ καὶ μηδένα τῶν πέλας, ἀλλ' αὑτόν γε πάντως χείρονα ἀποφαίνων καὶ ἀτιμότερον· ὁ γὰρ ἁμαρτάνων, παρ' ὅσον ἁμαρτάνει, χείρων καὶ ἀτιμότερος. ἵνα οὖν ἐῶ τὴν ἀδικίαν, ἀλλ' ἀκολασίαν γε πᾶσα ἀνάγκη πάντως προσεῖναι τῷ ἡττωμένῳ αἰσχρᾶς ἡδονῆς καὶ χαίροντι τῷ μολύνεσθαι ὥσπερ αἱ ὕες· οἷος οὐχ ἥκιστά ἐστι καὶ ὁ δούλῃ ἰδίᾳ πλησιάζων, ὅπερ νομίζουσί τινες μάλιστά πως εἶναι ἀναίτιον, ἐπεὶ καὶ δεσπότης πᾶς αὐτεξούσιος εἶναι δοκεῖ ὅ τι βούλεται χρῆσθαι δούλῳ

τῷ ἑαυτοῦ. πρὸς τοῦτο δὲ ἁπλοῦς μοι ὁ λόγος· εἰ γάρ τῳ δοκεῖ μὴ αἰσχρὸν μηδ' ἄτοπον εἶναι δούλῃ δεσπότην πλησιάζειν τῇ ἑαυτοῦ, καὶ μάλιστα εἰ τύχοι οὖσα χήρα, λογισάσθω ποῖόν τι καταφαίνεται αὐτῷ, εἰ δέσποινα δούλῳ πλησιάζοι. οὐ γὰρ ἂν δόξειεν εἶναι ἀνεκτόν, οὐ μόνον εἰ κεκτημένη ἄνδρα νόμιμον ἡ γυνὴ προσοῖτο δοῦλον, ἀλλ' εἰ καὶ ἄνανδρος οὖσα τοῦτο πράττοι· καίτοι τοὺς ἄνδρας οὐ δήπου τῶν γυναικῶν ἀξιώσει τις εἶναι χείρονας, οὐδ' ἧττον δύνασθαι τὰς ἐπιθυμίας παιδαγωγεῖν τὰς ἑαυτῶν, τοὺς ἰσχυροτέρους τὴν γνώμην τῶν ἀσθενεστέρων, τοὺς ἄρχοντας τῶν ἀρχομένων. πολὺ γὰρ κρείττονας εἶναι προσήκει τοὺς ἄνδρας, εἴπερ καὶ προεστάναι ἀξιοῦνται τῶν γυναικῶν· ἂν μέντοι ἀκρατέστεροι φαίνωνται ὄντες . . . καὶ κακίονες. ὅτι δ' ἀκρασίας ἔργον καὶ οὐδενὸς ἄλλου ἐστὶ τὸ δεσπότην δούλῃ πλησιάζειν, τί δεῖ καὶ λέγειν; γνώριμον γάρ.

62 Τοῦ αὐτοῦ ἐκ τοῦ περὶ κουρᾶς.

Ἔφη μὲν παραπλησίως τὸν ἄνδρα χρῆναι τῇ κεφαλῇ προσφέρειν κουράν, ὡς ἀμπέλῳ προσφέρομεν τομήν, τοῦ μόνον ἀφαιρεῖν χάριν τὸ ἄχρηστον . . . οὔτε γενείῳ πώγωνα, ἀλλ' εἶναί τινα καὶ ταύτην σκέπην ὑπὸ τῆς φύσεως ἡμῖν πεπορισμένην· τὸν δὲ πώγωνα καὶ σύμβολον γεγονέναι τοῦ ἄρρενος, ὥσπερ ἀλεκτρυόνι λόφον καὶ λέοντι χαίτην· ὅθεν τῆς μὲν κόμης ἀφαιρετέον εἶναι τὸ ἐνοχλοῦν, τοῦ δὲ πώγωνος οὐδέν. οὐδὲ γὰρ ἐνοχλεῖν αὐτὸν οὐδέν, ἕως ἂν ὑγιαίνῃ τὸ σῶμα ἢ νόσον μὴ 'τοιαύτην νοσῇ, ἧς ἕνεκα γένοιτ' ἂν ἀφαίρεσις τῶν ἐπὶ τοῦ γενείου τριχῶν. εὖ γὰρ εἴρηται, ἔφη, τὸ τοῦ Ζήνωνος, ὅτι τούτου ἕνεκα καρτέον οὗ καὶ κομητέον, τοῦ κατὰ φύσιν, ἵνα μὴ

βαρούμενός τις ὑπὸ τῆς κόμης μηδ' ἐνοχλούμενος ἢ πρὸς μηδεμίαν ἐνέργειαν. ἡ γὰρ δὴ φύσις τὸ μὲν ἐνδεὲς μᾶλλον φαίνεται φυλαξαμένη, τὸ δὲ περιττὸν ἧττον, ἐπί τε φυτῶν καὶ ἐπὶ ζώων, ὅτι τῆς προσθέσεως τοῦ ἐνδεοῦς ἡ ἀφαίρεσις τοῦ περιττοῦ πολὺ ῥᾴων καὶ εὐπετεστέρα ἐστίν. χρὴ δ' ἐφ' ἑκάτερα τὸν λογισμὸν τὸν ἀνθρώπινον τῇ φύσει βοηθεῖν, ὥστ' ἀναπιμπλάναι τὰς ἐνδείας ἐφ' ὅσον οἷόν τε ἀναπληροῦν, ἐλαττοῦν δὲ καὶ ἀφαιρεῖν τὰς περιττότητας. ὅθεν καὶ καρτέον μόνης ἕνεκα τῆς ἀφαιρέσεως τοῦ περιττοῦ καὶ οὐχὶ κόσμου χάριν, ὅπερ οἴονται δεῖν ἔνιοι τὰ μὲν γένεια λεαινόμενοι καὶ μιμούμενοι τοὺς ἀγενείους ἢ νὴ Δία τοὺς ἄρτι γενειάσκοντας, τὴν δὲ κεφαλὴν οὐχ ὁμοίως κειρόμενοι, διαφόρως δὲ τὰ πρόσω τῶν ὀπίσω. καὶ γάρ τοι δοκῶν εἶναι κόσμος οὗτος πολλὴν ἀκοσμίαν ἔχει, καὶ διαφέρει οὐδὲν τοῦ τῶν γυναικῶν καλλωπισμοῦ. ἐκεῖναί τε γὰρ τὰ μέν τινα μέρη πλέκουσι τῶν τριχῶν τὰ δὲ καθιᾶσι τὰ δὲ ἕτερόν τινα σκευάζουσι τρόπον, ἵνα φαίνωνται καλλίονες, οἵ τε κειρόμενοι οὕτως ἄνδρες κατάδηλοί εἰσιν δι' ἐπιθυμίαν τοῦ φαίνεσθαι καλοὶ οἷς βούλονται ἀρέσκειν, τὰς μὲν τέλεον ἀφαιροῦντες τῶν τριχῶν τὰς δὲ πλάττοντες οὕτως ὡς ἂν εὔοπτοι ὦσιν ἐν γυναιξί τε καὶ παισὶν ὑφ' ὧν ἐπαινεῖσθαι δέονται. ἤδη δὲ τινὲς καὶ αὐτῷ τῷ βαρύνεσθαι τὰς τρίχας κείρονται καὶ λεαίνουσι τὰ γένεια, σαφῶς οὗτοί γε κατεαγότες ὑπὸ τῆς τρυφῆς καὶ ἐκνενευρισμένοι παντάπασιν, οἵ γε ἀνέχονται ἀνδρόγυνοι καὶ γυναικώδεις ὁρᾶσθαι ὄντες, ὅπερ ἔδει φεύγειν ἐξ ἅπαντος, εἰ δὴ τῷ ὄντι ἄνδρες ἦσαν. τί γὰρ δὴ καὶ εἰσὶν αἱ τρίχες ἀνθρώποις βάρος; εἰ μὴ νὴ Δία καὶ τοῖς ὀρνέοις τὰ πτερὰ φαίη τις εἶναι βάρος.

63 *Πλάτωνος ἐκ τοῦ Πρωταγόρου* (357 b).

Τοσοῦτον ἐξαρκεῖ πρὸς τὴν ἀπόδειξιν, ἣν ἐμὲ δεῖ καὶ Πρωταγόραν ἀποδεῖξαι περὶ ὧν ἤρεσθ' ἡμᾶς. ἤρεσθε δέ, εἰ μέμνησθε, ἡνίκα ἡμεῖς ἀλλήλοις ὡμολογοῦμεν ἐπιστήμης μὴ εἶναι μηδὲν κρεῖττον, ἀλλὰ τοῦτο ἀεὶ κρατεῖν, ὅπου ἂν ἐνῇ, καὶ ἡδονῆς καὶ τῶν ἄλλων ἁπάντων· ὑμεῖς δὲ δὴ ἔφατε τὴν ἡδονὴν πολλάκις κρατεῖν καὶ τοῦ εἰδότος ἀνθρώπου. ἐπειδὴ δὲ ὑμῖν οὐχ ὁμολογοῦμεν, μετὰ τοῦτο ἤρεσθε ἡμᾶς, ὦ Πρωταγόρα τε καὶ Σώκρατες, εἰ μή ἐστι τοῦτο τὸ πάθημα ἡδονῆς ἡττᾶσθαι, ἀλλὰ τί ποτ' ἐστὶ καὶ τί ὑμεῖς αὐτὸ φατὲ εἶναι, εἴπατε ἡμῖν. εἰ μὲν οὖν τότε εὐθὺς ὑμῖν εἴπομεν ὅτι ἀμαθία, κατεγελᾶτε ἂν ἡμῶν· νῦν δὲ ἂν ἡμῶν καταγελᾶτε, καὶ ὑμῶν αὐτῶν καταγελάσεσθε. καὶ γὰρ ὑμεῖς ὡμολογήκατε ἐπιστήμης ἐνδείᾳ ἐξαμαρτάνειν περὶ τὴν τῶν ἡδονῶν αἵρεσιν καὶ λυπῶν τοὺς ἐξαμαρτάνοντας, (ταῦτα δέ ἐστιν ἀγαθά τε καὶ κακά) καὶ οὐ μόνον ἐπιστήμης, ἀλλὰ καὶ εἰς τὸ πρόσθεν ἔτι ὡμολογήκατε ὅτι μετρητικῆς· ἡ δὲ ἐξαμαρτανομένη πρᾶξις ἄνευ ἐπιστήμης ἴστε που καὶ αὐτοὶ ὅτι ἀμαθίᾳ πράττεται· ὥστε τοῦτ' ἐστὶ τὸ ἡδονῆς ἥττω εἶναι ἀμαθία ἡ μεγίστη.

64 *Πλάτωνος ἐκ τοῦ Φιλήβου* (65 b).

ΣΩΚΡ. Καθ' ἓν ἕκαστον τοίνυν τῶν τριῶν πρὸς τὴν ἡδονὴν καὶ τὸν νοῦν κρίνωμεν. δεῖ γὰρ ἰδεῖν ποτέρῳ μᾶλλον ξυγγενὲς ἕκαστον αὐτῶν ἀπονεμοῦμεν. ΠΡΩΤ. Κάλλους καὶ ἀληθείας καὶ μετριότητος πέρι λέγεις; ΣΩΚΡ. Ναί. πρῶτον δέ γε ἀληθείας λαβοῦ, ὦ Πρώταρχε, καὶ λαβόμενος βλέψας εἰς τρία, νοῦν καὶ ἀλήθειαν καὶ ἡδονήν, πολὺν ἐπισχὼν χρόνον ἀπόκριναι σαυτῷ πότερον ἡδονὴ ξυγγενέστε-

ρον ἢ νοῦς ἀληθείᾳ. ΠΡΩΤ. Τί δὲ χρόνου δεῖ; πολὺ γὰρ οἶμαι διαφέρετον. ἡδονὴ μὲν γὰρ ἁπάντων ἀλαζονέστατον. ὡς δὲ λόγος, καὶ ἐν ταῖς ἡδοναῖς ταῖς περὶ τὰ ἀφροδίσια, αἳ δὴ μέγισται δοκοῦσιν εἶναι, καὶ τὸ ἐπιορκεῖν συγγνώμην εἴληφε παρὰ θεῶν, ὡς καθάπερ παίδων τῶν ἡδονῶν νοῦν οὐδὲ τὸν ὀλίγιστον κεκτημένων. νοῦς δὲ ἤτοι ταυτὸν καὶ ἀλήθειά ἐστιν ἢ πάντων ὁμοιότατόν τε καὶ ἀληθέστατον. ΣΩΚΡ. Οὐκ οὖν τὸ μετὰ τοῦτο τὴν μετριότητα ὡσαύτως σκέψαι πότερον ἡδονὴ φρονήσεως ἢ φρόνησις ἡδονῆς πλείω κέκτηται; ΠΡΩΤ. Εὔσκεπτόν γε καὶ ταύτην τὴν σκέψιν προβέβληκας. οἶμαι γὰρ ἡδονῆς μὲν καὶ περιχαρείας οὐδὲν τῶν ὄντων πεφυκὸς ἀμετρότερον εὑρεῖν ἄν τινα· νοῦ δὲ καὶ ἐπιστήμης ἐμμετρότερον οὐδ' ἂν ἕν ποτε. ΣΩΚΡ. Καλῶς εἴρηκας. ὅμως δ' ἔτι λέγε τὸ τρίτον· νοῦς ἡμῖν κάλλους μετείληφε πλεῖον ἢ τὸ τῆς ἡδονῆς γένος, ὥστε εἶναι καλλίω νοῦν ἡδονῆς ἢ τοὐναντίον; ΠΡΩΤ. Ἆρ' οὖν φρόνησιν μὲν καὶ νοῦν, ὦ Σώκρατες, οὐδεὶς πώποτε οὔθ' ὕπαρ οὔτ' ὄναρ αἰσχρὸν οὔτε εἶδεν οὔτε ἐπενόησεν οὐδαμῇ οὐδαμῶς οὔτε γιγνόμενον οὔτε ὄντα οὔτ' ἐσόμενον; ΣΩΚΡΑΤ. Ὀρθῶς. ΠΡΩΤ. Ἡδονὰς δέ γέ που, καὶ ταύτας σχεδὸν τὰς μεγίστας, ὅταν ἴδωμεν ἡδόμενον ὁντινοῦν, ἢ τὸ γελοῖον ἐπ' αὐταῖς ἢ τὸ πάντων αἴσχιστον ἑπόμενον ὁρῶντες αὐτοί τε αἰσχυνόμεθα καὶ ἀφανίζοντες κρύπτομεν ὅ τι μάλιστα, νυκτὶ πάντα τὰ τοιαῦτα διδόντες, ὡς φῶς οὐ δέον ὁρᾶν αὐτά. ΣΩΚΡ. Πάντῃ δὴ φήσεις, ὦ Πρώταρχε, ὑπό τε ἀγγέλων πέμπων καὶ παροῦσι φράζων, ὡς ἡδονὴ κτῆμα οὐκ ἔστι πρῶτον οὐδ' αὖ δεύτερον, ἀλλὰ πρῶτον μέν πη περὶ μέτρον, καὶ τὸ μέτριον καὶ καίριον καὶ πάντα ὁπόσα τοιαῦτα χρὴ νομίζειν τὴν

ἀίδιον εἰρῆσθαι φύσιν. ΠΡΩΤ. Φαίνεται γοῦν ἐκ τῶν νῦν λεγομένων. ΣΩΚΡ. Δεύτερον μὴν περὶ τὸ σύμμετρον καὶ καλὸν καὶ τὸ τέλεον καὶ ἱκανὸν καὶ πάνθ' ὁπόσα τῆς γενεᾶς αὖ ταύτης ἐστίν. ΠΡΩΤ. Ἔοικε γοῦν. ΣΩΚΡ. Τὸ τοίνυν τρίτον, ὡς ἡ ἐμὴ μαντεία, νοῦν καὶ φρόνησιν τιθεὶς οὐκ ἂν μέγα τι τῆς ἀληθείας παρεξέλθοις. ΠΡΩΤ. Ἴσως. ΣΩΚΡ. Ἆρ' οὖν οὐ τέταρτα, ἃ τῆς ψυχῆς αὐτῆς ἔθεμεν, ἐπιστήμας τε καὶ τέχνας καὶ δόξας ὀρθὰς λεχθείσας, ταῦτ' εἶναι τὰ πρὸς τοῖς τρισὶ τέταρτα; εἴπερ τοῦ ἀγαθοῦ γέ ἐστι μᾶλλον ἢ τῆς ἡδονῆς ξυγγενῆ. ΠΡΩΤ. Τάχ' ἄν. ΣΩΚΡ. Πέμπτας τοίνυν ἃς ἡδονὰς ἔθεμεν, ἀλύπους ὁρισάμενοι, καθαρὰς ἐπονομάσαντες τῆς ψυχῆς αὐτῆς ἐπιστήμας, ταῖς δὲ αἰσθήσεσιν ἑπομένας; ΠΡΩΤ. Ἴσως. ΣΩΚΡ. "ἕκτῃ δ' ἐν γενεᾷ" φησὶν Ὀρφεὺς "καταπαύσατε κόσμον ἀοιδῆς." ἀτὰρ κινδυνεύει καὶ ὁ ἡμέτερος λόγος ἐν ἕκτῃ καταπεπαυμένος εἶναι κρίσει.

65 *Εὐκλείδου.*

Ἔστι δὲ ὁ μὲν ὕπνος νεώτερος καὶ μειρακιώδης δαίμων, εὔσπειστος καὶ ῥᾴδιος ἀποφυγεῖν· ὁ δὲ ἕτερος οὗτος πολιὸς καὶ γέρων, ἐν τοῖς πρεσβυτέροις τῶν ἀνθρώπων μάλιστα ἐμπεφυκώς, ἄσπειστος καὶ ἀπαραίτητος. τούτου δὲ τοῦ δαίμονος ἐργῶδές ἐστιν ἀπαλλαγῆναι ὅταν ἅπαξ παρῇ· οὔτε γὰρ λόγοις προσέχει οὐδὲν οὔτε ἀκούειν τὸ σύνολον δύναται· κωφὸς γάρ ἐστιν. οὔτ' αὖ δεικνύων αὐτῷ ἐμφανίσαις τὶ ἄν· τυφλὸς γάρ ἐστιν.

ΠΕΡΙ ΑΝΔΡΕΙΑΣ. Ζ.

1 *Εὐριπίδης Βελλεροφόντῃ.*

Θάρσος δὲ πρὸς τὰς συμφορὰς μέγα σθένει.

2 *Εὐριπίδου Αἰγεῖ.*

Ἔστι καὶ πταίσαντ᾽ ἀρετὰν ἀποδείξασθαι θανάτῳ.

3 *Σοφοκλέους Αἴαντος* (473).

Αἰσχρὸν γὰρ ἄνδρα τοῦ μακροῦ χρῄζειν βίου,
κακοῖσιν ὅστις μηδὲν ἐξαλλάσσεται.
τί γὰρ παρ᾽ ἦμαρ ἡμέρα τέρπειν ἔχει
προσθεῖσα κἀναθεῖσα τοῦ γε κατθανεῖν;
οὐκ ἂν πριαίμην οὐδενὸς λόγου βροτόν,
ὅστις καλαῖσιν ἐλπίσιν θερμαίνεται.
ἀλλ᾽ ἢ καλῶς ζῆν ἢ καλῶς τεθνηκέναι
τὸν εὐγενῆ χρή. πάντ᾽ ἀκήκοας λόγον.

4 *Μενάνδρου.*

Ὅταν τι πράττῃς ὅσιον, ἀγαθὴν ἐλπίδα
πρόβαλλε σαυτῷ, τοῦτο γιγνώσκων ὅτι
τόλμῃ δικαίᾳ καὶ θεὸς συλλαμβάνει.

5 *Εὐριπίδης Ἀρχελάῳ.*

Ἓν δέ σοι μόνον προφωνῶ, μὴ ᾽πὶ δουλείαν ποτὲ
ζῶν ἑκὼν ἔλθῃς, παρόν σοι κατθανεῖν ἐλευθέρῳ.

6 *Εὐριπίδης Δανάῃ.*

Φεῦ τοῖσι γενναίοισιν ὡς ἁπανταχοῦ
πρέπει χαρακτὴρ χρηστὸς εἰς εὐψυχίαν.

7 *Σοφοκλῆς Ἐριφύλῃ.*

Ἀνδρῶν γὰρ ἐσθλῶν στέρνον οὐ μαλάσσεται.

8 *Σοφοκλῆς Κρεούσῃ.*

Ὅστις δὲ τόλμῃ πρὸς τὸ δεινὸν ἔρχεται,
ὀρθὴ μὲν ἡ γλῶσσ᾽ ἐστίν, ἀσφαλὴς δ᾽ ὁ νοῦς.

9 *Εὐριπίδης Ἡρακλεῖ.*

Τὸ μὲν σφαγῆναι δεινόν, εὔκλειαν δ' ἔχει·
τὸ μὴ θανεῖν δὲ δειλόν, ἡδονὴ δ' ἔνι.

10 *Εὐριπίδου Οἰδίποδι.*

Πότερα γενέσθαι δῆτα χρησιμώτερον
συνετὸν ἄτολμόν τ' ἢ θρασύν τε κἀμμανῆ;
τὸ μὲν γὰρ αὐτῶν σκαιόν, ἀλλ' ἀμύνεται·
τὸ δ' ἡσυχαῖον ἔργον· ἐν δ' ἀμφοῖν νόσος.

11 *Αἰσχύλου* (S. c. Th. 42).

Ἄνδρες γὰρ ἑπτὰ θούριοι λοχαγέται,
ταυροσφαγοῦντες εἰς μελάνδετον σάκος
καὶ θιγγάνοντες χερσὶ ταυρείου φόνου,
Ἄρη τ' Ἐνυὼ καὶ φιλαίματον Φόβον
ὡρκωμότησαν, ἢ πόλει κατασκαφὰς
θέντες λαπάξειν ἄστυ Καδμείων βίᾳ
ἢ γῆν θανόντες πρόσθε φυράσειν φόνῳ.
σημεῖα δ' αὐτῶν τοῖς τεκοῦσιν εἰς δόμους
πρὸς ἅρμ' Ἀδράστου χερσὶν ἔστεφον δάκρυ
λείβοντες· οἶκτος δ' οὔ τις ἦν ἀνὰ στόμα.
σιδηρόφρων γὰρ θυμὸς ἀνδρίᾳ φλέγων
ἔπνει λεόντων ὡς ἄρην δεδορκότων.
καὶ τῷδε πίστις οὐκ ὄκνῳ χρονίζεται.
κληρουμένους δ' ἔλειπον, ὡς πάλῳ λαχὼν
ἕκαστος αὐτῶν πρὸς πύλας ἄγοι λόχον.

12 *Μιμνέρμου.*

*Οὐ μὲν δὴ * κείνου γε μένος καὶ ἀγήνορα θυμὸν*
τοῖον ἐμεῦ προτέρων πεύθομαι, οἵ μιν ἴδον
Λυδῶν ἱππομάχων πυκινὰς κλονέοντα φάλαγγας
Ἕρμιον ἂμ πεδίον, φῶτα φερεμμελίην.
τοῦ μὲν ἄρ' οὔ ποτε πάμπαν ἐμέμψατο Παλλὰς Ἀθήνη
δριμὺ μένος κραδίης, εὖθ' ὅγ' ἀνὰ προμάχους

σεύαιθ', αἱματόεντος ἐν ὑσμίνῃ πολέμοιο
πικρὰ βιαζομένου δυσμενέων βέλεα.
οὐ γάρ τις κείνου * δηίων ἔτ' ἀμεινότερος φὼς
ἔσκεν ἐποίχεσθαι φυλόπιδος κρατερῆς
ἔργον, ὅτ' αὐγαῖσιν φέρετ' ὠκέος ἠελίοιο —

13 Μελιννοῦς Λεσβίας εἰς Ῥώμην.

Χαῖρέ μοι Ῥώμα, θυγάτηρ Ἄρηος,
χρυσεομίτρα δαΐφρων ἄνασσα,
σεμνὸν ἃ ναίεις ἐπὶ γᾶς ὄλυμπον
αἰὲν ἄθραυστον.
σοὶ μόνᾳ πρέσβιστα δέδωκε Μοῖρα
κῦδος ἀρρήκτω βασιλῆον ἀρχᾶς,
ὄφρα κοιρανῆον ἔχοισα κάρτος
ἁγεμονεύῃς.
σᾷ δ' ὑπὸ σδεύγλᾳ κρατερῶν λεπάδνων
στέρνα γαίας καὶ πολιᾶς θαλάσσας
σφίγγεται· σὺ δ' ἀσφαλέως κυβερνᾷς
ἄστεα λαῶν.
πάντα δὲ σφάλλων ὁ μέγιστος αἰὼν
καὶ μεταπλάσσων βίον ἄλλοτ' ἄλλως
σοὶ μόνᾳ πλησίστιον οὖρον ἀρχᾶς
οὐ μεταβάλλει.
ἦ γὰρ ἐκ πάντων σὺ μόνα κρατίστους
ἄνδρας αἰχματὰς μεγάλους λοχεύεις,
εὔσταχυν Δάματρος ὅπως ἀνεῖσα
καρπὸν ἀπ' ἀνδρῶν.

14 Ὁμήρου (Il. ν 288).

Εἴπερ γάρ κε βλεῖο πονεύμενος ἠὲ τυπείης,
οὐκ ἂν ἐπ' αὐχέν' ὄπισθε πέσοι βέλος οὐδ' ἐπὶ νώτῳ,
ἀλλά κεν ἢ στέρνων ἢ νηδύος ἀντιάσειεν
πρόσσω ἱεμένοιο μετὰ προμάχων ὀαριστύν.

15 *Τοῦ αὐτοῦ* (Il. χ 283).

Οὐ μέν μοι φεύγοντι μεταφρένῳ ἐν δόρυ πήξεις,
ἀλλ' ἰθὺς μεμαῶτι διὰ στήθεσφιν ἔλασσον.

16 *Σωκράτους.*

Σωκράτης ἐρωτηθεὶς τί ῥώμη εἶπε "κίνησις ψυχῆς μετὰ σώματος."

17 *Ἐπικτήτου.*

Διὰ τοῦτο ἐπαινεῖν Ἀγριππῖνον δίκαιον, ὅτι πλείστου ἄξιος ἀνὴρ γενόμενος οὐδεπώποτε ἐπήνεσεν ἑαυτόν, ἀλλ' εἰ καὶ ἄλλος τις αὐτὸν ἐπήνει, ἠρυθρία. οὗτος δ', ἔφη, ὁ ἀνὴρ τοιοῦτος ἦν, ὥστε τοῦ συμβαίνοντος ἀεὶ ἑαυτῷ δυσκόλου ἔπαινον γράφειν, εἰ μὲν πυρέττοι πυρετοῦ, εἰ δὲ ἀδοξοῖ ἀδοξίας, εἰ δὲ φεύγοι φυγῆς. καί ποτε μέλλοντι, ἔφη, αὐτῷ ἀριστήσειν ἐπέστη ὁ λέγων, ὅτι φεύγειν αὐτὸν κελεύει Νέρων· καὶ ὃς ἔφη "οὐκοῦν" εἶπεν "ἐν Ἀρικίᾳ ἀριστήσομεν."

18 *Διογένους.*

Διογένης οὐδένα καλὸν ἔφησεν εἶναι πόνον, οὗ μὴ τέλος εἴη εὐψυχία καὶ τόνος ψυχῆς, ἀλλ' οὐχὶ σώματος.

19 *Θουκυδίδου δημηγορίας Περικλέους* (II, 63).

Τὸ γὰρ ἄπραγμον οὐ σώζεται μὴ μετὰ τοῦ δραστηρίου τεταγμένον.

20 *Ἀντιγόνου.*

Ἀντίγονος δὲ ἔφη τὰ μέγιστα καλὰ ἄνευ μεγάλων κακῶν οὐκ εἶναι.

21 *Χρυσίππου.*

Ἔλεγεν δὲ ὁ Χρύσιππος ἀλγεῖν μὲν τὸν σοφόν,

μὴ βασανίζεσθαι δέ· μὴ γὰρ ἐνδιδόναι τῇ ψυχῇ. καὶ δεῖσθαι μέν, μὴ προσδέχεσθαι δέ.

22 Δημοκρίτου.

Ἀνδρείη τὰς ἄτας μικρὰς ἔρδει.

23 Μουσωνίου.

Καὶ ἂν τοῦ συμφέροντος μάλιστα προαιρῇ ἔχεσθαι, μὴ δυσχέραινε ταῖς περιστάσεσιν, ἐνθυμούμενος πόσα ἤδη σοι τῶν ἐν βίῳ οὐχ ὡς σὺ ἐβούλου συνέπεσεν, ἀλλ' ὡς συνέφερεν.

24 Τοῦ αὐτοῦ.

Ἅρπαζε τὸ καλῶς ἀποθνήσκειν ὅτε ἔξεστι, μὴ μετὰ μικρὸν τὸ μὲν ἀποθνήσκειν σοι παρῇ, τὸ δὲ καλῶς μηκέτι ἐξῇ.

25 Τοῦ αὐτοῦ.

Οὐκ ἔστιν ἐπὶ πολλῶν συμφέροντι ζῶντα καθηκόντως ἀποθανεῖν μὴ ὑπὲρ πλειόνων ἀποθνήσκοντα συμφέροντι.

26 Δημοκρίτου.

Ἀνδρεῖος οὐχ ὁ τῶν πολεμίων κρατῶν μόνον, ἀλλὰ καὶ ὁ τῶν ἡδονῶν κρείσσων. ἔνιοι δὲ πολίων μὲν δεσπόζουσι, γυναιξὶ δὲ δουλεύουσιν.

27 Πλάτωνος.

Πλάτων ἔφη τοὺς ἀγαθοὺς ἄνδρας βίου μὴ μακροῦ ἀλλὰ λαμπροῦ δεῖσθαι.

28 Δαρείου.

Δαρεῖος ὁ Ξέρξου πατὴρ ἑαυτὸν ἐγκωμιάζων ἔλεγεν ἐν ταῖς μάχαις καὶ παρὰ τὰ δεινὰ γίγνεσθαι φρονιμώτερος.

29 Ἐκ τῶν Δίωνος χρειῶν.

Λάκαινα γυνὴ τοῦ υἱοῦ αὐτῆς ἐν παρατάξει χωλωθέντος καὶ δυσφοροῦντος ἐπὶ τούτῳ "μὴ λυποῦ τέκνον" εἶπεν, "καθ' ἕκαστον γὰρ βῆμα τῆς ἰδίας ἀρετῆς ὑπομνησθήσῃ."

30 Ἐκ τῶν Ἀριστοτέλους χρειῶν.

Ἀνάξαρχος ὁ φυσικὸς εἰπόντος αὐτῷ Ἀλεξάνδρου ὅτι κρεμῶ σε, "ἀπείλει τούτοις" ἔφη "τοῖς πολλοῖς· ἐμοὶ δὲ οὐδὲν διαφέρει ὑπὲρ γῆς ἢ κατὰ γῆς σήπεσθαι."

31 Τοῦ αὐτοῦ.

Γοργὼ ἡ Λακεδαιμονία Λεωνίδου γυνή, τοῦ υἱοῦ αὐτῆς ἐπὶ στρατείαν πορευομένου, τὴν ἀσπίδα ἐπιδιδοῦσα εἶπεν "ἢ τὰν ἢ ἐπὶ τᾶς."

32 Δημοκρίτου.

Δίκης κῦδος γνώμης θάρσος καὶ ἀθαμβίη, ἀδικίης δὲ δεῖμα ξυμφορῆς τέρμα.

33 Ἡροδότου ἱστορίας ζ' (50).

Μεγάλα γὰρ πρήγματα μεγάλοισι κινδύνοισιν ἐθέλει καὶ αἱρέεσθαι.

34 Πλάτωνος ἐκ τῆς ἀπολογίας Σωκράτους (28 b).

Ἴσως ἂν οὖν εἴποι τις, εἶτ' οὐ καταισχύνῃ, ὦ Σώκρατες, τοιοῦτο ἐπιτήδευμα ἐπιτηδεύσας, ἐξ οὗ κινδυνεύεις νυνὶ ἀποθανεῖν; ἐγὼ δὲ τούτῳ ἂν δίκαιον λόγον ἀντείποιμι, ὅτι οὐ καλῶς λέγεις, ὦ ἄνθρωπε, εἰ οἴει δεῖν κίνδυνον ὑπολογίζεσθαι τοῦ ζῆν ἢ τεθνάναι ἄνδρα, ὅτου τι καὶ σμικρὸν ὄφελός ἐστιν, ἀλλ' οὐκ ἐκεῖνο σκοπεῖν ὅταν πράττῃ, πότερον δίκαια ἢ ἄδικα πράττει, καὶ ἀνδρὸς ἀγαθοῦ ἔργα ἢ κακοῦ.

35 Θουκυδίδου δημηγορίας Κνήμου (II, 87).

Ἄνευ δ' εὐψυχίας οὐδεμία τέχνη πρὸς τοὺς κιν-

δύνους ἰσχύει· φόβος γὰρ μνήμην ἐκπλήσσει, τέχνη δ' ἄνευ αὐτῆς οὐδὲν ὠφελεῖ.

36 *Τοῦ αὐτοῦ ἐκ τοῦ ἐπιταφίου* (II, 43).

Ἀλγεινοτέρα γὰρ ἀνδρί γε φρόνημα ἔχοντι ἡ μετὰ τοῦ μαλακισθῆναι κάκωσις ἢ ὁ μετὰ ῥώμης καὶ κοινῆς ἐλπίδος ἅμα γιγνόμενος ἀναίσθητος θάνατος.

37 *Ἐν ταυτῷ* (II, 40).

Διαφερόντως γὰρ δὴ καὶ τόδε ἔχομεν, ὥστε τολμᾶν τε οἱ αὐτοὶ μάλιστα καὶ περὶ ὧν ἐπιχειρήσομεν ἐκλογίζεσθαι· ὃ τοῖς ἄλλοις ἀμαθία μὲν θράσος λογισμὸς δὲ ὄκνον φέρει. κράτιστοι δ' ἂν τὴν ψυχὴν δικαίως κριθεῖεν οἱ τά τε δεινὰ καὶ ἡδέα σαφέστατα γινώσκοντες καὶ διὰ ταῦτα μὴ ἀποτρεπόμενοι ἐκ τῶν κινδύνων.

38 *Ζήνωνος.*

Ζήνων ὁ Ἐλεάτης ὑπὸ τοῦ τυράννου στρεβλούμενος, ὅπως εἴπῃ τοὺς συνωμότας "εἰ γὰρ ἦσαν" εἶπεν "οὐκ ἂν ἐτυράννεις."

39 *Ἐκ τῆς Νικολάου ἐθῶν συναγωγῆς.*

Ὀμβρικοὶ ἐν ταῖς πρὸς τοὺς πολεμίους μάχαις αἴσχιστον ἡγοῦνται ἡττημένοι ζῆν, ἀλλ' ἀναγκαῖον ἢ νικᾶν ἢ ἀποθνήσκειν.

40 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Κελτοὶ οἱ τῷ ὠκεανῷ γειτνιῶντες αἰσχρὸν ἡγοῦνται τοῖχον καταπίπτοντα ἢ οἰκίαν φεύγειν, πλημμυρίδος δὲ ἐκ τῆς ἔξω θαλάττης ἐπερχομένης μεθ' ὅπλων ἀπαντῶντες ὑπομένουσιν ἕως κατακλύζονται, ἵνα μὴ δοκῶσι φεύγοντες τὸν θάνατον φοβεῖσθαι.

41 *Ἰαμβλίχου ἐκ τῆς ἐπιστολῆς τῆς πρὸς Ὀλύμπιον περὶ ἀνδρίας.*

Ἀνδρία νοείσθω ἡ κυριωτάτη, ὅση τέ ἐστιν ἄτρεπτος νοερὰ δύναμις, καὶ ὅση ἀκμαιοτάτη νοερὰ ἐνέργεια, ἥτε τοῦ νοῦ ταυτότης καὶ μόνιμος ἕξις ἐν ἑαυτῇ· τοιαῦτα ἂν εἴη τὰ περὶ τὴν ζωὴν εἴδη θεωρούμενα τῆς ἀνδρίας, ἤτοι καθ' ἑαυτὰ ὑφεστηκότα ἢ κοινωνήσαντα τὴν ἑαυτῶν ῥώμην πρὸς τὴν ἐν τοῖς λόγοις μόνιμον κατάστασιν.

42 *Ἐν ταυτῷ.*

Ἀπὸ δὴ τούτων τὰ ἐν τοῖς πάθεσιν περί τε δεινὰ καὶ μὴ δεινὰ καὶ περὶ φόβον καὶ θάρσος περί τε ἡδονὴν καὶ λύπην γενναίως ἀνθιστάμενα, καὶ τὰ διαφυλάττοντα ἀεὶ τὰς αὐτὰς ὀρθὰς δόξας, τά τε σύμμετρα καὶ μέσα ἤθη διασώζοντα, καὶ τὰ πραΰνοντα τὸν ὑπὸ τῷ λόγῳ καὶ ἀνεγείροντα αὐτὸν κατὰ καιρόν, καὶ τὰ κοινὰ τούτων ἐκ πάθους καὶ λόγου καὶ προαιρέσεως, τίθεμαι εἶναι πολυμέριστα εἴδη τῆς ἀνδρίας, ἀφ' ὧν ἐπιρρεῖ τοῖς βίοις ἡ ἀνδραγαθία τῶν πράξεων ἀήττητος πάντῃ καὶ ἀβίαστος, ἑκουσίως τὰ καλὰ καὶ δι' ἑαυτὰ αἱρουμένη καὶ πράττουσα, καὶ τῶν ἀγαθῶν ἕνεκα πάντας πόνους καὶ κινδύνους ὑπομένουσα διδοῦσά τε ἑαυτὴν ἑτοίμως εἰς τὰ δοκοῦντα εἶναι δυσχερῆ, καὶ θαρροῦσα τὸν θάνατον καὶ μελετῶσα τάς τε ἀλγηδόνας εὐκόλως φέρουσα καὶ μεταχειριζομένη.

43 *Πλάτωνος.*

Πλάτων ἐρωτηθεὶς πῶς ἔχειν δεῖ πρὸς τὰ περιπτώματα, "οὕτως" εἶπεν "ὥστε προϊδόντα μὴ ἐμβῆναι, ἐμβάντα δὲ κατ' ἄγνοιαν μὴ φροντίσαι."

44 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Οὐ τὸ ζῆν περὶ πλείστου ποιητέον, ἀλλὰ τὸ εὖ ζῆν.

45 *Ζήνωνος.*

Ζήνων ὡς ἤδη γέρων ὢν πταίσας κατέπεσεν "ἔρχομαι" εἶπε "τί με αὔεις;" καὶ εἰσελθὼν ἑαυτὸν ἐξήγαγεν.

46 *Λεωνίδου.*

Λεωνίδης ἀκούσας ἐπισκιάζεσθαι τὸν ἥλιον τοῖς Περσῶν τοξεύμασιν "χάριεν" ἔφη "ὅτι καὶ ὑπὸ σκιᾷ μαχούμεθα."

47 *Διογένους.*

Ὁρῶν Μεγαρέας ὁ Διογένης τὰ μακρὰ τείχη ἱστάντας "ὦ μοχθηροί" εἶπε "μὴ τοῦ μεγέθους προνοεῖτε τῶν τειχῶν, ἀλλὰ τῶν ἐπ' αὐτῶν στησομένων."

48 Ἆγις ὁ βασιλεὺς ἔφη τοὺς Λακεδαιμονίους μὴ ἐρωτᾶν ὁπόσοι εἰσὶν ἀλλὰ ποῦ εἰσιν οἱ πολέμιοι. καὶ ἐρωτῶντος τινός "πόσοι εἰσὶ Λακεδαιμόνιοι;" ἔφη "ἱκανοὶ τοὺς κακοὺς ἀπερύκειν." Plut. Mor. 190 c. d.

49 *Ξενοφῶντος.*

Ξενοφῶντι ἐν Σκιλλοῦντι ἐστεφανωμένῳ καὶ θύοντι ἀπήγγειλέ τις Γρύλλον τὸν υἱὸν περὶ Μαντίνειαν πολεμοῦντα ἀνῃρῆσθαι. ὃ δὲ ἀποθέμενος τὸν στέφανον εἴρετο ὅπως ἀγωνιζόμενος τελευτήσειε· τοῦ δ' εἰπόντος ἄριστα, ἐπιθέμενος τὸν στέφανον πάλιν ἔθυεν.

50 *Δημοσθένους ἐκ τῶν ὑπὲρ τοῦ στεφάνου* (258, 19).

Πέρας μὲν γὰρ ἅπασιν ἀνθρώποις τοῦ βίου θάνατος, κἂν ἐν οἰκίσκῳ τις ἑαυτὸν καθείρξας τηρῇ. δεῖ δὲ τοὺς ἀγαθοὺς ἄνδρας ἐγχειρεῖν μὲν ἅπασιν ἀεὶ τοῖς καλοῖς τὴν ἀγαθὴν προβαλλομένους ἐλπίδα, φέρειν δ' ὅ ἂν ὁ θεὸς διδῷ γενναίως.

51 *Πλάτωνος* (Phaedr. 274 b).

Ἀλλὰ καὶ ἐπιχειροῦντι τοῖς καλοῖς καλὸν καὶ πάσχειν ὅ τι ἂν ξυμβῇ τῳ παθεῖν.

52 *Ἀλεξάνδρου* (Plut. V. Alex. 672 b).

Ἐν Ἰλίῳ θύοντι τῷ Ἀλεξάνδρῳ ἔφη ὁ ἱερεὺς δείξειν τὴν Πάριδος λύραν, ὃ δὲ "τὴν Ἀχιλλέως" εἶπεν "εἰ ἔχεις, δεῖξον, καὶ πρό γε τῆς λύρας τὴν μελίαν."

53 *Κορίσκου.*

Κορίσκος εὖ μάλα γέρων ὤν, ὡς ἀπό τινος χαλεπῆς ἀρρωστίας ἀνέρρωσεν "ἄπαγε" ἔφη "ὡς ἀηδῶς ἀνέστροφα, ἤδη πολὺ τῆς ὁδοῦ προκεκοφὼς ἣν δεῖ πάντως πορευθῆναι.

54 *Κλεάνθους.*

Κλεάνθης, ὑπὸ γλώττης ἕλκους αὐτῷ γενομένου, τὴν τροφὴν οὐκ ἐδύνατο παραπέμπειν· ὡς δὲ ῥᾷον ἔσχε καὶ ὁ ἰατρὸς αὐτῷ τροφὴν προσήγαγεν "σὺ δέ με" ἔφη "βούλει ἤδη τὸ πλέον τῆς ὁδοῦ κατανύσαντα ἀναστρέφειν, εἶτα πάλιν ἐξ ὑπαρχῆς τὴν αὐτὴν ἔρχεσθαι;" καὶ ἐξῆλθεν τοῦ βίου.

55 *Κλειτομάχου.*

Κλειτόμαχος νοσήσας καὶ ληθάργῳ περιπεσὼν ὡς ἀνένηψεν "οὐδέν με" ἔφη "ἐξαπατήσει ἡ φιλοζωία," καὶ ἐξήγαγεν ἑαυτὸν τοῦ βίου.

56 *Σωκράτους.*

Σωκράτους φεύγοντος τὴν δίκην, Λυσίας λόγον τινὰ συγγράψας ἦλθεν αὐτῷ κομίζων καὶ ἐκέλευε χρήσασθαι· τοῦ δὲ Λυσίου εἰπόντος καὶ μὴν κάλλιστον αὐτὸν εἶναι· "καὶ τὰ ῥόδα" ἔφη "κάλλιστά ἐστιν, ἀλλ' οὐ πρέπειν αὐτῷ τὸ στεφάνωμα." "τεθνήξῃ τοίνυν" ἔφη ὁ Λυσίας "εἰ μὴ οὕτως ἀπολο-

γήσῃ· ὃ δὲ "εἰ γὰρ" ἔφη "καὶ μὴ νῦν, πάντως τεθνήξομαι."

57 Ἐρασιστράτου.

Ἐρασίστρατος ὁ Χῖος ἤδη γηραιὸς ὢν ἕλκος ἐπὶ τοῦ ποδὸς δυσίατον ἔχων "εὖ γε" εἶπεν "ὅτι τῆς πατρίδος ὑπομιμνήσκομαι," καὶ κώνειον πιὼν κατέστρεψεν.

58 Ἡροδότου ἱστορίας ζ (102).

Λέγει Δημάρατος τάδε "ἐπειδὴ ἀληθείῃ δὴ χρήσασθαι πάντως κελεύεις ταῦτα λέγοντα, τὰ μὴ ψευδόμενός τις ὕστερον ὑπὸ σεῦ ἁλώσεται· τῇ Ἑλλάδι πενίη μὲν αἰεί κοτε σύντροφος σύνεστιν· ἀρετὴ δὲ ἐπακτός ἐστιν ἀπό τε σοφίης κατεργασμένη καὶ νόμου ἰσχυροῦ· τῇ διαχρεομένη Ἑλλὰς τήν τε πενίην ἀπαμύνεται καὶ τὴν δεσποσύνην."

59 Φιλίππου.

Φίλιππος ἦλθεν ἐπὶ Λακεδαίμονα καὶ προστρατοπεδεύσας ἔπεμψεν ἀπειλῶν πολλὰ καὶ χαλεπά, ἢν μὴ ποιῶσι τὰ προστασσόμενα· τῶν δὲ Λακεδαιμονίων τις ἀκούσας τῶν ἀπειλῶν χάριν αὐτῷ ἔφη εἰδέναι, ὅτι οὐ κωλύει ὃ ἐπὶ τοῖς μαχομένοις ἐστὶν ἀποθανεῖν.

60 Πύρρου.

Πύρρου ἐπιστρατεύσαντος Λακεδαιμονίοις καὶ πολλὰ ἀπειλοῦντος, Δερκυλλίδας εἷς τῶν γερόντων ἀναστὰς ἐν τῇ ἐκκλησίᾳ εἶπεν "εἰ μὲν θεός ἐστιν ὁ ἀπειλῶν, μὴ φοβώμεθα, οὐδὲν γὰρ ἀδικοῦμεν· εἰ δ' ἄνθρωπος, γνώτω ἀνδράσιν ἀπειλῶν."

61 Σερήνου.

Ἀλέξανδρον τὸν Φεραίων τύραννον Θήβη ἀπέκτεινε γυνὴ καὶ τοὺς Φεραίους ἠλευθέρωσεν. συνέβη

δὲ καὶ θεωροὺς ἥκοντας αὐτῶν παρ᾽ Ἄμμωνος λέγειν αὐτοῖς κελεύειν τὸν Ἄμμωνα Ἥβης ἱερὸν ἱδρύσασθαι. τῶν δὲ πρεσβυτέρων τις παρακοῦσαι ἔφη τοὺς θεωρούς· τὸν γὰρ Ἄμμωνα Θήβης εἰπεῖν τῆς αὐτοὺς ἐξελομένης τῆς δουλείας.

62 Ἐκ τῶν Πλουτάρχου διηγήσεων (Mor. 305b).

Δαρεῖος ὁ Περσῶν βασιλεὺς μετὰ τριάκοντα μυριάδων ἐν Μαραθῶνι ἐστρατοπεδεύσατο. Ἀθηναῖοι δὲ θ' χιλίους ἔπεμψαν στρατηγοὺς αὐτοῖς δόντες Πολύζηλον Καλλίμαχον Κυνέγειρον Μιλτιάδην· συμβληθείσης δὲ τῆς παρατάξεως, Πολύζηλος μὲν ὑπὲρ ἄνθρωπον φαντασίαν θεασάμενος, τὴν ὅρασιν ἀπέβαλεν, καὶ τυφλὸς ὢν ἀνεῖλε τεσσαράκοντα καὶ ὀκτώ. Καλλίμαχος δὲ πολλοῖς περιπεπαρμένος δόρασιν καὶ νεκρὸς ἐστάθη, Κυνέγειρος δὲ Περσικὴν ἀγομένην ναῦν κατέχων ἐχειροκοπήθη. ὅθεν καὶ εἰς αὐτοὺς ὑπὸ Παντελείου τοιάδε γεγράφθαι λέγεται

ὦ κενεοῦ καμάτοιο καὶ ἀπρήκτου πολέμοιο.
ἡμετέρῳ βασιλῆι τί λέξομεν ἀντιάσαντες;
ὦ βασιλεῦ, τί μ᾽ ἔπεμπες ἐπ᾽ ἀθανάτους πολεμιστάς;
βάλλομεν, οὐ πίπτουσι· τιτρώσκομεν, οὐ φοβέονται.
μοῦνος ἀνὴρ σύλησεν ὅλον στρατόν· ἐν δ᾽ ἄρα μέσσῳ
αἱματόεις ἕστηκεν ἀτειρέος Ἄρεος εἰκών.
δένδρον δ᾽ ὣς ἕστηκε σιδηρείαις ὑπὸ ῥίζαις,
κοὐκ ἐθέλει πεσέειν, τάχα δ᾽ ἔρχεται ἔνδοθι νηῶν.
λῦε κυβερνῆτα, νέκυος προφύγωμεν ἀπειλάς.

63 Ἀγαθαρχίδου Σαμίου ἐν δ' Περσικῶν.

Ξέρξης μετὰ πεντακοσίων μυριάδων Ἀρτεμισίῳ προσορμίσας πόλεμον τοῖς ἐγχωρίοις κατήγγειλεν. Ἀθηναῖοι δὲ συγκεχυμένοι κατάσκοπον ἔπεμψαν Ἀγη-

σίλαον τὸν Θεμιστοκλέους ἀδελφόν, καίπερ Νεοκλέους τοῦ πατρὸς αὐτοῦ κατ' ὄναρ ἑωρακότος ἀμφοτέρας ἀποβεβληκέναι τὰς χεῖρας. παραγενόμενος δὲ ὁ ἀνὴρ εἰς πλῆθος τῶν βαρβάρων ἐν σχήματι Περσικῷ Μαρδόνιον ἕνα τῶν σωματοφυλάκων ἀνεῖλεν, ὑπολαβὼν Ξέρξην ὑπάρχειν, συλληφθεὶς δὲ ὑπὸ τῶν δορυφόρων πρὸς τὸν βασιλέα δέσμιος ἤχθη. βουθυτεῖν δὲ τοῦ προειρημένου μέλλοντος ἐπὶ τὸν βωμὸν τοῦ ἡλίου τὴν δεξιὰν ἐπέθηκε χεῖρα καὶ ἀστένακτος ὑπομείνας τὴν ἀνάγκην τῶν βασάνων ἠλευθερώθη τῶν δεσμῶν εἰπών "τοιοῦτοι πάντες ἐσμὲν Ἀθηναῖοι· εἰ δ' ἀπιστεῖς, καὶ τὴν ἀριστερὰν ἐπιθήσω." φοβηθεὶς δ' ὁ Ξέρξης φρουρεῖσθαι τὸν Ἀγησίλαον προσέταξεν. Plut. Mor. 305 d.

64 Ἀριστείδου ἐν τῷ γ' τῶν Περσικῶν.

Περσῶν μετὰ πεντακοσίων μυριάδων ἐπὶ τὴν Ἑλλάδα φερομένων, Λακεδαιμόνιοι τριακοσίους εἰς Θερμοπύλας ἔπεμψαν στρατηγὸν αὐτοῖς δόντες Λεωνίδην. οὗτος τὸ ἐπερχόμενον θεασάμενος τῶν πολεμίων πλῆθος εὐωχουμένοις εἶπε τοῖς συμμάχοις "οὕτως ἀριστᾶτε, ὦ τριακόσιοι, ὡς ἐν ᾅδου δειπνήσοντες." ἐπιφανέντων οὖν τῶν βαρβάρων, Λεωνίδας πολλοῖς περιπεπαρμένος δόρασι μεθ' ὁρμῆς ἐπὶ Ξέρξην ἠνέχθη καὶ περιελόμενος αὐτοῦ τὸ διάδημα πρὸ τῶν τραυμάτων κατέσχε καὶ αἱμορραγήσας ἐξέπνευσεν. ἀνατεμὼν δὲ ὁ βασιλεὺς τοῦ προειρημένου τὸ στῆθος εὗρεν αὐτοῦ τὴν καρδίαν τριχῶν γέμουσαν. Plut. Mor. 306 c.

65 Καλλισθένους ἐν τρίτῳ Μακεδονικῶν.

Φίλιππος ὁ τῶν Μακεδόνων βασιλεὺς δύο καὶ τριάκοντα Χαλκιδικὰς πόλεις τοῖς ἰδίοις ὑποτάξας σκήπτροις, Μεθωναίους καὶ Ὀλυνθίους λεηλατεῖν

ἤρξατο. γενόμενος δὲ κατὰ γέφυραν ποταμοῦ Σάρδωνος καὶ εἰς τὸ πέραν διαβῆναι βιαζόμενος, ὑπὸ τοῦ πλήθους τῶν Ὀλυνθίων ἐπεσχέθη. τοξότης δέ τις Ἀστὴρ τοὔνομα τόξον ἐντείνας ἐτύφλωσε τὸν Φίλιππον εἰπών "Ἀστὴρ Φιλίππῳ θανάσιμον πέμπει βέλος." ἀποβαλὼν δὲ ὁ βασιλεὺς τὸν ὀφθαλμὸν εἰς τὸν ποταμὸν ἑαυτὸν ἔρριψε καὶ πρὸς τοὺς οἰκείους διανηξάμενος τὸν κίνδυνον ἐξέφυγεν. Plut. Mor. 307 d.

66 *Σωκράτου ἐν δευτέρῳ Θρᾳκικῶν.*

Ἀθηναῖοι πρὸς Θρᾷκας πόλεμον ἔχοντες στρατηγὸν ἐχειροτόνησαν Κόδρον. οὗτος ἀκούσας ὅτι χρησμὸν εἰλήφασιν οἱ πολέμιοι ἐγκρατεῖς γενήσεσθαι τῆς νίκης αὐτούς, ἐὰν τοῦ στρατηγοῦ φείσωνται τῶν Ἀθηναίων, ἐν δρυτόμου σχήματι συνέβαλε μάχην μετά τινων Θρᾳκῶν ξυλιζομένων καὶ τῷ δρεπάνῳ καιρίως ἐξ αὐτῶν ἕνα πλήξας ἀνεῖλεν, οἱ δὲ λοιποὶ τὴν περίστασιν τοῦ στρατηγήματος μὴ γινώσκοντες ἀπέκτειναν τὸν Κόδρον θέλοντα, συμβαλόντες δὲ τὸν πόλεμον Ἀθηναῖοι τῆς νίκης ἐγκρατεῖς ἐγένοντο. Plut. Mor. 310 a.

67 *Ἐκ τῶν Θησέως.*

Λακεδαιμόνιοι καὶ Ἀργεῖοι περὶ χωρίου Θυρέας ἐν μεθορίῳ κειμένης μέχρι μὲν τινὸς ὅλοις τοῖς στρατεύμασιν παρετάσσοντο πρὸς ἀλλήλους, τέλος δ' ἔδοξεν αὐτοῖς ἐπιλέξαι παρ' ἑκατέρων τριακοσίους, κἀκείνων μαχεσαμένων τοῖς κρατήσασιν διαφέρειν τὸ χωρίον· οὗπερ γενομένου, Ὀθρυάδης Λακεδαιμόνιος στρατιώτης πολλοὺς ἀποκτείνας καὶ πολλὰ τετρωμένος ἔκειτο μεταξὺ τῶν ἀνῃρημένων Λακεδαιμονίων μόνος περιλειφθείς, Ἀργείων δὲ δύο Ἀλκήνωρ καὶ Χρόμιος· ὧν ἀπελθόντων εἰς Ἄργος ἀπαγγεῖλαι τὴν νίκην, Ὀθρυάδης πολλοὺς σκυλεύσας τῶν πολεμίων

τρόπαιον ἔστησε καὶ χρησάμενος τῷ τῶν τραυμάτων αἵματι ἐπέγραψεν "Λακεδαιμόνιοι κατ' Ἀργείων," καὶ τοῦτο πράξας ἀπέθανεν.

68 Ἐκ τῆς Φαλάριδος ἐπιστολῆς πρὸς Περισθένην (15).

Τὴν Εὐβούλου καὶ τὴν Ἀριστοφάντου γυναῖκα τῶν ἐπιβουλευσάντων μοι ἔπεμψας ὡς ἀπολουμένας .... καὶ πάντως που θαυμάζεις ὅτι ὑφῄρηκα τῆς ὀργῆς. εἰ δὲ καὶ πύθοιο τὴν αἰτίαν, ὅτι δι' εὐγενείας ὑπερβάλλουσαν ἀπόκρισιν οὐδὲν πρὸς ἐμοῦ πεπόνθασι, μᾶλλον ἂν ἔτι θαυμάσειας· ἐρωτώμεναι γὰρ παρ' ἐμοῦ τὴν ἐπιβουλὴν εἰ συνῄδεσαν τοῖς ἀνδράσιν, οὐ μόνον ἔφασαν ἀλλὰ καὶ συνορμῆσαι τυραννοκτονεῖν. "ἀντὶ ποίας ἀδικίας;" εἰπόντος μου, "ἰδίας μὲν οὐδεμιᾶς, τῆς δὲ κοινῆς" ἀπεκρίναντο· κοινὴν γὰρ ἀδικίαν εἶναι τὸ καταδουλοῦσθαι πόλεις ἐλευθέρας. τί παθοῦσαι τοιγάρτοι, πάλιν ἐπανερομένου μου, δίκην ἀποτίσαιντ' ἄν μοι τοῦ μίσους τὴν κατ' ἀξίαν; "ἀποθανοῦσαι" προσέθηκαν. ζῆν δή, οὐ τεθνάναι, ἔκρινα τὰς μετὰ τοιαύτης ἀρετῆς ἀποθνησκούσας.

69 Καλλισθένους ἐν δευτέρῳ μεταμορφώσεων.

Κατὰ Κελαινάς, πόλιν τῆς Φρυγίας, διὰ μῆνιν Ἰδαίου Διὸς χάσμα μεθ' ὕδατος γενόμενον πολλὰς οἰκίας αὐτάνδρους εἰς τὸν βυθὸν καθείλκυσε. τοῦ δὲ δήμου κινδυνεύοντος, Μίδας ὁ βασιλεὺς χρησμὸν ἔλαβε συνελεύσεσθαι τὴν γῆν, ἐὰν εἰς τὸ βάραθρον βάλῃ τὸ τιμιώτατον ἐν ἀνθρωπίνῳ βίῳ. τῶν δὲ Κελαινιτῶν χρυσόν τε καὶ ἄργυρον καὶ τὸν κόσμον τῶν γυναικῶν εἰς τὸ χάσμα ῥιψάντων καὶ μηδ' οὕτω τοῦ κακοῦ λήξαντος, Ἀγχοῦρος ὁ υἱὸς Μίδα λογισάμενος

μηδὲν εἶναι τιμιώτερον ἐν βίῳ ψυχῆς ἀνθρωπίνης, ἀναπηδήσας καὶ δοὺς περιπλοκὰς τῷ γεννήσαντι καὶ ἀποταξάμενος τῇ γυναικὶ Τιμοθέᾳ, μεθ' ὁρμῆς ἔφιππος εἰς τὸν τόπον τοῦ χάσματος ἠνέχθη. τῆς δὲ γῆς εἰς τὴν φυσικὴν ἁρμονίαν συνελθούσης, Μίδας βωμὸν ἱδρύσατο Διὸς Ἰδαίου, ὃν χρύσεον ἐποίησε ταῖς χερσὶν ἁψάμενος. οὗτος ὁ βωμὸς περὶ ἐκεῖνον τὸν καιρόν, ἐν ᾧ τὸ χάσμα συνέβη γενέσθαι, λίθινος γίνεται, τῆς δ' ὡρισμένης προθεσμίας παρελθούσης, χρύσεος ὁρᾶται. Plut. Mor. 306 f.

70 Ἐκ τῶν Θησέως.

Λοιμοῦ κατασχόντος τὴν Λακεδαίμονα, διὰ τὴν ἀναίρεσιν τῶν κηρύκων τῶν ἀπεσταλμένων παρὰ Ξέρξου, αἰτοῦντος γῆν καὶ ὕδωρ ὥσπερ ἀπαρχὰς δουλείας, χρησμὸς ἐδόθη, ἀπαλλαγήσεσθαι αὐτούς, εἴ γέ τινες ἕλοιντο Λακεδαιμονίων παρὰ τοῦ βασιλέως ἀναιρεθῆναι. τότε Βούλης καὶ Σπέρχης ἀφικόμενοι πρὸς βασιλέα ἠξίουν ἀναιρεθῆναι· ὃ δὲ θαυμάσας αὐτῶν τὴν ἀρετὴν ἐπανιέναι προσέταξε.

71 Πλουτάρχου (Mor. 445 a).

Τὴν μὲν ἀνδρίαν μεσότητά φασιν εἶναι δειλίας καὶ θρασύτητος, ὧν ἣ μὲν ἔλλειψις ἣ δὲ ὑπερβολὴ τοῦ θυμοειδοῦς ἐστίν.

72 Τοῦ αὐτοῦ (Plut. l. l. 190 f).

Ἀγησίλαος περὶ ἀνδρείας καὶ δικαιοσύνης ἐρωτηθεὶς ποτέρα ἂν κρείττων εἴη, "ηηδὲν ἀνδρείας δεήσεσθαι ἡμᾶς" ἔφη "εἰ δίκαιοι πάντες γίνοιντο."

73 Ξενοφῶντος ἐν δ' (6, 10) ἀπομνημονευμάτων.

Ἀνδρίαν δέ, ὦ Εὐθύδημε, ἆρα τῶν καλῶν νομί-

ξεις εἶναι; Κάλλιστον μὲν οὖν ἔγωγ', ἔφη. Χρήσιμον ἄρα οὐ πρὸς τὰ ἐλάχιστα νομίζεις τὴν ἀνδρίαν; Μὰ Δί', ἔφη, πρὸς τὰ μέγιστα μὲν οὖν. Ἆρα οὖν δοκεῖ σοι πρὸς τὰ δεινά τε καὶ ἐπικίνδυνα χρήσιμον εἶναι τὸ ἀγνοεῖν αὐτά; Ἥκιστα γάρ, ἔφη. Οἱ ἄρα μὴ φοβούμενοι τὰ τοιαῦτα διὰ τὸ μὴ εἰδέναι τί ἐστιν, οὐκ ἀνδρεῖοι εἰσίν; Νὴ Δί', ἔφη. Πολλοὶ γὰρ ἂν οὕτω γε τῶν τε μαινομένων καὶ τῶν δειλῶν ἀνδρεῖοι εἶεν. Τί δέ, οἱ καὶ τὰ μὴ δεινὰ δεδοικότες; Ἔτι γε, νὴ Δία, ἧττον, ἔφη. Ἆρ' οὖν τοὺς μὲν ἀγαθοὺς πρὸς τὰ δεινὰ καὶ ἐπικίνδυνα ὄντας ἀνδρείους ἡγῇ εἶναι, τοὺς δὲ κακοὺς δειλούς; Πάνυ μὲν οὖν, ἔφη. Ἀγαθοὺς δὲ πρὸς τὰ τοιαῦτα νομίζεις ἄλλους τινὰς ἢ τοὺς δυναμένους αὐτοῖς καλῶς χρῆσθαι; Οὔκ, ἀλλὰ τούτους, ἔφη. Κακοὺς δὲ ἄρα τοὺς οἵους τούτοις κακῶς χρῆσθαι; Τίνας γὰρ ἄλλους; ἔφη. Ἆρ' οὖν ἕκαστοι χρῶνται, ὡς οἴονται δεῖν; Πῶς γὰρ ἄλλως; ἔφη. Ἆρ' οὖν οἱ μὴ δυνάμενοι καλῶς χρῆσθαι ἴσασιν ὡς δεῖ χρῆσθαι; Οὐ δή που γε, ἔφη. Οἱ ἄρα εἰδότες ὡς δεῖ χρῆσθαι, οὗτοι καὶ δύνανται; Μόνοι γ', ἔφη. Τί δαί, οἱ μὴ διημαρτηκότες, ἆρα κακῶς χρῶνται τοῖς τοιούτοις; Οὐκ οἴομαι, ἔφη. Οἱ ἄρα κακῶς χρώμενοι διημαρτήκασιν; Εἰκός γ', ἔφη. Οἱ μὲν ἄρα ἐπιστάμενοι τοῖς δεινοῖς τε καὶ ἐπικινδύνοις καλῶς χρῆσθαι ἀνδρεῖοί εἰσιν· οἱ δὲ διαμαρτάνοντες τούτων δειλοί; Ἔμοιγε δοκοῦσιν, ἔφη.

74 Ξενοφῶντος ἀπομνημονευμάτων (III, 9, 1).

Πάλιν ἐρωτώμενος, ἡ ἀνδρία πότερον διδακτὸν ἢ φυσικόν· οἶμαι μέν, ἔφη, ὥσπερ σῶμα σώματος ἰσχυρότερον πρὸς τοὺς πόνους φύεται, οὕτω καὶ ψυχὴν ψυχῆς ἐρρωμενεστέραν πρὸς τὰ δεινὰ φύσει γί-

γνεσθαι· ὁρῶ δ' ἐν τοῖς αὐτοῖς νόμοις τε καὶ ἔθεσι τρεφομένους πολὺ διαφέροντας ἀλλήλων τόλμῃ. νομίζω μέντοι πᾶσαν φύσιν μαθήσει καὶ μελέτῃ πρὸς ἀνδρίαν αὔξεσθαι· δῆλον μὲν γὰρ ὅτι Σκύθαι καὶ Θρᾷκες οὐκ ἂν τολμήσειαν ἀσπίδας καὶ δόρατα λαβόντες Λακεδαιμονίοις διαμάχεσθαι· φανερὸν δ' ὅτι Λακεδαιμόνιοι οὔτ' ἂν Θρᾳξὶ πέλταις καὶ ἀκοντίοις οὔτε Σκύθαις τόξοις ἐθέλοιεν διαγωνίζεσθαι. ὁρῶ δ' ἔγωγε καὶ ἐπὶ τῶν ἄλλων πάντων ὁμοίως καὶ φύσει διαφέροντας ἀλλήλων τοὺς ἀνθρώπους, καὶ ἐπιμελείᾳ πολὺ ἐπιδιδόντας. ἐκ δὲ τούτων δῆλόν ἐστιν ὅτι πάντας χρὴ καὶ τοὺς εὐφυεστέρους καὶ τοὺς ἀμβλυτέρους φύσιν, ἐν οἷς ἂν ἀξιόλογοι βούλωνται γενέσθαι, ταῦτα καὶ μανθάνειν καὶ μελετᾶν.

75 *Ἐκ τῆς Ξενοφῶντος Σωκράτους ἀπολογίας* (c. 28).

Παρὼν δέ τις Ἀπολλόδωρος, ἐπιθυμητὴς μὲν ὢν ἰσχυρῶς αὐτοῦ ἄλλως δ' εὐήθης, εἶπεν· Ἀλλὰ τοῦτο ἔγωγε, ὦ Σώκρατες, χαλεπώτατα φέρω ὅτι ὁρῶ σε ἀδίκως ἀποθνήσκοντα. τὸν δὲ λέγεται καταψήσαντα αὐτοῦ τὴν κεφαλὴν εἰπεῖν· σὺ δέ, ὦ φίλτατε Ἀπολλόδωρε, μᾶλλον ἂν ἐβούλου με ὁρᾶν δικαίως ἀποθνήσκοντα; καὶ ἅμα ἐπιγελάσαι. λέγεται δὲ καὶ Ἄνυτον παριόντα ἰδὼν εἰπεῖν· ἀλλ' ὁ μὲν ἀνὴρ ὅδε γε κυδρός, ὡς μέγα τι καὶ καλὸν διαπεπραγμένος, εἰ ἀπέκτονέ με οὕτως, καὶ τῶν μεγίστων αὐτὸν ὑπὸ τῆς πόλεως ὁρῶν ἀξιούμενον, οὐκέτι χρῆναι τὸν υἱὸν περὶ βύρσας παιδεύειν. ὦ μοχθηρὸς οὗτος, ἔφη, ὃς οὐκ ἔοικεν εἰδέναι, ὅτι ὁπότερος ἡμῶν καὶ συμφορώτερος καὶ καλλίων εἰς τὸν ἀεὶ χρόνον διαπέπλασται. χείρων δέ ἐστιν ὁ νικῶν.

76 *Πλάτωνος ἐκ τῆς Σωκράτους ἀπολογίας* (28 d).

Οὕτω γὰρ ἔχει, ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι, τῇ ἀληθείᾳ· οὗ ἄν τις αὑτὸν τάξῃ, ἡγησάμενος βέλτιστον εἶναι, ἢ ὑπὸ ἄρχοντος ταχθῇ, ἐνταῦθα δεῖ, ὡς ἐμοὶ δοκεῖ, μένοντα κινδυνεύειν μηδὲν ὑπολογιζόμενον μήτε θάνατον μήτε ἄλλο τι μηδὲν πρὸ τοῦ αἰσχροῦ. ἐγὼ οὖν δεινὰ ἂν εἴην εἰργασμένος, ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι, εἰ ὅτε μέν με οἱ ἄρχοντες ἔταττον, οὓς ὑμεῖς εἵλεσθε ἄρχειν μου, καὶ ἐν Ποτιδαίᾳ καὶ ἐν Ἀμφιπόλει καὶ ἐπὶ Δηλίῳ, τότε μὲν οὗ ἐκεῖνοι ἔταττον, ἔμενον ὥσπερ καὶ ἄλλος τις καὶ ἐκινδύνευον ἀποθανεῖν· τοῦ δὲ θεοῦ τάττοντος, ὡς ἐγὼ ᾠήθην τε καὶ ὑπέλαβον, φιλοσοφοῦντά με δεῖν ζῆν καὶ ἐξετάζοντα ἐμαυτὸν καὶ τοὺς ἄλλους, ἐνταῦθα δὲ φοβηθεὶς ἢ θάνατον ἢ ἄλλο ὁτιοῦν πρᾶγμα, λείποιμι τὴν τάξιν. δεινὸν μέντἂν εἴη, καὶ ὡς ἀληθῶς τότ᾽ ἄν με δικαίως εἰσάγοι τις εἰς δικαστήριον, ὅτι οὐ νομίζω θεοὺς εἶναι, ἀπειθῶν τῇ μαντείᾳ καὶ δεδιὼς θάνατον καὶ οἰόμενος σοφὸς εἶναι οὐκ ὤν. τὸ γάρ τοι θάνατον δεδιέναι, ὦ ἄνδρες, οὐδὲν ἄλλο ἐστὶν ἢ δοκεῖν σοφὸν εἶναι μὴ ὄντα· δοκεῖν γὰρ εἰδέναι ἐστὶν ἃ οὐκ οἶδεν. οἶδεν μὲν γὰρ οὐδεὶς τὸν θάνατον, οὐδ᾽ εἰ τυγχάνει τῷ ἀνθρώπῳ μέγιστον ὂν τῶν ἀγαθῶν· δεδίασι δ᾽ ὡς εὖ εἰδότες ὅτι μέγιστον τῶν κακῶν ἐστι· καὶ τοῦτο πῶς οὐκ ἀμαθία ἐστὶν αὐτὴ ἡ ἐπονείδιστος, ἡ τοῦ οἴεσθαι εἰδέναι ἃ οὐκ οἶδε;

77 *Πλάτωνος ἐκ τῆς Σωκράτους ἀπολογίας* (38 e).

Οὔτε γὰρ ἐν δίκῃ οὔτ᾽ ἐν πολέμῳ οὔτε ἐμὲ οὔτε ἄλλων οὐδένα δεῖ τοῦτο μηχανᾶσθαι, ὅπως ἀποφεύ-

ξεται πᾶν ποιῶν θάνατον. καὶ γὰρ ἐν ταῖς μάχαις πολλάκις δῆλον γίγνεται ὅτι τό γε ἀποθανεῖν ῥᾷον ἄν τις ἐκφύγοι τά θ' ὅπλα ἀφεὶς καὶ ἐφ' ἱκετείαν τραπεὶς τῶν διωκόντων· καὶ ἄλλαι πολλαὶ μηχαναί εἰσιν ἐν ἑκάστοις τοῖς κινδύνοις ὥστε διαφεύγειν θάνατον, ἐάν τις τολμᾷ πᾶν ποιεῖν καὶ λέγειν. ἀλλὰ μὴ οὐ τοῦτ' ᾖ χαλεπόν, ὦ ἄνδρες Ἀθηναῖοι, θάνατον ἐκφυγεῖν· ἀλλὰ πολὺ χαλεπώτερον πονηρίαν· θᾶττον γὰρ θανάτου θεῖ.

78 Τοῦ αὐτοῦ ἐκ τοῦ Φαίδωνος (84 d).

Βαβαί, ὦ Σιμμία, ἦπου χαλεπῶς τοὺς ἄλλους αὐτοὺς πείσαιμι ὡς οὐ συμφορὰν ἡγοῦμαι τὴν παροῦσαν τύχην, ὅτε γε μηδ' ὑμᾶς δύναμαι πείθειν· ἀλλὰ φοβεῖσθε μὴ δυσκολώτερον νῦν διάκειμαι ἢ ἐν τῷ πρόσθεν βίῳ.

79 Τοῦ αὐτοῦ ἐκ τοῦ Πρωταγόρα (350 e).

Ἐγὼ δὲ οὐδαμοῦ οὐδ' ἐνταῦθα ὁμολογῶ τοὺς δυνατοὺς ἰσχυροὺς εἶναι, τοὺς μέντοι ἰσχυροὺς δυνατούς· οὐ γὰρ ταυτὸν εἶναι δύναμίν τε καὶ ἰσχύν, ἀλλὰ τὸ μὲν καὶ ἀπὸ ἐπιστήμης γίγνεσθαι, τὴν δύναμιν, καὶ ἀπὸ μανίας γε καὶ ἀπὸ θυμοῦ, ἰσχὺν δὲ ἀπὸ φύσεως καὶ εὐτροφίας τῶν σωμάτων. οὕτω δὲ κἀκεῖ οὐ ταυτὸν εἶναι θάρσος τε καὶ ἀνδρίαν· ὥστε συμβαίνειν τοὺς μὲν ἀνδρείους θαρραλέους εἶναι, μὴ μέντοι τούς γε θαρραλέους ἀνδρείους πάντας. θάρσος μὲν γὰρ καὶ ἀπὸ τέχνης γίγνεται ἀνθρώποις καὶ ἀπὸ θυμοῦ τε καὶ ἀπὸ μανίας, ὥσπερ ἡ δύναμις· ἀνδρία δὲ ἀπὸ φύσεως καὶ εὐτροφίας τῶν ψυχῶν γίγνεται.

80 Δημοκρίτου.

Σοφίη ἄθαμβος ἀξίη πάντων τιμιωτάτη οὖσα.

81 *Ξενοφῶντος ἐκ τῆς Σωκράτους ἀπολογίας* (c. 25).

Ὥστε θαυμαστὸν ἔμοιγε δοκεῖ εἶναι, ὅπως ποτε ὑμῖν ἐφάνη τοῦ θανάτου ἔργον ἄξιον ἐμοὶ εἰργασμένον. ἀλλ' οὐδὲ μέντοι ὅτι ἀδίκως ἀποθνήσκω, διὰ τοῦτο μεῖον φρονητέον· οὐ γὰρ ἐμοί, ἀλλὰ τοῖς καταγνοῦσι τοῦτο αἰσχρόν ἐστι. παραμυθεῖται δ' ἔτι με καὶ Παλαμήδης ὁ παραπλησίως ἐμοὶ τελευτήσας· ἔτι γὰρ καὶ νῦν πολὺ καλλίους ὕμνους παρέχεται Ὀδυσσέως τοῦ ἀδίκως ἀποκτείναντος αὐτόν. οἶδ' ὅτι καὶ ἐμοὶ μαρτυρήσετε ὑπό τε τοῦ ἐπιόντος καὶ ὑπὸ τοῦ παρεληλυθότος χρόνου, ὅτι ἠδίκησα μὲν οὐδένα πώποτε οὐδὲ πονηρότερον ἐποίησα, εὐεργέτουν δὲ τοὺς ἐμοὶ διαλεγομένους προῖκα διδάσκων ὅ τι ἐδυνάμην ἀγαθόν. εἰπὼν δὲ ταῦτα μάλα ὁμολογουμένως δὴ τοῖς εἰρημένοις ἀπῄει καὶ ὄμμασι καὶ σχήματι καὶ βαδίσματι φαιδρός. ὡς δὲ ᾔσθετο ἄρα τοὺς παρεπομένους δακρύοντας, τί τοῦτο; εἰπεῖν αὐτόν, ἢ ἄρτι δακρύετε; οὐ γὰρ πάλαι ἴστε ὅτι ἐξότου περ ἐγενόμην κατεψηφισμένος ἦν μου ὑπὸ τῆς φύσεως ὁ θάνατος; ἀλλὰ μέντοι, εἰ μὲν ἀγαθῶν ἐπιρρεόντων προαπόλλυμαι, δηλονότι ἐμοὶ καὶ τοῖς ἐμοῖς εὔνοις λυπητέον· εἰ δὲ χαλεπῶν προσδοκωμένων καταλύω τὸν βίον, ἐγὼ μὲν οἶμαι ὡς εὐπραγοῦντος ἐμοῦ πᾶσιν ὑμῖν εὐθυμητέον εἶναι.

ΠΕΡΙ ΔΕΙΛΙΑΣ. Η.

1 *Εὐριπίδου Βελλεροφόντῃ.*

Δόλοι δὲ καὶ σκοτεινὰ μηχανήματα
χρείας ἀνάνδρου φάρμακ' εὕρηται βροτοῖς.

2 *Σοφοκλέους Ἀκρισίῳ. Χορός.*

Βοᾷ τις, ὦ·
ἀκούετ'; ἢ μάτην ἀλυκτῶ;
ἅπαντα γάρ τοι τῷ φοβουμένῳ ψοφεῖ.

3 *Εὐριπίδου Μελεάγρῳ.*

Δειλοὶ γὰρ ἄνδρες οὐκ ἔχουσιν ἐν μάχῃ
ἀριθμόν, ἀλλ' ἄπεισι κἂν παρῶσ' ὅμως.

4 *Ὁμήρου Ἰλιάδος μ'* (244).

Τίπτε σὺ δείδοικας πόλεμον καὶ δηιοτῆτα;
εἴπερ γάρ τ' ἄλλοι γε περικτεινώμεθα πάντες
νηυσὶν ἐπ' Ἀργείων, σοὶ δ' οὐ δέος ἔστ' ἀπολέσθαι.
οὐ γάρ τοι κραδίη μενεδήιος οὐδὲ μαχήμων.

5 *Σοφοκλέους Φρυγῶν.*

Τοὺς εὐγενεῖς γὰρ κἀγαθοὺς ὦ παῖ φιλεῖ
Ἄρης ἐναίρειν· οἱ δὲ τῇ γλώσσῃ θρασεῖς,
φεύγοντες ἄτας, ἐκτός εἰσι τῶν κακῶν.
Ἄρης γὰρ οὐδὲν τῶν κακῶν λῄζεται.

6 *Εὐριπίδου Ἰφιγενείᾳ* (Taur. 484).

Οὔ τοι νομίζω σοφόν, ὃς ἂν μέλλλων θανεῖν
οἴκτῳ τὸ δεῖμα τοὐλέθρου νικᾶν θέλῃ.

7 *Τοῦ αὐτοῦ Φρίξῳ.*

Ἀνὴρ δ' ὃς εἶναι φής, ἀνδρὸς οὐκ ἄξιον
δειλὸν κεκλῆσθαι καὶ νοσεῖν αἰσχρὰν νόσον.

8 *Μενάνδρου Ἀδελφοῖς.*

Τί πολλὰ τηρεῖν πολλὰ δεῖ δεδοικότα;

9 *Θεόγνιδος* (1221).

Πολλὰ φέρειν εἴωθε λόγος θνητοῖσι βροτοῖσι
πταίσματα τῆς γνώμης, Κύρνε, ταρασσομένης.

10 *Φιλήμων ἐν Ἐγχειριδίῳ.*

Κακὴ μὲν ὄψις, ἐν δὲ δειλαῖαι φρένες.

11 *Σοφοκλέους.*

Οὐ τοῖς ἀθύμοις ἡ τύχη ξυλλαμβάνει.

12 *Εὐριπίδου Ἀλκμαίωνος.*

Ὁ φόβος, ὅταν τις σώματος μέλλῃ πέρι
λέγειν καταστὰς εἰς ἀγῶν᾽ ἐναντίον,
τό τε στόμ᾽ εἰς ἔκπληξιν ἀνθρώπων ἄγει
τὸν νοῦν τ᾽ ἀπείργει μὴ λέγειν ἃ βούλεται·
τῷ μὲν γὰρ ἔνι κίνδυνος, ὃ δ᾽ ἀθῷος μένει.
ὅμως δ᾽ ἀγῶνα τόνδε δεῖ μ᾽ ὑπεκδραμεῖν·
ψυχὴν γὰρ ἆθλα τιθεμένην ἐμὴν ὁρῶ·

13 *Εὐριπίδου Ἀρχελάῳ.*

Ὁ δ᾽ ἡδὺς αἰὼν ἡ κακή τ᾽ ἀνανδρία
οὔτ᾽ οἶκον οὔτε πόλιν ἀνορθώσειεν ἄν.

14 *Ἀντισθένους.*

Ὅστις δὲ ἑτέρους δέδοικε, δοῦλος ὢν λέληθεν ἑαυτόν.

15 *Διογένους.*

Πάντα μὲν οὖν τὰ δεινὰ πέφυκε μᾶλλον ἐκπλήττειν τοὺς προσδεχομένους ἢ λυπεῖν τοὺς πειραθέντας. ὁ δὲ φόβος οὕτω χαλεπός ἐστιν ὥστε πολλοὶ ἤδη προέλαβον τὸ ἔργον, οἳ μὲν ἐν νηὶ χειμαζόμενοι οὐ περιμείναντες καταδῦναι τὴν ναῦν, ἀλλὰ πρότερον αὑτοὺς ἀποσφάξαντες. . . .

16 *Ὑπερείδου.*

Ὑπερείδης ὁ ῥήτωρ ἔφησε τὴν ἀγωνίαν τοῦ λέγειν πέδην εἶναι.

17 *Θουκυδίδου ἱστορίας β΄ (89) δημηγορίας Φορμίωνος.*

Ἡσσημένων δὲ ἀνδρῶν οὐκ ἐθέλουσιν αἱ γνῶμαι πρὸς τοὺς αὐτοὺς κινδύνους ὅμοιαι εἶναι.

18 *Ἀντιφῶντος.*

Νόσος δειλοῖσιν ἑορτή· οὐ γὰρ ἐκπορεύονται ἐπὶ πρᾶξιν.

19 *Ἱεροκλέους ἐκ τοῦ περὶ δικαιοσύνης.*

Ἴδωμεν γὰρ εἰ τοὺς δειλοὺς οἷόν τε δικαίους εἶναι· τοὺς γὰρ ἐναντίως ἔχοντας τούτοις, τοὺς θρασεῖς, ἀδίκους ὄντας εὑρίσκομεν διὰ τὸ πρὸς βίαν τὰ πολλὰ ποιεῖν. δειλία τοίνυν ἐστὶ διαφθορὰ δόξης ἐννόμου δεινῶν τε πέρι καὶ μή· ἢ ἄγνοια δεινῶν τε καὶ οὐ δεινῶν καὶ οὐδετέρων. πῶς ἂν οὖν οἱ δόξαις διεφθαρμέναις καὶ παρανόμοις συζῶντες εἶεν ἂν δίκαιοι; οὐ γὰρ δὴ εἰκάζοιεν ἂν περὶ ὅτου δήποτε καλῶς, μὴ συγχωροῦντος αὐτοῖς τοῦ περὶ τὴν ψυχὴν δέους εἰς ἥντινα οὖν ζήτησιν προκύπτειν.

20 *Δημητρίου.*

Αὐτίκα γὰρ εἰ τῷ πολεμοῦντι καὶ παρατεταγμένῳ παρασταῖεν ἥ τε ἀνδρία καὶ ἡ δειλία, πόσον ἂν οἴεσθε διαφόρους εἰπεῖν λόγους; ἆρ' οὐχ ἡ μὲν ἀνδρία μένειν κελεύοι καὶ τὴν τάξιν διαφυλάττειν; ἀλλὰ βαλοῦσιν· ὑπόμενε. ἀλλὰ τρωθήσομαι· καρτέρει. ἀλλ' ἀποθανοῦμαι· ἀπόθανε μᾶλλον ἢ λίπῃς τὴν τάξιν. ἀτενὴς οὗτος ὁ λόγος καὶ σκληρός. ἀλλ' ὁ τῆς δειλίας νὴ Δία φιλάνθρωπος καὶ μαλακός· ὑπάγειν γὰρ δῆτα κελεύει τὸν φοβούμενον. ἀλλ' ἡ ἀσπὶς ἐνοχλεῖ· ῥῖψον. ἀλλὰ καὶ ὁ θώραξ· παράλυσον. παντὶ δήπου πραΰτερα ταῦτ' ἐκείνων. ὁμοίως δὲ καὶ ἐπὶ τῶν ἄλλων. μὴ λάβῃς, φησὶν ἡ ἐγκράτεια, ὅθεν οὐ δεῖ· μὴ φάγῃς, μὴ πίῃς, ἀνέχου, καρτέρει· τὸ τελευταῖον, ἀπόθανε πρότερον ἢ πράξῃς ὅπερ οὐ δεῖ. ἡ δ' ἀκρασία, πῖθι ὅτε βούλει, φάγε ὅ τι ἂν ἥδιστα φάγοις· ἡ τοῦ γείτονος ἀρέσκει σοι γυνή; πέραινε· χρημάτων

ἀπορεῖς; δάνεισαι· δανεισάμενος ἀδυναμεῖς; μὴ ἀποδῷς· οὐ πιστεύουσιν ἔτι δανείζειν; ἅρπασον. πολύ γε κἀνταῦθα τὸ μεταξύ. ἀλλὰ τίς οὐκ οἶδεν ὅτι ἡ μὲν τοιαύτη χάρις ὀλέθριος γίνεται τοῖς προσδεξαμένοις, ἡ δ' ἐκ τῶν ἐναντίων σωτήριος;

21 *Πλάτωνος ἐκ τοῦ Φαίδωνος* (67 e).

Οἱ ὀρθῶς φιλοσοφοῦντες ἀποθνήσκειν μελετῶσι, καὶ τεθνάναι ἥκιστα αὐτοῖς ἀνθρώπων φοβερόν.

22 *Πλάτωνος ἐκ τοῦ Φαίδωνος* (68 b).

Οὐκ οὖν ἱκανόν σοι τεκμήριον, ἔφη, τοῦτο ἀνδρός, ὃν ἂν ἴδῃς ἀγανακτοῦντα μέλλοντα ἀποθανεῖσθαι, ὅτι οὐκ ἄρ' ἦν φιλόσοφος ἀλλά τις φιλοσώματος; αὐτὸς δέ που οὗτος τυγχάνει ὢν καὶ φιλοχρήματος καὶ φιλότιμος, ἤτοι τὰ ἕτερα τούτων ἢ ἀμφότερα. πάνυ ἔχει, ἔφη, οὕτως ὡς λέγεις. ἆρ' οὖν, ἔφη, ὦ Σιμμία, οὐ καὶ ἡ ὀνομαζομένη ἀνδρία τοῖς οὕτω διακειμένοις μάλιστα προσήκει; πάντως δή που, ἔφη. οὐκ οὖν καὶ ἡ σωφροσύνη, ἣν καὶ οἱ πολλοὶ ὀνομάζουσι σωφροσύνην, τὸ περὶ τὰς ἐπιθυμίας μὴ ἐπτοῆσθαι, ἀλλ' ὀλιγώρως ἔχειν καὶ κοσμίως, ἆρ' οὐ τούτοις μόνοις προσήκει τοῖς μάλιστα τοῦ σώματος ὀλιγωροῦσί τε καὶ ἐν φιλοσοφίᾳ ζῶσιν; ἀνάγκη, ἔφη. εἰ γὰρ ἐθέλεις, ἦ δ' ὅς, ἐννοῆσαι τήν γε τῶν ἄλλων ἀνδρίαν τε καὶ σωφροσύνην, δόξει σοι εἶναι ἄτοπος. πῶς δή, ὦ Σώκρατες; Οἶσθα, ἦ δ' ὅς, ὅτι τὸν θάνατον ἡγοῦνται πάντες οἱ ἄλλοι τῶν μεγάλων κακῶν εἶναι; καὶ μάλ', ἔφη. οὐκ οὖν φόβῳ μειζόνων κακῶν ὑπομένουσιν αὐτὸν οἱ ἀνδρεῖοι τὸν θάνατον, ὅταν ὑπομένωσιν; ἔστι ταῦτα. τῷ δεδιέναι ἄρα καὶ δέει ἀνδρεῖοί εἰσι πάντες πλὴν οἱ φιλόσοφοι· καίτοι ἄλογόν γε δέει τινὰ καὶ δειλίᾳ ἀνδρεῖον εἶναι. πάνυ

μὲν οὖν. τί δέ, οἱ κόσμιοι αὐτῶν οὐ ταυτὸ τοῦτο πεπόνθασιν, ἀκολασίᾳ τινὶ σώφρονές εἰσι; καίτοι φαμέν γε ἀδύνατον εἶναι, ἀλλ' ὅμως αὐτοῖς συμβαίνει τούτῳ ὅμοιον τὸ πάθος, τὸ περὶ ταύτην τὴν εὐήθη σωφροσύνην. φοβούμενοι γὰρ ἑτέρων ἡδονῶν στερηθῆναι καὶ ἐπιθυμοῦντες ἐκείνων, ἄλλων ἀπέχονται, ὑπ' ἄλλων κρατούμενοι. καίτοι καλοῦσί γε ἀκολασίαν τὸ ὑπὸ τῶν ἡδονῶν ἄρχεσθαι· ἀλλ' ὅμως συμβαίνει αὐτοῖς κρατουμένοις ὑφ' ἡδονῶν κρατεῖν ἄλλων ἡδονῶν. τοῦτο δ' ὅμοιόν ἐστιν, ὃ νῦν δὴ ἐλέγετο, τὸ τρόπον τινὰ δι' ἀκολασίαν αὐτοὺς σεσωφρονίσθαι. ἔοικε γάρ. ὦ μακάριε Σιμμία, μὴ γὰρ οὐχ αὕτη ᾖ ἡ ὀρθὴ πρὸς ἀρετήν, ἡδονὰς πρὸς ἡδονὰς καὶ λύπας πρὸς λύπας καὶ φόβον πρὸς φόβον καταλλάττεσθαι, μείζω πρὸς ἐλάττω ὥσπερ νομίσματα· ἀλλ' ᾖ ἐκεῖνο μόνον τὸ νόμισμα ὀρθόν, ἀντὶ οὗ δεῖ ταῦτα πάντα καταλλάττεσθαι, φρόνησις, καὶ τούτου μὲν πάντα καὶ μετὰ τούτου ὠνούμενά τε καὶ πιπρασκόμενα τῷ ὄντι ᾖ, καὶ ἀνδρία καὶ σωφροσύνη καὶ ξυλλήβδην ἀληθὴς ἀρετὴ μετὰ φρονήσεως, καὶ προσγινομένων καὶ ἀπογινομένων καὶ ἡδονῶν καὶ φόβων καὶ τῶν ἄλλων πάντων τῶν τοιούτων· χωριζόμενα δὲ φρονήσεως καὶ ἀλλαττόμενα ἀντὶ ἀλλήλων, μὴ σκιαγραφία τις ᾖ τοιαύτη ἀρετὴ καὶ τῷ ὄντι ἀνδραποδώδης τε καὶ οὐδὲν ὑγιὲς οὐδ' ἀληθὲς ἔχῃ· τὸ δ' ἀληθὲς τῷ ὄντι ᾖ κάθαρσις τῶν τοιούτων πάντων, καὶ ἡ σωφροσύνη καὶ ἡ δικαιοσύνη καὶ ἡ ἀνδρία καὶ ἔτι αὐτὴ ἡ φρόνησις μὴ καθαρμός τις ᾖ· ὡς κινδυνεύουσι καὶ οἱ τὰς τελετὰς ἡμῖν οὗτοι καταστήσαντες οὐ φαῦλοι εἶναι, ἀλλὰ τῷ ὄντι πάλαι αἰνίττεσθαι, ὅτι ὃς ἂν ἀμύητος καὶ ἀτέλεστος εἰς ᾅδου ἀφίκηται, ἐν βορβόρῳ κείσεται, ὁ δὲ κεκαθαρμένος τε καὶ τετε-

λεσμένος ἐκεῖσε ἀφικόμενος μετὰ θεῶν οἰκήσεται. εἰσὶ γὰρ δή, ὥς φασιν οἱ περὶ τὰς τελετάς, ναρθηκοφόροι μὲν πολλοί, Βάκχοι δέ τε παῦροι· οὗτοι δ' εἰσὶ κατὰ τὴν ἐμὴν δόξαν οὐκ ἄλλοι ἢ οἱ πεφιλοσοφηκότες ὀρθῶς.

ΠΕΡΙ ΔΙΚΑΙΟΣΥΝΗΣ. Θ.

4 *Εὐριπίδου Ἀλεάδαι.*

Τοῖς γὰρ δικαίοις ἀντέχειν οὐ ῥᾴδιον.

5 *Εὐριπίδου Ἰνοῦς.*

Κέκτησο δ' ὀρθῶς [ἂν ἔχῃς] ἄνευ ψόγου
καὶ μικρὰ σώζου τῇ δίκῃ ξυνοῦσ' ἀεί.

6 *Εὐριπίδου Ἑκάβης* (844).

Ἐσθλοῦ γὰρ ἀνδρὸς τῇ δίκῃ θ' ὑπηρετεῖν
καὶ τοὺς κακοὺς δρᾶν πανταχοῦ κακῶς ἀεί.

7 *Σοφοκλέους Αἴαντι* (1334).

Μηδ' ἡ βία σε μηδαμῶς νικησάτω
τοσόνδε μισεῖν ὥστε τὴν δίκην πατεῖν.

---

1 *Εἰς δίκαιον, γνῶμαι μονόστιχοι.*
Ἀνδρὸς δικαίου καρπὸς οὐκ ἀπόλλυται.
βάδιζε τὴν εὐθεῖαν, ἣν δίκαιος ᾖς.
βίου δικαίου γίγνεται τέλος καλόν.
δίκαιος ἴσθ', ἵνα καὶ δικαίων δὴ τύχῃς.
δίκαιος εἶναι μᾶλλον ἢ χρηστὸς θέλε.
δίκαια δράσας συμμάχου τεύξῃ θεοῦ.
κρίνειν δίκαιον, μὴ τὸ συμφέρον, θέλε.
πρὸς εὖ λέγοντας οὐδὲν ἀντειπεῖν ἔχω.
τρόπος δίκαιος κτῆμα τιμιώτατον.

2 Ὄμμα δίκης καθορᾷ πάντα τὰ γιγνόμενα.

3 Δίκη γὰρ οὐκ ἔνεστ' ἐν ὀφθαλμοῖς βροτῶν.

8 *Εὐριπίδου Θησεῖ.*
Κρεῖσσον δὲ πλούτου καὶ πολυχρύσου χλιδῆς
ἀνδρῶν δικαίων κἀγαθῶν παρουσία.

9 *Μενάνδρου.*
Δίκαιος ἂν ᾖς, τῷ τρόπῳ χρήσῃ νόμῳ.
Χρηστοῦ πρὸς ἀνδρὸς μηδὲν ἐννοεῖν κακόν.
Δίκαιος ἀδικεῖν οὐκ ἐπίσταται τρόπος.

10 *Μενάνδρου.*
Τὸ μηδὲν ἀδικεῖν πᾶσιν ἀνθρώποις πρέπει.

11 *Μενάνδρου Δεισιδαίμονι.*
Οὐ δεῖ γὰρ ἀδικεῖν τοὺς ἱκέτας, ἄλλως τε καὶ
ὅταν μετ' εὐνοίας τι, μὴ πονηρίᾳ
παίσωσιν. αἰσχρὸν τοῦτο τἆρ' ἔστιν πάνυ.

12 *Μενάνδρου.*
Ἐν παντὶ δεῖ καιρῷ τὸ δίκαιον ἐπικρατεῖν.

13 *Εὐριπίδου Παλαμήδει.*
Εἷς τοι δίκαιος μυρίων οὐκ ἐνδίκων
κρατεῖ, τὸ θεῖον τὴν δίκην τε συλλαβών.

14 *Φιλωνίδου.*
Οὐκ ἔστιν οὐδεὶς δειλὸς ὁ δεδοικὼς νόμον·
πρὸς τοὺς πολεμίους δ' ἐστὶν ἀνδρίας κρίσις.
Ὑπὸ τοῦ δικαίου δ' ἐστὶν ἡττᾶσθαι καλόν.

15 *Εὐριπίδου.*
Φεῦ φεῦ. τὸ νικᾶν τἄνδιχ' ὡς καλὸν γέρας,
τὰ μὴ δίκαια δ' ὡς ἁπανταχοῦ κακόν.
καὶ γλῶσσα φλαύρα, καὶ φθόνος τοῦ μὴ φθονεῖν
ὅσῳ κάκιον μὴ καλῶς ὠγκωμένοις.

16 *Ἀντιφάνους.*
Ὁ μηδὲν ἀδικῶν οὐδενὸς δεῖται νόμου.

17 *Μενάνδρου Καρχηδονίῳ.*
Τὸ καλῶς ἔχον που κρεῖττόν ἐστι καὶ νόμου.

18 *Μενάνδρου Κιθαριστῇ.*
Εἰ τοὺς ἀδικηθέντας, πάτερ, φευξούμεθα,
τίσιν ἂν βοηθήσοιμεν ἄλλοις ῥᾳδίως;

19 *Ἐν ταυτῷ.*
Τὸ μηδὲν ἀδικεῖν ἐκμαθεῖν γάρ, ὦ Λάχης,
ἀστεῖον ἐπιτήδευμα κρίνω τῷ βίῳ.

20 *Μενάνδρου Τροφωνίῳ.*
Τὸ μηδὲν ἀδικεῖν καὶ φιλανθρώπους ποιεῖ.

21 *Φιλήμονος ἐν Παλαμήδει.*
Τοῦ γὰρ δικαίου κἂν βροτοῖσι καὶ θεοῖς
ἀθάνατος ἀεὶ δόξα διατελεῖ μόνου.

22 *Φιλήμονος.*
Ἀνὴρ δίκαιός ἐστιν οὐχ ὁ μὴ ἀδικῶν,
ἀλλ' ὅστις ἀδικεῖν δυνάμενος μὴ βούλεται,
οὐδ' ὃς τὰ μικρὰ λαμβάνειν ἀπέσχετο,
ἀλλ' ὃς τὰ μεγάλα καρτερεῖ μὴ λαμβάνων,
ἔχειν δυνάμενος καὶ κρατεῖν ἀζημίως.
οὐδ' ὅς γε ταῦτα πάντα διατηρεῖ μόνον,
ἀλλ' ὅστις ἄδολον γνησίαν τ' ἔχων φύσιν
εἶναι δίκαιος κοὐ δοκεῖν εἶναι θέλει.

23 *Αἰσχύλου.*
Ἀπάτης δικαίας οὐκ ἀποστατεῖ θεός.

24 *Ἱππάρχου* (Plat. Hipparch. 229 a).
Μνῆμα τόδ' Ἱππάρχου· στεῖχε δίκαια φρονῶν.

25 *Σόλωνος.*
Μνημοσύνης καὶ Ζηνὸς Ὀλυμπίου ἀγλαὰ τέκνα,
Μοῦσαι Πιερίδες, κλῦτέ μοι εὐχομένῳ.

ὄλβον μοι πρὸς θεῶν μακάρων δότε καὶ πρὸς ἁπάντων
ἀνθρώπων αἰεὶ δόξαν ἔχειν ἀγαθήν.
εἶναι δὲ γλυκὺν ὧδε φίλοις, ἐχθροῖσι δὲ πικρόν·
τοῖσι μὲν αἰδοῖον, τοῖσι δὲ δεινὸν ἰδεῖν.
χρήματα δ' ἱμείρω μὲν ἔχειν, ἀδίκως δὲ πεπᾶσθαι
οὐκ ἐθέλω· πάντως ὕστερον ἦλθε δίκη.
πλοῦτον δ' ὃν μὲν δῶσι θεοί, παραγίγνεται ἀνδρὶ
ἔμπεδος ἐκ νεάτου πυθμένος εἰς κορυφήν·
ὃν δ' ἄνδρες τιμῶσιν ὑφ' ὕβριος, οὐ κατὰ κόσμον
ἔρχεται, ἀλλ' ἀδίκοις ἔργμασι πειθόμενος
οὐκ ἐθέλων ἕπεται, ταχέως δ' ἀναμίσγεται ἄτῃ.
ἀρχὴ δ' ἐξ ὀλίγου γίγνεται, ὥστε πυρός,
φλαύρη μὲν τὸ πρῶτον, ἀνιηρὴ δὲ τελευτᾷ·
οὐ γὰρ δὴν θνητοῖς ὕβριος ἔργα πέλει.
ἀλλὰ Ζεὺς πάντων ἐφορᾷ τέλος· ἐξαπίνης δέ,
ὥστ' ἄνεμος νεφέλας αἶψα διεσκέδασεν
ἠρινός, ὃς πόντου πολυκύμονος ἀτρυγέτοιο
πυθμένα κινήσας γῆν κατὰ πυροφόρον
δῃώσας καλὰ ἔργα, θεῶν ἕδος αἰπὺν ἱκάνει
οὐρανόν, αἰθρίην δ' αὖτις ἔθηκεν ἰδεῖν,
λάμπει δ' ἠελίοιο μένος κατὰ πίονα γαῖαν
καλόν, ἀτὰρ νεφέων οὐδὲν ἔτ' ἔστιν ἰδεῖν·
τοιαύτη Ζηνὸς πέλεται τίσις, οὐδ' ἐφ' ἑκάστῳ,
ὥσπερ θνητὸς ἀνήρ, γίγνεται ὀξύχολος.
αἰεὶ δ' οὔ τι λέληθε διαμπερὲς ὅστις ἀλιτρὸν
θυμὸν ἔχει, πάντως δ' ἐς τέλος ἐξεφάνη.
ἀλλ' ὃ μὲν αὐτίκ' ἔτισεν ὃ δ' ὕστερον, ἢν δὲ φύγωσιν
αὐτοί, μηδὲ θεῶν μοῖρ' ἐπιοῦσα κίχῃ,
ἤλυθε πάντως, αὐτίκ' ἀναίτια ἔργα τίνουσιν
ἢ παῖδες τούτων ἢ γένος ἐξοπίσω.
θνητοὶ δ' ὧδε νοεῦμεν, ὁμῶς ἀγαθός τε κακός τε,
(ἥνδανεν ἣν αὐτὸς δόξαν ἕκαστος ἔχει,)

πρίν τι παθεῖν, τότε δ' αὖτις ὀδύρεται, ἄχρι δὲ τούτου
χάσκοντες κούφαις ἐλπίσι τερπόμεθα.
χὤστις μὲν νούσοισιν ὑπ' ἀργαλέῃσι πιεσθῇ,
ὡς ὑγιὴς ἔσται τοῦτο κατεφράσατο.
ἄλλος δειλὸς ἐών, ἀγαθὸς δοκεῖ ἔμμεναι ἀνήρ,
καὶ καλός, μορφὴν οὐ χαρίεσσαν ἔχων.
εἰ δέ τις ἀχρήμων, πενίης δέ μιν ἔργα βιᾶται,
κτήσασθαι πάντων χρήματα πολλὰ δοκεῖ.
σπεύδει δ' ἄλλοθεν ἄλλος· ὃ μὲν κατὰ πόντον ἀλᾶται,
ἐν νηυσὶν χρήζων οἴκαδε κέρδος ἄγειν,
ἰχθυόεντ' ἀνέμοισι φορεύμενος ἀργαλέοισι,
φειδωλὴν ψυχῆς οὐδεμίην θέμενος.
ἄλλος γῆν τέμνων πολυδένδρεον, εἰς ἐνιαυτὸν
λατρεύει, τοῖσιν καμπύλ' ἄροτρα μέλει.
ἄλλος Ἀθηναίης τε καὶ Ἡφαίστου πολυτέχνεω
ἔργα δαεὶς χειροῖν ξυλλέγεται βίοτον.
ἄλλος Ὀλυμπιάδων Μουσέων πάρα δῶρα διδαχθείς,
ἱμερτῆς σοφίης μέτρον ἐπιστάμενος.
ἄλλον μάντιν ἔθηκεν ἄναξ ἑκάεργος Ἀπόλλων,
ἔγνω δ' ἀνδρὶ κακὸν τηλόθεν ἐρχόμενον,
ᾧ συνομαρτήσουσι θεοί· τὰ δὲ μόρσιμα πάντως
οὔτε τις οἰωνὸς ῥύσεται οὔθ' ἱερά.
ἄλλοι Παιῶνος πολυφαρμάκου ἔργον ἔχοντες,
ἰητροί, καὶ τοῖς οὐδὲν ἔπεστι τέλος.
πολλάκι δ' ἐξ ὀλίγης ὀδύνης μέγα γίγνεται ἄλγος,
κοὐκ ἄν τις λύσαιτ' ἤπια φάρμακα δούς.
τὸν δὲ κακαῖς νούσοισι κυκώμενον ἀργαλέαις τε
ἁψάμενος χειροῖν αἶψα τίθησ' ὑγιῆ.
μοῖρα δέ τοι θνητοῖσι κακὸν φέρει ἠδὲ καὶ ἐσθλόν,
δῶρα δ' ἄφυκτα θεῶν γίγνεται ἀθανάτων.
πᾶσι δέ τοι κίνδυνος ἐπ' ἔργμασιν, οὐδέ τις οἶδεν
ᾗ μέλλει σχήσειν χρήματος ἀρχομένου.

ἀλλ' ὁ μὲν εὖ ἔρδειν πειρώμενος, οὐ προνοήσας,
εἰς μεγάλην ἄτην καὶ χαλεπὴν ἔπεσεν.
τῷ δὲ καλῶς ἔρδοντι θεὸς περὶ πάντα δίδωσι
συντυχίην ἀγαθήν, ἔκλυσιν ἀφροσύνης.
πλούτου δ' οὐδὲν τέρμα πεφασμένον ἀνδράσι κεῖται.
οἳ γὰρ νῦν ἡμέων πλεῖστον ἔχουσι βίον,
διπλασίως σπεύδουσι· τίς ἂν κορέσειεν ἅπαντας;
κέρδεά τοι θνητοῖς ὤπασαν ἀθάνατοι·
ἄτη δ' ἐξ αὐτῶν ἀναφαίνεται, ἣν ὁπόταν Ζεὺς
πέμψῃ τισομένην, ἄλλοτ' ἂν ἄλλος ἔχοι.

26 Πλάτωνος ἐκ τοῦ α' τῆς πολιτείας (336e).

Μὴ γὰρ δὴ οἴου, εἰ μὲν χρυσὸν ἐζητοῦμεν, οὐκ ἄν ποτε ἡμᾶς ἑκόντας εἶναι ὑποκατακλίνεσθαι ἀλλήλοις ἐν τῇ ζητήσει καὶ διαφθείρειν τὴν εὕρεσιν αὐτοῦ, δικαιοσύνην δὲ ζητοῦντας, πρᾶγμα πολλῷ χρυσίου τιμιώτερον, ἔπειθ' οὕτως ἀνοήτως ὑπείκειν ἀλλήλοις καὶ οὐ σπουδάζειν ὅτι μάλιστα φανεῖται αὐτό.

27 Ἀγησιλάου.

Ἀνδρίας μὲν γὰρ οὐδὲν ὄφελος, μὴ παρούσης δικαιοσύνης· εἰ δὲ δίκαιοι πάντες γίνοιντο, μηδὲν ἀνδρίας δεήσεσθαι.

28 Ἰσοκράτους κατὰ τῶν σοφιστῶν (295 d).

Καὶ μηδεὶς οἰέσθω με λέγειν ὡς ἔστι δικαιοσύνη διδακτόν. ὅλως μὲν γὰρ οὐδεμίαν ἡγοῦμαι τοιαύτην τέχνην εἶναι, ἥ τις τοῖς κακῶς πεφυκόσι πρὸς αὐτὴν δικαιοσύνην ἂν ἐμποιήσειεν.

29 Δημοσθένους.

Ἄξιον τούτους ἐπαινεῖν τῶν ἀνθρώπων, οἳ μηδεμίαν ὠφελίαν προαιροῦνται τοῦ δικαίου. χρήματα μὲν γὰρ ἔστι κτήσασθαι, δόξαν δὲ χρημάτων οὐ ῥᾴδιον πρίασθαι.

30 *Πλάτωνος* (Menex. 246 e).

Πᾶσά τε ἐπιστήμη, χωριζομένη δικαιοσύνης καὶ τῆς ἄλλης ἀρετῆς, πανουργία ἀλλ' οὐ σοφία φαίνεται.

31 *Δημοκρίτου.*

Ἀγαθὸν οὐ τὸ μὴ ἀδικέειν ἀλλὰ τὸ μηδὲ ἐθέλειν.

32 *Δημοκρίτου.*

Μοῦνοι θεοφιλέες ὅσοις ἐχθρὸν τὸ ἀδικέειν.

33 *Πιττακοῦ.*

Πιττακὸς ἔφη "ἡδονὴ σὺν τῷ καλῷ δίκαιον."

34 *Πιττακὸς ἔφη "παρακαταθήκην λαβὼν δικαίως ἀπόδος."*

35 *Ἀριστείδου.*

Ἀριστείδης ὁ δίκαιος ἐρωτηθεὶς παρά τινος τί ἐστι τὸ δίκαιον "τὸ μὴ ἀλλοτρίων ἐπιθυμεῖν" ἔφη.

36 *Πλάτωνος ἐκ τοῦ Πρωταγόρου* (331 b).

Ἐγὼ μὲν γὰρ αὐτὸς ὑπέρ γε ἐμαυτοῦ φαίην ἂν καὶ τὴν δικαιοσύνην ὅσιον εἶναι καὶ τὴν ὁσιότητα δίκαιον· καὶ ὑπὲρ σοῦ δέ, εἴ με ἐῴης, ταυτὰ ἂν αὐτὰ ἀποκρινοίμην, ὅτι ἤτοι ταυτόν γ' ἐστὶ δικαιότης ὁσιότητι ἢ ὅτι ὁμοιότατον, καὶ μάλιστα πάντων ἥ τε δικαιοσύνη οἷον ὁσιότης καὶ ἡ ὁσιότης οἷον δικαιοσύνη.

37 *Πυθαγόρου.*

Ξένος ἀνὴρ δίκαιος οὐ μόνον πολίτου ἀλλὰ καὶ συγγενοῦς διαφέρει.

38 *Ἰαμβλίχου ἐκ τῆς ἐπιστολῆς τῆς πρὸς Ἀνατόλιον περὶ δικαιοσύνης.*

Ἐπ' αὐτὸ δὴ τὸ τῶν ὅλων ἀρετῶν τέλος καὶ τὴν συναγωγὴν αὐτῶν συμπασῶν, ἐν ᾗ δὴ πᾶσαι ἔνεισι

συλλήβδην κατὰ τὸν παλαιὸν λόγον, γένοιτο ἄν τις εἰς τὴν δικαιοσύνην ἀγόμενος.

39 Ἐν ταυτῷ.

Ἐν δὲ τῷ ἀνθρωπίνῳ βίῳ διανομὴ τῶν κατ' ἀξίαν ἔργων τε καὶ τιμῶν καὶ τῶν ἄλλων τῶν ἐπιβαλλόντων ἑκάστοις ὑφίστησι τὴν εἰς τὸν ἀνθρώπινον βίον τείνουσαν δικαιοσύνην. ἔργα τοίνυν τῆς δικαιοσύνης τὰ πρόσφορα καὶ ἐπιτηδεύματα εἴη ἄν, ὅσα κοινωνικὰ καὶ ἥμερα τυγχάνει καὶ εὐσύμβολα καὶ εὐσυνάλλακτα καὶ ὠφέλιμα, τῶν βλαβερῶν κωλυτικὰ διαπράξεων, τῶν δ' ἐναντίων τὴν ὅλην κατάστασιν εὐπρεπῆ παρασκευάζοντα.

40 Ἐπικτήτου.

Ὥσπερ ἀληθὴς ζυγὸς οὔτε πρὸς ἀληθοῦς εὐθύνεται ζυγοῦ οὔθ' ὑπὸ ψευδοῦς κρίνεται, οὕτω καὶ ὁ δίκαιος κριτὴς οὔθ' ὑπὸ δικαίων εὐθύνεται οὔτε παρ' ἀδίκοις δικάζεται.

41 Ὥσπερ τὸ εὐθὺ εὐθέος οὐ δεῖται, οὕτως οὐδὲ τὸ δίκαιον δικαίου.

42 Μὴ πρότερον ἑτέρῳ δικαστηρίῳ δικάσῃς, πρὶν αὐτὸς παρὰ τῇ δίκῃ κριθῇς.

43 Εἰ βούλει τὰς κρίσεις δικαίας ποιεῖσθαι, μηδένα τῶν δικαζομένων καὶ δικαιολογούντων ἐπιγίγνωσκε, ἀλλ' αὐτὴν τὴν δίκην.

44 Ἥκιστα πταίσεις ἐν ταῖς κρίσεσιν, ἐὰν αὐτὸς ἐν τῷ βίῳ ἄπταιστος διατελῇς.

45 Ἄμεινον δικαίως κρίνοντα πρὸς τοῦ καταδικασθέντος ἀδίκως μεμφθῆναι, ἢ ἀδίκως κρίναντα παρὰ τῇ φύσει δικαίως ψέγεσθαι.

46 Καθάπερ ἡ τὸν χρυσὸν δοκιμάζουσα λίθος οὐκέτι

καὶ αὐτὴ πρὸς τοῦ χρυσοῦ δοκιμάζεται, οὕτω καὶ ὁ τὸ κριτήριον ἔχων.

47 *Αἰσχρὸν τὸν δικαστὴν πρὸς ἑτέρων δικάζεσθαι.*

48 Καθάπερ ὀρθοῦ οὐδὲν ὀρθότερον, οὕτως οὐδὲ δικαίου οὐδὲν δικαιότερον.

49 *Διογένους.*

Ἡ τοίνυν δικαιοσύνη πολλὴν ἔχει ῥᾳστώνην τῇ ψυχῇ. τὸ γὰρ μηδένα μήτε φοβούμενον μήτε αἰσχυνόμενον ζῆν, ἡδονή τις ἐστὶν καὶ ἱκανότης τῷ βίῳ· ὁ δὲ τὴν δικαιοσύνην ἔχων ἐν τῇ ψυχῇ, οὐ μόνον τοῖς ἄλλοις ὠφέλιμός ἐστιν, ἀλλὰ πολὺ μάλιστα αὐτὸς αὑτῷ· οὐ γὰρ πειράσεται αὑτὸν ἀδικεῖν οὐδὲ καθ᾽ ἓν μέρος. οὐδὲ γὰρ λύπης αὑτῷ αἴτιός ἐστιν οὐδὲ νόσου· ἀλλὰ τὰ αἰσθητήρια τὰ τῆς φύσεως θεοὺς ὑπολαμβάνων εἶναι, δικαίως χρήσεται αὐτοῖς, οὐδὲν μὲν ὑπὲρ τὴν δύναμιν πράττων, φυλάττων δὲ τὰ μάλιστα καὶ ἡδονὰς καὶ ὠφελείας λαμβάνων διὰ τούτων. καὶ γὰρ ἀπὸ ἀκοῆς καὶ ἀπὸ ὁράσεως καὶ ἀπὸ τῆς τροφῆς καὶ ἀπὸ τῶν ἀφροδισίων ἡδοναὶ ἔσονται τῷ δικαίως ἑαυτῷ χρωμένῳ, τῷ δὲ μὴ δικαίως χρωμένῳ καὶ κίνδυνοι γίνονται περὶ τὰ πλείστου ἄξια καὶ ἀναγκαιότατα. ἢ οὐχ ἑώρακας τὴν ψυχὴν ταραττομένους καὶ νυκτὸς καὶ ἡμέρας καὶ εἰς τὴν θάλασσαν ἑαυτοὺς ῥιπτοῦντας εἰκῇ καὶ εἰς μάχαιραν;

50 *Λυκούργου.*

Ζηλωτὸν ἴσως ὁ πλοῦτος· τίμιον μέντοι καὶ θαυμαστὸν ἡ δικαιοσύνη.

51 *Δημοσθένους Ὀλυνθιακῶν β′* (21).

Ὥσπερ γὰρ οἰκίας, οἶμαι, καὶ πλοίου καὶ τῶν ἄλλων τῶν τοιούτων τὰ κάτωθεν ἰσχυρότατα εἶναι δεῖ,

οὕτω καὶ τῶν πράξεων τὰς ἀρχὰς καὶ τὰς ὑποθέσεις ἀληθεῖς καὶ δικαίας εἶναι προσήκει.

52 *Ἐκ τῆς Νικολάου ἐθῶν συναγωγῆς.*

Ἐν Παιδαλίοις, Ἰνδικῷ ἔθνει, οὐχ ὁ θύων ἀλλ' ὁ συνετώτατος τῶν παρόντων κατάρχεται τῶν ἱερῶν. αἰτεῖται δ' ἀεὶ παρὰ τῶν θεῶν οὐδὲν ἄλλο πλὴν δικαιοσύνης.

53 *Πλάτωνος ἐκ τοῦ Θεαιτήτου* (176 b).

Θεὸς οὐδαμῇ οὐδαμῶς ἄδικος, ἀλλ' ὡς οἷόν τε δικαιότατος, καὶ οὐκ ἔστιν αὐτῷ ὁμοιότερον οὐδὲν ἢ ὃς ἂν ἡμῶν αὖ γένηται ὅτι δικαιότατος.

54 *Ἐκ τῶν Πώλου Πυθαγορείου Λευκανοῦ περὶ δικαιοσύνης.*

Δοκεῖ μοι τῶν ἀνδρῶν τὰν δικαιοσύναν ματέρα τε καὶ τιθανὰν τᾶν ἀλλᾶν ἀρετᾶν προσειπέν· ἄτερ γὰρ ταύτας οὔτε σώφρονα οὔτε ἀνδρεῖον οὔτε φρόνιμον οἷόν τε ἦμεν. ἁρμονία γάρ ἐντι καὶ εἰράνα τᾶς ὅλας ψυχᾶς μετ' εὐρυθμίας. δηλοφανέστερον δέ κα γένοιτο τὸ ταύτας κράτος ἐτάζουσιν ἁμῖν τὰς ἄλλας ἕξιας. μερικὰν γὰρ ἔχοντι αὗται τὰν ὠφέλειαν καὶ ποθ' ἕνα, ἃ δὲ ποθ' ὅλα τὰ συστάματα καὶ ἐν πλάθει. ἐν κόσμῳ μὲν ὦν αὐτὰ τὰν ὅλαν ἀρχὰν διαστραταγοῦσα πρόνοιά τε καὶ ἁρμονία καὶ δίκα καὶ νῶς τινὸς θεῶν οὕτω ψαφιξαμένω· ἐν πόλει δὲ εἰράνα τε καὶ εὐνομία δικαίως κέκληται· ἐν οἴκῳ δ' ἔντι ἀνδρὸς μὲν καὶ γυναικὸς ποτ' ἀλλάλως ὁμοφροσύνα, οἰκετᾶν δὲ ποτὶ δεσπότας εὔνοια, δεσποτᾶν δὲ ποτὶ θεράποντας καδεμονία· ἐν σώματι δὲ καὶ ψυχᾷ πρᾶτα μὲν καὶ ἅπασιν ἀγαπατότατα ζῴοις ἅ τε ὑγίεια καὶ ἀρτιότας, σοφία τ' ἐκ τᾶς ἐπιστάμας τε καὶ δικαιοσύνας γενομένα τε παρ' ἀνθρώποις. εἰ δ' αὐτὰ τὸ ὅλον

καὶ τὰ μέρεα οὕτω παιδαγωγεῖ τε καὶ σώζει ὁμόφρονα καὶ ποτάγορα ἀλλάλοις ἀπεργαζομένα, πῶς οὐ μάτηρ καὶ τιθανὰ πασᾶν τε καὶ πάντων παμψαφί [κα] λέγοιτο;

55 *Πλάτωνος Νόμων ε'* (730 d).

Τίμιος μὲν δὴ καὶ ὁ μηδὲν ἀδικῶν· ὁ δὲ μηδ' ἐπιτρέπων τοῖς ἀδικοῦσιν ἀδικεῖν πλέον ἢ διπλασίας τιμῆς ἄξιος ἐκείνου. ὁ μὲν γὰρ ἑνός, ὁ δὲ πολλῶν ἀντάξιος ἑτέρων, μηνύων τὴν τῶν ἄλλων τοῖς ἄρχουσιν ἀδικίαν· ὁ δὲ καὶ ξυγκολάζων εἰς δύναμιν τοῖς ἄρχουσιν, ὁ μέγας ἀνὴρ ἐν πόλει καὶ τέλειος οὗτος ἀναγορευέσθω νικηφόρος ἀρετῇ.

56. 57 *Ἱέρακος ἐκ τοῦ περὶ δικαιοσύνης.*

Φέρε γὰρ ἴδωμεν, τί τοῖς πολλοῖς δοκεῖ περὶ δικαιοσύνης. οἱ μὲν οὖν ἕξιν εἶναι φασὶ ψυχῆς ἀδωροδόκητον, τοῦ κατὰ δύναμιν ἑκάστου στοχαζομένην· οἱ δὲ ἕξιν ἐν ψυχῇ, μήτε τῇ χείρονι τύχῃ μήτε τῇ κρείττονι πλέον ἢ ἔλαττον ἀπονέμουσαν, τὸ δ' ἴσον πᾶσι φυλάττουσαν. δοκοῦσι δέ μοι οἱ μὲν πρότεροι τὸν μὴ ἀλλοτρίων ἐπιθυμοῦντα χρημάτων θαυμάζειν, τηρήσαντα δ' ἂν καὶ τὸ κατὰ δύναμιν ἑκάστῳ, εἰ κελεύειν τισὶ συγχωρηθείη· οἱ δεύτεροι δὲ τὸν μὴ τῇ τύχῃ τὸ πλέον μετροῦντα, πάντας δὲ τῶν αὐτῶν ἀξιοῦντα. τί οὖν, εἰ τοῦτο μαθών τις ἐν τοῖς ἄλλοις ἀδικώτατος εἴη; καὶ εἰ χρημάτων μὲν ἅρπαξ, ἀλλοτρίων δὲ ἐπιθυμοῖ, ὑβριστὴς δὲ ὑπάρχοι καὶ ἀκόλαστος περὶ ἡδονάς, ἆρα τοιούτων κακῶν ἀνάπλεως δίκαιος ἂν εἴη; ὅταν δὲ καὶ τῶν αὐτῶν ἀξιώσῃ πάντας, πῶς μὲν οὐκ ἄφρων, πῶς δὲ οὐκ ἄδικος, εἰ ὁμοίως τιμήσει τόν τε σώφρονα καὶ τὸν ἀκόλαστον, καὶ τὸν ἄφρονα καὶ τὸν φρόνιμον; ἀλλ' οὐδὲ τὸ μὴ χρημάτων ἀλλοτρίων ἐπιθυμεῖν

δικαιοσύνης ὅρος, εὐτύχημα δὲ περὶ ἕν τι τῶν παθῶν. ὑποκείσθω γὰρ ὑπερβολῇ πλούσιον εἶναί τινα, δυνάμενον ἄλλοις ἐπαρκεῖν πολλοῖς ἐκ τῶν ἰδίων, δόξης δὲ τοῦτον ἡττώμενον καὶ φιλοτιμίας, καὶ μηδενὸς ἐλευθεριάζοντος ἀνέχεσθαι, ἀλλὰ τοὺς μὲν ὑβρίζειν, τοὺς δὲ τύπτειν, τοῖς δὲ κελεύειν τερπόμενον τῷ πάντας ὑπακούειν αὐτῷ· τί οὖν ἄν τις τοῦτον εἴποι, ὅταν μηδενὸς μὲν τῶν ἀλλοτρίων ἐπιθυμῇ, βίαιος δὲ ἄλλως ᾖ καὶ τύραννος· καὶ πρῶτον μὲν τοῖς οἰκέταις καὶ ταῖς θεραπαινίσι χρῆσθαι κακῶς, τοὺς μὲν ὑπὲρ τὸ μέτρον κολάζοντα ταῖς δὲ συγγινόμενον ἀνέδην, ἔπειτα μηδὲν ἀδικεῖν ἡγεῖσθαι ταῦτα ποιοῦντα;

58 Ἐν ταυτῷ.

Οἱ μὲν ἀπὸ τοῦ περιπάτου μεσότητα πλεονεξίας καὶ μειονεξίας τὴν δικαιοσύνην εἰρήκασιν, οἱ δὲ ἀπὸ τῆς στοᾶς ἕξιν ἰσότητος ἀπονεμητικήν. καὶ ὡς μὲν οὐ μόνον οὐ δίκαιον, ἀλλὰ καὶ ἀδικώτατον τὸ πάντας τῶν αὐτῶν ἀξιοῦν, ἐν τοῖς ἔμπροσθεν εἴρηται· τὸ δὲ μεταξὺ πλεονεξίας καὶ μειονεξίας ἔκβασίς ἐστι πράξεως ἀκατονόμαστος, ἀλλ' οὐκ ἀρετὴ ψυχῆς. πᾶσα δὲ πρᾶξις ἐνέργεια ψυχῆς διὰ σώματος· ἡ δ' ἐνέργεια οὐκ ἀρετή, ἢ πᾶσα [ἂν] ἐνέργεια ἦν ἀρετή. τὴν δὲ δικαιοσύνην πάντες ἁπαξαπλῶς ἀρετὴν ψυχῆς ὁμολογοῦσιν, ἀλλ' οὐ πρᾶξιν οὐδὲ πράξεως ἀποτέλεσμα. τρία γάρ ἐστι περὶ ἕκαστον, ἢ ἕξις ἢ πρᾶξις ἢ ἀποτέλεσμα. ἕξις μὲν καθ' ἣν πλεονεκτικοί τινες ἢ μειονεκτικοὶ ἐσμέν· πρᾶξις δὲ τὸ μειονεκτεῖν καὶ πλεονεκτεῖν· ἀποτέλεσμα δὲ ἡ μειονεξία καὶ ἡ πλεονεξία. ὥσπερ ἕξις μὲν ἡ ζωγραφική, πρᾶξις δὲ ἡ ζωγραφία, ἀποτέλεσμα δὲ ἡ γραφή. καὶ πάλιν· ἕξις μὲν ἡ ἀγαλματοποιική, πρᾶξις δὲ τὸ ἀγαλματοποιεῖν, ἀποτέλεσμα

δὲ τὸ ἄγαλμα. εἰ δέ τις τὴν ἕξιν ὁρίζοιτο γραφὴν καὶ ἄγαλμα, τῷ τοῦ ἀποτελέσματος ὀνόματι καλῶν σφάλλεσθαι ἂν ὁμολογοῖτο καὶ σύγχυσιν ποιεῖν· οὕτως ὁ πλεονεξίαν καὶ μειονεξίαν τὴν ἕξιν ὀνομάζων, τῷ τοῦ ἀποτελέσματος ὀνόματι χρῆται κατὰ τῆς ἐν τῇ ψυχῇ ἕξεως. καὶ ἡ μεσότης τοίνυν τῶν ἀποτελεσμάτων ἀποτέλεσμα ἂν εἴη· τεταγμένων γὰρ ἐν τοῖς ἐκ τῶν πραγμάτων ἀποτελουμένοις πλεονεξίας καὶ μειονεξίας, καὶ ἡ τούτων μεσότης εἴη ἂν ἀποτέλεσμα, οὐχ ἕξις. ἔστω δὲ μὴ ἔκβασις, ἀλλ' ἕξις ψυχῆς, οὔτε πλεονεκτικὴ οὔτε μειονεκτική· ὁ περί τι τοίνυν, ἢ τινὶ μήτε πλεονεκτῶν μήτε μειονεκτῶν, ἔσται δίκαιος. περὶ μὲν δὴ τὰ σωματικὰ ἀγαθὰ οὐκ ἂν φαῖεν εἶναι ταύτην, οὔτε ὡς τούτων ἀκρότητα οὔτε ὡς μεσότητα· οὐ γὰρ δὴ κτητὰ ταῦτα γίγνεται κατὰ τὴν ἡμετέραν πρόθεσίν τε καὶ σπουδήν, ἀλλὰ τὰ πολλὰ τούτων ἐστὶ φύσεως. κάλλος μὲν γάρ ἐστι φύσει καὶ ἰσχὺς σώματος καὶ ὑγίεια· εἰ δὲ γηρώμεθα τὴν μὲν ἰσχὺν ἐπιτείνειν τροφαῖς τε καὶ γυμνασίοις, τὴν δὲ ὑγίειαν διαίτῃ ποιᾷ τηρεῖν καὶ ἐκπίπτουσαν ἀνακαλέσασθαι· ἀλλ' ὅμως ὡς οὐκ ἐφ' ἡμῖν οὔσης ἐξ ἀρχῆς τῆς τούτων κτήσεως, ἀπονεμητέον τῇ τοῦ σώματος φύσει. καίτοι καὶ τούτοις πλεονεκτεῖν λέγονταί τινες, ἰσχύι μὲν εἰ τύχοι Μίλων ὁ Κροτωνιάτης, κάλλει δὲ Λαῒς ἡ Κορινθία, καὶ εἴ τινες τούτοις παραπλήσιοι. τίς οὖν ἂν γένοιτο Μίλωνος ἀδικία; ἢ τίς Λαΐδος πλεονεξία; ἆρα εἰ μὲν Μίλων περιέλθοι τοὺς ἀσθενεστέρους τύπτων τε καὶ τὰ τούτων χρήματα διαρπάζων καὶ τὰς τούτων γυναῖκας; καὶ Λαῒς ὁμοίως, μισθὸν μὲν πλεῖστον εἰσπράττουσα παρὰ τῶν ἐραστῶν, ἐνίων δὲ γυναικῶν καὶ γάμους διαλύουσα, τοῦτ' ἂν εἴη τὸ πλεονεκτεῖν; περὶ ποίαν οὖν ὕλην τὴν αἵρεσίν τις ποιή-

σεται τοῦ μήτε ὑπερβάλλοντος μήτ' αὖ ἐλλείποντος; ἢ τὸ ἀγελαῖον ἐκεῖνο καὶ κοινόν "ἀρκοῦ τοῖς αὑτοῦ, καὶ μὴ διάρπαζε τὰ πλησίον," μηδ' αὖ προΐεσο τῶν σῶν, ὡς κατὰ τοῦτο μειονεκτῶν; τὸ μὲν δὴ μὴ βιάζεσθαι δυναίμην, εἴποι τις ἄν, ἐπ' ἐμοὶ γὰρ τοῦτο· τὸ δὲ μὴ πλεονεκτεῖσθαι πῶς ἂν γένοιτο; πολλοὶ γὰρ οἱ κρείττους. ἀλλ' εἴ τις βούλοιτο δεομένοις ἐπαρκεῖν καὶ ὀρφανὰς συνεκδιδόναι καὶ αἰχμαλώτους λύσασθαι, ταῦτα μὲν ἴσως δυνατόν ἐστι ποιεῖν, ἀλλ' οὐ τῷ γε τιμῶντι τὴν προειρημένην μεσότητα· πλεονεκτεῖσθαί γάρ ἐστι καὶ μειονεκτεῖν τὸν ταῦτα ποιεῖν ἀνεχόμενον. πῶς οὖν αὐτὴν ὁρίζεται ὁ καθ' ἡμᾶς λόγος; ἕξιν εὔλογον ψυχῆς ὀρθότητος ἐπιμελουμένην· ἢ τιμωρίας ἀπαίτησιν παρὰ τῶν προηδικηκότων. οὐχ ὡς τοῦ ἢ συνδεσμοῦντος τὴν ἑτέραν τῶν προτάσεων.

59 Ξενοφῶντος ἐν δ' (2, 11) ἀπομνημονευμάτων.

Καὶ ὁ Σωκράτης ἔφη Οὐ δήπου, ὦ Εὐθύδημε, ταύτης τῆς ἀρετῆς ἐφίεσαι δι' ἣν ἄνθρωποι πολιτικοὶ γίγνονται καὶ οἰκονομικοὶ καὶ ἄρχειν ἱκανοὶ καὶ ὠφέλιμοι τοῖς τε ἄλλοις ἀνθρώποις καὶ ἑαυτοῖς; Καὶ ὁ Εὐθύδημος, Σφόδρα γ', ἔφη, ὦ Σώκρατες, ταύτης τῆς ἀρετῆς δέομαι. Νὴ Δί', ἔφη ὁ Σωκράτης, τῆς καλλίστης ἀρετῆς καὶ μεγίστης ἐφίεσαι τέχνης· ἔστι γὰρ τῶν βασιλέων αὕτη καὶ καλεῖται βασιλική. Ἀτάρ, ἔφη, κατανενόηκας, εἰ οἷόν τέ ἐστι μὴ ὄντα δίκαιον ἀγαθὸν ταῦτα γενέσθαι; Καὶ μάλα, ἔφη, οὐχ οἷόν τέ γε ἄνευ δικαιοσύνης ἀγαθὸν πολίτην γενέσθαι. Τί οὖν, ἔφη, σὺ ἤδη τοῦτο κατείργασαι; Οἶμαί γε, ἔφη, ὦ Σώκρατες, οὐδενὸς ἂν ἧττον φανῆναι δίκαιος. Ἆρ' οὖν, ἔφη, τῶν δικαίων ἔστιν

ἔργα, ὥσπερ τῶν τεκτόνων; Ἔστι μέντοι, ἔφη. Ἆρ' οὖν, ἔφη, ὥσπερ οἱ τέκτονες ἔχουσι τὰ ἑαυτῶν ἔργα ἐπιδεῖξαι, οὕτως οἱ δίκαιοι τὰ ἑαυτῶν ἔχοιεν ἂν ἐξηγήσασθαι; Μὴ οὖν, ἔφη ὁ Εὐθύδημος, ἐγὼ οὐ δύναμαι τὰ τῆς δικαιοσύνης ἔργα ἐξηγήσασθαι; καὶ νὴ Δί' ἔγωγε τὰ τῆς ἀδικίας· ἐπεὶ οὐκ ὀλίγα ἐστὶ καθ' ἑκάστην ἡμέραν ὁρᾶν τε τοιαῦτα καὶ ἀκούειν. Βούλει οὖν, ἔφη ὁ Σωκράτης, γράψομεν ἐνταυθοῖ μὲν δέλτα, ἐνταυθοῖ δὲ ἄλφα· εἶτα ὅ τι μὲν ἂν δοκῇ ἡμῖν τῆς δικαιοσύνης ἔργον εἶναι, πρὸς τὸ δέλτα τιθῶμεν· ὅ τι δ' ἂν τῆς ἀδικίας, πρὸς τὸ ἄλφα. Εἴ τι σοι δοκεῖ, ἔφη, προσδεῖν τούτων, ποίει ταῦτα. Καὶ ὁ Σωκράτης γράψας, ὥσπερ εἶπεν, Οὐκ οὖν, ἔφη, ἔστιν ἐν ἀνθρώποις ψεύδεσθαι; Ἔστι μέντοι, ἔφη. Ποτέρωσε οὖν, ἔφη, θῶμεν τοῦτο; Δῆλον ὅτι, ἔφη, πρὸς τὴν ἀδικίαν. Οὐκ οὖν, ἔφη, καὶ ἐξαπατᾶν ἐστι; Καὶ μάλα, ἔφη. Τοῦτο οὖν ποτέρωσε θῶ; Καὶ τοῦτο δῆλον ὅτι, ἔφη, πρὸς τὴν ἀδικίαν. Τί δὲ τὸ κλέπτειν; Καὶ τοῦτο, ἔφη. Τί δ' ἀνδραποδίζεσθαι; Καὶ τοῦτο. Πρὸς δὲ τῇ δικαιοσύνῃ οὐδὲν τούτων ἡμῖν κείσεται, ὦ Εὐθύδημε; Δεινὸν δ' ἂν εἴη, ἔφη. Τί δέ, ἐάν τις στρατηγὸς αἱρεθεὶς ἄδικόν τε καὶ αἰσχρὰν πόλιν ἐξανδραποδίσηται, φήσομεν τοῦτον ἀδικεῖν; Οὐ δῆτα, ἔφη. Δίκαια δὲ ποιεῖν οὐ φήσομεν; Καὶ μάλα. Τί δέ, ἂν ἐξαπατᾷ πολεμῶν αὐτοῖς; Δίκαιον, ἔφη, καὶ τοῦτο. Ἐὰν δὲ κλέπτῃ τε καὶ ἁρπάζῃ τὰ τούτων, οὐ δίκαια ποιήσει; Καὶ μάλα, ἔφη. Ἀλλ' ἐγώ σε τὸ πρῶτον ὑπέλαβον πρὸς τοὺς φίλους μόνους ταῦτα ἐρωτᾶν. Οὐκ οὖν, ἔφη, ὅσα πρὸς τῇ ἀδικίᾳ ἐθήκαμεν, ταῦτα καὶ πρὸς τῇ δικαιοσύνῃ θετέον ἂν εἴη; ἔφη, Ἔοικε. Βούλει οὖν, ἔφη, ταῦτα θέντες οὕτω διορισόμεθα πάλιν, πρὸς μὲν τοὺς πολεμίους

δίκαιον εἶναι ταῦτα ποιεῖν, πρὸς δὲ τοὺς φίλους ἄδικον· ἀλλὰ δεῖν πρός γε τούτους ὡς ἁπλούστατον εἶναι; Πάνυ μὲν οὖν, ἔφη ὁ Εὐθύδημος. Τί οὖν, ἔφη ὁ Σωκράτης, ἐάν τις στρατηγὸς ὁρῶν ἀθύμως ἔχον τὸ στράτευμα, ψευσάμενος φήσῃ συμμάχους προσιέναι καὶ τῷ ψεύδει τούτῳ καταπαύσῃ τῆς ἀθυμίας τοὺς στρατιώτας, ποτέρωθι τὴν ἀπάτην ταύτην θήσομεν; Δοκεῖ μοι, ἔφη, πρὸς τὴν δικαιοσύνην. Ἐὰν δέ τις υἱὸν αὐτοῦ δεόμενον φαρμακείας καὶ μὴ προσιέμενον φάρμακον ἐξαπατήσας ὡς σῖτον τὸ φάρμακον δῷ καὶ τῷ ψεύδει χρησάμενος οὕτως ὑγιῆ ποιήσῃ, ταύτην αὖ τὴν ἀπάτην ποῖ θετέον; Δοκεῖ μοι, ἔφη, καὶ ταύτην εἰς τὸ αὐτό. Τί δέ, ἐάν τις ἐν ἀθυμίᾳ ὄντος φίλου, δείσας μὴ διαχρήσηται ἑαυτόν, κλέψῃ ἢ ἁρπάσῃ ξίφος ἢ ἄλλο τι τοιοῦτο, τοῦτο αὖ ποτέρωσε θετέον; Καὶ τοῦτο νὴ Δία πρὸς τὴν δικαιοσύνην. Λέγεις, ἔφη, σὺ οὐδὲ πρὸς τοὺς φίλους ἅπαντα δεῖν ἁπλοΐζεσθαι; Μὰ Δί᾽ οὐ δῆτα, ἔφη· ἀλλὰ μετατίθεμαι τὰ εἰρημένα, εἴπερ ἔξεστι. Δεῖ γέ τοι, ἔφη ὁ Σωκράτης, ἐξεῖναι πολὺ μᾶλλον, ἢ μὴ ὀρθῶς τιθέναι. Τῶν δὲ δὴ τοὺς φίλους ἐξαπατώντων ἐπὶ βλάβῃ, ἵνα μηδὲ τοῦτο παραλίπωμεν ἄσκεπτον, πότερος ἀδικώτερός ἐστιν ὁ ἑκὼν ἢ ὁ ἄκων; Ἀλλ᾽, ὦ Σώκρατες, οὐκέτι μὲν ἔγωγε πιστεύω οἷς ἀποκρίνομαι· καὶ γὰρ τὰ πρόσθεν πάντα νῦν ἄλλως ἔχειν δοκεῖ μοι ἢ ὡς ἐγὼ τότε ᾤμην. Ὅμως δὲ εἰρήσθω μοι ἀδικώτερον εἶναι τὸν ἑκόντα ψευδόμενον τοῦ ἄκοντος. Δοκεῖ δέ σοι μάθησις καὶ ἐπιστήμη τοῦ δικαίου εἶναι, ὥσπερ τῶν γραμμάτων; Ἔμοιγε. Πότερον δὲ γραμματικώτερον κρίνεις ὃς ἂν ἑκὼν μὴ ὀρθῶς γράφῃ καὶ ἀναγινώσκῃ, ἢ ὃς ἂν ἄκων; Ὃς ἂν ἑκών, ἔγωγε. Δύναιτο γάρ, ὁπότε βούλοιτο, καὶ ὀρθῶς αὐτὰ ποιεῖν.

Οὐκ οὖν ὁ μὲν ἑκὼν μὴ ὀρθῶς γράφων γραμματικὸς ἂν εἴη· ὁ δὲ ἄκων ἀγράμματος; Πῶς γὰρ οὔ; Τὰ δίκαια δὲ πότερον ὁ ἑκὼν ψευδόμενος καὶ ἐξαπατῶν οἶδεν, ἢ ὁ ἄκων; Δηλονότι ὁ ἑκών. Οὐκ οὖν γραμματικώτερον μὲν τὸν ἐπιστάμενον γράμματα τοῦ μὴ ἐπισταμένου φὴς εἶναι; Ναί. Δικαιότερον δὲ τὸν ἐπιστάμενον τὰ δίκαια τοῦ μὴ ἐπισταμένου; Φαίνεται. Δοκῶ δέ μοι καὶ ταῦτα οὐκ οἶδ' ὅπως λέγειν. Τί δὲ δή, ὃς ἂν βουλόμενος τἀληθῆ λέγειν μηδέποτε ταὐτὰ περὶ τῶν αὐτῶν λέγῃ, ἀλλ' ὁδόν τε φράζων τὴν αὐτήν, τοτὲ μὲν πρὸς ἕω, τοτὲ δὲ πρὸς ἑσπέραν φράζῃ; καὶ λογισμὸν ἀποφαινόμενος τὸν αὐτόν, τοτὲ μὲν πλείω, τοτὲ δὲ ἐλάττω ἀποφαίνεται, τί σοι δοκεῖ ὁ τοιοῦτος; Δῆλος νὴ Δί' εἶναι, ὅτι ἃ ᾤετο εἰδέναι οὐκ οἶδεν. Οἶσθα δε τινας ἀνδραποδώδεις καλουμένους; Ἔγωγε. Πότερον δι' ἀμαθίαν ἢ διὰ σοφίαν; Δῆλον ὅτι δι' ἀμαθίαν. Ἆρ' οὖν διὰ τὴν τοῦ χαλκεύειν ἀμαθίαν τοῦ ὀνόματος τούτου τυγχάνουσιν; Οὐ δῆτα. Ἀλλ' ἆρα διὰ τὴν τοῦ τεκταίνεσθαι; Οὐδὲ διὰ ταύτην. Ἀλλὰ τὴν τοῦ σκυτεύειν; Οὐδὲ δι' ἓν τούτων, ἔφη, ἀλλὰ καὶ τοὐναντίον· οἱ γὰρ πλεῖστοι τῶν τὰ τοιαῦτα ἐπισταμένων ἀνδραποδώδεις εἰσίν. Ἆρ' οὖν τῶν τὰ καλὰ καὶ ἀγαθὰ καὶ τὰ δίκαια μὴ εἰδότων τὸ ὄνομα τοῦτό ἐστιν; Ἔμοιγε δοκεῖ, ἔφη. Οὐκ οὖν δεῖ παντὶ τρόπῳ διατειναμένους φεύγειν, ὅπως μὴ ἀνδράποδα ὦμεν;

60 Ἐν ταυτῷ (4, 5).

Οἶδα δέ ποτ' αὐτὸν καὶ πρὸς Ἱππίαν τὸν Ἠλεῖον περὶ τοῦ δικαίου τοιάδε διαλεχθέντα. διὰ χρόνου γὰρ ἀφικόμενος ὁ Ἱππίας Ἀθήναζε, παρεγένετο τῷ Σωκράτει λέγοντι πρός τινας, ὡς θαυμαστὸν εἴη τὸ εἰ

μέν τις μέλλοιτο σκυτέα διδάξασθαί τινα, ἢ τέκτονα, ἢ χαλκέα, ἢ ἱππέα, μὴ ἀπορεῖν ὅπη ἂν πέμψας τούτου τύχοι· (φασὶ δέ τινες καὶ ἵππον καὶ βοῦν τῷ βουλομένῳ δικαίους ποιήσασθαι, πάντα μεστὰ εἶναι τῶν διδαξόντων·) ἐὰν δέ τις βούληται ἢ αὐτὸς μαθεῖν τὸ δίκαιον, ἢ υἱὸν ἢ οἰκέτην διδάξασθαι, μὴ εἰδέναι ποίαν ἐλθὼν τύχοι τούτου. καὶ ὁ μὲν Ἱππίας ἀκούσας ταῦτα, ὥσπερ ἐπισκώπτων αὐτόν, Ἔτι γὰρ σύ, ἔφη, ὦ Σώκρατες, ἐκεῖνα τὰ αὐτὰ λέγεις ἃ ἐγὼ πάλαι ποτέ σου ἤκουσα; Καὶ ὁ Σωκράτης, Ὃ δέ γε τούτου δεινότερον, ἔφη, ὦ Ἱππία, οὐ μόνον ἀεὶ ταυτὰ λέγω, ἀλλὰ καὶ περὶ τῶν αὐτῶν· σὺ δ' ἴσως διὰ τὸ πολυμαθὴς εἶναι, περὶ τῶν αὐτῶν οὐδέποτε τὰ αὐτὰ λέγεις. Ἀμέλει, ἔφη, πειρῶμαι καινόν τι λέγειν ἀεί. Πότερον, ἔφη, καὶ περὶ ὧν ἐπίστασαι, οἷον περὶ γραμμάτων ἐάν τις ἔρηταί σε, πόσα καὶ ποῖα Σωκράτους ἐστίν, ἄλλα μὲν πρὶν ἄλλα δὲ νῦν πειρᾷ λέγειν; ἢ περὶ ἀριθμῶν τοῖς ἐρωτῶσιν, εἰ τὰ δὶς πέντε δέκα γίνονται, οὐ τὰ αὐτὰ νῦν ἃ καὶ πρότερον ἀποκρίνῃ; Περὶ μὲν τούτων, ἔφη, ὦ Σώκρατες, ὥσπερ σὺ καὶ ἐγὼ ἀεὶ τὰ αὐτὰ λέγω· περὶ μέντοι τοῦ δικαίου πάνυ οἶμαι νῦν ἔχειν εἰπεῖν, πρὸς ἃ οὔτε σὺ οὔτ' ἂν ἄλλος οὐδεὶς δύναιτο εἰπεῖν. Νὴ τὴν Ἥραν, ἔφη, μέγα λέγεις ἀγαθὸν εὑρηκέναι, εἰ παύσονται μὲν οἱ δικασταὶ δίχα ψηφιζόμενοι· παύσονται δὲ οἱ πολῖται περὶ τῶν δικαίων ἀντιλέγοντές τε καὶ ἀντιδικοῦντες καὶ στασιάζοντες· παύσονται δ' αἱ πόλεις διαφερόμεναι περὶ τῶν δικαίων καὶ πολεμοῦσαι· καὶ ἐγὼ μὲν οὐκ οἶδ' ὅπως ἀπολειφθείην ἄν σου, πρὸ τοῦ ἀκοῦσαι τηλικοῦτον ἀγαθὸν εὑρηκότος. Ἀλλὰ μὰ Δί', ἔφη, οὐκ ἀκούσῃ πρίν γ' ἂν αὐτὸς ἀποφήνῃ ὅ τι νομίζεις τὸ δίκαιον εἶναι· ἀρκεῖ γὰρ ὅτι τῶν ἄλλων καταγελᾷς,

ἐρωτῶν μὲν καὶ ἐλέγχων πάντας, αὐτὸς δ' οὐδενὶ ἐθέλων ὑπέχειν λόγον οὐδὲ γνώμην ἀποφαίνεσθαι περὶ οὐδενός. Τί δέ, ὦ Ἱππία, ἔφη, οὐκ ᾔσθησαι, ὅτι ἐγὼ ἃ δοκεῖ μοι δίκαια εἶναι οὐδὲν παύομαι ἀποδεικνύμενος; Καὶ ποῖος δή σοι, ἔφη, οὗτος ὁ λόγος ἐστίν; Εἰ δὲ μὴ λόγῳ, ἔφη, ἀλλ' ἔργῳ ἐπιδείκνυμι· ἢ οὐ δοκεῖ σοι ἀξιοτεκμαρτότερον τοῦ λόγου τὸ ἔργον εἶναι; Πολύ γε νὴ Δί', ἔφη. Δίκαια μὲν γὰρ λέγοντες πολλοὶ ἄδικα ποιοῦσι· δίκαια δὲ πραττόντων οὐδ' ἂν εἷς ἄδικος εἴη. Ἤισθησαι οὖν πώποτέ μου ἢ ψευδομαρτυροῦντος, ἢ συκοφαντοῦντος, ἢ πόλιν ἢ φίλους εἰς στάσιν ἐμβαλόντος, ἢ ἄλλο τι ἄδικον πράττοντος; Οὐκ ἔγωγ', ἔφη. Τὸ δὲ τῶν ἀδίκων ἀπέχεσθαι οὐ δίκαιον ἡγῇ; Δῆλος εἶ, ἔφη, ὦ Σώκρατες, καὶ νῦν διαφεύγειν ἐγχειρῶν τὸ ἀποδείκνυσθαι γνώμην, ὅ τι νομίζεις τὸ δίκαιον· οὐ γὰρ ἃ πράττουσιν οἱ δίκαιοι, ἀλλ' ἃ μὴ πράττουσι, ταῦτα λέγεις. Ἀλλ' ᾤμην ἔγωγε, ἔφη ὁ Σωκράτης, τὸ μὴ θέλειν ἀδικεῖν ἱκανὸν δικαιοσύνης ἐπίδειγμα εἶναι· εἰ δέ σοι μὴ δοκεῖ, σκέψαι, ἐὰν τόδε σοι μᾶλλον ἀρέσκῃ· φημὶ γὰρ ἐγὼ τὸ νόμιμον δίκαιον εἶναι. Ἆρα τὸ αὐτὸ λέγεις, ὦ Σώκρατες, νόμιμόν τε καὶ δίκαιον εἶναι; Ἔγωγε, ἔφη. Οὐκ ἄρα αἰσθάνομαί σου, ὁποῖον νόμιμον ἢ ποῖον δίκαιον λέγεις. Νόμους δὲ πόλεως, ἔφη, γιγνώσκεις; Ἔγωγε, ἔφη. Καὶ τίνας τούτους νομίζεις; Ἃ οἱ πολῖται, ἔφη, συνθέμενοι ἅ τε δεῖ ποιεῖν καὶ ὧν ἀπέχεσθαι, ἐγράψαντο. Οὐκ οὖν, ἔφη, νόμιμος μὲν ἂν εἴη ὁ κατὰ ταῦτα πολιτευόμενος· ἄνομος δὲ ὁ ταῦτα παραβαίνων; Πάνυ μὲν οὖν, ἔφη. Οὐκ οὖν καὶ δίκαια μὲν ἂν πράττοι ὁ τούτοις πειθόμενος, ἄδικα δὲ ὁ τούτοις ἀπειθῶν; Πάνυ μὲν οὖν. Οὐκ οὖν ὁ μὲν τὰ δίκαια πράττων δίκαιος· ὁ δὲ τὰ ἄδικα ἄδι-

κος; Πῶς γὰρ οὔ; Ὁ μὲν ἄρα νόμιμος δίκαιός ἐστιν, ὁ δὲ ἄνομος ἄδικος; Καὶ ὁ Ἱππίας, Νόμους δ', ἔφη, ὦ Σώκρατες, πῶς ἄν τις ἡγήσαιτο σπουδαῖον πρᾶγμ' εἶναι ἢ τὸ πείθεσθαι αὐτοῖς, οὕς γε πολλάκις αὐτοὶ οἱ θέμενοι ἀποδοκιμάσαντες μετατίθενται; Καὶ γὰρ πόλεμον, ἔφη ὁ Σωκράτης, πολλάκις ἀράμεναι πόλεις πάλιν εἰρήνην ποιοῦνται. Καὶ μάλα, ἔφη. Διάφορον οὖν τι οἴει ποιεῖν, ἔφη, τοὺς τοῖς νόμοις πειθομένους φαυλίζων, ὅτι καταλυθεῖεν ἂν οἱ νόμοι, ἢ εἰ τοὺς ἐν τοῖς πολέμοις εὐτακτοῦντας ψέγοις, ὅτι γένοιτ' ἂν εἰρήνη; ἢ καὶ τοὺς ἐν τοῖς πολέμοις ταῖς πατρίσι προθύμως βοηθοῦντας μέμφῃ; Μὰ Δί' οὐκ ἐγώ, ἔφη. Λυκοῦργον δὲ τὸν Λακεδαιμόνιον, ἔφη ὁ Σωκράτης, καταμεμάθηκας, ὅτι οὐδὲν ἂν διάφορον τῶν ἄλλων πόλεων τὴν Σπάρτην ἐποίησεν, εἰ μὴ τὸ πείθεσθαι τοῖς νόμοις μάλιστα ἐνειργάσατο αὐτῇ; τῶν δὲ ἀρχόντων ἐν ταῖς πόλεσιν, οὐκ οἶσθα, ὅτι οἵ τινες ἂν τοῖς πολίταις αἰτιώτατοι ὦσι τοῦ τοῖς νόμοις πείθεσθαι, οὗτοι ἄριστοί εἰσι; καὶ πόλις, ἐν ᾗ μάλιστα οἱ πολῖται τοῖς νόμοις πείθονται, ἐν εἰρήνῃ τε ἄριστα διάγει καὶ ἐν πολέμῳ ἀνυπόστατός ἐστιν; Ἀλλὰ μὴν καὶ ὁμόνοιά γε μέγιστόν τε ἀγαθὸν δοκεῖ ταῖς πόλεσιν εἶναι, καὶ πλειστάκις ἐν αὐταῖς αἱ γερουσίαι καὶ οἱ ἄριστοι ἄνδρες παρακελεύονται τοῖς πολίταις ὁμονοεῖν, καὶ πανταχοῦ ἐν τῇ Ἑλλάδι νόμος κεῖται τοὺς πολίτας ὀμνύναι ὁμονοήσειν, καὶ πανταχοῦ ὀμνύουσι τὸν ὅρκον τοῦτον. Οἶμαι δ' ἐγὼ ταῦτα γίγνεσθαι οὐχ ὅπως τοὺς αὐτοὺς χοροὺς κρίνωσιν οἱ πολῖται, οὐδ' ὅπως τοὺς αὐτοὺς αὐλητὰς ἐπαινῶσιν, οὐδ' ὅπως τοὺς αὐτοὺς ποιητὰς αἱρῶνται, οὐδ' ἵνα τοῖς αὐτοῖς ἥδωνται, ἀλλ' ἵνα τοῖς νόμοις πείθωνται· τούτοις γὰρ τῶν πολιτῶν ἐμμενόντων αἱ πόλεις ἰσχυρόταταί

τε καὶ εὐδαιμονέσταται γίγνονται, ἄνευ δ' ὁμονοίας οὔτ' ἂν πόλις εὖ πολιτευθείη, οὔτ' οἶκος καλῶς οἰκηθείη. Ἰδίᾳ δὲ πῶς μὲν ἄν τις ἧττον ὑπὸ πόλεως ζημιοῖτο, πῶς δ' ἂν μᾶλλον τιμῷτο, ἢ εἰ τοῖς νόμοις πείθοιτο; πῶς δ' ἂν ἧττον ἐν τοῖς δικαστηρίοις ἡττῷτο, ἢ πῶς ἂν μᾶλλον νικῴη; Τίνι δ' ἄν τις μᾶλλον πιστεύσειεν παρακαταθήκας ἢ χρήματα ἢ θυγατέρας ἢ υἱούς; τίνα δ' ἂν ἡ πόλις ὅλη ἀξιοπιστότερον ἡγήσαιτο τοῦ νομίμου; παρὰ τίνος δ' ἂν μᾶλλον τῶν δικαίων τύχοιεν ἢ γονεῖς ἢ οἰκεῖοι, ἢ οἰκέται ἢ φίλοι, ἢ πολῖται ἢ ξένοι; τίνι δ' ἂν μᾶλλον πολέμιοι πιστεύσειαν ἢ ἀνοχὰς ἢ σπονδὰς ἢ συνθήκας περὶ εἰρήνης; τίνι δ' ἂν μᾶλλον ἢ τῷ νομίμῳ σύμμαχοι ἐθέλοιεν γίγνεσθαι; τίνι δ' ἂν μᾶλλον οἱ σύμμαχοι πιστεύσειαν ἡγεμονίαν ἢ φρουραρχίαν ἢ πόλεις; τίνα δ' ἄν τις εὐεργετήσας ὑπολάβοι κομιεῖσθαι χάριν μᾶλλον ἢ τὸν νόμιμον; ἢ τίνα μᾶλλον ἄν τις εὐεργετήσειεν ἢ παρ' οὗ χάριν ἀπολήψεσθαι νομίζει; τῷ δ' ἄν τις βούλοιτο μᾶλλον φίλος εἶναι ἢ τῷ τοιούτῳ, ἢ τῷ ἧττον ἐχθρός; τῷ δ' ἄν τις ἧττον πολεμήσειεν ἢ ᾧ μάλιστα μὲν εἶναι φίλος βούλοιτο, ἥκιστα δ' ἐχθρός; καὶ ᾧ πλεῖστοι μὲν φίλοι καὶ σύμμαχοι βούλοιντο εἶναι, ἐλάχιστοι δ' ἐχθροὶ καὶ πολέμιοι; Ἐγὼ μὲν οὖν, ὦ Ἱππία, τὸ αὐτὸ ἐπιδείκνυμαι νόμιμόν τε καὶ δίκαιον εἶναι· σὺ δ', εἰ τἀναντία ἃ γιγνώσκεις, δίδασκε. Καὶ ὁ Ἱππίας, Ἀλλὰ μὰ τὸν Δί', ἔφη, ὦ Σώκρατες, οὔ μοι δοκῶ τἀναντία γιγνώσκειν οἷς εἴρηκας περὶ τοῦ δικαίου. Ἀγράφους δέ τινας οἶσθα, ἔφη, ὦ Ἱππία, νόμους; Τούς γε ἐν πάσῃ χώρᾳ, ἔφη, κατὰ ταυτὰ νομιζομένους. Ἔχοις ἂν οὖν εἰπεῖν, ἔφη, ὅτι οἱ ἄνθρωποι αὐτοὺς ἔθεντο; Καὶ πῶς ἄν, ἔφη, οἵ γε οὔτε συνελθεῖν ἅπαντες δυνηθεῖεν οὔτε ὁμόφωνοί

εἰσι; Τίνας οὖν, ἔφη, νομίζεις τοὺς νόμους τεθεικέναι τούτους; Ἐγὼ μέν, ἔφη, θεοὺς οἶμαι τοὺς νόμους τούτους τοῖς ἀνθρώποις θεῖναι· καὶ γὰρ παρὰ πᾶσιν ἀνθρώποις πρῶτον νομίζεται θεοὺς εὐσεβεῖν. Οὐκ οὖν καὶ γονέας τιμᾶν πανταχοῦ νομίζεται; Καὶ τοῦτο, ἔφη. Οὐκ οὖν καὶ μήτε γονεῖς παισὶ μίγνυσθαι μήτε παῖδας γονεῦσιν; Οὐκ ἔτι μοι δοκεῖ, ἔφη, ὦ Σώκρατες, οὗτος θεοῦ νόμος εἶναι. Τί δή; ἔφη. Ὅτι, ἔφη, αἰσθάνομαί τινας παραβαίνοντας αὐτόν. Καὶ γὰρ ἄλλα πολλά, ἔφη, παρανομοῦσιν. Ἀλλὰ δίκην γέ τοι διδόασιν οἱ παραβαίνοντες τοὺς ὑπὸ τῶν θεῶν κειμένους νόμους, ἣν οὐδενὶ τρόπῳ δυνατὸν ἀνθρώπῳ διαφυγεῖν· ὥσπερ τοὺς ὑπ' ἀνθρώπων κειμένους νόμους ἔνιοι παραβαίνοντες, διαφεύγουσι τὸ δίκην δοῦναι, οἱ μὲν λανθάνοντες, οἱ δὲ βιαζόμενοι. Καὶ ποίαν, ἔφη, δίκην, ὦ Σώκρατες, οὐ δύνανται διαφεύγειν γονεῖς τε παισὶ καὶ παῖδες γονεῦσι μιγνύμενοι; Τὴν μεγίστην νὴ Δία, ἔφη. Τί γὰρ ἂν μεῖζον πάθοιεν ἄνθρωποι τεκνοποιούμενοι τοῦ κακῶς τεκνοποιεῖσθαι; Πῶς οὖν, ἔφη, κακῶς οὗτοι τεκνοποιοῦνται, ὅτε οὐδὲν κωλύει ἀγαθοὺς αὐτοὺς ὄντας ἐξ ἀγαθῶν τεκνοποιεῖσθαι; Ὅτι νὴ Δί', ἔφη, οὐ μόνον ἀγαθοὺς δεῖ τοὺς ἐξ ἀλλήλων παιδοποιουμένους εἶναι, ἀλλὰ καὶ ἀκμάζοντας τοῖς σώμασιν. Ἦ δοκεῖ σοι ὅμοια τὰ σπέρματα εἶναι τὰ τῶν ἀκμαζόντων ἢ τῶν παρηκμακότων; Ἀλλὰ μὰ Δί', ἔφη, οὐκ εἰκὸς ὅμοια εἶναι. Πότερα οὖν, ἔφη, βελτίω; Δῆλον ὅτι τὰ τῶν ἀκμαζόντων. Τῶν μὴ ἀκμαζόντων ἆρα οὐ σπουδαῖα; Οὐκ εἰκὸς μὰ Δί', ἔφη. Οὐκ οὖν οὕτω γε οὐ δεῖ παιδοποιεῖσθαι; Οὐ γὰρ οὖν, ἔφη. Οὐκ οὖν οἵ γε οὕτω παιδοποιούμενοι ὡς οὐ δεῖ παιδοποιοῦνται; Ἔμοιγε δοκεῖ, ἔφη. Τίνες οὖν, ἔφη, ἄλ-

λοι κακῶς ἂν παιδοποιοῖντο, εἴγε μὴ οὗτοι; Ὁμογνωμονῶ σοι, ἔφη, καὶ τοῦτο. Τί δέ, τοὺς εὖ ποιοῦντας ἀντευεργετεῖν, οὐ πανταχοῦ νόμιμόν ἐστι; Νόμιμον, ἔφη. Παραβαίνεται δὲ καὶ τοῦτο. Οὐκ οὖν καὶ οἱ τοῦτο παραβαίνοντες δίκην διδόασι, φίλων μὲν ἀγαθῶν ἔρημοι γιγνόμενοι, τοὺς δὲ μισοῦντας ἑαυτοὺς ἀναγκαζόμενοι διώκειν; ἢ οὐχ οἱ μὲν εὖ ποιοῦντες τοὺς χρωμένους ἑαυτοῖς ἀγαθοὶ φίλοι εἰσίν, οἱ δὲ μὴ ἀντευεργετοῦντες τοὺς τοιούτους διὰ μὲν τὴν ἀχαριστίαν μισοῦνται ὑπ' αὐτῶν, διὰ δὲ τὸ μάλιστα λυσιτελεῖν τοῖς τοιούτοις χρῆσθαι, τούτους μάλιστα διώκουσι; Νὴ τὸν Δί', ὦ Σώκρατες, ἔφη, θεοῖς πάντα ταῦτ' ἔοικε· τὸ γὰρ τοὺς νόμους αὐτοῖς τοῖς παραβαίνουσι τὰς τιμωρίας ἔχειν, βελτίονος ἢ κατὰ ἄνθρωπον νομοθέτου δοκεῖ μοι εἶναι. Πότερον οὖν, ὦ Ἱππία, τοὺς θεοὺς ἡγῇ τὰ δίκαια νομοθετεῖν ἢ ἄλλα τῶν δικαίων; Οὐκ ἄλλα μὰ Δί', ἔφη· σχολῇ γὰρ ἂν ἄλλος γέ τις τὰ δίκαια νομοθετήσειεν, εἰ μὴ θεός. Καὶ τοῖς θεοῖς ἄρα, ὦ Ἱππία, τὸ αὐτὸ δίκαιόν τε καὶ νόμιμον εἶναι ἀρέσκει.

61 Πλάτωνος πολιτειῶν α' (348 e).

Τοῦτο, ἦν δ' ἐγώ, ἤδη στερεώτερον, ὦ ἑταῖρε, καὶ οὐκ ἔτι ῥᾴδιον ἔχειν ὅ τι τὶς εἴπῃ. εἰ γὰρ λυσιτελεῖν μὲν τὴν ἀδικίαν ἐτίθεσο, κακίαν μέντοι ἢ αἰσχρὸν αὐτὸ ὡμολόγεις εἶναι, ὥσπερ ἄλλοι τινές, εἴχομεν ἄν τι λέγειν κατὰ τὰ νομιζόμενα λέγοντες· νῦν δὲ δῆλος εἶ ὅτι φήσεις αὐτὸ καὶ καλὸν καὶ αἰσχρὸν εἶναι καὶ τἄλλα αὐτῷ πάντα προσθήσεις, ἃ ἡμεῖς τῷ δικαίῳ προσετίθεμεν, ἐπειδή γε καὶ ἐν ἀρετῇ αὐτὸ καὶ σοφίᾳ ἐτόλμησας θεῖναι. Ἀληθέστατα, ἔφη, μαντεύῃ. — Ἀλλὰ τόδε μοι πειρῶ ἀποκρίνασθαι· ὁ

δίκαιος τοῦ δικαίου δοκεῖ τί σοι ἂν ἐθέλειν πλεῖον ἔχειν; Οὐδαμῶς, ἔφη· οὐ γὰρ ἂν ἦν ἀστεῖος, ὥσπερ νῦν, καὶ εὐήθης. Τί δαί, τῆς δικαίας πράξεως; Οὐδὲ τῆς δικαίας, ἔφη. Τοῦ δὲ ἀδίκου πότερον ἀξιοῖ ἂν πλέον ἔχειν καὶ ἡγοῖτο δίκαιον εἶναι, ἢ οὐκ ἂν ἡγοῖτο δίκαιον; Ἡγοῖτ' ἄν, ἦ δ' ὅς, καὶ ἀξιοῖ, ἀλλ' οὐκ ἂν δύναιτο. Ἀλλ' οὐ τοῦτο, ἦν δ' ἐγώ, ἐρωτῶ· ἀλλὰ εἰ τοῦ μὲν δικαίου μὴ ἀξιοῖ πλέον ἔχειν μηδὲ βούλεται ὁ δίκαιος, τοῦ δὲ ἀδίκου; Ἀλλ' οὕτως, ἔφη, ἔχει. Τί δαὶ δὴ ὁ ἄδικος, ἆρα ἀξιοῖ τοῦ δικαίου πλεονεκτεῖν καὶ τῆς δικαίας πράξεως; Πῶς γὰρ οὔ, ἔφη, ὅς γε πάντων πλέον ἔχειν ἀξιοῖ; Οὐκ οὖν καὶ ἀδίκου γε ἀνθρώπου τε καὶ πράξεως ὁ ἄδικος πλεονεκτήσει τε καὶ ἁμιλλήσεται, ὡς ἁπάντων πλεῖστον αὐτὸς λάβῃ; Ἔστι ταῦτα. Ὧδε δὴ λέγομεν, ἔφη, ὁ δίκαιος τοῦ μὲν ὁμοίου οὐ πλεονεκτεῖ, τοῦ δὲ ἀνομοίου· ὁ δὲ ἄδικος τοῦ τε ὁμοίου καὶ τοῦ ἀνομοίου. Ἄριστα, ἔφη, εἴρηκας. Ἔστι δέ γε, ἔφην, φρόνιμός τε καὶ ἀγαθὸς ὁ ἄδικος, ὁ δὲ δίκαιος οὐδέτερα; Καὶ τοῦτ', ἔφη, εὖ. Οὐκ οὖν, ἦν δ' ἐγώ, καὶ ἔοικε τῷ φρονίμῳ καὶ ἀγαθῷ ὁ ἄδικος, ὁ δὲ δίκαιος οὐκ ἔοικε; Πῶς γὰρ οὐ μέλλει, ἔφη, τοιοῦτος ὢν καὶ ἐοικέναι τοῖς τοιούτοις, ὁ δὲ μὴ ἐοικέναι; Καλῶς. Τοιοῦτος ἄρα ἐστὶν ἑκάτερος αὐτῶν οἷσπερ ἔοικεν. Ἀλλὰ τί μέλλει; ἔφη. Εἶεν, ὦ Θρασύμαχε· μουσικὸν δέ τινα λέγεις, ἕτερον δὲ ἄμουσον; Ἔγωγε. Πότερον φρόνιμον καὶ πότερον ἄφρονα; Τὸν μὲν μουσικὸν δήπου φρόνιμον, τὸν δὲ ἄμουσον ἄφρονα. Οὐκ οὖν ἅπερ φρόνιμον, ἀγαθόν· ἃ δὲ ἄφρονα, κακόν; Ναί. Τί δαί, ἰατρικὸν οὐχ οὕτως; Οὕτως. Ἆρ' οὖν τίς σοι, ὦ ἄριστε, δοκεῖ μουσικὸς ἁρμοττόμενος λύραν ἐθέλειν μουσικοῦ ἀνδρὸς ἐν τῇ ἐπιτάσει καὶ ἀνέσει τῶν χορ-

δῶν πλεονεκτεῖν ἢ ἀξιοῦν πλεῖον ἔχειν; Οὐκ ἔμοιγε. Τί δαί, ἀμούσου; Ἀνάγκη, ἔφη. Τί δέ, ἰατρικός, ἐν τῇ ἐδωδῇ ἢ πόσει ἐθέλειν ἄν τι ἰατρικοῦ πλεονεκτεῖν, ἢ ἀνδρὸς ἢ πράγματος; Οὐ δῆτα. Μὴ ἰατρικοῦ δέ; Ναί. Περὶ πάσης δὴ ὅρα ἐπιστήμης τε καὶ ἀνεπιστημοσύνης εἴ τις σοι δοκεῖ ἐπιστήμων, ὅστις οὖν ἐθέλειν πλείω ἂν αἱρεῖσθαι ἢ ὅσα ἄλλος ἐπιστήμων ἢ πράττειν ἢ λέγειν, καὶ οὐ ταυτὰ τῷ ὁμοίῳ ἑαυτῷ εἰς τὴν αὐτὴν πρᾶξιν; Ἀλλ' ἴσως, ἔφη, ἀνάγκη τοῦτό γε οὕτως ἔχειν. Τί δαί, ὁ ἀνεπιστήμων οὐχ ὁμοίως μὲν ἐπιστήμονος πλεονεκτήσειν, ἀνομοίως δὲ ἀνεπιστήμονος; Ἴσως. Ὁ δὲ ἐπιστήμων σοφός; Ναί. Ὁ δὲ σοφὸς ἀγαθός; Φημί. Ὁ ἄρα ἀγαθός τε καὶ σοφὸς τοῦ μὲν ὁμοίου οὐκ ἐθελήσει πλεονεκτεῖν, τοῦ δ' ἀνομοίου τε καὶ ἐναντίου; Ἔοικεν, ἔφη. Ὁ δὲ κακός τε καὶ ἀμαθὴς τοῦ τε ὁμοίου καὶ τοῦ ἐναντίου; Φαίνεται. Οὐκ οὖν, ὦ Θρασύμαχε, ἦν δ' ἐγώ, ὁ ἄδικος ἡμῖν τοῦ ἀνομοίου τε καὶ ὁμοίου πλεονεκτεῖ; ἢ οὐχ οὕτως ἔλεγες; Ἔγωγε, ἔφη. Ὁ δὲ δίκαιος τοῦ μὲν ὁμοίου οὐ πλεονεκτήσει, τοῦ δὲ ἀνομοίου; Ναί. Ἔοικεν ἄρα, ἦν δ' ἐγώ, ὁ μὲν δίκαιος τῷ σοφῷ τε καὶ ἀγαθῷ, ὁ δὲ ἄδικος τῷ κακῷ τε καὶ ἀμαθεῖ. Κινδυνεύει. Ἀλλὰ μὴν ὡμολογοῦμεν, ᾧ γε ὅμοιος ἑκάτερος εἴη, τοιοῦτον καὶ ἑκάτερον εἶναι. Ὡμολογοῦμεν γάρ. Ὁ μὲν ἄρα δίκαιος ἡμῖν ἀναπέφανται ὢν ἀγαθός τε καὶ σοφός· ὁ δὲ ἄδικος ἀμαθής τε καὶ κακός.

62 Ἐπειδὴ δ' οὖν διωμολογησάμεθα τὴν δικαιοσύνην ἀρετὴν εἶναι καὶ σοφίαν, τὴν δ' ἀδικίαν κακίαν τε καὶ ἀμαθίαν, Εἶεν, ἦν δ' ἐγώ· τοῦτο μὲν ἡμῖν οὕτω κείσθω· ἔφαμεν δὲ δὴ καὶ ἰσχυρότερον εἶναι τὴν ἀδικίαν. (Plato Pol. 1, 350 d.)

63 Ἀλλα τῇδέ πη σκέψασθαι χρή. πόλιν φαίης ἂν ἄδικον εἶναι καὶ ἄλλας πόλεις ἐπιχειρεῖν δουλοῦσθαι ἀδίκως καὶ καταδεδουλῶσθαι, πολλὰς δὲ καὶ ὑφ' ἑαυτῇ ἔχειν δουλωσαμένην; Πῶς γὰρ οὔκ; ἔφη· καὶ τοῦτό γε ἡ ἀρίστη μάλιστα ποιήσει καὶ τελεώτατα οὖσα ἄδικος. Μανθάνω, ἔφην, ὅτι σὸς οὗτος ἦν ὁ λόγος· ἀλλὰ τόδε περὶ αὐτοῦ σκοπῶ, πότερον οὖν ἡ κρείττων γιγνομένη πόλις πόλεως ἄνευ δικαιοσύνης τὴν δύναμιν ταύτην ἕξει, ἢ ἀνάγκη αὐτῇ μετὰ δικαιοσύνης; Εἰ μὲν, ἔφη, ὡς σὺ ἄρτι ἔλεγες, ἔστιν ἡ δικαιοσύνη σοφία, μετὰ δικαιοσύνης, εἰ δ' ὡς ἐγώ, μετ' ἀδικίας. Πάνυ γε ἄγαμαι, ἦν δ' ἐγώ, ὦ Θρασύμαχε, ὅτι οὐκ ἐπινεύεις μόνον καὶ ἀνανεύεις, ἀλλὰ καὶ ἀποκρίνῃ πάνυ καλῶς. Σοὶ γάρ, ἔφη, χαρίζομαι. Εὖ γε σὺ ποιῶν· ἀλλὰ δὴ καὶ τόδε μοι χάρισαι καὶ λέγε· δοκεῖς ἂν οὖν ἢ πόλιν ἢ στρατόπεδον ἢ λῃστὰς ἢ κλέπτας ἢ ἄλλο τι ἔθνος, ὅσα κοινῇ ἐπί τι ἔρχεται ἀδίκως, πρᾶξαι ἄν τι δύνασθαι, εἰ ἀδικοῖεν ἀλλήλους; Οὐ δῆτα, ἦ δ' ὅς. Τί δ' εἰ μὴ ἀδικοῖεν; οὐ μᾶλλον; Πάνυ γε. Στάσεις γάρ που, ὦ Θρασύμαχε, ἥ γε ἀδικία καὶ μίση καὶ μάχας ἐν ἀλλήλοις παρέχει, ἡ δὲ δικαιοσύνη ὁμόνοιαν καὶ φιλίαν. ἦ γάρ; Ἔστω, ἦ δ' ὅς, ἵνα σοὶ μὴ διαφέρωμαι. Ἀλλ' εὖ γε σὺ ποιῶν, ὦ ἄριστε· τόδε δέ μοι λέγε· ἆρα εἰ τοῦτο ἔργον ἀδικίας, μῖσος ἐμποιεῖν ὅπου ἂν ἐνῇ, οὐ καὶ ἐλευθέροις τε καὶ δούλοις ἐγγινομένη μισεῖν ποιήσει ἀλλήλους καὶ στασιάζειν καὶ ἀδυνάτους εἶναι κοινῇ μετ' ἀλλήλων πράττειν; Πάνυ γε. Τί δέ, ἂν ἐν δυοῖν ἐγγένηται, οὐ διοίσονται καὶ μισήσουσι καὶ ἐχθροὶ ἔσονται ἀλλήλοις τε καὶ τοῖς δικαίοις; Ἔσονται, ἔφη. Ἐὰν δὲ δή, ὦ θαυμάσιε, ἐν ἑνὶ ἐγγένηται ἀδικία, μῶν μὴ ἀπολεῖ τὴν αὑτῆς δύναμιν; ἢ οὐδὲν

ἧττον ἕξει; Μηδὲν ἧττον ἐχέτω, ἔφη. Οὐκ οὖν τοιάνδε τινὰ φαίνεται ἔχουσα τὴν δύναμιν, οἵαν ᾧ ἂν ἐγγένηται, εἴτε πόλει τινί, εἴτε γένει, εἴτε στρατοπέδῳ, εἴτε ἄλλῳ ὁτῳοῦν, πρῶτον μὲν ἀδύνατον αὐτὸ ποιεῖ πράττειν μεθ᾽ αὑτοῦ διὰ τὸ στασιάζειν καὶ διαφέρεσθαι, ἔτι δ᾽ ἐχθρὸν εἶναι ἑαυτῷ τε καὶ τῷ ἐναντίῳ παντὶ καὶ τῷ δικαίῳ; οὐχ οὕτως; Πάνυ γε. Καὶ ἐν ἑνὶ δὴ οἶμαι ἐνοῦσα ταῦτα πάντα ποιήσει, ἅπερ πέφυκεν ἐργάζεσθαι· πρῶτον μὲν ἀδύνατον αὐτὸν ποιήσει πράττειν στασιάζοντα καὶ οὐχ ὁμονοοῦντα αὐτὸν ἑαυτῷ, ἔπειτα ἐχθρὸν καὶ ἑαυτῷ καὶ τοῖς δικαίοις. Ἦ γάρ; Ναί. Δίκαιοι δέ γ᾽ εἰσίν, ὦ φίλε, καὶ οἱ θεοί; Ἔστωσαν, ἔφη. Καὶ θεοῖς ἄρα ἐχθρὸς ἔσται, ὦ Θρασύμαχε, ὁ ἄδικος, ὁ δὲ δίκαιος φίλος. Εὐωχοῦ τοῦ λόγου, ἔφη, θαρρῶν· οὐ γὰρ ἔγωγέ σοι ἐναντιώσομαι, ἵνα μὴ τοῖσδε ἀπέχθωμαι. Ἴθι δή, ἦν δ᾽ ἐγώ, καὶ τὰ λοιπά μοι τῆς ἑστιάσεως ἀποπλήρωσον ἀποκρινόμενος ὥσπερ καὶ νῦν· ὅτι μὲν γὰρ καὶ σοφώτεροι καὶ ἀμείνους καὶ δυνατώτεροι πράττειν οἱ δίκαιοι φαίνονται, οἱ δὲ ἄδικοι οὐδὲν πράττειν μετ᾽ ἀλλήλων οἷοί τε. ἀλλὰ δὴ καὶ οὓς φαμὲν ἐρρωμένως πώποτέ τι μετ᾽ ἀλλήλων κοινῇ πρᾶξαι, ἀδίκους ὄντας, τοῦτο οὐ παντάπασιν ἀληθὲς ἐλέγομεν· οὐ γὰρ ἂν ἀπείχοντο ἀλλήλων, κομιδῇ ὄντες ἄδικοι· ἀλλὰ δῆλον ὅτι ἐνῆν τις αὐτοῖς δικαιοσύνη, ἣ αὐτοὺς ἐποίει, μή τι καὶ ἀλλήλους γε καὶ ἐφ᾽ οὓς ᾔεσαν ἀδικεῖν ἅμα, δι᾽ ἣν ἔπραξαν ἃ ἔπραξαν· ὥρμησαν δὲ ἐπὶ τὰ ἄδικα ἀδικίᾳ, ἡμιμόχθηροι ὄντες, ἐπεὶ οἵ γε παμπόνηροι καὶ τελέως ἄδικοι τελέως εἰσὶ καὶ πράττειν ἀδύνατοι. ταῦτα μὲν οὖν ὅτι οὕτως ἔχει, μανθάνω, ἀλλ᾽ οὐχ ὡς σὺ τὸ πρῶτον ἐτίθεσο· εἰ δὲ καὶ ἄμεινον ζῶσιν οἱ δίκαιοι τῶν ἀδίκων καὶ εὐδαιμονέστεροι εἰσίν,

ὅπερ τὸ ὕστερον προυθέμεθα σκέψασθαι, σκεπτέον. φαίνονται μὲν οὖν καὶ νῦν, ὥς γε μοι δοκεῖ, ἐξ ὧν εἰρήκαμεν· ὅμως δέ τι βέλτιον σκεπτέον· οὐ γὰρ περὶ τοῦ ἐπιτυχόντος ὁ λόγος, ἀλλὰ περὶ τοῦ ὅν τινα τρόπον χρὴ ζῆν. Σκόπει δή, ἔφη. Σκοπῶ, ἦν δ' ἐγώ, καί μοι λέγε· δοκεῖ τί σοι εἶναι ἵππου ἔργον; Ἔμοιγε. Ἆρ' οὖν τοῦτο ἂν θείης καὶ ἵππου καὶ ἄλλου ὁτουοῦν ἔργον, ὃ ἂν ἢ μόνῳ ἐκείνῳ ποιῇ τις ἢ ἄριστα; Οὐ μανθάνω, ἔφη. Ἀλλ' ὧδε· ἔσθ' ὅτῳ ἂν ἄλλῳ ἴδοις ἢ ὀφθαλμοῖς; Οὐ δῆτα. Τί δαί; ἀκούσαις ἄλλῳ ἢ ὠσίν; Οὐδαμῶς. Οὐκ οὖν δικαίως ἂν ταῦτα τούτων φαμὲν ἔργα εἶναι; Πάνυ γε. Τί δαί; μαχαίρᾳ ἂν ἀμπέλου κλῆμα ἀποτέμοις καὶ σμίλῃ καὶ ἄλλοις πολλοῖς; Πῶς γὰρ οὔ; Ἀλλ' οὐδενί γ' ἂν οἶμαι οὕτω καλῶς, ὡς δρεπάνῳ τῷ ἐπὶ τούτῳ ἐργασθέντι. Ἀληθῆ. Ἆρ' οὖν οὐ τοῦτο τούτου ἔργον θήσομεν; Θήσομεν μὲν οὖν. Νῦν δὴ οἶμαι ἄμεινον ἂν μάθοις ὃ ἄρτι ἠρώτων πυνθανόμενος, εἰ οὐ τοῦτο ἑκάστου εἴη ἔργον, ὃ ἂν ἢ μόνον τι ἢ κάλλιστα τῶν ἄλλων ἀπεργάζηται. Ἀλλά, ἔφη, μανθάνω τε καί μοι δοκεῖ τοῦτο ἑκάστου πράγματος ἔργον εἶναι. Εἶεν, ἦν δ' ἐγώ. Οὐκ οὖν καὶ ἀρετὴ δοκεῖ σοι εἶναι ἑκάστῳ, ᾧπερ καὶ ἔργον τι προστέτακται; ἴωμεν δὲ ἐπὶ τὰ αὐτὰ πάλιν· ὀφθαλμῶν φαμὲν ἔστι τι ἔργον. Ἔστιν. Ἆρ' οὖν καὶ ἀρετὴ ὀφθαλμῶν ἐστι; Καὶ ἀρετή. Τί δέ, ὤτων ἦν τι ἔργον; Ναί. Οὐκ οὖν καὶ ἀρετή; Καὶ ἀρετή. Τί δὴ γὰρ καὶ περὶ τῶν ἄλλων; οὐχ οὕτως; Οὕτως ἔχει δή. Ἆρ' ἄν ποτε ὄμματα τὸ αὐτῶν ἔργον καλῶς ἀπεργάσαιντο μὴ ἔχοντα τὴν αὐτῶν οἰκείαν ἀρετήν, ἀλλ' ἀντὶ τῆς ἀρετῆς κακίαν; Καὶ πῶς ἄν, ἔφη; τυφλότητα γὰρ ἴσως λέγεις ἀντὶ τῆς ὄψεως. Ἥτις, ἦν δ' ἐγώ, αὐτῶν ἡ ἀρετή· οὐ γάρ πω τοῦτο ἐρωτῶ, ἀλλὰ

εἰ τῇ μὲν οἰκείᾳ ἀρετῇ τὸ αὑτῶν ἔργον εὖ ἐργάσεται τὰ ἐργαζόμενα, κακίᾳ δὲ κακῶς. Ἀληθές, ἔφη, τοῦτό γε λέγεις. Οὐκ οὖν καὶ ὦτα στερόμενα τῆς αὑτῶν ἀρετῆς κακῶς τὸ αὑτῶν ἔργον ἀπεργάσεται; Πάνυ γε. Τίθεμεν οὖν καὶ τὰ ἄλλα πάντα εἰς τὸν αὐτὸν τοῦτον λόγον; Ἔμοιγε δοκεῖ. Ἴθι δή, μετὰ ταῦτα τόδε σκέψαι. ψυχῆς ἔστι τι ἔργον, ὃ ἄλλῳ τῶν ὄντων οὐδ' ἂν ἑνὶ πράξαις; οἷον τὸ τοιόνδε· τὸ ἐπιμελεῖσθαι καὶ ἄρχειν καὶ τὸ βουλεύεσθαι καὶ τὰ τοιαῦτα πάντα, ἔστιν ὅτῳ ἄλλῳ ἢ ψυχῇ δικαίως ἂν αὐτὰ ἀποδοῖμεν καὶ φαῖμεν ἴδια ἐκείνης εἶναι; Οὐδενὶ ἄλλῳ. Τί δ' αὖ τὸ ζῆν; οὐ ψυχῆς ἔργον φήσομεν εἶναι; Μάλιστ' ἄν, ἔφη. Οὐκ οὖν καὶ ἀρετήν φαμέν τινα ψυχῆς εἶναι; Φαμέν. Ἆρ' οὖν ποτε, ὦ Θρασύμαχε, ψυχὴ τὰ αὑτῆς ἔργα εὖ ἀπεργάσεται στερομένη τῆς οἰκείας ἀρετῆς, ἢ ἀδύνατον; Ἀδύνατον. Ἀνάγκη ἄρα κακῇ ψυχῇ κακῶς ἄρχειν καὶ ἐπιμελεῖσθαι, τῇ δὲ ἀγαθῇ πάντα ταῦτα εὖ πράττειν. Ἀνάγκη. Οὐκ οὖν ἀρετὴν μὲν ξυνεχωρήσαμεν ψυχῆς εἶναι δικαιοσύνην, κακίαν δὲ ἀδικίαν; Ξυνεχωρήσαμεν γάρ. Ἡ μὲν ἄρα δικαία ψυχὴ καὶ ὁ δίκαιος ἀνὴρ εὖ βιώσεται, κακῶς δὲ ὁ ἄδικος; Φαίνεται, ἔφη, κατὰ τὸν σὸν λόγον. Ἀλλὰ μὴν ὅ γε εὖ ζῶν μακάριός τε καὶ εὐδαίμων, ὁ δὲ μὴ τἀναντία; Πῶς γὰρ οὔ; Ὁ μὲν δίκαιος ἄρα εὐδαίμων, ὁ δ' ἄδικος ἄθλιος; Ἔστω, ἔφη. Ἀλλὰ μὴν ἄθλιόν γε οὐ λυσιτελεῖ εἶναι, εὐδαίμονα δέ. Πῶς γὰρ οὔ; Οὐδέποτε ἄρα, ὦ μακάριε Θρασύμαχε, λυσιτελέστερον ἀδικία δικαιοσύνης. (Plato Polit. I, 351 a.)

64 Ἐν ταυτῷ (IV, 441 c).

Ταῦτα μὲν ἄρα, ἦν δ' ἐγώ, μόγις διανενεύκαμεν, καὶ ἡμῖν ἐπιεικῶς ὡμολόγηται, ταυτὰ μὲν ἐν πόλει,

ταὐτὰ δὲ ἐν ἑνὶ ἑκάστου τῇ ψυχῇ γένη ἐνεῖναι καὶ ἴσα τὸν ἀριθμόν. Ἔστι ταῦτα. Οὐκ οὖν ἐκεῖνό γε ἤδη ἀναγκαῖον, ὡς πόλις ἦν σοφὴ καὶ ᾧ, οὕτω καὶ τὸν ἰδιώτην καὶ τούτῳ σοφὸν εἶναι; Τί μήν; Καὶ ᾧ δὴ ἀνδρεῖος ἰδιώτης καὶ ὥς, τούτῳ καὶ πόλιν ἀνδρείαν· καὶ οὕτω καὶ τἄλλα πάντα πρὸς ἀρετὴν ὡσαύτως ἀμφότερα ἔχειν; Ἀνάγκη. Καὶ δίκαιον δή, ὦ Γλαύκων, οἶμαι, φήσομεν ἄνδρα εἶναι τῷ αὐτῷ τρόπῳ ᾧπερ καὶ πόλις ἦν δικαία; Καὶ τοῦτο πᾶσα ἀνάγκη. Ἀλλ᾽ οὔπω μὴν τοῦτό γε ἐπιλελήσμεθα, ὅτι ἐκείνη γε τῷ τὸ ἑαυτοῦ ἕκαστον ἐν αὐτῇ πράττειν, τριῶν ὄντων γενῶν, δικαία ἦν. Οὔ μοι δοκοῦμεν, ἔφη, ἐπιλελῆσθαι. Μνημονευτέον ἄρα ἡμῖν, ὅτι καὶ ἡμῶν ἕκαστος ὅταν τὰ αὑτοῦ ἐν αὑτῷ πράττῃ, οὕτω δικαιότερός τε ἔσται καὶ τὰ αὑτοῦ πράττων. Καὶ μάλα, ἦ δ᾽ ὅς, μνημονευτέον. Οὐκ οὖν τῷ μὲν λογικῷ ἄρχειν προσῆκον, σοφῷ ὄντι, καὶ ἔχοντι τὴν ὑπὲρ ἁπάσης ψυχῆς προμήθειαν, τῷ δὲ θυμοειδεῖ ὑπηκόῳ εἶναι καὶ ξυμμάχῳ τούτου; Πάνυ γε. Ἆρ᾽ οὖν οὐχ, ὥσπερ ἐλέγομεν, μουσικῆς καὶ γυμναστικῆς κρᾶσις σύμφωνα αὐτὰ ποιήσει, τὸ μὲν ἐπιτείνουσα καὶ τρέφουσα λόγοις τε καλοῖς καὶ μαθήμασι, τὸ δ᾽ ἀνιεῖσα, καὶ παραμυθουμένη καὶ ἡμεροῦσα ἁρμονίᾳ τε καὶ ῥυθμῷ; Κομιδῇ γε, ἦ δ᾽ ὅς. Καὶ τούτω δὴ οὕτω τραφέντε καὶ ὡς ἀληθῶς τὰ αὑτὰ μαθόντε καὶ παιδευθέντε, προστήσετον τοῦ ἐπιθυμητικοῦ, ὃ δὴ κρεῖττον τῆς ψυχῆς ἐν ἑκάστῳ ἐστί, καὶ χρημάτων φύσει ἀπληστότατον· ὃ τηρήσετον μὴ τῷ πίμπλασθαι τῶν περὶ τὸ σῶμα καλουμένων ἡδονῶν πολὺ καὶ ἰσχυρὸν γενόμενον οὐ τὰ αὑτοῦ πράττῃ, ἀλλὰ καταδουλώσασθαι καὶ ἄρχειν ἐθέλῃ ὧν οὐ προσῆκον αὐτῷ γε ᾖ, καὶ ξύμπαντα τὸν βίον πάντων ἀνατρέψῃ. Πάνυ μὲν

οὖν, ἔφη. Ἆρ' οὖν, ἦν δ' ἐγώ, καὶ τοὺς ἔξωθεν πολεμίους τούτω ἂν κάλλιστα φυλαττοίτην ὑπὲρ ἁπάσης τῆς ψυχῆς τε καὶ τοῦ σώματος, τὸ μὲν κελευόμενον, τὸ δὲ προπολεμοῦν, ἑπόμενον δὲ τῷ ἄρχοντι καὶ τῇ ἀνδρείᾳ ἐπιτελοῦν τὰ βουλευθέντα. Ἔστι ταῦτα. Καὶ ἀνδρεῖον δή, οἶμαι, τούτῳ τῷ μέρει καλοῦμεν ἕνα ἕκαστον, ὅταν αὐτοῦ τὸ θυμοειδὲς διασώζῃ διά τε λυπῶν καὶ ἡδονῶν τὸ ὑπὸ τοῦ λόγου παραγγελθὲν δεινόν τε καὶ μή. Ὀρθῶς γε, ἔφη. Σοφὸν δέ γε ἐκείνῳ τῷ σμικρῷ μέρει, πῶς ἦρχέ τε ἐν αὐτῷ καὶ ταῦτα παρήγγελλεν, ἔχον αὖ κἀκεῖνο ἐπιστήμην ἐν αὐτῷ τὴν τοῦ ξυμφέροντος ἑκάστοτε καὶ ὅλῳ τῷ κοινῷ σφῶν αὐτῶν τριῶν ὄντων. Πάνυ μὲν οὖν. Τί δέ; σώφρονα οὐ τῇ φιλίᾳ καὶ τῇ ξυμφωνίᾳ τῇ αὐτῶν τούτων, ὅταν τό τε ἄρχον καὶ τὼ ἀρχομένω ὁμοδοξῶσιν, ὡς δεῖν ἄρχειν τὸ λογιστικόν, καὶ μὴ στασιάσωσιν αὐτῷ; Σωφροσύνη γ' οὖν, ἦ δ' ὅς, οὐκ ἄλλο τί ἐστιν ἢ τοῦτο, πόλεώς τε καὶ ἰδιώτου· ἀλλὰ μὲν δὴ δίκαιός γε, ὡς πολλάκις λέγομεν, τούτῳ καὶ οὕτως ἔσται. Πολλὴ ἀνάγκη. Τί οὖν; εἶπον ἐγώ· μή πῃ ἡμῖν ἀπαμβλύνεται ἄλλο τι δικαιοσύνη δοκεῖν εἶναι ἢ ὅπερ ἐν τῇ πόλει ἐφάνη; Οὐκ ἔμοιγε, ἔφη, δοκεῖ. Ὧδε γάρ, ἦν δ' ἐγώ, πάντα παντάπασιν ἂν βεβαιωσαίμεθα, εἴ τι ἡμῶν ἔτι ἐν τῇ ψυχῇ ἀμφισβητεῖ, τὰ φορτικὰ αὐτῷ προσφέροντες. Ποῖα δή; Οἷον εἰ δέοι ἡμᾶς ἀνομολογεῖσθαι περί τε ἐκείνης τῆς πόλεως καὶ τοῦ ἐκείνῃ ὁμοίως πεφυκότος τε καὶ τεθραμμένου ἀνδρός, ἐδόκει ἂν παρακαταθήκην χρυσίου ἢ ἀργυρίου δεξάμενος ὁ τοιοῦτος ἀποστερῆσαι, τίνα ἂν οἴει οἰηθῆναι τοῦτο αὐτὸν δρᾶσαι μᾶλλον ἢ ὅσοι μὴ τοιοῦτοι; Οὐδένα ἄν, ἔφη. Οὐκ οὖν καὶ ἱεροσυλιῶν καὶ κλοπῶν καὶ προδοσιῶν, ἢ ἰδιαίτερον ἢ δημοσίᾳ πό-

λεων, ἐκτὸς ἂν οὗτος εἴη; Ἐκτός. Καὶ μὴν οὐδ᾽ ὁπωστισγεοῦν ἄπιστος ἢ κατὰ τοὺς ὅρκους ἢ κατὰ τὰς ἄλλας ὁμολογίας. Πῶς γὰρ ἄν; Μοιχεῖαί γε μὴν καὶ γονέων ἀμέλειαι καὶ θεῶν ἀθεραπευσίαι παντὶ ἄλλῳ μᾶλλον ἢ τῷ τοιούτῳ προσήκουσι. Παντὶ μέντοι, ἔφη. Οὐκ οὖν τούτων πάντων αἴτιον, ὅτι αὐτὸ τῶν ἐν αὐτῷ ἕκαστον τὰ αὑτοῦ πράττει ἀρχῆς τε πέρι καὶ τοῦ ἄρχεσθαι; Τοῦτο μὲν δὴ οὖν καὶ οὐδὲν ἄλλο. Ἔτι οὖν ἕτερον ζητεῖς δικαιοσύνην εἶναι ἢ ταύτην τὴν δύναμιν, ἢ τοὺς τοιούτους ἄνδρας τε παρέχεται καὶ πόλεις; Μὰ Δί᾽, ἦ δ᾽ ὅς, οὐκ ἔγωγε. Τέλεον ἄρα ἡμῖν τὸ ἐνύπνιον ἀποτετέλεσται, ὃ ἔφαμεν ὑποπτεῦσαι, ὡς εὐθὺς ἀρχόμενοι τῆς πόλεως οἰκίζειν κατὰ θεόν τινα εἰς ἀρχήν τε καὶ τύπον τινὰ τῆς δικαιοσύνης κινδυνεύομεν ἐμβεβηκέναι. Παντάπασι μὲν οὖν. Τὸ δέ γε ἦν ἄρα, ὦ Γλαύκων, διὸ καὶ ὠφελεῖ εἴδωλόν τι τῆς δικαιοσύνης, τὸ τὸν μὲν σκυτοτομικὸν φύσει ὀρθῶς ἔχειν σκυτοτομεῖν καὶ ἄλλο μηδὲν πράττειν, τὸν δὲ τεκτονικὸν τεκταίνεσθαι, καὶ τὰ ἄλλα δὴ οὕτω. Φαίνεται. Τὸ δέ γε ἀληθές, τοιοῦτόν τι ἦν, ὡς ἔοικεν, ἡ δικαιοσύνη, ἀλλ᾽ οὐ περὶ τὴν ἔξω πρᾶξιν τῶν αὑτοῦ, ἀλλὰ περὶ τὴν ἐντὸς ὡς ἀληθῶς, περὶ ἑαυτὸν καὶ τὰ αὑτοῦ, μὴ ἐάσαντα τὰ ἀλλότρια πράττειν ἕκαστον ἐν ἑαυτῷ μηδὲ πολυπραγμονεῖν πρὸς ἄλληλα τὰ ἐν τῇ ψυχῇ γένη· ἀλλὰ τῷ ὄντι τὰ οἰκεῖα ἐνθυμούμενον καὶ ἄρξαντα αὐτὸν αὑτοῦ καὶ κοσμήσαντα καὶ φίλον γενόμενον ἑαυτῷ καὶ συναρμόσαντα τρία ὄντα, ὥσπερ ὅρους τρεῖς ἁρμονίας ἀτεχνῶς, νεάτης τε καὶ ὑπάτης καὶ μέσης, καὶ εἰ ἄλλ᾽ ἄττα μεταξὺ τυγχάνει ὄντα, πάντα ταῦτα ξυνδήσαντα καὶ παντάπασιν ἕνα γενόμενον καὶ ἐκ πολλῶν σώφρονα καὶ ἡρμοσμένον, οὕτω δὴ πράττειν ἤδη, ἐάν τι πράττῃ

ἢ περὶ χρημάτων κτῆσιν ἢ περὶ σώματος θεραπείαν ἢ καὶ περὶ πολιτικόν τι ἢ περὶ τὰ ἴδια ξυμβόλαια, ἐν πᾶσι τούτοις ἡγούμενον καὶ ὀνομάζοντα δικαίαν μὲν καὶ καλὴν πρᾶξιν, ἣ ἂν ταύτην τὴν ἕξιν σώζῃ τε καὶ συναπεργάζηται, σοφίαν δὲ τὴν ἐπιστατοῦσαν ταύτῃ τῇ πράξει ἐπιστήμην· ἄδικον δὲ πρᾶξιν, ἣ ἂν ἀεὶ ταύτην λύῃ· ἀμαθίαν τε, ὡς τὴν ταύτῃ ἂν ἐπιστατοῦσαν δόξαν. Παντάπασιν, ἦ δ' ὅς, ὦ Σώκρατες, ἀληθῆ λέγεις. Εἶεν, ἦν δ' ἐγώ, τὸν μὲν δίκαιον καὶ ἄνδρα καὶ πόλιν καὶ δικαιοσύνην, ὃ τυγχάνει ἐν αὐτοῖς ὄν, εἰ φαῖμεν εὑρηκέναι, οὐκ ἂν πάνυ τι, οἶμαι, δόξαιμεν ψεύδεσθαι. Μὰ Δί' οὐ μέντοι, ἔφη. Φῶμεν ἄρα; Φῶμεν. Ἔστω δή, ἦν δ' ἐγώ· μετὰ γὰρ τοῦτο σκεπτέον, οἶμαι, ἀδικίαν. Δῆλον. Οὐκ οὖν στάσιν τινὰ αὖ τριῶν ὄντων τούτων δεῖ αὐτὴν εἶναι καὶ πολυπραγμοσύνην καὶ ἐπανάστασιν μέρους τινὸς τῷ ὅλῳ τῆς ψυχῆς, ἵνα ἄρχῃ ἐν αὐτῇ οὐ προσῆκον, ἀλλὰ τοιούτου ὄντος φύσει, οἵου πρέπειν αὐτῷ δουλεύειν τῷ τοῦ ἀρχικοῦ γένους ὄντι· τοιαῦτ' ἄττα, οἶμαι, φήσομεν καὶ τὴν τούτων ταραχὴν καὶ πλάνην εἶναι, τήν τε ἀδικίαν καὶ ἀκολασίαν καὶ δειλίαν καὶ ἀμαθίαν καὶ ξυλλήβδην πᾶσαν κακίαν. Ταῦτα μὲν οὖν ταύτῃ, ἔφη. Οὐκ οὖν, ἦν δ' ἐγώ, καὶ τὸ ἄδικα πράττειν καὶ τὸ ἀδικεῖν καὶ αὖ τὸ δίκαια ποιεῖν, πάντα ταῦτα τυγχάνει ὄντα κατάδηλα ἤδη σαφῶς, ἥπερ καὶ ἡ ἀδικία καὶ δικαιοσύνη; Πῶς δή; Ὅτι, ἦν δ' ἐγώ, τυγχάνει οὐδὲν διαφέροντα τῶν ὑγιεινῶν τε καὶ νοσωδῶν, ὡς ἐκεῖνα ἐν σώματι, ταῦτα ἐν τῇ ψυχῇ. Πῇ; ἔφη. Τὰ μέν που ὑγιεινὰ ὑγίειαν ἐμποιεῖ, τὰ δὲ νοσώδη νόσον. Ναί. Οὐκ οὖν καὶ τὸ μὲν δίκαια πράττειν δικαιοσύνην ἐμποιεῖ, τὸ δὲ ἄδικα ἀδικίαν; Ἀνάγκη. Ἔστι δὲ τὸ μὲν ὑγίειαν ποιεῖν τὰ ἐν

τῷ σώματι κατὰ φύσιν καθιστάναι κρατεῖν τε καὶ κρατεῖσθαι ὑπ' ἀλλήλων, τὸ δὲ νόσον παρὰ φύσιν ἄρχειν τε καὶ ἄρχεσθαι ἄλλο ὑπ' ἄλλου. Ἔστι γάρ. Οὐκ οὖν αὖ, ἔφην, τὸ δικαιοσύνην ἐμποιεῖν τὰ ἐν τῇ ψυχῇ κατὰ φύσιν καθιστάναι κρατεῖν τε καὶ κρατεῖσθαι ὑπ' ἀλλήλων, τὸ δὲ ἀδικίαν παρὰ φύσιν ἄρχειν τε καὶ ἄρχεσθαι ἄλλο ὑπ' ἄλλου; Κομιδῇ, ἔφη. Ἀρετὴ μὲν ἄρα, ὡς ἔοικεν, ὑγίειά τέ τις ἂν εἴη καὶ κάλλος καὶ εὐεξία ψυχῆς· κακία δὲ νόσος τε καὶ αἶσχος καὶ ἀσθένεια. Ἔστιν οὕτως. Ἆρ' οὖν οὐ καὶ τὰ μὲν καλὰ ἐπιτηδεύματα εἰς ἀρετῆς κτῆσιν φέρει, τὰ δὲ αἰσχρὰ εἰς κακίας; Ἀνάγκη. Τὸ δὴ λοιπὸν ἤδη, ὡς ἔοικεν, ἡμῖν ἐστι σκέψασθαι, πότερον αὖ λυσιτελεῖ δίκαιά τε πράττειν καὶ καλὰ ἐπιτηδεύειν καὶ εἶναι δίκαιον, ἐάν τε λανθάνῃ ἐάν τε μή, τοιοῦτος ὤν, ἢ ἀδικεῖν τε καὶ ἄδικον εἶναι, ἐάν περ μὴ διδῷ δίκην μηδὲ βελτίων γίγνηται κολαζόμενος. Ἀλλά, ἔφη, ὦ Σώκρατες, γελοῖον ἔμοιγε φαίνεται τὸ σκέμμα γίγνεσθαι ἤδη, εἰ τοῦ μὲν σώματος τῆς φύσεως διαφθειρομένης δοκεῖ οὐ βιωτὸν εἶναι οὐδὲ μετὰ πάντων σιτίων τε καὶ ποτῶν καὶ παντὸς πλούτου καὶ πάσης ἀρχῆς, τῆς δὲ αὐτοῦ τούτου ᾧ ζῶμεν φύσεως ταραττομένης τε καὶ διαφθειρομένης βιωτὸν ἄρα ἔσται, ἄν περ τὶς ποιῇ ὃ ἂν βουληθῇ ἄλλο πλὴν τοῦτο ὁπόθεν κακίας μὲν καὶ ἀδικίας ἀπαλλαγήσεται, δικαιοσύνην δὲ καὶ ἀρετὴν κτήσεται, ἐπειδή γε ἐφάνη γε ὄντα ἑκάτερα οἷα ἡμεῖς διεληλύθαμεν. Γελοῖον γάρ, ἦν δ' ἐγώ· ἀλλ' ὅμως ἐπείπερ ἐνταῦθα ἐληλύθαμεν ὅσον οἷόν τε σαφέστατα κατιδεῖν ὅτι ταῦτα οὕτως ἔχει, οὐ χρὴ ἀποκάμνειν. Ἥκιστα, νὴ τὸν Δί', ἔφη, πάντων ἀποκνητέον.

65 *Πλάτωνος τῇ θ' Πολιτείᾳ* (588 b).

Εἶεν δή, εἶπον, ἐπειδὴ ἐνταῦθα λόγου γεγόναμεν, ἀναλάβωμεν τὰ πρῶτα λεχθέντα, δι' ἃ δεῦρ' ἥκομεν· ἦν δέ που λεγόμενον λυσιτελεῖν ἀδικεῖν τῷ τελέως μὲν ἀδίκῳ, δοξαζομένῳ δὲ δικαίῳ· ἢ οὐχ οὕτως ἐλέχθη; Οὕτω μὲν οὖν. Νῦν δή, ἔφην, αὐτῷ διαλεγώμεθα, ἐπειδὴ διωμολογησάμεθα τό τε ἀδικεῖν καὶ τὸ δίκαια πράττειν ἣν ἑκάτερον ἔχει δύναμιν. Πῶς, ἔφη; Εἰκόνα πλάσαντες τῆς ψυχῆς λόγῳ, ἵνα εἰδῇ ὁ ἐκεῖνα λέγων, οἷα ἔλεγε. Ποίαν τινά; ἦ δ' ὅς. Τῶν τοιούτων τινά, ἦν δ' ἐγώ, οἷαι μυθολογοῦνται παλαιαὶ γενέσθαι φύσεις, ἥ τε Χιμαίρας καὶ ἡ Σκύλλης καὶ Κερβέρου, καὶ ἄλλαι τινὲς συχναὶ λέγονται ξυμπεφυκυῖαι ἰδέαι πολλαὶ εἰς ἓν γενέσθαι. Λέγονται γάρ, ἔφη. Πλάττε τοίνυν μίαν μὲν ἰδέαν θηρίου ποικίλου καὶ πολυκεφάλου, ἡμέρων δὲ θηρίων ἔχοντος κεφαλὰς κύκλῳ καὶ ἀγρίων, καὶ δυνατοῦ μεταβάλλειν καὶ φύειν ἐξ αὐτοῦ πάντα ταῦτα. Δεινοῦ πλάστου, ἔφη, τὸ ἔργον· ὅμως δ' ἐπειδὴ εὐπλαστότερον κηροῦ καὶ τῶν τοιούτων λόγος, πεπλάσθω. Μίαν δὴ τοίνυν ἄλλην ἰδέαν λέοντος, μίαν δ' ἀνθρώπου, πολὺ δὲ μέγιστον ἔστω τὸ πρῶτον καὶ δεύτερον τὸ δεύτερον. Ταῦτα, ἔφη, ῥᾴω, καὶ πέπλασται. Σύναπτε τοίνυν αὐτὰ εἰς ἓν τρία ὄντα, ὥστε πῃ ξυμπεφυκέναι ἀλλήλοις. Συνῆπται, ἔφη. Περίπλασον δὴ αὐτοῖς ἔξωθεν ἑνὸς εἰκόνα, τὴν τοῦ ἀνθρώπου, ὥστε τῷ μὴ δυναμένῳ τὰ ἐντὸς ὁρᾶν, ἀλλὰ τὸ ἔξω μόνον ἔλυτρον ὁρῶντι, ἓν ζῷον φαίνεσθαι, ἄνθρωπον. Περιπέπλασται, ἔφη. Λέγωμεν δὴ τῷ λέγοντι ὡς λυσιτελεῖ τούτῳ ἀδικεῖν τῷ ἀνθρώπῳ, δίκαια δὲ πράττειν οὐ ξυμφέρει, ὅτι οὐδὲν ἄλλο φησὶν ἢ λυσιτελεῖν αὐτῷ τὸ παντοδαπὸν θηρίον εὐω-

χοῦντι ποιεῖν ἰσχυρὸν καὶ τὸν λέοντα καὶ τὰ περὶ τὸν λέοντα, τὸν δὲ ἄνθρωπον λιμοκτονεῖν καὶ ποιεῖν ἀσθενῆ, ὥστε ἕλκεσθαι ὅπῃ ἂν ἐκείνων ὁπότερον ἄγῃ, καὶ μηδὲν ἕτερον ἑτέρῳ συνεθίζειν μηδὲ φίλον ποιεῖν, ἀλλ' ἐᾶν αὐτὰ ἐν αὐτοῖς δάκνεσθαί τε καὶ μαχόμενα ἐσθίειν ἄλληλα. Παντάπασι γάρ, ἔφη, ταῦτα λέγει, ὁ τὸ ἀδικεῖν ἐπαινῶν. Οὐκ οὖν αὖ ὁ τὰ δίκαια λέγων λυσιτελεῖν φαίη ἂν δεῖν ταῦτα πράττειν καὶ ταῦτα λέγειν, ὅθεν τοῦ ἀνθρώπου ὁ ἐντὸς ἄνθρωπος ἔσται ἐγκρατέστατος, καὶ τοῦ πολυκεφάλου θρέμματος ἐπιμελήσεται, ὥσπερ γεωργὸς τὰ μὲν ἥμερα τρέφων καὶ τιθασσεύων, τὰ δ' ἄγρια ἀποκωλύων φύεσθαι, ξύμμαχον ποιησάμενος τὴν τοῦ λέοντος φύσιν, καὶ κοινῇ πάντων κηδόμενος, φίλα ποιησάμενος ἀλλήλοις τε καὶ αὐτῷ, οὕτω θρέψει; Κομιδῇ γὰρ αὖ λέγει ταῦτα ὁ τὸ δίκαιον ἐπαινῶν. Κατὰ πάντα δὴ τρόπον ὁ μὲν τὸ δίκαιον ἐγκωμιάζων ἀληθῆ ἂν λέγοι, ὁ δὲ τἄδικα ψεύδοιτο· πρός τε γὰρ ἡδονὴν καὶ πρὸς εὐδοξίαν καὶ ὠφέλειαν σκοπουμένῳ ὁ μὲν ἐπαινέτης τοῦ δικαίου ἀληθεύει, ὁ δὲ ψέκτης οὐδὲν ὑγιὲς οὐδὲ εἰδὼς ψέγει ὅ τι ψέγοι. Οὔ μοι δοκεῖ, ἦ δ' ὅς, οὐδαμῇ γε. Πείθωμεν τοίνυν αὐτὸν πρᾴως, οὐ γὰρ ἑκὼν ἁμαρτάνει, ἐρωτῶντες· Ὦ μακάριε, οὐ καὶ τὰ καλὰ καὶ τὰ αἰσχρὰ νόμιμα διὰ τὰ τοιαῦτα ἂν φαῖμεν γεγονέναι; τὰ μὲν καλὰ τὰ ὑπὸ τῷ ἀνθρώπῳ, μᾶλλον δ' ἴσως τὰ ὑπὸ τῷ θείῳ τὰ θηριώδη ποιοῦντα τῆς φύσεως, αἰσχρὰ δὲ τὰ ὑπὸ τῷ ἀγρίῳ τὸ ἥμερον δουλούμενα; συμφήσει, ἢ πῶς; Ἐὰν ἐμοί, ἔφη, πίθηται. Ἔστιν οὖν, εἶπον, ὅτῳ λυσιτελεῖ ἐκ τούτου τοῦ λόγου χρυσίον λαμβάνειν ἀδίκως, εἴπερ τοιόνδε τι γίγνεται, λαμβάνων τὸ χρυσίον, ἅμα καταδουλοῦται τὸ βέλτιστον αὑτοῦ τῷ μοχθηροτάτῳ; ἢ εἰ μὲν λαβὼν

χρυσόν, υἱὸν ἢ θυγατέρα ἐδουλοῦτο, καὶ ταῦτ᾽ εἰς ἀγρίων τε καὶ κακῶν ἀνδρῶν, οὐκ ἂν αὐτῷ ἐλυσιτέλει οὐδ᾽ ἂν πάμπολυ ἐπὶ τούτῳ λαμβάνοι; εἰ δὲ τὸ αὑτοῦ θειότατον ὑπὸ τῷ ἀθεωτάτῳ τε καὶ μιαρωτάτῳ δουλοῦται καὶ μηδὲν ἐλεεῖ, οὐκ ἄρα ἄθλιός ἐστι καὶ πολὺ ἐπὶ δεινοτέρῳ ὀλέθρῳ χρυσὸν δωροδοκεῖ ἢ Ἐριφύλη ἐπὶ τῇ τοῦ ἀνδρὸς ψυχῇ τὸν ὅρμον δεξαμένη; Πολὺ μέντοι, ἦ δ᾽ ὃς ὁ Γλαύκων· ἐγὼ γάρ σοι ὑπὲρ ἐκείνου ἀποκρινοῦμαι. Οὐκ οὖν καὶ τὸ ἀκολασταίνειν οἴει διὰ τὰ τοιαῦτα πάντα ψέγεσθαι, ὅτι ἀνίεται ἐν τῷ τοιούτῳ τὸ δεινὸν τὸ μέγα ἐκεῖνο καὶ πολυειδὲς θρέμμα εἰς ἐλευθερίαν πέρα τοῦ δέοντος; Δῆλον, ἔφη. Ἡ δ᾽ αὐθάδεια καὶ δυσκολία ψέγεται οὐχ ὅταν τὸ λεοντῶδες καὶ ὀφεῶδες αὔξηται καὶ συντείνηται ἀναρμόστως; Πάνυ μὲν οὖν. Τρυφὴ μὲν οὖν καὶ μαλθακία οὐκ ἐπὶ τῇ αὐτοῦ τούτου χαλάσει τε καὶ ἀνέσει ψέγεται, ὅταν ἐν αὐτῷ δειλίαν ἐμποιῇ; Τί μήν; Κολακεία δὲ καὶ ἀνελευθερία οὐχ ὅταν τὶς τὸ αὐτὸ τοῦτο τὸ θυμοειδὲς ὑπὸ τῷ ὀχλώδει θηρίῳ ποιῇ, καὶ ἕνεκα χρημάτων καὶ τῆς ἐκείνου ἀπληστίας προπηλακιζόμενον ἐθίζῃ ἐκ νέου ἀντὶ λέοντος πίθηκον γίγνεσθαι; Καὶ μάλα, ἔφη. Βαναυσία δὲ καὶ χειροτεχνία διὰ τί, οἴει, ὄνειδος φέρει; ἢ δι᾽ ἄλλο τι φήσομεν ἢ ὅταν τις ἀσθενὲς φύσει ἔχῃ τὸ τοῦ βελτίστου εἶδος, ὥστε μὴ ἂν δύνασθαι ἄρχειν τῶν ἐν αὑτῷ θρεμμάτων, ἀλλὰ θεραπεύειν ἐκεῖνα, καὶ τὰ θωπεύματα αὐτῶν μόνον δύνηται μανθάνειν; Ἔοικεν, ἔφη. Οὐκ οὖν ἵνα καὶ ὁ τοιοῦτος ὑφ᾽ ὁμοίου ἄρχηται, οἵουπερ ὁ βέλτιστος, δοῦλον αὐτὸν φαμὲν δεῖν εἶναι ἐκείνου τοῦ βελτίστου, καὶ ἔχοντος ἐν αὑτῷ τὸ θεῖον ἄρχον, οὐκ ἐπὶ βλάβῃ τῇ τοῦ δούλου οἰόμενοι δεῖν ἄρχεσθαι αὐτόν, ὥσπερ Θρασύμαχος ᾤετο τοὺς ἀρχο-

μένους, ἀλλ' ὡς ἄμεινον παντὶ ὑπὸ θείου καὶ φρονίμου ἄρχεσθαι, μάλιστα μὲν οἰκεῖον ἔχοντος ἐν ἑαυτῷ, εἰ δὲ μή, ἔξωθεν ἐφεστῶτος, ἵνα εἰς δύναμιν πάντες ὅμοιοι ὦμεν καὶ φίλοι, τῷ αὐτῷ κυβερνώμενοι; Καὶ ὀρθῶς γ', ἔφη. Δηλοῖ δέ γε, ἦν δ' ἐγώ, καὶ ὁ νόμος ὅτι τοιοῦτον βούλεται, πᾶσι τοῖς ἐν τῇ πόλει ξύμμαχος ὤν, καὶ ἡ τῶν παίδων ἀρχή, τὸ μὴ ἐᾶν ἐλευθέρους εἶναι, ἕως ἂν ἐν αὐτοῖς ὥσπερ ἐν πόλει πολιτείαν καταστήσωμεν, καὶ τὸ βέλτιστον θεραπεύσαντες τῷ παρ' ἡμῖν τοιούτῳ ἀντικαταστήσωμεν φύλακα ὅμοιον καὶ ἄρχοντα ἐν αὐτῷ· καὶ τότε δὴ ἐλευθερίαν ἀφίεμεν. Δηλοῖ γάρ, ἦ δ' ὅς.

66 *Πλάτωνος πολιτείας ι'* (612 a).

Οὐκ οὖν, ἦν δ' ἐγώ, τά τε ἄλλα ἀπελυσάμεθα ἐν τῷ λόγῳ, καὶ οὐ τοὺς μισθοὺς οὐδὲ τὰς δόξας δικαιοσύνης ἀπηνέγκαμεν, ὥσπερ Ἡσίοδόν τε καὶ Ὅμηρον ὑμεῖς ἔφατε, ἀλλ' αὐτοδικαιοσύνην αὐτῇ τῇ ψυχῇ ἄριστον εὕρομεν, καὶ ποιητέον εἶναι αὐτῇ τὰ δίκαια, ἐάν τ' ἔχῃ τὸν Γύγου δακτύλιον, ἐάν τε μή, καὶ πρὸς τοιούτῳ δακτυλίῳ τὴν Ἄιδος κυνέην; Ἀληθέστατα, ἔφη, λέγεις. Ἆρ' οὖν, ἦν δ' ἐγώ, ὦ Γλαύκων, νῦν ἤδη ἀνεπίφθονόν ἐστι πρὸς ἐκείνοις καὶ τοὺς μισθοὺς τῇ δικαιοσύνῃ καὶ τῇ ἄλλῃ ἀρετῇ ἀποδοῦναι, ὅσους καὶ οἵους τῇ ψυχῇ παρέχει παρ' ἀνθρώπων τε καὶ θεῶν, ζῶντός τε ἔτι τοῦ ἀνθρώπου καὶ ἐπειδὰν τελευτήσῃ; Παντάπασι μὲν οὖν, ἦ δ' ὅς. Ἆρ' οὖν ἀποδώσετέ μοι ἃ ἐδανείσασθε ἐν τῷ λόγῳ; Τί μάλιστα; Ἔδωκα ὑμῖν τὸν δίκαιον δοκεῖν ἄδικον εἶναι καὶ τὸν ἄδικον δίκαιον· ὑμεῖς γὰρ ἡγεῖσθε, κἂν εἰ μὴ δυνατὸν εἴη ταῦτα λανθάνειν καὶ θεοὺς καὶ ἀνθρώπους, ὅμως δοτέον εἶναι τοῦ λόγου ἕνεκα, ἵν' ἡ αὐτὴ δικαιο-

σύνη πρὸς ἀδικίαν αὐτὴν κριθείη· ἢ οὐ μνημονεύεις; Ἀδικοίην μέντ᾽ ἄν, ἔφη, εἰ μή. Ἐπειδὴ τοίνυν, ἦν δ᾽ ἐγώ, κεκριμέναι εἰσίν, ἐγὼ πάλιν ἀπαιτῶ ὑπὲρ δικαιοσύνης, ὥσπερ ἔχει δόξης καὶ παρὰ θεῶν καὶ παρ᾽ ἀνθρώπων, καὶ ὑμᾶς ὁμολογεῖν περὶ αὐτῆς δοκεῖσθαι οὕτως, ἵνα καὶ τὰ νικητήρια κομίσηται, ἃ ἀπὸ τοῦ δοκεῖν κτωμένη δίδωσι τοῖς ἔχουσιν αὐτήν, ἐπειδὴ καὶ τὰ ἀπὸ τοῦ εἶναι ἀγαθὰ διδοῦσα ἐφάνη καὶ οὐκ ἐξαπατῶσα τοὺς τῷ ὄντι λαμβάνοντας αὐτήν. Δίκαια, ἔφη, αἰτεῖ. Οὐκ οὖν, ἦν δ᾽ ἐγώ, πρῶτον μὲν τοῦτο ἀποδώσετε, ὅτι θεούς γε οὐ λανθάνει ἑκάτερος αὐτῶν οἷός ἐστιν; Ἀποδώσομεν, ἔφη. Εἰ δὲ μὴ λανθάνετον, ὃ μὲν θεοφιλὴς ἂν εἴη ὃ δὲ θεομισής, ὥσπερ καὶ κατ᾽ ἀρχὰς ὡμολογοῦμεν. Ἔστι ταῦτα. Τῷ δὲ θεοφιλεῖ οὐχ ὁμολογήσομεν, ὅσα γε ἀπὸ θεῶν γίγνεται, πάντα γίγνεσθαι ὡς οἷόν τε ἄριστα, εἰ μή τι ἀναγκαῖον αὐτῷ κακὸν ἐκ προτέρας ἁμαρτίας ὑπῆρχεν; Πάνυ μὲν οὖν. Οὕτως ἄρα ὑποληπτέον περὶ τοῦ δικαίου ἀνδρός, ἐάν τ᾽ ἐν πενίᾳ γίγνηται ἐάν τ᾽ ἐν νόσοις ἤ τινι ἄλλῳ τῶν δοκούντων κακῶν, ὡς τούτῳ ταῦτα εἰς ἀγαθόν τι τελευτήσει ζῶντι ἢ καὶ ἀποθανόντι· οὐ γὰρ δὴ ὑπό γε θεῶν ποτε ἀμελεῖται ὃς ἂν προθυμεῖσθαι ἐθέλῃ δίκαιος γίγνεσθαι, καὶ ἐπιτηδεύων ἀρετὴν εἰς ὅσον δυνατὸν ἀνθρώπῳ ὁμοιοῦσθαι θεῷ. Εἰκός γ᾽, ἔφη, τὸν τοιοῦτον μὴ ἀμελεῖσθαι ὑπὸ τοῦ ὁμοίου. Οὐκ οὖν περὶ τοῦ ἀδίκου τἀναντία τούτων δεῖ διανοεῖσθαι; Σφόδρα γε. Τὰ μὲν δὴ παρὰ θεῶν τοιαῦτ᾽ ἄττ᾽ ἂν εἴη νικητήρια τῷ δικαίῳ. Κατὰ γοῦν ἐμὴν δόξαν, ἔφη. Τί δ᾽, ἦν δ᾽ ἐγώ, παρ᾽ ἀνθρώπων; ἆρα οὐχ ὧδε ἔχει, εἰ δεῖ τὸ ὂν τιθέναι; οὐχ οἱ μὲν δεινοί τε καὶ ἄδικοι δρῶσιν ὅπερ οἱ δρομεῖς, ὅσοι ἂν θέωσιν εὖ ἀπὸ τῶν κάτω, ἀπὸ δὲ τῶν

ἄνω μή, τὸ μὲν πρῶτον ὀξέως ἀποπηδῶσι, τελευτῶντες δὲ καταγέλαστοι γίγνονται, τὰ ὦτα ἐπὶ τῶν ὤμων ἔχοντες καὶ ἀστεφάνωτοι ἀποτρέχοντες· οἱ δὲ τῇ ἀληθείᾳ δρομικοὶ εἰς τέλος ἐλθόντες τά τε ἆθλα λαμβάνουσι καὶ στεφανοῦνται; οὐχ οὕτω καὶ περὶ τῶν δικαίων τὸ πολὺ ξυμβαίνει, πρὸς τὸ τέλος ἑκάστης πράξεως καὶ ὁμιλίας καὶ τοῦ βίου εὐδοκιμοῦσί τε καὶ τὰ ἆθλα παρὰ τῶν ἀνθρώπων φέρονται; Καὶ μάλα. Ἀνέξει ἄρα λέγοντος ἐμοῦ περὶ τούτων ἅπερ αὐτὸς ἔλεγες περὶ τῶν ἀδίκων; ἐρῶ γὰρ δή, ὅτι οἱ μὲν δίκαιοι, ἐπειδὰν πρεσβύτεροι γένωνται, ἐν τῇ αὑτῶν πόλει ἄρχουσί τε ἃς ἂν βούλωνται ἀρχάς, γαμοῦσί τε ὁπόθεν ἂν βούλωνται, ἐκδιδόασί τε εἰς οὓς ἂν ἐθέλωσι· καὶ πάντα ἃ σὺ περὶ ἐκείνων, ἐγὼ νῦν λέγω περὶ τῶνδε· καὶ αὖ καὶ περὶ τῶν ἀδίκων, ὅτι οἱ πολλοὶ αὐτῶν, καὶ ἐὰν νέοι ὄντες λάθωσιν, ἐπὶ τέλους τοῦ δρόμου αἱρεθέντες καταγέλαστοί εἰσι καὶ γέροντες γιγνόμενοι ἄθλιοι προπηλακίζονται, ὑπὸ ξένων τε καὶ ἀστῶν μαστιγούμενοι, καὶ ἃ ἀγροῖκα ἔφησθα σὺ εἶναι, ἀληθῆ λέγων, εἶτα στρεβλώσονται καὶ ἐκκαυθήσονται· πάντα ἐκεῖνα οἴου καὶ ἐμοῦ ἀκηκοέναι ὡς πάσχουσιν· ἀλλ' ὃ λέγω ὅρα εἰ ἀνέξῃ. Καὶ πάνυ, ἔφη· δίκαια γὰρ λέγεις. Ἃ μὲν τοίνυν, ἦν δ' ἐγώ, ζῶντι τῷ δικαίῳ παρὰ θεῶν τε καὶ ἀνθρώπων ἆθλά τε καὶ μισθοὶ καὶ δῶρα γίγνεται πρὸς ἐκείνοις τοῖς ἀγαθοῖς, οἷς αὐτὴ παρείχετο ἡ δικαιοσύνη, τοιαῦτ' ἂν εἴη. Καὶ μάλα, ἔφη, καλά τε καὶ βέβαια. Ταῦτα τοίνυν, ἦν δ' ἐγώ, οὐδέν ἐστι πλήθει οὐδὲ μεγέθει πρὸς ἐκεῖνα, ἃ τελευτήσαντα ἑκάτερον περιμένει.

67 *Πλάτωνος ἐκ τοῦ Κλειτοφῶντος* (408 e).

Τί τοὐντεῦθεν; πῶς ἄρχεσθαι δεῖν φαμὲν δι-

καιοσύνης περὶ μαθήσεως; ὥσπερ ἂν εἴ τις ἡμᾶς προύτρεπε τοῦ σώματος ἐπιμέλειαν ποιεῖσθαι μηδὲν προνοοῦντας ὁρῶν, καθάπερ παῖδας, ὡς ἔστι τις γυμναστικὴ καὶ ἰατρική, καὶ ἔπειτα ὠνείδιζε, λέγων ὡς αἰσχρὸν πυρῶν μὲν καὶ κριθῶν καὶ ἀμπέλων ἐπιμέλειαν πᾶσαν ποιεῖσθαι καὶ ὅσα τοῦ σώματος ἕνεκα διαπονούμεθά τε καὶ κτώμεθα, τούτου δ᾽ αὐτοῦ μηδεμίαν τέχνην μηδὲ μηχανήν, ὅπως ὡς βέλτιστον ἔσται τὸ σῶμα, ἐξευρίσκειν, καὶ ταῦτα οὖσαν· εἰ δ᾽ ἐπανειρόμεθα τὸν ταῦθ᾽ ἡμᾶς προτρέποντα, λέγεις δὲ εἶναι τίνας ταύτας τὰς τέχνας; εἶπεν ἂν ἴσως ὅτι γυμναστικὴ καὶ ἰατρική· καὶ νῦν δὴ τίνα φαμὲν εἶναι τὴν ἐπὶ τῇ τῆς ψυχῆς ἀρετῇ τέχνην, λεγέσθω. Ὁ δὴ δοκῶν αὐτῶν ἐρρωμενέστατος εἶναι πρὸς ταῦτα ἀποκρινόμενος εἶπε ταύτην τὴν τέχνην εἶναι, ἥνπερ ἀκούεις σὺ λέγοντος, ἔφη, Σωκράτους, οὐκ ἄλλην ἢ δικαιοσύνην. Εἰπόντος δέ μου, μή μοι τὸ ὄνομα εἴπῃς μόνον, ἀλλὰ ὡδί, ἰατρική πού τις λέγεται τέχνη, ταύτης δέ ἐστι διττὰ τὰ ἀποτελούμενα, τὸ μὲν ἰατροὺς ἀεὶ πρὸς τοῖς οὖσιν ἑτέρους ἐξεργάζεσθαι, τὸ δὲ ὑγίειαν· ἔστι δὲ τούτων θάτερον οὐκέτι τέχνη, τῆς τέχνης δὲ τῆς διδασκούσης τε καὶ διδασκομένης ἔργον, ὃ δὴ λέγομεν ὑγίειαν. καὶ τεκτονικῆς δὲ κατὰ ταυτά, οἰκία τε καὶ τεκτονική, τὸ μὲν ἔργον τὸ δὲ δίδαγμα· τῆς δὴ δικαιοσύνης ὡσαύτως τὸ μὲν δικαίους ἔστω ποιεῖν, καθάπερ ἐκεῖ τοὺς τεχνίτας ἑκάστους, τὸ δ᾽ ἕτερον, ὃ δύναται ποιεῖν ἡμῖν ἔργον ὁ δίκαιος, τί τοῦτο φαμέν; εἰπέ. Οὗτος μέν, ὡς οἶμαι, τὸ συμφέρον ἀπεκρίνατο· ἄλλος δὲ τὸ δέον, ἕτερος δὲ τὸ ὠφέλιμον· ὃ δὲ τὸ λυσιτελοῦν. Ἐπανῄειν δὴ ἐγὼ λέγων, ὅτι ἐκεῖ τά γε ὀνόματα ταῦτ᾽ ἐστὶν ἐν ἑκάστῃ τῶν τεχνῶν, ὀρθῶς πράττειν, λυσιτελοῦντα, ὠφέ-

λιμα, καὶ τὰ τοιαῦτα· ἀλλὰ πρὸς ὅ τι ταῦτα πάντα τείνει, ἐρεῖ τὸ ἴδιον ἑκάστῃ τέχνῃ, οἷον ἡ τεκτονική, τὸ εὖ, τὸ καλῶς, τὸ δεόντως, ὥστε τὰ ξύλινα φήσει σκεύη γίγνεσθαι· ἃ δὴ οὐκ ἔστι τέχνη. λεγέσθω δὴ καὶ τὸ τῆς δικαιοσύνης ὡσαύτως. Τελευτῶν ἀπεκρίνατό τις, ὦ Σώκρατες, μοι τῶν σῶν ἑταίρων ὃς δὴ κομψότατα ἔδοξεν εἰπεῖν, ὅτι τοῦτ' εἴη τὸ τῆς δικαιοσύνης ἴδιον ἔργον, ὃ τῶν ἄλλων οὐδεμιᾶς, φιλίαν ἐν ταῖς πόλεσι ποιεῖν. οὗτος δ' αὖ ἐρωτώμενος τὴν φιλίαν ἀγαθόν τε ἔφη εἶναι καὶ οὐδέποτε κακόν· τὰς δὲ τῶν παίδων φιλίας καὶ τὰς τῶν θηρίων, ἃς ἡμεῖς τοῦτο τοὔνομα ἐπονομάζομεν, οὐκ ἀπεδέχετο εἶναι φιλίας ἐπανερωτώμενος· συνέβαινε γὰρ αὐτῷ τὰ πλείω τὰς τοιαύτας βλαβερὰς ἢ ἀγαθὰς εἶναι· φεύγων δὴ τὸ τοιοῦτον οὐδὲ φιλίας ἔφη τὰς τοιαύτας εἶναι, ψευδῶς δὲ ὀνομάζειν αὐτὰς τοὺς οὕτως ὀνομάζοντας· τὴν δὲ ὄντως καὶ ἀληθῶς φιλίαν εἶναι σαφέστατα ὁμόνοιαν. τὴν δὲ ὁμόνοιαν ἐρωτώμενος εἰ ὁμοδοξίαν εἶναι λέγοι ἢ ἐπιστήμην, τὴν μὲν ὁμοδοξίαν ἠτίμαζεν· ἠναγκάζοντο γὰρ πολλαὶ καὶ βλαβεραὶ γίγνεσθαι ὁμοδοξίαι ἀνθρώπων· τὴν δὲ φιλίαν ἀγαθὸν ὡμολογήκει πάντως εἶναι καὶ δικαιοσύνης ἔργον. ὥστε ταυτὸ ἔφησεν εἶναι ὁμόνοιαν καὶ ἐπιστήμην οὖσαν, ἀλλὰ οὐ δόξαν. ὅτε δὴ ἐνταῦθα ἦμεν τοῦ λόγου ἀποροῦντες, οἱ παρόντες ἱκανοὶ ἦσαν ἐπιπλήττειν τε αὐτῷ καὶ λέγειν, ὅτι περιδεδράμηκεν εἰς ταυτὸν ὁ λόγος τοῖς πρώτοις· καὶ ἔλεγον ὅτι καὶ ἡ ἰατρικὴ ὁμόνοιά τις ἐστι, καὶ ἅπασαι αἱ τέχναι, καὶ περὶ ὅτου εἰσὶν ἔχουσι λέγειν· τὴν δὲ ὑπὸ σοῦ λεγομένην, δικαιοσύνην ἢ ὁμόνοιαν, ὅπου τείνουσά ἐστι διαπέφευγε, καὶ ἄδηλον αὐτῆς ὅ τι ποτέ ἐστι τὸ ἔργον. ταῦτα, ὦ Σώκρατες, ἐγὼ τελευτῶν καὶ σεαυτὸν ἠρώτων, καὶ

εἶπάς μοι δικαιοσύνης εἶναι τοὺς μὲν ἐχθροὺς βλάπτειν, τοὺς δὲ φίλους εὖ ποιεῖν. ὕστερον δὲ ἐφάνη βλάπτειν γε οὐδέποτε ὁ δίκαιος οὐδέν· ἅπαντα γὰρ ἐπ' ὠφελείᾳ πάντας δρᾶν.

68 Πλάτωνος (Alcib. 1, 109 e).

Τί δ' εἰ μὴ ἔχω; οὐκ ἂν οἴει με ἄλλως εἰδέναι περὶ τῶν δικαίων καὶ ἀδίκων; Ναί, εἴ γε εὕροις. Ἀλλ' οὐκ ἂν εὑρεῖν με ἡγῇ; Καὶ μάλα γε, εἰ ζητήσαις. Εἶτα ζητῆσαι οὐκ ἂν οἴει με; Ἔγωγε, εἰ οἰηθείης γε μὴ εἰδέναι.

69 Ἐν ταυτῷ (110 d).

Εὑρὼν μὲν ἄρα οὐκ οἶσθα τὰ δίκαια καὶ τἄδικα; Οὐ πάνυ φαίνομαι. Ἀλλὰ μὴν ἄρτι γε οὐδὲ μαθὼν ἔφησθα εἰδέναι· εἰ δὲ μήθ' εὗρες μήτ' ἔμαθες, πῶς οἶσθα καὶ πόθεν; Ἀλλ' ἴσως τοῦτό σοι οὐκ ὀρθῶς ἀπεκρίθη, τὸ φάναι εἰδέναι αὐτὸς ἐξευρών. Τὸ δὲ πῶς εἶχεν; Ἔμαθον, οἶμαι, καὶ ἐγώ, ὥσπερ καὶ οἱ ἄλλοι. Πάλιν εἰς τὸν αὐτὸν ἥκομεν λόγον· παρὰ τοῦ; φράζε κἀμοί. Παρὰ τῶν πολλῶν. Οὐκ εἰς σπουδαίους γε διδασκάλους καταφεύγεις εἰς τοὺς πολλοὺς ἀναφέρων.

70 Ἐν ταυτῷ (114 e).

Ἀποκρίνου δή· καὶ ἂν μὴ αὐτὸς σὺ σαυτοῦ ἀκούσῃς ὅτι τὰ δίκαια καὶ συμφέροντά ἐστιν, ἄλλῳ γε λέγοντι μὴ πιστεύσῃς. Οὔ τοι· ἀλλ' ἀποκριτέον· καὶ γὰρ οὐδὲν οἶμαι βλαβήσεσθαι. Μαντικὸς γὰρ εἶ. καί μοι λέγε, τῶν δικαίων φῂς ἔνια μὲν συμφέρειν ἔνια δ' οὔ; Ναί. Τί δέ, τὰ μὲν καλὰ εἶναι αὐτῶν τὰ δ' οὔ; Πῶς τοῦτο ἐρωτᾷς; Εἴ τις σοι ἤδη ἔδοξεν αἰσχρὰ μέν, δίκαια δέ, πράττειν; Οὐκ ἔμοιγε. Ἀλλὰ πάντα τὰ δίκαια καὶ καλά; Ναί. Τί δ' αὖ τὰ καλά; πότερον πάντα ἀγαθά, ἢ τὰ μὲν τὰ δ' οὔ; Οἶμαι ἔγωγε,

ὦ Σώκρατες, ἔνια τῶν καλῶν κακὰ εἶναι. Ἦ καὶ αἰσχρὰ ἀγαθά; Ναί. Ἆρα λέγεις τὰ τοιάδε, οἷον πολλοὶ ἐν πολέμῳ βοηθήσαντες ἑταίρῳ ἢ οἰκείῳ, τραύματά τε ἔλαβον καὶ ἀπέθανον· οἱ δ' οὐ βοηθήσαντες, δέον, ὑγιεῖς ἀπῆλθον; Πάνυ μὲν οὖν. Οὐκ οὖν τὴν τοιαύτην βοήθειαν καλὴν μὲν λέγεις κατὰ τὴν ἐπιχείρησιν τοῦ σῶσαι οὓς ἔδει, τοῦτο δέ ἐστιν ἀνδρεία ἢ οὔ; Ναί. Κακὴν δέ γε, κατὰ τοὺς θανάτους τε καὶ τὰ ἕλκη· ἦ γάρ; Ναί. Ἆρ' οὖν οὐκ ἄλλο μὲν ἡ ἀνδρεία ἄλλο δὲ ὁ θάνατος; Πάνυ γε. Οὐκ ἄρα κατὰ ταυτόν γ' ἐστὶ καλὸν καὶ κακὸν τὸ τοῖς φίλοις βοηθεῖν. Οὐ φαίνεται. Ὅρα τοίνυν εἴ γε καλὸν καὶ ἀγαθόν, ὥσπερ καὶ ἐνταῦθα· κατὰ τὴν ἀνδρείαν γὰρ ὁμολογεῖς καλὸν εἶναι τὴν βοήθειαν· τοῦτ' οὖν αὐτὸ σκόπει, τὴν ἀνδρείαν ἀγαθὸν ἢ κακόν; ὧδε δὲ σκόπει· σὺ πότερ' ἂν δέξαιό σοι εἶναι ἀγαθὰ ἢ κακά; Ἀγαθά. Οὐκ οὖν τὰ μέγιστα; Μάλιστα. Καὶ ἥκιστα τῶν τοιούτων δέξαι' ἂν στέρεσθαι; Πῶς γὰρ οὔ; Πῶς οὖν λέγεις περὶ ἀνδρείας, ἐπὶ πόσῳ ἂν αὐτοῦ δέξαιο στέρεσθαι; Οὐδὲ ζῆν ἂν ἔγωγε δεξαίμην δειλὸς ὤν. Ἔσχατον ἆρά σοι δοκεῖ κακὸν εἶναι ἡ δειλία; Ἔμοιγε. Ἐξίσου τῷ τεθνάναι, ὡς ἔοικε. Φημί. Οὐκ οὖν θανάτῳ τε καὶ δειλίᾳ ἐναντιώτατον ζωὴ καὶ ἀνδρεία; Ναί. Καὶ τὰ μὲν μάλιστα εἶναι βούλοιό σοι, τὰ δὲ ἥκιστα; Ναί. Ἆρ' ὅτι τὰ μὲν ἄριστα ἡγῇ, τὰ δὲ κάκιστα; Πάνυ γε. (Ἐν τοῖς ἀρίστοις ἆρα σὺ ἡγῇ ἀνδρείαν εἶναι, κἀν τοῖς κακίστοις θάνατον; Ἔγωγε.) Τὸ ἄρα βοηθεῖν ἐν πολέμῳ τοῖς φίλοις, ᾗ μὲν καλόν, κατὰ ἀγαθοῦ πρᾶξιν τὴν τῆς ἀνδρείας, καλὸν αὐτὸ προσεῖπας; Φαίνομαί γε. Κατὰ δὲ κακοῦ πρᾶξιν τὴν τοῦ θανάτου, κακόν; Ναί. Οὐκ οὖν δίκαιον ὧδε προσαγορεύειν ἑκάστην τῶν πράξεων, εἴπερ ᾗ κακὸν

ἀπεργάζεται, κακὴν καλεῖς, καὶ ᾗ ἀγαθόν, ἀγαθὴν κλητέον; Ἔμοιγε δοκεῖ. Ἆρ' οὖν καὶ ᾗ ἀγαθόν, καλόν, ᾗ δὲ κακόν, αἰσχρόν; Πάνυ γε. Τὴν ἄρ' ἐν τῷ πολέμῳ τοῖς φίλοις βοήθειαν λέγων καλὴν μὲν εἶναι κακὴν δέ, οὐδὲν διαφερόντως λέγεις, ἢ εἰ προσεῖπες αὐτὴν ἀγαθὴν μὲν κακὴν δὲ οὐδαμῶς; Ἀληθῆ μοι δοκεῖς λέγειν, ὦ Σώκρατες. Οὐδὲν ἄρα τῶν καλῶν, καθόσον καλόν, κακόν, οὐδὲ τῶν αἰσχρῶν, καθόσον αἰσχρόν, ἀγαθόν. Οὐ φαίνεται. Ἔτι τοίνυν καὶ ὧδε σκέψαι· ὅστις καλῶς πράττει, οὐχὶ καὶ εὖ πράττει; Ναί. Οἱ δ' εὖ πράσσοντες, οὐκ εὐδαίμονες; Πῶς γὰρ οὔ; Οὐκ οὖν ἡ εὐδαιμονία δι' ἀγαθῶν κτῆσιν; Μάλιστα. Κτῶνται δὲ ταῦτα τῷ εὖ καὶ καλῶς πράττειν; Ναί. Τὸ γοῦν καλῶς πράττειν ἀγαθόν; Πῶς δ' οὔ; Οὐκ οὖν καλὸν ἡ εὐπραγία; Ναί. Ταυτὸν ἄρα ἐφάνη ἡμῖν πάλαι αὖ καλόν τε καὶ ἀγαθόν. Φαίνεται. Ὅ τι ἂν ἄρα εὕρωμεν καλόν τε καὶ ἀγαθόν, εὑρήσομεν ἔκ γε τούτου τοῦ λόγου. Ἀνάγκη. Τί δέ, τὰ ἀγαθὰ συμφέρει, ἢ οὔ; Συμφέρει. Μνημονεύεις οὖν περὶ τῶν δικαίων πῶς ὡμολογήσαμεν; Οἶμαί γε τοὺς τὰ δίκαια πράττοντας ἀναγκαῖον εἶναι καλὰ πράττειν. Οὐκ οὖν τοὺς τὰ καλά, ἀγαθά; Ναί. Τὰ δ' ἀγαθὰ συμφέρει; Ναί. Τὰ δίκαια ἄρα, ὦ Ἀλκιβιάδη, συμφέροντά ἐστι. Ἔοικε.

ΠΕΡΙ ΑΔΙΚΙΑΣ ΚΑΙ ΦΙΛΑΡΓΥΡΙΑΣ ΚΑΙ ΠΛΕΟΝΕΞΙΑΣ. Ι.

1 Εὐριπίδου Ἡρακλειδῶν (1).

Πάλαι ποτ' ἐστὶ τοῦτό μοι δεδογμένον·
ὁ μὲν δίκαιος τοῖς πέλας πέφυκ' ἀνήρ,

ὁ δ' εἰς τὸ κέρδος λῆμ' ἔχων ἀνειμένον
φίλοις τ' ἄχρηστος καὶ συναλλάξαι βαρύς.

2 *Σεραπίωνος.*

Οὐ τῆς ἐμῆς ἕκατι καρδίας φέρεις
λόγους προσηνεῖς, τοῦ δὲ σοῦ κέρδους χάριν.

3 *Μενάνδρου.*

Πλεονεξία μέγιστον ἀνθρώποις κακόν.
οἳ γὰρ θέλοντες προσλαβεῖν τὰ τῶν πέλας
ἀποτυγχάνουσι πολλάκις νικώμενοι,
τὰ δ' ἴδια προστιθέασι τοῖς ἀλλοτρίοις.

4 *Διφίλου.*

Ἆρ' ἐστὶν ἀνοητότατον αἰσχροκερδία;
πρὸς τῷ λαβεῖν γὰρ ὢν ὁ νοῦς τἄλλ' οὐχ ὁρᾷ.

5 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Εἰ μὴ τὸ λαβεῖν ἦν, οὐδὲ εἷς πονηρὸς ην.
Φιλαργυρία τοῦτ' ἐστίν, ὅταν ἀφεὶς σκοπεῖν
τὰ δίκαια τοῦ κέρδους διαπαντὸς δοῦλος ᾖς.

6 *Μενάνδρου.*

Λέγεις· ἃ δὲ λέγεις, ἕνεκα τοῦ λαβεῖν λέγεις.

7 *Εὐριπίδου Ἰξίονι.*

Ὅστις γὰρ ἐπὶ τὸ πλέον ἔχειν πέφυκ' ἀνήρ,
οὐδὲν φρονεῖ δίκαιον οὐδὲ βούλεται,
φίλοις τ' ἄμικτός ἐστι καὶ πάσῃ πόλει.

8 *Θεοδέκτου.*

Ὦ καλλιφεγγῆ λαμπάδ' εἱλίσσων φλογὸς
ἥλιε, ποθεινὸν πᾶσιν ἀνθρώποις σέλας,
εἶδές τιν' ἄλλον πώποτ' εἰς οὕτω μέγαν
ἐλθόντ' ἀγῶνα καὶ δυσέκφευκτον κρίσιν,
ὅπου κατηγορεῖ μὲν ἐν λόγοισί μου

γυνή, πρὸς ὃν δ᾽ εἴρηκε, τυγχάνει πόσις,
κρατοῦσι δ᾽ οἵπερ καὶ κατηγοροῦσί μου;

9 Ἀριστοφάνους (Eccles. 206).

Τὰ δημόσια γὰρ μισθοφοροῦντες χρήματα,
ἴδια σκοπεῖσθ᾽ ἕκαστος, ὅ τι τις κερδανεῖ·
τὸ δὲ κοινὸν ὥσπερ Αἴσιμος κυλίνδεται.

10 Ἡσιόδου ἔργων (320).

Χρήματα δ᾽ οὐχ ἁρπακτὰ θεόσδοτα πολλὸν ἀμείνω.

11 Ἡσιόδου ἔργων (40).

Νήπιοι, οὐδ᾽ ἴσασιν ὅσῳ πλέον ἥμισυ παντός,
οὐδ᾽ ὅσον ἐν μαλάχῃ τε καὶ ἀσφοδέλῳ μέγ᾽ ὄνειαρ.

12 Ἐν ταυτῷ (352).

Μὴ κακὰ κερδαίνειν, κακὰ κέρδεα ἶσ᾽ ἄτῃσι.

13 Ἐπιχάρμου.

Ἁ δὲ χεὶρ τὰν χεῖρα νίζει.

14 Βακχυλίδου ἐπινικίων.

Ὡς δ᾽ ἅπαξ εἰπεῖν, φρένα καὶ πυκινὰν
κέρδος ἀνθρώπων βιᾶται.

15 Πινδάρου (Pyth. 3, 54).

Ἀλλὰ κέρδει καὶ σοφία δέδεται.

16 Ἡσιόδου ἔργων (356).

Δὼς ἀγαθή, ἅρπαξ δὲ κακή, θανάτοιο δότειρα.
ὃς μὲν γάρ κεν ἀνὴρ ἐθέλων ὅδε καὶ μέγα δῴη,
χαίρει τῷ δώρῳ καὶ τέρπεται ὃν κατὰ θυμόν·
ὃς δέ κεν αὐτὸς ἕληται ἀναιδείηφι πιθήσας,
καί τε σμικρὸν ἐόν, τό γ᾽ ἐπάχνωσεν φίλον ἦτορ.

17 Εὐριπίδου Βελλεροφόντῃ.

Ὡς ἔμφυτος μὲν πᾶσιν ἀνθρώποις κάκη.
ὅστις δὲ πλεῖστον μισθὸν εἰς χεῖρας λαβὼν

κακὸς γένηται, τῷδε συγγνώμη μὲν οὔ,
πλείω δὲ μισθὸν μείζονος τόλμης ἔχων
τὸν τῶν λεγόντων ῥᾷον ἂν φέροι ψόγον.

18 *Εὐριπίδου Δανάης.*

Κρείσσων γὰρ οὐδεὶς χρημάτων πέφυκ' ἀνήρ,
πλὴν εἷς τις· ὅστις δ' οὗτός ἐστιν, οὐχ ὁρῶ.

19 *Σοφοκλέους Οἰδίποδος* (Tyr. 387).

Ὑφεὶς μάγον τοιόνδε μηχανοῤῥάφον,
δόλιον ἀγύρτην, ὅστις ἐν τοῖς κέρδεσι
μόνον δέδορκε, τὴν τέχνην δ' ἔφυ τυφλός.

20 *Μενάνδρου Λευκαδίᾳ.*

Ὅστις ὑπέχει χρυσίῳ
τὴν χεῖρα, κἂν μὴ φῇ, πονηρὰ βούλεται.

21 *Μενάνδρου Κόλακι.*

Οὐδεὶς ἐπλούτησε ταχέως δίκαιος ὤν.
ὃ μὲν γὰρ αὑτῷ συλλέγει καὶ φείδεται·
ὃ δὲ τὸν πάλαι τηροῦντ' ἐνεδρεύσας πάντ' ἔχει.

22 *Ἀντιφάνους.*

Τὰ πονηρὰ κέρδη τὰς μὲν ἡδονὰς ἔχει
μικράς, ἔπειτα δ' ὕστερον λύπας μακράς.

23 *Εὐριπίδου Ἰνοῦς.*

Βίᾳ νυν ἕλκετ' ὦ κακοὶ τιμὰς βροτοί,
καὶ κτᾶσθε πλοῦτον πάντοθεν θηρώμενοι,
σύμμικτα μὴ δίκαια καὶ δίκαι' ὁμοῦ·
ἔπειτ' ἀμᾶσθε τῶνδε δύστηνον θέρος.

24 *Μενάνδρου Ἀδελφοῖς.*

Ἔργον εὑρεῖν συγγενῆ
πένητός ἐστιν. οὐδὲ εἷς γὰρ ὁμολογεῖ
αὑτῷ προσήκειν τὸν βοηθείας τινὸς
δεόμενον· αἰτεῖσθαι γὰρ ἅμα τι προσδοκᾷ.

25 Σοφοκλέους Τηρεῖ.

Φιλάργυρον μὲν πᾶν τὸ βάρβαρον γένος.

26 Εὐριπίδου Ὑψιπύλῃ.

Κακοῖς τὸ κέρδος τῆς δίκης ὑπέρτερον.

27 Πλάτωνος ἐν τῷ Κρίτωνι (49 b).

Ὅμως τό γε ἀδικεῖν τῷ ἀδικοῦντι καὶ κακὸν καὶ αἰσχρὸν τυγχάνει ὂν παντὶ τρόπῳ; φαμὲν ἢ οὔ; Φαμέν. Οὐδαμῶς ἄρα δεῖ ἀδικεῖν; Οὐ δῆτα. Οὐδὲ ἀδικούμενον ἄρα ἀνταδικεῖν, ὡς οἱ πολλοὶ οἴονται, ἐπειδή γε οὐδαμῶς δεῖ ἀδικεῖν; Οὐ φαίνεται. Τί δαὶ δή, κακουργεῖν δεῖ, ὦ Κρίτων, ἢ οὔ; Οὐ δεῖ δήπου, ὦ Σώκρατες. Τί δέ, ἀντικακουργεῖν κακῶς πάσχοντα, ὡς οἱ πολλοί φασι, δίκαιον ἢ οὐ δίκαιον; Οὐδαμῶς. Τὸ γάρ που κακῶς ποιεῖν ἀνθρώπους τοῦ ἀδικεῖν οὐδὲν διαφέρει. Ἀληθῆ λέγεις. Οὔτε ἄρα ἀνταδικεῖν δεῖ οὔτε κακῶς ποιεῖν οὐδένα ἀνθρώπων οὐδ᾽ ἂν ὁτιοῦν πάσχῃ ὑπ᾽ αὐτῶν. καὶ ὅρα, ὦ Κρίτων, ταῦτα καθομολογῶν, ὅπως μὴ παρὰ δόξαν ὁμολογῇς· οἶδα γὰρ ὅτι ὀλίγοις τισὶ ταῦτα καὶ δοκεῖ καὶ δόξει. οἷς δ᾽ οὕτω δέδοκται καὶ οἷς μή, τούτοις οὐκ ἔστι κοινὴ βουλή, ἀλλ᾽ ἀνάγκη τούτους ἀλλήλων καταφρονεῖν ὁρῶντας τὰ ἀλλήλων βουλεύματα.

28 Εὐσεβίου.

Φιλοχρηματίη τοῦ κτήσασθαι [εὑρεῖν] ἀρκέοντα οὖρον οὐκ οἶδε.

29 Φιλοχρηματίην ἐφ᾽ ἡμέρῃ ἑκάστῃ ἐπιρρέων πλοῦτος οὐχ ἵστησιν, ὥσπερ οὐδὲ πυρκαϊὴν ὕλη ἐπιβαλλομένη· ἐπιγινόμενος δ᾽ ἀεὶ ἐς τοῦ πλεῦνος τὴν ἐπιθυμίην ἐξάπτει μειζόνως. νόος δὲ μοῦνος παραστὰς καὶ τοῦτο οἶδεν ἀκέεσθαι.

30 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Φιλοχρηματίην ἄλογον τὰ κτώμενα ἀποβαλλόμενα μᾶλλον ἂν στήσειεν ἢ ὁ ἐφ' ἑκάστῃ ἡμέρῃ πλοῦτος ἄπλετος ἐπιγινόμενος.

31. 32 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Τὸ οἰκονομέειν τὰ παρεόντα ἀνδρὸς προνόου· τὸ δὲ μηδ' ὅλως ἐθέλειν ἔς τι τῶν δεόντων χρέεσθαι οὐ δεσπότεω τῶν κτηθέντων, καταδεδουλωμένου δὲ ἑωυτὸν τῶν χρημάτων ἐστὶ τῇ κτήσει.

33 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Οἱ πλεῦνες τῶν ἀνθρώπων παρὰ λόγον φειδεύμενοι ἀξιεῦσι πολυχρήματοι πεπιστευμένοι ἠλίθιοι καὶ σκαιοὶ νομίζεσθαι ἢ περὶ τὰ δεῖ ἀναλίσκοντες δεξιοὶ κεκλῆσθαι.

34 *Προδίκου.*

Δός τι καὶ λάβοις τι.

35 *Ἡροδότου ἱστορίας ζ* (18).

Ἐγὼ μέν, ὦ βασιλεῦ, οἷα ἄνθρωπος ἰδὼν ἤδη πολλά τε καὶ μεγάλα πεσόντα πρήγματα ὑπὸ ἡσσόνων, οὐκ ἐῶ σε τὰ πάντα τῇ ἡλικίῃ εἴκειν, ἐπιστάμενος ὡς κακὸν εἴη τὸ πολλῶν ἐπιθυμέειν.

36 *Εὐσεβίου.*

Πλούσιον χρὴ νομίζειν τὸν ἡγεόμενον ἔχειν τὰ ἀρκέοντα· τὸν δὲ αἰεὶ ἐπιθυμέοντα προσκτήσασθαι καὶ πληθώρην μηδέποτε τοῦ τοιούτου λαμβάνοντα, καὶ εἰ Μίδεω πλουτέοι μᾶλλον, πένητα καλέω καὶ Ἴρου ἣν ἐκεῖνος ἐξ ἀνάγκης εἶχε τύχην κεκτῆσθαι.

37 *Δημοκρίτου.*

Πλοῦτος ἀπὸ κακῆς ἐργασίης περιγενόμενος ἐπιφανέστερον τὸ ὄνειδος κέκτηται.

38 *Βίωνος.*

Βίων ὁ σοφιστὴς τὴν φιλαργυρίαν μητρόπολιν ἔλεγε πάσης κακίας εἶναι.

39 *Σιμωνίδου.*

Σιμωνίδης παρακαλοῦντος τινὸς ἐγκώμιον ποιῆσαι καὶ χάριν ἕξειν λέγοντος ἀργύριον δὲ μὴ διδόντος "δύο" εἶπεν οὗτος "ἔχω κιβωτούς, τὴν μὲν χαρίτων τὴν δὲ ἀργυρίου· καὶ πρὸς τὰς χρείας τὴν μὲν τῶν χαρίτων κενὴν εὑρίσκω, ὅταν ἀνοίξω, τὴν δὲ χρησίμην μόνην."

40 *Ἀντιφῶντος.*

Οἱ δὲ ἐργαζόμενοι μὲν καὶ φειδόμενοι καὶ ταλαιπωροῦντες καὶ προστιθέντες ἥδονται οἷα δή τις ἂν εἰκάσειεν ἥδεσθαι, ἀφαιροῦντες δὲ καὶ χρώμενοι ἀλγοῦσιν ὥσπερ ἀπὸ τῶν σαρκῶν ἀφαιρούμενοι.

41 *Ἡροδότου* (7, 16).

Ὡς κακὸν εἴη, διδάσκειν τὴν ψυχὴν πλέον τι δίζεσθαι καὶ ἔχειν τοῦ παρεόντος.

42 *Ἀντισθένους.*

Φιλάργυρος οὐδεὶς ἀγαθὸς οὔτε βασιλεὺς οὔτε ἐλεύθερος.

43 *Δημοκρίτου.*

Χρυσοῦ τὸν οἰόμενον νόον ἔχειν ὁ νουθετέων τί ματαιοπονέει.

44 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Χρημάτων ὄρεξις, ἢν μὴ ὁρίζηται κόρῳ, πενίης ἐσχάτης πολλὸν χαλεπωτέρη· μέζονες γὰρ ὀρέξιες μέζονας ἐνδείας ποιεῦσι.

45 *Δημοκρίτου.*

Κακὰ κέρδεα ζημίην ἀρετῆς φέρει.

46 *Διογένους.*

Διογένης ὡμοίου τοὺς φιλαργύρους τοῖς ὑδρωπικοῖς· καὶ ἐκείνους γὰρ πλήρεις ὄντας ἀργυρίου ἐπιθυμεῖν πλείονος, ἀμφοτέρους δὲ πρὸς κακοῦ. ἐπιτείνεσθαι γὰρ μᾶλλον τὰ πάθη, ὅσῳ τὰ ἐπιθυμούμενα πορίζεται.

47 *Σωκράτους.*

Σωκράτης ἐρωτηθεὶς τίνες φιλοχρήματοι "οἱ τὰ αἰσχρὰ κέρδη θηρώμενοι" εἶπε "καὶ τοὺς ἀναγκαίους τῶν φίλων ὑπερορῶντες."

48 *Πιττακοῦ.*

Ἄπληστον τὸ διαπαντὸς κέρδος.

49 *Περιάνδρου.*

Κέρδος αἰσχρὸν βαρὺ κειμήλιον.

50 *Ἐκ τῶν Ἀριστωνύμου τομαρίων.*

Ἀριστοτέλης φησὶν ὅτι ὀκτώ τινες κοινῇ λῃστεύοντες ἐστασίασαν πρὸς ἀλλήλους περὶ τῶν σύλων καὶ τέσσαρες αὐτῶν κατελείφθησαν. πάλιν οὗτοι πρὸς ἀλλήλους διηνέχθησαν καὶ δύο κατελείφθησαν, εἶτα εἷς. καὶ τί ὑπόλοιπον ἢ στασιάσαι τὰ δεξιὰ πρὸς τὰ εὐώνυμα;

51 *Ἐν ταυτῷ.*

Τοῦ Πύρρου ὀνειροπολοῦντος αὑτῷ Σικελίαν καὶ μετὰ ταῦτα Καρχηδόνα καὶ πολλὴν γῆν, ὁ συνὼν αὐτῷ Κεινέας ἔφη "εἶτα μετὰ τοῦτο τί;" τοῦ δὲ εἰπόντος ὅτι ζησόμεθα λοιπόν, ὃ δὲ ἔφη "τί οὖν κωλύει ἀπὸ τοῦ νῦν ζῆν πρὶν πολλὰς πόλεις ἀπολέσαι;"

52 *Ἔοικεν οὖν ὁ τοῦ φιλαργύρου βίος νεκροῦ δείπνῳ· πάντα γὰρ ἔχων τὸν εὐφρανθησόμενον οὐκ ἔχει.*

53 *Σεμιράμιδος.*

Σεμίραμις δὲ ἑαυτῇ κατασκευάσασα τάφον ἐπέγραψεν, ὅστις χρημάτων δεηθῇ βασιλεύς, διελόντα τὸ μνημεῖον ὅσα βούλεται λαβεῖν. Δαρεῖος οὖν διελὼν χρήματα μὲν οὐχ εὗρε, γράμμασι δ' ἑτέροις ἐνέτυχε τάδε φράζουσιν "εἰ μὴ κακὸς ἦς ἀνὴρ καὶ χρημάτων ἄπληστος, οὐκ ἂν νεκρῶν θήκας ἐκίνεις."

54 Τίμωνος.

Τίμων ὁ μισάνθρωπος στοιχεῖα ἔφη τῶν κακῶν εἶναι ἀπληστίαν καὶ φιλοδοξίαν.

55 Σωκράτους.

Ὑποστάθμη ἐστὶν οἴνου μὲν τρύξ, φιλαργύρου δὲ ἀνελευθερία.

56 Τοῦ αὐτοῦ.

Οὔτε παρὰ νεκροῦ ὁμιλίαν οὔτε παρὰ φιλαργύρου χάριν δεῖ ζητεῖν.

57 Ξενοφῶντος ἐν δ' (2, 37) ἀπομνημονευμάτων.

Τί νομίζεις δῆμον εἶναι; Τοὺς πένητας τῶν πολιτῶν ἔγωγε. Καὶ τοὺς πένητας ἄρα οἶσθα; Πῶς γὰρ οὔ; Ἆρ' οὖν καὶ τοὺς πλουσίους οἶσθα; Οὐδέν γε ἧττον ἢ καὶ τοὺς πένητας. Ποίους δὲ πένητας καὶ ποίους πλουσίους καλεῖς; Τοὺς μέν, οἶμαι, μὴ ἱκανὰ ἔχοντας εἰς ἃ δεῖ τελεῖν, πένητας· τοὺς δὲ πλείω τῶν ἱκανῶν, πλουσίους. Καταμεμάθηκας οὖν ὅτι ἐνίοις μὲν πάνυ ὀλίγα ἔχουσιν οὐ μόνον ἀρκεῖ ταῦτα, ἀλλὰ καὶ περιποιοῦνται ἀπ' αὐτῶν, ἐνίοις δὲ πάνυ πολλὰ οὐχ ἱκανά ἐστι; Καὶ νὴ Δί', ἔφη ὁ Εὐθύδημος· ὀρθῶς γάρ με ἀναμιμνήσκεις· οἶδα καὶ τυράννους τινάς, οἳ δι' ἔνδειαν, ὥσπερ οἱ ἀπορώτατοι, ἀναγκάζονται ἀδικεῖν. Οὐκ οὖν, ἔφη ὁ Σωκράτης, εἴ γε ταῦτα οὔ-

τως ἔχει, τοὺς μὲν τυράννους εἰς τὸν δῆμον θήσομεν, τοὺς δὲ ὀλίγα κεκτημένους, ἐὰν οἰκονομικοὶ ὦσιν, εἰς τοὺς πλουσίους;

58 Δημοκρίτου.

Ἐλπὶς κακοῦ κέρδεος ἀρχὴ ζημίης.

59 Διογένους.

Οἱ φιλάργυροι καθάπερ μαχαίρᾳ τῷ βίῳ χρῶνται, πάντα ποιοῦντες κατὰ τὴν λαβήν.

60 Πλάτωνος.

Πλάτων πρὸς τὸν ἀεὶ ζητοῦντα χρηματίζεσθαι "ὦ πονηρὲ" εἶπε "μὴ πειρῶ τὴν κτῆσιν αὔξειν, ἀλλὰ τὴν ἐπιθυμίαν μειῶσαι."

61 Διογένους.

Διογένης ὁ κύων θεασάμενός τινα πλουσίας γραίας προσποιούμενον ἐρᾶν ἔφη "ταύτῃ οὐ τὸν ὀφθαλμόν, ἀλλὰ τὸν ὀδόντα ἐπιβέβληκεν."

62 Σιμωνίδου.

Σιμωνίδης ἐρωτηθεὶς διὰ τί ἐσχάτου γήρως ὢν φιλάργυρος εἴη; "ὅτι" εἶπε "βουλοίμην ἂν ἀποθανὼν τοῖς ἐχθροῖς μᾶλλον ἀπολιπεῖν ἢ ζῶν δεῖσθαι τῶν φίλων," κατεγνωκὼς τῆς τῶν πολλῶν φιλίας τὸ ἀβέβαιον.

63 Διογένους.

Διογένης τοὺς μεγάλα καὶ ἀθρόα λαμβάνοντας μεγαλοπτώχους ἐκάλει.

64 Ἀπολλώνιος Εὐφράτῃ.

Οὐκ ἐπιλογιζομένη ἡ ψυχὴ τὸ τοῦ σώματος αὔταρκες οὐ δύναται ἑαυτὴν αὐτάρκη ποιῆσαι.

65 Δημοκρίτου.

Ἡ τέκνοισι ἄγαν χρημάτων συναγωγὴ πρόφασίς ἐστι φιλαργυρίης τρόπον ἴδιον ἐλέγχουσα.

66 Τοῦ αὐτοῦ.

Ὧν τὸ σκῆνος χρηίζει πᾶσι πάρεστιν εὐμαρέως ἄτερ μόχθου καὶ ταλαιπωρίης· ὁκόσα δὲ μόχθου καὶ ταλαιπωρίης χρηίζει καὶ βίον ἀλγύνει, τούτων οὐκ ἱμείρεται τὸ σκῆνος, ἀλλ' ἡ τῆς γνώμης κακοθηγίη.

67 Ἐκ τῶν Ἀριστοξένου Πυθαγορικῶν ἀποφάσεων.

Περὶ δὲ ἐπιθυμίας τάδε ἔλεγεν, εἶναι τὸ πάθος τοῦτο ποικίλον [καὶ πολύπονον] καὶ πολυειδέστατον· εἶναι δὲ τῶν ἐπιθυμιῶν τὰς μὲν ἐπικτήτους τε καὶ παρασκευαστάς, τὰς δὲ συμφύτους· αὐτὴν μέντοι τὴν ἐπιθυμίαν ἐπιφοράν τινα τῆς ψυχῆς καὶ ὁρμὴν καὶ ὄρεξιν εἶναι πληρώσεως, ἢ παρουσίας αἰσθήσεως, ἢ κενώσεως καὶ ἀπουσίας, καὶ τοῦ μὴ αἰσθάνεσθαι .... ἐπιθυμίας δὲ ἡμαρτημένης τε καὶ φαύλης τρία εἶναι ἤδη τὰ γνωρίσματα, ἀσχημοσύνην ἀσυμμετρίαν ἀκαιρίαν· ἢ γὰρ αὐτόθεν εἶναι τὴν ἐπιθυμίαν ἀσχήμονά τε καὶ φορτικὴν καὶ ἀνελεύθερον, ἢ τοῦτο μὲν οὔ, σφοδρότερον δὲ καὶ χρονιώτερον τοῦ προσήκοντος· ἢ τρίτον πρὸς ταῦτα, ὅτε οὐ δεῖ καὶ πρὸς ἃ οὐ δεῖ.

68 Πλάτωνος (Leg. V 736 e).

Πενίαν ἡγητέον εἶναι μὴ τὸ τὴν οὐσίαν ἐλάττω ποιεῖν, ἀλλὰ τὸ τὴν ἀπληστίαν πλείω.

69 Δημοκρίτου.

Τοῦ πλέονος ἐπιθυμίη τὸ παρεὸν ἀπόλλυσι, τῇ Αἰσωπηίῃ κυνὶ ἰκέλη γιγνομένη.

70 Ἐκ τῆς Νικολάου ἐθῶν συναγωγῆς.

Ὀμβρικοὶ ὅταν πρὸς ἀλλήλους ἔχωσιν ἀμφισβή-

τησιν, καθοπλισθέντες ὡς ἐν πολέμῳ μάχονται· καὶ δοκοῦσι δικαιότερα λέγειν οἱ τοὺς ἐναντίους ἀποσφάξαντες.

71 Κλειτοφῶντος ἐκ τοῦ ε΄ Ἰταλικῶν.

Βρέννος ὁ τῶν Γαλατῶν βασιλεὺς λεηλατῶν τὴν Ἀσίαν εἰς Ἔφεσον ἦλθε, καὶ στρατοπεδευσάμενος περιέμενε τοῦ πολέμου τὴν προθεσμίαν. παρθένος δέ τις τῶν ἐπισήμων τοὔνομα Δημονίκη εἰς ἐπιθυμίαν ἐμπεσοῦσα τοῦ βαρβάρου, προδώσειν αὐτῷ τὴν Ἔφεσον ὑπέσχετο, ἐὰν μισθὸν λάβοι τὰ ψέλια καὶ τοὺς ὅρμους· ὁ Βρέννος δὲ δεξάμενος αὐτὴν εἰς τόπον ὡρισμένον, ἤγαγε τοὺς ὑποτεταγμένους καὶ προσέταξεν αὐτοῖς τὸν χρυσὸν ὅσον εἶχον κόσμου χάριν βάλλειν εἰς τὸν τῆς φιλαργύρου κόλπον. ποιησάντων δὲ αὐτῶν τὸ παραγγελθέν, ἡ Δημονίκη ὑπὸ τῆς δαψιλείας τοῦ βαλλομένου χρυσοῦ ζῶσα κατεχώσθη.

72 Πλάτωνος πολιτείας β΄ (361 a).

Ἐσχάτη γὰρ ἀδικία δοκεῖν δίκαιον μὴ ὄντα.

73 Πλάτωνος πολιτείας α΄ (347 b).

Ἦ οὐκ οἶσθα ὅτι φιλάργυρόν τε καὶ φιλότιμον εἶναι ὄνειδος λέγεταί τε καὶ ἐστίν;

74 Ἐν ταυτῷ (350 d).

Ἐπειδὴ οὖν διωμολογησάμεθα τὴν δικαιοσύνην ἀρετὴν εἶναι καὶ σοφίαν, τὴν δὲ ἀδικίαν κακίαν τε καὶ ἀμαθίαν, εἶεν, ἦν δ' ἐγώ, τοῦτο μὲν ἡμῖν οὕτω κείσθω.

75 Πλάτωνος πολιτείας ι΄ (Leg. XII 941 b).

Κλοπὴ μὲν χρημάτων ἀνελεύθερον, ἁρπαγὴ δὲ ἀναίσχυντον.

76 Ἐν ταυτῷ (941 c).

Ἐάν τις τὶ κλέπτῃ δημόσιον μέγα ἢ καὶ σμικρόν, τῆς αὐτῆς δίκης δεῖ. σμικρόν τε γὰρ ὁ κλέπτων ἔρωτι μὲν ταυτῷ δυνάμει δὲ ἐλάττονι κέκλοφε.

77 Ἱέρακος περὶ δικαιοσύνης.

Ἐπειδὴ δὲ ὁ κατάρχων αὐτὸς πρὸ τῶν ἀδικεῖσθαι μελλόντων ἑαυτὸν ἀδικῶν ἀγνοεῖ, ἴστω ὡς διπλῆς οὔσης τῆς ἀδικίας αὐτὸς ἀπολαύει πρότερος, ἔπειτα καὶ τὸ ἀδικούμενον ὑπ' αὐτοῦ μέρος· μὴ γὰρ οὕτως ἀναισθητεῖν εἴη μηδενὶ τῶν ἀνοήτων, εἰ δυνατὸν δέ, μηδὲ τῶν πονηρῶν (ὑπὲρ γὰρ ὑγείας ψυχῆς ἡ εὐχή) ὡς δι' ἀναισθησίαν νομίζειν τοὺς ἀδικουμένους μᾶλλον τῶν ἀδικούντων βλάπτεσθαι. ἓν μὲν γὰρ μόνον ἐστὶ τὸ ἀδικούμενον ἐκ παντὸς ἡ ψυχή, τὸ δὲ ἀδικοῦν καὶ ἐπιβουλεῦον ἡ κακία, καὶ ἐν τῷ ἀδικοῦντι καὶ κατὰ τοῦ ἀδικουμένου, ἀλλὰ τὸν μὲν ἔλαττον τὸν δὲ πλεῖστον, ἔλαττον μὲν τὸν ἀδικεῖσθαι μέλλοντα, πλεῖστον δὲ τὸν ἀδικεῖν διανοούμενον, ἐπεὶ καὶ ἀπ' αὐτοῦ τὴν κίνησιν λαμβάνει καὶ τὴν ἔπαρσιν. ἐγειρομένη τοίνυν τὸν τεκόντᾰ πρῶτον ἀνάπτει, καὶ πρὶν τεκεῖν ἐν ταῖς ὠδῖσι φλέγει, καὶ διιοῦσα λυμαίνεται καὶ τῷ ἀπ' αὐτῆς ἰῷ χρῴζει δευσοποιῷ τῇ βαφῇ. οὔτε γὰρ τῷ πυρὶ τὴν τεκοῦσαν ὕλην διελθεῖν δυνατὸν ἐπὶ τὴν τῶν ἄλλων λύμην πρὶν παντελῶς αὐτὴν ἀναλῶσαι, οὔτε τῇ μυραίνῃ τοὺς ἐνύδρους ὄφεις εἰς ἄλλων ὄλεθρον ἀπογεννᾶν πρὶν τὴν κυήσασαν γαστέρα καταφαγεῖν, ὡς Νίκανδρος ὁ Κολοφώνιος καὶ Ἀρχέλαος ὁ φυσικὸς γράφουσιν· οὕτω καὶ πᾶς ἄδικος αὐτὸς τῆς κακίας πρῶτος γεύεται πρὶν εἰς ἄλλους ἀφιέναι. πολλοὶ γοῦν ἀνεγείραντες τὴν ἐν αὐτοῖς χολήν, ἐκ τῆς πρὸς ἄλλους ὀργῆς αὐτοὶ πρῶτον ἀπέθανον πρὶν τοὺς ἐχθροὺς τιμωρήσασθαι. τοῦτο τοίνυν ἀγνοήσαντες πολλοὶ ταῖς κα-

τὰ τῶν ἀσθενεστέρων ἀδικίαις ἀνέδην ἐχρήσαντο, μηδὲν εἶναι πρὸς αὐτοὺς οἰηθέντες τὸ λυπηρόν. τούτου δὲ ὁμολογουμένου δεῖ καθάπαξ παραιτεῖσθαι τὸ ἀδικεῖν.

78 Ἱέρακος ἐκ τοῦ περὶ δικαιοσύνης.

Ἢ τί φαίη τις ἂν περὶ τοῦ τοὺς τρόπους ἐριστικοῦ, κἂν μηδενὸς πώποτε κτήματος τῶν μηδὲν αὐτῷ προσηκόντων ἐφίεται; Πῶς ἂν δίκαιόν τι πράττοι, εἰ καθ' αὑτὸν ἐνθυμοῖτο μηδενὶ συντίθεσθαι τῶν ὁμολογουμένων ἀξίων, ἀλλ' ἐρίζειν πρὸς ἅπαντας παρεσκευασμένος, μέτρον δὲ οὐδέν, ἀλλ' οὐδὲ καιρὸν οὐδένα τιθέμενος εἰς φιλονεικίαν; οὐ γὰρ δὴ μόνον ἐν τοῖς λόγοις τὸ ὀρθῶς ἔχον ὁ τοιοῦτος ἀναιρεῖν πειρᾶται, ἀλλὰ καὶ ἐν τῷ πράττειν τὰ πολλὰ καὶ φιλονεικεῖν ὁδοὺς βιαίους πολλάκις καὶ διαστρόφους τὰς πράξεις ποιήσεται, ἑαυτὸν μὴ συναινοῦντα ταῖς τῶν πολλῶν δόξαις ἐπιδεικνύς· ἐκ τούτων δὲ αὐτὸς μὲν τοῖς ἄλλοις ἀπεχθής, τοὺς φεύγοντας δὲ αὐτὸν καὶ τὰς τοιαύτας συνουσίας μισήσει· τοὺς δ' ὑπ' ἐλευθερίας ἐλέγχοντας αὐτοῦ τὸ σκαιὸν τοῦ ἤθους, οὐδὲ ἰδεῖν ὀρθοῖς τοῖς ὀφθαλμοῖς ἀνέχεται· εἰ δὲ εἰς τοὺς ὁμοίους ἐμπέσοι (οὐ γὰρ δὴ πολλὴ σπάνις τῶν τοιούτων) εὐθὺς στάσεις λοιδορίαι καὶ πόλεμος ἄσπονδος, ἐξ ὧν ψευδεῖς διαβολαὶ καὶ πᾶν εἶδος ἐπιβουλῆς καὶ σκέψεις, ὅπως ἂν ἀλλήλους ἀπολέσειαν. τὰ γὰρ μεγάλα κακὰ οὐκ ἄλλως ἢ ἐκ τῆς τυχούσης φιλονεικίας συνίσταται.

ΠΕΡΙ ΑΛΗΘΕΙΑΣ. ΙΑ.

1 Μιμνέρμου Ναννοῦς.

Ἀληθείη δὲ παρέστω
σοὶ καὶ ἐμοί, πάντων χρῆμα δικαιότατον.

2 *Ὀλυμπιάδος.*
Ἀλάθεια θεῶν ὁμόπολις, μόνα θεοῖς συνδιαιτωμένα.

3 *Πινδάρου.*
Ἀρχὰ μεγάλας ἀρετᾶς ὤνασσ' ἀλάθεια,
μὴ πταίσῃς ἐμὰν σύνθεσιν τραχεῖ ποτὶ ψεύδει.

6 *Ἰλιάδος Ὁμήρου α'* (526).
Οὐ γὰρ ἐμὸν παλινάγρετον, οὐδ' ἀπατηλόν,
οὐδ' ἀτελεύτητον, ὅπερ ἂν κεφαλῇ κατανεύσω.

7 *Βακχυλίδου ὑπορχημάτων.*
Λυδία μὲν γὰρ λίθος μανύει χρυσόν· ἀνδρῶν
δ' ἀρετὰν σοφίαν τε παγκρατὴς ἐλέγχει ἀλάθεια.

8 *Αἰσχύλου ὅπλων κρίσεως.*
Ἁπλᾶ γάρ ἐστι τῆς ἀληθείας ἔπη.

9 *Σοφοκλέους Ἠλέκτρα* (467).
Δράσω· τὸ γὰρ δίκαιον οὐκ ἔχει λόγον
δυοῖν ἐρίζειν, ἀλλ' ἐπισπεύδει τὸ δρᾶν.

10 *Μενάνδρου Ῥαπιζομένῃ.*
Ἔρχεται τἀληθὲς εἰς φῶς ἐνίοτ' οὐ ζητούμενον.

11 *Μενάνδρου Ὑποβολιμαίῳ.*
Ἀεὶ κράτιστόν ἐστι τἀληθῆ λέγειν
ἐν παντὶ καιρῷ· τοῦτ' ἐγὼ παρεγγυῶ
εἰς ἀσφάλειαν τῷ βίῳ πλεῖστον μέρος.

12 *Εὐριπίδου Φοινίσσαις* (469).
Ἁπλοῦς ὁ μῦθος τῆς ἀληθείας ἔφυ,

---

4 *Ἐλευθέρου γὰρ ἀνδρὸς τἀληθῆ λέγειν* (Men. mon. 162).
Ἡ γλῶσσ' ἁμαρτάνουσα τἀληθῆ λέγει (Men. mon. 228).
5 *Πίστιν δ' ἐν πᾶσι φυλάσσειν* (Pseudophocyl. 13).

κοὐ ποικίλων δεῖ τἄνδιχ' ἑρμηνευμάτων·
ἔχει γὰρ αὐτὰ καιρόν· ὁ δ' ἄδικος λόγος
νοσῶν ἐν αὑτῷ φαρμάκων δεῖται σοφῶν.

13 *Σοφοκλέους Οἰδίποδος* (Col. 880).
Τοῖς τοι δικαίοις χὡ βραχὺς νικᾷ μέγαν.

14 *Ἰαμβλίχου Σωπάτρῳ.*
Ἀλήθεια μέν, ὥσπερ καὶ τοὔνομα δηλοῖ, περὶ θεοὺς ποιεῖ τὴν ἐπιστροφὴν καὶ τῶν θεῶν τὴν ἀκήρατον ἐνέργειαν· ἡ δὲ δοξομιμητικὴ αὕτη εἰδωλοποιία, ὥς φησι Πλάτων, περὶ τὸ ἄθεον καὶ σκοτεινὸν πλανᾶται. καὶ ἣ μὲν τοῖς νοητικοῖς εἴδεσι καὶ θείοις καὶ τοῖς ὄντως οὖσι καὶ κατὰ τὰ αὐτὰ ἀεὶ ἔχουσι τελειοῦται, ἣ δὲ τὸ ἀνείδεον καὶ μὴ ὂν καὶ ἄλλοτε ἄλλως ἔχον ἀποβλέπει καὶ περὶ αὐτοῦ ἀμβλυώττει. καὶ ἣ μὲν αὐτὸ ὃ ἐστὶ θεωρεῖ, ἣ δ' οἷον φαίνεται τοῖς πολλοῖς τοιοῦτον ὑποδύεται πρόσχημα. διόπερ δὴ ἣ μὲν πρὸς νοῦν ὁμιλεῖ καὶ τὸ ἐν ἡμῖν νοερὸν αὔξει, ἣ δὲ τῷ ἀεὶ δοκοῦντι θηρεύεται τὴν ἄνοιαν καὶ ἐξαπατᾷ.

15 *Ἐκ τῶν Σερήνου ἀπομνημονευμάτων.*
Πλάτων μὲν ἥδιστον εἶναι τῶν ἀκουσμάτων τὴν ἀλήθειαν ἔλεγε, Πολέμων δὲ πολὺ ἥδιον τοῦ ἀκούειν τὸ λέγειν εἶναι τἀληθῆ.

16 *Αἰσχίνου ἐν τῷ κατὰ Τιμάρχου* (p. 107).
Ὑμεῖς δ' ἐξεβάλετε αὐτὸν ὑπολαμβάνοντες· ἴσμεν, ὦ Πύρανδρε, ὅτι οὐ δεῖ γελᾶν τούτων ἐναντίον· ἀλλ' οὕτως ἰσχυρόν ἐστιν ἀλήθεια, ὥστε πάντων ἐπικρατεῖν τῶν ἀνθρωπίνων λογισμῶν.

17 *Γαΐου ἐκ τοῦ κατὰ Μουσαίου μοιχείας.*
Τότ' οὖν ἀπολαβὼν ἤδη θεράπαιναν ἠρώτα πῶς

ἔχοι τὰ περὶ τὴν γυναῖκα, ἣ δὲ οὐδὲ μελλήσασα εὐθὺς εἶπεν. οὕτω τὸ ἀληθὲς ἀμελέτητόν ἐστιν.

18 *Πλάτωνος νόμων ε′* (730 b).

Ἀλήθεια δὴ πάντων μὲν ἀγαθῶν θεοῖς ἡγεῖται πάντων δ᾽ ἀνθρώποις· ἧς ὁ γενήσεσθαι μέλλων μακάριός τε καὶ εὐδαίμων ἐξ ἀρχῆς εὐθὺς μέτοχος εἴη, ἵνα ὅτι πλεῖστον χρόνον ἀληθὴς ὢν διαβιοῖ, πιστὸς γάρ· ὁ δὲ ἄπιστος, ᾧ φίλον ψεῦδος ἑκούσιον· ὅτῳ δ᾽ ἀκούσιον, ἄνους· ὧν οὐδέτερον ζηλωτόν. ἄφιλος γὰρ δὴ πᾶς, ὅ τε ἄπιστος καὶ ἀμαθής.

19 Ἡγουμένης δὲ ἀληθείας οὐκ ἄν ποτε, οἶμαι, φαμὲν αὐτῇ χορὸν κακῶν ἀκολουθῆσαι. (Plato Rep. 490 c.)

20 *Ἀπολλώνιος Δηλίῳ.*

Ψεύδεσθαι ἀνελεύθερον, ἀλήθεια γενναῖον.

21 *Εὐσεβίου.*

Ἀληθείην νόος ἀσπάζεται καὶ αἰεὶ αὐτῇ συνοικέει· ἐὼν δὲ ἐν τοῖς ἑωυτοῦ ἀψευδέστατος, ὅμως ἔστιν ὅτε καὶ ψεῦδος ἀγαθῷ κεράσας παρέχεται ἐπ᾽ ὠφελίῃ ἀνθρώπων τῶν τούτου χρῃζόντων καὶ ἐπὶ χρηστῷ τῷ σφετέρῳ παραλογισθησομένων πρὸς αὐτοῦ. τότε γὰρ δὴ μοῦνον καὶ οὔκοτε ἄλλοτε νόος, καὶ ἐν καιρῷ τῷ αὐτὸς οἶδε, πάντα τἄλλα ψεύδεα ἀποστυγέων, ψεῦδος τὸ τοιοῦτον εἰσφέρεται, ἀπὸ τῆς τῶν λοιπῶν ἁπάντων ψευδέων φύσιος ἐς ἄλλο εἶδος μεταμειφθὲν χρησιμώτατον, τέχνῃ καὶ σοφίῃ αὐτοῦ τοῦ νόου τοῦ φαῦλον πρῆγμα ἐς τοῦτο μετακοσμήσαντος.

22 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Ψεύδεσθαι ἐν πόλει μηδὲ εἷς νόμος ξυγχωρεέτω μηδενὶ πλὴν τοῦ φιλαληθέος καὶ νοήμονος ἐπισταμένου τε ὁκότε καὶ ὅκως ὠφελίῃ ψεύδεος, τῆς δὲ

ἀπὸ τούτου γινομένης χρείης ἀναγκαίης καὶ τοῦτο ποιέειν.

23 Ἑρμοῦ ἐκ τῶν πρὸς Τάτ.

Περὶ ἀληθείας, ὦ Τάτ, οὐκ ἔστι δυνατὸν ἄνθρωπον ὄντα, ζῶον ἀτελὲς ἐξ ἀτελῶν συγκείμενον μελῶν καὶ ἐξ ἀλλοτρίων σωμάτων καὶ πολλῶν τὸ σκῆνος συνεστός, τολμήσαντα εἰπεῖν· ὃ δ' ἐστὶ δυνατὸν καὶ δίκαιον, τοῦτο φημί, ἀλήθειαν εἶναι ἐν μόνοις τοῖς ἀιδίοις σώμασιν, ὧν καὶ τὰ σώματα αὐτὰ ἀληθῆ ἐστι, πῦρ αὐτοπῦρ μόνον καὶ οὐδὲν ἄλλο, γῆ αὐτογῆ καὶ οὐδὲν ἄλλο, ἀὴρ αὐτοαὴρ καὶ οὐδὲν ἄλλο, ὕδωρ αὐτοῦδωρ καὶ οὐδὲν ἄλλο· τὰ δὲ ἡμέτερα σώματα ἐκ πάντων τούτων συνέστηκεν· ἔχει μὲν γὰρ πυρός, ἔχει δὲ καὶ γῆς, ἔχει καὶ ὕδατος καὶ ἀέρος, καὶ οὔτε πῦρ ἐστιν οὔτε γῆ οὔτε ὕδωρ οὔτε ἀὴρ οὔτε οὐδὲν ἀληθές· εἰ δὲ μὴ τὴν ἀρχὴν ἡ σύστασις ἡμῶν ἔσχε τὴν ἀλήθειαν, πῶς ἂν δύναιτο ἀλήθειαν ἢ ἰδεῖν ἢ εἰπεῖν; νοῆσαι δὲ μόνον, ἐὰν ὁ θεὸς θέλῃ. πάντα οὖν, ὦ Τάτιε, τὰ ἐπὶ γῆς ἀλήθεια μὲν οὐκ ἔστι, τῆς δὲ ἀληθείας μιμήματα· καὶ οὐ πάντα, ὀλίγα δὲ ταῦτα, ἄλλα δὲ ψεῦδος καὶ πλάνος, ὦ Τάτιε, καὶ δόξαι φαντασίας καθάπερ εἰκόνες συνεστῶτα. ὅταν δ' ἄνωθεν τὴν ἐπίρροιαν ἔχῃ ἡ φαντασία, τῆς ἀληθείας γίγνεται μίμησις· χωρὶς δὲ τῆς ἄνωθεν ἐνεργείας ψεῦδος καταλείπεται· καθάπερ καὶ ἡ εἰκὼν τὸ μὲν σῶμα τῇ γραφῇ δείκνυσιν, αὐτὴ δὲ οὐκ ἔστι σῶμα κατὰ τὴν φαντασίαν τοῦ ὁρωμένου. καὶ ὀφθαλμοὺς μὲν ὁρᾶται ἔχουσα, βλέπει δὲ οὐδέν· καὶ ὦτα, ἀκούει δὲ οὐδὲν ὅλως. καὶ τὰ ἄλλα πάντα ἔχει μὲν ἡ γραφή, ψευδῆ δέ ἐστι τὰς τῶν ὁρώντων ὄψεις ἐξαπατῶντα, τῶν μὲν δοκούντων ἀλήθειαν ὁρᾶν, τῶν δὲ ὡς ἀληθῶς ὄντων

ψευδῶν. ὅσοι μὲν οὖν οὐ ψεῦδος ὁρῶσιν, ἀλήθειαν ὁρῶσιν . . . . ἐὰν οὖν ἕκαστον τούτων οὕτω νοῶμεν ἢ ὁρῶμεν ὡς ἔστιν, ἀληθὲς καὶ νοοῦμεν καὶ ὁρῶμεν· ἐὰν δὲ παρὰ τὸ ὄν, οὐδὲν ἀληθὲς οὔτε νοήσομεν οὔτ' εἰσόμεθα. Ἔστιν οὖν, πάτερ, ἀλήθεια καὶ ἐν τῇ γῇ; Καὶ οὐκ ἀσκόπως σφάλλῃ, ὦ τέκνον. ἀλήθεια μὲν οὐδαμῶς ἐστὶν ἐν τῇ γῇ, ὦ Τάτιε, οὔτε γενέσθαι δύναται· περὶ δὲ ἀληθείας νοῆσαι ἐνίους τῶν ἀνθρώπων, οἷς ἂν ὁ θεὸς τὴν θεοπτικὴν δωρήσηται δύναμιν γενέσθαι. οὕτως ἀληθὲς οὐδὲν ἔστιν ἐν τῇ γῇ νοῶ καὶ λέγω· φαντασίαι εἰσὶ καὶ δόξαι πάντα, ἀληθῆ νοῶ καὶ λέγω. οὐκ οὖν τό τε ἀληθῆ νοεῖν καὶ λέγειν, τοῦτο ἀλήθειαν δεῖ καλεῖν; τί δαί; τὰ ὄντα δεῖ νοεῖν καὶ λέγειν; ἔστι δὲ οὐδὲν ἀληθὲς ἐπὶ τῆς γῆς. τοῦτο ἀληθές ἐστι τὸ μὴ εἰδέναι μηδὲν ἀληθὲς ἐνθάδε, πῶς ἂν καὶ δύναιτο γενέσθαι, ὦ τέκνον; ἡ γὰρ ἀλήθεια τελεωτάτη ἀρετή ἐστιν, αὐτὸ τὸ ἄκρατον ἀγαθόν, τὸ μήτε ὑπὸ ὕλης θολούμενον μήτε ὑπὸ σώματος περιβαλλόμενον, γυμνὸν φανὸν ἄτρεπτον σεμνὸν ἀναλλοίωτον ἀγαθόν· τὰ δὲ ἐνθάδε, ὦ τέκνον, οἷά ἐστιν ὁρᾷς ἄδεκτα τούτου τοῦ ἀγαθοῦ, φθαρτὰ παθητὰ διαλυτὰ τρεπτὰ ἀεὶ ἐναλλοιούμενα, ἄλλα ἐξ ἄλλων γινόμενα. ἃ οὖν μηδὲ πρὸς ἑαυτὰ ἀληθῆ ἐστι, πῶς ἂν δύναιτο ἀληθῆ εἶναι; πᾶν γὰρ τὸ ἀλλοιούμενον ψεῦδός ἐστι, μὴ μένον ἐν ᾧ ἐστί, φαντασίας δὲ μετατρεπόμενον ἄλλας καὶ ἄλλας ἐπιδείκνυται ἡμῖν. Οὐδὲ ἄνθρωπος ἀληθής ἐστιν, ὦ πάτερ; Καθότι ἄνθρωπος, οὐκ ἔστιν ἀληθής, ὦ τέκνον. τὸ γὰρ ἀληθές ἐστι τὸ ἐξ αὐτοῦ μόνον τὴν σύστασιν ἔχον καὶ μένον καθ' αὐτὸ οἷον ἐστίν· ὁ δὲ ἄνθρωπος ἐκ πολλῶν συνέστηκε καὶ οὐ μένει καθ' αὐτόν, τρέπεται δὲ καὶ μεταβάλλεται ἡλικίαν ἐξ ἡλικίας καὶ ἰδέαν ἐξ ἰδέας, καὶ ταῦτα ἔτι

ὧν ἐν τῷ σκήνει. καὶ πολλοὶ τέκνα οὐκ ἐγνώρισαν χρόνου ὀλίγου μεταξὺ γενομένου, καὶ πάλιν τέκνα γονεῖς ὁμοίως. τὸ οὖν οὕτως μεταβαλλόμενον ὥστε ἀγνοεῖσθαι, δύναται ἀληθὲς εἶναι, ὦ Τάτιε; οὐ τοὐναντίον ψεῦδός ἐστιν ἐν ποικίλαις γινόμενον φαντασίαις τῶν μεταβολῶν; σὺ δὲ νόει ἀληθές τι εἶναι τὸ μένον καὶ ἀίδιον· ὁ δὲ ἄνθρωπος οὐκ ἔστιν ἀεί· ἄρα οὐδὲ ἀληθές ἐστι. φαντασία δέ ἐστί τις ὁ ἄνθρωπος, ἡ δὲ φαντασία ψεῦδος ἂν εἴη ἀκρότατον. Οὐδὲ ταῦτα οὖν, ὦ πάτερ, τὰ ἀίδια σώματα, ἐπεὶ μεταβάλλεται, ἀληθῆ ἐστι. Πᾶν μὲν οὖν τὸ γεννητὸν καὶ μεταβλητὸν οὐκ ἀληθές· ὑπὸ δὲ τοῦ προπάτορος γενόμενα τὴν ὕλην δύναται ἀληθῆ ἐσχηκέναι. ἔχει δέ τι καὶ ταῦτα ψεῦδος ἐν τῇ μεταβολῇ· οὐδὲν γὰρ μὴ μένον ἐφ' αὑτῷ ἀληθές ἐστιν. Ἀληθές, ὦ πάτερ. Τί οὖν ἂν εἴποι τις μόνον τὸν ἥλιον παρὰ τὰ ἄλλα πάντα μὴ μεταβαλλόμενον, μένοντα δὲ ἐφ' ἑαυτῷ, ἀλήθειαν; διὸ καὶ τὴν ἐν τῷ κόσμῳ πάντων δημιουργίαν αὐτὸς μόνος πεπίστευται, ἄρχων πάντων καὶ ποιῶν πάντα, ὃν καὶ σέβομαι, καὶ προσκυνῶ αὐτοῦ τὴν ἀλήθειαν, καὶ μετὰ τὸν ἕνα καὶ πρῶτον τοῦτον δημιουργὸν γνωρίζω. Τί οὖν ἂν εἶναι τὴν πρώτην ἀλήθειαν, ὦ πάτερ; Ἕνα καὶ μόνον, ὦ Τάτιε, τὸν μὴ ἐξ ὕλης, τὸν μὴ ἐν σώματι, τὸν ἀχρώματον, τὸν ἀσχημάτιστον, τὸν ἄτρεπτον, τὸν μὴ ἀλλοιούμενον, τὸν ἀεὶ ὄντα. τὸ δὲ ψεῦδος, ὦ τέκνον, φθείρεται. πάντα δὲ τὰ ἐπὶ γῆς φθορὰ κατέλαβε καὶ ἐμπεριέχει, καὶ ἐμπεριέξει ἡ τοῦ ἀληθοῦς πρόνοια. χωρὶς γὰρ φθορᾶς οὐδὲ γένεσις δύναται συστῆναι· πάσῃ δὲ γενέσει φθορὰ ἕπεται, ἵνα πάλιν γένηται· τὰ γὰρ γιγνόμενα ἐκ τῶν φθειρομένων ἀνάγκη γίγνεσθαι, φθείρεσθαι δὲ τὰ γιγνόμενα ἀνάγκη, ἵνα μὴ στῇ ἡ γένεσις τῶν ὄντων. πρῶ-

τον τοῦτον δημιουργὸν γνώριζε εἰς τὴν γένεσιν τῶν ὄντων. τά γ' οὖν ἐκ φθορᾶς γινόμενα ψευδῆ ἂν εἴη, ὡς ποτὲ μὲν ἄλλα ποτὲ δὲ ἄλλα γινόμενα· τὰ γὰρ αὐτὰ γίνεσθαι ἀδύνατον· τὸ δὲ μὴ αὐτό, πῶς ἂν ἀληθὲς εἴη; φαντασίας οὖν καλεῖν δεῖ τὰ τοιαῦτα, ὦ τέκνον, εἴ γε ὀρθῶς προσαγορεύομεν τὸν ἄνθρωπον, ἀνθρωπότητος φαντασίαν· τὸ δὲ παιδίον παιδίου φαντασίαν, τὸν δὲ νεανίσκον νεανίσκου φαντασίαν, τὸν δὲ ἄνδρα ἀνδρὸς φαντασίαν, τὸν δὲ γέροντα γέροντος φαντασίαν. οὔτε γὰρ ὁ ἄνθρωπος ἄνθρωπος, οὔτε τὸ παιδίον παιδίον, οὔτε ὁ νεανίσκος νεανίσκος, οὔτε ὁ ἀνὴρ ἀνήρ, οὔτε ὁ γέρων γέρων· μεταβαλλόμενα δὲ ψεύδεται καὶ τὰ προόντα καὶ τὰ ὄντα. ταῦτα μέντοι οὕτω νόει, ὦ τέκνον, ὡς καὶ τῶν ψευδῶν τούτων ἐνεργειῶν ἄνωθεν ἠρτημένων ἀπ' αὐτῆς τῆς ἀληθείας· τούτου δὲ οὕτως ἔχοντος, τὸ ψεῦδος φημὶ τῆς ἀληθείας ἐνέργημα εἶναι.

24 Ἐκ τῶν Ὁμήρου (Il. α' 525).

Ὅτι ἡ ἀλήθεια κάλλιστον καὶ ἐν θεοῖς ὑπάρχει μέγιστον, δηλοῖ διὰ τῶν ἐπῶν τούτων·

Τοῦτο γὰρ ἐξ ἐμέθεν γε μετ' ἀθανάτοισι μέγιστον
τέκμωρ. οὐ γὰρ ἐμὸν παλινάγρετον, οὐδ' ἀπατηλόν,
οὐδ' ἀτελεύτητον, ὅ τι κεν κεφαλῇ κατανεύσω.

Τριῶν γὰρ αἰτιῶν οὐσῶν δι' ἃς ἄνθρωποι παραβαίνουσι τὰς ὑποσχέσεις καὶ ψεύδονται· ἢ γὰρ εὐθὺς ἐξαπατῶν τις ἔφησεν ἢ φήσας ὕστερον μετενόησεν ἢ βουλόμενος ἐξησθένησε· τούτων δὲ τὸ μέν ἐστι φαύλης προαιρέσεως τὸ δὲ ἀσθενοῦς κρίσεως τὸ δὲ ἐνδεοῦς δυνάμεως. πάντα δὲ ὁ θεὸς ἐκπέφευγε· τῷ φιλαγάθῳ τὸ ἀπατηλόν, καὶ τῷ βεβαίῳ τὸ παλινάγρετον, καὶ τῷ τελεσιουργῷ τὸ ἀτελεύτητον.

25 *Πυθαγόρου.*

Πυθαγόρας ἐρωτηθεὶς τί ποιοῦσιν ἄνθρωποι θεοῖς ὅμοιον ἔφη "ἐὰν ἀληθεύωσιν." Οἱ δὲ μάγοι ἀποφαίνονται τοῦ μεγίστου τῶν θεῶν, ὃν Ὡρομάγδην καλοῦσιν, ἐοικέναι τὸ μὲν σῶμα φωτὶ τὴν δὲ ψυχὴν ἀληθείᾳ.

ΠΕΡΙ ΨΕΥΔΟΥΣ. ΙΒ.

1 *Εὐριπίδου.*

Δύστηνος, ὅστις καὶ τὰ καλὰ ψευδῆ λέγων,
οὐ τοῖσδε χρῆται τοῖς κακοῖς ἀληθέσιν.

2 *Σοφοκλέους Ἀκρισίῳ.*

Ἀλλ' οὐδὲν ἕρπει ψεῦδος ἐς γῆρας χρόνου.

2ª *Τοῦ αὐτοῦ Ἀλεάδαις.*

3 *Κακὸν τὸ κεύθειν κοὐ πρὸς ἀνδρὸς εὐγενοῦς.*

4 *Σοφοκλέους Κρεούσῃ.*

Καλὸν μὲν οὖν οὐκ ἔστι τὰ ψευδῆ λέγειν,
ὅτῳ δ' ὄλεθρον δεινὸν ἀλήθει' ἄγει,
συγγνωστὸν εἰπεῖν ἐστὶ καὶ τὸ μὴ καλόν.

5 *Μενάνδρου.*

Κρεῖττον λέγεσθαι ψεῦδος ἢ ἀληθὲς κακόν.

6 *Πεισάνδρου.*

Οὐ νέμεσις καὶ ψεῦδος ὑπὲρ ψυχῆς ἀγορεύειν.

7 *Ὁμήρου* (Odyss. γ' 20).

Ψεῦδος δ' οὐκ ἐρέει, μάλα γὰρ πεπνυμένος ἐστί.

8 *Μενάνδρου.*

Τὸ ψεῦδος ἰσχὺν τῆς ἀληθείας ἔχει
ἐνίοτε μείζω καὶ πιθανωτέραν ὄχλου.

9 *Μενάνδρου.*
Ἦ που τι χαλεπόν ἐστι τὸ ψευδῆ λέγειν.

10 *Εὐριπίδου Ἱππολύτου.*
Ἔγωγέ φημι καὶ νόμον γε μὴ σέβειν
ἐν τοῖσι δεινοῖς τῶν ἀναγκαίων πλέον.

11 *Διφίλου.*
Καιρῷ τιθέμενον κέρδος ὡς καρπὸν φέρει.

12 *Διφίλου Θησαυροῦ.*
Ὑπολαμβάνω τὸ ψεῦδος ἐπὶ σωτηρίᾳ
λεγόμενον οὐθὲν περιποιεῖσθαι δυσχερές.

13 *Δημοκρίτου.*
Ἀληθομυθεύειν χρεὼν ὅπου λώιον.

14 *Θαλῆς.*
Θαλῆς ὁ Μιλήσιος ἐρωτηθεὶς πόσον ἀπέχει τὸ ψεῦδος τοῦ ἀληθοῦς "ὅσον" ἔφη "ὀφθαλμοὶ τῶν ὤτων."

15 *Χαιρήμονος.*
Ψευδῆ δὲ τοῖς ἐσθλοῖσιν οὐ πρέπει λέγειν.

17 *Θεόγνιδος* (607).
Ἀρχῇ ἐπὶ ψεύδους μικρὰ χάρις, εἰς δὲ τελευτὴν
αἰσχρὸν δὴ κέρδος καὶ κακὸν ἀμφότερα

---

16 *Ἐχθρὸς γάρ μοι κεῖνος ὁμῶς αἴδαο πύλῃσιν,*
ὅς χ' ἕτερον μὲν κεύθει ἐνὶ φρεσίν, ἄλλο δὲ εἴπῃ (Il. ι' 312).
Ψεύδεα μὴ βάζειν· τὰ δ' ἐτήτυμα πάντ' ἀγορεύειν (Pseudoph. 7).
Μηδ' ἕτερον κεύθῃς κραδίῃ νόον, ἄλλ' ἀγορεύων (ibid. 48).
Ψεῦδος δὲ μισεῖ πᾶς φρόνιμος καὶ σοφός.
Ψεῦδος δὲ μισεῖ πᾶς σοφὸς καὶ χρήσιμος (Men. mon. 554).
Ψεύδους διαβολὴ τὸν βίον λυμαίνεται (ibid. 553).
Ψευδόμενος οὐδεὶς λανθάνει πολὺν χρόνον (ibid. 547).
Μήτε δόλους ῥάπτειν (Pseudophocyl. 4).
Μαρτυρίην ψευδῆ φεύγειν, τὰ δίκαι' ἀγορεύειν (ibid. 12).

γίνεται. οὐδέ τι καλὸν ὅτῳ ψεῦδος προσομαρτῇ ἀνδρὶ καὶ ἐξέλθῃ πρῶτον ἀπὸ στόματος.

18 *Δημήτριος* ἐρωτηθεὶς τί φαῦλον τοῖς ψευδομένοις παρακολουθεῖ εἶπε "τὸ μηδ' ἂν τἀληθῆ λέγωσιν ἔτι πιστεύεσθαι."

19 *Θεοφράστου.*

Ἐκ διαβολῆς καὶ φθόνου ψεῦδος ἐπ' ὀλίγον ἰσχῦσαν ἀπεμαράνθη.

20 *Αἰλιανοῦ* (VH. VII, 20).

Ἀνὴρ εἰς Λακεδαίμονα ἀφίκετο Χῖος γέρων ἤδη ὤν, τὰ μὲν ἄλλα ἀλαζών, ᾐδεῖτο δὲ ἐπὶ τῷ γήρᾳ καὶ τὴν τρίχα πολιὰν οὖσαν ἐπειρᾶτο βαφῇ ἀφανίζειν. παρελθὼν οὖν εἶπεν ἐκεῖνα ὑπὲρ ὧν καὶ ἀφίκετο. ἀναστὰς οὖν ὁ Ἀρχίδαμος "τί ἂν" ἔφη "οὗτος ὑγιὲς εἴποι, ὃς οὐ μόνον ἐπὶ τῇ ψυχῇ τὸ ψεῦδος, ἀλλὰ καὶ ἐπὶ τῇ κεφαλῇ περιφέρει;"

21 *Λυσίου.*

Ψεύδεσθαι προχειρότατον τοῖς πολλάκις ἁμαρτάνουσιν.

22 *Θεμιστίου ἐκ τοῦ Βασανιστοῦ ἢ φιλοτέκνου* (258 b).

Οὐδεμία γὰρ μοχθηρία μᾶλλον δυσκοινώνητος ἀπιστίας· ἀλλ' αὕτη ἐστὶν ἡ κακία, πρὸς ἣν μόνην καὶ φυλακῆς ἐξαποροῦμεν. καὶ γὰρ δὴ ὃ μόνον ἐπορισάμεθα φυλακτήριον, λέγω δὲ τὸν ὅρκον, * τούτῳ αὐτῷ μάλιστα καταχρῆται, * ὅταν δέῃ τι ἄπιστον ἄνδρα κακῶς δράσαντα ἐξαρνήσασθαι. * ἔστι δὲ δή τι καὶ ἕτερον ψεῦδος, ὃ τοὺς μὲν ἄλλους οὐ πάνυ δή τι λυμαίνεται, αἶσχος δέ ἐστι τοῦ χρωμένου· γίνεται γὰρ οὐκ ἐν τῷ καθ' ἑτέρου τὶ λέγειν ἢ πράττειν, ἀλλ'

ἐν τῷ περὶ αὐτοῦ τε καὶ τῶν ἑαυτοῦ. διπλοῦν δὲ τοῦτο καὶ δισχιδές· ἢ γὰρ ἐν τῷ φαυλότερα καὶ ἐλάττω λέγειν τῶν προσόντων ἀληθινῶς, ἢ ἐν τῷ μείζω τε καὶ σεμνότερα. καλεῖται δὲ τὸ μὲν ἐνδεέστερον εἰρωνεία, τὸ δὲ πλέον ἀλαζονεία. τὸ μὲν δὴ ἐλλεῖπον τοῦ ἀληθοῦς κομψόν τέ ἐστι καὶ αἱμύλον καὶ ἐνίοτε οὐκ ἄχρηστον τῷ φιλοσόφῳ, καὶ διὰ τοῦτο αὐτὸ καὶ Σωκράτης παρελάμβανεν ἐν τοῖς λόγοις, ὁπότε ἐδεῖτο ἐπισκῶψαί τινα σοφιστὴν τύφου μεστὸν καὶ γέμοντα περιφροσύνης. μᾶλλον γάρ τι αἰσθάνονται τῆς ἑαυτῶν οὐδενείας, ὅταν ἀμαθέστεροι ἐξελέγχωνται τοῦ μηδὲν εἰδέναι προσποιουμένου. τὸ δὲ ἕτερον τὸ ὑπερβάλλον βαρύ τε καὶ ἐπαχθές, καὶ οὐδὲν οὕτως ἄκουσμα φορτικὸν ὡς ὁ καθ' αὑτοῦ ἔπαινος, καὶ ταῦτα ἐπὶ παιδείᾳ, ἐφ' ᾗ καὶ ἄλλων ἐπαινούντων ἐρυθριᾶν χρεὼν τοὺς ἀληθινῶς αὐτῆς ἐπηβόλους. — Οὐκ οὖν καὶ πρὸς ἀλήθειαν, ταυτὸν τοῦτο ἀνάπηρον ψυχὴν θήσομεν, ἣ ἂν τὸ μὲν ἑκούσιον ψεῦδος μισῇ, καὶ χαλεπῶς φέρῃ αὐτή τε καὶ ἑτέρων ψευδομένων ὑπεραγανακτῇ, τὸ δὲ ἀκούσιον εὐκόλως προσδέχηται, καὶ ἀμαθαίνουσά που ἁλισκομένη μὴ ἀγανακτῇ, ἀλλ' εὐχερῶς ὥσπερ θηρίον ὕειον ἐν ἀμαθίᾳ μολύνηται;

23 Ἡροδότου (III, 72).

Ἔνθα γάρ τι δεῖ καὶ ψεῦδος λέγεσθαι, λεγέσθω.

24 Πλάτωνος ἐκ τοῦ σοφιστοῦ (240 c).

Ὁρᾷς γοῦν ὅτι καὶ νῦν διὰ τῆς ἐπάλξεως ταύτης ὁ πολυκέφαλος σοφιστὴς ἠνάγκασεν ἡμᾶς τὸ μὴ ὂν οὐχ ἑκόντας ὁμολογεῖν εἶναί πως; Ὁρῶ καὶ μάλα. Τί δαὶ δή; τὴν τέχνην αὐτοῦ τίνα ἀφορίζοντες ἡμῖν αὐτοῖς συμφωνεῖν οἷοί τε ἐσόμεθα; Πῇ καὶ τὸ ποιόν τι φοβούμενος οὕτω λέγεις; Ὅταν περὶ τὸ φάντασμα

αὐτὸν ἀπατᾶν φῶμεν καὶ τὴν τέχνην εἶναί τινα ἀπατητικὴν αὐτοῦ, τότε πότερον ψευδῆ δοξάζειν τὴν ψυχὴν ἡμῶν φήσομεν ὑπὸ τῆς ἐκείνου τέχνης, ἢ τί ποτ' ἐροῦμεν; Τοῦτο. τί γὰρ ἂν ἄλλο εἴποιμεν; Ψευδὴς δ' αὖ δόξα ἔσται τἀναντία τοῖς οὖσι δοξάζουσα; ἢ πῶς; Τὰ ἐναντία. Λέγεις ἄρα τὰ μὴ ὄντα δοξάζειν τὴν ψευδῆ δόξαν; Ἀνάγκη. Πότερον μὴ εἶναι τὰ μὴ ὄντα δοξάζουσαν, ἢ πῶς λέγεις εἶναι τὰ μηδαμῶς ὄντα; Εἶναί πως τὰ μὴ ὄντα δεῖ γε, εἴπερ ψεύσεταί ποτέ τις τὶ καὶ κατὰ βραχύ. Τί δ'; οὐ καὶ μηδαμῶς εἶναι τὰ πάντως ὄντα δοξάζεται; Ναί. Καὶ τοῦτο δὴ ψεῦδος; Καὶ τοῦτο. Καὶ λόγος, οἶμαι, ψευδής, οὕτω κατὰ ταυτὰ νομισθήσεται, τά τε ὄντα λέγων μὴ εἶναι καὶ τὰ μὴ ὄντα εἶναι. Πῶς γὰρ ἂν ἄλλως τοιοῦτος γένοιτο;

25 Ἐν ταυτῷ (260 b).

Τὸ μὲν δὴ μὴ ὂν ἡμῖν ἕν τι τῶν ἄλλων γένος ὂν ἀνεφάνη, κατὰ πάντα τὰ ὄντα διεσπαρμένον. Οὕτως. Οὐκ οὖν τὸ μετὰ τοῦτο σκεπτέον, εἰ δόξῃ τε καὶ λόγῳ μίγνυται; Τί δή; Μὴ μιγνυμένου μὲν αὐτοῦ τούτοις, ἀναγκαῖον ἀληθῆ πάντ' εἶναι· μιγνυμένου δέ, δόξα τε ψευδὴς γίνεται καὶ λόγος. τὸ γὰρ τὰ μὴ ὄντα δοξάζειν ἢ λέγειν, τοῦτ' ἐστί που τὸ ψεῦδος ἐν διανοίᾳ τε καὶ λόγοις γιγνόμενον. Οὕτως. Ὄντος δέ γε ψεύδους ἔστιν ἀπάτη; Ναί. Καὶ μὴν ἀπάτης οὔσης, εἰδώλων τε καὶ εἰκόνων ἤδη καὶ φαντασίας ἅπαντα ἀνάγκη μεστὰ εἶναι. Πῶς γὰρ οὔ;

26 Πλάτωνος ἐκ τοῦ περὶ δικαίου (374 b).

Φέρε δή, πότερον ἡγῇ δίκαιον εἶναι ψεύδεσθαι ἢ ἀληθῆ λέγειν; Ἀληθῆ ἔγωγε. Ψεύδεσθαι ἄρα ἄδικον; Ναί. Πότερον δὲ καὶ ἐξαπατᾶν ἡγῇ δίκαιον ἢ

μὴ ἐξαπατᾶν; Μὴ ἐξαπατᾶν δήπου. Ἐξαπατᾶν ἄρα ἄδικον; Ναί. Τί δαί, βλάπτειν δίκαιον ἢ ὠφελεῖν; Ὠφελεῖν. Βλάπτειν ἄρα ἄδικον; Ναί. Ἔστιν ἄρα ἀληθῆ μὲν λέγειν καὶ μὴ ἐξαπατᾶν καὶ ὠφελεῖν δίκαιον, ψεύδεσθαι δὲ καὶ βλάπτειν καὶ ἐξαπατᾶν ἄδικον; Ναὶ μὰ Δία σφόδρα γε. Ἦ καὶ τοὺς πολεμίους; Οὐδαμῶς. Ἀλλὰ βλάπτειν δίκαιον τοὺς πολεμίους, ὠφελεῖν δὲ ἄδικον; Ναί. Οὐκ οὖν καὶ ἐξαπατῶντας δίκαιον βλάπτειν τοὺς πολεμίους; Πῶς γὰρ οὔ; Τί δέ, ψεύδεσθαι ἵνα ἐξαπατῶμεν καὶ βλάπτωμεν αὐτοὺς οὐ δίκαιον; Ναί. Τί δαί, τοὺς φίλους οὐκ ὠφελεῖν δίκαιον εἶναι φής; Ἔγωγε. Πότερον μὴ ἐξαπατῶντας ἢ ἐξαπατῶντας ἐπ' ὠφελείᾳ τῇ ἐκείνων; Καὶ ἐξαπατῶντας νὴ Δία. Ἀλλ' ἐξαπατῶντας μὲν δίκαιον ἄρα ὠφελεῖν, οὐ μέντοι ψευδομένους γε ἢ καὶ ψευδομένους; Καὶ ψευδομένους δίκαιον. Ἔστιν ἄρα, ὡς ἔοικε, ψεύδεσθαί τε καὶ ἀληθῆ λέγειν δίκαιον καὶ ἄδικον; Ναί. Καὶ μὴ ἐξαπατᾶν καὶ ἐξαπατᾶν, δίκαιον καὶ ἄδικον; Ἔοικε. Καὶ βλάπτειν καὶ ὠφελεῖν, δίκαιον καὶ ἄδικον; Ναί. Ταῦτα δή, ὡς ἔοικε, πάντα τὰ τοιαῦτα ὄντα, καὶ δίκαια καὶ ἄδικα ἔστιν; Ἔμοιγε φαίνεται. Ἄκουε δή. Ὀφθαλμὸν ἐγὼ ἔχω δεξιὸν καὶ ἀριστερόν, ὥσπερ καὶ οἱ ἄλλοι ἄνθρωποι; Ναί. Καὶ μυκτῆρα δεξιὸν καὶ ἀριστερόν, καὶ χεῖρα δεξιὰν καὶ ἀριστεράν; Ναί. Οὐκ οὖν ἐπειδὴ ταυτὰ ὀνομάζων τὰ μὲν δεξιὰ φὴς εἶναι τὰ δὲ ἀριστερὰ τῶν ἐμῶν, εἴ σε ἐγὼ ἐροίμην, ὁπότερα ἂν ἔχοις εἰπεῖν, ὅτι τὰ μὲν πρὸς τοῦδε δεξιά ἐστι, τὰ δὲ πρὸς σοῦ ἀριστερά; Ναί. Ἴθι δὴ καὶ ἐκεῖ. Ἐπειδὴ ταυτὰ ὀνομάζων τὰ μὲν δίκαια φὴς εἶναι τὰ δὲ ἄδικα, ἔχεις εἰπεῖν, ὁπότερα τὰ δίκαια καὶ ὁπότερα τὰ ἄδικα; Ἐμοὶ μὲν τοίνυν δοκεῖ, ἐν μὲν τῷ δέοντι καιρῷ ἕκαστα τούτων

γιγνόμενα δίκαια εἶναι, ἐν δὲ τῷ μὴ δέοντι ἄδικα. Καλῶς γέ σοι δοκοῦν· ὁ μὲν ἄρα ἐν τῷ δέοντι ἕκαστα τούτων ποιῶν δίκαια ποιεῖ, ὁ δὲ μὴ ἐν τῷ δέοντι ἄδικα; Ναί. Οὐκ οὖν ὁ μὲν τὰ δίκαια ποιῶν δίκαιος, ὁ δὲ τὰ ἄδικα ἄδικος; Ἔστι ταῦτα. Τίς οὖν ὁ ἐν τῷ δέοντι καιρῷ οἷός τε τέμνειν καὶ κάειν καὶ ἰσχναίνειν; Ὁ ἰατρός. Ὅτι ἐπίσταται ἢ δι' ἄλλο τι; Ὅτι ἐπίσταται. Τίς δὲ ἐν τῷ δέοντι σκάπτειν καὶ ἀροῦν καὶ φυτεύειν οἷός τε; Ὁ γεωργός. Ὅτι ἐπίσταται ἢ ὅτι οὔ; Ὅτι ἐπίσταται. Οὐκ οὖν καὶ τὰ ἄλλα οὕτως, ὁ μὲν ἐπιστάμενος οἷός τε τὰ δέοντα ποιεῖν ἐστι καὶ ἐν τῷ δέοντι καιρῷ, ὁ δὲ μὴ ἐπιστάμενος οὔ; Οὕτως. Καὶ ψεύδεσθαι ἄρα καὶ ἐξαπατᾶν καὶ ὠφελεῖν ὁ μὲν ἐπιστάμενος οἷός τε ποιεῖν ἕκαστα τούτων ἐν τῷ δέοντι καιρῷ· ὁ δὲ μὴ ἐπιστάμενος οὔ; Ἀληθῆ λέγεις.

ΠΕΡΙ ΠΑΡΡΗΣΙΑΣ. ΙΓ.

1 *Εὐριπίδου.*

Πότερα θέλεις σοι μαλθακὰ ψευδῆ λέγω
ἢ σκλήρ' ἀληθῆ; φράζε· σὴ γὰρ ἡ κρίσις.

2 *Σοφοκλέους Οἰδίποδος* (Tyr. 354).

Οὕτως ἀναιδῶς ἐξεκίνησας τόδε
τὸ ῥῆμα· καὶ ποῦ τοῦτο φεύξεσθαι δοκεῖς;
Πέφευγα· τἀληθὲς γὰρ ἰσχυρὸν τρέφω.

3 *Σοφοκλέους Αἴαντι* (1118).

Οὐδ' αὖ τοιαύτην γλῶσσαν ἐν κακοῖς φιλῶ.
τὰ σκληρὰ γάρ τοι, κἂν ὑπέρδικ' ᾖ, δάκνει.

4 *Ἐν τῷ αὐτῷ* (1124).

Ἡ γλῶσσά σου τὸν θυμὸν ὡς δεινὸν τρέφει.
ξὺν τῷ δικαίῳ γὰρ μέγ' ἔξεστιν φρονεῖν.

5 Σοφοκλέους Τηρεῖ.

Θάρσει· λέγων τἀληθὲς οὐ σφαλεῖ ποτέ.

6 Σοφοκλέους Ἀλεάδαι.

Καὶ γὰρ δικαία γλῶσσ' ἔχει κράτος μέγα.

7 Εὐριπίδου Ἰνοῦς.

Ἐμοὶ γένοιτο πτωχός, εἰ δὲ βούλεται,
πτωχοῦ κακίων, ὅστις ὢν εὔνους ἐμοὶ
φόβον παρελθὼν τἀπὸ καρδίας ἐρεῖ.

8 Εὐριπίδου Τημενίδαις.

Καλόν γ' ἀληθὴς κἀτενὴς παρρησία.

9 Σοφοκλέους.

Αἰδὼς γὰρ ἐν κακοῖσιν οὐδὲν ὠφελεῖ·
ἡ γὰρ σιωπὴ τὠγκαλοῦντι σύμμαχος.

10 Εὐριπίδου ἐκ Τηλέφου.

Ἀγάμεμνον, οὐδ' εἰ πέλεκυν ἐν χεροῖν ἔχων
μέλλοι τις ἐς τράχηλον ἐμβαλεῖν ἐμόν,
σιγήσομαι, δίκαιά γ' ἀντειπεῖν ἔχων.

11 Φιλήμονος Ἐπιδικαζομένου.

Πρόχειρον ἐπὶ τὴν γλῶτταν εὐλόγῳ τρέχειν.

12 Εὐριπίδου Ἑκάβης (1238).

Φεῦ φεῦ. βροτοῖσιν ὡς τὰ χρηστὰ πράγματα
χρηστῶν ἀφορμὰς ἐνδίδωσ' ἀεὶ λόγων.

13 Εὐριπίδου ἐν τῷ Δίκτυι.

Θάρσει· τό τοι δίκαιον ἰσχύει μέγα.

14 Μοσχίωνος.

Ὅμως τό γ' ὀρθὸν καὶ δίκαιον οὔ ποτε
σιγῇ παρήσω. τὴν γὰρ ἐντεθραμμένην

ἀστοῖς Ἀθάνας τῇ τε Θησέως πόλει
καλὸν φυλάξαι γνησίως παρρησίαν.

15 Εὐριπίδου.

Ἀτὰρ σιωπᾶν τά γε δίκαι' οὐ χρή ποτε.

16 Φιλοξένου.

Φιλόξενος παραδοθεὶς ὑπὸ Διονυσίου ποτὲ εἰς τὰς λατομίας διὰ τὸ φαυλίζειν τὰ ποιήματα αὐτοῦ, καὶ ἀνακληθεὶς ἔπειτα πάλιν ἐπὶ τὴν ἀκρόασιν αὐτῶν ἐκλήθη· μέχρι τινὸς ὑπομείνας ἀνέστη· πυθομένου δὲ τοῦ Διονυσίου "ποῖ δὴ σύ;" "εἰς τὰς λατομίας" εἶπεν.

17 Δημοσθένους.

Οὐδὲν ἂν εἴη τοῖς ἐλευθέροις μεῖζον ἀτύχημα τοῦ στέρεσθαι τῆς παρρησίας.

18 Ἐκ τῶν Διογένους διατριβῶν.

Ὥσπερ οὖν τοῦ Ποντικοῦ μέλιτος γεύσασθαι ἐπιχειροῦσιν οἱ ἄπειροι, γευσάμενοι δὲ παραχρῆμα ἐξέπτυσαν δυσχεράναντες, ὅτι πικρόν ἐστι καὶ ἀηδές· οὕτω καὶ τοῦ Διογένους ἀποπειρᾶσθαι μὲν ἤθελον διὰ πολυπραγμοσύνην, ἐλεγχόμενοι δὲ ἀπεστρέφοντο καὶ ἔφευγον, καὶ ἄλλων μὲν ἥδοντο λοιδορουμένων, αὐτοὶ δ' ἐφοβοῦντο καὶ ἀνεχώρουν· καὶ εἰ μὲν ἔσκωπτε καὶ ἔπαιζεν, ὥσπερ εἰώθει ἐνίοτε, ὑπερφυῶς ἔχαιρον, ἀνατεινομένου δὲ καὶ σπουδάζοντος οὐχ ὑπέμενον τὴν παρρησίαν.

19 Ἐν ταυτῷ.

Ἐπεὶ αὐτόν γε τὸν Ἀντισθένην παραβάλλων πρὸς τοὺς λόγους ἐνίοτε ἤλεγχεν ὡς πολὺ μαλακώτερον καὶ ἔφη αὐτὸν εἶναι σάλπιγγα λοιδορῶν, αὐτοῦ γὰρ οὐκ ἀκούειν φθεγγομένου μέγιστον. καὶ Ἀντισθένης ἀμυ-

νόμενος ἀντὶ τῆς σάλπιγγος ἔλεγε ταῖς σφηξὶν ὅμοιον αὐτὸν εἶναι· καὶ γὰρ τῶν σφηκῶν τὸν μὲν ψόφον τῶν πτερῶν εἶναι μικρόν, τὸ δὲ κέντρον δριμύτατον. ἔχαιρεν οὖν τῇ παρρησίᾳ τοῦ Διογένους.

20 Σόλωνος.

Συμβούλευε μὴ τὰ ἥδιστα, ἀλλὰ τὰ ἄριστα.

21 Πυθαγόρου.

Συγγενεῖ καὶ ἄρχοντι πλὴν ἐλευθερίας πάντα εἶκε.

22 Ἐκ τῶν Ἀρίστωνος ὁμοιωμάτων.

Ὅμοιον ἀψινθίου τὸ δριμὺ καὶ λόγου παρρησίαν ἐκκόψαι.

23 Ἐκ τῶν Ἀριστωνύμου τομαρίων.

Ὥσπερ τὸ μέλι τὰ ἡλκωμένα δάκνει, τοῖς δὲ κατὰ φύσιν ἡδύ ἐστιν, οὕτω καὶ οἱ ἐκ φιλοσοφίας λόγοι.

24 Ἐκ τῶν Δίωνος χρειῶν.

Τὴν ἐπιτίμησιν ὁ Διογένης ἀλλότριον ἀγαθὸν ἔλεγεν εἶναι.

25 Διογένους.

Διογένης Ἀττικοῦ τινὸς ἐγκαλοῦντος αὐτῷ διότι Λακεδαιμονίους μᾶλλον ἐπαινῶν παρ' ἐκείνοις οὐ διατρίβει "οὐδὲ γὰρ ἰατρὸς" εἶπεν "ὑγιείας ὢν ποιητικὸς ἐν τοῖς ὑγιαίνουσι τὴν διατριβὴν ποιεῖται."

26 Δημοκρίτου.

Κρέσσον τὰ οἰκήια ἁμαρτήματα ἐλέγχειν ἢ τὰ ὀθνεῖα.

27 Διογένους.

Ὁ Διογένης ἔλεγεν, ὅτι οἱ μὲν ἄλλοι κύνες τοὺς ἐχθροὺς δάκνουσιν, ἐγὼ δὲ τοὺς φίλους, ἵνα σώσω.

28 Ἐκ τῶν Σερήνου.

Ἀντιπάτρῳ ἀγροῖκος ἄνθρωπος ἐπεδίδου βιβλίον ἐντυχίαν ἔχον, ὃ δὲ οὐ σχολάζειν ἔφη. "καὶ μὴ βασίλευε" εἶπεν ἐκεῖνος "εἰ μὴ σχολὴν ἄγεις."

29 *Ἐν ταυτῷ.*

Πρεσβῦτις δικαζομένη ἐπὶ Φιλίππου, ὡς ἑώρα νυστάζοντα ἔπειτα μέλλοντα ἀποφαίνεσθαι, ἐδεῖτο συγχωρῆσαι αὐτῇ ἐφεῖναι. ὃ δὲ "ἐπὶ τίνα;" εἶπεν. "ἐπὶ Φίλιππον" ἀπεκρίνατο "ἐγρηγορότα."

30 *Δημοκράτους.*

Δημοκράτης ἰδὼν κλέπτην ὑπὸ τῶν ἕνδεκα ἀπαγόμενον "ἄθλιε" εἶπε "τί γὰρ τὰ μικρὰ ἔκλεπτες ἀλλ' οὐ τὰ μεγάλα, ἵνα καὶ σὺ ἄλλους ἀπῆγες;"

31 *Ἱπποκράτους.*

Ἱπποκράτην ἔπειθέ τις πρὸς Ξέρξην ἀπαίρειν, χρηστὸν εἶναι φάσκων βασιλέα· ὃ δὲ "οὐ δέομαι" ἔφη "χρηστοῦ δεσπότου."

32 *Δημοσθένους.*

Δημοσθένης πρὸς κλέπτην εἰπόντα "οὐκ ᾔδειν ὅτι σόν ἐστιν," "ὅτι δὲ" ἔφη "σὸν οὐκ ἔστιν ᾔδεις."

33 *Πυθαγόρου.*

Τὰ ἁμαρτήματά σου πειρῶ μὴ λόγοις καλύπτειν, ἀλλὰ θεραπεύειν ἐλέγχοις.

34 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Οὐχ οὕτω χαλεπὸν ἁμαρτάνειν ὡς τὸν ἁμαρτάνοντα μὴ ἐξελέγχειν.

35 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Ὥσπερ σωματικὸν πάθος οὐ κρυπτόμενον οὐδὲ ἐπαινούμενον ὑγιάζεται, οὕτως οὐδὲ ψυχὴ κακῶς φρουρουμένη καὶ συναγορευομένη θεραπεύεται.

36 *Πλάτωνος.*

Διονύσιος ὁ τύραννος ἀτιμάζων αὐτὸν διὰ τὴν πρὸς Δίωνα φιλίαν κατέκλινεν αὐτὸν ἐν τῇ ἐσχάτῃ χώρᾳ· καὶ μυκτηρίζων "ἦ που ὁ Πλάτων" ἔφη "ἐνθένδε ἀπελθὼν πολὺν ἐν Ἀκαδημείᾳ λόγον καθ' ἡμῶν διαθήσει." ὁ δὲ "μὴ λόγων" ἔφη "γένοιτο τοσαύτη ἀπορία ὥστε περὶ σοῦ διαλέγεσθαι."

37 *Διογένους.*

Διογένης ἤρετο Πλάτωνα εἰ νόμους γράφει· ὃ δὲ ἔφη. Τί δαί; πολιτείαν ἔγραψας; Πάνυ μὲν οὖν. Τί οὖν, ἡ πολιτεία νόμους οὐκ εἶχεν; Εἶχεν. Τί οὖν ἔδει σε πάλιν νόμους γράφειν;

38 *Αἰλιανοῦ* (VH. 14, 3).

Τιμόθεος ὁ Κόνωνος πρὸς Ἀριστοφῶντα τὸν Ἀζηνιέα πάντων ἄριστα ἔχοντα λόγον εἶπεν· ἐπεὶ γὰρ ἄσωτος ἦν ὁ Ἀριστοφῶν, πικρότατα αὐτοῦ καθίκετο ὁ Τιμόθεος εἰπὼν "ᾧ ἱκανὸν οὐδέν, τούτῳ γε αἰσχρὸν οὐδέν."

39 *Ἐκ τῶν Ἀρίστωνος ὁμοιωμάτων.*

Φήσαντός τινος "λίαν μοι ἐπισκώπτεις," ἔφη "καὶ γὰρ τοῖς σπληνικοῖς τὰ μὲν δριμέα καὶ πικρὰ ὠφέλιμα, τὰ δὲ γλυκέα βλαβερά.

40 *Δημοκρίτου.*

Οἰκήιον ἐλευθερίης παρρησίη, κίνδυνος δὲ ἡ τοῦ καιροῦ διάγνωσις.

41 *Δημοσθένους Ὀλυνθιακῶν γʹ* (p. 34).

Ἀλλὰ δικαίου πολίτου κρίνω τὴν τῶν πραγμάτων σωτηρίαν ἀντὶ τῆς ἐν τῷ λέγειν χάριτος αἱρεῖσθαι.

42 *Ἐκ τῶν Σερήνου.*

Ἡ Λάκαινα πωλουμένη πρὸς τὸν ἐρόμενον τί ἐπίσταται, "ἐλευθέρα" ἔφη "εἶναι."

43 Θεμιστίου ἐκ τοῦ περὶ ψυχῆς.

Εἰ μὲν οὖν ὀρθῶς ἐπὶ Πλάτωνος εἶπε Διογένης "τί δὲ ὄφελος ἡμῖν ἀνδρὸς ὃς πολὺν ἤδη χρόνον φιλοσοφῶν οὐδένα λελύπηκεν;" ἕτεροι κρινοῦσιν. ἴσως γὰρ ὡς τὸ μέλι δεῖ καὶ τὸν λόγον τοῦ φιλοσόφου τὸ γλυκὺ δηκτικὸν ἔχειν τῶν ἡλκωμένων.

44 Εὐσεβίου.

Παρρησίη ἀπὸ γνώμης ἐλευθέρης καὶ ἀληθείην ἀσπαζομένης προέρχεται· παρέξεαι δὲ αὐτὴν ἀμώμητον οὐ τῷ πᾶσι καὶ ὡς ἔτυχεν ἐπιτιμᾶν καὶ λοιδορέεσθαι, νομίζων τοῦτο εἶναι τὴν παρρησίην· ἀλλ' εἰ πρὸς οὓς δεῖ καὶ ὑπὲρ τίνων χρὴ καὶ ἐν ᾧ χρὴ μετὰ τοῦ χρησίμου τῶν παρισταμένων ξὺν νόῳ προσδιαλέγοιο.

45 Τοῦ αὐτοῦ.

Ἐχθρὸς τἀληθέα εἰπὼν τοῦ προσποιευμένου φίλου πρὸς χάριν εἰπόντος παντὸς αἱρετώτερος.

46 Σωκράτους.

Τῆς παρρησίας ὥσπερ ὥρας ἐν καιρῷ ἡ χάρις ἡδίων.

47 Τοῦ αὐτοῦ.

Οὔτε μάχαιραν ἀμβλεῖαν οὔτε παρρησίαν ἄπρακτον ἔχειν δεῖ.

48 Τοῦ αὐτοῦ.

Οὔτε ἐκ τοῦ κόσμου τὸν ἥλιον οὔτε ἐκ τῆς παιδείας ἀρτέον τὴν παρρησίαν.

49 Τοῦ αὐτοῦ.

Ἔστιν ὥσπερ τρίβωνα ῥυπαρὸν ἀμπεχόμενον εὐ-

εκτεῖν, οὑτωσὶ καὶ βίον ἔχοντα πενιχρὸν παρρησιάζεσθαι.

50 Ἑρμοῦ ἐκ τοῦ Ἴσιδος πρὸς Ὧρον.

Ἔλεγχος γὰρ ἐπιγνωσθείς, ὦ μέγιστε βασιλεῦ, εἰς ἐπιθυμίαν φέρει τὸν ἐλεγχθέντα ὧν πρότερον οὐκ ᾔδει.

ΠΕΡΙ ΚΟΛΑΚΕΙΑΣ. ΙΔ.

1 Ποσειδίππου.

Τὴν χλανίδα πάντες, ὡς ἔοικεν, οὐκ ἐμὲ
προσηγόρευον. οὐδὲ εἷς νῦν μοι λαλεῖ.

2 Κριτίου.

Ὅστις δὲ τοῖς φίλοισι πάντα πρὸς χάριν
πράσσων ὁμιλεῖ, τὴν παραυτίχ' ἡδονὴν
ἔχθραν καθίστησ' εἰς τὸν ὕστερον χρόνον.

3 Εὐριπίδου Ἐρεχθεῖ.

Φίλους δὲ τοὺς μὲν μὴ χαλῶντας ἐν λόγοις
κέκτησο, τοὺς δὲ πρὸς χάριν σὺν ἡδονῇ
τῇ σῇ πονηροὺς κλῇθρον εἰργέτω στέγης.

4 Ζήνωνος.

Ἔλεγχε σαυτὸν ὅστις εἶ, μὴ πρὸς χάριν
ἄκου', ἀφαιροῦ δὲ κολάκων παρρησίαν.

5 Εὐριπίδου Ἰφιγενείας (Aul. 979).

Αἰνούμενοι γὰρ ἀγαθοὶ τρόπον τινὰ
μισοῦσι τοὺς αἰνοῦντας, ἢν αἰνῶσ' ἄγαν.

6 Εὐριπίδου Ὀρέστου (1162).

Βάρος τι καὶ τόδ' ἐστὶν αἰνεῖσθαι λίαν.

7 Νικολάου.

Τὸ τῶν παρασίτων, ἄνδρες, ἐξεῦρεν γένος
Διὸς πεφυκώς, ὥς λέγουσι, Τάνταλος.
οὐ δυνάμενος δὲ τῇ τέχνῃ χρῆσθαι καλῶς,
ἀκόλαστον ἔσχε γλῶσσαν, εἶτ' ἀκουσίῳ
δίφρῳ περιπεσὼν δυναμένῳ λιμὸν ποιεῖν,
ἀπὸ τῆς τραπέζης ἐξαπίνης ἀπεστράφη.
ἄφνω δὲ πληγεὶς εἰς μέσην τὴν γαστέρα
ἔδοξεν αὐτῷ γεγονέναι τἄνω κάτω,
Σίπυλόν τε τοῦτον ἀνατετράφθαι τὸν τρόπον.
καὶ μάλα δικαίως· Φρὺξ γὰρ ὢν οὐχ ἱκανὸς ἦν
τὴν τοῦ τρέφοντος εὖ φέρειν παρρησίαν.
διὸ δὴ τοιαύτης παντελῶς καχεξίας
ἐν τοῖς βίοις παρὰ πᾶσιν ἐξηλωμένης,
πικρῶς ἐπιπλῆξαι βούλομ', ἄν περ νὴ Δία
παρρησίαν μοι δῶτε, τοὺς ἀσυμβόλους
τἀλλότρια δειπνεῖν ἑλομένους ἄνευ πόνου.
τί γὰρ μαθών, ἄνθρωπε, πρὸς τῶν δαιμόνων
βούλει παρασιτεῖν; ἢ τί τῶν ἐν τῷ βίῳ
ξυνῆκας; εἶπον, ἄξιον γὰρ εἰδέναι.
τίνος μαθητὴς γέγονας; αἵρεσιν τίνα
ζηλοῖς; ἀπὸ τίνων δογμάτων ὁρμώμενος
τολμᾷς παρασιτεῖν; ἃ μόλις ἡμεῖς τὸν βίον
ἅπαντα κατατρίψαντες, οὐδὲ νῦν ἔτι
ἀνεῳγμένην δυνάμεθα τὴν θύραν ἰδεῖν,
διὰ τοὺς ἀνοδίᾳ τἀλλότρια μασωμένους.
οὐ παντὸς ἀνδρὸς ἐπὶ τράπεζαν ἔσθ' ὁ πλοῦς.
πλευρὰν ἔχειν πρώτιστον ἐν τούτοισι δεῖ,
πρόσωπον ἰταμόν, χρῶμα διαμένον, γνάθον
ἀκάματον, εὐθὺς δυναμένην πληγὰς φέρειν·
στοιχεῖα μὲν ταῦτ' ἐστὶ τῆς ὅλης τέχνης.
ἔπειτα δεῖ σκωπτόμενον ἐφ' ἑαυτῷ γελᾶν·
αἰσχρὸν γὰρ οἶμαι δοῦλον εἶναι σκώμματος.

ἀπὸ τῶν ἐτῶν κλέπτει τις, ἢ καὶ βλάπτεται
θέλων καλὸς εἶναι, καὶ παρ' ἡλικίαν νοσεῖ;
ἔστω Γανυμήδης οὗτος ἀποθεούμενος.
πρὸς χάριν ὁμίλει τοῦ τρέφοντος ἐπ' ὀλέθρῳ.
παρατάττεταί τις καὶ ποιεῖ πάντας νεκροὺς
δειπνῶν; σιωπῇ τοῦτον ὑπομυκτηρίσας
εἰς τὴν τράπεζαν καὶ σὺ τὴν χολὴν ἄφες.
οἶμαι δ' ἐμαυτὸν εὔθετον τῷ πράγματι,
παῖδες, γεγονέναι· πάντα γάρ πρόσεστί μοι
ὅσα περ ἔχειν τἀλλότρια τὸν δειπνοῦντα δεῖ,
λιμὸς ἀπόνοια τόλμα γαστὴρ ἀργία.
καὶ νῦν μ' ὁ Λυδῶν τῶν πολυχρύσων ἄναξ
σύνδειπνον αὑτῷ κέκρικεν εἶναι καὶ φίλον.

8 *Δημοκρίτου.*

Εὐλογέειν ἐπὶ καλοῖς ἔργμασι καλόν· τὸ γὰρ ἐπὶ φλαύροισι κίβδηλον καὶ ἀπατεῶνος ἔργον.

9 *Ἐκ τῶν Ἀριστωνύμου τομαρίων.*

Τὰ μὲν ξύλα τὸ πῦρ αὔξοντα ὑπ' αὐτοῦ καταναλίσκεται, ὁ δὲ πλοῦτος ἐκτρέφων τοὺς κόλακας ὑπ' αὐτῶν τούτων διαφθείρεται.

10 *Σωτίωνος ἐκ τοῦ περὶ ὀργῆς.*

Οἱ δελφῖνες μέχρι τοῦ κλύδωνος συνδιανήχονται τοῖς κολυμβῶσι, πρὸς δὲ τὸ ξηρὸν οὐκ ἐξοκέλλουσιν· οὕτως οἱ κόλακες ἐν εὐδίᾳ παραμένουσιν, ὡς καὶ οἱ τοὺς φίλους εἰς ἀποδημίαν προπέμποντες μέχρι τῆς λείας συμπαρακολουθοῦσιν, ἐπειδὰν δὲ εἰς τραχεῖαν ἔλθωσιν, ἀπίασιν.

11 *Φαβωρίνου.*

Ἔστι δὲ οὐκ ἀξιόπιστος ἔπαινος, ὃν ἐπαινεῖ τις ἕτερον διὰ τὸ ἑαυτοῦ συμφέρον.

12 Τοῦ αὐτοῦ.

Ὥσπερ ὁ Ἀκταίων ὑπὸ τῶν τρεφομένων ὑπ' αὐτοῦ κυνῶν ἀπέθανεν, οὕτως οἱ κόλακες τοὺς τρέφοντας κατεσθίουσι.

13 Θεοδώρου ὑπὲρ Ἐλπίδος Φοριανῆς.

Εἴσοδος δὲ ἦν παρ' αὐτὴν οὐκ ὀλίγη, τῶν μὲν τοῦ ἤθους τὴν ἀφέλειαν ἀποδεχομένων, τῶν δέ τι καὶ δεομένων ἴσως· τῶν δὲ πολλῶν συνήθη νοσούντων καὶ οἰκείᾳ φύσει χρωμένων, οἳ τοὺς πλουτοῦντας ὥσπερ τι κρεῖττον θαυμάζοντες φθείρεσθαι πρὸς τὰς τούτων θύρας εἰώθασιν, κἂν μηδ' ὁτιοῦν τῆς εὐπορίας μεθέξειν μέλλωσιν.

14 Διογένους.

Ἐπὶ τῆς κολακείας ὥσπερ ἐπὶ μνήματος αὐτὸ μόνον τὸ ὄνομα τῆς φιλίας ἐπιγέγραπται.

15 Ἰσοκράτους πρὸς Δημόνικον.

Μίσει τοὺς κολακεύοντας ὥσπερ τοὺς ἐξαπατῶντας· ἀμφότεροι γὰρ πιστευθέντες τοὺς πιστεύοντας ἀδικοῦσι.

16 Κράτητος.

Κράτης τοὺς κόλακάς φησι συγκατανευσιφάγους.

17 Ἀντισθένους.

Ἀντισθένης αἱρετώτερόν φησιν εἰς κόρακας ἐμπεσεῖν ἢ εἰς κόλακας· οἳ μὲν γὰρ ἀποθανόντος τὸ σῶμα, οἳ δὲ ζῶντος τὴν ψυχὴν λυμαίνονται.

18 Πυθαγόρου.

Χαῖρε τοῖς ἐλέγχουσί σε μᾶλλον ἢ τοῖς κολακεύουσιν· ὡς δ' ἐχθρῶν χείρονας ἐκτρέπου τοὺς κολακεύοντας.

19 Ἀντισθένους.

Ἀντισθένης ἔλεγεν, ὥσπερ τὰς ἑταίρας τἀγαθὰ πάντα εὔχεσθαι τοῖς ἐρασταῖς παρεῖναι πλὴν νοῦ καὶ φρονήσεως, οὕτω καὶ τοὺς κόλακας οἷς σύνεισι.

20 *Κράτητος.*

Κράτης πρὸς νέον πλούσιον πολλοὺς κόλακας ἐπισυράμενον "νεανίσκε" εἶπεν "ἐλεῶ σου τὴν ἐρημίαν."

21 *Σωκράτους.*

Ἡ τῶν κολάκων εὔνοια καθάπερ ἐκ τροπῆς φεύγει τὰς ἀτυχίας.

22 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Θηρεύουσι τοῖς μὲν κυσὶ τοὺς λαγωοὺς οἱ κυνηγοί, τοῖς δὲ ἐπαίνοις τοὺς ἀνοήτους οἱ κόλακες.

23 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Οἱ μὲν λύκοι τοῖς κυσίν, οἱ δὲ κόλακες τοῖς φίλοις ὄντες ὅμοιοι ἀνομοίων ἐπιθυμοῦσιν.

24 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Ἔοικεν ἡ κολακεία γραπτῇ πανοπλίᾳ. διὸ τέρψιν μὲν ἔχει, χρείαν δὲ οὐδεμίαν παρέχεται.

25 *Πλάτωνος ἐκ τῆς πρὸς Διόνυσον ἐπιστολῆς* (317 c).

Ἑώρων γὰρ καὶ τότε καὶ νῦν ὁρῶ τὰς μεγάλας οὐσίας καὶ ὑπερόγκους τῶν τε ἰδιωτῶν καὶ τῶν μονάρχων, σχεδὸν ὅσῳ περ ἂν μείζους ὦσι, τοσούτῳ πλείους καὶ μείζους τοὺς διαβάλλοντας, καὶ πρὸς ἡδονὴν μετὰ αἰσχρᾶς βλάβης τοὺς ὁμιλοῦντας τρεφούσας, οὗ κακὸν οὐδὲν μεῖζον γεννᾷ πλοῦτός τε καὶ ἡ τῆς ἄλλης ἐξουσίας δύναμις.

26 *Τοῦ αὐτοῦ ἐκ τοῦ Μενεξένου ἢ ἐπιταφίου* (235 d).

Ὅταν δέ τις ἐν τούτοις ἀγωνίζηται, ὥσπερ καὶ ἐπαινεῖ, οὐδὲν μέγα δοκεῖν εὖ λέγειν.

ΠΕΡΙ ΑΣΩΤΙΑΣ. ΙΕ.

1 Μενάνδρου.
Τοὺς τὸν ἴδιον δαπανῶντας ἀλογίστως βίον
τὸ καλῶς ἀκούειν ταχὺ ποιεῖ πάσχειν κακῶς.

2 Εὔφρονος διδύμων.
Ὁ γὰρ τὸν ἴδιον οἰκονομῶν κακῶς βίον,
πῶς οὗτος ἂν σώσειε τῶν ἔξω τινά;

3 Διφίλου.
Ἔργον συναγαγεῖν σωρὸν ἐν πολλῷ χρόνῳ,
ἐν ἡμέρᾳ δὲ διαφορῆσαι ῥᾴδιον.

4 Μενάνδρου.
Λαμπρῶς μὲν ἔνιοι ζῶσιν, οἷς χαλεπώτερον
τοῦ περιποιήσασθαί τι τὸ φυλάξαι βίον.

5 Φιλήμονος.
Ἂν μὲν πλέωμεν ἡμερῶν που τεττάρων,
σκεπτόμεθα τἀναγκαῖ' ἑκάστης ἡμέρας.
ἂν ᾖ δὲ φείσασθαί τι τοῦ γήρως χάριν,
οὐ φεισόμεσθ' ἐφόδια περιποιούμενοι;

6 Θεόγνιδος (331).
Ὥσπερ ἐγώ, μέσσην ὁδὸν ἔρχεο ποσσίν,
μηδ' ἑτέροισι δίδου, Κύρνε, τὰ τῶν ἑτέρων.

7 Πυθαγόρου (Aur. carm. 37).
Μὴ δαπανᾶν παρὰ καιρὸν ἀπειροκάλως ἔνι ἡμῶν,
μηδ' ἀνελεύθερος ἴσθι. μέτρον δ' ἐπὶ πᾶσιν ἄριστον.

8 Σωκράτους.

Σωκράτης ἰδών τινα προχείρως πᾶσι χαριζόμενον καὶ ἀνεξετάστως ὑπηρετούμενον "κακῶς" εἶπεν "ἀπόλοιο, ὅτι τὰς Χάριτας, παρθένους οὔσας, πόρνας ἐποίησας."

9 Διογένους.

Διογένης ἄσωτον ᾔτει μνᾶν· τοῦ δὲ εἰπόντος "διὰ τί τοὺς ἄλλους τριώβολα, ἐμὲ δὲ μνᾶν αἰτεῖς;" ἔφη "παρὰ μὲν τῶν ἄλλων ἐλπίζω πάλιν λαβεῖν, παρὰ δὲ σοῦ οὐκέτι."

10 Κράτητος.

Κράτης τὰ τῶν πλουσίων καὶ ἀσώτων χρήματα ταῖς ἐπὶ τῶν κρημνῶν συκαῖς εἴκαζεν, ἀφ' ὧν ἄνθρωπον μηδὲν λαμβάνειν, κόρακας δὲ καὶ ἰκτίνους, ὥσπερ παρὰ τούτων ἑταίρας καὶ κόλακας.

11 Δημοσθένους ἐν τῷ πρὸς Λεπτίνην (472).

Τῶν γὰρ ἀνθρώπων οἱ πλεῖστοι κτῶνται μὲν τἀγαθὰ τῷ καλῶς βουλεύεσθαι καὶ μηδενὸς καταφρονεῖν, φυλάττειν δ' οὐκ ἐθέλουσι τοῖς αὐτοῖς τούτοις.

12 Ζήνωνος.

Ζήνων πρὸς τοὺς ἀπολογουμένους ὑπὲρ τῆς αὐτῶν ἀσωτίας καὶ λέγοντας ἐκ πολλοῦ τοῦ περιόντος ἀναλίσκειν, ἔλεγεν "ἦ που καὶ τοῖς μαγείροις συγγνώσεσθε, ἐὰν ἁλμυρὰ λέγωσι πεποιηκέναι τὰ ὄψα, ὅτι πλῆθος ἁλῶν αὐτοῖς ὑπῆρχεν;"

13 Ξενοφῶν ἐν τῷ ζ' (5, 82) τῆς Κύρου παιδείας.

Οὐ γὰρ τὸ μὴ λαβεῖν τἀγαθὰ οὕτω χαλεπόν, ὡς τὸ λαβόντα στερηθῆναι.

ΠΕΡΙ ΦΕΙΔΩΛΙΑΣ. Ιϛ.

1 Φιλήμονος.

Ἂν οἷς ἔχομεν, τούτοισι μηδὲ χρώμεθα,
ἃ δ' οὐκ ἔχομεν ζητῶμεν, ὧν μὲν διὰ τύχην,
ὧν δὲ δι' ἑαυτοὺς ἐσόμεθ' ἐστερημένοι.

2 Ἀπολλοδώρου.

Μισῶ τύχην συνοῦσαν ἀτυχεῖ σώματι.
ὅστις γὰρ εὐπορῶν, παρὸν ζῆν ἡδέως,
κακῶς διάγει, τί ἂν τις ἄλλ' ἢ τῇ τύχῃ
μέμφοιτο, διότι δυστυχεῖ συνδυστυχεῖ;

3 Ἔγωγ' ἂν οὐ τὸν πλοῦτον ἴδοιμι ὅσος ἐστίν, ἀλλ' ὅστις αὐτὸν κέκτηται, εἰ ὑπέρτερός ἐστιν ὧν ἔχει.

4 Εὐριπίδου Ἀντιόπης.

Εἰ δ' εὐτυχῶν τις καὶ βίον κεκτημένος,
μηδὲν δόμοισι τῶν καλῶν πειράσεται,
ἐγὼ μὲν αὐτὸν οὔποτ' ὄλβιον καλῶ,
φύλακα δὲ μᾶλλον χρημάτων εὐδαίμονα.

5 Εὐριπίδου Ἰνοῖ.

Ἀμουσία τοι μηδ' ἐπ' οἰκτροῖσιν δάκρυ
στάζειν. κακὸν δὲ χρημάτων ὄντων ἅλις
φειδοῖ πονηρᾷ μηδέν' εὖ ποιεῖν βροτῶν.

6 Εὐριπίδου Δανάης.

Ὅστις δόμους μὲν ἥδεται πληρουμένους,
γαστρὸς δ' ἀφαιρῶν σῶμα δύστηνος κακοῖ,
τοῦτον νομίζω καὶ θεῶν συλᾶν βρέτη
τοῖς φιλτάτοις τε πολέμιον πεφυκέναι.

7 Μενάνδρου.

Οὐ πώποτ' ἐζήλωσα πλουτοῦντα σφόδρα
ἄνθρωπον ἀπολαύοντα μηδὲν ὧν ἔχει.

8 Τοῦ αὐτοῦ.

Μὴ πάντοθεν κέρδαιν᾽· ἐπαισχύνου δέ μοι·
τὸ μὴ δικαίως εὐτυχεῖν ἔχει φόβον.
ὦ τρισκακοδαίμων, ὅστις ἐκ φειδωλίας
κατέθετο μῖσος διπλάσιον τῆς οὐσίας.

9 Θεοκρίτου (10, 54).

Κάλλιον, ὦ ᾽πιμελητὰ φιλάργυρε, τὸν φακὸν ἕψειν,
μὴ ᾽πιτάμῃς τὰν χεῖρα διαπρίων τὸ κύμινον.

10 Μενάνδρου ἐν Ψευδηρακλεῖ.

Ἀστοργίαν ἔχει τιν᾽ ὁ σκληρὸς βίος.

11 Ἀπολλοδώρου Ἀποκαρτερῶν.

Ἀλλὰ σχεδόν τι τὸ κεφάλαιον τῶν κακῶν
εἴρηκας· ἐν φιλαργυρίᾳ γὰρ πάντ᾽ ἔνι.

12 Ἀντιφάνους.

Ὡς δυστυχεῖς, ὅσοισι τοῦ κέρδους χάριν
ἐπίπροσθε τᾀσχρὰ φαίνετ᾽ εἶναι τῶν καλῶν·
ἐπισκοτεῖ γὰρ τῷ φρονεῖν τὸ λαμβάνειν.

13 Μενάνδρου ἐκ Δυσκόλου.

Περὶ χρημάτων λαλεῖς ἀβεβαίου πράγματος.
εἰ μὲν γὰρ οἶσθα ταῦτα παραμενοῦντά σοι
εἰς ἅπαντα τὸν χρόνον, φύλαττε, μηδενὶ
ἄλλῳ μεταδιδούς, αὐτὸς ὢν δὲ κύριος·
εἰ δ᾽ οὐ σεαυτοῦ, τῆς τύχης δὲ πάντ᾽ ἔχεις,
τί ἂν φθονοίης, ὦ πάτερ, τούτων τινί;
αὐτὴ γὰρ ἄλλῳ τυχὸν ἀναξίῳ τινὶ
παρελομένη σοῦ πάντα προσθήσει πάλιν.
διόπερ ἔγωγε φημὶ δεῖν ὅσον χρόνον
εἶ κύριος, χρῆσθαί σε γενναίως, πάτερ,
αὐτόν, ἐπικουρεῖν πᾶσιν, εὐπόρους ποιεῖν
ὡς ἂν δύνῃ πλείστους διὰ σαυτοῦ· τοῦτο γὰρ

ἀθάνατόν ἐστι, κἂν ποτε πταίσας τύχῃς,
ἐκεῖθεν ἔσται ταυτὸ τοῦτό σοι πάλιν.

13[a] *Πολλῷ δὲ κρεῖττόν ἐστιν ἐμφανὴς φίλος*
ἢ πλοῦτος ἀφανής, ὃν σὺ κατορύξας ἔχεις.

14 *Εὐσεβίου.*

Ἀνὴρ μεγάλα ἔχων χρήματα ἀποτεθησαυρισμένα, ἔπειτα γνώμῃ τῇ ἑωυτοῦ ἐς μηδὲν τῶν δεόντων οἷός τε ἐὼν αὐτοῖς χρέεσθαι, ἔοικε τῷ τὰ ἐν τοῖς δημοσίοις ἀποκείμενα πεπιστευκότι ἑωυτοῦ εἶναι. δόξῃ μὲν γὰρ ὁμοίῃ πλουτέουσι· τόπερ δὲ τοῦ κεκτῆσθαι ἐστὶν οἰκήιον, τοῦ αὐτοῖς χρέεσθαι, ἀπεστερέαται ὁμοίως ἀμφότεροι.

15 *Θεοπόμπου.*

Εἴ τις πλεῖστα τῶν ἀγαθῶν κεκτημένος μετὰ τοῦ λυπεῖσθαι διάγοι τὸν βίον, ἁπάντων ἂν εἴη καὶ τῶν ὄντων καὶ τῶν ἐσομένων ἀθλιώτατος.

16 *Δημοκρίτου.*

Οἱ φειδωλοὶ τὸν τῆς μελίσσης οἶτον ἔχουσιν, ἐργαζόμενοι ὡς ἀεὶ βιωσόμενοι.

17 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Οἱ τῶν φειδωλῶν παῖδες ἀμαθέες γινόμενοι, ὥσπερ οἱ ὀρχησταὶ οἱ ἐς τὰς μαχαίρας ὀρούοντες, ἢν ἑνὸς μούνου μὴ τύχωσι καταφερόμενοι, ἔνθα δεῖ τοὺς πόδας ἐρεῖσαι, ἀπόλλυνται (χαλεπὸν δὲ τυχέειν ἑνός, τὸ γὰρ ἴχνιον μοῦνον λέλειπται τῶν ποδῶν)· οὕτω δὲ καὶ οὗτοι, ἢν ἁμάρτωσι τοῦ πατρικοῦ τύπου τοῦ ἐπιμελέος καὶ φειδωλοῦ, φιλέουσι διαφθείρεσθαι.

18 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Φειδώ τοι καὶ λιμὸς χρηστή, ἐν καιρῷ δὲ καὶ δαπάνη· γινώσκειν δὲ ἀγαθοῦ.

19 *Ἀντιφῶντος.*

Εἰσί τινες οἳ τὸν παρόντα μὲν βίον οὐ ζῶσιν, ἀλλὰ παρασκευάζονται πολλῇ σπουδῇ ὡς ἕτερόν τινα βίον βιωσόμενοι, οὐ τὸν παρόντα· καὶ ἐν τούτῳ παραλειπόμενος ὁ χρόνος οἴχεται.

20 *Μητροδώρου.*

Ἑτοιμάζονταί τινες διὰ βίου τὰ πρὸς τὸν βίον, ὡς βιωσόμενοι μετὰ τὸ λεγόμενον ζῆν, οὐ συνορῶντες ὡς πᾶσιν ἡμῖν θανάσιμον ἐγκέχυται τὸ τῆς γενέσεως φάρμακον.

21 *Δημοκρίτου.*

Βίος ἀνεόρταστος μακρὴ ὁδὸς ἀπανδόκευτος.

22 *Πλουτάρχου ἐκ τῶν ὑγιεινῶν παραγγελμάτων* (125 e).

Οὐ μὴν ἀλλὰ καὶ μικρολογία καὶ γλισχρότης ἐνίους ἀναγκάζει πιεζοῦντας οἴκοι τὰς ἐπιθυμίας καὶ κατισχναίνοντας, ἐμπίπλασθαι παρ' ἑτέρων τῶν πολυτελῶν καὶ ἀπολαύειν, καθάπερ ἐκ πολεμίας ἀφειδῶς ἐπισιτιζομένους· εἶτα κακῶς διατεθέντες ἀπιᾶσιν, εἰς τὴν ὑστεραίαν ἐφόδιον τῆς ἀπληστίας τὴν ἀπεψίαν ἔχοντες.

23 *Θεοκρίτου.*

Θεόκριτος τοὺς πολλοὺς τῶν πλουσίων ἔλεγεν ἐπιτρόπους εἶναι ἀλλὰ μὴ δεσπότας τῶν χρημάτων.

24 *Εὐσεβίου.*

Ἄνδρα χρήματα μεγάλα ἔχοντα ἀποτεθησαυρισμένα, καὶ αὐτοῦ τούτου εἵνεκα ἐπικτώμενον, καὶ ὅκως αἰεί τι τοῖς παρεοῦσι προσθέῃ πρήγματα μὲν ἔχοντα, μήτε δὲ ἐς ἑωυτὸν μήτε ἐς ἄλλο τι τῶν χρησίμων ἀναλίσκοντα, μήκοτε πλουτέειν ἀποφήναιο, φύ-

λακα δὲ καὶ ποριστὴν εἶναι ἀλλοτρίων χρημάτων, καὶ πόνους ἔχειν αἱρέεσθαι πολλάκις καὶ τοῖς ἑωυτῷ μηδὲν προσήκουσιν ἐπικτώμενον.

25 Ξενοφῶντος ἐν τῷ η' τῆς παιδείας (VIII, 2, 23).

Ὅπως δὲ καὶ τοῦτο εἰδείης, ὦ Κροῖσε, ἐγὼ γὰρ οὐ τοὺς πλεῖστα ἔχοντας καὶ φυλάττοντας πλεῖστα εὐδαιμονεστάτους ἡγοῦμαι· οἱ γὰρ τὰ τείχη φυλάττοντες, οὗτοι ἂν εὐδαιμονέστατοι εἴησαν, πάντα γὰρ τὰ ἐν ταῖς πόλεσι φυλάττουσιν· ἀλλ' ὃς ἂν πλεῖστα κτᾶσθαί τε δύνηται σὺν τῷ δικαίῳ καὶ χρῆσθαι πλείστοις σὺν τῷ καλῷ, τοῦτον ἐγὼ εὐδαιμονέστατον νομίζω κατὰ χρήματα.

26 Σωκράτους.

Ὁ τῶν φιλαργύρων πλοῦτος ὥσπερ ὁ ἥλιος καταδὺς εἰς τὴν γῆν οὐδένα τῶν ζώντων εὐφραίνει.

27 Τοῦ αὐτοῦ.

Ὁ τῶν φιλαργύρων βίος ἔοικε νεκροῦ δείπνῳ· πάντα γὰρ ἔχων τὸν εὐφραινόμενον οὐκ ἔχει.

28 Ἐπικούρου.

Γεγόναμεν ἅπαξ· δὶς οὐκ ἔστι γενέσθαι· δεῖ δὲ τὸν αἰῶνα μηκέτ' εἶναι. σὺ δὲ τῆς αὔριον οὐκ ὢν κύριος ἀναβάλλῃ τὸν καιρόν· ὁ δὲ πάντων βίος μελλησμῷ παραπόλλυται· καὶ διὰ τοῦτο ἕκαστος ἡμῶν ἀσχολούμενος ἀποθνήσκει.

29 Ἀντιφῶντος.

Ἔστι δέ τις λόγος, ὡς ἄρα ἰδὼν ἀνὴρ ἄνδρα ἕτερον ἀργύριον ἀναιρούμενον πολὺ ἐδεῖτό οἱ δανεῖσαι ἐπὶ τόκῳ· ὃ δ' οὐκ ἠθέλησεν, ἀλλ' ἦν οἷος ἀπιστεῖν τε καὶ μὴ ὠφελεῖν μηδένα, φέρων δ' ἀπέθετό ποι δή·

καί τις καταμαθὼν τοῦτο ποιοῦντα ὑφείλετο· ὑστέρῳ δὲ χρόνῳ ἐλθὼν οὐχ εὕρισκε τὰ χρήματα ὁ καταθέμενος. περιαλγῶν οὖν τῇ συμφορᾷ τά τε ἄλλα καὶ ὅτι οὐκ ἔχρησε τῷ δεομένῳ, ὃ ἂν αὐτῷ καὶ σῷον ἦν καὶ ἕτερον προσέφερεν, ἀπαντήσας τῷ ἀνδρὶ τῷ τότε δανειζομένῳ ἀπωλοφύρετο τὴν συμφορὰν ὅτι ἐξήμαρτε, καὶ ὅτι οἱ μεταμέλει οὐ χαρισαμένῳ, ἀλλ' ἀχαριστήσαντι, καὶ πάντως οἱ ἀπολόμενον τὸ ἀργύριον. ὃ δ' αὐτὸν ἐκέλευσε μὴ φροντίζειν, ἀλλὰ νομίζειν αὐτῷ εἶναι καὶ μὴ ἀπολωλέναι καταθέμενον λίθον εἰς τὸ αὐτὸ χωρίον· πάντως γὰρ οὐδ' ὅτε ἦν σοι ἐχρῶ αὐτῷ, ὅθεν μηδὲ νῦν νόμιζε στέρεσθαι μηδενός. ὅτῳ γάρ τις μὴ ἐχρήσατο μηδὲ χρήσεται, ὄντος ἢ μὴ ὄντος αὐτῷ οὐδὲν οὔτε πλέον οὔτε ἔλασσον βλάπτεται. ὅταν γὰρ ὁ θεὸς μὴ παντελῶς βούληται ἀγαθὰ διδόναι ἀνδρί, χρημάτων πλοῦτον παρασχών, τοῦ φρονεῖν δὲ καλῶς πένητα ποιήσας, τὸ ἕτερον ἀφελόμενος ἑκατέρων ἀπεστέρησεν.

ΠΕΡΙ ΕΓΚΡΑΤΕΙΑΣ. ΙΖ.

1 *Σοφοκλέους Ἠλέκτρας* (989).

Ζῆν αἰσχρὸν αἰσχρῶς τοῖς καλῶς πεφυκόσιν.

2 *Σοφοκλέους Φαίδρᾳ.*

Οὐ γὰρ δίκαιον ἄνδρα γενναῖον φρένας
τέρπειν ὅπου μὴ καὶ δίκαια τέρψεται.

3 *Χάρητος.*

Γαστρὸς δὲ πειρῶ πᾶσαν ἡνίαν κρατεῖν·
μόνη γὰρ ὧν πέπονθεν οὐκ ἔχει χάριν,
ἀεὶ δὲ τοῦ δέοντος ἐνδεῖται πλέον.

ὅστις δὲ γαστρὸς μὴ κρατεῖν ἐπίσταται,
οὗτος τὰ πλείω τῶν κακῶν ἔχει κακά.

4 *Σοφοκλέους Οἰδίποδι* (Tyr. 1409).
Ἀλλ' οὐ γὰρ αὐδᾶν ἔσθ' ἃ μηδὲ δρᾶν καλά.

5. 6 *Ὅσοι δὲ φιλοσοφοῦντες ἐκμοχθοῦσί τι . . .*
ἐνταῦθ' ὑπάρχει τῷ βίῳ γαστρὸς κρατεῖν.
διδάσκαλος γὰρ ηὐτέλεια τῶν σοφῶν
καὶ τῶν ἀρίστων γίγνεται βουλευμάτων.

7 *Εὐριπίδου Ἐρεχθεῖ.*
Ἐξουσίᾳ δὲ μή ποτ' ἐντυχὼν τέκνον
αἰσχροὺς ἔρωτας δημοτῶν διωκαθεῖν·
ὃ καὶ σίδηρον ἀγχόνας τ' ἐφέλκεται,
χρηστῶν πενήτων ἥν τις αἰσχύνῃ τέκνα.

8 *Πυθαγόρου.*
Παντὸς καλοῦ κτήματος πόνος προηγεῖται ὁ κατ' ἐγκράτειαν. Porphyrius ad Marc. 7.

9 *Ἰαμβλίχου.*
Τί δαί, τοῖς ἀνθρώποις κτωμένοις ἐμμελῆ καὶ εὐάρμοστον ἕξιν πρός τε τοὺς διαφέροντας τρόπους εὐκοινώνητον ἄρχειν τε καὶ ἄρχεσθαι δυναμένην ἐν μέρει τῷ προσήκοντι, τούτοις δ' ἕπεται τὰ ἤθη καὶ τὰ ἐπιτηδεύματα περί τε ἐγκράτειαν ἡδονῶν καὶ περὶ τὴν ἀρχὴν τῶν ἐπιθυμιῶν. ἀλλὰ δεῖ δὴ τῶν ἡδονῶν τὸ ἀκόλαστον ἐξ ἅπαντος τρόπου καὶ ἄμετρον ἐξορίζειν.

10 *Φωκίωνος.*
Φωκίωνι ὁ παῖς πλείω τῶν εἰωθότων ὄψων ἐπρίατο. ὃ δὲ "οἰμώξῃ" ἔφη "ἐὰν τοῦ φαγεῖν πλείω ἐπιφαγεῖν παρασκευάζῃς.

11 Ἐκ τῶν Σίμωνος ἐπιστολῶν πρὸς Ἀρίστιππον.

Μέμνησο μέντοι λιμοῦ καὶ δίψης· ταῦτα γὰρ δύναται μεγάλα τοῖς σωφροσύνην διώκουσι.

12 Πυθαγόρου.

Ῥώμην μεγίστην καὶ πλοῦτον τὴν ἐγκράτειαν κτῆσαι.

13 Τοῦ αὐτοῦ.

Πυθαγόρας παρηγγύα "μὴ πυκνὰ τὸν ἄνθρωπον ἀπὸ τοῦ ἀνθρώπου," μὴ δεῖν συνεχῶς ἀφροδισιάζειν αἰνιττόμενος.

14 Ἀπολλώνιος Εἰδομένῃ.

Ἐζηλώσαμεν τὴν αὐτάρκειαν, οὐχ ὅπως τοῖς εὐτελέσι καὶ λιτοῖς πάντως χρώμεθα, ἀλλ' ὅπως θαρρῶμεν πρὸς αὐτά.

15 Ἀπολλώνιος τοῖς γνωρίμοις.

Μηδέν με δόξητε ῥᾳδίως ἄλλοις παραινεῖν· αὐτὸς γὰρ ἐπὶ τῆς μάζης καὶ τῆς ἄλλης τῆς ἀκολούθου ταύτῃ διαίτης ὢν τοιαῦτα ὑμῖν παρεγγυῶ.

16 Διογένους.

Ὁ Διογένης καθαρὸν λαβὼν ἄρτον ἐξέβαλε τῆς πήρας τὸν αὐτόπυρον εἰπών "ὦ ξένε, τυράννοις ἐκποδὼν μεθίστασο."

17 Σωκράτους.

Ἑορτῆς οὔσης παρὰ τοῖς Ἀθηναίοις, ἐφιλοτιμήσατο ὁ Ἀλκιβιάδης δῶρα πολλὰ πέμψαι τῷ Σωκράτει. τῆς οὖν Ξανθίππης καταπλαγείσης καὶ τὸν Σωκράτην λαβεῖν αὐτὰ ἀξιούσης, ἔφη "ἀλλὰ καὶ ἡμεῖς τῇ τοῦ Ἀλκιβιάδου φιλοτιμίᾳ παραταξώμεθα, μὴ λαβεῖν τὰ πεμφθέντα ἀντιφιλοτιμησάμενοι."

18 Ἀριστίππου.

Κρατεῖ ἡδονῆς οὐχ ὁ ἀπεχόμενος, ἀλλ' ὁ χρώμενος μὲν μὴ προεκφερόμενος δέ, ὥσπερ καὶ νεὼς καὶ ἵππου οὐχ ὁ μὴ χρώμενος, ἀλλ' ὁ μετάγων ὅποι βούλεται.

19 Περικλέους.

Περικλῆς Σοφοκλέους εὐπρεπῆ παῖδα δεικνύντος αὐτῷ "ὦ Σοφόκλεις" εἶπε "τὸν σώφρονα στρατηγὸν οὐ μόνον τὰς χεῖρας, ἀλλὰ καὶ τὴν ὄψιν ἔχειν παρ' ἑαυτῷ δεῖ."

20 Ἐκ τοῦ Ἐπικτήτου ἐγχειριδίου (34).

Ὅταν ἡδονῆς τινος φαντασίαν λάβῃς, ὅπερ καὶ ἐπὶ τῶν ἄλλων φαντασιῶν, φυλάσσου, μὴ συναρπάζου ταχέως, ἀλλὰ ἐκδεξάσθω σε τὸ πρᾶγμα, καὶ μικρὰν ἀναβολὴν αὐτὸς παρὰ σαυτοῦ λάβε· εἶτα ἐπισκοπήσας τὴν φαντασίαν καθ' οὓς ἔχεις κανόνας, μνήσθητι ἀμφοτέρων τῶν χρόνων, καθ' ὧν ἀπολαύσας μὲν τῆς ἡδονῆς ἡττημένος μετανοήσεις καὶ λοιδορήσεις σεαυτῷ, ἀπεσχημένος δὲ χαίρεις καὶ ἐπαινεῖς αὐτὸς ἑαυτόν. ἐὰν δὲ εὔκαιρον φαίνηται ἅψασθαι τοῦ πράγματος, μέμνησο ἵνα σου μὴ κρατήσῃ τὸ προσηνὲς αὐτοῦ καὶ ἀγωγόν, ἀλλὰ πειρῶ κρατεῖν τῶν ἡνιῶν.

21 Δημοσθένους (1438, 11).

Δεῖ τὸν εὖ φρονοῦντα τὸν λογισμὸν ἀεὶ τῶν ἐπιθυμιῶν κρείττω πειρᾶσθαι ποιεῖν.

22 Σωκράτους.

Σωκράτης ἐρωτηθεὶς τίνι τῶν ἄλλων ἀνθρώπων διαφέρει εἶπε "καθόσον οἱ μὲν λοιποὶ ζῶσιν ἵν' ἐσθίωσιν, αὐτὸς δὲ ἐσθίω ἵνα ζῶ"

23 *Ἐπικούρου.*

Χάρις τῇ μακαρίᾳ φύσει, ὅτι τὰ ἀναγκαῖα ἐποίησεν εὐπόριστα, τὰ δὲ δυσπόριστα οὐκ ἀναγκαῖα.

24 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Εἰ βούλει πλούσιόν τινα ποιῆσαι, μὴ χρήμασιν προστίθει, τῆς δὲ ἐπιθυμίας ἀφαίρει.

25 *Ξενοκράτους.*

Ξενοκράτης εἴ ποτε σταμνίον οἴνου ἀνοίξειεν, ἔφθανεν ὁ οἶνος τρεπόμενος πρὶν ἀναλωθῆναι· καὶ τὰ ὄψα δὲ πολλάκις ἕωλα ἐξέρριπτεν. ἔνθεν καὶ ἡ παροιμία τὸ Ξενοκράτους τυρίον ἐπὶ τῶν ἐπὶ πολὺ παραμενόντων καὶ μὴ τάχιστα ἀναλισκομένων.

26 *Δημοκρίτου.*

Εὐγνώμων ὁ μὴ λυπεόμενος ἐφ' οἷσι οὐκ ἔχει, ἀλλὰ χαίρων ἐφ' οἷσι ἔχει.

27 *Πυθαγόρου.*

Τεθνάναι πολλῷ κρεῖττον ἢ δι' ἀκρασίαν τὴν ψυχὴν ἀμαυρῶσαι. Porphyrius ad Marc. 35.

28 *Σωκράτους.*

Σωκράτης ἐγκράτειαν τὸ κρατεῖν τῆς ἐν τῷ σώματι ἡδονῆς ἔφη.

Χρύσιππος ὁ Σολεὺς ἐποιεῖτο τὸν βίον ἐκ πάνυ ὀλίγων, Κλεάνθης δὲ καὶ ἀπὸ ἐλαττόνων.

30 *Ἐπικούρου. Αἰλιανοῦ ἐκ τῆς συμμικτῆς ἱστορίας* (4, 13).

Ἐπίκουρος ὁ Γαργήττιος ἐκεκράγει λέγων ᾧ ὀλίγον οὐχ ἱκανόν, τούτῳ γε οὐδὲν ἱκανόν. ἔλεγε δ' ἑτοίμως ἔχειν καὶ τῷ Διὶ ὑπὲρ εὐδαιμονίας διαγωνίζεσθαι μᾶζαν ἔχων καὶ ὕδωρ.

31 *Σωκράτους.*

Σωκράτης ἐρωτηθεὶς ὑπό τινος πῶς ἂν γένοιτό τις πλούσιος; "εἰ τῶν ἐπιθυμιῶν" ἔφη "εἴη πένης."

32 *Ξενοφῶντος ἐν τῷ α΄* (c.5,1) *τῶν ἀπομνημονευμάτων.*

Εἰ δὲ δὴ καὶ ἐγκράτεια καλόν τε κἀγαθὸν ἀνδρὶ κτῆμά ἐστιν, ἐπισκεψώμεθα εἴ πη προυβίβαζε λέγων εἰς ταύτην τοιάδε· Ὦ ἄνδρες, εἰ πολέμου ἡμῖν γενομένου βουλοίμεθα ἑλέσθαι ἄνδρα, ὑφ᾽ οὗ μάλιστ᾽ ἂν αὐτοὶ μὲν σῳζοίμεθα, τοὺς δὲ πολεμίους χειροίμεθα, ἆρ᾽ ὅντινα ἂν αἰσθανοίμεθα ἥττω γαστρὸς ἢ οἴνου ἢ ἀφροδισίων ἢ πόνου ἢ ὕπνου, τοῦτον αἱροίμεθα; καὶ πῶς ἂν οἰηθείημεν τὸν τοιοῦτον ἢ ἡμᾶς σῶσαι ἢ τοὺς πολεμίους κρατῆσαι; εἰ δ᾽ ἐπὶ τελευτῇ τοῦ βίου γενόμενοι βουλοίμεθά τῳ ἐπιτρέψαι ἢ παῖδας ἄρρενας παιδεῦσαι ἢ θυγατέρας παρθένους διαφυλάξαι ἢ χρήματα διασῶσαι, ἆρ᾽ ἀξιόπιστον εἰς ταῦτα ἡγησαίμεθ᾽ ἂν τὸν ἀκρατῆ; δούλῳ δ᾽ ἀκρατεῖ ἐπιτρέψαιμεν ἂν ἢ βοσκήματα ἢ ταμιεῖα ἢ ἔργων ἐπιστασίαν; διάκονον δὲ καὶ ἀγοραστὴν τὸν τοιοῦτον ἐθελήσαιμεν ἂν προῖκα λαβεῖν; ἀλλὰ μὴν εἴ γε μηδὲ δοῦλον ἀκρατῆ δεξαίμεθ᾽ ἄν, πῶς οὐκ ἄξιον αὐτόν γε φυλάξασθαι τοιοῦτον γενέσθαι; καὶ γὰρ οὐχ ὥσπερ οἱ πλεονέκται τῶν ἄλλων ἀφαιρούμενοι χρήματα ἑαυτοὺς δοκοῦσι πλουτίζειν, οὕτως ὁ ἀκρατὴς τοῖς μὲν ἄλλοις βλαβερὸς αὑτῷ δ᾽ ὠφέλιμος, ἀλλὰ κακοῦργος μὲν τῶν ἄλλων, ἑαυτοῦ δὲ πολὺ κακουργότερος, εἴ γε κακουργότερόν ἐστι μὴ μόνον τὸν οἶκον τὸν ἑαυτοῦ φθείρειν, ἀλλὰ καὶ τὸ σῶμα καὶ τὴν ψυχήν. ἐν συνουσίᾳ δὲ τίς ἂν ἥσθείη τῷ τοιούτῳ ὃν εἰδείη τῷ ὄψῳ καὶ τῷ οἴνῳ χαίροντα μᾶλλον ἢ τοῖς φίλοις; καὶ τὰς πόρνας ἀγα-

πῶντα μᾶλλον ἢ τοὺς ἑταίρους; ἆρά γε οὐ χρὴ πάντα ἄνδρα ἡγησάμενον τὴν ἐγκράτειαν ἀρετῆς εἶναι κρηπῖδα, ταύτην πρώτην ἐν τῇ ψυχῇ κατασκευάσασθαι; τίς γὰρ ἄνευ ταύτης ἢ μάθοι τι ἀγαθὸν ἢ μελετήσειεν ἀξιολόγως; ἢ τίς οὐκ ἂν ταῖς ἡδοναῖς δουλεύων αἰσχρῶς διατεθείη καὶ τὸ σῶμα καὶ τὴν ψυχήν; ἐμοὶ μὲν δοκεῖ νὴ τὴν Ἥραν ἐλευθέρῳ μὲν ἀνδρὶ εὐκτὸν εἶναι μὴ τυχεῖν δούλου τοιούτου, δουλεύοντι δὲ ταῖς τοιαύταις ἡδοναῖς ἱκετευτέον τοὺς θεοὺς δεσποτῶν ἀγαθῶν τυχεῖν· οὕτω γὰρ ἂν μόνος ὁ τοιοῦτος σωθείη.

33 Ξενοφῶντος ἐν τῷ α' (6, 5) ἀπομνημονευμάτων.

Οὐκ οἶσθ' ὅτι ὁ μὲν ἥδιστα ἐσθίων ἥκιστα ὄψου δεῖται, ὁ δὲ ἥδιστα πίνων ἥκιστα τοῦ μὴ παρόντος ἐπιθυμεῖ ποτοῦ; τά γε μὴν ἱμάτια οἶσθ' ὅτι οἱ μεταβαλλόμενοι ψύχους καὶ θάλπους ἕνεκα μεταβάλλονται· καὶ ὑποδήματα ὑποδοῦνται, ὅπως μὴ διὰ τὰ λυποῦντα τοὺς πόδας κωλύωνται πορεύεσθαι· [ἤδη οὖν πότε ᾔσθου ἐμὲ ἢ διὰ ψῦχος μᾶλλόν του ἔνδον μένοντα, ἢ διὰ θάλπος μαχόμενόν τῳ περὶ σκιᾶς, ἢ διὰ τὸ ἀλγεῖν τοὺς πόδας οὐ βαδίζοντα ὅπου ἂν βούλωμαι;] οὐκ οἶσθ' ὅτι οἱ φύσει ἀσθενέστατοι τῷ σώματι μελετήσαντες, τῶν ἰσχυροτάτων ἀμελησάντων κρείττους τε γίνονται πρὸς ἃ ἂν μελετήσωσι, καὶ ῥᾷον αὐτὰ φέρουσιν; — ἐὰν δὲ δὴ φίλους ἢ πόλιν ὠφελεῖν δέῃ, ποτέρῳ πλέον σχολὴ τούτων ἐπιμελεῖσθαι, τῷ ὡς ἐγὼ νῦν ἢ τῷ ὡς σὺ μακαρίζεις διαιτωμένῳ; στρατεύοιτο δὲ πότερος ἂν ῥᾷον, ὁ μὴ δυνάμενος ἄνευ πολυτελοῦς διαίτης ζῆν ἢ ᾧ τὸ παρὸν ἀρκοίη; ἐκπολιορκηθείη δὲ πότερος ἂν θᾶττον, ὁ τῶν χαλεπωτάτων εὑρεῖν δεό-

μενος ἢ ὁ τοῖς ῥᾴστοις ἐντυγχάνειν ἀρκούντως χρώμενος; ἔοικας, ὦ Ἀντιφῶν, τὴν εὐδαιμονίαν οἰομένῳ τρυφὴν καὶ πολυτέλειαν εἶναι· ἐγὼ δὲ νομίζω τὸ μὲν μηδενὸς δέεσθαι θεῖον εἶναι, τὸ δὲ ὡς ἐλαχίστων ἐγγυτάτω τοῦ θείου. καὶ τὸ μὲν θεῖον κράτιστον, τὸ δ' ἐγγυτάτω τοῦ θείου ἐγγυτάτω τοῦ κρατίστου.

34 *Ἐπικούρου.*

Βρυάζω τῷ κατὰ τὸ σωμάτιον ἡδεῖ, ὕδατι καὶ ἄρτῳ χρώμενος, καὶ προσπτύω ταῖς ἐκ πολυτελείας ἡδοναῖς, οὐ δι' αὐτὰς ἀλλὰ διὰ τὰ ἐξακολουθοῦντα αὐταῖς δυσχερῆ.

35 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Τότε χρείαν ἔχομεν τῆς ἡδονῆς, ὅταν ἐκ τοῦ μὴ παρεῖναι αὐτὴν ἀλγῶμεν. ὅταν δὲ τοῦτο μὴ πάσχωμεν ἐν αἰσθήσει καθεστῶτες, τότε οὐδεμία χρεία τῆς ἡδονῆς. οὐ γὰρ ἡ τῆς φύσεως ἡδονὴ τὴν ἀδικίαν ποιεῖ ἔξωθεν, ἀλλ' ἡ περὶ τὰς κενὰς δόξας ὄρεξις.

36 *Πλάτωνος.*

Πλάτων πολλάκις διψῶν ἐκ τοῦ φρέατος ἀνιμᾶτο τὸ ὕδωρ καὶ ἐξέχει, κολάζων τὴν ἐπιθυμίαν.

37 *Ἐπικούρου.*

Ἐπίκουρος ἐρωτηθεὶς πῶς ἄν τις πλουτήσειεν; "οὐ τοῖς οὖσι προστιθεὶς" ἔφη "τῆς δὲ χρείας τὰ πολλὰ περιτέμνων."

38 *Δημοκρίτου.*

Τῶν ἡδέων τὰ σπανιώτατα γινόμενα μάλιστα τέρπει.

39 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Εἴ τις ὑπερβάλλοι τὸ μέτριον, τὰ ἐπιτερπέστατα ἀτερπέστατα ἂν γίνοιτο.

40 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Ἀνδρεῖος οὐχ ὁ τῶν πολεμίων μόνον, ἀλλὰ καὶ ὁ τῶν ἡδονῶν κρέσσων.

41 *Εὐσεβίου.*

Γνώμης ἀνδρὸς ἀρίστου ἀπόδεξις ἥδε, μὴ ἐπὶ τῷ σιτέεσθαι ἑωυτὸν νομίζειν γεγονέναι μηδὲ ἐν τούτῳ τὴν ζωὴν ἡγέεσθαι, μούνου δὲ αὐτοῦ τοῦ ζώειν ἕνεκα ἀνθρώποις τροφὴν νομίζειν εὑρῆσθαι.

42 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Ἐγκράτεια καὶ σώματι ἀγαθόν· πρὸς γὰρ ὑγιείην αὐτῷ ξυμμάχεται καὶ σωφροσύνην ἐν ψυχῇ τίκτει. σωφροσύνη δὲ ἀστασίαστον καὶ εὔδιον, καὶ βίον εἰρηναῖον ψυχῇ παρασκευάζει.

43 *Μουσωνίου ἐκ τοῦ περὶ τροφῆς.*

Περὶ δὲ τροφῆς εἰώθει μὲν πολλάκις λέγειν καὶ πάνυ ἐντεταμένως, ὡς οὐ περὶ μικροῦ πράγματος οὐδ' εἰς μικρὰ διαφέροντος· ᾤετο γὰρ ἀρχὴν καὶ ὑποβολὴν τοῦ σωφρονεῖν εἶναι τὴν ἐν σιτίοις καὶ ποτοῖς ἐγκράτειαν. ἅπαξ δέ ποτε τῶν ἄλλων ἀφέμενος λόγων οὓς ἑκάστοτε διεξῄει, τοιάδε τινὰ εἶπεν, ὡς χρὴ καθάπερ τὴν εὐτελῆ τῆς πολυτελοῦς τροφὴν προτιμᾶν καὶ τὴν εὐπόριστον τῆς δυσποριστου, οὕτω καὶ τὴν σύμφυλον ἀνθρώπῳ τῆς [μὴ] τοιαύτης. εἶναι δὲ σύμφυλον ἡμῖν τὴν ἐκ τῶν φυομένων ἐκ γῆς, ὅσα τε σιτώδη ὄντα καὶ ὅσα μὴ τοιαῦτα ὄντα δύναται τρέφειν οὐ κακῶς τὸν ἄνθρωπον, καὶ τὴν ἀπὸ τῶν ζώων οὐκ ἀναιρουμένων, ἄλλως δὲ χρησιμευόντων. τούτων δὲ τῶν βρωμάτων ἐπιτηδειότατα μὲν οἷς αὐτόθεν χρῆσθαι ὑπάρχει δίχα πυρός, ἐπεὶ καὶ ἑτοιμότατα· οἷα δὴ τά τε ὡραῖα καὶ τῶν λαχάνων ἔνια καὶ γάλα καὶ τυρὸς καὶ κηρία. καὶ ὅσα μέντοι δεῖται πυρός, ἢ

σιτώδη ἢ λαχανώδη ὄντα, καὶ ταῦτ' οὐκ ἀνεπιτήδεια, ἀλλὰ σύμφυλα ἀνθρώπῳ πάντα. τὴν μέντοι κρεώδη τροφὴν θηριωδεστέραν ἀπέφηνε καὶ τοῖς ἀγρίοις ζώοις προσφορωτέραν. εἶναι δὲ ταύτην ἔλεγε καὶ βαρυτέραν καὶ τῷ νοεῖν τι καὶ φρονεῖν ἐμπόδιον· τὴν γὰρ ἀναθυμίασιν τὴν ἀπ' αὐτῆς θολωδεστέραν οὖσαν ἐπισκοτεῖν τῇ ψυχῇ· παρὸ καὶ βραδυτέρους φαίνεσθαι τὴν διάνοιαν τοὺς πλείονι ταύτῃ χρωμένους. δεῖν δὲ τὸν ἄνθρωπον, ὥσπερ συγγενέστατον τοῖς θεοῖς τῶν ἐπιγείων ἐστίν, οὕτω καὶ ὁμοιότατα τρέφεσθαι τοῖς θεοῖς. ἐκείνοις μὲν οὖν ἀρκεῖν τοὺς ἀπὸ γῆς καὶ ὕδατος ἀναφερομένους ἀτμούς, ἡμᾶς δ' ὁμοιοτάτην ταύτῃ προσφέρεσθαι τροφὴν ἂν ἔφη, εἰ τὴν κουφοτάτην καὶ καθαρωτάτην προσφεροίμεθα· οὕτω δ' ἂν καὶ τὴν ψυχὴν ἡμῶν ὑπάρχειν καθαράν τε καὶ ξηράν, ὁποία οὖσα ἀρίστη καὶ σοφωτάτη εἴη ἄν, καθάπερ Ἡρακλείτῳ δοκεῖ λέγοντι οὕτως "αὔη ψυχὴ σοφωτάτη καὶ ἀρίστη." νῦν δέ, ἔφη, πολὺ χεῖρον ἡμεῖς τῶν ἀλόγων ζώων τρεφόμεθα. τὰ μὲν γάρ, εἰ καὶ σφόδρα τῇ ἐπιθυμίᾳ ὥσπερ μάστιγί τινι ἐλαυνόμενα φέρεται πρὸς τὴν τροφήν, ὅμως τοῦ γε πανουργεῖν περὶ τὰ βρώματα καὶ τοῦ τεχνιτεύειν ἀπήλλακται, ἀρκούμενα τοῖς παραπεσοῦσι καὶ πλησμονὴν θηρώμενα μόνον, προσωτέρω δ' οὐδέν. ἡμεῖς δὲ τέχνας καὶ μηχανὰς ποικίλας ἐπινοοῦμεν, ὥστε τὴν ἡδονὴν τῆς τροφῆς ἐφηδύνειν καὶ τὴν κατάποσιν κολακεύειν μειζόνως. εἰς τοῦτο δὲ προεληλύθαμεν λιχνείας καὶ ὀψοφαγίας, ὥστε καθάπερ μουσικὰ καὶ ἰατρικά, οὕτω καὶ μαγειρικὰ πεποίηνται τινὲς συγγράμματα, ἃ τὴν μὲν ἡδονὴν καὶ πάνυ αὔξει τὴν ἐν τῷ φάρυγι, τὴν δ' ὑγίειαν διαφθείρει. πολὺ γοῦν κάκιον διακειμένους ὁρᾶν ἔστι τὰ σώματα τοὺς περὶ τὰ βρώματα τρυφῶντας, ὧν εἰ-

σιν ἔνιοι παραπλήσιοι ταῖς κιττώσαις γυναιξί· καὶ γὰρ οὗτοι καθάπερ ἐκεῖναι τὰ συνηθέστατα τῶν βρωμάτων δυσχεραίνουσι καὶ τοὺς στομάχους διεφθαρμένους ἔχουσιν. ὅθεν ὥσπερ ὁ ἀχρεῖος σίδηρος συνεχῶς δεῖται στομώσεως, οὕτω καὶ οἱ ἐκείνων στόμαχοι ἐν τῷ ἐσθίειν συνεχὲς στομοῦσθαι θέλουσιν ἢ ὑπὸ ἀκράτου ἢ ὑπὸ ὄξους ἢ ὑπὸ βρώματός τινος στρυφνοῦ. ἀλλ' οὐχὶ ὁ Λάκων τοιοῦτος, ὃς ἰδών τινα, παρακειμένου αὐτῷ ὀρνιθίου τῶν πιόνων καὶ πολυτελῶν, ὑπὸ τρυφῆς ἀναινόμενον φαγεῖν αὐτὸ καὶ φάσκοντα μὴ δύνασθαι "ἀλλ' ἐγώ" ἔφη "καὶ γυπὸς δύναμαι καὶ τράγου." Ζήνων δὲ ὁ Κιτιεὺς οὐδὲ νοσῶν ᾤετο δεῖν τροφὴν προσφέρεσθαι τρυφερωτέραν, ἀλλ' ἐπεὶ ὁ θεραπεύων ἰατρὸς ἐκέλευεν αὐτὸν φαγεῖν νεοττὸν περιστερᾶς, οὐκ ἀνασχόμενος "ὡς Μάνην" ἔφη "με θεράπευε." ἠξίου γὰρ οἶμαι μηδὲν μαλακώτερον ἐν τῇ θεραπείᾳ γίνεσθαι αὐτῷ ἢ τῶν δούλων τινὶ νοσοῦντι· καὶ γὰρ εἰ ἐκεῖνοι θεραπεύεσθαι δύνανται δίχα τοῦ τροφὴν λαμβάνειν πολυτελεστέραν, δύνασθαι ἂν καὶ ἡμᾶς. δεῖ δὲ μηδαμῶς τὸν ἀγαθὸν ἄνδρα δούλου μηδενὸς εἶναι μαλακώτερον. διόπερ ὁ Ζήνων εἰκότως ἠξίου εὐλαβεῖσθαι τὴν πολυτέλειαν ἐν τῇ τροφῇ καὶ μηδ' ἐπ' ὀλίγον ἐνδιδόναι πρὸς τὸ τοιοῦτον· ἐπείπερ ὁ ἐνδοὺς ἅπαξ προέλθοι ἂν ἐπὶ πλεῖστον, ἅτε τῆς ἡδονῆς πολλὴν ἐχούσης αὔξησιν ἔν τε πώμασι καὶ βρώμασι. ταῦτα μὲν τότε καινότερα ἔδοξεν ἡμῖν εἰπεῖν περὶ τροφῆς ὧν εἰώθει λέγειν ἑκάστοτε.

44 Ξενοφῶντος ἐν τῷ α' (3, 5) ἀπομνημονευμάτων.

Διαίτῃ δὲ τήν τε ψυχὴν ἐπαίδευσε καὶ τὸ σῶμα,

ἢ χρώμενος ἄν τις, εἰ μή τι δαιμόνιον εἴη, θαρραλέως καὶ ἀσφαλῶς διάγοι, καὶ οὐκ ἂν ἀπορήσειε τοσαύτης δαπάνης. οὕτω γὰρ εὐτελὴς ἦν, ὥστ' οὐκ οἶδ' εἴ τις οὕτως ἂν ὀλίγα ἐργάζοιτο, ὥστε μὴ λαμβάνειν τὰ Σωκράτει ἀρκοῦντα. σίτῳ μὲν γὰρ τοσούτῳ ἐχρῆτο, ὅσον ἡδέως ἤσθιε, καὶ ἐπὶ τούτῳ οὕτω παρεσκευασμένος ᾔει, ὥστε τὴν ἐπιθυμίαν τοῦ σίτου ὄψον αὐτῷ εἶναι· ποτὸν δὲ πᾶν ἡδὺ ἦν αὐτῷ, διὰ τὸ μὴ πίνειν εἰ μὴ διψῴη. εἰ δέ ποτε κληθεὶς ἐθελήσειεν ἐλθεῖν ἐπὶ δεῖπνον, ὃ τοῖς πλείστοις ἐργωδέστατόν ἐστιν ὥστε φυλάξασθαι τὸ ὑπὲρ τὸν καιρὸν ἐμπίπλασθαι, τοῦτο ῥᾳδίως πάνυ ἐφυλάττετο· τοῖς δὲ μὴ δυναμένοις τοῦτο ποιεῖν συνεβούλευε φυλάττεσθαι τὰ ἀναπείθοντα μὴ πεινῶντας ἐσθίειν μηδὲ διψῶντας πίνειν· καὶ γὰρ τὰ λυμαινόμενα γαστέρας καὶ κεφαλὰς καὶ ψυχὰς ταῦτα ἔφη εἶναι. οὐκ οἴεσθε δ', ἔφη ἐπισκώπτων, καὶ τὴν Κίρκην ὗς ποιεῖν τοιούτοις πολλοῖς δειπνίζουσαν· τὸν δὲ Ὀδυσσέα Ἑρμοῦ τε ὑποθημοσύνῃ, καὶ αὐτὸν ἐγκρατῆ ὄντα, καὶ ἀποσχόμενον τοῦ ὑπὲρ τὸν καιρὸν τῶν τοιούτων ἅπτεσθαι, διὰ ταῦτα οὐ γενέσθαι ὗν; τοιαῦτα μὲν περὶ τούτων ἔπαιζεν, ἅμα σπουδάζων· ἀφροδισίων δὲ παρῄνει τῶν καλῶν ἰσχυρῶς ἀπέχεσθαι· οὐ γὰρ ἔφη ῥᾴδιον εἶναι τῶν τοιούτων ἁπτόμενον σωφρονεῖν.

45 *Τοῦ αὐτοῦ ἐν δ'* (5, 2) *ἀπομνημονευμάτων.*

Εἰπέ μοι, ἔφη, ὦ Εὐθύδημε, ἆρα καλὸν καὶ μεγαλεῖον νομίζεις εἶναι καὶ ἀνδρὶ καὶ πόλει κτῆμα ἐλευθερίαν; Ὡς οἷόν τέ γε μάλιστα, ἔφη. Ὅστις οὖν ἄρχεται ὑπὸ τῶν τοῦ σώματος ἡδονῶν καὶ διὰ ταύτας μὴ δύναται πράττειν τὰ βέλτιστα, νομίζεις τοῦτον

ἐλεύθερον εἶναι; Ἥκιστα, ἔφη. Ἴσως γὰρ ἐλεύθερον φαίνεταί σοι τὸ πράττειν τὰ βέλτιστα· εἶτα τὸ ἔχειν τοὺς κωλύσοντας τὸ ταῦτα ποιεῖν ἀνελεύθερον νομίζεις; Παντάπασιν, ἔφη. Παντάπασιν ἆρά σοι δοκοῦσιν οἱ ἀκρατεῖς ἀνελεύθεροι εἶναι; Νὴ τὸν Δί᾽ εἰκότως. Πότερα δέ σοι δοκοῦσιν οἱ ἀκρατεῖς κωλύεσθαι μόνον τὰ κάλλιστα πράττειν, ἢ καὶ ἀναγκάζεσθαι τὰ αἴσχιστα ποιεῖν; Οὐδὲν ἧττον ἔμοιγ᾽, ἔφη, δοκοῦσι ταῦτα ἀναγκάζεσθαι ἢ ἐκεῖνα κωλύεσθαι. Ποίους δέ τινας δεσπότας ἡγῇ τοὺς τὰ μὲν ἄριστα κωλύοντας, τὰ δὲ κάκιστα ἀναγκάζοντας; Ὡς δυνατὸν νὴ Δί᾽, ἔφη, κακίστους. Δουλείαν δὲ ποίαν κακίστην νομίζεις εἶναι; Ἐγὼ μέν, ἔφη, τὴν παρὰ τοῖς κακίστοις δεσπόταις. Τὴν κακίστην ἄρα δουλείαν οἱ ἀκρατεῖς δουλεύουσιν; Ἔμοιγε δοκεῖ, ἔφη. Σοφίαν δὲ τὸ μέγιστον ἀγαθὸν οὐ δοκεῖ σοι ἀπείργουσα τῶν ἀνθρώπων ἡ ἀκρασία εἰς τοὐναντίον αὐτοὺς ἐμβάλλειν; ἢ οὐ δοκεῖ σοι προσέχειν τε τοῖς ὠφελοῦσι καὶ καταμανθάνειν αὐτὰ κωλύειν, ἀφέλκουσα ἐπὶ τὰ ἡδέα; καὶ πολλάκις αἰσθανομένους τῶν ἀγαθῶν τε καὶ τῶν κακῶν ἐκπλήξασα ποιεῖν τὸ χεῖρον ἀντὶ τοῦ βελτίονος αἱρεῖσθαι; Γίνεται τοῦτο, ἔφη. Σωφροσύνην δέ, ὦ Εὐθύδημε, τίνι ἂν φαίημεν ἧττον ἢ τῷ ἀκρατεῖ προσήκειν; αὐτὰ γὰρ δήπου τὰ ἐναντία σωφροσύνης καὶ ἀκρασίας ἔργα ἐστίν. Ὁμολογῶ καὶ τοῦτο, ἔφη. Τοῦ δ᾽ ἐπιμελεῖσθαι ὧν προσήκει, οἴει τι κωλυτικώτερον ἀκρασίας εἶναι; Οὔκουν ἔγωγε, ἔφη. Τοῦ δὲ ἀντὶ τῶν ὠφελούντων τὰ βλάπτοντα προαιρεῖσθαι ποιοῦντος, καὶ τούτων μὲν ἐπιμελεῖσθαι, ἐκείνων δὲ ἀμελεῖν πείθοντος, καὶ τοῖς σωφρονοῦσι τὰ ἐναντία ποιεῖν ἀναγκάζοντος, οἴει τι ἀνθρώπῳ κάκιον εἶναι; Οὐδέν, ἔφη. Οὐκ οὖν τὴν ἐγκράτειαν τῶν ἐναντίων

ἢ τὴν ἀκρασίαν εἰκὸς τοῖς ἀνθρώποις αἰτίαν εἶναι; Πάνυ μὲν οὖν, ἔφη. Οὐκ οὖν καὶ τὸ τῶν ἐναντίων τὸ αἴτιον εἰκὸς ἄριστον εἶναι; Εἰκὸς γάρ, ἔφη. Ἔοικεν ἄρα, ἔφη, ὦ Εὐθύδημε, ἄριστον ἀνθρώπῳ ἐγκράτειαν εἶναι; Εἰκότως γάρ, ἔφη, ὦ Σώκρατες. Ἐκεῖνο δ', ἔφη, ὦ Εὐθύδημε, ἤδη πώποτε ἐνεθυμήθης; Ποῖον; ἔφη. Ὅτι καὶ ἐπὶ τὰ ἡδέα, ἐφ' ἅπερ μόνα δοκεῖ ἡ ἀκρασία τοὺς ἀνθρώπους ἄγειν, αὐτὴ μὲν οὐ δύναται ἄγειν, ἡ δ' ἐγκράτεια πάντων μάλιστα ἥδεσθαι ποιεῖ. Πῶς; ἔφη. Ὥσπερ ἡ μὲν ἀκρασία οὐκ ἐῶσα καρτερεῖν, οὔτε λιμόν, οὔτε δίψος, οὔτ' ἀφροδισίων ἐπιθυμίαν, οὔτε ἀγρυπνίαν, (δι' ὧν μόνον ἔστιν ἡδέως μὲν φαγεῖν τε καὶ πιεῖν καὶ ἀφροδισιάσαι, ἡδέως δ' ἀναπαύσασθαί τε καὶ κοιμηθῆναι, καὶ περιμείναντας καὶ ἀνασχομένους ἕως ἂν ταῦτα ὡς ἔνι ἥδιστα γένηται,) κωλύει τοῖς ἀναγκαιοτάτοις τε καὶ συνεχεστάτοις ἀξιολόγως ἥδεσθαι. Ἡ δ' ἐγκράτεια μόνη ποιοῦσα καρτερεῖν τὰ εἰρημένα, μόνη καὶ ἥδεσθαι ποιεῖ ἀξίως μνήμης ἐπὶ τοῖς εἰρημένοις. Παντάπασιν, ἔφη, ἀληθῆ λέγεις. Ἀλλὰ μὴν τοῦ μαθεῖν τὶ καλὸν καὶ ἀγαθόν, καὶ τοῦ ἐπιμεληθῆναι καὶ τῶν τοιούτων τινός, δι' ὧν ἄν τις καὶ τὸ ἑαυτοῦ σῶμα καλῶς διοικήσειε, καὶ τὸν ἑαυτοῦ οἶκον καλῶς οἰκονομήσειε, καὶ φίλοις καὶ πόλει ὠφέλιμος γένοιτο, καὶ ἐχθροὺς κρατήσειεν, ἀφ' ὧν οὐ μόνον ὠφέλεια, ἀλλὰ καὶ ἡδοναὶ μέγισται γίγνονται, οἱ μὲν ἐγκρατεῖς ἀπολαύουσι πράττοντες αὐτά, οἱ δὲ ἀκρατεῖς οὐδενὸς μετέχουσι· τῷ γὰρ ἂν ἧττον φήσαιμεν τῶν τοιούτων προσήκειν, ἢ ᾧ ἥκιστα ἔξεστι ταῦτα πράττειν, κατεχομένῳ ἐπὶ τῷ σπουδάζειν περὶ τὰς ἐγγυτάτω ἡδονάς; Καὶ ὁ Εὐθύδημος, Δοκεῖς μοι, ἔφη, ὦ Σώκρατες, λέγειν, ὡς ἀνδρὶ ἥττονι τῶν διὰ τοῦ σώματος

ἡδονῶν πάμπαν οὐδεμιᾶς ἀρετῆς προσήκει. Τί γὰρ διαφέρει, ὦ Εὐθύδημε, ἄνθρωπος ἀκρατὴς θηρίου τοῦ ἀκρατεστάτου; ὅστις γὰρ τὰ μὲν κράτιστα μὴ σκοπεῖ, τὰ ἥδιστα δ' ἐκ παντὸς τρόπου ζητεῖ ποιεῖν, τί ἂν διαφέροι τῶν ἀφρονεστάτων βοσκημάτων; ἀλλὰ τοῖς ἐγκρατέσι μόνοις ἔξεστι σκοπεῖν τὰ κράτιστα τῶν πραγμάτων καὶ λόγῳ καὶ ἔργῳ, καὶ διαλέγοντας κατὰ γένη τὰ μὲν ἀγαθὰ προαιρεῖσθαι, τῶν δὲ κακῶν ἀπέχεσθαι, καὶ οὕτως, ἔφη, ἀρίστους τε καὶ εὐδαιμονεστάτους ἄνδρας γίγνεσθαι, καὶ διαλέγεσθαι δυνατωτάτους. Ἔφη δὲ καὶ τὸ διαλέγεσθαι ὀνομασθῆναι ἐκ τοῦ συνιόντας κοινῇ βουλεύεσθαι διαλέγοντας κατὰ γένη τὰ πράγματα.

ΠΕΡΙ ΑΚΡΑΣΙΑΣ. ΙΗ.

1 Σοφοκλέους.

Τί ταῦτ' ἐπαινεῖς; πᾶς γὰρ οἰνωθεὶς ἀνὴρ
ἥσσων μὲν ὀργῆς ἐστι, τοῦ δὲ νοῦ κενός.
φιλεῖ δὲ πολλὴν γλῶσσαν ἐκχέας μάτην
ἄκων ἀκούειν, οὓς ἑκὼν εἶπεν κακῶς.

2 Σκληρίου.

Ὡς οὐκ ἀνεκτός, ὅστις ἢ πάροινος ὢν
ἢ καὶ μεμηνὼς εἰς μὲν αὑτὸν ἀσφαλὴς
ἀεί ποτ' ἐστίν, εἰς δὲ τοὺς πολλοὺς νοσεῖ.

3 Ἐρατοσθένους.

Οἶνός τοι πυρὶ ἶσον ἔχει μένος, εὖτ' ἂν ἐς ἄνδρα
ἔλθῃ, κυμαίνει δ' οἷα Λίβυσσαν ἅλα
βορρῆς ἠὲ νότος, τὰ δέ τοι κεκρυμμένα φαίνει
βυσσόθεν, ἐκ δ' ἀνδρῶν πάντ' ἐτίναξε νόον.

4 *Μενάνδρου.*
Ὁ πολὺς ἄκρατος ὀλίγ' ἀναγκάζει φρονεῖν.

5 Οὐ γὰρ τὸ πλῆθος, ἂν σκοπῇ τις, τοῦ ποτοῦ
ποιεῖ παροινεῖν, τοῦ πιόντος δ' ἡ φύσις.

6 *Φιλήμονος.*
Τί δὴ ζῆν ὄφελος ᾧ μή 'στι τὸ ζῆν εἰδέναι;

7 Ἀλλ' οἶνος ἦν· οὐδεὶς δὲ μεθύων, ἂν σκοπῇς,
ὃς οὐχὶ δοῦλός ἐστι τοῦ πεπωκέναι.
ὅσα μ' οὗτος ἠνάγκαζεν, ἐποίουν ταῦτ' ἐγώ.

7ª *Τοῦ αὐτοῦ.*
Ὁ πονηρὸς οἶνος οὗτός ἐστι, Νικοφῶν.

8 *Τοῦ αὐτοῦ.*
Ἅπας πονηρὸς οἶνος ὁ πολὺς ἔστ' ἀεί.

9 *Τοῦ αὐτοῦ.*
Ἐμέθυον· ἱκανὴ πρόφασις εἰς θἀμαρτάνειν.

10 *Θεόγνιδος* (605).
Πολλῷ τοι πλέονας λιμοῦ κόρος ὤλεσεν ἤδη
ἄνδρας, ὅσοι μοίρης πλεῦν' ἐθέλουσιν ἔχειν.

11 *Τοῦ αὐτοῦ* (627).
Αἰσχρόν τοι μεθύοντα παρ' ἀνδράσι νήφοσιν εἶναι,
αἰσχρὸν δ' εἰ νήφων πὰρ μεθύουσι μένει.

12 *Τοῦ αὐτοῦ* (509).
Οἶνος πινόμενος πουλὺς κακός· ἢν δέ τις αὐτὸν
πίνῃ ἐπισταμένως, οὐ κακὸς ἀλλ' ἀγαθός.

13 *Αἰσχύλου.*
Κάτοπτρον εἴδους χαλκός ἐστ', οἶνος δὲ νοῦ.

14 *Θεόγνιδος* (479).
Ὃς δ' ἂν ὑπερβάλλῃ πόσιος μέτρον, οὐκέτ' ἐκεῖνος
τῆς αὑτοῦ γλώσσης καρτερὸς οὐδὲ νόου.

μυθεῖται δ' ἀπάλαμνα, τὰ νήφοσι γίνεται αἰσχρά,
αἰδεῖται δ' ἔρδων οὐδέν, ὅταν μεθύῃ,
τὸ πρὶν ἐὼν σώφρων, τότε νήπιος. ἀλλὰ σὺ ταῦτα
γιγνώσκων μὴ πῖν' οἶνον ὑπερβολάδην·
ἀλλ' ἢ πρὶν μεθύειν ὑπανίστασο, μή σε βιάσθω
γαστὴρ ὥστε κακὸν λάτριν ἐφημέριον.

15 *Τοῦ αὐτοῦ* (497).
Ἄφρονος ἀνδρὸς ἄγαν καὶ σώφρονος οἶνος, ὅταν δὴ
πίνῃ ὑπὲρ μέτρον, κοῦφον ἔθηκε νόον.

16 *Τοῦ αὐτοῦ* (499).
Ἐν πυρὶ μὲν χρυσόν τε καὶ ἄργυρον ἴδριες ἄνδρες
γιγνώσκουσ'· ἀνδρὸς δ' οἶνος ἔδειξε νόον,
καὶ μάλα περ πινυτοῦ· κακότητα δὲ πᾶσαν ἐλέγχει,
ὥστε καταισχύνειν καὶ τὸν ἐόντα σοφόν.

17 *Οἰνοβαρέω κεφαλήν, Ὀνομάκριτε, καί με βιᾶται*
οἶνος· ἀτὰρ γνώμης οὐκέτ' ἐγὼ ταμίης
ἡμετέρης, τὸ δὲ δῶμα περιτρέχει· ἀλλ' ἄγ' ἀναστὰς
πειρήσω, μή πως καὶ πόδας οἶνος ἔχῃ
καὶ νόον ἐν στήθεσσι· δέδοικα δὲ μή τι μάταιον
ἔρξω θωρηχθεὶς καὶ μέγ' ὄνειδος ἔχω (Theogn. 503).

18 *Ὁμήρου* (Od. ξ' 464).
Οἶνος δὲ πολύφρονά περ μάλ' ἀεῖσαι,
καί θ' ἁπαλὸν γελάσαι, καί τ' ὀρχήσασθαι ἀνῆκε,
καί τι ἔπος προέηκεν ὅπερ τ' ἄρρητον ἄμεινον.

19 *Μενάνδρου.*
Χαλεπὸν ὅταν τις ὢν πίῃ πλέον λαλῇ,
μηδὲν κατειδώς, ἀλλὰ προσποιούμενος.

20 *Εὐριπίδου Αὔγης.*
Νῦν δ' οἶνος ἐξέστησέ μ'· ὁμολογῶ δέ σε
ἀδικεῖν, τὸ δ' ἀδίκημ' ἐγένετ' οὐχ ἑκούσιον.

21 Φιλιππίδου.

Οὐκ ἔστιν "ἐμεθύσθην πάτερ" λέγοντα καὶ
"ἥμαρτον" ὡς τὸ πρόσθε συγγνώμης τυχεῖν.
ὁ γὰρ εἰς τὸν ἀσθενῆ βίᾳ τι Πάμφιλε
ποιῶν ὑβρίζειν, οὐχ ἁμαρτάνειν δοκεῖ.

22 Πανυάσιδος.

Ξεῖν' ἄγε δὴ καὶ πῖν', ἀρετὴ νύ τις ἔστι καὶ αὕτη,
ὅς κ' ἀνδρῶν πολὺ πλεῖστον ἐν εἰλαπίνῃ μέθυ πίνῃ
εὖ καὶ ἐπισταμένως, ἅμα τ' ἄλλον φῶτα κελεύῃ.
ἶσόν θ' ὅστ' ἐν δαιτὶ καὶ ἐν πολέμῳ θοὸς ἀνὴρ
ὑσμίνας διέπων ταλαπενθέας, ἔνθα τε παῦροι
θαρσαλέοι τελέθουσι μένουσί τε θοῦρον Ἄρηα.
τοῦ μὲν ἐγὼ θείμην ἶσον κλέος, ὅστ' ἐνὶ δαιτὶ
τέρπηται παρεὼν ἅμα τ' ἄλλον λαὸν ἀνώγῃ.
οὐ γάρ μοι ζώειν γε δοκεῖ βροτὸς οὐδὲ βιῶναι
ἀνθρώποιο βίον ταλασίφρονος, ὅστις ἀπ' οἴνου
θυμὸν ἐρητύσας πίνει ποτόν, ἀλλ' ἐνεόφρων.
οἶνος γὰρ πυρὶ ἶσον ἐπιχθονίοισιν ὄνειαρ,
ἐσθλὸν ἀλεξίκακον πάσης συνοπηδὸν ἀοιδῆς.
ἓν μὲν γὰρ θαλίης ἱερὸν μέρος ἀγλαΐης τε,
ἓν δὲ χοροιτυπίης, ἓν δ' ἱμερτῆς φιλότητος.
ἓν δέ τε μενθήρης καὶ δυσφροσύνης ἀλεγεινῆς.
τῷ σε χρὴ παρὰ δαιτὶ δεδεγμένον εὔφρονι θυμῷ
πίνειν, μηδὲ βορῇ κεκακωμένον ἠύτε γῦπα
ἧσθαι πλημμύροντα, λελασμένον εὐφροσυνάων.

23 Πυθαγόρου.

Ἐλεύθερον ἀδύνατον εἶναι τὸν πάθεσι δουλεύοντα καὶ ὑπὸ παθῶν κρατούμενον. (Porph. ad Marc. 34.)

24 Χρυσίππου.

Μικρὰν φασὶ μανίαν εἶναι τὴν μέθην.

25 Πυθαγόρας ἔλεγε τὴν μέθην μανίας εἶναι μελέτην.

26 *Ἀναχάρσιδος.*

Ἀνάχαρσις ἔφη "κιρναμένου κρατῆρος ἐφεστίου" τὸν μὲν πρῶτον ὑγιείας πίνεσθαι, τὸν δὲ δεύτερον ἡδονῆς, τὸν δὲ τρίτον ὕβρεως, τὸν δὲ τελευταῖον μανίας.

27 *Ἀντισθένους.*

Τὰς μὴ κατὰ θύρας, φησὶν ὁ Ἀντισθένης, εἰσιούσας ἀπολαύσεις δεήσει ἢ σχασθῆναι ἢ ἐλλεβορισθῆναι ἢ πάντως λιμαγχονηθῆναι, κακὰς ἀμοιβὰς ἐκτίνοντα τῆς προγεγενημένης ἀπληστίας ἕνεκα μικρᾶς καὶ ὀλιγοχρονίου ἡδονῆς.

28 *Πλουτάρχου ἐκ τοῦ ὅτι καὶ γυναῖκα παιδευτέον.*

Τῷ Διονύσῳ νάρθηκα καὶ λήθην συγκαθιεροῦσιν, ὡς μὴ δέον μνημονεύειν τῶν ἐν οἴνῳ πλημμεληθέντων, ἀλλὰ νουθεσίας παιδικῆς δεομένων. ᾧ συνᾄδει καὶ τὸ "μισῶ μνήμονα συμπόταν." ὁ δ' Εὐριπίδης τῶν ἀτόπων τὴν λήθην σοφὴν εἴρηκε.

29 *Πλάτωνος* (Legg. I 640 e).

Μεθύων κυβερνήτης καὶ πᾶς παντὸς ἄρχων ἀνατρέπει πάντα, εἴτε πλοῖον εἴτε ἅρμα εἴτε στρατόπεδον εἴτε ὅ τι ποτὲ εἴη τὸ κυβερνώμενον ὑπ' αὐτοῦ.

30 *Τοῦ αὐτοῦ* (Legg. I p. 646 a).

Οὐ μόνον, ὡς ἔοικεν, ὁ γέρων δὶς παῖς γίνοιτ' ἄν, ἀλλὰ καὶ ὁ μεθυσθείς.

31 *Δημοκρίτου.*

Ὑγιαίνειν εὐχῇ παρὰ θεῶν αἰτέονται ἄνθρωποι, τὴν δὲ ταύτης δύναμιν παρ' ἑωυτοῖσι ἔχοντες οὐκ

ἴσασι· ἀκρασίῃ δὲ τἀναντία πρήσσοντες αὐτοὶ προδόται τῆς ὑγιείης τῇσι ἐπιθυμίῃσι γίνονται.

32 Πλουτάρχου ἐκ τοῦ ὅτι καὶ γυναῖκα παιδευτέον.

Ἀμαθίην, ὥς φησιν Ἡράκλειτος, καὶ ἄλλως κρύπτειν ἔργον ἐστίν, ἐν οἴνῳ δὲ χαλεπώτερον· καὶ Πλάτων δέ φησιν ἐν οἴνῳ τὰ ἤθη φανερὰ γίγνεσθαι, ὥσπερ καὶ Ὅμηρος "οὐδὲ τραπέζῃ γνώτην ἀλλήλων."

33 Τοῦ αὐτοῦ.

Σοφοκλῆς ἐμέμφετο Αἰσχύλῳ ὅτι μεθύων ἔγραφε· "καὶ γὰρ εἰ τὰ δέοντα ποιεῖ" φησίν "ἀλλ' οὐκ εἰδώς γε."

34 Πυθαγόρου.

Πυθαγόρας ἐρωτηθεὶς ὑπό τινος οἰνόφλυγος πῶς ἂν τοῦ μεθύειν παύσαιτο "εἰ συνεχῶς" ἔφη "θεωροίη τὰ ὑπ' αὐτῶν πρασσόμενα."

35 Ἀνάχαρσις ἔφη ἐρωτηθεὶς πῶς ἄν τις μὴ μεθύσκοιτο, "εἰ" ἔφησεν "ὁρῴη τοὺς μεθύοντας οἷα ποιοῦσιν."

36 Δημοκρίτου.

Ὅσοι ἀπὸ γαστρὸς τὰς ἡδονὰς ποιέονται ὑπερβεβληκότες τὸν καιρὸν ἐπὶ βρώσεσι ἢ πόσεσι ἢ ἀφροδισίοισι, ἐν τοῖσι πᾶσι αἱ μὲν ἡδοναὶ βραχέαι τε καὶ δι' ὀλίγου γίνονται, ὁκόσον ἂν χρόνον ἐσθίωσι ἢ πίνωσι, αἱ δὲ λῦπαι πολλαί. τοῦτο μὲν γὰρ τὸ ἐπιθυμέειν ἀεὶ τῶν αὐτῶν πάρεστι, καὶ ὁκότ' ἂν γένηται ὁκοίων ἐπιθυμέουσι, διὰ ταχέος τε ἡ ἡδονὴ παροίχεται, καὶ οὐδὲν ἐν αὐτοῖσι χρηστόν ἐστι ἀλλ' ἢ τέρψις βραχέα, καὶ αὖτις τῶν αὐτῶν δέει.

37 Πλάτωνος (Alcib. I p. 131 b).

Ὅστις σῶμα θεραπεύει, τὸ ἑαυτοῦ οὐχ ἑαυτὸν θεραπεύει· ὅστις δὲ χρήματα, οὔθ' ἑαυτὸν οὔτε τὰ ἑαυτοῦ, ἀλλ' ἔτι πορρωτέρω τῶν ἑαυτοῦ.

38 *Μουσωνίου ἐκ τοῦ περὶ τροφῆς.*

Αἴσχιστον, ἔφη, γαστριμαργία καὶ ὀψοφαγία ἐστίν. οὐκ ἀντερεῖ οὐδείς. σκοποῦντας δὲ ὅπως διαφεύξονται ταῦτα πάνυ ὀλίγους ᾔσθημαι ἐγώ· τοὺς δὲ πολλοὺς ὁρῶ καὶ ἀπόντων ὀρεγομένους τῶν τοιούτων βρωμάτων καὶ παρόντων ἀπέχεσθαι μὴ δυναμένους, καὶ χρωμένους αὐτοῖς, ὅταν χρῶνται, ἀφειδῶς, ὡς καὶ πρὸς βλάβην χρῆσθαι τὴν τοῦ σώματος. καίτοι γαστριμαργία τί ἂν εἴη ἄλλο ἢ ἀκρασία περὶ τροφήν, δι' ἣν ἄνθρωποι τὸ ἡδὺ τὸ ἐν σίτῳ τοῦ ὠφελίμου προτιμῶσι; καὶ ὀψοφαγία δὲ οὐδὲν ἕτερόν ἐστιν ἢ ἀμετρία περὶ χρῆσιν ὄψου. πανταχοῦ δὲ κακὸν οὖσα ἡ ἀμετρία ἐν τοῖς μάλιστα τῇδε τὴν ἑαυτῆς ἐπιδείκνυται φύσιν, παρεχομένη τοὺς ὀψοφάγους ἀντὶ ἀνθρώπων ὑσὶν ἢ κυσὶν ὁμοιουμένους τὴν λαβρότητα καὶ εὐσχημονεῖν μὴ δυναμένους, οὐ ταῖς χερσίν, οὐ τοῖς ὄμμασιν, οὐ τῇ καταπόσει· οὕτως ἄρα αὐτοὺς ἐξίστησιν ἡ ἐπιθυμία τῆς ἐν ὄψῳ ἡδονῆς. ὅτι μὲν δὴ οὕτως ἔχειν πρὸς τροφὴν αἴσχιστόν ἐστι, γνώριμον, ἐν ᾧ γε ζώοις ἄφροσι μᾶλλον ἢ ἀνθρώποις φρονίμοις ὁμοιούμεθα. αἰσχίστου δὲ τούτου ὄντος, κάλλιστον ἂν εἴη τοὐναντίον, τάξει καὶ κοσμίως ἐσθίειν καὶ τὴν σωφροσύνην ἐνταῦθα ἐπιδείκνυσθαι πρῶτον, οὐκ ὂν ῥᾴδιον, ἀλλὰ δεόμενον πολλῆς ἐπιμελείας καὶ ἀσκήσεως. διὰ τί δὴ τοῦτο; ὅτι πολλῶν ἡδονῶν οὐσῶν, αἳ τὸν ἄνθρωπον ἀναπείθουσιν ἁμαρτάνειν καὶ ἐνδιδόναι αὐταῖς βιάζονται παρὰ τὸ συμφέρον, δυσμαχωτάτη εἶναι κινδυνεύει πασῶν ἡ περὶ τροφὴν ἡδονή.

ταῖς μὲν γὰρ ἄλλαις ἡδοναῖς σπανιώτερον ὁμιλοῦμεν, καὶ ἐνίων γε μῆνας καὶ ἐνιαυτοὺς ὅλους ἀπέχεσθαι δυνάμεθα· ταύτης δὲ ἀνὰ πᾶσαν ἡμέραν πάντως πειρᾶσθαι ἀνάγκη, καὶ τά γε πολλὰ δὶς ἑκάστης ἡμέρας· οὐ γὰρ ἔνι ζῆν ἄλλως τὸν ἄνθρωπον. ὥσθ' ὅσῳ πλεονάκις τῆς ἐν βρώσει ἡδονῆς πειρώμεθα, τοσούτῳ πλείους οἱ ἐνταῦθα κίνδυνοι. καὶ μὴν καθ' ἑκάστην προσφορὰν τροφῆς οὐχ εἷς κίνδυνος ἁμαρτήματος, ἀλλὰ πλείονες. καὶ γὰρ ὁ ἐπιπλεῖον ἢ δεῖ ἐσθίων ἁμαρτάνει, καὶ ὁ κατασπεύδων ἐν τῷ ἐσθίειν οὐδὲν ἧττον, καὶ ὁ μολυνόμενος ὑπὸ τοῦ ὄψου μᾶλλον ἢ χρή, καὶ ὁ τὰ ἡδίω τῶν ὑγιεινοτέρων βρώματα προτιμῶν, καὶ ὁ μὴ νέμων τὰ ἴσα τοῖς συνεσθίουσιν. ἔστι δὲ καὶ ἄλλη τις ἁμαρτία περὶ τροφήν, ὅταν παρὰ καιρὸν προσφερώμεθα αὐτήν, καὶ δέον ἄλλο τι πράττειν ἀφέμενοι τούτου ἐσθίωμεν. τοσούτων δὴ καὶ ἔτι ἄλλων ἁμαρτιῶν οὐσῶν περὶ τροφήν, δεῖ μὲν ἁπασῶν καθαρεύειν αὐτῶν καὶ μηδεμιᾷ ἔνοχον εἶναι τὸν μέλλοντα σωφρονήσειν. καθαρεύοι δ' ἄν τις καὶ ἀναμάρτητος εἴη ἀσκῶν καὶ ἐθίζων αὑτὸν αἱρεῖσθαι σῖτον οὐχ ἵνα ἥδηται, ἀλλ' ἵνα τρέφηται, οὐδ' ἵνα λεαίνηται τὴν κατάποσιν, ἀλλ' ἵνα ῥωννύηται τὸ σῶμα. καὶ γὰρ γέγονεν ἡ μὲν κατάποσις δίοδος εἶναι τροφῆς, οὐχ ἡδονῆς ὄργανον, ἡ δὲ γαστὴρ τοῦ αὐτοῦ χάριν οὗπερ ἕνεκα καὶ φυτῷ παντὶ ῥίζα γέγονε. καθάπερ γὰρ ἐκεῖ τρέφει τὸ φυτὸν ἡ ῥίζα, ἀπὸ τῶν ἐκτὸς τὴν τροφὴν λαμβάνουσα· οὕτω τρέφει τὸ ζῷον ἡ γαστὴρ ἀπὸ τῶν εἰσφερομένων σιτίων καὶ ποτῶν. ὥσπερ τε αὖ τούτοις διαμονῆς ἕνεκα συμβαίνει τρέφεσθαι, καὶ οὐχ ἡδονῆς, παραπλησίως καὶ ἡμῖν ζωῆς καὶ φάρμακον ἡ τροφὴ τῷ ἀνθρώπῳ ἐστί. διὸ καὶ προσήκει ἐσθίειν ἡμῖν ἵνα ζῶμεν, οὐχ ἵνα ἡδώμεθα, εἴ γε μέλλομεν

συστοιχεῖν ἀρίστῳ ὄντι τῷ λόγῳ Σωκράτους, ὅς ἔφη τοὺς μὲν πολλοὺς ἀνθρώπους ζῆν ἵνα ἐσθίωσιν, αὐτὸς δὲ ἐσθίειν ἵνα ζῇ. οὐ γὰρ δὴ ἐπιεικής τις βουλόμενος εἶναι ἄνθρωπος ἀξιώσει παραπλήσιός τις εἶναι τοῖς πολλοῖς καὶ ζῆν ἐπὶ τῷ ἐσθίειν, ὥσπερ ἐκεῖνοι θηρώμενοι ἐξ ἅπαντος τὴν ἀπὸ τῆς τροφῆς ἡδονήν.

Ὅτι δὲ καὶ θεὸς ὁ ποιήσας τὸν ἄνθρωπον τοῦ σώζεσθαι χάριν, οὐχὶ τοῦ ἥδεσθαι, σῖτα καὶ ποτὰ παρεσκεύασεν αὐτοῖς, μάθοι τις ἂν ἐκεῖθεν μάλιστα. ἡ γὰρ δὴ τροφὴ ὅτε ἐργάζεται μάλιστα τὸ ἑαυτῆς ἔργον, τότε οὐδαμῶς ἥδει τὸν ἄνθρωπον κατά τε τὴν πέψιν καὶ τὴν ἀνάδοσιν, ἀλλὰ τρεφόμεθα μὲν τότε ὑπ' αὐτῆς καὶ ῥωννύμεθα· ἡδόμεθα δὲ τότε οὐδεμίαν ἡδονήν, καίτοι πλείων ὁ χρόνος οὗτός ἐστιν ἢ ἐν ᾧ ἐσθίομεν. ἔδει δέ γε, εἴπερ ὁ θεὸς ἡδονῆς χάριν τὴν τροφὴν ἐμηχανήσατο ἡμῖν, τὸν πλείω τοῦτον χρόνον ἥδεσθαι ἡμᾶς ὑπ' αὐτῆς, καὶ οὐ τὸν ἐλάχιστον ἐκεῖνον ἐν ᾧ καταπίνομεν. ἀλλ' ὅμως χάριν ἐκείνου τοῦ ἐλαχίστου χρόνου, ὃν ἡδόμεθα, παρασκευὴ μὲν ὄψων γίνεται μυρίων· πλεῖται δ' ἡ θάλαττα μέχρι περάτων· μάγειροι δὲ γεωργῶν περισπουδαστότεροί εἰσι· δεῖπνα δὲ παρατίθενταί τινες ἀγρῶν ἀναλίσκοντες τιμάς, καὶ ταῦτ' οὐδαμῶς ὠφελουμένων τῶν σωμάτων ἐκ τῆς πολυτελείας τῶν βρωμάτων. πᾶν γὰρ τοὐναντίον οἱ ταῖς εὐτελεστάταις χρώμενοι τροφαῖς ἰσχυρότατοί εἰσι. τοὺς γοῦν οἰκέτας τῶν δεσποτῶν καὶ τοὺς χωρίτας τῶν ἀστικῶν καὶ τοὺς πένητας τῶν πλουσίων ἴδοις ἂν ὡς ἐπὶ τὸ πλεῖστον ῥωμαλεωτέρους ὄντας, καὶ μᾶλλον μὲν πονεῖν δυναμένους, ἧττον δὲ κάμνοντας ἐν τοῖς ἔργοις, νοσοῦντας δὲ σπανιώτερον, ἀνεχομένους δὲ εὐκολώτερον κρύος, θάλπος, ἀγρυπνίαν, πᾶν εἴ τι τοιοῦτον. καίτοι κἂν

ἐπίσον ἥ τε πολυτελὴς καὶ ἡ εὐτελὴς τροφὴ ῥωννύῃ τὸ σῶμα, ὅμως αἱρετέον ἐστὶ τὴν εὐτελῆ, ὅτι αὕτη σωφρονικωτέρα καὶ πρέπει ἀνδρὶ ἀγαθῷ μᾶλλον, ᾗ καὶ τὸ εὐπόριστον τοῦ δυσποριστου, καὶ τὸ ἀπραγμάτευτον τοῦ μετὰ πραγμάτων, καὶ τὸ ἕτοιμον τοῦ ἀνετοίμου πρὸς τροφὴν πρεπωδέστερον τοῖς ἐπιεικέσιν. ἵνα δὲ συνελὼν εἴπω περὶ τροφῆς τὸ πᾶν, φημὶ δεῖν σκοπὸν μὲν αὐτῆς ποιεῖσθαι ὑγίειάν τε καὶ ἰσχύν, ὡς τούτων μόνον ἕνεκα βρωτέον, ἃ δὴ δεῖται πολυτελείας οὐδεμιᾶς· ἐσθίοντα δ' ἐπιμελεῖσθαι κόσμου τε καὶ μέτρου τοῦ προσήκοντος καὶ τοῦ διαφέρειν πλεῖστον τῷ τε ἀμολύντῳ καὶ τῷ σχολαίῳ.

ΠΕΡΙ ΑΝΕΞΙΚΑΚΙΑΣ. ΙΘ.

1 *Εὐριπίδου Ἀνδρομάχης* (642).

Σμικρᾶς ἀπ' ἀρχῆς νεῖκος ἀνθρώποις μέγα
γλῶσσ' ἐκπορίζει. τοῦτο δ' οἱ σοφοὶ βροτῶν
ἐξευλαβοῦνται, μὴ φίλοις τεύχειν ἔριν.

2 *Φιλήμονος Ἐπιδικαζομένου.*

Ἥδιον οὐδὲν οὐδὲ μουσικώτερον
ἔστ' ἢ δύνασθαι λοιδορούμενον φέρειν.
ὁ λοιδορῶν γάρ, ἂν ὁ λοιδορούμενος
μὴ προσποιῆται, λοιδορεῖται λοιδορῶν.

3 *Εὐριπίδου ἐκ Πρωτεσιλάου.*

Δυοῖν λεγόντοιν θατέρου θυμουμένου,
ὁ μὴ ἀντιτείνων τοῖς λόγοις σοφώτερος.

4 *Δημοσθένους.*

Δημοσθένης λοιδορουμένου τινὸς αὐτῷ "οὐ συγκαταβαίνω" εἶπεν "εἰς ἀγῶνα ἐν ᾧ ὁ ἡττώμενος τοῦ νικῶντός ἐστι κρείττων."

5 *Πλάτωνος.*

Πλάτων λοιδορούμενος ὑπό τινος "λέγε" ἔφη "κακῶς, ἐπεὶ καλῶς οὐκ ἔμαθες."

6 *Ἀριστίππου.*

Ἀρίστιππος λοιδοροῦντος αὐτὸν τινὸς ἔφη "τοῦ μὲν λέγειν κακῶς σὺ κύριος εἶ, τοῦ δὲ δικαίως ἀκούειν ἐγώ."

7 *Πλουτάρχου ἐκ τοῦ πῶς ἔστιν ἀπ' ἐχθρῶν ὠφεληθῆναι* (90 c).

Λόγων δέ, κουφοτάτου πράγματος, βαρυτάτη ζημία κατὰ τὸν θεῖον Πλάτωνα καὶ παρὰ θεῶν ἕπεται καὶ παρ' ἀνθρώπων. ἡ δὲ σιγὴ πανταχοῦ μὲν ἀνυπεύθυνον (οὐ μόνον ἄδιψον, ὥς φησιν Ἱπποκράτης), ἐν δὲ λοιδορίαις σεμνὸν καὶ Σωκρατικόν, μᾶλλον δὲ Ἡράκλειον· εἴ γε κἀκεῖνος "οὐδ' ὅσσον μυίας στυγερῶν ἐμπάζετο μύθων."

8 *Πυθαγόρου.*

Μεγάλην παιδείαν νόμιζε δι' ἧς δυνήσῃ φέρειν ἀπαιδευσίαν.

9 *Εὐσεβίου.*

Ὀργῆς κρατέειν ἄριστον ἐθίζειν ἑωυτόν, μάλιστα μὲν καὶ πρὸς τὸ μὴ εὐπετέως ὑπ' αὐτῆς ξυγκινέεσθαι, εἰ δὲ μή, ἀλλ' ὥστε γε πάντως μὴ τὸ καταναγκαζόμενον ὑπ' αὐτῆς αὐτίκα καὶ ἐν τῷ ἀλογίστῳ ἀποπιμπλάναι.

10 *Σοφοκλέους Αἴαντι* (1357).

Νικᾷ γὰρ ἀρετή με τῆς ἔχθρας πολύ.

11 *Θεόγνιδος* (695).

Οὐ δύναμαί σοι, θυμέ, παρασχεῖν ἄρμενα πάντα,
τέτλαθι· τῶν δὲ καλῶν οὐχὶ σὺ μοῦνος ἐρᾷς.

12 Θεοφράστου.

Οὐ μὴν οὐδὲ μετ' ὀργῆς πρακτέον τοῖς φρονίμοις οὐδέν. ἀλόγιστον γὰρ θυμός, καὶ μετὰ προνοίας οὐδὲν ἄν ποτε ποιήσειεν, ἀλλὰ μεθύων ταῖς φιλονεικίαις, ὡς ἔτυχε, χρῆται ταῖς ὁρμαῖς. ὥστε δεῖ μὴ ἐξ ὑπογύου τῶν ἁμαρτημάτων τὰς τιμωρίας μήτε παρὰ τῶν οἰκετῶν μήτε παρὰ τῶν ἄλλων λαμβάνειν, ἵνα τὸ τῷ λογισμῷ κράτιστον, μὴ τὸ τῷ θυμῷ φίλον, ἀεὶ πράττῃς καὶ δίκην παρὰ τῶν ἐχθρῶν λαμβάνῃς, ἐξ ἧς μέλλεις σαυτὸν μὴ αὐτοὺς ἐκείνους βλάψειν. τὸ γὰρ τιμωρεῖσθαί τινα κακῶς ἑαυτὸν ποιοῦντα, δίκην διδόναι οὐχ ἧττον ἢ λαμβάνειν ἐστίν. ὥστε δεῖ σχολῇ μᾶλλον ἀμύνεσθαι ζητεῖν ἢ ταχέως ἀλυσιτελῶς ἑαυτῷ κολάσαι τὸν ἐχθρόν.

13 Ῥούφου ἐκ τῶν Ἐπικτήτου περὶ φιλίας.

Τὸ δὲ Λυκούργου τοῦ Λακεδαιμονίου τίς ἡμῶν οὐ θαυμάζει; πηρωθεὶς γὰρ ὑπό τινος τῶν πολιτῶν τῶν ὀφθαλμῶν τὸν ἕτερον καὶ παραλαβὼν τὸν νεανίσκον παρὰ τοῦ δήμου, ἵνα τιμωρήσαιτο ὅπως αὐτὸς βούληται· τούτου μὲν ἀπέσχετο, παιδεύσας δὲ αὐτὸν καὶ ἀποφήνας ἄνδρα ἀγαθὸν παρήγαγεν εἰς τὸ θέατρον. θαυμαζόντων δὲ τῶν Λακεδαιμονίων "τοῦτον μέντοι λαβὼν" ἔφη "παρ' ὑμῶν ὑβριστὴν καὶ βίαιον, ἀποδίδωμι ὑμῖν ἐπιεικῆ καὶ δημοτικόν."

14 Πιττακοῦ.

Πιττακὸς ἀδικηθεὶς ὑπό τινος καὶ ἔχων ἐξουσίαν αὐτὸν κολάσαι, ἀφῆκεν εἰπὼν "συγγνώμη τιμωρίας ἀμείνων. τὸ μὲν γὰρ ἡμέρου φύσεώς ἐστι, τὸ δὲ θηριώδους."

15 Ἐκ τοῦ Ἐπικτήτου ἐγχειριδίου (c. 12).

Ἄρξαι οὖν ἀπὸ τῶν μικρῶν. ἐκχεῖται τὸ ἔλαιον; κλέπτεται τὸ οἰνάριον; λέγε ὅτι τοσοῦδε πωλεῖται ἀπάθεια, τοσούτου ἀταραξία· προῖκα οὐδὲν γίνεται. ὅταν δὲ καλῇς τὸν παῖδα, προεπινόει ὅτι δύναται καὶ μὴ ὑπακοῦσαι καὶ μηδὲν ποιῆσαι ὧν θέλεις. ἀλλ' οὐχ οὕτως ἐστὶν αὐτῷ καλῶς, ἵνα ἐπ' ἐκείνῳ ᾖ τὸ ἐμὲ ταραχθῆναι.

16 Μουσωνίου ἐκ τοῦ εἰ γραφὴν ὕβρεως γράψεται τινὰ ὁ φιλόσοφος.

Ὕβρεως δὲ γραφὴν οὔτ' ἂν αὐτὸς ἔφη γράψασθαί τινα ποτὲ οὔτ' ἂν ἑτέρῳ συμβουλεῦσαι οὐδενὶ τῶν φιλοσοφεῖν ἀξιούντων. ἃ γὰρ πάσχοντές τινες ὑβρίζεσθαι δοκοῦσιν, τούτων οὐδὲν εἶναι ὕβριν ἢ αἰσχύνην τοῖς πάσχουσιν· οἷον λοιδορηθῆναι ἢ πληγῆναι ἢ ἐμπτυσθῆναι, ὧν τὸ χαλεπώτατον πληγή. ὡς δὲ οὔτε αἰσχρὸν οὔτε ὑβριστικὸν ἔχουσιν οὐδέν, δηλοῦν Λακεδαιμονίων παῖδας δημοσίᾳ μαστιγουμένους καὶ ἐπ' αὐτῷ τούτῳ ἀγαλλομένους. ὁ δὲ φιλόσοφος εἰ μὴ δύναιτο καταφρονεῖν πληγῶν ἢ λοιδορίας, τί ἂν ὄφελος αὐτοῦ εἴη, ὅν γε φαίνεσθαι δεῖ καὶ θανάτου καταφρονοῦντα; νὴ Δία, ἀλλ' ἡ διάνοια τοῦ δρῶντος αὐτὰ δεινή, τὸ ἐπεγγελῶντα καὶ ὑβρίζειν νομίζοντα ῥαπίσαι ἢ λοιδορῆσαι ἤ τι τοιοῦτον ποιῆσαι· Δημοσθένης γοῦν καὶ τῷ βλέμματι ὑβρίζειν τινάς, καὶ ἀφόρητα εἶναι τὰ τοιαῦτα, καὶ ἐξίστασθαι τοὺς ἀνθρώπους ὑπ' αὐτῶν. ταῦτα δὲ οἱ μὲν τὸ καλὸν καὶ τὸ αἰσχρὸν ὅ τι τῇ ἀληθείᾳ ἐστὶν ἀγνοοῦντες, καὶ πρὸς τὴν δόξαν κεχηνότες, [ταύτῃ ἢ ἐκείνῃ οἴονται, καὶ αὐτοὶ] ὑβρίζεσθαι νομίζουσιν, εἴ τις ἢ προσβλέποι αὐτοὺς πικρότερον ἢ καταγελῴη αὐτῶν ἢ πλήττοι ἢ λοιδοροίη. ἀνὴρ δὲ εὖ φρονῶν καὶ νοῦν ἔχων, οἷον εἶναι δεῖ τὸν

φιλόσοφον, ὑπὸ οὐδενὸς τούτων ταράττεται, οὐδ' οἴεται τὸ πάσχειν αὐτὰ αἰσχρόν, ἀλλὰ τὸ ποιεῖν μᾶλλον· ἐπειδὴ ὁ μὲν ἁμαρτάνων εὐθὺς καὶ ἐν αἰσχύνῃ ἐστίν, ὁ δὲ πάσχων ὥσπερ οὐχ ἁμαρτάνει καθόσον πάσχει, οὕτως οὐδὲ ἐν αἰσχρῷ οὐδενὶ γίνεται. ὅθεν οὐδ' ἐπὶ δίκας οὐδ' ἐπ' ἐγκλήματα προσέλθοι ἂν ὁ νοῦν ἔχων· ἐπείπερ οὐδ' ὑβρίσθαι ἂν δόξειεν· καὶ γὰρ μικρόψυχον τὸ ἀγανακτεῖν ἢ ἐπιτείνεσθαι περὶ τῶν τοιούτων· πράως δὲ καὶ ἡσύχως οἴσει τὸ συμβάν, ἐπεὶ καὶ πρέπον τοῦτο τῷ βουλομένῳ εἶναι μεγαλόφρονι. Σωκράτης γοῦν οὕτω διακείμενος φανερὸς ἦν, ὅς γε δημοσίᾳ λοιδορηθεὶς ὑπ' Ἀριστοφάνους οὐχ ὅπως ἠγανάκτησεν, ἀλλὰ καὶ ἐντυχὼν ἠξίου αὐτὸν εἰ καὶ πρὸς ἄλλο τι τοιοῦτον βούλοιτο χρῆσθαι αὐτῷ. ταχύ γ' ἂν ἐκεῖνος ἐν ὀλίγοις λοιδορούμενος ἐχαλέπηνεν, ὃς οὐδὲ ἐν θεάτρῳ λοιδορηθεὶς ἠγανάκτει. Φωκίων δὲ ὁ χρηστός, τῆς γυναικὸς αὐτοῦ προπηλακισθείσης πρός τινος, τοσοῦτον ἐδέησεν ἐγκαλεῖν τῷ προπηλακίσαντι, ὥστε ἐπεὶ δείσας ἐκεῖνος προσῆλθέ τε καὶ συγγνώμην ἔχειν ἠξίου τὸν Φωκίωνα, φάσκων ἠγνοηκέναι ὅτι ἦν ἐκείνου γυνή, εἰς ἣν ἐπλημμέλει· ἀλλὰ ἥ γε ἐμὴ γυνὴ οὐδέν, ἔφη, ὑπὸ σοῦ πέπονθεν, ἑτέρα δέ τις ἴσως· ὥστε οὐδὲ χρὴ ἐμοὶ σὲ ἀπολογεῖσθαι. καὶ ἄλλους δὲ πολλοὺς ἄνδρας ἔχοιμ' ἂν λέγειν πειραθέντας ὕβρεως, τοὺς μὲν ἔκ τινων γλώσσῃ πλημμεληθέντας, τοὺς δὲ χερσὶν ὥστε αἰκισθῆναι τὸ σῶμα· καὶ οὔτε ἀμυνάμενοι φαίνονται τοὺς πλημμελήσαντας οὔτε ἄλλον τρόπον ἐπεξελθόντες, ἀλλὰ πάνυ πράως ἐνεγκόντες τὴν ἀδικίαν αὐτῶν. καὶ γὰρ δὴ τὸ μὲν σκοπεῖν, ὅπως ἀντιδήξεταί τις τὸν δάκνοντα, καὶ ἀντιποιήσει κακῶς τὸν ὑπάρξαντα, θηρίου τινὸς οὐκ ἀνθρώπου ἐστίν, ὃς οὐδὲ

τοῦτο λογίσασθαι δύναται, ὅτι τὰ πολλὰ τῶν ἁμαρτανομένων ὑπ' ἀγνοίας τε καὶ ἀμαθίας τοῖς ἀνθρώποις ἁμαρτάνεται, ὧν ὁ μεταδιδαχθεὶς εὐθὺς παύεται· τὸ δὲ δέχεσθαι τὰς ἁμαρτίας μὴ ἀγρίως, μηδὲ ἀνήκεστον εἶναι τοῖς πλημμελήσασιν, ἀλλά τι μὲν εἶναι αὐτοῖς ἐλπίδος χρηστῆς, ἡμέρου τρόπου καὶ φιλανθρώπου ἐστί. πόσῳ δὲ κρεῖττον οὕτως ἔχοντα φαίνεσθαι τὸν φιλόσοφον, ὥστε συγγνώμης ἀξιοῦν εἴ τις πλημμελήσειεν εἰς αὐτὸν ἢ δοκεῖν μὲν ἀμύνειν ἑαυτῷ δικαζόμενον καὶ ἐγκαλοῦντα, τῇ δὲ ἀληθείᾳ ἀσχημονεῖν, ἀνακόλουθα τοῖς ἑαυτοῦ λόγοις πράττοντα; εἴ γε λέγει μέν, ὡς οὐκ ἂν ἀδικηθείη ποτὲ ὁ ἀγαθὸς ἀνὴρ ὑπὸ κακοῦ ἀνδρός· ἐγκαλεῖ δ' ὡς ἀδικούμενος ὑπὸ ἀνθρώπων πονηρῶν αὐτὸς ἀξιῶν ἀγαθὸς εἶναι.

17 *Δίωνος.*

Δίωνι τῷ Ἀκαδημιακῷ ἀπὸ συμποσίου ἀναστρέφοντι παρεπόμενος κακῶς τις ἔλεγε καὶ βλασφημίας οὐδὲν ἀπελίμπανεν· ὁ δ' ἡσύχως εἶχεν. ὡς δὲ καὶ ἐπὶ τὴν οἰκίαν ἦλθε, μέλλοντι αὐτῷ εἰσιέναι ὁ λοιδορῶν "τί δαί;" ἔφη· πρὸς ὃν εἶπεν ὁ Δίων οὐδὲ γρῦ.

18 *Ξενοφῶντος ἐκ τοῦ συμποσίου* (II, 24).

Ὁ δ' αὖ Σωκράτης εἶπεν· Ἀλλὰ πίνειν μέν, ὦ ἄνδρες, κἀμοὶ πάνυ δοκεῖ· τῷ γὰρ ὄντι ὁ οἶνος ἄρδων τὰς ψυχάς, τὰς μὲν λύπας, ὥσπερ ὁ μανδραγόρας τοὺς ἀνθρώπους, κοιμίζει, τὰς δὲ φιλοφροσύνας, ὥσπερ ἔλαιον φλόγα, ἐγείρει. δοκεῖ γε μέντοι μοι καὶ τὰ τῶν ἀνδρῶν συμπόσια ταῦτα πάσχειν, ἅπερ καὶ τὰ τῶν ἐν τῇ γῇ φυομένων. καὶ γὰρ ἐκεῖνα, ὅταν μὲν αὐτὰ ὁ θεὸς ἄγαν ἀθρόως ποτίζῃ, οὐ δύναται ὀρθοῦσθαι οὐδὲ ταῖς αὔραις διαπνεῖσθαι· ὅταν δέ, ὅσῳ ἥδεται, τοσοῦτον πίνῃ, καὶ μάλα ὀρθά τε αὔξεται,

καὶ θάλλοντα ἀφικνεῖται εἰς τὴν καρπογονίαν· οὕτω δὲ καὶ ἡμεῖς ἢν μὲν ἀθρόον τὸ ποτὸν ἐγχεώμεθα, ταχὺ ἡμῶν καὶ τὰ σώματα καὶ αἱ γνῶμαι σφάλλονται, καὶ οὐδὲ ἀναπνεῖν, μὴ ὅτι λέγειν τι δυνησόμεθα· ἢν δὲ ἡμῖν οἱ παῖδες μικραῖς κύλιξι πυκνὰ ἐπιψακάζωσιν, ἵνα καὶ ἐγὼ ἐν Γοργείοις ῥήμασιν εἴπω, οὕτως οὐ βιαζόμενοι μεθύειν ὑπὸ τοῦ οἴνου, ἀλλ᾽ ἀναπειθόμενοι πρὸς τὸ παιγνιωδέστερον ἀφιξόμεθα.

19 *Ἡροδότου* (VII, 160).

Ξεῖνε Σπαρτιῆτα, ὀνείδεα κατιόντα ἀνθρώπῳ φιλέει ἐπανάγειν τὸν θυμόν. σὺ μέντοι ἀποδεξάμενος ὑβρίσματα ἐν τῷ λόγῳ, οὔ μ᾽ ἔπεισας ἀσχήμονα ἐν τῇ ἀμοιβῇ γενέσθαι.

ΠΕΡΙ ΟΡΓΗΣ. Κ.

1 *Θεόγνιδος* (1223).

Οὐδέν, Κύρν᾽, ὀργῆς ἀδικώτερον, ἢ τὸν ἔχοντα
πημαίνει θυμῷ δειλὰ χαριζομένη.

2 *Εὐήνου.*

Πολλάκις ἀνθρώπων ὀργὴ νόον ἐξεκάλυψε
κρυπτόμενον, μανίας πουλὺ χερειότερον.

3 *Μενάνδρου.*

Ὀργῇ παραλογισμός ποτ᾽ οὐδ᾽ εἷς φαίνεται.
αὕτη κρατεῖ νῦν, ἂν δὲ μικρὸν παρακμάσῃ,
κατόψεταί τι μᾶλλον εἰς τὸ συμφέρον.

4 *Φιλήμονος.*

Μαινόμεθα πάντες, ὁπόταν ὀργιζώμεθα.
τὸ γὰρ κατασχεῖν ἐστι τῆς ὀργῆς πόνος.

5 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Ἅπανθ' ὅσ' ὀργιζόμενος ἄνθρωπος ποιεῖ,
ταῦθ' ὕστερον λάβοις ἂν ἡμαρτημένα.

6 *Μενάνδρου.*
Ἐπίσχες ὀργιζόμενος. Ἀλλὰ βούλομαι.
οὐδεὶς γὰρ ὀργῆς χάριν ἀπείληφεν, πάτερ.

7 *Εὐριπίδου Αἰόλῳ.*
Ὀργῇ γὰρ ὅστις εὐθέως χαρίζεται,
κακῶς τελευτᾷ· πλεῖστα γὰρ σφάλλει βροτούς.

8 *Ἐπιχάρμου.*
Μὴ 'πὶ μικροῖς αὐτὸς αὑτὸν ὀξύθυμον δείκνυε.

9 *Τοῦ αὐτοῦ.*
Ἐπιπολάζειν οὔ τι χρὴ τὸν θυμόν, ἀλλὰ τὸν νόον.

10 *Τοῦ αὐτοῦ.*
Οὐδὲ εἷς οὐδὲν μετ' ὀργῆς κατὰ τρόπον βουλεύεται.

11 *Εὐριπίδου Ἀρχελάῳ.*
Πολλοὺς δ' ὁ θυμὸς ὁ μέγας ὤλεσεν βροτῶν
ἥ τ' ἀξυνεσία, δύο κακὼ τοῖς χρωμένοις.

12 *Εὐριπίδου Ἀρχελάῳ.*
Ὀργῇ δὲ φαύλῃ πόλλ' ἔνεστ' ἀσχήμονα.
12[a] *Ἔξω γὰρ ὀργῆς πᾶς ἀνὴρ σοφώτερος* (Eur. Hypsip.).
12[b] *Πόλλ' ἐστὶν ὀργῆς ἐξ ἀπαιδεύτου κακά.*

13 *Αἰσχύλου* (Prom. 378 ?).
Ὀργῆς ματαίας εἰσὶν αἴτιοι λόγοι.

14 *Σοφοκλέους* (Antig. 1028).
Αὐθαδία τοι σκαιότητ' ὀφλισκάνει.

15 *Χαιρήμονος.*
Ἡγοῦ δ' ἐν ὀργῇ πάντα γίγνεσθαι κακά.

16 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Ὀργὴ δὲ πολλοὺς δρᾶν ἀναγκάζει κακά.

17 *Εὐριπίδου Φιλοκτήτου.*

Ὥσπερ δὲ θνητὸν καὶ τὸ σῶμ' ἡμῶν ἔφυ,
οὕτω προσήκει μηδὲ τὴν ὀργὴν ἔχειν
ἀθάνατον, ὅστις σωφρονεῖν ἐπίσταται.

18 *Σωσιφάνους.*

Νῦν σοι πρὸς ὄψιν θυμὸς ἡβάτω, γέρον,
νυνὶ δεῖ ὀργὴν ἡνίκ' ἔνδικον λαβεῖν.

19 *Μενάνδρου.*

Ὅσος τὸ κατέχειν ἐστὶ τὴν ὀργὴν πόνος.

20 *Μενάνδρου.*

Οὐκ ἔστιν ὀργῆς, ὡς ἔοικε, φάρμακον
ἄλλ' ἢ λόγος σπουδαῖος ἀνθρώπου φίλου.

21 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Εἰ καὶ σφόδρ' ἀλγεῖς, μηδὲν ἠρεθισμένος
πράξῃς προπετῶς· ὀργῆς γὰρ ἀλογίστου κρατεῖν
ἐν ταῖς ταραχαῖς μάλιστα τὸν φρονοῦντα δεῖ.

22 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Τὸ δ' ὀξύθυμον τοῦτο καὶ λίαν πικρὸν
δεῖγμ' ἐστὶν εὐθὺς πᾶσι μικροψυχίας.

23 *Θεοκρίτου* (I, 15).

Οὐ θέμις, ὦ ποιμάν, τὸ μεσαμβρινόν, οὐ θέμις ἄμμιν,
συρίσδειν· τὸν Πᾶνα δεδοίκαμες· ἦ γὰρ ἀπ' ἄγρας
τανίκα κεκμακὼς ἀμπαύεται, ἔστι δὲ πικρός,
καί οἱ ἀεὶ δριμεῖα χολὰ ποτὶ ῥινὶ κάθηται.

24 *Ὁμήρου* (Il. α', 103).

Ἀχνύμενος, μένεος δὲ μέγα φρένες ἀμφιμέλαιναι
πίμπλαντ', ὄσσε δέ οἱ πυρὶ λαμπετόωντι ἐίκτην.

25 *Εὐριπίδου Ἀρχελάῳ.*
Τῷ γὰρ βιαίῳ κἀγρίῳ τὸ μαλθακὸν
εἰς ταὐτὸν ἐλθὸν τοῦ λίαν παρείλετο.

26 *Εὐριπίδου.*
Ὀργαὶ γὰρ ἀνθρώποισι συμφορᾶς ὕπο
δειναὶ πλάνος τε καρδίᾳ προσίσταται.

27 *Σοφοκλέους Οἰδίποδος* (Col. 592).
Ὦ μωρέ, θυμὸς ἐν κακοῖς οὐ σύμφορος.

28 *Ἀρχιλόχου.*
Θυμέ, θύμ᾽ ἀμηχάνοισι κήδεσιν κυκώμενε,
ἐνάδευ, δυσμενῶν δ᾽ ἀλέξευ προσβαλὼν ἐναντίον
στέρνον, ἐν δοκοῖσιν ἐχθρῶν πλησίον κατασταθείς,
ἀσφαλέως· καὶ μήτε νικῶν ἀμφάδην ἀγάλλεο,
μήτε νικηθεὶς ἐν οἴκῳ καταπεσὼν ὀδύρεο,
ἀλλὰ χαρτοῖσίν τε χαῖρε καὶ κακοῖσιν ἀσχάλα
μὴ λίην· γίγνωσκε δ᾽ οἷος ῥυσμὸς ἀνθρώπους ἔχει.

29 *Σοφοκλέους ἐν Τυροῖ.*
Πόλλ᾽ ἐν κακοῖσι θυμὸς εὐνηθεὶς ὁρᾷ.

30 *Εὐριπίδου Μηδείας* (109).
Μεγαλόσπλαγχνος δυσκατάπαυστος
ψυχὴ δηχθεῖσα κακοῖσι.

31 *Εὐριπίδου Ὑψιπύλης.*
Ἔξω γὰρ ὀργῆς πᾶς ἀνὴρ σοφώτερος.

32. 33 *Σοφοκλέους Τηρεῖ.*
Ἄνους ἐκεῖνος, αἱ δὲ ἀνούστερ᾽ ἔτι
ἐκεῖνον ἠμύναντο καρτερόν.
ὅστις γὰρ ἐν κακοῖσι θυμωθεὶς βροτῶν
μεῖζον προσάπτει τῆς νόσου τὸ φάρμακον
ἰατρός ἐστιν οὐκ ἐπιστήμων κακῶν.

34 *Νεόφρονος ἐν Μηδείᾳ.*

Εἶεν. τί δράσεις, θυμέ; βούλευσαι καλῶς,
πρὶν ἐξαμαρτεῖν καὶ τὰ προσφιλέστατα
ἔχθιστα θέσθαι. ποῖ ποτ' ἐξῇξας, τάλας;
κάτισχε λῆμα καὶ σθένος θεοστυγές.
καὶ πρὸς τί ταῦτ' ὀδύρομαι, ψυχὴν ἐμὴν
ὁρῶσ' ἔρημον καὶ παρημελημένην
πρὸς ὧν ἐχρῆν ἥκιστα; μαλθακοὶ δὲ δὴ
τοιαῦτα γιγνόμεσθα πάσχοντες κακά;
οὐ μὴ προδώσεις, θυμέ, σαυτὸν ἐν κακοῖς.
οἴμοι, δέδοκται· παῖδες, ἐκτὸς ὀμμάτων
ἀπέλθετ'· ἤδη γάρ με φοινία μέγαν
δέδυκε λύσσα θυμόν. ὦ χέρες, χέρες,
πρὸς οἷον ἔργον ἐξοπλιζόμεσθα· φεῦ,
τάλαινα τόλμης, ἣ πολὺν πόνον βραχεῖ
διαφθεροῦσα τὸν ἐμὸν ἔρχομαι χρόνῳ.

35 *Εὐριπίδου Μηδείας* (446).

Οὐ νῦν κατεῖδον πρῶτον, ἀλλὰ πολλάκις,
τραχεῖαν ὀργὴν ὡς ἀμήχανον κακόν.

36 *Ἐν ταυτῷ* (520).

Δεινή τις ὀργὴ καὶ δυσίατος πέλει,
ὅταν φίλοι φίλοισι συμβάλωσ' ἔριν.

37 *Εὐριπίδου Τηλέφου.*

Ὥρα σε θυμοῦ κρείσσονα γνώμην ἔχειν.

38 *Θυμὸς δὲ κρείσσων τῶν ἐμῶν βουλευμάτων,*
ὅσπερ μεγίστων αἴτιος κακῶν βροτοῖς. Eur. Med. 1079.

39 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Ὁ θυμὸς ἀλγῶν ἀσφάλειαν οὐκ ἔχει.

40 *Ἐν τοῖς κακοῖσι συγγένει' ὅταν παρῇ*
τραχεῖα κὠξύθυμος, ἀμαθίαν ἔχει.

41 Ὁμήρου (Il. ι', 496).

Ἀλλ' Ἀχιλεῦ, δάμασον θυμὸν μέγαν, οὐδέ τι σὲ χρὴ νηλεὲς ἦτορ ἔχειν. στρεπτοὶ δέ τε καὶ θεοὶ αὐτοί.

42 Τοῦ αὐτοῦ (Il. ο', 201).

Οὕτω γὰρ δή τοι, γαιήοχε κυανοχαῖτα,
τόνδε φέρω Διὶ μῦθον ἀπηνέα τε κρατερόν τε;
ἦ τι μεταστρέψεις; στρεπταὶ δέ τε φρένες ἐσθλῶν.

43 Πλάτωνος.

Πλάτων ὀργισθείς ποτε τινὶ τῶν δούλων χάριν ἔχειν τοῖς θεοῖς ἐκέλευεν αὐτὸν ὅτι ὀργίζεται, κολασθῆναι γὰρ ἂν πάντως εἰ μὴ ὠργίζετο.

44 Ἀντιφῶντος.

Οὐκ ἔστιν ὅ τι ἂν ὀργιζόμενος ἄνθρωπος εὖ γνοίη· αὐτὸ γὰρ ὃ βουλεύεται τὴν γνώμην διαφθείρει τοῦ ἀνθρώπου.

45 Ἡροδότου (VII, 160).

Τὰ ὀνείδεα κατιόντα ἀνθρώπῳ φιλέει ἐπανάγειν τὸν θυμόν.

46 Τοῦ αὐτοῦ (VII, 39).

Ὡς ἐν τοῖσιν ὠσὶ τῶν ἀνθρώπων οἰκέει ὁ θυμός, χρηστὰ μὲν ἀκούσας, τέρψιος ἐμπίπλη τὸ σῶμα· ὑπεναντία δὲ τουτέοισιν ἀκούσας, ἀνοιδαίνει.

47 Ἀριστοτέλους.

Ἦ οὐχ ὁρᾷς, ὅτι τῶν ἐν ὀργῇ διαπραττομένων ἁπάντων ὁ λογισμὸς ἀποδημεῖ φεύγων τὸν θυμὸν ὡς πικρὸν τύραννον;

48 Ἀρριανοῦ.

Μεγαλόθυμοι εἰσί τινες πράως, ἡσυχῇ καὶ οἷον ἀοργήτως πράττοντες ὅσα καὶ οἱ σφόδρα τῷ θυμῷ φερόμενοι. φυλακτέον οὖν καὶ τὸ τούτων ἀβλέπτημα,

ὡς πολὺ χεῖρον ὂν τοῦ διατεινόμενον ὀργίζεσθαι. οὗτοι μὲν γὰρ ταχὺ κόρον τῆς τιμωρίας λαμβάνουσιν, οἳ δὲ εἰς μακρὸν παρατείνουσιν ὡς οἱ λεπτῶς πυρέττοντες.

49 Ἀπολλώνιος Μακεδόνι.
Τῆς ὀξυθυμίας τὸ ἄνθος μανία.

50 Ὁ αὐτὸς Ἀριστοκλεῖ.
Τὸ τῆς ὀργῆς πάθος μὴ καθομιλούμενον μηδὲ θεραπευόμενον φυσικὴ νόσος γίνεται.

51 Ἀπολλώνιος Δημοκράτει.
Ὁ ὑπὲρ μικρῶν ἁμαρτημάτων ἀνυπερβλήτως ὀργιζόμενος οὐκ ἐᾷ διαγνῶναι τὸν ἁμαρτάνοντα πότε ἔλαττον καὶ πότε μεῖζον ἠδίκησεν.

52 Διονυσίου Ἁλικαρνασέως (Plut. Mor. 31 a).
Ὅτι μεγάλου καὶ δοκοῦντος εἶναι καὶ ὄντος τοῦ κρατεῖν ὀργῆς ἡ πρόνοια καὶ φυλακὴ τοῦ μὴ περιπεσεῖν μεῖζον.

53 Σωτίωνος ἐκ τοῦ περὶ ὀργῆς β'.
Τοῖς δὲ σοφοῖς ἀντὶ ὀργῆς Ἡρακλείτῳ μὲν δάκρυα, Δημοκρίτῳ δὲ γέλως ἐπῄει.

54 Ὥσπερ δὲ πλοῖα γενναῖα οὐχ ὅσα ἐν εὐδίᾳ πλεῖ, ἀλλ' ὅσα πρὸς χειμῶνα ἀντέχει καὶ σώζεται, οὕτω καὶ ἄνθρωποι ὀργῇ καὶ κινήσει ἀντέχοντες μεγάλοι καὶ ἀνδρεῖοι. ὑποκριταῖς μὲν οὖν καὶ μὴ ὀργιζομένοις ὑποκρινομένοις ὀργὴν συνήνεγκεν, οἱ δὲ σπουδαῖοι ἄνδρες, οὐδ' ἐὰν ὡς ἀληθῶς ὀργίζωνται, οὕτω χρῶνται τῷ σχήματι.

55 Ἀριστοτέλους.
Ὥσπερ ὁ καπνὸς ἐπιδάκνων τὰς ὄψεις οὐκ ἐᾷ βλέπειν τὸ κείμενον ἐν τοῖς ποσίν, οὕτως ὁ θυμὸς ἐπαι-

ρόμενος τῷ λογισμῷ ἐπισκοτεῖ, καὶ τὸ συμβησόμενον ἐξ αὐτοῦ ἄτοπον οὐκ ἐφίησι τῇ διανοίᾳ προλαβεῖν.

56 Δημοκρίτου.

Θυμῷ μάχεσθαι μὲν χαλεπόν, ἀνδρὸς δὲ τὸ κρατέειν εὐλογίστου.

57 Πλάτωνος.

Πλάτων ὀργιζόμενος ποτὲ τῷ οἰκέτῃ ἐπιστάντος Ξενοκράτους "λαβών" ἔφη "τοῦτον μαστίγωσον· ἐγὼ γὰρ ὀργίζομαι."

58 Πλουτάρχου (Mor. 458 f).

Ἀριστοτέλης φησὶ Σατύρου τοῦ Σαμίου τοὺς φίλους φράξαι τὰ ὦτα κηρῷ δίκην ἔχοντος, ὅπως μὴ συγχέῃ τὸ πρᾶγμα διὰ θυμὸν ὑπὸ τῶν ἐχθρῶν λοιδορούμενος.

59 Πλουτάρχου ἐκ τοῦ περὶ διαβολῆς.

Οἱ νεώνητοι δοῦλοι οὐ πυνθάνονται εἰ δεισιδαίμων ἢ φθονερὸς ὁ δεσπότης, ἀλλ' εἰ ὀργίλος.

60 Ῥούφου ἐκ τῶν Ἐπικτήτου περὶ φιλίας.

Ἀλλὰ παντὸς μᾶλλον τῆς μὲν φύσεως ἐκεῖνο τὸ ἔργον, συνδῆσαι καὶ συναρμόσαι τὴν ὁρμὴν τῆς τοῦ προσήκοντος καὶ ὠφελίμου φαντασίας.

61 Τοῦ αὐτοῦ.

Τὸ δὲ οἴεσθαι εὐκαταφρονήτους τοῖς ἄλλοις ἔσεσθαι, ἐὰν μὴ τοὺς πρώτους ἐχθροὺς παντὶ τρόπῳ βλάψωμεν, σφόδρα ἀγεννῶν καὶ ἀνοήτων ἀνθρώπων. φαμὲν γὰρ τὸν εὐκαταφρόνητον νοεῖσθαι μὲν καὶ κατὰ τὸ ἀδύνατον εἶναι βλάψαι· ἀλλὰ πολὺ μᾶλλον νοεῖται κατὰ τὸ ἀδύνατον εἶναι ὠφελεῖν.

62 Δημοκρίτου.

Φιλονεικίη πᾶσα ἀνόητος· τὸ γὰρ κατὰ τοῦ δυσ-

μενοῦς βλαβερὸν θεωρεῦσα τὸ ἴδιον συμφέρον οὐ βλέπει.

63 *Ἀριστίππου.*

Ἀρίστιππος ὁ Κυρηναῖος φιλόσοφος θεασάμενός τινα ὀργιζόμενον καὶ διὰ τῶν λόγων χαλεπαίνοντα ἔφη "μὴ τοὺς λόγους δι' ὀργῆς ἄγωμεν, ἀλλὰ τὴν ὀργὴν διὰ τῶν λόγων καταπαύωμεν."

64 *Ναυκράτου.*

Ναυκράτης ὁ σοφὸς τοὺς ὀξυθύμους ἔφη παραπλήσιον τοῖς λύχνοις πάσχειν· καὶ γὰρ τούτους πλείονι ἐλαίῳ ἐκκαίεσθαι.

65 *Ἀριστοτέλους.*

Ὁ θυμός ἐστι πάθος θηριῶδες μὲν τῇ διαθέσει, συνεχὲς δὲ τῇ λήψει, σκληρὸν δὲ καὶ βίαιον τῇ δυνάμει, φόνων αἴτιον, συμφορᾶς σύμμαχον, βλάβης συνεργὸν καὶ ἀτιμίας, χρημάτων ἀπώλεια, ἔτι δὲ καὶ φθορᾶς ἀρχηγόν.

66 *Ἀντιφῶντος.*

Ὅστις δὲ ἰὼν ἐπὶ τὸν πλησίον κακῶς ποιήσων δειμαίνει μὴ ἃ θέλει ποιῆσαι ἁμαρτὼν τούτων ἃ μὴ θέλει ἀπενέγκηται, σωφρονέστερος. ἐν ᾧ γὰρ δειμαίνει μέλλει, ἐν ᾧ δὲ μέλλει πολλάκις ὁ διὰ μέσου χρόνος ἀπέστρεψε τὸν νοῦν τῶν θελημάτων, καὶ ἐν μὲν τῷ γεγενῆσθαι οὐκ ἔνεστιν, ἐν δὲ τῷ μέλλειν ἐνδέχεται γενέσθαι. ὅστις δὲ δράσειν μὲν οἴεται τοὺς πέλας κακῶς, πείσεσθαι δ' οὔ, οὐ σωφρονεῖ. ἐλπίδες δ' οὐ πανταχοῦ ἀγαθόν· πολλοὺς γὰρ τοιαῦται ἐλπίδες κατέβαλον εἰς ἀνηκέστους συμφοράς, ἃ δ' ἐδόκουν τοὺς πέλας ποιήσειν παθόντες ταῦτα ἀνεφάνησαν αὐτοί. σωφροσύνην δὲ ἀνδρὸς οὐκ ἂν ἄλλος ὀρθότερόν

τις κρίνειεν ἢ ὅστις τοῦ θυμοῦ ταῖς παραχρῆμα ἡδοναῖς ἐμφράσσει αὐτὸς ἑαυτὸν κρατεῖν τε καὶ νικᾶν ἠδυνήθη αὐτὸς ἑαυτόν. ὃς δὲ θέλει χαρίσασθαι τῷ θυμῷ, παραχρῆμα θέλει τὰ κακίω ἀντὶ τῶν ἀμεινόνων.

67 *Ἐπικτήτου.*

Ὅτῳ μετὰ ἀνατάσεως καὶ ἀπειλῆς ἐπιχειρεῖς, μέμνησο προλέγειν ὅτι ἥμερος εἶ, καὶ οὐδὲν ἄγριον δράσας ἀμετανόητος καὶ ἀνεύθυνος διαγενήσῃ.

68 *Κάτωνος πρεσβυτέρου.*

Τὸν ὀργιζόμενον ἐνόμιζε τοῦ μαινομένου χρόνῳ διαφέρειν.

69 *Ἀρίστωνος.*

Τὴν κακολογίαν ἡ ὀργὴ φαίνεται ἀπογεννῶσα ὥστε ἡ μήτηρ οὐκ ἀστεῖα.

70 *Πλουτάρχου ἐκ τοῦ περὶ ὀργῆς.*

Ὅσα δὲ ὀργῇ χρώμενοι πράττουσιν οἱ ἄνθρωποι, ταῦτα ἀνάγκη τυφλὰ εἶναι καὶ ἀνόητα καὶ τοῦ παντὸς ἁμαρτάνειν. οὐ γὰρ οἷόν τε ὀργῇ χρώμενον λογισμῷ χρήσασθαι· τὸ δὲ ἄνευ λογισμοῦ ποιούμενον πᾶν ἄτεχνόν τε καὶ διεστραμμένον. λόγον οὖν ἡγεμόνα χρὴ ποιησάμενον οὕτως ἐπιχειρεῖν τοῖς κατὰ τὸν βίον ἔργοις, τὰς ἑκάστοτε προσπιπτούσας ὀργὰς διωθούμενον καὶ διανεύοντα, ὥσπερ οἱ κυβερνῆται τὰ κύματα προσφερόμενα. ἔστι γοῦν οὐκ ἔλαττον τὸ δέος ὀργῆς ἀντιπρῴρου κυλινδομένης αὐτόν τε καὶ σύμπαντα οἶκον ἄρδην ἀπολέσαι καὶ ἀνατρέψαι μὴ διαπλεύσαντα δεξιῶς. οὐ μὴν ἀλλ' ἐπιμελείας εἰς αὐτὰ δεῖ καὶ μελέτης, ᾗ καὶ μάλιστα ἁλίσκονται κατ' ἄκρας οἱ παραδεξάμενοι τὸν θυμὸν ὡς σύμμαχον ἀρετῆς, ἀπολαύον-

τες ὅσον αὐτοῦ χρήσιμόν ἐστιν, ἔν τε τῷ πολέμῳ καὶ νὴ Δία ἐν πολιτείαις, τὸ πολὺ δὲ αὐτοῦ καὶ τὸ ἐπιπόλαιον ἐκκρίνειν καὶ ἐκβάλλειν τῆς ψυχῆς, ὅπερ ὀργή τε καὶ πικρία δι' ὀξυθυμίαν λέγεται, νομίσματα ἥκιστα ταῖς ἀνδρείαις ψυχαῖς πρέποντα. τίς οὖν ἐν ἡλικίᾳ τούτων γίγνεται μελέτη; ἐμοὶ μὲν δοκεῖ μάλιστ' ἂν ὧδε γίγνεσθαι πόρρωθεν ἡμῶν προμελετώντων καὶ προαπλούντων πλεῖστον οἷον ἐν οἰκέταις τε καὶ πρὸς γυναῖκας τὰς γαμετάς. ὁ γὰρ οἴκοι πρᾶος καὶ δημοσίᾳ πρᾶος πολὺ μᾶλλον ἔσται, τοιοῦτος ἔνδοθεν καὶ ὑπὸ τῶν οἴκοι πεποιημένος αὐτῷ τῆς αὐτοῦ ψυχῆς εἶναι ἀγαθός.

ΠΕΡΙ ΤΟΥ ΓΝΩΘΙ ΣΑΥΤΟΝ. ΚΑ.

1 **Φιλήμονος.**

Ἄνθρωπος ὤν, τοῦτ' ἴσθι καὶ μέμνησ' ἀεί.

2 *Μενάνδρου Κωνειαζομένων.*

Τὸ γνῶθι σαυτὸν ἔστιν ἂν τὰ πράγματα
ἴδῃς τὰ σαυτοῦ καὶ τί σοὶ ποιητέον.

3 *Διφίλου.*

Ἂν γνῷς τί ἐστ' ἄνθρωπος, ἡδίων ἔσῃ.

4 *Ἀντιφάνους.*

Εἰ θνητὸς εἶ, βέλτιστε, θνητὰ καὶ φρόνει.

5 *Μενάνδρου Θρασυλέοντος.*

Κατὰ πόλλ' ἄρ' ἐστὶν οὐ καλῶς εἰρημένον
τὸ γνῶθι σαυτόν· χρησιμώτερον γὰρ ἦν
τὸ γνῶθι τοὺς ἄλλους.

6 *Ἐκ τῆς Αἰλιανοῦ συμμίκτης ἱστορίας* **(VIII, 15).**

Ἐν Χαιρωνείᾳ τοὺς Ἀθηναίους ἡνίκα ἐνίκησεν ὁ Φίλιππος ἐπαρθεὶς τῇ εὐπραγίᾳ, ὅμως λογισμοῦ ἐκράτησε καὶ οὐχ ὕβρισε, καὶ διὰ ταῦτα ᾤετο δεῖν αὐτὸν ὑπομιμνήσκεσθαι ὑπό τινος τῶν παίδων ἕωθεν, ὅτι ἄνθρωπός ἐστιν.

7 Ἐκ τῶν Ἀριστωνύμου τομαρίων.

Ἡράκλειτος νέος ὢν πάντων γέγονε σοφώτερος, ὅτι ᾔδει ἑαυτὸν μηδὲν εἰδότα.

8 Δημώνακτος.

Δημῶναξ ἐρωτηθεὶς πότε ἤρξατο φιλοσοφεῖν "ὅτε καταγιγνώσκειν" ἔφη "ἐμαυτοῦ ἠρξάμην."

9 Σωκράτους.

Σωκράτης ἐρωτηθεὶς διὰ τί οὐ συγγράφει "ὅτι" εἶπεν "ὁρῶ τὰ χαρτία πολὺ τῶν γραφησομένων τιμιώτερα."

10 Θεοκρίτου.

Θεόκριτος ἐρωτηθεὶς διὰ τί οὐ συγγράφει "ὅτι" εἶπεν "ὡς μὲν βούλομαι, οὐ δύναμαι· ὡς δὲ δύναμαι, οὐ βούλομαι."

11 Βίαντος.

Θεώρει ὥσπερ ἐν κατόπτρῳ τὰς σαυτοῦ πράξεις, ἵνα τὰς μὲν καλὰς ἐπικοσμῇς τὰς δὲ αἰσχρὰς καλύπτῃς.

12 Παροιμία.

Γνῶθι σαυτὸν ὡς παροιμία λαμβάνεται μαρτυρεῖ Θεόφραστος ἐν τῷ περὶ παροιμιῶν. οἱ πολλοὶ δὲ Χείλωνος εἶναι τὸ ἀπόφθεγμα, Κλέαρχος δὲ ὑπὸ τοῦ θεοῦ λεχθῆναι Χείλωνι.

13 Χείλωνος.

Χείλων ἐρωτηθεὶς τί χαλεπώτατον "τὸ γινώσκειν

ἑαυτὸν" ἔφη· πολλὰ γὰρ ὑπὸ φιλαυτίας ἕκαστον ἑαυτῷ προστιθέναι.

14 *Βίαντος.*

Τὸ δὲ γνῶθι σαυτὸν χρήσιμον εἰς νουθεσίαν τῶν ἀλαζόνων, οἳ ὑπὲρ τὴν ἑαυτῶν δύναμιν φλυαροῦσιν.

15 *Ἀλεξάνδρου.*

Ἀλέξανδρος νοσήσας μακρὰν νόσον, ὡς ἀνερρώσθη, οὐδὲν ἔφη διατεθῆναι χεῖρον· "ὑπέμνησε γὰρ ἡμᾶς ἡ νόσος μὴ μέγα φρονεῖν ὡς θνητοὺς ὄντας."

16 *Πλουτάρχου ἐκ τοῦ περὶ εὐθυμίας* (472 b).

Καὶ μὴν οἶνοί τε καὶ σαρκῶν ἐμφορήσεις σῶμα μὲν ἰσχυρὸν ποιοῦσι καὶ ῥωμαλέον, ψυχὴν δὲ ἀσθενῆ· καὶ χρημάτων ἐπιμέλεια μὲν συνεχὴς καὶ τήρησις αὔξει πλοῦτον, ἀνυπεροψία δὲ καὶ σωφροσύνη μέγα πρὸς φιλοσοφίαν ἐφόδιον. ὅθεν οὐ πάντα πάντων ἐστίν, ἀλλὰ δεῖ τῷ Πυθικῷ γράμματι πειθόμενον αὑτὸν καταμαθεῖν, εἶτα χρῆσθαι πρὸς ἓν ὃ πέφυκε, καὶ μὴ πρὸς ἄλλον ἄλλοτε βίου ζῆλον ἕλκειν καὶ παραβιάζεσθαι τὴν φύσιν.

17 *Ἐκ τοῦ Ἐπικτήτου ἐγχειριδίου* (c. 6).

Ἐπὶ μηδενὶ ἐπαρθῇς ἀλλοτρίῳ προτερήματι. εἰ ὁ ἵππος ἔλεγεν ἐπαιρόμενος ὅτι καλός εἰμι, ἀνεκτὸν ἂν ἦν· σὺ δ' ὅταν λέγῃς ὅτι ἵππον καλὸν ἔχω, ἴσθι ὅτι ἐφ' ἵππῳ ἀγαθῷ μέγα φρονεῖς. τί οὖν ἐστι σόν; χρῆσις φαντασιῶν, ἣν ὅταν κατὰ φύσιν ἔχῃς, τότε ἐπάρθητι· τότε γὰρ ἐπὶ τῷ σῷ πλεονεκτήματι ἐπαρθήσῃ.

18 *Δημοσθένους ἐν τῷ πρὸς Λεπτίνην* (506, 14).

Καὶ τὰ ἀγαθὰ μὲν προσδοκᾶν καὶ τοῖς θεοῖς εὔχεσθαι διδόναι, πάντα δ' ἀνθρώπινα ἡγεῖσθαι.

19 *Ἐν ταυτῷ* (ib. 25).

Ἀλλ' οἶμαι τὸ μέλλον ἅπασιν ἀνθρώποις ἄδηλον, καὶ μικροὶ καιροὶ μεγάλων πραγμάτων αἴτιοι γίγνονται· διὸ δεῖ μετριάζειν ἐν ταῖς εὐπραξίαις καὶ προορωμένους τὸ μέλλον φαίνεσθαι.

20 *Πλάτωνος ἐκ τῶν ἀντεραστῶν* (137 e).

Τί δ', ἐπειδὰν ἄνθρωπος ὤν τις ἀγνοῇ τοὺς χρηστοὺς καὶ τοὺς μοχθηροὺς ἀνθρώπους, ἆρ' οὐχ ἑαυτὸν ἀγνοεῖ πότερον χρηστός ἐστιν ἢ μοχθηρός, ἐπειδὴ καὶ αὐτὸς ἄνθρωπός ἐστι; Συνεχώρει. Τὸ δὲ αὑτὸν ἀγνοεῖν σωφρονεῖν ἢ οὐ σωφρονεῖν ἐστιν; Οὐ σωφρονεῖν. Τὸ ἑαυτὸν ἄρα γινώσκειν ἔστι σωφρονεῖν; Φημί, ἔφη. Τοῦτο ἄρα, ὡς ἔοικε, καὶ τὸ ἐν Δελφοῖς γράμμα παρακελεύεται, σωφροσύνην ἀσκεῖν καὶ δικαιοσύνην. Ἔοικε. Τῇ αὐτῇ δὲ ταύτῃ καὶ κολάζειν ὀρθῶς ἐπιστάμεθα; Φημί. Οὐκ οὖν ᾗ μὲν κολάζειν ὀρθῶς ἐπιστάμεθα, δικαιοσύνη αὕτη ἐστίν, ᾗ δὲ διαγιγνώσκειν καὶ ἑαυτὸν καὶ ἄλλους, σωφροσύνη; Ἔοικεν, ἔφη. Ταυτὸν ἄρα ἐστὶ δικαιοσύνη σωφροσύνῃ; Φαίνεται. Καὶ μὴν οὕτω γε καὶ αἱ πόλεις εὖ οἰκοῦνται, ὅταν οἱ ἀδικοῦντες δίκην διδῶσιν. Ἀληθῆ λέγεις.

21 *Ξενοφῶντος ἐν δ'* (2, 24) *ἀπομνημονευμάτων.*

Καὶ ὁ Σωκράτης, Εἰπέ μοι, ἔφη, ὦ Εὐθύδημε, εἰς Δελφοὺς ἤδη πώποτε ἀφίκου; Καὶ δίς γε, νὴ Δία, ἔφη. Κατέμαθες οὖν πρὸς τῷ ναῷ που γεγραμμένον τὸ γνῶθι σαυτόν; Ἔγωγε. Πότερον οὖν οὐδέν σοι τοῦ γράμματος ἐμέλησεν; ἢ προσέσχες τε καὶ

ἐπεχείρησας σεαυτὸν ἐπισκοπεῖν ὅστις εἴης; Μὰ Δί' οὐ δῆτα, ἔφη· καὶ γὰρ δὴ τοῦτο πάνυ ᾤμην εἰδέναι, σχολῇ γὰρ ἂν ἄλλο τι ᾔδειν, εἴ γε μηδ' ἐμαυτὸν ἐγίνωσκον. Πότερα δέ σοι δοκεῖ γιγνώσκειν ἑαυτόν, ὅστις τοὔνομα μόνον τὸ ἑαυτοῦ οἶδεν, ἢ ὅστις ὥσπερ οἱ τοὺς ἵππους ὠνούμενοι οὐ πρότερον οἴονται γιγνώσκειν ὃν ἂν βούλωνται γνῶναι, πρὶν ἂν ἐπισκέψωνται πότερον εὐπειθής ἐστιν ἢ δυσπειθής, καὶ πότερον ἰσχυρὸς ἢ ἀσθενής, καὶ πότερον ταχὺς ἢ βραδύς, καὶ τἆλλα τὰ πρὸς τὴν τοῦ ἵππου χρείαν ἐπιτήδειά τε καὶ ἀνεπιτήδεια, ὅπως ἔχει· οὕτως ὁ ἑαυτὸν ἐπισκεψάμενος ὁποῖός ἐστι πρὸς τὴν ἀνθρωπίνην χρείαν, ἔγνωκε τὴν ἑαυτοῦ δύναμιν; Οὕτως ἔμοιγε δοκεῖ, ἔφη, ὁ μὴ εἰδὼς τὴν ἑαυτοῦ δύναμιν, ἀγνοεῖν ἑαυτόν. Ἐκεῖνο δὲ οὐ φανερόν, ἔφη, ὅτι διὰ μὲν τὸ εἰδέναι ἑαυτοὺς πλεῖστα ἀγαθὰ ἴσχουσιν ἄνθρωποι, διὰ δὲ τὸ ἐψεῦσθαι ἑαυτῶν πλεῖστα κακά; οἱ μὲν γὰρ εἰδότες ἑαυτούς, τὰ ἐπιτήδεια ἑαυτοῖς ἴσασι καὶ διαγιγνώσκουσιν ἅ τε δύνανται καὶ ἃ μή. καὶ ἃ μὲν ἐπίστανται πράττοντες, πορίζονταί τε ὧν δέονται, καὶ εὖ πράττουσιν· ὧν δὲ μὴ ἐπίστανται ἀπεχόμενοι, ἀναμάρτητοι γίγνονται καὶ διαφεύγουσι τὸ κακῶς πράττειν· διὰ τὸ αὐτὸ δὲ καὶ τοὺς ἄλλους ἀνθρώπους δυνάμενοι δοκιμάζειν καὶ διὰ τῆς τῶν ἄλλων χρείας τά τε ἀγαθὰ πορίζονται καὶ τὰ κακὰ φυλάττονται. οἱ δὲ μὴ εἰδότες, ἀλλὰ διεψευσμένοι τῆς αὐτῶν δυνάμεως, πρός τε τοὺς ἄλλους ἀνθρώπους καὶ τἆλλα ἀνθρώπινα πράγματα ὁμοίως διάκεινται, καὶ οὔτε ὧν δέονται ἴσασιν οὔτε ὅ τι πράττουσιν οὔτε οἷς χρῶνται, ἀλλὰ πάντων τούτων διαμαρτάνοντες, τῶν τε ἀγαθῶν ἀποτυγχάνουσι καὶ τοῖς κακοῖς περιπίπτουσι. καὶ οἱ μὲν εἰδότες ὅ τι ποιοῦσιν, ἐπιτυγχάνοντες ὧν πράττουσιν,

ἔνδοξοί τε καὶ τίμιοι γίγνονται· καὶ οἵ τε ὅμοιοι τούτοις ἡδέως χρῶνται οἵ τε ἀποτυγχάνοντες τῶν πραγμάτων ἐπιθυμοῦσι τούτους ὑπὲρ αὐτῶν βουλεύεσθαι, καὶ προΐστασθαί τε ἑαυτῶν τούτους καὶ ἐλπίδας τῶν ἀγαθῶν ἐν τούτοις ἔχουσι καὶ διὰ ταῦτα πάντων μάλιστα τούτους ἀγαπῶσιν. οἱ δὲ μὴ εἰδότες τί ποιοῦσι κακῶς τε αἱρούμενοι καὶ οἷς ἂν ἐπιχειρήσωσιν ἀποτυγχάνοντες, οὐ μόνον ἐν αὐτοῖς τούτοις ζημιοῦνταί τε καὶ κολάζονται, ἀλλὰ καὶ ἀδοξοῦσι διὰ ταῦτα καὶ καταγέλαστοι γίγνονται, καὶ καταφρονούμενοι καὶ ἀτιμαζόμενοι ζῶσιν· ὁρᾷς δὲ καὶ τῶν πόλεων, ὅτι ὅσαι ἂν ἀγνοήσασαι τὴν ἑαυτῶν δύναμιν κρείττοσι πολεμήσωσιν, αἱ μὲν ἀνάστατοι γίγνονται, αἱ δὲ ἐξ ἐλευθέρων δοῦλαι; Καὶ ὁ Εὐθύδημος, ὡς πάνυ μοι δοκοῦν, ὦ Σώκρατες, ἔφη, περὶ πολλοῦ ποιητέον εἶναι τὸ ἑαυτὸν γιγνώσκειν, οὕτως ἴσθι· ὁπόθεν δὲ χρὴ ἄρξασθαι ἐπισκοπεῖν ἑαυτόν, τοῦτο πρὸς σὲ ἀποβλέπω εἴ μοι ἐθελήσαις ἂν ἐξηγήσασθαι. Οὐκ οὖν, ἔφη ὁ Σωκράτης, τὰ μὲν ἀγαθὰ καὶ τὰ κακὰ ὁποῖά ἐστι, πάντως που γινώσκεις; Νὴ Δί', ἔφη· εἰ γὰρ μηδὲ ταῦτα οἶδα, καὶ τῶν ἀνδραπόδων φαυλότερος ἂν εἴην. Ἴθι δή, ἔφη, καὶ ἐμοὶ ἐξήγησαι ταῦτα. Ἀλλ' οὐ χαλεπόν, ἔφη· πρῶτον μὲν γὰρ τὸ ὑγιαίνειν ἀγαθὸν εἶναι νομίζω· τὸ δὲ νοσεῖν κακόν. ἔπειτα τὰ αἴτια ἑκατέρου αὐτῶν, καὶ ποτά, καὶ βρωτά, καὶ ἐπιτηδεύματα, τὰ μὲν πρὸς τὸ ὑγιαίνειν φέροντα, ἀγαθά· τὰ δὲ πρὸς τὸ νοσεῖν, κακά. Οὐκ οὖν, ἔφη, καὶ τὸ ὑγιαίνειν καὶ τὸ νοσεῖν, ὅταν μὲν ἀγαθοῦ τινος αἴτια γίγνηται, ἀγαθὰ ἂν εἴη· ὅταν δὲ κακοῦ, κακά; Πότε δ' ἄν, ἔφη, τὸ μὲν ὑγιαίνειν κακοῦ αἴτιον γένοιτο, τὸ δὲ νοσεῖν ἀγαθοῦ; Ὅταν νὴ Δί', ἔφη, στρατιᾶς τε αἰσχρᾶς καὶ ναυτιλίας βλαβερᾶς καὶ ἄλλων

πολλῶν τοιούτων, οἱ μὲν διὰ ῥώμην μετασχόντες ἀπόλωνται, οἱ δὲ δι᾽ ἀσθένειαν ἀπολειφθέντες σωθῶσιν. Ἀληθῆ λέγεις. Ἀλλ᾽ ὁρᾷς, ἔφη, ὅτι καὶ τῶν ὠφελίμων οἱ μὲν διὰ ῥώμην μετέχουσιν, οἱ δὲ δι᾽ ἀσθένειαν ἀπολείπονται. Τὰ οὖν, ἔφη, ποτὲ μὲν ὠφελοῦντα, ποτὲ δὲ βλάπτοντα, τί μᾶλλον ἀγαθὰ ἢ κακά ἐστιν; Οὐδὲν μὰ Δία φαίνεται κατά γε τοῦτον τὸν λόγον. Ἀλλ᾽ ἥ γε τοι σοφία, ὦ Σώκρατες, ἀναμφισβητήτως ἀγαθόν ἐστιν· ποῖον γὰρ ἄν τις πρᾶγμα οὐ βέλτιον πράττοι σοφὸς ὢν ἢ ἀμαθής; Τί δαί, τὸν Δαίδαλον, ἔφη, οὐκ ἀκήκοας, ὅτι ληφθεὶς ὑπὸ Μίνω διὰ τὴν σοφίαν ἠναγκάζετο ἐκείνῳ δουλεύειν, καὶ τῆς τε πατρίδος ἅμα καὶ τῆς ἐλευθερίας ἐστερήθη, καὶ ἐπιχειρῶν ἀποδιδράσκειν μετὰ τοῦ υἱοῦ, τόν τε παῖδα ἀπώλεσε, καὶ αὐτὸς οὐκ ἠδυνήθη σωθῆναι, ἀλλ᾽ ἀπενεχθεὶς εἰς τοὺς βαρβάρους, πάλιν ἐκεῖ ἐδούλευε; Λέγεται νὴ Δί᾽, ἔφη, ταῦτα. Τὰ δὲ Παλαμήδους οὐκ ἀκήκοας πάθη; τοῦτον γὰρ δὴ πάντες ὑμνοῦσιν ὡς διὰ σοφίαν φθονηθεὶς ὑπὸ τοῦ Ὀδυσσέως ἀπόλλυται. Λέγεται καὶ ταῦτα, ἔφη. Ἄλλους δὲ πόσους οἴει διὰ σοφίαν ἀνασπάστους πρὸς βασιλέα γεγονέναι καὶ ἐκεῖ δουλεύειν; Κινδυνεύει, ἔφη, ὦ Σώκρατες, ἀναμφιλογώτατον ἀγαθὸν εἶναι τὸ εὐδαιμονεῖν. Εἴ γε μή τις αὐτό, ἔφη, ὦ Εὐθύδημε, ἐξ ἀμφιλόγων ἀγαθῶν συντεθῇ. Τί δ᾽ ἄν, ἔφη, τῶν εὐδαιμονικῶν ἀμφίλογον εἴη; Οὐδέν, ἔφη, εἴ γε μὴ προσθήσομεν αὐτῷ κάλλος ἢ ἰσχύν, ἢ πλοῦτον ἢ δόξαν, ἢ καί τι ἄλλο τῶν τοιούτων. Ἀλλὰ νὴ Δία προσθήσομεν, ἔφη. Πῶς γὰρ ἄν τις ἄνευ τούτων εὐδαίμων εἴη; Νὴ Δί᾽, ἔφη, προσθήσομεν ἄρα ἐξ ὧν πολλὰ καὶ χαλεπὰ συμβαίνει τοῖς ἀνθρώποις· πολλοὶ μὲν γὰρ διὰ τὸ κάλλος ὑπὸ τῶν ἐπὶ τοῖς ὡραίοις παρακεκινημένων δια-

φθείρονται· πολλοὶ δὲ διὰ τὴν ἰσχὺν μείζοσιν ἔργοις ἐπιχειροῦντες οὐ μικροῖς κακοῖς περιπίπτουσι, πολλοὶ δὲ διὰ τὸν πλοῦτον διαθρυπτόμενοί τε καὶ ἐπιβουλευόμενοι ἀπόλλυνται· πολλοὶ δὲ διὰ δόξαν καὶ πολιτικὴν δύναμιν μεγάλα κακὰ πεπόνθασιν. Ἀλλὰ μήν, ἔφη, εἴ γε μηδὲ τὸ εὐδαιμονεῖν ἐπαινῶν ὀρθῶς λέγω, ὁμολογῶ μηδὲ ὅτι πρὸς τοὺς θεοὺς εὔχεσθαι χρὴ εἰδέναι. Ἀλλὰ ταῦτα μέν, ἔφη ὁ Σωκράτης, ἴσως διὰ τὸ σφόδρα πιστεύειν εἰδέναι οὐδ' ἔσκεψαι.

22 *Πλάτωνος ἐκ τοῦ Φιλήβου* (48 c).

Τῆς δ' αὖ πάσης πονηρίας ἐστὶ τοὐναντίον πάθος ἔχον ἢ τὸ λεγόμενον ὑπὸ τῶν ἐν Δελφοῖς γραμμάτων. Τὸ γνῶναι σαυτὸν λέγεις, ὦ Σώκρατες; Ἔγωγε. τοὐναντίον μὴν ἐκεῖνο δηλονότι, τὸ μηδαμῇ γινώσκειν αὐτόν, λεγόμενον ὑπὸ τοῦ γράμματος ἂν εἴη. Τί μήν; Ὦ Πρώταρχε, πειρῶ δὲ αὐτὸ τοῦτο τριχῇ τέμνειν. Πῇ φής; οὐ γὰρ μὴ δυνατὸς ὦ. Λέγεις δὴ δεῖν ἐμὲ τοῦτο διελέσθαι τὰ νῦν; Λέγω καὶ δέομαί γε πρὸς τῷ λέγειν. Ἆρ' οὖν οὐ τῶν ἀγνοούντων αὐτοὺς κατὰ τρία ἀνάγκη τοῦτο τὸ πάθος πάσχειν ἕκαστον; Πῶς; Πρῶτον μὲν κατὰ χρήματα δοξάζειν εἶναι πλουσιώτερον ἢ κατὰ τὴν αὐτῶν οὐσίαν· πολλοὶ γοῦν εἰσι τοιοῦτον πάθος ἔχοντες· πλείους δέ γε οἳ μείζους καὶ καλλίους αὑτοὺς δοξάζουσι, καὶ πάντα ὅσα κατὰ τὸ σῶμα εἶναι διαφερόντως τῆς οὔσης αὐτοῖς ἀληθείας. Πάνυ γε. Πολὺ δὲ πλεῖστοί γε, οἶμαι, περὶ τὸ τρίτον εἶδος τούτων ἐν ταῖς ψυχαῖς διημαρτήκασιν ἀρετῇ δοξάζοντες βελτίους ἑαυτούς, οὐκ ὄντες. Σφόδρα μὲν οὖν. Τῶν ἀρετῶν δ' ἄρα, οὐ σοφίας περὶ τὸ πλῆθος πᾶν ἀντεχόμενον μεστὸν ἐρίδων καὶ δοξοσοφίας ἐστὶ ψευδοῦς; Πῶς δ' οὔ; Κακὸν μὲν δὴ

πᾶν ἄν τις τὸ τοιοῦτον εἰπών, ὀρθῶς ἂν εἴποι, πάθος. Σφόδρα γε.

23 Πλάτωνος Ἀλκιβιάδου α′ (127 e).

Φέρε δή, τί ἐστι τὸ ἑαυτοῦ ἐπιμελεῖσθαι; μὴ πολλάκις λάθωμεν οὐχ ἡμῶν αὐτῶν ἐπιμελούμενοι, οἰόμενοι δέ· καὶ πότε ἄρα αὐτὸ ποιεῖ ἄνθρωπος; ἆρ᾽ ὅταν τῶν ἑαυτοῦ ἐπιμελῆται, τότε καὶ αὑτοῦ; Ἔμοιγ᾽ οὖν δοκεῖ. Τί δαί; ποδῶν ἄνθρωπος πότε ἐπιμελεῖται; ἆρ᾽ ὅταν ἐκείνων ἐπιμελῆται ἅ ἐστι τῶν ποδῶν; Οὐ μανθάνω. Καλεῖς δέ τι χερός· οἷον δακτύλιον ἔστιν ὅτου ἂν ἄλλου τῶν τοῦ ἀνθρώπου φαίης ἢ δακτύλου; Οὐ δῆτα. Οὐκ οὖν καὶ ποδὸς ὑπόδημα τὸν αὐτὸν τρόπον; Ναί. καὶ ἱμάτια καὶ στρώματα τοῦ ἄλλου σώματος ὁμοίως; Ναί. Ἆρ᾽ οὖν ὅταν ὑποδημάτων ἐπιμελώμεθα, τότε ποδῶν ἐπιμελούμεθα; Οὐ πάνυ μανθάνω, ὦ Σώκρατες. Τί δαί, ὦ Ἀλκιβιάδη, ὀρθῶς ἐπιμελεῖσθαι καλεῖς τὶ ὁτουοῦν πράγματος; Ἔγωγε. Ἆρ᾽ οὖν ὅταν τίς τι βέλτιον ποιῇ, τότε ὀρθὴν λέγεις ἐπιμέλειαν; Ναί. Τίς οὖν τέχνη ὑποδήματα βελτίω ποιεῖ; Σκυτική. Σκυτικῇ ἄρα ὑποδημάτων ἐπιμελούμεθα; Ναί. Ἦ καὶ ποδὸς σκυτικῇ, ἢ ἐκείνῃ ᾗ πόδας βελτίους ποιοῦμεν; Ἐκείνῃ. Βελτίους δὲ πόδας οὐχ ᾗπερ καὶ τὸ ἄλλο σῶμα; Ἔμοιγε δοκεῖ. Αὕτη δ᾽ οὐ γυμναστική; Μάλιστα. Γυμναστικῇ μὲν ἄρα ποδὸς ἐπιμελούμεθα, σκυτικῇ δὲ τῶν τοῦ ποδός. Πάνυ γε. Καὶ γυμναστικῇ μὲν χειρῶν, δακτυλιογλυφίᾳ δὲ τῶν τῆς χειρός. Ναί. Καὶ γυμναστικῇ μέν, σώματος· ὑφαντικῇ δὲ καὶ ταῖς ἄλλαις τῶν τοῦ σώματος. Παντάπασιν. Ἄλλῃ μὲν ἄρα τέχνῃ αὐτοῦ ἑκάστου ἐπιμελούμεθα, ἄλλῃ δὲ τῶν ἑαυτοῦ. Φαίνεται. Οὐκ ἄρα, ὅταν τῶν ἑαυτοῦ ἐπιμελῇ, σαυ-

τοῦ ἐπιμελῇ. Οὐδαμῶς. Οὐ γὰρ ἡ αὐτὴ τέχνη, ὡς ἔοικεν, ᾗ τις ἂν αὐτοῦ τε ἐπιμελοῖτο καὶ τῶν αὐτοῦ. Οὐ φαίνεται. Φέρε δή, ποίᾳ ποτ' ἂν ἡμῶν αὐτῶν ἐπιμεληθείημεν; Οὐκ ἔχω λέγειν. Ἀλλὰ τοσόνδε γε ὡμολόγηται, ὅτι οὐχ ᾗ ἂν τῶν ἡμετέρων καὶ ὁτιοῦν βέλτιον ποιῶμεν, ἀλλὰ ᾗ ἡμᾶς αὐτούς. Ἀληθῆ λέγεις. Ἦ οὖν ἔγνωμεν ἄν ποτε τίς τέχνη ὑπόδημα βέλτιον ποιῇ, μὴ εἰδότες ὑπόδημα; Ἀδύνατον. Οὐδέ γε τίς τέχνη δακτυλίους βελτίους ποιῇ, ἀγνοοῦντες δακτύλιον. Ἀληθῆ. Τί δέ; τίς γε τέχνη βελτίω ποιεῖ αὐτῶν ἆρ' ἄν ποτε γνοίημεν, ἀγνοοῦντες τί ποτ' ἐσμὲν αὐτοί; Ἀδύνατον. Πότερον οὖν ῥᾴδιον τυγχάνει τὸ γνῶναι ἑαυτόν, καί τις ἦν φαῦλος ὁ τοῦτο ἀναθεὶς εἰς τὸν ἐν Πυθοῖ νεών, ἢ χαλεπόν τι καὶ οὐχὶ παντός; Ἐμοὶ μέν, ὦ Σώκρατες, πολλάκις μὲν ἔδοξε παντὸς εἶναι, πολλάκις δὲ παγχάλεπον. Ἀλλ' ὦ Ἀλκιβιάδη, εἴτε ῥᾴδιον εἴτε μή ἐστιν, ὅμως γε ἡμῖν ὧδ' ἔχει· γνόντες μὲν αὐτὸ τάχ' ἂν γνοίημεν τὴν ἐπιμέλειαν ἡμῶν αὐτῶν, ἀγνοοῦντες δὲ οὐκ ἄν ποτέ. Ἔστι ταῦτα. Φέρε δή, τίν' ἂν τρόπον εὑρεθείη αὐτὸ τοῦτο; οὕτω μὲν γὰρ ἂν τάχ' εὕροιμεν τί ποτ' ἐσμὲν αὐτοί· τούτου δ' ἔτι ὄντες ἐν ἀγνοίᾳ, ἀδύνατόν που. Ὀρθῶς λέγεις. Ἔχε οὖν πρὸς Διός. τῷ διαλέγῃ σὺ νῦν; ἄλλῳ τῳ ἢ ἐμοί; Ναί. Οὐκ οὖν καὶ ἐγὼ σοί; Ναί. Σωκράτης ἄρ' ἐστὶν ὁ διαλεγόμενος; Πάνυ γε. Ἀλκιβιάδης δ' ὁ ἀκούων; Ναί. Οὐκ οὖν λόγῳ διαλέγεται ὁ Σωκράτης; Τί μήν; Τὸ δὲ διαλέγεσθαι καὶ τῷ λόγῳ χρῆσθαι ταυτόν που καλεῖς; Πάνυ γε. Ὁ δὲ χρώμενος καὶ ᾧ χρῆται, οὐκ ἄλλο; Πῶς λέγεις; Ὥσπερ σκυτοτόμος τέμνει που τομῇ καὶ σμίλῃ καὶ ἄλλοις ὀργάνοις. Ναί. Οὐκ οὖν ἄλλο μὲν ὁ τέμνων καὶ χρώμενος, ἄλλο δὲ οἷς ὁ τέμνων χρῆται; Πῶς γὰρ οὔ;

Ἀρ' οὖν οὕτως καὶ οἷς ὁ κιθαριστὴς κιθαρίζει καὶ αὐτὸς ὁ κιθαριστὴς ἄλλο ἂν εἴη; Ναί. Τοῦτο τοίνυν ἀρτίως ἠρώτων, εἰ ὁ χρώμενός τε καὶ ᾧ χρῆται ἀεὶ δοκεῖ ἕτερον εἶναι. Δοκεῖ. Τί οὖν; φῶμεν τὸν σκυτοτόμον τέμνειν ὀργάνοις μόνον ἢ καὶ χερσί; Καὶ χερσί. Χρῆται ἄρα καὶ ταύταις. Ναί. Ἦ καὶ τοῖς ὀφθαλμοῖς χρώμενος σκυτοτομεῖ; Ναί. Τὸν δὲ χρώμενον καὶ οἷς χρῆται ἕτερα ὁμολογοῦμεν; Ναί. Ἕτερον ἄρα σκυτοτόμος καὶ κιθαριστὴς χειρῶν καὶ ὀφθαλμῶν οἷς ἐργάζονται. Φαίνεται. Οὐκ οὖν καὶ παντὶ τῷ σώματι χρῆται ἄνθρωπος; Πάνυ γε. Ἕτερον δ' ἦν τό τε χρώμενον καὶ ᾧ χρῆται; Ναί. Ἕτερον ἄρ' ἄνθρωπός ἐστι τοῦ ἑαυτοῦ σώματος. Ἔοικε. Τί ποτ' οὖν ἐστιν ἄνθρωπος; Οὐκ ἔχω λέγειν. Ἔχεις μὲν οὖν ὅ τι γε τῷ σώματι χρώμενον; Ναί. Ἦ οὖν ἄλλο τι χρῆται αὐτῷ ἢ ψυχή; Οὐκ ἄλλο. Οὐκ οὖν ἄρχουσα; Ναί. Καὶ μὴν τόδε γ' οἶμαι οὐδένα ἂν ἄλλως οἰηθῆναι. Τὸ ποῖον; Μὴ οὐ τριῶν ἕν γέ τι εἶναι τὸν ἄνθρωπον. Τίνων; Ψυχὴν ἢ σῶμα ἢ συναμφότερον, τὸ ὅλον τοῦτο. Τί μήν; Ἀλλὰ μὴν οὐ τό γε τὸ τοῦ σώματος ἄρχον ὡμολογήσαμεν ἄνθρωπον εἶναι; Ὡμολογήσαμεν. [Τίς οὖν ὁ ἄνθρωπος;] ἆρ' οὖν σῶμα αὐτὸ αὑτοῦ ἄρχει; Οὐδαμῶς. Ἄρχεσθαι γὰρ αὐτὸ εἴπομεν; Ναί. Οὐκ ἂν δὴ τοῦτό γε εἴη τὸ ζητούμενον. Οὐκ ἔοικεν. Ἀλλὰ ἆρα τὸ συναμφότερον τοῦ σώματος ἄρχει, καὶ ἔστι δὴ τοῦτο ὁ ἄνθρωπος; Ἴσως δῆτα. Πάντων γε ἥκιστα· μὴ γὰρ συνάρχοντος τοῦ ἑτέρου οὐδεμία που μηχανὴ τὸ συναμφότερον ἄρχειν. Ὀρθῶς. Ἐπειδὴ δὲ οὔτε τὸ σῶμα οὔτε τὸ συναμφότερόν ἐστιν ἄνθρωπος, λείπεται, οἶμαι, ἢ μηδὲν αὐτὸ εἶναι, ἢ εἴπερ τί ἐστι, μηδὲν ἄλλο τὸν ἄνθρωπον συμβαίνειν ἢ ψυχήν. Κομιδῇ μὲν οὖν. Ἔτι

οὖν σαφέστερον δεῖ ἀποδειχθῆναί σοι, ὅτι ἡ ψυχή ἐστιν ἄνθρωπος; Μὰ Δί᾽, ἀλλ᾽ ἱκανῶς μοι δοκεῖ ἔχειν. Εἰ δέ γε μὴ ἀκριβῶς, ἀλλὰ καὶ μετρίως, ἐξαρκεῖ ἡμῖν· ἀκριβῶς μὲν γὰρ εἰσόμεθα τότε, ὅταν εὕρωμεν ὃ νῦν δὴ παρήλθομεν διὰ τὸ πολλῆς εἶναι σκέψεως. Τί τοῦτο; Ὃ ἄρτι οὕτω πως ἐρρήθη, ὅτι πρῶτον σκεπτέον εἴη αὐτὸ τὸ αὐτό· νῦν δ᾽ ἀντὶ τοῦ αὐτοῦ, αὐτὸν ἕκαστον ἐσκέμμεθα ὅ τι ἐστίν. καὶ ἴσως ἐξαρκέσει· οὐ γάρ που κυριώτερόν γε οὐδὲν ἂν ἡμῶν αὐτῶν φήσαιμεν ἢ τὴν ψυχήν. Οὐ δῆτα. Οὐκ οὖν καλῶς ἔχει οὕτω νομίζειν, ἐμὲ καὶ σὲ προσομιλεῖν ἀλλήλοις τοῖς λόγοις χρωμένους τῇ ψυχῇ πρὸς τὴν ψυχήν; Πάνυ μὲν οὖν. Τοῦτο δ᾽ ἄρα ἦν, ὃ καὶ ὀλίγῳ ἔμπροσθεν εἴπομεν, ὅτι Σωκράτης Ἀλκιβιάδῃ διαλέγεται λόγῳ χρώμενος, οὐ πρὸς τὸ σὸν πρόσωπον, ὡς ἔοικεν, ἀλλὰ πρὸς τὸν Ἀλκιβιάδην ποιούμενος τοὺς λόγους· τοῦτο δ᾽ ἐστὶ ἡ ψυχή. Ἔμοιγ᾽ οὖν δοκεῖ. Ψυχὴν ἄρα ἡμᾶς κελεύει γνωρίζειν ὁ ἐπιτάττων γνῶναι ἑαυτόν. Ἔοικεν. Ὅστις ἄρα τῶν τοῦ σώματός τι γιγνώσκει, τὰ αὐτοῦ, ἀλλ᾽ οὐχ ἑαυτὸν ἔγνωκεν. Οὕτως. Οὐδεὶς ἄρα τῶν ἰατρῶν ἑαυτὸν γιγνώσκει καθ᾽ ὅσον ἰατρός· οὐδὲ τῶν παιδοτριβῶν, καθ᾽ ὅσον παιδοτρίβης. Οὐκ ἔοικε. Πολλοῦ ἄρα δέουσιν οἱ γεωργοὶ καὶ οἱ ἄλλοι δημιουργοὶ γιγνώσκειν ἑαυτούς· οὐδὲ γὰρ τὰ ἑαυτῶν οὗτοί γε, ὡς ἔοικε, γιγνώσκουσιν, ἀλλ᾽ ἔτι πορρωτέρω τῶν ἑαυτῶν, κατά γε τὰς τέχνας ἃς ἔχουσι· τὰ γὰρ τοῦ σώματος γιγνώσκουσιν, οἷς τοῦτο θεραπεύεται. Ἀληθῆ λέγεις. Εἰ ἄρα σωφροσύνη ἐστὶ τὸ ἑαυτὸν γιγνώσκειν, οὐδεὶς τούτων σώφρων κατὰ τὴν τέχνην. Οὔ μοι δοκεῖ. Διὰ ταῦτα δὴ καὶ βάναυσοι αὗται αἱ τέχναι δοκοῦσιν εἶναι, καὶ οὐκ ἀνδρὸς ἀγαθοῦ μαθήματα. Πάνυ μὲν οὖν. Οὐκ

οὖν πάλιν ὅστις αὖ σῶμα θεραπεύει, τὸ ἑαυτοῦ, ἀλλ᾽ οὐχ ἑαυτὸν θεραπεύει; Κινδυνεύει. Ὅστις δέ γε τὰ χρήματα, οὔτε ἑαυτὸν οὔτε τὰ ἑαυτοῦ, ἀλλ᾽ ἔτι πορρωτέρω τῶν ἑαυτοῦ; Ἔμοιγε δοκεῖ. Οὐ τὰ αὑτοῦ ἄρα ἔτι πράττει ὁ χρηματιστής. Ὀρθῶς. Εἰ δ᾽ ἄρα τὶς γέγονεν ἐραστὴς τοῦ Ἀλκιβιάδου σώματος, οὐχὶ Ἀλκιβιάδου ἠράσθη, ἀλλά τινος τοῦ Ἀλκιβιάδου. Ἀληθῆ λέγεις. Ὅστις δὲ σοῦ, τῆς ψυχῆς ἐρᾷ. Ἀνάγκη φαίνεται ἐκ τοῦ λόγου. Οὐκ οὖν ὁ μὲν τοῦ σώματός σου ἐρῶν, ἐπειδὴ λήγει ἀνθοῦν, ἀπιὼν οἴχεται; Φαίνεται. Ὁ δὲ τῆς ψυχῆς ἐρῶν οὐκ ἄπεισιν, ἕως ἂν ἐπὶ τὸ βέλτιον ἴῃ. Εἰκός γε. Οὐκ οὖν ἐγώ εἰμι ὁ οὐκ ἀπιών, ἀλλὰ παραμένων λήγοντος τοῦ σώματος, τῶν ἄλλων ἀπεληλυθότων;

24 Ἐν ταὐτῷ (132 b).

Εὖ μοι δοκεῖς λέγειν, ὦ Σώκρατες, ἀλλὰ πειρῶ ἐξηγεῖσθαι ὄντινα τρόπον ἐπιμεληθείημεν ἡμῶν αὐτῶν. Οὐκ οὖν τοσοῦτον μὲν ἡμῖν εἰς τὸ πρόσθεν πεπέραται; ὃ γὰρ ἐσμέν, ἐπιεικῶς ὡμολόγηται· ἐφοβούμεθα δὲ μὴ τούτου σφαλέντες λάθωμεν ἑτέρου τινὸς ἐπιμελόμενοι, ἀλλ᾽ οὐχ ἡμῶν. Ἔστι ταῦτα. Καὶ μετὰ τοῦτο δὴ ὅτι ψυχῆς ἐπιμελητέον καὶ εἰς τοῦτο βλεπτέον. Δῆλον. Σωμάτων δὲ καὶ χρημάτων τὴν ἐπιμέλειαν ἑτέροις παραδοτέον. Τί μήν; Τίν᾽ οὖν ἂν τρόπον γνοίημεν αὐτὰ ἐναργέστατα; ἐπειδὴ τοῦτο γνόντες, ὡς ἔοικεν, ἡμᾶς αὐτοὺς γνωσόμεθα. ἆρα πρὸς θεῶν εὖ λέγοντος, οὗ νῦν δὴ ἐμνήσθημεν, τοῦ Δελφικοῦ γράμματος οὐ ξυνίεμεν; Τὸ ποῖον; τί διανοούμενος λέγεις, ὦ Σώκρατες; Ἐγώ σοι φράσω, ὅ γε ὑποπτεύω λέγειν καὶ συμβουλεύειν ἡμῖν τοῦτο τὸ γράμμα· κινδυνεύει γὰρ οὐδὲ πολλαχοῦ εἶναι

παράδειγμα αὐτοῦ, ἀλλὰ κατὰ τὴν ὄψιν μόνον. Πῶς τοῦτο λέγεις; Σκόπει καὶ σύ, εἰ ἡμῶν τῷ ὄμματι ὥσπερ ἀνθρώπῳ συμβουλεύων εἶπεν, ἴδε ἑαυτόν, πῶς ἂν ὑπελάβομέν τι παραινεῖν; ἆρ' οὐχὶ εἰς τοῦτο βλέπειν, εἰς ὃ βλέπων ὀφθαλμὸς ἔμελλεν αὑτὸν ἰδεῖν; Δῆλον. Ἐννοῶμεν δὴ εἰς τί βλέποντες τῶν ὄντων, ἐκεῖνό τε ὁρῷμεν ἅμα ἄν, καὶ ἡμᾶς αὐτούς. Δῆλον δή, ὦ Σώκρατες, ὅτι εἰς κάτοπτρά τε καὶ τὰ τοιαῦτα. Ὀρθῶς λέγεις. οὐκ οὖν καὶ τῷ ὀφθαλμῷ, ᾧ ὁρῶμεν, ἔνεστι τῶν τοιούτων; Πάνυ γε. Ἐννενόηκας οὖν ὅτι τοῦ ἐμβλέποντος εἰς τὸν ὀφθαλμὸν τὸ πρόσωπον ἐμφαίνεται ἐν τῇ τοῦ καταντικρὺ ὄψει, ὥσπερ ἐν κατόπτρῳ; ὃ δὴ καὶ κόρην καλοῦμεν, εἴδωλον ὂν τοῦ ἐμβλέποντος. Ἀληθῆ λέγεις. Ὀφθαλμὸς ἄρ' ὀφθαλμὸν θεώμενος καὶ ἐμβλέπων εἰς τουτί, ὅπερ βέλτιστον αὐτοῦ καὶ ᾧ ὁρᾷ, οὕτως ἂν αὑτὸν ἴδοι. Φαίνεται. Εἰ δέ γ' εἰς ἄλλο τῶν τοῦ ἀνθρώπου βλέποι, ἤ τι τῶν ὄντων, πλὴν εἰς ἐκεῖνο ᾧ τοῦτο τυγχάνει ὅμοιον, οὐχὶ ὄψεται ἑαυτόν. Ἀληθῆ λέγεις. Ὀφθαλμὸς ἄρα εἰ μέλλει ἰδεῖν αὑτόν, εἰς ὀφθαλμὸν αὐτῷ βλεπτέον, καὶ τοῦ ὄμματος εἰς ἐκεῖνον τὸν τόπον, ἐν ᾧ τυγχάνει ἡ τοῦ ὀφθαλμοῦ ἀρετὴ ἐγγιγνομένη· ἔστι δὲ τοῦτό που ὄψις. Οὕτως. Ἆρ' οὖν, ὦ [φίλε] Ἀλκιβιάδη, καὶ ψυχὴ εἰ μέλλει γνώσεσθαι αὑτήν, εἰς ψυχὴν αὐτῇ βλεπτέον, καὶ μάλιστα εἰς τοῦτον αὐτῆς τὸν τόπον, ἐν ᾧ ἐγγίγνεθ' ἡ ψυχῆς ἀρετή, σοφία, καὶ εἰς ἄλλο ᾧ τοῦτο τυγχάνει ὅμοιον ὄν; Ἔμοιγε δοκεῖ, ὦ Σώκρατες. Ἔχομεν οὖν εἰπεῖν, ὅ τι ἐστὶ τῆς ψυχῆς θειότερον, ἢ τοῦτο περὶ ὃ τὸ εἰδέναι καὶ φρονεῖν ἐστιν; Οὐκ ἔχομεν. Τῷ θείῳ ἄρα τοῦτ' ἔοικεν αὐτῆς· καί τις εἰς τοῦτο βλέπων καὶ πᾶν τὸ θεῖον γνούς, θεόν τε καὶ φρόνησιν, οὕτω καὶ ἑαυτὸν ἂν γνοίη μάλιστα. Φαί-

νεται. Τὸ δὲ γιγνώσκειν αὑτόν, ὁμολογοῦμεν σωφροσύνην εἶναι; Πάνυ γε. Ἆρ᾽ ὥσπερ κάτοπτρα σαφέστερά ἐστι τοῦ ἐν τῷ ὀφθαλμῷ ἐνόπτρου καὶ καθαρώτερά τε καὶ λαμπρότερα, οὕτω καὶ ὁ θεὸς τοῦ ἐν τῇ ἡμετέρᾳ ψυχῇ βελτίστου καθαρώτερόν τε καὶ λαμπρότερον τυγχάνει ὄν. Ἔοικέ γε, ὦ Σώκρατες. Εἰς τὸν θεὸν ἄρα βλέποντες, ἐκείνῳ καλλίστῳ ἐνόπτρῳ χρῴμεθ᾽ ἄν, καὶ τῶν ἀνθρωπίνων εἰς τὴν ψυχῆς ἀρετήν· καὶ οὕτως ἂν μάλιστα ὁρῷμεν, καὶ γιγνώσκοιμεν ἡμᾶς αὐτούς. Ναί. Τὸ δὲ γιγνώσκειν αὑτόν, ὁμολογοῦμεν σωφροσύνην εἶναι; Πάνυ γε. Ἆρ᾽ οὖν μὴ γιγνώσκοντες ἡμᾶς αὐτούς, μηδὲ σώφρονες ὄντες, δυνάμεθα εἰδέναι τὰ ἡμέτερα αὐτῶν κακά τε καὶ ἀγαθά; Καὶ πῶς ἂν τοῦτο γένοιτο, ὦ Σώκρατες; Ἀδύνατον [γὰρ] ἴσως σοι φαίνεται μὴ γιγνώσκοντα Ἀλκιβιάδην, τὰ Ἀλκιβιάδου γιγνώσκειν, ὅτι Ἀλκιβιάδου ἐστίν. Ἀδύνατον μέντοι νὴ Δία. Οὐδ᾽ ἄρα τὰ ἡμέτερα, ὅτι ἡμέτερα, εἰ μηδ᾽ ἡμᾶς αὐτούς; Πῶς γάρ; Εἰ δ᾽ ἄρα μηδὲ τὰ ἡμέτερα, οὐδὲ τὰ τῶν ἡμετέρων; Οὐ φαίνεται. Οὐκ ἄρα πάνυ τι ὀρθῶς ὡμολογοῦμεν, ὁμολογοῦντες ἄρτι εἶναι τινάς, οἳ ἑαυτοὺς μὲν οὐ γιγνώσκουσι, τὰ δὲ αὐτῶν· ἄλλους δὲ τὰ τῶν ἑαυτῶν· ἔοικε γὰρ πάντα ταῦτ᾽ εἶναι κατιδεῖν ἑνός τε καὶ μιᾶς τέχνης, ἑαυτόν, τὰ αὑτοῦ, τὰ τῶν ἑαυτοῦ. Κινδυνεύει. Ὅστις δὲ τὰ αὑτοῦ ἀγνοεῖ, καὶ τὰ τῶν ἄλλων που ἀγνοεῖ κατὰ ταῦτα. Τί μήν; Οὐκ οὖν εἰ τὰ τῶν ἄλλων, καὶ τὰ τῶν πόλεων ἀγνοήσει; Ἀνάγκη. Οὐκ ἄρα ἂν γένοιτο ὁ τοιοῦτος ἀνὴρ πολιτικός. Οὐ δῆτα. Οὐ μὴν οὐδὲ οἰκονομικός γε. Οὐ δῆτα. Οὐδέ γ᾽ εἴσεται ὅ τι πράττει. Οὐ γὰρ οὖν. Ὁ δὲ μὴ εἰδὼς τί πράττει, οὐχ ἁμαρτήσεται; Πάνυ γε. Ἐξαμαρτάνων δέ, οὐ κακῶς πράξει ἰδίᾳ τε καὶ δημοσίᾳ; Πῶς δ᾽ οὔ;

Κακῶς δὲ πράττων, οὐκ ἄθλιος; Σφόδρα γε. Τί δ', οἷς οὗτος πράττει; Καὶ οὗτοι. Οὐκ ἄρα οἷόν τε, ἐὰν μή τις σώφρων καὶ ἀγαθὸς ᾖ, εὐδαίμονα εἶναι. Οὐχ οἷόν τε. Οἱ ἄρα κακοὶ τῶν ἀνθρώπων ἄθλιοι. Σφόδρα γε. Οὐκ ἄρα οὐδὲ ὁ πλουτήσας ἀθλιότητος ἀπαλλάττεταί γε, ἀλλ' ὁ σωφρονήσας. Φαίνεται.

25 *Πλάτωνος ἐκ τοῦ Χαρμίδου* (164 d).

Καὶ οὐκ ἂν αἰσχυνθείην μὴ οὐχὶ ὀρθῶς φάναι ποτὲ ἢ τοῦτο συγχωρήσαιμ' ἂν ἀγνοοῦντα ἄνθρωπον αὐτὸν ἑαυτὸν σωφρονεῖν. σχεδὸν γάρ τι ἔγωγε αὐτὸ τοῦτό φημι εἶναι σωφροσύνην, τὸ γιγνώσκειν ἑαυτόν, καὶ συμφέρομαι τῷ ἐν Δελφοῖς ἀναθέντι τὸ τοιοῦτον γράμμα. καὶ γὰρ τοῦτο οὕτω μοι δοκεῖ τὸ γράμμα ἀνακεῖσθαι, ὡς δὴ πρόσρησις οὖσα τοῦ θεοῦ τῶν εἰσιόντων, ἀντὶ τοῦ χαῖρε· ὡς τούτου μὲν οὐκ ὀρθοῦ ὄντος τοῦ προσρήματος, τοῦ χαίρειν, οὐδὲ δεῖν τοῦτο παρακελεύεσθαι ἀλλήλοις, ἀλλὰ σωφρονεῖν. οὕτω μὲν δὴ ὁ θεὸς προσαγορεύει τοὺς εἰσιόντας εἰς τὸ ἱερὸν διαφέρον τι ἢ οἱ ἄνθρωποι, ὡς διανοούμενος ἀνέθηκεν ὁ ἀναθείς, ὡς ἐμοὶ δοκεῖ· καὶ λέγει πρὸς τὸν ἀεὶ εἰσιόντα οὐκ ἄλλο τι ἢ σωφρόνει φησίν. αἰνιγματωδέστερον δὲ δὴ ὡς μάντις λέγει. τὸ γὰρ "γνῶθι σαυτὸν" καὶ τὸ "σωφρόνει" ἐστὶ μὲν ταυτόν, ὡς τὰ γράμματα φησὶ καὶ ἐγώ, τάχα δ' ἄν τις οἰηθείη ἄλλο εἶναι· ὃ δή μοι δοκοῦσι παθεῖν καὶ οἱ τὰ ὕστερα γράμματα ἀναθέντες, τό τε "μηδὲν ἄγαν" καὶ τὸ "ἐγγύα, πάρα δ' ἄτα." καὶ γὰρ οὗτοι συμβουλὴν ᾠήθησαν εἶναι τὸ "γνῶθι σαυτόν," ἀλλ' οὐ τῶν εἰσιόντων ἕνεκεν ὑπὸ τοῦ θεοῦ πρόσρησιν· εἶθ' ἵνα δὴ καὶ αὐτοὶ μηδὲν ἧττον χρησίμους συμβουλὰς ἀναθεῖεν, ταῦτα γράψαντες ἀνέθεσαν.

26 *Πορφυρίου ἐκ τοῦ α΄.*

Τί ποτε ἦν ἄρα καὶ τίνος τὸ ἱερὸν πρόσταγμα τὸ ἐν Πυθοῖ, ὃ γνῶναι ἑαυτὸν τοῖς τοῦ θεοῦ δεησομένοις προσαγορεύει; μήτε γὰρ τιμῆσαι θεὸν τὰ προσήκοντα, μήτ᾽ αὖ τυχεῖν τοῦ θεοῦ δεηθέντα τὸν ἀγνοίᾳ τῇ ἑαυτοῦ ἐνισχόμενον παραγγέλλειν ἔοικεν. ἀλλ᾽ εἴτε Φημονόη ἐπὶ πάντα λυσιτελοῦν τὰ ἀνθρώπινα τοῦτο ἐθέσπισεν, δι᾽ ἧς πρώτης ὁ Πύθιος λέγεται τὰς εἰς ἀνθρώπους διαδοῦναι χάριτας, εἴτε Φανοθέα ἡ Δελφοῦ, εἴτε καὶ Βίαντος ἢ Θαλοῦ ἢ Χίλωνος ἦν ἀνάθημα ὁρμηθὲν ἀπό τινος θείας ἐπιπνοίας, εἴτε Κλεάρχῳ προσεκτέον μᾶλλον τοῦ μὲν Πυθίου φράζοντι εἶναι παράγγελμα, χρησθῆναι δὲ Χίλωνι τὸ ἄριστον ἀνθρώποις μαθεῖν πυνθανομένῳ· εἴτε καὶ πρὸ Χίλωνος ἦν ἔτι ἀνάγραπτον ἐν τῷ ἱδρυθέντι νεῷ μετὰ τὸν πτέρινόν τε καὶ χαλκοῦν, καθάπερ Ἀριστοτέλης ἐν τοῖς περὶ φιλοσοφίας εἴρηκε· τὸ μὲν ὅτου ἂν εἴη, Ἰάμβλιχε, ἀμφισβητήσιμον ἔστω· πάντως δὲ ὅτι ὑπὸ θεοῦ ἢ οὐκ ἄνευ θεοῦ ἐρρήθη, ἐξ αὐτοῦ φαίνοιτ᾽ ἂν τοῦ ἐν τοῖς Πυθίοις αὐτὸ κεῖσθαι ἀναμφήριστον. τί ποτε δ᾽ ἐστὶν ὃ φράζει καὶ πρό γε τῶν περιρραντηρίων προτελεῖσθαι τῷ θεῷ ἐπιτάττει, ἀναγκαῖον ἂν εἴη γνῶναι.

27 *Πορφυρίου ἐκ τοῦ α΄ περὶ τοῦ γνῶθι σεαυτόν.*

Ἀλλὰ μήποτε "σωφρόνει" ἔνεστιν ἀκοῦσαι λέγοντος ἀντὶ τοῦ "σῶζε τὴν φρόνησιν"· καὶ γὰρ σωφροσύνη σαοφροσύνη τις ἦν· οὕτω δὲ πρὸς τὸ φρονεῖν καὶ τοῦ φρονεῖν αἴτιον διαλέγοιτ᾽ ἄν, σώζειν ἑαυτὸν παρακελευόμενος· τοῦτο δ᾽ ἂν εἴη ὁ νοῦς. ἀλλ᾽ εἰ τοῦτο, δεῖ πάλιν γνῶναι τὴν οὐσίαν ἡμῶν ἥ τις ἐστίν.

ἄλλοι γε μὴν μικρὸν διάκοσμον καλῶς εἰρῆσθαι φάμενοι τὸν ἄνθρωπον παρακελεύεσθαι μὲν φασὶ τὸ γράμμα γνῶναι τὸν ἄνθρωπον, ὄντος δὲ μικροῦ διακόσμου τοῦ ἀνθρώπου, οὐδὲν ἄλλο κελεύειν ἢ φιλοσοφεῖν. εἴπερ οὖν ἀπταίστως φιλοσοφεῖν σπουδάζομεν, προθυμώμεθα γνῶναι ἑαυτούς, καὶ ἔσται ἡμῖν τεῦξις ὀρθῆς φιλοσοφίας ἐκ τῆς ἡμετέρας κατανοήσεως ἀναβαίνουσα ἐπὶ τὴν τοῦ παντὸς θεωρίαν. ἀλλ' ὅτι μὲν ἀπὸ τῶν ἐν ἡμῖν συλλογιζόμεθα καὶ περὶ τῶν ἐν τῷ ὅλῳ καὶ ἡμᾶς ἐτάζοντες καὶ εὑρίσκοντες ῥᾷον μεταβαίνομεν ἐπὶ τὴν τοῦ παντὸς θεωρίαν, λέγεται ὀρθῶς· μήποτε δὲ τὴν ἑαυτοῦ θεωρίαν οὐ φιλοσοφίας ἕνεκα θεὸς ποιεῖσθαι παρακελεύεται, ἄλλου δέ τινος μείζονος ἕνεκα, δι' ὃ καὶ φιλοσοφία παρελήφθη. φιλοσοφία μὲν γὰρ ἐπετηδεύθη ἐκ προσπαθείας ἡμῶν τῆς πρὸς τὸ σοφὸν καὶ τῆς πρὸς τὴν θεωρητικὴν σοφίαν ἀγαπήσεως· ἡ δὲ σπουδὴ τῆς πρὸς τὸ γνῶναι ἑαυτὸν παρακελεύσεως εἰς τεῦξιν τῆς ἀληθινῆς εὐδαιμονίας ἀποτείνεται, ἥ τις συνίστατο ἐκ τῆς κατὰ σοφίαν διαθέσεως καὶ τῆς κατὰ κτῆσιν τῆς σοφίας θεωρίας τοῦ ἀγαθοῦ καὶ τῶν ὄντως ὄντων γνώσεως. θεωρεῖν οὖν καὶ μανθάνειν παρακελεύεται τοὺς ὄντως ἑαυτούς, οὐχ ἵνα φιλοσοφήσωμεν ἀλλ' ἵνα σοφοὶ γενόμενοι εὐδαιμονήσωμεν. ἡ γὰρ τεῦξις τῆς ὄντως οὔσης οὐσίας ἡμῶν καὶ ἡ ταύτης ἀληθὴς γνῶσις σοφίας ἦν τεῦξις, εἴ γε σοφίας ἴδιον ἡ τῆς ὄντως οὐσίας τῶν πραγμάτων ἀληθὴς ἐπιστήμη, διὰ σοφίας δὲ ἡ τῆς τελείας εὐδαιμονίας γίγνεται κτῆσις.

28 Τοῦ αὐτοῦ ἐκ τοῦ τετάρτου.

Ἐπειδὴ δὲ ἦν τις κατάβασις ἡμῖν εἰς τὰ τῇδε καὶ τὸν ἐκτὸς περικειμένοις ἄνθρωπον, καὶ ἠπατημένοις

τε ὅτι τοῦτο ἐσμὲν τὸ ὁρώμενον, παραίνεσις οἰκεία εἰς τὴν γνῶσιν τῆς ἑαυτοῦ δυνάμεως. ὁ γὰρ δὴ Πλάτων ἐν τῷ Φιλήβῳ μνησθεὶς τοῦ γνῶθι σαυτὸν τριχῇ διαιρεῖται τὴν ἄγνοιαν. πανταχοῦ τοίνυν ἡ ἑαυτοῦ ἄγνοια πονηρόν, ἥν τε κατὰ τὸ εἴσω τὸ μέγεθος τῆς ἀξίας ἀγνοήσας τις ταπεινώσῃ τὸ θεῖον, ἥν τε κατὰ τὸ ἔξω ἀγνοήσας τὸ φύσει προσὸν αὐτῷ ταπεινὸν ἐπαίρηται ἐπ' αὐτῷ. ἢ οὐ πᾶν γε τὸ θνητὸν ἄντικρυς

ὡς ὅτε τὶς ψάμαθον παῖς ἄγχι θαλάσσης,
ὅστ' ἐπεὶ οὖν ποιήσῃ ἀθύρματα νηπιέῃσιν,
ἂψ αὖθις συνέχευε ποσὶν καὶ χερσὶν ἀθύρων.

πᾶς οὖν ἀγνοίᾳ ἑαυτοῦ τὰ καθ' αὑτὸν ἐπαίρων ἁλίσκεται ὑπὲρ τῆς δημιουργησάσης αὐτὸν φύσεως πλεῖον ἢ ἐκείνη βεβούληται, τὰ αὑτῆς ὡς σεμνὰ θαυμάζων παίγνια· ἣ δὲ τηρεῖν ἔοικεν ἐν πᾶσι τῆς ἀξίας τὸ πρέπον οὐδὲν τοῖς ἐπαίρουσι συνεξαπατωμένη. τὸ γνῶθι οὖν σαυτὸν διήκει εἰς πᾶσαν ὑπόληψιν τῆς προσούσης δυνάμεως, παραγγέλλον γιγνώσκειν τὰ μέτρα ἐπὶ πάντων. τὸ μὲν οὖν γιγνώσκειν ἑαυτὸν τὴν ἀναφορὰν ἔοικεν ἔχειν ἐπὶ τὸ γιγνώσκειν δεῖν τὴν ψυχὴν καὶ τὸν νοῦν, ὡς ἐν τούτῳ ἡμῶν οὐσιωμένων· τὸ δὲ πάντῃ γιγνώσκειν ἑαυτὸν σύμπεριλαμβάνειν ἔοικεν ἡμᾶς καὶ τὰ ἡμέτερα καὶ τὰ τῶν ἡμετέρων. τοιαύτη μὲν καὶ ἡ ἐν τούτοις τοῦ Πλάτωνος ἀκρίβεια φιλοτιμηθέντος ἐκτὸς τῶν ἄλλων καὶ δίχα τῶν περὶ ἡμᾶς ἁπάντων γνῶναι ἑαυτόν· καὶ πάλιν πάντῃ γνῶναι ἑαυτόν, ἵνα καὶ ὁ ἐντὸς ἀθάνατος γνωσθῇ ἄνθρωπος καὶ ὁ ἐκτὸς εἰκονικὸς μὴ ἀγνοηθῇ καὶ τὰ τούτοις διαφέροντα γνώριμα γένηται. διαφέρει μὲν γὰρ τῷ ἐντὸς παντέλειος νοῦς, ἐν ᾧ αὐτὸς ἄνθρωπος, οὗ εἰκὼν ἕκαστος ἡμῶν· διαφέρει δὲ τῷ ἐκτὸς εἰδώλῳ τὰ περὶ τὸ σῶμα καὶ τὰς κτήσεις. ὧν δεῖ καὶ τὰς δυνά-

μεις γιγνώσκειν καὶ τὸ ἄχρι τίνος τούτων φροντιστέον, ἵνα μήτε τὴν τοῦ ἀθανάτου ἀξίαν περιτιθέντες τῷ φθαρτῷ καὶ γηίνῳ καταγέλαστον αὐτὸ ποιῶμεν, καὶ πάλιν ἄξιον δακρύων ἐν τῇ κωμῳδοτραγῳδίᾳ τῇ τῶν ἀνοήτων βίων ἐνεχόμενον, μήτε τὴν τοῦ θνητοῦ ταπεινότητα τῷ ἀθανάτῳ προσάπτοντες ἐλεεινοὶ ὦμεν καὶ διὰ πάντων ἄδικοι τῇ τοῦ κατ' ἀξίαν ἀγνοίᾳ.

ΠΕΡΙ ΥΠΕΡΟΨΙΑΣ. ΚΒ.

1 *Εὐριπίδου Γλαύκῳ.*
Βαρὺ τὸ φόρημ' οἴησις ἀνθρώπου κακοῦ.

2 *Ὅστις γὰρ ἀστῶν πλέον ἔχειν πέφυκ' ἀνήρ,*
φίλοις τ' ἄμικτός ἐστι καὶ πάσῃ πόλει. (Eur. Ixion.)

3 *Σωσιφάνους.*
Ὦ δυστυχεῖς μὲν πολλὰ παῦρα δ' ὄλβιοι
βροτοί, τί σεμνύνεσθε ταῖς ἐξουσίαις,
ἃς ἕν τ' ἔδωκε φέγγος ἕν τ' ἀφείλετο;
ἂν δ' εὐτυχῆτε μηδὲν ὄντες, εὐθέως
ἴσ' οὐρανῷ φρονεῖτε, τὸν δὲ κύριον
ᾅδην παρεστῶτ' οὐχ ὁρᾶτε πλησίον.

4 *Φιλήμονος.*
Τὸ γνῶθι σαυτὸν οὐ μάτην εὖ ἴσθ' ὅτι
τὸ ῥῆμα τοῦτο δόξαν ἐν Δελφοῖς ἔχει.

5 *Εὐριπίδου.*
Ὅταν δ' ἴδῃς πρὸς ὕψος ἠρμένον τινὰ
λαμπρόν τε πλούτῳ καὶ γένει γαυρούμενον,
ὀφρύν τε μείζω τῆς τύχης ἐπηρκότα,
τούτου ταχεῖαν νέμεσιν εὐθὺς προσδόκα.

6 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Κρινεῖ τίς αὐτὸν πώποτ' ἄνθρωπον μέγαν,
ὃν ἐξαλείφει πρόφασις ἡ τυχοῦσ' ὅλον;

7 *Τοῦ αὐτοῦ Αὔγης.*

Ποῖ; πῶς δὲ λήσει; τίς δὲ νῷν πιστὸς φίλος;
Ζητῶμεν. ἡ δόκησις ἀνθρώποις κακόν,
καὶ τοὐπιχειρεῖν ἐξαμαρτάνειν φιλεῖ.

8 *Τοῦ αὐτοῦ Ἀλκμαίωνι.*

Βροτοῖς τὰ μείζω τῶν μέσων τίκτει νόσους.
θεῶν δὲ θνητοὺς κόσμον οὐ πρέπει φέρειν.

9 *Μενάνδρου Τιτθῇ.*

Οἱ τὰς ὀφρῦς αἴροντες ὡς ἀβέλτεροι,
καὶ "σκέψομαι" λέγοντες· ἄνθρωπος γὰρ ὢν
σκέψῃ σὺ περί του, δυστυχὴς ὅταν τύχῃ;
αὐτόματα γὰρ τὰ πράγματ' ἐπὶ τὸ συμφέρον
ῥεῖ, κἂν καθεύδῃς, ἢ πάλιν τἀναντία.

10 *Χαιρήμονος.*

Ὅλως τὸ κρεῖσσον οὐκ ἐᾷ φρονεῖν μέγα.

11 *Μενάνδρου Κυβερνήταις.*

Ὦ τρισάθλιοι
ἅπαντες οἱ φυσῶντες ἐφ' ἑαυτοῖς μέγα.
αὐτοὶ γὰρ οὐκ ἴσασιν ἀνθρώπου φύσιν.

12 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Πᾶς ὁ μὴ φρονῶν
ἀλαζονείᾳ καὶ ψόφοις ἁλίσκεται.

13 *Εὐριπίδου Ἀλκμαίωνος.*

Ὁρᾶτε τὸν τύραννον, ὡς ἄπαις γέρων
φεύγει. φρονεῖν δὲ θνητὸν ὄντ' οὐ χρὴ μέγα.

14 *Εὐριπίδου Αἰόλου.*

Σιγᾶν φρονοῦντα κρεῖσσον εἰς ὁμιλίαν
πεσόντα. τούτῳ δ' ἀνδρὶ μήτ' εἴην φίλος
μήτε ξυνείην, ὅστις αὐτάρκη φρονεῖν
πέποιθε δούλους τοὺς φίλους ἡγούμενος.

15 Εὐριπίδου Ἀνδρομάχης (189).

Οἱ γὰρ πνέοντες μεγάλα τοὺς κρείσσους λόγους
πικρῶς φέρουσι τῶν ἐλασσόνων ὕπο.

16 Δημώνακτος.

Θνητοὶ γεγῶτες μὴ φρονεῖθ' ὑπὲρ θεούς.

17 Εὐριπίδου Βάκχαις (395).

Τὸ σοφὸν δ' οὐ σοφία,
τό τε μὴ θνητὰ φρονεῖν.
βραχὺς αἰών· ἐπὶ τούτῳ
δέ τις ἂν μεγάλα διώκων,
τὰ παρόντ' οὐχὶ φέρει.
μαινομένων οἵδε τρόποι
καὶ κακοβούλων παρ' ἔμοιγε φωτῶν.

18 Εὐριπίδου Ἡρακλεῖδαι (388).

Ὁ Ζεὺς κολαστὴς τῶν ἄγαν ὑπερφρόνων.

19 Μενάνδρου.

Τἀργύριον εἶναι, μειράκιον, σοὶ φαίνεται
οὐ τῶν ἀναγκαίων καθ' ἡμέραν μόνον
τιμὴν παρασχεῖν δυνατόν, ἄρτων ἀλφίτων
ὄξους ἐλαίου, μείζονος δ' ἄλλου τινός.
ἀθανασίας δ' οὐκ ἔστιν, οὐδ' ἂν συναγάγῃς
τὰ Ταντάλου τάλαντ' ἐκεῖνα λεγόμενα·
ἀλλ' ἂν ἀποθάνῃς, ταῦτα καταλείψεις τισίν.
τί οὖν λέγω; μήτ' αὐτός, εἰ σφόδρ' εὐπορεῖς,
πίστευε τούτῳ, μήτε τῶν πτωχῶν πάλιν
ἡμῶν καταφρόνει, τοῦ δέ γ' εὐτυχεῖν ἀεὶ
πάρεχε σεαυτὸν τοῖς ὁρῶσιν ἄξιον.

20 *Σοφοκλέους Αἴαντι* (125).

Ὁρῶ γὰρ ἡμᾶς οὐδὲν ὄντας ἄλλο πλὴν
εἴδωλ' ὅσοι πὲρ ζῶμεν ἢ κούφην σκιάν.
τοιαῦτα τοίνυν εἰσορῶν, ὑπέρκοπον
μηδέν ποτ' εἴπῃς αὐτὸς εἰς θεοὺς ἔπος,
μηδ' ὄγκον ἄρῃς μηδέν', εἴ τινος πλέον
ἢ χειρὶ βρίθεις ἢ μακροῦ πλούτου βάθει.

21 *Τοῦ αὐτοῦ* (Ai. 758).

Τὰ γὰρ περισσὰ κἀνόνητα σώματα
πίπτειν βαρείαις πρὸς θεῶν δυσπραγίαις
ἔφασχ' ὁ μάντις, ὅστις ἀνθρώπου φύσιν
βλαστὼν ἔπειτα μὴ κατ' ἄνθρωπον φρονεῖ.

22 *Σοφοκλέους Τηρεῖ. Χορός.*

Θνητὰ φρονεῖν χρὴ θνητὴν φύσιν,
τοῦτο κατειδότας, ὡς οὐκ ἔστιν
πλὴν Διὸς οὐδεὶς τῶν μελλόντων
ταμίας ὅ τι χρὴ τετελέσθαι.

23 *Σοφοκλέους Κολχίδες.*

Καλὸν φρονεῖν τὸν θνητὸν ἀνθρώποις ἴσα.

24 *Εὐριπίδου Ἀλκμαίωνι.*

Ταπεινὰ γὰρ χρὴ τοὺς κακῶς πεπραγότας
λέγειν, ἐς ὄγκον δ' οὐκ ἄνω βλέπειν τύχης.

25 *Ἱπποθόωντος.*

Ἄνθρωπος ὢν μέμνησο τῆς κοινῆς τύχης.

26 *Σωτάδου.*

Εἰ καὶ βασιλεὺς πέφυκας, ὡς θνητὸς ἄκουσον.
ἂν μακρὰ πτύῃς, φλεγματίῳ κρατεῖ περισσῷ.
ἂν εὐιματῇς, ταῦτα πρὸ σοῦ προβάτιον εἶχεν.
ἂν χρυσοφορῇς, τοῦτο τύχης ἐστὶν ἔπαρμα.
ἂν πλούσιος ᾖς, τοῦτο χρόνων ἄδηλος ἰσχύς.

ἂν ἀλαζονῇς, τοῦτ' ἀνοίας ἐστὶ φρύαγμα.
ἂν δὲ σωφρονῇς, τοῦτο θεῶν δῶρον ὑπάρχει.
ἡ σωφροσύνη πάρεστιν, ἂν μετρῇς σεαυτόν.

27 *Ἰσιδώρου.*
Θνητὸς πεφυκὼς τὠπίσω πειρῶ βλέπειν.

28 *Μενάνδρου Ἐμπιμπραμένῃ.*
Ἐφ' ᾧ φρονεῖς μέγιστον, ἀπολεῖ τοῦτό σε
τὸ δοκεῖν τίν' εἶναι, καὶ γὰρ ἄλλους μυρίους.

29 *Μενάνδρου Ἐπαγγελλόμενος.*
Τὸ σὸν ταπεινόν, ἂν σὺ σεμνύνῃ, καλὸν
ἔξω φανεῖται, φίλ' ἄνερ· ἂν δ' αὐτὸς ποιῇς
ταπεινὸν αὐτὸ καὶ τιθῇς ἐν μηδενί,
οἰκεῖος οὗτος κατάγελως νομίζεται.

30. 31. *Τοῦ αὐτοῦ Κανηφόρος.*
Τὸ γὰρ προθύμως μὴ πονήσαντας τυχεῖν
εὐδαιμονίας εἴωθ' ὑπερηφανίας ποιεῖν.

32 *Εὐριπίδου Τηλέφῳ.*
Σὺ δ' εἶκ' ἀνάγκῃ καὶ θεοῖσι μὴ μάχου.
τόλμα δὲ προσβλέπειν με καὶ φρονήματος
χάλα. τά τοι μέγιστα πολλάκις θεὸς
ταπείν' ἔθηκε καὶ συνέστειλεν πάλιν.

33 *Αἰλιανοῦ ἱστοριῶν* (III, 28).
Ὁρῶν ὁ Σωκράτης τὸν Ἀλκιβιάδην τετυφωμένον ἐπὶ τῷ πλούτῳ καὶ μέγα φρονοῦντα ἐπὶ τῇ περιουσίᾳ καὶ τοῖς ἀγροῖς ἤγαγεν αὐτὸν εἴς τινα τῆς πόλεως τόπον, ἔνθα ἀνέκειτο πινάκιον ἔχον γῆς περίοδον, καὶ προσέταξε τῷ Ἀλκιβιάδῃ τὴν Ἀττικὴν ἐνταῦθ' ἀναζητεῖν. ὡς δ' εὗρε, προσέταξε αὐτῷ τοὺς ἀγροὺς τοὺς ἰδίους διαθρῆσαι· τοῦ δὲ εἰπόντος "ἀλλ' οὐδαμοῦ γε-

γραμμένοι εἰσίν," "ἐπὶ τούτοις οὖν" εἶπε "μέγα φρονεῖς, οἵπερ οὐδὲν μέρος τῆς γῆς εἰσίν;"

34 *Δημοσθένους* (Cor. 269).

Παιδείας τῶν μὲν ἀληθῶς τετυχηκότων οὐδ' ἂν εἷς εἴποι μέγα οὐδὲ περὶ ἑαυτοῦ, ἀλλὰ καὶ ἑτέρου λέγοντος ἐρυθριάσειεν ἄν· τοῖς δ' ἀπολειφθεῖσι μὲν προσποιουμένοις δὲ ὑπὸ ἀναισθησίας τοὺς ἀκούοντας ἀλγεῖν ποιεῖ.

35 *Σωκράτης.*

Παρὰ τῷ τύφῳ, καθάπερ παρὰ κακῷ πλάστῃ, διεστραμμένας τὰς τῶν πραγμάτων εἰκόνας ἰδεῖν ἔστιν.

36 *Σωκράτους.*

Ἡ δεισιδαιμονία καθάπερ πατρὶ τῷ τύφῳ πείθεται.

37 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Τοὺς μὲν κενοὺς ἀσκοὺς τὸ πνεῦμα διίστησι, τοὺς δὲ ἀνοήτους ἀνθρώπους τὸ οἴημα.

38 *Σωκράτους.*

Σωκράτης ἐρωτηθεὶς τίνες βάναυσοι; "οἱ τῶν ὁμοίων" ἔφη "καταφρονοῦντες."

39 *Φαβωρίνου.*

Φρονήσῃς μὲν οὖν μηδέποτε ἐπὶ σεαυτῷ μέγα, ἀλλὰ μηδὲ καταφρονήσῃς σεαυτοῦ.

40 *Διογένους.*

Τῆς ἀλαζονείας καθάπερ τῶν κεχρυσωμένων ὅπλων οὐχ ὅμοιά ἐστι τὰ ἐντὸς τοῖς ἐκτός.

41 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Ὁ τῦφος ὥσπερ ποιμὴν οὗ θέλει τοὺς πολλοὺς ἄγει.

42 *Δημοκρίτου.*

Τελευτᾷ γὰρ ἐς κακοδοξίην κακὴν ὁ παρεκτεινόμενος τῷ κρείσσονι.

43 Δημοκράτους.

Δημοκράτης ἀναβαίνων εἰς τὴν ἀκρόπολιν ἐν γήραι καὶ πνευστιῶν ποιεῖν ἔφη ὅπερ καὶ ξύμπασα ἡ τῶν Ἀθηναίων πόλις· πνεῖν μὲν γὰρ μέγα, ἰσχύειν δὲ μικρόν.

44 Ξενοφῶντος (Cyrop. II, 2, 12).

Ὁ μὲν γὰρ ἀλαζὼν ἔμοιγε δοκεῖ ὄνομα κεῖσθαι ἐπὶ τοῖς προσποιουμένοις καὶ πλουσιωτέροις εἶναι ἢ εἰσὶ καὶ ἀνδρειοτέροις, καὶ ποιήσειν ἃ μὴ ἱκανοί εἰσιν ὑπισχνουμένοις, καὶ ταῦτα φανεροῖς γιγνομένοις, ὅτι τοῦ λαβεῖν τι ἕνεκα καὶ κερδᾶναι ποιοῦσιν· οἱ δὲ μηχανώμενοι γέλωτα τοῖς συνοῦσι μήτε ἐπὶ τῷ αὐτῶν κέρδει μήτε ἐπὶ ζημίᾳ τῶν ἀκουόντων μήτ' ἐπὶ βλάβῃ μηδεμιᾷ, πῶς οὐχ οὗτοι ἀστεῖοι ἂν καὶ εὐχάριστοι ὀνομάζοιντο δικαιότερον ἢ ἀλαζόνες;

45 Ξενοφῶντος ἐν τῷ η' (4, 14) τῆς Κύρου παιδείας.

Δοκεῖ δέ μοι, ὦ Κῦρε, χαλεπώτερον εἶναι εὑρεῖν ἄνδρα τἀγαθὰ καλῶς ἢ τὰ κακὰ φέροντα. τὰ μὲν γὰρ ὕβριν τοῖς πολλοῖς, τὰ δὲ σωφροσύνην τοῖς πᾶσιν ἐμποιεῖ.

46 Ἡροδότου (7, 10).

Ὁρᾷς τὰ ὑπερέχοντα ζῶα ὡς κεραυνοῖ ὁ θεὸς οὐδ' ἐᾷ φαντάζεσθαι, τὰ δὲ σμικρὰ οὐδέν μιν κνίζει· ὁρᾷς δὲ ὡς ἐς οἰκήματα τὰ μέγιστα αἰεὶ καὶ δένδρεα τὰ τοιαῦτα ἀποσκήπτει βέλεα· φιλέει γὰρ ὁ θεὸς τὰ ὑπερέχοντα πάντα κολούειν. οὕτω δὲ καὶ στρατὸς πολὺς ὑπ' ὀλίγου διαφθείρεται κατὰ τοιόνδε, ἐπει-

δάν σφιν ὁ θεὸς φθονήσας φόβον ἐμβάλῃ ἢ βροντήν, δι' ὧν ἐφθάρησαν ἀξίως ἑωυτῶν. οὐ γὰρ ἐᾷ φρονέειν ὁ θεὸς μέγα ἄλλον ἢ ἑωυτόν.

ΠΕΡΙ ΦΙΛΑΥΤΙΑΣ. ΚΓ.

1 *Κριτίου.*

Δεινὸν δ' ὅταν τις μὴ φρονῶν δοκῇ φρονεῖν.

2 *Σωσικράτους.*

Ἀγαθοὶ δὲ τὸ κακὸν ἐσμὲν ἐφ' ἑτέρων ἰδεῖν·
αὐτοὶ δ' ὅταν ποιῶμεν, οὐ γιγνώσκομεν.

3 *Μενάνδρου.*

Οὐδεὶς ἐφ' αὐτοῦ τὰ κακὰ συνορᾷ, Πάμφιλε,
σαφῶς, ἑτέρου δ' ἀσχημονοῦντος ὄψεται.

4 *Τοῦ αὐτοῦ Ἀσπίδος.*

Ὃ βούλεται γὰρ μόνον ὁρῶν καὶ προσδοκῶν
ἀλόγιστος ἔσται τῆς ἀληθείας κριτής.

5 *Εὐριπίδου.*

Ἅπαντες ἐσμὲν εἰς τὸ νουθετεῖν σοφοί·
αὐτοὶ δ' ὅταν σφαλῶμεν, οὐ γινώσκομεν.

6 *Αἰσώπου.*

Αἴσωπος ἔφη δύο πήρας ἕκαστον ἡμῶν φέρειν, τὴν μὲν ἔμπροσθεν τὴν δὲ ὄπισθεν· καὶ εἰς μὲν τὴν ἔμπροσθεν ἀποτιθέναι τὰ τῶν ἄλλων ἁμαρτήματα, εἰς δὲ τὴν ὄπισθεν τὰ ἑαυτῶν· διὸ οὐδὲ καθορῶμεν αὐτά.

7 *Ἐκ τῶν Ἀριστωνύμου τομαρίων.*

Οὕτως ἔνιοι αὑτοῖς δοκοῦσι φιλοσοφεῖν ὡς καὶ νήφειν οἱ μεθύοντες.

8 *Σωκράτους.*

Σωκράτης ἔλεγεν, εἴ τις ἐν θεάτρῳ ὑποκηρύττοι ἀνίστασθαι τοὺς σκυτοτόμους, ἐκείνους μόνους ἀναστήσεσθαι, ὁμοίως εἰ τοὺς χαλκοτύπους, τοὺς ὑφάντας, τοὺς ἄλλους κατὰ γένος· εἰ δὲ τοὺς φρονίμους ἢ δικαίους, πάντας ἀναστήσεσθαι. καὶ ἔστιν ἐν βίῳ βλάπτον μάλιστα τὸ ἀνοήτους ὄντας τοὺς πολλοὺς οἴεσθαι φρονίμους εἶναι.

9 *Δημοσθένους* (Olynth. III p. 33).

Διόπερ ῥᾷστόν ἐστιν ἁπάντων ἑαυτὸν ἐξαπατᾶν· ὃ γὰρ βούλεται, τοῦθ' ἕκαστος καὶ οἴεται· τὰ δὲ πράγματα πολλάκις οὐχ οὕτω πέφυκε.

10 *Διογένους*.

Διογένης ἔφη τῶν ἀνθρώπων ἐνίους τὰ δέοντα λέγοντας ἑαυτῶν οὐκ ἀκούειν, ὥσπερ καὶ τὰς λύρας καλὸν φθεγγομένας οὐκ αἰσθάνεσθαι.

11 *Ἡροδότου ἱστορίας γ'* (38).

Εἰ γάρ τις προθείη πᾶσιν ἀνθρώποισιν ἐκλέξασθαι κελεύων νόμους τοὺς καλλίστους ἐκ τῶν πάντων νόμων, διασκεψάμενοι ἂν ἑλοίατο ἕκαστος τοὺς ἑωυτῶν· οὕτω νομίζουσι πολύ τι καλλίστους τοὺς ἑωυτῶν νόμους ἕκαστοι εἶναι.

12 *Ἐν ταυτῷ* (53).

Ἡ φιλοτιμίη κτῆμα σκαιόν. μὴ τῷ κακῷ τὸ κακὸν ἰῶ. πολλοὶ τῶν δικαίων τὰ ἐπιεικέστερα προτιθέασι, πολλοὶ δὲ ἤδη τὰ μητρῷα διζήμενοι τὰ πατρῷα ἀπέβαλον.

13 *Πλάτωνος*.

Πλάτων συνεβούλευεν, ὅτε καταγελάσομεν τινῶν, ἐπιστρέφειν πρὸς ἑαυτοὺς καὶ σκοπεῖν μὴ καὶ αὐτοὶ τοῖς αὐτοῖς ἐσμὲν ἔνοχοι. πολλὰ γὰρ τὸ φίλαυ-

τον ἐπικρύπτει, καὶ περιβάλλει παρὰ τῷ ἄλλων καταγελῶντι.

14 Ἀπολλώνιος Σατύρῳ.

Οἱ πολλοὶ τῶν ἀνθρώπων τῶν μὲν ἰδίων ἁμαρτημάτων συνήγοροι γίνονται, τῶν δὲ ἀλλοτρίων κατήγοροι.

15 Εὐσεβίου.

Πολλοὶ δοκέοντες ἑωυτοὺς φιλέειν οὐ φιλέουσιν ἀληθέως· πάντα γοῦν αὐτοῦ τούτου ἕνεκα εἴκοντες ἑωυτοῖς καὶ παρὰ τὸ ἀτρεκὲς χαριζόμενοι αὐτοῖς τοῖς ἐναντιωτάτοις περιπίπτουσι.

16 Εὐσεβίου.

Πολλοὶ βουλόμενοι δοκέειν εἶναι εὐβουλότατοι πρὸς τῶν οἰκειοτάτων καὶ εὖ φρονεόντων ἀναποδιζόμενοι οὐκ ἀξιεῦσιν ἀπὸ τῶν δοξάντων ἅπαξ ἀναχωρέειν, ἀλλ' ὅκως μὴ ἐλεγχοίατο ὡς ἀπὸ ἡμαρτημένης ἀφιστάμενοι ἐμμένουσι τῇ γνώμῃ, ἐς ὃ δὴ καὶ τοῖς ἀπ' αὐτῆς κακοῖς ἐγκυρήσωσι.

17 Πλάτωνος ἐκ τοῦ Κρατύλου (428 d).

Τὸ γὰρ ἐξαπατᾶσθαι αὐτὸν ὑφ' αὑτοῦ πάντων χαλεπώτατον. ὅταν γὰρ μηδὲ σμικρὸν ἀποστατῇ ἀλλ' ἀεὶ παρῇ ὁ ἐξαπατήσων, πῶς οὐ δεινόν;

18 Τοῦ αὐτοῦ νόμων ε' (731 d).

Πάντων δὲ μέγιστον κακὸν ἀνθρώποις τοῖς πολλοῖς ἔμφυτον ἐν ταῖς ψυχαῖς ἐστιν, οὗ πᾶς αὑτῷ ξυγγνώμην ἔχων ἀποφυγὴν οὐδεμίαν μηχανᾶται. τοῦτο δ' ἐστὶν ὃ λέγουσιν, ὡς φίλος αὑτῷ πᾶς ἄνθρωπος φύσει τέ ἐστι καὶ ὀρθῶς ἔχει τὸ δεῖν εἶναι τοιοῦτον. τὸ δὲ ἀληθείᾳ γε πάντων ἁμαρτημάτων διὰ τὴν σφόδρα ἑαυτοῦ φιλίαν αἴτιον ἑκάστῳ γίγνεται ἑκάστοτε.

τυφλοῦται γὰρ περὶ τὸ φιλούμενον ὁ φιλῶν· ὥστε τὰ δίκαια καὶ τὰ ἀγαθὰ καὶ τὰ καλὰ κακῶς κρίνει, τὸ αὑτοῦ πρὸ τοῦ ἀληθοῦς ἀεὶ τιμᾶν δεῖν ἡγούμενος. οὔτε γὰρ ἑαυτὸν οὔτε τὰ ἑαυτοῦ χρὴ τόν γε μέγαν ἄνδρα ἐσόμενον στέργειν· ἀλλὰ τὰ δίκαια, ἐάν τε παρ' αὑτῷ ἐάν τε παρ' ἄλλῳ μᾶλλον πραττόμενα τυγχάνῃ. ἐκ ταὐτοῦ δὲ ἁμαρτήματος τούτου καὶ τὸ τὴν ἀμαθίαν τὴν παρ' αὑτῷ δοκεῖν σοφίαν εἶναι γέγονε πᾶσιν· ὅθεν οὐκ εἰδότες, ὡς ἔπος εἰπεῖν, οὐδὲν οἰόμεθα τὰ πάντα εἰδέναι, οὐκ ἐπιτρέποντες δὲ ἄλλοις ἃ μὴ ἐπιστάμεθα πράττειν, ἀναγκαζόμεθα ἁμαρτάνειν αὐτοὶ πράττοντες. διὸ πάντα ἄνθρωπον χρὴ φεύγειν τὸ σφόδρα φιλεῖν αὑτόν, τὸν δὲ αὑτοῦ βελτίω διώκειν δεῖ, μηδεμίαν αἰσχύνην ἐπὶ τῷ τοιούτῳ πρόσθεν ποιούμενον.

ΠΕΡΙ ΤΟΥ ΣΥΝΕΙΔΟΤΟΣ. ΚΔ.

1 Διφίλου.

Ὅστις γὰρ αὐτὸς αὑτὸν οὐκ αἰσχύνεται
συνειδόθ' αὑτῷ φαῦλα διαπεπραγμένῳ,
πῶς τόν γε μηδὲν εἰδότ' αἰσχυνθήσεται;

2 Πυθαγόρου (Aur. carm. 12).

Πάντων δὲ μάλιστ' αἰσχύνεο σαυτόν.

3 Μενάνδρου.

Ὁ συνιστορῶν αὑτῷ τι, κἂν ᾖ θρασύτατος,
ἡ σύνεσις αὐτὸν δειλότατον εἶναι ποιεῖ.

4 Σοφοκλέους.

Κλέπτων δ' ὅταν τις ἐμφανῶς ἐφευρεθῇ,
σιγᾶν ἀνάγκη, κἂν καλὸν φέρῃ στόμα.

5 *Εὐριπίδου Ὀρέστῃ* (395).

Ὀρέστα τλῆμον, τίς σ' ἀπόλλυσιν νόσος;
ἡ σύνεσις, ὅτι σύνοιδα δείν' εἰργασμένος.

6 *Σοφοκλέους.*

Ἦ δεινὸν ἆρ' ἦν, ἡνίκ' ἄν τις ἐσθλὸς ὢν
αὑτῷ συνειδῇ.

7 *Ἀντιφάνους.*

Τὸ μὴ συνειδέναι γὰρ αὑτοῦ τῷ βίῳ
ἀδίκημα μηδὲν ἡδονὴν πολλὴν ἔχει.

8 *Πυθαγόρου.*

Κακὰ μείζω πάσχει διὰ τοῦ συνειδότος ὁ ἀδικῶν βασανιζόμενος ἢ ὁ τῷ σώματι καὶ ταῖς πληγαῖς μαστιγούμενος.

9 *Ἰσοκράτους πρὸς Δημόνικον* (§. 16).

Μηδέποτε μηδὲν αἰσχρὸν ποιήσας ἔλπιζε λήσειν· καὶ γὰρ ἂν τοὺς ἄλλους λήσῃς, σαυτῷ συνειδήσεις.

10 *Ἰσοκράτους Νικοκλῆς ἢ Κύπριοι* (§. 52).

Μηδὲν ἀποκρύπτεσθε μήθ' ὧν κέκτησθε μήθ' ὧν ποιεῖτε μήθ' ὧν μέλλετε πράττειν, εἰδότες ὅτι περὶ τὰ κεκρυμμένα τῶν πραγμάτων ἀναγκαῖόν ἐστι πολλοὺς φόβους γίγνεσθαι.

11 *Βίαντος.*

Βίας ἐρωτηθεὶς τί ἂν εἴη τῶν κατὰ βίον ἄφοβον εἶπεν "ὀρθὴ συνείδησις."

12 *Περιάνδρου.*

Περίανδρος ἐρωτηθεὶς τί ἐστιν ἐλευθερία εἶπεν "ἀγαθὴ συνείδησις."

13 *Σωκράτους.*

Σωκράτης ἐρωτηθεὶς τίνες ἀταράχως ζῶσιν εἶπεν "οἱ μηδὲν ἑαυτοῖς ἄτοπον συνειδότες."

14 *Διογένους.*

Τίς γὰρ ἂν ἧττον φοβοῖτό τι ἢ θαρσοίη μάλιστα ἢ ὅστις αὑτῷ μηδὲν συνειδείη κακόν;

15 *Πλουτάρχου ἐκ τοῦ περὶ εὐθυμίας* (476 f).

Τὸ γὰρ συνειδὸς οἷον ἕλκος ἐν σαρκὶ τῆς ψυχῆς τὴν μεταμέλειαν αἱμάσσουσαν ἀεὶ καὶ νύσσουσαν ἐναπολείπει. τὰς μὲν γὰρ ἄλλας ἀναιρεῖ λύπας ὁ λόγος, τὴν δὲ μετάνοιαν αὐτὸς ἐνεργάζεται δακνομένην σὺν αἰσχύνῃ καὶ κολαζομένην ὑφ' αὑτῆς. ὡς γὰρ οἱ ῥιγοῦντες καὶ πυρετοῖς διακαιόμενοι τῶν ταυτὰ πασχόντων ἔξωθεν ὑπὸ καύματος καὶ κρύους μᾶλλον ἐνοχλοῦνται καὶ κάκιον ἔχουσιν, οὕτως ἐλαφροτέρας ἔχει τὰ τυχηρὰ τὰς λύπας ὥσπερ ἔξωθεν ἐπιφερομένας. τὸ δὲ "οὔ τις ἐμοὶ τῶν ἄλλος ἐπαίτιος, ἀλλ' ἐγὼ αὐτός," ἐπιθρηνούμενον τοῖς ἁμαρτανομένοις ἔνδοθεν ἐξ αὐτοῦ, βαρύτερον ποιεῖ τῷ αἰσχρῷ τὸ ἀλγεινόν.

16 *Ἰσοκράτους Νικοκλῆς ἢ Κύπριοι* (§. 59).

Ζηλοῦτε μὴ τοὺς πλεῖστα κεκτημένους ἀλλὰ τοὺς μηδὲν κακὸν σφίσιν αὐτοῖς συνειδότας. μετὰ γὰρ τῆς τοιαύτης τύχης ἥδιστ' ἂν τις δύναιτο τὸν βίον διαγαγεῖν.

ΠΕΡΙ ΜΝΗΜΗΣ. ΚΕ.

1 *Πορφυρίου περὶ τῶν τῆς ψυχῆς δυνάμεων.*

Ὥσπερ γὰρ ἐκ τῶν ἐνεργειῶν καὶ τὰς ἄλλας κατε-

λαβόμεθα, οὕτως ἀναθεωροῦντες κατὰ συναναφορὰν γιγνομένην καὶ μνήμην τῶν ἢ δι' αἰσθήσεως καταληφθέντων ἢ διὰ λόγου ἐθέμεθα καὶ ταύτην ψυχῆς δύναμιν, ἣ τῇ συναναφορᾷ καλεῖται μνήμη, ἣν ἀφορίζεται Ἀριστοτέλης κατοχὴν φαντάσματος, ὡς εἰκόνος, οὗ φαντάσματα εἰκών· οἷον ὅταν γένηται ἡ αἴσθησις ἀνελθοῦσα ἐπὶ τὴν φανταστικὴν κατασκευήν, τὸ γενόμενον ἐν τῇ φανταστικῇ τὸ πάθος ὅ τι δή ποτε ὂν καλεῖται φάντασμα. ἔτι οὖν καὶ ἀρθέντος τοῦ αἰσθητικοῦ ἐκ τῆς αἰσθήσεως, τὸ προσπῖπτον ἐν τῇ εἰκόνι τοῦ αἰσθητοῦ, ἀφ' οὗ συνέστηκε τὸ φάντασμα, εἰκόνος λόγον ἔχον πρὸς τὸ φανταστόν· οἷον γὰρ εἰκών τις ἐγένετο ἐν τῇ φανταστικῇ τοῦ ὑποπεσόντος ὑπὸ τὴν αἴσθησιν. ὅταν οὖν γένηται κατοχὴ περὶ τὴν φανταστικὴν τοῦ φαντάσματος, καλεῖται μνήμη. τοῦτο μὲν οὖν κοινὸν καὶ ἐν τοῖς ἀλόγοις ζῴοις· ἡ δὲ διηρθρωμένη, καθ' ἣν καὶ ἀναμιμνησκόμεθα, ἐν μόνοις ἐστὶ τοῖς λογικοῖς· ἴδιον γὰρ λογισμοῦ τὸ διηρθρωμένον. διὸ καὶ φασὶν οἱ περὶ τὸν Ἀριστοτέλην τὰ ἄλογα ζῷα μεμνῆσθαι μέν, ἀναμιμνήσκεσθαι δὲ μή, μόνον δὲ τὸν ἄνθρωπον καὶ μνημονεύειν καὶ ἀναμιμνήσκεσθαι.

2 Πλάτωνος ἐκ Κρατύλου (437 b).

Ἡ μνήμη παντί που μηνύει ὅτι μονή ἐστιν ἐν τῇ ψυχῇ ἀλλ' οὐ φορά.

3 Ἀριστοτέλους περὶ μνήμης.

Τὴν δὲ κατοχὴν τῶν φαντασμάτων μνήμην ἐπονομάζεσθαι, τὴν δ' ἀναπόλησιν τούτων ἀνάμνησιν· οὐ τοὺς αὐτοὺς δ' εἶναι μνημονικούς τε καὶ ἀναμνηστικούς, ἀλλ' ὡς ἐπιπολὺ μνημονικωτέρους μὲν ὑπάρχειν τοὺς βραδεῖς, ἀναμνηστικωτέρους δὲ τοὺς ταχεῖς καὶ εὐμαθεῖς. διαφέρειν δὲ τῆς φαντασίας τὴν

μνήμην, ὅτι ἣ μὲν κίνησίς ἐστιν αἰσθήσεως ἐνεργούσης ἢ διανοίας (φαντάσματα γὰρ ἄμφω λέγειν ὁμοίως ἡμᾶς), ἣ δ' οἷον ζωγράφημά τι τῆς ψυχῆς· τὴν γὰρ γιγνομένην κίνησιν τῆς αἰσθήσεως σημαίνεσθαί τινα τρόπον ἐν αὐτῇ παραπλησίως τοῖς σφραγιζομένοις διὰ τῶν δακτυλίων. διὸ καὶ τοῖς μὲν ἐν κινήσει πολλῇ διὰ πάθος ἢ δι' ἡλικίαν οὖσιν οὐ γίγνεσθαι, καθάπερ εἰς ὕδωρ ῥέον ἐμπιπτούσης τῆς κινήσεως καὶ τῆς σφραγῖδος· τοῖς δὲ διὰ τὸ ψύχεσθαι, καθάπερ καὶ τὰ παλαιὰ τῶν οἰκοδομημάτων· καὶ διὰ σκληρότητα δὲ τοῦ δεχομένου τὸ πάθος οὐκ ἐγγίνεσθαι τοὺς τύπους. διόπερ τούς τε νέους σφόδρα καὶ τοὺς γέροντας ἀμνήμονας εἶναι· ὑπορρεῖν γὰρ τῶν μὲν διὰ τὴν αὔξησιν τῶν δὲ διὰ τὴν φθίσιν. ὁμοίως δὲ καὶ τοὺς λίαν ταχεῖς ἢ βραδεῖς· οὐδετέρους γὰρ τούτων φαίνεσθαι μνημονεύοντας· τοὺς μὲν γὰρ ὑγροτέρους εἶναι τοῦ δέοντος τοὺς δὲ σκληροτέρους, παρ' ὃ καὶ τῶν μὲν οὐ μένειν ἐν τῇ ψυχῇ τὸ φάντασμα τῶν δ' οὐχ ἅπτεσθαι τὸ παράπαν.

4 *Ἐκ τῆς Πλάτωνος πρὸς Διονύσιον ἐπιστολῆς* (314 c).

Μεγίστη δὲ φυλακὴ τὸ μὴ γράφειν ἀλλ' ἐκμανθάνειν· οὐ γὰρ ἔστι τὰ γραφέντα μὴ οὐκ ἐκπεσεῖν. διὰ ταῦτ' οὐδὲν πώποτ' ἐγὼ περὶ τούτων γέγραφα, οὐδ' ἔστι Πλάτωνος σύγγραμμα οὐδέν, οὐδ' ἔσται· τὰ δὲ νῦν λεγόμενα Σωκράτους ἐστὶ καλοῦ καὶ νέου γεγονότος.

5 *Πλάτωνος ἐκ τοῦ Φιλήβου* (34 a).

Τὸ δ' ἐν ἑνὶ πάθει τὴν ψυχὴν καὶ τὸ σῶμα κοινῇ γιγνόμενον κοινῇ καὶ κινεῖσθαι, ταύτην δὴ τὴν κίνησιν ὀνομάζων αἴσθησιν οὐκ ἀπὸ τρόπου φθέγγοι' ἄν.

Ἀληθέστατα λέγεις. Οὐκ οὖν ἤδη μανθάνομεν ὃ βουλόμεθα καλεῖν τὴν αἴσθησιν; Τί μήν; Σωτηρίαν τοίνυν αἰσθήσεως τὴν μνήμην λέγων ὀρθῶς ἄν τις λέγοι, κατά γε τὴν ἐμὴν γνώμην. Ὀρθῶς γὰρ οὖν. Μνήμης δὲ ἀνάμνησιν ἆρ' οὐ διαφέρουσαν ἔγνωμεν; Ἴσως. Ἆρ' οὐ τόδε; Τὸ ποῖον; Ὅταν ἃ μετὰ τοῦ σώματος ἔπασχε πάθη ψυχή, ταῦτα ἄνευ σώματος αὐτὴ ἐν ἑαυτῇ ὅτι μάλιστα ἀναλαμβάνῃ, τότε ἀναμιμνήσκεσθαί που λέγομεν. ἦ γάρ; Πάνυ μὲν οὖν. Καὶ μὴν καὶ ὅταν ἀπολέσασα μνήμην, εἴτ' αἰσθήσεως εἴτ' αὖ μαθήματος, αὖθις ταύτην ἀναπολήσῃ πάλιν αὐτὴ ἐν ἑαυτῇ, καὶ ταῦτα ξύμπαντα ἀναμνήσεις καὶ μνήμας που λέγομεν. Ὀρθῶς λέγεις.

6 *Ἰαμβλίχου ἐκ τοῦ περὶ ψυχῆς.*

Τούτων οὐσῶν τῶν κοινοτάτων δυνάμεων εἰσὶ καὶ ἄλλαι τῆς ψυχῆς δυνάμεις, κατ' αὐτὴν μέν, οὐ μὴν συμπληρωτικαὶ αὐτῆς, ὡς ἡ μνήμη κατοχὴ οὖσα φαντάσματος.

ΠΕΡΙ ΛΗΘΗΣ. Κϛ·

1 *Σοφοκλέους ἐκ Συνδείπνου.*

Λάθα Πιερίδων στυγερὰ καὶ ἀνάρατος,
ἁ δὲ μνᾶστις θνατοῖς εὐποτμοτάτα
μελέων ἀνέχουσα βίου βραχὺν ἰσθμόν.

2 *Εὐριπίδου Ὀρέστου* (213).

Ὦ πότνια λήθη τῶν κακῶν, ὡς εἶ σοφή,
καὶ τοῖσι δυστυχοῦσιν εὐκταία θεός.

3 *Σοφοκλέους Ὕβρεως Σατύρων.*

Λήθην τε τὴν ἅπαντ' ἀπεστερημένην,
κωφὴν ἄναυδον.

4 Τοῦ αὐτοῦ Μυσῶν.

Ὡς τοῖς κακῶς πράσσουσιν ἡδὺ καὶ βραχὺν χρόνον λαθέσθαι τῶν παρεστώτων κακῶν.

5 Πλάτωνος ἐκ τοῦ Φιλήβου (33 e).

Ἔστι γὰρ λήθη μνήμης ἔξοδος.

6 Πλάτωνος ἐκ τοῦ συμποσίου (208 a).

Ὃ γὰρ καλεῖται μελετᾶν ὡς ἐξιούσης ἐστὶ τῆς ἐπιστήμης· λήθη γὰρ ἐπιστήμης ἔξοδος.

ΠΕΡΙ ΟΡΚΟΥ. ΚΖ.

1 Χοιρίλου Περσηίδος.

Ὅρκον δ' οὔτ' ἄδικον χρεὼν ἔμμεναι οὔτε δίκαιον.

2 Αἰσχύλου.

Οὐκ ἀνδρὸς ὅρκοι πίστις, ἀλλ' ὅρκων ἀνήρ.

3 Ἀλέξιδος ἐκ Θητευόντων.

Ὅρκος βέβαιός ἐστιν, ἂν νεύσω μόνον.

4 Ἄμφιδος.

Ὅστις γὰρ ὀμνύοντι μηδὲν πείθεται,
αὐτὸς ἐπιορκεῖν ῥαδίως ἐπίσταται.

5 Ἀντιφάνους.

Δέσποιν', ὅταν τις ὀμνύοντος καταφρονῇ,
ᾧ μὴ σύνοιδε πρότερον ἐπιωρκηκότι,
οὗτος καταφρονεῖν τῶν θεῶν ἐμοὶ δοκεῖ
καὶ πρότερον ὀμόσας αὐτὸς ἐπιωρκηκέναι.

6 Σοφοκλέους Ἱπποδαμείας.

Ὅρκου δὲ προστεθέντος ἐπιμελεστέρα
ψυχὴ κατέστη. δισσὰ γὰρ φυλάσσεται,
φίλων τε μέμψιν κεἰς θεοὺς ἁμαρτάνειν.

7 *Ἀπολλοδώρου.*
Μάστιγος οὔσης ὅρκον οἰκέτῃ δίδως;

8 *Ἀντιφάνους.*
Ὁ διδοὺς τὸν ὅρκον τῷ πονηρῷ μαίνεται·
τοὐναντίον γὰρ νῦν ποιοῦσιν οἱ θεοί.
ἐὰν ἐπιορκήσῃ τις αὐτούς, εὐθέως
ὁ διδοὺς τὸν ὅρκον ἐγένετ' ἐμβρόντητος, ὡς
οἶμαι δικαίως, ὅτι πεπίστευκέν τινι.

9 *Ἀλέξιδος Ὀλυνθίων.*
Οὐ τοῖς γὰρ ὀμνύουσι τὸν φρονοῦντα δεῖ,
τοῖς πράγμασιν δ' αὐτοῖσι πιστεύειν ἀεί.

10 *Λυκούργου.*
Δεῖ φίλοις καὶ τοῖς οἰκείοις βοηθεῖν ἄχρι τοῦ μὴ ἐπιορκεῖν.

11 *Ἰσοκράτους πρὸς Δημόνικον* (§. 23).
Ὅρκον ἐπακτὸν προσδέχου διὰ δύο προφάσεις, ἢ σαυτὸν αἰτίας αἰσχρᾶς ἀπολύων ἢ φίλους ἐκ μεγάλων κινδύνων διασώζων. ἕνεκα δὲ χρημάτων μηδένα θεῶν ὀμόσῃς μηδ' ἂν εὐορκεῖν μέλλῃς· δόξεις γὰρ τοῖς μὲν ἐπιορκεῖν τοῖς δὲ φιλοχρημάτως ἔχειν.

12 *Ἐκ τοῦ Ἐπικτήτου ἐγχειριδίου* (33).
Ὅρκον παραίτησαι εἰ μὲν οἷόν τε εἰς ἅπαν, εἰ δὲ μή, ἐκ τῶν ἐνόντων.

13 *Εὐσεβίου.*
Οἱ πολλοὶ τοῖς ἀνθρώποις τὸ εὐόρκους εἶναι αὐτοῖς παραινέουσιν· ἐγὼ δὲ καὶ τὸ ἀρχὴν μηδ' εὐπετέως ὀμνύναι ὅσιον ἀποφαίνομαι.

14 *Ἡροδότου ἱστορίας ϛ'* (86).
Ἔλεξέ σφιν Λευτυχίδης τάδε· ὦ Ἀθηναῖοι, ποιέετε

μὲν ὁκότερα βούλεσθε αὐτοί· καὶ γὰρ ἀποδιδόντες, ποιέετε ὅσια, καὶ μὴ ἀποδιδόντες, τὰ ἐναντία τούτων. ὁποῖον μέντοι τι ἐν τῇ Σπάρτῃ συνηνέχθη γενέσθαι περὶ παραθήκης, βούλομαι ὑμῖν εἰπεῖν. λέγομεν ἡμεῖς οἱ Σπαρτιῆται γενέσθαι ἐν Λακεδαίμονι κατὰ τρίτην γενεὴν τὴν ἀπ' ἐμέο Γλαῦκον Ἐπικυδέος παῖδα· τοῦτον τὸν ἄνδρα φαμὲν τά τε ἄλλα πάντα περιήκειν τὰ πρῶτα, καὶ δὴ καὶ ἀκούειν ἄριστα δικαιοσύνης πέρι πάντων ὅσοι παρὰ Λακεδαίμονας τοῦτον τὸν χρόνον οἴκεον· συνενεχθῆναι δέ οἱ ἐν χρόνῳ ἱκνευμένῳ τάδε λέγομεν· ἄνδρα Μιλήσιον ἀπικόμενον ἐς Σπάρτην βούλεσθαί οἱ ἐλθεῖν ἐς λόγους προϊσχόμενον τοιάδε· εἰμὶ μὲν Μιλήσιος· ἥκω δὲ τῆς σῆς, Γλαῦκε, δικαιοσύνης βουλόμενος ἀπολαῦσαι. ἔδοξέ μοι οὖν τὰ ἡμίσεα τῆς οὐσίας ἐξαργυρώσαντα θέσθαι παρὰ σέ. χρόνου δὲ διελθόντος, ἦλθον ἐς Σπάρτην τοῦ παραθεμένου τὰ χρήματα οἱ παῖδες· ἐλθόντες δὲ ἐς λόγους τῷ Γλαύκῳ ἀπήτεον τὰ χρήματα· ὁ δὲ διωθέετο. οἱ μὲν δὴ Μιλήσιοι συμφορὴν ποιεύμενοι ἀπηλλάσσοντο, Γλαῦκος δ' ἐπορεύετο ἐς Δελφοὺς χρησόμενος τῷ χρηστηρίῳ· ἐπερωτῶντα δὲ αὐτὸν εἰ ὅρκῳ τὰ χρήματα ληίσεται, ἡ Πυθίη μετέρχεται τοῖσδε τοῖς ἔπεσι·

Γλαῦκ' Ἐπικυδείδη, τὸ μὲν αὐτίκα κέρδιον οὕτω
ὅρκῳ νικῆσαι καὶ χρήματα ληίσσασθαι.
ὄμνυ', ἐπεὶ θάνατός γε καὶ εὔορκον μένει ἄνδρα.
ἀλλ' ὅρκου παῖς ἐστιν ἀνώνυμος, οὐδ' ἔπι χεῖρες
οὐδὲ πόδες, κραιπνῶς δὲ μετέρχεται, εἰσόκε πᾶσαν
συμμάρψας ὀλέσῃ γενεὴν καὶ οἶκον ἅπαντα.
ἀνδρὸς δ' εὐόρκου γενεὴ κατόπισθεν ἀμείνων.

ταῦτα ἀκούσας ὁ Γλαῦκος συγγνώμην τὸν θεὸν παραιτέετο αὐτῷ ἴσχειν τῶν ῥηθέντων· ἡ δὲ Πυθίη ἔφη

τὸ πειρηθῆναι τοῦ θεοῦ καὶ τὸ ποιῆσαι ἴσον δύναται. Γλαῦκος μὲν δὴ μεταπεμψάμενος τοὺς Μιλησίους ξένους ἀποδίδωσί σφιν τὰ χρήματα. τοῦ δὲ εἵνεκα ὁ λόγος ὅδε, ὦ Ἀθηναῖοι, ὡρμήθη λέγεσθαι ἐς ὑμέας, εἰρήσεται. Γλαύκου νῦν οὐκέτι ἀπόγονόν ἐστιν οὐδέν, οὔτε ἱστίη οὐδεμία νομιζομένη εἶναι Γλαύκου· ἐκτέτριπταί τε πρόρριζος ἐκ Σπάρτης. οὕτως ἀγαθὸν μηδὲ διανοέεσθαι περὶ παραθήκης ἄλλο γε ἢ ἀπαιτεόντων ἀποδιδόναι.

ΠΕΡΙ ΕΠΙΟΡΚΙΑΣ. ΚΗ.

1 Σοφοκλέους.

Ὅρκοισι γάρ τοι καὶ γυνὴ φεύγει πικρὰν
ὠδῖνα παίδων, ἀλλ᾽ ἐπὴν λήξῃ κακοῦ,
ἐν τοῖσιν αὐτοῖς δικτύοις ἁλίσκεται,
πρὸς τοῦ παρόντος ἱμέρου νικωμένη.

2 Ἀφροδίσιος γὰρ ὅρκος οὐκ ἐμποίνιμος.

3 Καλλιμάχου.

Ὤμοσεν. ἀλλὰ λέγουσιν ἀλαθέα τοὺς ἐν ἔρωτι
ὅρκους μὴ δύνειν οὔατ᾽ ἐς ἀθανάτων.

4 Διφίλου.

Ὅρκος δ᾽ ἑταίρας ταυτὸ καὶ δημηγόρου·
ἑκάτερος αὐτῶν ὀμνύει πρὸς ὃν λαλεῖ.

5 Σοφοκλέους.

Ὅρκος γὰρ οὐδεὶς ἀνδρὶ φηλήτῃ βαρύς.

6 Εὐριπίδου (Hippol. 612).

Ἡ γλῶσσ᾽ ὀμώμοχ᾽, ἡ δὲ φρὴν ἀνώμοτος.

7 *Μενάνδρου.*

Συγκέχυκε νῦν τὴν πίστιν ὁ καθ' ἡμᾶς βίος.

8 *Ἡσιόδου θεογονίας* (231).

Ὅρκον θ', ὃς δὴ πλεῖστον ἐπιχθονίους ἀνθρώπους
πημαίνει, ὅτε κέν τις ἑκὼν ἐπίορκον ὀμόσσῃ.

9 *Δημοκρίτου.*

Ὅρκους οὓς ποιέονται ἐν ἀνάγκαισιν ἐόντες, οὐ τηρέουσιν οἱ φλαῦροι ἐπὴν διαφύγωσιν.

10 *Εὐριπίδου* (Iphig. Aul. 394).

Οὐ γὰρ ἀσύνετον τὸ θεῖον, ἀλλ' ἔχει συνιέναι
τοὺς κακῶς παγέντας ὅρκους καὶ κατηναγκασμένους.

11 *Εὔφρονος Θεῶν ἀγορᾶς.*

Καινοὺς πορίζου πρός με θεῶν θεούς,
ἵνα τοὺς παλαιοὺς μὴ ἐπιορκῇς πολλάκις.

12 *Εὐριπίδου.*

Συγγνώμονάς τοι τοὺς θεοὺς εἶναι δοκεῖς,
ἐάν τις ὅρκοις θάνατον ἐκφεύγειν θέλῃ
ἢ δεσμὸν ἢ βίαια πολεμίων κακά.

13 *Εὐσεβίου.*

Φημὶ πάντα τὸν προαίρεσιν τοῦ ἐπιορκῆσαι ἀναδεξάμενον καὶ ὁρμήσαντα ἐπὶ τὸν ὅρκον, εἰ καὶ μὴ πέλας ᾖ τὸ ἔργον τῆς ἐπιορκίης τύχῃ τινὶ ἢ καὶ τῷ μὴ βουληθῆναι τὸν ἀπαιτέοντα, ὅμως αὐτὸν ἔχειν γνώμην τὴν τοῦ ψευδόρκου καὶ εἶναι τῆς ἐπὶ τῇ ἐπιορκίῃ ἁμαρτάδος τῆς ὀφειλευμένης κατὰ τῶν καὶ ἔργῳ ἐπιορκησάντων ἔνοχον τιμωρίης.

14 *Κλεάνθους.*

Κλεάνθης ἔφη τὸν ὀμνύοντα ἤτοι εὐορκεῖν ἢ ἐπι-

ορκεῖν καθ' ὃν ὄμνυσι χρόνον. ἐὰν μὲν γὰρ οὕτως ὀμνύῃ ὡς ἐπιτελέσων τὰ κατὰ τὸν ὅρκον, εὐορκεῖν, ἐὰν δὲ πρόθεσιν ἔχων μὴ ἐπιτελεῖν, ἐπιορκεῖν.

15 *Χρυσίππου.*

Χρύσιππος διαφέρειν ἔφη τὸ ἀληθορκεῖν τοῦ εὐορκεῖν, καὶ τὸ ἐπιορκεῖν τοῦ ψευδορκεῖν. τὸν μὲν ὀμνύντα καθ' ὃν ὀμνύει καιρὸν πάντως ἢ ἀληθορκεῖν ἢ ψευδορκεῖν· τὸ γὰρ ὀμνύμενον ὑπ' αὐτοῦ ἢ ἀληθὲς εἶναι ἢ ψεῦδος, ἐπειδὴ ἀξίωμα τυγχάνει ὄν· τὸν δὲ ὀμνύντα μὴ πάντως καθ' ὃν ὀμνύει χρόνον ἢ εὐορκεῖν ἢ ἐπιορκεῖν, ὅτε μὴ πάρεστιν ὁ χρόνος, εἰς ὃν ἡ ἀναφορὰ τῶν ὅρκων ἐγίγνετο. ὃν τρόπον γὰρ λέγεσθαί τινα εὐσυνθετεῖν ἢ ἀσυνθετεῖν, οὐχ ὅτε συντίθεται ἀλλ' ὅτε οἱ χρόνοι ἐνίστανται τῶν κατὰ τὰς ὁμολογίας, οὕτω καὶ εὐορκεῖν τις καὶ ἐπιορκεῖν ῥηθήσεται, ὅταν οἱ καιροὶ παραστῶσι, καθ' οὓς ὡμολόγησεν ἐπιτελέσειν τὰ κατὰ τοὺς ὅρκους.

16 *Ξενοφῶντος ἐν τῇ Κύρου ἀναβάσει βιβλίον β'* (5, 7).

Πρῶτον μὲν γὰρ καὶ μέγιστον οἱ θεῶν ὅρκοι κωλύουσιν ἡμᾶς πολεμίους εἶναι ἀλλήλοις· ὅστις δὲ τούτων σύνοιδεν ἑαυτῷ παρημεληκώς, τοῦτον οὔ ποτ' ἂν ἐγὼ εὐδαιμονίσαιμι. τὸν γὰρ θεῶν πόλεμον οὐκ οἶδα οὔτε ἀπὸ ποίου ἂν τάχους φεύγων τὶς ἀποφεύγοι, οὔτε εἰς ὁποῖον ἂν σκότος ἀποδραίη, οὔτε ὅπως ἂν εἰς ὀχυρὸν χωρίον ἀποσταίη. πάντῃ γὰρ πάντα τοῖς θεοῖς ὕποχα, καὶ πάντῃ πάντων ἴσον οἱ θεοὶ κρατοῦσιν.

17 *Ἡροδότου ἱστορίας α'* (74).

Ἄνευ γὰρ ἀναγκαίης ἰσχυρῆς πίστιες ἰσχυραὶ οὐκ ἐθέλουσι συμμένειν.

18 Χρυσὸν μὲν ἄνθρωποι βαναύσῳ τέχνῃ προσθάλψαντες ἔγνωσαν τὸ κρήγυον· ἄνδρα δὲ οὐκ ἔστι δεξιὸν γνώμῃ σταθμησάμενον ἀθρῆσαι. τοιήδε τις τὸ παλαιὸν ἡμέας ἐκ θεῶν συνέστησε μοῖρα. χρὴ δὲ πίστιν ἐν φιλίῃ τίθεσθαι κραδίῃ μὴ διπλῇ πεφυρμένους μηδ' ὅρκον ἐπιορκίης προσφιλέστερον ἡγεομένους· ὁ γὰρ τοιόσδε τῶν ἀνδρῶν τὴν μὲν ἐκ θεῶν ἀναβάλλεται τιμωρίην, ἐπὶ δὲ τοῦ καθεστῶτος πικρὴν ψυχαγωγίην ἔχων τέρπεται μωρὸς ἐών. τίς γὰρ οὐκ οἶδεν ὡς μένει τὸν κακὸν δίκη; εἰ δ' οὐ παρὰ πόδα τιμωρίης ἔτυχεν ἀλλ' ἐν χρόνῳ, κέρδος ἡγεέσθω τοὺς διεστῶτας ἡλίους, οὓς * περσῶν ἐκτὸς ἀμηρύτους ὁ θεὸς παρεπιδημέειν εἶχεν ἐν ζωίοις. ὡς δ' οὐ νωθρὴν ἔχει τὸ δαιμόνιον ἀνθρώπων ἐπίσκεψιν, ἐξ ἔργων ἀληθείης εὐόρητόν ἐστι. λέγεται γὰρ ἐν Τενέδῳ παρεπιδημίην ποιησάμενον Ἀρχέτιμον ἐξ Ἐρυθραίης τῆς Ἰώνων πόλεως ἐπιξένωσιν θέσθαι Κυδίῃ· χρυσοῦ δ' ἠλισμένην οὐκ ὀλίγην ἐμπολὴν ἔχοντα, ταύτην δὴ παραθέσθαι Κυδίῃ οὕτως ἔχοντα ὡς οὐδὲν ἂν βίαιον ἐξ ἀνδρὸς πάθοι, δοκέοντός γε δὴ λώιστα πρὸς ἑωυτὸν ἀρτίως ἐν φιλίῃ συγκεκρῆσθαι. ἔνθα Κυδίῃ κακὴν βουλὴν ἐς φρένας ἐμβάλλει φιλοκερδίη. ἀπαιτεύμενος γὰρ τὸν δοθέντα χρυσὸν ἐν παραθέσει σκληρὴν ἄρνησιν ἐποιήσατο· τῶν δ' ἐς ἀμφιβολίην πιπτόντων, τέλος ἔδοξεν ὅρκῳ κυρῶσαι. Κυδίης μὲν ὦν ἐς τρίτην ἡμέρην βουλόμενος κυρώσειν πίστιν τοῖς θεοῖς ἐπιτρεφθεῖσαν, ἀπελθὼν ἐς οἶκον μηχανὴν τοιήνδε ἔθετο. νάρθηκα γὰρ κοιλήνας παντὸς χρυσοῦ φόρτον ἐς αὐτὸν ἤρεισε, πρὸς δὲ χερὸς ἀντίληψιν εἴλημα μίτρης ἐδέσμευσε πάντοθεν, ὡς ἂν κρύπτοιτο τὴν κατεσκευασμένην πρόφασιν· ἐπειδὴ δὲ ἡ τεταγμένη παρῆν ἡμέρη, νωθρὴν πορείης ἤλυσιν ποιεύμενος διηρείδετο

νάρθηκι νοσηλείην ἐπιφέρων σώματι· καταστὰς δὲ ἐναντίον τοῦ θεοῦ, ὅνπερ ἔμελλε συνίστορα ποιέεσθαι, δίδωσι Κυδίης Ἀρχετίμῳ νάρθηκα τὸν ἐντὸς ἀδικίην πᾶσαν κεύθοντα, μέχρι περ τελευτήσει τὸν τεταγμένον ὅρκον· ἀνατείνας δὲ τῶν ἑῶν χερῶν φορὴν εἶπεν ὡς λάβοι μὲν παρ᾽ Ἀρχετίμου παραθήκην, ἀποδοίη δὲ ταύτην [ὅπερ ἦν ἐκ τέχνης πεπλασμένον ψεῦδος]. βαρυνθεὶς ἐπὶ τοῖς λελεγμένοις Ἀρχέτιμος ῥήσσει πρὸς ἔδαφος νάρθηκα πληγῇ βαρείῃ, τοῦ δὲ ἀραχθέντος ἐκτὸς ἐρρύη παραθήκης ὄγκος. Ἀρχέτιμος μὲν ὦν ἐκ θεῶν προνοίης τοιῆσδε ἔτυχε, Κυδίῃ δὲ λέγεται κακὴν βίου καταστροφὴν γενέσθαι. εἰς ἃ δεῖ βλέποντας μὴ καταφρόνησιν ποιέεσθαι πρὸς πίστιν ὅρκων ἐόντας ἀνθρώπους, οἷς ἐπισφαλὴς ὀπηδέει τύχη παντοίῃ φορῇ πνεύματος αἰωρευμένη.

ΙΩΑΝΝΟΥ ΣΤΟΒΑΙΟΥ
ΑΝΘΟΛΟΓΙΟΝ

IOANNIS STOBAEI
FLORILEGIUM

RECOGNOVIT

AUGUSTUS MEINEKE

VOL. II.





LIPSIAE
SUMPTIBUS ET TYPIS B. G. TEUBNERI
MDCCCLV.

DISCREPANTIA LECTIONIS A TEXTU GAISFORDI.

P. 1, 2. ὡς νῦν] ὥς νυν Dindorfius 3. ἅπτεται] ἅψεται Brunckius 18. ἀνολβίην — ὄλβον] ἀνολβίῃ — ὄλβῳ ex A

P. 2, 17. ἔργον] ἔργου 20. σὸν πατέρα] πατέρα σὸν Bothius 27. Euripidis versus est Philoct.

P. 3, 2. γενομένους] πενομένους Bentleius μέχρις ἂν ζῶσιν] μέχρι ἂν οὐ ζῶσιν 9. ἐντελεχείαις] ἐνδελεχείαις e codd. 24. ἥξει] ἅψει O. Schneiderus 25. separavi a praecedenti versu; Euripidis est in Telepho, ut constat ex hoc ipso titulo no. 9

P. 4, 12. εὐανδρίαν] rectius alias εὐδοξίαν 18. δύσεις, τροπάς] corr. δύσεις τροπάς, 20. συγγενικῶν] συγγενῶν Grotius 30. ἀλγύνει] ἀλδαίνει Musgravius

P. 5, 15. Ἀπολλοδώρου] Ἀπολλοδότου Vind. 16. χρόνον] χρόνον βραχὺν Vind. et B m. s. ἐὰν] ἂν 18. Ἀρχελάου acc. e Voss. 22. ποιοῦνθ᾽] πονοῦνθ᾽ Grotius

P. 6, 5. ante σὴ πατρὶς Grotius et Gaisfordus ex Euripide add. ὁρᾷς; ἄβουλος ὡς κεκερτομημένη | τοῖς κερτομοῦσι γοργὸν ὡς ἀναβλέπει 10. βουκολικοῦ] βουκολικῶν 11. θαμινῆς] θαμινᾶς αἰὲς ἰοίσας] ἀεναοίσας 14. λόγον] χρόνον Hirschigius 16. ἄλλο] αλλου B m. s. 19. ἀγαθᾶς] ἀγαθὰ Nauckius φίλοις] φίλοι Grotius 22. τἄρ᾽] ante Porsonum γὰρ

P. 7, 3. 4. ἐσπούδασεν] ἐσπούδακεν 6. πόνοις τοῖς] πόνοισι τοῖσι 7. ἀναγκαίοις] ἀναγκαίοισι 10. τῆς ὑστεραίας] τῇ ὑστεραίᾳ Hirschigius 11. ἐκκλησίας] ἐκκλησία Hirschigius 24. ἀκουσίων] ἀεκουσίων 25. ἐλαφροτέραν] ἐλαφροτέρην 27. ἑαυτοῦ τῇ συνηθείᾳ] ἑαυτοῦ συνηθείᾳ A

P. 8, 4. γίγνονται] γίνονται 9. παρὰ Κόννῳ] ante Grotium παρακόωντι 17. Ἑρμιονεὺς] ὁ Ἑρμιονεὺς e cod. Par. apud Boisson. AG. IV p. 197 18. πεῖρα] ἡ πεῖρα e cod. Par.

P. 10, 2. ὥσπερ οἱ ἐρῶντες ἀκολάστως] haec fort. delenda 3. οἱ ἄλλοι] ἄλλοι ex A 17. δοξοκόπος εἴη] δοξοκόπος τις ᾖ Halmius; posui δοξοκοπὸς ᾖ, nisi praestat δοξοκοπήσῃ 19. κακοποιήσῃ, τοῦτο σκοπεῖν ὅπως μηδὲν] κακοποιήσῃ τοῦτον, τὸ σκοπεῖν ὅπως μὴ ex A 20. ὥσπερ οἱ κόλακες] haec fort. insiticia 25. ἢ add. Halmius

P. 11, 1. ἄλλο τί γε] ἄλλο τι? 15. ἵνα ἀγαθοὶ] ἵνα αὐτοὶ ἀγαθοὶ A 16. ὃ acc. ex B 19. πάντα πόνῳ] πόνῳ πάντα ex A 29. ἀποροῦσιν] ἀπεροῦσιν e Xenophonte

P. 12, 24. ἀργοί εἰσι] πρόοιντο Xenophon, ἀργοὶ εἶεν Nauckius

P. 14, 2. εἶναι] ἔρχονται e codd. 6. μετιᾶσι] μετίασι 12. τουτέστι τῆς ψυχῆς] haec fort. delenda 30. τῶν ἀγαθῶν] ἀγαθῶν Nauckius 31. τῶν κακῶν] κακῶν Nauckius

P. 15, 1. ἀληθῶν] ἀληθῶς A

P. 16, 6. ἰδίᾳ] ἰδίῃ ἑαυτῷ] ἑαυτοῦ Halmius ἀτρέμας] ἀτρέμα ex Eur.

P. 17, 14. λέγῃ τις καὶ ἀκούῃ] λέγοι τις καὶ ἀκούοι Halmius 29. ἓν δὲ ἄκος τῇ ἐπιτυχίῃ] ἐὰν δὲ ἀποστῇ ἐπιτυχίῃ Iacobsius

P. 18, 18. πειρατηρίοις] πυριατηρίοις 22. ἐκ τοῦ Φαίδρου acc. e Vind.

P. 19, 3. ἐν δ′] ἐν α′ e Vind.

P. 21, 11. βίοτον] βίον τὸν ex Vind. 13. τῇ συνηθείᾳ] τὴν συνήθειαν Gaisfordus 22. πόνοι] πόνος ex A

P. 23, 9. Ἀντιόπῃ add. e Vind. 11. ἀμελίᾳ παρεὶς ἐᾷ] ἀμελείᾳ παρεισάσει ante Valckenarium 28. τὸ] γὰρ Cobetus

P. 24, 6. τύχης] τέχνης Bentleius 7. εἵνεκα] οὕνεκα 8. ἀπαιδεύτου] ἀπαίδευτος Bentleius 11—13. Hi versus vulgo leguntur post vs. 6. transposuit Kiddius 25. ἀθλιώτερος] ἀχρειότερος Dobraeus γοῦν] δ' Dobraeus 28. δεῖ] ἀεὶ ante Porsonum 29. μηδὲ περινοστεῖν] μηδέν, περινοστεῖν δὲ ante Porsonum

P. 25, 4. *ψυχῇ*] *τύχῃ*? 10. *Μελανίππῃ* add. e Vind. 19. *τούτων*] *τούτῳ* e Vind. 28. *ὧν*] *ὧν οὐκ* e Demosthene

P. 26, 2. *ἀμελετησίῃ ἀσκήσιος*] aut *ἀσκήσιος* delendum, aut scribendum *ἀμελησίῃ ἀσκήσιος* 4. *ἐν γ' ἀπομνημονευμάτων* add. ex Vind.

P. 27, 9. *Εὐριπίδου*] *Τέννῃ* (oper. vitio *Γέννῃ*) add. Nauckius e Vind. in quo est *ς̃νη* 23. *πᾶς*] *ἅπας* Grotius 25. *ἄρξῃς*] *ἄρξῃ* e Damasc. 27. *Δημοκρίτου*] Damasc. *Δημοκράτους*. hinc servavi formas vulgares

P. 28, 3. *Πυθιάδος* add. e Vind. 7. *Σωπάτρῳ περὶ ἀρετῆς* add. e Vind. 8. *εἴη καὶ τὰ τῆς αἰδοῦς ἀντεχόμενα, τιμῶντα μὲν τὰ χρηστὰ ἤθη*] *εἴη τὰ τιμῶντα μὲν τὰ χρηστὰ ἤθη καὶ τὰ τῆς αἰδοῦς ἀντεχόμενα*? 16. *δὲ νόμιζε*] *δ' ἐνόμιζε* e Vind. *μηδὲν*] *μηδένα* 24. *ἀλλ' αἰδέομαι*] *ἀλλὰ τὸν αἰδέομαι* e Damasc. 25. *ἐκ Κρεσφόντου* add. e Vind.

P. 29, 5. *ἐκ τοῦ Εὐθύφρονος* add. e Damasc.

P. 30, 1. *Διφίλου*] *Μενάνδρου* Vind. 5. *ἔστιν*] *ἔστ'* 6. separavi a superioribus *τἀναιδὲς*] ante Valckenarium *γ' ἀναιδὲς* 17. inter lineas hunc versum habet Vind. qui cum Voss. aliisque *τὰ* pro *τήν*· spurium recte iudicavit Nauckius 21. *Καρίνῃ* add. e Vind. et marg. Gesn. 24. *τὸ κρατοῦν γὰρ νῦν νομίζεται θεὸς*] Artemidorus, ut Com. Gr. IV p. 144 indicavi, *τὸ κρατοῦν γὰρ πᾶν δύναμιν ἔχει θεοῦ*, quod praefert Cobetus Var. L. p. 119 iterumque Mnemos. IV p. 269. Non assentientur qui meminerint *νομίζειν θεοὺς* esse deos publica lege receptos colere; recte etiam et fere necessarium *νῦν*. eo scilicet iam ventum est ut penes quem potestas est pro deo colatur. quae omnia non insunt in ieiuno illo ac ne vero quidem *πᾶν κρατοῦν δύναμιν ἔχειν θεοῦ* 26. *ἱστοριῶν α'* add. e Vind. 27. *χιτῶνι*] *κιθῶνι* e Damasc. 29. *ἐκ τῆς Κύρου παιδείας* add. e Vind.

P. 31, 6. *Πολλοῖς*] *Πολλῶν* Nauckius 10. *Ἀλεάσι*] *Ἀλεάδαις* 16. *Ἀθηνοδώρου*] non poetae hoc nomen est, sed scriptoris Simonideo dicto notissimo usi

P. 32, 18. *Ἀπολλωνίου τοῖς γνωρίμοις* add. e Vind.

P. 33, 13. *τῶν περὶ θεῶν ὅτι*] *τοῖς περὶ θεῶν ὅ τι* Wyt-

tenb. 18. *Ἀρχελάῳ* add. ex Vind. 19. *λέγ᾽ εὖ*] ante Valck. *λέγε* 21. *Αἰγεῖ* add. e marg. Gesn., *Αἰγέως* Vind. et codex Mendozae

P. 34, 27. *ἑτέροισιν ἐντυγχάνων*] imo *ἑτέροις συντυγχάνων*

P. 35, 14. *μειρακίων*] *μειρακίσκων*? 25. *Ἀναξάρχου*] e libro *περὶ βασιλείας* apud Clementem Alex. Strom. I p. 297. cf. praefat. Stobaei vol. I p. XXIX. idem Anaxarchus tit. XXX, 13 28. *φωνεῦντα*] *φωνέοντα* Clemens 30. *ὅρος*] *οὖρος* Bergkius *οἱ δὲ*] *εἰ δὲ οἱ* A, *ὅσοι δὲ* e Clem. *ἔξω*] seclusi ut interpretationem vocis *θύρησιν* *ῥῆσιν μουσικὴν*] *θύρῃσιν ἀείδουσιν ἢ ἣν* Clemens, *θύρησιν ἀείδουσι κἢν* Bergkius

P. 36, 1. *πεπνυμένως*] *πῃ πεπνυμένα* Clemens *ἀείσωσιν*] *ἀείσουσιν* A Clem. *οὐ παραδέχονται ἐν ἀργίῃ*] *οὐ τιθέμενοι ἐν σοφίῃ* Clemens. Bergkius Stobaeum legisse putat *οὐ παρεχόμενοι ἐν ἀργίῃ*, Clementem *οὐ τιθέμενοι ἐν σιωπῇ* 2. *αἰτίην δ᾽*] om. *αἰτίην* Clemens 19. *συνιεὶς*] *συνιεῖς*

P. 38, 14. *σωφρονέστεραι*] *ἐμφρονέστεραι* 25. *Μενάνδρου*] seclusi cll. Com. gr. vol. IV p. 257 *ἐπὶ γλώσσῃ φυεὶς*] v. Cobetum Mnemos. IV p. 233

P. 39, 3. *Μενάνδρου*] seclusi, Euripidis est 4. *καρτερὸν*] *καρτερᾶς* Cobetus; at *μεθιέναι λίθον ἐκ χειρὸς* non est *lapidem manu iaculari* sed *missum facere* 5. *ῥᾷον*] *ἐλαφρόν*? 6. *Εὐριπίδου*] *τοῦ αὐτοῦ* e Vind. *Δικτύος*] *Δίκτυος*

P. 40, 3. *ἐρωτηθεὶς*] *ἓν ἐρωτηθεὶς* recte Iacobsius 10. *ἀφρόνων*] *ἀφρόνως* 19. *ἔφη μὲν*] *μὲν ἔφη* *λαλεῖν*] *λέγειν* scribendum, *dicendi* non *garriendi* magister erat Isocrates

P. 41, 6. *ὀδόντων*] *ὀδόντας* 7. *χρήζομεν*] *χρηίζομεν* 8. *ἂν*] *ἐὰν*

P. 42, 11. *ταῦτα ὅσα*] *ταῦτά πως ἃ* 21. *ὦ*] *ὡς*? 23. *χρηστοῖς νομιζομένοις*] ante Grotium *χρηστοὺς νομιζομένους*

P. 43, 4. *τέχνην*] *τύχην*. illud tuetur Cobetus 6. *Πειρίθου*] v. Valcken. diatr. p. 198 10. *λόγοις*] *λόγος*? 17. *Ὕμνις*] *Ὑμνὶς* 18. *μακάριον ἢ*] *μακάριόν γ᾽ ἦ*, sed praestat *μακάριόν τι* 21. *πιστικὸν*] *πειστικὸν* 23. *οὐ*] *εὖ* e codd.

P. 44, 13. θαυμαστὸν] ἀξιοθαύμαστον e codd. 17. βίος] ὁ βίος 18. συντέτακται] εὖ τέτακται?

P. 46, 7. καὶ Φωκίωνα ἰδὼν ἐρχόμενον] ὡς εἶδε Φωκίωνα παριόντα ex A 8. ἔρχεται] hic ponit A, vulgo post κοπίς 9. σφῦρα καὶ] haec seclusi 13. ἀνελθεῖν] ἀπελθεῖν 18. τοῦ βασιλέως] acc. ex A 27. ἑκουσίως] ἑκουσίους? 28. ἀκουσίως] ἀκουσίους?

P. 47, 14. μέχρι τοῦ] μέχρι του Vind. 15. δοκῶ] δοκῇ Vind. 17. λιτὸς γενόμενος] αὐτὸς πενόμενος? 23. καὶ πότ'] καί ποτ' 24. 25. ὄμματα ἔσθ' ἡμῖν;] ὄμματα; οὐκ ἔστιν 26. πότοις ἢ] ποτοῖσι Valck.

P. 48, 5. ἐν βίῳ βεβιωκότα] εὖ βίου βεβηκότα? 28. δίκαιον] ἴδιον ante Porsonum 29. αὐτὸ τὸ κτῆμα] τὸ del. Wakef. et Gaisf. quo metricum vitium aufertur, grammaticum infertur

P. 49, 6. ὃ] codd. ἃ, ὃ Trinc. ᾗ Nauckius; malim ὃ et mox σωτήριον pro σωτηρία 8. τίς δέ κα λῴη] τὶς δ' ἐγκαλοίη codd. corr. Porsonus 9. ἀνὴρ γὰρ οὐδεὶς] γὰρ quod ferri non potest om. Voss. et Ars. scripsi quod sententia postulare videbatur ἄπηρος οὐδεὶς 10. ἠλέησ' ἰδών τις] ἠλέησέ τις ἰδὼν e codd. 17. ἀκούων πολλὰ] ἀκούων τὰ πολλὰ A, unde κλύων τὰ πολλὰ Nauckius 24. εὐξαίμαν] εὔξαιμ' ἂν ante Seidlerum V. D. p. 409

P. 50, 7. πάντα τὰ λυμαινόμεν'] πάντα τὰ λυμανούμεν'? an πᾶν τὸ λυμαινόμενον? 8. τὸ σιδήριον] ante Bentleium τὸν (A τὸ) σίδηρον 20. ἐκλαμφθῶσιν] ἐκλάμψωσιν e Plut.

P. 51, 11. κοινῶν] hoc addidi e Trinc. 19. ἀνὴρ ἀγαθὸς γὰρ] γὰρ om. codd. ἀνὴρ γὰρ ἀγαθός? an delendum ἀνήρ? 23. 24. τοῖς καλλίστοις ἀργῶν καὶ ἀπρακτῶν] restitui formas ionicas, at sententiam non expedio

P. 53, 23. κατασχόντες] κατέχοντες AB 25. μιμησάμενοι] μωμησάμενοι Iacobsius

P. 54, 4. φθονητέον] fort. add. εὐτυχίαν 7. πολλὰ ἔχων χρηστὰ] rectius πολλὰ ἔχων καὶ χρηστὰ 9. ἀγγείῳ] ἀγγηίῳ?

P. 55, 7. παθῶν seclusit Iacobsius 16. δύναιμ' ἂν] δύναι' ἂν ex Eur. 17. τοῦ αὐτοῦ add. e Vind. 18. γὰρ] fort. del.

P. 56, 1. vulgo *Δικτύος* 2. *πόλιν*] *πάτραν* Boissonadus 3. *πάτραν*] *πόλιν* Boissonadus 4. *ἕν γέ μοι*] *ἕν γ' ἐμοὶ* Valckenarius; huic versui quod vulgo praefigitur lemma *τοῦ αὐτοῦ Δίκτυος* delendum esse intellexit Nauckius 19. *κάλλιστα*] *μάλιστα* Brunckius

P. 57, 5. *Φοινίσσαις* acc. e Vind.

P. 58, 19. *καὶ ὅκως*] *καὶ* fort. del. *αὐτῶν*] *αὐτέων* *τάξει*] *τάξι* 21. 22. *ἐπιτηδεία μόνη*] *ἐπὶ τῇ διαμονῇ* Iacobsius 25. *καθεστώσας*] *κατεστεώσας*

P. 59, 4. *οἱ Λάκωνες*] Haec quo pertineant docet Herod. VII, 134. Lucianus Enc. Dem. 32 15. *τῇ μικροπολιτείᾳ*] *τὴν μικροπολιτείαν* ex AB

P. 60, 4. *ἀείρασα*] *ἄρασα*? 11. erat *Τεγεάται* et mox *Φενεάται* 15. *σκεψάμενος*] *σκηψάμενος* ex B 22. *ἀποκτεῖναι*] *ἀποκτείνει* Hirschigius 24. *τρίτῳ*] *πρώτῳ* Gaisfordus 28. *Περσεφόνην*] *Περσεφόνῃ* Gesnerus 29. *Θρασιθέᾳ*] *Φρασιθέᾳ* A, *Πραξιθέᾳ* Valesius, cf. Plutarchi mor. p. 310 d.

P. 61, 1. *τὸν πόλεμον*] *τοῖς πολεμίοις* Hirschigius 7. *πρῶτος*] *ἢ πρῶτος*? 8. *τιθέμενος*] *θέμενος* ex B 11. *τῆς τε τοῦ πατρὸς καὶ τῆς μητρῴας*] *τοῦ τε πατρὸς καὶ τῆς μητρὸς* ex marg. A 13. *γινομένων*] *γονέων* posui, at rectius fort. Bentleius *γειναμένων* 14. *δεῖ*] corr. typoth. errorem *δή* 24. *τὸ προκείμενον*] *τὸν προκρινόμενον* Bentleius 31. *ἐξετάζοιτο*] *ἐξετάζοι* Hirschigius *καθήκειν*] *καθήκοι*?

P. 62, 2. *ὡς*] *ἑνὸς* Hirschigius 5. *συγκεφαλαιώσθω*] *συγκεκεφαλαιώσθω* Hirschigius, scribendum potius *συγκεφαλαιούσθω*, ut habent edd. ante Gaisfordum; *συγκεφαλαιώσθω* typoth. vitium videtur 6. *κοινὸν*] *κοινὸν ἢ* libri, *κοινῇ* Halmius 10. *συμφέρον πολίτῃ*] *πολίτῃ συμφέρον* ex A 17. *ἀποικονομεῖσθαι*] *ἀπονομεῖσθαι* A, *ἀποικοδομεῖσθαι* Gesnerus 20. 21. *τελειοῦντα*] *τε βιοῦντα* Badham 21. *κἂν ᾖ*] libri *κἂν εἰ*, Needham *κἂν ᾖ*

P. 63, 1. *παραδιατάττοιτο*] *παραδιαλλάττοιτο* Bentleius 4. *εἰ τά τε*] *ἐπεὶ τά γε* 5. *τὰ νῦν*] haec seclusi 13. *εὐτυχοῦντ'*] *τυχόντ'* Matthiae 14. *δυστυχοῦντα*] *δυστυχοῦσα* ex B 26. *ἀβελτηρίαν*] *ἀβελτερίαν*

P. 64, 9. *Ἐρεσίου*] *Ἐρέσου* 10. *Γλαύκων*] *Γλύκων*

Plutarchus, fort. *Λύκων*, de quo v. ad Stephanum Byz. p. 721 11. *ἐκ Κέω. τούτους ἐδίωξεν οὐδεὶς*] *ἐκ κωτιεοῦν τούτους ἐδίωξεν οὐδεὶς* libri i. e. *ἐκ Κέω. τίς οὖν τούτους ἐδίωξεν; οὐδείς.* Cf. Plutarchus l. l. 26. *ἂν δὲ μικρὸν*] *ἂν μικρὸν* e Plutarcho

P. 65, 3. *ἰάματα*] *ἰήματα* 14. *εἰπόντι*] addendum videtur *τινὶ τὴν φυγὴν κακὸν* vel simile quid 15. *ποίων*] *ἢ ποίων* Iacobsius 26. *φεύγει*] *φησὶ* vel *λέγει* 28. *ὦ παῖ*] *ὦ παῖδες*? sic certe Plutarchus aliique

P. 66, 8. *Ἀντιγόνῳ*] *Ἀντιγόνου*? 9 — 11. *Ἱππομέδων — ὑπὸ Πτολεμαίου*] haec transponenda videntur l. 13 ante *καὶ τὸ τελευταῖον*, sed ut verbum finitum exciderit 19. *αὐτοῖς εἴη ὀδυνῷντο*] *αὐτοῖς; εἰ δ' ὠδυνῶντο*, fere ut Gaisfordus qui voluit *αὐτοῖς ᾖ; εἰ ὀδυνῷντο*, in quibus *ὀδυνῷντο* pro *ὠδυνῶντο* solus B 21. *ἢ*] *σὺ* Gesnerus in versione *ἢ ὀλίγων*] haec seclusi 31. 32. *οὐδ' εἷς*] *οὐδ' οἱ πάντες εἷς*? 32. *ἕξομεν*] *ἔχομεν*?

P. 67, 9. *πόλιν* abundat 11. *ἡσσωμένου*] *ἠγωνισμένου*, quo ducebat A *ἥσσων ἴσμεν οὐ* 12. *ἀστείως*] ante Gaisfordum *ἄστεως* 24. *πότερα ἂν*] *πότερα* ex A

P. 68, 3. *ἔχεις*] *ἕξεις* 10. *Κύπριος*] Valckenarius *Κύθνιος*, fort. *Σκύριος* 11. *Βελβινήτης*] ante Valckenarium *Βελβινθείτης*, A *Βελβινοείτης*, fort. *Λεβινθιήτης* 16. *εὐγενὴς*] *ἐγγενὴς* Valckenarius 21. *Θήβαις*] *ἐν Θήβαις* an *Θήβησι*

P. 69, 4. *ὅτι δὲ*] *τί δὲ* Halmius *δόξῃ*] *δόξαι* Halmius 12. *ἄγνοια*] *ἀγωνία* Nauckius 19. *τύχῃς — ταφήσῃ*] *τύχοις — ταφείης* Halmius; praestat fort. *τυχήσεις — ταφήσῃ* (*ταφήσει*) 20. *ᾖ*] *ἢ* e libris *μόνον*] *μὲν* vulgo, *μόνον* Gesn. marg. 22. *κρυφθῆναι*] Ita Gaisfordus e Diogene IV, 25; eodem ducit A *κρυφθ*ῆ καί*, Vind. Trinc. *κρυφθῇ καί*, vulgo *κρυφθῶ καί*, quod debili auctoritate fultum tenet Geelius ad Euripidis Phoen. 1456 versum hunc Teletem in Euripidis Phoenissis legisse negans. mihi non dubium videtur quin Euripidis sit, qui si scribatur ut apud Diogenem est *ἐν γῆς φίλης μυχοῖσι κρυφθῆναι καλόν*, nihil iam languoris vel loquacitatis habet 23. *κρυφθείης*] *κρυφθήσει* scribendum erit, si recte statui de 19, vel potius *κρυφθεὶς ἔσει* propter sequens *ἀλλ' ἄταφος*

P. 70, 6. τύπος] τρόπος malim cum Gesnero 27. ἄξιός] ἀξιοῖς AB e corr. ἄξιον m. sec.

P. 71, 24. τὰ σώματα] τὸ σῶμα ex A 27. Σπαρτιατικὸς] Inauditum hoc viri nomen; an scribendum ὁ Σπαρτιατικός, deleto quod sequitur ὁ Λακεδαιμόνιος?

P. 72, 4. ἑαυτοὺς] αὐτοὺς e Damasc. 17. ἐγὼ δὲ] οἶδα δ' ἐγὼ AB a m. sec. 18. ἂν] φαίην ἂν vel tale quid scribendum, v. Gaisfordum 23. τοὺς Φαίακας] fort. secludenda 26. τοὺς Πέρσας] haec seclusi 29. Συρακούσιος] Συρακόσιος

P. 73, 5. φυγόντας] φυγόντας A (ευ superscr.)

P. 75, 10. βλάπτῃ] βλάπτοι 11. ταπεινῴη] ταπεινοίη 16. 17. νῦν πρὸς σὲ λέγω] πρὸς σὲ λέγω νῦν ex A

P. 76, 5. πρὸς ἕν' εἴποις ποτὲ] πρὸς ἄνδρ' εἰπὼν ἕνα Valckenarius e Plutarcho 6. ἃ] ὧν Erfurdtius 8. γὰρ παρακαταθήκην] παρακαταθήκην γὰρ Porsonus 14. κλεῖθρον vulgo 17. λαλεῖν κακὸν] λαθεῖν καλὸν Blomfieldus 28. ἐρωτηθεὶς] παρά τινος add. AB

P. 77, 25. εἰς] libri ἀεί, recte Dindorfius δεῖ

P. 78, 28. οἰκουμενικοῦ] οἰκονομικοῦ

P. 79, 7. Φιλοκτήτου] Ῥούφου ἐκ τῶν Ἐπικτήτου Gaisfordus; sufficit Ἐπικτήτου 8. διαβολὰς — τοιοῦτον] φυλάττου διαβολάς· ἄγει γὰρ τὸ τοιοῦτον Pflugkius 9. προσταχθεὶς] πρόσεχε καὶ εἴσῃ Pflugkius 10. ἔρρωται] εὐπρόσωπα Pflugkius

P. 80, 5. πατὴρ ὢν] ante Grotium τῶν πατέρων 9. πόλει] πέλει Bothius 17. Ἀλευάδαι] Ἀλεάδαι 23. τὰ ῥᾷστ'] τἄριστ' correxi Miscell. Com. (1819) p. 18 27. ἐπὴν] ἐπεὶ Schaeferus; de ceteris v. quae ad Bion. XVI dicentur

P. 81, 3. ἡμῖν] ὑμῖν 4. ὦ γέροντες] οἱ γέροντες Brunckius 22. Εὐριπίδου] Αὔγῃ addidi e Vind. 24. τοῦ αὐτοῦ] hoc accessit e Vind. 25. οὐκ ἔστιν] Eurip. Hec. 825 26. χρὴ] χρῆν Matthiae 28. ὠνομάζετο] ὢν ἠτάζετο? 29. τόξα πάλλων] aut τόξα βάλλων cum Wyttenbachio, aut τόξ' ἰάλλων scribendum videtur

P. 82, 11. *Εὐριπίδου*] addidi *Φοίνικι* e Vind. videntur Amyntoris verba esse 14. *μέλας*] ante Grotium *με καὶ* *τυγχάνῃ*] *κιγχάνῃ* Monk. *σκότος*] delendum lacunae indicium; fort. *πρὶν γὰρ κατ' ὄσσων κιγχάνοι με καὶ σκότος*

P. 83, 10. *πένηθ' ὁ πλούσιος*] *πένητι πλούσιος* Erfurdtius 12. *τιμώμεθα*] *πειθώμεθα* A, *θηρώμεθα* Berglerus, *πεπάμεθα* Nauckius 20. *ἐστι τοῦτο*] *τοῦτ' ἐστὶ* Dobraeus 24. *τοῖς ἐγχωρίοις*] *τοῖσιν ἐγχώροις* Grotius 28. *ὄνομα τὸ μὲν*] Grotius *ὀνόματα μὲν* *καθ' ἑκάστην*] *καθ' ἑκάστης*?

P. 84, 3. *κἂν ἔροιτο*] *κἀνέροιτο* scripsi, sed v. Fragm. Com. III p. 564 5. *τηνδὶ δὲ*] ante Valckenarium *τὴν δ' εἶδε* 6. *νομίζετε*] ante Grotium *νομίζεται* 13. *αὐτὴν*] *αὐτὰς* Grotius *δύ' ἐταράττετον*] *δύο ταράττετον* 14. *συνοῦσαι*] *συνόντε* requireret Cobetus V. L. p. 70 et 16. *δι' ὢ*

P. 85, 4. *ἀδικοῦντ' ἀσμένως*] ante Grotium *ἀδικοῦντα μὲν ὡς*, in quo latet potius *ἀδικοῦντ' [ἐπι]μελῶς* vel simile quid; *ἀσμένως* non recte dictum 7. *συνέπραττον*] *συνεπράττομεν* Heringa 8. *ηὔξετο*] codd. *ηὔξαιτο*, corr. Bentleius 13. *Πανία*] *Φανία* Porsonus 21. *πάσχειν*] *εὖ* addidi; confirmat cod. Pal. apud Orellium qui habet *πάσχειν εὖ*, quod reponendum 26. *ἡσσωμένοις* vulgo

P. 86, 28. *ταῖς πόλεσι*] *τῇσι* (non *ταῖσι*) *πόλισι*

P. 87, 10. *ἄξεται*] ante Koenium *αὔξεται* 11. *ἑαυτῷ* vulgo 14. *πάντα*] malim *τὰ πάντα* *φθειρομένου*] *διαφθειρομένου* ex AB 16. *τοῖς* et *συμφέρον* vulgo 17. *ἔσχεν*] *ἂν* add. Iacobsius 18. *ἀμελέοιτο*] *τι* dubitanter addit Gaisfordus, malim *ἀμελέοι τις* 19. *ἀδικῇ* vulgo *καὶ*] *καὶ μὴ* 21. *δὲ*] *γάρ*? 24. *ἂν ἀκηδέες*] *ἀνακηδέες* Burchardus 28. *καὶ μὴ*] *καὶ τὸ μὴ*

P. 88, 2. *ὅσσα*] *ἄσσα* ex A 11. *ὅσην*] *ὅσης* Cobetus 30. *γυμνάζεσθαι*] *ἐγγυμνάζεσθαι*?

P. 89, 4. *ἄνδρες*] *οἱ ἄνδρες* 7. *διδάσκουσαν*] *διδάσκουσα* A, *διδάσκοντες* Gesnerus

P. 90, 10. *αἰεὶ*] *ἀεὶ* 20. *ἐκ τοῦ* addidi ex A *ὑπὲρ Μακεδόνων* addidi codd. secutus, qui habent *ὑπὲρ λαγόνων* 23. *ἡ αἴσθησις*] *ἡ* me nolente excidit

P. 93, 26. *ἑκάστους* add. ex Isocrate

P. 95, 18. *βίον*] excidit hypostigme 20. 21. *Χαριλάου*

— *Χαρίλαος*] ante Gaisf. *Χαρίλλου* et *Χάριλλος* 23. *νόμοις*] *λόγοις* e Plutarcho

P. 96, 18. *τὸ ἐναντίον, ἐν ᾗ*] haec vellem abessent

P. 97, 5. *εὐνομεῖται*] *ἀνομεῖται* ex A, nisi praestat servare *εὐνομεῖται* et *μὴ* inserere ante *μεθ'* 14. *ἀρίστην*] vellem *καρτερωτάτην* vel *ἰσχυροτάτην* vel simile quid legeretur 17. *ὁ αὐτὸς τούτους ἔφη καθιστάναι ἄρχοντας*] *Σωκράτης ἐρωτηθεὶς εἰς τὰς ἀρχὰς ὁποίους δεῖ καθιστάναι εἶπεν* ex A 20. *ἡλικίας*] Nauckius *εὐκλείας*, quod non sufficit *λήμματος χάριν*] haec perverse reliquis adduntur 27. *κατὰ*] operarum vitio excidit *καί*, quod habet Aeschines; vulgo *ἢ κατὰ*

P. 98, 14. 15. *μεγίστην*] melius esset *πλείστην* 18. *ἐγὼ εἰς*] *ἐγὼν ἐς* *διεστᾶσθαι*] *διέστασθαι* A, *διατετάχθαι* Hirschig.; sufficiebat *διεστάσθαι*, quod passivum est perfecti *διέστακα*, ut *καθεστάσθαι* infra p. 263, 20 19. *εἶναι*] *εἶμεν* 20. *ἀγαθῶν*] *ἀγαθων* (*βουλῇ ἢ ἀγαθῷ*) cod. A, *ἀρετᾷ* Hirschigius 22. *πρῶτον*] *πρᾶτον* 24. *αὐτῶν*] *αὖ τῶν* vel *δύο τῶν* vel *αὐτῶν τῶν* 27. *χερήιον*] *χερῆον* 29. *καὶ τί*] *καὶ τίνα* A, an *ἅ τινα*?

P. 99, 4. *ταύταν*] *τούταν* A, unde posui *τουτᾶν* 7. *προβουλευόμενον*] malim *προβουλεῦον* 11. *προσυνεδρευμένα*] A *προσυνιδρευμένα* i. e. *προσυνηδρευμένα*, nam *προσυναδρευμένα* consulto opinor vitavit scriptor 18. *πλεῖον*] *πλῆον* 25. *κατεργασίαν*] *ἐργασίαν*? 26. *κατασχολούμενον* vulgo

P. 100, 3. *παντελῆ*] *παντελεῖ* 6. *ὧν*] abundat, non deleverim tamen 22. *εἶναι*] *εἶμεν* 24. *προτιμῆσθαι*] *προτετιμῆσθαι*? 27. *σύμφωνος ᾖ*] *ᾖ* add. Gaisfordus 31. *μέτρια*] *μέτρα ᾖ* Halmius 32. *ἔχοντα*] *ἔχοντι* A m. sec. unde Halmius *ἔχωντι*, quem secutus sum; nunc malim cum celeris libris *ἔχοντα* et 31. *αἴκα* [*τὰ*] *περὶ*

P. 101, 4. *κατ' ἀξίας ἀρχὰς*] *ἀρχὰς κατ' ἀξίας* Halmius; pro *κατ' ἀξίας* fort. *κατ' ἀξίαν* 19. *ἐπεὶ*] excidit vitio typogr. *οὖν* (*ὦν*) *ἐλέγομεν* vulgo *σπουδαῖον*] hic ponit A, vulgo post *ἄνθρωπον* 27. *τοὶ* seclusi, Halmius fort. rectius *αὐτοί*, *τὼς* (*τοι*) A, *αὔτως* Iacobsius

P. 102, 4. *πλασιάζουσι*] *πλατιάζουσι* vel potius *πλατιάζοντι* 5. 6. vulgo *ἐπιμελῶς* 6. *εἰ ἐπιμελῶς συνασκεῖται*] *εἰ ἀσκεῖται* Iacobsius 7. *αὐθιγενὲς*] *ἰθαγενὲς* Nauckius 14. 18. *σοφιστῶν* vulgo 19. *αἴκα τολμῶντι*] ante Gaisf. *αἰ κατατολμῶντι* *κινῆν*] *τι κινῆν* Nauckius 20. *ἤ τι*] vulgo *ἤ*, *ἤ*^τι A, unde *ἤ τι* Gaisfordus, malim *ἤτοι* 28. *ὅσαν* addidi 30. *ὕποπτον*] *ὑπάτω* Orelli, *ὕπατον* Iacobsius, an *ὑπατικόν*?

P. 103, 5. *εἰ καὶ — ἦ*] *αἴκα — ᾖ*? 6. *ἄλλαν*] *ἀλλᾶν* 8. *χρεία*] *χρήα* *πόλεσιν*] *πόλισιν* *μή πω καὶ*] *μήποκα* Cobetus 9. *πράταν*] *πρᾶτον* 16. *ποτ' αὐτοὺς*] *ποθ' αὐτὼς* 26. *ἐπῆμεν*] *ἐνῆμεν* e cap. 134. fort. tamen servandum *ἐπῆμεν* et *ἐν* ante *οἰκήμασι* aut delendum aut *ἐπ'* scribendum 30. *παρέντες*] *παρέντεσι* 31. *σιτίων*] *φυτῶν* Iacobsius, quo nihil proficitur, nec *νεόχρηστα* incorruptum

P. 104, 1. *τοῖς*] *τοῖς δ'*? 2. *ἀμπέλων*] *ἀμπέλως* 3. *πεφρονημένως*] *πεφροντισμένως*? *τὰ δ' ἐπὶ*] *περὶ δὲ τά*? 5. *οὐδὲ οἶνος*] *οὐδ' ὁ οἶνος* 7. *καὶ* seclusi; sed vereor ne praecedentia potius graviter corrupta sint; intellegerem locum sic scriptum: *τῶ μὲν φυτῶ πλῆον ἢ ὀβολῶ εἰώθαμες ἄξιον παρακαθιστάμεν κάμακα, καὶ τὸν ἐπιμελησόμενον οὐ μῆον ἢ δύο μνᾶν* (*ἄξιον*) 10. *τὸ μέσον*] *τὸ γένος* 11. *κινάσιος δὲ μόνας*] *κινάσι δὲ μονᾶς* 16. *συνέσιας*] *συνωσίας* 17. *δύναιτο*] *καὶ* (*κα*?) add. A

P. 134, 24. *πονηρῶν ἀθέων — ἀντινομιζόμενοι*] Haec tria verba si abessent, locus intellegi posset 25. *καὶ ζαμίαν*] nescio an delenda sint 26. *ἡγεμόνες*] *ἁγεμόνες* 30. *καλῶς δὲ καὶ*] *καλῶς δέδοκται* Valckenarius, *καλῶς δὲ κεῖται* Iacobsius; at quis praestet non praecessisse in superioribus *καλῶς μὲν δέδοκται* vel *καλῶς μὲν τέτακται*, ut rectissime inferatur *καλῶς δὲ καί*?

P. 135, 2. *μνασθέντα*] *μνασθέντας* 3. *αὐτῶν*] *αὐτῶ*? 4. *τῶ θείω † κρίνοντι ἄμμε*] *τῶ θείω ποθ*^ω *ἄκοντϊ κρίναντι ἄμμε* A, *τῶ θείω, ποθᾶκον ποτικυνέν νιν ἄμμε* Halmius; hinc *ποθᾶκον* recepi, in ceteris cod. secutus; videntur plura excidisse 5. *βουλεύονται*] *βούλονται* Halmius *ἰκελῶς*] *ἰκέλως* 5. 6. *ἐπιτελέειν*] *ἐπιτελὲν* 6. *ἔπειτα γὰρ*] *γὰρ* delendum videtur 7. *ἐπὶ τέλος ἐπιτίθεντι*] *ἐπι-*

τελέοντι? 8. τῶν μὲν] addendum videtur ἐκ φύσιος et post haec lacuna indicanda, tum ante ἐξ ἄθεος insere τῶν δὲ 11. κα] abest vulgo 12. ἡγεμὼν vulgo 12. 13. ὡς ἔτυχεν] haec delenda videntur 13. τοῦ αὐτομάτου vulgo

P. 136. 7. ἀνθρώπου vulgo 9. συνίστησι vulgo 11. φαμὶ δὴ] φαμὶ δ' A 13. νόμων] ἐκ νόμων? 14. πρῶτος vulgo τούτων] τούτῳ 17. τούτων] τούτω 20. τοῦ ἄρχειν καὶ ἐκ τοῦ vulgo 21. τοῦ κρατεῖν vulgo οὖν vulgo κρείσσονος vulgo 24. κρατοῦντι vulgo 26. ἀπὸ τῶν vulgo 29. τῇ vulgo

P. 137, 1. πλεόνων vulgo 3. οὖν vulgo κα ᾗ] libri κα ἤ, κα εἴη Halmius 6. εἰ ποτὶ τοὺς νομοθετουμένους vulgo 8. οὐχ add. Gaisfordus 8. 9. αὐτοὺς vulgo 9. νοσέοντι] malim νοσέοντες 10. κάμνοντι] malim κάμνοντες συμφέροντα] συμφέρων Halmius e p. 136, 30 et 138, 26 17. 21. 31. δημοκρατικὸν vulgo 20. δὲ λόγως] seclusit δὲ Gaisfordus μείοσι vulgo μείζονας] μείονας Halmius ἁ] add. Halmius 21. αὐτὰ] αὗτα Halmius 22. μειζόνων καὶ μειόνων vulgo 25. μείοσι vulgo τοὺς vulgo 25. 26. μείζοσι μείονας vulgo 28. ἀρεταὶ] ἀρχαὶ Hirschigius κολάσεις] κολάσιες? ᾗ] add. Halmius 29. μείζοσι καὶ μείοσι vulgo διανέμεται] διανέμονται Halmius 30. τᾷ ἀρετᾷ] τῷ ἀρετᾷ Halmius

P. 138, 2. δὲ] δὴ A 3. ἄλλαν] rectius ἀλλᾶν 4. 5. βασιλείας vulgo 16. ῥέψοντι] ῥέψωντι Halmius 19. θεοὺς vulgo 21. δεύτερον] malim δεύτερα 21. 22. μείζοσιν ἀκολουθεῖν vulgo 26. ἐν seclusit Halmius 28. ἰδιοτελὴς] ἰδιωφελὴς Gesnerus ex n. 133 32. σπουδάζοντι] σπουδάσοντι Halmius

P. 139, 2. πλείστου vulgo 4. οὖν vulgo 14. ἂν seclusi 20. συβαρίζειν vulgo προαιρουμένῳ] ita Gesnerus; posui ἐμποριουμένῳ ex A, quod ἐκποριουμένῳ scribendum 22. ἐπιτηδεύμασι — πολιτῶν vulgo 28. τῶν ὡρῶν vulgo 29. νεμήιος] νέμηος? 30. κιθαρῳδᾶν] κιθαραοιδῶν? 31. ᾄσματα] ἀείσματα, ut fere A qui αἴσματα

P. 140, 1. ἐκ τοῦ] ἐκ τῶν Nauckius 2. ἄλλου vulgo 3. οὖν vulgo 4. μαθεῖν παρ' ἄλλου vulgo 5. αὐτοῦ vulgo ἐξευρεῖν vulgo μὴν ζητοῦντα] μὴ ζατοῦντα

ἄπορον — ζατοῦντα δὲ] addidi ex Iamblicho apud Villoisonum A. G. II p. 202 7. ζητεῖν vulgo 9. τούτου γενομένου vulgo 11. οὖν vulgo 13. ἴσον ἕξειν vulgo 14. τοὺς μὲν ἐπισταμένους vulgo 15. ὀργίζεσθαι] λογίζεσθαι Pflugkius ἀδικεῖν vulgo παύσας] ἔπαυσε Gesn. m. 16. λαθεῖν et τοὺς vulgo 17. ἐπισταμένους vulgo ἀδικοῦντας] del. Pflugkius 22. ἂν] hoc vulgo abest; cf. tit. 92, 11

P. 141, 1 et 2. ἵνα] ὅπως AB 14. πόλει vulgo 15. μήποτε vulgo 17. ψυχαῖς vulgo 25. πόλεως vulgo

P. 158, 17. κρεσσόνων vulgo 23. μή, τἄνω] μή γ', ἄνω Bernhardy 26. αὔξειν] αὔξαν'

P. 161, 21. Μινῶος] Μίνωος

P. 162, 24. τοῦ αὐτοῦ] add. e Vind. 25 et 26. χρὴ ἐόντα] χρηεόντα A, χρέοντα Halmius 27. κατὰ] περί? ζώων] ζωίων 28. ἀδικεῖν ἀθῶος] ἀδικέειν ἀθώιος

P. 163, 4. ποιῶν] ποιέων 5. κτήσεως] κτήσιος 6. μεθέξει] μετέξει 13. ληστὴν — ἀθῷος] ληιστὴν — ἀθώιος 18. καὶ ἀναβλέποντας] καὶ delevit Heynius καὶ τὸν κόσμον καὶ] delet Gaisfordus 19. ἐν αὐτοῖς] delet Gaisfordus τάξιν] ἐπισκοπεῖν add. Gaisfordus 20. εἶναι] ἐστί? 26. ἁλισκομένων] ἀναλισκομένων Heynius

P. 164, 1. ὀνομάζειν] νομίζειν? 4. πεπεῖσθαι] πεπειῆσθαι A, πεπιέσθαι Heynius 21. ἀκουσόμενον] ἀκουσομένους ante Heynium 22. τιμωρίης vulgo ἔργων] post ἔργων vulgo inciditur, tum sequitur numerus 21 cum epigraphe ἐν ταὐτῷ, et orditur nova sectio a Δεισιδαιμονῶν. Delevi ἐν ταὐτῷ cum codd. et coniunxi quae coniungenda esse res ipsa docet; nihil hic mutilum et luxatum est, nec verbum δεισιδαιμονεῖν cum acc. coniunctum offensionem habet 23. 24. τιμῶν τοῖς οἱ κατοικοῦντες] τιμᾶν τοὺς κατοικοῦντας? 25. τοῖς πατρίοις] καὶ τοῖς πατρίοις?

P. 165, 5. ἐφήκασιν] ἐφίκασιν A, ἐφείκασιν Cobetus 13. μετατιθέμεν] μετατιθέναι Heynius 14. ὡς] hoc add. Gesnerus, Gaisfordus γὰρ post μὲν 16. βέλτιον ὡς] βελτίονος Gesnerus

P. 166, 3. περὶ συμβολαίων] hoc add. e Vind. ecloga perquam memorabilis sed corruptissima, neglecta a Schneidero in fragm. Theophrasti; fuit haud dubie pars libri περὶ νόμων, ad quem refero etiam quae leguntur XXXVII, 21

6. *παρὰ βασιλεῦσι καὶ πρυτάνει*] *βασιλεῖς* dicere videtur concilium ex Archeanactidis aliisque civitatis primoribus, quos Pittacus devicerat, compositum; prytanes Mytilenaei memorantur etiam ab aliis 8. *ἐλαττόνων*] *ἔλαττον* Dam., *ἐλάττων* Vind. et Trinc. 10. *διαμαρτύρεσθαι*] *διαμαρτύρασθαι* 17. *προστάττουσιν*] *πράττουσιν* Heynius, fort. *πιπράσκουσι* 19. *τῶν*] *τοῖς* Dam. 23. *ὠναμένων*] *ἐωνημένων* Heynius 25. *πάντα, τὰ πλεῖστα*] *πάντ' ἢ τὰ πλεῖστα* 30. *προστασίαι*] *πρόφασιν*?

P. 167, 3. *τὴν ἐμφανῆ*] *ἀπάτην* addit Iacobsius *ἐνίων*] *Αἰνίων* Valckenarius 5. *ἐπικωμαίου*] *ἐπικωμένου* Dam., *ἐπιβωμίου* Dindorfius 6. *ᾗ*] *ἧς*? an *ἐν ᾗ*? 7. *ἐγγραφούσης*] *τῆς ἐγγραφούσης*? 14. *προσορκίζειν*] *προσορίζειν*? 20. *οἶκον*] *ὅρκον* Gesnerus 24. *παρανομοῦντος*] *παρανοοῦντος* Nauckius 27—29. *ἔοικε—τὸ δίκαιον*] haec, quae vulgo 30 — 32 inter *ταλάντων* et *ἐὰν δὲ* leguntur, huc transposui praeeunte Gesnero 30. *μερίζοντες*] *ὁρίζοντες*?

P. 168, 5. *τὸ δ' ἐπιτίμιον*] *τί τὸ ἐπιτίμιον* Nauckius 9. *ἡ ἄνισος*] *ἢ ἄνισος ἡ* Kirchhoffius 11. *ἑκατέρους*] *ἑκάτερον*?

P. 180, 8. *ἐπ' οἴκῳ*] *ἐν οἴκῳ* 24. *Χαιρώνδα*] *Χαρώνδα* e Trinc. 25. *βουλομένως*] *βουλευομένως*

P. 181, 4. *τὸ*] *τῷ* vulgo, *τὸ* A ex em. an *τῷ*? 5. *τὰ μάκιστα*] *τὰ ἄκιστα* Heynius, quod verum videtur; dictum id ab *ἆκα* = *ἧκα*. Cf. Etym. M. v. *ἥσσων* et Buttmann Lex. I p. 15 6. *μετρέοντα*] *μετρίοντα* e Dam. *πρᾶγμα*] *πράγματι* ex B m. s. 8. *ἀδίκῳ*] *ἀδικῷ δὲ* AB 13. *μιμημένους*] *μεμνημένους* Heynius

P. 182, 12. *πατρικὴν*] *πατράσιν* 19. *εὐδοκιμείσθωσαν*] *εὐδοκιμείτωσαν* ex A 25. *μηνύεν*] *μηνύειν* *συνίδῃ*] *συνειδῇ*

P. 183, 19. *θειότερον*] *ὁσιώτερον* 31. *δι' οὐδενὸς*] *ὑπ' οὐδενός*?

P. 184, 1. 2. *παροικοίη*] *παροικειοῖ* Heynius 2. *ἀναπίμπλη*] *ἀναπιμπλῇ* Heynius 7. *διὰ τὸ αἰσχρὸν*] seclusi cum Heynio 20. *ὥσπερ αἴτιος*] *ὡς παραίτιος*

P. 185, 3. *Σαυνίταις*] ante Holstenium *Σουνίταις* *ἠίθεοι*] *ἤθεοι* 10. *τὸν*] *τὸ* B m. sec. 16. *πολίτου*] hoc seclusi 28—30. *τὸν δὲ τρεφόμενον—ξένοις*] haec ad sequen-

tem de Phrygibus eclogam trahit Coraes; pro *τὸν δὲ τρεφόμενον* scribendum *τὸν δ' ἐκφερόμενον*

P. 186, 10. *παρασπονδίοις*] hoc seclusi 17. *διαδεξάμενος*] *διαδεξόμενος* 21. *Βυάοις*] *Βύλλοις*, Müllerus *Ἀβύλλοις*, citra necessitatem ut videtur; cf. Schneidewin ad Heraclidem Polit. p. 98 23. *Βασουλιεῖς*] *Μασουλιεῖς* Valesius, *Μασσυλιεῖς* Holstenius 30. *Ἰαλχλευεῖς*] *Μαχλυεῖς* Is. Vossius *πολλοὶ*] addidi *μίαν*

P. 187, 3. *Σορδολίβυες*] *Σαρδολίβυες* ex A m. s. 9. *αὐτῶν*] abundat 10. *Ἀφάραντες*] *Ἀτάραντες* Valckenarius 25. *μάλιστα*] *οὗτοι* add. ex A *βαθύτητα καὶ*] *τὴν βαθύτητα καὶ τὴν* ex A 31. *ὥσπερ μαθήματα*] *τινὰ* post *ὥσπερ* add. codd. hinc posui *ὥσπερ τι μάθημα*

P. 188, 5. *ὡς ἐσχάτης*] *ὡς λίαν ἐσχάτης* e codd. 6. *ταύτης*] *τῆς τοιαύτης* ex A 12. *οὔτε*] *οὐδὲ* 21. *περί τινα βωμὸν*] *τὸν* pro *τινα* A p. m. fort. *περὶ τὸν βωμὸν* [*τῆς Ὀρθίας*] 24. *ταῖς γεροντίαις*] *τῆς γεροντίας* Müllerus 25. *ἢ κακῶς*] *καὶ καλῶς* Orelli

P. 189, 2. *βασιλεύειν*] *βασιλεύσειν*

P. 203, 10. *Θησεῖ Αἰγεῖ*] *Αἰγεῖ* om. Vind.

P. 204, 5. *Εὐριπίδου Ἀλκμήνη*] deest lemma; *Ἀλκμήνη* add. Vind. 18. *καλῶν*] *πόνων* Nauckius *καλῶς τιμωμένῳ*] *καλόν τι μωμένῳ* Nauckius 21. *χρὴ*] *χρῆν*? 24. *βουλεύοιντ' ἀεί*] ante Gaisf. *βουλεύοντες εὖ*, *βουλεύοντες ἀεί* A

P. 213, 26. *Αὐγῆς*] *Αὔγης*

P. 214, 3. *μεθῆκε*] *μετέθηκε* Cobetus *ἀπορίαν*] *πονηρίαν* Grotius 11. *ἔνδεξαι*] *ἔκδεξαι* 18. *πρός τι· κατα θέμενος ὡς*] ita B m. s., *πρός τι καταθέμενος* reliqui, *πρὸς τί ἦν καταθέμενος* Grotius, *πρὸς τί κατατεθειμένος* scripsi dubitanter 21. *αὐτὸν*] *αὐτοῖς* Gesnerus 24. *ἀπερυθριακότως*] *ἀπηρυθριακότως* Halmius 28. *δὲ μαλακὸς*] *δ' ὁ μαλακός*? sed priora insanabiliter corrupta 29. *ω φίλε, θεῶ*] *ὦ φίλε θεῷ* ante Iacobsium

P. 215, 1. *λεπριδίων*] *λεσπριδίων* A, *λαισποδίων* Iacobsius *εἰσὶν γὰρ*] *γάρ εἰσιν*? 2. *ἐρεῖν*] *αἵρειν* A

P. 216, 24. *ἐργάτης*] *ἐραστής* e Themistio 28. *τοῖς ἄλλοις*] *τοῖσι ἄλλοισι*

P. 217, 1. *ἀξία*] *ἀξίη* 5. *εὐπειθηίην*] *εὐπειθίην* vulgo, *εὐπειθείην* A, *εὐπειθήην* Trinc., *εὐπειθηίην* Gaisfordus 9. 10.

τοῖς ὑποτεταγμένοις vulgo 15. παυσάμενον] παυσαμένῳ οἱ ex B m. s., παυσαμένῳ A 18. ἀνὴρ] ἀνὴρ δὲ ex AB 19. πραγμάτων vulgo 22. κυρεέτω] κρινέτω 22 et 23. ἐπ' ὁκοτέραν] ἐπ' ὁκοτέρην 23. τρέπηται] τρέψηται ex AB κοιὴν] ante Eldikium κοινὴν 24. τῶν μνημέων] θαι hoc abundat προτιμῆσθαι] προτιμῆσαι A, posui προτετιμῆσθαι coll. p. 218, 11 28. ἀμύνεαι] ἀμύνηαι Halmius ἀρηρημένος] παρηρημένος suprascripto εἰ ἠρημένος A, ἀρηρημένος Koenius, ἀραιρημένος Gaisfordus, εἶ ἀρηρημένος Halmius

P. 218, 1. εἴης] ἔῃς Halmius 5. δαιμόνων] fort. recte abest B p. m. et Trinc. 6. ποιουμένων] ποιευμένων 8. γίγνου] γίνεο 9 et 25. κρίσει] κρίσι 10. τούτων] ταύτης Gesnerus 14. μοίρᾳ vulgo 15. ἑωυτὸν] σεωυτόν, nisi ἑωυτὰν delere praestat 16. σαυτὸν vulgo 17. δικαστοῦ] ἀντὶ δικαστοῦ libri, ἀντὶ del. Gaisfordus, Valckenarius etiam δικαστοῦ καὶ ἄρχοντος 19. κεκλῆσθαι] κεκλήσεαι Koenius 23. τοῦ καταψηφίσασθαι] hoc seclusit Valck. at fort. recte A εἶναι τοῦ καταψηφίσασθαι 24. ἐν οὕτω] hic et in sqq. aliquid corruptum; intellegerem locum sic scriptum: κρατέειν ἐν ἀσφαλεστάτῃ ὀφειλεύσῃ κρίσι ἐς ὁμογενέας καὶ τὴν εἴ τι ἁμαρτηθείη οὐκ οἷά τε 26. οὐχ οἷόν τε] οὐχ οἷά τε A 27. γιγνομένης] γενομένης? 29. τοῖς ἄλλοις vulgo

P. 219, 3. ψευδῶν vulgo 4. καταγορέοντες] κατηγορέοντες 6. οὖν ἐν τοῖς τοιούτοις vulgo 7. αὐτὸν] abundat 8. παντελῶς vulgo 13. οὐ γὰρ] οὕτω γὰρ οὐδὲ Valck. ὂν] ἐὸν Valck. 14. καὶ] ἢ εἰ A πενόμενος] γενόμενος ante Valck. 18. ἀφῃρῆσθαι] ἀπαραιρῆσθαι? σεμνύνοντος] σεμνύναντος B 22. ἕνεκά γε] γε om. A 24. ἔοικε τῷ] ἔοικέ τῳ Halmius, rectius τεῳ, nisi fuit τοι 25. τὸ] τῷ ex A 27. ἀλλ' ὥστε] ὥστε δὲ A παραθεμένῳ] fort. παρακαταθεμένῳ propter 24 29. κέρδεσιν οἰκείοις vulgo

P. 220, 1. ἀσινέοντας] ἀσινέας ὄντας Valckenarius, debebat ἐόντας; posui ἀσινέας, quod in ἀσινέοντας facile abire potuit, cum statim sequatur εὐθηνέοντας 6. γυναικείως vulgo 8. ἀγνοεῖ vulgo καίτοι περ] καὶ τόπερ 9. κα-

ταδίκαν] καταδικᾶν Wesselingius ad Herod. I, 97 10. δικαιωσάντων] δικαιοθέντων A, unde δίκαια θέντων posui 11. ἐπιτιμήθη A 13. οὐχ οἷα vulgo 14. γε οὖν vulgo 15. αὐτοῖς] αὐτῆς vulgo, αὐτοῖς ex A Gaisfordus πορίσωνται] πορίσονται A 26. θοίνης] εὐθύνης Boissonadus AG. IV p. 367, θωιῆς Burchard. Quaest. Democr. (Berol. 1826) 27. ἄξιοι] seclusit Hirschigius καταψηφισματέον] καταψηφιστέον Mullachius, καταψηφισματιστέον Boissonadus 28. νοῦν] νόμον Iacobsius ἀπολύει] ἀπολύῃ Mullachius ὁρίζων] οὐρίζων

P. 221, 3. τιμὰς ἀξίας] τὰς μεγίστας add. A, quod probandum videtur, sed ut τιμὰς deleatur 5 et 8. αἰδεῖσθαι vulgo 9. καθεστάναι et ποιεῖν vulgo 13. τὰς] τὸν τὰς Hirschigius 18. οὐδεμία] οὐδεμίη καθεστῶτι ῥυθμῷ] κατεστεῶτι ῥυσμῷ 20. ἑωυτῷ] ἑώρῃ Iacobsius, qui in seqq. τῷ τὸν αὐτὸν αὖ ὑφ' ἑτέροισι τὸν αὐτὸν] τῶν αὐτῶν A ἐφ'] ἐπ' 21. γίγνεσθαι] οὐ γίγνεσθαι A, αὖ γίγνεσθαι Halmius 23. γενέσθαι] γενήσεται Halmius 24. τι ἄλλο] ἄλλο τι ex A ἀμυνεῖ] ἀμύνει A

P. 222, 4. παρ' αὐτὸν] παρ' αὐτοῦ? 5. τὴν ἰδίαν κακίαν] τῆς ἰδίας κακίας? 11. τὸ] abundat 28. ἀληθινὰς] τὰς ἀληθινὰς A

P. 223, 9. ἐφιέμενον] ἀφιέμενον 16. τὸ λεγόμενον] τὸν λεγόμενον ex A 17. ὑπομενετέον] ὑπομονητέον A 19. ἀπαραίτητον] παραιτητόν? 21. παρασκευάζων] παρασκεύαζε? 21. 22. μὴ φανῇς] μὴ φανῶς A Trinc. fort. μὴ ἐμφανῶς 28. ὑπομίμνησκε] ὑπομιμνήσκει A, unde scripsi ὑπομνήσει 30. ἔστω] ἔστι

P. 224, 5. ἀποφαίνει] ἀποφαίνοι A, ἀποφαίνοι ἄν? 15. αὐτῆς] ita A, αὐτοῖς vulgo; locus corruptus 18. μόνης] fort. del.

P. 225, 5. ἀνθρώπων, αἰδούμενος] ἀνθρώπων αἰδούμενος, 6. θεώμενος εἶναι] lacunam indicavit Gesnerus; fortasse vitium loci in his ipsis verbis latet 10. ἐπέθηκε] προσέθηκε? 25. τῶν πρόσθεν ἠθῶν] haec delenda videntur

P. 226, 4. τῷ μὲν] τῷ μὲν γὰρ A 6. μὲν φεύγειν] μέν σε φεύγειν? 7. τὴν τύχην] haec melius abessent; Valckenarius τὴν ψυχήν, quod si verum est, pro εἶναι fort.

praestat ἔχειν 28. τοῖς ἀρχομένοις] τῶν ἀρχομένων Trinc.

P. 227, 6. σκιαγραφίαις] συγγραφίαις ἢ σκιαγραφίαις A 23. περὶ τὸ καλῶς ἄρχειν] seclusit Hirschigius 25. 26. δυσμενῶς ἔχειν τοῦ αὐτοῦ vulgo 27. ἐπίστασιν] ἐπιστασίαν? 30. τὸ εὐεργετεῖν] τὸ εὐεργετέν, fort. excidit ἔξεῖ, Hirschigius delebat articulum νόμων] νομίμων Hirschigius

P. 228, 1. μηθὲν] μηδὲν 6. διαφανέστατον] ἐμφανέστατον? 9. ἀξίαν ἑκάστοις] ἑκάστοις ἀξίαν e Voss. 10. ἐπιτηδευμάτων] πολιτευμάτων?

P. 229, 13. αὑτὸς] αὐτὸς 16. Πλουτάρχου acc. e marg. Gesn. 18. μάρτυς] κριτής, Dübnerus δικαστής 28. τοῦ διαμένειν] exciditne ὑπόπυον?

P. 230, 15. ἄρχων] ἄρχειν Trinc. 16. ὡς τὴν] ὥστε τὴν AB, fort. ὅς τε 22. γε αὐτοὺς] ἑαυτοὺς

P. 231, 1. ἀνθρώπων] ἀρχόντων? 4. εὐγενῶς τε] εὐγενῶς δὲ 5. μόνον] μέν? sed reliqua etiam non expedio 6. μηδ' ἄλλοις] ἀλλὰ μήδ' ἄλλοις A 7. γυμνὰς] γυμνοὺς A 9. ἐχομένας ἀλλήλων] haec abundant post συνεχεῖς 10. οἷα δὴ] οἷα δεῖ mavult Gesn. 26. πρὸς αὐτὸν] αὐτὸν A, αὐτῷ B 27. καὶ] om. AB 29. 30. κάλλιστα] καὶ τὰ Pflugkius

P. 232, 1. ἀπ' αὐτῶν] ἀπὸ τῶν αὐτῶν AB 12. τὸν ἄρχοντα] τὸν del. Nauckius 16. τέχνην] indicavi lacunam; suspicor τέχνην, [οὕτω καὶ πόλιν κυβερνᾶν μέλλων τὴν πολιτικὴν ἐκμάνθανε τέχνην·] ἔξεσται γὰρ κτὲ. 17. τὴν ναῦν] haec om. A Voss. Trinc., τὴν delevi 18. πᾶσαν κυβερνᾶν] κυβερνᾶν πᾶσαν μέλλων AB 20. πρόκειται] πρόσκειται A 30. τῇ κατασκευῇ] τῆς κατασκευῆς

P. 233, 2. γνώμαις] ex Euripidis Antiope apud Stobaeum LIV, 5 7. ζωγρέων] ζωγρείων 18. ποιεῖν] εὖ ποιεῖν Wolfius 19. διαφθείρεσθαι] addidi ἐᾷ 28. ἀκρίτως] ἀκρίτως A (δων superscr.)

P. 234, 6. ἁπάντων] ἑταίρων superscripto ἁπάντων A. fort. ἀλλ' εὐθὺς λάμπει καὶ ἑταίρων πρὸς ἁπάντων ἀσπάζεται (ον superscr.) 9. ἴσα] ἴσως A

P. 235, 9. πολιτείας ζ'] πολιτείας γ' ex Vind.

P. 238, 2. γὰρ] μὲν A

P. 243, 12. ἀκριτὶ] ἀκρατὶ A, ἀκρίτους Cobetus

P. 247, 14. φύσει] φύσι 30. καθαρωτέρας] καθαρωτάτας B ἐλαττούμενον] ἐλαττεύμενον

P. 248, 1. πολλὰ] πολλᾷ μητρὸς vulgo 2. ἐπάρθαι] ἐπᾶρθαι θεομοίρῃ τις] θεομοίρης τις AB Trinc., θεομοιρῆστις Vind., θεόμοιρός τις L. Dindorfius ἐλέῳ] ἐλαίῳ AB 3. ζῴῳ] ζῴου Dindorfius αὐτὸ] αὐτῷ ante Gaisf. κρείσσονι] κρέσσονι 4. ἀδύνατον] ἀδυνάτῳ? 5. παρ' ἀμῖν] παρὰ μείν (α) A, παρ' ἀμῶν tit. XLVIII, 65 6. ἄνθρωπος] ὤνθρωπος 6. θειότερον] θειότατον infra l. l. 7. πλεονεκτῶν] πλεονεκτέων 11. ἀφέλεν] ἀφελεῖν AB 12. ἐπιγείω] ἐπιγήῳ?

P. 251, 7. αὐτοῦ] ἀστοῦ Piersonus 8. κώλυε] κόλουε Piersonus

P. 253, 4. 5. οὐκ ἔχει] οὐκέτι? cf. ad Theocriti Idyll. 23, 2 18. ὁ Ῥηγίου τύραννος] Ῥηγίου om. codd. 19. μακαριώτερον] μακαριώτατον Trinc. et super μακαριώτερον Vind. 26. δέει] δέοι AB

• P. 254, 4. προαιρῆται καλὰ μὲν] rectius προαιρῆται μὲν καλά; sed vereor ne locus interpolatus sit, Philippus autem dixerit: ἵνα προαιρῆται μὲν θεῖα, φωνῇ δὲ ἀνθρώπινα 20. ἐντυγχάνουσιν] fort. συντυγχάνουσιν coll. p. 253, 28 27. παθῶν ἄρχειν δυνάμενον] δυνάμενον ἄρχειν τῶν παθῶν ex A, τῶν παθῶν delendum videtur coll. p. 232, 12

P. 257, 10. εὐεργεσίᾳ] εὐοργησίᾳ? 13. ἔμφρονος] εὔφρονος AB 15. Ἀγριππίνου] Epicteti esse suspicatur Gaisfordus, Plutarchi Wyttenbachius 23. Κότυς] Plutarcho tribuit Wyttenbachius

P. 258, 7. τρόποις] πρῶτος Plutarchus, πρῶτος τρόποις codd. Stobaei, unde scripsi ἀτρόποις, saepissime α in πρῶτος abiit 8. ἔφη] ἔφησεν codd. et Plutarchus 14. κάλλιστον] κράτιστον?

P. 260, 21—23. βασιλεύς κ' εἴη ὁ δικαιότατος — τὸ μὲν γὰρ] haec ita refinxit Hirschigius βασιλεύς κ' εἴη δικαιότατος ὁ νομιμώτατος· ἄνευ γὰρ νόμω δίκαιος οὐδεὶς κ' εἴη (ita enim voluit) βασιλεύς. τὸ μὲν γὰρ 26. οὖν] ὧν ὁ Hirschigius 31. δικαίῳ] malim τῷ δικαίῳ

P. 261, 1. εὐσεβῶς vulgo 3. δικαστὴν vulgo 7. νοσέοντας] νοσίοντας e Trinc. et Vind. 10. τό τε] τῷ τε Gaisfordus ξυνὰ] ξυνᾷ 11. καθόλου vulgo οἰκήιον vulgo 12. ἁγεμὼν] ὦ ἁγεμὼν Iacobsius 13. ξυνὰ μὲν τὸ] ξυνᾷ μὲν τῷ 14. τὸ] τῷ 15. ποττὰν] ποτ add. Gaisfordus 15. 16. συναρμόζεσθαι] aut hic συναρμόσθαι aut 14 συναρμόζεσθαι scribendum 20. ἁγεμονοῦν] ἁγεμονέον 21. ἁγεμονεύοντος] ἁγεμονέοντος e Vind. οὖν] ὧν

P. 262, 3. ἁγεῖσθαι] αὐτῶ add. Gesnerus 4. πρέπεν] πρέπον Halmius, nisi fuit πρέπει 6. πλεονεκτίας] πλεονεξίας A 9. ἀμύνασθαι] ἀμύνεσθαι 10. περὶ] ἐπὶ 13. δύναμιν ἢ τὰν ῥώμαν] an ῥώμαν ἢ τὰν δύναμιν? 14. 15. ὃ δὲ κοινὸν καὶ τῶν ἀλόγων ζῴων] addidi haec e Vind. 19. ἀρχὰν] ἀρετὰν Iacobsius 20. ἀλάθηαν] ἀλήθειαν A 23. ἁγούμενον] ἁγεύμενον malim 27. θῆλυ] τὸ θῆλυ vel τὸ θᾶλυ 28. τελεωτάτη] τελειοτάτα (τεληοτάτα?) ex A ἐοῦσα] ἐᾶσα libri praeter B 29. εἰς] ὡς Iacobsius 32. καταστησόμενον] καταστησάμενον Halmius

P. 263, 2. ἀγορευομένοις] ἀγορευμένοις 3. ἐπιτάσσεν] ἐπιτασσεύεν A, unde posui ἐπιταδεύεν 5. πραγματιωδέως] πραγματωδέως 8. ἰδὲν] εἰδέναι AB 11. εὐεργεσίας] εὐοργησίας? 12. ἀκολασίας] κολασίας vulgo, ἀκολασίας A et Trinc., κολάσιος Gesn. margo, ἀσχολίας Iacobsius ἐπιταχύσιος] ἐπιταδεύσιος Badham 15. δύναται] δύνασθαι Trinc. A et Vind., fort. δυνασεῖται 20. καθεστᾶσθαι] καθεστάσθαι 22. ποτιφυῶν] ποτιφυέων 23. μηδὲ] μὴ vulgo, μηδὲ Gaisf. ex A μηόνεσι] μειόνεσι vulgo, μηόνεσσιν A 26. 27. ἐπὶ τοῖς ἀπολαύστοις] ἐπὶ τοῖς (τᾶς) ἀπολαύσιος? 30. ἐπιπρέπειαν] ἐπιπρέπηαν Tr. ἐπιπρεπηιαν Vind.

P. 264, 1. ἆθος] ἦθος A 2. 3. ποταυγασμένως] ante Koenium ποτ' αὐτὰς μὲν ὡς 4. τε καὶ] καὶ codd. om., melius abesset τε τε περὶ] τᾷ περί? 5. ἐπιπρέπηαν] ἐπιτρέπηαν AB, ἐπιπρεπηιαν Vind. 7. ποτ' αὐτᾶς] ποταυγασμένων αὐτόν Koenius 9. ἐσεῖται] ἐσσεῖται A et Vind. τὸ μὲν] μὲν abundat 11. συνεκτικὰ καὶ συνακτικὰ] συνακτικὰ καὶ συνεκτικὰ 13. παρέχει] γὰρ ἔχει Badham 21. μαθηματικὸν] βοηθατικὸν Gesnerus 22. καὶ εὐχάριστον δὲ] fort. add. καὶ ἀβαρέα 26. τιμῶντος] τιμέοντος ex Tr. et Vind., τιμέον A 28. νοσέοντες] νοσίοντες e codd. et

Tr. 30. γὰρ] δέ? 32. διά τε τὰν ὑπεροχὰν καὶ τὸ μέγεθος τᾶς ἀρετᾶς] διά τε τὸ ὑπερέχεν τᾷ ἀρετᾷ Hirschigius

P. 265, 2. 3. ὅκως — θεῶν τε] haec Vind. et Tr. om. 3. ὥς κ' εἴη] sufficit ὡς εἴη 6. χεῖρα] χεῖρας Nauckius 7. βασιλεία] βασιλῆα 13. γενέσει] θέσει? an γε θέσει? 15. ζώει] σώζει Iacobs. 17. ἁβρὸν] ἁδρὸν Eldikius, ἅμερον Ruhnkenius, πρᾶον Halmius 18. παρασκευάζοι] παρασκευάζει A 19. γάρ που] γάρ τέ που AB 20. νενομίχθαι] δοκεῖ νενομίχθαι Valckenarius, fort. νενόμικται πρᾶτον] hoc vulgo post θεῶν legitur, transposuit Valckenarius 22. ἀμελούμενος] μελούμενος vulgo, ἀμελούμενος A 23. ἤρκεσται] ἤρκεσε AB 24. πάντων] πᾶσαν πάντων AB, fort. ἅπαξ ἁπάντων, vel cum Nauckio πάντα πάντων 26. ἐπιστῆμεν] θέμις ἦμεν Valckenarius 30. ἐσεῖται] ἐσσεῖται A et Vind.

P. 266, 5. συμπνείουσα] συμπλεχθεῖσα Badham 7. περιαγεομένα] ante Schaeferum περὶ αὖ γενόμενα, codd. περιαυγενομένα 11. ὄντεσι] ὄντεσσι A 12. καὶ οἰκηότατον ἐν γενοῖν] tentat hic et in sqq. aliquid Iacobsius Lectt. p. 91 13. ὄντος] ὄντως A 15. πλανᾶτες] πλάνατες 16. τᾶς] τᾷ 17. ἁ τῶ] αὐτῶ A 18. παρ' ἁμῶν] παρ' ἁμῖν e tit. XLVII, 22 ἄνθρωπος] ὤνθρωπος vel ἄνθρωπος 19. τε κοινᾷ] τᾷ κοινᾷ? 20. πλεονεκτῶν] πλεονεκτέων 23. δὴ ὧν] δι' ὃν ante Gesnerum 24. ἐν οἷς τίνος] καὶ ὡς τύπος Barthius, quod adiutus scripsi ἐντί, οἷα τύπος 26. βασιλείᾳ vulgo τᾷδε] ante Gaisf. τάδε 29. βασιλείας vulgo ἐοίσας] ἐάσας A et vulgo, ἐάσσας Vind. 30. αἰ μὴ τοῖς γνασίοις] ante Gesn. ἀμὴ (ἃ μὴ AB, αμη Vind.) τοῖς γυμνασίοις 31. σκοτοδινιάσεις vulgo 32. ὀθνεῖον vulgo

P. 267, 1. οἰκειότατα vulgo 2. ἐπὶ τούτῳ] ἐπὶ τοῦτο Iacobsius 2. 3. κεχρῆσθαι δυναμέναν. αὐτὰ μὲν ὧν βασιλῆα] κεχρῆσθαι (ἅτε χρῆσθαι?) δυναμένοις αὐτᾷ. ἁ μὲν ὧν βασιλῆα 8. ὑφ' αὐτῷ] ὑφ' αὐτῶ Halmius, malim ἑαυτῶ vel αὐταύτω 10. βασιλῆα] βασιλῆᾳ Valckenarius ὁμιλήσαντα] ὁμιλήσοντα 12. ὅσῳ τε ἅτεροι] ante Koenium ὅσα τε ἅτερα 15. ἁμαρτάνοντι] ἁμαρτάνωντι 18. δέοντος] δέοντι? an δέοντες cum Nauckio? 19. οἱ χρὴ θεῷ μὲν] nihil auxilii in libris, quorum B εἰ habet pro οἱ εὐθὺ] ὡς εὐθύτας A et Vind., ὡς εὐθὺς B 22. ἑτέρων] ἁτέρων

23. *καὶ*] *διά*? 29. *κα*] *κἂν* A, *καὶ* vulgo, *κ' αἲ* B, *κα* Trinc. 30. *οὐκ ἀεί ποτε ἂν*] *οὔ κα εἵπετο* Cobetus

P. 268, 1. *τῶν ἀρετῶν*] *τᾶν ἀρετᾶν* 4. *ἀνθρώπως, καὶ τὰς*] *ἀνθρώπως, [οὕτως] καὶ τάς*? 6. *ἀλάθεια*] *ἀλάθηα* *τε γὰρ*] *τε* delendum 9. *συνεστάναι*] *συνεστάμεν*? 14. *ἀλλ' ἄλλων*] *ἀλλάλων* ex A *καθανοῦν ἐκπορεῦντες*] *καθ' ἂν συνεκπορεῦντες* Pflugkius; eadem nunc etiam Badham, nisi quod *συνεκπονεῦντες* scripsit, quod probandum, nisi malis *συνευπορεῦντες* 15. *ὑστέρων*] *ὑστερούντων* A, *ὑστεροῦντι* Pflugkius 16. *βοήθειαν*] *ἀβοήθειαν* A 18. *μιμᾶται*] *μεμίμαται* Halmius 19. *οἰκοῖτο*] *εὖ οἰκοῖτο* Nauckius 21. *εἴπερ σώζοιτο δι' αὐτὸ*] *ἀποσώζοι δὲ αὐτὸ* AB 23. *συναδοίσας*] *συνωδούσας* vulgo, *συνωδοίσας* A, corr. Gaisfordus 25. *ὑπὸ αὐτὸν*] *ὑπό τ' αὐτόν* Trinc., *ὑπ' αὔταυτον* Badham 27. *πρῶτα*] *πρᾶτον* 28. 29. *δεύτερον — βασιλέα*] haec fort. post *χρωμένως αὐτῷ* 31 transponenda sunt 30. *ποτὶ χρώμενον*] *ποτιχρώμενος* A Tr., *ποτὶ χρωμένως* Gaisf.

P. 269, 2. *ἀνθρωπων*] *ἀνθρώπῳ*? 4. *ποτιλαμβάνων*] an *ποτιλαμβάνειν*? *αὐτὸς αὐτῶ*] *αὐταύτω* Nauckius 4. 5. *ἀλλ' ὡς*] ante Gaisf. *ἄλλως* 5. *συνεργῶν*] *ἐνεργῶν* vel *ἐνεργέων* *ἐοίσας*] *ἐάσας* e libris, quorum Vind. habet *ἐάσσας* 7. *ἂν ἄλλω*] *ἂν* seclusi, nisi in seqq. praestat *ποτιδεήσασθαι* 9. *ἕτερα*] *ἅτερα* ex Vind. *ἂν προσλάβοι*] Halmius *ἂν προσλάβῃ*, fort. praestat *ὡς κἂν αἱ ἕτερα προσλάβοι* 10. *αὐταρκέα*] *αὐτάρκεα* 12. *ἀρετὰν*] *τρυφὰν* Nauckius *ἢ ἅπερ*] *ᾗ ἅπερ* Gesnerus 13. *ἀκολουθεῖν*] *ἀκολουθὲν* *τᾷ τοιᾶδε*] *τὰ τοιάδε* Gaisf. partim e Trinc. qui *τὰ τοιᾶδε* 14. *ἀτέρως*] *ἀτέρω* Gesnerus, fort. *ἀτέρας* *ποττ' αὐτὰ*] *ποτ' αὐτὰν* Gesnerus, scripsi *ποτταῦτα* *παρεσκευασμένως*] Gesnerus *παρεσκευασμένω*, fort. *παρεσκευασμένας* 21. *ῥᾴδιον*] *πρᾶτον* Halmius, *αἴδιον* Wakefieldus 22. *τῶν αὐτῶν, κρέσσον*] *τῶν ἄλλων κρέσσον* *τῶδε*] *τῷδε* Gesnerus 25. *ἐπίγειος*] *ἐπίγηος* 28. *ἑαυτῷ πειρώμενος*] *ἑαυτὸν τῷ κρατίστῳ πειρώμενος*? *αἴθ' ὃς*] Vind. *αιθοσ* pr. *αἱ: θὸσ* em., *ἰσόθεος* Iacobsius *ἔσεται*] *ἔσσεται* Vind.

29. *τὰς*] hoc fortasse ex *ἔχεται* corruptum est 30. *προθυμία*] *προθυμίαν* e Vind.

P. 270, 1. *φύσεως*] *φύσιος* *ἀφέλεν*] *ἀφελέν* *καὶ*

τὸ] τὸ καὶ e XLVII, 22 2. δέχεσθαι] δέεσθαι e XLVII, 22 ἐπιγείου] ἐπιγήω 4. ἐπειδὴ] ἐπειδήπερ e Vind. 6. τὰ παρ'] τάπερ Halmius 17. ἐκφύη] ἐκφύει Halmius οἰκεῦσαι] οἰκεῦσα Vind., οἰκεῦσι Gesnerus 19. τε] τὰ Halmius, τι et mox ὑστεροῦντι Nauckius 21. ἅπερ] δι' ἅπερ? 22. εἴη] κ' εἴη? 23. ἐσεῖται] ἐσσεῖται A et Vind. 28. μεταδιδόμεν] μετατιδόμεν μὲν 29. ὑπολάβη] ὑπολάβοι

P. 271, 1. οὐδ' ἂν τέκοι] οὐδάν τε καὶ ante Iacobsium 2. οὔτε] οὐδέ? 3. ἀγοῖ — ἀγοῖτο] ἄγοι — ἄγοιτο ex B 4. ἔντι καὶ] ἔντί δὲ καί? αὐτῶ] αὐτῷ Halmius 9. τᾷ δεούσᾳ] τὰ δέουσα Trinc., τὰ δέοντα B

P. 272, 3. ἀγνοήσῃ] ἀγνοήσει 16. τοῦ] τοῦ μὴ Halmius μανθάνοντος] μαθόντος ex A 32. δεῖ τὸν βασιλέα] malim τὸν βασιλέα δεῖ

P. 273, 23. κακὰ δ' εἶναι ταῦτα] κακὰ δέον εἰδέναι ταῦτα A, Halmius post ταῦτα inserit ἅ, quod non sufficit; indicavi lacunam

P. 274, 2. 3. εἴ τι μᾶλλον] εἴ τι ἄλλο μᾶλλον 25. παιδείαν δὲ] παιδείαν τε ex B 32. τῇ κρείττονι] τῇ φανείσῃ κρείττονι ex AB

P. 275, 2. μὲν οὖν οὐδ'] μὲν οὐχ' A m. s. 3. αἵ] ἀλλ' αἵ ex A 5. πραγματευόμεναι] πραγματεύονται ex A 6. σκοπούμεναι] σκοποῦνται ex A, σκοποῦσι B 7. σκοπεῖ] aut hic σκοπεῖται leg. aut supra σκοποῦσι 8. πῶς ἄνθρωποι] πῶς ἂν ὁ ἄνθρωπος ex A 20. οὐκ ἀφιλόσοφος] οὐκ ἂν φιλόσοφος A, οὐ καὶ φιλόσοφος Halmius 30. 31. τῶν πρεπόντων] fort. add. τηρητικῷ

P. 276, 8. μόνον] μόνου? 12. ἔχει τὴν μουσικὴν] ἔχει τὴν ἐπιστήμην τὴν μουσικήν? 28. ὠφελήσῃ] ὠφεληθήσῃ omnes libri

P. 284, 11. θρυλλουμένης] θρυλουμένης e Vind. 19. Αὐγῇ] Αὔγη 26. ἐρῶσιν] ἔρωσιν Matthiae ἧς] οἷς A

P. 285, 1. εἶναι νόμον] ἄνευ νόμων Bothius 2. εἶναι μωρία] θεῖναι μυρία A θέλειν] πέλειν L. Dindorfius 10. πλεῖστος] ἐπεὶ Nauckius 13. τί πλέον ἔχουσι] οἳ πλέον ἔχειν ζητοῦσι Cobetus (corr. typoth. errorem τῶν ἄλλων ζητοῦσι pro ζητοῦσι τῶν ἄλλων)

P. 286, 6. βροτοῖς] βροτοῖς δ' Bergk ἐς δίκην λόγων ὄφλαι] ἐς λόγον δίκην ὄφλοι Dobraeus 7. γ' ἂν]

γ' ὢν A, fort. πῶς δῆτ' ἔγωγ' ἂν θνητὸς ὢν θνητῆς τε φύς 10. 11. ὑποχωροῦντα εἰς] ὑποχωροῦντ' ἀεὶ εἰς 11. δὴ] δὲ e Voss. Vind. Tr. 12. ἐπαναχωροῦντας] ὑπαναχωροῦντας? 14. εἶτα] οὗτοι Wyttenbach. καταφυγεῖν] ἀποφυγεῖν ὅπου] ὅποι 29. ἀκοινώνητον] οὐ κοινωνητόν A

P. 287, 2. 3. ἔφη τοσούτῳ βασιλείαν διαφέρειν] τοσούτῳ (τοσοῦτον B) ἔφη διαφέρειν βασιλείαν Vind. 22. ἐπέπαυσο] πέπαυσο A

P. 297, 27. ὑπέρσπονδον] ὑπέρσπουδον 28. τὸν γὰρ μυρίων] Habet etiam Gellius NA. IX, 8

P. 299, 21. Τημενίδων] Τημενιδῶν

P. 300, 18. αὐγαῖσιν] αὐγαῖς ex A, ὁμῶς αὐγαῖς Grotius 19. ὡς Ἄρεως] Ἄρηος Emperius ἀρίδηλα] ἀίδηλα ex Ars. 21. μετὰ] παρὰ e Voss. τ' ἐγένεσθε] τ' ἔγευσθε Voss., corr. Bergkius 25. σάουσι] σαοῦσι Buttmannus

P. 301, 15. πεπαλημένος] πεπλημένος Brunckius 20. πανοπλίοις] πανόπλοισι Dindorfius

P. 302, 7. ἀπολεῖ] ante Gaisf. ἀπόλλει 10. καταπελτικὸν] hoc addidi e Plutarcho

P. 304, 5. Κινυρέοιο μᾶλλον] Κινύρεω μάλιον G. M. Schmidtius

P. 306, 1. Εὐριπίδου ἐκ Τηλέφου] Euripidis locus excidit 2. τόλμ'] τολμ A, τόλμης B, τολμᾶν ego ad Menandri Rel. p. 314 versum hunc poetae elegiaci esse monens ἀεὶ] δεῖ scripseram l. l., nunc etiam Gaisfordus in Add. ad Ecl. phys. 10. ἀπεργάζεται] ἀπείργασται Musgravius 13. ὀλίγους] in versu praecedente fuit opinor καρτεροὺς vel ἀλκίμους. Cf. LIV, 10 18. κρεῖττον] κρεῖσσον 19. γε] μὴ Nauckius 24. ἔξωθέν τις] ὡς ἔξωθεν Halmius 27. εὐανδρίαν] εὐδοξίαν p. 304, 23

P. 307, 21. lacunae loco Camerarii versus εὖ νύ τις ἀσπίδα θέσθω ἐναντιβίως πολεμίζων 25. ποτ'] τότ' e B

P. 308, 17. Ἀθλίου] Ἀεθλίου e cod. Mendozae 26. πάντα τἀνθρώπων] πάντ' ἀπανθίζειν Conington 28. ὄχλων] ἔργων Cobetus Mnem. IV p. 257 29. λογισμοῖς] λόγοις τὰς] μὲν τὰς ex A Vind. Trinc.

P. 309, 1. *λάβῃ*] *λάβῃς* Cobetus 2. *τέχνην*] *τυχην* Cobetus *ἐξεύρατο*] *προσλαμβάνει* Cobetus; an *ἐκτήσατο*?

P. 311, 23. *τοῦ αὐτοῦ* addidi e Vind. *τοῦτο βλέψῃς*] V. ad Theocritum p. 331 26. *ἐρῶ*] *φέρω* Bentleius

P. 312, 3. *Εὐνίδαις*] *Εὐνείδαις*

P. 313, 9. *οὐδεμίαν*] *οὐδεμί'* Bentleius 18. *Σμικρίνῃ*] *σμικρὸν ἢ* vulgo, *σμικρὴν ἢ* A, corr. Bentleius 21. *ἂν εἰ πλάττοι*] *ἂν πλάττῃ* AB 23. *Παιδίων*] *Παιδίου* Vind. 27. *ὥσπερ ἱερεῖον*] *ὡς τὰ ἱερεῖα* ante Porsonum

P. 314, 2. *μισθοφόρων*] *μισθοφόρος* vulgo, illud codd. cf. Iacobs Lect. Stob. 9. *Πλουτάρχου* add. e Tr. 20. *τόλμη*] indicavi lacunam 27. *ὃ καὶ*] *ᾧ καὶ* vulgo, *ὃ καὶ* ex A et Tr. 28. *ἵππους — ὑπέζευξε* hic ponit A, vulgo post *ποδάγραις καὶ* 29. *ποδάγραι* A, *ποδάγρᾳ* Dübnerus 30. *ἐναέρια*] *ἐν ἀέρι* A teste Dübnero

P. 315, 14. *τούτων μούνων*] *μούνων τούτων* A 15. *τοῦ δὲ*] *δὲ* secl. Halmius 16. *οὐ*] *ὡς* A, secl. Halmius *ἕκατι*] *ἕκητι* *γιγνόμενοι*] *γενόμενοι*? an *γεγενημένοι*? *καὶ*] seclusi 17. *τούτων*] *τῶν*? *καὶ*] *καί τοι*? 18. *ἀσθενέστερον*] *ἀσθενέστερα*? *ἐπιμελούμενοι*] *ἐπιμελόμενοι* Vind. et vulgo 19. *καθ' ὅτι*] *κατότϊ* codd. i. e. *κατ' ὅ τι* *αὐτοῖς*] *αὐτοῖσι* 20. *τοῖς θεοῖς*] *τοῖσι θεοῖσι* *ἐξομοιεύεσθαι*] *ἐξομοιόεσθαι* vulgo, illud A et Trinc. *ἐξομευεῦσθαι* Halmius 22. 23. *ἀνδρηία*] *ἀνδρηίη* 24. *ἀποστύγεε*] *ἀπόστυγε* B

P. 316, 3. *κρείσσων*] *κρεῖσσον* e Vind. Trinc. 16. *γενοίμεθα*] *γενοίατο*? 20. *χερὶ*] *βροτῶν* ex Euripide 25. *στρατηγοῦ*] *στρατηγῷ* Grotius *στρατεύματος*] sequebatur fort. *δειλοῦ* vel simile quid 27. *ἔχει*] *φέρει* alias

P. 317, 16. *ἄρ'*] *γὰρ* ex AB 17. *ὁμῶς*] *νόμῳ* Valckenarius 23. *χερῶν*] *χρεών* 28. *Ἀλεάδων*] *Ἀλεαδῶν*

P. 328, 2. *ἐπιθεῖτο*] *ἐπιθοῖτο* ex A 16. *ἠπεροπηίδι*] *εἰπεροπηδεῖ* ante Tyrwhittum et Lobeckium; cf. Strab. I p. 17 19. *ὑπό τινος*] addidi ex A

P. 329, 11. *ε'*] *γ'* e Vind. 12. *Κλέωνος*] *Διοδότου* e Thucydide

P. 331, 1. *ἐρωτώμενον*] *ἐρώμενον* A, *ἐρόμενον* e Vind. 4. *Εὐδαμονίδας*] *Εὐδαιμονίδας* A 24. *πότνια*] *πότνα* Berg-

kius πόλιν τάνδ' ἐχθρὰν] πόλιν, τὰν δ' ἐχθρὰν Bergkius, malim πολιτᾶν δ' ἐχθρὰν 29. βοϊκὸν] βοεικὸν

P. 332, 2. σκάψαντ'] σκάψαιτ' Voss. Tr. Vind. Ars. ἀποκλάσαι] ἀποκλᾶσαί τε B, κἀποκλάσαι 2. διελκύσαι] σύχν' ἑλκύσαι? 5. εἰρήνη] εἰράνα 6. ἀοιδῶν] ἀοιδᾶν 7. αἴθεται] αἴθεσθαι L. Dindorfius, ἔθεσθαι libri 8. μηρία τῶν εὐτρίχων] μῆρα τανυτρίχων Buttmannus et L. Dindorfius 12. εὐρὼς] e Plut. add. Leopardus 14. ἆμος] ἀμὸν Heynius 18. κείσθω] codd. ἀρκείσθω i. e. χρ κείσθω (Χορός. κείσθω) 19. συνοικοίην] συνοικοῖν? 21. Ἀθηνᾶς] Ἀθανᾶς Vind., Ἀθαναίας? 24. κλέωνται] κλέονται Gaisfordus 27. θ' ἑαυτοῖς] τ' αὐτοῖς 28. ἐστιν ἀγαθὸν] ἐστι τἀγαθὸν vel cum Brunckio τἀγαθόν ἐστι 30. πλέκουσι] λέγουσι Brunckius

P. 333, 5. αὕτη — ἐκλίπῃ] cf. Fragm. Com. IV p. 22 23. ἐν ἀγρῷ] ἀργὸν Bergkius τοῦτον] πρῶτον Hirschigius, αὐτὸν Bergkius 26. προβατίων] ante Grotium προβάτων 27. αἰγὸς] τρυγὸς ex A 28. ὄψῳ] ὄψων ante Salmasium δὲ] τε ante Gaisf. σπινιδίοις] πηνιδίοις ante Salm. 31. ἐπ'] ὑπ' Gaisford.

P. 335, 6. Ἀμαλθαίης] Ἀμαλθείης 25. τρόπους additum ex tit. LVIII, 8

P. 336, 5. Βουτημένῳ] fort. ex duobus titulis, Βουσίριδι et Τημένῳ, conflatum

P. 337, 6. γε δὲ] γε δὴ 11. μὲν] delendum videtur aut πάντα μὲν scrib. 13. θρυπτικός τε] θρυπτικός γε e Vind. 18. ἀλοᾶν] τὸ δὲ addit Vind. fort. ἀλοᾶν, τὸ δὲ [λικμᾶν], idque etiam necessarium videtur 22. δὴ καὶ ἀρεστὸν] δοκεῖ ἄριστον Pflugkius; fortasse δὴ καὶ ἀρεστότατον 24. τε] τι Pflugkius

P. 338, 1. φιλοσοφοῖ] φιλοσοφεῖ ex A 2. γεωργοῖ] γεωργεῖ ex A παραβάλλοιμι] παραβάλοιμι 7. ὥσπερ οἱ σοφισταὶ] haec seclusi 8. σκιατροφεῖσθαι] σκιατραφεῖσθαι A 9. τί δὲ] τί δέ; 15. Χηναῖον] Χημαῖον ante Holstenium 16. Ἀγλαὸν] rectius Ἄγλαον 21. τί οὖν; οὐ] τί δέ; οὐ ex AB 30. ὥσπερ] ἅπερ ex AB

P. 339, 5. τούτων] τοῦτον? 13. προσεῖναι] προσιέναι Halmius 22. ἀστυκῶν] ἀστικῶν e Vind. 26 — 340, 5. ἃ δὲ — ἐόντα νόον] haec fort. insiticia

P. 340, 2. δεδήλωκεν] ἐν τούτοις add. A m. sec. et B, qui post ἐν τούτοις etiam haec habet: τὸ μέντοι φαύλοις καὶ μοχθηροῖς τὸν τρόπον συνδιατρίβειν καὶ κοινωνεῖν αὐτοῖς διαίτης ἐπισφαλές, ἐν ἑτέροις 5. συμμιγῆς] συμμίσγης 6. μηδὲ] malim μὴ δὴ 8. μάλιστ' ἂν] μάλιστά γ'

P. 343, 7. ἐξ ἀγροῦ μοι καταβαίνει] καταβαίνει μοὐξ ἀγροῦ 8. 9. ὥσπερ κανοῦν] ita B, ceteri libri ὥσπερ ἱκανοῦν i. e. ὡσπερεὶ κανοῦν 9. μοι πάντ'] ὁμοῦ τι πάντ' ἀνεσκευασμένον] ἐνεσκευασμένον e Vind. 21. δικαίως ἀπέδωκ'] δίκαιος ἀποδίδωσ' Bentleius, ego δίκαιος ὢν ἀπέδωχ' vel δίκαιος ἀποδέδωχ' ὅσα ἂν] ὅσας ἂν Bentleius 26. λαχάνων] λαχάνου A, fort. λαχάνου τ' 27. πετραγεῖα] πετραῖα Salmasius

P. 344, 2. ἐγὼ γεωργῶ] ante Dobraeum ἔγωγ' (ἔγωγε Tr.) ὁρῶ 7. Ἀποστερητὴν] separavi a superioribus 8. κριθῶν] κριθὴν A 9. τούτων] τούτων δ'? 10. Θήβας] Θήβαις ex A 11. σχῆμα] σῆμα Vind. unde ῥῆμα scripsi, nimirum ipsum illud quod sequitur ὀνησιφόρα γένοιτο, quod mulieres religiosae in ore gerebant; errores sunt quae critici de hoc loco commenti sunt 21. γραμματιδίῳ] A γράμματι ἰδίῳ i. e. γραμματειδίῳ

P. 345, 11. παρὸν] χρεὼν Nauckius 26. δ' ἔξω] δέ γ' ἔξω ex Euripide

P. 346, 4. ἡσυχία] ἁσυχία 18. μιμιάμβων] μελιάμβων 19. ὁ τᾶς] τῶ τᾶς? ἀμναμονεῖ] ante Gaisf. ἀμνάμονα, codd. ἀμναμονεῦ 22. οὐκ οἶδ'] οὐκ ἔστ' Hermannus, quo praeeunte 22 et 25. lacunas indicavi 24. μοῖρα] μοῖσα Piersonus 25. πολὺ] γλυκὺ Hermannus μοχθῆν] μοχθεῖν ex Vind. 28. ἐς εὐφροσύναν καὶ χάρματα] ἐν εὐφροσύνᾳ καὶ χάρματι? 29. ποθ' ὕστερον] μεθύστερον 30. κατένευσαν] κατένησαν ἐλθῆν] ἐλθεῖν e Voss.

P. 347, 2. ἐς πόσον ἅ] ὅσσαπερ οἳ Hermannus καμάτως κεὶς] καματώδεες Wakefieldus et Hermannus πονεῦμες;] Hermannus πονεῦμες, 3. ψυχὰν δ' ἄχρι τίνος] ἀντὶ τίνος ψυχὰν Hermannus 4. πλήονος] πλέονος A et Voss., πάσσονος Nauckius 5. λαθόμεθ' ἢ ἄρα] ἢ λαθόμεσθ' ἄρα Hermannus 20. πρός τε τὰ ἄλλα] πρός τ' ἄλλα A 28. indicavi lacunam 30. μετευθύνει] μεγεθύνει Nauckius

P. 348, 4. *διαιτώμενοι*] *διαιτώμεναι* Wyttenb., *διαιτωμένων* coll. p. 338, 8 *ἀνιᾶσιν*] *ἀνίασιν* 7. *θεοειδέστερα*] *θεωδέστερα* e Trinc. 7. 8. *ὁρᾶν*] *ὁρᾷ* A, *τὸ δρᾶν* Dübnerus 9. *πάλαι ἀρχαίου*] *πάνυ ἀρχαίου* 10. *ἐνίδρυσαν* add. Wyttenbachius 12. 13. *τὰς παιδείας κατὰ*] *τὰς παιδείας κακαὶ τὰ* Dübnerus; praetuli *τὰ παιδείας καλὰ* 13. *μιαρῶν τινῶν*] *μιαρῶν τεχνῶν* Dübnerus, quod praestat fortasse ei, quod ego posui *μιαροτήτων* 19. *διαπλεῖ*] *δὲ πλεῖ* Cobetus 21. *ἑνός τ'*] *ἑνός γ'* 23. *ἦ*] om. A, *οἵ* B, fort. *φεῦ* (vel *ὦ*) et in sqq. *ποντοναυτῶν ὡς ταλαίπωρον γένος* 24. *θεῶν νέμων*] *βροτῶν γέμων* 25. *νείμειαν*] *νείμειεν* vel *νείμει' ἂν* 26. *λεπτῆς ἐπὶ ῥοπῇσιν*] *λεπταῖς ἐπὶ ῥιπῖσιν* 28. *ἢ 'σωσαν*] ante Porsonum *ἧς ὡς ἂν*

P. 349, 4. *μαλκιόωντι*] *μαλκίοντι* ex A 8. *πόρρω*] *πόρσω* ex B 10. *Φιλήτα*] *Φιλητᾶ* 15. *ζητεῖν*] *ζῆν τιν'* indicata lacuna; excidit fort. *οὐ λέξω ποτέ*. v. Com. graec. III p. 53 16. *ἐλθεῖν που δὴ*] *που δὴ* delevit Elmsleius 19. *τῆς γῆς*] *τῆς* add. Grotius 25. *οὐρίου*] *πρῶτον ἐν* editi, *πρῶτον* om. A, *οὐρίου* Grotius 29. *ἐστι*] *ἐσσι* Iacobsius *μέγα*] *μέτα* Bentleius

P. 350, 1. *ναυτιλίης ὃς νῆιν ἔχει βίον*] vulgo *ναυτιλίησιν ἣν ἔχεις βίον*, Bentleius *ναυτιλίης ὃς νῆιν ἔχει βίον*, Nauckius *ναυτιλίης εἰ νῆιν ἔχεις βίον* 2. *ἐσφκίσατο*] *ἐσφκίδαται*? cf. Anal. Alex. p. 158 4. *τοῦδε*] *τούτου* e codd. *λάβοις ποτὲ*] *λάβοις* 5. *κἀθ' ὑπὸ*] *καὶ ὑπὸ* codd., *κἀθ' ὑπὸ* ego Curis crit. (1813) p. 39 14. *Φιλοκτήτου*] v. Anal. Alex. p. 72 15. *βιότοιο*] *πλούτοιο* A 17. *ἀσπαίροντες*] *ἀσπαίροντος* *ἅλις*] *ἄδην*? 18. *ἔμβαλε*] *ἔκβαλε* Valcken. 19. *ἅλμη δ' ἐκάλυψεν ὀδόντας*] *ἅλμη δ' ἐκάλυψε θανόντα* Geelius 21. *χρήμασιν δ' ὢν*] *χρήμασ' ἰδὼν* vulgo, *χρήμασ' ἰνδῶν* codd., correxit Dobraeus *φρονεῖ*] *φρονεῖς* Dobraeus 28. *οὐδέ τι μοῖσα*] *οὐδ' ἔτι μοι γᾶ* Salmasius 29. *ποθέει*] *ποτάγει* Grotius *πλέον ἄμμε γαλάνα*] ita Grotius; revocavi librorum scripturam ita fort. emendandam *ποθέω δὲ πολὺ πλεῖον μέγα λαῖτμα*

P. 351, 4. *χὰ*] ante H. Stephanum *τάχα* 7. *ἰχθὺς*] *ἰχθύες* *πλανὸς*] *πλάνος* e B 26. *αὐτοῦ*] *αὐτὸν*

P. 352, 2. *μεταβολαὶ*] *μεταβολὴ* 3. *ἀνάλωσ' ἡ τέχνη*] *ἀνάλωσεν ἡ τέχνη* vulgo, *ἀνήλωσε τέχνη* A, *ἀνάλωσε τέχνη* Vind. Trinc. *δὲ*] *δὲ μόνη* A 7. *Σιμύλου*] v. Com. graec.

I p. XIII 11. τοῖν] τῶν A et marg. Gesn. 13. εὐφυῆ χρόνον] εὐφυῆ χορὸν Dobraeus, sed non agitur de fabula docenda; εὐφυῆ videtur in fine versus ponendum esse, ut cum κριτὴν coniungi possit; χρόνον autem librarii supplementum esse suspicor, postquam inter καιρὸν et εὐφυῆ substantivum nescio quod exciderat; nisi fuit

ἔρωτα, μελέτην, καιρόν, εὐφυῆ κριτήν,
ἅπαν τὸ ῥηθὲν δυνάμενον συναρπάσαι.

vel εὐθὺς τὸ ῥηθὲν 14. κριτὴν] κριθὴν A et Vind. τριβὴν B 19. ἄλλο πλὴν] A ἄλλο ἢ i. e. ἄλλο γ' ἢ

τ
ποιεῖ] πο A

P. 354, 25. παναγκιστρευτικήν] πᾶν ἀγκιστρευτικόν

P. 357, 12. γεωργίαν] om. A 16. καθάριον] καθάρειον

P. 359, 23. κατέδειξε πρῶτος] πρῶτος κατέδειξε ex A 25. ἦν] ἦ

P. 360, 6. Πολυείδου] Πολυίδου 8. τε γὰρ] καὶ γὰρ Musgravius 9. οὐκ] κοὐκ G. Dindorfius

P. 362, 6. Ἀντιγόνη] Ἀντιόπη e Vind. 19. τούτων] τούτου 23. ἡττόνων δὲ μείζονα] ἧττον, ὧν δὲ Dobraeus 24. τούτοις ἀνάγκη ταῦτα] οὕτως ἀνάγκη πάντα Dobraeus 29. εἰ γὰρ add. Iacobsius

P. 363, 1. ἀπολαύει] vulgo ἀπόλλει, AB ἀπολλύει, Gaisfordus ἀπολαύει, Iacobsius ἀπολάπτει 4. κρεῖσσον] κρείσσονα Musgravius 8. Ἀρχελάου] χορὸς addidi ex Vind. 9. ἔσωσα] ἔσωσε? 16. 17. hos versus cum superioribus coniunxi 18. Ἀλεξάνδρου] ἐν ταυτῷ e Vind. 20. αἱροῦνται] αἴρονται Elmsleius 24. δούλῳ ποιεῖν] δουλοποιεῖν ante Grotium

P. 364, 3. Ἀλκμαίωνος] Βουσίριδος Vind. 26. ἅπαντα] ἂν πάντα Grotius e Philone I p. 473 δουλεύειν ὁ δοῦλος] ὁ δοῦλος ἡσυχάζων Philo μανθάνει] μανθάνῃ 28. βέλτιστον] βελτίον' Iacobsius

ε
P. 365, 11. βίε] βέλτιστε Gaisfordus, βί A 21. Φιλίππου] Φιλιππίδου? Menandro datur p. 362, 14 29. πίπτοντα] πίτνοντα ex Euripide

P. 366, 2. διαφθείρει] διαφθερεῖ Grotius 10. τοῖς ὑπηρετοῦσα καὶ] οἷς ὑπηρετοῦσ' ἀεὶ Valckenarius 16. φη-

σὶν ὁ *Δίων* addidi ex A 17. **πολλῶν ἐπιθυμιῶν**] haec delenda videntur 20. **οἱ τότε**] **οἱ πότε** AB, **οἱ Γέται** Hemsterhusius

P. 367, 6. **Πολλίας**] **Πόλλις** 17. **πάγκακος**] **πάγκακον**

P. 369, 11. **ἐν**] **ἐπ'** Pflugkius 12. **δαιτὸς δὲ πληρωθεὶς**] **δαὶς** de quibusvis epulis dicitur nec recte opponitur **τῇ φαύλῃ διαίτῃ**. Fort. igitur **σταιτὸς** scribendum 16. **ἄγαν θηρωμένοις**] ante Salmasium **διώκουσιν ἄγαν** 18. **ἐρῶντος**] **ὁρῶντος** Musgravius 19. **ἀφύλακτος**] **ἀφύλακος** i. e. **δυσφύλακος** **ἂν γὰρ**] **κἂν γὰρ** libri, **ἂν γὰρ** Grotius, **ὡς κἂν** Nauckius 20. **ἔρωτα**] **ἔρωτας** A **σοφώτερος**] **σοφώτατος**? 21. **ἣν δ' ἂν προσῆται Κύπρις**] **ἣν δ' ἂν προσῆται κύπριν**? *quemcunque probaverit amorem, eius compotem fieri ipsi dulcissimum est*

P. 370, 1. **βία**] **βίος** Bothius 2. **μαινάς**] **μανιάς** Porsonus 3. **ἄκρατος**] **ἄκραντος** Bothius **ἐκείνῃ**] **κείνῃ** e Voss. 5. **ἐντήκεται**] **ἀνθάπτεται**? an v. squ. **πνοὴ** pro **ψυχή**? 6. **οὐχὶ**] ante Grotium **οὔτι** **βορὰ**] ante Grotium **βορός**, neutrum sufficit 17. **ἢ**] **οὐ** e Voss. 18. **ἢ ἐκ θυμῷ φιλέοντι**] **ἐκ θυμῷ δὲ φιλεῦντι** Grotius 21. **τῷ**] **τις** 23. **πᾶσιν**] **πάμπαν** 27. **καὶ**] **ναί**? 30. **εὐτυχῶν**] **ἐντυχὼν**

P. 371, 4. **οὕτω**] **πόθῳ** 9. **σκαιοῦ**] **Κείου** i. e. Prodici, cuius sapientia vel in proverbium abiit; ineptissimum est **σκαιοῦ** **κρείττων πρὸς τὸν**] **κρείττων τῶν πρὸς**? 10. **Αὐγὴ**] **Αὔγη** 11. **θεὸν κρίνει μέγαν**] rectius Athenaeus **μόνον κρίνει θεὸν** 12. **ὑπέρτατον**] **ὑπέρτερον**? 14. **οἶδε τὸν μέγιστον**] **οἶδεν ὄνθ' ἥδιστον**? 23. **Μένανδρος Θησαυρῷ** (**Θησαυρῶν** libri) praeeunte Tyrwhitto huc posui cum vulgo ante 29. legantur 24. **εἶτ' οὖν**] **εἶτ' οὐ** Tyrwhittus, et sic Arsenius Viol. p. 101

P. 372, 8. **χρυσῆς**] **χρυσέης** 10. **καὶ εὐνὴ**] **Διώνης** Heckerus 11. **ἄνθεα τῆς ἥβης**] **εἰ ἥβης ἄνθεα** AB, **ἄνθεα εἰ ἥβης** vulgo, **ἄνθεα τῆς ἥβης** Grotius, **ἡλικίης ἄνθεα** Kayserus 20. **Θησαυροῖς**] **Θησαυρῷ**

P. 373, 4. **ἔστι ποίας**] **ἔσθ' ὁποίας** Pflugkius 20. **ἔθ' ὑπνώοντι**] **ἔθ' ἡβώοντι** Heerelius, fort. **ἐφηβώοντι** 27. **κίθαριν**] **κιθάραν** Brunckius **ἀδὺς**] **ἄνυσ'** Ahrensius

P. 374, 6. **ἀφαυρότερον**] **ἀφαυρότερος** 10. **ὁδοιπορέοντ' ἐνοχλήσω**] **ὁδοιπορέοντα λοχήσω** Ruhnkenius 11.

συνερᾶσθαι] *συνέρασθαι* Schaeferus 14. *Θασεὺς*] *Θησεὺς* 15. *εἰ καὶ ἀμειλίκτοιο*] *ᾧ καὶ ἅμ' ἀλλίστοιο* 16. *ἐν ἀξείνοισιν*] *ἐνὶ ξείνοισιν* 17. *ἄροιτο*] ita B, *ἄρκτο* *το* vulgo, *ἄροι* A, *αἴρητο* Ahrens 19. *ὅτι οἱ*] *ὅ οἱ οὐ* 22. *ἦρα*] *ἤρατο* 27. *πάσχε δ' ἄποινα*] *πάσχε δ' ἃ ποίει* e codd.

P. 375, 8. 9. *ταύτῃ*] *τῇ αὐτῇ* Cobetus 10. 11. *Μενέδημος*] *ὁ λῆρος* add. Gesnerus in versione *Menedemus canis et delirus* (*sic enim eum Eretrienses vocabant*), respiciens Diog. Laert. II, 125. V. Iacobs. L. Stob. p. 103 et Cobet. V. L. 11. *οὔ φησιν*] *οὔ φασιν* Cobetus 12. *Ἀριστοτέλους*] *Ἀριστίππου* ex A m. sec. 13. *Ἀριστοτέλης*] *Ἀρίστιππος* ex B 14. *συνουσίας*] *τῆς συνουσίας* AB 15. *ἄνευ τούτου*] Aristippus opinor dixerat *οὔτε διὰ τοῦτο οὔτε δίχα τούτου* 17. *ἀγαπωμένη*] *ἀγάπη μούνη* Nauckius; recte, opinor; sed ita monachus aliquis mutavit quod Democritus scripserat, *ἡ εὐνὴ μούνη* 19. *ὁμαλῶς*] *οὐ κακῶς* AB, in quo aliud quid quam *ὁμαλῶς* absconditum est; in *κως* latet *ἴσως*, unde *οὐκ ἴσως* scribendum et per interrogationem locum efferendum putavi 20. *διαπεφυκώς*] *διακεχυκώς* 22. *ὀργιαστὴν*] addidi *ἴσμεν* *συμπεριλαμβάνομεν*] *συνεπιλαμβάνωμεν* 24. *φησὶ*] libri *φῆσαι*, Iacobsius *φήσας* 25. *ὥσπερ ἐστὶν ἅμα λαλεῖ*] i. e. simul quomodo id se habeat dicit; nil mutandum 27. *δεδούλωται*] *δεδούλωνται* e Vind. B

P. 376, 3. *ἕτερος*] *ἕτερος δ'* Dobraeus 4. *εἴσω δὴ*] *ἔνδοθεν* Dorvillius, v. Menandri Rel. p. 200 6. *εἰ μήτε τὴν ὄψιν* addenda vidit Halmius, et ante Halmium Gesnerus in versione latina 7. *αὐταὶ*] *αὗται* 10. *κρίσιν*] *ἴσην* addidit Gesnerus 15. *ζώων φρένες*] *ζωγράφων* Gesnerus 19. *περὶ*] *τῇ περὶ*? 22. *ἔρωτα*] *ἐρῶντα* 24. *καταφρονῆσαι*] indicavi lacunam, excidisse videtur *ἄλλον ἀπολωλέναι καὶ δουλοῦσθαι* vel simile quid; Gesnerus in versione *συγγενόμενον* [*ἄλλον μὲν δουλοῦσθαι*] *ἄλλον* [*δὲ*] *ἀπαλλαγῆναι*, at servandus est ordo in Menandri versibus indicatus

P. 377, 4. *ἐμοί πως*] *ἑτοίμῳ* Emperius

P. 384, 30. *Διογένους*] *Δικαιογένους* Vind.

P. 385. 2. *τοῖς ἀνάγκης*] *τοῖσιν ἄγχιστ'* 11. *ἀργοῖς*] ante Piersonum *ἔργοις* 17. *κάκιστε πάντων θεῶν κἀνθρώπων*] *τύραννε θεῶν τε κἀνθρώπων ἔρως* ex Athenaeo XIII 516 b. Cf.

Exerc. phil. in Athen. II p. 26 18. τὰ κακὰ] τὰ καλὰ ex Vind. et Athenaeo 19. ἢ τοῖς — παρίστασο] v. Athenaeum l. l. 22. ὥστ᾽] ὥς τ᾽ Wagnerus 23. κἂν] καὶ A οἰκεῖν] ναρκεῖν A, unde dubitanter scripsi ἄρχειν 25. οὐδὲ] οὔτε

P. 386, 10. ἁπαλὰς] ἀταλάς? 16. νόσημ᾽ ἔρωτος] ἔρωτος γὰρ νόσημα libri, νόσημ᾽ ἔρωτος Brunckius, τὸ γὰρ νόσημα Dobraeus 17. ἔχοιμ᾽ ἂν] ἔχοιν δ᾽ ἂν Nauckius 19. παῖδες ἀσταγῆ] παιδιαῖς ἄγη ante Salmasium, παῖδες εὐαγῆ Halmius 21. χυμὸς] κρυμὸς? ἀφῇ] ἀφῇς? at si dicere voluit poeta nolle glaciem dimitti e manibus, cur non scripsit οὔτ᾽ ἀφίεσθαι θέλει? videant alii 22. κτῆμα σύμφορον] κτῆμ᾽ ἀσύμφορον cod. Mend. 23. οὕτω γε] οὔτε libri, οὕτω γε Gesneri margo, οὕτω δὲ ego 24. καὶ τὸ] καί τι προίεται] προσίεται

P. 387, 26. εὐλόγως] εὖ λόγων 27. καλῶς] κακῶς Clericus 29. τιμάτω] ἀτιμάτω θνητῶν] θηλεῶν? 31. τάων] τῶν Μύρων] ante Gaisf. Μυρῶν, codd. μοιρῶν πολύκλαυστον] πολύκλαυτον

P. 388, 1. Ἀνεψιός] Ἀνεψιοί 6. ἐρῶντος] ἔρωτος Grotius 19. ἴκελος] εἴκελος 23. χολᾷ νόος] χολά, ὅλος Hermannus 24. ἄλλον ἐπ᾽ ἄλλῳ] ἄλλοτ᾽ ἐπ᾽ ἄλλους B 29. ὑπότροπον] ὑπόπτερον Briggsius 30. ἐνόασε] ἐνόησεν Hermannus

P. 389, 1. ὄρνεον] τὤρνεον Valckenarius 4. ἕνεχ᾽ οἱ] ὅκα οἱ Brunckius 6. τέχνην] τέχναν 9. τ᾽ ὄρνεον] τὤρνεον 11. μιν] νιν 15. ἠδὲ] οὐδὲ Hermannus 17. ἀπέχθεο] ἀπήχθεο ex AB τί νιν αὐτὰ] τεῒν αὐτᾷ Hermannus 18. τέκηαι] τεκέσθαι Hermannus 20. ἐς τί δὲ] πρὸς δ᾽ ἔτι Hermannus ἦμεν] ἡμῖν vulgo, ἦμεν A, ἄμμιν Hermannus

P. 390, 2. πατὴρ] πάτωρ G. Dindorfius 5. βροτῶν] λαβεῖν?

P. 391, 5. τί μὲν] ὅ τι μὲν 9. ἐξίσταμαί σου] ἐξίσταμαί σοι Boissonadus 10. σου] A σοι 24. μανίαν] οἱ δὲ νόσον excidisse suspicatur Dübnerus

P. 392, 6. φρενιτισμοῖς] φρενετισμοῖς Dübnerus 7. ἀλλὰ καὶ] ἀλλὰ ex A 12. παρέχεσθαι] παραδέχεσθαι ex A μηδὲ ἀρχὴν] delenda esse punctis suppositis indicat A 14. θεῶν] om. A 15. αὐτοῦ] σαυτοῦ ex A 17. καὶ νήπιον] καὶ delet A m. s. 24. αὐταυγεῖ] ἀντηύγει ex codd. 27. ἡγεμόνας] ἡγεμονίας Wyttenb. 31. βούλεται] τί βούλεται Wakefieldus

P. 393, 4. εἴ τι] εἰ ante Gaisfordum 9. παρόντα] παρόντος ex A et Vind.

P. 394, 2. ἐνιδροῖ] A m. s. ἐνοιδεῖ, Dübnerus aut hoc aut ἀνοιδεῖ verum putat, Nauckius ἐνίδρυται 13. θηρίον vulgo abest 27. Τυραννικῶν] Τυρρηνικῶν

P. 395, 9. Θε̄ . . βύβλι . .] Θείας . . Βύβλου Gaisfordus διενεγκόντος] ὑπερενεγκόντος? 12. ἐν α΄] ἐν β΄ e Vind. et Plutarcho 14. Ἀριστώνυμος addidi e Plutarcho 16. τοῦτο] οὗτος 19. Ὀνοσκελίαν] Ὀνοσκελίδα vel e Plutarcho Ὀνόσκελιν

P. 400, 19. 20. τρόπος χρηστὸς] τρόπον χρηστὸν vel τρόπους χρηστοὺς

P. 401, 3. lacunam indicavit Porsonus supplens οὔτ' ὄφελός ἐστ' οὔτ' εὖ γεγραμμένης γραφῆς 10. ὑπὸ] ἐπί? 15. ἄδην] v. Anal. Alex. p. 114 19. indicavi lacunam 20. μνήσειας] μνησίας A; si verum est μνήσειας, ad Musam referendum erit, quam in perditis versibus invocaverit poeta 21. οἵαις] οἷαν ante Gaisfordum σε] τε? 25. ἂν δὲ] ἄν γε Halmius 26. διαλεκτικὸς] ita AB, λεκτικὸς vulgo et Vind.

P. 402, 4. ψαύοντες; συνάπτουσι] ψαύοντες ἢ συνάπτουσι? 6. σῶμα] στόμα e codd. 11. ἄριστον] ῥᾷστον e Dione

P. 403, 13. καὶ] καὶ τὴν Dübnerus 20. ἃ ἂν] Vind. ἂν i. e. ἂν 24. ἀγωγὰ] ἀγὼν ἢ ante Valckenarium ὄντως seclusit Valckenarius ναμερτὲς] vulgo ναμερτᾶς, Valck. ναμερτέως, A ναμερτής, corr. Gaisfordus 27. μασσότερον] μασσότατον? 28. ὑποτρέχοντι] περιέποντι Valckenarius

P. 404, 3. εὐεργετήσαντες] A εὐεργετήξαντες, quod esse potest εὐεργετίξαντες; praetuli tamen εὖ ἔρξαντες ut l. 2 παθεῖν] παθὲν 4. παρ' αὐτῶν] ὑπ' αὐτῶν libri praeter AB τουτέως οὖν] τούτως ὧν Koenius εὐδαίμονας οἶδα τῇ] εὐδαίμονες οἶδα ὅτι 6. ποθ' ὡς — ἀπαντασεῖται] ante Koenium πόθως ὑπὸ νομοθέταν. τοιόσδε ἅπαντας εἶτε 7. μυθεύμενος· τάδε ἐγὼν] μυθεύμενος τάδε· ἐγὼν 9. ἐπιμελείας] τὰ ἐπιμελείας A, τἀπιμελείας Vind. et Trinc. i. e. ἐπι ταμελείας 10. ζωόφυτα] ζωύφια πρῶτον — τῆς] πρᾶτον — τᾶς 11. ἀκροσφαλῶς] ἀκροσφαλέως 13. δέ γ' οὐ

ὀρίγνεσθε σωματικᾶς] ante Gesnerum δέ γ' ἃ ὀρίγνεσθ' ἀρωματικᾶς, Vind. δέ γα ὀρίγνεσθ' ἀρωματικᾶς, AB δ' ἀρίγνεσθ' ἀρωματικᾶς, Trinc. δέ γ' ἀορίγνεσθ' ἀρωματικᾶς. malim igitur ὑμεῖς (ὑμὲς) δ', ὀρίγνεσθε γὰρ σωματικᾶς. pro ὀρίγνεσθε Sopingius ὀριγνᾶσθε 16. τὰς αὐταυτῶν] ante Gaisf. τᾶς αὐτῶν, Trinc. τὰς ἀντ' αὐτῶν 17. ῥύπον] ῥύπαν Vind. ζωὰν ἐλευθέρων] ante Salmasium ζωᾷ ἀνελευθέρων 20. ποτοκέλλουσιν] i. e. προσορῶσιν ab obsoleto ὄκελλος = ὀφθαλμός; Ruhnkenius ποτοπτίλλουσι, pro quo ποτοπτίλλονται usitatius esset 22. ἐπιτήδευμα vulgo 23. ἔγωγε vulgo 24. πιεῖν vulgo 25. βουνὸς] οἶνος malim propter 24 26. αὐτὸς] addidit Koenius 28. χαίρων] delet Hemsterhusius et mox λῶμαι coni. pro τῷ καί; fort. χαίρεν (vel χαίρων) — λῶ καὶ τᾷ ἐμαυτοῦ] τἀμαυτοῦ A 29. ἀτρεκῶς] malim ἀτρεκέως φατίζω] φατίξω 31. φατίζω] φατίξω ναμερτέως] A ἁμαρτέως

P. 405, 26. θεᾶσθ' · οὐδέν τι] θεάσασθαι ante Grotium, θεᾶσθαι, νοῦν· τί Elmsleius 27. μὴ φρένας καλὰς] Vind. A et Trinc. μὴ τὰς φρένας καλάς, quare malim τὰς φρένας κακὰς cll. tit. 72, 8

P. 406, 5. καὶ νῦν ὁρώντων] haec seclusi 7. οὐδενὸς] ante Gaisfordum οὐδὲν 16. ὅτι τὸ κάλλος τυραννίδα] τὸ κάλλος delevit Iacobsius 17. τριχὶ] ante Iacobsium τριχῇ 20. ἡ ἑστῶσα] ἑστῶσα 29. κάρψε μέν οἱ] καρψάμενοι AB, κάρψω μὲν Homerus 30. ὄλεσε] ὀλέσω Homerus 30. 31. δέρμα — γέροντος] apud Homerum λαῖφος ἕσσω, ὅ κε στυγέῃσιν ἰδὼν ἄνθρωπος ἔχοντα

P. 407, 4. ταῦτα ἅπαξ] ἅπαξ ταῦτα ex A 5. ἀναβῆναι] ἀνηβῆσαι Iacobsius 7. καὶ τοὺς] καὶ del. A ant. m. s. monente Dübnero 8. οὐκ ἀδύνατον οὐδ' ἀκίνδυνον] ἀδύνατον οὐδ' ex A addiderat Gaisford., recte improbante Dübnero 25. ἐπαίνου] abesse malim 29. τρίτον δὲ ὀλυμπίων] i. e. τρίτος ἀπ' ὀλυμπίων

P. 408, 3. γὰρ] δέ? 4. φαίης] φαίην ex AB 6. γεγενῆσθαι] γεγεννῆσθαι? ἔσται] λέγειν vel simile quid addendum videtur 8. ἀνὴρ] ἀὴρ ex AB 9. ζῴων] ζῴων τε?

Scribebam Berolini m. Octob. MDCCCLV.

ΙΩΑΝΝΟΥ ΣΤΟΒΑΙΟΥ
ΑΝΘΟΛΟΓΙΟΝ.

ΠΕΡΙ ΦΙΛΟΠΟΝΙΑΣ ΚΑΙ ΜΕΛΕΤΗΣ ΚΑΙ ΟΤΙ ΑΣΥΜΦΟΡΟΝ ΤΟ ΟΚΝΕΙΝ. ΚΘ.

---

1 *Σοφοκλέους Θυέστῃ.*
Ὡς νυν τάχος στείχωμεν· οὐ γὰρ ἔσθ᾽ ὅπως
σπουδῆς δικαίας μῶμος ἅψεταί ποτε.

2 *Ἡσιόδου ἔργων* (21).
Εἰς ἕτερον γάρ τίς τε ἰδὼν ἔργοιο χατίζων
πλούσιον, ὃς σπεύδει μὲν ἀρόμεναι ἠδὲ φυτεύειν,
οἶκόν τ᾽ εὖ θέσθαι· ζηλοῖ δέ τε γείτονα γείτων
εἰς ἄφενος σπεύδοντ᾽. ἀγαθὴ δ᾽ ἔρις ἥδε βροτοῖσι.

3 *Ἐν ταυτῷ* (308).
Ἐξ ἔργων δ᾽ ἄνδρες πολύμηλοί τ᾽ ἀφνειοί τε.
καί τ᾽ ἐργαζόμενος πολὺ φίλτερος ἀθανάτοισιν.
ἔργων δ᾽ οὐδὲν ὄνειδος, ἀεργίη δέ τ᾽ ὄνειδος.
εἰ δέ κεν ἐργάζῃ, τάχα σὲ ζηλώσει ἀεργὸς
πλουτεῦντα· πλούτῳ δ᾽ ἀρετὴ καὶ κῦδος ὀπηδεῖ.

4 *Ἐν ταυτῷ* (317).
Αἰδὼς δ᾽ οὐκ ἀγαθὴ κεχρημένον ἄνδρα κομίζει,
αἰδώς, ἥ τ᾽ ἄνδρας μέγα σίνεται ἠδ᾽ ὀνίνησιν.
αἰδώς τοι πρὸς ἀνολβίῃ, θάρσος δὲ πρὸς ὄλβῳ.
χρήματα δ᾽ οὐχ ἁρπακτά, θεόσδοτα πολλὸν ἀμείνω.

5 *Εὐριπίδου Ἡρακλειδῶν* (625).
Ἁ δ' ἀρετὰ βαίνει διὰ μόχθων.

6 *Τοῦ αὐτοῦ Ἰφιγενείας* (Taur. 114).
Τοὺς πόνους γὰρ ἀγαθοὶ
τολμῶσι, δειλοὶ δ' εἰσὶν οὐδὲν οὐδαμοῦ.

7 *Εὐριπίδης Λικυμνίῳ.*
Πόνος γάρ, ὡς λέγουσιν, εὐκλείας πατήρ.

8 *Ἐπιχάρμου.*
Τῶν πόνων πωλοῦσιν ἡμῖν πάντα τἀγάθ' οἱ θεοί.

9 *Εὐριπίδου Τηλέφου.*
Μοχθεῖν ἀνάγκη τοὺς θέλοντας εὐτυχεῖν.

10 *Κριτίου.*
Ἐκ μελέτης πλείους ἢ φύσεως ἀγαθοί.

11 *Εὐριπίδου Ἐρεχθέως.*
Ἐκ τῶν πόνων τοι τἀγάθ' αὔξεται βροτοῖς.

12 *Ἀναξανδρίδου.*
Τὸ συνεχὲς ἔργου παντὸς εὑρίσκει τέλος.

13 *Εὐριπίδου Ἀρχελάῳ.*
Σοὶ δ' εἶπον, ὦ παῖ, τὰς τύχας ἐκ τῶν πόνων
θηρᾶν· ὁρᾷς γὰρ σὸν πατέρα τιμώμενον.

14 *Εὐριπίδου Ἀρχελάου.*
Οὐκ ἔστιν ὅστις ἡδέως ζητῶν βιοῦν
εὔκλειαν εἰσεκτήσατ', ἀλλὰ χρὴ πονεῖν.

15 *Τοῦ αὐτοῦ Φιλοκτήτῃ.*
Τοὺς γὰρ περισσοὺς καί τι πράσσοντας πλέον
τιμῶμεν ἄνδρας τ' ἐν πόλει νομίζομεν.

16 *Ὀκνῶ δὲ μόχθων τῶν πρὶν ἐκχέαι χάριν.*

17 Μενάνδρου.

Δεῖ τοὺς πενομένους, μέχρι ἂν οὗ ζῶσιν, πονεῖν.
ἀπραξία γὰρ λιτὸν οὐ τρέφει βίον.

18 Ἡσιόδου ἔργων (361).

Εἰ γάρ κεν καὶ σμικρὸν ἐπὶ σμικρῷ καταθεῖο,
καὶ θαμὰ τοῦτ' ἔρδοις, τάχα κεν μέγα καὶ τὸ γένοιτο.

19 Μενάνδρου.

Πάντα γὰρ
ταῖς ἐνδελεχείαις καταπονεῖται πράγματα.

20 Εὐριπίδου Ἀνδρομέδας.

Εὔκλειαν ἔλαβον οὐκ ἄνευ πολλῶν πόνων.

21 Αἰσχύλου.

Φιλεῖ δὲ τῷ κάμνοντι συσπεύδειν θεός.

22 Εὐριπίδου Ἐρεχθεῖ.

Ἐκ τῶν πόνων τοι τἀγάθ' αὔξεται βροτοῖς,
ὁ δ' ἡδὺς αἰὼν ἡ κακή τ' ἀτολμία
οὔτ' οἶκον οὔτε βίοτον οὐδὲν ὠφελεῖ.

23 Εὐριπίδου Κρήσσαις.

Οὐκ ἂν δύναιο μὴ καμὼν εὐδαιμονεῖν,
αἰσχρόν τε μοχθεῖν μὴ θέλειν νεανίαν.

24 Αἰσχύλου.

Καλὸν δὲ καὶ γέροντα μανθάνειν σοφά.

25 Σοφοκλέους Μάντεων.

Οὔτοι ποθ' ἅψει τῶν ἄκρων ἄνευ πόνου.

25[a] Μοχθεῖν ἀνάγκη τοὺς θέλοντας εὐτυχεῖν.

26 Ἅπαντα τὰ καλὰ τοῦ πονοῦντος γίνεται.

27 Ἅπανθ' ὁ τοῦ ζητοῦντος εὑρίσκει πόνος.

28 *Φιλήμονος Καταψευδομένου.*

Πάντ' ἔστιν ἐξευρεῖν, ἐὰν μὴ τὸν πόνον
φεύγῃ τις, ὃς πρόσεστι τοῖς ζητουμένοις.

29 *Ἐκ τοῦ φιλοπονεῖν γίγνεθ' ὧν θέλεις κρατεῖν.*

30 *Φιλήμονος.*

Ὡς ἡδέως μοι γέγονε τὰ πρότερον κακά.
εἰ μὴ τότ' ἐπόνουν, νῦν ἂν οὐκ εὐφραινόμην.

31 *Καρκίνου.*

Οὐδεὶς ἔπαινον ἡδοναῖς ἐκτήσατο.

32 *Εὐριπίδου Ἀρχελάῳ.*

Οὐδεὶς γὰρ ὢν ῥᾴθυμος εὐκλεὴς ἀνήρ,
ἀλλ' οἱ πόνοι τίκτουσι τὴν εὐανδρίαν.

33 *Ἀλέξιδος Ἀχαιΐδι.*

Ὅτι πάντα τὰ ζητούμεν' ἐξευρίσκεται,
ἂν μὴ προαποστῇς μηδὲ τὸν πόνον φύγῃς.
ὅπου γὰρ εὑρήκασιν ἄνθρωποί τινες
μέρος τι τῶν θείων, τοσούτῳ τῷ τόπῳ
ἀπέχοντες, ἄστρων ἐπιτολὰς δύσεις, τροπας
ἔκλειψιν ἡλίου, τί τῶν κοινῶν κάτω
καὶ συγγενικῶν δύναιτ' ἂν ἄνθρωπον φυγεῖν;

34 *Εὐριπίδου Ἱππολύτου.*

Τῷ γὰρ πονοῦντι καὶ θεὸς συλλαμβάνει.

35 *Θεοδέκτου.*

Πολλὰ δεῖ
μοχθεῖν τον ἥξοντ' εἰς ἔπαινον εὐκλεῶς.
ῥᾳθυμία δὲ τὴν παραυτίχ' ἡδονὴν
λαβοῦσα λύπας τῷ χρόνῳ τίκτειν φιλεῖ.

36 *Εὐριπίδου Σθενοβοίας.*

Ἄνευ τύχης γάρ, ὥσπερ ἡ παροιμία,
πόνος μονωθεὶς οὐκέτ' ἀλγύνει βροτούς.

37 *Σοφοκλέους.*
Μόχθου γὰρ οὐδεὶς τοῦ παρελθόντος λόγος.

38 *Σοφοκλέους Λαοκόωντος.*
Πόνου μεταλλαχθέντος οἱ πόνοι γλυκεῖς.

39 *Ἀγάθωνος.*
Ἰδίας ὁδοὺς ζητοῦσι φιλόπονοι φύσεις.

40 *Φιλίσκου.*
Οὐκ ἔστιν, ὦ μάταιε, σὺν ῥᾳθυμίᾳ
τὰ τῶν πονούντων μὴ πονήσαντας λαβεῖν.

41 *Ξενοφάνους.*
Οὔ τοι ἀπ' ἀρχῆς πάντα θεοὶ θνητοῖς ὑπέδειξαν,
ἀλλὰ χρόνῳ ζητοῦντες ἐφευρίσκουσιν ἄμεινον.

42 *Ἱππώνακτος.*
Χρόνος δὲ φευγέτω σε μηδὲ εἷς ἀργός.

43 *Ἀπολλοδώρου.*
Χρόνον γὰρ εἰς τὰ πράγματ' ἂν λάβῃς,
ἅπαντα λήξει καὶ καταστολήσεται.

44 *Εὐριπίδου Ἀρχελάου.*
Σὺν μυρίοισι τὰ καλὰ γίγνεται πόνοις.

45 *Μενάνδρου Δυσκόλου.*
Οὐδενὸς χρὴ πράγματος
τὸν εὖ πονοῦνθ' ὅλως ἀπογνῶναί ποτε.

46 *Ἁλωτὰ γίγνετ' ἐπιμελείᾳ καὶ πόνῳ*
ἅπαντα.

47 *Μενάνδρου Εὐνούχου.*
Πάντα τὰ ζητούμενα
δεῖσθαι μερίμνης φασὶν οἱ σοφώτεροι.

48 *Σοφοκλέους Οἰδίποδος* (R. 110).

Τὸ ζητούμενον
ἁλωτόν, ἐκφεύγει δὲ τἀμελούμενον.

50 *Εὐριπίδου* (Suppl. 323).

Σὴ πατρίς· ἐν γὰρ τοῖς πόνοισιν αὔξεται·
αἳ δ' ἥσυχοι σκοτεινὰ πράσσουσιν πόλεις,
σκοτεινὰ καὶ βλέπουσιν εὐλαβούμεναι.

51 *Ἀντιφάνους.*

Τῆς ἐπιμελείας δοῦλα πάντα γίγνεται.

52 *Βίωνος Σμυρναίου βουκολικῶν.*

Ἐκ θαμινᾶς ῥαθάμιγγος, ὅκως λόγος, ἀεναοίσας
χἁ λίθος ἐς ῥωχμὸν κοιλαίνεται.

53 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Οὐ καλὸν ὦ φίλε πάντα χρόνον ποτὶ τέκτονα φοιτῆν,
μηδ' ἐπὶ πάντ' ἄλλω χρέος ἰσχέμεν, ἀλλὰ καὶ αὐτὸς
τεχνᾶσθαι σύριγγα, πέλει δέ τοι εὐμαρὲς ἔργον.

54 *Ἐπιχάρμου.*

Ἁ δὲ μελέτα φύσιος ἀγαθᾶς πλεῦνα δωρεῖται, φίλοι.

55 *Εὐριπίδου Τηλέφῳ.*

Οὐ τἄρ' Ὀδυσσεύς ἐστιν αἱμύλος μόνος·
χρεία διδάσκει, κἂν βραδύς τις ᾖ, σοφόν.

56 *Εὐριπίδου.*

Οὐκ αἰσχρὸν οὐδὲν τῶν ἀναγκαίων βροτοῖς.

57 *Τοῦ αὐτοῦ Ἀνδρομέδᾳ.*

Ἀλλ' ἡδύ τοι σωθέντα μεμνῆσθαι πόνων.

58 *Αἰλιανοῦ.*

Σόλων ὁ Ἀθηναῖος Ἐξηκεστίδου παρὰ πότον τοῦ

ἀδελφιδοῦ αὐτοῦ μέλος τι Σαπφοῦς ᾄσαντος, ἥσθη τῷ μέλει καὶ προσέταξε τῷ μειρακίῳ διδάξαι αὐτόν. ἐρωτήσαντος δὲ τινὸς διὰ ποίαν αἰτίαν τοῦτο ἐσπούδακεν, ὃ δὲ ἔφη "ἵνα μαθὼν αὐτὸ ἀποθάνω."

59 *Εὐσεβίου.*

Πόνοι οἱ ἑκούσιοι πόνοισι τοῖσι μετὰ ταῦτα ἀναγκαίοισι, ὥστε αὐτοὺς εὐπετεστέρους παρασκευασθῆναι, προπονέονται.

60 *Αἰλιανοῦ* (Var. hist. 7, 7).

Δημοσθένης ὁ Δημοσθένους, εἰ ἔμελλε τῆς ὑστεραίας ἔσεσθαι ἐκκλησία, ἀλλὰ ἐκεῖνός γε διὰ τῆς νυκτὸς ἠγρύπνει πάσης, διαφροντίζων δηλονότι καὶ ἐκμανθάνων ταῦτα ἃ ἔμελλεν ἐρεῖν. ὁ τοίνυν Πυθέας ἐκ τούτων ἐμοὶ δοκεῖν ἀπέσκωπτεν εἰς αὐτὸν ἐπιλέγων αὐτοῦ τὰ ἐνθυμήματα ἐλλυχνίων ὄζειν.

61 *Δημοσθένους κατὰ Φιλίππου* (I p. 41).

Φύσει δ' ὑπάρχει τοῖς παροῦσι τὰ τῶν ἀπόντων, καὶ τοῖς ἐθέλουσι πονεῖν καὶ κινδυνεύειν τὰ τῶν ἀμελούντων.

62 *Θουκυδίδου* (V, 69).

Ἔργων ἐκ πολλοῦ μελέτη πλεῖον σώζει ἢ λόγων δι' ὀλίγου καλῶς ῥηθέντων παραίνεσις.

63 *Δημοκρίτου.*

Οἱ ἑκούσιοι πόνοι τὴν τῶν ἀεκουσίων ὑπομονὴν ἐλαφροτέρην παρασκευάζουσι.

64 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Πόνος συνεχὴς ἐλαφρότερος ἑωυτοῦ συνηθείῃ γίνεται.

65 *Ἀντισθένους.*

Ἡδονὰς τὰς μετὰ τοὺς πόνους διωκτέον, ἀλλ' οὐχὶ τὰς πρὸ τῶν πόνων.

66 Δημοκρίτου.

Πλέονες ἐξ ἀσκήσιος ἀγαθοὶ γίνονται ἢ ἀπὸ φύσιος.

67 Τοῦ αὐτοῦ.

Τὸ αἰεὶ μέλλειν ἀτελέας ποιέει τὰς πρήξιας.

68 Σωκράτης.

Σωκράτης ἐν γήρᾳ κιθαρίζων παρὰ Κόννῳ τῷ κιθαρῳδῷ ἐτύγχανε· καὶ τινὸς εἰπόντος "κιθαρίζεις τηλικοῦτος ὤν;" "κρεῖττον" εἶπεν "ὀψιμαθῆ εἶναι ἢ ἀμαθῆ."

69 Φαβωρίνου.

Γραῦν τινα φασὶ μόσχον μικρὸν ἀραμένην καὶ τοῦτο καθ' ἡμέραν ποιοῦσαν λαθεῖν βοῦν φέρουσαν.

70 Ἐκ τῶν Ἀριστοτέλους χρειῶν.

Λᾶσος ὁ Ἑρμιονεὺς ἐρωτηθεὶς τί εἴη σοφώτατον "ἡ πεῖρα" ἔφη.

71 Ξενοφῶντος Ἀγησιλάου (XI, 9).

Δόξης δ' οὐδεμιᾶς ἦρα ἧς οὐκ ἐξεπονεῖτο.

72 Τοῦ αὐτοῦ ἐκ τοῦ πρώτου (4, 5) τῆς παιδείας.

Οὐκ ἀπεδίδρασκεν ἐκ τοῦ ἡττᾶσθαι εἰς τὸ μὴ ποιεῖν ἃ ἡττῷτο, ἀλλ' ἐκυλινδεῖτο ἐν τῷ πειρᾶσθαι αὖθις ἄμεινον ποιεῖν.

73 Τοῦ αὐτοῦ (Cyrop. VIII, 1, 38).

Κῦρος ἐστὶ βασιλέως καὶ ἀδελφὸς καὶ υἱὸς καὶ ἄρχει πολλῆς χώρας, κἀκεῖνος οὔτ' ἂν ἀριστήσειεν οὔτε δειπνήσειεν πρὶν ἱδρῶσαι.

74 *Ξενοφῶντος ἐκ τοῦ α' (5, 9) τῆς Κύρου παιδείας.*

Καίτοι ἔγωγε οἶμαι οὐδεμίαν ἀρετὴν ἀσκεῖσθαι ὑπ' ἀνθρώπων, ὡς μηδὲν πλέον ἔχωσιν οἱ ἀγαθοὶ γενόμενοι τῶν πονηρῶν· ἀλλ' οἵ τε τῶν παραυτίκα ἡδονῶν ἀπεχόμενοι, οὐχ ἵνα μηδέποτ' εὐφρανθῶσι τοῦτο πράττουσιν, ἀλλ' ὅπως διὰ ταύτην τὴν ἐγκράτειαν πολλαπλάσια εἰς τὸν ἔπειτα χρόνον εὐφραίνωνται, οὕτω παρασκευάζονται· οἵ τε λέγειν προθυμούμενοι δεινοὶ γενέσθαι, οὐχ ἵνα εὖ λέγοντες μηδέποτε παύσωνται τοῦτο μελετῶσιν, ἀλλ' ἐλπίζοντες τῷ λέγειν εὖ πείθοντες πολλοὺς ἀνθρώπους, μεγάλα ἀγαθὰ διαπράξασθαι· οἵ τ' αὖ τὰ πολεμικὰ ἀσκοῦντες, οὐχ ὡς μαχόμενοι μηδέποτε παύσωνται τοῦτ' ἐκπονοῦνται, ἀλλὰ νομίζουσι καὶ οὗτοι τὰ πολεμικὰ ἀγαθοὶ γενόμενοι πολὺν μὲν ὄλβον, πολλὴν δὲ εὐδαιμονίαν, μεγάλας δὲ τιμὰς καὶ τῇ πόλει καὶ αὑτοῖς περιάψειν. εἰ δέ τινες ταῦτα ἐκπονήσαντες, πρίν τινα ἀπ' αὐτῶν καρπὸν κομίσασθαι αὐτοὺς γήραι ἀδυνάτους γινομένους περιεῖδον, ὅμοιον ἔμοιγε δοκοῦσι πεπονθέναι οἷον εἴ τις γεωργὸς ἀγαθὸς προθυμηθεὶς γενέσθαι καὶ εὖ σπείρων καὶ εὖ φυτεύων, ὅτε ἀποκαρποῦσθαι ταῦτα δέοι, ἐῴη τὸν καρπὸν ἀσυγκόμιστον εἰς τὴν γῆν πάλιν καταρρεῖν· καὶ εἴ τις ἀθλητὴς πολλὰ πονήσας καὶ ἀξιόνικος γενόμενος ἀναγώνιστος διατελέσειεν, οὐδ' ἂν οὗτος ἔμοιγε δοκεῖ δικαίως ἀναίτιος εἶναι ἀφροσύνης.

75 *Μουσωνίου ἐκ τοῦ ὅτι πόνου καταφρονητέον.*

Πρὸς δὲ τὸ ῥᾷον καὶ προθυμότερον ὑφίστασθαι τῶν πόνων ἐκείνους, οὓς ἂν ὑπὲρ ἀρετῆς καὶ καλοκα-

γαθίας μέλλωμεν πονεῖν, ταῦτα λελογίσθαι χρήσιμα, πόσα μὲν πονοῦσιν ἔνιοι δι' ἐπιθυμίας κακάς, ὥσπερ οἱ ἐρῶντες ἀκολάστως, πόσα δ' ὑπομένουσιν ἄλλοι τοῦ κερδαίνειν χάριν, πόσα δ' αὖ κακοπαθοῦσιν ἔνιοι θηρώμενοι δόξαν, καὶ ὅτι οὗτοι πάντες ὑπομένουσιν αὐθαίρετοι πᾶσαν ταλαιπωρίαν. ἆρ' οὖν οὐχὶ δεινὸν ἐκείνους μὲν ὑπὲρ οὐδενὸς τῶν καλῶν ἀνέχεσθαι ταῦτα πάσχοντας, ἡμᾶς δ' ὑπὲρ καλοκαγαθίας, καὶ τοῦ κακίαν μὲν ἐκφυγεῖν τὴν λυμαινομένην ἡμῶν τὸν βίον, κτήσασθαι δὲ ἀρετὴν ἥ τις ἁπάντων τῶν ἀγαθῶν ἐστι χορηγός, μὴ πάντα πόνον ἑτοίμως ὑφίστασθαι; καίτοι οὐδ' ἂν εἴποι τις ὅσῳ κρεῖττον ἀντὶ μὲν τοῦ πονεῖν ἵνα τύχῃ τις γυναικὸς ἀλλοτρίας, τὸ πονεῖν ἵνα παιδαγωγήσῃ τὰς ἐπιθυμίας τὰς ἑαυτοῦ· ἀντὶ δὲ τοῦ περὶ χρημάτων ταλαιπωρεῖν τὸ ἀσκεῖν ὥστε ὀλίγων δεῖσθαι· πρὸ δὲ τοῦ πράγματα ἔχειν ὑπὲρ δόξης τὸ πραγματεύεσθαι ὅπως μὴ δοξοκόπος ᾖ· πρὸ δέ γε τοῦ ζητεῖν ὅπως ᾧ φθονεῖ τις κακοποιήσῃ τοῦτον, τὸ σκοπεῖν ὅπως μὴ φθονήσῃ μηδενί· καὶ πρό γε τοῦ δουλεύειν τισὶ καλουμένοις φίλοις, ὥσπερ οἱ κόλακες, τὸ κακοπαθεῖν ἵνα κτήσηται φίλους ἀληθινούς· καθόλου δὲ τοῦ πονεῖν πᾶσιν ἀνθρώποις ἀναγκαίου ὄντος, τοῖς τε τῶν κρειττόνων ὀρεγομένοις καὶ τοῖς τῶν χειρόνων, τὸ μὴ πολλῷ εἶναι προθυμοτέρους πονεῖν τοὺς τὰ κρείττω μετιόντας ἢ οἷς ἐλπίδες μικραὶ τῶν πόνων εἰσίν, ἀτοπώτατον. ἀλλ' οἱ μὲν ἄρα θαυματοποιοὶ δύσκολα οὕτως ὑφίστανται πράγματα καὶ τὴν ζωὴν παραβάλλονται τὴν ἑαυτῶν, οἳ μὲν εἰς μαχαίρας κυβιστῶντες, οἳ δ' ἐπὶ κάλων μετέωροι βαδίζοντες, οἳ δ' ὥσπερ ὄρνεα πετόμενοι διὰ τοῦ ἀέρος, ὧν τὸ σφάλμα θάνατός ἐστι. καὶ ταῦτα πάντα δρῶσι μικροῦ χάριν μισθοῦ· ἡμεῖς δ' οὐκ ἀνεξόμεθα ταλαιπωρεῖν

ὑπὲρ εὐδαιμονίας ὅλης; οὐ γὰρ ἄλλο τί γε τέλος ἐστὶ τοῦ γενέσθαι ἀγαθὸν ἢ τὸ εὐδαιμονεῖν καὶ ζῆν μακαρίως εἰς τὸ λοιπόν. εἰκότως δ' ἄν τις λογίζοιτο καὶ τὸ τῶν ζῴων ἐνίων ὁποῖόν ἐστι, πάνυ τι δυνάμενον ἐντρέπειν ἡμᾶς φιλοπόνους εἶναι. οἱ γοῦν ὄρτυγες καὶ ἀλεκτρυόνες οὔτ' ἀρετῆς ἐπαΐοντες οὐδὲν ὥσπερ ὁ ἄνθρωπος, οὔτε τὸ καλὸν καὶ δίκαιον εἰδότες, οὐδ' ὑπὲρ τοιούτου πονοῦντες οὐθενός, ὅμως μαχόμενοι πρὸς ἀλλήλους καὶ πηρούμενοι ἀνέχονται καὶ μέχρι θανάτου καρτεροῦσιν, ὥστε μὴ ἡττᾶσθαι θατέρου ὁ ἕτερος. πόσῳ δὴ μᾶλλον εἰκὸς ἡμᾶς ἀνέχεσθαί τε καὶ καρτερεῖν, ὅταν ἐπιστώμεθα διά τι τῶν καλῶν κακοπαθοῦντες, ἢ ἵνα φίλοις βοηθήσωμεν ἢ πόλιν ὠφελήσωμεν, ἢ ἵνα γυναικῶν ἢ τέκνων ὑπερμαχήσωμεν, τὸ δὲ μέγιστον καὶ κυριώτατον, ἵν' αὐτοὶ ἀγαθοὶ ὦμεν καὶ δίκαιοι καὶ σώφρονες; ὃ δίχα πόνων οὐ παραγίνεται οὐδενί. ὅθεν ἔπεισί μοι λέγειν, ὡς ὁ μὴ θέλων πονεῖν σχεδὸν καταδικάζει αὐτὸς αὑτοῦ μηδενὸς εἶναι ἀγαθοῦ ἄξιος, ὅτι τὰ ἀγαθὰ πόνῳ πάντα κτώμεθα. ταῦτα μὲν καὶ τοιαῦθ' ἕτερα εἶπε τότε, ἐπεγείρων καὶ παρορμῶν τοὺς παρόντας πόνου μὴ καταφρονεῖν.

76 Ξενοφῶντος (Ven. 12, 1).

Περὶ μὲν αὐτῶν τῶν πράξεων τῶν ἐν τοῖς κυνηγεσίοις εἴρηται· ὠφελήσονται δ' οἱ ἐπιθυμήσαντες τούτου τοῦ ἔργου πολλά. ὑγίειάν τε γὰρ τοῖς σώμασι παρασκευάζει, καὶ ὁρᾶν καὶ ἀκούειν μᾶλλον, γηράσκειν δὲ ἧττον· τὰ δὲ πρὸς τὸν πόλεμον μάλιστα παιδεύει. πρῶτον μὲν γὰρ τὰ ὅπλα ὅταν ἔχοντες πορεύωνται ὁδοὺς χαλεπάς, οὐκ ἀπεροῦσιν· ἀνέξονται γὰρ τοὺς πόνους διὰ τὸ εἰθίσθαι μετὰ τούτων αἱρεῖν τὰ θηρία. ἔπειτα εὐνάζεσθαί τε σκληρῶς δυνατοὶ

ἔσονται καὶ φύλακες εἶναι ἀγαθοὶ τοῦ ἐπιταττομένου· ἐν δὲ ταῖς προσόδοις ταῖς πρὸς τοὺς πολεμίους ἅμα οἷοί τε ἔσονται ἐπιέναι καὶ τὰ παραγγελλόμενα ποιεῖν, διὰ τὸ οὕτω καὶ αὐτοὶ αἱρεῖν τὰς ἄγρας. τεταγμένοι δὲ ἐν τῷ πρόσθεν οὐ λείψουσι τὰς τάξεις, διὰ τὸ καρτερεῖν δύνασθαι. ἐν φυγῇ δὲ τῶν πολεμίων ὀρθῶς καὶ ἀσφαλῶς διώξονται τοὺς ἐναντίους ἐν παντὶ χωρίῳ διὰ συνήθειαν. δυστυχήσαντος δὲ οἰκείου στρατοπέδου ἐν χωρίοις ὑλώδεσι καὶ ἀποκρήμνοις ἢ ἄλλως χαλεποῖς, οἷοί τ' ἔσονταί τε καὶ αὐτοὶ σώζεσθαι μὴ αἰσχρῶς καὶ ἑτέρους σώζειν. ἡ γὰρ συνήθεια τοῦ ἔργου παρέξει αὐτοῖς πλέον τι εἰδέναι. καὶ ἤδη τινὲς τῶν τοιούτων πολλοῦ ὄχλου συμμάχων τρεφθέντος τῇ αὐτῶν εὐταξίᾳ καὶ θράσει διὰ δυσχωρίαν ἁμαρτόντας τοὺς πολεμίους νενικηκότας ἀναμαχόμενοι ἐτρέψαντο. ἀεὶ γάρ ἐστι τοῖς τὰ σώματα καὶ τὰς ψυχὰς εὖ ἔχουσιν ἐγγὺς τὸ εὐτυχῆσαι.

77 Τοῦ αὐτοῦ (ib. 12, 10).

Λέγουσι δέ τινες ὡς οὐ χρὴ ἐρᾶν κυνηγεσίων, ἵνα μὴ τῶν οἰκείων ἀμελῶσιν, οὐκ εἰδότες ὅτι οἱ τὰς πόλεις καὶ τοὺς φίλους εὖ ποιοῦντες πάντες τῶν οἰκείων ἐπιμελέστεροί εἰσιν. εἰ οὖν οἱ φιλοκυνηγέται παρασκευάζουσιν αὐτοὺς τῇ πατρίδι χρησίμους εἶναι τὰ μέγιστα, οὐδ' ἂν τὰ ἴδια ἀργοί εἰσι· σὺν γὰρ τῇ πόλει καὶ σώζεται καὶ ἀπόλλυται τὰ οἰκεῖα ἑκάστου· ὥστε πρὸς τοῖς αὐτῶν καὶ τὰ τῶν ἄλλων ἰδιωτῶν οἱ τοιοῦτοι σώζουσι. πολλοὶ δὲ ὑπὸ φόβου ἀλόγιστοι τῶν ταῦτα λεγόντων αἱροῦνται διὰ τὴν αὐτῶν κακίαν ἀπολέσθαι μᾶλλον ἢ ἑτέρων ἀρετῇ σώζεσθαι. αἱ γὰρ ἡδοναὶ πολλαὶ καὶ κακαί, ὧν ἡττώμενοι λέγειν ἢ πράττειν ἐπαίρονται τὰ χείρω· εἶτα ἐκ μὲν τῶν ματαίων

λόγων ἔχθρας ἀναιροῦνται, ἐκ δὲ τῶν κακῶν ἔργων νόσους καὶ ζημίας καὶ θανάτους καὶ αὐτῶν καὶ παίδων καὶ φίλων, ἀναισθήτως μὲν τῶν κακῶν ἔχοντες, τῶν δὲ ἡδονῶν πλέον τῶν πολλῶν αἰσθανόμενοι.

78 Μουσωνίου περὶ ἀσκήσεως.

Παρώρμα δὲ πρὸς ἄσκησιν τοὺς συνόντας ἐντεταμένως ἀεὶ τοιοῖσδέ τισι λόγοις χρώμενος. ἡ ἀρετή, ἔφη, ἐπιστήμη ἐστὶν οὐ θεωρητικὴ μόνον ἀλλὰ καὶ πρακτική, καθάπερ ἥ τε ἰατρικὴ καὶ ἡ μουσική. δεῖ οὖν ὥσπερ τὸν ἰατρὸν καὶ τὸν μουσικὸν μὴ μόνον ἀνειληφέναι τὰ θεωρήματα τῆς αὐτοῦ τέχνης ἑκάτερον, ἀλλὰ καὶ γεγυμνάσθαι πράττειν κατὰ τὰ θεωρήματα, οὕτω καὶ τὸν ἐσόμενον ἀγαθὸν ἄνδρα μὴ μόνον ἐκμανθάνειν ὅσα μαθήματα φέρει πρὸς ἀρετήν, ἀλλὰ καὶ γυμνάζεσθαι κατὰ ταῦτα φιλοτίμως καὶ φιλοπόνως. ἐπεὶ πῶς μὲν ἂν εὐθὺς γένοιτό τις σώφρων, εἰ μόνον εἰδείη ὅτι οὐ χρὴ ἡττᾶσθαι ἡδονῶν, ἀγύμναστος δ' εἴη ἀντέχειν ταῖς ἡδοναῖς; πῶς δ' ἂν δίκαιός τις γένοιτο, μεμαθηκὼς μὲν ὅτι χρὴ τὸ ἴσον ἀγαπᾶν, μὴ μεμελετηκὼς δὲ φεύγειν τὸ πλεονεκτεῖν; πῶς δ' ἂν ἀνδρίαν κτησαίμεθα, τὸ μὲν ὅτι μὴ φοβερὰ τὰ δοκοῦντα τοῖς πολλοῖς δεινὰ κατανενοηκότες, ἄφοβοι δ' εἶναι εἰς αὐτὰ μὴ μεμελετηκότες; πῶς δ' ἂν φρόνιμοι γενοίμεθα, τὰ μὲν ὡς ἀληθῶς ἀγαθὰ καὶ κακὰ τίνα ἐστὶν ἐγνωκότες, μὴ γεγυμνασμένοι δὲ καταφρονεῖν τῶν δοκούντων ἀγαθῶν; διὸ χρὴ τῇ μαθήσει τῶν προσηκόντων ἀρετῇ ἑκάστῃ μαθημάτων καὶ τὴν ἄσκησιν ἐπακολουθεῖν πάντως, εἴγε μέλλει καὶ αὐτῆς τῆς μαθήσεως ὄφελός τι γενήσεσθαι ἡμῖν. καὶ τοσούτῳ γε χρὴ μᾶλλον ἀσκεῖν τὸν φιλοσοφεῖν ἀξιοῦντα ἤπερ τὸν ἰατρικῆς ἤ τινος τέχνης ὁμοίας ἐφιέμενον, ὅσῳ καὶ μεῖζον καὶ δυσκατεργαστότερον φιλοσοφία

παντὸς ἐπιτηδεύματος ἑτέρου. καὶ γὰρ οὖν ἐπὶ μὲν τὰς ἄλλας τέχνας ἔρχονται οἱ ἐφιέμενοι αὐτῶν, οὐ προδιεφθαρμένοι τὰς ψυχὰς οὐδ' ἐναντία μεμαθηκότες οἷς μαθήσεσθαι μέλλουσιν· οἱ δὲ φιλοσοφεῖν ἐπιχειροῦντες, ἐν διαφθορᾷ γεγενημένοι πρότερον πολλῇ καὶ ἐμπεπλησμένοι κακίας, οὕτω μετίασι τὴν ἀρετήν, ὥστε καὶ ταύτῃ πλείονος δεηθῆναι τῆς ἀσκήσεως. πῶς οὖν καὶ τίνα τρόπον τούτοις ἀσκητέον; ἐπεὶ τὸν ἄνθρωπον οὔτε ψυχὴν εἶναι μόνον συμβέβηκεν οὔτε σῶμα μόνον, ἀλλά τι σύνθετον ἐκ τοῖν δυοῖν τούτοιν, ἀνάγκη τὸν ἀσκοῦντα ἀμφοῖν ἐπιμελεῖσθαι, τοῦ μὲν κρείττονος μᾶλλον ὥσπερ ἄξιον, τουτέστι τῆς ψυχῆς· καὶ θατέρου δέ, εἴγε μέλλει μηδὲν ἐνδεῶς ἔχειν τοῦ ἀνθρώπου μέρος. δεῖ γὰρ δὴ καὶ τὸ σῶμα παρεσκευάσθαι καλῶς πρὸς τὰ σώματος ἔργα τὸ τοῦ φιλοσοφοῦντος, ὅτι πολλάκις αἱ ἀρεταὶ καταχρῶνται τούτῳ ὄντι ὀργάνῳ ἀναγκαίῳ πρὸς τὰς τοῦ βίου πράξεις. τῆς οὖν ἀσκήσεως ἣ μέν τις διὰ τῆς ψυχῆς μόνης γίνοιτ' ἂν ὀρθῶς, ἣ δέ τις κοινὴ ταύτης τε καὶ τοῦ σώματος. κοινὴ μὲν οὖν ἄσκησις ἀμφοῖν γενήσεται, συνεθιζομένων ἡμῶν ῥίγει θάλπει, δίψει λιμῷ, τροφῆς λιτότητι κοίτης σκληρότητι, ἀποχῇ τῶν ἡδέων ὑπομονῇ τῶν ἐπιπόνων. διὰ γὰρ τούτων καὶ τῶν τοιούτων ῥώννυται μὲν τὸ σῶμα καὶ γίνεται δυσπαθές τε καὶ στερεὸν καὶ χρήσιμον πρὸς ἅπαν ἔργον, ῥώννυται δὲ ἡ ψυχὴ γυμναζομένη διὰ μὲν τῆς ὑπομονῆς τῶν ἐπιπόνων πρὸς ἀνδρίαν, διὰ δὲ τῆς ἀποχῆς τῶν ἡδέων πρὸς σωφροσύνην. διὰ δὲ τῆς ψυχῆς ἄσκησίς ἐστι πρῶτον μὲν τὰς ἀποδείξεις προχείρους ποιεῖσθαι, τάς τε περὶ τῶν ἀγαθῶν τῶν δοκούντων ὡς οὐκ ἀγαθά, καὶ τὰς περὶ τῶν κακῶν τῶν δοκούντων ὡς οὐ κακά, καὶ τὰ ἀληθῶς ἀγαθὰ γνωρίζειν τε καὶ διακρίνειν

ἀπὸ τῶν μὴ ἀληθῶς ἐθίζεσθαι· εἶτα δὲ μελετᾶν μήτε φεύγειν μηδὲν τῶν δοκούντων κακῶν μήτε διώκειν μηδὲν τῶν δοκούντων ἀγαθῶν, καὶ τὰ μὲν ἀληθῶς κακὰ πάσῃ μηχανῇ ἐκτρέπεσθαι, τὰ δὲ ἀληθῶς ἀγαθὰ παντὶ τρόπῳ μετέρχεσθαι.

Ἐν κεφαλαίῳ μὲν οὖν σχεδὸν εἴρηται ὁποῖος ἑκάτερος τρόπος ἀσκήσεως· οὐ μὴν ἀλλὰ καὶ κατὰ μέρος ὡς ποιητέον ἕκαστα πειράσομαι εἰπεῖν, οὐ διακρίνων οὐδὲ χωρίζων οὐκέτι τά τε κοινὰ τῆς ψυχῆς καὶ τοῦ σώματος ἀσκήματα καὶ τὰ ἴδια τῆς ψυχῆς, ἀλλ' ἀναμὶξ τὰ ἑκατέρου μέρους διεξιών. οὐκοῦν ἐπειδὴ ταῦτα μὲν τυγχάνομεν ἀκηκοότες τε καὶ ὑπειληφότες, ὅσοι γε φιλοσόφου διατριβῆς μετεσχήκαμεν, ὡς οὔτε πόνος οὔτε θάνατος οὔτε πενία κακὸν οὐδαμῶς ἐστίν, οὐδ' ἄλλο τι τῶν κακίας ἀπηλλαγμένων· οὐδ' αὖ πάλιν ἀγαθὸν πλοῦτος ζωὴ ἡδονή, οὐδ' ἄλλο τι ἕτερον τῶν μὴ μετεχόντων ἀρετῆς· ὅμως δὲ καὶ ταῦθ' ὑπειληφότες διὰ τὴν ἀπὸ παίδων εὐθὺς γεγονυῖαν ἡμῖν διαφθορὰν καὶ τὴν ὑπὸ τῆς διαφθορᾶς συνήθειαν πονηράν, πόνου μὲν προσερχομένου κακὸν ἡγούμεθα προσέρχεσθαι ἑαυτοῖς, ἡδονῆς δὲ παραγινομένης ἀγαθὸν ἡγούμεθα παραγίνεσθαι ἡμῖν· καὶ τὸν μὲν θάνατον ὡς ἐσχάτην συμφορὰν πεφρίκαμεν, τὴν δὲ ζωὴν ὡς τῶν ἀγαθῶν μέγιστον ἀσπαζόμεθα· καὶ διδόντες μὲν ἀργύριον ὡς βλαπτόμενοι λυπούμεθα, λαμβάνοντες δὲ ὡς ὠφελούμενοι χαίρομεν. παραπλησίως δὲ καὶ ἐπὶ πλειόνων ἄλλων οὐκ ἀκολούθως ταῖς ὀρθαῖς ὑπολήψεσι τοῖς πράγμασι χρώμεθα, τῷ δὲ φαύλῳ ἔθει μᾶλλον ἀκολουθοῦμεν. ἐπεὶ οὖν ταῦτα φημὶ ταύτῃ ἔχειν, δεῖ τὸν ἀσκοῦντα ζητεῖν περιγίνεσθαι ἑαυτῷ τῇ μὲν ἡδονῇ μὴ ἀσμενίζειν, τὸν πόνον δὲ μὴ ἐκτρέπεσθαι, καὶ τῷ μὲν ζῆν μὴ φιλη-

δεῖν τὸν δὲ θάνατον μὴ δεδιέναι, καὶ ἐπὶ χρημάτων μὴ προτιμᾶν τοῦ προΐεσθαι τὸ λαμβάνειν.

79 *Πλουτάρχου ἐκ τοῦ περὶ εὐθυμίας* (465 c).

Ὁ μὲν οὖν εἰπὼν ὅτι δεῖ τὸν εὐθυμεῖσθαι μέλλοντα μὴ πολλὰ πρήσσειν μήτε ἰδίῃ μήτε ξυνῇ, πρῶτον μὲν ἡμῖν πολυτελῆ τὴν εὐθυμίαν καθίστησι γινομένην ὤνιον ἀπραξίας, οἷον ἀρρώστῳ παραινῶν ἑκάστῳ "μέν' ὦ ταλαίπωρ' ἀτρέμα σοῖς ἐν δεμνίοις." καίτοι κακὸν μὲν ἀναισθησία σώματι φάρμακον ἀπονοίας· οὐδὲν δὲ βελτίων ψυχῆς ἰατρὸς ὁ ῥαθυμίᾳ καὶ μαλακίᾳ καὶ προδοσίᾳ φίλων καὶ οἰκείων καὶ πατρίδος ἐξαίρων τὸ ταραχῶδες αὐτῆς καὶ λυπηρόν....

Ὅθεν οὐδὲ Ἐπίκουρος οἴεται δεῖν ἡσυχάζειν, ἀλλὰ τῇ φύσει χρῆσθαι πολιτευομένους καὶ πράσσοντας τὰ κοινὰ τοὺς φιλοτίμους καὶ φιλοδόξους, ὡς μᾶλλον ὑπὸ ἀπραγμοσύνης ταράττεσθαι καὶ κακοῦσθαι πεφυκότας, ἂν ὧν ὀρέγωνται μὴ τυγχάνωσιν. ἀλλ' ἐκεῖνος μὲν ἄτοπος οὐ τοὺς δυναμένους τὰ κοινὰ πράττειν προτρεπόμενος, ἀλλὰ τοὺς ἡσυχίαν ἄγειν μὴ δυναμένους. δεῖ δὲ μὴ πλήθει μηδὲ ὀλιγότητι πραγμάτων, ἀλλὰ τῷ καλῷ καὶ τῷ αἰσχρῷ τὸ εὔθυμον ὁρίζειν καὶ τὸ δύσθυμον. τῶν γὰρ καλῶν παράλειψις οὐχ ἧττον ἢ τῶν βλαβερῶν ἡ πρᾶξις ἀνιαρόν ἐστι καὶ ταραχῶδες.

80 *Πρωταγόρου.*

Πρωταγόρας ἔλεγε μηδὲν εἶναι μήτε τέχνην ἄνευ μελέτης μήτε μελέτην ἄνευ τέχνης.

81 *Πλάτωνος* (Polit. VII p. 535).

Πρῶτον μὲν φιλοπονίᾳ οὐ χωλὸν δεῖ εἶναι τὸν ἁψάμενον, τὰ μὲν ἡμίσεα φιλόπονον, τὰ δὲ ἡμίσεα

ἄπονον. ἔστι δὲ τοῦτο, ὅταν τις φιλογυμναστὴς μὲν ᾖ καὶ φιλομόχθηρος καὶ πάντα τὰ διὰ τοῦ σώματος διαπονῇ, μὴ φιλομαθὴς δὲ μηδὲ φιλήκοος μηδὲ ζητητικός, ἀλλ' ἐν πᾶσι τούτοις μισοπονῇ, χωλὸς δὲ καὶ ὁ τἀναντία τούτου μεταβεβληκὼς τὴν φιλοπονίαν.

82 *Ἀπολλώνιος Δίωνι.*

Τὸ μὴ γενέσθαι οὐδέν, τὸ δὲ γενέσθαι πόνος.

83 *Ἀπολλώνιος Δαναῷ.*

Οὐ κάμνει τὰ πράγματα πρασσόμενα.

84 *Ἐκ τῶν Ἐπικτήτου ἀπομνημονευμάτων.*

Εἰδέναι χρή, ὅτι οὐ ῥᾴδιον δόγμα παραγενέσθαι ἀνθρώπῳ, εἰ μὴ καθ' ἑκάστην ἡμέραν τὰ αὐτὰ καὶ λέγοι τις καὶ ἀκούοι καὶ ἅμα χρῷτο πρὸς τὸν βίον.

85 *Νικίου* (Plut. Mor. p. 786 b).

Νικίας οὕτως ἦν φιλόπονος, ὥστε πολλάκις ἐρωτᾶν τοὺς οἰκέτας, εἰ λέλουται καὶ εἰ ἠρίστηκεν.

86 *Ἀρχιμήδης* (Plut. l. l.).

Ἀρχιμήδην δὲ τῇ σανίδι προσκείμενον ἀποσπῶντες βίᾳ οἱ θεράποντες ἤλειφον, ὁ δὲ ἐπὶ τοῦ σώματος ἀληλιμμένου διέγραφε τὰ σχήματα.

87 *Λάμπις* (Plut. Mor. p. 787 a).

Λάμπις ὁ ναύκληρος ἐρωτηθεὶς πῶς ἐκτήσατο τὸν πλοῦτον "οὐ χαλεπῶς" ἔφη "τὸν μέγαν, τὸν δὲ βραχὺν ἐπιπόνως."

88 *Δημοκρίτου.*

Τῆς ἡσυχίης πάντες οἱ πόνοι ἡδίονες, ὅταν ὧν εἵνεκεν πονέουσι τυγχάνωσι ἢ εἰδέωσι κύρσοντες. ἢν δὲ ἀποστέῃ ἐπιτυχίη, τὸ πᾶν ὁμοίως ἀνιηρὸν καὶ ταλαίπωρον.

89 *Αἰσχύλου* (Plut. Mor. p. 79 d).

Αἰσχύλος ἐν Ἰσθμῷ ἀγῶνα ὁρῶν πυκτῶν καὶ ἐπὶ τῇ πληγῇ τοῦ θεάτρου ἐκβοήσαντος, πρὸς Ἴωνα ἔφη "ὁρᾷς οἷόν ἐστιν ἡ ἄσκησις; ὁ πεπληγὼς σιωπᾷ, οἱ δὲ θεώμενοι βοῶσιν."

90 *Ἐκ τῶν Ἀριστοτέλους χρειῶν.*

Δημοσθένης ἐρωτηθεὶς "πῶς τῆς ῥητορικῆς περιεγένου" "πλέον" ἔφη "ἔλαιον οἴνου δαπανήσας."

91 *Δημάδους.*

Δημάδης ἐρωτηθεὶς τίς αὐτοῦ διδάσκαλος γεγονὼς εἴη "τὸ τῶν Ἀθηναίων" ἔφη "βῆμα," ἐμφαίνων, ὅτι ἡ διὰ τῶν πραγμάτων ἐμπειρία κρείττων πάσης σοφιστικῆς διδασκαλίας ἐστίν.

92 *Διογένους.*

Ὁ Διογένης ἔλεγε τὴν Μήδειαν σοφήν, ἀλλ' οὐ φαρμακίδα γενέσθαι· λαμβάνουσαν γὰρ μαλακοὺς ἀνθρώπους καὶ τὰ σώματα διεφθαρμένους ὑπὸ τρυφῆς ἐν τοῖς γυμνασίοις καὶ τοῖς πυριατηρίοις διαπονεῖν καὶ ἰσχυροὺς ποιεῖν καὶ σφριγῶντας· ὅθεν περὶ αὐτῆς ῥυῆναι τὴν δόξαν, ὅτι τὰ κρέα ἕψουσα νέους ἐποίει.

93 *Πλάτωνος ἐκ τοῦ Φαίδρου* (p. 258 d).

Τίς οὖν ὁ τρόπος τοῦ καλῶς τε καὶ μὴ γράφειν; δεόμεθά τι, ὦ Φαῖδρε, Λυσίαν τε περὶ τούτων ἐξετάσαι, καὶ ἄλλων ὅστις πώποτέ τι γέγραφεν ἢ γράψει, εἴτε πολιτικὸν σύγγραμμα εἴτε ἰδιωτικόν, ἐν μέτρῳ ὡς ποιητὴς ἢ ἄνευ μέτρου ὡς ἰδιώτης; Ἐρωτᾷς εἰ δεόμεθα; τίνος μὲν οὖν ἕνεκά τις, ὡς εἰπεῖν, ζῴη ἀλλ' ἢ τῶν τοιούτων ἡδονῶν ἕνεκα; οὐ γάρ που ἐκείνων γε ὧν προλυπηθῆναι δεῖ, ἢ μηδὲ ἡσθῆναι· ὃ δὴ ὀλίγου

πᾶσαι αἱ περὶ τὸ σῶμα ἡδοναὶ ἔχουσι, διο καὶ δικαίως ἀνδραποδώδεις κέκληνται.

94 Ξενοφῶντος ἐν α΄ (2, 57) ἀπομνημονευμάτων.

Σωκράτης ἐπιδιωμολογήσατο τὸ μὲν ἐργάτην εἶναι ὠφέλιμόν τε ἀνθρώπῳ καὶ ἀγαθόν, τὸ δὲ ἀργὸν βλαβερόν τε καὶ κακόν, καὶ τὸ μὲν ἐργάζεσθαι ἀγαθόν, τὸ δὲ ἀργεῖν κακόν. τοὺς μὲν ἀγαθόν τι ποιοῦντας ἐργάζεσθαι ἔφη καὶ ἐργάτας ἀγαθοὺς εἶναι· τοὺς δὲ κυβεύοντας ἢ ἄλλο τι πονηρὸν καὶ ἐπιζήμιον ποιοῦντας ἀργοὺς ἀπεκάλει. ἐκ δὲ τούτων ὀρθῶς ἂν ἔχοι "ἔργον δ' οὐδὲν ὄνειδος, ἀεργίη δέ τ' ὄνειδος."

95 Ξενοφῶντος ἐν α΄ (2, 19) ἀπομνημονευμάτων.

Ἴσως οὖν εἴποιεν ἂν πολλοὶ τῶν φασκόντων φιλοσοφεῖν, ὅτι οὐκ ἄν ποτε ὁ δίκαιος ἄδικος γένοιτο, οὐδὲ ὁ σώφρων ὑβριστής, οὐδὲ ἄλλο οὐδὲν ὧν μάθησίς ἐστιν ὁ μαθών, ἀνεπιστήμων ἄν ποτε γένοιτο. ἐγὼ δὲ περὶ τούτων οὐχ οὕτω γιγνώσκω· ὁρῶ γάρ, ὥσπερ τὰ τοῦ σώματος ἔργα τοὺς μὴ τὰ τοῦ σώματος ἀσκοῦντας οὐ δυναμένους ποιεῖν, οὕτω καὶ τὰ τῆς ψυχῆς ἔργα τοὺς μὴ τὴν ψυχὴν ἀσκοῦντας οὐ δυναμένους· οὔτε γὰρ ἃ δεῖ πράττειν οὔτε ὧν δεῖ ἀπέχεσθαι δύνανται. διὸ καὶ τοὺς υἱεῖς οἱ πατέρες, κἂν ὦσι σώφρονες, ὅμως ἀπὸ τῶν πονηρῶν ἀνθρώπων εἴργουσιν, ὡς τὴν μὲν τῶν χρηστῶν ὁμιλίαν ἄσκησιν οὖσαν τῆς ἀρετῆς, τὴν δὲ τῶν πονηρῶν κατάλυσιν. μαρτυρεῖ δὲ καὶ τῶν ποιητῶν ὅ τε λέγων

ἐσθλῶν μὲν γὰρ ἀπ' ἐσθλὰ διδάξεαι· ἢν δὲ κακοῖσι
συμμιγῇς, ἀπολεῖς καὶ τὸν ἐόντα νόον.

καὶ ὁ λέγων

αὐτὰρ ἀνὴρ ἀγαθὸς τοτὲ μὲν κακὸς ἄλλοτε δ' ἐσθλός.

κἀγὼ δὲ μαρτυρῶ τοῦτό γε· ὁρῶ γὰρ ὥσπερ τῶν ἐν μέτρῳ πεποιημένων ἐπῶν τοὺς μὴ μελετῶντας ἐπιλανθανομένους, οὕτω καὶ τῶν διδασκαλικῶν λόγων τοῖς ἀμελοῦσι λήθην ἐγγιγνομένην. ὅταν δὲ τῶν νουθετικῶν λόγων ἐπιλάθηταί τις, ἐπιλέλησται καὶ ὧν ἡ ψυχὴ πάσχουσα τῆς σωφροσύνης ἐπιθυμεῖ. τούτων δ' ἐπιλαθόμενον οὐδὲν θαυμαστὸν καὶ τῆς σωφροσύνης ἐπιλαθέσθαι. ὁρῶ δὲ καὶ τοὺς εἰς φιλοποσίαν προαχθέντας, καὶ τοὺς εἰς ἔρωτας ἐγκυλισθέντας, ἧττον δυναμένους τῶν τε δεόντων ἐπιμελεῖσθαι, καὶ τῶν μὴ δεόντων ἀπέχεσθαι· πολλοὶ γὰρ καὶ χρημάτων δυνάμενοι φείδεσθαι πρὶν ἐρᾶν, ἐρασθέντες οὐκέτι δύνανται· καὶ τὰ χρήματα καταναλώσαντες, ὧν πρόσθεν ἀπείχοντο κερδῶν, αἰσχρὰ νομίζοντες εἶναι, τούτων οὐκ ἀπέχονται. πῶς οὖν οὐκ ἐνδέχεται σωφρονήσαντα πρόσθεν, αὖθις μὴ σωφρονεῖν; καὶ δίκαια δυνηθέντα πράττειν, αὖθις ἀδυνατεῖν; πάντα μὲν οὖν ἔμοιγε δοκεῖ τὰ καλὰ καὶ τὰ ἀγαθὰ ἀσκητὰ εἶναι, οὐχ ἥκιστα δὲ σωφροσύνη· ἐν τῷ γὰρ αὐτῷ σώματι συμπεφυτευμέναι τῇ ψυχῇ αἱ ἡδοναὶ πείθουσιν αὐτὴν μὴ σωφρονεῖν, ἀλλὰ τὴν ταχίστην ἑαυταῖς τε καὶ τῷ σώματι χαρίζεσθαι.

96 Ἐκ τῶν Σερήνου.

Συβαρίτης ἐπιδημήσας Λακεδαίμονι καὶ τὰ ἔθη ἰδὼν καὶ τὰς καρτερήσεις, οἷς ἐκ παίδων ἀνατρέφονται, οὐδὲν ἔφη θαυμαστὸν αὐτοὺς ποιεῖν ῥᾳδίως ἐν τοῖς πολέμοις ἀποθνήσκοντας ὑπὲρ τοῦ μὴ οὕτω ζῆν.

97 Πλάτωνος (Theaet. p. 153 b).

Ἡ τῶν σωμάτων ἕξις ὑπὸ ἡσυχίας μὲν καὶ ἀργίας

διόλλυται, ὑπὸ γυμνασίων δὲ καὶ κινήσεων ὡς ἐπιτοπολὺ σώζεται· ἡ δ' ἐν τῇ ψυχῇ ἕξις ὑπὸ μαθήσεως μὲν καὶ μελέτης, κινήσεων οὐσῶν, κτᾶταί τε μαθήματα καὶ σώζεται καὶ γίνεται βελτίων· ὑπὸ δὲ ἡσυχίας ἀμελετησίας τε καὶ ἀμαθίας οὔσης οὔτε τι μανθάνει, ἅ τε ἂν μάθῃ ἐπιλανθάνεται.

98 Κηφισοδώρου.

Κηφισόδωρος ἔλεγεν, ὅτι οὐδεὶς οὐσίαν ἣν αὐτὸς ἐκτήσατο κατέφαγεν, ἣν δὲ παρ' ἄλλου παρέλαβε.

99 Πυθαγόρου.

Πυθαγόρας παρῄνει τοῖς ἑταίροις αἱρεῖσθαι βίον τὸν ἄριστον· καὶ γὰρ εἰ ὁ ἐπιπονώτατος εἴη, ἀλλὰ τὴν συνήθειαν ἡδὺν αὐτὸν ποιήσειν.

100 Διονυσίου.

Διονύσιος Λακωνικὸν μάγειρον πριάμενος ἐκέλευσεν αὐτὸν σκευάσαι τὸν Λακωνικὸν ζωμόν· καὶ σκευάσαντος οὐκ ἤσθιεν, ἤρετο δὲ κατὰ τί αὐτῷ ἥδονται ἀηδεστάτῳ ὄντι οἱ Λάκωνες· ὃ δὲ οὐκ ἔχειν ἔφη τοῦτον τὰ ἡδύσματα ἃ ἐκεῖνος ἔχει, διὰ τοῦτο αὐτῷ μὴ ἀρέσαι. καὶ ὃς ἐπύθετο τίνα εἴη ταῦτα· αὐτὸν γὰρ κελεῦσαι τῷ ταμίᾳ πάντα ἔκπλεα αὐτῷ δοῦναι· ὃ δ' εἶπεν "ἃ μὴ ἔστι παρὰ σοί, πρὸ τοῦ δείπνου πόνος καὶ τὸ ἐν τῷ Εὐρώτῃ λουτρόν."

101 Πλάτωνος ἐκ τοῦ Λάχητος (p. 188 a).

Καὶ οὐδὲν οἶμαι κακὸν εἶναι τὸ ὑπομιμνήσκεσθαι, ὅτι μὴ καλῶς ἢ πεποιήκαμεν ἢ ποιοῦμεν· ἀλλ' εἰς τὸν ἔπειτα βίον προμηθέστερον ἀνάγκη τὸν ταῦτα εἶναι μὴ φεύγοντα, ἀλλ' ἐθέλοντα κατὰ τὸ τοῦ Σόλωνος καὶ ἀξιοῦντα μανθάνειν ἕως ἂν ζῇ, καὶ μὴ οἰόμενον αὐτῷ τὸ γῆρας νοῦν ἔχον προσιέναι.

102 Ἐν ταυτῷ (194 d).

Πολλάκις ἀκήκοά σου λέγοντος, ὅτι ταυτὰ ἀγαθὸς ἕκαστος ἡμῶν ἅπερ σοφός, ἃ δὲ ἀμαθής, ταῦτα δὲ κακός.

103 Πλάτωνος ἐκ τοῦ Φαίδρου (p. 258 e).

Σχολὴ μὲν δὴ ὡς ἔοικε, καὶ ἅμα μοι δοκοῦσιν ὡς ἐν τῷ πνίγει ὑπὲρ κεφαλῆς ἡμῶν οἱ τέττιγες ᾄδοντες καὶ ἀλλήλοις διαλεγόμενοι καθορᾶν καὶ ἡμᾶς. εἰ οὖν ἴδοιεν καὶ νὼ καθάπερ τοὺς πολλοὺς ἐν μεσημβρίᾳ μὴ διαλεγομένους, ἀλλὰ νυστάζοντας καὶ κηλουμένους ὑφ᾽ αὑτῶν δι᾽ ἀργίαν τῆς διανοίας, δικαίως ἂν καταγελῷεν, ἡγούμενοι ἀνδράποδ᾽ ἄττα σφίσιν ἐλθόντα εἰς τὸ καταγώγιον, ὥσπερ προβάτια μεσημβριάζοντα περὶ τὴν κρήνην εὕδειν· ἐὰν δὲ ὁρῶσι διαλεγομένους καὶ παραπλέοντας σφᾶς, ὥσπερ Σειρῆνας, ἀκηλήτους, ὃ γέρας παρὰ θεῶν ἔχουσιν ἀνθρώποις διδόναι, τάχ᾽ ἂν δοῖεν ἀγασθέντες. Ἔχουσι δὲ δὴ τί τοῦτο; ἀνήκοος γάρ, ὡς ἔοικε, τυγχάνω ὤν. Οὐ μὲν δὴ πρέπει γε φιλόμουσον ἄνδρα τῶν τοιούτων ἀνήκοον εἶναι. λέγεται δ᾽ ὥς ποτ᾽ ἦσαν οὗτοι ἄνθρωποι τῶν πρὶν Μούσας γεγονέναι· γενομένων δὲ Μουσῶν καὶ φανείσης ᾠδῆς, οὕτως ἄρα τινὲς τῶν τότε ἐξεπλάγησαν ὑφ᾽ ἡδονῆς, ὥστε ᾄδοντες ἠμέλησαν σίτων τε καὶ ποτῶν καὶ ἔλαθον τελευτήσαντες αὑτούς. ἐξ ὧν τὸ τεττίγων γένος μετ᾽ ἐκείνων φύεται, γέρας τοῦτο παρὰ Μουσῶν λαβόν, μηδὲν τροφῆς δεῖσθαι γενόμενον, ἀλλ᾽ ἄσιτόν τε καὶ ἄποτον εὐθὺς ᾄδειν, ἕως ἂν τελευτήσῃ· καὶ μετὰ ταῦτα ἐλθὸν παρὰ Μούσας ἀπαγγέλλειν, τίς τίνα αὐτῶν τιμᾷ τῶν ἐνθάδε. Τερψιχόρῃ μὲν οὖν τοὺς ἐν τοῖς χοροῖς τετιμηκότας αὐτὴν ἀπαγγέλλοντες, ποιοῦσι προσφιλεστέρους· τῇ δὲ Ἐρατοῖ

τοὺς ἐν τοῖς ἐρωτικοῖς, καὶ ταῖς ἄλλαις οὕτω κατὰ τὸ εἶδος ἑκάστης τιμῆς· τῇ δὲ πρεσβυτάτῃ Καλλιόπῃ καὶ τῇ μετ' αὐτὴν Οὐρανίᾳ τοὺς ἐν φιλοσοφίᾳ διάγοντάς τε καὶ τιμῶντας τὴν ἐκείνων μουσικὴν ἀγγέλλουσιν· αἳ δὴ μάλιστα τῶν Μουσῶν, περί τε οὐρανὸν καὶ λόγους οὖσαι θείους τε καὶ ἀνθρωπίνους, ἱᾶσι καλλίστην φωνήν.

ΠΕΡΙ ΑΡΓΙΑΣ. Λ.

1 Εὐριπίδου Ἀντιόπη.

Ἀνὴρ γὰρ ὅστις εὖ βίον κεκτημένος
τὰ μὲν κατ' οἴκους ἀμελίᾳ παρεὶς ἐᾷ,
μολπαῖσι δ' ἡσθεὶς τοῦτ' ἀεὶ θηρεύεται,
ἀργὸς μὲν οἴκοις καὶ πόλει γενήσεται,
φίλοισι δ' οὐδείς. ἡ φύσις γὰρ οἴχεται,
ὅταν γλυκείας ἡδονῆς ἥσσων τις ᾖ.

2 Εὐριπίδου Ἱππολύτου (379).

Τὰ χρήστ' ἐπιστάμεσθα καὶ γιγνώσκομεν,
οὐκ ἐκπονοῦμεν δ', οἳ μὲν ἀργίας ὕπο,
οἳ δ' ἡδονὴν προθέντες ἀντὶ τοῦ καλοῦ
ἄλλην τιν'· εἰσὶ δ' ἡδοναὶ πολλαὶ βίου,
μακραὶ δὲ λέσχαι καὶ σχολή, τερπνὸν κακόν.

3 Τοῦ αὐτοῦ Ἑκάβῃ (375).

Ὅστις γὰρ οὐκ εἴωθε γεύεσθαι πόνων,
φέρει μέν, ἀλγεῖ δ' αὐχέν' ἐντιθεὶς ζυγῷ·
θανὼν δ' ἂν εἴη μᾶλλον εὐτυχέστερος
ἢ ζῶν. τὸ γὰρ ζῆν ἐν κακοῖς πόνος μέγας.

4 Φιλήμονος.

Ὦ Κλέων, παῦσαι φλυαρῶν· ἂν ὀκνῇς τὸ μανθάνειν,

ἀνεπικούρητον σεαυτοῦ τὸν βίον λήσει ποιῶν.
οὔτε γὰρ ναυαγός, ἂν μὴ γῆς λάβηται φερόμενος,
οὔποτ' ἂν σώσειεν αὑτόν, οὔτ' ἀνὴρ πένης γεγὼς
μὴ οὐ τέχνην μαθὼν δύναιτ' ἂν ἀσφαλῶς ζῆν τὸν βίον.
κἂν μὲν ὁρμισθῇ τις ἡμῶν εἰς λιμένα τὸν τῆς τέχνης,
ἐβάλετ' ἄγκυραν καθάψας ἀσφαλείας οὕνεκα·
ἂν δ' ἀπαίδευτος μετάσχῃ πνεύματος φορούμενος,
τῆς ἀπορίας εἰς τὸ γῆρας οὐκ ἔχει σωτηρίαν.
ἀλλὰ χρήματ' ἔστιν ἡμῖν· ἅ γε τάχιστ' ἀπόλλυται.
κτήματ', οἰκίαι· τύχης δὲ μεταβολὰς οὐκ ἀγνοεῖς,
ὅτι τὸν εὔπορον τίθησι πτωχὸν εἰς τὴν αὔριον·
ἀλλ' ἑταῖροι καὶ φίλοι σοι καὶ συνήθεις νὴ Δία
ἔρανον εἰσοίσουσιν· εὔχου μὴ λαβεῖν πεῖραν φίλων.
εἰ δὲ μή, γνώσει σεαυτὸν ἄλλο μηδὲν πλὴν σκιάν.

5 Ἡσιόδου ἔργων καὶ ἡμερῶν (303).

Τῷδε θεοὶ νεμεσῶσι καὶ ἀνέρες, ὅστις ἀεργὸς
ζώῃ, κηφήνεσσι κοθούροις εἴκελος ὀργήν,
οἵτε μελισσάων κάματον νήποινον ἔδουσι.

6 Σοφοκλέους Ἰφιγενείας.

Τίκτει γὰρ οὐδὲν ἐσθλὸν εἰκαία σχολή.
Θεὸς δὲ τοῖς ἀργοῦσιν οὐ παρίσταται.

7 Μενάνδρου Ἐπιτρεπόντων.

Ἀργὸς δ' ὑγιαίνων τοῦ πυρέττοντος πολὺ
ἀθλιώτερος, διπλάσια γοῦν ἐσθίει μάτην.

8 Ἀλέξιδος ἐξ Ἀτθίδος.

Ὅστις ἥδεται γὰρ ἐσθίων
ὁσημέραι, δεῖ καὶ ποιεῖν τῶν σιτίων
ἐπάξιόν τι, μηδὲ περινοστεῖν σχολὴν
ἄγοντα, τῷ ζῆν πολεμιώτατον κακόν.

9 *Εὐριπίδου Ἀντιόπης.*
Πολλοὶ δὲ θνητῶν τοῦτο πάσχουσιν κακόν,
γνώμῃ φρονοῦντες οὐ θέλουσ' ὑπηρετεῖν
ψυχῇ, τὰ πολλὰ πρὸς φίλων νικώμενοι.

10 *Ἡσιόδου ἔργων* (498).
Πολλὰ δ' ἀεργὸς ἀνὴρ κενεὴν ἐπὶ ἐλπίδα μίμνων,
χρηίζων βιότοιο, κακὰ προσελέξατο θυμῷ.
ἐλπὶς δ' οὐκ ἀγαθὴ κεχρημένον ἄνδρα κομίζει
ἥμενον ἐν λέσχῃ, τῷ μὴ βίος ἄρκιος εἴη.

11 *Εὐριπίδου Μελανίππῃ.*
Ἀργὸς πολίτης κεῖνος ὡς κακός γ' ἀνήρ.

12 *Τοῦ αὐτοῦ* (El. 80).
Ἀργὸς γὰρ οὐδεὶς θεοὺς ἔχων ἀνὰ στόμα
βίον δύναιτ' ἂν συλλέγειν ἄνευ πόνων.

13 *Ἀνάξαρχος ἔλεγεν· εἰ μέν τινί τις καταράσαιτο ἀχρήστους αὐτῷ γενέσθαι τὰς χεῖρας καὶ τοὺς πόδας, ὀργίζεσθαι ἂν αὐτῷ, τοὺς δὲ πλουσίους ἔργῳ ἀχρήστους τοὺς πόδας καὶ τὰς χεῖρας ποιοῦντας αὐτῶν μακαρίζειν σφᾶς ἐπὶ τούτῳ.*

14 . *Δημοσθένους* (Olynth. 1 p. 13 R).
Πρὸς θεῶν τίς οὕτως εὐήθης ὑμῶν ὅστις ἀγνοεῖ τὸν ἐκεῖθεν πόλεμον δεῦρ' ἥξοντα, ἂν ἀμελήσωμεν; ἀλλὰ μὴν εἰ τοῦτο γενήσεται, δέδοικα, ὦ Ἀθηναῖοι, μὴ τὸν αὐτὸν τρόπον ὥσπερ οἱ δανειζόμενοι ῥᾳδίως ἐπὶ τοῖς μεγάλοις τόκοις, μικρὸν εὐπορήσαντες χρόνον, ὕστερον καὶ τῶν ἀρχαίων ἀπέστησαν· οὕτω καὶ ἡμεῖς ἂν ἐπιπολὺ φανῶμεν ἐρρᾳθυμηκότες, καὶ ἅπαντα πρὸς ἡδονὴν ζητοῦντες, πολλὰ καὶ χαλεπὰ ὧν οὐκ ἐβουλόμεθα ὕστερον εἰς ἀνάγκην ἔλθωμεν ποιεῖν, καὶ κινδυνεύσωμεν περὶ τῶν ἐν αὐτῇ τῇ χώρᾳ.

15 *Εὐσεβίου.*

Σῶμα ἀργίη τήκει, ψυχὴν δὲ ἀμελετησίη ἀσκήσιος τῶν αὐτὴν ἀειρόντων πρὸς τὸ θεοειδέστατον.

16 *Ξενοφῶντος ἐν γ'* (9, 9) *ἀπομνημονευμάτων.*

Σχολὴν δὲ σκοπῶν τί εἴη, ποιοῦντας μέν τι τοὺς πλείστους εὑρίσκειν ἔφη· καὶ γὰρ τοὺς πεττεύοντας καὶ τοὺς γελωτοποιοῦντας ποιεῖν τι, πάντας δὲ τούτους ἔφη σχολάζειν· ἐξεῖναι γὰρ αὐτοῖς ἰέναι πράξοντας τὰ βελτίω τούτων· ἀπὸ μέντοι τῶν βελτιόνων ἐπὶ τὰ χείρω ἰέναι οὐδένα σχολάζειν· εἰ δέ τις ἴοι, τοῦτον ἀσχολίας αὐτῷ οὔσης κακῶς ἔφη τοῦτο πράττειν.

17 *Πλάτωνος* (Leg. VII p. 807 e).

Τὸ γὰρ ὅλην διατελεῖν ἡντινοῦν νύκτα καθεύδοντα, καὶ ὁντινοῦν τῶν πολιτῶν, καὶ μὴ φανερὸν εἶναι πᾶσι τοῖς οἰκέταις ἐγειρόμενόν τε καὶ ἐξανιστάμενον ἀεὶ πρῶτον, τοῦτ' αἰσχρὸν δεῖ δεδόχθαι πᾶσι καὶ οὐκ ἐλευθέρου, εἴτ' οὖν νόμον εἴτ' ἐπιτήδευμα τὸ τοιοῦτον καλεῖν ἐστι χρεών. καὶ δὴ δέσποιναν ἐν οἰκίᾳ ὑπὸ θεραπαινίδων ἐγείρεσθαί τινων, καὶ μὴ πρώτην αὐτὴν ἐγείρειν τὰς ἄλλας, αἰσχρὸν λέγειν χρὴ πρὸς αὑτοὺς δούλην τε καὶ δοῦλον καὶ παῖδα, καὶ εἴ πως ἦν οἷόν τε ὅλην καὶ πᾶσαν τὴν οἰκίαν. ἐξεγειρομένους δὲ νύκτωρ δεῖ πάντως πράττειν τῶν τε πολιτικῶν μέρη πολλὰ καὶ τῶν οἰκονομικῶν, ἄρχοντας μὲν κατὰ πόλιν, δεσποίνας δὲ καὶ δεσπότας ἐν οἰκίαις ἰδίαις. ὕπνος γὰρ δὴ πολὺς οὔτε τοῖς σώμασιν οὔτε ταῖς ψυχαῖς ἡμῶν οὐδ' αὖ ταῖς πράξεσι ταῖς περὶ ταῦτα πάντα ἁρμόττων ἐστὶ κατὰ φύσιν. καθεύδων γὰρ οὐδεὶς οὐδενὸς ἄξιος, οὐδὲν μᾶλλον τοῦ μὴ ζῶντος. ἀλλ' ὅστις τοῦ ζῆν ἡμῶν καὶ τοῦ

φρονεῖν μάλιστά ἐστι κηδεμών, ἐγρήγορε χρόνον ὡς πλεῖστον, τὸ πρὸς ὑγίειαν αὐτοῦ φυλάττων μόνον χρήσιμον· ἔστι δὲ τοῦτ' οὐ πολὺ καλῶς εἰς ἔθος ἰόν. ἐγρηγορότες δὲ ἄρχοντες ἐν πόλεσι νύκτωρ, φοβεροὶ μὲν κακοῖς, πολεμίοις ἅμα καὶ πολίταις, ἀγαστοὶ δὲ καὶ τίμιοι τοῖς δικαίοις τε καὶ σώφροσιν, ὠφέλιμοι δὲ αὐτοῖς τε καὶ ξυμπάσῃ τῇ πόλει.

ΠΕΡΙ ΑΙΔΟΥΣ. ΛΑ.

1 *Εὐριπίδου Γέννη.*

Αἰδὼς γὰρ ὀργῆς πλεῖον ὠφελεῖ βροτούς.

2 *Εὐριπίδου Ἰφιγενείας* (Aul. 378).

Βούλομαί σ' εἰπεῖν κακῶς εὖ βραχέα, μὴ λίαν ἄνω
βλέφαρα πρὸς τἀναιδὲς ἀγαγών, ἀλλὰ σωφρονεστέρως,
ὡς ἀδελφὸν ὄντ'. ἀνὴρ γὰρ χρηστὸς αἰδεῖσθαι φιλεῖ.

3 *Τοῦ αὐτοῦ Ἱππολύτου.*

Ὦ πότνι' αἰδώς, εἴθε τοῖς πᾶσιν βροτοῖς
συνοῦσα τἀναίσχυντον ἐξῄρου φρενῶν.

4 *Ἡσιόδου* (Op. 318).

Αἰδὼς ἥτ' ἄνδρας μέγα σίνεται ἠδ' ὀνίνησιν.

5 *Μενάνδρου Ὁμοπατριῶν.*

Ἅπας ἐρυθριῶν χρηστὸς εἶναί μοι δοκεῖ.

6 *Μουσωνίου.*

Αἰδοῦς παρὰ πᾶσιν ἄξιος ἔσῃ, ἐὰν πρῶτον ἄρξῃ σαυτὸν αἰδεῖσθαι.

7 *Δημοκρίτου.*

Φαῦλον, κἂν μόνος ᾖς, μήτε λέξῃς μήτ' ἐργάσῃ,

μάθε δὲ πολὺ μᾶλλον τῶν ἄλλων σεαυτὸν αἰσχύνεσθαι.

8 *Πυθιάδος.*

Πυθιὰς ἡ Ἀριστοτέλους τοῦ φιλοσόφου θυγάτηρ ἐρωτηθεῖσα ποῖον κάλλιστον χρῶμα, ἔφη τὸ διὰ τὴν αἰδῶ τοῖς ἐλευθέροις ἐπιγιγνόμενον.

9 *Ἰαμβλίχου Σωπάτρῳ περὶ ἀρετῆς.*

Τοιαῦτα δ' ἂν εἴη καὶ τὰ τῆς αἰδοῦς ἀντεχόμενα, τιμῶντα μὲν τὰ χρηστὰ ἤθη, δι' ἣν τῶν αἰσχρῶν πάντων ἀπεχόμεθα, τὴν δὲ ἀναίδειαν ἐξορίζοντα τῆς ψυχῆς, δι' ἣν ὑπὸ τῶν αἰσχρῶν οἱ πολλοὶ ἁλίσκονται.

10 *Θεοφράστου.*

Αἰδοῦ σαυτόν, καὶ ἄλλον οὐκ αἰσχυνθήσει.

11 *Κάτωνος.*

Μάλιστα δ' ἐνόμιζε δεῖν ἕκαστον αἰδεῖσθαι ἑαυτόν· μηδένα γὰρ ἑαυτοῦ μηδέποτε χωρὶς εἶναι.

12 *Στασίνου.*

Ζῆνα δὲ τὸν ῥέξαντα, καὶ ὃς τάδε πάντ' ἐφύτευσεν,
οὐκ ἐθέλεις εἰπεῖν. ἵνα γὰρ δέος, ἔνθα καὶ αἰδώς.

13 *Ὁμήρου* (Il. γ', 172).

Αἰδοῖός τέ μοι ἐσσί, φίλε ἑκυρέ, δεινός τε.

14 *Τοῦ αὐτοῦ* (Od. ρ', 188).

Ἀλλὰ τὸν αἰδέομαι καὶ δείδια.

15 *Εὐριπίδου ἐκ Κρεσφόντου.*

Αἰδὼς ἐν ὀφθαλμοῖσι γίγνεται, τέκνον.

16 *Θεόγνιδος* (409).

Οὐδένα θησαυρὸν καταθήσεαι ἔνδον ἀμείνω
αἰδοῦς, ἣν ἀγαθοῖς ἀνδράσι, Κύρνε, δίδως.

17 Ἀγάθωνος.
Ἀδικεῖν νομίζων ὄψιν αἰδοῦμαι φίλων.

18 Πλάτωνος ἐκ τοῦ Εὐθύφρονος (p. 12).
Λέγω γὰρ δὴ τὸ ἐναντίον ἢ ὁ ποιητὴς ἐποίησεν ὁ ποιήσας

Ζῆνα δὲ τὸν ῥέξαντα, καὶ ὃς τάδε πάντ' ἐφύτευσεν,
οὐκ ἐθέλεις εἰπεῖν. ἵνα γὰρ δέος, ἔνθα καὶ αἰδώς.

ἐγὼ οὖν τούτῳ διαφέρομαι τῷ ποιητῇ· εἴπω σοι ὅπῃ; Πάνυ γε. Οὐ δοκεῖ μοι εἶναι ἵνα δέος, ἔνθα καὶ αἰδώς· πολλοὶ γάρ μοι δοκοῦσι καὶ νόσους καὶ πενίας καὶ ἄλλα πολλὰ τοιαῦτα δεδιότες, δεδιέναι μέν, αἰδεῖσθαι δὲ μηδὲν ταῦτα ἃ δεδίασιν· οὐ καὶ σοὶ δοκεῖ; Πάνυ γε. Ἀλλ' ἵνα γε αἰδώς, ἔνθα καὶ δέος εἶναι. ἐπεὶ ἔστιν ὅστις αἰδούμενός τι πρᾶγμα καὶ αἰσχυνόμενος οὐ πεφόβηταί τε καὶ δέδοικεν ἅμα δόξαν πονηρίας; Δέδοικε μὲν οὖν. Οὐκ ἄρα ὀρθῶς ἔχει λέγειν "ἵνα γὰρ δέος, ἔνθα καὶ αἰδώς·" ἀλλ' ἵνα μὲν αἰδώς, ἔνθα καὶ δέος. οὐ μέντοι γε ἵνα γε δέος, πανταχοῦ αἰδώς· ἐπιπλέον γὰρ οἶμαι δέος αἰδοῦς· μόριον γὰρ αἰδὼς δέους ὥσπερ ἀριθμοῦ περιττόν, ὥστε οὐχ ἵνα περ ἀριθμός, ἔνθα καὶ περιττόν, ἵνα δὲ περιττόν, ἔνθα καὶ ἀριθμός.

ΠΕΡΙ ΑΝΑΙΔΕΙΑΣ. ΛΒ.

1 Μενάνδρου.
Ἀπερυθριᾷ πᾶς, ἐρυθριᾷ δ' οὐδεὶς ἔτι.

2 *Διφίλου.*

Ὃς δ' οὔτ' ἐρυθριᾶν οἶδεν οὔτε δεδιέναι,
τὰ πρῶτα πάσης τῆς ἀναιδείας ἔχει.

3 *Διφίλου.*

Οὐκ ἔστ' ἀναιδοῦς ζῷον εὐθαρσέστερον.

3a *Κακὴ γὰρ αἰδὼς ἔνθα τἀναιδὲς κρατεῖ.*

4 *Θεόγνιδος* (647).

Ἤδη νῦν αἰδὼς μὲν ἐν ἀνθρώποισιν ὄλωλεν,
αὐτὰρ ἀναιδείη γαῖαν ἐπέρχεθ' ὁμῶς.

5 *Εὐριπίδου Μηδείᾳ* (469).

Οὔ τοι θράσος τόδ' ἐστὶν οὐδ' εὐτολμία,
φίλους κακῶς δράσαντ' ἐναντίον βλέπειν·
ἀλλ' ἡ μεγίστη τῶν ἐν ἀνθρώποις νόσων
πασῶν ἀναίδει'. εὖ δ' ἐποίησας μολών.

6 *Θεοδέκτου.*

Ἅπαντ' ἐν ἀνθρώποισι γηράσκειν ἔφυ,
[καὶ πρὸς τελευτὴν ἔρχεται τὴν τοῦ χρόνου]
πλὴν ὡς ἔοικε τῆς ἀναιδείας μόνον.
αὕτη δ' ὅσῳπερ αὔξεται θνητῶν γένος,
τοσῷδε μείζων γίγνεται καθ' ἡμέραν.

7 *Μενάνδρου Καρίνῃ.*

Ὦ μεγίστη τῶν θεῶν
νῦν οὖσ' ἀναίδει', εἰ θεὸν καλεῖν σε δεῖ.
δεῖ δέ· τὸ κρατοῦν γὰρ νῦν νομίζεται θεός.
ἐφ' ὅσον βαδίζεις; ἐφ' ὅσον ἥξειν μοι δοκεῖς;

8 *Ἡροδότου ἱστοριῶν α'* (8).

Ἅμα δὲ κιθῶνι ἐκδυομένῳ ἐκδύεται καὶ τὴν αἰδῶ γυνή.

9 *Ξενοφῶντος ἐκ τῆς Κύρου παιδείας* (I, 2, 7).

Ἕπεσθαι δὲ δοκεῖ μάλιστα τῇ ἀχαριστίᾳ ἀναισχυντία· καὶ γὰρ αὕτη δοκεῖ εἶναι μεγίστη ἐπὶ πάντα τὰ αἰσχρὰ ἡγεμών.

ΠΕΡΙ ΣΙΩΠΗΣ. ΛΓ.

1 Καρκίνου.

Πολλοῖς γὰρ ἀνθρώποισι φάρμακον κακῶν
σιγή, μάλιστα δ' ἐστὶ σώφρονος τρόπου.

2 Μενάνδρου.

Οὐδὲν σιωπῆς ἔστι χρησιμώτερον.

3 Σοφοκλέους Ἀλεάδαις.

Ὦ παῖ, σιώπα· πόλλ' ἔχει σιγὴ καλά.

4 Χάρητος.

Γλώσσης μάλιστα πανταχοῦ πειρῶ κρατεῖν,
ὃ καὶ γέροντι καὶ νέῳ τιμὴν φέρει,
ἡ γλῶσσα σιγὴν καιρίαν κεκτημένη.

5 Ἀθηνοδώρου.

Ἔστι καὶ τὸ σιγῆς ἀκίνδυνον γέρας.

6 Ἄμφιδος.

Οὐκ ἔστι κρεῖττον τοῦ σιωπᾶν οὐδὲ ἕν.

7 Φιλωνίδου.

Κρεῖττον σιωπᾶν ἐστιν ἢ λαλεῖν μάτην.

8 Κλεάνθους.

Σιωπῶντος τοῦ Κλεάνθους, ἐπεί τις ἔφη "τί σιγᾷς; καὶ μὴν ἡδὺ τοῖς φίλοις ὁμιλεῖν." "ἡδὺ" ἔφη, "ἀλλ' ὅσῳ ἥδιον, τοσῷδε μᾶλλον αὐτοῦ τοῖς φίλοις παραχωρητέον."

9 *Πλουτάρχου* (Mor. p. 90 b).

Ἄνευ δὲ τούτου τὴν περὶ τὴν γλῶσσαν ἐγκράτειαν, οὐ μικρὸν ἀρετῆς μέρος οὖσαν, ὑπήκοον ἀεὶ τῷ λογισμῷ καὶ πειθήνιον ἔχειν οὐκ ἔστιν, ἂν μή τις ἀσκήσει καὶ μελέτῃ καὶ φιλοπονίᾳ τὰ κάκιστα τῶν παθῶν, οἷόν ἐστιν ἡ ὀργή, κατεργάσηται.

10 *Ζήνων Ἀντιγόνου πρέσβεις Ἀθήναζε πέμψαντος κληθεὶς ὑπ᾽ αὐτῶν σὺν ἄλλοις φιλοσόφοις ἐπὶ δεῖπνον, κἀκείνων παρὰ πότον σπευδόντων ἐπιδείκνυσθαι τὴν αὑτῶν ἕξιν, αὐτὸς ἐσίγα. τῶν δὲ πρέσβεων ζητούντων τί ἀπαγγείλωσι περὶ αὐτοῦ πρὸς Ἀντίγονον "τοῦτ᾽ αὐτὸ" ἔφη "ὃ βλέπετε." δυσκρατέστατον γὰρ πάντων ὁ λόγος.*

11 *Ξενοκράτης διαιρῶν ἕκαστον μέρος τῆς ἡμέρας εἰς πρᾶξίν τινα καὶ τῇ σιωπῇ μέρος ἀπένεμε.*

12 *Σιμωνίδης ἔλεγε μηδέποτε αὐτῷ μεταμελῆσαι σιγήσαντι, φθεγξαμένῳ δὲ πολλάκις.*

13 *Ἀπολλωνίου τοῖς γνωρίμοις.*

Πολλὴν ἐπιμέλειαν ποιεῖσθαι περὶ τοῦ μὴ λέγειν ἃ μὴ δεῖ. παντελῶς γὰρ ἀπαιδεύτου τινός ἐστι τὸ μὴ δύνασθαι σιωπᾶν, ἀλλ᾽ ἐκλαλεῖν τὰ μὴ καλῶς ἔχοντα.

14 *Διογένης πρὸς τὸν φιλόσοφον εἶναι φήσαντα, ἐρωτῶντα δὲ ἐριστικῶς "κακόδαιμον" ἔφη "τὸ βέλτιστον τῶν ἐν τῷ βίῳ τοῦ φιλοσόφου λυμαινόμενος τῷ λόγῳ φιλοσοφεῖν φής."*

15 *Θεόκριτος ἐρωτηθεὶς ὑπὸ ἀδολέσχου ὅπου αὐτὸν αὔριον ὄψοιτο "ὅπου" ἔφη "ἐγώ σε οὐκ ὄψομαι."*

16 *Δίωνος.*

Μὴ νομίσητέ με, ὦ Ἀθηναῖοι, ἀγνοεῖν ὅτι ἀσφαλὲς τὸ σιγᾶν ἐστι.

17 *Πλουτάρχου.*

Περὶ τῆς καθ' Ὅμηρον ἐχεμυθίας διὰ τούτου σαφῶς δείκνυται. λέγει γάρ

Θερσῖτ' ἀκριτόμυθε, λιγύς περ ἐὼν ἀγορητής,
ἴσχεο, μηδ' ἔθελ' οἶος ἐριζέμεναι βασιλῆι.

καὶ τοῦ Τηλεμάχου εἰπόντος

ἦ μάλα τὶς θεῶν ἔνδον, οἳ οὐρανὸν εὐρὺν ἔχουσιν·

ἐπιλαμβανόμενος ὁ πατὴρ ἔφη

σίγα, καὶ κατὰ σὸν νόον ἴσχανε, μηδ' ἐρέεινε.
αὕτη τοι δίκη ἐστὶ θεῶν οἳ ὄλυμπον ἔχουσι.

τοῦτο ἐξήγησιν οἱ Πυθαγορικοὶ καλοῦντες οὐδὲν ἀπεκρίνοντο τοῖς περὶ θεῶν ὅ τι τύχοιεν ἰταμῶς καὶ εὐχερῶς ἐρωτῶσι.

ΠΕΡΙ ΤΟΥ ΕΥΚΑΙΡΩΣ ΛΕΓΕΙΝ. ΛΔ.

1 *Εὐριπίδου.*

Ἢ λέγε τι σιγῆς κρεῖττον ἢ σιγὴν ἔχε.

2 *Εὐριπίδου Ἀρχελάῳ.*

Ἁπλοῦς ὁ μῦθος, μὴ λέγ' εὖ· τὸ γὰρ λέγειν
εὖ δεινόν ἐστιν, εἰ φέροι τινὰ βλάβην.

3 *Εὐριπίδου Αἰγεῖ.*

Εἰ μὴ καθέξεις γλῶσσαν, ἔσται σοι κακά.

4 *Ἀντιφάνους.*

Οὐκ ἔστιν οὐδὲν λεγόμενον μακρῶς, ὅτε ὁ λέγων ὑποτάττει τοῖς λόγοις τὰ πράγματα.

5 *Αἰσχύλου.*

Πρὸ τῶν τοιούτων χρη λόγων δάκνειν στόμα.

6 *Ἰσοκράτους.*

Δύο καιροὺς ποιοῦ τοῦ λέγειν, ἢ περὶ ὧν οἶσθα σαφῶς ἢ περὶ ὧν ἀναγκαῖον εἰπεῖν. ἐν τούτοις γὰρ μόνοις ὁ λόγος τῆς σιωπῆς κρείττων, ἐν δὲ τοῖς ἄλλοις ἄμεινον σιγᾶν ἢ λέγειν.

7 *Πυθαγόρου.*

Ἔλεγεν ὁ Πυθαγόρας "χρὴ σιγᾶν ἢ κρείσσονα σιγῆς λέγειν".

8 *Ἢ σιγὴν καίριον ἢ λόγον ὠφέλιμον ἔχε.*

9 *Σόλωνος.*

Σφραγίζου τοὺς μὲν λόγους σιγῇ, τὴν δὲ σιγὴν καιρῷ.

10 *Αἰσχίνης ὁ Σωκρατικὸς ἐπιπληχθεὶς ὅτι Σωκράτει ἐσχολακὼς σιωπᾷ "οὐ γὰρ μόνον" εἶπε "λέγειν ἔμαθον παρὰ Σωκράτει, ἀλλὰ καὶ σιωπᾶν."*

11 *Πυθαγόρου.*

Αἱρετώτερόν σοι ἔστω λίθον εἰκῇ βάλλειν ἢ λόγον ἀργόν.

12 *Εὐριπίδου Ἀνδρομέδας.*

Σιγᾷς; σιωπὴ δ' ἄπορος ἑρμηνεὺς λόγων.

13 *Θεόγνιδος* (625).

Ἀργαλέον φρονέοντα παρ' ἄφροσι πόλλ' ἀγορεύειν,
καὶ σιγᾶν αἰεί· τοῦτο γὰρ οὐ δυνατόν.

14 *Ἐκ τῶν Ἐπικτήτου* (Enchir. 33).

Τάξον τινὰ ἤδη σεαυτῷ χαρακτῆρα καὶ τύπον, ὃν φυλάξεις ἐπί τε σεαυτοῦ ὢν καὶ ἑτέροισιν ἐντυγχάνων. σιωπὴ τὰ πολλὰ ἔστω, ἢ λαλείσθω τὰ ἀναγκαῖα καὶ δι' ὀλίγων. σπανίως δέ ποτε καιροῦ καλοῦν-

τος ἐπὶ τὸ λέγειν τι ἥξομεν, ἀλλὰ περὶ οὐδενὸς τῶν εἰκαίων, μὴ περὶ ἀθλητῶν ἢ μονομάχων ἢ περὶ ἵππων ἢ βρωμάτων ἢ πωμάτων τῶν ἑκασταχοῦ, μὴ περὶ ἀνθρώπων ψέγοντα ἢ ἐπαινοῦντα ἢ συγκρίνοντα. λοιπὸν ἐκείνου ἔχου τοῦ μὴ καθιέναι εἰς ὁμιλίας ἰδιωτικάς, ἀλλ' ἂν οἷός τε ᾖς μέταγε τοὺς λόγους ἐπὶ τὸ προσῆκον· εἰ δὲ μή, ἀπόλειπε σιωπᾶν.

15 *Σόλωνος.*

Σόλων ἐρωτηθεὶς ὑπὸ Περιάνδρου παρὰ πότον, ἐπεὶ σιωπῶν ἐτύγχανε, πότερα διὰ λόγων σπάνιν ἢ διὰ μωρίαν σιωπᾷ "ἀλλ' οὐδεὶς ἂν" εἶπε "μωρὸς ἐν συμποσίῳ σιωπᾶν δύναιτο".

16 *Ἐκ τῶν Δίωνος χρειῶν.*

Τῶν συνόντων τις μειρακίων Διογένει ἐρωτώμενος ὑπ' αὐτοῦ ἐσιώπα· ὃ δὲ ἔφη "οὐκ οἴει τοῦ αὐτοῦ εἶναι εἰδέναι τε ἃ λεκτέον καὶ πότε, καὶ τίνα σιωπητέον καὶ πρὸς τίνα;"

17 *Κλεοστράτου.*

Κλεόστρατος πρὸς τὸν εἰπόντα "οὐκ αἰσχύνῃ μεθύων;" "σὺ δὲ οὐκ αἰσχύνῃ" ἔφη "μεθύοντα νουθετῶν;"

18 *Σωκράτους.*

Τῷ γελοίῳ καθάπερ ἁλὶ πεφεισμένως δεῖ χρῆσθαι.

19 *Ἀναξάρχου.*

Πολυμαθίη κάρτα μὲν ὠφελέει, κάρτα δὲ βλάπτει τὸν ἔχοντα. ὠφελέει μὲν τὸν δεξιὸν ἄνδρα, βλάπτει δὲ τὸν ῥηιδίως φωνέοντα πᾶν ἔπος καὶ ἐν παντὶ δήμῳ. χρὴ δὲ καιροῦ μέτρα εἰδέναι, σοφίης γὰρ οὗτος οὖρος. ὅσοι δὲ [ἔξω] καιροῦ θύρησιν ἀείδουσι κἢν

πεπνυμένως ἀείσωσιν, οὐ παραδέχονται ἐν ἀργίῃ γνώμην, αἰτίην δ' ἔχουσι μωρίης.

ΠΕΡΙ ΒΡΑΧΥΛΟΓΙΑΣ. ΛΕ.

1 *Ἡσιόδου ἔργων* (719).

Γλώσσης τοι θησαυρὸς ἐν ἀνθρώποισιν ἄριστος
φειδωλῆς· πλείστη δὲ χάρις κατὰ μέτρον ἰούσης.

2 *Εὔπολις ἐν Δήμοις.*

Καὶ τοῦ μὲν ἐν κύκλῳ γε παύσομαι λόγου,
φράσω δέ σοι τὸ πρᾶγμα διὰ τῶν χωρίων.

3 *Εὐριπίδου Αἰόλῳ.*

Παῖδες, σοφοῦ πρὸς ἀνδρός, ὅστις ἐν βραχεῖ
πολλοὺς λόγους οἷός τε συντέμνειν καλῶς.

4 *Σοφοκλῆς Ἀλήτῃ.*

Βραχεῖ λόγῳ καὶ πολλὰ πρόσκειται σοφά.

5 *Μενάνδρου Ἐπαγγελλομένῳ.*

Τοῖς ἀναιδέσιν βοηθεῖ γὰρ λόγοις τοῦθ' ἓν μόνον,
ἂν βραχεῖς αὐτοὺς ποιῇ τις τόν τε καιρὸν εὖ λάβῃ.

6 *Φιλωνίδου.*

Ἅπαντ' ἐρίζεις καὶ συνιεῖς οὐδὲ ἕν.
Γράμματα μαθεῖν δεῖ καὶ μαθόντα νοῦν ἔχειν.

7 *Οὐκ ἂν τις εἴπῃ πολλὰ θαυμασθήσεται,*
ὁ μικρὰ δ' εἰπὼν μᾶλλον ἂν ᾖ χρήσιμα.

8 *Πυθαγόρου.*

Μὴ ἐν πολλοῖς ὀλίγα λέγε, ἀλλ' ἐν ὀλίγοις πολλά.

9 *Λυκούργου.*

Λυκοῦργος πρὸς τὸν εἰπόντα διὰ τί Λακεδαιμό-

νιοι τὴν βραχυλογίαν ἀσκοῦσιν, εἶπεν ὅτι ἐγγύς ἐστι τοῦ σιγᾶν.

10 *Ἐκ τοῦ Ἐπικτήτου ἐγχειριδίου* (33, 14).
Μηδενὸς οὕτως ἐν παντὶ προνοοῦ ὡς τοῦ ἀσφαλοῦς· ἀσφαλέστερον γὰρ τοῦ λέγειν τὸ σιγᾶν. ἐᾶν δὲ τὸ λέγειν ὅσα δίχα ἔσται νοῦ καὶ λόγου· ἀπέστω δὲ τὸ πολὺ καὶ αὑτοῦ τινῶν ἔργων μεμνῆσθαι ἢ κινδύνων. οὐ γὰρ ὡς σοὶ ἡδύ ἐστι τὸ τῶν σῶν κινδύνων μεμνῆσθαι, οὕτω καὶ τοῖς ἄλλοις ἡδύ ἐστι τὸ τῶν συμβαινόντων ἀκούειν.

11 *Πλάτωνος νόμων α'* (641 e).
Τὴν πόλιν ἅπαντες ἡμῶν Ἕλληνες ὑπολαμβάνουσιν ὡς φιλόλογός τε ἐστι καὶ πολύλογος· Λακεδαίμονα δὲ καὶ Κρήτην τὴν μὲν βραχύλογον, τὴν δὲ πολύνοιαν μᾶλλον ἢ πολυλογίαν ἀσκοῦσαν.

ΠΕΡΙ ΑΔΟΛΕΣΧΙΑΣ. Λς.

1 *Θεόγνιδος* (421).
Πολλοῖς ἀνθρώπων γλώσσῃ θύρα οὐκ ἐπίκειται
ἁρμοδίη, καί σφιν πόλλ' ἀλάλητα πέλει.
πολλάκι γὰρ τὸ κακὸν κατακείμενον ἔνδοθεν ἦλθεν·
ἐσθλὸν δ' ἐξελθεῖν λώιον ἢ τὸ κακόν.

2 *Εὐριπίδου Ἱππολύτῳ* (395).
Γλώσσῃ γὰρ οὐδὲν πιστόν, ἣ θυραῖα μὲν
φρονήματ' ἀνδρῶν νουθετεῖν ἐπίσταται,
αὐτὴ δ' ὑφ' αὑτῆς πλεῖστα κέκτηται κακά.

3 *Τοῦ αὐτοῦ Μηδείας* (293).

Οὐ νῦν με πρῶτον, ἀλλὰ πολλάκις, Κρέων,
ἔβλαψε γλῶσσα μεγάλα τ' εἴργασται κακά.

4 *Ἀστυδάμαντος.*
Γλώσσης περίπατός ἐστιν ἀδολεσχία.

5 *Ληρεῖς ἐν οὐ δέοντι καιρῷ φιλοσοφῶν.*

6 *Ὁμήρου* (Od. ξ' 466).
Καί τι ἔπος προέηκεν, ὅπερ τ' ἄρρητον ἄμεινον.

7 *Τοῦ αὐτοῦ* (ψ' 478).
Ἀλλ' αἰεὶ μύθους λαβρεύεαι, οὐδέ τι σὲ χρὴ
λαβραγόρην τ' ἔμεναι.

8 *Νικοστράτου.*
Εἰ τὸ συνεχῶς καὶ πολλὰ καὶ ταχέως λαλεῖν
ἦν τοῦ φρονεῖν παράσημον, αἱ χελιδόνες
ἐλέγοντ' ἂν ἡμῶν ἐμφρονέστεραι πολύ.

9 *Εὐριπίδου Πενθεῖ* (Bacch. 268).
Σὺ δ' εὔτροχον μὲν γλῶσσαν ὡς φρονῶν ἔχεις,
ἐν τοῖς λόγοισι δ' οὐκ ἔνεισί σοι φρένες.

10 *Εὐριπίδου Ἀντιόπης.*
Κόσμος δὲ σιγῆς στέφανος ἀνδρὸς οὐ κακοῦ.
τὸ δ' ἐκλαλοῦν τοῦθ' ἡδονῆς μὲν ἅπτεται,
κακὸν δ' ὁμίλημ', ἀσθενὲς δὲ καὶ πόλει.

11 *Σοφοκλέους Ἀλεάδαις.*
Τί ταῦτα πολλῶν ῥημάτων ἔτ' ἐστί σοι;
τὰ γὰρ περισσὰ πανταχοῦ λυπήρ' ἔπη.

12 [*Μενάνδρου.*]
Αἰσχρόν γ' ὅταν τις ἐπὶ γλώσσῃ φυεὶς
γλώσσῃ ματαίους ἐξακοντίσῃ λόγους.

13 *Εὐριπίδου Βάκχαις* (385).
Ἀχαλίνων στομάτων,

ἀνόμου δ' ἀφροσύνας
τὸ τέλος δυστυχία.

14 [*Μενάνδρου.*]

Οὔτ' ἐκ χερὸς μεθέντα καρτερὸν λίθον
ῥᾷον κατασχεῖν οὔτ' ἀπὸ γλώσσης λόγον.

15 *Τοῦ αὐτοῦ Δίκτυος.*

Τυραννικόν τοι πόλλ' ἐπίστασθαι λέγειν.

16 *Σοφοκλῆς Ἀλήτῃ.*

Ἀνὴρ γὰρ ὅστις ἥδεται λέγων ἀεί,
λέληθεν αὑτὸν τοῖς ξυνοῦσιν ὢν βαρύς.

17 *Αἰσχύλου* (Prom. 329).

Γλώσσῃ ματαίᾳ ζημία προστρίβεται.

18 *Φιλήμονος.*

Τὸν μὴ λέγοντα τῶν δεόντων μηδὲ ἓν
μακρὸν νόμιζε, κἂν δύ' εἴπῃ συλλαβάς·
τὸν δ' εὖ λέγοντα, μὴ νόμιζ' εἶναι μακρόν,
μηδ' ἂν σφόδρ' εἴπῃ πολλὰ καὶ πολὺν χρόνον.
τεκμήριον δὲ τοῦδε τὸν Ὅμηρον λάβε·
οὗτος γὰρ ἡμῖν μυριάδας ἐπῶν γράφει,
ἀλλ' οὐδὲ εἷς Ὅμηρον εἴρηκεν μακρόν.

19 *Ζήνωνος.*

Ζήνων πρὸς τὸν πλείω λαλεῖν θέλοντα ἢ ἀκούειν "νεανίσκε" εἶπεν "ἡ φύσις ἡμῖν γλῶτταν μὲν μίαν δύο δὲ ὦτα παρέσχεν, ἵνα διπλασίονα ὧν λέγομεν ἀκούωμεν."

20 *Θεοκρίτου.*

Θεόκριτος Ἀναξιμένους λέγειν μέλλοντος "ἄρχεται" εἶπε "λέξεων μὲν ποταμός, νοῦ δὲ σταλαγμός."

21 *Διογένους.*

Διογένης ᾔτησέ ποτε Πλάτωνα τῶν ἐκ τοῦ κήπου ἰσχάδων τρεῖς· ὡς δ' ἐκεῖνος μέδιμνον ἀπέστειλεν "οὕτως" ἔφη "καὶ ἀποκρίνει ἐρωτηθεὶς μυρία."

22 *Πλάτωνος.*

Πλάτων Ἀντισθένους ἐν τῇ διατριβῇ ποτε μακρολογήσαντος "ἀγνοεῖς" εἶπεν "ὅτι τοῦ λόγου μέτρον ἐστὶν οὐχ ὁ λέγων ἀλλ' ὁ ἀκούων."

23 *Ζήνωνος.*

Τῶν τις ἐν Ἀκαδημείᾳ νεανίσκων περὶ ἐπιτηδευμάτων διελέγετο ἀφρόνως· ὁ δὲ Ζήνων "ἐὰν μὴ τὴν γλῶσσαν" ἔφη "εἰς νοῦν ἀποβρέξας διαλέγῃ, πολὺ πλείω ἔτι καὶ ἐν τοῖς λόγοις πλημμελήσεις."

24 *Δημοκρίτου.*

Πλεονεξίη τὸ πάντα λέγειν μηδὲν δὲ ἐθέλειν ἀκούειν.

25 *Ἰσοκράτους.*

Ἰσοκράτης ὁ ῥήτωρ Καρεῶνος ὄντος λάλου καὶ σχολάζειν αὐτῷ βουλομένου, διττοὺς ᾔτησε μισθούς. τοῦ δὲ τὴν αἰτίαν πυθομένου "ἕνα μὲν" ἔφη "ἵνα λαλεῖν μάθῃς, τὸν δ' ἕτερον ἵνα σιγᾶν."

26 *Ζήνωνος.*

Ζήνων τῶν μαθητῶν ἔφασκε τοὺς μὲν φιλολόγους εἶναι τοὺς δὲ λογοφίλους.

27 *Θεοκρίτου.*

Ἐριστικοῦ ἀνδρὸς ἐρωτῶντος αὐτὸν εἰ ἡ ἀρετὴ ὠφέλιμος, ἀνένευσεν, οὐ βουλόμενος παρασχεῖν αὐτῷ ἐκ τῆς ἀποκρίσεως ἀφορμὴν εἰς ἔριν.

28 *Ἀπολλωνίου τοῖς γνωρίμοις.*

Πολυλογία πολλὰ σφάλματα ἔχει, τὸ δὲ σιγᾶν ἀσφαλές.

29 Τοῦ αὐτοῦ Εὐφράτη.

Οἱ κράτιστοι τῶν ἀνθρώπων βραχυλογώτατοι. οἱ οὖν ἀδολέσχαι, εἰ ἠνιῶντο ὡς ἀνιῶσιν, οὐκ ἂν ἐμακρηγόρουν.

30 Εὐσεβίου.

Ἄνθρωποι λόγων κούφων μέγα ὀδόντας ἕρκος ἐκτέαται. ἀλλὰ γὰρ ἐπὶ παντὶ νόου χρηίζομεν, ἐπεὶ ἐὰν οὗτος μὴ κατιθύνῃ αὐτὰ τὰ ἔπεα, πρὶν βουλευθῆναι ἐκφεύγει πολλάκις καὶ κατηλογήσαντα τοσούτου ἕρκεος ἄκριτα προεκθρώσκει.

31 Ξενοφῶντος ἐκ τῆς Κύρου παιδείας (I, 4, 3).

Ἔτι δὲ καὶ διὰ τὸ φιλομαθὴς εἶναι πολλὰ μὲν αὐτὸς ἀεὶ τοὺς παρόντας ἀνηρώτα, πῶς ἔχοντα τυγχάνοι, καὶ ὅσα αὐτὸς ὑπὸ ἄλλων ἐρωτῷτο, διὰ τὸ ἀγχίνους εἶναι, ταχὺ ἀπεκρίνετο, ὥστ' ἐκ πάντων τούτων ἡ πολυλογία συνελέγετο αὐτῷ. ἀλλ' ὥσπερ γὰρ ἐν σώμασιν, ὅσοι νέοι ὄντες μέγεθος ἔλαβον, ὅμως ἐμφαίνεταί τι αὐτοῖς νεαρὸν ὃ κατηγορεῖ τὴν ὀλιγοετίαν, οὕτω καὶ Κύρου ἐκ τῆς πολυλογίας οὐ θράσος διεφαίνετο, ἀλλὰ πραότης τις καὶ φιλοστοργία, ὥστ' ἐπεθύμει ἄν τις ἐπιπλείω ἀκούειν αὐτοῦ ἢ σιωπῶντι παρεῖναι.

ΠΕΡΙ ΧΡΗΣΤΟΤΗΤΟΣ. ΛΖ.

1 Μενάνδρου.

Οὐδεὶς πονηρὸν πρᾶγμα χρηστὸς ὢν ποιεῖ.

2 Τοῦ αὐτοῦ.

Ὡς ἡδὺ συνέσει χρηστότης κεκραμένη.

3 *Θεόγνιδος* (319).

Κύρν', ἀγαθὸς μὲν ἀνὴρ γνώμην ἔχει ἔμπεδον αἰεί,
τολμᾷ δ' ἔν τ' ἀγαθοῖς κείμενος ἔν τε κακοῖς.
εἰ δὲ θεὸς κακῷ ἀνδρὶ βίον καὶ πλοῦτον ὀπάσσῃ,
ἀφραίνων βίοτον οὐ δύναται κατέχειν.

4 *Σοφοκλῆς Ἠλέκτρᾳ* (1082).

Οὐδεὶς τῶν ἀγαθῶν ζῶν κακῶς
εὔκλειαν αἰσχῦναι θέλει.

5 *Μενάνδρου.*

Σὺ μὲν παραινεῖς ταῦτά πως ἅ σοι πρέπει·
ἐμὲ δὲ ποιεῖν τὸ καθῆκον οὐχ ὁ σὸς λόγος,
εὖ ἴσθ' ἀκριβῶς, ὁ δ' ἴδιος πείθει τρόπος.

6 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Ὁ χρηστός ἐστι πολλαχοῦ σωτήριος.

7 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Τὸ χρηστὰ πράττειν ἔργον ἔστ' ἐλευθέρου.

8 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Μέγιστον ἀγαθόν ἐστι μετὰ νοῦ χρηστότης.

9 *Διφίλου.*

Ὦ μακάριον φρόνησις ἐν χρηστῷ τρόπῳ.

10 *Μενάνδρου Ὁμοπάτριοι.*

Χρηστοῖς νομιζομένοις ἐφόδιον ἀσφαλὲς
εἰς πάντα καιρὸν καὶ τύχης πᾶσαν ῥοπήν.

11 *Μενάνδρου Παλλακῇ.*

Ἀλλὰ τῶν χρηστῶν ἔχει τιν' ἐπιμέλειαν καὶ θεός.

12 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Κἀν ταῖς ἀπορίαις ἔσθ' ὁ χρηστὸς χρήσιμος.

13 *Ἀντιφάνους.*
Τρόπος δίκαιος κτῆμα τιμιώτατον.

14 *Ποσειδίππου.*
Διὰ τὴν τύχην μὲν γνωρίμους ἐκτησάμην
πολλούς, διὰ τὸν τρόπον δὲ τοὺς πλείστους φίλους.

15 *Πειρίθου.*
Τρόπος δὲ χρηστὸς ἀσφαλέστερος νόμου.
τὸν μὲν γὰρ οὐδεὶς ἂν διαστρέψαι ποτὲ
ῥήτωρ δύναιτο, τὸν δ' ἄνω τε καὶ κάτω
λόγοις ταράσσων πολλάκις λυμαίνεται.

16 *Ἐπιχάρμου.*
Ὁ τρόπος ἀνθρώποισι δαίμων ἀγαθός, οἷς δὲ καὶ κακός.

17 *Θεόγνιδος* (635).
Ἀνδράσι τοῖς ἀγαθοῖς ἕπεται γνώμη τε καὶ αἰδώς,
οἳ νῦν ἐν πολλοῖς ἀτρεκέως ὀλίγοι.

18 *Μενάνδρου Ὑμνίς.*
Νὴ τὴν Ἀθηνᾶν, μακάριόν γ' ἡ χρηστότης
πρὸς πάντα καὶ θαυμαστὸν ἐφόδιον βίῳ.
τούτῳ λαλήσας ἡμέρας σμικρὸν μέρος
εὔνους ἐγὼ νῦν εἰμί. πειστικὸν λόγος,
πρὸς τοῦτ' ἂν εἴποι τις μάλιστα τῶν σοφῶν·
τί οὖν ἑτέρους λαλοῦντας εὖ βδελύττομαι;

19 *Μενάνδρου Ὑμνίς.*
Τρόπος ἔσθ' ὁ πείθων τοῦ λέγοντος, οὐ λόγος.

20 *Εὐριπίδου Αὔγης.*
Τὸ δ' ἐπιεικὲς ὠφελεῖ τὰς ξυμφοράς.

21 *Θεοφράστου.*
Ὀλίγων οἱ ἀγαθοὶ νόμων δέονται· οὐ γὰρ τὰ

πράγματα πρὸς τοὺς νόμους, ἀλλ' οἱ νόμοι πρὸς τὰ πράγματα τίθενται.

22 *Δημοσθένους* (Phorm. p. 960, 16).

Πολλῶν χρημάτων τὸ χρηστὸν εἶναι λυσιτελέστερόν ἐστιν.

23 *Δημοκρίτου.*

Ἀγαθὸν ἢ εἶναι χρεὼν ἢ μιμέεσθαι.

24 *Λυκούργου.*

Λυκοῦργος ὁ νομοθέτης εἶπε τὸ μὲν ἀξιόχρεων τῶν ἀνθρώπων ἐν τῇ οὐσίᾳ κεῖσθαι, τὸ δὲ ἀξιόπιστον ἐν τῷ τρόπῳ.

25 *Ἀρίστιππος.*

Ἀρίστιππος ἐρωτηθεὶς τί ἀξιοθαύμαστόν ἐστιν ἐν τῷ βίῳ εἶπεν "ἄνθρωπος ἐπιεικὴς καὶ μέτριος, ὅτι ἐν πολλοῖς ὑπάρχων μοχθηροῖς οὐ διέστραπται."

26 *Δημοκρίτου.*

Οἷσι ὁ τρόπος ἐστὶ εὔτακτος, τουτέοισι καὶ ὁ βίος συντέτακται.

27 *Σωκράτους.*

Ἡ μὲν ἐσθὴς τὴν ἀρρυθμίαν, ἡ δὲ εὔνοια τὴν ἁμαρτίαν περιστέλλει.

28 *Ἐκ τῶν Ξενοφῶντος οἰκονομικοῦ* (VI, 12).

Τί οὖν, ἔφη ὁ Σωκράτης, ὦ Κριτόβουλε, ἐάν σοι ἐξ ἀρχῆς διηγήσωμαι, ὡς συνεγενόμην ποτὲ ἀνδρί, ὃς ἐμοὶ ἐδόκει εἶναι τῷ ὄντι τούτων τῶν ἀνδρῶν, ἐφ' οἷς τοῦτο τοὔνομα δικαίως ἐστὶν ὃ καλεῖται καλός τε κἀγαθὸς ἀνήρ; πάνυ ἄν, ἔφη, βουλοίμην, ὁ Κριτόβουλος, οὕτως σου ἀκούειν, ὡς καὶ ἔγωγε ἐρῶ τούτου τοῦ ὀνόματος ἄξιος γενέσθαι. λέξω τοίνυν ἔφη σοι ὁ Σωκράτης, ὡς καὶ ἦλθον ἐπὶ τὴν σκέψιν αὐτοῦ· τοὺς

μὲν γὰρ ἀγαθοὺς τέκτονας, ἀγαθοὺς χαλκεῖς, ἀγαθοὺς ζωγράφους, ἀγαθοὺς ἀνδριαντοποιούς, καὶ πάντα τὰ τοιαῦτα, πάνυ ὀλίγος μοι χρόνος ἐγένετο ἱκανῶς περιελθεῖν τε καὶ θεάσασθαι τὰ δεδοκιμασμένα καλὰ ἔργα αὐτῶν εἶναι· ὅπως δὲ δὴ καὶ τοὺς ἔχοντας τὸ σεμνὸν ὄνομα τοῦτο καλός τε κἀγαθὸς ἐπισκεψαίμην, τί ποτε ἐργασάμενοι τοῦτο ἀξιοῦνται καλεῖσθαι, πάνυ μοι ἡ ψυχὴ ἐπεθύμει αὐτῶν τινι συγγενέσθαι. καὶ πρῶτον μὲν ὅτι προσέκειτο ὁ καλὸς τῷ ἀγαθῷ, ὅν τινα ἴδοιμι καλὸν τούτῳ προσῄειν καὶ ἐπειρώμην καταμανθάνειν, εἴ που ἴδοιμι προσηρτημένον τῷ κάλλει τὸ ἀγαθόν. ἀλλ' οὐκ ἄρ' εἶχεν οὕτως, ἀλλ' ἐνίους ἐδόκουν καταμανθάνειν τῶν καλῶν τὰς μορφὰς πάνυ μοχθηροὺς ὄντας τὰς ψυχάς. ἔδοξεν οὖν μοι ἀφέμενον τῆς καλῆς ὄψεως ἐπ' αὐτῶν τινα ἐλθεῖν τῶν καλουμένων καλῶν τε κἀγαθῶν.

29 Τὰ γὰρ καλά τε κἀγαθά, ἔφην ἐγώ, οὐ διὰ τὰς ὡραιότητας, ἀλλὰ διὰ τὰς ἐν τῷ βίῳ ἀρετὰς τοῖς ἀνθρώποις ἐπαύξεται. (Xenoph. Oec. VII, 43.)

30 Θεμιστοκλέους.

Θεμιστοκλῆς χωρίον πωλῶν ἐκέλευσε κηρύττειν, ὅτι καὶ γείτονα χρηστὸν ἔχει.

31 Σόλωνος.

Τρόπου καλοκαγαθίαν ὅρκου πιστοτέραν ἔχε.

32 Ἀριστοτέλους.

Ἀριστοτέλης ὁ φιλόσοφος αἰτηθείς ποτε ἔρανον ὑπὸ μοχθηροῦ καὶ παρασχόμενος, ἐπειδὴ ἐπελάβετό τις αὐτοῦ ὅτι τοιούτῳ ἔδωκεν, "οὐ τῷ ἀνθρώπῳ" ἔφη "ἀλλὰ τῷ ἀνθρωπίνῳ."

33 Ἐκ τῆς Ἰαμβλίχου Σωπάτρῳ περὶ ἀρετῆς.

Ἀγαθὸς νομιζέσθω ὁ τὴν τελειοτάτην κατὰ τὸν χωριστὸν νοῦν ἐνέργειαν διασώζων, καὶ τὴν μετουσίαν τοῦ νοητοῦ κάλλους παραδεχόμενος, καὶ τῆς τοῦ θεοῦ οὐσίας καὶ δυνάμεως μέτοχος.

34 Δημοσθένης λέγων ποτὲ ἐπ' ἐκκλησίας ὡς εἶδε Φωκίωνα παριόντα, εἶπεν "ἔρχεται ἡ τῶν ἐμῶν λόγων [σφῦρα καὶ] κοπίς." οὕτως οὐ τοσοῦτον ὁ λόγος, ὅσον ὁ τρόπος πείθειν δύναται.

35 Σκιπίωνος.

Ὁ Σκιπίων τὸ Πολυβίου παράγγελμα διαφυλάττων ἐπειρᾶτο μὴ πρότερον ἐξ ἀγορᾶς ἀπελθεῖν ἢ ποιήσασθαί τινα συνήθη καὶ φίλον. (Plut. Mor. p. 199 f.)

36 Βίαντος.

Βίας ἔφη "οἱ ἀγαθοὶ εὐαπάτητοι."

37 Φωκίωνος.

Ἀλεξάνδρου τοῦ βασιλέως ἑκατὸν τάλαντα δωρεὰν τῷ Φωκίωνι πέμψαντος, ἠρώτησε τοὺς κομίσαντας τί δὴ πολλῶν ὄντων Ἀθηναίων αὐτῷ μόνῳ ταῦτα δίδωσιν· εἰπόντων δ' ἐκείνων ὅτι μόνον αὐτὸν ἡγεῖται καλόν τε κἀγαθόν "οὐκοῦν" ἔφη "ἐασάτω με καὶ δοκεῖν καὶ εἶναι τοιοῦτον." (Plut. Mor. p. 188 b.)

38 Ἐκ τῶν Νικολάου ἐθῶν συναγωγῆς.

Πραῦσιοι τοὺς ἀστυγείτονας, ἐὰν λιμῷ πιεσθῶσι, τρέφουσι. Θῦνοι τοὺς ναυαγοὺς φιλανθρώπως δεχόμενοι φίλους ποιοῦνται, τῶν δὲ ξένων τοὺς μὲν ἑκουσίως ἐλθόντας σφόδρα τιμῶσι, τοὺς δ' ἀκουσίως κολάζουσιν.

ΠΕΡΙ ΦΘΟΝΟΥ. ΛΗ.

1 *Φιλήμονος.*

Ὁ φθόνος ἐν ἑαυτῷ τοῦθ' ἓν ἐπιεικῶς ποιεῖ,
τὸν αἱρετιστὴν ὄντα τῶν αὑτοῦ τρόπων
λυμαίνεται μάλιστα διὰ παντὸς συνών.

2 *Διονυσίου.*

Ἔπειτα δ' οὐδὲ τοῦτο γιγνώσκεις, ὅτι
τοῖς οὐδὲν οὖσιν οὐδὲ εἷς ὅλως φθονεῖ;
Ἀεὶ τὰ σεμνὰ πάντα κέκτηται φθόνον.
Ἅπαν τὸ λίαν συνετὸν ἔστ' ἐπίφθονον.

3 *Χάρητος.*

Μὴ φθόνει τοῖς εὐτυχοῦσι, μὴ δοκῇς εἶναι κακός.

4 Ἀδικώτατον πρᾶγμ' ἐστὶ τῶν πάντων φθόνος.

5 Ἐγὼ δ' ἐν ἀνθρώποισι μέχρι τοῦ δοκῶ
εὖ πράττειν, μέχρις ἂν φθονεῖσθαί μοι δοκῶ.

6 *Διονυσίου.*

Λιτὸς γενόμενος τοῖς ἔχουσι μὴ φθόνει.
Εἰσὶν τινὲς νῦν οὓς τὸ βασκαίνειν τρέφει.

7 Ὄλοιθ' ὁ τοῖς ἔχουσι τἀγαθὰ φθονῶν.

8 *Εὐριπίδου ἐξ Ἰνοῦς.*

Τίς ἆρα μήτηρ ἢ πατὴρ κακὸν μέγα
βροτοῖς ἔφυσε τὸν δυσώνυμον φθόνον;
ποῦ καί ποτ' οἰκεῖ σώματος λαχὼν μέρος;
ἐν χερσὶν ἢ σπλάγχνοισιν ἢ παρ' ὄμματα;
οὐκ ἔστιν· ὡς ἦν μόχθος ἰατροῖς μέγας
τομαῖς ἀφαιρεῖν ἢ ποτοῖσι φαρμάκοις
πασῶν μεγίστην τῶν ἐν ἀνθρώποις νόσων.

9 *Εὐριπίδου Οἰδίποδι.*

Φθόνος δ' ὁ πολλῶν φρένα διαφθείρων βροτῶν
ἀπώλεσ' αὐτὸν κἀμὲ συνδιώλεσεν.

10 *Ἐκ τοῦ Νικομάχου Ναυμαχίας.*

Ἐργῶδές ἐστιν ἐν βίῳ βεβιωκότα
τοὺς τῶν φθονούντων πάντας ὀφθαλμοὺς λαθεῖν.

11 *Μενάνδρου.*

Ὁ φθονερὸς αὑτῷ πολέμιος καθίσταται·
αὐθαιρέτοις γὰρ συνέχεται λύπαις ἀεί.

12 *Ἀγάθωνος.*

Οὐκ ἦν ἂν ἀνθρώποισιν ἐν βίῳ φθόνος,
εἰ πάντες ἦμεν ἐξίσου πεφυκότες.

13 *Εὐριπίδου Βελλεροφόντῃ.*

Φθονοῦσιν αὐτοὶ χείρονες πεφυκότες.
εἰς τἀπίσημα δ' ὁ φθόνος πηδᾶν φιλεῖ.

14 *Τοῦ αὐτοῦ Φοίνικι.*

Φθόνον οὐ σέβω,
φθονεῖσθαι δὲ θέλοιμ' ἂν ἐπ' ἐσθλοῖς.

15 *Ἱπποθόωντος.*

Φθόνος κάκιστος κἀδικώτατος θεὸς
κακοῖς τε χαίρει κἀγαθοῖς ἀλγύνεται.

16 *Οὐδεὶς ἂν εἴποι κεῖνον ἀνθρώπων κακῶς,*
οὐδ' εἰ φθόνου γένοιτο δυσμενέστερος.

17 *Χρὴ δ' ἢ λέγειν τι χρηστὸν ἢ λέγουσιν εὖ*
μὴ δυσμεναίνειν τῷ φθόνῳ νικώμενον.

18 *Καρκίνου.*

Χαίρω σ' ὁρῶν φθονοῦντα, τοῦτ' εἰδὼς ὅτι
ἓν δρᾷ μόνον δίκαιον ὧν ποιεῖ φθόνος·
λυπεῖ γὰρ αὐτὸ τὸ κτῆμα τοὺς κεκτημένους.

19 Εὐριπίδου Βελλεροφόντης.
Ἤδη γὰρ εἶδον καὶ δίκης παραστάτας
ἐσθλοὺς πονηρῷ τῷ φθόνῳ νικωμένους.

20 Εὐριπίδου Ἀλεξάνδρου.
Οἴμοι, θανοῦμαι διὰ τὸ χρήσιμον φρενῶν,
ὃ τοῖσιν ἄλλοις γίγνεται σωτηρία.

21 Ἐπιχάρμου.
Τίς δέ κα λῴη γενέσθαι μὴ φθονούμενος, φίλοι;
δῆλον ὡς ἄπηρος οὐδεις ἐσθ' ὁ μὴ φθονούμενος.
τυφλὸν ἠλέησέ τις ἰδών, ἐφθόνησε δ' οὐδὲ εἷς.

22 Πινδάρου (Pyth. I, 164).
Κρέσσον γὰρ οἰκτιρμοῦ φθόνος.

23 Ἀγάθωνος.
Σοφίας φθονῆσαι μᾶλλον ἢ πλούτου καλόν.

24 Φιλήμονος.
Πολλά με διδάσκεις ἀφθόνως διὰ φθόνον,
ὅπως ἀκούων πολλὰ μηδὲ ἓν μάθω.

25 Ἡσιόδου ἔργων (25).
Καὶ κεραμεὺς κεραμεῖ κοτέει καὶ τέκτονι τέκτων,
καὶ πτωχὸς πτωχῷ φθονέει καὶ ἀοιδὸς ἀοιδῷ.

26 Σοφοκλέους Κρέουσα.
Οὔτε γὰρ γάμον, ὦ φίλαι,
οὔτ' ἂν ὄλβον ἔκμετρον
ἔνδον εὔξαίμαν ἔχειν·
φθονεραὶ γὰρ ὁδοί.

27 Τοῦ αὐτοῦ Ἐπίγονοι.
Φιλεῖ γὰρ ἡ δύσκλεια τοῖς φθονουμένοις
νικᾶν ἐπ' αἰσχροῖς ἢ 'πὶ τοῖς καλοῖς πλέον.

28 Αἰσχύλου (Agam. 832).

Παύροις γὰρ ἀνδρῶν ἐστι συγγενὲς τόδε
φίλον τὸν εὐτυχοῦντ' ἄνευ φθόνου σέβειν.

29 Μενάνδρου.

Μειράκιον, οὔ μοι κατανοεῖν δοκεῖς ὅτι
ὑπὸ τῆς ἰδίας ἕκαστα κακίας σήπεται,
καὶ πάντα τὰ λυμαινόμεν' ἐστὶν ἔνδοθεν.
οἷον ὁ μὲν ἰός, ἂν σκοπῇς, τὸ σιδήριον·
τὸ δ' ἱμάτιον οἱ σῆτες· ὁ δὲ θρὶψ τὸ ξύλον.
ὃ δὲ τὸ κάκιστον τῶν κακῶν πάντων φθόνος,
φθισικὸν πεποίηκε καὶ ποιήσει καὶ ποιεῖ,
ψυχῆς πονηρᾶς δυσσεβὴς παράστασις.

30 Θεοφράστου.

Θεόφραστος ἔφη τοὺς μοχθηροὺς τῶν ἀνθρώπων οὐχ οὕτως ἥδεσθαι ἐπὶ τοῖς ἰδίοις ἀγαθοῖς, ὡς ἐπὶ τοῖς ἀλλοτρίοις κακοῖς.

31 Πλουτάρχου ἐκ τοῦ διαβάλλειν (cf. Mor. p. 787 c).

Τὸν φθόνον ἔνιοι τῷ καπνῷ εἰκάζουσι· πολὺς γὰρ ἐν τοῖς ἀρχομένοις ὤν, ὅταν ἐκλάμψωσιν, ἀφανίζεται. ἥκιστα γοῦν τοῖς πρεσβυτέροις φθονοῦσιν.

32 Πλουτάρχου ἐκ τοῦ διαβάλλειν.

Ἱππίας λέγει δύο εἶναι φθόνους· τὸν μὲν δίκαιον, ὅταν τις τοῖς κακοῖς φθονῇ τιμωμένοις· τὸν δ' ἄδικον, ὅταν τοῖς ἀγαθοῖς. καὶ διπλᾶ τῶν ἄλλων οἱ φθονεροὶ κακοῦνται· οὐ γὰρ μόνον τοῖς οἰκείοις κακοῖς ἄχθονται, ὥσπερ ἐκεῖνοι, ἀλλὰ καὶ τοῖς ἀλλοτρίοις ἀγαθοῖς.

33 Πλάτωνος ἐκ τοῦ Τιμαίου (p. 29 e).

Ἀγαθὸς ἦν· ἀγαθῷ δὲ οὐδεὶς περὶ οὐδενὸς οὐδέποτε ἐγγίνεται φθόνος.

34 *Σωκράτης.*

Τὸ τῆς δόξης κάλλος ὥσπερ ὑπὸ νόσου τοῦ φθόνου ταχὺ μαραίνεται.

35 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Τοῖς μὲν διὰ τοῦ ἡλίου πορευομένοις ἕπεται κατ' ἀνάγκην σκιά, τοῖς δὲ διὰ τῆς δόξης βαδίζουσιν ἀκολουθεῖ φθόνος.

36 *Ἐκ τῶν Ἀριστωνύμου τομαρίων.*

Ὁ φθόνος ὥσπερ φαῦλος δημαγωγὸς ταῖς καλαῖς ἀντιπολιτεύεται πράξεσιν.

37 *Ἐκ τῶν κοινῶν Ἀριστοτέλους διατριβῶν.*

Οὐχ ἡ λύπη μέγιστον κακὸν ἀκολουθεῖ τῷ φθόνῳ, ἀλλὰ πολὺ μεῖζον τὸ καὶ πρὸς τοὺς γνωρίμους γίνεσθαι· τῷ γὰρ αἰσχρῷ καὶ φαύλῳ τὴν ὑπεροχὴν δοτέον, οὐ τῇ λύπῃ.

38 *Εὐσεβίου.*

Ἀνδρὶ ἀγαθῷ εὖ πρήσσοντι φθονέων τις καὶ πατρίδι καὶ παντὶ τῷ κοινῷ καὶ ἑωυτῷ φθονέει. ἀνὴρ ἀγαθὸς γὰρ εὖ πρήσσων πόλιος καὶ παντὸς τοῦ δυναμένου τῆς εὐμοιρίης αὐτοῦ μεταλαγχάνειν κοινὴ εὐδαιμονίη.

39 *Φθόνος ὁ κατὰ τῶν εὐδοκιμεόντων ἐπὶ τοῖσι καλλίστοισι ἀργέων καὶ ἀπρακτέων, τῶν δὲ ἀγαθῶν καὶ οἵων τε τεκέειν τι παρ' ἑωυτῶν χρηστὸν οὐχ ἅπτεται.*

40 *Ἰσοκράτους Νικοκλῆς ἢ Κύπριοι* (13).

Μὴ φθονεῖτε τοῖς παρ' ἐμοὶ πρωτεύουσιν, ἀλλ' ἁμιλλᾶσθε χρηστοὺς ὑμᾶς αὐτοὺς παρέχοντες ἐξισοῦσθαι τοῖς προέχουσι.

41 *Θουκυδίδου* (II, 45).

Φθόνος τοῖς ζῶσι πρὸς τὸ ἀντίπαλον, τὸ δὲ μὴ ἐμποδὼν ἀνανταγωνίστῳ εὐνοίᾳ τετίμηται.

42 *Ἰσοκράτους Εὐαγόρᾳ* (2).

Τούτων δ' αἴτιος ὁ φθόνος, ᾧ τοῦτο μόνον ἀγαθὸν πρόσεστιν ὅτι μέγιστον κακὸν τοῖς ἔχουσίν ἐστι.

43 *Θεοφράστου.*

Τοσούτῳ δ' εἰσὶν οἱ φθονεροὶ δυστυχέστεροι τῶν ἄλλων, ὅσον οἱ μὲν ἐπὶ ταῖς αὐτῶν συμφοραῖς ἀλγοῦσιν, οἱ δὲ φθονοῦντες πρὸς τοῖς ἑαυτῶν κακοῖς καὶ ἐπὶ τοῖς τῶν ἄλλων ἀγαθοῖς λυπούμενοι διατελοῦσιν.

44 *Ἀναξιμένους.*

Οἱ γὰρ μετὰ φθόνου κρίνοντες τὸ πρωτεῖον ἀπονέμουσι τοῖς χειρίστοις, οὐ τοῖς βελτίστοις.

45 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Ὅσοι γὰρ τὰ καλῶς ῥηθέντα ἢ πραχθέντα διὰ φθόνον οὐκ ἐπαινοῦσι, πῶς οὗτοι ἂν τοῖς ἔργοις ὠφελήσειαν;

46 *Δημοκρίτου.*

Μωμεομένων φλαύρων ὁ ἀγαθὸς οὐ ποιέεται λόγον.

47 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Ὁ φθονέων ἑωυτὸν ὡς ἐχθρὸν λυπέει.

48 *Σωκράτους.*

Σωκράτης τὸν φθόνον εἶπεν ἕλκος εἶναι τῆς ψυχῆς.

49 *Πλάτωνος ἐκ τοῦ Μενεξένου ἢ ἐπιταφίου* (p. 242 a).

Εἰρήνης δὲ γενομένης καὶ τῆς πόλεως τιμωμένης

ἦλθεν ἐπ' αὐτὴν (ὃ δὴ φιλεῖ ἐκ τῶν ἀνθρώπων τοῖς εὖ πράττουσι προσπίπτειν) πρῶτον μὲν ζῆλος, ἀπὸ ζήλου δὲ φθόνος.

50 Βίωνος.

Βίων ὁ σοφιστὴς ἰδών τινα φθονερὸν σφόδρα κεκυφότα εἶπεν "ἢ τούτῳ μέγα κακὸν συμβέβηκεν ἢ ἄλλῳ μέγα ἀγαθόν."

51 Περιάνδρου.

Μηδενὶ φθόνει.

52 Ὥσπερ ἡ ἐρυσίβη ἴδιόν ἐστι τοῦ σίτου νόσημα, οὕτως φθόνος φιλίας ἐστὶν ἀρρώστημα.

53 Ὥσπερ ὁ ἰὸς σίδηρον, οὕτως ὁ φθόνος τὴν ἔχουσαν αὐτὸν ψυχὴν ἐξαναψήχει.

54 Ὅσῳ γὰρ ἂν φθονῇς, τοσούτῳ μειζόνων γίνῃ πρόξενος ἀγαθῶν τῷ φθονουμένῳ.

55 Κάτωνος πρεσβυτέρου.

Ἥκιστα φθονεῖσθαι ἔλεγε τοὺς τῇ τύχῃ χρωμένους ἐπιεικῶς καὶ μετρίως· οὐ γὰρ ἡμῖν ἀλλὰ τοῖς περὶ ἡμᾶς φθονοῦσι.

56 Ἐκ τῆς Νικολάου ἐθῶν συναγωγῆς.

Τελχῖνες ἄνθρωποι ὀνομαζόμενοι τὸ ἀνέκαθεν Κρῆτες, οἰκήσαντές τε καὶ ἐν Κύπρῳ, μεταναστάντες δ' εἰς Ῥόδον καὶ πρῶτοι τὴν νῆσον κατασχόντες, βάσκανοί τε σφόδρα ἦσαν καὶ φθονεροί· τεχνῖται δὲ ὄντες καὶ τὰ τῶν προτέρων ἔργα μωμησάμενοι Ἀθηνᾶς Τελχινίας ἄγαλμα πρῶτοι ἱδρύσαντο, ὥσπερ εἴ τις λέγοι Ἀθηνᾶς βασκάνου.

57 Δημοκρίτου.

Οὐκ ἂν ἐκώλυον οἱ νόμοι ζῆν ἕκαστον κατ' ἰδίην

ἐξουσίην, εἰ μὴ ἕτερος ἕτερον ἐλυμαίνετο. φθόνος γὰρ στάσιος ἀρχὴν ἀπεργάζεται.

58 *Ἀπολλώνιος τοῖς ἀδελφοῖς.*

Οὐδενὶ φθονητέον. ἀγαθοὶ μὲν γὰρ ἄξιοι κακοὶ δ' ἂν εὐτυχῶσι κακῶς ζῶσιν.

59 *Εὐσεβίου.*

Ἀνὴρ πολλὰ ἔχων χρηστὰ μαθήματα, ἔπειτα γνώμῃ πονηρῇ διαχρεόμενος καὶ μὴ βουλόμενος τοῖς μεταποιευμένοις ὑπὸ φθόνου μεταδιδόναι, ἔοικεν ἀγγείῳ πονηρῷ πολλὰ καὶ χρηστὰ ἔχοντι ἐν ἑωυτῷ ἀποκείμενα καὶ τὰ ἐνεόντα πρὶν φανῆναι διαφθείροντι.

60 *Ξενοφῶντος ἐν τρίτῳ* (9, 8) *ἀπομνημονευμάτων.*

Φθόνον δὲ σκοπῶν ὅ τι εἴη λύπην μέν τινα ἐξεύρισκεν αὐτὸν ὄντα, οὔτε μέντοι τὴν ἐπὶ φίλων ἀτυχίαις οὔτε τὴν ἐπ' ἐχθρῶν εὐτυχίαις γιγνομένην, ἀλλὰ μόνους ἔφη φθονεῖν τοὺς ἐπὶ ταῖς τῶν φίλων εὐπραξίαις ἀνιωμένους. θαυμαζόντων δέ τινων εἴ τις φιλῶν τινα ἐπὶ τῇ εὐπραξίᾳ αὐτοῦ λυποῖτο, ὑπεμίμνησκεν ὅτι πολλοὶ οὕτω πρός τινας ἔχουσιν, ὥστε κακῶς μὲν πράττοντας μὴ δύνασθαι περιορᾶν, ἀλλὰ βοηθεῖν ἀτυχοῦσιν, εὐτυχούντων δὲ λυπεῖσθαι. τοῦτο μέντοι φρονίμῳ μὲν ἀνδρὶ οὐκ ἂν συμβῆναι, τοὺς ἠλιθίους δὲ πάσχειν αὐτό.

61 *Ἡροδότου ἱστορίας ζ'* (237).

Ὅτι πολιήτης μὲν πολιήτῃ εὖ πρήσσοντι φθονέει καὶ ἔστι δυσμενὴς τῇ σιγῇ· οὐδ' ἂν συμβουλευομένου τοῦ ἀστοῦ πολιήτης ἀνὴρ τὰ ἄριστά οἱ δοκέοντα ὑποθέοιτο, εἰ μὴ πρόσω ἀρετῆς ἀνήκοι· σπάνιοι δέ εἰσιν οἱ τοιοῦτοι. ξεῖνος δὲ ξείνῳ εὖ πρήσσοντί ἐστιν

εὐμενέστατον πάντων· συμβουλευομένου τε ἂν συμβουλεύσειε τὰ ἄριστα.

62 *Πλάτωνος ἐκ τοῦ Φιλήβου* (p. 48).

Ἀλλὰ μὴν ὁ φθονῶν γε ἐπὶ κακοῖς τοῖς τῶν πέλας ἡδόμενος ἀναφανήσεται. Σφόδρα γε.

63 *Ἰωσήπου ἐκ τῆς ἁλώσεως.*

Οὐδὲν οὕτως τῶν ἀγαθῶν [παθῶν] ἰσχυρὸν ὃ τῷ φθόνῳ μέχρι παντὸς ἀντέχει.

ΠΕΡΙ ΠΑΤΡΙΔΟΣ. ΛΘ.

1 *Εὐριπίδου Τημενίδαις.*

Εἰκὸς δὲ παντὶ καὶ λόγῳ καὶ μηχανῇ
πατρίδος ἐρῶντας ἐκπονεῖν σωτηρίαν.

2 *Μὴ κάμνε πατρίδα σὴν λαβεῖν πειρώμενος.*

3 *Εὐριπίδου Φοινίσσαις* (406).

Ἡ πατρὶς ὡς ἔοικε φίλτατον βροτοῖς,
οὐδ᾽ ὀνομάσαι δύναι᾽ ἂν ὡς ἔστιν φίλον.

4 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Πολλοῦ γὰρ χρυσοῦ καὶ πλούτου
κρείσσων πάτρα σώφρονι ναίειν,
τὸ δὲ σύντροφον ἁδύ τι θνητοῖς
ἐν βίῳ χωρεῖ.

5 *Εὐριπίδου Αἰόλῳ.*

Ἀλλ᾽ ὅμως
οἰκτρός τις αἰὼν πατρίδος ἐκλιπεῖν ὅρους.

6 *Εὐριπίδου Αἰγέως.*

Τί γὰρ πατρῴας ἀνδρὶ φίλτερον χθονός;

7. 8. *Εὐριπίδου Δίκτυος.*

Εἰ δ' ἦσθα μὴ κάκιστος, οὔποτ' ἂν πάτραν.
τὴν σὴν ἀτίζων τήνδ' ἂν εὐλόγεις πόλιν.
ὡς ἔν γ' ἐμοὶ κρίνοιτ' ἂν οὐ καλῶς φρονεῖν,
ὅστις πατρῴας γῆς ἀτιμάζων ὅρους
ἄλλην ἐπαινεῖ καὶ τρόποισιν ἥδεται.

9 *Τοῦ αὐτοῦ Φοίνικι.*

Σὺ δ' ὦ πατρῴα χθὼν ἐμῶν γεννητόρων,
χαῖρ'. ἀνδρὶ γάρ τοι, κἂν ὑπερβάλλῃ κακοῖς,
οὐκ ἔστι τοῦ θρέψαντος ἥδιον πέδον.

10 *Εὐριπίδου Τήλεφος.*

Σπάρτην ἔλαχες, κείνην κόσμει,
τὰς δὲ Μυκήνας ἡμεῖς ἰδίᾳ.

11 *Μενάνδρου Ἑαυτὸν τιμωρούμενος.*

Οἴκοι μένειν χρὴ καὶ μένειν ἐλεύθερον
ἢ μηκέτ' εἶναι τὸν καλῶς εὐδαίμονα.

12 *Σοφοκλέους Τηρέως.*

Πολλά σε ζηλῶ βίου,
μάλιστα δ' εἰ γῆς μὴ πεπείρασαι ξένης.

13 *Εὐριπίδου ἐν Φιλοκτήτῃ.*

Μακάριος ὅστις εὐτυχῶν οἴκοι μένει.

14 *Σοφοκλέους.*

Οἴκοι μένειν δεῖ τὸν καλῶς εὐδαίμονα.

15 *Θεόγνιδος* (947).

Πατρίδα κοσμήσω λιπαρὴν πόλιν, οὔτ' ἐπὶ δήμῳ
τρέψας οὔτ' ἀδίκοις ἀνδράσι πειθόμενος.

16 *Σοφοκλέους* (Ant. 187).

Οὔτ' ἂν φίλον ποτ' ἄνδρα δυσμενῆ χθονὸς

θείμην ἐμαυτῷ, τοῦτο γιγνώσκων ὅτι
ἥδ' ἐστὶν ἡ σώζουσα, καὶ ταύτης ἔπι
πλέοντες ὀρθῆς τοὺς λόγους ποιούμεθα.
τοιοῖσδ' ἐγὼ νόμοισι τήνδ' αὔξω πόλιν.

17 *Εὐριπίδου Φοινίσσαις* (388).

Τί τὸ στέρεσθαι πατρίδος, ἦ κακὸν μέγα;
μέγιστον· ἔργῳ δ' ἐστὶ μεῖζον ἢ λόγῳ.
τίς δ' ὁ τρόπος αὐτοῦ; τί φυγάσιν τὸ δυσχερές;
ἓν μὲν μέγιστον, οὐκ ἔχει παρρησίαν.

18 *Ὁμήρου* (Il. μ' 243).

Εἷς οἰωνὸς ἄριστος ἀμύνεσθαι περὶ πάτρης.

19 *Τοῦ αὐτοῦ* (Il. ο' 494).

Ἀλλὰ μάχεσθ' ἐπὶ νηυσὶν ἀολλέες, εἰσόκεν ἡμέων
βλήμενος ἠὲ τυπεὶς θάνατον καὶ πότμον ἐπίσπῃ,
τεθνάτω· οὔ οἱ ἀεικὲς ἀμυνομένῳ περὶ πάτρης.

20 *Τοῦ αὐτοῦ* (Od. α' 57).

Αὐτὰρ Ὀδυσσεὺς
ἱέμενος καὶ καπνὸν ἀποθρώσκοντα νοῆσαι
ἧς γαίης, θανέειν ἱμείρεται.

21 *Τοῦ αὐτοῦ* (Od. ι' 34).

Ὡς οὐδὲν γλύκιον ἧς πατρίδος ἠδὲ τοκήων.

22 *Εὐριπίδου* (Phoen. 357).

Μῆτερ, φρονῶν εὖ κοὐ φρονῶν ἀφικόμην
ἐχθροὺς ἐς ἄνδρας· ἀλλ' ἀναγκαίως ἔχει
πατρίδος ἐρᾶν ἅπαντας· ὃς δ' ἄλλως λέγει,
λόγοισι χαίρει, τὸν δὲ νοῦν ἐκεῖσ' ἔχει.

23 *Πλάτωνος ἐν τῷ Κρίτωνι* (p. 51 a).

Ἦ οὕτως εἶ σοφὸς ὥστε λέληθέ σε, ὅτι μητρός τε καὶ πατρὸς καὶ τῶν ἄλλων προγόνων ἁπάντων τιμιώ-

τερον πατρίς ἐστι καὶ σεμνότερον καὶ ἁγιώτερον, καὶ ἐν μείζονι μοίρᾳ καὶ παρὰ θεοῖς καὶ παρ' ἀνθρώποις τοῖς νοῦν ἔχουσι, καὶ σέβεσθαι δεῖ, καὶ μᾶλλον ὑπείκειν καὶ θωπεύειν πατρίδα χαλεπαίνουσαν ἢ πατέρα καὶ μητέρα, καὶ ἢ πείθειν ἢ ποιεῖν ἃ ἂν κελεύῃ, καὶ πάσχειν ἐάν τι προστάττῃ παθεῖν, ἡσυχίαν ἄγοντα, ἐάν τε τύπτεσθαι, ἐάν τε δεῖσθαι, ἐάν τε εἰς πόλεμον ἄγῃ τρωθησόμενον ἢ ἀποθανούμενον, ποιητέα ταῦτα· καὶ τὸ δίκαιον οὕτως ἔχει, καὶ οὐχ ὑπεικτέον οὐδ' ἀναχωρητέον οὐδὲ λειπτέον τὴν τάξιν· ἀλλὰ καὶ ἐν πολέμῳ καὶ ἐν δικαστηρίῳ καὶ πανταχοῦ ποιητέον ὃ ἂν κελεύῃ ἡ πόλις καὶ ἡ πατρίς, ἢ καὶ πείθειν αὐτὴν ᾗ δίκαιον πέφυκε· βιάζεσθαι δὲ οὐχ ὅσιον οὔτε μητέρα οὔτε πατέρα, πολὺ δὲ τούτων ἔτι ἧττον τὴν πατρίδα.

24 *Εὐσεβίου.*

Πατράσι παῖδας ἐπιζώειν εὐτυχές, καὶ χρὴ τοῦτο παρὰ τῆς τύχης αἰτέειν καὶ τοὺς μετὰ ταῦτα διαδεξομένους, καὶ ὅκως καὶ αὐτέων ἕκαστοι τάξι τῇ εἰρημένῃ τοὺς πρὸ ἑωυτῶν διαδεχοίατο. κοινὴ δὲ εὐχὴ δικαιοτάτη αὕτη ἂν παρὰ πάντων φυλαχθείη ἐπὶ τῇ διαμονῇ τοῦ μηκίστου, τὴν ὑποδεχομένην ἑκάστοτε καὶ ἐκτρέφουσαν πάντας πατρίδα καὶ δοῦσαν τοὺς προηγησαμένους, αὐτήν τε καὶ θεῶν τῶν ἐγχωρίων τὰς κατεστεώσας τιμὰς τῷ πλεῦνι αἰεὶ ὑπερβάλλειν.

25 *Πυθαγόρου.*

Πυθαγόρας ἐρωτηθεὶς πῶς δεῖ ἀγνωμονούσῃ πατρίδι προσφέρεσθαι, εἶπεν ὡς μητρί.

26 *Τιμοθέου.*

Τιμόθεος ὁ τῶν Ἀθηναίων στρατηγὸς ἀκούσας τινὸς τῶν συστρατηγούντων αὐτῷ λέγοντος "ἆρά γε,

Τιμόθεε, ἡ πατρὶς ἡμῶν χάριτας ἀποδώσει;" ἔφη "ἀλλ' ἡμῖν γένοιτο τὰς ἀξίας ἀποδοῦναι."

27 Ἐκ τῶν Σερήνου.

Οἱ Λάκωνες οἱ ἐπὶ τὸ ὑποσχεῖν δίκας ὑπὲρ τῶν κηρύκων ὡς τὸν μέγαν βασιλέα ἐλθόντες ἀφείθησάν τε καὶ διὰ τὴν ἀρετὴν ἠξίου αὐτοὺς παρ' αὐτῷ μένειν. "καὶ πῶς" ἔφασαν "ἂν δυναίμεθα τοιαύτην πατρίδα καταλιπεῖν, ὑπὲρ ἧς τοσαύτην ὁδὸν ἤλθομεν ἀποθανούμενοι;"

28 Ἀριστείδου.

Ἀριστείδης ἐρωτώμενος τί μάλιστα αὐτὸν ἐν τῇ φυγῇ ἐλύπει, "τὸ τῆς πατρίδος ὄνειδος" ἔφη "κακῶς ἀκουούσης ἐπὶ τῇ αὐτοῦ φυγῇ."

29 Σεριφίου.

Σερίφιος ὀνειδιζόμενος ὑπὸ Ἀθηναίου τὴν μικροπολιτείαν, "ἐμοὶ μὲν" ἔφη "ἡ πατρὶς ὄνειδος, σὺ δὲ τῇ πατρίδι."

30 Ἀριστείδου.

Ἡ γυνὴ τῷ Ἀριστείδῃ περὶ τὰ πολιτικὰ διατρίβοντι "εἴθε" ἔφη "τὰ μὲν ἴδια κοινὰ ἐνόμισας, τὰ δὲ κοινὰ ἴδια."

31 Χρυσέρμου ἐν β' Περσικῶν (cf. Plut. Mor. p. 308 b).

Περσῶν τὴν Ἑλλάδα λεηλατούντων καὶ πάντων τῶν ἐγχωρίων συγκεχυμένων, Παυσανίας ὁ τῶν Λακεδαιμονίων στρατηγὸς ἀπὸ Ξέρξου πεντακόσια τάλαντα χρυσίου λαβὼν ἔμελλε προδιδόναι τὴν Σπάρτην. τῶν δὲ ἐπιστολῶν μεσολαβηθεισῶν, Ἡγησίλαος ὁ πατὴρ τοῦ προειρημένου περὶ τῶν συμβεβηκότων ἀκούσας τὸν υἱὸν μέχρι τοῦ ναοῦ τῆς χαλκιοίκου συν-

εδίωξεν Ἀθηνᾶς, καὶ τὰς θύρας τοῦ τεμένους πλίνθοις ἐμφράξας μετὰ τῆς γυναικὸς τὴν εἴσοδον ἐφρούρησε καὶ λιμῷ τὸν προδότην ἀνεῖλεν, ὃν ἡ μήτηρ ἀείρασα ὑπὲρ τοὺς ὅρους ἔρριψεν.

32 Δημαράτου β' Ἀρκαδικῶν (Plut. Moral. p. 309 c).

Τεγεατῶν πρὸς Φενεάτας πόλεμον ἐχόντων καὶ χρονίου τῆς παρατάξεως ὑπαρχούσης, συνεφώνησε τοῖς δήμοις τριδύμους ἀδελφοὺς πέμψαι τοὺς μαχησομένους ὑπὲρ τῆς νίκης. ἀρέσαντος δὲ τοῦ δόγματος ἔπεμψαν Τεγεᾶται μὲν τοὺς Ῥηξιμάχου παῖδας, Φενεᾶται δὲ τοὺς Δημοστράτου. συμβληθείσης δὲ τῆς παρατάξεως ἐφονεύθησαν ἐκ τῶν Ῥηξιμάχου δύο, ὁ δὲ τρίτος τοὔνομα Κριτόλαος στρατηγήματι τῶν ἀντιπάλων περιεγένετο· προσποιητὴν γὰρ σκηψάμενος φυγὴν καθ' ἕνα τῶν ἐπιδιωκόντων ἀνεῖλε, καὶ ἐγκρατὴς γενόμενος τῆς νίκης περιχαρὴς πρὸς τοὺς οἰκείους ἔδραμε· πάντων δ' αὐτῷ περιπλοκὰς συμπαθεῖς διδόντων, οὐ συνεχάρη μόνη τῷ προειρημένῳ ἡ ἀδελφὴ Δημοδίκη· πεφονεύκει γὰρ αὐτῆς τὸν κατηγγυημένον ἄνδρα Δημόδικον. ἀναξιοπαθήσας δὲ ἐπὶ τούτοις ὁ νέος τὴν παρθένον ἀποκτείνει, καὶ ὑπὸ τῆς μητρὸς φόνου κριθεὶς ἀπελύθη τοῦ ἐγκλήματος.

33 Δημαράτου ἐν τρίτῳ τραγῳδουμένων.

Ἀθηναίων πρὸς Εὔμολπον τὸν Θρᾳκῶν βασιλέα πόλεμον ἐχόντων, Ἐρεχθεὺς ὁ τῆς Ἀττικῆς προϊστάμενος χρησμὸν ἔλαβεν, ὅτι νικήσει τοὺς ἐχθρούς, ἐὰν τὴν πρεσβυτάτην τῶν θυγατέρων Περσεφόνῃ θύσῃ. παραγενόμενος δ' εἰς Ἀθήνας Πραξιθέᾳ τῇ γυναικὶ τὴν πυθόχρηστον μαντείαν ἀπήγγειλεν· εἶθ' οὕτω τὴν κόρην προσαγαγὼν τοῖς βωμοῖς ἀνεῖλε,

καὶ συμβαλὼν τὸν πόλεμον ἐγκρατὴς ἐγένετο τῆς νίκης.

34 Ἱεροκλέους ἐκ τοῦ πῶς πατρίδι χρηστέον.

Μετὰ τὸν περὶ θεῶν λόγον εὐλογώτατόν ἐστιν ὑποθέσθαι πῶς πατρίδι χρηστέον. ἔστι γὰρ ὡσανεὶ δεύτερός τις θεὸς αὕτη, νὴ Δία, πρῶτος καὶ μείζων γονεύς· παρ' ὃ δὴ καὶ ὁ τοὔνομα τῷ πράγματι θέμενος οὐκ ἀνεντρεχὲς ἔθετο, παρασχηματίσας μὲν τῷ πατρί, θηλυκῶς δ' ἐξενεγκών, ἵν' οἷον μίγμα τυγχάνοι τοῦ τε πατρὸς καὶ τῆς μητρός. καὶ δὴ οὗτος μὲν ὁ λόγος ὑπαγορεύει πατρίδα τιμᾶν ἐπίσης τοῖς δυσὶ γονεῦσι τὴν μίαν, ὥστε θατέρου μὲν τῶν γονέων ὁποτερουοῦν καὶ δὴ προκρίνειν τὴν πατρίδα, προτιμᾶν δ' αὐτῆς μηδ' ἅμα τοὺς δύο, δι' ἴσης δὲ μοίρας ἄγειν. ἀλλ' ἕτερος αὖ λόγος ἐστίν, ὃς παρακαλεῖ καὶ προτιμᾶν αὐτὴν τῶν γονέων ἅμα τοῖν δυοῖν, καὶ οὔ τοι μόνον τούτων, ἀλλὰ καὶ γυναικὸς σὺν αὐτοῖς καὶ τέκνων καὶ φίλων καὶ ἁπαξαπλῶς μετὰ θεοὺς τῶν ἄλλων ἁπάντων.

35 Ἐν ταυτῷ.

Ὥσπερ οὖν ἀνόητος μὲν ὁ τῶν πέντε δακτύλων τὸν ἕνα προκρίνων, εὐλόγιστος δὲ ὁ τοὺς πέντε τοῦ ἑνός (ὃ μὲν γὰρ ἀτιμάζει καὶ τὸν προκρινόμενον, ὃ δ' ἐν τοῖς πέντε καὶ τὸν ἕνα περισώζει), τοῦτον δ' αὖ τὸν τρόπον καὶ ὁ μὲν ἑαυτὸν τῆς πατρίδος πλέον σώζειν βουλόμενος πρὸς τῷ δρᾶν ἀθέμιτα καὶ ἄλλως ἀνόητος ἱμείρων ἀδυνάτων, ὁ δὲ ἑαυτοῦ προτιμῶν τὴν πατρίδα θεοφιλής τε καὶ τοῖς λογισμοῖς ἀραρώς. εἴρηται δ' ὅμως, ὡς κἂν εἰ μὴ συναριθμοίη τις τῷ συστήματι, κατ' ἰδίαν δ' ἐξετάζοι, καθήκειν τῆς ἑαυ-

τοῦ σωτηρίας τὴν τοῦ συστήματος προκρίνειν, ὅτι τὴν ὡς πολίτου σωτηρίαν ἀνύπαρκτον ἀπέφαινεν ἡ τῆς πόλεως ἀπώλεια, καθάπερ καὶ τὴν τοῦ ἑνὸς δακτύλου, ὡς μέρους χειρός, ἡ τῆς χειρὸς ἀναίρεσις. καὶ δὴ κατὰ τούτων ἡμῖν συγκεκεφαλαιώσθω, διότι χρὴ τὸ κοινῇ συμφέρον τοῦ ἰδίᾳ μὴ χωρίζειν ἀλλ' ἓν ἡγεῖσθαι καὶ ταυτόν· τό τε γὰρ τῇ πατρίδι συμφέρον κοινόν ἐστι καὶ τῶν κατὰ μέρος ἑκάστῳ (τὸ γὰρ ὅλον δίχα τῶν μερῶν ἐστὶν οὐδέν) τό τε τῷ πολίτῃ συμφέρον προσήκει καὶ τῇ πόλει, ἐάν γε ὡς πολίτῃ συμφέρον λαμβάνηται. καὶ γὰρ τὸ χορευτῇ ὡς χορευτῇ λυσιτελὲς καὶ τῷ ὅλῳ χορῷ κερδαλέον ἂν εἴη. τοῦτον οὖν τὸν λόγον ἐνθέμενοι πάντα ταῖς διανοίαις πολὺ φῶς ἕξομεν ἐν τοῖς κατὰ μέρος, ὥστε ἐν μηδενὶ παραλιπεῖν καιρῷ τὸ πρὸς τὴν πατρίδα καθῆκον.

36 Ἐν ταυτῷ.

Ὧν οὕνεκα φημὶ δεῖν ἀποικονομεῖσθαι πᾶν καὶ πάθος καὶ νόσημα τῆς ἑαυτοῦ ψυχῆς τὸν πατρίδι χρησόμενον καλῶς. δεῖ δὲ καὶ τοὺς νόμους τῆς πατρίδος καθάπερ τινὰς θεοὺς δευτέρους συντηρεῖν αὐτόν τε βιοῦντα κατὰ τὴν τούτων ὑφήγησιν, κἂν εἰ παραβαίνειν τις αὐτοὺς ἢ νεοχμοῦν ἐπιχειροίη σπουδῇ πάσῃ κωλύοντα καὶ πάντα τρόπον ἐναντιούμενον. οὐ γὰρ ἀγαθὸν ἐπιτήδευμα πόλει δι' ἀτιμίας ἀγόμενοι νόμοι καὶ τὰ νέα προκρινόμενα τῶν παλαιῶν. ὅθεν καὶ τῶν ψηφισμάτων καὶ τῆς παραθέρμου ταύτης καινουργίας εἰρκτέον τοὺς αὐθαδέστερον ἐπὶ τοῦτ' ἰόντας. ἀποδέχομαι γοῦν ἔγωγε καὶ τὸν τῶν Λοκρῶν νομοθέτην Ζάλευκον, ὃς ἐνομοθέτησε τὸν καινὸν εἰσοίσοντα νόμον βρόχου περικειμένου τῷ τραχήλῳ τοῦτο ποιεῖν, ὡς ἀκαρὴς οἴχοιτο πνιγείς, εἰ μὴ μάλα σφόδρα λυσι-

τελῶς τῷ κοινῷ παραδιατάττοιτο τὴν ἐξ ἀρχῆς τῆς πολιτείας κατάστασιν. οὐδὲν δ' ἧττον τῶν νόμων καὶ τὰ ἔθη φυλακτέον τά γε ὄντως πάτρια καὶ τάχα που πρεσβύτερα καὶ τῶν νόμων αὐτῶν· ἐπεὶ τά γε χθιζὰ ταῦτα καὶ πρωϊζὰ [τὰ νῦν] εἰς ἅπασαν εἰσηγμένα πόλιν οὔτε πάτρια ἡγητέον καὶ τάχ' οὐδὲ ἔθη τὸ σύνολον. εἶτα τὸ μὲν ἔθος ἄγραφός τις εἶναι βούλεται νόμος, καλὸν ἐπιγεγραμμένος νομοθέτην, τὴν τῶν χρωμένων ἁπάντων εὐαρέστησιν, ἴσως δέ που καὶ τοῖς φύσει δικαίοις ἐγγὺς βάλλων.

ΠΕΡΙ ΞΕΝΗΣ. Μ.

1 *Εὐριπίδου Φιλοκτήτῃ.*

Πατρὶς καλῶς πράσσουσα τὸν τυχόντ' ἀεὶ
μείζω τίθησι, δυστυχοῦσα δ' ἀσθενῆ.

2 *Τοῦ αὐτοῦ Φαέθοντι.*

Ὡς πανταχοῦ γε πατρὶς ἡ βόσκουσα γῆ.

3. 4. *Ἐκ τῶν Πλουτάρχου περὶ φυγῆς* (p. 600 f. 601 c).

Ὅθεν εὖ μὲν ὁ Ἡρακλῆς εἶπεν ἐρωτηθεὶς
"Ἀργεῖος ἢ Θηβαῖος· οὐ γὰρ εὔχομαι
μιᾶς· ἅπας μοι πύργος Ἑλλήνων πατρίς."

ἀλλ' ἡμεῖς ὥσπερ μύρμηκες ἢ μέλιτται μυρμηκιᾶς μιᾶς ἢ κυψέλης ἐκπεσόντες ἀδημονοῦμεν καὶ ξενοπαθοῦμεν, οὐκ εἰδότες οὐδὲ μεμαθηκότες οἰκεῖα τὰ πάντα ποιεῖσθαι καὶ νομίζειν ὥσπερ ἐστίν. καίτοι γελῶμεν τὴν ἀβελτερίαν τοῦ φάσκοντος ἐν Ἀθήναις βελτίονα σελήνην τῆς ἐν Κορίνθῳ· τρόπον τινὰ τὸ αὐτὸ πάσχοντες, ὅταν ἀμφιγνοῶμεν ἐπὶ ξένης γενόμενοι τὴν γῆν τὴν θάλατταν τὸν ἀέρα τὸν οὐρανόν,

ὡς ἕτερα καὶ διαφέροντα τῶν συνήθων. ἡ μὲν γὰρ φύσις ἐλευθέρους ἡμᾶς καὶ λελυμένους ἀφίησιν, αὐτοὶ δὲ ἡμεῖς συνδέομεν ἑαυτοὺς καὶ στενοχωροῦμεν. πλοῦτον γὰρ ἀποβάλλοντα ῥᾳδίως καὶ ταχέως οὐκ ἔστιν ἄλλον συναγαγεῖν· πατρὶς δὲ γίνεται πᾶσα πόλις εὐθὺς ἀνθρώπῳ χρῆσθαι μεμαθηκότι· ἂν γὰρ σκοπῇς ἄνευ κενῆς δόξης τὴν ἀλήθειαν, ὁ μίαν πόλιν ἔχων ξένος ἐστὶ τῶν ἄλλων ἁπασῶν καὶ ἀλλότριος. Ἀριστοτέλης ἦν ἐκ Σταγείρων, Θεόφραστος ἐξ Ἐρέσου, Στράτων ἐκ Λαμψάκου, Γλύκων δὲ ἐκ Τρῳάδος, Ἀρίστων ἐκ Κέω. τίς οὖν τούτους ἐδίωξεν; οὐδείς, ἀλλ' αὐτοὶ διώκοντες ἡσυχίαν καὶ σπουδήν, ἧς οὐ πάνυ μέτεστιν οἴκοι τοῖς ἡντινοῦν δόξαν ἢ δύναμιν ἔχουσι, τὰ μὲν ἄλλα λόγοις, τοῦτο δὲ ἡμᾶς ἔργῳ διδάσκουσι. καὶ γὰρ νῦν οἱ δοκιμώτατοι καὶ κράτιστοι ζῶσιν ἐπὶ ξένης, οὐ μετασταθέντες, ἀλλὰ μεταστάντες.

5 *Ἐνταυτῷ* (Plut. Mor. p. 607 d).

Τὸ δὲ ἀληθέστατον ἡ ψυχὴ φεύγει καὶ πλανᾶται θείοις ἐλαυνομένη δόγμασι καὶ νόμοις, εἶτα ὥσπερ ἐν νήσῳ σάλον ἐχούσῃ πολύν, καθάπερ φησὶν ὁ Πλάτων, ὀστρέου τρόπον ἐνδεδεμένη τῷ σώματι, διὰ τὸ μὴ ἀναφέρειν μηδὲ μνημονεύειν "ἐξ οἵης τιμῆς τε καὶ ὅσσου μήκεος ὄλβου" μεθέστηκεν, οὐ Σάρδεων Ἀθήνας, οὐδὲ Κορίνθου Λῆμνον ἢ Σκῦρον, ἀλλ' οὐρανοῦ καὶ σελήνης γῆν ἀμειψαμένη καὶ τὸν ἐπὶ γῆς βίον, ἂν μικρὸν ἐνταῦθα τόπον ἐκ τόπου παραλλάξῃ, δυσανασχετεῖ καὶ ξενοπαθεῖ, καθάπερ φυτὸν ἀγεννὲς ἀπομαραινομένη. καίτοι φυτῷ μέν ἐστί τις χώρα μᾶλλον ἑτέρας ἑτέρα πρόσφορος, ἐν ᾗ τρέφεται καὶ βλαστάνει βέλτιον· ἀνθρώπου δὲ οὐδεὶς ἀφαιρεῖται τόπος εὐδαιμονίαν, ὥσπερ οὐδὲ ἀρετὴν οὐδὲ φρόνησιν.

6 *Δημοκρίτου.*

Ξενιτείη βίου αὐτάρκειαν διδάσκει· μᾶζα γὰρ καὶ στιβὰς λιμοῦ καὶ κόπου γλυκύτατα ἰήματα.

7 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Ἀνδρὶ σοφῷ πᾶσα γῆ βατή· ψυχῆς γὰρ ἀγαθῆς πατρὶς ὁ ξύμπας κόσμος.

8 *Τέλητος περὶ φυγῆς.*

Μήποτε πρὸς μὲν τὸν οἰόμενον ἀλογιστοτέρους τὴν φυγὴν ποιεῖν ὀρθῶς ἂν παραβάλλοιτο τὰ ἐπὶ τῶν τεχνῶν, ὅτι ὃν τρόπον οὐδὲ αὐλεῖν οὐδὲ ὑποκρίνεσθαι χεῖρον ἔστιν ἐπὶ ξένης ὄντα, οὕτως οὐδὲ βουλεύεσθαι· πρὸς δὲ τὸν κατ' ἄλλο τι ἡγούμενον τὴν φυγὴν βλαβερὸν εἶναι, μὴ οὐδὲν λέγητε πρὸς τὸ τοῦ Στίλπωνος, ὃ καὶ πρῴην εἰπόντι λέγειν φησί· καὶ τίνων ἡ φυγὴ ἢ ποίων ἀγαθῶν στερίσκει; τῶν περὶ ψυχήν, ἢ τῶν περὶ σῶμα, ἢ τῶν ἐκτός; εὐλογιστίας, ὀρθοπραγίας, εὐπραγίας ἡ φυγὴ στερίσκει; οὐ δή. ἀλλὰ μὴ ἀνδρίας ἢ δικαιοσύνης ἢ ἄλλης τινὸς ἀρετῆς; οὐδὲ τοῦτο. ἀλλὰ μὴ τῶν περὶ τὸ σῶμά τινος ἀγαθῶν; ἢ οὐχ ὁμοίως ἔστιν ἐπὶ ξένης ὄντα ὑγιαίνειν καὶ ἰσχύειν καὶ ὀξὺ ὁρᾶν καὶ ὀξὺ ἀκούειν, ἐνίοτε δὲ μᾶλλον ἢ ἐν τῇ ἰδίᾳ μένοντα; καὶ μάλα. ἀλλὰ μὴ τῶν ἐκτὸς στερίσκει ἡ φυγή; ἢ οὐ πολλοῖς ὤφθη τὰ πράγματα κατὰ τὴν τῶν τοιούτων ὕπαρξιν ἐπιφανέστερα γεγονότα φυγάδων γενομένων; ἢ οὐ Φοῖνιξ ἐκ Δολοπίας ἐκπεσὼν ὑπὸ Ἀμύντορος εἰς Θεσσαλίαν λέγει, "Πηλέα δ' ἐξικόμην, καί μ' ἀφνειὸν ἔθηκε, πολὺν δέ μοι ὤπασε λαόν;" Θεμιστοκλῆς δ' ἐκεῖνος "ὦ παῖ" φησίν "ἀπωλόμεθ' ἂν εἰ μὴ ἀπωλόμεθα." νῦν δὲ πολλὴ τῶν τοιούτων ἀφθονία. ποίων οὖν ἀγαθῶν ἡ φυγὴ στερίσκει, ἢ τίνος κακοῦ παραιτία ἐστίν; ἐγὼ

μὲν γὰρ οὐχ ὁρῶ. ἀλλ' ἡμεῖς πολλαχοῦ αὐτοὺς κατορύττομεν καὶ φυγάδες γενόμενοι καὶ ἐν τῇ ἰδίᾳ μένοντες. οὐκ ἄρχουσι, φησίν, οὐ πιστεύονται, οὐ παρρησίαν ἔχουσιν. ἔνιοι δέ γε καὶ φρουροῦσι τὰς πόλεις παρὰ βασιλεῦσι, καὶ ἔθνη πιστεύονται, καὶ δωρεὰς μεγάλας καὶ συντάξεις λαμβάνουσι. Λυκῖνος ἐκεῖνος οὐ παρ' ἡμῖν ἐφρούρει φυγὰς ὢν ἐκ τῆς Ἰταλίας πιστευόμενος παρ' Ἀντιγόνῳ, καὶ τὸ προσταττόμενον ἐποιοῦμεν Λυκίνῳ ἡμεῖς ἐν τῇ ἰδίᾳ μένοντες; Ἱππομέδων ὁ Λακεδαιμόνιος ὁ νῦν ἐπὶ Θρᾴκης καθιστάμενος ὑπὸ Πτολεμαίου, Χρεμωνίδης καὶ Γλαύκων οἱ Ἀθηναῖοι, οὐ πάρεδροι καὶ σύμβουλοι; ἵνα μὴ τὰ παλαιά σοι λέγω, ἀλλὰ τὰ καθ' ἡμᾶς. καὶ τὸ τελευταῖον οὐκ ἐπὶ στόλου τηλικούτου ἐξαπεστάλη καὶ χρημάτων τοσούτων πιστευόμενος καὶ τὴν ἐξουσίαν ἔχων ὡς βούλοιτο χρῆσθαι; ἀλλ' ἔν γε τῇ ἰδίᾳ οὐκ ἄρχουσιν οἱ φυγάδες· οὐδὲ γὰρ αἱ γυναῖκες οἴκοι μένουσαι, οὐδ' οἱ παῖδες, οὐδὲ τὰ μειράκια ταυτί, οὐδ' οἱ ἔξωροι τῇ ἡλικίᾳ. ἀλλὰ μή τι δυσχερὲς αὐτοῖς; εἰ δ' ὠδυνῶντο ἐπὶ τούτῳ, οὐκ ἂν ἦσαν βάκηλοι; τί δὲ καὶ διαφέρει ἄρχειν ἢ ἰδιωτεύειν; σὺ πολλῶν [ἢ ὀλίγων] καὶ ἡβώντων βασιλεύσεις, ἐγὼ δὲ ὀλίγων καὶ ἀνήβων, παιδαγωγὸς γενόμενος, καὶ τὸ τελευταῖον ἐμαυτοῦ· τῇ γὰρ αὐτῇ ἐμπειρίᾳ χρώμενον, καὶ τοὺς πολλοὺς καὶ τὸν ἕνα, καὶ δημοσιεύοντα καὶ κατ' οἰκίας ἐργολαβοῦντα, καὶ ἐπὶ ξένης ὄντα καὶ ἐν τῇ ἰδίᾳ μένοντα, καὶ κατὰ τὴν αὐτὴν εὐβουλίαν καὶ τῇ ἀρχῇ καλῶς καὶ τῇ ἰδιωτείᾳ ἔστι χρῆσθαι. τί οὖν διοίσει μοι, εἰ μὴ ἄρξω ἀλλὰ ἰδιωτεύσω; ἀλλ' οὐδὲ ἐξουσίαν ἕξεις εἰσελθεῖν εἰς τὴν ἰδίαν. οὐδὲ γὰρ νῦν εἰς τὸ θεσμοφόριον ἐξουσίαν ἔχω, οὐδὲ γυναῖκες εἰς τὸ τοῦ Ἐνυαλίου, οὐδ' εἰς τὰ ἄβατα ἔξομεν. ἀλλ' εἰ ἐπὶ τούτῳ ἄχθοιτό τις,

οὐκ ἂν παιδαριώδης εἴη; οὐδὲ εἰς τὸ γυμνάσιον ἐνίοτε ἐξουσίαν ἔχω, ἀλλ' ἀπελθὼν εἰς τὸ βαλανεῖον ἠλειψάμην τῇ αὐτῇ παλαιστρικῇ χρώμενος ᾗ καὶ πρὸ τοῦ ἐν τῷ γυμνασίῳ. οὕτω καὶ δεῦρο ἄβατον ἡγησάμενος τὴν ἰδίαν μεταβὰς ἀλλαχοῦ κατοικῶ. οὐκ οὖν ἀκλήρημά τι καὶ ὄνειδος ἐμόν, εἰ μετὰ πονηρῶν οἰκήσω; δύναμαι δὲ μεταβὰς ὥσπερ ἐξ ἑτέρας νεὼς εἰς ἑτέραν ὁμοίως εὐπλοεῖν, οὕτως ἐξ ἑτέρας πόλεως εἰς ἑτέραν πόλιν ὁμοίως εὐδαιμονεῖν. ἢ ἐμὸν ὄνειδος, ἀλλ' οὐ τῶν ἐμὲ ἐκβαλλόντων ἐπιεικῆ καὶ δίκαιον ὄντα; οὐκ ἀηδῶς Φιλήμων· ἠγωνισμένου γάρ ποτε αὐτοῦ καὶ ἀπηλλαχότος ἀστείως, συναντῶντές τινες "ὡς εὐημέρηκας" ἔφασαν "Φιλῆμον·" "ὑμεῖς μὲν οὖν" φησὶν "οἴεσθε οὕτως τεθεαμένοι· ἐγὼ μὲν γὰρ ἀεὶ ἀγαθὸς ὢν διατελῶ." τί οὖν; ὑπὸ χειρόνων φυγαδεύεσθαι οὐ παροινία; σὺ δ' ἂν ἐβούλου, φησίν, ὑπὸ καλῶν καὶ ἀγαθῶν; ἢ οὐχ οὕτω μὲν σὸν ἔγκλημα; οὐθένα γὰρ ἀγνωμόνως καὶ ἀδίκως ἄνδρες ἀγαθοὶ φυγαδεύουσιν· οὐ γὰρ ἂν ἦσαν δίκαιοι. παρευδοκιμεῖσθαι οὖν ὑπὸ τῶν τοιούτων καὶ χειροτονίᾳ καὶ ψήφῳ οὐκ ὄνειδος; οὐ σόν γε, ἀλλὰ τῶν τούτους χειροτονούντων καὶ ψηφοφορούντων· ὥσπερ εἰ τὸν ἄριστον ἰατρὸν ἀφέντες φαρμακοπώλην εἵλοντο, καὶ τούτῳ τὸ δημόσιον ἔργον ἐνεχείρισαν, πότερα τοῦ ἰατροῦ εἶπας ἂν ὄνειδος καὶ ἀκλήρημα τοῦτο, ἢ τῶν ἑλομένων; ἀλλὰ τοῦτό γε εὑρεθῆναι τὴν πατρίδα μοχθηρὰν καὶ ἀχάριστον οὖσαν, εἰς ἣν πολλά τις ἐπόνησε, πῶς οὐκ ἀκλήρημα; καὶ πῶς ἂν εἴη τοῦτο ἀκλήρημα, ἀλλ' οὐκ εἰ δεῖ εἰπεῖν οὕτως εὐκλήρημα, τὸ γνῶναι ποῖά τις πρότερον μὴ εἰδότα; ἀλλ' εἰ μὲν τὴν γυναῖκα ᾔσθου πονηρὰν καὶ ἐπίβουλον οὖσαν, πρότερον μὴ εἰδὼς ἂν ἔσχες χάριν, καὶ εἰ τὸν οἰκέτην

δραπέτην καὶ κλέπτην, ἵνα φυλάττῃ· εἰ δὲ τὴν πατρίδα πονηρὰν καὶ ἀχάριστον ᾔσθου, ἀκληρεῖν ἡγήσῃ, ἀλλ' οὐ χάριν ἕξεις; ἀλλ' ὅμως μέγα μοι δοκεῖ τὸ ἐν ᾗ ἐγένετό τις καὶ ἐτράφη, καὶ ἐν ταύτῃ καταγενέσθαι. πότερον καὶ ἐν οἰκίᾳ ἐν ᾗ ἐτράφης καὶ ἐγένου, ἐν ταύτῃ καταγενέσθαι, κἂν ᾖ σαπρὰ καὶ ῥέουσα καὶ καταπίπτουσα; καὶ ἐν νηὶ ἐν ᾗ ἐγένου καὶ ἐκ παιδίου ἔπλεις, ἐνταῦθα κἂν ἀκάτιον ᾖ, οὐδ' εἰ κωπηλατοῦντα ἀπορρήγνυσθαι δέοι, εἰς τὴν εἰκόσορον μεταβάντα ἀσφαλῶς καὶ ἀκόπως; καὶ ὀνειδίζουσι μὲν ὅτι Κύπριος, ὅτι Μυκόνιος, ἢ ὅτι Βελβινήτης· ὅμως δὲ μέγα τι φασὶ τὸ ἐν ᾗ ἐγένετό τις καὶ ἐτράφη, ἐν ταύτῃ καταβιῶναι, καὶ τὰς πλείους μὲν ἐξώλεις τῶν πόλεων καὶ τοὺς ἐνοικοῦντας ἀσεβεῖς, μέγα δὲ καὶ προσηνὲς τὴν πατρίδα, ὥσπερ καὶ αὐτή. ἀλλὰ καὶ ὅτι μέτοικος· ὀνειδίζουσι δὲ πολλοὶ λέγοντες "μέτοικε". "σὺ δ' ἐγγενὴς ὢν τήνδε δουλώσας ἔχεις." καὶ Κάδμον μὲν τὸν κτίστην Θηβῶν θαυμάζει, ἐμὲ δ' εἰ μὴ πολίτης, ὀνειδίζει. καὶ Ἡρακλέα μὲν ὡς ἄριστον ἄνδρα γεγονότα ἐπαινοῦμεν· τὸ δὲ μέτοικον εἶναι ὄνειδος ἡγούμεθα. Ἡρακλῆς δ' ἐξ Ἄργους ἐκπεσὼν Θήβαις κατῴκει. Λακεδαιμόνιοι δὲ οὐδὲν τῶν τοιούτων ὄνειδος ἡγοῦνται· ἀλλὰ τὸν μὲν μετασχόντα τῆς ἀγωγῆς καὶ ἐμμείναντα, κἂν ξένος κἂν ἐξ εἵλωτος, ὁμοίως τοῖς ἀρίστοις τιμῶσι· τὸν δὲ μὴ ἐμμείναντα κἂν ἐξ αὐτοῦ τοῦ βασιλέως, εἰς τοὺς εἵλωτας ἀποστέλλουσι, καὶ τῆς πολιτείας ὁ τοιοῦτος οὐ μετέχει. ἀλλὰ τό γε ἐν τῇ ἰδίᾳ μὴ ἐξεῖναι ταφῆναι, πῶς οὐκ ὄνειδος; καὶ πῶς μέλλει τοῦτο ὄνειδος εἶναι ὃ τοῖς ἀρίστοις πολλάκις συνέβη; ἢ τίς τιμὴ αὕτη ἥ τις τοῖς κακίστοις περιγίνεται; καὶ Σωκράτην μὲν ἐπαινοῦσιν, ὅταν ἐπιλαμβανόμενος Ἀθηναίων λέγῃ· οἱ μὲν γὰρ στρατηγοὶ ἐφ' οἷς καλλωπίζονται ὑπερό-

ριοι τεθαμμένοι εἰσί, τὰ δὲ ὀνείδη τῆς δημοκρατίας ἐν τοῖς δημοσίοις τάφοις. ὁμοίως δὲ καὶ τὸ μὲν ἐπὶ ξένης ταφῆναι ὄνειδος, τὸ δ' ἐν τοῖς δημοσίοις τάφοις τίμιον. τί δὲ καὶ διαφέρειν ἂν δόξαι ἐπὶ ξένης ταφῆναι ἢ ἐν τῇ ἰδίᾳ· οὐκ ἀηδῶς γάρ τις τῶν Ἀττικῶν φυγάδων λοιδορουμένου τινὸς αὐτῷ καὶ λέγοντος "ἀλλ' οὐδὲ ταφήσῃ ἐν τῇ ἰδίᾳ, ἀλλ' ὥσπερ οἱ ἀσεβεῖς Ἀθηναίων ἐν τῇ Μεγαρικῇ," "ὥσπερ μὲν οὖν" ἔφη "οἱ εὐσεβεῖς Μεγαρέων ἐν τῇ Μεγαρικῇ." τί γὰρ τὸ διάφορον; ἢ οὐ πανταχόθεν, φησὶν ὁ Ἀρίστιππος, ἴση καὶ ὁμοία ἡ εἰς ᾅδου ὁδός; ἢ τὴν ἀρχὴν εἰ μὴ ταφήσῃ, τί σοι μέλει; ἀλλ' ἡ περὶ ταφῆς ἀγωνία, φησὶν ὁ Βίων, πολλὰς τραγῳδίας ἐποίησεν. ὥσπερ καὶ ὁ Πολυνείκης ἐντέλλεται

θάψον δέ μ' ὦ τεκοῦσα, καὶ σὺ σύγγονε,
ἐν γῇ πατρῴᾳ, καὶ πόλιν θυμουμένην
παρηγορεῖτον, ὡς τοσόνδε γοῦν τύχω
χθονὸς πατρῴας, κεἰ δόμους ἀπώλεσα.

εἰ δὲ μὴ τύχοις χθονὸς πατρῴας, ἀλλ' ἐπὶ ξένης ταφείης, τί ἔσται τὸ διάφορον; ἢ ἐκ Θηβῶν μόνον εἰς ᾅδου ὁ Χάρων πορθμεύει;

καὶ γῆς φίλης ὄχθοισι κρυφθῆναι τάφῳ.

εἰ δὲ μὴ κρυφθείης, ἀλλ' ἄταφος, τί τὸ δυσχερές; ἢ τί διαφέρει ὑπὸ πυρὸς κατακαυθῆναι ἢ ὑπὸ κυνὸς καταβρωθῆναι ἢ ἐπάνω τῆς γῆς ὄντα ὑπὸ κοράκων ἢ κατορυχθέντα ὑπὸ σκωλήκων;

συνάρμοσον δέ μου βλέφαρα τῇ σῇ χερὶ
μῆτερ.

ἂν δὲ μὴ συναρμόσῃ σου, ἀλλὰ βλέπων καὶ κεχηνὼς ἀποθάνῃς, τί ἔσται τὸ χαλεπόν; ἢ καὶ τῶν ἐν τῇ θα-

λάττῃ καὶ ἐν τοῖς πολέμοις ἀποθνησκόντων συναρμόζει τις; ἀλλ' ἔμοιγε δοκεῖ ταῦτα παιδιά τις ἡμετέρα εἶναι. καὶ ἡμεῖς μὲν καὶ ἰδεῖν καὶ ἅψασθαι ὀκνοῦμεν, οἱ δὲ σκελετεύσαντες ἔνδον ἔχουσιν ὡς καλόν τι καὶ ἐνέχυρα τοὺς νεκροὺς λαμβάνουσιν. οὕτως ἀντέστραπται τῷ ἡμετέρῳ ὁ ἐκείνων τύπος.

9 Μουσωνίου ἐκ τοῦ ὅτι οὐ κακὸν ἡ φυγή.

Φυγάδος δέ τινος ὀδυρομένου ὅτι φεύγει, οὕτω πως παρεμυθήσατο αὐτόν. φυγὴν γάρ, ἔφη, πῶς ἄν τις μὴ ἀνόητος ὢν βαρύνοιτο; ἥτις ὕδατος μὲν καὶ γῆς καὶ ἀέρος, ἔτι δὲ ἡλίου καὶ τῶν ἄλλων ἄστρων, οὐκ ἀπείργει ἡμᾶς οὐδαμῶς, ἀλλ' οὐδὲ ἀνθρώπων ὁμιλίας· ἁπανταχοῦ γὰρ καὶ πάντῃ τούτων μετουσία ἐστίν. εἰ δὲ μέρους τινὸς τῆς γῆς ἀφαιρούμεθα καὶ τινῶν ἀνθρώπων συνουσίας, τί τοῦτο δεινόν; οὐδὲ γὰρ οἴκοι ὄντες ἁπάσῃ τῇ γῇ ἐχρώμεθα οὐδὲ ἀνθρώποις ἅπασι συνῆμεν· τοῖς μέντοι φίλοις καὶ νῦν συνείημεν ἄν, τοῖς γε ἀληθινοῖς καὶ ὧν προσήκει ποιεῖσθαί τινα λόγον· οὐ γὰρ ἂν οὗτοι προδοῖεν ποτὲ ἡμᾶς οὐδὲ ἐγκαταλίποιεν· εἰ δέ τινες πλαστοὶ καὶ οὐκ ἀληθινοὶ φίλοι εἰσί, τούτων ἀπηλλάχθαι κρεῖττον ἢ συνεῖναι αὐτοῖς. τί δ'; οὐχὶ κοινὴ πατρὶς ἀνθρώπων ἁπάντων ὁ κόσμος ἐστίν, ὥσπερ ἠξίου Σωκράτης; ὥστε οὐδὲ φεύγειν τῇ γε ἀληθείᾳ τὴν πατρίδα νομιστέον, ἂν ἀπέλθῃς ἐντεῦθεν ἔνθα ἔφυς τε καὶ ἐτράφης, πόλεως δὲ μόνον ἐστερῆσθαί τινος, ἄλλως τε κἂν ἀξιοῖς τις εἶναι ἐπιεικής. ὁ γὰρ τοιοῦτος χωρίον μὲν οὐδὲν οὔτε τιμᾷ οὔτ' ἀτιμάζει οὕτως ὡς εὐδαιμονίας αἴτιον, αὐτὸς δὲ ἐν αὑτῷ τίθεται τὸ πᾶν καὶ νομίζει εἶναι πολίτης τῆς τοῦ Διὸς πόλεως, ἣ συνέστηκεν ἐξ ἀνθρώπων καὶ θεῶν. σύμφωνα δὲ τούτοις λέγει καὶ Εὐριπίδης ἐν οἷς φησίν

ἅπας μὲν ἀὴρ ἀετῷ περάσιμος,
ἅπασα δὲ χθὼν ἀνδρὶ γενναίῳ πατρίς.

ὥσπερ οὖν εἴ τις ἐν τῇ πατρίδι ὤν, καὶ ἑτέραν οἰκίαν οἰκῶν, οὐκ ἐν ᾗ ἐτέχθη, δεινοπαθοίη διὰ τοῦτο καὶ ὀδύροιτο, μάταιος ἂν εἴη καὶ καταγέλαστος· οὕτω καὶ ὅστις ἑτέραν πόλιν οἰκῶν, οὐκ ἐν ᾗ τυγχάνει γεγονώς, συμφορὰν ἡγεῖται, ὁ τοιοῦτος εἰκότως ἂν ἄφρων νομίζοιτο καὶ ἀνόητος. καὶ μὴν πρός γε τὴν ἐπιμέλειαν τὴν ἑαυτῶν καὶ πρὸς κτῆσιν ἀρετῆς πῶς ἂν τὸ φεύγειν ἐνίσταιτο; ὁπότε γε μήτε μαθήσεως μήτε ἀσκήσεως καὶ ὧν χρὴ εἴργεταί τις διὰ τὴν φυγήν. πῶς μὲν οὖν οὐκ ἂν ἡ φυγὴ καὶ συνεργοίη πρὸς τὸ τοιοῦτον, παρέχουσά γε σχολὴν καὶ ἐξουσίαν τοῦ μανθάνειν τε τὰ καλὰ καὶ πράττειν μᾶλλον ἢ πρότερον, ἅτε μήθ᾽ ὑπὸ πατρίδος τῆς δοκούσης περιελκομένοις εἰς ὑπηρεσίας πολιτικάς, μήτε ὑπὸ φίλων τῶν δοκούντων ἢ συγγενῶν ἐνοχλουμένοις, οἵ τινες ἐμποδίσαι δεινοὶ καὶ ἀποσπάσαι τῆς ἐπὶ τὰ κρείττω ὁρμῆς; ἤδη δέ τισι καὶ παντάπασι τὸ φεύγειν συνήνεγκεν, ὥσπερ Διογένει, ὃς ἐκ μὲν ἰδιώτου φιλόσοφος ἐγένετο φυγών, ἀντὶ δὲ τοῦ καθῆσθαι εἰς Σινώπην διέτριψεν ἐν τῇ Ἑλλάδι, ἀσκήσει δὲ τῇ πρὸς ἀρετὴν τῶν φιλοσόφων διήνεγκεν. ἄλλοις δέ γε κακῶς τὸ σῶμα διακειμένοις ὑπὸ μαλακίας καὶ τρυφῆς ἔρρωσεν ἡ φυγή, βιασθεῖσιν ἀνδρικώτερον διαιτᾶσθαι· καὶ ἴσμεν τινὰς χρονίων νοσημάτων ἐν τῷ φεύγειν ἀπολυθέντας, ὥσπερ ἀμέλει Σπαρτιατικὸς οὗτος ὁ Λακεδαιμόνιος, ὃς ἀπὸ πολλοῦ ἔχων τὸ πλευρὸν κακῶς κἀκ τούτου πολλάκις νοσῶν, διὰ τὴν φυγὴν ἐπειδὴ ἐπαύσατο τρυφῶν, ἐπαύσατο καὶ νοσηλευόμενος. ἄλλους δέ γε τῶν ἁβροδιαίτων ποδάγρας ἀπολυθῆναί φασι, πάνυ δὴ κατατεινομένους

πρότερον ὑπὸ τούτου τοῦ πάθους, οὓς ἡ φυγὴ σκληρότερον διαιτᾶσθαι συνεθίσασα κατ' αὐτὸ τοῦτο ὑγιεῖς γενέσθαι παρεσκεύασεν. οὕτως ἄρα πρὸς τὸ διακεῖσθαι κρεῖττον αὐτοὺς ἑαυτῶν καὶ σῶμα καὶ ψυχὴν συνεργεῖ μᾶλλον ἢ ἀντιπράττει ἡ φυγή.

ἀλλ' οὐδ' ἀπορεῖν τῶν ἀναγκαίων πάντως ὑπάρχει τοῖς φεύγουσιν. ὅσοι μὲν γὰρ ἀργοὶ καὶ ἀμήχανοι καὶ οὐχ οἷοί τε ἀνδρίζεσθαι, οὗτοι μὲν κἂν τῇ πατρίδι ὄντες ἀποροῦσιν ὡς τὸ πολὺ καὶ ἀμηχανοῦσιν· οἱ δὲ γεννικοὶ καὶ φιλόπονοι καὶ συνετοί, κἂν ὅποι ποτὲ ἔλθωσιν, εὐποροῦσι καὶ διάγουσιν ἀνενδεῶς· καὶ γὰρ οὐδὲ δεόμεθα πολλῶν, ἂν μὴ βουλώμεθα τρυφᾶν,

ἐπεὶ τί δεῖ βροτοῖσι πλὴν δυοῖν μόνον,
Δήμητρος ἀκτῆς πώματός θ' ὑδρηχόου,
ἅπερ πάρεστι καὶ πέφυχ' ἡμᾶς τρέφειν;

ἐγὼ δὲ τούς γε λόγου ἀξίους ἄνδρας οὐ τῶν ἀναγκαιοτάτων μόνον πρὸς τὸν βίον ῥᾳδίως ἂν εὐπορεῖν ἔξω τῆς οἰκίας ὄντας, ἀλλὰ καὶ πολλὰ περιποιήσασθαι χρήματα πολλάκις. ὁ γοῦν Ὀδυσσεύς, παντὸς φυγάδος ὡς ἄν τις εἴποι ἀθλιώτερον διακείμενος, καὶ μόνος ὢν καὶ γυμνὸς καὶ ναυαγός, ὅμως ἀφικόμενος εἰς ἀνθρώπους ἀγνῶτας τοὺς Φαίακας ἐδυνήθη χρηματίσασθαι ἀφθόνως. Θεμιστοκλῆς δ' ἐπεὶ ἔφευγεν οἴκοθεν, οὐ παρὰ μὴ φίλους μόνον ἀλλὰ καὶ παρὰ πολεμίους καὶ βαρβάρους ἐλθὼν [τοὺς Πέρσας], τρεῖς ἔλαβε πόλεις δῶρον, Μυοῦντα καὶ Μαγνησίαν καὶ Λάμψακον, ὥστ' ἀπὸ τούτων βιοῦν. Δίων δὲ ὁ Συρακόσιος, ἀφαιρεθεὶς ὑπὸ Διονυσίου τοῦ τυράννου τὴν οὐσίαν πᾶσαν ὅτ' ἐξέπιπτε τῆς πατρίδος, οὕτως ἐν τῇ φυγῇ χρημάτων εὐπόρησεν ὥστε καὶ ξε-

νικὸν θρέψαι στράτευμα, μεθ' οὗ ἦλθεν ἐπὶ Σικελίαν καὶ ἠλευθέρωσεν αὐτὴν ἀπὸ τοῦ τυράννου. τίς ἂν οὖν εὖ φρονῶν, εἰς ταῦτ' ἀφορῶν, ἔτι τὴν φυγὴν ἀπορίας αἰτίαν εἶναι πᾶσι τοῖς φεύγουσιν ὑπολαμβάνοι; ἀλλ' οὐδὲ κακοδοξεῖν πάντως ἀνάγκη τοὺς φεύγοντας διὰ τὴν φυγήν, γνωρίμου γε πᾶσιν ὄντος, ὅτι καὶ δίκαι πολλαὶ δικάζονται κακῶς, καὶ ἐκβάλλονται πολλοὶ τῆς πατρίδος ἀδίκως, καὶ ὅτι ἤδη τινὲς ἄνδρες ἀγαθοὶ ὄντες ἐξηλάθησαν ὑπὸ τῶν πολιτῶν· ὥσπερ Ἀθήνηθεν μὲν Ἀριστείδης ὁ δίκαιος, ἐξ Ἐφέσου δὲ Ἑρμόδωρος, ἐφ' ᾧ καὶ Ἡράκλειτος ὅτι ἔφυγεν ἡβηδὸν ἐκέλευεν Ἐφεσίους ἀπάγξασθαι. ἔνιοι δέ γε καὶ ἐνδοξότατοι φεύγοντες ἐγένοντο, καθάπερ Διογένης ὁ Σινωπεὺς καὶ Κλέαρχος ὁ Λακεδαιμόνιος, ὁ μετὰ Κύρου στρατεύσας ἐπ' Ἀρταξέρξην· καὶ ἄλλους ἂν τις ἔχοι βουλόμενος λέγειν πολλούς. καίτοι πῶς ἂν εἴη τοῦτο κακοδοξίας αἴτιον, ἐν ᾧ τινὲς ἐνδοξότεροι γεγόνασιν ἢ πρότερον ἦσαν;

νὴ Δί', ἀλλ' Εὐριπίδης φησὶν ἐλευθερίας στέρεσθαι τοὺς φυγάδας, ἐπεὶ καὶ παρρησίας. πεποίηκε γὰρ τὴν μὲν Ἰοκάστην πυνθανομένην Πολυνείκους τοῦ υἱέως, τίνα δυσχερῆ τῷ φεύγοντί ἐστιν· ὃ δ' ἀποκρίνεται ὅτι

ἓν μὲν μέγιστον, οὐκ ἔχει παρρησίαν,

ἣ δ' αὖ πρὸς αὐτὸν

δούλου τόδ' εἶπας, μὴ λέγειν ἅ τις φρονεῖ.

ἐγὼ δὲ φαίην ἂν πρὸς τὸν Εὐριπίδην ὅτι, ὦ Εὐριπίδη, τοῦτο μὲν ὀρθῶς ὑπολαμβάνεις, ὡς δούλου ἐστὶν ἃ φρονεῖ μὴ λέγειν, ὅταν γε δέῃ λέγειν· οὐ γὰρ ἀεὶ καὶ πανταχοῦ καὶ πρὸς ὁντινοῦν λεκτέον ἃ

φρονοῦμεν. ἐκεῖνο δὲ οὔ μοι δοκεῖς εὖ εἰρηκέναι, τὸ μὴ μετεῖναι τοῖς φεύγουσι παρρησίας, εἴπερ παρρησία σοι δοκεῖ τὸ μὴ σιγᾶν ἃ φρονῶν τυγχάνει τις. οὐ γὰρ οἱ φεύγοντες ὀκνοῦσι λέγειν ἃ φρονοῦσιν, ἀλλ' οἱ δεδιότες μὴ ἐκ τοῦ εἰπεῖν γένηται αὐτοῖς πόνος ἢ θάνατος ἢ ζημία ἤ τι τοιοῦτον ἕτερον. τοῦτο δὲ τὸ δέος, μὰ Δία, οὐχ ἡ φυγὴ ποιεῖ. πολλοῖς γὰρ ὑπάρχει καὶ τῶν ἐν τῇ πατρίδι ὄντων, μᾶλλον δὲ τοῖς πλείστοις, τὰ δοκοῦντα δεινὰ δεδιέναι. ὁ δὲ ἀνδρεῖος οὐδὲν ἧττον φυγὰς ὢν ἤπερ οἴκοι θαρρεῖ πρὸς ἅπαντα τὰ τοιαῦτα, διὸ καὶ λέγει ἃ φρονεῖ θαρρῶν οὐδὲν μᾶλλον ὅταν ᾖ μὴ φυγάς, ἢ ὅταν φεύγων τύχῃ. ταῦτα μὲν πρὸς Εὐριπίδην εἴποι τις ἄν· σὺ δ' εἰπέ μοι, ὦ ἑταῖρε, ὅτε Διογένης φεύγων ἦν Ἀθήνησιν, ἢ ὅτε πραθεὶς ὑπὸ τῶν λῃστῶν ἦλθεν εἰς Κόρινθον, ἆρα τότε πλείω παρρησίαν ἄλλος τις ἐπεδείξατο Διογένους ἢ Ἀθηναῖος ἢ Κορίνθιος; τί δ'; ἐλευθεριώτερος ἄλλος τις ἢ Διογένης τῶν τότε ἀνθρώπων ἦν; ὃς καὶ Ξενιάδου τοῦ πριαμένου αὐτὸν ὡς δεσπότης δούλου ἦρχε. καὶ τί δεῖ τὰ παλαιὰ λέγειν; ἀλλ' ἐγώ σοι οὐ δοκῶ εἶναι φυγάς; ἆρ' οὖν ἐστέρημαι παρρησίας; ἆρα ἀφῄρημαι τὴν ἐξουσίαν τοῦ ἃ φρονῶ λέγειν; ἤδη δέ με εἶδες ἢ σὺ ἢ ἕτερος ὑποπτήσσοντά τῳ ὅτι φεύγω; ἢ χεῖρον ἔχειν τὰ πράγματα νομίζοντα νῦν ἢ πρότερον; ἀλλ' οὐδὲ μὰ Δία λυπούμενον ἢ ἀθυμοῦντα διὰ τὴν φυγὴν φαίης ἂν ἑωρακέναι με. καὶ γὰρ εἰ τὴν πατρίδα τις ἡμᾶς ἀφῄρηται, τό γε δύνασθαι φέρειν φυγὴν οὐκ ἀφῄρηται.

οἷς δὲ λογισμοῖς χρῶμαι πρὸς ἐμαυτὸν ὥστε μὴ ἄχθεσθαι τῇ φυγῇ, τούτους καὶ πρὸς σὲ εἴποιμ' ἄν. δοκεῖ μοι ἡ φυγὴ στερίσκειν μὲν ἀνθρώπους οὐ πάντως οὐδ' ὧν οἱ πολλοὶ νομίζουσιν ἀγαθῶν, καθάπερ

ἄρτι ἐδείκνυον. εἰ δ' οὖν καὶ στερίσκοι ἢ τινὸς ἢ πάντων τούτων, τῶν γε ἀληθῶς ἀγαθῶν οὐ στερίσκει· οὔτε γὰρ ἀνδρίαν ἢ δικαιοσύνην ὁ φεύγων ἔχειν κωλύεται διὸ φεύγει, οὔτε σωφροσύνην ἢ φρόνησιν, οὐδ' ἀρετὴν ἄλλην ἡντινοῦν, αἳ παροῦσαί τε κοσμεῖν καὶ ὠφελεῖν πεφύκασι τὸν ἄνθρωπον καὶ ἐπαινετὸν ἀποφαίνειν καὶ εὐκλεῆ, ἀποῦσαί τε βλάπτειν καὶ καταισχύνειν κακὸν ἀποφαίνουσαι καὶ ἀκλεῆ. τούτων δὲ ταύτῃ ἐχόντων, εἰ μὲν ἀγαθὸς εἶ οὗτος καὶ τὰς ἀρετὰς ἔχεις, οὐκ ἄν σε βλάπτοι ἡ φυγὴ οὐδ' ἂν ταπεινοίη, παρόντων γε τῶν ὠφελεῖν καὶ ἐπαίρειν μάλιστα δυναμένων· εἰ δὲ τυγχάνεις κακὸς ὤν, ἡ κακία σε βλάπτει καὶ οὐχ ἡ φυγή· καὶ τήν γε λύπην ἡ κακία σοι ἐπάγει οὐχ ἡ φυγή· διὸ ταύτης ἀπολυθῆναι δεῖ σε σπεύδειν μᾶλλον ἢ τῆς φυγῆς. ταῦτα καὶ πρὸς ἐμαυτὸν ἔλεγον ἀεὶ καὶ πρὸς σὲ λέγω νῦν. σὺ δ', ἂν σωφρονῇς, οὐ τὴν φυγὴν δεινὸν ἡγήσῃ εἶναι, ἥν γε φέρουσιν ἕτεροι εὐπετῶς, τὴν δὲ κακίαν, ἧς ἐνούσης ἄθλιος πᾶς ὅστις ἂν ἔχῃ αὐτήν. καὶ γὰρ δὴ δυοῖν ἀνάγκη τὸ ἕτερον, ἢ ἀδίκως ἢ δικαίως σε φεύγειν· εἰ μὲν δὴ δικαίως, πῶς ποτε ὀρθὸν ἢ προσῆκον ἄχθεσθαι τοῖς δικαίοις; εἰ δ' ἀδίκως, τῶν ἐξελασάντων τοῦτ' ἂν εἴη κακόν, οὐχ ἡμέτερον· εἴπερ νὴ Δία τὸ μὲν ἀδικεῖν θεομισέστατόν ἐστιν, ὅπερ ἐκείνοις συμβέβηκε· τὸ δ' ἀδικεῖσθαι, ὅπερ συμβέβηκεν ἡμῖν, καὶ παρὰ θεοῖς καὶ παρ' ἀνθρώποις τοῖς ἐπιεικέσιν ἐπικουρίας ἀλλ' οὐχὶ μίσους ἄξιον εἶναι ὑπείληπται.

ΠΕΡΙ ΑΠΟΡΡΗΤΩΝ. ΜΑ.

1 *Εὐριπίδου Ἰνοῖ.*

Ἴστω δὲ μηδεὶς ταῦθ' ἃ σιγᾶσθαι χρεών.
μικροῦ γὰρ ἐκ λαμπτῆρος Ἰδαῖον λέπας
πρήσειεν ἄν τις· κἂν πρὸς ἄνδρ' εἰπὼν ἕνα,
πύθοιντ' ἂν ἀστοὶ πάντες, ὧν κρύπτειν χρεών.

2 *Ἀναξανδρίδου.*

Ὅστις λόγους παρακαταθήκην γὰρ λαβὼν
ἐξεῖπεν, ἄδικός ἐστιν ἢ ἀκρατὴς ἄγαν·
ὁ μὲν διὰ κέρδος, ἄδικος· ὁ δὲ τούτου δίχα,
ἀκρατής· ἴσως δέ γ' εἰσὶν ἀμφότεροι κακοί.

3 *Σοφοκλέους.*

Μή μοι κρυφαῖον μηδὲν ἐξείπῃς ἔπος·
κλῇθρον γὰρ οὐδέν· ὡς δ' ἂν εὐπετὲς λάβοις,
γλώσσης κρυφαῖον οὐδὲν οὐ διέρχεται.

4 *Τοῦ αὐτοῦ Ἀλεάδαις.*

Μὴ πάντ' ἐρεύνα, πολλὰ καὶ λαθεῖν καλόν.

5 *Σωκράτους.*

Σωκράτης ἔλεγεν ὅτι ῥᾷον ἄν τις διάπυρον ἄνθρακα ἐπὶ τῆς γλώττης κατάσχοι ἢ λόγον ἀπόρρητον.

6 *Εὐριπίδου.*

Εὐριπίδης, ὀνειδίζοντος αὐτῷ τινὸς ὅτι τὸ στόμα δυσῶδες ἦν, "πολλὰ γάρ" εἶπεν "αὐτῷ ἀπόρρητα ἐγκατεσάπη."

7 *Περιάνδρου.*

Λόγων ἀπορρήτων ἐκφορὰς μὴ ποιοῦ.

8 *Ἀριστοτέλους.*

Ἀριστοτέλης ἐρωτηθεὶς [παρά τινος] τί δυσκολώ-

τατόν ἐστιν ἐν τῷ βίῳ, εἶπε "τὸ σιωπᾶν ἃ μὴ δεῖ λαλεῖν."

9 Πυθαγόρου.
Ἀείσω συνετοῖσι, θύρας δ' ἐπίθεσθε βέβηλοι.

10 Ἰσοκράτους ἐκ τοῦ πρὸς Δημόνικον (4).
Μᾶλλον τήρει τὰς τῶν λόγων ἢ τὰς τῶν χρημάτων παρακαταθήκας· δεῖ γὰρ τοὺς ἀγαθοὺς ἄνδρας τρόπον ὅρκου πιστότερον φαίνεσθαι παρεχομένους.

ΠΕΡΙ ΔΙΑΒΟΛΗΣ. ΜΒ.

1 Μενάνδρου Βοιωτίας.
Οὐ δεῖ διαβολῆς καταφρονεῖν, οὐδ' ἂν σφόδρ' ᾖ
ψευδής· ἐπίσταντ' αὐξάνειν αὐτήν τινες,
δι' οὓς φυλάττεσθαι τὰ τοιαῦτ' ὀρθῶς ἔχει.

2 Κλεάνθους.
Κακουργότερον οὐδὲν διαβολῆς ἐστί πω.
λάθρᾳ γὰρ ἀπατήσασα τὸν πεπεισμένον
μῖσος ἀναπλάττει πρὸς τὸν οὐδὲν αἴτιον.

3 Εὐριπίδου Ἀλεξάνδρου.
Ἄναξ, διαβολαὶ δεινὸν ἀνθρώποις κακόν.
ἀγλωσσίᾳ δὲ πολλάκις ληφθεὶς ἀνὴρ
δίκαια λέξας, ἧσσον εὐγλώσσου φέρει.

4 Μενάνδρου.
Οὐδὲν διαβολῆς ἐστιν ἐπιπονώτερον.
τὴν ἐν ἑτέρῳ γὰρ κειμένην ἁμαρτίαν
εἰς μέμψιν ἰδίαν αὐτὸν ἐπάναγκες λαβεῖν.

5 Τοῦ αὐτοῦ.
Τὸ δοκεῖν διαβολὴν ἔσχε μείζω τοῦ ποιεῖν.

6 *Μενάνδρου.*

Ὅστις δὲ διαβολαῖσι πείθεται ταχύ,
ἤτοι πονηρὸς αὐτός ἐστι τοὺς τρόπους,
ἢ παντάπασι παιδαρίου γνώμην ἔχει.

7 *Ἰσοκράτους πρὸς Δημόνικον* (4).

Εὐλαβοῦ τὰς διαβολάς, κἂν ψευδεῖς ὦσιν. οἱ γὰρ πολλοὶ τὴν μὲν ἀλήθειαν ἀγνοοῦσι, πρὸς δὲ τὴν δόξαν ἀποβλέπουσι.

8 *Δημοσθένους.*

Διαβολὴ καιρῷ μὲν ἰσχυρὰν ἀπεργάζεται τοῖς ἀκούουσι τὴν ὑπόληψιν, χρόνῳ δὲ πάντων ἀσθενεστέρα γίνεται.

9 *Θουκυδίδου* (VI, 41).

Διαβολὰς οὐ σῶφρον οὔτε λέγειν πρὸς ἀλλήλους οὔτε ἀκούοντας ἀποδέχεσθαι.

10 *Πλουτάρχου ἐκ τοῦ διαβάλλειν.*

Ἱππίας φησὶν ὅτι δεινόν ἐστιν ἡ διαβολία, οὕτως ὀνομάζων, ὅτι οὐδὲ τιμωρία τις γέγραπται κατ' αὐτῶν ἐν τοῖς νόμοις ὥσπερ τῶν κλεπτῶν· καίτοι ἄριστον ὂν κτῆμα τὴν φιλίαν κλέπτουσιν, ὥστε ἡ ὕβρις κακοῦργος οὖσα, δικαιοτέρα ἐστὶ τῆς διαβολῆς, διὰ τὸ μὴ ἀφανὴς εἶναι.

11 *Ῥηγίνου ἐκ τοῦ περὶ φιλίας.*

Πολλοὶ γοῦν ἤδη μείζω κακὰ πεπόνθασιν ὑπὸ τῶν διαβολῶν ἢ τῶν πολεμίων, καὶ πολλοὶ ἤδη μείζω ἠδίκηνται ὑπὸ τῆς τῶν ὤτων ἀσθενείας ἢ ὑπὸ τῆς τῶν ἐχθρῶν ἐπιβουλῆς.

12 *Δίωνος ἐκ τοῦ οἰκονομικοῦ.*

Ἀρξώμεθα δὲ ἀπὸ τοῦ μάλιστα ὠφελοῦντος οἰ-

κίαν· εἴη δ' ἂν τοῦτο ἐπιτίμησις διαβολῆς. διαβολὴ γὰρ κακὸν τὸ ὀξύτατον καὶ ἐπιβουλότατον.

13 *Πελοπίδου.*

Πελοπίδας, ἀνδρείου στρατιώτου διαβληθέντος αὐτῷ, ὡς βλασφημήσαντος αὐτόν, "ἐγὼ τὰ μὲν ἔργα" ἔφη "αὐτοῦ βλέπω, τῶν δὲ λόγων οὐκ ἤκουσα."

14 *Ἐπικτήτου.*

Διαβολὰς .... ἄνδρα τοιοῦτον εἰς προκλήσεις αἰσχράς. τὸ γὰρ "ἔλεγξον" καὶ τὸ "προσταχθεὶς" ταῦτα πάντα ἔρρωται μέν, τὸ δ' ἀνδρὸς ἀρετῇ πρέπον οὐκ ἔχει.

15 *Τὸ νικᾶν τὰ τοιαῦτα, φέρει τινὰ αἰσχύνην τοῖς διαβληθεῖσιν, ἃ μηδὲ δοκεῖν ἔδει.*

16 *Ἡροδότου ἱστορίας ζ* (10, 7).

Διαβολὴ γάρ ἐστι δεινότατον· ἐν τῇ δύο μέν εἰσιν οἱ ἀδικέοντες, εἷς δὲ ὁ ἀδικεόμενος· ὃ μὲν γὰρ διαβάλλων ἀδικέει, οὐ παρεόντος κατηγορέων· ὃ δὲ ἀδικεῖ ἀναπειθόμενος πρὶν ἢ ἀτρεκέως ἐκμάθῃ· ὁ δὲ δὴ ἀπεὼν τοῦ λόγου, τάδε ἐν αὐτοῖς ἀδικέεται, διαβληθείς τε ὑπὸ τοῦ ἑτέρου καὶ νομισθεὶς πρὸς τοῦ ἑτέρου κακὸς εἶναι.

17 *Ἰωσήπου ἐκ τῆς ἁλώσεως.*

Πᾶσαν εὔνοιαν καὶ φύσιν κόπτει διαβολή.

ΠΕΡΙ ΠΟΛΙΤΕΙΑΣ. ΜΓ.

1 *Εὐριπίδου Φοίνισσαι* (1015).

Εἰ γὰρ λαβὼν ἕκαστος ὅ τι δύναιτό τις
χρηστὸν διέλθοι τοῦτο κεἰς κοινὸν φέροι

πατρίδι, κακῶν ἂν αἱ πόλεις ἐλασσόνων
πειρώμεναι τὸ λοιπὸν εὐτυχοῖεν ἄν.

2 Εὐριπίδου Φαέθοντι.
Ἐν τοῖσι μωροῖς τοῦτ' ἐγὼ κρίνω βροτῶν,
ὅστις πατὴρ ὢν παισὶ μὴ φρονοῦσιν εὖ
ἢ καὶ πολίταις παραδίδωσ' ἐξουσίαν.

3 Ναῦν τοι μί' ἄγκυρ' οὐδαμῶς σώζειν φιλεῖ
ὡς τρεῖς ἀφέντι, προστάτης θ' ἁπλοῦς πόλει
σφαλερός, ὑπὼν δὲ κἄλλος οὐ κακὸν πέλει.

4 Εὐριπίδου Φρίξῳ.
Αἱ γὰρ πόλεις εἴσ' ἄνδρες, οὐκ ἐρημία.

5 Σοφοκλέους Φαίδρα.
Οὐ γάρ ποτ' ἂν γένοιτ' ἂν ἀσφαλὴς πόλις,
ἐν ᾗ τὰ μὲν δίκαια καὶ τὰ σώφρονα
λάγδην πατεῖται, κωτίλος δ' ἀνὴρ λαβὼν
πανοῦργα χειροῖν κέντρα κηδεύει πόλιν.

6 Σοφοκλέους Ἀλεάδαι.
Κοὐκ οἶδ' ὅ τι χρὴ πρὸς ταῦτα λέγειν,
ὅταν οἵ τ' ἀγαθοὶ πρὸς τῶν ἀγενῶν
καταν̓ικῶνται,
ποία πόλις ἂν τάδ' ἐνέγκοι;

7 Τοῦ αὐτοῦ Ἐριφύλη.
Ὅπου δὲ μὴ τἄριστ' ἐλευθέρως λέγειν
ἔξεστι, νικᾷ δ' ἐν πόλει τὰ χείρονα,
ἁμαρτίαι σφάλλουσι τὴν σωτηρίαν.

8 Βίωνος Βουκολικά.
Μηδὲ λίπῃς μ' ἀγέραστον, ἐπεὶ χὠ Φοῖβος ἀείδειν
μισθὸν ἔδωκε· τιμὰ δὲ τὰ πράγματα κρέσσονα ποιεῖ.

9 *Εὐπόλιδος.*

Καὶ μὴν ἐγὼ πολλῶν παρόντων οὐκ ἔχω τί λέξω,
οὕτω σφόδρ᾽ ἀλγῶ τὴν πολιτείαν ὁρῶν παρ᾽ ὑμῖν.
ἡμεῖς γὰρ οὐχ οὕτω τέως ᾠκοῦμεν, ὦ γέροντες,
ἀλλ᾽ ἦσαν ἡμῖν τῇ πόλει πρῶτον μὲν οἱ στρατηγοὶ
ἐκ τῶν μεγίστων οἰκιῶν, πλούτῳ γένει τε πρῶτοι,
οἷς ὡσπερεὶ θεοῖσιν ηὐχόμεσθα· καὶ γὰρ ἦσαν.
ὥστ᾽ ἀσφαλῶς ἐπράττομεν· νυνὶ δ᾽ ὅποι τύχοιμεν,
στρατευόμεσθ᾽ αἱρούμενοι καθάρματα στρατηγούς.

10 *Εὐριπίδου Ἱκετίδων* (238).

Τρεῖς γὰρ πολιτῶν μερίδες· οἳ μὲν ὄλβιοι,
ἀνωφελεῖς τε πλειόνων τ᾽ ἐρῶσ᾽ ἀεί.
οἳ δ᾽ οὐκ ἔχοντες καὶ σπανίζοντες βίου,
δεινοί, νέμοντες τῷ φθόνῳ πλεῖον μέρος,
εἰς τοὺς ἔχοντας κέντρ᾽ ἀφιᾶσιν κακὰ
γλώσσῃ πονηρῶν προστατῶν φηλούμενοι.
τριῶν δὲ μοιρῶν ἡ μέση σώζει πόλιν,
κόσμον φυλάσσουσ᾽ ὅντιν᾽ ἂν δόξῃ πόλει.

11 *Σοφοκλέους.*

Ὅπου γὰρ οἱ φύσαντες ἡσσῶνται τέκνων,
οὐκ ἔστιν αὕτη σωφρόνων ἀνδρῶν πόλις.

12 *Εὐριπίδου Αὔγῃ.*

Δεινὴ πόλις νοσοῦσ᾽ ἀνευρίσκειν κακά.

13 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Οὐκ ἔστιν οὐδὲν τῶν ἐν ἀνθρώποις ἴσον.
χρῆν γὰρ τύχας μὲν τὰς μάτην πλανωμένας
μηδὲν δύνασθαι, τἀμφανῆ δ᾽ ὑψήλ᾽ ἄγειν,
ὅστις κατ᾽ ἰσχὺν πρῶτος ὠνομάζετο,
ἢ τόξα πάλλων ἢ μάχῃ δορὸς σθένων,
τοῦτον τυραννεῖν τῶν κακιόνων ἐχρῆν.

14 *Σοφοκλέους Αἴαντι* (1071).

Καίτοι κακοῦ πρὸς ἀνδρὸς ἄνδρα δημότην
μηδὲν δικαιοῦν τῶν ἐφεστώτων κλύειν.
οὐ γάρ ποτ' οὔτ' ἂν ἐν πόλει νόμοι καλῶς
φέροιντ' ἄν, ἔνθα μὴ παρεστήκει δέος·
οὔτ' ἂν στρατός γε σωφρόνως ἄρχοιτ' ἔτι,
μηδὲν φόβου πρόβλημα μηδ' αἰδοῦς ἔχων.

15 *Μενάνδρου Ἐμπιμπραμένη.*

Τρία γάρ ἐστι, δέσποτα,
δι' ὧν ἅπαντα γίγνετ', ἢ κατὰ τοὺς νόμους,
ἢ ταῖς ἀνάγκαις, ἢ τὸ τρίτον ἔθει τινί.

16 *Εὐριπίδου Φοίνικι.*

Ἀλλ' οὔποτ' αὐτὸς ἀμπλακὼν ἄλλον βροτὸν
παραινέσαιμ' ἂν παισὶ προσθεῖναι κράτη,
πρὶν ἂν κατ' ὄσσων τυγχάνῃ μέλας σκότος . . .
εἰ χρὴ διελθεῖν πρὸς τέκνων νικώμενον.

17 *Σοφοκλῆς Αἴαντι* (1081).

Ὅπου δ' ὑβρίζειν δρᾶν θ' ἃ βούλεται παρῇ,
ταύτην νόμιζε τὴν πόλιν χρόνῳ ποτὲ
ἐξ οὐρίας δραμοῦσαν εἰς βυθὸν πεσεῖν.
ἀλλ' ἑστάτω μοι καὶ δέος τι καίριον.
καὶ μὴ δοκῶμεν δρῶντες ἂν ἡδώμεθα,
οὐκ ἀντιτίσειν αὖθις ἂν λυπώμεθα·
ἕρπει παραλλὰξ ταῦτα.

18 *Σοφοκλῆς Αἴαντι* (157).

Πρὸς γὰρ τὸν ἔχονθ' ὁ φθόνος ἕρπει,
καίτοι σμικροὶ μεγάλων χωρὶς
σφαλερὸν πύργου ῥῦμα πέλονται.
μετὰ γὰρ μεγάλων βαιὸς ἄριστ' ἄν,
καὶ μέγας ὀρθοῖθ' ὑπὸ μικροτέρων.
ἀλλ' οὐ δυνατὸν τοὺς ἀνοήτους
τούτων γνώμας προδιδάσκειν.

19 *Εὐριπίδου Ἑκάβη* (306).

Ἐν τῷδε γὰρ κάμνουσιν αἱ πολλαὶ πόλεις,
ὅταν τις ἐσθλὸς καὶ πρόθυμος ὢν ἀνὴρ
μηδὲν φέρηται τῶν κακιόνων πλέον.

20 *Εὐριπίδου Αἰόλῳ.*

Δοκεῖτ' ἂν οἰκεῖν γαῖαν, εἰ πένης ἅπας
λαὸς πολιτεύοιτο πλουσίων ἄτερ;
οὐκ ἂν γένοιτο χωρὶς ἐσθλὰ καὶ κακά·
ἀλλ' ἔστι τις σύγκρασις, ὥστ' ἔχειν καλῶς.
ἃ μὴ γὰρ ἐστὶ τῷ πένητι, πλούσιος
δίδωσ'· ἃ δ' οἱ πλουτοῦντες οὐ κεκτήμεθα,
τοῖσιν πένησι χρώμενοι θηρώμεθα.

21 *Εὐριπίδου Ἀντιγόνῃ.*

Οἰκεῖος ἀνθρώποισι γίγνεσθαι φιλεῖ
πόλεμος ἐν ἀστοῖς, ἢν διχοστατῇ πόλις.

22 *Εὐριπίδου Ἀλκμήνης.*

Ἀτρέκεια δ' ἄριστον ἀνδρὸς ἐν πόλει δικαίου πέλει.

23 *Μενάνδρου.*

Κοινὸν ἀγαθὸν τοῦτ' ἐστὶ χρηστὸς εὐτυχῶν.

24 *Μενάνδρου.*

Τὸ καλῶς ἔχον που κρεῖττόν ἐστι καὶ νόμου.

25 *Σοφοκλέους.*

Νόμοις ἕπεσθαι τοῖσιν ἐγχώροις καλόν.

26 *Τοῦ αὐτοῦ* (Ant. 672).

Ἀναρχίας δὲ μεῖζον οὐκ ἔστιν κακόν.

27 *Ἡνιόχου.*

Ἐγὼ δ' ὄνομα τὸ μὲν καθ' ἑκάστην αὐτίκα
λέξω· συνάπασαι δ' εἰσὶ παντοδαπαὶ πόλεις,

αἳ νῦν ἀνοηταίνουσι πολὺν ἤδη χρόνον.
τάχ' ἄν τις ὑποκρούσειεν ὅ τι ποτ' ἐνθάδε
νῦν εἰσι κἀνέροιτο, παρ' ἐμοῦ πεύσεται·
τὸ χωρίον μὲν γὰρ τόδ' ἐστὶ πᾶν κύκλῳ
Ὀλυμπία, τηνδὶ δὲ τὴν σκηνὴν ἐκεῖ
σκηνὴν ὁρᾶν θεωρικὴν νομίζετε.
εἶεν· τί οὖν ἐνταῦθα δρῶσιν αἱ πόλεις;
ἐλευθέρι' ἀφίκοντο θύσουσαί ποτε,
ὅτε τῶν φόρων ἐγένοντ' ἐλεύθεραι σχεδόν.
κἄπειτ' ἀπ' ἐκείνης τῆς θυσίας διέφθορεν
αὐτὰς ξενίζουσ' ἡμέραν ἐξ ἡμέρας
ἀβουλία κατέχουσα πολὺν ἤδη χρόνον.
γυναῖκε δ' αὐτὰς δύο ταράττετόν τινε
ἀεὶ συνοῦσαι, δημοκρατία θατέρᾳ
ὄνομ' ἐστί, τῇ δ' ἀριστοκρατία θατέρᾳ,
δι' ἃς πεπαρῳνήκασιν ἤδη πολλάκις.

28 Ἀριστοφάνους (Ran. 739).

Τῶν πολιτῶν θ' οὓς μὲν ἴσμεν εὐγενεῖς καὶ σώφρονας
ἄνδρας ὄντας καὶ δικαίους καὶ καλούς τε κἀγαθούς,
καὶ τραφέντας ἐν παλαίστρᾳ καὶ χοροῖς καὶ μουσικῇ,
προυγελοῦμεν· τοῖς δὲ χαλκοῖς καὶ ξένοις καὶ πυρρίαις,
καὶ πονηροῖς κἀκ πονηρῶν, εἰς ἅπαντα χρώμεθα
ὑστάτοις ἀφιγμένοισιν, οἷσιν ἡ πόλις πρὸ τοῦ
οὐδὲ φαρμακοῖσιν εἰκῇ ῥᾳδίως ἐχρήσατ' ἄν.
ἀλλὰ καὶ νῦν, ὦ 'νόητοι, μεταβαλόντες τοὺς τρόπους
χρῆσθε τοῖς χρηστοῖσιν αὖθις· καὶ κατορθώσασι γὰρ
εὔλογον, κἄν τι σφάλητ', ἐξ ἀξίου γὰρ τοῦ ξύλου,
ἤν τι καὶ πάσχητε, πάσχειν τοῖς σοφοῖς δοκήσετε.

29 Εὐριπίδου (Suppl. 312).

Παῦσαι· τὸ μὲν γὰρ συνέχον ἀνθρώπων πόλεις
τοῦτ᾽ ἔσθ᾽, ὅταν τις τοὺς νόμους σώζῃ καλῶς.

30 *Μενάνδρου.*

Εἴπερ τὸν ἀδικοῦντ᾽ ἀσμένως ἠμύνετο
ἕκαστος ἡμῶν καὶ συνηγωνίζετο,
ἴσως νομίζων ἴδιον εἶναι τὸ γεγονὸς
ἀδίκημα, καὶ συνέπραττον ἀλλήλοις πικρῶς,
οὐκ ἂν ἐπιπλεῖον τὸ κακὸν ἡμῖν ηὔξετο
τὸ τῶν πονηρῶν· ἀλλὰ παρατηρούμενοι
καὶ τυγχάνοντες ἧς ἔδει τιμωρίας,
ἤτοι σπάνιοι σφόδρ᾽ ἂν ἦσαν ἢ πεπαυμένοι.

31 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Ἔργον ἐστὶ Φανία,
μακρὰν συνήθειαν βραχεῖ λῦσαι χρόνῳ.

32 *Αἰσχίνου ἐν τῷ κατὰ Τιμάρχου* (p. 55).

Τὸν γὰρ τὴν ἰδίαν οἰκίαν κακῶς οἰκήσαντα, καὶ τὰ κοινὰ τῆς πόλεως παραπλησίως ἡγήσατο διαθήσειν.

33 *Δημοκρίτου.*

Ὁ νόμος βούλεται μὲν εὐεργετέειν βίον ἀνθρώπων· δύναται δὲ ὅταν αὐτοὶ βούλωνται [εὖ] πάσχειν· τοῖσι γὰρ πειθομένοισι τὴν ἰδίην ἀρετὴν ἐνδείκνυται.

34 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Στάσις ἐμφύλιος ἐς ἑκάτερα κακόν· καὶ γὰρ νικέουσι καὶ ἡσσωμένοισι ὁμοίη φθορή.

35 *Αἰσχίνου* (c. Ctes. p. 537).

Πονηρὰ φύσις μεγάλης ἐξουσίας λαβομένη μεγάλας ἀπεργάζεται συμφοράς.

36 *Δημοσθένους ἐκ τοῦ κατ' Ἀνδροτίωνος* (p. 613).

Τὸν γὰρ ὑπὲρ τῆς πόλεως πράττοντά τι δεῖ τὸ τῆς πόλεως ἦθος μιμεῖσθαι, καὶ σώζειν ἡμῖν τοὺς τοιούτους, ὦ Ἀθηναῖοι, προσήκει, καὶ μισεῖν τοὺς οἷός περ οὗτος. ὡς (ἐκεῖνο εἰδόσι μὲν ἴσως, ὅμως δὲ ἐρῶ) ὁποίους τινὰς ἂν φαίνησθε ἀγαπῶντες καὶ σώζοντες, τούτοις ὅμοιοι δόξετε εἶναι.

37 *Ξενοφῶντος ἐν δ'* (6, 12) *Σωκρατικῶν ἀπομνημονευμάτων.*

Βασιλείας δὲ καὶ τυραννίδας ἀρχὰς μὲν ἀμφοτέρας ἡγεῖτο εἶναι, διαφέρειν δὲ ἀλλήλων ἐνόμιζε. τὴν μὲν γὰρ ἑκόντων τε τῶν ἀνθρώπων καὶ κατὰ τοὺς νόμους τῶν πόλεων ἀρχὴν βασιλείαν ἡγεῖτο· τὴν δὲ ἀκόντων τε καὶ μὴ κατὰ νόμους, ἀλλ' ὅπως ὁ ἄρχων βούλοιτο, τυραννίδα. καὶ ὅπου μὲν ἐκ τῶν τὰ νόμιμα ἐπιτελούντων αἱ ἀρχαὶ καθίστανται, ταύτην μὲν τὴν πολιτείαν ἀριστοκρατίαν ἐνόμιζεν εἶναι· ὅπου δὲ ἐκ τιμημάτων, πλουτοκρατίαν· ὅπου δ' ἐκ πάντων, δημοκρατίαν.

38 *Ἡροδότου ἱστορίας ε'* (78).

Δηλοῖ δὲ οὐ καθ' ἓν μοῦνον ἀλλὰ πανταχῇ ἡ ἰσηγορίη ὡς ἔστι χρῆμα σπουδαῖον.

39 *Τοῦ αὐτοῦ ἱστορίας ς'* (27).

Φιλέει δέ κως προσημαίνειν, εὖτ' ἂν μέλλῃ μεγάλα κακὰ ἢ πόλει ἢ ἔθνει ἔσεσθαι.

40 *Δημοκρίτου.*

Ἀπὸ ὁμονοίης τὰ μεγάλα ἔργα, καὶ ταῖσι πόλισι τοὺς πολέμους δυνατὸν κατεργάζεσθαι, ἄλλως δ' οὔ.

41 *Πολυαίνου ἐν τῷ ὑπὲρ τοῦ συνεδρίου.*

Οὐ γὰρ ἀγνοεῖς ὡς ἐν τοῖς κοινοῖς, κἂν τοὐλάχιστόν τις παρέληται, ἀφορμὴ τῆς τῶν πλειόνων ἀπωλείας γίνεται.

42 *Δημοκρίτου.*

Ἡ ἐν δημοκρατίῃ πενίη τῆς παρὰ τοῖσι δυναστῆσι καλεομένης εὐδαιμονίης τοσοῦτόν ἐστι αἱρετωτέρη, ὁκόσον ἐλευθερίη δουλείης.

43 *Τὰ κατὰ τὴν πόλιν χρεὼν τῶν λοιπῶν μέγιστα ἡγέεσθαι ὅκως ἄξεται εὖ, μήτε φιλονεικέοντα παρὰ τὸ ἐπιεικὲς μήτε ἰσχὺν ἑωυτῷ περιτιθέμενον παρὰ τὸ χρηστὸν τὸ τοῦ ξυνοῦ. πόλις γὰρ εὖ ἀγομένη μεγίστη ὄρθωσίς ἐστι, καὶ ἐν τούτῳ πάντα ἔνι, καὶ τούτου σῳζομένου πάντα σώζεται, καὶ τούτου διαφθειρομένου τὰ πάντα διαφθείρεται.*

44 *Τοῖσι χρηστοῖσι οὐ ξυμφέρον ἀμελέοντας τῶν ἑωυτῶν ἄλλα πρήσσειν· τὰ γὰρ ἴδια κακῶς [ἂν] ἔσχεν. εἰ δὲ ἀμελέοιτο τῶν δημοσίων, κακῶς ἀκούειν γίνεται, καὶ ἢν μηδὲν μήτε κλέπτῃ μήτε ἀδικέῃ· ἐπεὶ καὶ [μὴ] ἀμελέοντι ἢ ἀδικέοντι κίνδυνος κακῶς ἀκού ειν καὶ δὴ καὶ παθέειν τι. ἀνάγκη δὲ ἁμαρτάνειν, ξυγγινώσκεσθαι δὲ τοὺς ἀνθρώπους οὐκ εὐπετές.*

45 *Οἱ κακοὶ ἰόντες ἐς τὰς τιμάς, ὁκόσῳ ἂν μᾶλλον ἀνάξιοι ἐόντες ἴωσι, τοσούτῳ μᾶλλον ἀνακηδέες γίνονται καὶ ἀφροσύνης καὶ θράσεος πίμπλανται.*

46 *Ὅταν οἱ δυνάμενοι τοῖσι μὴ ἔχουσι καὶ προτελέειν τολμέωσι καὶ ὑπουργέειν καὶ χαρίζεσθαι, ἐν τούτῳ ἤδη καὶ τὸ οἰκτείρειν ἔνεστι, καὶ τὸ μὴ ἐρήμους εἶναι, καὶ τὸ ἑταίρους γίνεσθαι, καὶ τὸ ἀμύνειν ἀλλή-*

λοισι, καὶ τοὺς πολιήτας ὁμονόους εἶναι, καὶ ἄλλα ἀγαθὰ ἄσσα οὐδεὶς ἂν δύναιτο καταλέξαι.

47 *Σωκράτους.*

Τῆς εὐτυχίας ὥσπερ πολιτικῆς ὁμιλίας κοινὴν εἶναι δεῖ τοῖς ἀξίοις τὴν ἀπόλαυσιν.

48 *Ὅρκος τῶν Ἀθήνησιν ἐφήβων.*

Οὐ καταισχυνῶ ὅπλα τὰ ἱερά, οὐδ' ἐγκαταλείψω τὸν παραστάτην ὅτῳ ἂν στοιχήσω, ἀμυνῶ δὲ καὶ ὑπὲρ ἱερῶν καὶ ὑπὲρ ὁσίων καὶ μόνος καὶ μετὰ πολλῶν· τὴν πατρίδα δὲ οὐκ ἐλάσσω παραδώσω, πλείω δὲ καὶ ἀρείω ὅσης ἂν παραδέξωμαι· καὶ εὐηκοήσω τῶν ἀεὶ κρινόντων ἐμφρόνως, καὶ τοῖς θεσμοῖς τοῖς ἱδρυμένοις πείσομαι καὶ οὕς τινας ἂν ἄλλους τὸ πλῆθος ἱδρύσηται ὁμοφρόνως· καὶ ἄν τις ἀναιρῇ τοὺς θεσμοὺς ἢ μὴ πείθηται, οὐκ ἐπιτρέψω, ἀμυνῶ δὲ καὶ μόνος καὶ μετὰ πάντων· καὶ ἱερὰ τὰ πάτρια τιμήσω. ἵστορες θεοὶ τούτων.

49 *Ἐκ τῶν Ἀριστοξένου Πυθαγορικῶν ἀποφάσεων.*

Καθόλου δὲ ᾤοντο δεῖν ὑπολαμβάνειν μηδὲν εἶναι μεῖζον κακὸν ἀναρχίας· οὐ γὰρ πεφυκέναι τὸν ἄνθρωπον διασῴζεσθαι μηδενὸς ἐπιστατοῦντος. περὶ δὲ ἀρχόντων καὶ ἀρχομένων οὕτως ἐφρόνουν· τοὺς μὲν γὰρ ἄρχοντας ἔφασκον οὐ μόνον ἐπιστήμονας ἀλλὰ καὶ φιλανθρώπους δεῖν εἶναι· καὶ τοὺς ἀρχομένους οὐ μόνον πειθηνίους ἀλλὰ καὶ φιλάρχοντας. ἐπιμελητέον δὲ πάσης ἡλικίας ἡγοῦντο, καὶ τοὺς μὲν παῖδας ἐν γράμμασι καὶ τοῖς ἄλλοις μαθήμασιν ἀσκεῖσθαι· τοὺς δὲ νεανίσκους τοῖς τῆς πόλεως ἔθεσί τε καὶ νόμοις γυμνάζεσθαι· τοὺς δὲ ἄνδρας ταῖς πράξεσί τε καὶ δημοσίαις λειτουργίαις προσέχειν· τοὺς δὲ πρεσβύτας

ἐνθυμήσεσι καὶ κριτηρίοις καὶ συμβουλίαις δεῖν ἐναναστρέφεσθαι μετὰ πάσης ἐπιστήμης ὑπελάμβανον, ὅπως μήτε οἱ παῖδες νηπιάζοιεν, μήτε οἱ νεανίσκοι παιδαριεύοιντο, μήτε οἱ ἄνδρες νεανιεύοιντο, μήτε οἱ γέροντες παραφρονοῖεν. δεῖν δὲ ἔφασκον εὐθὺς ἐκ παίδων καὶ τὴν τροφὴν τεταγμένως προσφέρεσθαι, διδάσκοντες ὡς ἡ μὲν τάξις καὶ συμμετρία καλὴ καὶ σύμφορος, ἡ δ' ἀταξία καὶ ἀσυμμετρία αἰσχρά τε καὶ ἀσύμφορος.

50 Ξενοφῶντος ἐκ τῆς Ἀθηναίων πολιτείας (I, 14).

Ὅτι μισεῖσθαι μὲν ἀνάγκη τὸν ἄρχοντα ὑπὸ τοῦ ἀρχομένου. εἰ δὲ ἰσχύσουσιν οἱ πλούσιοι καὶ ἰσχυροὶ ἐν ταῖς πόλεσιν, ὀλίγιστον χρόνον ἡ ἀρχὴ ἔσται τοῦ δήμου. διὰ ταῦτα τοὺς μὲν χρηστοὺς ἀτιμοῦσι καὶ χρήματα ἀφαιροῦνται καὶ ἐξελαύνουσι καὶ ἀποκτείνουσι, τοὺς δὲ πονηροὺς αὔξουσι.

51 Ἐν ταυτῷ (II, 20).

Δημοκρατίαν δ' ἐγὼ αὐτῷ μὲν τῷ δήμῳ συγγινώσκω. ἑαυτὸν μὲν γὰρ εὖ ποιεῖν πάντη συγγνώμη ἐστίν· ὅστις δὲ μὴ ὢν τοῦ δήμου εἵλετο ἐν δημοκρατουμένῃ πόλει οἰκεῖν μᾶλλον ἢ ὀλιγαρχουμένῃ, ἀδικεῖν παρεσκευάσατο καὶ ἔγνω ὅτι μᾶλλον οἷόν τε διαλαθεῖν κακῷ ὄντι ἐν δημοκρατουμένῃ πόλει ἢ ἐν ὀλιγαρχουμένῃ.

52 Δημοσθένους Φιλιππικῶν (II p. 71).

Ἔστι τοίνυν νὴ Δί', ἔφην ἐγώ, παντοδαπὰ εὑρημένα ταῖς πόλεσι πρὸς φυλακὴν καὶ σωτηρίαν, οἷον χαρακώματα καὶ τείχη καὶ τάφροι καὶ τἆλλα ὅσα τοιαῦτα. καὶ ταῦτα μέν ἐστιν ἅπαντα χειροποιητὰ καὶ δαπάνης πολλῆς προσδεῖται· ἓν δέ τι κοινὸν ἡ

φύσις τῶν εὖ φρονούντων ἐν ἑαυτῇ κέκτηται φυλακτήριον, ὃ πᾶσι μέν ἐστιν ἀγαθὸν καὶ σωτήριον, μάλιστα δὲ τοῖς πλήθεσι πρὸς τοὺς τυράννους. τί οὖν ἐστὶ τοῦτο; ἀπιστία. ταύτην φυλάττετε, ταύτης ἀντέχεσθε· ἂν ταύτην σώζητε, οὐδὲν μὴ δεινὸν πάθητε.

53 *Ἐκ τοῦ Πολυαίνου ὑπὲρ τοῦ κοινοῦ τῶν Μακεδόνων.*

Πρὸς μὲν δὴ τὸ μικρὸν τέλος, φήμ' ἔγωγε, ἀλλὰ τὸ ἔθος μέγα. ἔστι δὲ ὁ λόγος οὐ περὶ τῆς ποσότητος, ἀλλὰ περὶ τοῦ δικαίου· καὶ πρόδηλον ὡς ἀεὶ τὰ πονηρὰ τῶν ἐθῶν ἄρχεται μὲν ἀπὸ μικρῶν, ἀμελούμενα δὲ ἰσχὺν μείζω λαμβάνει.

54 *Θουκυδίδου* (I, 71).

Νῦν δέ, ὅπερ καὶ ἄρτι ἐδηλώσαμεν, ἀρχαιότροπα ὑμῶν τὰ ἐπιτηδεύματα πρὸς αὐτούς ἐστιν. ἀνάγκη δὲ ὥσπερ τέχνης ἀεὶ τὰ ἐπιγιγνόμενα κρατεῖν· καὶ ἡσυχαζούσῃ μὲν πόλει τὰ ἀκίνητα νόμιμα ἄριστα· πρὸς πολλὰ δὲ ἀναγκαζομένοις ἰέναι, πολλῆς καὶ τῆς ἐπιτεχνήσεως δεῖ.

55 *Ἐκ τοῦ Πολυαίνου ὑπὲρ Μακεδόνων.*

Οὐκ εἰδὼς ὅτι πᾶν τὸ νεωτεριζόμενον ἐν ταῖς πολιτείαις ἀρχὴ δυνάμεως μείζονος γίνεται· ἄνδρας δὲ γεωργοὺς οὐκ ὀξεῖα τῶν κοινῶν ἀδικημάτων αἴσθησις εἰσέρχεται.

56 *Θουκυδίδου ἱστορίας α'* (77) *δημηγορίας Ἀθηναίων.*

Ὑπὸ γοῦν τοῦ Μήδου δεινότερα τούτων πάσχοντες ἠνείχοντο· ἡ δὲ ἡμετέρα ἀρχὴ χαλεπὴ δοκεῖ εἶναι, εἰκότως· τὸ παρὸν γὰρ ἀεὶ βαρὺ τοῖς ὑπηκόοις.

57 *Αἰσχίνου ἐν τῷ κατὰ Τιμάρχου* (p. 20).

Αἱ γὰρ ἴδιαι ἔχθραι πολλὰ πάνυ τῶν κοινῶν ἐπανορθοῦσι.

58 *Θουκυδίδου ἱστορίας τρίτης* (37) *δημηγορίας Κλέωνος.*

Πάντων δὲ δεινότατον, εἰ βέβαιον ἡμῖν μηδὲν καθίστησιν, ὧν ἂν δόξῃ πέρι· μηδὲ γνωσόμεθα, ὅτι χείροσι νόμοις ἀκινήτοις χρωμένη πόλις κρείσσων ἐστὶν ἢ καλῶς ἔχουσιν ἀκύροις· ἀμαθία τε μετὰ σωφροσύνης ὠφελιμώτερον ἢ δεξιότης μετὰ ἀκολασίας.

59 *Ἐν ταυτῷ.*

Οἵτε φαυλότεροι τῶν ἀνθρώπων, πρὸς τοὺς ξυνετωτέρους, ὡς ἐπιτοπλεῖστον ἄμεινον οἰκοῦσι τὰς πόλεις. οἱ μὲν γὰρ τῶν τε νόμων σοφώτεροι βούλονται φαίνεσθαι, τῶν τε ἀεὶ λεγομένων ἐς τὸ κοινὸν περιγίγνεσθαι, ὡς ἐν ἄλλοις μείζοσιν οὐκ ἂν δηλώσοντες τὴν γνώμην, καὶ ἐκ τοῦ τοιούτου τὰ πολλὰ σφάλλουσι τὰς πόλεις· οἱ δὲ ἀπιστοῦντες τῇ ἑαυτῶν ξυνέσει, ἀμαθέστεροι μὲν τῶν νόμων ἀξιοῦσιν εἶναι, ἀδυνατώτεροι δὲ τὸν τοῦ καλῶς εἰπόντος μέμφεσθαι λόγον· κριταὶ δὲ ὄντες ἀπὸ τοῦ ἴσου μᾶλλον ἢ ἀγωνισταί, διορθοῦνται τὰ πλείω.

60 *Δημοσθένους ἐκ τῶν Φιλιππικῶν* (IV p. 132).

Τοιγάρτοι διεστηκότων εἰς δύο ταῦτα τῶν ἐν ταῖς πόλεσι, τῶν μὲν εἰς τὸ μήτ᾽ ἄρχειν βίᾳ βούλεσθαι μηδενός, μήτε δουλεύειν ἄλλῳ, ἀλλ᾽ ἐν ἐλευθερίᾳ καὶ νόμοις ἐξ ἴσου πολιτεύεσθαι, τῶν δ᾽ εἰς τὸ ἄρχειν μὲν τῶν πολιτῶν ἐπιθυμεῖν, ἑτέρῳ δ᾽ ὑπακούειν, δι᾽ ὅτου ποτ᾽ ἂν οἴωνται τοῦτο δυνήσεσθαι ποιῆσαι· οἱ τῆς ἐκείνου προαιρέσεως, οἱ τυραννίδων καὶ δυναστειῶν ἐπιθυμοῦντες, κεκρατήκασι πανταχοῦ.

61 *Θουκυδίδου ἱστορίας ϛ´ (9) ἐκ τῆς δημηγορίας Νικίου.*

Νομίζω ὁμοίως ἀγαθὸν πολίτην εἶναι, ὃς ἂν καὶ τοῦ σώματός τι καὶ τῆς οὐσίας προήται· μάλιστα γὰρ ἂν ὁ τοιοῦτος καὶ τὰ τῆς πόλεως δι᾽ αὐτὸν βούλοιτο ὀρθοῦσθαι.

62 *Αἰσχίνου ἐν τῷ κατὰ Τιμάρχου* (p. 29).

Ὁμολογοῦνται τρεῖς εἶναι πολιτεῖαι ἐν ἅπασιν ἀνθρώποις, τυραννὶς καὶ ὀλιγαρχία καὶ δημοκρατία. διοικοῦνται δ᾽ αἱ μὲν τυραννίδες καὶ ὀλιγαρχίαι τοῖς τρόποις τῶν ἐφεστηκότων, αἱ δὲ πόλεις αἱ δημοκρατούμεναι τοῖς νόμοις τοῖς κειμένοις.

63 *Πλάτωνος ἐκ τοῦ πολιτικοῦ* (291 c).

Ἆρ᾽ οὐ μοναρχία τῶν πολιτικῶν ἡμῖν ἀρχῶν ἐστι μία; Ναί. Καὶ μετὰ μοναρχίαν εἴποι τις ἄν, οἶμαι, τὴν ὑπὸ τῶν ὀλίγων δυναστείαν; Πῶς δ᾽ οὔ; Τρίτον δὲ σχῆμα πολιτείας οὐχ ἡ τοῦ πλήθους ἀρχή, δημοκρατία τοὔνομα κληθεῖσα; Καὶ πάνυ γε. Τρεῖς δ᾽ οὖσαι, μῶν οὐ πέντε τρόπον τινὰ γίγνονται, δύ᾽ ἐξ αὑτῶν ἄλλα πρὸς ἑαυταῖς ὀνόματα τίκτουσαι; Ποῖα δή; Πρὸς τὸ βίαιόν που καὶ ἑκούσιον ἀποσκοποῦντες νῦν, καὶ πενίαν καὶ πλοῦτον καὶ νόμον καὶ ἀνομίαν ἐν αὐταῖς γιγνόμενα, διπλῆν ἑκατέραν τοῖν δυοῖν διαιροῦντες, μοναρχίαν μὲν προσαγορεύουσιν, ὡς δύο παρεχομένην εἴδη, δυοῖν ὀνόμασιν, τὸ μὲν τυραννίδι, τὸ δὲ βασιλικῇ; Τί μήν; Τὴν δὲ ὑπὸ ὀλίγων γε ἑκάστοτε κρατηθεῖσαν πόλιν, ἀριστοκρατία καὶ ὀλιγαρχία; Καὶ πάνυ γε. Δημοκρατίας γε μήν, ἐάν τ᾽ οὖν βιαίως ἐάν τε ἑκουσίως τῶν τὰς οὐσίας ἐχόντων τὸ πλῆθος ἄρχῃ, καὶ ἐάν τε τοὺς νόμους ἀκριβῶς

φυλάττον ἐάν τε καὶ μή, πάντως τοὔνομα οὐδεὶς αὐτῆς εἴωθε μεταλλάττειν; Ἀληθῆ.

64 ***Τοῦ αὐτοῦ ἐκ τοῦ Κριτίου ἢ Ἀτλαντικοῦ*** (p. 110 a).

Λέγω δὲ ταῦτα τεκμαιρόμενος, ὅτι Κέκροπός τε καὶ Ἐρεχθέως καὶ Ἐριχθονίου καὶ Ἐρυσίχθονος, τῶν τε ἄλλων τὰ πλεῖστα ὅσαπερ καὶ Θησέως τῶν ἄνω περὶ τῶν ὀνομάτων ἑκάστων ἀπομνημονεύεται, τούτων ἐκείνους τὰ πολλὰ ἐπονομάζοντας τοὺς ἱερέας Σόλων ἔφη τὸν τότε διηγεῖσθαι πόλεμον, καὶ τὰ τῶν γυναικῶν κατὰ ταῦτα, καὶ δὴ καὶ τὸ τῆς θεοῦ σχῆμα καὶ ἄγαλμα, ὡς κοινὰ τότε ἦν ἐπιτηδεύματα ταῖς τε γυναιξὶ καὶ τοῖς ἀνδράσι τὰ περὶ τὸν πόλεμον, οὕτω κατ' ἐκεῖνον τὸν νόμον ὡπλισμένην τὴν θεὸν ἀνάθημα θεῖναι τοῖς τότε, ἔνδειγμα ὅτι πάνθ' ὅσα ξύννομα ζῶα θήλεα καὶ ὅσα ἄρρενα τὴν προσήκουσαν ἀρετὴν ἑκάστῳ γένει πᾶν κοινῇ δυνατὸν ἐπιτηδεύειν πέφυκε.

65 ***Ἰσοκράτους Νικοκλῆς ἢ Κύπριοι*** (5).

Περὶ μὲν οὖν τῶν πολιτειῶν, ἐντεῦθεν γὰρ ὑποτιθέμενος ἠρξάμην, οἶμαι πᾶσι δεινότατον μὲν εἶναι τὸ τῶν αὐτῶν ἀξιοῦσθαι τοὺς χρηστοὺς καὶ τοὺς πονηρούς, δικαιότατον δὲ τὸ διορθώσασθαι περὶ τούτων, καὶ μὴ τοὺς ἀνομοίους τῶν ὁμοίων τυγχάνειν, ἀλλὰ καὶ πράττειν καὶ τιμᾶσθαι κατὰ τὴν ἀξίαν [ἑκάστους].

66 ***Θουκυδίδου*** (VI, 39) ***δημηγορίας Ἀλκιβιάδου.***

Ἐγὼ δέ φημι πρῶτα μὲν δῆμον ξύμπαν ὠνομάσθαι, ὀλιγαρχίαν δὲ μέρος· ἔπειτα φύλακας μὲν ἀρίστους εἶναι χρημάτων τοὺς πλουσίους, βουλεῦσαι δ'

ἂν βέλτιστα τοὺς ξυνετούς, κρῖναι δ' ἂν ἀκούσαντας ἄριστα τοὺς πολλούς. καὶ ταῦτα ὁμοίως καὶ κατὰ μέρη καὶ ξύμπαντα ἐν δημοκρατίᾳ ἰσομοιρεῖ· ὀλιγαρχία δὲ τῶν μὲν κινδύνων τοῖς πολλοῖς μεταδίδωσι, τῶν δὲ ὠφελίμων οὐ πλεονεκτεῖ μόνον, ἀλλὰ καὶ σύμπαν ἀφελομένη ἔχει.

67 *Δημοσθένους Φιλιππικῶν* (Cherson. p. 107).

Οὐδέ γε μοι δοκεῖ δικαίου τοῦτ' εἶναι πολίτου, τοιαῦτα πολιτεύμαθ' εὑρίσκειν, ἐξ ὧν ἐγὼ μὲν πρῶτος ὑμῶν ἔσομαι εὐθέως, ὑμεῖς δὲ τῶν ἄλλων ὕστατοι· ἀλλὰ συναυξάνεσθαι δεῖ τὴν πόλιν τοῖς τῶν ἀγαθῶν πολιτῶν πολιτεύμασι, καὶ τὸ βέλτιστον αἰεί, μὴ τὸ ῥᾷστον ἅπαντας λέγειν. ἐπ' ἐκείνῳ μὲν γὰρ ἡ φύσις αὐτὴ βαδιεῖται· ἐπὶ τούτῳ δὲ τῷ λόγῳ δεῖ προσάγεσθαι διδάσκοντα τὸν ἀγαθὸν πολίτην, ἵν' ὑμῶν ἕκαστος, ὦ Ἀθηναῖοι, τοῦτο γνῷ καὶ εἰδῇ, ὅτι ἡ καθ' ἡμέραν ῥᾳστώνη καὶ ῥᾳθυμία, ὥσπερ τοῖς ἰδίοις βίοις, οὕτω καὶ ταῖς πόλεσιν, οὐκ εὐθέως, ἀλλ' ἐπὶ τῷ κεφαλαίῳ τῶν πραγμάτων ἀπαντᾷ.

68 *Δημοσθένους Φιλιππικῶν* (IV p. 142).

Ὥσπερ τοίνυν ἑνὸς ἡμῶν ἑκάστου τις ἔστι γονεύς, οὕτω συμπάσης τῆς πόλεως κοινοὺς δεῖ τοὺς γονέας τοὺς σύμπαντας ἡγεῖσθαι, καὶ προσήκειν τούτους, οὐχ ὅπως ὧν ἡ πόλις δίδωσιν ἀφελέσθαι τι· ἀλλ' εἰ καὶ μηδὲν ἦν τούτων, ἄλλοθεν σκοπεῖν ὅπως μηδενὸς ὄντες ἐνδεεῖς περιοφθήσονται.

69 *Δημοσθένους Φιλιππικῶν* (IV p. 142).

Δεῖ γάρ, ὦ Ἀθηναῖοι, δικαίως ἀλλήλοις τῆς πολιτείας κοινωνεῖν· τοὺς μὲν εὐπόρους, εἰς μὲν τὸν βίον τὸν ἑαυτῶν ἀσφαλῶς ἔχειν νομίζοντας καὶ ὑπὲρ τούτου μὴ δεδοικότας, εἰς δὲ τοὺς κινδύνους κοινὰ ὑπὲρ

τῆς σωτηρίας τὰ ὄντα τῇ πατρίδι παρέχοντας· τοὺς δὲ λοιπούς, τὰ μὲν κοινὰ κοινὰ νομίζοντας καὶ μετέχοντας τὸ μέρος, τὰ δὲ ἑκάστου ἴδια τοῦ κεκτημένου. οὕτω καὶ ἡ μικρὰ πόλις μεγάλη γίγνεται καὶ μεγάλη σώζεται.

70 *Θουκυδίδου δημηγορίας Εὐφήμου* (VI, 85).

Ἀνδρὶ δὲ τυράννῳ ἢ πόλει ἀρχὴν ἐχούσῃ οὐδὲν ἄλογον ὅ τι ξυμφέρον, οὐδ' οἰκεῖον ὅ τι μὴ πιστόν· πρὸς ἕκαστα δὲ δεῖν ἐχθρὸν ἢ φίλον μετὰ καιροῦ γίγνεσθαι.

71 *Ἰαμβλίχου ἐκ τῶν προτρεπτικῶν εἰς φιλοσοφίαν λόγων* (2).

Ὁμοίως ἐπισφαλὲς μαινομένῳ δοῦναι μάχαιραν καὶ μοχθηρῷ δύναμιν.

72 *Θεοφράστου.*

Θεόφραστος ἐρωτηθεὶς ὑπό τινος, τί συνέχει τὸν τῶν ἀνθρώπων βίον ἔφη εὐεργεσία καὶ τιμὴ καὶ τιμωρία.

73 *Χαριλάου* (Plut. Mor. p. 189 f.).

Χαρίλαος ὁ βασιλεὺς ἐρωτηθεὶς διὰ τί νόμους ὀλίγος ὁ Λυκοῦργος ἔθηκεν, ἀπεκρίνατο τοὺς ὀλίγοις χρωμένους λόγοις μὴ πολλῶν δεῖσθαι νόμων.

74 *Ἡροδότου ἱστορίας β'* (c. 35).

Ἐσθίουσι δὲ ἔξω ἐν τῇσιν ὁδοῖσιν ἐπιλέγοντες ὡς τὰ μὲν αἰσχρὰ ἀναγκαῖα δὲ ἐν ἀποκρύφῳ ἐστὶ ποιέειν χρεών, τὰ δὲ μὴ αἰσχρὰ ἀναφανδόν.

75 *Ξενοφῶντος ἐν α'* (2, 10) *ἀπομνημονευμάτων.*

Ἐγὼ δ' οἶμαι τοὺς φρόνησιν ἀσκοῦντας καὶ νο-

μίζοντας ἱκανοὺς ἔσεσθαι τὰ συμφέροντα διδάσκειν τοὺς πολίτας ἥκιστα γίγνεσθαι βιαίους, εἰδότας ὅτι τῇ μὲν βίᾳ πρόσεστιν ἔχθρα καὶ κίνδυνος, διὰ δὲ τοῦ πείθειν ἀκινδύνως τε καὶ μετὰ φιλίας τὰ αὐτὰ γίγνεται. οἱ μὲν γὰρ βιασθέντες ὡς ἀφαιρεθέντες μισοῦσιν, οἱ δὲ πεισθέντες ὡς κεχαρισμένοι φιλοῦσιν. οὐκ οὖν οὐ τῶν φρόνησιν ἀσκούντων τὸ βιάζεσθαι, ἀλλὰ τῶν ἰσχὺν ἄνευ γνώμης ἐχόντων τὰ τοιαῦτα πράττειν ἐστίν. ἀλλὰ μὴν καὶ συμμάχων ὁ μὲν βιάζεσθαι τολμῶν δέοιτ' ἂν οὐκ ὀλίγων, ὁ δὲ πείθειν δυνάμενος οὐδενός· καὶ γὰρ μόνος ἡγοῖτ' ἂν δύνασθαι πείθειν. καὶ φονεύειν δὲ τοῖς τοιούτοις ἥκιστα συμβαίνει· τίς γὰρ ἀποκτεῖναί τινα βούλοιτ' ἂν μᾶλλον ἢ ζῶντι πειθομένῳ χρῆσθαι;

76 Σόλωνος.

Σόλων ἐκείνην εἶπεν ἄριστα τὴν πόλιν οἰκεῖσθαι, ἐν ᾗ τοὺς ἀγαθοὺς ἄνδρας συμβαίνει τιμᾶσθαι, καὶ τὸ ἐναντίον, ἐν ᾗ τοὺς κακοὺς ἀμύνεσθαι.

77 Τοῦ αὐτοῦ.

Σόλων ἐρωτηθεὶς πῶς ἂν μὴ γίγνοιτο ἀδίκημα ἐν πόλει εἶπεν, εἰ ὁμοίως ἀγανακτοῖεν οἱ μὴ ἀδικούμενοι τοῖς ἀδικουμένοις.

78 Περιάνδρου.

Περίανδρος ἐρωτηθεὶς διὰ τί οὐκ ἀποτίθεται τὴν ἀρχὴν εἶπεν, ὅτι τῷ κατ' ἀνάγκην ἄρχοντι καὶ τὸ ἑκουσίως ἀποστῆναι κίνδυνον φέρει.

79 Πυθαγόρου.

Πυθαγόρας εἶπεν εἰσιέναι εἰς τὰς πόλεις πρῶτον τρυφήν, ἔπειτα κόρον, εἶτα ὕβριν, μετὰ δὲ ταῦτα ὄλεθρον.

80 *Σωκράτους.*

Σωκράτης ἐρωτηθεὶς ποία ἰσχυροτάτη τῶν πόλεων εἶπεν "ἡ ἄνδρας ἔχουσα ἀγαθούς."

81 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Σωκράτης ἐρωτηθεὶς ποία ἀνομεῖται πόλις "ἐν ᾗ" ἔφη "οἱ ἄρχοντες μεθ' ἑταιρείας καθίστανται."

82 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Σωκράτης ἐρωτηθεὶς τίς ἀρίστη πόλις "ἐν ᾗ" ἔφη "πλεῖστα ἀρετῆς ἆθλα."

83 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Σωκράτης ἐρωτηθεὶς ποία πόλις ἄριστα οἰκεῖται εἶπεν "ἡ μετὰ νόμου ζῶσα καὶ τοῖς ἀδικοῦσιν ἐπεξιοῦσα."

84 *Πυθαγόρας τῶν πόλεων ἐκείνην εἶπεν ἀρίστην τὴν ἄνδρας ἀγαθοὺς ἔχουσαν.*

85 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Σωκράτης ἐρωτηθεὶς εἰς τὰς ἀρχὰς ὁποίους δεῖ καθιστάναι εἶπεν "οἵτινες ἐκ παίδων καλῶς ἤχθησαν, καὶ εἰς ἡλικίαν ἐλθόντες μὴ γεγόνασι προδόται τῆς αὐτῶν ἡλικίας λήμματος χάριν."

86 *Πλάτωνος ἐκ τοῦ Μενεξένου ἢ Ἐπιταφίου* (238 c).

Πολιτεία γὰρ ἀνατροφὴ ἀνθρώπων ἐστὶ καλὴ μὲν ἀγαθῶν, μὴ καλὴ δὲ κακῶν.

87 *Αἰσχίνου* (c. Ctes. p. 569).

Κἀκεῖνο ἐκλογίσασθε, ὅτι ἐὰν μὲν τὰς δωρεὰς ὀλίγοις καὶ ἀξίοις κατὰ τοὺς νόμους διδῶτε, πολλοὺς ἀγωνιστὰς ἕξετε τῆς ἀρετῆς· ἐὰν δὲ τῷ βουλομένῳ καὶ τοῖς διαπραξαμένοις χαρίζησθε, καὶ τὰς ἐπιεικεῖς φύσεις διαφθερεῖτε.

88 *Ζήνωνος.*

Ζήνων ἔφη δεῖν τὰς πόλεις κοσμεῖν οὐκ ἀναθήμασιν, ἀλλὰ ταῖς τῶν οἰκούντων ἀρεταῖς.

89 *Σόλωνος.*

Σόλων πῶς ἄριστα αἱ πόλεις οἰκοῖντο ἐρωτηθεὶς εἶπεν, ἐὰν οἱ μὲν πολῖται τοῖς ἄρχουσι πείθωνται, οἱ δὲ ἄρχοντες τοῖς νόμοις.

90 *Θουκυδίδου ἐκ τοῦ ἐπιταφίου* (II, 46).

Ἆθλα γὰρ οἷς κεῖται ἀρετῆς μέγιστα, τοῖσδε καὶ ἄνδρες ἄριστοι πολιτεύουσιν.

91 *Ἀρκεσιλάου.*

Ἀρκεσίλαος ἔλεγεν, ὥσπερ ὅπου φάρμακα πολλὰ καὶ ἰατροὶ πολλοί, ἐνταῦθα νόσοι πλεῖσται, οὕτω δὴ καὶ ὅπου νόμοι πλεῖστοι, ἐκεῖ καὶ ἀδικίαν εἶναι μεγίστην.

92 *Ἱπποδάμου Πυθαγορείου ἐκ τοῦ περὶ πολιτείας.*

Φαμὶ δ' ἐγὼν ἐς μοίρας τρεῖς διεστάσθαι τὰν σύμπασαν πολιτείαν· καὶ μίαν μὲν εἶμεν μοῖραν τῶν ἀρετᾷ κυβερνώντων τὰ κοινά, δευτέραν δὲ τῶν δυνάμει, τρίταν δὲ τῶν ἐκπλαρώσει καὶ χοραγίᾳ τῶν ἀναγκαίων. ὀνομαίνω δὲ τὸ μὲν πρᾶτον πλᾶθος βουλευτικόν, τὸ δὲ δεύτερον ἐπίκουρον, τὸ δὲ τρίτον βάναυσον. καὶ τὰ μὲν αὖ τῶν ἐλευθέραν βιοτὰν ἐχόντων οἰκῆα φαμὶ εἶμεν, τὸ δὲ τρίτον τῶν βιοπόνων· καὶ τὸ μὲν βουλευτικὸν ἄριστον εἶμεν, τὸ δὲ βάναυσον χερῆον, τὸ δ' ἐπίκουρον μέσον. καὶ τὸ μὲν βουλευτικὸν ἄρχεν δεῖ, τὸ δὲ βάναυσον ἄρχεσθαι, τὸ δὲ ἐπίκουρον καὶ ἄρχεν καὶ ἄρχεσθαι. τὸ μὲν γὰρ καὶ τί δεῖ πράττεν προβουλεύει, τὸ δ' ἐπίκουρον τῷ μὲν

προπολεμὲν ἄρχει τῶ βαναύσω παντός, τῷ δὲ προβουλεύεσθαι ἄρχεται.

93 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Τουτᾶν δὲ τᾶν μοιρᾶν ἑκάστα πάλιν ἐς τρία τέτακται. τῶ τε γὰρ βουλευτικῶ μέρεος τὸ μέν ἐστι πρόεδρον, τὸ δὲ ἀρχοντικόν, τὸ δὲ κοινοβουλευτικόν· πρόεδρον μὲν τὸ προσυνεδρεῦον καὶ τὸ προβουλευόμενον περὶ τῶν πραγμάτων καὶ ὕστερον ἐπαναφέρον ἐπὶ τὰν βουλάν· ἀρχοντικὸν δὲ τὸ ἤτοι ἄρχον ἢ γεγεναμένον ἀρχοντικόν· κοινοβουλευτικὸν δὲ τὸ ἄλλο πλᾶθος τὸ παραδεχόμενον τὰ προσυνεδρευμένα καὶ ἐπιψαφιζόμενον καὶ ἐπικυροῦν τὰ ἐπὶ κρίσει. ὡς δ' ἁπλῶς εἰπέν, δεῖ τὼς μὲν προέδρως ἐπὶ τὸ κοινοβουλευτικὸν ἀναφέρεν, τὸ δὲ κοινοβουλευτικὸν διὰ τῶν στραταγῶν ἐπὶ τὰν ἐκκλησίαν. ὡσαύτως δὲ καὶ τῶ ἐπικούρω καὶ τῶ δυναμικῶ μέρεος τὸ μέν τι ἐστὶν ἀρχοντικόν, τὸ δὲ προμαχατικόν, τὸ δὲ λοιπὸν καὶ πλῆον μέρος ἀγελαῖον καὶ στρατιωτικόν· ἀρχοντικὸν μὲν ὦν ἐστίν, ἐξ ὧν στρατοπεδάρχαι καὶ ταξιάρχαι καὶ λοχαγοὶ καὶ πρόμαχοι καθίστανται καὶ καθόλω πάντες οἱ ἁγεμονίαν ἔχοντες· προμαχατικὸν δὲ τὸ τῶν ἀνδρικωτάτων καὶ θυμικωτάτων καὶ τολματικωτάτων πᾶν γένος, ἀγελαῖον δὲ καὶ στρατιωτικὸν τὸ λοιπὸν πλᾶθος. τῶ δὲ βαναύσω καὶ βιοπονατικῶ τὸ μέν ἐστι γεωπόνον καὶ περὶ τὰν κατεργασίαν τᾶς χώρας κατασχολεύμενον, τὸ δὲ τεχνατικὸν ὄργανα καὶ ἐπιμαχανάματα τοῖς τῶ βίω πράγμασιν ἐκποριζόμενον, τὸ δὲ μεταβατικὸν καὶ ἐμπορικόν, ὃ τὰ μὲν ἐν τᾷ πόλει περιουσιάζοντα ἐπὶ τὰν ξέναν διάγεται, τὰ δὲ ἀπὸ τᾶς ξένας ἐς τὰν πόλιν. τὰ μὲν ὦν συστάματα τᾶς πολιτικᾶς κοινωνίας διὰ τοσούτων καὶ

τοιῶνδε μερέων συντέτακται· ἔπειτα δὲ καὶ περὶ ἁρμογᾶς καὶ ἑνώσιος αὐτῶν ῥητέον.

ἐπεὶ δὲ πᾶσα πολιτικὰ κοινωνία λύρᾳ παντελεῖ ποτέοικε, τῷ ἐξαρτύσιός τε δέεσθαι καὶ συναρμογᾶς καὶ τὸ τελευταῖον ἐπαφᾶς τινος καὶ προσχράσιος μωσικᾶς· περὶ μὲν ὧν ἐξαρτύσιος πολιτείας ἐκ τίνων καὶ πόσων συνέστακεν, εἴρηταί μοι καὶ ἐν τοῖς ἔμπροσθεν· περὶ δὲ συναρμογᾶς καὶ ἑνώσιος αὐτᾶν πειρασοῦμαι νῦν λέγεν. φαμὶ δὲ ἔγωγε τρισὶ τούτοις συναρμόζεσθαι τὰν πολιτικὰν κοινωνίαν, λόγοις ἐπιταδεύμασιν ἐθῶν νόμοις, καὶ διὰ τριῶν τούτων παιδεύεσθαι τὸν ἄνθρωπον καὶ σπουδαιότερον γίνεσθαι. τοὶ μὲν γὰρ λόγοι διδάσκοντι καὶ ἐπιθυμίας ἐμποιεῦντι προτρεπόμενοι πρὸς ἀρετάν· τοὶ δὲ νόμοι τὰ μὲν φόβοις κατέχοντες ἀπερύκοντι, τὰ δὲ τιμαῖς τε καὶ δωρεαῖς δελεάζοντες ἐκκαλέονται· τὰ δὲ ἔθεα καὶ ἐπιταδεύματα πλάσσει καὶ κηροχυτεῖ τὰν ψυχάν, φυσίωσιν ἐμποιεῦντα διὰ τᾶς συνεχέος ἐνεργείας. δεῖ δὲ τὰ τρία ταῦτα συντετάχθαι ποτί τε τὸ καλὸν καὶ τὸ συμφέρον καὶ τὸ δίκαιον, καὶ ἐν ἑκάστῳ αὐτῶν εἰ μὲν δυνατὸν στοχάζεσθαι πάντων, εἰ δὲ μή γε, δυοῖν ἢ ἑνός· ὥστ᾽ εἶμεν καὶ τὸν λόγον καλὸν καὶ δίκαιον καὶ συμφέροντα καὶ τὸ ἔθος καὶ τὸν νόμον· προτιμῆσθαι δὲ πρᾶτον τὸ καλόν, δεύτερον δὲ τὸ δίκαιον, τρίτον δὲ τὸ συμφέρον. τὸ καθόλω δὲ πειρᾶσθαι διὰ τούτων ὡς ὅτι μάλιστα ποιὲν τὰν πόλιν ὅπως ὁμολογήσῃ καὶ σύμφωνος [ᾖ] τοῖς αὐτᾶς μέρεσιν, ἀλλὰ μὴ στασιάζουσα καὶ διαμαχομένα. ἐσεῖται δὲ τοῦτο, αἴκα τὰ πάθεα τᾶς ψυχᾶς παιδεύηται τῶν νέων καὶ ἐς τὸ μέτριον ἀγινῆται τοῖς ἁδέσι τε καὶ λυπαροῖς, καὶ αἴκα περὶ τὰς οὐσίας μέτρια καὶ ἀπὸ γεωπονίας ἔχωντι τὰν πρόσοδον· καὶ αἴκα τὰς ἀρχὰς

ἄρχωντι τὰς μὲν ἀρετᾶς δεομένας τοὶ ἀγαθοί, τὰς δ' ἐμπειρίας τινὸς τοὶ ἔμπειροι, τὰς δὲ παροχᾶς τινὸς καὶ δαπάνας τοὶ εὔποροι, καὶ τούτοις πᾶσι κατὰ τρόπον ἄρξασι τὰς ἀρχὰς κατ' ἀξίας διανέμωντι τὰς τιμάς. ἐπεὶ δὲ τᾶς ἀρετᾶς αἰτίαι τυγχάνοντι τρεῖς, φόβος ἐπιθυμία αἰδώς, δυνασεῖται δὲ τὸν μὲν φόβον ὁ νόμος ἐμπαρασκευάζεν, τὰν δὲ αἰδῶ τὰ ἔθεα· τοὶ γὰρ ἐθισθέντες καλῶς αἰδέονται τὰ αἰσχρὰ πράσσεν· ὁ δὲ λόγος τὰν ἐπιθυμίαν· ἀγωγὸν γὰρ τᾶς αἰτίας ἀπόδοσις ἅμα καὶ ἐφελκυστικὸν τᾶς ψυχᾶς, ἄλλως τε δὴ καὶ γινόμενον μετὰ προτροπᾶς. διὸ καὶ φρατρίας καὶ συσσίτια καὶ συσκανίας καὶ συναγελισμώς, τὰ μὲν στρατιωτικῶς τὰ δὲ καὶ πολιτικώς, ἐγκατασκευάζεν δεῖ ταῖς τῶν νέων ψυχαῖς, συναρμόζεν δὲ καὶ τὸ τῶν πρεσβυτέρων γένος αὐτοῖς, ἐπειδήπερ τοὶ μὲν νέοι δέονται σωφρονισμῶ καὶ καταρτύσιος, τοὶ δὲ πρεσβύτεροι φιλοφροσύνας καὶ διαγωγᾶς ἀλύπω.

94 Ἐν ταυτῷ.

Ἐπεὶ διὰ τριῶν ἐλέγομες σπουδαῖον ἀποτελέεσθαι τὸν ἄνθρωπον, διά τε τῶν ἐθέων καὶ τῶν νόμων καὶ τῶ λόγω, σκοπιάζεσθαι δεῖ πῶς τε διαφθείρεσθαι πέφυκε τὰ ἔθεα καὶ πῶς διαμένεν. εὑρήσομες δὴ τὰ ἔθεα φθειρόμενα κατὰ δύο τρόπως, ἢ γὰρ δι' αὐτὼς ἢ διὰ τὼς ἐκτός. καὶ διὰ μὲν αὐτώς, ἤτοι διὰ τὸ φεύγεν τὰς λύπας ἢ διὰ τὸ αἱρέεσθαι τὰς ἁδονάς· διὰ μὲν γὰρ τὸ φεύγεν τὰς λύπας τὼς πόνως οὐχ ὑπομένοντι, διὰ δὲ τὸ διώκεν τὰς ἁδονὰς τὰ ἀγαθὰ [τοὶ] ἀποβάλλοντι· ἐργατεύοντι δὲ τοὶ μὲν πόνοι τὰ ἀγαθὰ τοῖς ἀνθρώποις, ταὶ δὲ ἁδοναὶ τὰ κακά· ἀκρατέες ὦν καὶ μαλακοὶ γινόμενοι θηλύτεροι γίνονται ταῖς ψυχαῖς καὶ ποτὶ τὰς ἀναλώσιας πολυδαπανώτεροι. διὰ

δὲ τὼς ἐκτός, αἴκα ξενικὸς ἐπίδαμος ὄχλος γένηται εὐαμερίαις ἐμποριкαῖς χαίρων, ἢ καὶ τοὶ ἀστυγείτονες φιλάδονοι καὶ τρύφακες ἐόντες μεταδιδῶντι τοῖς πλατιάζουσι τῶν παρ' αὐτοῖς ἐθέων. διὸ δεῖ τὼς νομοθέτας καὶ τὼς ἀγελάρχας ἐπιμελέως παρατηρέν, εἰ ἐπιμελέως συνασκεῖται τὰ ἔθεα καὶ ὁμαλῶς πορεύεται διὰ πάντων· ἔτι δ' εἰ τὸ γνάσιον καὶ τὸ αὐθιγενὲς πλᾶθος τᾶς πολιτείας διαμένει ἀκέραιον καὶ ἀπαράμικτον ὑπάρχον ἀπὸ τῶ ἄλλω γένευς· καὶ εἰ τὰ μεγέθεα τῶν βίων ἐν τοῖς αὐτοῖς διαμένει καὶ οὐ παραπόλλυται· ἅμα γὰρ τῷ τὰ περισσὰ κτᾶσθαι καὶ τὰ περισσὰ μαστεύοντι.

καὶ τὰ μὲν ἔθεα οὕτως ἀσφαλίζεσθαι χρή· τὼς δὲ λόγως, τὸ τῶν σοφιστᾶν γένος ἐπικρίνοντας καὶ δοκιμάζοντας εἰ ποτὶ τὼς νόμως καὶ τὰ πολιτικὰ δόγματα καὶ τὰς ἰδίας οἰκονομίας τῶν βίων ὠφέλιμα λέγοντι· οὐ γὰρ τὰν τυχοῦσαν, ἀλλὰ τὰν μεγίσταν κακοδαιμοσύναν ἐντίκτοντι τοὶ τῶν σοφιστᾶν λόγοι ταῖς τῶν ἀνθρώπων ψυχαῖς, αἴκα τολμῶντι κινῆν παρὰ τὰς κοινὰς ἐννοίας ἢ τῶν θείων ἢ τῶν ἀνθρωπίνων· οὐδὲ ποτ' ἀλάθειαν οὐδὲ ποτ' ἀσφάλειαν οὐδὲ ποτὶ δόξαν κύριόν ἐστι, ζόφωσιν δὲ καὶ σύγχυσιν ἐπιφέρει τῷ κοινῷ βίῳ τῶν ἀνθρώπων. τοιοῦτοι δὲ λόγοι τυγχάνοντι οἱ πάντες, ἤτοι μὴ εἶμεν τὸ θεῖον ἢ καὶ ἐὸν μὴ ἔχεν οὕτως ποτὶ τὸ τῶν ἀνθρώπων γένος ὥστ' ἐπιβλέπεν αὐτὸ καὶ φροντίζεν, ἀλλ' ἐᾶν καὶ κατολιγωρέν. καὶ γὰρ ἁ τοιαύτα παραδοχὰ τοῖς ἀνθρώποις ἀφροσύναν καὶ ἀδικίαν ἐντίκτει [ὅσαν] οὐδ' εἰπὲν δηλομένοις εὐμαρές ἐστι. πᾶς γὰρ ἄνθρωπος ἀναρχίας πλαρωθεὶς καὶ τὸν ὕποπτον ἀπωσάμενος φόβον, σκιρτᾷ τε καὶ παρανομεῖ παντοδαπὸς γινόμενος. χρέεσθαι δὲ τῷ λόγῳ πολιτικῷ καὶ σεμνῷ καὶ

οἰκήῳ τᾶς διαθέσιος τῶ λέγοντος, ἀλλὰ μὴ προσποιητῷ· οὕτω γὰρ ἁ λέξις ἐσεῖται τὸ τῶ λέγοντος ἦθος ἐμφαίνουσα.

Ἐκ δὲ τῶν νόμων δεῖ τὰν ἀσφάλειαν οὕτως ἐπιφέρεν, εἰ καὶ σύνθετος ἁ πολιτεία ἢ καὶ συντεταγμένα ἐκ πασᾶν τᾶν ἀλλᾶν, λέγω δὲ οὐ τᾶν παρὰ φύσιν, ἀλλὰ τᾶν κατὰ φύσιν. τυραννίδος γὰρ οὐδεμία χρῆα ταῖς πόλισιν, εἰ μήποκα τᾶς ὀλιγαρχίας ἐπὶ βραχύ. δεῖ τοίνυν βασιλῆαν πρᾶτον ἐντετάχθαι, καὶ δεύτερον ἀριστοκρατίαν. βασιλῆα μὲν γὰρ θεομίματον πρᾶγμα καὶ δυσφύλακτον ὑπὸ ἀνθρωπίνας ψυχᾶς· ταχέως γὰρ ὑπὸ τρυφᾶς καὶ ὕβριος ἀλλάσσεται· διόπερ οὐ δεῖ κατὰ πᾶν αὐτᾷ χρέεσθαι, μέχρι δὲ τῶ δυνατῶ καὶ ποτὶ τὰν πολιτείαν χρησίμω· τὰν δ' ἀριστοκρατίαν ἐπιπλέον ἐμπλέκεν, τῷ πλήονας εἶμεν τὼς ἄρχοντας, καὶ φιλοζάλως διατίθεσθαι ποθ' αὐτώς, καὶ πολλάκις ἀντιμεταβάλλεσθαι τὰς ἀρχάς. δαμοκρατίαν δὲ ἀναγκαῖον μὲν εἶμεν πάντως· δεῖ γὰρ τὸν πολίταν μέρος ὑπάρχοντα τᾶς συμπάσας πολιτείας φέρεσθαί τι ἀπ' αὐτᾶς γέρας· ἐπέχεσθαι δ' ἱκανῶς αὐτὰν δεῖ· θρασὺ γὰρ καὶ προπετὲς τὸ πολὺ πλᾶθος.

95 *Διωτογένους Πυθαγορείου ἐκ τοῦ περὶ ὁσιότητος.*

Τὼς δὲ νόμως οὐκ ἐν οἰκήμασι καὶ θυρώμασιν ἐνῆμεν δεῖ, ἀλλ' ἐν τοῖς ἠθέεσι τῶν πολιτευομένων. τίς ὦν ἀρχὰ πολιτείας ἁπάσας; νέων τροφά. οὐ γὰρ μήποκα τὸν καρπὸν ὀνασιφόρον ἄμπελοι γεννήσοντι, μὴ φυτοτροφηθεῖσαι καλῶς· οὐδ' ἵπποι μήποκα γένωνται καλοὶ πωλοτροφίαν παρέντεσι. τὰ γὰρ νεόχρηστα τῶν σιτίων μάλιστα τῷ ἁψαμένῳ καὶ πλατιά-

ζοντι ὅμοιον τὸ σχῆμα λαμβάνει. τοῖς ἀνθρώποις περὶ μὲν ἀμπέλως πῶς χρὴ τμηθῆμέν τε καὶ ἐποφθῆμεν πεφρονημένως ἔχει, τὰ δ' ἐπὶ τῶν ἀνθρώπων ἤθεα ἀμελέως τε καὶ εἰκαίως· καί τοι οὐχ ἁ ἄμπελος οὐδ' ὁ οἶνος τᾶς πολιτείας ἁγεμὼν ἀλλ' ὁ ἄνθρωπος καὶ ἁ ψυχὰ τῶ ἀνθρώπω. καὶ τῷ μὲν φυτῷ πλήονος εἰώθαμες ἄξιον παρακαθιστάμεν [καὶ] τὸν ἐπιμελησόμενον, οὐ μῆον ἢ δύο μνᾶν ἄξιον, τοῖς δὲ νέοις Ἰλλυριὸν ἢ Θρᾷκα οὐδενὸς ἄξιον. οἱ δ' ἐξ ἀρχᾶς νομοθέται τὸ γένος τῶν ἀνθρώπων στάσιμον οὐκ ἂν δύναιντο ποιῆσαι, κινάσι δὲ μονᾶς καὶ τάξιος κεκοινωνηκυῖαν παρακατέζευξαν ὄρχησιν καὶ ῥυθμόν, ἔτι δὲ παιγνιὰς τὰς μὲν ἐς κοινωνίαν προτρεπομένας τὰς δ' ἐς ἀλάθειαν καὶ ὀξύτατα ψυχᾶς· ὁμοίως δὲ καὶ τοῖς ὑπὸ μέθας ἢ πλασμονᾶς φαῦλόν τι καταπράξασιν τὸν αὐλὸν καὶ τὰν ἁρμονίαν ἐς τὰς συνωσίας κατέταξαν, ὅπως πεπαινόμενον τὸ ἦθος δύναιτο κατακοσμεῖσθαι.

96 *Πλάτωνος πολιτείας δ'* (p. 425 a).

Ὅταν δὴ ἄρα καλῶς ἀρξάμενοι παῖδες παίζειν εὐνομίαν διὰ τῆς μουσικῆς εἰσδέξωνται, πάλιν τοὐναντίον ἢ ἐκείνοις εἰς πάντα συνέπεταί τε καὶ αὔξει, ἐπανορθοῦσα εἴ τι καὶ πρότερον τῆς πόλεως ἔκειτο. Ἀληθῆ μέντοι, ἔφη. Καὶ τὰ σμικρὰ ἄρα, εἶπον, δοκοῦντα εἶναι νόμιμα ἐξευρίσκουσιν οὗτοι, ἃ οἱ πρότερον ἀπώλλυσαν ἅπαντα; Ποῖα; Τὰ τοιάδε· σιγάς τε τῶν νεωτέρων παρὰ πρεσβυτέροις, ὡς πρέπει, καὶ κατακλίσεις καὶ ὑπαναστάσεις, καὶ γονέων θεραπείας, καὶ κουράς τε καὶ ἀμπεχόνας καὶ ὑποδέσεις καὶ ὅλον τὸν τοῦ σώματος σχηματισμόν, καὶ τἆλλα ὅσα τοιαῦτα. ἢ οὐκ οἴει; Ἔγωγε. Νομοθετεῖν δὲ

αὐτὰ οἶμαι εὔηθες· οὔτε γάρ που γίγνεται, οὔτ' ἂν μείνειεν λόγῳ τε καὶ γράμμασι νομοθετηθέντα. Πῶς γάρ; Κινδυνεύει γοῦν, ἦν δ' ἐγώ, ὦ Ἀδείμαντε, ἐκ τῆς παιδείας, ὅποι ἄν τις ὁρμήσῃ, τοιαῦτα καὶ τὰ ἑπόμενα εἶναι. ἢ οὐκ ἀεὶ τὸ ὅμοιον ὄν, ὅμοιον παρακαλεῖ; Τί μήν; Καὶ τελευτῶν δή, οἶμαι, φαῖμεν ἂν εἰς ἕν τι τέλεον καὶ νεανικὸν ἀποβαίνειν αὐτό, ἢ ἀγαθόν, ἢ καὶ τοὐναντίον.

97 Ἐν ταυτῷ (p. 429 c).

Σωτηρίαν ἔγωγε, εἶπον, λέγω τινὰ εἶναι τὴν ἀνδρίαν. Ποίαν δὴ σωτηρίαν; Τὴν τῆς δόξης τῆς ὑπὸ νόμου διὰ τῆς παιδείας γεγονυῖαν περὶ τῶν δεινῶν, ἅ τε ἐστι καὶ οἷα· διὰ παντὸς δὲ ἔλεγον αὐτὴν σωτηρίαν, τῷ ἔν τε λύπαις ὄντα διασώζεσθαι αὐτήν, καὶ ἐν ἡδοναῖς, καὶ ἐν ἐπιθυμίαις, καὶ ἐν φόβοις, καὶ μὴ ἐκβάλλειν. ᾧ δέ μοι δοκεῖ ὅμοιον εἶναι, ἐθέλω ἀπεικάσαι, εἰ βούλει. Ἀλλὰ βούλομαι. Οὐκ οὖν οἶσθα, ἦν δ' ἐγώ, ὅτι οἱ βαφεῖς ἐπειδὰν βουληθῶσι βάψαι ἔρια, ὥστ' εἶναι ἁλουργά, πρῶτον μὲν ἐκλέγονται ἐκ τοσούτων χρωμάτων μίαν φύσιν τὴν τῶν λευκῶν· ἔπειτα προπαρασκευάζουσιν οὐκ ὀλίγῃ παρασκευῇ θεραπεύσαντες, ὅπως δέξεται ὅτι μάλιστα τὸ ἄνθος, καὶ οὕτω δὴ βάπτουσι; καὶ ὃ μὲν ἂν τούτῳ τῷ τρόπῳ βαφῇ, δευσοποιὸν γίγνεται τὸ βαφέν, καὶ ἡ πλύσις οὔτ' ἄνευ ῥυμμάτων οὔτε μετὰ ῥυμμάτων δύναται αὐτῶν τὸ ἄνθος ἀφαιρεῖσθαι· ἃ δ' ἂν μή, οἶσθα οἷα δὴ γίγνεται, ἐάν τε τὶς ἄλλα χρώματα βάπτῃ, ἐάν τε καὶ ταῦτα, μὴ προθεραπεύσας. Οἶδα, ἔφη, ὅτι καὶ ἔκπλυτα καὶ γελοῖα. Τοιοῦτον τοίνυν, ἦν δ' ἐγώ, ὑπόλαβε κατὰ δύναμιν ἐργάζεσθαι καὶ ἡμᾶς, ὅτε ἐξελεγόμεθα τοὺς στρατιώτας καὶ ἐπαι-

δεύομεν ἐν μουσικῇ καὶ γυμναστικῇ· καὶ μηδὲν οἴου ἄλλο μηχανᾶσθαι ἢ ὅπως ἡμῖν ὅτι κάλλιστα τοὺς νόμους πεισθέντες δέξοιντο ὥσπερ βαφήν, ἵνα δευσοποιὸς αὐτῶν ἡ δόξα γίγνοιτο, καὶ περὶ δεινῶν καὶ περὶ τῶν ἄλλων, διὰ τὸ τήν τε φύσιν καὶ τὴν τροφὴν ἐπιτηδείαν ἐσχηκέναι, καὶ μὴ αὐτῶν ἐκπλῦναι τὴν βαφὴν τὰ ῥύμματα ταῦτα, δεινὰ ὄντα ἐκκλύζειν· ἥ τε ἡδονὴ παντὸς χαλαστραίου δεινοτέρα οὖσα τοῦτο δρᾶν καὶ κονίας, λύπη τε καὶ φόβος καὶ ἐπιθυμία παντὸς ἄλλου ῥύμματος. τὴν δὴ τοιαύτην δύναμιν καὶ σωτηρίαν διὰ παντὸς δόξης ὀρθῆς τε καὶ νομίμου δεινῶν τε πέρι καὶ μή, ἀνδρίαν ἔγωγε καλῶ καὶ τίθεμαι, εἰ μή τι σὺ ἄλλο λέγεις. Ἀλλ' οὐδέν, ἦ δ' ὅς, λέγω· δοκεῖς γάρ μοι τὴν ὀρθὴν δόξαν περὶ τῶν αὐτῶν τούτων ἄνευ παιδείας γεγονυῖαν, τήν τε θηριώδη καὶ ἀνδραποδώδη, οὔτε πάνυ νόμιμον ἡγεῖσθαι, ἄλλο τέ τι ἢ ἀνδρείαν καλεῖν.

Κόσμος πού τις, ἦν δ' ἐγώ, ἡ σωφροσύνη ἐστὶ καὶ ἡδονῶν τινῶν καὶ ἐπιθυμιῶν ἐγκράτεια, ὥς φασι, κρείττω δὴ αὑτοῦ λέγοντες, οὐκ οἶδα ὅντινα τρόπον, καὶ ἄλλα τινὰ τοιαῦτα, ὥσπερ ἴχνη αὐτῆς λέγεται. ἦ γάρ; Πάντων μάλιστα, ἔφη. Οὐκ οὖν τὸ μὲν κρείττω αὑτοῦ γελοῖον; ὁ γὰρ ἑαυτοῦ κρείττων καὶ ἥττων δήπου ἂν αὑτοῦ εἴη, καὶ ὁ ἥττων κρείττων· ὁ αὐτὸς γὰρ ἐν ἅπασι τούτοις προσαγορεύεται. Τί δ' οὔ; Ἀλλ', ἦν δ' ἐγώ, φαίνεταί μοι βούλεσθαι λέγειν οὗτος ὁ λόγος, ὥς τι ἐν αὐτῷ τῷ ἀνθρώπῳ περὶ τὴν ψυχὴν τὸ μὲν βέλτιον ἔνι τὸ δὲ χεῖρον· καὶ ὅταν μὲν τὸ βέλτιον φύσει τοῦ χείρονος ἐγκρατέστερον ᾖ, τοῦτο λέγειν τὸ κρείττω αὑτοῦ· ἐπαινεῖ γοῦν· ὅταν δὲ ὑπὸ τροφῆς κακῆς ἤ τινος ὁμιλίας κρατηθῇ ὑπὸ πλήθους τοῦ χείρονος σμικρότερον τὸ βέλτιον ὄν,

τοῦτο δὲ ὡς ἐν ὀνείδει ψέγειν τε καὶ καλεῖν ἥττω ἑαυτοῦ, καὶ ἀκόλαστον τὸν οὕτω διακείμενον. Καὶ γὰρ ἔοικεν, ἔφη. Ἀπόβλεπε τοίνυν, ἦν δ' ἐγώ, πρὸς τὴν νέαν ἡμῖν πόλιν, καὶ εὑρήσεις ἐν αὐτῇ τὸ ἕτερον τούτων ἐνόν· κρείττω γὰρ αὐτὴν αὑτῆς δικαίως φήσεις προσαγορεύειν. εἴπερ οὖν τὸ ἄμεινον τοῦ χείρονος ἄρχει, σῶφρον κλητέον, καὶ κρεῖττον αὑτοῦ. Ἀλλὰ ἀποβλέπω, ἔφη, καὶ ἀληθῆ λέγεις. Καὶ μὴν καὶ τάς τε πολλὰς καὶ παντοδαπὰς ἐπιθυμίας, καὶ ἡδονάς τε καὶ λύπας, ἐν πᾶσι μάλιστ' ἄν τις εὕροι, καὶ γυναιξὶ καὶ οἰκέταις καὶ τῶν ἐλευθέρων λεγομένων ἐν τοῖς πολλοῖς τε καὶ φαύλοις. Πάνυ μὲν οὖν. Τὰς δέ γε ἁπλᾶς τε καὶ μετρίας, αἳ δὴ μετὰ νοῦ τε καὶ δόξης ὀρθῆς λογισμῷ ἄγονται, ἐν ὀλίγοις τε ἐπιτεύξῃ, καὶ τοῖς βέλτιστα μὲν φυεῖσι, βέλτιστα δὲ παιδευθεῖσιν; Ἀληθῆ, ἔφη. Οὐκ οὖν καὶ ταῦτα ὁρᾷς ἐνόντα σοι ἐν τῇ πόλει, καὶ κρατουμένας αὐτόθι τὰς ἐπιθυμίας τὰς ἐν τοῖς πολλοῖς τε καὶ φαύλοις ὑπό τε τῶν ἐπιθυμιῶν καὶ τῆς φρονήσεως, τῆς ἐν τοῖς ἐλάττοσί τε καὶ ἐπιεικεστέροις; Ἔγωγ', ἔφη. Εἰ ἄρα δεῖ τινὰ πόλιν προσαγορεύειν κρείττω ἡδονῶν τε καὶ ἐπιθυμιῶν καὶ αὐτὴν αὑτῆς, ταύτην προσρητέον. Παντάπασι μὲν οὖν, ἔφη. Ἆρ' οὖν οὐ καὶ σώφρονα κατὰ πάντα ταῦτα; Καὶ μάλα, ἔφη. Καὶ μὴν αὖ εἴπερ ἐν ἄλλῃ πόλει ἡ αὐτὴ δόξα ἔνεστι τοῖς τε ἄρχουσι καὶ τοῖς ἀρχομένοις, περὶ τοῦ οὕς τινας δεῖ ἄρχειν, καὶ ἐν ταύτῃ ἂν εἴη τοῦτο ἐνόν. ἢ οὐ δοκεῖ; Καὶ μάλα, ἔφη, σφόδρα. Ἐν ποτέροις οὖν φήσεις τῶν πολιτῶν τὸ σωφρονεῖν ἐνεῖναι, ὅταν οὕτως ἔχωσιν; ἐν τοῖς ἄρχουσιν, ἢ ἐν τοῖς ἀρχομένοις; Ἐν ἀμφοτέροις που, ἔφη. Ὁρᾷς οὖν, ἦν δ' ἐγώ, ὅτι ἐπιεικῶς ἐμαντευόμεθα ἀρτίως, ὡς ἁρμονίᾳ τινὶ ἡ σωφροσύνη

ὡμοίωται; Τί δή; Ὅτι οὐχ ὥσπερ ἡ ἀνδρία καὶ ἡ σοφία, ἐν μέρει τινὶ ἑκατέρα ἐνοῦσα, ἡ μὲν σοφήν, ἡ δὲ ἀνδρείαν τὴν πόλιν παρείχετο, οὐχ οὕτω τὴν πόλιν ποιεῖ αὕτη, ἀλλὰ δι' ὅλης ἀτεχνῶς τέταται, διὰ πασῶν παρεχομένη ξυνᾴδοντας, τούς τε ἀσθενεστάτους ταυτὸν καὶ τοὺς ἰσχυροτάτους καὶ τοὺς μέσους, εἰ μὲν βούλει, φρονήσει, εἰ δὲ βούλει, ἰσχύϊ, εἰ δέ, καὶ πλήθει ἢ χρήμασιν ἢ ἄλλῳ ὁτῳοῦν τῶν τοιούτων. ὥστε ὀρθότατα ἂν φαῖμεν ταύτην τὴν ὁμόνοιαν σωφροσύνην εἶναι, χείρονός τε καὶ ἀμείνονος κατὰ φύσιν ξυμφωνίαν, ὁπότερον δεῖ ἄρχειν καὶ ἐν πόλει καὶ ἐν ἑνὶ ἑκάστῳ. Πάνυ μοι, ἔφη, ξυνδοκεῖ.

98 Ἐν ταυτῷ (p. 433 a).

Ἀλλ', ἦν δ' ἐγώ, ἄκουε, εἴ τι ἄρα λέγω. ὃ γὰρ ἐξ ἀρχῆς ἐθέμεθα δεῖν ποιεῖν διὰ παντός, ὅτε τὴν πόλιν κατῳκίζομεν, τοῦτό ἐστιν, ὡς ἐμοὶ δοκεῖ, ἤτοι τούτου τι εἶδος ἡ δικαιοσύνη· ἐθέμεθα δὲ δήπου, καὶ πολλάκις ἐλέγομεν, εἰ μέμνησαι, ὅτι ἕνα ἕκαστον ἓν δέοι ἐπιτηδεύειν τῶν περὶ τὴν πόλιν, εἰς ὃ αὐτοῦ ἡ φύσις ἐπιτηδειοτάτη πεφυκυῖα εἴη. Ἐλέγομεν γάρ. Καὶ μὴν ὅτι γε τὸ τὰ αὑτοῦ πράττειν καὶ μὴ πολυπραγμονεῖν δικαιοσύνη ἐστί, καὶ τοῦτο ἄλλων τε πολλῶν ἀκηκόαμεν, καὶ αὐτοὶ πολλάκις εἰρήκαμεν. Εἰρήκαμεν γάρ. Τοῦτο τοίνυν, ἦν δ' ἐγώ, ὦ φίλε, κινδυνεύει τρόπον τινὰ γιγνόμενον δικαιοσύνη εἶναι, τὸ τὰ αὑτοῦ πράττειν. οἶσθα ὅθεν τεκμαίρομαι; Οὔκ, ἀλλὰ λέγε, ἔφη. Δοκεῖ μοι, ἦν δ' ἐγώ, τὸ ὑπόλοιπον ἐν τῇ πόλει ὧν ἐσκέμμεθα, σωφροσύνης καὶ ἀνδρείας καὶ φρονήσεως, τοῦτο εἶναι τὸ πᾶσιν ἐκείνοις τὴν δύναμιν παρέχον ὥστε ἐγγενέσθαι καὶ ἐγγενομένοις σωτηρίαν παρέχειν, ἕως περ ἂν ἐνῇ· καί τοι

ἔφαμεν δικαιοσύνην ἔσεσθαι τὸ ὑπολειφθὲν ἐκείνων, εἰ τὰ τρία εὕροιμεν. Καὶ γὰρ ἀνάγκη, ἔφη. Ἀλλὰ μέντοι, ἦν δ' ἐγώ, εἰ δέοι κρῖναι τί τὴν πόλιν ἡμῖν τούτων μάλιστα ἀγαθὴν ἀπεργάσεται ἐγγενόμενον, δύσκριτον ἂν εἴη, πότερον ἡ ὁμοδοξία τῶν ἀρχόντων τε καὶ ἀρχομένων, ἢ ἡ περὶ δεινῶν τε καὶ μή, ἅττα ἐστί, δόξης ἐννόμου σωτηρία ἐν τοῖς στρατιώταις ἐγγενομένη, ἢ ἡ ἐν τοῖς ἄρχουσι φρόνησίς τε καὶ φυλακὴ ἐνοῦσα· ἢ τοῦτο μάλιστα ἀγαθὴν αὐτὴν ποιεῖ ἐνόν, καὶ ἐν παιδὶ καὶ ἐν γυναικὶ καὶ δούλῳ καὶ ἐλευθέρῳ καὶ δημιουργῷ καὶ ἄρχοντι καὶ ἀρχομένῳ, ὅτι τὸ αὑτοῦ ἕκαστος εἷς ὢν ἓν ἔπραττε καὶ οὐκ ἐπολυπραγμόνει. Δύσκριτον, ἔφη· πῶς δ' οὔ; Ἐνάμιλλον ἄρα, ὡς ἔοικε, πρὸς ἀρετὴν πόλεως, τῇ τε σοφίᾳ αὐτῆς καὶ τῇ σωφροσύνῃ καὶ τῇ ἀνδρείᾳ, ἡ τοῦ ἕκαστον ἐν αὐτῇ τὰ αὑτοῦ πράττειν δύναμις. Καὶ μάλα, ἔφη. Οὐκ οὖν δικαιοσύνην τό γε τούτοις ἐνάμιλλον ἂν εἰς ἀρετὴν πόλεως θείης; Παντάπασι μὲν οὖν. Σκόπει δὴ καὶ τῇδε, εἰ οὕτω δόξει· ἆρα τοῖς ἄρχουσιν ἐν τῇ πόλει τὰς δίκας προστάξεις δικάζειν; Τί μήν; Ἦ ἄλλου οὗ τινὸς οὖν μᾶλλον ἐφιέμενοι δικάσουσιν, ἢ τούτου ὅπως ἂν ἕκαστοι μήτ' ἔχωσι τἀλλότρια μήτε τῶν αὑτῶν στέρωνται; Οὐκ· ἀλλὰ τούτου. Ὡς δικαίου ὄντος; Ναί. Καὶ ταύτῃ ἄρα πῃ ἡ τοῦ οἰκείου τε καὶ ἑαυτοῦ ἕξις τε καὶ πρᾶξις, δικαιοσύνη ἂν ὁμολογοῖτο. Ἔστι ταῦτα.

99 Ἐν ταυτῷ (p. 445 c).

Δεῦρο νῦν, ἦν δ' ἐγώ, ἵνα καὶ ἴδῃς ὅσα εἴδη ἔχει ἡ κακία, ὥς ἐμοὶ δοκεῖ, ἅ γε δὴ καὶ ἄξια θέας. Ἕπομαι, ἔφη, μόνον λέγε. Καὶ μήν, ἦν δ' ἐγώ, ὥσπερ ἀπὸ σκοπιᾶς μοι φαίνεται, ἐπειδὴ ἐνταῦθα ἀναβεβή-

καμεν τοῦ λόγου, ἓν μὲν εἶναι εἶδος τῆς ἀρετῆς, ἄπειρα δὲ τῆς κακίας· τέτταρα δὲ ἐν αὐτῇ ὄντα ὧν καὶ ἄξιον ἐπιμνησθῆναι. Πῶς λέγεις; ἔφη. Ὅσοι, ἦν δ' ἐγώ, πολιτειῶν τρόποι εἰσὶν εἴδη ἔχοντες, τοιοῦτοι κινδυνεύουσι καὶ ψυχῆς τρόποι εἶναι. Πόσοι δή; Πέντε μέν, ἦν δ' ἐγώ, πολιτειῶν, πέντε δὲ ψυχῆς. Λέγ', ἔφη, τίνες; Λέγω, εἶπον, ὅτι εἷς μὲν οὗτος, ὃν ἡμεῖς διεληλύθαμεν, πολιτείας εἴη ἂν τρόπος, ἐπονομασθείη δ' ἂν καὶ διχῇ· ἐγγενομένου γὰρ ἀνδρὸς ἑνὸς ἐν τοῖς ἄρχουσι διαφέροντος, βασιλεία ἂν κληθείη· πλειόνων δέ, ἀριστοκρατία. Ἀληθῆ ἔφη. Τοῦτο μὲν τοίνυν, ἦν δ' ἐγώ, ἓν εἶδος λέγω· οὔτε γὰρ ἂν πλείους οὔτε εἷς ἐγγενόμενοι κινήσειεν ἄν τινα τῶν ἀξίων λόγου νόμων τῆς πόλεως, τροφῇ τε καὶ παιδείᾳ χρησάμενος, ᾗ διεληλύθαμεν.

100 Πλάτωνος πολιτείας ε' (457 a).

Ἀποδυτέον δὴ ταῖς τῶν φυλάκων γυναιξίν, ἐπείπερ ἀρετὴν ἀντὶ ἱματίων ἀμφιέσονται, καὶ κοινωνητέον πολέμου τε καὶ τῆς ἄλλης φυλακῆς τῆς περὶ τὴν πόλιν, καὶ οὐκ ἄλλο πρακτέον· τούτων δὲ αὐτῶν τὰ ἐλαφρότερα ταῖς γυναιξὶν ἢ τοῖς ἀνδράσιν ἀποδοτέον, διὰ τὴν τοῦ γένους ἀσθένειαν· ὁ δὲ γελῶν ἀνὴρ ἐπὶ γυμναῖς γυναιξὶ τοῦ βελτίστου ἕνεκα γυμναζομέναις, ἀτελῆ τοῦ γελοίου σοφίας δρέπων καρπόν, οὐδὲν οἶδεν, ὡς ἔοικεν, ἐφ' ᾧ γελᾷ, οὐδὲ τί πράττει· κάλλιστα γὰρ δὴ τοῦτο καὶ λέγεται καὶ λελέξεται, ὅτι τὸ μὲν ὠφέλιμον καλόν, τὸ δὲ βλαβερὸν αἰσχρόν.

101 Ἐν ταυτῷ (p. 457 c).

Τούτῳ, ἦν δ' ἐγώ, ἕπεται νόμος καὶ τοῖς ἔμπροσθεν τοῖς ἄλλοις, ὡς ἐγῷμαι, ὅδε. Τίς; Τὰς γυναῖκας ταύτας τῶν ἀνδρῶν τούτων πάντων πάσας εἶναι

κοινάς, ἰδίᾳ δὲ μηδενὶ μηδεμίαν συνοικεῖν· καὶ τοὺς παῖδας αὖ κοινούς, καὶ μήτε γονέα εἰδέναι ἔκγονον τὸν αὑτοῦ, μήτε παῖδα γονέα. Πολύ, ἔφη, τοῦτο ἐκείνου μεῖζον πρὸς ἀπιστίαν, καὶ τοῦ δυνατοῦ πέρι καὶ ὠφελίμου. Οὐκ οἶμαι, ἦν δ' ἐγώ, περί γε τοῦ ὠφελίμου ἀμφισβητεῖσθαι ἄν, ὡς οὐ μέγιστον ἀγαθόν, κοινὰς μὲν τὰς γυναῖκας εἶναι, κοινοὺς δὲ τοὺς παῖδας.

102 Ἐν ταυτῷ (p. 461 e).

Ἡ μὲν δὴ κοινωνία, ὦ Γλαύκων, αὕτη τε καὶ τοιαύτη γυναικῶν τε καὶ παίδων τοῖς φύλαξί σοι τῆς πόλεως· ὡς δὲ ἑπομένη τε τῇ ἄλλῃ πολιτείᾳ καὶ μακρῷ βελτίστη, δεῖ δὴ τὸ μετὰ τοῦτο βεβαιώσασθαι παρὰ τοῦ λόγου· ἢ πῶς ποιῶμεν; Οὕτω νὴ Δία, ἦ δ' ὅς. Ἆρ' οὖν οὐχ ἥδε ἀρχὴ τῆς ὁμολογίας ἐρέσθαι ἡμᾶς αὐτούς, τί ποτε τὸ μέγιστον ἀγαθον ἔχομεν εἰπεῖν εἰς πόλεως κατασκευήν, οὗ δεῖ στοχαζόμενον τὸν νομοθέτην τιθέναι τοὺς νόμους, καὶ τί μέγιστον κακόν, εἶτα ἐπισκέψασθαι; ἆρα ἃ νῦν διήλθομεν, εἰς μὲν τὸ τοῦ ἀγαθοῦ ἴχνος ἡμῖν ἁρμόττει, τὸ δὲ τοῦ κακοῦ ἀναρμοστεῖ; Πάντων μάλιστα, ἔφη. Ἔχομεν οὖν τί μεῖζον κακὸν πόλει ἢ ἐκεῖνο ὃ ἂν αὐτὴν διασπᾷ καὶ ποιῇ πολλὰς ἀντὶ μιᾶς; ἢ μεῖζον ἀγαθὸν τοῦ ὃ δὴ ξυνδεῖ τε καὶ ποιεῖ μίαν; Οὐκ ἔχομεν. Οὐκ οὖν ἡ μὲν ἡδονῆς τε καὶ λύπης κοινωνία ξυνδεῖ, ὅταν ὅτι μάλιστα πάντες οἱ πολῖται τῶν αὐτῶν γιγνομένων τε καὶ ἀπολλυμένων παραπλησίως χαίρωσι καὶ λυπῶνται; Παντάπασι μὲν οὖν, ἔφη. Ἡ δέ γε τῶν τοιούτων ἰδίωσις διαλύει ὅταν οἱ μὲν περιαλγεῖς οἱ δὲ περιχαρεῖς γίγνωνται ἐπὶ τοῖς αὐτοῖς παθήμασι τῆς πόλεώς τε καὶ τῶν ἐν τῇ πόλει; Τί δ' οὔ; Ἆρ' οὖν

ἐκ τοῦδε τὸ τοιόνδε γίγνεται, ὅταν μὴ ἅμα φθέγγωνται ἐν τῇ πόλει τὰ τοιάδε ῥήματα, τό τε ἐμὸν καὶ τὸ οὐκ ἐμόν, καὶ περὶ τοῦ ἀλλοτρίου κατὰ ταυτά; Κομιδῇ μὲν οὖν. Ἐν ᾗ τινι δὲ πόλει πλεῖστοί σοι τὸ αὐτὸ κατὰ ταυτὰ τοῦτο λέγουσι τὸ ἐμὸν καὶ τὸ οὐκ ἐμόν, αὕτη ἄριστα διοικεῖται; Πολύ γε. Καὶ ἥ τις δὴ ἐγγύτατα ἑνὸς ἀνθρώπου ἔχει· οἷον, ὅταν που ἡμῶν δάκτυλός του πληγῇ, πᾶσα ἡ κοινωνία ἡ κατὰ τὸ σῶμα πρὸς τὴν ψυχὴν τεταμένη εἰς μίαν σύνταξιν τὴν τοῦ ἄρχοντος ἐν αὐτῇ, ᾔσθετό τε καὶ πᾶσα ἅμα συνήλγησε μέρους πονήσαντος ὅλη· καὶ οὕτω δὴ λέγομεν, ὅτι ὁ ἄνθρωπος τὸν δάκτυλον ἀλγεῖ· καὶ περὶ ἄλλου ὁτουοῦν τῶν τοῦ ἀνθρώπου ὁ αὐτὸς λόγος, περί τε λύπης πονοῦντος μέρους καὶ περὶ ἡδονῆς ῥαΐζοντος. Ὁ αὐτὸς γάρ, ἔφη. Καὶ τοῦτο ὃ ἐρωτᾷς, τοῦ τοιούτου ἐγγύτατα ἡ ἄριστα πολιτευομένη πόλις οἰκεῖ· ἑνὸς δή, οἶμαι, πάσχοντος τῶν πολιτῶν ὁτιοῦν ἢ ἀγαθὸν ἢ κακὸν ἡ τοιαύτη πόλις μάλιστά τε φήσει ἑαυτῆς εἶναι τὸ πάσχον, καὶ ἢ ξυνησθήσεται ἅπασα ἢ ξυλλυπήσεται. Ἀνάγκη, ἔφη, τήν γε εὔνομον. Ὥρα ἂν εἴη, ἦν δ᾽ ἐγώ, ἐπανιέναι ἡμῖν ἐπὶ τὴν ἡμετέραν πόλιν καὶ τὰ τοῦ λόγου ὁμολογήματα σκοπεῖν ἐν αὐτῇ, εἰ αὐτὴ μάλιστα ἔχει εἴτε καὶ ἄλλη τις μᾶλλον. Οὐκ οὖν χρή, ἔφη. Τί οὖν; ἔστι μέν που καὶ ἐν ταῖς ἄλλαις πόλεσιν ἄρχοντές τε καὶ δῆμος, ἔστι δὲ καὶ ἐν ταύτῃ; Ἔστι. Πολίτας μὲν δὴ πάντες οὗτοι ἀλλήλους προσεροῦσι; Πῶς δ᾽ οὔ; Ἀλλὰ πρὸς τῷ πολίτας, τί καὶ ὁ ἐν ταῖς ἄλλαις δῆμος τοὺς ἄρχοντας προσαγορεύει; Ἐν μὲν ταῖς πολλαῖς, δεσπότας· ἐν δὲ ταῖς δημοκρατουμέναις, αὐτὸ τοῦτο τοὔνομα ἄρχοντας. Τί δ᾽ ὁ ἐν τῇ ἡμετέρᾳ δῆμος; πρὸς τῷ πολίτας, τί τοὺς ἄρχοντας φησὶν εἶναι; Σωτῆράς τε

καὶ ἐπικούρους, ἔφη. Τί δ' οὗτοι τὸν δῆμον; Μισθοδότας τε καὶ τροφέας. Οἱ δὲ ἐν ταῖς ἄλλαις ἄρχοντες τοὺς δήμους; Δούλους, ἔφη. Τί δ' οἱ ἄρχοντες ἀλλήλους; Ξυνάρχοντας, ἔφη. Ἔχεις οὖν εἰπεῖν τῶν ἀρχόντων ἐν ταῖς ἄλλαις πόλεσιν, εἴ τις τινὰ ἔχει προσειπεῖν τῶν ξυναρχόντων, τὸν μὲν ὡς οἰκεῖον, τὸν δ' ὡς ἀλλότριον; Καὶ πολλούς γε. Οὐκ οὖν τὸν μὲν οἰκεῖον ὡς ἑαυτοῦ νομίζει τε καὶ λέγει, τὸν δ' ἀλλότριον, ὡς οὐχ ἑαυτοῦ; Οὕτω. Τί δ' οἱ παρὰ σοὶ φύλακες, ἔσθ' ὅστις αὐτῶν ἔχοι ἂν τῶν ξυμφυλάκων νομίσαι τινὰ ἢ προσειπεῖν ὡς ἀλλότριον; Οὐδαμῶς, ἔφη. παντὶ γὰρ ᾧ ἂν ἐντυγχάνῃ, ἢ ὡς ἀδελφῷ, ἢ ὡς ἀδελφῇ, ἢ ὡς πατρί, ἢ ὡς μητρί, ἢ ὡς υἱεῖ, ἢ θυγατρί, ἢ τούτων ἐγγόνοις, ἢ προγόνοις, νομιεῖ ἐντυγχάνειν. Κάλλιστα, ἦν δ' ἐγώ, λέγεις· ἀλλ' ἔτι καὶ τόδε εἰπέ· πότερον αὐτοῖς τὰ ὀνόματα μόνον οἰκεῖα νομοθετήσεις, ἢ καὶ τὰς πράξεις πάσας κατὰ τὰ ὀνόματα πράττειν, περί τε τοὺς πατέρας ὅσα νόμος περὶ πατέρας αἰδοῦς τε πέρι καὶ κηδεμονίας, καὶ τοῦ ὑπήκοον δεῖν εἶναι τῶν γονέων· ἢ μήτε πρὸς θεῶν μήτε πρὸς ἀνθρώπων αὐτῷ ἄμεινον ἔσεσθαι, ὡς οὔτε δίκαια οὔτε ὅσια πράττοντες ἄν, εἰ ἄλλα πράττοι ἢ ταῦτα; αὗταί σοι ἢ ἄλλαι φῆμαι ἐξ ἁπάντων τῶν πολιτῶν ὑμνήσουσιν εὐθὺς περὶ τὰ τῶν παίδων ὦτα, καὶ περὶ πατέρων, οὓς ἂν αὐτοῖς ἀποφήνῃ, καὶ περὶ τῶν ἄλλων ξυγγενῶν; Αὗται, ἔφη· γελοῖον γὰρ ἂν εἴη, εἰ ἄνευ ἔργων ὀνόματα οἰκεῖα διὰ τῶν στομάτων μόνον φθέγγοιντο. Πασῶν ἄρα πόλεων μάλιστα ἐν αὐτῇ ξυμφωνήσουσιν ἑνός τινος ἢ εὖ ἢ κακῶς πράττοντος, ὃ νῦν δὴ ἐλέγομεν τὸ ῥῆμα, τὸ ὅτι τὸ ἐμὸν πράττει, ἢ ὅτι τὸ ἐμὸν κακῶς. Ἀληθέστατα, ἦ δ' ὅς. Οὐκ οὖν μετὰ τούτου τοῦ δόγματός τε καὶ ῥήματος ἔφαμεν

ξυνακολουθεῖν τάς τε ἡδονὰς καὶ λύπας κοινῇ; Καὶ ὀρθῶς γε ἔφαμεν. Οὐκ οὖν μάλιστα τοῦ αὐτοῦ κοινωνήσουσιν οἱ πολῖται ἡμῖν, ὃ δὴ ἐμὸν ὀνομάζουσι, τούτου δὲ κοινωνοῦντες, οὕτω δὴ λύπης τε καὶ ἡδονῆς μάλιστα κοινωνίαν ἕξουσι; Πολύ γε. Ἆρ' οὖν τούτων αἰτία πρὸς τῇ ἄλλῃ καταστάσει ἡ τῶν γυναικῶν τε καὶ παίδων κοινωνία τοῖς φύλαξι; Πάνυ μὲν οὖν μάλιστα, ἔφη. Ἀλλὰ μὴν μέγιστόν γε πόλει αὐτὸ ὡμολογήσαμεν ἀγαθόν, ἀπεικάζοντες εὖ οἰκουμένην πόλιν σώματι πρὸς μέρος αὐτοῦ λύπης τε πέρι καὶ ἡδονῆς, ὡς ἔχει. Καὶ ὀρθῶς γε, ἔφη, ὡμολογήσαμεν. Τοῦ μεγίστου ἄρα ἀγαθοῦ τῇ πόλει αἰτία ἡμῖν πέφανται ἡ κοινωνία τοῖς ἐπικούροις τῶν τε παίδων καὶ τῶν γυναικῶν; Καὶ μάλα, ἔφη. Καὶ μὴν δὴ καὶ τοῖς πρόσθεν γε ὡμολογοῦμεν· ἔφαμεν γάρ που, οὔτε οἰκίας τούτοις ἰδίας δεῖν εἶναι, οὔτε γῆν, οὔτε κτῆμα, ἀλλὰ παρὰ τῶν ἄλλων τροφὴν λαμβάνοντας μισθὸν τῆς φυλακῆς, κοινῇ πάντας ἀναλίσκειν, εἰ μέλλοιεν ὄντως φύλακες εἶναι. Ὀρθῶς, ἔφη. Ἆρ' οὖν οὐχ ὅπερ λέγω, τά τε πρόσθεν εἰρημένα καὶ τὰ νῦν λεγόμενα ἔτι μᾶλλον ἀπεργάζεται αὐτοὺς ἀληθινοὺς φύλακας, καὶ ποιεῖ μὴ διασπᾶν τὴν πόλιν τὸ ἐμὸν ὀνομάζοντας, μὴ τὸ αὐτό, ἀλλ' ἄλλον ἄλλο, τὸν μὲν εἰς τὴν αὐτοῦ οἰκίαν ἕλκοντα ὅ τι ἂν δύνηται χωρὶς τῶν ἄλλων κτήσασθαι, τὸν δὲ εἰς τὴν ἑαυτοῦ ἑτέραν οὖσαν, καὶ γυναῖκά τε καὶ παῖδας ἑτέρους, ἡδονάς τε καὶ ἀλγηδόνας ἐμποιοῦντας, ἰδίων ὄντων ἰδίας, ἀλλ' ἑνὶ δόγματι τοῦ οἰκείου πέρι ἐπὶ τὸ αὐτὸ τείνοντας πάντας εἰς τὸ δυνατὸν ὁμοιοπαθεῖς λύπης τε καὶ ἡδονῆς εἶναι; Κομιδῇ μὲν οὖν, ἔφη. Τί δέ; δίκαι τε καὶ ἐγκλήματα πρὸς ἀλλήλους οὐκ οἰχήσεται ἐξ αὐτῶν, ὡς ἔπος εἰπεῖν, διὰ τὸ μηδὲν ἴδιον κεκτῆ-

σθαι πλὴν τὸ σῶμα, τὰ δὲ ἄλλα κοινά; ὅθεν δὴ ὑπάρχει τούτοις ἀστασιάστοις εἶναι, ὅσα γε διὰ χρημάτων ἢ παίδων ἢ ξυγγενῶν κτῆσιν ἄνθρωποι στασιάζουσι. Πολλή, ἔφη, ἀνάγκη ἀπηλλάχθαι. Καὶ μὴν οὐδὲ βιαίων γε οὐδὲ αἰκίας δίκαι δικαίως ἂν εἶεν ἐν αὐτοῖς· ἥλιξι μὲν γὰρ ἥλικας ἀμύνεσθαι καλὸν καὶ δίκαιόν που θήσομεν, ἀνάγκην σωμάτων ἐπιμελείας τιθέντες. Ὀρθῶς, ἔφη. Καὶ γὰρ καὶ τόδε ὀρθὸν ἔχει, ἦν δ' ἐγώ, οὗτος ὁ νόμος, εἴπου τίς τῳ θυμοῖτο, ἐν τῷ τοιούτῳ πληρῶν τὸν θυμόν, ἧττον ἐπὶ μείζους ἂν ἴοι στάσεις. Πάνυ μὲν οὖν. Πρεσβυτέρῳ μὲν νεωτέρων πάντων ἄρχειν τε καὶ κολάζειν προστετάξεται. Δῆλον. Καὶ μὴν ὅτι γε νεώτερος πρεσβύτερον, ἂν μὴ ἄρχοντες προστάττωσιν, οὔτε ἄλλως βιάζεσθαι ἐπιχειρήσει ποτὲ οὔτε τύπτειν, ὡς τὸ εἰκός, οἶμαι δὲ οὐδ' ἄλλως ἀτιμάσει· ἱκανὼ γὰρ τὼ φύλακε κωλύοντε, δέος τε καὶ αἰδώς· αἰδὼς μέν, ὡς γονέων μὴ ἅπτεσθαι εἴργουσα· δέος δέ, τὸ τῷ πάσχοντι τοὺς ἄλλους βοηθεῖν, τοὺς μὲν ὡς υἱεῖς, τοὺς δὲ ὡς ἀδελφούς, τοὺς δὲ ὡς πατέρας. Ξυμβαίνει γὰρ οὕτως, ἔφη. Πανταχῇ δὴ ἐκ τῶν νόμων εἰρήνην πρὸς ἀλλήλους οἱ ἄνδρες αὔξουσι. Πολλήν γε. Τούτων μὴν ἐν ἑαυτοῖς μὴ στασιαζόντων οὐδὲν δεινὸν μή ποτε ἡ ἄλλη πόλις πρὸς τούτους ἢ πρὸς ἀλλήλους διχοστατήσῃ. Οὐ γὰρ οὖν. Τά γε μὴν σμικρότατα τῶν κακῶν δι' ἀπρέπειαν ὀκνῶ καὶ λέγειν, ὧν ἀπηλλαγμένοι ἂν εἶεν· κολακείας τε πλουσίων πένητες, ἀπορίας τε καὶ ἀλγηδόνας ὅσας ἐν παιδοτροφίαις καὶ χρηματισμοῖς διὰ τροφὴν οἰκετῶν ἀναγκαίαν ἴσχουσι, τὰ μὲν δανειζόμενοι, τὰ δ' ἐξαρνούμενοι, τὰ δὲ πάντως πορισάμενοι, θέμενοι παρὰ γυναῖκάς τε καὶ οἰκέτας, ταμιεύειν παραδόντες· ὅσα τε, ὦ φίλε, περὶ αὐτὰ καὶ οἷα

πάσχουσι, δῆλά τε καὶ ἀγεννῆ καὶ οὐκ ἄξια λέγειν. Δῆλα γάρ, ἔφη, καὶ τυφλῷ. Πάντων τε δὴ τούτων ἀπαλλάξονται, ζήσουσί τε τοῦ μακαριστοῦ βίου, ὃν οἱ Ὀλυμπιονῖκαι ζῶσι, μακαριώτερον. Πῇ; Διὰ σμικρόν που μέρος εὐδαιμονίζονται ἐκεῖνοι, ὧν τούτοις ὑπάρχει· ἥ τε γὰρ τῶνδε νίκη καλλίων, ἥ τ' ἐκ τοῦ δημοσίου τροφὴ τελεωτέρα· νίκην τε γὰρ νικῶσι ξυμπάσης τῆς πόλεως σωτηρίαν· τροφῇ τε καὶ τοῖς ἄλλοις πᾶσιν ὅσων βίος δεῖται αὐτοί τε καὶ παῖδες ἀναδοῦνται. καὶ γέρα δέχονται παρὰ τῆς αὐτῶν πόλεως ζῶντες καὶ τελευτήσαντες ταφῆς ἀξίας μετέχουσι. Καὶ μάλα, ἔφη, καλά.

103 Ἐν ταυτῷ (p. 470 b).

Φαίνεταί μοι, ὥσπερ καὶ ὀνομάζεται δύο ταῦτα τὰ ὀνόματα, πόλεμός τε καὶ στάσις, οὕτω καὶ εἶναι δύο ὄντα ἐπὶ δυοῖν τινοῖν διαφοραῖν. λέγω δὲ τὰ δύο τὸ μὲν οἰκεῖον καὶ ξυγγενές, τὸ δὲ ἀλλότριον καὶ ὀθνεῖον. ἐπὶ μὲν οὖν τῇ τοῦ οἰκείου ἔχθρᾳ στάσις κέκληται, ἐπὶ δὲ τῇ τοῦ ἀλλοτρίου πόλεμος.

104 Ἐν ταυτῷ (p. 471 b).

Τιθῶμεν δὴ καὶ τοῦτον τὸν νόμον τοῖς φύλαξι, μήτε γῆν τέμνειν, μήτε οἰκίας ἐμπιπράναι; Θῶμεν, ἔφη, καὶ ἔχειν γε καλῶς ταῦτά τε καὶ τὰ πρόσθεν. Ἀλλὰ γάρ μοι δοκεῖς, ὦ Σώκρατες, ἐάν τις σοὶ τὰ τοιαῦτα ἐπιτρέπῃ λέγειν, οὐδέποτε μνησθήσεσθαι ὃ ἐν τῷ πρόσθεν παρωσάμενος, πάντα ταῦτα εἴρηκας, τὸ ὡς δυνατὴ αὕτη ἡ πολιτεία γενέσθαι καὶ τίνα τρόπον ποτὲ δυνατή· ἐπεὶ ὅτι γε εἰ γένοιτο, πάντ' ἂν εἴη ἀγαθὰ πόλει ᾗ γένοιτο· καὶ ἃ σὺ παραλείπεις, ἐγὼ λέγω, ὅτι καὶ τοῖς πολεμίοις ἄριστ' ἂν μάχοιντο, τῷ ἥκιστα ἀπολείπειν ἀλλήλους, γινώσκοντές τε καὶ

ἀνακαλοῦντες ταῦτα τὰ ὀνόματα ἑαυτοῖς, ἀδελφούς, πατέρας, υἱεῖς.

105 *Ἐν ταυτῷ* (p. 473 c).

Σκόπει δέ, ὃ μέλλω λέγειν. Λέγε, ἔφη. Ἐὰν μή, ἦν δ' ἐγώ, ἢ οἱ φιλόσοφοι βασιλεύωσιν ἐν ταῖς πόλεσιν, ἢ οἱ βασιλεῖς τε νῦν λεγόμενοι καὶ δυνάσται φιλοσοφήσωσι γνησίως τε καὶ ἱκανῶς, καὶ τοῦτο εἰς ταυτὸ ξυμπέσῃ δύναμίς τε πολιτικὴ καὶ φιλοσοφία, τῶν δὲ νῦν πορευομένων χωρὶς ἐφ' ἑκάτερον αἱ πολλαὶ φύσεις ἀποκαθιστῶσι, οὐκ ἔστι κακῶν παῦλα, ὦ φίλε Γλαύκων, ταῖς πόλεσι, ἀλλὰ μὴ δοκῶ δὲ οὐδὲ τῷ ἀνθρωπίνῳ γένει, οὐδὲ αὕτη ἡ πολιτεία μήτε πρότερον φυῇ τε ἐς τὸ δυνατὸν καὶ φῶς ἡλίου ἴδῃ, καὶ νῦν λόγῳ διεληλύθαμεν· ἀλλὰ τοῦτό ἐστιν ὃ ἐμοὶ πάλαι ὄκνον ἐντίθησι λέγειν ὁρῶντι ὡς πολὺ παρὰ δόξαν ῥηθήσεται. χαλεπὸν γὰρ ἰδεῖν, ὅτι οὐκ ἂν ἄλλῃ τις εὐδαιμονήσειεν, οὔτε ἰδίᾳ οὔτε δημοσίᾳ.

106 *Πλάτωνος πολιτείας ϛ'* (p. 497 b).

Ἀλλὰ τοῦτο καὶ ἐπαιτιῶμαι μηδεμίαν ἀξίαν εἶναι τῶν νῦν κατάστασιν πόλεως φιλοσόφου φύσεως· διὸ καὶ στρέφεσθαί τε καὶ ἀλλοιοῦσθαι αὐτήν, ὥσπερ ξενικὸν σπέρμα ἐν γῇ ἄλλῃ σπειρόμενον, ἐξίτηλον εἰς τὸ ἐπιχώριον φιλεῖ κρατούμενον ἰέναι, οὕτω καὶ τοῦτο τὸ γένος, νῦν μὲν οὐκ ἴσχον τὴν αὐτοῦ δύναμιν, εἰς ἀλλότριον εἶδος ἐκπίπτειν· εἰ δὲ λήψεται τὴν ἀρίστην πολιτείαν, ὥσπερ καὶ αὐτὸ ἄριστόν ἐστι, τότε δηλώσει ὅτι τοῦτο μὲν τῷ ὄντι θεῖον ἦν· τὰ δὲ ἄλλα ἀνθρώπινα, τά τε τῶν φύσεων καὶ τῶν ἐπιτηδευμάτων.

107 *Πλάτωνος πολιτείας ζ'* (p. 520 d).

Τὸ δέ που ἀληθὲς ὧδ' ἔχει· ἐν πόλει ᾗ ἥκιστα

πρόθυμοι ἄρχειν οἱ μέλλοντες ἄρξειν, ταύτην ἄριστα καὶ ἀστασιαστότατα ἀνάγκη οἰκεῖσθαι, τὴν δ' ἐναντίους ἄρχοντας σχοῦσαν ἐναντίως.

108 Ἐν ταυτῷ (p. 521 a).

Ἐν μόνῃ γὰρ αὐτῇ ἄρξουσιν οἱ τῷ ὄντι πλούσιοι, οὐ χρυσίου, ἀλλ' οὗ δεῖ τὸν εὐδαίμονα πλουτεῖν, ζωῆς ἀγαθῆς τε καὶ ἔμφρονος· εἰ δὲ πτωχοὶ καὶ πεινῶντες ἀγαθῶν ἰδίων ἐπὶ τὰ δημόσια ἴασιν, ἐντεῦθεν οἰόμενοι τἀγαθὸν δεῖν ἁρπάζειν, οὐκ ἔστι. περιμάχητον γὰρ τὸ ἄρχειν γιγνόμενον, οἰκεῖος ὢν καὶ ἔνδον ὁ τοιοῦτος πόλεμος αὐτούς τε ἀπόλλυσι καὶ τὴν ἄλλην πόλιν.

109 Τὸ μὲν τοίνυν ἀληθές, ἦν δ' ἐγώ, οὕτω· εἰ δὲ καὶ τοῦτο προθυμηθῆναι χρὴ σὴν χάριν ἀποδεῖξαι πῇ μάλιστα καὶ κατὰ τί δυνατώτατα ἂν εἴη, πάλιν μοι πρὸς τὴν τοιαύτην ἀπόδειξιν τὰ αὐτὰ διωμολόγησαι. Τὰ ποῖα; Ἆρ' οἷόν τέ τι πραχθῆναι ὡς λέγεται, ἢ φύσιν ἔχει πρᾶξιν λέξεως ἧττον ἀληθείας ἐφάπτεσθαι, κἂν εἰ μή τῳ δοκῇ; ἀλλὰ σὺ πότερον ὁμολογεῖς οὕτως, ἢ οὔ; Ὁμολογῶ, ἔφη. Τούτῳ μὲν δὴ μὴ ἀνάγκαζέ με, οἷα τῷ λόγῳ διήλθομεν, τοιαῦτα παντάπασι καὶ τῷ ἔργῳ δὴ γιγνόμενα ἀποφαίνειν, ἀλλ' ἐὰν οἷοί τε γενώμεθα εὑρεῖν, ὡς ἂν ἐγγύτατα τῶν εἰρημένων πόλις οἰκήσειε, φάναι ἡμᾶς ἐξευρηκέναι, ὡς δυνατὰ ταῦτα γίγνεσθαι ἃ σὺ ἐπιτάττεις. ἢ οὐκ ἀγαπήσεις τούτων τυγχάνων; ἐγὼ μὲν γὰρ ἀγαπῴην. Καὶ γὰρ ἔγωγε, ἔφη. Τὸ δὲ δὴ μετὰ τοῦτο, ὡς ἔοικε, πειρώμεθα ζητεῖν τε καὶ ἀποδεικνύναι, τί ποτε νῦν κακῶς ἐν ταῖς πόλεσι πράττεται, δι' ὃ οὐχ οὕτως οἰκοῦνται· καὶ τίνος ἂν σμικροτάτου μεταβαλόντος ἔλθοι εἰς τοῦτον τὸν τρόπον τῆς πολιτείας πόλις· μάλιστα

μέν, ἑνός· εἰ δὲ μή, δυοῖν· εἰ δὲ μή, ὅτι ὀλιγίστων τὸν ἀριθμὸν καὶ σμικροτάτων τὴν δύναμιν. Παντάπασι μὲν οὖν, ἔφη. Ἑνὸς μὲν τοίνυν, ἦν δ' ἐγώ, μεταβαλόντος, δοκοῦμέν μοι ἔχειν δεῖξαι, ὅτι μεταπέσοι ἄν· οὐ μέντοι μικροῦ γε οὐδὲ ῥᾳδίου, δυνατοῦ δέ. Τίνος; ἔφη. Ἐπ' αὐτὸ δή, ἦν δ' ἐγώ, εἶμι, ὃ τῷ μεγίστῳ προσεικάζομεν σχήματι· εἰρήσεται δ' οὖν, εἰ καὶ μέλλει γέλωτί τε ἀτεχνῶς, ὥσπερ κῦμα ἐκγελῶν, καὶ ἀταξίαν καταλύσειν· σκόπει δὲ ὃ μέλλω λέγειν. Λέγε, ἔφη. Ἐὰν μή, ἦν δ' ἐγώ, ἢ οἱ φιλόσοφοι βασιλεύσωσιν ἐν ταῖς πόλεσι, ἢ οἱ βασιλεῖς τε νῦν λεγόμενοι, φιλοσοφήσωσιν. Plato RP. V p. 472 e.

110 Ἀλλὰ μέντοι, εἶπον, τό γε φιλομαθὲς καὶ φιλόσοφον ταυτόν ἐστι. Ταυτὸν γάρ, ἔφη. Οὐκ οὖν θαρροῦντες τιθῶμεν καὶ ἐν τῷ ἀνθρώπῳ, εἰ μέλλει πρὸς τοὺς οἰκείους γε καὶ γνωρίμους πρᾶός τις ἔσεσθαι φύσει, καὶ φιλόσοφον καὶ φιλομαθῆ αὐτὸν δεῖν εἶναι; Τιθῶμεν, ἔφη. Φιλόσοφος δὴ καὶ θυμοειδὴς καὶ ἰσχυρὸς καὶ ταχὺς ἡμῖν τὴν φύσιν ἔσται, ὁ μέλλων καλὸς κἀγαθὸς φύλαξ ἔσεσθαι πόλεως. Παντάπασι μὲν οὖν, ἔφη. Ib. II p. 376 b.

111 Χαλεπὸν μὲν οὖν πόλεώς τε καὶ πολιτείας μὴ παντάπασιν εὐχὰς εἰρηκέναι, ἀλλὰ χαλεπὸν μέν, δυνατὸν δέ πῃ, καὶ οὐκ ἄλλῃ πῃ εἴρηται, ἢ ὅταν οἱ ἀληθῶς φιλόσοφοι δυνάσται ἢ πλείους ἢ εἷς ἐν πόλει γενόμενοι τῶν μὲν νῦν τιμῶν καταφρονήσωσιν, ἡγησάμενοι ἀνελευθέρους εἶναι καὶ οὐδενὸς ἀξίους, τὸ δὲ ὀρθὸν περὶ πλείστου ποιησάμενοι καὶ τὰς ἀπὸ τούτου τιμὰς (μέγιστον δὲ καὶ ἀναγκαιότατον τὸ δίκαιον) καὶ τούτῳ δὴ ὑπηρετοῦντές τε καὶ αὔξοντες αὐτὸ διασκευωρήσωνται τὴν ἑαυτῶν πόλιν. Πῶς;

ἔφη. Ὅσοι μὲν οὖν, ἦν δ' ἐγώ, πρεσβύτεροι τυγχάνωσι δέκα ἐν τῇ πόλει πάντας ἐκπέμψωσιν εἰς τοὺς ἀγρούς, τοὺς δὲ παῖδας αὐτῶν παραλαβόντες ἐκτὸς τῶν συνήθων, ἃ καὶ οἱ γονεῖς ἔχουσι, θρέψονται ἐν τοῖς σφετέροις τρόποις καὶ νόμοις οὖσιν, οὓς διεληλύθαμεν τότε· καὶ οὕτω τάχιστά τε καὶ ῥᾷστα πόλιν τε καὶ πολιτείαν, ἣν ἐλέγομεν καταστᾶσαν, αὐτήν τε εὐδαιμονήσειν, καὶ τὸ ἔθνος ἐν ᾧ ἂν ἐγγένηται, πλεῖστα ὀνήσειν. Ib. VII p. 540 d.

112 Ὁρᾷς τοῦτον ὡς ἐριστικὸν λόγον κατάγεις; ὡς οὐκ ἄρα ἐστὶ ζητεῖν ἀνθρώπῳ, οὔτε ὃ οἶδεν, οὔτε ὃ μὴ οἶδεν· οὔτε γὰρ ἂν ὅ γε οἶδε ζητεῖ, (οἶδε γάρ, καὶ οὐδὲν δεῖ τῷ γε τοιούτῳ ζητήσεως), οὔτε ὃ μὴ οἶδεν· οὔτε γὰρ οἶδεν ὅ τι ζητήσει. Οὐκ οὖν καλῶς σοι δοκεῖ λέγεσθαι ὁ λόγος οὗτος, ὦ Σώκρατες; Οὐκ ἔμοιγε. Ἔχεις λέγειν ὅπῃ; Ἔγωγε· ἀκήκοα γὰρ ἀνδρῶν τε καὶ γυναικῶν σοφῶν περὶ τὰ θεῖα πράγματα. Τίνα λόγον λεγόντων; Ἀληθῆ, ἔμοιγε δοκεῖν, καὶ καλόν. Τίνα τοῦτον, καὶ τίνες οἱ λέγοντες; Οἱ μὲν λέγοντές εἰσι τῶν ἱερέων τε καὶ τῶν ἱερειῶν, ὅσοις μεμελέτηκε περὶ ὧν μεταχειρίζονται λόγον οἵοις τε εἶναι διδόναι· λέγει δὲ καὶ Πίνδαρος καὶ ἄλλοι πολλοὶ τῶν ποιητῶν, ὅσοι θεῖοί εἰσιν· ἃ δὲ λέγουσι, ταυτί ἐστιν· ἀλλὰ σκόπει εἴ σοι δοκοῦσιν ἀληθῆ λέγειν· φασὶ γὰρ τὴν ψυχὴν τοῦ ἀνθρώπου εἶναι ἀθάνατον, καὶ τοτὲ μὲν τελευτᾶν, ὃ δὴ ἀποθνήσκειν καλοῦσι, τοτὲ δὲ πάλιν γίγνεσθαι, ἀπόλλυσθαι δὲ οὐδέποτε· δεῖν δὴ διὰ ταῦτα ὁσιώτατα διαβιῶναι τὸν βίον. "Οἷσι γὰρ ἂν Φερσεφόνα ποινὰν παλαιοῦ πένθεος δέξηται, ἐς τὸν ὕπερθεν ἅλιον κείνων ἐνάτῳ ἔτει ἀνδιδοῖ ψυχὰ πάλιν, ἐκ τῶν βασιλῆες ἀγαυοὶ καὶ σθένει κραιπνοὶ σοφίᾳ

τε μέγιστοι ἄνδρες αὔξονται· ἐς δὲ τὸν λοιπὸν χρόνον ἥρωες ἁγνοὶ πρὸς ἀνθρώπων καλεῦνται.” ἅτε οὖν ἡ ψυχὴ ἀθάνατος οὖσα καὶ πολλάκις γεγονυῖα, καὶ ἑωρακυῖα καὶ τὰ ἐνθάδε καὶ τὰ ἐν ᾅδου καὶ πάντα πράγματα, οὐκ ἔστιν ὅ τι οὐ μεμάθηκεν· ὥστε οὐδὲν θαυμαστόν, καὶ περὶ ἀρετῆς καὶ περὶ ἄλλων οἷόν τε εἶναι αὐτὴν ἀναμνησθῆναι, ἅ γε καὶ πρότερον ἠπίστατο. ἅτε γὰρ τῆς φύσεως ἁπάσης συγγενοῦς οὔσης καὶ μεμαθηκυίας ἅπαντα τῆς ψυχῆς, οὐδὲν κωλύει ἓν μόνον ἀναμνησθέντα, ὃ δὴ μάθησιν καλοῦσιν ἄνθρωποι, τἄλλα πάντα αὐτὸν ἀνευρεῖν, ἐάν τις ἀνδρεῖος ᾖ καὶ μὴ ἀποκάμῃ ζητῶν. τὸ γὰρ ζητεῖν ἄρα καὶ τὸ μανθάνειν ἀνάμνησις ὅλον ἐστίν. οὐκ οὖν οὐ δεῖ πείθεσθαι τούτῳ τῷ ἐριστικῷ λόγῳ· οὗτος μὲν γὰρ ἂν ἡμᾶς ἀργοὺς ποιήσειε, καὶ ἔστι τοῖς μαλακοῖς τῶν ἀνθρώπων ἡδὺς ἀκοῦσαι· ὅδε δὲ ἐργαστικούς τε καὶ ζητητικοὺς ποιεῖ, ᾧ ἐγὼ πιστεύων ἀληθῆ εἶναι, ἐθέλω μετὰ σοῦ ζητεῖν ὅ τι ἀρετή ἐστι. Ναί, ὦ Σώκρατες. ἀλλὰ πῶς λέγεις τοῦτο ὅτι οὐ μανθάνομεν, ἀλλὰ ἣν καλοῦμεν μάθησιν, ἀνάμνησίς ἐστιν, ἔχεις με τοῦτο διδάξαι, ὡς οὕτως ἔχει; Καὶ ἄρτι εἶπον, ὦ Μένων, ὅτι πανοῦργος εἶ, καὶ νῦν ἐρωτᾷς, εἰ ἔχω σε διδάξαι, ὃς οὐ φημὶ διδαχὴν εἶναι, ἀλλ' ἀνάμνησιν, ἵνα δὴ εὐθὺς φαίνωμαι αὐτὸς ἐμαυτῷ τἀναντία λέγων. Οὐ μὰ τὸν Δία, ὦ Σώκρατες, οὐ πρὸς τοῦτο βλέψας εἶπον.
Plato Menon. p. 80 e.

113 *Ἀκούοι δὴ πᾶς, ὥσπερ νῦν τὰ περὶ θεῶν τε ἤκουε, καὶ τῶν φίλων προπατόρων. πάντων γὰρ τῶν ἐν τῷ βίῳ κτημάτων μετὰ θεοὺς ψυχὴ θειότατον, οἰκειότατον ὄν· τὰ δ' αὐτοῦ διττὰ παρὰ πᾶσι· τὰ μὲν οὖν κρείττω καὶ ἀμείνω δεσπόζοντα, τὰ δ' ἥττω καὶ*

χείρω δοῦλα. τῶν οὖν δύο τὰ δεσπόζοντα ἀεὶ προτιμητέον τῶν δουλευόντων. οὕτω δὴ τὴν αὑτοῦ ψυχὴν μετὰ θεοὺς ὄντας δεσπότας, καὶ τοὺς τούτοις ἑπομένους, τιμᾶν δεῖν λέγων δευτέραν, ὀρθῶς παρακελεύομαι. τιμᾷ δ', ὡς ἔπος εἰπεῖν, ἡμῶν οὐδεὶς ὀρθῶς· δοκεῖ δέ· θεῖον γὰρ ἀγαθόν που τιμή· τῶν δὲ κακῶν οὐδὲν τίμιον. ὁ δ' ἡγούμενος ἤ τισι λόγοις ἢ δώροις αὐτοῖς αὔξειν, ἤ τισιν ὑπείξεσι, μηδὲν βελτίω δ' ἐκ χείρονος αὐτὴν ἀπεργαζόμενος, τιμᾶν μὲν δοκεῖ, δρᾷ δὲ τοῦτο οὐδαμῶς. αὐτίκα παῖς γενόμενος εὐθὺς ἄνθρωπος πᾶς ἡγεῖται πάντα ἱκανὸς εἶναι γιγνώσκειν καὶ τιμᾶν οἴεται, ἐπαινῶν τὴν αὑτοῦ ψυχήν, καὶ προθυμούμενος ἐπιτρέπει πράττειν, ὅ τι ἂν ἐθέλῃ· τὸ δὲ νῦν λεγόμενόν ἐστιν, ὡς δρῶν ταῦτα βλάπτει καὶ οὐ τιμᾷ· δεῖ δέ, ὥς φαμεν, μετά γε θεούς, δευτέραν· οὐδέ γε ὅταν ἄνθρωπος τῶν αὑτοῦ ἕκαστος ἁμαρτημάτων μὴ ἑαυτὸν αἴτιον ἡγῆται καὶ τῶν πλείστων κακῶν καὶ μεγίστων, ἀλλὰ ἄλλους, ἑαυτὸν δὲ ἀεὶ ἀναίτιον ἐξαιρῇ, τιμῶν τὴν ἑαυτοῦ ψυχήν, ὡς δὴ δοκεῖ, ὧδε πολλοῦ δεῖ δρᾶν τοῦτο· βλάπτει γάρ· οὐδὲ ὁπόταν ἡδοναῖς παρὰ λόγον τὸν τοῦ νομοθέτου καὶ ἔπαινον χαρίζηται, τότε οὐδαμῶς τιμᾷ· ἀτιμάζει δέ, κακῶν καὶ μεταμελείας ἐμπιπλὰς αὐτήν· οὐδέ γε ὁπόταν αὖ τἀναντία τοὺς ἐπαινουμένους πόνους καὶ φόβους καὶ ἀλγηδόνας καὶ λύπας μὴ διαπονῇ καρτερῶν, ἀλλ' ὑπείκῃ, τότε οὐ τιμᾷ ἀτιμάζων· ἄτιμον γὰρ αὐτὴν ἀπεργάζεται, δρῶν τὰ τοιαῦτα σύμπαντα· οὐδ' ὁπόταν ἡγῆται ζῆν τοῦτο ἀγαθὸν εἶναι, τιμᾷ, ἀτιμάζει δ' αὐτὴν καὶ τότε· τὰ γὰρ ἐν ᾅδου πράγματα πάντα κακὰ ἡγούμενος τῆς ψυχῆς εἶναι, ὑπείκει τε καὶ οὐκ ἀντιτείνει, διδάσκων τε καὶ ἐλέγχων, ὡς οὐκ οἶδεν οὐδ' εἰ τἀναντία πέφυκε μέγιστα εἶναι πάντων

ἀγαθῶν ἡμῖν, τὰ περὶ τοὺς θεοὺς τοὺς ἐκεῖ· οὐδὲ μήν, πρὸ ἀρετῆς ὁπόταν αὖ προτιμᾷ τις κάλλος, τοῦτ' ἔστιν οὐχ ἕτερον ἢ ἡ τῆς ψυχῆς ὄντως καὶ πάντως ἀτιμία· ψυχῆς γὰρ σῶμα ἐντιμότερον οὗτος ὁ λόγος φησὶν εἶναι, ψευδόμενος· οὐδὲν γὰρ γηγενὲς Ὀλυμπίων ἐντιμότερον, ἀλλ' ὁ περὶ ψυχῆς ἄλλως δοξάζων, ἀγνοεῖ ὡς θαυμαστοῦ τούτου κτήματος ἀμελεῖ· οὐδέ γε ὁπόταν χρήματά τις ἐρᾷ κτᾶσθαι μὴ καλῶς ἢ μὴ δυσχερῶς φέρῃ κτώμενος, δώροις ἄρα τιμᾷ τότε τὴν αὑτοῦ ψυχήν· παντὸς μὲν οὖν λείπει· τὸ γὰρ αὐτῆς τίμιον ἅμα καὶ καλὸν ἀποδίδοται σμικροῦ χρυσίου. πᾶς γὰρ ὅ τ' ἐπὶ γῆς καὶ ὑπὸ γῆς χρυσὸς ἀρετῆς οὐκ ἀντάξιος, οὐδ', ὡς εἰπεῖν ξυλλήβδην, ὅσα περ νομοθέτης αἰσχρὰ εἶναι καὶ κακὰ διαριθμούμενος τάττῃ καὶ τοὐναντίον ἀγαθὰ καὶ καλά, τῶν μὲν ἀπέχεσθαι μὴ ἐθέλῃ πάσῃ μηχανῇ, τὰ δ' ἐπιτηδεύειν ξύμπασαν κατὰ δύναμιν, οὐκ οἶδεν ἐν τούτοις πᾶσι πᾶς ἄνθρωπος ψυχήν, θειότατον ὄν, ἀτιμότατα καὶ κακοσχημονέστατα διατιθείς. τὴν γὰρ λεγομένην δίκην τῆς κακουργίας τὴν μεγίστην οὐδείς, ὡς ἔπος εἰπεῖν, λογίζεται, ἔστι δὲ ἡ μεγίστη, τὸ ὁμοιοῦσθαι τοῖς οὖσι κακοῖς ἀνδράσιν· ὁμοιούμενον δέ, τοὺς μὲν ἀγαθοὺς φεύγειν ἄνδρας καὶ λόγους, καὶ τῶν μὲν ἀποσχίζεσθαι, τοῖς δὲ προσκολλᾶσθαι διώκοντα κατὰ τὰς ξυνουσίας· προσπεφυκότα δὲ τοῖς τοιούτοις, ἀνάγκη ποιεῖν καὶ πάσχειν, ἃ πεφύκασιν ἀλλήλους οἱ τοιοῦτοι ποιεῖν καὶ λέγειν. τοῦτο δὴ οὖν τὸ πάθος δίκη μὲν οὐκ ἔστι· καλὸν γὰρ τό γε δίκαιον καὶ ἡ δίκη· τιμωρία δέ, ἀδικίας ἀκόλουθος πάθη, ἧς ὅ τε τυχὼν καὶ μὴ τυγχάνων, ἄθλιος· ὁ μὲν οὐκ ἰατρευόμενος, ὁ δ', ἵνα ἕτεροι πολλοὶ σώζωνται, ἀπολλύμενος. τιμὴ δ' ἐστὶν ἡμῖν, ὡς τὸ ὅλον εἰπεῖν, τοῖς μὲν

ἀμείνοσιν ἕπεσθαι· τὰ δὲ χείρω, γενέσθαι βελτίω δυνατά, τοῦτ' αὐτὸ ὡς ἄριστα ἀποτελεῖν. ψυχῆς οὖν ἀνθρώπῳ κτῆμα οὐκ ἔστιν εὐφυέστερον εἰς τὸ φυγεῖν μὲν τὸ κακόν, ἰχνεῦσαι δὲ καὶ ἑλεῖν τὸ πάντων ἄριστον, καὶ ἑλόντα αὖ, ξυνοικεῖν κοινῇ τὸν ἐπίλοιπον βίον· διὸ δεύτερον ἐτάχθη τιμή. τὸ δὲ τρίτον πᾶς ἂν τοῦτό γε νοήσειε τὴν τοῦ σώματος εἶναι κατὰ φύσιν τιμήν. τὰς δ' αὖ τιμὰς δεῖ σκοπεῖν, καὶ τούτων τίνες ἀληθεῖς καὶ ὅσαι κίβδηλοι· τοῦτο δὲ νομοθέτου. μηνύειν δὴ φαίνεται, τάσδε καὶ τοιάσδε τινὰς αὐτὰς εἶναι, τίμιον εἶναι σῶμα οὐ τὸ καλὸν οὐδὲ τὸ ἰσχυρὸν οὐδὲ τὸ τάχος ἔχον οὐδὲ μέγα οὐδὲ τὸ ὑγιεινόν, καίτοι γε πολλοῖς ἂν τοῦτο δοκοῖ, καὶ μὴν οὐδὲ τὰ τούτων γε ἐναντία, τὰ δ' ἐν τῷ μέσῳ ἁπάσης ταύτης τῆς ἕξεως ἐφαπτόμενα σωφρονέστατα ἅμα τε καὶ ἀσφαλέστατα εἶναι μακρῷ· τὰ μὲν γὰρ χαύνους τὰς ψυχὰς καὶ θρασείας ποιεῖ, τὰ δὲ ταπεινάς τε καὶ ἀνελευθέρους. ὡς δ' αὔτως ἡ τῶν χρημάτων [καὶ κτημάτων δουλείας, ὡς τὸ πολὺ] κτῆσις καὶ τιμήσεως κατὰ τὸν αὐτὸν ῥυθμὸν ἔχει· τὰ μὲν ὑπέρογκα γὰρ ἑκάστων τούτων ἔχθρας καὶ στάσεις ἀπεργάζεται ἐν ταῖς πόλεσι καὶ ἰδίᾳ, τὰ δ' ἐλλείποντα δοῦλον. μὴ δή τις φιλοχρηματείτω παίδων γε ἕνεκα, ἵνα ὅτι πλουσιωτάτους καταλείπῃ· οὔτε γὰρ ἐκείνοις, οὔτε αὖ τῇ πόλει ἄμεινον· ἡ γὰρ τῶν νέων ἀκολάκευτος οὐσία, τῶν δὲ ἀναγκαίων μὴ ἐνδεής, αὕτη πασῶν μουσικωτάτη τε καὶ ἀρίστη· ξυμφωνοῦσα γὰρ ἡμῖν καὶ ξυναρμόττουσα εἰς πάντα ἄλυπον τὸν βίον ἀπεργάζεται. παισὶ δὲ αἰδῶ χρὴ πολλήν, οὐ χρυσὸν καταλείπειν· οἰόμεθα δὲ ἐπιπλήττοντες τοῖς νέοις ἀναισχυντοῦσι τοῦτο καταλείψειν· τὸ δ' ἐστὶν οὐκ ἐκ τοῦ νῦν παρακελεύσματος τοῖς νέοις γιγνόμενον, ὃ παρακελεύονται λέγοντες ὡς

δεῖ πάντα αἰσχύνεσθαι τὸν νέον· ὁ δὲ ἔμφρων νομοθέτης τοῖς πρεσβυτέροις ἂν μᾶλλον παρακελεύοιτο αἰσχύνεσθαι τοὺς νέους, καὶ πάντων μάλιστα εὐλαβεῖσθαι, μήποτέ τις αὐτὸν ἴδῃ τῶν νέων ἢ καὶ ἐπακούσῃ δρῶντα ἢ λέγοντά τι τῶν αἰσχρῶν· ὡς ὅπου ἀναισχυντοῦσι γέροντες, ἀνάγκη καὶ νέους ἐνταῦθα εἶναι ἀναιδεστάτους· παιδεία γὰρ νέων διαφέρουσά ἐστιν ἅμα καὶ αὐτῶν, οὐ τὸ νουθετεῖν, ἀλλ', ἅπερ ἂν ἄλλον νουθετῶν εἴποι τις, φαίνεσθαι ταῦτα αὐτὸν δρῶντα διὰ βίου. ξυγγένειάν τε καὶ ὁμογνίων θεῶν κοινωνίαν πᾶσαν ταὐτοῦ φύσιν αἵματος ἔχουσαν τιμῶν τις καὶ σεβόμενος, εὔνους ἂν γενεθλίους θεοὺς εἰς παίδων αὑτοῦ σπορὰν ἴσχοι κατὰ λόγον. καὶ μὴν τό γε φίλων καὶ ἑταίρων πρὸς τὰς ἐν βίῳ ὁμιλίας εὐμενὲς ἄν τις κτῷτο, μείζους μὲν καὶ σεμνοτέρας τὰς ἐκείνων ὑπηρεσίας εἰς αὑτὸν ἡγούμενος, ἢ ἐκεῖνοι, ἐλάττους δ' αὖ τὰς αὑτοῦ διανοούμενος εἰς τοὺς φίλους χάριτας ὑπὲρ αὐτῶν τῶν φίλων καὶ ἑταίρων· εἴς γε μὴν πόλιν καὶ πολίτας μακρῷ ἄριστος, ὅστις πρὸ τοῦ νικῆσαι Ὀλυμπιᾶσι καὶ ἁπάντων ἀγώνων πολεμικῶν τε καὶ εἰρηνικῶν, νικᾶν δέξαιτ' ἂν δόξῃ ὑπηρεσίας τῶν οἴκοι νόμων, ὡς ὑπηρετηκὼς πάντων μάλιστ' ἀνθρώπων αὐτοῖς ἐν τῷ βίῳ. πρὸς δ' αὖ τοὺς ξένους διανοητέον, ὡς ἁγιώτατα ξυμβόλαια ὄντα· σχεδὸν γὰρ πάντα ἐστὶ τὰ τῶν ξένων καὶ εἰς τοὺς ξένους ἁμαρτήματα παρὰ τῶν πολιτῶν εἰς θεὸν ἀνηρτημένα, τιμωρὸν μᾶλλον· ἔρημος γὰρ ὢν ὁ ξένος ἑταίρων τε καὶ ξυγγενῶν ἐλεεινότερος ἀνθρώποις καὶ θεοῖς· ὁ δυνάμενος οὖν τιμωρεῖν μᾶλλον βοηθεῖ προθυμότερον, δύναται δὲ διαφερόντως ὁ ξένιος ἑκάστων δαίμων καὶ θεός, τῷ ξενίῳ συνεπόμενοι Διί. πολλῆς οὖν εὐλαβείας, ᾧ καὶ σμικρὸν προμηθείας ἔνι, μηδὲν

ἁμάρτημα περὶ ξένους ἁμαρτόντα ἐν τῷ βίῳ, πρὸς τὸ τέλος αὐτοῦ πορευθῆναι. ξενικῶν δ' αὖ καὶ ἐπιχωρίων ἁμαρτημάτων τὸ περὶ τοὺς ἱκέτας] μέγιστον γίγνεται ἁμάρτημα ἑκάστοις· μεθ' οὗ γὰρ ἱκετεύσας μάρτυρος ὁ ἱκέτης θεοῦ ἔτυχεν ὁμολογιῶν, φύλαξ διαφέρων οὗτος τοῦ παθόντος γίγνεται· ὥστ' οὐκ ἄν ποτε ἀτιμώρητος πάθοι, ὁ τυχὼν ὧν ἔπαθε. τὰ μὲν οὖν περὶ γονέας τε καὶ ἑαυτὸν καὶ τὰ ἑαυτοῦ, περὶ πόλιν τε καὶ φίλους καὶ ξυγγένειαν, ξενικά τε καὶ ἐπιχώρια διεληλύθαμεν σχεδὸν ὁμιλήματα· τὸ δὲ ποῖός τις ὢν αὐτὸς ἂν κάλλιστα διαγάγοι τὸν βίον, ἑπόμενον τούτῳ διεξελθεῖν· ὅσ' οὖν μὴ νόμος ἀλλ' ἔπαινος παιδεύων καὶ ψόγος ἑκάστους εὐηνίους μᾶλλον τοῖς τεθήσεσθαι μέλλουσι νόμοις ἀπεργάζεται, ταῦτ' ἐστὶ μετὰ τοῦτο ἡμῖν ῥητέον. ἀλήθεια δὴ πάντων μὲν ἀγαθῶν θεοῖς ἡγεῖται, πάντων δὲ ἀνθρώποις, ἧς ὁ γενήσεσθαι μέλλων μακάριός τε καὶ εὐδαίμων, ἐξ ἀρχῆς εὐθὺς μέτοχος εἴη, ἵνα ὡς ὅτι πλεῖστον χρόνον ἀληθὴς ὢν διαβιοῖ· πιστὸς γάρ· ὁ δὲ ἄπιστος, ᾧ φίλον ψεῦδος ἑκούσιον· ὅτῳ δὲ ἀκούσιον, ἄνους· ὧν οὐδέτερον ζηλωτόν· ἄφιλος γὰρ δὴ πᾶς ὅ γε ἄπιστος καὶ ἀμαθής, χρόνου δὲ προϊόντος γνωσθείς, εἰς τὸ χαλεπὸν γῆρας ἐρημίαν αὑτῷ πᾶσαν κατεσκευάσατο ἐπὶ τέλει τοῦ βίου, ὥστε ζώντων καὶ μὴ ἑταίρων καὶ παίδων σχεδὸν ὁμοίως ὀρφανὸν αὐτῷ γενέσθαι τὸν βίον. τίμιος μὲν δὴ καὶ ὁ μηδὲν ἀδικῶν· ὁ δὲ μηδ' ἐπιτρέπων τοῖς θέλουσιν ἀδικεῖν πλέον ἢ διπλασίας τιμῆς ἄξιος ἐκείνου· ὁ μὲν γὰρ ἑνός, ὁ δὲ πολλῶν ἀντάξιος ἑτέρων, μηνύων τὴν τῶν ἄλλων τοῖς ἄρχουσιν ἀδικίαν· ὁ δὲ καὶ ξυγκολάζων εἰς δύναμιν τοῖς ἄρχουσιν, ὁ μέγας ἀνὴρ ἐν πόλει καὶ τέλειος οὗτος ἀναγορευέσθω νικηφόρος ἀρετῇ. τὸν αὐτὸν δὴ τοῦτον ἐπαι-

νον καὶ περὶ σωφροσύνης χρὴ λέγειν καὶ περὶ φρονήσεως, καὶ ὅσα ἄλλα ἀγαθά τις κέκτηται, δυνατὰ μὴ μόνον αὐτὸν ἔχειν, ἀλλὰ καὶ ἄλλοις μεταδιδόναι. τὸν μὲν μεταδιδόντα ὡς ἀκρότατον χρὴ τιμᾶν· τὸν δὲ αὖ μὴ δυνάμενον, ἐθέλοντα δέ, ἐᾶν δεύτερον· τὸν δὲ φθονοῦντα καὶ θέλοντα μηδενὶ κοινωνὸν διὰ φιλίας γιγνόμενον ἀγαθῶν τινῶν, αὐτὸν μὲν ψέγειν, τὸ δὲ κτῆμα μηδὲν μᾶλλον διὰ τὸν κεκτημένον ἀτιμάζειν, ἀλλὰ κτᾶσθαι κατὰ δύναμιν. Plato Legg. V p. 726.

114 *Πλάτωνος πολιτείας η´* (p. 543 a).

Εἶεν. ταῦτα μὲν δὴ ὡμολόγηται, ὦ Γλαύκων, τῇ μελλούσῃ ἄκρως οἰκεῖν πόλει κοινὰς μὲν γυναῖκας, κοινοὺς δὲ παῖδας εἶναι καὶ πᾶσαν παιδείαν· ὡσαύτως δὲ τὰ ἐπιτηδεύματα κοινὰ ἐν πολέμῳ τε καὶ εἰρήνῃ· βασιλέας δὲ αὐτῶν εἶναι τοὺς ἐν φιλοσοφίᾳ τε καὶ πρὸς τὸν πόλεμον γεγονότας ἀρίστους. Ὡμολόγηται, ἔφη. Καὶ μὴν καὶ τάδε ξυνεχωρήσαμεν, ὡς ὅταν δὴ καταστῶσιν οἱ ἄρχοντες ἄγοντες τοὺς στρατιώτας, κατοικιοῦσιν εἰς οἰκήσεις οἵας προείπομεν, ἴδιον μὲν οὐδὲν οὐδενὶ ἐχούσας, κοινὰς δὲ πᾶσι.

115 *Ἐν ταυτῷ* (p. 543 c).

Σχεδὸν γὰρ καθάπερ νῦν διελήλυθας, περὶ τῆς πόλεως τοὺς λόγους ἐποιοῦ, λέγων, ὡς ἀγαθὴν μὲν τὴν τοιαύτην, οἵαν τότε διῆλθες, τιθείης πόλιν καὶ ἄνδρα τὸν ἐκείνῃ ὅμοιον, καὶ ταῦτα, ὡς ἔοικε, καλλίω ἔτι ἔχων εἰπεῖν πόλιν τε καὶ ἄνδρα· ἀλλ' οὖν δὴ τὰς ἄλλας ἡμαρτημένας ἔλεγες, εἰ αὕτη ὀρθή. τῶν δὲ λοιπῶν πολιτειῶν ἔφησθα, ὡς μνημονεύω, τέτταρα εἴδη εἶναι. — Καὶ μήν, ἦ δ' ὅς, ἐπιθυμῶ γε καὶ αὐτὸς ἀκοῦσαι τίνας λέγεις τὰς τέτταρας πολιτείας. Οὐ χαλεπῶς, ἦν δ' ἐγώ, ἀκούσῃ. εἰσὶ γὰρ ἃς λέγω, αἵπερ

καὶ ὀνόματ᾽ ἔχουσι, ἥ τε ὑπὸ τῶν πολλῶν ἐπαινουμένη ἡ Κρητική τε καὶ Λακωνικὴ αὕτη· καὶ δευτέρα καὶ δευτέρως ἐπαινουμένη, καλουμένη δὲ ὀλιγαρχία, συχνῶν γέμουσα κακῶν πολιτεία· ἥ τε ταύτῃ διάφορος καὶ ἐφεξῆς γιγνομένη, δημοκρατία· καὶ ἡ γενναία δὴ τυραννίς, καὶ πασῶν τούτων διαφέρουσα καὶ ἔσχατον πόλεως νόσημα· ἤ τινα ἄλλην ἔχεις ἰδίαν πολιτείαν, ἥ τις καὶ ἐν εἴδει διαφανεῖ τινι κεῖται; δυναστεῖαι γὰρ καὶ ὠνηταὶ βασιλεῖαι καὶ τοιαῦταί τινες πολιτεῖαι μεταξύ τι τούτων πού εἰσι. εὕροι δ᾽ ἄν τις αὐτὰς οὐκ ἐλάττους περὶ τοὺς βαρβάρους ἢ τοὺς Ἕλληνας. Πολλαὶ γοῦν καὶ ἄτοποι, ἔφη, λέγονται. Οἶσθα οὖν, ἦν δ᾽ ἐγώ, ὅτι καὶ ἀνθρώπων εἴδη τοσαῦτα ἀνάγκη τρόπον εἶναι ὅσαπερ καὶ πολιτειῶν; ἢ οἴει ἐκ δρυός ποθεν ἢ ἐκ πέτρας τὰς πολιτείας γίγνεσθαι, ἀλλ᾽ οὐχὶ ἐκ τῶν ἠθῶν τῶν ἐν ταῖς πόλεσιν, ἃ ἂν ὥσπερ ῥέψαντα τὰ ἄλλα ἐφελκύσηται; Οὐδαμῶς ἔγωγε, ἔφη, ἄλλοθεν ἢ ἐντεῦθεν. Οὐκ οὖν αἱ τῶν πόλεων πέντε καὶ αἱ τῶν ἰδιωτῶν κατασκευαὶ τῆς ψυχῆς πέντε ἂν εἶεν; Τί μήν;

116 *Ἐν ταυτῷ* (p. 564 a).

Ἡ γὰρ ἄγαν ἐλευθερία ἔοικεν οὐκ εἰς ἄλλο τι ἢ εἰς ἄγαν δουλείαν μεταβάλλειν καὶ ἰδιώτῃ καὶ πόλει. Εἰκὸς γάρ. Εἰκότως τοίνυν, εἶπον, οὐκ ἐξ ἄλλης πολιτείας τυραννὶς καθίσταται ἢ ἐκ δημοκρατίας.

117 *Τοῦ αὐτοῦ πολιτείας θ′* (p. 576 d).

Μὴ ἐκπληττώμεθα εἰς τὸν τύραννον ἕνα ὄντα βλέποντες, μηδ᾽ εἴ τινες ὀλίγοι περὶ ἐκεῖνον· ἀλλ᾽ ὡς χρή, ὅλην τὴν πόλιν εἰσελθόντας θεάσασθαι, καταδύντες εἰς ἅπασαν καὶ ἰδόντες, οὕτω δόξαν ἀποφαινώμεθα. Ἀλλ᾽ ὀρθῶς, ἔφη, προκαλεῖ· καὶ δῆλον

παντὶ ὅτι τυραννουμένης μὲν οὐκ ἔστιν ἀθλιωτέρα, βασιλευομένης δὲ οὐκ εὐδαιμονεστέρα.

118 Ἐν ταυτῷ (p. 580 a).

Ἴθι δή μοι, ἔφην ἐγώ, νῦν ἤδη ὥσπερ ὁ διὰ πάντων κριτὴς ἀποφαίνεται, καὶ σὺ οὕτω· τίς πρῶτος κατὰ τὴν σὴν δόξαν εὐδαιμονίᾳ, καὶ τίς δεύτερος, καὶ τοὺς ἄλλους ἑξῆς πέντε ὄντας κρῖναι, βασιλικόν, τιμοκρατικόν, ὀλιγαρχικόν, δημοκρατικόν, τυραννικόν. Ἀλλὰ ῥᾳδία, ἔφη, κρίσις· καθάπερ γὰρ εἰσῆλθον ἔγωγε ὥσπερ χοροὺς κρίνω ἀρετῇ καὶ κακίᾳ, καὶ εὐδαιμονίᾳ, καὶ τῷ ἐναντίῳ. Μισθωσώμεθα οὖν κήρυκα, ἦν δ' ἐγώ, ἢ αὐτὸς ἂν εἴπω, ὅτι ὁ Ἀρίστωνος υἱός, τὸν ἄριστόν τε καὶ δικαιότατον εὐδαιμονέστατον ἔκρινε· τοῦτον δ' εἶναι τὸν βασιλικώτατον καὶ βασιλεύοντα αὑτοῦ· τὸν δὲ κάκιστόν τε καὶ ἀδικώτατον ἀθλιώτατον· τοῦτον δ' αὖ τυγχάνειν ὄντα, ὃς ἂν τυραννικώτατος ὤν, ἑαυτοῦ τε ὅτι μάλιστα τυραννῇ καὶ τῆς πόλεως.

119 Πλάτωνος νόμων γ' (p. 679 b).

Ἧι δ' ἄν ποτε ξυνοικίᾳ μήτε πλοῦτος ξυνοικῇ μήτε πενία, σχεδὸν ἐν ταύτῃ γενναιότατα ἤθη γίγνοιτ' ἄν· οὔτε γὰρ ὕβρις οὔτ' ἀδικία, ζῆλοί τε αὖ καὶ φθόνοι οὐκ ἐγγίγνονται.

120 Ἐν ταυτῷ (p. 688 a).

Τὸ δὲ ἐμὸν ἔλεγον, ὅτι τοῦτο μὲν πρὸς μίαν ἀρετήν, οὐσῶν τεττάρων, κελεύοι τίθεσθαι τοὺς νόμους· δέοι δὲ δὴ πρὸς πᾶσαν μὲν βλέπειν, μάλιστα δὲ πρὸς τὴν πρώτην καὶ τῆς ξυμπάσης ἡγεμόνα ἀρετῆς· φρόνησις δ' εἴη τοῦτο καὶ νοῦς καὶ δόξα μετ' ἔρωτός τε καὶ ἐπιθυμίας τούτοις ἑπομένης.

121 *Ἐν ταὐτῷ* (688 e).

Φαμὲν δὲ δὴ νῦν, καθ' ὁδὸν ἰόντες τὴν λοιπὴν τοῦ λόγου, τὴν μεγίστην ἀμαθίαν τότε ἐκείνην τὴν δύναμιν ἀπολέσαι, καὶ νῦν ταυτὸ πεφυκέναι ποιεῖν· ὥστε τόν γε νομοθέτην, εἰ τοῦθ' οὕτως ἔχει, πειρατέον ταῖς πόλεσι φρόνησιν μὲν ὅσην δυνατὸν ἐμποιεῖν, τὴν δὲ ἄνοιαν ὅτι μάλιστα ἐξαιρεῖν. Δῆλον. Τίς οὖν ἡ μεγίστη δικαίως ἂν λέγοιτο ἀμαθία; σκοπεῖτε εἰ συνδόξει καὶ σφῷν λεγόμενον. ἐγὼ μὲν δὴ τὴν τοιάνδε τίθεμαι. Ποίαν; Τὴν ὅταν τῳ τι δόξῃ καλὸν ἢ ἀγαθὸν εἶναι, μὴ φιλεῖ τοῦτο, ἀλλὰ μισεῖ, τὸ δὲ πονηρὸν καὶ ἄδικον δοκοῦν εἶναι φιλεῖ τε καὶ ἀσπάζεται. ταύτην διαφωνίαν λύπης τε καὶ ἡδονῆς πρὸς τὴν κατὰ λόγον δόξαν ἀμαθίαν φημὶ εἶναι τὴν ἐσχάτην, μεγίστην δέ, ὅτι πλήθους ἐστὶ τῆς ψυχῆς· τὸ γὰρ λυπούμενον καὶ ἡδόμενον αὐτῆς ὅπερ δῆμός τε καὶ πλῆθος πόλεώς ἐστιν. .ὅταν οὖν ἐπιστήμαις ἢ δόξαις ἢ λόγῳ ἐναντιῶται τοῖς φύσει ἀρχικοῖς ἡ ψυχή, τοῦτο ἄνοιαν προσαγορεύω· πόλεώς τε, ὅταν ἄρχουσι καὶ νόμοις μὴ πείθηται τὸ πλῆθος, ταυτὸν καὶ δὴ καὶ ἑνὸς ἀνδρός, ὁπόταν καλοὶ ἐν ψυχῇ λόγοι ἐνόντες μηδὲν ποιῶσι πλέον, ἀλλὰ δὴ τούτοις πᾶν τοὐναντίον· ταύτας πάσας ἀμαθίας τὰς πλημμελεστάτας ἔγωγ' ἂν θείην πόλεώς τε καὶ ἑνὸς ἑκάστου τῶν πολιτῶν, ἀλλ' οὐ τὰς τῶν δημιουργῶν, εἰ ἄρα που καταμανθάνετε, ὦ ξένοι, ὃ λέγω. Μανθάνομέν γε, ὦ φίλε, καὶ ἐγχωροῦμεν ἃ λέγεις. Τοῦτο μὲν τοίνυν οὕτω κεχωρίσθω δεδογμένον καὶ λεγόμενον, ὡς τοῖς εἰς ταῦτα ἀμαθαίνουσι τῶν πολιτῶν οὐδὲν ἐπιτρεπτέον ἀρχῆς ἐχόμενον, καὶ ὡς ἀμαθέσιν ὀνειδιστέον, ἂν καὶ πάνυ λογιστικοί τε ὦσι καὶ πάντα τὰ κομψὰ καὶ ὅσα πρὸς τάχος τῆς ψυχῆς πεφυκότα διαπεπονημένοι ἅπαντα· τοὺς

δὲ τοὐναντίον ἔχοντας τούτων ὡς σοφούς τε προσρητέον, ἂν καὶ τὸ λεγόμενον μήτε γράμματα μήτε νεῖν ἐπιστῶνται, καὶ τὰς ἀρχὰς δοτέον ὡς ἔμφροσι· πῶς γὰρ ἄν, ὦ φίλοι, ἄνευ ξυμφωνίας γένοιτ᾽ ἂν φρονήσεως καὶ τὸ σμικρότατον εἶδος; οὐκ ἔστιν· ἀλλ᾽ ἡ καλλίστη καὶ μεγίστη τῶν ξυμφωνιῶν μεγίστη δικαιότατ᾽ ἂν λέγοιτο σοφία· ἧς ὁ μὲν κατὰ λόγον ζῶν μέτοχος· ὁ δὲ ἀπολειπόμενος οἰκοφθόρος καὶ περὶ πόλιν οὐδαμῇ σωτήρ, ἀλλὰ πᾶν τοὐναντίον, ἀμαθαίνων εἰς ταυτὰ ἑκάστοτε φαίνεται.

122 *Ἐν ταυτῷ* (p. 691 c).

Ἐάν τις μείζονα διδοῖ τοῖς ἐλάττοσι δύναμιν, παρεὶς τὸ μέτριον, πλοίοις τε ἱστία καὶ σώμασι τροφὴν καὶ ψυχαῖς ἀρχάς, ἀνατρέπεταί που πάντα καὶ ἐξυβρίζοντα τὰ μὲν εἰς νόσους θεῖ, τὰ δ᾽ εἰς ἔκγονον ὕβρεως ἀδικίαν.

123 *Ἐν ταυτῷ* (p. 697 a).

Λέγομεν τοίνυν ὅτι πόλιν, ὡς ἔοικε, τὴν μέλλουσαν σώζεσθαί τε καὶ εὐδαιμονήσειν εἰς δύναμιν ἀνθρωπίνην δεῖ καὶ ἀναγκαῖον τιμάς τε καὶ ἀτιμίας διανέμειν ὀρθῶς. ἔστι δὲ ὀρθῶς ἄρα τιμιώτατα μὲν καὶ πρῶτα τὰ περὶ τὴν ψυχὴν ἀγαθὰ κεῖσθαι, σωφροσύνης ὑπαρχούσης αὐτῇ· δεύτερα δὲ τὰ περὶ τὸ σῶμα καλὰ καὶ ἀγαθά· καὶ τρίτα τὰ περὶ τὴν οὐσίαν καὶ χρήματα λεγόμενα. τούτων δὲ ἂν ἐκτός τις βαίνῃ νομοθέτης ἢ πόλις, εἰς τιμὰς ἢ χρήματα προάγουσα ἤ τι τῶν ὕστερον εἰς τὸ πρόσθεν τιμαῖς τάττουσα, οὐθ᾽ ὅσιον οὔτε πολιτικὸν ἂν δρῴη πρᾶγμα.

124 *Τοῦ αὐτοῦ νόμων τετάρτῳ* (p. 705 a).

Πρόσοικος γὰρ θαλάττῃ χώρα τὸ μὲν παρ᾽ ἑκάστην ἡμέραν ἡδύ, μάλα γε μὴν ὄντως ἁλμυρὸν καὶ

πικρὸν γειτόνημα· ἐμπορίας γὰρ καὶ χρηματισμοῦ διὰ καπηλείας ἐμπιπλᾶσα αὐτήν, ἤθη παλίμβολα καὶ ἄπιστα ταῖς ψυχαῖς ἐντίκτουσα, αὐτήν τε πρὸς αὐτὴν τὴν πόλιν ἄπιστον καὶ ἄφιλον ποιεῖ καὶ πρὸς τοὺς ἄλλους ἀνθρώπους ὡσαύτως. παραμύθιον δὲ δὴ πρὸς ταῦτα καὶ τὸ πάμφορος εἶναι κέκτηται. τραχεῖα δὲ οὖσα δῆλον ὡς οὐκ ἂν πολύπορός τις εἴη καὶ πάμφορος ἅμα· τοῦτο γὰρ ἔχουσα, πολλὴν ἐξαγωγὴν ἂν παρεχομένη, νομίσματος ἀργύρου καὶ χρυσοῦ πάλιν ἀντεμπίπλαιτ' ἄν, οὗ μεῖζον κακόν, ὡς ἔπος εἰπεῖν, πόλει ἀνθ' ἑνὸς ἓν οὐδὲν ἂν γίγνοιτο εἰς γενναίων καὶ δικαίων ἠθῶν κτῆσιν, ὡς ἔφαμεν, εἰ μεμνήμεθα, ἐν τοῖς πρόσθεν λόγοις. Ἀλλὰ μεμνήμεθα, καὶ συγχωροῦμεν τότε λέγειν ἡμᾶς ὀρθῶς καὶ τὰ νῦν.

125 Ἐν ταυτῷ (p. 708 e).

Ὡς οὐδείς ποτε ἀνθρώπων οὐδὲν νομοθετεῖ, τύχαι δὲ καὶ ξυμφοραὶ παντοῖαι πίπτουσαι παντοίως νομοθετοῦσι τὰ πάντα ἡμῖν· ἢ γὰρ πόλεμός τις βιασάμενος ἀνέτρεψε πολιτείας καὶ μετέβαλε νόμους, ἢ πενίας χαλεπῆς ἀπορία· πολλὰ δὲ καὶ νόσοι ἀναγκάζουσι καινοτομεῖν, λοιμῶν τε ἐμπιπτόντων, καὶ χρόνον ἐπὶ πολὺν ἐνιαυτῶν πολλῶν πολλάκις ἀκαιρία· ταῦτα δὴ πάντα προσιδών τις ἄρξειεν ἂν εἰπεῖν, ὅπερ ἐγὼ νῦν δή, θνητὸν μηδένα νομοθετεῖν μηδέν, τύχας δ' εἶναι σχεδὸν ἅπαντα τὰ ἀνθρώπινα πράγματα. τὸ δ' ἔστι περί τε ναυτιλίαν καὶ κυβερνητικὴν καὶ ἰατρικὴν καὶ στρατηγικὴν πάντα ταῦτ' εἰπόντα δοκεῖν εὖ λέγειν· ἀλλὰ γὰρ ὅμως αὖ καὶ τόδ' ἐστὶν εὖ λέγοντα λέγειν ἐν τοῖς αὐτοῖς τούτοις. Τὸ ποῖον; Ὡς θεὸς μὲν πάντα καὶ μετὰ θεοῦ τύχη καὶ καιρὸς τὰ ἀνθρώπινα διακυβερνῶσι ξύμπαντα ἡμερώτερον μὴν τρίτον

συγχωρῆσαι τούτοις δεῖν ἕπεσθαι τέχνην· καιρῷ γὰρ χειμῶνος συλλαβέσθαι κυβερνητικήν, μέγα πλεονέκτημα ἔγωγ' ἂν θείην· ἢ πῶς; οὐκ οὖν καὶ τοῖς ἄλλοις ὡσαύτως κατὰ τὸν αὐτὸν ἂν ἔχοι λόγον, καὶ δὴ καὶ νομοθεσίᾳ ταὐτὸν τοῦτο δοτέον, τῶν ἄλλων ξυμπιπτόντων ὅσα δεῖ χώρᾳ συντυχεῖν, εἰ μέλλει ποτὲ εὐδαιμόνως οἰκήσειν, τὸν νομοθέτην ἀληθείας ἐχόμενον τῇ τοιαύτῃ παραπεσεῖν ἑκάστοτε πόλει δεῖν. Ἀληθέστατα λέγεις.

126 Τοῦ αὐτοῦ νόμων ε' (p. 743 c).

Ἡμῖν δὲ ἡ τῶν νόμων ὑπόθεσις ἐνταῦθα ἔβλεπεν, ὅπως ὡς εὐδαιμονέστατοι ἔσονται καὶ ὅ τι μάλιστα ἀλλήλοις φίλοι· εἶεν δὲ οὐκ ἄν ποτε πολῖται ἀλλήλοις φίλοι, ὅπου πολλαὶ μὲν δίκαι ἐν ἀλλήλοις εἶεν, πολλαὶ δὲ ἀδικίαι, ἀλλ' ὅπου ὡς ὅτι σμικρόταται καὶ ὀλίγισται. λέγομεν δή, μήτε εἶναι χρυσὸν δεῖν μήτε ἄργυρον ἐν τῇ πόλει, μήτε αὖ χρηματισμὸν πολὺν διὰ βαναυσίας καὶ τόκων μηδὲ βοσκημάτων αἰσχρῶν, ἀλλ' ὅσα γεωργία δίδωσι καὶ φέρει, καὶ τούτων ὁπόσα μὴ χρηματιζόμενον ἀναγκάσειεν ἀμελεῖν ὧν ἕνεκα πέφυκε τὰ χρήματα· ταῦτα δ' ἐστὶ ψυχὴ καὶ σῶμα, ἃ χωρὶς γυμναστικῆς καὶ τῆς ἄλλης παιδείας οὐκ ἄν ποτε γένοιτο ἄξια λόγου. διὸ δὴ χρημάτων ἐπιμέλειαν οὐχ ἅπαξ εἰρήκαμεν ὡς χρὴ τελευταῖον τιμᾶν· ὄντων γὰρ τριῶν τῶν ἁπάντων περὶ ἃ πᾶς ἄνθρωπος σπουδάζει, τελευταῖον καὶ τρίτον ἐστὶν ἡ τῶν χρημάτων ὀρθῶς σπουδαζομένη σπουδή, σώματος δὲ πέρι μέση, πρώτη δὲ ἡ τῆς ψυχῆς. καὶ δὴ καὶ νῦν, ἣν διεξερχόμεθα πολιτείαν, εἰ μὲν τὰς τιμὰς οὕτω τάττεται, ὀρθῶς νομοθετεῖται· εἰ δέ τις τῶν προσταττομένων αὐτόθι νόμων σωφροσύνης ἔμπροσθεν ὑγίειαν ἐν τῇ

πόλει φανεῖται ποιῶν τιμίαν ἢ πλοῦτον ὑγιείας καὶ τοῦ σωφρονεῖν, οὐκ ὀρθῶς ἂν φανεῖται τιθέμενος.

127 Ἐν ταυτῷ (p. 744 d).

Δεῖ γὰρ ἐν πόλει που, φαμὲν τῇ τοῦ μεγίστου νοσήματος οὐ μεθεξούσῃ, ὃ διάστασιν ἢ στάσιν ὀρθότερον ἂν εἴη κεκλῆσθαι, μήτε πενίαν τὴν χαλεπὴν ἐνεῖναι παρά τισι τῶν πολιτῶν μήτ' αὖ πλοῦτον, ὡς ἀμφότερα τικτόντων ταῦτα ἀμφότερα.

128 Πλάτωνος νόμων θ' (p. 874 d).

Ὡς ἄρα νόμους ἀνθρώποις ἀναγκαῖον τίθεσθαι καὶ ζῆν κατὰ νόμους, ἢ μηδὲν διαφέρειν τῶν πάντῃ ἀγριωτάτων θηρίων. ἡ δὲ αἰτία τούτων ἥδε, ὅτι φύσις ἀνθρώπων οὐδενὸς ἱκανὴ φύεται, ὥστε γνῶναί τε τὰ συμφέροντα ἀνθρώποις εἰς πολιτείαν, καὶ γνοῦσα τὸ βέλτιστον ἀεὶ δύνασθαί τε καὶ ἐθέλειν πράττειν· γνῶναι μὲν γὰρ πρῶτον χαλεπόν, ὅτι πολιτικῇ καὶ ἀληθεῖ τέχνῃ οὐ τὸ ἴδιον, ἀλλὰ τὸ κοινὸν ἀνάγκη μέλειν· τὸ μὲν γὰρ κοινὸν ξυνδεῖ, τὸ δὲ ἴδιον διασπᾷ τὰς πόλεις· καὶ ὅτι ξυμφέρει τῷ κοινῷ τε καὶ ἰδίῳ τοῖν ἀμφοῖν, ἢν τὸ κοινὸν τιθῆται καλῶς μᾶλλον ἢ τὸ ἴδιον.

129 Ἀρχύτα.

Πονηρῶν ἀθέων νόμοι θεῶν ἄγραφοι ἀντινομιζόμενοι πονηρὰν μοῖραν καὶ ζαμίαν τῷ μὴ πειθομένῳ διδόντες, πατέρες καὶ ἁγεμόνες τῶν γεγραμμένων νόμων καὶ δογμάτων ἀνθρώποις τεθέντων.

130 Διωτογένους Πυθαγορείου ἐκ τοῦ περὶ ὁσιότητος.

Καλῶς δὲ καὶ τὸ τὸν θεὸν ἐν ἀρχᾷ τῶ δείπνω

*καὶ τῶ ἀρίστω ἐπικαλέεσθαι, οὐχ ὡς δεόμενον τινὸς τῶν τοιούτων, ἀλλ' εἰς τὸ μνασθέντας κατακοσμηθῆμεν τὰν ψυχάν· ἐπειδὴ γὰρ ἀπ' αὐτῶν ἐσμὲν καὶ κεκοινωνήκαμεν τῶ θείω, ποθᾶκον τϊ κρίναντι ἄμμε. διὸ καὶ βούλονται ἰκέλως αὐτοῖς ἅπαντα ἡμᾶς ἐπιτελὲν δικαιοπραγέοντας. ἔπειτα γὰρ τέτορες αἰτίαι τὰ σύμπαντα περαίνοντι καὶ ἐπὶ τέλος ἐπιτίθεντι, φύσις καὶ νόμος καὶ τέχνα καὶ τύχα· καὶ τῶν μὲν ἐξ ἄθεος ποτὶ συμφωνίαν πολιτικὰν φερόντων νόμος ἐπιστάτας καὶ δαμιουργός· τῶν δὲ διὰ φρονάσιος ἀνθρωπίνας τελεθόντων, τέχνα λέγοιτό κα δικαίως μάτηρ τε καὶ ἁγεμὼν ἦμεν· τῶν δὲ εἰκᾷ τε καὶ ὡς ἔτυχεν ἀπὸ τῶ αὐτομάτω ὁμοίως ποτιπιπτόντων τοῖς χρηστοῖς τε καὶ πονηροῖς, τύχαν τῶν τοιούτων αἰτίαν φασοῦμες· ταύταν δ' οὔτ' ἐν μέτρῳ οὔτ' ἐν ὅρῳ τεταγμέναν, καὶ πεφρονημένως ἕκαστα ποιεῦν * γενναθεῖσα δὲ ἃ ἐξ αὐτῶν τῶ γένεος ἄμφω κινεῖται.*

131 *Τῶν ἑπτὰ σοφῶν περὶ πολιτείας.*

Εἰ δὲ βούλει καὶ νῦν, ἔφη ὁ Σόλων, περὶ πολιτείας ἀκοῦσαι, δοκεῖ μοι πόλις ἄριστα πράττειν καὶ μάλιστα σώζειν δημοκρατίαν, ἐν ᾗ τὸν ἀδικήσαντα τοῦ ἀδικηθέντος οὐδὲν ἧττον οἱ μὴ ἀδικηθέντες προβάλλονται καὶ κολάζουσι. δεύτερος δὲ ὁ Βίας ἔφη, κρατίστην εἶναι δημοκρατίαν, ἐν ᾗ πάντες ὡς τύραννον φοβοῦνται τὸν νόμον. ἔπειτα Θαλῆς, τὴν μήτε πλουσίους ἔχουσαν ἄγαν, μήτε πένητας πολίτας. μετὰ δὲ τοῦτον ὁ Περίανδρος, ἐν ᾗ τῶν ἄλλων ἴσων νομιζομένων, ἀρετὴ τὸ βέλτιον ὁρίζεται, κακία δὲ τὸ χεῖρον. πέμπτος δὲ ὁ Κλεόβουλος ἔφη, μάλιστα σωφρονεῖν δῆμον, ὅπου τὸν ψόγον μᾶλλον οἱ πολιτευόμενοι δεδοίκασιν ἢ τὸν νόμον. ἕκτος δὲ Πιττα-

κός, ὅπου τοῖς πονηροῖς οὐκ ἔστιν ἄρχειν. ὁ δὲ Χείλων ἀπεφήνατο, τὴν μάλιστα νόμων ἥκιστα δὲ ῥητόρων ἀκούουσαν πολιτείαν, ἀρίστην εἶναι. (Plut. Mor. p. 154 d.)

132 *Ἀρχύτα Πυθαγορείου ἐκ τοῦ περὶ νόμου καὶ δικαιοσύνης.*

Νόμος ποτ' ἀνθρώπω ψυχάν τε καὶ βίον ὅπερ ἁρμονία ποτ' ἀκοάν τε καὶ φωνάν· ὅ τε γὰρ νόμος παιδεύει μὲν τὰν ψυχὰν συνίστητι δὲ τὸν βίον, ἅ τε ἁρμονία ἐπιστάμονα μὲν ποιεῖ τὰν ἀκοὰν ὁμόλογον δὲ τὰν φωνάν. φαμὶ δ' ἐγὼ πᾶσαν κοινωνίαν ἐξ ἄρχοντος καὶ ἀρχομένω συνεστάμεν καὶ τρίτον νόμων. νόμων δὲ ὃ μὲν ἔμψυχος, βασιλεύς, ὃ δὲ ἄψυχος, γράμμα. πρᾶτος ὦν ὁ νόμος· τούτῳ γὰρ ὁ μὲν βασιλεὺς νόμιμος, ὁ δ' ἄρχων ἀκόλουθος, ὁ δ' ἀρχόμενος ἐλεύθερος, ἁ δ' ὅλα κοινωνία εὐδαίμων· καὶ τούτω παραβάσει μὲν βασιλεὺς τύραννος, ὁ δὲ ἄρχων ἀνακόλουθος, ὁ δ' ἀρχόμενος δοῦλος, ἁ δ' ὅλα κοινωνία κακοδαίμων. συνείρονται μὲν γὰρ ταὶ πράξιες ἐκ τῶ ἄρχεν καὶ ἐκ τῶ ἄρχεσθαι καὶ τρίτον ἐκ τῶ κρατέν. τὸ μὲν ὦν ἄρχεν τῶ κρέσσονος οἰκῆον, τὸ δ' ἄρχεσθαι τῶ χερήονος, τὸ δὲ κρατὲν ἀμφοτέρων· ἄρχει μὲν γὰρ τὸ λόγον ἔχον τᾶς ψυχᾶς, ἄρχεται δὲ τὸ ἄλογον, κρατεῦντι δὲ τῶν παθέων ἀμφότερα. γίνεται γὰρ ἐκ τᾶς ἑκατέρων συναρμογᾶς ἀρετά, αὐτὰ δὲ καὶ ἀπὸ τᾶν ἁδονᾶν καὶ ἀπὸ τᾶν λυπᾶν ἐς ἀρεμίαν καὶ ἀπάθειαν ἀπάγει τὰν ψυχάν.

133 *Ἐν ταυτῷ.*

Δεῖ δὲ τὸν νόμον ἀκόλουθον ἦμεν τᾷ φύσει, δυνατὸν τοῖς πράγμασι, συμφέροντα τᾷ πολιτικᾷ κοι-

νωνίᾳ· αἴτε γὰρ ἑνὸς τούτων αἴτε πληόνων αἴτε πάντων ἀπολείπηται, ἤτοι οὐ νόμος ἢ οὐ τέλειος νόμος ἐσεῖται. ἀκόλουθος μὲν ὦν κα εἴη τᾷ φύσει μιμεόμενος τὸ τᾶς φύσιος δίκαιον· τοῦτο δέ ἐστιν τὸ ἀνάλογον καὶ τὸ ἐπιβάλλον ἑκάστῳ καττὰν ἑκάστω ἀξίαν. δυνατὸς δέ, αἰ ποτὶ τὼς νομοθετευμένως ἔχει τὰν συναρμογάν· πολλοὶ γὰρ τὸ τᾷ φύσει καὶ πρᾶτον ἀγαθὸν [οὐχ] ἱκανοὶ δέξασθαι, τὸ δὲ ποθ' αὐτὼς καὶ τὸ ἐνδεχόμενον· οὕτω γὰρ καὶ τοὶ νοσέοντι καὶ τοὶ κάμνοντι τυγχάνοντι ἐπιμελείας. συμφέρων δὲ τᾷ πολιτικᾷ κοινωνίᾳ, αἴκα μὴ μόναρχος ἦ καὶ ἰδιωφελὴς ὁ νόμος, κοινωφελὴς δὲ καὶ διὰ πάντων διατείνων. δεῖ δὲ καὶ ποτὶ τὰν χώραν καὶ ποτὶ τὼς τόπως ἀποβλέπειν τὸν νόμον· οὔτε γὰρ γᾶ τὼς αὐτὼς καρπώς, οὔτε ψυχὰ ἀνθρώπων τὰν αὐτὰν ἀρετὰν παραδέξασθαι δύναται. διὸ τὸ δίκαιον τοὶ μὲν ἀριστοκρατικὸν τοὶ δὲ δαμοκρατικὸν τοὶ δὲ ὀλιγαρχικὸν ποιοῦντι· καὶ τὸ ἀριστοκρατικὸν καττὰν ὑπεναντίαν μεσότατα· τοῖς μὲν γὰρ μέζοσι μέζονας τὼς λόγως, τοῖς δὲ μήοσι μήονας διανέμει ἁ ἀναλογία αὕτα· τὸ δὲ δαμοκρατικὸν καττὰν γεωμετρικάν· ἐν γὰρ ταύτᾳ τοὶ λόγοι ἴσοι τῶν μεζόνων καὶ μηόνων μεγεθέων· τὸ δὲ ὀλιγαρχικὸν καὶ τυραννικὸν καττὰν ἀριθμητικάν· ἀντιάζει γὰρ αὐτὰ τᾷ ὑπεναντίᾳ· τοῖς γὰρ μήοσι μέζονας τὼς λόγως, τοῖς δὲ μέζοσι μήονας. ταὶ μὲν ὦν ἰδέαι τᾶς διανομᾶς τοσαῦται· ταὶ δὲ εἰκόνες ἐν ταῖς πολιτείαις καὶ τοῖς οἴκοις θεωρέονται· τιμαί τε γὰρ καὶ κολάσεις καὶ ἀρχαὶ ἢ ἐξ ἴσω τοῖς μέζοσι καὶ μήοσι διανέμονται, ἢ ἐξ ἀνίσω ἢ τῷ ἀρετᾷ ὑπερέχεν ἢ τῷ πλούτῳ ἢ καὶ δυνάμει. τὸ μὲν ὦν ἐξ ἴσω δαμοκρατικόν, τὸ δὲ ἐξ ἀνίσω ἀριστοκρατικὸν ἢ ὀλιγαρχικόν.

134 Ἐν ταυτῷ.

Δεῖ δὴ τὸν νόμον τὸν κάρρονα καὶ τὰν πόλιν ἐκ πασᾶν σύνθετον εἶμεν τᾶν ἄλλαν πολιτειᾶν· καὶ ἔχεν τι δαμοκρατίας, ἔχεν τι ὀλιγαρχίας, ἔχεν τι βασιλήας καὶ ἀριστοκρατίας· ὥσπερ καὶ ἐν τᾷ Λακεδαίμονι· τοὶ μὲν γὰρ βασιλέες τᾶς μοναρχίας, τοὶ δὲ γέροντες τᾶς ἀριστοκρατίας, τοὶ δὲ ἔφοροι τᾶς ὀλιγαρχίας, ἱππαγρέται δὲ καὶ κόροι τᾶς δαμοκρατίας. δεῖ τοίνυν τὸν νόμον μὴ μόνον ἀγαθὸν καὶ καλὸν ἦμεν, ἀλλὰ καὶ ἀντιπεπονθέναι τοῖς αὐτῶ μερέεσσιν· οὗτος γὰρ ἰσχυρὸς καὶ βέβαιος· τὸ δ' ἀντιπεπονθέναι λέγω αὐτῶ, καὶ ἄρχεν καὶ ἄρχεσθαι τὰν αὐτὰν ἀρχάν, ὥσπερ καὶ ἐν τᾷ εὐνομωτάτᾳ Λακεδαίμονι. τοῖς μὲν γὰρ βασιλεῦσιν τοὶ ἔφοροι ἀντικάθηνται, τούτοις δ' οἱ γέροντες, μέσοι δ' οἱ κόροι καὶ ἱππαγρέται· ἐφ' ὃ γὰρ ἂν ῥέψωντι τοὶ πλεονεκτέοντες τῶν ἀρχόντων, οὗτοι τοῖς ἄλλοις ὑποτίθενται.

δεῖ τὸν νόμον τὰ περὶ θεὼς καὶ δαίμονας καὶ γονέας καὶ ὅλως τὰ καλὰ καὶ τίμια πρᾶτα τίθεσθαι, δεύτερον δὲ τὰ συμφέροντα· τὰ γὰρ μήονα τοῖς μέζοσιν ἀκολουθὲν ποθάκει, καὶ μὴ ἐν οἰκήμασι καὶ θυρώμασιν ἐνῆμεν, ἀλλ' ἐν τοῖς ἄθεσι τῶν πολιτευομένων. οὐδὲ γὰρ ἐν Λακεδαίμονι τᾷ εὐνομωτάτᾳ πλάθει γραμμάτων ἁ πόλις διοικεῖται, πολὺ δὲ μᾶλλον [ἐν] τοῖς τρόποις τῶν πολιτευομένων. συμφέροντι δὲ τᾷ πολιτικᾷ κοινωνίᾳ, αἴκα μὴ μόναρχος ᾖ καὶ ἰδιωφελής, κοινωφελὴς δὲ καὶ διὰ πάντων διατείνων ὁ νόμος· καὶ τὰν ζαμίαν ἐς τὰν αἰσχύναν καὶ τὰν ἀτιμίαν ἀμφέρῃ, μὴ ἐς τὰν τῶν χρημάτων ἀποβολάν. ἐκ μὲν γὰρ τῶ τᾷ αἰσχύνᾳ ζαμιοῦσθαι, κοσμιότατα καὶ χρηστότατα σπουδάζοντι, ὅπως τὰν ἐν τοῖς νό-

μοις ζαμίαν ἀκοινώνατον ἔχωντι· ἐκ δὲ τῶ χρήμασι, χρήματα περὶ πλείστω ποιησοῦνται, μέγιστον φάρμακον ὑπολαμβάνοντες ἦμεν τῶν ἁμαρτημάτων. ἄριστον μὲν ὦν τὰν ὅλαν πόλιν οὕτως συντετάχθαι, ὥστε μηδενὸς ποτιδεῖσθαι ἔξωθεν, μήτε κατ' ἀρετὰν μήτε κατὰ δύναμιν μήτε κατ' ἄλλαν μηδεμίαν αἰτίαν· οὕτω γὰρ καὶ σῶμα καὶ οἰκίαν καὶ στράτευμα συντετάχθαι καλῶς, τὸ ἐν αὑτῷ ἔχον τὰν αἰτίαν τῆς σωτηρίας, ἀλλὰ μὴ ἔξωθεν· σῶμα μέντοι κάρρον, οἰκία δὲ συγκειμένα καλῶς, στράτευμα δὲ τὸ μὴ μισθοφόρον μηδὲ ἀγύμναστον· κρέσσονα γὰρ τὰ οὕτως συνταχθέντα γίνεται τῶν ἄλλων· καὶ ἐλεύθερα μὲν καὶ ἀδούλωτα, οὐ πολλῶν ποτιδεόμενα ποτὶ τὰν διαμονάν, ὀλίγων δὲ καὶ εὐπαρακομίστων· οὕτω γὰρ [ἂν] ὁ μὲν ἰσχυρὸς τῶ βάρεος, ὁ δὲ γυμναστὰς τῶ ῥίγεος περιγίνεται· γυμνάζοντι γὰρ ταὶ τύχαι καὶ ταὶ συμφοραὶ τὼς ἀνθρώπως, ἐπεὶ καὶ τῷ σώφρονι καὶ διαπονηθέντι καὶ σώματι καὶ ψυχᾷ καὶ τροφὰ ἁδέα φαίνεται πᾶσα καὶ ποτόν, καὶ εὐνὰ δὲ ἁ μετὰ φυλλάδος, τῷ δὲ τρυφᾶν καὶ συβαρίζεν ἐμποριουμένῳ καὶ ἁ τῶ μεγάλω βασιλέος παρασκευὰ δυσάρεστος καὶ ἀλλοτρία. τὸν νόμον ὦν ἐν τοῖς ἄθεσι καὶ τοῖς ἐπιταδεύμασι τῶν πολιτᾶν ἐγχρῴζεσθαι δεῖ· τὼς γὰρ πολίτας αὐτάρκεας θήσει, καὶ διανεμεῖ τὸ κατ' ἀξίαν ἑκάστῳ καὶ τὸ ἐπιβάλλον· οὕτω γὰρ καὶ ὁ ἅλιος φερόμενος διὰ τῶ ζῳοφόρω κύκλω διανέμει τοῖς ἐπὶ γᾶς πᾶσι καὶ γενέσιος καὶ τροφᾶς καὶ βιοτᾶς τὰν ποθάκουσαν μοῖραν, οἷον εὐνομίαν τὰν εὐκρασίαν τᾶν ὡρᾶν παρασκευαζόμενος. διὸ καὶ νόμιος καὶ νεμήϊος Ζεὺς καλέεται, καὶ νομεὺς ὁ διανέμων τὰς τροφὰς τοῖς ὀίεσιν· καὶ τὰ τῶν κιθαρωδᾶν δὲ ἀείσματα νομοί· συντάσσοντι γὰρ καὶ ταῦτα τὰν ψυχὰν ἁρμονίᾳ καὶ ῥυθμοῖς καὶ μέτροις ἀειδόμενα.

135 Ἐκ τοῦ Ἀρχύτου περὶ μαθημάτων.

Δεῖ γὰρ ἢ μαθόντα παρ' ἄλλω ἢ αὐτὸν ἐξευρόντα ὧν ἐπιστάμων ἦσθα ἐπιστάμονα γενέσθαι. τὸ μὲν ὦν μαθὲν παρ' ἄλλω καὶ ἀλλότριον, τὸ δ' ἐξευρὲν αὐτὸν δι' αὐτῶ καὶ ἴδιον. ἐξευρὲν δὲ μὴ ζατοῦντα [ἄπορον καὶ σπάνιον, ζατοῦντα δὲ] εὔπορον καὶ ῥᾴδιον, μὴ ἐπιστάμενον δὲ ζατὲν ἀδύνατον. στάσιν μὲν ἔπαυσεν, ὁμόνοιαν δὲ αὔξησεν λογισμὸς εὑρεθείς· πλεονεξία τε γὰρ οὐκ ἔστι τούτω γενομένω καὶ ἰσότας ἔστιν· τούτῳ γὰρ περὶ τῶν συναλλαγμάτων διαλλασσόμεθα. διὰ τοῦτον ὦν οἱ πένητες λαμβάνοντι παρὰ τῶν δυναμένων, οἵ τε πλούσιοι διδόντι τοῖς δεομένοις, πιστεύοντες ἀμφότεροι διὰ τούτω τὸ ἴσον ἑξεῖν. κανὼν δὲ καὶ κωλυτὴρ τῶν ἀδικούντων τὼς μὲν ἐπισταμένως λογίζεσθαι πρὶν ἀδικὲν ἔπαυσεν, πείσας ὅτι οὐ δυνασοῦνται λαθὲν ὅταν ἐπ' αὐτὸ ἔλθωντι, τὼς δὲ μὴ ἐπισταμένως ἐν αὐτῷ δηλώσας ἀδικοῦντας ἐκώλυσεν ἀδικῆσαι.

136 Πλουτάρχου ἐκ τοῦ ὅτι γυναῖκα παιδευτέον.

Μὴ παιδὶ μάχαιραν, ἡ παροιμία φησίν· ἐγὼ δὲ φαίην ἄν, μὴ παιδὶ πλοῦτον μηδὲ ἀνδρὶ ἀπαιδεύτῳ δυναστείαν.

137 Αἰσώπου.

Αἴσωπος τότε ἔλεγεν κακῶς ἔσεσθαι πᾶσιν, ὅταν πάντες πάντα ἐπιτηδεύωσιν.

138 Ἐκ τῶν Δημοσθένους Φιλιππικῶν (p. 66, 7).

Αἴτιον δὲ τούτων, ὅτι πάντας, ὦ Ἀθηναῖοι, τοὺς πλεονεκτεῖν ζητοῦντας ἔργῳ κωλύειν καὶ πράξεσιν οὐχὶ λόγοις δέον.

139 *Ἐπικούρου.*

Οἱ νόμοι χάριν τῶν σοφῶν κεῖνται οὐχ ὅπως μὴ ἀδικῶσιν, ἀλλ' ὅπως μὴ ἀδικῶνται.

140 *Ἐκ τῶν Ἀριστοτέλους χρειῶν.*

Δημοσθένης ὁ ῥήτωρ ἔφη πόλεως εἶναι τὴν ψυχὴν τοὺς νόμους. ὥσπερ γὰρ τὸ σῶμα στερηθὲν ψυχῆς πίπτει, οὕτω καὶ πόλις μὴ ὄντων νόμων καταλύεται.

141 *Θουκυδίδου ἱστορίας* (V, 111) *ἐκ δημηγορίας Ἀθηναίων.*

Ὡς οἵ τινες τοῖς μὲν ἴσοις μὴ εἴκουσι, τοῖς δὲ κρείττοσι καλῶς προσφέρονται, εἰς δὲ τοὺς ἥσσους μέτριοί εἰσι, πλεῖστ' ἂν ὀρθοῖντο.

142 *Εὐσεβίου.*

*Πλοῦτος ἐν πόλι τῇ μελλούσῃ εὐδαιμονέειν ἀρετῆς μήκοτε προτιμηθείη, ὅκως μὴ διὰ τοῦτο ἐς τὴν ἐκείνου ἐπιθυμίην πάντων συρρεόντων ὀλιγωρίη καὶ ἀνασκησίη ἀρετῆς ψυχῇσι τῶν κατὰ τὴν πόλιν ἐμφυῇ. ἀρετῆς γὰρ ἀτιμαζομένης, πλοῦτος μοῦνος σπουδαζόμενος καὶ ἐνδυναστεύσας ὕβριός τε καὶ ὑπερηφανίης ὑπηρέτης καὶ πάντων κακῶν (ὑπ' ἐξουσίης τε καὶ τοῦ ἀνεπιπλήκτου * τᾶς ἀπεστώσης ἀρετῆς οὐδεὶς ἀνακαλέσεται) χορηγὸς γίνεται.*

143 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Ἄρχουσιν ἡ ὀφειλευμένη αἰδὼς καὶ τιμὴ φυλασσομένη κόσμον σώζει πόλιος καὶ διατηρέει.

144 *Πλάτωνος ἐκ τοῦ Γοργίου* (p. 476 a).

Μετὰ τοῦτο δὲ περὶ οὗ τὸ δεύτερον ἠμφισβητήσαμεν, σκεψώμεθα, τὸ ἀδικοῦντα διδόναι δίκην ἆρα μέγιστον τῶν κακῶν ἐστιν, ὡς σὺ ᾤου, ἢ μεῖζον τὸ μὴ διδόναι, ὡς αὖ ἐγὼ ᾤμην. σκοπώμεθα δὲ τῇδε· τὸ

διδόναι δίκην καὶ τὸ κολάζεσθαι δικαίως ἀδικοῦντα, ἆρα τὸ αὐτὸ καλεῖς; Ἔγωγε. Ἔχεις οὖν λέγειν, ὡς οὐχὶ τά γε δίκαια πάντα καλά ἐστι καθόσον καὶ δίκαια; καὶ διασκεψάμενος εἰπέ. Ἀλλά μοι δοκεῖ, ὦ Σώκρατες. Σκόπει δὴ καὶ τόδε· ἆρα εἴ τις τὶ ποιεῖ, ἀνάγκη τὶ εἶναι καὶ πάσχειν ὑπὸ τούτου τοῦ ποιοῦντος; Ἔμοιγε δοκεῖ. Ἆρα τοῦτο πάσχον, ὃ τὸ ποιοῦν ποιεῖ, καὶ τοιοῦτον οἷον ποιεῖ τὸ ποιοῦν; λέγω δὲ τοιόνδε· εἴ τις τύπτει, ἀνάγκη τι τύπτεσθαι; Ἀνάγκη. Καὶ εἰ σφόδρα τύπτει ἢ ταχὺ ὁ τύπτων, οὕτω καὶ τὸ τυπτόμενον τύπτεσθαι; Ναί. Τοιοῦτον ἄρα πάθος τῷ τυπτομένῳ ἐστὶν οἷον ἂν τὸ τύπτον ποιῇ. Πάνυ γε. Οὐκ οὖν καὶ εἰ καίει τις, ἀνάγκη τι καίεσθαι; Πῶς γὰρ οὔ; Καὶ εἰ σφόδρα γε καὶ εἰ ἀλγεινῶς, οὕτως καίεσθαι τὸ καιόμενον ὡς ἂν τὸ καῖον καίῃ. Πάνυ γε. Οὐκ οὖν καὶ εἰ τέμνει τις, ὁ αὐτὸς λόγος; τέμνεται γάρ τι. Ναί. Καὶ εἰ μέγα γε ἢ βαθὺ τὸ τμῆμα ἢ ἀλγεινόν, τοιοῦτον τμῆμα τέμνεται τὸ τεμνόμενον οἷον τὸ τέμνον τέμνει; Φαίνεται. Συλλήβδην δὴ ὅρα, εἰ ὁμολογεῖς ὃ ἄρτι ἔλεγον περὶ πάντων, οἷον ἂν ποιῇ τὸ ποιοῦν τοιοῦτον τὸ πάσχον πάσχειν. Ἀλλ' ὁμολογῶ. Τούτων δὴ ὁμολογουμένων, τὸ δίκην διδόναι πότερον πάσχειν τί ἐστιν ἢ ποιεῖν; Ἀνάγκη, ὦ Σώκρατες, πάσχειν. Οὐκ οὖν ὑπό τινος ποιοῦντος; Πῶς γὰρ οὔ; ὑπό γε τοῦ κολάζοντος. Ὁ δὲ ὀρθῶς κολάζων δικαίως κολάζει; Ναί. Δίκαια ποιῶν ἢ οὔ; Δίκαια. Οὐκ οὖν ὁ κολαζόμενος δίκην διδοὺς δίκαια πάσχει; Φαίνεται. Τὰ δὲ δίκαιά που καλὰ ὁμολογεῖται; Πάνυ γε. Τούτων ἄρα ὃ μὲν ποιεῖ καλά, ὃ δὲ πάσχει, ὁ κολαζόμενος; Ναί. Οὐκ οὖν εἴπερ καλά, ἀγαθά; ἢ γὰρ ἡδέα ἢ ὠφέλιμα; Ἀνάγκη. Ἀγαθὰ ἄρα πάσχει ὁ δίκην διδούς; Ἔοικεν. Ὠφελεῖται ἄρα; Ναί. Ἆρα ἥνπερ

ἐγὼ ὑπολαμβάνω τὴν ὠφέλειαν; βελτίων τὴν ψυχὴν γίγνεται, εἴπερ δικαίως κολάζεται; Εἰκός γε. Κακίας ἄρα ψυχῆς ἀπαλλάττεται ὁ δίκην διδούς; Ναί. Ἆρ' οὖν τοῦ μεγίστου ἀπαλλάττεται κακοῦ; ὧδε δὲ σκόπει· ἐν χρημάτων κατασκευῇ ἀνθρώπου κακίαν ἄλλην τινα ἐνορᾷς ἢ πενίαν; Οὔκ ἀλλὰ πενίαν. Τί δ'; ἐν σώματος κατασκευῇ κακίαν φήσαις ἀσθένειαν εἶναι καὶ νόσον καὶ αἶσχος καὶ τὰ τοιαῦτα; Ἔγωγε. Οὐκ οὖν καὶ ἐν ψυχῇ ἡγῇ πονηρίαν τινα εἶναι; Πῶς γὰρ οὔ; Ταύτην οὖν οὐκ ἀδικίαν καλεῖς καὶ ἀμαθίαν καὶ δειλίαν καὶ τὰ τοιαῦτα; Πάνυ μὲν οὖν. Οὐκ οὖν χρημάτων καὶ σώματος καὶ ψυχῆς, τριῶν ὄντων, τριττὰς εἴρηκας πονηρίας, πενίαν, νόσον, ἀδικίαν; Ναί. Τίς τούτων τῶν πονηριῶν αἰσχίστη; οὐχ ἡ ἀδικία καὶ συλλήβδην ἡ τῆς ψυχῆς πονηρία; Πολύ γε. Εἰ δὴ αἰσχίστη, καὶ κακίστη; Πῶς, ὦ Σώκρατες, λέγεις; Ὡδί. ἀεὶ τὸ αἴσχιστον, ἤτοι λύπην μεγίστην παρέχον ἢ βλάβην ἢ ἀμφότερον, αἴσχιστόν ἐστιν ἐκ τῶν ὡμολογημένων ἐν τῷ ἔμπροσθεν. Μάλιστα. Αἴσχιστον δὲ ἀδικία καὶ ξύμπασα ψυχῆς πονηρία νῦν δὴ ὡμολόγηται ἡμῖν; Ὡμολόγηται γάρ. Οὐκ οὖν ἢ ἀνιαρότατόν ἐστι καὶ ἀνίᾳ ὑπερβάλλον αἴσχιστον τούτων ἐστὶν ἢ βλάβῃ ἢ ἀμφότερα; Ἀνάγκη. Ἆρ' οὖν ἀλγεινότερόν ἐστι τοῦ πένεσθαι καὶ κάμνειν τὸ ἄδικον εἶναι καὶ ἀκόλαστον καὶ δειλὸν καὶ ἀμαθῆ; Οὐκ ἔμοιγε δοκεῖ, ὦ Σώκρατες, ἀπὸ τούτων γε. Ὑπερφυεῖ τινι ἄρα ὡς μεγάλῃ βλάβῃ καὶ κακῷ θαυμασίῳ ὑπερβάλλουσα τὰ ἄλλα ἡ τῆς ψυχῆς πονηρία, αἴσχιστόν ἐστι πάντων· ἐπειδὴ οὐκ ἀλγηδόνι γε [ὡς ὁ σὸς] λόγος. Οὕτως φαίνεται. Ἀλλὰ μήν που τὸ μεγίστῃ βλάβῃ ὑπερβάλλον μέγιστον ἂν κακὸν εἴη τῶν ὄντων. Ναί. Ἡ ἀδικία ἄρα καὶ ἡ ἀκολασία καὶ ἡ

ἄλλη ψυχῆς πονηρία μέγιστον τῶν ὄντων κακῶν ἐστι. Φαίνεται. Τίς οὖν τέχνη πενίας ἀπαλλάττει; οὐ χρηματιστική; Ναί. Τῆς δὲ νόσου οὐκ ἰατρική; Ἀνάγκη. Τίς δὲ πονηρίας καὶ ἀδικίας; εἰ μὴ οὕτως εὐπορεῖς, ὧδε σκόπει· ποῖ ἄγομεν καὶ παρὰ τίνας τοὺς κάμνοντας τὰ σώματα; Παρὰ τοὺς ἰατρούς, ὦ Σώκρατες, φής. Ποῖ δὲ τοὺς ἀδικοῦντας καὶ ἀκολασταίνοντας; Παρὰ τοὺς δικαστὰς λέγεις. Οὐκ οὖν δίκην δώσοντας; Φημί. Ἆρ' οὖν οὐ δικαιοσύνῃ τινὶ χρώμενοι κολάζουσιν οἱ ὀρθῶς κολάζοντες; Δῆλον δή. Χρηματιστικὴ μὲν ἄρα πενίας ἀπαλλάττει, ἰατρικὴ δὲ νόσου, δίκη δὲ ἀκολασίας καὶ ἀδικίας. Φαίνεται. Τί τούτων κάλλιστόν ἐστιν ὧν λέγεις; Τίνων λέγεις; Χρηματιστικῆς, ἰατρικῆς, δίκης. Πολὺ διαφέρει, ὦ Σώκρατες, ἡ δίκη. Οὐκ οὖν αὖ ἤτοι ἡδονὴν πλείστην ποιεῖ ἢ ὠφέλειαν ἢ ἀμφότερα, εἴπερ κάλλιστόν ἐστιν; Ναί. Ἆρ' οὖν τὸ ἰατρεύεσθαι ἡδύ ἐστι, καὶ χαίρουσιν οἱ ἰατρευόμενοι; Οὐκ ἔμοιγε δοκεῖ. Ἀλλὰ ὠφέλιμόν γε. Ἦ γάρ; Ναί. Μεγάλου γὰρ κακοῦ ἀπαλλάττεται, ὥστε λυσιτελεῖ ὑπομεῖναι τὴν ἀλγηδόνα καὶ ὑγιῆ εἶναι. Πῶς γὰρ οὔ; Ἆρ' οὖν οὕτως ἂν περὶ σῶμα εὐδαιμονέστατος ἄνθρωπος εἴη ἰατρευόμενος, ἢ μηδὲ κάμνων ἀρχήν; Δηλονότι μηδὲ κάμνων. Οὐ γὰρ τοῦτ' ἦν εὐδαιμονία, ὡς ἔοικε, κακοῦ ἀπαλλαγή, ἀλλὰ τὴν ἀρχὴν μηδὲ κτῆσις. Ἔστι ταῦτα. Τί δέ; ἀθλιώτερος πότερος δυοῖν ἐχόντοιν κακόν, εἴτε ἐν σώματι εἴτε ἐν ψυχῇ, ὁ ἰατρευόμενος καὶ ὁ ἀπαλλαττόμενος τοῦ κακοῦ, ἢ ὁ μὴ ἰατρευόμενος, ἔχων δέ; οὐκ οὖν τὸ δίκην διδόναι μεγάλου κακοῦ ἀπαλλαγὴ ἦν, πονηρίας; Ἦν γάρ. Σωφρονίζει γάρ που καὶ δικαιοτέρους ποιεῖ καὶ ἰατρικὴ γίνεται πονηρίας ἡ δίκη. Ναί. Εὐδαιμονέστατος μὲν ἄρα ὁ μὴ ἔχων κακίαν ἐν ψυχῇ, ἐπειδὴ μέγιστον τῶν

κακῶν ἐφάνη. Δῆλον δή. Δεύτερος δήπου ὁ ἀπαλλαττόμενος. Ἔοικεν. Οὗτος δ' ἦν ὁ νουθετούμενός τε καὶ ἐπιπληττόμενος καὶ δίκην διδούς. Ναί. Κάκιστ' ἄρα ζῇ ὁ ἔχων καὶ μὴ ἀπαλλαττόμενος. Φαίνεται. Οὐκ οὖν οὗτος τυγχάνει ὢν ὃς ἂν μέγιστα ἀδικῶν καὶ χρώμενος μεγίστῃ ἀδικίᾳ διαπράξηται ὥστε μήτε νουθετεῖσθαι μήτε κολάζεσθαι μήτε δίκην διδόναι, ὥσπερ σὺ φῂς Ἀρχέλαον παρεσκευάσθαι καὶ τοὺς ἄλλους τυράννους καὶ ῥήτορας καὶ δυνάστας; σχεδὸν γάρ που] οὗτοι, ὦ ἄριστε, τὸ αὐτὸ διαπεπραγμένοι εἰσίν, ὥσπερ ἄν τις τοῖς νοσήμασι συνισχόμενος διεπράξατο μὴ διδόναι δίκην τῶν περὶ τὸ σῶμα ἁμαρτημάτων τοῖς ἰατροῖς μηδὲ ἰατρεύεσθαι, φοβούμενος, ὥσπερ ἂν εἰ παῖς, τὸ καίεσθαι καὶ τὸ τέμνεσθαι, ὅτι ἀλγεινόν. ἢ οὐ δοκεῖ καὶ σοὶ οὕτως; Ἔμοιγε. Ἀγνοῶν γε, ὡς ἔοικεν, οἷόν ἐστιν ἡ ὑγίεια καὶ ἡ ἀρετὴ τοῦ σώματος. κινδυνεύουσι γὰρ ἐκ τῶν νῦν ἡμῖν ὡμολογημένων τοιοῦτόν τι ποιεῖν καὶ οἱ τὴν δίκην φεύγοντες, ὦ Πῶλε, τὸ ἀλγεινὸν αὐτοῦ καθορᾶν, πρὸς δὲ τὸ ὠφέλιμον τυφλῶς ἔχειν, καὶ ἀγνοεῖν ὅσῳ ἀθλιώτερόν ἐστι μὴ ὑγιοῦς σώματος μὴ ὑγιεῖ ψυχῇ συνοικεῖν, ἀλλὰ σαθρᾷ καὶ ἀδίκῳ καὶ ἀνοσίῳ· ὅθεν καὶ πᾶν ποιοῦσιν ὥστε δίκην μὴ διδόναι, μηδὲ ἀπαλλάττεσθαι τοῦ μεγίστου κακοῦ, καὶ χρήματα παρασκευαζόμενοι καὶ φίλους καὶ ὅπως ἂν ὦσιν ὡς πιθανώτατοι λέγειν.

145 Τοῦ αὐτοῦ νόμων η' (p. 846 d).

Τέχνην γὰρ ἱκανὴν πολλῆς ἀσκήσεως ἅμα καὶ μαθημάτων πολλῶν δεομένην κέκτηται πολίτης ἀνήρ, τὸν κοινὸν τῆς πόλεως κόσμον σώζων καὶ κτώμενος, οὐκ ἐν παρέργῳ δεόμενον ἐπιτηδεύειν. δύο δὲ ἐπιτη-

δεύματα ἢ δύο τέχνας ἀκριβῶς διαπονεῖσθαι σχεδὸν οὐδεμία φύσις ἱκανὴ τῶν ἀνθρωπίνων.

146 *Πλάτωνος ἐκ τοῦ Ἀλκιβιάδου* (p. 126 b).

Τί δὲ δὴ πόλις; τίνος παραγιγνομένου καὶ ἀπογιγνομένου βελτίων τε γίγνεται καὶ ἄμεινον θεραπεύεται καὶ διοικεῖται; Ἐμοὶ μὲν δοκεῖ, ὦ Σώκρατες, ὅταν φιλία μὲν αὐτοῖς γίγνηται πρὸς ἀλλήλους, τὸ δὲ μισεῖν τε καὶ στασιάζειν ἀπογίγνηται. Ἆρ' οὖν φιλίαν λέγεις ὁμόνοιαν ἢ διχόνοιαν; Ὁμόνοιαν. Διὰ τίνα οὖν τέχνην ὁμονοοῦσιν αἱ πόλεις περὶ ἀριθμούς; Διὰ τὴν ἀριθμητικήν. Τί δέ; οἱ ἰδιῶται, οὐ διὰ τὴν αὐτήν; Ναί. Οὐκ οὖν καὶ αὐτὸς αὑτῷ ἕκαστος; Ναί. Διὰ τίνα δὲ τέχνην αὐτὸς αὑτῷ ἕκαστος ὁμονοεῖ περὶ σπιθαμῆς καὶ πήχεως, ὁπότερον μεῖζον; οὐ διὰ τὴν μετρητικήν; Τί μήν; Οὐκ οὖν καὶ οἱ ἰδιῶται ἀλλήλοις καὶ αἱ πόλεις; Ναί. Τί δέ; περὶ σταθμοῦ οὐχ ὡσαύτως; Φημί. Ἣν δὲ σὺ λέγεις ὁμόνοιαν, τίς ἐστι καὶ περὶ τοῦ καὶ τίς αὐτὴν τέχνη παρασκευάζει, καὶ ἆρα ἥπερ πόλει, αὐτὴ καὶ ἰδιώτῃ, αὑτῷ τε πρὸς αὑτὸν καὶ πρὸς ἄλλον; Εἰκός γε. Τίς οὖν ἐστι; μὴ κάμῃς ἀποκρινόμενος, ἀλλὰ προθυμοῦ εἰπεῖν. Ἐγὼ μὲν οἶμαι φιλίαν τε λέγειν καὶ ὁμόνοιαν, ἥνπερ πατήρ τε καὶ υἱὸν φιλῶν ὁμονοεῖ καὶ μήτηρ καὶ ἀδελφὸς ἀδελφῷ καὶ γυνὴ ἀνδρί. Οἴει οὖν ἄν, ὦ Ἀλκιβιάδη, ἄνδρα γυναικὶ περὶ ταλασιουργίας δύνασθαι ὁμονοεῖν τὸν μὴ ἐπιστάμενον τῇ ἐπισταμένῃ; Οὐ δῆτα. Οὐδέ γε δεῖ οὐδέν· γυναικεῖον γὰρ τοῦτο μάθημα. Ναί. Τί δέ; γυνὴ ἀνδρὶ περὶ ὁπλιτικῆς δύναιτ' ἂν ὁμονοεῖν μὴ μαθοῦσα; Οὐ δῆτα. Ἀνδρεῖον γὰρ τοῦτο ἴσως ἂν φαίης εἶναι; Ἔγωγε. Ἔστιν ἄρα τὰ μὲν γυναικεῖα, τὰ δὲ ἀνδρεῖα μαθήματα κατὰ τὸν σὸν λόγον. Πῶς

δ' οὔ; Οὐκ ἄρα ἔν γε τούτοις ἐστὶν ὁμόνοια γυναιξὶ πρὸς ἄνδρας. Οὔ. Οὐδ' ἄρα φιλία, εἴπερ φιλία ὁμόνοια ἦν. Οὐ φαίνεται. Ἧι ἄρα αἱ γυναῖκες τὰ αὑτῶν πράττουσιν, οὐ φιλοῦνται ὑπὸ τῶν ἀνδρῶν. Οὐκ ἔοικεν. Οὐδ' ἄρα οἱ ἄνδρες ὑπὸ τῶν γυναικῶν, ᾗ τὰ αὑτῶν. Οὔ. Οὐδ' αὖ ἄρα ταύτῃ οἰκοῦνται αἱ πόλεις, ὅταν τὰ αὑτῶν ἕκαστοι πράττωσιν. Οἶμαί γ' ἔγωγε, ὦ Σώκρατες. Πῶς λέγεις, φιλίας μὴ παρούσης, ἧς ἔφαμεν ἐγγινομένης εὖ οἰκεῖσθαι τὰς πόλεις, ἄλλως δ' οὔ; Ἀλλά μοι δοκεῖ καὶ κατὰ ταῦτ' αὐτοῖς φιλία ἐγγίνεσθαι, ὅτι τὰ αὑτῶν ἑκάτεροι πράττουσιν. Οὐκ ἄρτι γε. νῦν δὲ πῶς αὖ λέγεις; ὁμονοίας μὴ ἐγγινομένης φιλία ἐγγίνεται; ἢ οἷόν τε ὁμόνοιαν ἐγγίγνεσθαι περὶ τούτων ὧν οἱ μὲν ἴσασιν οἱ δ' οὔ; Ἀδύνατον. Δίκαια δὲ πράττουσιν ἢ ἄδικα, ὅταν τὰ αὑτῶν ἕκαστοι πράττωσι; Δίκαια· πῶς γὰρ οὔ; Τὰ δίκαια οὖν πραττόντων ἐν τῇ πόλει τῶν πολιτῶν φιλία οὐκ ἐγγίγνεται πρὸς ἀλλήλους; Ἀνάγκη οὖν δοκεῖ μοι, ὦ Σώκρατες. Τίν' οὖν ποτε λέγεις τὴν φιλίαν ἢ ὁμόνοιαν, περὶ ἧς δεῖ ἡμᾶς σοφούς τε εἶναι καὶ εὐβούλους, ἵνα ἀγαθοὶ ἄνδρες ὦμεν;

147 Ἐν ταυτῷ (p. 134 b).

Οὐκ ἄρα τειχῶν οὐδὲ τριήρων οὐδὲ νεωρίων δέονται αἱ πόλεις, ὦ Ἀλκιβιάδη, εἰ μέλλουσιν εὐδαιμονήσειν, οὐδὲ πλήθους οὐδὲ μεγέθους ἄνευ ἀρετῆς. Οὐ μέντοι. Εἰ δὴ μέλλεις τὰ τῆς πόλεως πράξειν ὀρθῶς καὶ καλῶς, ἀρετῆς σοι μεταδοτέον τοῖς πολίταις. Πῶς γὰρ οὔ; Δύναιτο δ' ἄν τις μεταδιδόναι ὃ μὴ ἔχει; Καὶ πῶς; Αὐτῷ ἄρα σοὶ πρῶτον κτητέον ἀρετήν, καὶ ἄλλῳ ὃς μέλλει μὴ ἰδίᾳ μόνον αὑτοῦ τε καὶ τῶν αὑτοῦ ἄρξειν καὶ ἐπιμελήσεσθαι, ἀλ-

λὰ πόλεως καὶ τῶν τῆς πόλεως. Ἀληθῆ λέγεις. Οὐκ ἄρα ἐξουσίαν σοι οὐδ' ἀρχὴν παρασκευαστέον σαυτῷ ποιεῖν ὅ τι ἂν βούλῃ, οὐδὲ τῇ πόλει· ἀλλὰ δικαιοσύνην καὶ σωφροσύνην. Φαίνεται. Δικαίως μὲν γὰρ πράττοντες καὶ σωφρόνως σύ τε καὶ ἡ πόλις θεοφιλῶς πράξετε. Εἰκός γε. Καὶ ὅ πέρ γε ἐν τοῖς πρόσθεν ἐλέγομεν, εἰς τὸ θεῖον καὶ λαμπρὸν ὁρῶντες πράξετε. Φαίνεται. Ἀλλὰ μὴν ἐνταῦθά γε βλέποντες ὑμᾶς τε αὐτοὺς καὶ τὰ ὑμέτερα ἀγαθὰ κατόψεσθε καὶ γνώσεσθε. Ναί. Οὐκ οὖν ὀρθῶς καὶ εὖ πράξετε; Ναί. Ἀλλὰ μὴν οὕτω γε πράττοντας ὑμᾶς ἐθέλω ἐγγυήσασθαι ἦ μὴν εὐδαιμονήσειν. Ἀσφαλὴς γὰρ εἶ ἐγγυητής. Ἀδίκως δὲ πράττοντες εἰς τὸ ἄθεον καὶ τὸ σκοτεινὸν βλέποντες, ὡς τὰ εἰκότα, ὅμοια τούτοις πράξετε ἀγνοοῦντες ὑμᾶς αὐτούς. Ἔοικεν. Ὧι γάρ, ὦ φίλε Ἀλκιβιάδη, ἐξουσία μὲν ᾖ ποιεῖν ὃ βούλεται, νοῦν δὲ μὴ ἔχῃ, τί τὸ εἰκὸς συμβαίνειν ἰδιώτῃ ἢ καὶ πόλει; οἷον νοσοῦντι ἐξουσίας οὔσης δρᾶν ὃ βούλεται, νοῦν ἰατρικὸν μὴ ἔχοντι, τυραννοῦντι δέ, ὡς μηδ' ἐπιπλήττοι τις αὐτῷ, τί τὸ συμβησόμενον; ἆρ' οὐχ ὡς τὸ εἰκός, διαφθαρῆναι τὸ σῶμα; τί δ'; ἐν νηὶ εἴ τῳ ἐξουσία εἴη ποιεῖν ὃ δοκεῖ, νοῦ τε καὶ ἀρετῆς κυβερνητικῆς ἐστερημένῳ, καθορᾷς ὃ ἂν ξυμβαίη αὐτῷ τε καὶ τοῖς συνναύταις; Ἔγωγε, ὅτι ἀπόλοιντο πάντες ἄν. Οὐκ οὖν ὡσαύτως ἐν πόλει τε καὶ πάσαις ἀρχαῖς καὶ ἐξουσίαις ἀπολειπομέναις ἀρετῆς ἕπεται τὸ κακῶς πράττειν; Ἀνάγκη. Οὐκ ἄρα τυραννίδα χρή, ὦ ἄριστε Ἀλκιβιάδη, παρασκευάζεσθαι οὔτε ἑαυτῷ οὔτε τῇ πόλει, εἰ μέλλετε εὐδαιμονεῖν, ἀλλ' ἀρετήν. Ἀληθῆ λέγεις. Πρὶν δέ γε ἀρετὴν ἔχειν, τὸ ἄρχεσθαι ἄμεινον ὑπὸ τοῦ βελτίονος ἢ τὸ ἄρχειν ἀνδρί, οὐ μόνον παιδί. Φαίνεται. Οὐκ οὖν τό γ' ἄμεινον καὶ

κάλλιον; Ναί. Τὸ δὲ κάλλιον πρεπωδέστερον; Πῶς δ᾽ οὔ; Πρέπει ἄρα τῷ κακῷ δουλεύειν· ἄμεινον γάρ. Ναί. Δουλοπρεπὲς ἄρα ἡ κακία. Φαίνεται. Ἐλευθεροπρεπὲς δ᾽ ἡ ἀρετή. Ναί. Οὐκ οὖν φεύγειν χρή, ὦ ἑταῖρε, τὴν δουλοπρέπειαν; Μάλιστά γε, ὦ Σώκρατες. Αἰσθάνῃ δὲ νῦν πῶς ἔχεις, δουλοπρεπῶς ἢ οὔ; Δοκῶ μοι καὶ μάλα σφόδρα αἰσθάνεσθαι.

148 *Ξενοφῶντος ἐν τῷ η′* (1, 2) *τῆς Κύρου παιδείας.*

Ἐννοήσατε γὰρ δὴ τίς ἂν πόλις πολεμία ὑπὸ μὴ πειθομένων ἁλοίη; ἢ τίς δ᾽ ἂν φιλία ὑπὸ μὴ πειθομένων διαφυλαχθείη; ποῖον δ᾽ ἂν ἀπειθοῦν στράτευμα νίκης τύχοι; πῶς δ᾽ ἂν μᾶλλον ἡττῶνται ἐν ταῖς μάχαις ἄνθρωποι, ἢ ἐπειδὰν ἄρξωνται ἰδίᾳ ἕκαστος περὶ σωτηρίας βουλεύεσθαι; τί δ᾽ ἂν ἄλλο ἀγαθὸν τελεσθείη ὑπὸ μὴ πειθομένων τοῖς κρείττοσι; ποῖαι δὲ πόλεις νομίμως ἂν οἰκήσειαν; ποῖοι δ᾽ οἶκοι σωθείησαν; πῶς δ᾽ ἂν νῆες ὅποι δεῖ ἀφίκοιντο; ἡμεῖς δέ, ἃ νῦν ἔχομεν ἀγαθά, διὰ τί ἄλλο μᾶλλον κατεπράξαμεν ἢ διὰ τὸ πείθεσθαι τῷ ἄρχοντι; — Εἰ τοίνυν μέγιστον ἀγαθὸν τὸ πειθαρχεῖν φαίνεται εἰς τὸ καταπράττειν τὰ ἀγαθά, εὖ ἴστε ὅτι τὸ αὐτὸ τοῦτο καὶ εἰς τὸ διασώζειν ἃ δεῖ μέγιστον ἀγαθόν ἐστιν.

149 *Πλάτωνος πολιτείας β′* (p. 374 e).

Ἡμέτερον δ᾽ ἂν εἴη ἔργον, ὡς ἔοικεν, εἴπερ οἷοί τε ἐσμὲν ἐκλέξασθαι τίνες τε καὶ ποῖαι φύσεις ἐπιτήδειαι εἰς πόλεως φυλακήν. Ἡμέτερον μέντοι. Μὰ Δί᾽, ἦν δ᾽ ἐγώ, οὐκ ἄρα φαῦλον πρᾶγμα ἠράμεθα, ὅμως δὲ οὐκ ἀποδειλιατέον εἰς ὅσον δὴ δύναμις παρήκει. Οὐ γὰρ οὖν, ἔφη. Οἴει οὖν τι, ἦν δ᾽ ἐγώ, διαφέρειν τὴν

φύσιν γενναίου σκύλακος εἰς φυλακὴν νεανίσκου εὐγενοῦς; Τὸ ποῖον λέγεις; Οἷον ὀξύν τέ που δεῖ αὐτοῖν ἑκάτερον εἶναι πρὸς αἴσθησιν καὶ ἐλαφρὸν πρὸς τὸ αἰσθανόμενον διωκάθειν, καὶ ἰσχυρὸν αὖ ἐὰν δέῃ ἑλόντα διαμάχεσθαι. Δεῖ γὰρ οὖν, ἔφη, πάντων τούτων. Καὶ μὴν ἀνδρεῖόν γε, εἴπερ εὖ μαχεῖται. Πῶς δ' οὔ; Ἀνδρεῖος δ' εἶναι ἆρ' ἂν ἐθέλοι ὁ μὴ θυμοειδής, εἴτε ἵππος εἴτε κύων εἴτε ἄλλο ὁτιοῦν ζῶον; ἢ οὐκ ἐννενόηκας, ὡς ἄμαχόν τε καὶ ἀνίκητον θυμός, οὗ παρόντος ψυχὴ πᾶσα πρὸς πάντα ἄφοβός τε καὶ ἀήττητος; Ἐννενόηκα. Τὰ μὲν τοίνυν τοῦ σώματος οἷον δεῖ τὸν φύλακα εἶναι τῆς πόλεως δῆλα; Ναί. Καὶ μὴν καὶ τὰ τῆς ψυχῆς, ὅτι γε θυμοειδῆ; Καὶ τοῦτο. Πῶς οὖν, ἦν δ' ἐγώ, ὦ Γλαύκων, οὐκ ἄγριοι ἀλλήλοις τε ἔσονται καὶ τοῖς ἀλλοτρίοις πολίταις, ὄντες τοιοῦτοι τὰς φύσεις; Μὰ Δί', ἦ δ' ὅς, οὐ ῥᾳδίως. Ἀλλὰ μέντοι δεῖ γε πρὸς μὲν τοὺς οἰκείους πράους αὐτοὺς εἶναι, πρὸς δὲ τοὺς πολεμίους χαλεπούς· εἰ δὲ μή, οὐ μενοῦσιν ἄλλους σφᾶς διολέσαι, ἀλλ' αὐτοὶ φθήσονται αὐτὸ δράσαντες. Ἀληθῆ, ἔφη. Τί οὖν, ἦν δ' ἐγώ, ποιήσομεν; πόθεν πρᾶόν τε ἅμα καὶ μεγαλόθυμον ἦθος εὑρήσομεν; ἐναντία γάρ που θυμοειδεῖ πραεῖα φύσις. Φαίνεται. Ἀλλὰ μέν τοι τούτων γε ὁποτέρου ἂν στέρηται, φύλαξ ἀγαθὸς οὐ μὴ γένηται. ταῦτα δὲ ἀδυνάτοις ἔοικεν· καὶ οὕτω δὴ ξυμβαίνει ἀγαθὸν φύλακα ἀδύνατον γενέσθαι. Κινδυνεύει, ἔφη. Καὶ ἐγὼ ἀπορήσας τε καὶ ἐπισκεψάμενος τὰ ἔμπροσθεν, εἶπον, Δικαίως, ἦν δ' ἐγώ, ὦ φίλε, ἀποροῦμεν· ἧς γὰρ προυθέμεθα εἰκόνος ἀπελείφθημεν. Πῶς λέγεις; ἔφη. Οὐκ ἐνενοήσαμεν ὅτι ἄρα τοιαῦταί εἰσι φύσεις οἵας ἡμεῖς οὐκ ᾠήθημεν, ἔχουσαι τἀναντία ταῦτα; Ποῦ δή; Ἴδοι μὲν ἄν τις καὶ ἐν ἄλλοις

πολλοῖς ζώοις, οὐ μέντ' ἂν ἥκιστα (ἐν ᾧ) ἡμεῖς παρεβάλλομεν τῷ φύλακι. Οἶσθα γάρ που τῶν γενναίων κυνῶν ὅτι τοῦτο αὐτῶν φύσει τὸ ἦθος· πρὸς μὲν τοὺς συνήθεις τε καὶ γνωρίμους ὡς οἷόν τε πραοτάτους εἶναι, πρὸς δὲ τοὺς ἀγνῶτας τἀναντία. Οἶδα μέντοι, ἔφη. Τοῦτο μὲν ἄρα, ἦν δ' ἐγώ, δυνατόν· καὶ οὐ παρὰ φύσιν ζητοῦμεν τοιοῦτον εἶναι τὸν φύλακα. Οὐκ ἔοικεν. Ἆρ' οὖν σοι δοκεῖ ἔτι τοῦδε προσδεῖσθαι ὁ φυλακτικὸς ἐσόμενος, πρὸς τῷ θυμοειδεῖ ἔτι προσγενέσθαι φιλόσοφος τὴν φύσιν; Πῶς δή; ἔφη, οὐ γὰρ ἐννοῶ. Καὶ τοῦτο, ἦν δ' ἐγώ, ἐν τοῖς κυσὶ κατόψει, ὃ καὶ ἄξιον θαυμάσαι τοῦ θηρίου. Τὸ ποῖον; Ὅτι ὃν μὲν ἂν ἴδῃ ἀγνῶτα, μισεῖ καὶ χαλεπαίνει, οὐδὲν κακὸν πεπονθώς· ὃν δ' ἂν γνώριμον, ἀσπάζεται, κἂν μηδὲν πώποτε ὑπ' αὐτοῦ πεπόνθῃ ἀγαθόν· ἢ οὔπω τοῦτο ἐθαύμασας; Οὐ πάνυ, ἔφη, μέχρι τούτου προσέσχον τὸν νοῦν· ὅτι δέ που δρᾷ ταῦτα, δῆλον.

150 *Ἐν ταυτῷ* (p. 376 c).

Φιλόσοφος δὴ καὶ θυμοειδὴς καὶ ἰσχυρὸς καὶ ταχὺς ἡμῖν τὴν φύσιν ἔσται ὁ μέλλων καλὸς καὶ ἀγαθὸς φύλαξ ἔσεσθαι πόλεως; Παντάπασι μὲν οὖν, ἔφη.

151 *Πλάτωνος πολιτείας τρίτης* (p. 395 b).

Εἰ ἄρα τὸν πρῶτον λόγον διασώσομεν, τοὺς φύλακας ἡμῖν τῶν ἄλλων πασῶν δημιουργιῶν ἀφειμένους δεῖν εἶναι δημιουργοὺς ἐλευθερίας τῆς πόλεως πάνυ ἀκριβεῖς καὶ μηδὲν ἄλλο ἐπιτηδεύειν ὅ τι μὴ εἰς τοῦτο φέρει· οὐδὲν δὲ δὴ δέοι ἂν αὐτοὺς ἄλλο πράττειν οὐδὲ μιμεῖσθαι, ἐὰν δὲ μιμῶνται, μιμεῖσθαι τὰ τούτοις προσήκοντα εὐθὺς ἐκ παίδων, ἀνδρείους, σώφρονας, ὁσίους, ἐλευθέρους, καὶ τὰ τοιαῦτα πάντα· τὰ δὲ ἀνελεύθερα μήτε ποιεῖν μήτε δεινοὺς εἶναι μι-

μήσασθαι μηδ' ἄλλο μηδὲν τῶν αἰσχρῶν, ἵνα μὴ ἐκ τῆς μιμήσεως τοῦ εἶναι ἀπολαύσωσιν. ἢ οὐκ ᾔσθησαι, ὅτι αἱ μιμήσεις, ἐὰν ἐκ νέων πόρρω διατελέσωσιν, εἰς ἤθη τε καὶ φύσιν καθίστανται, καὶ κατὰ σῶμα καὶ φωνὰς καὶ κατὰ τὴν διάνοιαν. Καὶ μάλα, ἦ δ' ὅς.

152 Ἐν ταυτῷ (p. 412 b).

Τὸ δὴ μετὰ τοῦτο τί ἂν ἡμῖν διαιρετέον εἴη; ἆρ' οὐκ αὐτῶν τούτων οἵ τινες ἄρξουσίν τε καὶ ἄρξονται; Τί μήν; Οὐκ οὖν ὅτι μὲν πρεσβυτέρους τοὺς ἄρχοντας δεῖ εἶναι, νεωτέρους δὲ τοὺς ἀρχομένους; Δῆλον. Καὶ ὅτι γε τοὺς ἀρίστους αὐτῶν τούτων; Καὶ τοῦτο. Οἱ δὲ γεωργῶν ἄριστοι ἆρ' οὐ γεωργικώτατοι γίνονται; Ναί. Ἐπειδὴ φυλάκων αὐτοὺς ἀρίστους δεῖ εἶναι, ἆρ' οὐ φυλακικωτέρους πόλεως; Ναί. Οὐκ οὖν φρονίμους τε εἰς τοῦτο δεῖ ὑπάρχειν καὶ δυνατοὺς καὶ ἔτι κηδεμόνας τῆς πόλεως; Ἔστι ταῦτα. Κήδοιτο δ' ἄν τις μάλιστα τούτου ὃ τυγχάνει φιλῶν; Ἀνάγκη. Καὶ μὴν τοῦτό γ' ἂν μάλιστα φιλοῖ, ᾧ ξυμφέρειν ἡγοῖτο ταῦτα καὶ ἑαυτῷ, καὶ ὅτι μάλιστα ἐκείνου μὲν εὖ πράττοντος οἴοιτο ξυμβαίνειν καὶ ἑαυτῷ εὖ πράττειν, μὴ δὲ τουναντίον; Οὕτως, ἔφη. Λεκτέον ἄρα ἐκ τῶν ἄλλων φυλάκων τοιούτους ἄνδρας, οἳ ἂν σκοποῦσιν ἡμῖν φαίνωνται παρὰ πάντα τὸν βίον, ὃ μὲν ἂν τῇ πόλει ἡγήσωνται ξυμφέρειν, πάσῃ προθυμίᾳ ποιεῖν, ὃ δ' ἂν μή, μηδενὶ τρόπῳ πρᾶξαι ἂν ἐθέλειν. Ἐπιτήδειοι γάρ, ἔφη. Δοκεῖ δή μοι τηρητέον αὐτοὺς εἶναι ἐν ἁπάσαις ταῖς ἡλικίαις, εἰ φυλακικοί εἰσι τούτου τοῦ δόγματος καὶ μήτε γοητευόμενοι μήτε βιαζόμενοι οἳ ἐκβάλλοιεν ἐπιλανθανόμενοι δόξαν τὴν τοῦ ποιεῖν δεῖν ἃ τῇ πόλει βέλτιστα. Τίνα, ἔφη, λέγεις τὴν ἐκβολήν; Ἐγώ σοί, ἔφην, ἐρῶ. Φαίνεταί μοι δόξα ἐξιέ-

ναι ἐκ διανοίας ἢ ἑκουσίως ἢ ἀκουσίως· ἑκουσίως μὲν ἡ ψευδὴς τοῦ μεταμανθάνοντος, ἀκουσίως δὲ πᾶσα ἡ ἀληθής. Τὸ μὲν τῆς ἑκουσίου, ἔφη, μανθάνω, τὸ δὲ τῆς ἀκουσίου δέομαι μαθεῖν. Τί δέ; οὐ καὶ σὺ ἡγῇ, ἔφην ἐγώ, τῶν μὲν ἀγαθῶν ἀκουσίως στέρεσθαι τοὺς ἀνθρώπους, τῶν δὲ κακῶν ἑκουσίως; ἢ οὐ τὸ μὲν ἐψεῦσθαι τῆς ἀληθείας κακόν, τὸ δὲ ἀληθεύειν ἀγαθόν; ἢ οὐ τὸ τὰ ὄντα δοξάζειν ἀληθεύειν δοκεῖ σοι εἶναι; Ἀλλ', ἦ δ' ὅς, ὀρθῶς λέγεις, καί μοι δοκοῦσιν ἄκοντες ἀληθοῦς δόξης στερίσκεσθαι. Οὐκ οὖν κλαπέντες ἢ γοητευθέντες ἢ βιασθέντες τοῦτο πάσχουσιν; Οὐδὲ νῦν, ἔφη, μανθάνω. Τραγικῶς ἄρα, ἦν δ' ἐγώ, κινδυνεύω λέγειν· κλαπέντας γὰρ τοὺς μεταπεισθέντας λέγω καὶ τοὺς ἐπιλανθανομένους, ὅτι τῶν μὲν χρόνος, τῶν δὲ λόγος ἐξαιρούμενος λανθάνει. νῦν γάρ που μανθάνεις; Ναί. Τοὺς τοίνυν βιασθέντας λέγω οὓς ἂν ὀδύνη τις ἢ ἀλγηδὼν μεταδοξάσαι ποιήσῃ. Καὶ τοῦτο, ἔφη, ἔμαθον, καὶ ὀρθῶς λέγεις. Τοὺς μὴν γοητευθέντας, ὡς ἐγᾦμαι, καὶ σὺ φαίης εἶναι οἳ ἂν μεταδοξάσωσιν ἢ ὑφ' ἡδονῆς κηληθέντες ἢ ὑπὸ φόβου τι δείσαντες. Ἔοικε γάρ, ἦ δ' ὅς, γοητεύειν πάντα ὅσα ἀπατᾷ. Ὃ τοίνυν ἄρτι ἔλεγον, ζητητέον τίνες ἄριστοι φύλακες τοῦ παρ' αὐτοῖς δόγματος, (τοῦ ὡς ποιητέον. ὃ δ' ἂν τῇ πόλει ἀεὶ δοκῶσι βέλτιστον εἶναι αὐτοῖς ποιεῖν) τηρητέον δὴ εὐθὺς ἐκ παίδων προθεμένοις ἔργα ἐν οἷς ἄν τις τὸ τοιοῦτον μάλιστα ἐπιλανθάνοιτο καὶ ἐξαπατῷτο· καὶ τὸν μὲν μνήμονα καὶ δυσεξαπάτητον ἐγκριτέον, τὸν δὲ μὴ ἀποκριτέον. ἦ γάρ; Ναί. Καὶ πόνων γε αὖ καὶ ἀλγηδόνων ἀγῶνας αὐτοῖς θετέον, ἐν οἷς ταυτὰ ταῦτα τηρητέον. Ὀρθῶς, ἔφη. Οὐκ οὖν, ἦν δ' ἐγώ, καὶ τρίτου εἴδους τοῦ τῆς γοητείας ἅμιλλαν ποιητέον, καὶ

θεατέον, ὥσπερ τοὺς πώλους ἐπὶ τοὺς ψόφους τε καὶ θορύβους ἄγοντες σκοποῦσιν εἰ φοβεροί, οὕτως νέους ὄντας εἰς δείματα κομιστέον καὶ εἰς ἡδονὰς αὖ μεταβλητέον, βασανίζοντας πολυ μᾶλλον ἢ χρυσὸν ἐν πυρί, εἰ δυσγοήτευτος καὶ εὐσχήμων ἐν ἅπασι φαίνεται, φύλαξ αὑτοῦ ὢν ἀγαθὸς καὶ τῆς μουσικῆς ἧς ἐμάνθανεν, εὔρυθμόν τε καὶ εὐάρμοστον ἑαυτὸν ἐν πᾶσι τούτοις παρασχών· οἷος δὴ ἂν (ὢν) καὶ ἑαυτῷ καὶ πόλει χρησιμώτατος εἴη· καὶ τὸν ἀεὶ ἔν τε παισὶ καὶ νεανίσκοις καὶ ἀνδράσι βασανιζόμενον καὶ ἀκήρατον ἐκβαίνοντα καταστατέον ἄρχοντα τῆς πόλεως καὶ φύλακα, καὶ τιμὰς δοτέον καὶ ζῶντι καὶ τετελευτηκότι, τάφων τε καὶ τῶν ἄλλων μνημείων μέγιστα γέρα λαγχάνοντα· τὸν δὲ μὴ τοιοῦτον ἀποκριτέον. τοιαύτη τις, ἦν δ' ἐγώ, ὦ Γλαύκων, δοκεῖ μοι ἡ ἐκλογὴ εἶναι καὶ κατάστασις τῶν ἀρχόντων τε καὶ φυλάκων, ὡς ἐν τύποις, μὴ δι' ἀκριβείας εἰρῆσθαι. Καὶ ἐμοί, ἦ δ' ὅς, οὕτω πῃ φαίνεται. Ἆρ' οὖν ὡς ἀληθῶς ὀρθότατον καλεῖν τούτους μὲν φύλακας παντελεῖς τῶν τε ἔξωθεν πολεμίων τῶν τε ἔντος φίλων, ὅπως μὴ βουλήσονται, οἳ δὲ μὴ δυνήσονται κακουργεῖν· τοὺς δὲ νέους, οὓς δὴ νῦν φύλακας ἐκαλοῦμεν, ἐπικούρους τε καὶ βοηθοὺς τοῖς τῶν ἀρχόντων δόγμασιν.

153 Ἐν ταυτῷ (p. 416 b).

Ὃ μέντοι ἄρτι ἐλέγομεν, ἄξιον, ὅτι δεῖ αὐτοὺς τῆς ὀρθῆς τυχεῖν παιδείας, ἥ τις ποτ' ἐστίν, εἰ μέλλουσι τὸ μέγιστον ἕξειν πρὸς τῷ ἥμεροι εἶναι αὑτοῖς τε καὶ τοῖς φυλαττομένοις ὑπ' αὐτῶν. Καὶ ὀρθῶς γε, ἦ δ' ὅς. Πρὸς τοίνυν τῇ παιδείᾳ ταύτῃ φαίη ἂν τις νοῦν ἔχων δεῖν καὶ τὰς οἰκήσεις καὶ τὴν ἄλλην οὐσίαν τοιαύτην αὐτοῖς παρεσκευάσθαι, ἥτις μήτε τοὺς φύ-

λακας ὡς ἀρίστους ἀναγκάσει αὐτοὺς κακουργεῖν, μήτε ἐπαίρει περὶ τοὺς ἄλλους πολίτας. Καὶ ἀληθῶς γε φήσει. Ὅρα δή, εἶπον ἐγώ, εἰ τοιόνδε τινα τρόπον δεῖ αὐτοὺς ζῆν τε καὶ οἰκεῖν, εἰ μέλλουσι τοιοῦτοι ἔσεσθαι. πρῶτον μὲν οὐσίαν κεκτημένον οὐδεμίαν μηδένα ἰδίαν, ἣν μὴ πᾶσα ἀνάγκη· ἔπειτα οἴκησιν καὶ ταμιεῖον μηδενὶ εἶναι μηδὲν τοιοῦτον, εἰς ὃ οὐ πᾶς ὁ βουλόμενος εἴσεισι· τὰ δ᾽ ἐπιτήδεια, ὅσων δέονται ἄνδρες ἀθληταὶ πολέμου σώφρονές τε καὶ ἀνδρεῖοι, ταξαμένους παρὰ τῶν ἄλλων πολιτῶν δέχεσθαι μισθὸν τῆς φυλακῆς τοσοῦτον, ὅσον μήτε περιεῖναι αὐτοῖς εἰς τὸν ἐνιαυτὸν μήτε ἐνδεῖν· φοιτῶντας δ᾽ εἰς ξυσσίτια, ὥσπερ ἐξεστρατοπεδευμένους, κοινῇ ζῆν· χρυσίον δὲ καὶ ἀργύριον εἰπεῖν αὐτοῖς, ὅτι θεῖον παρὰ θεῶν ἀεὶ ἐν τῇ ψυχῇ ἔχουσι καὶ οὐδὲν προσδέονται τοῦ ἀνθρωπείου, οὐδὲ ὅσια τὴν ἐκείνου κτῆσιν τῇ τοῦ θνητοῦ χρυσοῦ κτήσει ξυμμιγνύντας μιαίνειν διότι πολλὰ καὶ ἀνόσια περὶ τὸ τῶν πολλῶν νόμισμα γέγονε, τὸ παρ᾽ ἐκείνοις δὲ ἀκήρατον, ἀλλὰ μόνοις αὐτοῖς τῶν ἐν τῇ πόλει μεταχειρίζεσθαι καὶ ἅπτεσθαι χρυσοῦ καὶ ἀργύρου οὐ θέμις, οὐδὲ ὑπὸ τὸν αὐτὸν ὄροφον ἰέναι οὐδὲ περιάψασθαι οὐδὲ πίνειν ἐξ ἀργύρου ἢ χρυσοῦ. καὶ οὕτω μὲν σῴζοιντό τε ἂν καὶ σῴζοιεν τὴν πόλιν· ὁπότε δὲ αὐτοὶ γῆν τε ἰδίαν καὶ οἰκίας καὶ νομίσματα κτήσονται, οἰκονόμοι μὲν καὶ γεωργοὶ ἀντὶ φυλάκων ἔσονται, δεσπόται δὲ καὶ ἐχθροὶ ἀντὶ ξυμμάχων τῶν ἄλλων πολιτῶν γενήσονται· μισοῦντες δὲ καὶ μισούμενοι καὶ ἐπιβουλεύοντες καὶ ἐπιβουλευόμενοι διάξουσι πάντα τὸν βίον, πολὺ πλεῖον καὶ μᾶλλον δεδιότες τοὺς ἔνδον ἢ τοὺς ἔξωθεν πολεμίους, θέοντες ἤδη τότε ἐγγύτατα ὀλέθρου, αὐτοί τε καὶ ἡ ἄλλη πόλις.

154 *Πλάτωνος πολιτείας δ'* (p. 421 a c).

Νευρορράφοι γὰρ φαῦλοι γενόμενοι καὶ διαφθαρέντες καὶ προσποιησάμενοι εἶναι μὴ ὄντες πόλει οὐδὲν δεινόν· φύλακες δὲ νόμων τε καὶ πόλεως μὴ ὄντες, ἀλλὰ δοκοῦντες, ὁρᾷς δὴ ὅτι πᾶσαν ἄρδην πόλιν ἀπολλύασι. — Τοὺς ἄλλους αὖ δημιουργοὺς σκόπει εἰ τάδε διαφθείρει, ὥστε καὶ κακοὺς γίγνεσθαι. Τὰ ποῖα δὴ ταῦτα; Πλοῦτος, ἦν δ' ἐγώ, καὶ πενία. Πῶς δή; Ὧδε· πλουτήσας χυτρεὺς δοκεῖ σοι ἔτι θελήσειν ἐπιμελεῖσθαι τῆς τέχνης; Οὐδαμῶς, ἔφη. Ἀργὸς δὲ καὶ ἀμελὴς γενήσεται μᾶλλον αὐτὸς αὑτοῦ; Πολύ γε. Οὐκ οὖν κακίων χυτρεὺς γίνεται; Καὶ τοῦτο, ἔφη, πολύ. Καὶ μὴν καὶ ὄργανά γε μὴ ἔχων παρέχεσθαι ὑπὸ πενίας ἤ τι ἄλλο τῶν εἰς τὴν τέχνην, τά τε ἔργα πονηρότερα ἐργάσεται καὶ τοὺς υἱεῖς ἢ ἄλλους οὓς ἂν διδάσκῃ χείρους δημιουργοὺς διδάξεται; Πῶς δ' οὔ; Ὑπ' ἀμφοτέρων δή, πενίας τε καὶ πλούτου, χείρω μὲν τὰ τῶν τεχνῶν ἔργα, χείρους δὲ αὐτοί. Φαίνονται. Ἕτερα δή, ὡς ἔοικε, τοῖς φύλαξιν εὑρήκαμεν, ἃ παντὶ τρόπῳ φυλακτέον ὅπως μή ποτε αὐτοὺς λήσῃ εἰς τὴν πόλιν παραδύντα. Τὰ ποῖα ταῦτα; Πλοῦτος, ἦν δ' ἐγώ, καὶ πενία, ὡς τοῦ μὲν τρυφήν τε καὶ ἀργίαν καὶ νεωτερισμὸν ἐμποιοῦντος, τοῦ δὲ ἀνελευθερίαν καὶ κακουργίαν πρὸς τῷ νεωτερισμῷ. Πάνυ μὲν οὖν, ἔφη.

155 *Ἐν ταυτῷ* (p. 423 d).

Οὗτοι, ἦν δ' ἐγώ, ὦ ἀγαθὲ Ἀδείμαντε, ὡς δόξειεν ἄν τις, ταῦτα πολλὰ καὶ μεγάλα αὐτοῖς προστάττομεν, ἀλλὰ πάντα φαῦλα, ἐὰν τὸ λεγόμενον ἓν μέγα φυλάττωσι, μᾶλλον δὲ ἀντὶ μεγάλου ἱκανόν. Τί τοῦτο; ἔφη. Τὴν παιδείαν, ἦν δ' ἐγώ, καὶ τροφήν· ἐὰν γὰρ

εὖ παιδευόμενοι μέτριοι ἄνδρες γίγνωνται, πάντα ταῦτα ῥᾳδίως διόψονται, καὶ ἄλλα γε ὅσα νῦν ἡμεῖς παραλείπομεν, τήν τε τῶν γυναικῶν κτῆσιν καὶ γάμων καὶ παιδοποιίας· ὅτι δεῖ ταῦτα, κατὰ τὴν παροιμίαν, πάντα ὅτι μάλιστα κοινὰ τὰ τῶν φίλων ποιεῖσθαι. Ὀρθότατα γάρ, ἔφη, γίγνοιτ' ἄν. Καὶ μήν, εἶπον, πολιτεία, ἐάν περ ἅπαξ ὁρμήσῃ εὖ, ἔρχεται ὥσπερ κύκλος αὐξανομένη· τροφὴ γὰρ καὶ παίδευσις χρηστὴ σωζομένη φύσεις ἀγαθὰς ἐμποιεῖ, καὶ αὖ φύσεις χρησταὶ τοιαύτης παιδείας ἀντιλαμβανόμεναι ἔτι βελτίους τῶν προτέρων φύονται εἴς τε τἄλλα καὶ εἰς τὸ γεννᾶν, ὥσπερ καὶ ἐν τοῖς ἄλλοις ζώοις. Εἰκός γ', ἔφη. Ὡς τοίνυν διὰ βραχέων εἰπεῖν, τούτου ἀνθεκτέον τοῖς ἐπιμεληταῖς τῆς πόλεως, ὅπως ἂν αὐτοὺς μὴ λάθῃ διαφθαρέν, ἀλλὰ παρὰ πάντα αὐτὸ φυλάττωσι, τὸ μὴ νεωτερίζειν περὶ γυμναστικήν τε καὶ μουσικὴν παρὰ τὴν τάξιν, ἀλλ' ὡς οἷόν τε μάλιστα φυλάττειν, φοβουμένους ὅταν τις λέγῃ ὡς

τὴν ἀοιδὴν μᾶλλον ἐπιφρονέουσ' ἄνθρωποι,
ἥ τις ἀειδόντεσσι νεωτάτη ἀμφιπέληται.

μὴ πολλάκις τὸν ποιητήν τις οἴηται λέγειν, οὐκ ᾄσματα νέα, ἀλλὰ τρόπον ᾠδῆς νέον, καὶ τοῦτ' ἐπαινῇ· δεῖ δὲ οὔτ' ἐπαινεῖν τὸ τοιοῦτον οὔτε ὑπολαμβάνειν· εἶδος γὰρ καινὸν μουσικῆς μεταβάλλειν εὐλαβητέον ὡς ἐν ὅλῳ κινδυνεύοντα· οὐδαμοῦ γὰρ κινοῦνται μουσικῆς τρόποι ἄνευ πολιτικῶν νόμων τῶν μεγίστων ὥς φησί τε Δάμων κἀγὼ πείθομαι. Καὶ ἐμὲ τοίνυν, ἔφη ὁ Ἀδείμαντος, θὲς τῶν πεπεισμένων. Τὸ δὴ φυλακτήριον, ἦν δ' ἐγώ, ὡς ἔοικεν, ἐνταῦθά που οἰκοδομητέον τοῖς φύλαξιν ἐν μουσικῇ. Ἡ γοῦν παρανομία, ἔφη, ῥᾳδίως αὕτη λανθάνει παραδυομένη. Ναί, ἔφην, ὡς ἐν παιδιᾶς γε μέρει καὶ ὡς κακὸν οὐδὲν

ἐργαζομένη. Οὐδὲ γὰρ ἐργάζεται, ἔφη, ἄλλο γε ἢ κατὰ σμικρὸν εἰσοικησαμένη ἠρέμα ὑπορρεῖ πρὸς τὰ ἤθη τε καὶ τὰ ἐπιτηδεύματα· ἐκ δὲ τούτων εἰς τὰ πρὸς ἀλλήλους ξυμβόλαια μείζων ἐκβαίνει· ἐκ δὲ δὴ τῶν ξυμβολαίων ἔρχεται ἐπὶ τοὺς νόμους καὶ πολιτείας σὺν πολλῇ, ὦ Σώκρατες, ἀσελγείᾳ, ἕως ἂν τελευτῶσα ἅπαντα ἰδίᾳ καὶ δημοσίᾳ ἀνατρέψαι. Εἶεν, ἦν δ' ἐγώ, οὕτω τοῦτ' ἔχει. Δοκεῖ μοι, ἔφη. Οὐκ οὖν ὃ ἐξ ἀρχῆς ἐλέγομεν, τοῖς ἡμετέροις παισὶν ἐννομωτέρου εὐθὺς παιδιᾶς μεθεκτέον, ὡς παρανόμου γιγνομένης αὐτῆς καὶ παίδων τοιούτων ἐννόμους τε καὶ σπουδαίους ἐξ αὐτῶν ἄνδρας αὐξάνεσθαι ἀδύνατον ὄν. Πῶς δ' οὐχί; ἔφη.

ΠΕΡΙ ΝΟΜΩΝ ΚΑΙ ΕΘΩΝ. ΜΔ.

1 *Εὐριπίδου.*

Ἄρχεσθαι χρεὼν
κακοὺς ὑπ' ἐσθλῶν καὶ κλύειν τῶν κρεισσόνων.

2 *Εὐριπίδου Δίκτυος.*

Μὴ νεῖκος ὦ γεραιὲ κοιράνοις τίθου.
σέβειν δὲ τοὺς κρατοῦντας ἀρχαῖος νόμος.

3 *Μενάνδρου Ἀδελφοῖς.*

Οὐ παντελῶς δεῖ τοῖς πονηροῖς ἐπιτρέπειν,
ἀλλ' ἀντιτάττεσθ'· εἰ δὲ μή γ', ἄνω κάτω
ἡμῶν ὁ βίος λήσει μεταστραφεὶς ὅλος.

4 *Εὐριπίδου Ἐρεχθεῖ.*

Καὶ τοὺς πονηροὺς μή ποτ' αὔξαν' ἐν πόλει.
κακοὶ γὰρ ἐμπλησθέντες ἢ νομίσματος,
ἢ πόλεος ἐμπεσόντες εἰς ἀρχήν τινα,
σκιρτῶσιν ἀδόκητ' εὐτυχησάντων δόμων.

5 *Μενάνδρου Ἀνδρογύνῳ.*
Τὸ γὰρ σύνηθες οὐδαμοῦ παροπτέον.

6 *Εὐριπίδου Ἱκετίδων* (435).
Οὐκ ἔστιν οὐδὲν κρεῖσσον ἢ νόμοι πόλει
καλῶς τεθέντες· ὅ τε γὰρ ἀσθενέστερος
ὁ πλούσιός τε τὴν δίκην ἴσην ἔχει,
νικᾷ δ' ὁ μείων τὸν μέγαν δίκαι' ἔχων.

7 *Σοφοκλῆς Αἴαντι* (666).
Τοιγὰρ τὸ λοιπὸν εἰσόμεσθα μὲν θεοῖς
εἴκειν, μαθησόμεσθα δ' Ἀτρείδας σέβειν.
ἄρχοντές εἰσιν, ὥσθ' ὑπεικτέον· τί μή;
καὶ γὰρ τὰ δεινὰ καὶ τὰ καρτερώτατα
τιμαῖς ὑπείκει· τοῦτο μὲν νιφοστιβεῖς
χειμῶνες ἐκχωροῦσιν εὐκάρπῳ θέρει·
ἐξίσταται δὲ νυκτὸς αἰανῆς κύκλος
τῇ λευκοπώλῳ φέγγος ἡμέρᾳ φλέγειν·
δεινῶν τ' ἄημα πνευμάτων ἐκοίμισε
στένοντα πόντον, ἐν δ' ὁ παγκρατὴς ὕπνος
λύει πεδήσας, οὐδ' ἀεὶ λαβὼν ἔχει.

8 *Μενάνδρου.*
Καλὸν οἱ νόμοι σφόδρ' εἰσίν· ὁ δ' ὁρῶν τοὺς νόμους
λίαν ἀκριβῶς, συκοφάντης φαίνεται.

9 *Πλάτωνος ἐκ τοῦ Τιμαίου* (p. 17 c).
Χθές που τῶν ὑπ' ἐμοῦ ῥηθέντων λόγων περὶ πολιτείας ἦν τὸ κεφάλαιον, οἵα τε καὶ ἐξ οἵων ἀνδρῶν ἀρίστη καταφαίνεται ἄν μοι γενέσθαι. Καὶ μάλα γε ἡμῖν, ὦ Σώκρατες, ῥηθεῖσα κατὰ νοῦν ἅπασιν. Ἆρ' οὖν οὐ τὸ τῶν γεωργῶν, ὅσαι τε ἄλλαι τέχναι, πρῶτον ἐν αὐτῇ χωρὶς διειλόμεθα ἀπὸ τοῦ γένους τοῦ

τῶν προπολεμησόντων; Ναί. Καὶ κατὰ φύσιν δὴ δόντες τὸ καθ' αὑτὸν ἑκάστῳ πρόσφορον, ἓν μόνον ἐπιτήδευμα, μίαν ἑκάστῳ τέχνην, τούτους οὓς πρὸ πάντων δέοι πολεμεῖν, εἴπομεν, ὡς ἄρα αὐτοὺς δέοι φύλακας εἶναι μόνον τῆς πόλεως, εἴτε τις ἔξωθεν ἢ καὶ τῶν ἔνδοθεν ἴοι κακουργήσων, δικάζοντας μὲν πράως τοῖς ἀρχομένοις ὑπ' αὐτῶν καὶ φύσει φίλοις οὖσι, χαλεποὺς δ' ἐν ταῖς μάχαις τοῖς ἐντυγχάνουσι τῶν ἐχθρῶν γιγνομένους. Παντάπασι μὲν οὖν. Φύσιν γάρ οἶμαί τινα τῶν φυλάκων τῆς ψυχῆς ἐλέγομεν ἅμα μὲν θυμοειδῆ ἅμα δὲ φιλόσοφον δεῖν εἶναι διαφερόντως, ἵνα πρὸς ἑκατέρους δύναιντο ὀρθῶς πρᾶοι καὶ χαλεποὶ γίγνεσθαι. Ναί. Τί δὲ τροφή; ἆρ' οὐ γυμναστικῇ καὶ μουσικῇ μαθήμασί τε, ὅσα προσήκει, τούτοις ἐν ἅπασι τεθράφθαι; Πάνυ μὲν οὖν. Τοὺς δέ γε οὕτω τραφέντας, ἐλέχθη που, μήτε χρυσὸν μήτε ἄργυρον μήτε μηδὲν ἄλλο ποτὲ κτῆμα ἑαυτῶν ἴδιον νομίζειν δεῖν, ἀλλ' ὡς ἐπικούρους μισθὸν λαμβάνοντας τῆς φυλακῆς παρὰ τῶν σωζομένων ὑπ' αὐτῶν, ὅσος σώφροσι μέτριος, ἀναλίσκειν τε δὴ κοινῇ καὶ ξυνδιαιτωμένους μετ' ἀλλήλων ζῆν, ἐπιμέλειαν ἔχοντας ἀρετῆς διὰ παντός, τῶν ἄλλων ἐπιτηδευμάτων ἄγοντας σχολήν. Ἐλέχθη καὶ ταῦτα ταύτῃ. Καὶ μὲν δὴ καὶ περὶ γυναικῶν ἐπεμνήσθημεν, ὡς τὰς φύσεις τοῖς ἀνδράσι παραπλησίας εἴη ξυναρμοστέον καὶ τὰ ἐπιτηδεύματα πάντα κοινὰ κατά τε πόλεμον καὶ κατὰ τὴν ἄλλην δίαιταν δοτέον πάσαις. Ταύτῃ καὶ ταῦτα ἐλέγετο. Τί δὲ δὴ τὸ περὶ τῆς παιδοποιίας; ἢ τοῦτο μὲν διὰ τὴν ἀήθειαν τῶν λεχθέντων εὐμνημόνευτον, ὅτι κοινὰ τὰ τῶν γάμων καὶ τὰ τῶν παίδων πᾶσιν ἁπάντων ἐτίθεμεν, μηχανωμένους ὅπως μηδείς ποτε τὸ γεγενημένον αὐτῷ ἰδίᾳ γνώσοιτο, νομιοῦσι δὲ πάντες

πάντας αὐτοὺς ὁμογενεῖς, ἀδελφὰς μὲν καὶ ἀδελφούς, ὅσοιπερ ἂν τῆς πρεπούσης ἐντὸς ἡλικίας γίγνωνται, τοὺς δὲ ἔμπροσθεν καὶ ἄνωθεν, γονέας τε καὶ γονέων προγόνους, τοὺς δὲ εἰς τὸ κάτωθεν, ἐκγόνους παῖδάς τε ἐκγόνων. Ναὶ καὶ ταῦτα εὐμνημόνευτα, ᾗ λέγεις. Ὅπως δὲ δὴ κατὰ δύναμιν εὐθὺς γίγνοινθ' ὡς ἄριστοι τὰς φύσεις, ἆρ' οὐ μεμνήμεθα, ὡς τοὺς ἄρχοντας ἔφαμεν καὶ τὰς ἀρχούσας δεῖν εἰς τὴν τῶν γάμων σύνερξιν λάθρᾳ μηχανᾶσθαι κλήροις τισίν, ὅπως οἱ κακοὶ χωρὶς οἵ τ' ἀγαθοὶ ταῖς ὁμοίαις ἑκάτεροι συλλήξονται, καὶ μή τις αὐτοῖς ἔχθρα διὰ ταῦτα γίγνηται, τύχην ἡγουμένοις αἰτίαν τῆς συλλήξεως. Μεμνήμεθα. Καὶ μὴν ὅτι γε τὰ μὲν τῶν ἀγαθῶν θρεπτέον ἔφαμεν εἶναι, τὰ δὲ τῶν κακῶν εἰς τὴν ἄλλην λάθρᾳ διαδοτέον πόλιν· ἐπαυξομένων δέ, σκοποῦντας ἀεὶ τοὺς ἀξίους πάλιν ἀνάγειν δεῖν, τοὺς δὲ παρὰ σφίσιν ἀναξίους εἰς τὴν τῶν ἐπανιόντων χώραν μεταλλάττειν. Οὕτως. Ἆρα οὖν διεληλύθαμεν ἤδη, καθάπερ χθές, ὡς ἐν κεφαλαίοις πάλιν ἐπανελθεῖν, ἢ ποθοῦμέν τι τῶν ῥηθέντων; Οὐδαμῶς.

10 Πλάτωνος ἐκ τοῦ Μίνωος (p. 317 c).

Οὐκ οὖν καὶ ἐν τοῖς συγγράμμασι τοῖς περὶ τῶν δικαίων καὶ ἀδίκων καὶ ὅλως περὶ πόλεως διακοσμήσεως καὶ περὶ τοῦ ὡς χρὴ πόλιν διοικεῖν, τὸ μὲν ὀρθὸν νόμος ἐστὶ βασιλικός, τὸ δὲ μὴ ὀρθὸν οὐ δοκεῖ νόμος εἶναι βασιλικὸς τοῖς μὴ εἰδόσιν· ἔστι γὰρ ἄνομον. Ναί. Ὀρθῶς ἄρα ὡμολογήσαμεν νόμον εἶναι τοῦ ὄντος εὕρεσιν. Φαίνεται. Ἔτι δὲ καὶ τόδε ἐν αὐτῷ θεασώμεθα· τίς ἐπιστήμων διανεῖμαι ἐπὶ γῇ τὰ σπέρματα; Γεωργός. Οὗτος δὲ τὰ ἄξια σπέρματα ἑκάστῃ γῇ διανέμει; Ναί. Ὁ γεωργὸς ἄρα νομεὺς

ἀγαθὸς τούτων, καὶ οἱ τούτου νόμοι καὶ διανομαὶ ἐπὶ τὰ αὐτὰ ὀρθαί εἰσιν; Ναί.

11 *Τίς δὲ τὴν τῶν προβάτων ἀγέλην κράτιστος νέμειν, τί ὄνομα αὐτῷ; Ποιμήν. Οἱ τοῦ ποιμένος ἄρα νόμοι ἄριστοι τοῖς προβάτοις; Ναί. Οἱ δὲ τοῦ βουκόλου τοῖς βουσί; Ναί. Οἱ δὲ τοῦ τίνος νόμοι ἄριστοι ταῖς ψυχαῖς τῶν ἀνθρώπων; οὐχ οἱ τοῦ βασιλέως; φάθι. Φημὶ δή.* Plato Min. p. 318 a.

12 *Στωϊκῶν.*

Τόν τε νόμον σπουδαῖον εἶναί φασι λόγον ὀρθὸν ὄντα, προστακτικὸν μὲν τῶν ποιητέον, ἀπαγορευτικὸν δὲ τῶν οὐ ποιητέον. τοῦ δὲ νόμου ἀστείου ὄντος καὶ ὁ νόμιμος ἀστεῖος ἂν εἴη· νόμιμον μὲν γὰρ εἶναι ἄνδρα καὶ ἀκολουθητικὸν τῷ νόμῳ καὶ πρακτικὸν τῶν ὑπ᾽ αὐτοῦ προστασσομένων· νομικὸν δὲ τὸν ἐξηγητικὸν τοῦ νόμου· μηδένα δὲ τῶν φαύλων μήτε νόμιμον εἶναι μήτε νομικόν.

13 *Αἰσχίνου ἐκ τοῦ κατὰ Τιμάρχου* (p. 55 R).

Οὐδ᾽ ὡς ᾤετο δεῖν ὁ νομοθέτης τὸν ῥήτορα ἥκειν ἐπὶ τὸ βῆμα τῶν λόγων ἐπιμεληθέντα πρότερον, ἀλλὰ τοῦ βίου.

14 *Δημοκρίτου.*

Κρέσσον ἄρχεσθαι τοῖσι ἀνοήτοισι ἢ ἄρχειν.

15 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Δίκη μὲν ἐστὶν ἔρδειν τὰ χρέοντα, ἀδικίη δὲ μὴ ἔρδειν τὰ χρέοντα, ἀλλὰ παρατρέπεσθαι.

16 *Κατὰ δὲ ζωίων ἔστιν ὧν φόνου καὶ μὴ φόνου ὧδε ἔχει· τὰ ἀδικέοντα καὶ θέλοντα ἀδικέειν ἀθῶιος*

ὁ κτείνων, καὶ πρὸς εὐεστοῦν τοῦτο ἔρδειν μᾶλλον ἢ μή.

17 Κτείνειν χρὴ τὰ πημαίνοντα παρὰ δίκην πάντα περὶ παντός· καὶ ταῦτα ὁ ποιέων ἐπιθυμίης καὶ δίκης καὶ θάρσεος καὶ κτήσιος ἐν παντὶ κόσμῳ μείζω μοῖραν μετέξει.

18 Ὅκωσπερ περὶ κιναδέων τε καὶ ἑρπετέων γεγράφαται τῶν πολεμίων, οὕτω καὶ κατὰ ἀνθρώπων δοκέει μοι χρεὼν εἶναι ποιέειν· κατὰ νόμους τοὺς πατρίους κτείνειν πολέμιον ἐν παντὶ κόσμῳ, ἐν ᾧ μὴ νόμος ἀπείργει· νόμος δὲ ἀπείργει, ἱερὰ ἑκάστοισι ἐπιχώρια καὶ σπονδαὶ καὶ ὅρκοι.

19 Κιξάλλην καὶ λῃστὴν πάντα κτείνων τις ἀθώιος ἂν εἴη, καὶ αὐτοχειρίῃ καὶ κελεύων καὶ ψήφῳ.

20. 21 Ζαλεύκου προοίμιον νόμων.

Τοὺς κατοικοῦντας τὴν πόλιν καὶ τὴν χώραν πάντας πρῶτον πεπεῖσθαι χρὴ καὶ νομίζειν θεοὺς εἶναι, καὶ ἀναβλέποντας ἐς οὐρανὸν καὶ τὸν κόσμον καὶ τὴν ἐν αὐτοῖς διακόσμησιν καὶ τάξιν· οὐ γὰρ τύχης οὐδ' ἀνθρώπων εἶναι δημιουργήματα· σέβεσθαι δὲ τούτους καὶ τιμᾶν, ὡς αἰτίους ὄντας ἁπάντων ἡμῖν ἀγαθῶν τῶν κατὰ λόγον γιγνομένων. ἕκαστον οὖν ἔχειν καὶ παρασκευάζειν δεῖ τὴν αὑτοῦ ψυχὴν πάντων τῶν κακῶν καθαράν· ὡς οὐ τιμᾶται θεὸς ὑπ' ἀνθρώπου φαύλου, οὐδὲ θεραπεύεται δαπάναις οὐδὲ τραγῳδίαις τῶν ἀναλισκομένων, καθάπερ μοχθηρὸς ἄνθρωπος, ἀλλ' ἀρετῇ καὶ προαιρέσει τῶν καλῶν ἔργων καὶ δικαίων. διὸ ἕκαστον δεῖ εἰς δύναμιν ἀγαθὸν εἶναι καὶ πράξει καὶ προαιρέσει τὸν μέλλοντα ἔσεσθαι θεοφιλῆ, καὶ μὴ φοβεῖσθαι τὰς εἰς χρήματα ζημίας μᾶλλον τῶν

εἰς αἰσχύνην τεινόντων· καὶ πολίτην ἀμείνονα ὀνομάζειν τὸν τὴν οὐσίαν προϊέμενον μᾶλλον τοῦ καλοῦ καὶ δικαίου. ὅσοις δὲ μὴ ῥᾴδιον πρὸς ταῦτα τὴν ὁρμὴν πεπεῖσθαι, τὴν δὲ ψυχὴν ἔχουσιν εὐκίνητον πρὸς ἀδικίαν, ὧδ' ἡμῖν παρηγγέλθω πᾶσι τοῖς τοιούτοις πολίταις καὶ πολίτισι καὶ ξυνοίκοις, μεμνῆσθαι θεῶν ὡς ὄντων καὶ δίκας ἐπιπεμπόντων τοῖς ἀδίκοις· καὶ τίθεσθαι πρὸ ὀμμάτων τὸν καιρὸν τοῦτον, ἐν ᾧ γίνεται τὸ τέλος ἑκάστῳ τῆς ἀπαλλαγῆς τοῦ ζῆν· πᾶσι γὰρ ἐμπίπτει μεταμέλεια τοῖς μέλλουσι τελευτᾶν, μεμνημένοις ὧν ἠδικήκασι, καὶ ὁρμὴ τοῦ βούλεσθαι πάντα πεπρᾶχθαι δικαίως αὐτοῖς. διὸ δεῖ ἕκαστον παρ' ἑκάστην πρᾶξιν ἀεὶ συνοικειοῦν τὸν καιρὸν τοῦτον ὡς δὴ παρόντα· οὕτω γὰρ ἂν μάλιστα τοῦ καλοῦ καὶ τοῦ δικαίου φροντιεῖν. ἐὰν δέ τῳ παραστῇ δαίμων κακὸς τρέπων πρὸς ἀδικίαν, διατρίβειν πρὸς ναοῖς καὶ βωμοῖς καὶ τεμένεσι, φεύγοντα τὴν ἀδικίαν ὡς δέσποιναν ἀσεβεστάτην καὶ χαλεπωτάτην, ἱκετεύοντα τοὺς θεοὺς συναποτρέπειν αὐτήν. ἰέναι δὲ καὶ πρὸς ἄνδρας δόξαν ἔχοντας ἐπ' ἀνδραγαθίᾳ, ἀκουσόμενον περὶ εὐδαίμονος βίου καὶ κακῶν ἀνδρῶν τιμωρίας, ἵνα ἀποτρέπηται τῶν ἀδίκων ἔργων δεισιδαιμονῶν δαίμονας ἀλάστορας. πάντας δὲ τιμῶν τοῖς οἱ κατοικοῦντες τὴν πόλιν καὶ τοῖς ἄλλοις νομίμοις τοῖς πατρίοις τοὺς θεούς· πάτρια δὲ εἶναι τὰ κάλλιστα. πεπεῖσθαι δὲ τοῖς νόμοις ἅπαντας καὶ τοὺς ἄρχοντας αἰδεῖσθαι καὶ ἐξίστασθαι καὶ ποιεῖν τὸ παραγγελλόμενον· ὡς μετὰ θεοὺς καὶ δαίμονας καὶ ἥρωας γονεῖς τε καὶ νόμοι καὶ ἄρχοντες σύνεγγύς εἰσι ταῖς τιμαῖς παρ' ἀνθρώποις νοῦν ἔχουσι καὶ σωθησομένοις. πόλιν δὲ φιλαιτέραν μηδεὶς ἄλλην ποιείσθω τῆς αὑτοῦ πατρίδος, ὡς θεῶν πατρῴων νεμεσώντων·

ἀρχὴ γὰρ προδοσίας φύεται τοῖς τοιαῦτα βουλομένοις. ἔτι δὲ χαλεπώτερον τῆς οἰκείας γῆς στερόμενον ζῆν ἐπ' ἀλλοτρίας· οὐδὲν γάρ ἐστιν οἰκειότερον πατρίδος. μηδὲ ἐχθρὸν ἀκατάλλακτον μηδεὶς μηδένα νομιζέτω τῶν πολιτῶν, οἷς ἐφείκασιν οἱ νόμοι μετέχειν τῆς πολιτείας· ὡς ὁ τοιοῦτος οὔτε ἄρξαι δύναιτ' ἂν οὔτε δικάσαι καλῶς, τὸν θυμὸν ἔχων κυριώτερον τοῦ λογισμοῦ. μηδεὶς δὲ λεγέτω κακῶς μήτε κοινῇ τὴν πόλιν μήτε ἰδίᾳ τὸν πολίτην· ἀλλ' οἱ τῶν νόμων φύλακες ἐπιμελείσθωσαν τῶν πλημμελούντων, πρῶτον μὲν νουθετοῦντες, ἐὰν δὲ μὴ πείθωνται, ζημιοῦντες. τῶν δὲ κειμένων νόμων ἐάν τις δοκῇ μὴ καλῶς κεῖσθαι, μετατιθέναι ἐπὶ τὸ βέλτιον· μενόντων δέ, πάντας πειθαρχεῖν· ὡς ὑπ' ἀνθρώπων μὲν ἡττᾶσθαι τοὺς κειμένους νόμους οὐ καλὸν οὐδὲ συμφέρον, ὑπὸ δὲ νόμου βελτίονος ἡττώμενον κατακρατεῖσθαι καὶ καλὸν καὶ συμφέρον. τοὺς δὲ ταῦτα παραβαίνοντας χρὴ καὶ κολάζειν ὡς κατασκευάζοντας τῇ πόλει μεγίστων κακῶν ἀρχήν, ἀναρχίαν. ἄρχοντας δὲ μὴ εἶναι αὐθάδεις, μηδὲ πρὸς ἐπήρειαν κρίνειν, μηδὲ μεμνῆσθαι κρίνοντας φιλίας ἢ ἔχθρας, ἀλλὰ τοῦ δικαίου· οὕτω γὰρ ἀποδώσουσι τὰς κρίσεις δικαιοτάτας καὶ τῆς ἀρχῆς ἔσονται ἄξιοι. τοὺς μὲν οὖν δούλους προσήκει διὰ φόβον πράττειν τι τῶν δικαίων, τοὺς δ' ἐλευθέρους δι' αἰδῶ καὶ τὸ καλόν· διὸ χρὴ καὶ τοὺς ἄρχοντας εἶναι τοιούτους, ἵν' ἔχωσιν οἱ ἀρχόμενοι τοὺς ἀξίους αἰσχύνης. ἐὰν δέ τις βούληται τῶν κειμένων νόμων κινεῖν ἢ ἄλλον εἰσφέρειν νόμον, εἰς βρόχον εἴρας τὸν τράχηλον λεγέτω τοῖς πολίταις περὶ αὐτοῦ· καὶ ἐὰν μὲν διαψηφιζομένων δόξη λελύσθαι τὸν νόμον ἢ ὑπάρχειν τὸν εἰσφερόμενον, καὶ αὐτὸν ἀθῷον εἶναι· ἐὰν δὲ ὁ προϋπάρχων μᾶλλον δοκῇ καλῶς ἔχειν ἢ ὁ

εἰσφερόμενος ᾖ ἄδικος, τεθνάναι τὸν κινοῦντα ἢ εἰσφέροντα νόμον, ἐπισπασθέντος τοῦ βρόχου.

22 Ἐκ τῶν Θεοφράστου περὶ συμβολαίων.

Οἳ μὲν οὖν ὑπὸ κήρυκος κελεύουσι πωλεῖν καὶ προκηρύττειν ἐκ πλειόνων ἡμερῶν, οἳ δὲ παρ' ἀρχῇ τινι, καθάπερ καὶ Πιττακὸς παρὰ βασιλεῦσι καὶ πρυτάνει. ἔνιοι δὲ προγράφειν παρὰ τῇ ἀρχῇ πρὸ ἡμερῶν μὴ ἔλαττον ἢ ἑξήκοντα, καθάπερ Ἀθήνησι, καὶ τὸν πριάμενον ἑκατοστὴν τιθέναι τῆς τιμῆς, ὅπως διαμφισβητῆσαί τε ἐξῇ καὶ διαμαρτύρασθαι τῷ βουλομένῳ, καὶ ὁ δικαίως ἐωνημένος φανερὸς ᾖ τῷ τέλει. παρὰ δὲ τισὶ προκηρύττειν κελεύουσι πρὸ τοῦ κατακυρωθῆναι πένθ' ἡμέρας συνεχῶς, εἴ τις ἐνίσταται ἢ ἀντιποιεῖται τοῦ κτήματος ἢ τῆς οἰκίας· ὡσαύτως δὲ καὶ ἐπὶ τῶν ὑποθέσεων, ὥσπερ καὶ ἐν τοῖς Κυζικηνῶν. οἱ δὲ Θουριακοὶ τὰ μὲν τοιαῦτα πάντα ἀφαιροῦσιν, οὐδ' ἐν ἀγορᾷ προστάττουσιν, ὥσπερ τἄλλα, διδόναι δὲ κελεύουσι κοινῇ τῶν γειτόνων τῶν ἐγγυτάτω τρισὶ νόμισμά τι βραχὺ μνήμης ἕνεκα καὶ μαρτυρίας. ἀναγκαῖον δηλονότι τοῖς μὲν τὰς ἀρχὰς ὑπευθύνους ποιεῖν, τοῖς δὲ τοὺς γείτονας, ἐὰν μὴ λάβωσιν ἢ δὶς παρὰ τοῦ αὐτοῦ λάβωσιν ἢ ἔχοντες μὴ λέγωσι τῶν ἐωνημένων. οὐ χρὴ δ' ἀγνοεῖν, ὅτι αἱ προγραφαὶ καὶ αἱ προκηρύξεις καὶ ὅλως ὅσα πρὸς τὰς ἀμφισβητήσεις ἐστὶ πάντ' ἢ τὰ πλεῖστα δι' ἔλλειψιν ἑτέρου νόμου τίθεται· παρ' οἷς γὰρ ἀναγραφὴ τῶν κτημάτων ἐστὶ καὶ τῶν συμβολαίων, ἐξ ἐκείνων ἔστι μαθεῖν εἰ ἐλεύθερα καὶ ἀνέπαφα καὶ τὰ αὑτοῦ πωλεῖ δικαίως· εὐθὺς γὰρ καὶ μετεγγράφει ἡ ἀρχὴ τὸν ἐωνημένον. ἐπεὶ δὲ καὶ προστασίαι τινὲς ὠνοῦνται καὶ πωλοῦσιν, ἀπαλλοτριοῦν ἐθέλου-

τες, ὀρθῶς ἔχει καὶ πρὸς ταῦτα νομοθετεῖν, ὅπερ καὶ ποιοῦσιν, ἅμα ταῦτά τε βουλόμενοι κωλύειν καὶ τὴν [ἀπάτην] ἐμφανῆ ποιεῖν, ὥσπερ ἐν τοῖς Αἰνίων. κελεύουσι γάρ, ἐὰν μέν τις οἰκίαν πρίηται, θύειν ἐπὶ τοῦ Ἀπόλλωνος τοῦ ἐπικωμαίου, ἐὰν δὲ χωρίον ἐπὶ τῆς κώμης ᾗ αὐτὸς οἰκεῖ, καὶ ὀμνύειν ἐναντίον τῆς ἀρχῆς ἐγγραφούσης καὶ κωμητῶν τριῶν, ἦ μὴν ὠνεῖσθαι δικαίως, μηδὲν συγκακουργοῦντα μήτε τέχνῃ μήτε μηχανῇ μηδεμιᾷ· τὸν αὐτὸν δὲ τρόπον καὶ τὸν πωλοῦντα πωλεῖν ἀδόλως· τὸν δὲ μὴ οἰκοῦντα ἐν ἄστει θύειν τὸν ὅρκον ἐπὶ τοῦ Διὸς τοῦ ἀγοραίου, τὴν δὲ θυσίαν τῶν ἐλαττόνων εἶναι θυλήμασιν, ἄνευ δὲ τούτων μὴ ἐγγράφειν τὴν ἀρχήν· ἅμα καὶ ἐν τῷ ὅρκῳ προσορκίζειν αὐτήν, ἐὰν μὴ ὀμνύωσι, μηδὲ ἐγγράψειν τὴν ὠνήν. οὗτοι μὲν δὴ πρὸς ἀμφότερα, μᾶλλον δὲ πρὸς πάντα βούλονται πεφυλάχθαι, καθάπερ ἴσως καὶ δεῖ. κυρία δὲ ἡ ὠνὴ καὶ ἡ πρᾶσις εἰς μὲν κτῆσιν, ὅταν ἡ τιμὴ δοθῇ, καὶ τἀκ τῶν νόμων ποιήσωσιν, οἷον ἀναγραφὴν ἢ ὅρκον ἢ τοῖς γείτοσι τὸ γιγνόμενον· εἰς δὲ τὴν παράδοσιν καὶ εἰς αὐτὸ τὸ πωλεῖν, ὅταν ἀρραβῶνα λάβῃ· σχεδὸν γὰρ οὕτως οἱ πολλοὶ νομοθετοῦσιν· ἀλλὰ τοῦτο προσδιοριστέον, ἐὰν μὴ παρὰ μεθύοντος, μηδ᾽ ἐξ ὀργῆς, μηδὲ φιλονεικίας, μηδὲ παρανοοῦντος, ἀλλὰ φρονοῦντος, καὶ τὸ ὅλον δικαίως, ὅπερ κἀκεῖ προσθετέον, ὅταν ἀφορίζῃ παρ᾽ ὧν δεῖ ὠνεῖσθαι. ἔοικε γὰρ ἐκ καιροῦ τὰ τοιαῦτα καὶ πάθους γίγνεσθαι· δεῖ δ᾽ ἐκ προαιρέσεως· οὕτω γὰρ ἔσται τὸ δίκαιον. τάττουσι δὲ τινὲς καὶ τὸν ἀρραβῶνα πόσον δεῖ διδόναι, πρὸς τὸ πλῆθος τῆς τιμῆς μερίζοντες· ἄτοπον γὰρ ἐὰν δακτύλιον δῷ τῶν δέκα ταλάντων. ἐὰν δὲ λαβὼν ἀρραβῶνα μὴ δέχηται τὴν

τιμὴν ἢ δοὺς μὴ καταβάλῃ ἐν τῷ ὡρισμένῳ χρόνῳ· δεῖ γὰρ ὡρίσθαι, καθάπερ ἐν τοῖς Θουρίων τὸν μὲν ἀρραβῶνα παραχρῆμα τὴν δὲ τιμὴν αὐθημερόν, οἱ δὲ καὶ πλείους ἡμέρας τίθενται τῆς τιμῆς, οἱ δ' ἁπλῶς ὅσας ἂν ὁμολογήσωσι· τὸ δ' ἐπιτίμιον ἑκατέρῳ, πότερον τῷ μὲν στέρησις τοῦ ἀρραβῶνος; οὕτω γὰρ σχεδὸν οἵ τ' ἄλλοι κελεύουσι καὶ οἱ Θουριακοί· τῷ δὲ μὴ δεχομένῳ ἔκτισις ὅσου ἂν ἀποδῶται; καὶ γὰρ τοῦτο ἐν τοῖς Θουρίων, ἢ ἄνισος ζημία· πολλαπλασία γὰρ ἡ τιμὴ τοῦ ἀρραβῶνος· ἔτι δὲ καὶ βλάπτοιτ' ἂν ὁ ἀποδόμενος ἀφεὶς ἑκατέρους, ἐπειδή τις ἐφ' ἡμέραν μίαν ὁρίσειεν· οὕτω γὰρ μάλιστ' ἐνδέχεται παρ' ἐνίοις, δεδικάσθαι κελεύουσι τῷ μὴ δεχομένῳ τὴν τιμήν. πότερον δὲ ἕως ἂν κομίσηται κύριον εἶναι τοῦ κτήματος; οὕτω γὰρ οἱ πολλοὶ νομοθετοῦσιν· ἢ ὥσπερ Χαρώνδας καὶ Πλάτων; οὗτοι γὰρ παραχρῆμα κελεύουσι διδόναι καὶ λαμβάνειν, ἐὰν δέ τις πιστεύσῃ, μὴ εἶναι δίκην, αὐτὸν γὰρ αἴτιον εἶναι τῆς ἀδικίας.

22 a *Πλάτωνος ἐκ τῆς πρὸς τοὺς οἰκείους Δίωνος ἐπιστολῆς* (355 a).

Δέξασθε, ὦ Συρακόσιοι, πάντων πρῶτον νόμους, οἵ τινες ἐὰν ὑμῖν φαίνωνται μὴ πρὸς χρηματισμὸν καὶ πλοῦτον τρέψοντες τὰς γνώμας ὑμῶν μετ' ἐπιθυμίας, ἀλλ' ὄντων τριῶν, ψυχῆς καὶ σώματος ἔτι δὲ χρημάτων, τὴν τῆς ψυχῆς ἀρετὴν ἐντιμοτάτην ποιοῦντες, δευτέραν δὲ τὴν τοῦ σώματος ὑπὸ τῇ τῆς ψυχῆς κειμένην· τρίτην δὲ καὶ ὑστάτην τὴν τῶν χρημάτων τιμὴν δουλεύουσαν τῷ σώματί τε καὶ τῇ ψυχῇ. καὶ ὁ μὲν ταῦτα ἀπεργαζόμενος θεσμός, νόμος ἂν ὀρθῶς ὑμῖν εἴη κείμενος, ὄντως εὐδαίμονας

ἀποτελῶν τοὺς χρωμένους· ὁ δὲ τοὺς πλουσίους εὐδαίμονας ὀνομάζων λόγος, αὐτός τε ἄθλιος γυναικῶν καὶ παίδων ὢν λόγος ἄνους, τοὺς πειθομένους τε ἀπεργάζεται τοιούτους. ὅτι δ' ἀληθῆ ταῦτ' ἐγὼ παρακελεύομαι, ἐὰν γεύσησθε τῶν νῦν λεγομένων περὶ νόμων, ἔργῳ γνώσεσθε· ἡ δὲ βάσανος ἀληθεστάτη δοκεῖ γίνεσθαι τῶν πάντων πέρι.

23 Ξενοφῶντος ἐκ τῆς Κύρου παιδείας (I, 2, 1).

Φῦναι δὲ ὁ Κῦρος λέγεται καὶ ᾄδεται ἔτι καὶ νῦν ὑπὸ τῶν βαρβάρων εἶδος μὲν κάλλιστος, ψυχὴν δὲ φιλανθρωπότατος καὶ φιλομαθέστατος καὶ φιλοτιμότατος, ὥστε πάντα μὲν πόνον ἀνατλῆναι πάντα δὲ κίνδυνον ὑπομεῖναι τοῦ ἐπαινεῖσθαι ἕνεκα. φύσιν μὲν δὴ τῆς ψυχῆς καὶ τῆς μορφῆς τοιαύτην ἔχων διαμνημονεύεται· ἐπαιδεύθη γε μὴν ἐν Περσῶν νόμοις. οὗτοι δὲ δοκοῦσιν οἱ νόμοι ἄρχεσθαι, τοῦ κοινοῦ ἀγαθοῦ ἐπιμελούμενοι, οὐκ ἔνθεν ὅθεν περ ἐν ταῖς πλείσταις πόλεσιν ἄρχονται· αἱ μὲν γὰρ πλεῖσται πόλεις ἀφεῖσαι παιδεύειν ὅπως τις ἐθέλει τοὺς ἑαυτοῦ παῖδας, καὶ αὐτοὺς τοὺς πρεσβυτέρους ὅπως ἐθέλουσι διάγειν, ἔπειτα προστάττουσιν αὐτοῖς μὴ κλέπτειν μηδ' ἁρπάζειν, μὴ βίᾳ εἰς οἰκίαν παριέναι, μὴ παίειν ὃν μὴ δίκαιον, μὴ μοιχεύειν, μὴ ἀπειθεῖν ἄρχοντι, καὶ τἄλλα τὰ τοιαῦτα ὡσαύτως· ἐὰν δέ τις τούτων παραβαίνῃ τι, ζημίας αὐτοῖς ἐπανέθεσαν. οἱ δὲ Περσικοὶ νόμοι προλαβόντες ἐπιμελοῦνται ὅπως τὴν ἀρχὴν μὴ τοιοῦτοι ἔσονται οἱ πολῖται, οἷοι πονηροῦ τινος ἢ αἰσχροῦ ἔργου ἐφίεσθαι. ἐπιμέλονται δὲ δὴ ὧδε· ἔστιν αὐτοῖς ἐλευθέρα ἀγορὰ καλουμένη, ἔνθα τά τε βασίλεια καὶ τὰ ἄλλα ἀρχεῖα πεποίηται. ἐντεῦθεν

τὰ μὲν ὤνια καὶ οἱ ἀγοραῖοι καὶ αἱ τούτων φωναὶ καὶ ἀπειροκαλίαι ἀπελήλανται εἰς ἄλλον τόπον, ὡς μὴ μιγνύηται ἡ τούτων τύρβη τῇ τῶν πεπαιδευμένων εὐκοσμίᾳ. διῄρηται δὲ αὕτη ἡ ἀγορὰ ἡ περὶ τὰ ἀρχεῖα εἰς τέσσαρα μέρη· τούτων δ' ἐστὶν ἓν μὲν παισίν, ἓν δὲ ἐφήβοις, ἄλλο δὲ τελείοις ἀνδράσιν, ἄλλο δὲ τοῖς ὑπὲρ τὰ στρατεύσιμα ἔτη γεγονόσι. νόμῳ δὲ εἰς τὰς ἑαυτῶν χώρας ἕκαστοι τούτων παριᾶσιν· οἱ μὲν παῖδες ἅμα τῇ ἡμέρᾳ καὶ οἱ τέλειοι ἄνδρες, οἱ δὲ γεραίτεροι ἡνίκ' ἂν ἑκάστῳ προχωρῇ πλὴν ἐν ταῖς τεταγμέναις ἡμέραις αἷς αὐτοὺς δεῖ παρεῖναι, οἱ δὲ ἔφηβοι καὶ κοιμῶνται περὶ τὰ ἀρχεῖα σὺν τοῖς γυμνικοῖς ὅπλοις πλὴν τῶν γεγαμηκότων· οὗτοι δὲ οὔτε ἐπιζητοῦνται, ἂν μὴ προρρηθῇ παρεῖναι, οὔτε πολλάκις ἀπεῖναι καλόν. ἄρχοντες δὲ ἐφ' ἑκάστοις τούτων τῶν μερῶν εἰσι δώδεκα· δώδεκα γὰρ καὶ φυλαὶ Περσῶν διῄρηνται· καὶ ἐπὶ μὲν τοῖς παισὶν ἐκ τῶν γεραιτέρων ᾑρημένοι εἰσὶν οἳ ἂν δοκῶσι τοὺς παῖδας βελτίστους ἀποδεικνύναι· ἐπὶ δὲ τοῖς ἐφήβοις ἐκ τῶν τελείων ἀνδρῶν οἳ ἂν αὖ τοὺς ἐφήβους βελτίστους δοκῶσι παρέξειν, ἐπὶ δὲ τοῖς τελείοις ἀνδράσιν οἳ ἂν δοκῶσι παρέχειν αὐτοὺς μάλιστα τὰ τεταγμένα ποιοῦντας καὶ τὰ παραγγελλόμενα ὑπὸ τῆς μεγίστης ἀρχῆς· εἰσὶ καὶ τῶν γεραιτέρων προστάται ᾑρημένοι, οἳ προστατεύουσιν ὅπως καὶ οὗτοι τὰ καθήκοντα ἀποτελῶσιν. ἃ δὲ ἑκάστῃ τῇ ἡλικίᾳ προστέτακται ποιεῖν, διηγησόμεθα, ὡς μᾶλλον δῆλον γένηται, ᾗ ἐπιμέλονται ὡς ἂν βέλτιστοι εἶεν οἱ πολῖται. οἱ μὲν δὴ παῖδες οἱ εἰς τὰ διδασκαλεῖα φοιτῶντες διάγουσι μανθάνοντες δικαιοσύνην, καὶ λέγουσιν ὅτι ἐπὶ τούτῳ ἔρχονται, ὥσπερ παρ' ἡμῖν οἱ τὰ γράμματα μαθησόμενοι· οἱ δὲ ἄρχοντες αὐτῶν διατελοῦσι

τὸ πλεῖστον τῆς ἡμέρας δικάζοντες αὐτοῖς· γίγνεται γὰρ δὴ πρὸς ἀλλήλους καὶ παισὶν ὥσπερ ἀνδράσιν ἐγκλήματα, καὶ κλοπῆς καὶ ἁρπαγῆς καὶ βίας καὶ ἀπάτης καὶ κακολογίας καὶ ἄλλων οἵων εἰκός. οὓς δ' ἂν γνῶσι τούτων τι ἀδικοῦντας, τιμωροῦνται· κολάζουσι δὲ καὶ οὓς ἂν ἀδίκως ἐγκαλοῦντας εὑρίσκωσι· δικάζουσι δὲ καὶ ἐγκλήματος, οὗ ἕνεκα ἄνθρωποι μισοῦσι μὲν ἀλλήλους μάλιστα, δικάζονται δὲ [οὐχ] ἥκιστα, ἀχαριστίας· καὶ ὃν ἂν γνῶσι δυνάμενον μὲν χάριν ἀποδοῦναι μὴ ἀποδιδόντα δέ, κολάζουσι τοῦτον ἰσχυρῶς. οἴονται γὰρ τοὺς ἀχαρίστους καὶ περὶ θεοὺς ἂν μάλιστα ἀμελῶς ἔχειν καὶ περὶ γονέας καὶ περὶ πατρίδα καὶ περὶ φίλους. ἕπεσθαι δὲ δοκεῖ μάλιστα τῇ ἀχαριστίᾳ ἡ ἀναισχυντία· καὶ γὰρ αὕτη δοκεῖ εἶναι μεγίστη ἐπὶ πάντα τὰ αἰσχρὰ ἡγεμών. διδάσκουσι δὲ τοὺς παῖδας καὶ σωφροσύνην· μέγα δὲ συμβάλλεται καὶ εἰς τὸ μανθάνειν σωφρονεῖν αὐτούς, ὅτι καὶ τοὺς πρεσβυτέρους ὁρῶσιν ἀνὰ πᾶσαν ἡμέραν σωφρόνως διάγοντας. διδάσκουσι δὲ καὶ πείθεσθαι αὐτοὺς τοῖς ἄρχουσι· μέγα δὲ καὶ εἰς τοῦτο συμβάλλεται, ὅτι ὁρῶσι καὶ τοὺς πρεσβυτέρους πειθομένους ἰσχυρῶς τοῖς ἄρχουσι. διδάσκουσι δὲ καὶ ἐγκρατεῖς εἶναι καὶ γαστρὸς καὶ ποτοῦ· μέγα δὲ καὶ εἰς τοῦτο συμβάλλεται, ὅτι ὁρῶσι τοὺς πρεσβυτέρους οὐ πρόσθεν ἀπιόντας γαστρὸς ἕνεκα πρὶν ἂν ἀφῶσιν οἱ ἄρχοντες, καὶ ὅτι οὐ παρὰ μητρὶ σιτοῦνται οἱ παῖδες, ἀλλὰ παρὰ τῷ διδασκάλῳ ὅταν οἱ ἄρχοντες σημήνωσιν. φέρονται δὲ οἴκοθεν σῖτον μὲν ἄρτους, ὄψον δὲ κάρδαμον, πιεῖν δ' ἐάν τις διψῇ, κώθωνα ὡς ἀπὸ τοῦ ποταμοῦ ἀρύσασθαι. πρὸς δὲ τούτοις μανθάνουσι καὶ τοξεύειν καὶ ἀκοντίζειν. μέχρι μὲν δὴ ἓξ ἢ ἑπτακαίδεκα ἐτῶν ἀπὸ

γενεᾶς οἱ παῖδες ταῦτα πράττουσιν· ἐκ τούτου δ' εἰς τοὺς ἐφήβους ἐξέρχονται. οὗτοι δὲ αὖ οἱ ἔφηβοι διάγουσιν ὧδε· δέκα ἔτη, ἀφ' οὗ ἂν ἐκ παίδων ἐξέλθωσι, κοιμῶνται μὲν περὶ τὰ ἀρχεῖα, ὥσπερ προείρηται, καὶ φυλακῆς ἕνεκα τῆς πόλεως καὶ σωφροσύνης· δοκεῖ γὰρ αὕτη ἡ ἡλικία ἐπιμελείας μάλιστα δεῖσθαι· παρέχουσι δὲ καὶ τὴν ἡμέραν ἑαυτοὺς μάλιστα τοῖς ἄρχουσι χρῆσθαι, ἄν τι δέωνται ὑπὲρ τοῦ κοινοῦ· καὶ ὅταν μὲν δέῃ τι, πάντες μένουσι περὶ τὰ ἀρχεῖα, ὅταν δὲ ἐξάρῃ βασιλεὺς ἐπὶ θήραν, τὰς ἡμισείας φυλὰς καταλείπει· ποιεῖ δὲ τοῦτο πολλάκις τοῦ μηνός. ἔχειν δὲ δεῖ τοὺς ἐξιόντας τόξα καὶ παρὰ τὴν φαρέτραν ἐν κολεῷ κοπίδα ἢ σάγαριν, ἔτι δὲ γέρρον καὶ παλτὰ δύο· ὥστε τὸ μὲν ἀφιέναι, τὸ δὲ ἐὰν δέῃ ἐκ χερὸς χρῆσθαι. διὰ τοῦτο δὲ δημοσίᾳ τοῦ θηρᾶν ἐπιμέλονται, καὶ βασιλεὺς ὥσπερ καὶ ἐν πολέμῳ ἡγεμὼν αὐτοῖς ἐστὶ καὶ αὐτός τε θηρᾷ καὶ τῶν ἄλλων ἐπιμελεῖται, ὅπως ἂν θηρῶσιν· ὅτι ἀληθεστάτη αὐτοῖς δοκεῖ αὕτη ἡ μελέτη τῶν πρὸς τὸν πόλεμον εἶναι. καὶ γὰρ πρῲ ἀνίστασθαι ἐθίζει καὶ ψύχη καὶ θάλπη ἀνέχεσθαι· γυμνάζει δὲ καὶ ὁδοιπορίαις καὶ δρόμοις· ἀνάγκη δὲ καὶ τοξεῦσαι θηρίον καὶ ἀκοντίσαι ὅπου ἂν παραπίπτῃ· καὶ τὴν ψυχὴν δὲ πολλάκις ἀνάγκη θήγεσθαι ἐν τῇ θήρᾳ, ὅταν τι τῶν ἀλκίμων θηρίων ἀντιστῆται· παίειν μὲν γὰρ δήπου δεῖ τὸ ὁμόσε γινόμενον, φυλάξασθαι δὲ τὸ ἐπιφερόμενον· ὥστε οὐ ῥᾴδιον εὑρεῖν τι ἐν τῇ θήρᾳ, ὃ ἄπεστι τῶν ἐν τῷ πολέμῳ παρόντων. ἐξέρχονται δὲ ἐπὶ τὴν θήραν ἄριστον ἔχοντες πλέον μὲν ὡς καὶ εἰκότως παίδων, τἆλλα δ' ὅμοιον. καὶ θηρῶντες μὲν οὐκ ἂν ἀριστήσαιεν· ἢν δέ τι δεήσῃ θηρίου ἕνεκα ἐπικαταμεῖναι ἢ ἄλλως βουληθῶσι διατρῖψαι περὶ

τὴν θήραν, τὸ ἄριστον τοῦτο δειπνήσαντες τῇ ὑστεραίᾳ [αὖ] θηρῶσι μέχρι δείπνου, καὶ μίαν ἄμφω τούτω τὼ ἡμέρα λογίζονται, ὅτι μιᾶς ἡμέρας σῖτον δαπανῶσι. τοῦτο δὲ ποιοῦσι τοῦ ἐθίζεσθαι ἕνεκα, ἵνα καὶ ἄν τι ἐν πολέμῳ δεήσῃ, δύνωνται τοῦτο ποιεῖν. καὶ ὄψον δὲ τοῦτο ἔχουσιν οἱ τηλικοῦτοι ὅ τι ἂν θηράσωσιν, εἰ δὲ μή, τὸ κάρδαμον. εἰ δέ τις αὐτοὺς οἴεται ἢ ἐσθίειν ἀηδῶς, ὅταν κάρδαμον μόνον ἐσθίωσιν ἐπὶ τῷ σίτῳ, ἢ πίνειν ἀηδῶς ὅταν ὕδωρ πίνωσιν, ἀναμνησθήτω, πῶς μὲν ἡδὺ μᾶζα καὶ ἄρτος πεινῶντι φαγεῖν, πῶς δὲ ἡδὺ ὕδωρ πιεῖν διψῶντι. αἱ δ' αὖ μένουσαι φυλαὶ διατρίβουσι μελετῶσαι τά τε ἄλλα ἃ παῖδες ὄντες ἐμάνθανον, καὶ τοξεύειν καὶ ἀκοντίζειν· καὶ διαγωνιζόμενοι ταῦτα πρὸς ἀλλήλους διατελοῦσιν. εἰσὶ δὲ καὶ δημόσιοι τούτων ἀγῶνες καὶ ἆθλα προτίθεται· ἐν ᾗ δ' ἂν φυλῇ πλεῖστοι ὦσιν δαιμονέστατοι καὶ ἀνδρικώτατοι καὶ εὐπιστότατοι, ἐπαινοῦσιν οἱ πολῖται καὶ τιμῶσιν οὐ μόνον τὸν νῦν ἄρχοντα αὐτῶν, ἀλλὰ καὶ ὅστις παῖδας ὄντας αὐτοὺς ἐπαίδευσε. χρῶνται δὲ τοῖς μένουσι τῶν ἐφήβων αἱ ἀρχαὶ πᾶσαι, ἤν τι ἢ φρουρῆσαι δέῃ ἢ κακούργους ἐρευνῆσαι ἢ λῃστὰς ὑποδραμεῖν ἢ καὶ ἄλλα ὅσα τάχους καὶ ἰσχύος ἔργα ἐστίν. ταῦτα μὲν δὴ οἱ ἔφηβοι πράττουσιν· ἐπειδὰν δὲ τὰ δέκα ἔτη διατελέσωσιν, ἐξέρχονται εἰς τοὺς τελείους ἄνδρας. ἀφ' οὗ δ' ἂν ἐξέλθωσι χρόνου ἐκ τῶν ἐφήβων, οὗτοι αὖ πέντε καὶ εἴκοσιν ἔτη ὧδε διάγουσι· πρῶτον μὲν ὥσπερ οἱ ἔφηβοι παρέχουσιν ἑαυτοὺς ταῖς ἀρχαῖς χρῆσθαι, ἐάν τι δέῃ περὶ τοῦ κοινοῦ, ὅσα φρονούντων τε ἤδη ἔργα ἐστὶ καὶ ἔτι δυναμένων· ἐὰν δέ που δέῃ στρατεύεσθαι, τόξα μὲν οἱ οὕτω παιδευόμενοι οὐκέτι ἔχοντες οὐδὲ παλτὰ στρατεύονται,

τὰ δὲ ἄγχιμα ὅπλα καλούμενα, θώρακά τε περὶ τοῖς στέρνοις καὶ γέρρον ἐν τῇ ἀριστερᾷ, [οἷόν περ γράφονται οἱ Πέρσαι ἔχοντες·] ἐν δὲ τῇ δεξιᾷ μάχαιραν ἢ κοπίδα. καὶ αἱ ἀρχαὶ δὲ πᾶσαι ἐκ τούτων καθίστανται, πλὴν οἱ τῶν παίδων διδάσκαλοι. ἐπειδὰν δὲ τὰ πέντε καὶ εἴκοσιν ἔτη διατελέσωσιν, εἴησαν μὲν οὗτοι πλέον ἢ πεντήκοντα ἔτη γεγονότες ἀπὸ γενεᾶς· ἐξέρχονται δὲ τηνικαῦτα εἰς τοὺς γεραιτέρους ὄντας τε καὶ καλουμένους. οἱ δ' αὖ γεραίτεροι οὗτοι στρατεύονται μὲν οὐκ ἔτι ἔξω τῆς αὐτῶν, οἴκοι δὲ μένοντες δικάζουσι τά τε κοινὰ πάντα καὶ τὰ ἴδια, καὶ θανάτου δὲ οὗτοι κρίνουσι· καὶ τὰς ἀρχὰς οὗτοι αἱροῦνται πάσας· καὶ ἐάν τις ἢ ἐν ἐφήβοις ἢ ἐν τελείοις ἀνδράσιν ἐκλίπῃ τι τῶν νομίμων, φαίνουσι μὲν οἱ φύλαρχοι ἕκαστον καὶ τῶν ἄλλων ὁ βουλόμενος, οἱ δὲ γεραίτεροι ἀκούσαντες ἐκκρίνουσιν· ὁ δὲ ἐκκριθεὶς ἄτιμον τὸν βίον διατελεῖ. ἵνα δὲ σαφέστερον δηλωθῇ πᾶσα ἡ Περσῶν πολιτεία, μικρὸν ἐπάνειμι· νῦν γὰρ ἐν βραχυτάτῳ ἂν δηλωθείη διὰ τὰ προειρημένα. λέγονται μὲν γὰρ Πέρσαι ἀμφὶ τὰς δώδεκα μυριάδας εἶναι, τούτων δὲ οὐδεὶς ἀπελήλαται νόμῳ τιμῶν καὶ ἀρχῶν, ἀλλ' ἔξεστι πᾶσι Πέρσαις πέμπειν τοὺς ἑαυτῶν παῖδας εἰς τὰ κοινὰ τῆς δικαιοσύνης διδασκαλεῖα. ἀλλ' οἱ μὲν δυνάμενοι τρέφειν τοὺς ἑαυτῶν παῖδας ἀργοῦντας πέμπουσιν, οἱ δὲ μὴ δυνάμενοι οὐ πέμπουσιν ἵνα παιδευθῶσι παρὰ τοῖς δημοσίοις διδασκάλοις· ἔξεστι δὲ αὐτοῖς ἐν τοῖς ἐφήβοις νεανισκεύεσθαι· τοῖς δὲ μὴ διαπαιδευθεῖσιν οὕτως, οὐκ ἔξεστιν. οἳ δ' ἂν αὖ ἐν τοῖς ἐφήβοις διατελέσωσι τὰ νόμιμα ποιοῦντες, ἔξεστι τούτοις εἰς τοὺς τελείους ἄνδρας συναλίζεσθαι καὶ ἀρχῶν καὶ τιμῶν μετέχειν· οἳ δ' ἂν αὖ ἐν τοῖς παισὶ μὴ διαγέ-

νωνται ἢ ἐν τοῖς ἐφήβοις, οὐκ ἔρχονται εἰς τοὺς τελείους· οἳ δ' ἂν αὖ ἐν τοῖς τελείοις διαγένωνται ἀνεπίπληκτοι, οὗτοι τῶν γεραιτέρων γίγνονται. οὕτω μὲν δὴ οἱ γεραίτεροι διὰ πάντων τῶν καλῶν διεληλυθότες καθίστανται.

24 Ξενοφῶντος ἐκ τῆς Λακώνων πολιτείας (I, 4).

Ὁ δὲ Λυκοῦργος ἐσθῆτας μὲν καὶ δούλας ἱκανὰς παρέχειν ἡγήσατο εἶναι· ταῖς δὲ ἐλευθέραις μέγιστον νομίσας εἶναι τὴν τεκνοποιαίν, πρῶτον μὲν σωμασκεῖν ἔταξεν οὐδὲν ἧττον τὸ θῆλυ τοῦ ἄρρενος φύλου, ἔπειτα δὲ δρόμου καὶ ἰσχύος ὥσπερ τοῖς ἀνδράσιν οὕτω καὶ ταῖς θηλείαις ἀγῶνας πρὸς ἀλλήλας ἐποίησε, νομίζων ὡς ἀμφοτέρων ἰσχυρῶν καὶ ἔκγονα ἐρρωμενέστερα γίγνεσθαι. ἐπεί γε μὴν γυνὴ πρὸς ἄνδρα ἔλθοι, ὁρῶν τοὺς ἄλλους τὸν πρῶτον τοῦ χρόνου ἀμέτρως ταῖς γυναιξὶ συνόντας, καὶ τούτου τἀναντία ἔγνω· ἔθηκε γὰρ αἰδεῖσθαι μὲν εἰσιόντα ὀφθῆναι, αἰδεῖσθαι δὲ ἐξιόντα· οὕτω δὲ συνόντων, ποθεινοτέρως μὲν ἀνάγκη σφῶν αὐτῶν ἔχειν, ἐρρωμενέστερα δὲ γίγνεσθαι, εἴ τι βλαστάνοιεν, οὕτω μᾶλλον ἢ εἰ διάκοροι ἀλλήλων εἶεν. πρὸς δὲ τούτοις καὶ ἀποπαύσας τοῦ ὁπότε βούλοιντο ἕκαστοι γυναῖκας ἄγεσθαι, ἔταξεν ἐν ἀκμαῖς τῶν σωμάτων τοὺς γάμους ποιεῖσθαι, καὶ τοῦτο συμφέρον τῇ εὐγονίᾳ νομίζων. εἴγε μέντοι συμβαίη γεραιῷ νέαν ἔχειν, ὁρῶν τοὺς τηλικούτους φυλάττοντας μάλιστα τὰς γυναῖκας, τἀναντία καὶ τούτου ἐνόμισε· τῷ γὰρ πρεσβύτῃ ἐποίησεν, ὁποίου ἀνδρὸς καὶ σῶμα καὶ ψυχὴν ἀγασθείη, τοῦτον ἐπαγομένῳ τεκνοποιήσασθαι. εἰ δέ τις αὖ γυναικὶ μὲν συνοικεῖν μὴ βούλοιτο, τέκνων

δὲ ἀξιολόγων ἐπιθυμοίη, καὶ τοῦτο νόμιμον ἐποίησεν, ἥν τινα ἂν εὔτεκνον καὶ γενναίαν ὁρῴη, πείσαντα τὸν ἔχοντα ἐκ ταύτης τεκνοποιεῖσθαι. καὶ πολλὰ μὲν τοιαῦτα συνεχώρει. αἱ μὲν γὰρ γυναῖκες διττοὺς οἴκους βούλονται κατέχειν, οἱ δὲ ἄνδρες ἀδελφοὺς τοῖς παισὶ προσλαμβάνειν, οἳ τοῦ μὲν γένους καὶ τῆς δυνάμεως κοινωνήσουσι, τῶν δὲ χρημάτων οὐκ ἀντιποιοῦνται. περὶ μὲν δὴ τεκνοποιίας οὕτω τἀναντία γνοὺς τοῖς ἄλλοις, εἴ τι διαφέροντας καὶ μέγεθος καὶ ἰσχὺν ἄνδρας τῇ Σπάρτῃ ἀπετέλεσεν, ὁ βουλόμενος σκοπείτω. βούλομαι δὲ καὶ τὴν παιδείαν σαφηνίσαι.

25 Ὁ γὰρ Λυκοῦργος ἀντὶ μὲν τοῦ ἰδίᾳ ἑκάστοις παιδαγωγοὺς δούλους ἐφιστάναι, ἄνδρα ἐπέστησε κρατεῖν αὐτῶν, ἐξ ὧνπερ αἱ μέγισται ἀρχαὶ καθίστανται, ὃς δὴ καὶ παιδονόμος καλεῖται. τοῦτον δὲ κύριον ἐποίησε καὶ καθίζειν τοὺς παῖδας, καὶ ἐπισκοποῦντα, εἴ τις ῥᾳδιουργοίη, [ἰσχυρῶς] κολάζειν· ἔδωκε δ' αὐτῷ καὶ τῶν ἡβώντων μαστιγοφόρους, ὅπως τιμωροῖεν ὅτε δέοι, ὡς πολλὴν μὲν αἰδῶ πολλὴν δὲ πειθὼ ἐκεῖ συμπαρεῖναι. ἀντί γε μὴν τοῦ ἁπαλύνειν τοὺς πόδας ὑποδήμασιν, ἔταξεν ἀνυποδησίᾳ κρατύνειν· νομίζων εἰ τοῦτο ἀσκήσαιεν, πολὺ μὲν ῥᾷον ἂν ὄρθια ἐκβαίνειν, ἀσφαλέστερον δὲ πρανῆ καταβαίνειν, καὶ πηδῆσαι δὲ καὶ ἀναθορεῖν καὶ δραμεῖν θᾶττον [ἀνυπόδητον, εἰ ἠσκηκὼς εἴη τοὺς πόδας, ἢ ὑποδεδεμένον·] ἀντὶ δὲ τοῦ ἱματίοις διαθρύπτεσθαι, ἐνόμισε δερματίῳ δι' ἔτους προσεθίζεσθαι, [νομίζων οὕτω καὶ πρὸς ψύχη καὶ πρὸς θάλπη ἄμεινον ἂν παρασκευάσασθαι.] σῖτόν γε μὴν τοσοῦτον ἔχειν συνεβούλευεν, ὡς ὑπὸ πλησμονῆς μὲν μήποτε βαρύνε-

σθαι, τοῦ δὲ ἐνδεεστέρως διάγειν μὴ ἀπείρως ἔχειν· νομίζων τοὺς οὕτω παιδευομένους μᾶλλον μὲν ἂν δύνασθαι, εἰ δεήσειεν ἀσιτήσαντας ἐπιπονῆσαι, μᾶλλον δ' ἄν, εἰ παραγγελθείη, ἀπὸ τοῦ αὐτοῦ σίτου πλείω χρόνον ἐπιταθῆναι, ἧττον δ' ἂν ὄψου δεῖσθαι, εὐχερέστερον δὲ πρὸς πᾶν ἔχειν βρῶμα, καὶ ὑγιεινοτέρως δ' ἂν διάγειν, καὶ εἰς μῆκος δ' ἂν αὐξάνεσθαι τὴν ῥαδινὰ τὰ σώματα ποιοῦσαν τροφὴν μᾶλλον συλλαμβάνειν ἡγήσατο ἢ τὴν διαπλατύνουσαν τῷ σίτῳ. ὡς δὲ μὴ ὑπὸ λιμοῦ ἄγαν αὖ πιέζοιντο, ἀπραγμόνως μὲν οὐκ ἔδωκεν αὐτοῖς λαμβάνειν, ὧν προσδέονται· κλέπτειν δὲ ἐφῆκεν [ἔστιν ἃ τῷ λιμῷ ἐπικουροῦντας. καὶ ὡς μὲν οὐκ ἀπορῶν ὅ τι δοίη ἐφῆκεν αὐτοῖς γε μηχανᾶσθαι τὴν τροφήν, οὐδένα οἶμαι τοῦτο ἀγνοεῖν·] δῆλον δ' ὅτι τὸν μέλλοντα κλοπεύειν καὶ νυκτὸς ἀγρυπνεῖν δεῖ καὶ μεθ' ἡμέραν ἀπατᾶν καὶ ἐνεδρεύειν, καὶ κατασκόπους δὲ ἑτοιμάζειν τὸν μέλλοντά τι λήψεσθαι. ταῦτα οὖν δηλονότι πάντα μηχανικωτέρους τῶν ἐπιτηδείων βουλόμενος τοὺς παῖδας ποιεῖν καὶ πολεμικωτέρους, οὕτως ἐπαίδευεν. [εἴποι δ' ἂν οὖν τις, τί δῆτα, εἴπερ τὸ κλέπτειν ἀγαθὸν ἐνόμιζε,] πολλὰς δὲ πληγὰς ἐπέβαλε τῷ ἁλισκομένῳ; ὅτι, φημὶ ἐγώ, καὶ τἆλλα ὅσα ἄνθρωποι διδάσκουσι, κολάζουσι τὸν μὴ καλῶς ὑπηρετοῦντα. (Xenoph. de rep. Lac. 2, 2.)

26 Ὅπως δὲ μὴ ἐὰν ὁ παιδονόμος ἀπέλθοι ἔρημοί ποτε οἱ παῖδες εἶεν ἄρχοντος, ἐποίησε τὸν ἀεὶ παρόντα τῶν πολιτῶν κύριον εἶναι καὶ ἐπιτάττειν τοῖς παισίν, εἴ τι ἀγαθὸν δοκοίη εἶναι, καὶ κολάζειν, εἴ τι ἁμαρτάνοιεν. (Xenoph. ib. 2, 10.)

27 Πρὸς δὲ τούτοις τό τε αἰδεῖσθαι ἰσχυρῶς ἐμφῦσαι βουλόμενος αὐτοῖς, καὶ ἐν ταῖς ὁδοῖς ἐπέδειξεν

ἐντὸς μὲν τοῦ ἱματίου τὼ χεῖρε ἔχειν, σιγῇ δὲ πορεύεσθαι, περιόπτειν δὲ μηδαμῶς, ἀλλ' αὐτὰ τὰ πρὸ ποδῶν ὁρᾶν. ἔνθα δὴ καὶ δῆλον γεγένηται, ὅτι τὸ ἄρρεν φῦλον καὶ εἰς τὸ σῶφρον ἰσχυρότερόν ἐστι τῆς τῶν θηλειῶν φύσεως. ὡς ἐκείνων γοῦν ἧττον μὲν ἂν φωνὴν ἦν ἀκοῦσαι ἢ τῶν λιθίνων, ἧττον δὲ ὄμματα στρεψάντων ἢ τῶν χαλκῶν, αἰδημονεστέρους δ' ἂν αὐτοὺς ἡγήσαιο καὶ αὐτῶν τῶν ἐν τοῖς ὀφθαλμοῖς παρθένων, καὶ ἐπειδὰν εἰς τὸ φιλίτιον ἀφίκωνται, ἀγαπητὸν αὐτῶν καὶ τὸ ἐρωτηθὲν ἀκοῦσαι. [καὶ τῶν μὲν αὖ παιδικῶν οὕτως ἐπεμελήθη·] περί γε μὴν τῶν ἤδη ἡβώντων πολὺ μάλιστα ἐσπούδασεν. (Xenoph. ib. 3, 4.)

28 Ὡς οὖν τούτους αὖ συνέβαλλεν ἐξηγήσομαι. Αἱροῦνται τοίνυν οἱ ἔφοροι αὐτῶν ἐκ τῶν ἀκμαζόντων τρεῖς ἄνδρας· οὗτοι δὲ ἱππαγρέται καλοῦνται· τούτων δὲ ἕκαστος ἄνδρα ἕκαστον καταλέγει διασαφηνίζων, ὅτου ἕνεκα τοὺς μὲν προτιμᾷ, τοὺς δ' ἀποδοκιμάζει. οἱ οὖν μὴ τυγχάνοντες τῶν καλῶν πολεμοῦσι τοῖς τε ἀποστείλασιν αὐτοὺς καὶ τοῖς αἱρεθεῖσιν ἀντ' αὐτῶν. (Xenoph. ib. 4, 2.)

29 Διαλύειν μέντοι τοὺς μαχομένους πᾶς ὁ παραγιγνόμενος κύριος. (Xen. ib. 4, 6.)

30 Τοῖς γε μὴν τὴν ἡβητικὴν ἡλικίαν πεπερακόσιν, ἐξ ὧν ἤδη καὶ αἱ μέγισται ἀρχαὶ καθίστανται, ὁ Λυκοῦργος νόμιμον ἐποίησε κάλλιστον εἶναι τὸ θηρᾶν, εἰ μή τι δημόσιον κωλύοι, ὅπως καὶ οὗτοι δύνωνται μηδὲν ἧττον τῶν ἡβώντων στρατιωτικοὺς πόνους ὑποφέρειν. (Xen. ib. 4, 7.)

31 Ὡσαύτως ὁ Λυκοῦργος ἐποίησε παίδων ἕκαστον ὁμοίως τῶν ἑαυτοῦ καὶ τῶν ἀλλοτρίων ἄρχειν. ὅταν δέ τις εἰδῇ ὅτι οὗτοι πατέρες εἰσὶ τῶν παίδων ὧν

αὐτὸς ἄρχει, ἀνάγκη ἄρχειν οὕτως, ὥσπερ ἂν καὶ τῶν ἑαυτοῦ ἄρχεσθαι βούλοιτο. (Xen. ib. 6, 1.)

32 *Ἐν τῇ Σπάρτῃ ὁ Λυκοῦργος τοῖς ἐλευθέροις τῶν μὲν ἀμφὶ χρηματισμὸν ἀπεῖπε μηδενὸς ἅπτεσθαι, ὅσα δὲ ἐλευθερίαν ἐν ταῖς πόλεσι παρασκευάζει, ταῦτα μόνα ἔταξεν ἔργα ἑαυτῶν νομίζειν· οὐ γὰρ δή τι πλοῦτος ἐκεῖ γε ἐσπούδασται.* (Xen. ib. 7, 2.)

33 *Ἄξιον δὲ τοῦ Λυκούργου καὶ τόδε ἀγασθῆναι, τὸ κατεργάζεσθαι ἐν τῇ πόλει αἱρετώτερον εἶναι τὸν καλὸν θάνατον ἀντὶ τοῦ αἰσχροῦ βίου.* (Xen. ib. 9, 1.)

34 *Καλῶς δέ μοι δοκεῖ Λυκοῦργος νομοθετῆσαι, καὶ εἰ μέχρι γήρως ἀσκοῖτ' ἂν ἡ ἀρετή. ἐπὶ γὰρ τῷ τέρματι τοῦ βίου τὴν κρίσιν τῆς γεροντίας προσθεὶς ἐποίησε μηδ' ἐν τῷ γήραι ἀμελεῖσθαι τὴν καλοκαγαθίαν. Ἀξιάγαστον δ' αὐτοῦ καὶ τὸ ἐπικουρῆσαι τῷ τῶν ἀγαθῶν γήραι. θεὶς γὰρ τοὺς γέροντας κυρίους τοῦ περὶ τῆς ψυχῆς ἀγῶνος, διέπραξεν ἐντιμότερον εἶναι τὸ γῆρας τῆς τῶν ἀκμαζόντων ῥώμης. εἰκότως δέ τοι καὶ σπουδάζεται οὗτος ὁ ἀγὼν μάλιστα τῶν ἀνθρώπων. καλοὶ μὲν γὰρ καὶ οἱ γυμνικοί· ἀλλ' οὗτοι μὲν σωμάτων εἰσίν· ὁ δὲ περὶ τῆς γεροντίας ἀγὼν ψυχῶν ἀγαθῶν κρίσιν παρέχει. ὅσῳ οὖν κρεῖσσον ψυχὴ σώματος, τοσούτῳ καὶ οἱ ἀγῶνες οἱ τῶν ψυχῶν ἢ τῶν σωμάτων ἀξιοσπουδαστότεροι.* (Xen. ib. 10, 1.)

35 *Εἴς γε μὴν τὸν ἐν ὅπλοις ἀγῶνα τοιάδε ἐμηχανήσατο, στολὴν μὲν ἔχειν φοινικίδα καὶ χαλκῆν ἀσπίδα.* (Xen. ib. 11, 3.)

36 *Ἐφῆκε δὲ καὶ κομᾶν τοῖς ὑπὲρ τὴν ἡβητικὴν ἡλικίαν, νομίζων οὕτω καὶ μείζους ἂν καὶ ἐλευθεριωτέρους [καὶ γοργοτέρους] φαίνεσθαι. οὕτω γε μὴν*

12*

κατεσκευασμένων, μοίρας ἔδειξεν ἓξ καὶ ἱππέων καὶ ὁπλιτῶν. ἑκάστη δὲ τῶν ὁπλιτικῶν ἔχει μοιρῶν πολέμαρχον ἕνα, λοχαγοὺς τέτταρας, πεντηκοστῆρας ὀκτώ, ἐνωμοτάρχας ιϛ'. ἐκ δὲ τούτων τῶν μερῶν διὰ παρεγγυήσεως καθίστανται τοτὲ μὲν εἰς ἐνωμοτίας, τοτὲ δὲ εἰς τρεῖς, τοτὲ δὲ εἰς ἕξ. (Xen. ib. 11, 3.)

37 Ἐπεὶ δὲ ἔγνω τὸ πείθεσθαι μέγιστον ἀγαθὸν εἶναι καὶ ἐν πόλει καὶ ἐν στρατιᾷ καὶ ἐν οἴκῳ, τὴν τῆς ἐφορείας δύναμιν κατεσκεύασεν. (Xen. ib. 8, 3.)

38 Ἔφοροι οὖν δυνατοὶ μέν εἰσι ζημιοῦν ὃν ἂν βούλωνται, κύριοι δὲ πράττειν παραχρῆμα, κύριοι δὲ καὶ ἄρχοντας μεταξὺ καταπαῦσαι, καὶ εἶρξαί τε καὶ περὶ ψυχῆς εἰς ἀγῶνα καταστῆσαι. (Xen. ib. 8, 4.)

39 Πολλῶν δὲ ὄντων καλῶν μηχανημάτων τῷ Λυκούργῳ εἰς τὸ πείθεσθαι τοῖς νόμοις ἐθέλειν τοὺς πολίτας, ἐν τοῖς καλλίστοις καὶ τοῦτό μοι δοκεῖ εἶναι, ὅτι οὐ πρότερον ἀπέδωκε τῷ πλήθει τοὺς νόμους, πρὶν ἐλθὼν σὺν τοῖς κρατίστοις εἰς Δελφοὺς ἐπήρετο τὸν θεόν, εἰ λῷον καὶ ἄμεινον εἴη τῇ Σπάρτῃ πειθομένῃ οἷς αὐτὸς ἔθηκε νόμοις· ἐπεὶ δ' ἀνεῖλε τῷ παντὶ ἄμεινον εἶναι, τότε ἀπέδωκεν οὐ μόνον ἄνομον δείξας, ἀλλὰ καὶ ἀνόσιον, τὸ πυθοχρήστοις νόμοις μὴ πείθεσθαι. (Xen. ib. 8, 5.)

40 *Χαρώνδα Καταναίου προοίμια νόμων.*

Τὼς βουλευομένως καὶ πράττοντάς τι ἀπὸ θεῶν ἄρχεσθαι χρή· τὸ γὰρ ἄριστον, ὥσπερ ἁ παροιμία φατί, τὸν θεὸν ἦμεν αἴτιον πάντων τούτων. ἔτι δὲ φαύλων πράξεων ἀπέχεσθαι καὶ μάλιστα διὰ τὰν πρὸς τὸν θεὸν ξυμβουλίαν· οὐδενὸς γὰρ ἀδίκου θεὸν κοινωνεῖν· βοηθεῖν δὲ ἕκαστον ἑαυτῷ καὶ ποτικε-

λεύεσθαι κατ᾽ ἀξίαν τῶν δικαίων μεταλαμβάνεν καὶ πράσσεν· τὸ γὰρ ὑπὲρ μικρῶν καὶ μεγάλων ὁμοίως διατείνεσθαι ἄγαν μικροπρεπὲς δοκεῖ ἦμεν καὶ ἀνελεύθερον. διὸ δεῖ φροντίζεν τὸ μὴ σφόδρα ἐς τὰ μάκιστα καὶ τὰ μεγάλα ἐμπίπτεν· ἀλλὰ κατ᾽ ἀξίαν τὰν ἑαυτῶ καὶ δυναμίαν μετρίοντα ἑκάστῳ πράγματι ἐπιβάλλεν, ὅπως τίμιος ἦς καὶ σεμνός.

Ἀδίκῳ δὲ ἀνδρὶ ἢ γυναικὶ κεκριμένοις ὑπὸ πόλεως ἐπαρωγὴν μὴ ποιεῖσθαι μηδὲ ὁμιλεῖν μηδένα, ἢ ὀνειδίζεσθαι ὡς ὄντα ὅμοιον ᾧ ὁμιλεῖ. τοὺς δὲ προκεκριμένους ἄνδρας ἀγαθοὺς ἀγαπᾶν καὶ ἐντυγχάνειν αὐτοῖς, τελεῖσθαί τε τὴν μεγίστην καὶ τελειοτάτην τελετήν, ἀνδραγαθίαν, μιμουμένους ἐπ᾽ ἀληθείᾳ καὶ κτωμένους τὴν ἀρετήν· οὐδεὶς γὰρ ἀνὴρ τέλειος ἄνευ ταύτης. πολίτῃ δὲ ἀδικουμένῳ βοηθεῖν καὶ οἴκοι καὶ ἐπὶ ξένης· ξένον δὲ πάντα τὸν ἐν τῇ ἑαυτοῦ πατρίδι σεβόμενον καὶ κατὰ τοὺς οἰκείους νόμους εὐφήμως καὶ οἰκείως προσδέχεσθαι καὶ ἀποστέλλειν, μεμνημένους Διὸς ξενίου ὡς παρὰ πᾶσιν ἱδρυμένου κοινοῦ θεοῦ καὶ ὄντος ἐπισκόπου φιλοξενίας τε καὶ κακοξενίας.

ἡγεῖσθαι δὲ καὶ παραγγέλλειν πρεσβυτέρους νεωτέροις τὸ αἰδεῖσθαι καὶ αἰσχύνεσθαι τὰ κακά, φανεροὺς ὄντας αὐτοὺς αἰσχυνομένους καὶ αἰδουμένους· ὡς ἐν αἷς πόλεσι πρεσβυτέρων ἀναισχυντίαι, φύονται παῖδες αὐτῶν καὶ παίδων παῖδες ἀναίσχυντοι. ἀκολουθεῖ δὲ ἀναισχυντίᾳ καὶ ἀναιδείᾳ ὕβρις καὶ ἀδικία, τούτοις δὲ ἕπεται ὄλεθρος. μηδεὶς δ᾽ ἔστω ἀναιδής, ἀλλὰ σωφρονείτω ἕκαστος, ὡς οὕτω τευξόμενος θεῶν ἵλεων καὶ σωτηρίας· οὐδεὶς γὰρ κακὸς θεοφιλής. τιμάτω δὲ ἕκαστος τὸ καλὸν καὶ τὸ ἀληθές, καὶ μισείτω τὸ αἰσχρὸν καὶ τὸ ψεῦδος·

ταῦτα γὰρ ἀρετῆς σημεῖα καὶ κακίας. διὸ χρὴ συνεθίζειν ἐκ παίδων κολάζοντας μὲν τοὺς φιλοψευδεῖς, φιλοῦντας δὲ τοὺς φιλαλήθεις, ἵν' ἐμφυσιῶται ἑκάστῳ τὸ κάλλιστον καὶ σπερματωδέστατον τῆς ἀρετῆς. προσποιείσθω δὲ ἕκαστος τῶν πολιτῶν σωφρονεῖν μᾶλλον ἢ φρονεῖν· ὡς ἡ προσποίησις τοῦ φρονεῖν μέγα σημεῖον ἀπειροκαλίας καὶ σμικρότητος. ἔστω δὲ ἡ προσποίησις τοῦ σωφρονεῖν ἀληθής· μηδεὶς γὰρ πλαττέσθω γλώσσῃ καλὰ ἔργα, πράξεως καὶ διανοίας στερόμενος ἀγαθῆς.

χρὴ δὲ καὶ πρὸς τοὺς ἄρχοντας εὔνοιαν διαφυλάττειν καθάπερ πατράσιν εὐπειθοῦντας καὶ σεβομένους· ὡς ὁ μὴ διανοούμενος οὕτω τίσει δίκην κακῆς βουλῆς δαίμοσιν ἑστιούχοις. ἄρχοντες γὰρ ἑστιουχοῦσι πόλεως καὶ πολιτῶν σωτηρίας.

χρὴ δὲ καὶ τοὺς ἄρχοντας δικαίως προεστάναι τῶν ἀρχομένων καθάπερ τέκνων ἰδίων, ἔχθραν καὶ φιλίαν καὶ θυμὸν ἐν τῷ κρίνειν κοιμίσαντας.

ἐπαινείσθωσαν δὲ καὶ εὐδοκιμείτωσαν, ὅσοι ἂν ὄντες εὔποροι τοῖς ἐνδεεστέροις ἐπαρκῶσιν, ὡς τέκνα καὶ ἀμύντορας σώζοντες τῆς ἑαυτῶν πατρίδος. ἐπαρκείτωσαν δὲ τοῖς διὰ τύχην πενομένοις, καὶ μὴ διὰ βίον ἀργὸν καὶ ἀκρατῆ. ἡ μὲν γὰρ τύχη πᾶσι κοινόν, ὁ δὲ ἀργὸς καὶ ἀκρατὴς βίος κακοῖς ἀνδράσιν ἴδιος.

καλὸν δ' ἔστω καὶ μηνύειν ἐάν τίς τῳ συνειδῇ ἀδικοῦντι, ἵνα ἡ πολιτεία σώζηται πολλοὺς ἔχουσα τῆς εὐκοσμίας φύλακας. ὁ δὲ μηνύων εὐσεβὴς ἔστω καὶ κατὰ τῶν οἰκειοτάτων ἐξαγγέλλων· οὐδὲν γάρ ἐστιν οἰκειότερον πατρίδος. ἐμφανιζόντων δὲ μὴ τὰ δι' ἀκούσιον ἄγνοιαν γιγνόμενα, ἀλλ' ὅσον ἂν ἐκ προνοίας τι ἁμαρτάνωσιν. ὁ δ' ἐμφανισθείς, ἂν ἐθελεχθρῇ τῷ μηνύσαντι, μισείσθω ὑπὸ πάντων, δίκην

διδοὺς ἀχαριστίας, ἧς ἀποστερεῖ τὸν ἰατρεύοντα μεγίστην νόσον ἰατρευόμενος ἀδικίαν.

ἔστω δὲ μέγιστα ἀδικήματα θεῶν καταφρόνησις καὶ γονέων κάκωσις ἑκούσιος καὶ ἀρχόντων καὶ νόμων ὀλιγωρία καὶ ἑκούσιος ἀτιμία δικαιοσύνης. δικαιότατος δὲ ἔστω καὶ ὁσιώτατος πολίτης ὁ ταῦτα τιμῶν καὶ ἐμφανίζων πρὸς πολίτας καὶ ἄρχοντας κατὰ τῶν καταφρονούντων.

ὑπὲρ πατρίδος ἀποθνήσκειν σεμνότερον ἔστω ἢ γλιχόμενον τοῦ ζῆν ἐγκαταλιπεῖν αὐτὴν καὶ τὸ καλόν. κρεῖττον γὰρ τεθνάναι καλῶς ἢ ζῆν αἰσχρῶς καὶ ἐπονειδίστως.

χρὴ δὲ καὶ τῶν τελευτώντων ἕκαστον τιμᾶν μὴ δακρύοις μηδὲ οἴκτοις, ἀλλὰ μνήμῃ ἀγαθῇ καὶ τῇ τῶν κατ᾽ ἔτος ὡραίων ἐπιφορᾷ, ὡς ἀχαριστίας οὔσης πρὸς δαίμονας χθονίους λύπης ὑπὲρ τὸ μέτρον γιγνομένης.

βλασφημείτω δὲ μηδεὶς ἐπ᾽ ἀδίκῳ βλάβῃ περὶ μηδενός· ὁσιώτερον γὰρ εὐφημία κακηγορίας.

νομιζέσθω δὲ πολίτης ἀμείνων ὁ τῆς ὀργῆς κρείττων μᾶλλον τοῦ διὰ ταύτην πλημμελοῦντος.

ὁ ἱερὰ καὶ ἀρχεῖα ὑπεραίρων τῇ πολυτελείᾳ τῶν ἰδίων μὴ εὐδοξείτω, ἀλλ᾽ ὀνειδιζέσθω· μηδὲν γὰρ ἔστω ἰδιωτικὸν μεγαλοπρεπέστερον καὶ σεμνότερον τῶν δημοσίων.

ὁ πλούτῳ καὶ χρήμασι δουλεύων καταφρονείσθω ὡς μικρόψυχος ὢν καὶ ἀνελεύθερος καὶ καταπληττόμενος ὑπὸ κτημάτων πολυτελῶν καὶ βίου τραγῳδουμένου, καὶ εὐτελὴς εἶναι τὴν ψυχὴν ὑπολαμβανέσθω. ὁ γὰρ μεγαλόψυχος προδιανοεῖται πάντα παρ᾽ ἑαυτῷ τὰ παρ᾽ ἀνθρώποις, καὶ δι᾽ οὐδενὸς θορυβεῖται τοιούτου ὅταν παραπέσῃ.

αἰσχρορρημονείτω δὲ μηδείς, ὅπως ἂν μὴ παροικειοῖ τὴν διάνοιαν ἔργοις αἰσχροῖς, μηδὲ ἀναπιμπλῇ τὴν ψυχὴν ἀναιδείας καὶ μιασμάτων. τὰ μὲν γὰρ εὐσχήμονα καὶ φίλα τοῖς οἰκείοις ὀνόμασι καὶ κειμένοις ὑπὸ τοῦ νόμου προσαγορεύομεν, πρὸς ἃ δ' ἐχθρῶς ἔχομεν, ἐξιστάμεθα καὶ τῆς προσηγορίας [διὰ τὸ αἰσχρόν]. ἔστω δὲ καὶ αἰσχρὸν εἰπεῖν τὸ αἰσχρόν.

γυναῖκα δὲ τὴν κατὰ νόμους ἕκαστος στεργέτω καὶ ἐκ ταύτης τεκνοποιείσθω, εἰς ἄλλο δὲ μηδὲν προϊέσθω τέκνων τῶν αὑτοῦ σποράν· μηδὲ τὸ φύσει καὶ νόμῳ τίμιον ἀνόμως ἀναλισκέτω καὶ ὑβριζέτω. ἡ γὰρ φύσις τεκνοποιίας ἕνεκεν οὐκ ἀκολασίας ἐποίησε τὴν σποράν.

γυναῖκα δὲ σωφρονεῖν χρὴ καὶ μὴ προσδέχεσθαι συνουσίαν ἀσεβῆ παρ' ἄλλων ἀνδρῶν, ὡς ἀπαντώσης νεμέσεως παρὰ δαιμόνων ἐξοικιστῶν καὶ ἐχθροποιῶν.

ὁ μητρυιὰν ἐπιγαμῶν μὴ εὐδοξείτω, ἀλλ' ὀνειδιζέσθω ὡς παραίτιος ὢν οἰκείας διαστάσεως.

χρὴ δὲ ἐμμένειν τοῖς εἰρημένοις, τὸν δὲ παραβαίνοντα ἔνοχον εἶναι τῇ πολιτικῇ ἀρᾷ.

προστάσσει δὲ ὁ νόμος ἐπίστασθαι τὰ προοίμια τοὺς πολίτας ἅπαντας, καὶ ἐν ταῖς ἑορταῖς μετὰ τοὺς παιᾶνας λέγειν ᾧ ἂν προστάσσῃ ὁ ἑστιάτωρ, ἵν' ἐμφυσιῶται ἑκάστῳ τὰ παραγγέλματα.

41 Ἐκ τῶν Νικολάου περὶ ἐθῶν.

Παρὰ Ταρτησσίοις νεωτέρῳ πρεσβυτέρου καταμαρτυρεῖν οὐκ ἔξεστι.

Λευκανοὶ δικάζονται ἀλλήλοις ὥσπερ ἄλλου τινὸς ἀδικήματος, οὕτω καὶ ἀσωτίας καὶ ἀργίας. ἐὰν

δέ τις ἀσώτῳ δανείσας χρέος ἐλεγχθῇ, στέρεται αὐτοῦ. καὶ Ἀθήνησι δὲ τῆς ἀργίας εἰσὶ δίκαι.

Παρὰ Σαυνίταις κατ' ἔτος οἵ τε ἤθεοι κρίνονται δημοσίᾳ καὶ αἱ παρθένοι· ὁ δὲ κριθεὶς ἄριστος εἶναι λαμβάνει ἣν βούλεται, εἶθ' ὁ μετ' ἐκεῖνον δεύτερος καὶ οὕτως ἐφεξῆς.

Λιβύρνιοι κοινὰς τὰς γυναῖκας ἔχουσι καὶ τὰ τέκνα ἐν κοινῷ τρέφουσι μέχρι ἐτῶν πέντε· εἶτα τῷ ἕκτῳ συνενέγκαντες ἅπαντα τὰ παιδία τὰς ὁμοιότητας πρὸς τοὺς ἄνδρας εἰκάζουσι, καὶ ἑκάστῳ τὸν ὅμοιον ἀποδιδόασι πατρί· ἀφ' ἧς δ' ἂν ἀπολάβῃ τὸ παιδίον ἕκαστος υἱὸν ὑπολαμβάνει.

Κελτοὶ σιδηροφοροῦντες τὰ κατὰ πόλιν πάντα πράττουσι, μείζω δ' ἐστὶν ἐπιτίμια κατὰ τοῦ ξένον ἀνελόντος ἢ πολίτην. ὑπὲρ τοῦ μὲν γὰρ θάνατος ἡ ζημία, ὑπὲρ τοῦ δὲ [πολίτου] φυγή. τιμῶσι δὲ μάλιστα τοὺς χώραν τῷ κοινῷ προσκτωμένους· τὰς δὲ θύρας τῶν οἰκιῶν οὐδέποτε κλείουσι.

Σαυρομάται διὰ τριῶν ἡμερῶν σιτοῦνται εἰς πλήρωσιν· ταῖς δὲ γυναιξὶ πάντα πείθονται ὡς δεσποίναις· παρθένον δὲ οὐ πρότερον συνοικίζουσι πρὸς γάμον πρὶν ἂν πολέμιον ἄνδρα κτείνῃ.

Κερκέται τοὺς ἀδικήσαντας ὁτιοῦν τῶν ἱερῶν ἀπείργουσιν. ἐὰν δέ τις κυβερνῶν σκάφος διαμάρτῃ, προσιόντες ἐφεξῆς ἕκαστοι ἐμπτύουσιν αὐτῷ.

Μόσυνοι τὸν ἑαυτῶν βασιλέα τρέφουσιν ἐν πύργῳ κατάκλειστον· ἐὰν δέ τις δόξῃ κακῶς ποτὲ βεβουλεῦσθαι, τῷ λιμῷ αὐτὸν ἀποκτείνουσι. τὸν δὲ τρεφόμενον σῖτον ἐξίσου διαιροῦσι, μέρος κοινῇ ἐξελόντες τοῖς ἀφικνουμένοις ξένοις.

Φρύγες ὅρκοις οὐ χρῶνται οὔτ' ὀμνύντες οὔτε ἄλλους ἐξορκοῦντες. ἐὰν δέ τις παρ' αὐτοῖς γεωρ-

γικὸν βοῦν ἀποκτείνῃ ἢ σκεῦος τῶν περὶ γεωργίαν κλέψῃ, θανάτῳ ζημιοῦσι.

Λύκιοι τὰς γυναῖκας μᾶλλον ἢ τοὺς ἄνδρας τιμῶσι καὶ καλοῦνται μητρόθεν τάς τε κληρονομίας ταῖς θυγατράσι λείπουσιν οὐ τοῖς υἱοῖς. ὃς δ' ἂν ἐλεύθερος ἁλῷ κλέπτων, δοῦλος γίνεται· τὰς δὲ μαρτυρίας ἐν ταῖς δίκαις οὐκ εὐθὺ παρέχονται, ἀλλὰ μετὰ μῆνα.

Πισίδαι δειπνοῦντες ἀπάρχονται τοῖς γονεῦσιν, ὡς ἡμεῖς τοῖς θεοῖς [παρασπονδίοις]. ἡ δὲ μεγίστη κρίσις ἐστὶ παρακαταθήκης· τὸν δὲ ἀποστερήσαντα θανατοῦσιν. ἐὰν δὲ μοιχὸς ἁλῷ, περιάγεται τὴν πόλιν ἐπὶ ὄνου μετὰ τῆς γυναικὸς ἐπὶ ἡμέρας τακτάς.

Αἰθίοπες τὰς ἀδελφὰς μάλιστα τιμῶσι, καὶ τὰς διαδοχὰς μάλιστα καταλείπουσιν οἱ βασιλεῖς οὐ τοῖς ἑαυτῶν ἀλλὰ τοῖς τῶν ἀδελφῶν υἱοῖς. ὅταν δ' ὁ διαδεξόμενος μὴ ᾖ, τὸν κάλλιστον ἐκ πάντων καὶ μαχιμώτατον αἱροῦνται βασιλέα. ἀσκοῦσι δὲ εὐσέβειαν καὶ δικαιοσύνην. ἄθυροι δ' αὐτῶν αἱ οἰκίαι, καὶ ἐν ταῖς ὁδοῖς κειμένων πολλῶν οὐδὲ εἷς κλέπτει.

ἐν Βύλοις Λίβυσιν ἀνὴρ μὲν ἀνδρῶν βασιλεύει, γυνὴ δὲ γυναικῶν.

Μασουλιεῖς Λίβυες ὅταν πολεμῶσι, τὰς μὲν νύκτας μάχονται, τὰς δ' ἡμέρας εἰρήνην ἄγουσι.

Δαψολίβυες ὅταν συναχθῶσι πάντες ἅμα γαμοῦσιν ἐν μιᾷ ἡμέρᾳ μετὰ δύσιν πλειάδος, καὶ μετὰ τὴν ἑστίασιν χωρὶς τῶν γυναικῶν κατακειμένων καταβέσαντες τὸν λύχνον εἰσέρχονται, καὶ ὁ τυχὼν ἣν ἂν τύχῃ λαμβάνει.

Μαχλυεῖς Λίβυες, ὅταν πολλοὶ [μίαν] μνηστεύωνται γυναῖκα, παρὰ τῷ κηδεστῇ δειπνοῦσι,

παρούσης καὶ τῆς γυναικός· πολλὰ δὲ σκωπτόντων, ἐφ' ᾧ ἂν ἡ γυνὴ γελάσῃ, τούτῳ συνοικεῖ.

Σαρδολίβυες οὐδὲν κέκτηνται σκεῦος ἔξω κύλικος καὶ μαχαίρας.

Ἀλιτέμνιοι Λίβυες τοὺς ταχυτάτους αὐτῶν αἱροῦνται βασιλεῖς· τῶν δ' ἄλλων τιμῶσι τὸν δικαιότατον.

Οἱ Νομάδες τῶν Λιβύων οὐ ταῖς ἡμέραις ἀλλὰ ταῖς νυξὶν αὐτῶν ἀριθμοῦσι τὸν χρόνον.

Ἀτάραντες Λίβυες ὀνόματα οὐκ ἔχουσιν, ἡλίῳ δὲ ἀνίσχοντι λοιδοροῦνται ὡς πολλὰ κακὰ φήναντι· τῶν δὲ θυγατέρων ἀρίστας κρίνουσι τὰς πλεῖστον χρόνον μεμενηκυίας παρθένους.

Βοιωτῶν ἔνιοι τοὺς τὸ χρέος οὐκ ἀποδιδόντας εἰς ἀγορὰν ἄγοντες καθίσαι κελεύουσιν, εἶτα κόφινον ἐπιβάλλουσιν αὐτοῖς· ὃς δ' ἂν κοφινωθῇ, ἄτιμος γίνεται. δοκεῖ δὲ τοῦτο πεπονθέναι καὶ ὁ Εὐριπίδου πατὴρ Βοιωτὸς ὢν τὸ γένος.

Ἀσσύριοι τὰς παρθένους ἐν ἀγορᾷ πωλοῦσι τοῖς θέλουσι συνοικεῖν· πρώτας μὲν τὰς εὐγενεστάτας καὶ καλλίστας, εἶτα τὰς λοιπὰς ἐφεξῆς· ὅταν δ' ἔλθωσιν ἐπὶ τὰς φαυλοτάτας, κηρύττουσι πόσον τις θέλει προσλαβὼν ταύταις συνοικεῖν, καὶ τὸ συναχθὲν ἐκ τῆς τῶν εὐπρεπῶν τιμῆς ταύταις προστίθενται. ἀσκοῦσι δὲ μάλιστα οὗτοι τὴν βαθύτητα καὶ τὴν ἀοργησίαν.

Πέρσαις ὃ μὴ ποιεῖν ἔξεστιν οὐδὲ λέγουσιν. ἐὰν δέ τις πατέρα κτείνῃ, ὑποβλητὸν αὐτὸν οἴονται. ἐὰν δέ τινα προστάξῃ ὁ βασιλεὺς μαστιγῶσαι, εὐχαριστεῖ ὡς ἀγαθοῦ τυχὼν ὅτι αὐτοῦ ἐμνήσθη ὁ βασιλεύς. ἆθλα δὲ λαμβάνουσι παρὰ τοῦ βασιλέως πολυτεκνίας. οἱ δὲ παῖδες παρ' αὐτοῖς ὥσπερ τι μάθημα τὸ ἀληθεύειν διδάσκονται.

Παρ' Ἰνδοῖς, ἐάν τις ἀποστερηθῇ δανείου ἢ παρακαταθήκης, οὐκ ἔστι κρίσις, ἀλλ' αὐτὸν αἰτιᾶται ὁ πιστεύσας. ὁ δὲ τεχνίτου πηρώσας χεῖρα ἢ ὀφθαλμὸν θανάτῳ ζημιοῦται. τὸν δὲ μέγιστα ἀδικήσαντα ὁ βασιλεὺς κελεύει κείρασθαι, ὡς λίαν ἐσχάτης οὔσης τῆς τοιαύτης ἀτιμίας.

Λακεδαιμονίοις τέχνας μανθάνειν ἄλλας ἢ τὰς εἰς πόλεμον αἰσχρόν ἐστιν. ἑστιῶνται δὲ πάντες ἐν κοινῷ. τοὺς δὲ γέροντας αἰσχύνονται οὐδὲν ἧττον ἢ πατέρας. γυμνάσια δ' ὥσπερ ἀνδρῶν ἐστίν, οὕτω καὶ παρθένων. ξένοις δ' ἐμβιοῦν οὐκ ἔξεστιν ἐν Σπάρτῃ, οὐδὲ Σπαρτιάταις ξενιτεύειν. ταῖς δὲ αὐτῶν γυναιξὶ παρακελεύονται ἐκ τῶν εὐειδεστάτων κύεσθαι καὶ ἀστῶν καὶ ξένων. χρηματίζεσθαι δ' αἰσχρὸν Σπαρτιάταις. νομίσματι δὲ χρῶνται σκυτίνῳ· ἐὰν δὲ παρά τινι εὑρεθῇ χρυσὸς ἢ ἄργυρος, θανάτῳ ζημιοῦται. σεμνύνονται δὲ πάντες ἐπὶ τῷ ταπεινοὺς αὐτοὺς παρέχειν καὶ κατηκόους ταῖς ἀρχαῖς. μακαρίζονται δὲ μᾶλλον παρ' αὐτοῖς οἱ γενναίως ἀποθνήσκοντες ἢ οἱ εὐτυχῶς ζῶντες. οἱ δὲ παῖδες νομίμως περί τινα βωμὸν περιιόντες μαστιγοῦνται, ἕως ἂν ὀλίγοι λειφθέντες στεφανωθῶσιν. αἰσχρὸν δέ ἐστι δειλῶν σύσκηνον ἢ συγγυμναστὴν ἢ φίλον γενέσθαι. κρίσις δὲ ταῖς γεροντίαις ἐπὶ τῷ τέρματι τοῦ βίου προστίθεται τοῖς τε εὖ ἢ κακῶς ζήσασιν. ὅταν δὲ στρατεύωνται ἔξω χώρας, πῦρ ἀπὸ τοῦ βωμοῦ τοῦ Ἀγήτορος Διὸς ἐναυσάμενος πυρφόρος λεγόμενος, σύνεστι τῷ βασιλεῖ ἄσβεστον αὐτὸ τηρῶν. συνεκπέμπονται δὲ τῷ βασιλεῖ μάντεις καὶ ἰατροὶ καὶ αὐληταί, οἷς ἐν ταῖς μάχαις ἀντὶ σαλπίγγων ἀεὶ χρῶνται· μάχονται δὲ ἐστεφανωμένοι. ὑπανίστανται δὲ τῷ βασιλεῖ πάντες πλὴν τῶν ἐφόρων.

ὀμνύει τε πρὸ τῆς ἀρχῆς ὁ βασιλεὺς κατὰ τοὺς τῆς πόλεως νόμους βασιλεύσειν.

Κρῆτες πρῶτοι Ἑλλήνων νόμους ἔσχον τοῦ Μίνωος θεμένου, ὃς καὶ πρῶτος ἐθαλασσοκράτησεν. προσεποιεῖτο δὲ ὁ Μίνως παρὰ τοῦ Διὸς αὐτοῦ μεμαθηκέναι, δι᾽ ἐννέα ἐτῶν εἴς τι ὄρος φοιτῶν, ἐν ᾧ Διὸς ἄντρον ἐλέγετο, κἀκεῖθεν ἀεὶ τινὰς νόμους φέρων τοῖς Κρησί. μέμνηται δὲ τούτου καὶ Ὅμηρος ἐν οἷς λέγει,

τοῖσι δ᾽ ἐνὶ Κνωσσὸς μεγάλη πόλις, ἔνθα γε Μίνως
ἐννέωρος βασίλευε, Διὸς μεγάλου ὀαριστής.

οἱ δὲ Κρητῶν παῖδες ἀγελάζονται κοινῇ μετ᾽ ἀλλήλων σκληραγωγούμενοι, καὶ θήρας καὶ δρόμους τε ἀνάντεις ἀνυπόδητοι κατανύοντες, καὶ τὴν ἐνόπλιον πυρρίχην ἐκπονοῦντες, ἥντινα πρῶτος εὗρε Πύρριχος Κυδωνιάτης Κρὴς τὸ γένος. συσσιτοῦσι δ᾽ ἐν κοινῷ οἱ ἄνδρες, τὴν αὐτὴν δίαιταν ἔχοντες ἐξίσου πάντες. δῶρα δὲ αὐτοῖς ἐστιν ὅπλα τιμιώτατα.

*41 Ἐκ τῶν Σερήνου.

Οἱ Περσῶν βασιλεῖς πρὸ μὲν τῶν θυσιῶν περὶ εὐσεβείας διαλέγονται, πρὸ δὲ τοῦ πίνειν περὶ σωφροσύνης, πολεμεῖν δὲ μέλλοντες περὶ ἀνδρίας.

Πέρσαις νόμος ἦν, ὁπότε βασιλεὺς ἀποθάνοι, ἀνομίαν εἶναι πέντε ἡμερῶν, ἵν᾽ αἴσθοιντο ὅσου ἄξιός ἐστιν ὁ βασιλεὺς καὶ ὁ νόμος.

42 Ἐκ τῶν Πλουτάρχου περὶ Ἴσιδος (354 b).

Οἱ δὲ βασιλεῖς ἀπεδείκνυντο μὲν ἐκ τῶν ἱερέων ἢ τῶν μαχίμων, τοῦ μὲν δι᾽ ἀνδρίαν τοῦ δὲ διὰ σοφίαν γένους ἀξίωμα καὶ τιμὴν ἔχοντος. ὁ δ᾽ ἐκ μαχίμων ἀποδεικνύμενος εὐθὺς ἐγίνετο τῶν ἱερέων καὶ

μετεῖχε τῆς φιλοσοφίας ἐπικρυπτομένης τὰ πολλὰ μύθοις καὶ λόγοις, ἀμυδρὰς ἐμφάσεις τῆς ἀληθείας [καὶ διαφάσεις] ἔχουσιν· ὥσπερ ἀμέλει καὶ παραδηλοῦσιν αὐτοὶ πρὸ τῶν ἱερῶν τὰς σφίγγας ἐπιεικῶς ἱστάντες, ὡς αἰνιγματώδη σοφίαν τῆς θεολογίας αὐτῶν ἐχούσης. τὸ δὲ ἐν Σάι τῆς Ἀθηνᾶς, ἣν [καὶ] Ἶσιν νομίζουσιν, ἕδος ἐπιγραφὴν εἶχε τοιαύτην 'ἐγώ εἰμι πᾶν τὸ γεγονὸς καὶ ὂν καὶ ἐσόμενον, καὶ τὸν ἐμὸν πέπλον οὐδείς πω θνητὸς ἀνεκάλυψεν.'

43 Ἡροδότου ἱστορίας τετάρτης (104).

Ἀγάθυρσοι ἁβρότατοι ἄνδρες εἰσὶ καὶ χρυσοφόροι τὰ μάλιστα, ἐπίκοινον δὲ τῶν γυναικῶν τὴν μῖξιν ποιεῦνται, ἵνα κασίγνητοί τε ἀλλήλων ἔωσι καὶ οἰκήιοι ἐόντες πάντες μήτε φθόνῳ μήτε ἔχθεϊ χρέωνται ἐς ἀλλήλους.

44 Πλάτωνος νόμων β′ (666 a).

Ἆρ' οὖν νομοθετήσομεν, πρῶτον μὲν τοὺς παῖδας μέχρις ἐτῶν ιη′ τὸ παράπαν οἴνου μὴ γεύεσθαι, διδάσκοντες ὡς οὐ χρὴ πῦρ ἐπὶ πῦρ ὀχετεύειν εἴς τε τὸ σῶμα καὶ τὴν ψυχὴν πρὶν ἐπὶ τοὺς πόνους ἐγχειρεῖν πορεύεσθαι, τὴν ἐμμανῆ εὐλαβουμένους ἕξιν τῶν νέων· μετὰ δὲ τοῦτο οἴνου μὲν ἤδη γεύεσθαι τοῦ μετρίου, μέχρι λ′ ἐτῶν· μέθης δὲ καὶ πολυοινίας τὸ παράπαν ἀπέχεσθαι τὸν νέον· τετταράκοντα δὲ ἐπιβαίνοντα ἐτῶν, ἐν τοῖς ξυσσιτίοις εὐωχηθέντα καλεῖν τούς τε ἄλλους θεούς, καὶ δὴ καὶ Διόνυσον παρακαλεῖν εἰς τὴν τῶν πρεσβυτέρων τελετὴν ἅμα καὶ παιδείαν, ἣν τοῖς [ἄλλοις] ἀνθρώποις ἐπίκουρον τῆς τοῦ γήρως αὐστηρότητος ἐδωρήσατο, τὸν οἶνον φάρμακον, ὥστε ἀνηβᾶν ἡμᾶς καὶ δυσθυμίας λήθην γίγνεσθαι, μαλακώτερον ἐκ σκληροτέρου τὸ τῆς ψυ-

χῆς ἦθος, καθάπερ εἰς πῦρ σίδηρον ἐντεθέντα, γιγνόμενον, καὶ οὕτως εὐπλαστότερον εἶναι;

45 *Ἐν ταυτῷ* (674 a).

Μηδέποτε μηδένα ἐπὶ στρατοπέδου γεύεσθαι τούτου τοῦ πόματος, ἀλλὰ ὑδροποσίᾳ συγγίγνεσθαι τοῦτον τὸν χρόνον ἅπαντα, καὶ κατὰ πόλιν μήτε δοῦλον μήτε δούλην γεύεσθαι μηδέποτε· μηδὲ ἄρχοντας τοῦτον τὸν ἐνιαυτόν, ὃν ἂν ἄρχωσιν· μηδ᾽ αὖ κυβερνήτας μηδὲ δικαστὰς ἐνεργοὺς ὄντας οἴνου γεύεσθαι τὸ παράπαν· μηδ᾽ ὅστις βουλευσόμενος εἰς βουλήν τινα ἀξίαν λόγου ξυνέρχεται, μηδέ γε μεθ᾽ ἡμέραν μηδένα τὸ παράπαν, εἰ μὴ σωμασκίας ἢ νόσων ἕνεκα· μηδὲ αὖ νύκτωρ, ὅταν ἐπινοῇ τις παῖδας ποιεῖσθαι ἀνὴρ ἢ καὶ γυνή· καὶ ἄλλα δὲ πάμπολλα ἄν τις λέγοι, ἐν οἷς τοῖς νοῦν τε καὶ νόμον ἔχουσιν ὀρθὸν οὐ ποτέος οἶνος. ὥστε κατὰ τὸν λόγον τοῦτον οὐδ᾽ ἀμπέλων ἂν πολλῶν δέοι οὐδ᾽ ἧτινι πόλει· τακτὰ δὲ τὰ ἄλλα ἂν εἴη γεωργήματα καὶ πᾶσα ἡ δίαιτα· καὶ δὴ τά γε περὶ οἶνον σχεδὸν ἁπάντων ἐμμετρότατα καὶ ὀλίγιστα γίγνοιτ᾽ ἄν. οὗτος, ὦ ξένοι, ἡμῖν, εἰ ξυνδοκεῖ, κολοφὼν ἐπὶ τῷ περὶ οἴνου λόγῳ ῥηθέντι εἰρήσθω. [Καλῶς, καὶ ξυνδοκεῖ.]

46 *Τοῦ αὐτοῦ νόμων γ′* (689 e).

Ἄρχοντας δὲ δὴ καὶ ἀρχομένους ἀναγκαῖον ἐν ταῖς πόλεσιν εἶναί που; Τί μήν; Εἶεν. Ἀξιώματα δὲ δὴ τοῦ τε ἄρχειν καὶ ἄρχεσθαι ποῖά ἐστι καὶ πόσα, ἔν τε πόλεσι μεγάλαις καὶ μικραῖς καὶ οἰκίαις ὡσαύτως; ἆρ᾽ οὐχὶ ἓν μὲν τό τε πατρὸς καὶ μητρὸς καὶ ὅλως γονέας ἐκγόνων ἄρχειν, ἀξίωμα ὀρθὸν πανταχοῦ ἂν εἴη; Καὶ μάλα. Τούτῳ δέ γε ἑπόμενον γενναίους ἀγεννῶν ἄρχειν· καὶ τρίτον

ἔτι τούτοις ξυνέπεται τὸ πρεσβυτέρους μὲν ἄρχειν δεῖν νεωτέρους δὲ ἄρχεσθαι. Τί μήν; Τέταρτον δ' αὖ δούλους μὲν ἄρχεσθαι δεσπότας δὲ ἄρχειν. Πῶς γὰρ οὔ; Καὶ πέμπτον γε οἶμαι, τὸν κρείττονα μὲν ἄρχειν ἥττονα δὲ ἄρχεσθαι. Μάλα γε ἀναγκαίαν ἀρχὴν εἴρηκας. Καὶ πλείστην γε ἐν ξύμπασι τοῖς ζῴοις οὖσαν καὶ κατὰ φύσιν, ὡς ὁ Θηβαῖος ἔφη ποτὲ Πίνδαρος. τὸ δὲ μέγιστον ὡς ἔοικεν ἀξίωμα ἕκτον ἂν γίγνοιτο, ἕπεσθαι μὲν τὸν ἀνεπιστήμονα κελεῦον, τὸν δὲ φρονοῦντα ἡγεῖσθαί τε καὶ ἄρχειν· καίτοι τοῦτό γε, ὦ Πίνδαρε σοφώτατε, σχεδὸν οὐκ ἂν παρὰ φύσιν ἔγωγε φαίην γίγνεσθαι, κατὰ φύσιν δὲ τὴν τοῦ νόμου ἑκόντων ἀρχήν, ἀλλ' οὐ βίαιον πεφυκυῖαν. Ὀρθότατα λέγεις. Θεοφιλῆ δέ γε καὶ εὐτυχῆ τινὰ λέγοντες ἑβδόμην ἀρχὴν εἰς κλῆρόν τινα προάγομεν, καὶ λαχόντα μὲν ἄρχειν δυσκληροῦντα δὲ ἀπιόντα ἄρχεσθαι, τὸ δικαιότατον εἶναι φαμέν.

47 Τοῦ αὐτοῦ νόμων δ' (715 b).

Λέγεται δὲ τοῦδ' ἕνεκα ταῦθ' ἡμῖν, ὡς ἡμεῖς τῇ σῇ πόλει ἀρχὰς οὔθ' ὅτι πλούσιός ἐστί τις δώσομεν οὔθ' ὅτι τῶν τοιούτων ἄλλο οὐδὲν κεκτημένος, ἰσχὺν ἢ μέγεθος ἤ τι γένος· ὃς δ' ἂν τοῖς τεθεῖσι νόμοις εὐπειθέστατος ᾖ καὶ νικᾷ ταύτην τὴν νίκην ἐν τῇ πόλει, τούτῳ φαμὲν καὶ τὴν τῶν θεῶν ὑπηρεσίαν δοτέον εἶναι, τὴν μεγίστην τῷ πρώτῳ, καὶ δευτέραν τῷ τὰ δεύτερα κρατοῦντι, καὶ κατὰ λόγον οὕτω τοῖς ἐφεξῆς τὰ μετὰ ταῦθ' ἕκαστα ἀποδοτέον εἶναι. τοὺς δ' ἄρχοντας λεγομένους νῦν ὑπηρέτας τοῖς νόμοις ἐκάλεσα, οὔ τι καινοτομίας ὀνομάτων ἕνεκα, ἀλλ' ἡγοῦμαι παντὸς μᾶλλον εἶναι παρὰ τοῦτο σωτηρίαν τε πόλει καὶ τοὐναντίον. ἐν ᾗ μὲν γὰρ

ἂν ἀρχόμενος ᾖ καὶ ἄκυρος νόμος, φθορὰν ὁρῶ τῇ τοιαύτῃ ἑτοίμην οὖσαν· ἐν ᾗ δὲ ἂν δεσπότης τῶν ἀρχόντων, οἱ δὲ ἄρχοντες δοῦλοι τοῦ νόμου, σωτηρίαν καὶ πάντα ἀγαθὰ ὅσα οἱ θεοὶ πόλεσιν ἔδοσαν, γιγνόμενα καθορῶ. Ναὶ μὰ Δία, ὦ ξένε· καθ' ἡλικίαν γὰρ ὀξὺ βλέπεις· νέος μὲν γὰρ ὢν πᾶς ἄνθρωπος τὰ τοιαῦτα ἀμβλύτατα αὐτὸς αὑτοῦ ὁρᾷ, ὁ γέρων δὲ ὀξύτατα. Ἀληθέστατα.

48 Ἐν ταυτῷ (720 e).

Φέρε δὴ πρὸς θεῶν τίνα [ἄρα] πρῶτον νόμον θεῖτ' ἂν ὁ νομοθέτης; ἆρ' οὐ κατὰ φύσιν τὴν περὶ γενέσεως ἀρχὴν πρώτην πόλεων πέρι κατακοσμήσει ταῖς τάξεσι; Τί μήν; Ἀρχὴ δ' ἐστὶ τῶν γενέσεων πάσαις πόλεσιν ἆρ' οὐχ ἡ τῶν γάμων σύμμιξις καὶ κοινωνία; Πῶς γὰρ οὔ; Γαμικοὶ δὲ νόμοι πρῶτοι κινδυνεύουσι τιθέμενοι καλῶς ἂν τίθεσθαι πρὸς ὀρθότητα πάσῃ πόλει. Παντάπασι μὲν οὖν. Λέγωμεν δὴ πρῶτον τὸν ἁπλοῦν. ἔχοι δ' ἂν πως ἴσως ὧδε· γαμεῖν δέ, ἐπειδὰν ἐτῶν ᾖ τις τριάκοντα μέχρι τῶν πέντε καὶ τριάκοντα, εἰ δὲ μή, ζημιοῦσθαι χρήμασί τε καὶ ἀτιμίᾳ· χρήμασι μὲν τόσοις καὶ τόσοις, τῇδε καὶ τῇδε ἀτιμίᾳ. ὁ μὲν ἁπλοῦς ἔστω τις τοιοῦτος περὶ γάμων, ὁ διπλοῦς δὲ ὧδε. γαμεῖν δέ, ἐπεὶ ἐτῶν ᾖ τις τριάκοντα, διανοηθέντα ὡς ἔστιν ᾗ τὸ ἀνθρώπινον γένος φύσει τινὶ μετείληφεν ἀθανασίας, οὗ καὶ πέφυκεν ἐπιθυμίαν ἴσχειν πᾶς πᾶσαν· τὸ γὰρ γενέσθαι κλεινὸν καὶ μὴ ἀνώνυμον κεῖσθαι τετελευτηκότα τοῦ τοιούτου ἐστὶν ἐπιθυμία. γένος οὖν ἐστιν ἀνθρώπων τι ξυμφυὲς τοῦ παντὸς χρόνου, ὃ διὰ τέλους αὐτῷ ξυνέπεται καὶ συνέψεται τούτῳ τῷ τρόπῳ ἀθάνατον ὄν, τῷ παῖδας παίδων καταλειπόμενον ταυτὸν καὶ ἓν ὂν

ἀεὶ γενέσει τῆς ἀθανασίας μετειληφέναι· τούτου δὴ ἀποστερεῖν ἑκόντα ἑαυτὸν οὐδέποτε ὅσιον· ἐκ προνοίας δὲ ἀποστερεῖ ὃς ἂν παίδων καὶ γυναικὸς ἀμελῇ. πειθόμενος μὲν οὖν τῷ νόμῳ ἀζήμιος ἀπαλλάττοιτο ἄν· μὴ πειθόμενος δὲ αὖ μήτε γαμῶν ἔτη τριάκοντα γεγονὼς καὶ πέντε ζημιούσθω μὲν κατ' ἐνιαυτὸν τόσῳ καὶ τόσῳ, ἵνα μὴ δοκῇ τὴν μοναυλίαν οἱ κέρδος καὶ ῥᾳστώνην φέρειν· μὴ μετέχοι δὲ τιμῶν ὧν ἂν οἱ νεώτεροι ἐν τῇ πόλει τοὺς πρεσβυτέρους αὐτῶν τιμῶσιν ἑκάστοτε.

49 Νόμων ε' (734 e).

Καθάπερ οὖν δή τινα ξυνυφὴν ἢ καὶ πλέγμα ἄλλ' ὁτιοῦν οὐκ ἐκ τῶν αὐτῶν οἷόν τέ ἐστι τήν τε ἐφυφὴν καὶ τὸν στήμονα ἀπεργάζεσθαι, διαφέρειν δὲ ἀναγκαῖον τὸ τῶν στημόνων πρὸς ἀρετὴν γένος· ἰσχυρόν τε γὰρ καί τινα βεβαιότητα ἐν τοῖς τρόποις εἰληφός, τὸ δὲ μαλακώτερον καὶ ἐπιεικείᾳ τινὶ δικαίᾳ χρώμενον· ὅθεν δὴ τοὺς τὰς μεγάλας ἀρχὰς ἐν ταῖς πόλεσιν ἄρξοντας δεῖ διακρίνεσθαί τινα τρόπον ταύτῃ καὶ τοὺς σμικρᾷ παιδείᾳ βασανισθέντας ἑκάστοτε καὶ κατὰ λόγον. ἔστον γὰρ δὴ δύο πολιτείας εἴδη, τὸ μὲν ἀρχῶν καταστάσεις ἑκάστοις, τὸ δὲ νόμοι ταῖς ἀρχαῖς ἀποδοθέντες. τὸ δὲ πρὸ τούτων ἁπάντων δεῖ διανοεῖσθαι τὰ τοιάδε· πᾶσαν ἀγέλην ποιμὴν καὶ βουκόλος τροφεύς τε ἵππων καὶ ὅσα ἄλλα παραλαβὼν τοιαῦτα, οὐκ ἄλλως μή ποτε ἐπιχειρήσῃ θεραπεύειν ἢ πρῶτον μὲν τὸν ἑκάστῃ προσήκοντα καθαρμὸν καθάρῃ τῇ ξυνοικήσει· διαλέξας δὲ τά τε ὑγιῆ καὶ τὰ μὴ καὶ τὰ γενναῖα καὶ ἀγεννῆ, τὰ μὲν ἀποπέμψει πρὸς ἄλλας τινὰς ἀγέλας τὰ δὲ θεραπεύσει, διανοούμενος ὡς μάταιος ἂν ὁ πόνος εἴη καὶ ἀνήνυτος

περί τε σῶμα καὶ ψυχάς, ἃς φύσις καὶ πονηρὰ τροφὴ διεφθαρκυῖα προσαπόλλυσι τὸ τῶν ὑγιῶν καὶ ἀκηράτων ἠθῶν τε καὶ σωμάτων γένος ἐν ἑκάστοις τῶν κτημάτων, ἂν τις τὰ ὑπάρχοντα μὴ διακαθαίρηται. τὰ μὲν δὴ τῶν ἄλλων ζῴων ἐλάττω τε σπουδῇ καὶ παραδείγματος ἕνεκα μόνον ἄξια παραθέσθαι τῷ λόγῳ, τὰ δὲ τῶν ἀνθρώπων σπουδῆς τῆς μεγίστης τῷ γε νομοθέτῃ διερευνᾶσθαι καὶ φράζειν τὸ προσῆκον ἑκάστοις καθαρμοῦ τε πέρι καὶ ξυμπασῶν τῶν ἄλλων πράξεων. αὐτίκα γὰρ τὸ περὶ καθαρμοὺς πόλεως ὧδ' ἔχον ἂν εἴη· πολλῶν οὐσῶν τῶν διακαθάρσεων αἳ μὲν ῥᾴους εἰσὶν αἳ δὲ χαλεπώτεραι, καὶ τὰς μὲν τύραννος μὲν ὢν καὶ νομοθέτης ὁ αὐτός, ὅσαι χαλεπαί τέ εἰσι καὶ ἄρισται, δύναιτ' ἂν καθῆραι· νομοθέτης δὲ ἄνευ τυραννίδος καθιστὰς πολιτείαν καινὴν καὶ νόμους, εἰ καὶ τὸν πρᾳότατον τῶν καθαρμῶν καθήρειεν, ἀγαπώντως ἂν καὶ τὸ τοιοῦτον δράσειεν. ἔστι δ' ὁ μὲν ἄριστος ἀλγεινός, καθάπερ ὅσα τῶν φαρμάκων τοιουτότροπα, ὁ τῇ δίκῃ μετὰ τιμωρίας εἰς τὸ κολάζειν ἄγων θάνατον ἢ φυγὴν τῇ τιμωρίᾳ τὸ τέλος ἐπιτιθείς· τοὺς γὰρ μέγιστα ἐξημαρτηκότας, ἀνιάτους δὲ ὄντας, μεγίστην δὲ βλάβην οὖσαν πόλεως ἀπαλλάττειν εἴωθεν. ὁ δὲ πρᾳότερός ἐστι τῶν καθαρμῶν ὁ τοιόσδε ἡμῖν· ὅσοι διὰ τὴν τῆς τροφῆς ἀπορίαν τοῖς ἡγεμόσιν ἐπὶ τὰ τῶν ἐχόντων μὴ ἔχοντες ἑτοίμους αὑτοὺς ἐνδείκνυνται παρεσκευακότες ἕπεσθαι, τούτοις ὡς νοσήματι πόλεως ἐμπεφυκότι δι' εὐφημίας ἀπαλλαγὴν ὄνομα ἀποικίαν τιθέμενος, εὐμενῶς ὅτι μάλιστα ἐξεπέμψατο. παντὶ μὲν οὖν νομοθετοῦντι τοῦτο ἀμωσγέπως κατ' ἀρχὰς δραστέον· ἡμῖν μὴν ἔτι τούτων ἀτοπώτερα τὰ περὶ ταῦτ' ἐστι ξυμβεβηκότα νῦν. οὔτε γὰρ ἀποικίαν οὔτ' ἐκλογήν τινα καθάρσεως

δεῖ μηχανᾶσθαι πρὸς τὸ παρόν· οἷον δέ τινων ξυρρεόντων ἐκ πολλῶν τὰ μὲν πηγῶν τὰ δὲ χειμάρρων εἰς μίαν λίμνην, ἀναγκαῖον προσέχοντας τὸν νοῦν φυλάττειν ὅπως ὅτι καθαρώτατον ἔσται τὸ ξυρρέον ὕδωρ, τὰ μὲν ἐξαντλοῦντας τὰ δὲ ἀποχετεύοντας καὶ παρατρέποντας· πόνος δ', ὡς ἔοικε, καὶ κίνδυνός ἐστιν ἐν πάσῃ πολιτικῇ κατασκευῇ. τὰ δ' ἐπειδήπερ λόγῳ γε ἐστὶ τὰ νῦν ἀλλ' οὐκ ἔργῳ πραττόμενα, πεπεράνθω τε ἡμῖν ἡ ξυλλογὴ καὶ κατὰ νοῦν ἡ καθαρότης αὐτῆς ἔστω ξυμβεβηκυῖα. τοὺς γὰρ κακοὺς τῶν ἐπιχειρούντων εἰς τὴν νῦν πόλιν ὡς πολιτευσομένους ξυνιέναι πειθοῖ πάσῃ καὶ ἱκανῷ χρόνῳ διαβασανίσαντες διακωλύσωμεν ἀφικνεῖσθαι, τοὺς δ' ἀγαθοὺς εἰς δύναμιν εὐμενεῖς ἵλεώ τε προσαγώμεθα.

50 *Τοῦ αὐτοῦ νόμων ε'* (742 a).

*Μηδὲ ἐξεῖναι χρυσὸν μηδὲ ἄργυρον κεκτῆσθαι μηδένα μηδενὶ ἰδιώτῃ· νόμισμα δὲ ἕνεκα ἀλλαγῆς τῆς καθ' ἡμέραν, ἣν δημιουργοῖς τε ἀλλάττεσθαι σχεδὸν ἀναγκαῖον καὶ πᾶσιν ὁπόσων χρεία τῶν τοιούτων, μισθοὺς μισθωτοῖς δούλοις καὶ ἐποίκοις ἀποτίνειν· ὧν ἕνεκα φαμὲν τὸ νόμισμα κτητέον αὐτοῖς.

51 Ἰδιώτῃ δὲ ἂν ἄρα ποτὲ ἀνάγκη τις γίγνηται ἀποδημεῖν, παρέμενος μὲν τοὺς ἄρχοντας ἀποδημείτω· νόμισμα δὲ ἂν ποθεν ἔχων ξενικὸν οἴκαδε ἀφίκηται περιγενόμενον, τῇ πόλει αὐτὸ καταβαλλέτω, πρὸς λόγον ἀπολαμβάνων τὸ ἐπιχώριον. ἰδιούμενος δὲ ἐάν τις φαίνηται, δημόσιόν τε γιγνέσθω καὶ ὁ ξυνειδὼς καὶ μὴ φράζων ἀρᾷ καὶ ὀνείδει μετὰ τοῦ ἀγαγόντος ἔνοχος ἔστω, καὶ ζημίᾳ πρὸς τούτοις μὴ ἐλάττονι τοῦ ξενικοῦ κομισθέντος νομίσματος. γαμοῦντα δὲ καὶ

ἐκδιδόντα μήτ' οὖν διδόναι μήτε δέχεσθαι προῖκα τὸ παράπαν μηδ' ἡντινοῦν, μηδὲ νόμισμα παρακατατίθεσθαι ὅτῳ μή τις πιστεύει, μηδὲ δανείζειν ἐπὶ τόκῳ, ὡς ἐξὸν μὴ ἀποδιδόναι τὸ παράπαν τῷ δανεισαμένῳ μήτε τόκον μήτε τὸ κεφάλαιον. (Plat. Leg. IV, 742 b).

52 Τοῦ αὐτοῦ νόμων ς' (757 a).

Δοῦλοι γὰρ ἂν καὶ δεσπόται οὐκ ἄν ποτε γένοιντο φίλοι, οὐδ' ἐν ἴσαις τιμαῖς διαγόμενοι φαῦλοι καὶ σπουδαῖοι· τοῖς γὰρ ἀνίσοις τὰ ἴσα ἄνισα γίγνοιτ' ἄν, εἰ μὴ τυγχάνοι τοῦ μέτρου· διὰ γὰρ ἀμφότερα ταῦτα στάσεων αἱ πολιτεῖαι πληροῦνται. παλαιὸς γὰρ ὁ λόγος, ἀληθὴς ὤν, ὡς ἰσότης φιλότητα ἀπεργάζεται, μάλα μὲν ὀρθῶς εἴρηται καὶ ἐμμελῶς· ἥ τις δ' ἐστί ποτε ἰσότης ἡ τοῦτο αὐτὸ δυναμένη, διὰ τὸ μὴ σφόδρα σαφὴς εἶναι σφόδρα ἡμᾶς διαταράττει. δυοῖν γὰρ ἰσοτήτοιν οὔσαιν ὁμωνύμοιν μέν, ἔργῳ δὲ [εἰς] πολλὰ σχεδὸν ἐναντίαιν, τὴν μὲν ἑτέραν εἰς τὰς τιμὰς πᾶσα πόλις ἱκανὴ παραγαγεῖν καὶ πᾶς νομοθέτης, τὴν μέτρῳ ἴσην καὶ σταθμῷ καὶ ἀριθμῷ, κλήρῳ ἀπευθύνων εἰς τὰς διανομας αὐτήν· τὴν δὲ ἀληθεστάτην καὶ ἀρίστην ἰσότητα οὐκέτι ῥᾴδιον παντὶ ἰδεῖν· Διὸς γὰρ δὴ κρίσις ἐστί, καὶ τοῖς ἀνθρώποις ἀεὶ σμικρὰ μὲν ἐπαρκεῖ, πᾶν δὲ ὅσον ἂν ἐπαρκέσῃ πόλεσιν ἢ καὶ ἰδιώταις, πάντα ἀγαθὰ ἀπεργάζεται. τῷ μὲν γὰρ μείζονι πλείω τῷ δὲ ἐλάττονι σμικρότερα νέμει, μέτρια διδοῦσα πρὸς τὴν αὐτῶν φύσιν ἑκατέρῳ· καὶ δὴ καὶ τιμὰς μείζοσι μὲν πρὸς ἀρετὴν ἀεὶ μείζους, τοῖς δὲ τοὐναντίον ἔχουσιν ἀρετῆς τε καὶ παιδείας, τὸ πρέπον ἑκατέροις ἀπονέμει κατὰ λόγον. ἔστι γὰρ δήπου καὶ τὸ πολιτικὸν ἡμῖν ἀεὶ τοῦτ' αὐτὸ τὸ δίκαιον, οὗ καὶ νῦν ἡμᾶς ὀρεγομένους δεῖ καὶ

πρὸς ταύτην ἰσότητα, ὦ Κλεινία, ἀποβλέποντας τὴν νῦν φυομένην κατοικίζειν πόλιν, ἄλλην τε ἄν ποτέ τις οἰκίζῃ πρὸς ταυτὸ τοῦτο σκοπούμενον χρεὼν νομοθετεῖν, ἀλλ' οὐ πρὸς ὀλίγους τυράννους ἢ πρὸς ἕνα ἢ καὶ κράτος δήμου τι, πρὸς δὲ τὸ δίκαιον ἀεί· τοῦτο δ' ἐστὶ τὸ νῦν δὴ λεχθέν, τὸ κατὰ φύσιν ἴσον ἀνίσοις ἑκάστοτε δοθέν. ἀναγκαῖόν γε μὴν καὶ τούτοις παρωνυμίοισί ποτε προσχρήσασθαι πόλιν ἅπασαν, εἰ μέλλει στάσεων ἑαυτῇ μὴ προσκοινωνήσειν κατά τι μέρος· τὸ γὰρ ἐπιεικὲς καὶ ξύγγνωμον τοῦ τελέου καὶ ἀκριβοῦς παρὰ δίκην τὴν ὀρθὴν ἐστὶ παρατεθραυσμένον, ὅταν γίγνηται· διὸ τῷ τοῦ κλήρου ἴσῳ ἀνάγκη προσχρήσασθαι, δυσκολίας τῶν πολλῶν ἕνεκα, θεὸν καὶ ἀγαθὴν τύχην καὶ τότε ἐν εὐχαῖς ἐπικαλουμένους, ἀπορθοῦν αὐτοὺς τὸν κλῆρον πρὸς τὸ δικαιότατον. οὕτω δὴ χρηστέον ἀναγκαίως μὲν τοῖν ἰσοτήτοιν ἀμφοῖν· ὡς δ' ὅ τι μάλιστα ἐπ' ὀλιγίστοις τῇ ἑτέρᾳ τῇ τῆς τύχης δεομένῃ. ταῦτα οὕτω διὰ ταῦτα, ὦ φίλοι, ἀναγκαῖον τὴν μέλλουσαν σώζεσθαι δρᾶν πόλιν.

53 Ἐν ταυτῷ (759 a).

Ἑλέσθαι δὲ δεῖ τρία μὲν ἀρχόντων εἴδη· περὶ μὲν τὸ νῦν δὴ λεχθὲν ἀστυνόμους ἐπονομάζοντα, τὸ δὲ περὶ ἀγορᾶς κόσμον ἀγορανόμους, ἱερῶν δὲ ἱερέας. οἷς μέν εἰσι πάτριαι ἱερωσύναι καὶ αἷς, μὴ κινεῖν· εἰ δέ, οἷον τὸ πρῶτον κατοικιζομένοις εἰκὸς γίγνεσθαι περὶ τὰ τοιαῦτα, ἢ μηδενὶ ἢ τισὶν ὀλίγοις, οἷς μὴ καθεστήκοι, καταστατέον ἱερέας τε καὶ ἱερείας νεωκόρους γίγνεσθαι τοῖς θεοῖς. τούτων δὴ πάντων τὰ μὲν αἱρετὰ χρὴ τὰ δὲ κληρωτὰ ἐν ταῖς καταστάσεσι γίγνεσθαι, μιγνύντας πρὸς φιλίαν ἀλλήλοις δῆμον καὶ μὴ

δῆμον ἐν ἑκάστῃ χώρᾳ καὶ πόλει, ὅπως ἂν μάλιστα ὁμονοῶν εἴη. τὰ μὲν οὖν τῶν ἱερέων τῷ θεῷ ἐπιτρέποντα αὐτῷ τὸ κεχαρισμένον γίγνεσθαι, κληροῦν οὕτω τῇ θείᾳ τύχῃ ἀποδιδόντα, δοκιμάζειν δὲ τὸν ἀεὶ λαγχάνοντα, πρῶτον μὲν ὁλόκληρον καὶ γνήσιον, ἔπειτα ὡς ὅτι μάλιστα ἐκ καθαρευουσῶν οἰκήσεων, φόνου δὲ ἁγνὸν καὶ πάντων τῶν περὶ τὰ τοιαῦτα εἰς τὰ θεῖα ἁμαρτανομένων αὐτόν τε καὶ πατέρα καὶ μητέρα κατὰ ταῦτα βεβιωκότας. ἐκ Δελφῶν δὲ χρὴ νόμους περὶ τὰ θεῖα πάντα κομισαμένους καὶ καταστήσαντας ἐπ' αὐτοῖς ἐξηγητάς, τούτοις χρῆσθαι. κατ' ἐνιαυτὸν δὲ εἶναι καὶ μὴ μακρότερον τὴν ἱερωσύνην ἑκάστην, ἔτη δὲ μὴ ἔλαττον ἑξήκοντα ἡμῖν εἴη γεγονὼς ὁ μέλλων καθ' ἱεροὺς νόμους περὶ τὰ θεῖα ἱκανῶς ἁγιστεύειν. ταῦτα δὲ καὶ περὶ τῶν ἱερειῶν ἔστω τὰ νόμιμα. τοὺς δ' ἐξηγητὰς τρεῖς φερέτωσαν μὲν αἱ τέτταρες φυλαί, τέτταρας ἕκαστον ἐξ αὐτῶν· τρεῖς δέ, οἷς ἂν πλείστη γένηται ψῆφος, δοκιμάσαντας [τοὺς] ἐννέα πέμπειν εἰς Δελφοὺς ἀνελεῖν ἐξ ἑκάστης τριάδος ἕνα, τὴν δὲ δοκιμασίαν αὐτῶν καὶ τοῦ χρόνου τὴν ἡλικίαν εἶναι καθάπερ τῶν ἱερέων.

54 Τούτων δὲ οἱ νομοφύλακες ἐν τούτῳ ἀκριβεῖς ἔστωσαν ἐπίσκοποι, ὅπως ἢ μὴ γίγνηται τὴν ἀρχὴν ἢ γιγνόμενα τῆς ἀξίας δίκης τυγχάνῃ. δεῖ δὲ πάντα ἄνδρα διανοεῖσθαι περὶ πάντων ἀνθρώπων, ὡς ὁ μὴ δουλεύσας οὐδ' ἂν δεσπότης γένοιτο ἄξιος ἐπαίνου, καὶ καλλωπίζεσθαι χρὴ τῷ καλῶς δουλεῦσαι μᾶλλον ἢ καλῶς ἄρξαι, πρῶτον μὲν τοῖς νόμοις, ὡς ταύτην τοῖς θεοῖς οὖσαν δουλείαν, ἔπειτα τοῖς πρεσβυτέροις τε καὶ ἐντίμως βεβιωκόσι τοὺς νέους.

Ib. 762 d.

55 Ἐν ταυτῷ (765 d).

Λοιπὸς δὲ ἄρχων περὶ τὰ προειρημένα ἡμῖν ὁ τῆς παιδείας ἐπιμελητὴς πάσης θηλειῶν τε καὶ ἀρρένων. εἷς μὲν δὴ καὶ ὁ τούτων ἄρξων ἔστω κατὰ νόμους, ἐτῶν μὲν γεγονὼς μὴ ἔλαττον ἢ πεντήκοντα, παίδων δὲ γνησίων πατήρ, μάλιστα μὲν υἱέων καὶ θυγατέρων, εἰ δὲ μή, θάτερα. διανοηθήτω δὲ αὐτός τε ὁ προκριθεὶς καὶ ὁ προκρίνων ὡς οὖσαν ταύτην τὴν ἀρχὴν τῶν ἐν τῇ πόλει ἀκροτάτων ἀρχῶν πολὺ μεγίστην. παντὸς γὰρ δὴ φυτοῦ ἡ πρώτη βλάστη καλῶς ὁρμηθεῖσα πρὸς ἀρετὴν τῆς αὐτοῦ φύσεως κυριωτάτη τέλος ἐπιθεῖναι τὸ πρόσφορον, τῶν τε ἄλλων φυτῶν καὶ τῶν ζῴων ἡμέρων τε καὶ ἀγρίων καὶ ἀνθρώπων· ἄνθρωπος δέ, ὥς φαμέν, ἥμερον· ὅμως μὲν παιδείας τῆς ὀρθῆς τυχὼν καὶ φύσεως εὐτυχοῦς, θειότατον ἡμερώτατόν τε ζῷον γίγνεσθαι φιλεῖ, μὴ ἱκανῶς δὲ ἢ μὴ καλῶς τραφὲν ἀγριώτατον ὁπόσα φύει γῆ. ὧν ἕνεκα οὐ δεύτερον οὐδὲ πάρεργον δεῖ τὴν παίδων τροφὴν τὸν νομοθέτην ἐᾶν γίγνεσθαι. πρῶτον δὲ ἄρξασθαι χρεὼν τὸν μέλλοντα αὐτῶν ἐπιμελήσεσθαι καλῶς, αἱρεθῆναι τῶν ἐν τῇ πόλει ὃς ἂν ἄριστος εἰς πάντα ᾖ, τοῦτον κατὰ δύναμιν ὅτι μάλιστα αὐτοῖς καταστάντα προστάττειν ἐπιμελητήν. αἱ πᾶσαι τοίνυν ἀρχαὶ πλὴν βουλῆς καὶ πρυτάνεων εἰς τὸ τοῦ Ἀπόλλωνος ἱερὸν ἐλθοῦσαι φερόντων ψῆφον κρύβδην τῶν νομοφυλάκων, ὅντιν' ἂν ἕκαστος ἡγῆται κάλλιστα ἂν τῶν περὶ παιδείαν ἄρξαι γενομένων· ᾧ δ' ἂν πλεῖσται ψῆφοι ξυμβῶσι, δοκιμασθεὶς ὑπὸ τῶν ἄλλων ἀρχόντων τῶν ἑλομένων, πλὴν νομοφυλάκων, ἀρχέτω ἐπὶ πέντε ἔτη· ἕκτῳ δὲ κατὰ ταυτὰ ἄλλον ἐπὶ ταύτην τὴν ἀρχὴν αἱρεῖσθαι.

56 *Τοῦ αὐτοῦ νόμων ζ'* (801 e).

Μετά γε μὴν ταῦτα ὕμνοι θεῶν καὶ ἐγκώμια κεκοινωνημένα εὐχαῖς ᾄδοιντ' ἂν ὀρθότατα· καὶ μετὰ θεοὺς ὡσαύτως περὶ δαίμονάς τε καὶ ἥρωας μετ' ἐγκωμίων εὐχαὶ γίγνοιτ' ἂν τούτοις πᾶσι πρέπουσαι. Πῶς γὰρ οὔ; Μετά γε μὲν ταῦτ' ἤδη νόμος ἄνευ φθόνων εὐθὺς γίγνοιτ' ἂν ὅδε. τῶν πολιτῶν ὁπόσοι τέλος ἔχοιεν τοῦ βίου κατὰ σώματα ἢ κατὰ ψυχὰς ἔργα ἐξειργασμένοι καλὰ καὶ ἐπίπονα καὶ τοῖς νόμοις εὐπειθεῖς γεγονότες, ἐγκωμίων αὐτοὺς τυγχάνειν πρέπον ἂν εἴη. Πῶς δ' οὔ; Τούς γε μὴν ἔτι ζῶντας ἐγκωμίοις τε καὶ ὕμνοις τιμᾶν οὐκ ἀσφαλὲς πρὶν ἂν πάντα τις τὸν βίον διαδραμὼν τέλος ἐπιστήσηται καλόν· ταῦτα δὲ πάντα ἡμῖν ἔστω κοινὰ ἀνδράσι τε καὶ γυναιξὶν ἀγαθοῖς καὶ ἀγαθαῖς διαφανῶς γενόμενα.

57 *Τοῦ αὐτοῦ νόμων θ'* (856 c).

Πατρὸς ὀνείδη καὶ τιμωρίας παίδων μηδενὶ ξυνέπεσθαι, πλὴν ἐάν τινι πατὴρ καὶ πάππος καὶ πάππου πατὴρ ἐφεξῆς ὄφλωσι θανάτου δίκην.

58 *Ἐν ταυτῷ* (879 a).

Δοῦλος δ' ἐάν τις ἐλεύθερον ὀργῇ τρώσῃ, παραδότω τὸν δοῦλον ὁ κεκτημένος τῷ τρωθέντι χρῆσθαι ὅ τι ἂν θέλῃ. — ὃς δ' ἂν ἄκων ἄλλον τρώσῃ, τὸ βλάβος ἁπλοῦν ἀποτινέτω· τύχης γὰρ νομοθέτης οὐδεὶς ἱκανὸς ἄρχειν.

59 *Ἐν ταυτῷ* (879 b).

Ὧδε οὖν χρὴ περὶ τῶν τοιούτων πάντ' ἄνδρα καὶ παῖδα καὶ γυναῖκα ἀεὶ διανοεῖσθαι, τὸ πρεσβύτερον ὡς οὐ σμικρῷ τοῦ νεωτέρου ἐστὶ πρεσβευόμενον ἔν τε θεοῖσι καὶ ἐν ἀνθρώποισι τοῖς μέλλουσι σώζεσθαι

καὶ εὐδαιμονεῖν. αἰκίαν οὖν περὶ πρεσβύτερον ἐν πόλει γενομένην ὑπὸ νεωτέρου ἰδεῖν αἰσχρὸν καὶ θεομισές· ἔοικε δὲ νέῳ παντὶ ὑπὸ γέροντος πληγέντι ῥᾳθύμως ὀργὴν ὑποφέρειν, αὑτῷ τιθεμένῳ τιμὴν ταύτην εἰς γῆρας. ὧδ' οὖν ἔστω· πᾶς ἡμῖν αἰδείσθω τὸν ἑαυτοῦ πρεσβύτερον ἔργῳ τε καὶ ἔπει· τὸν δὲ προέχοντα εἴκοσιν ἡλικίας ἔτεσιν, ἄρρενα ἢ θῆλυν, νομίζων ὡς πατέρα ἢ μητέρα διευλαβείσθω, καὶ πάσης τῆς δυνατῆς ἡλικίας αὐτὸν φυτεῦσαι καὶ τεκεῖν ἀπέχοιτ' ἀεί, θεῶν γενεθλίων χάριν.

60 Ἐν ταυτῷ (880 d).

Νόμοι δέ, ὡς ἔοικεν, οἳ μὲν τῶν χρηστῶν ἀνθρώπων ἕνεκα γίγνονται, διδαχῆς χάριν τοῦ τίνα τρόπον ὁμιλοῦντες ἀλλήλοις ἂν φιλοφρόνως οἰκοῖεν, οἳ δὲ τῶν τὴν παιδείαν διαφυγόντων, ἀτεράμονι χρωμένων τινὶ φύσει καὶ μηδὲν τεγχθέντων, ὥστε μὴ οὐκ ἐπὶ πᾶσαν ἰέναι κάκην. οὗτοι τοὺς μέλλοντας ῥηθήσεσθαι λόγους πεποιηκότες ἂν εἶεν, [οἷς δὴ τοὺς νόμους ἐξ ἀνάγκης ὁ νομοθέτης ἂν νομοθετῇ, βουλόμενος αὐτῶν μηδέποτε χρείαν γίγνεσθαι.] πατρὸς γὰρ ἢ μητρὸς ἢ τούτων ἔτι προγόνων ὅστις τολμήσειεν ἅψασθαί ποτε βιαζόμενος αἰκίᾳ τινι, μήτε τῶν ἄνω θεῶν δείσας μῆνιν μήτε τῶν ὑπὸ γῆς τιμωριῶν λεγομένων, ἀλλ' ὡς εἰδὼς ἃ μηδαμῶς οἶδε, καταφρονῶν τῶν παλαιῶν καὶ ὑπὸ πάντων εἰρημένων παρανομεῖ, τούτῳ δεῖ τινος ἀποτροπῆς ἐσχάτης. θάνατος μὲν οὖν οὐκ ἔστιν ἔσχατον· οἱ δ' ἐν ᾅδου τούτοισι λεγόμενοι πόνοι ἔτι τε τούτων μᾶλλόν εἰσιν ἐν ἐσχάτοις, καὶ ἀληθέστατα λέγοντες οὐδὲν ἀνύτουσι ταῖς τοιαύταις ψυχαῖς ἀποτροπῆς· [οὐ γὰρ ἂν ἐγίγνοντό ποτε μητραλοῖαί τε

καὶ τῶν ἄλλων γεννητόρων ἀνόσιοι πληγῶν τόλμαι.] δεῖ δὴ τὰς ἐνθάδε κολάσεις περὶ τὰ τοιαῦτα τούτοισι τὰς ἐν τῷ ζῆν μηδὲν τῶν ἐν ᾅδου λείπεσθαι κατὰ δύναμιν.

61 Τοῦ αὐτοῦ νόμων ια′ (930 d).

Παίδων δὲ ἱκανότης ἀκριβὴς ἄρρην καὶ θήλεια ἔστω τῷ νόμῳ.

ΠΕΡΙ ΤΩΝ ΕΝ ΤΑΙΣ ΠΟΛΕΣΙ ΔΥΝΑΤΩΝ. ΜΕ.

1 Εὐριπίδου Θησεῖ (Αἰγεῖ).

Ἀνὴρ γὰρ ὅστις χρημάτων μὲν ἐνδεὴς
δρᾶσαί τε χειρὶ δυνατὸς οὐκ ἀνέξεται,
τὰ τῶν ἐχόντων χρήμαθ᾽ ἁρπάζειν φιλεῖ.

2 Εὐριπίδου Πενθεῖ (Bacch. 270).

Θρασύς τε δυνατὸς καὶ λέγειν οἷός τ᾽ ἀνὴρ
κακὸς πολίτης γίγνεται νοῦν οὐκ ἔχων.

3 Τοῦ αὐτοῦ Γλαύκῳ.

Ὅταν κακός τις ἐν πόλει πράσσῃ καλῶς,
νοσεῖν τίθησι τῶν ἀμεινόνων φρένας
παράδειγμ᾽ ἔχοντας τῶν κακῶν ἐξουσίαν.

4 Ἐν ταυτῷ (Ion. 605).

Οἱ τὰς πόλεις ἔχοντες ἀξίωμά τε
τοῖς ἀνθαμίλλοις εἰσὶ πολεμιώτατοι.

5 Εὐριπίδου Ὀρέστῃ (907).

Ὅταν γὰρ ἡδὺς τοῖς λόγοις φρονῶν κακῶς
πείθῃ τὸ πλῆθος, τῇ πόλει κακὸν μέγα·
ὅσοι δὲ σὺν νῷ χρηστὰ βουλεύουσ᾽ ἀεί,
κἂν μὴ παραυτίκ᾽, αὖθις εἰσὶ χρήσιμοι.

6 *Εὐριπίδου Ἑκάβης* (293).
Τὸ δ' ἀξίωμα, κἂν κακῶς λέγῃ, τὸ σὸν
πείσει. λόγος γὰρ ἔκ τ' ἀδοξούντων ἰὼν
κἀκ τῶν δοκούντων αὑτὸς οὐ ταυτὸν σθένει.

7 *[Εὐριπίδου] Ἀλκμήνῃ.*
Τῶν γὰρ δυναστῶν πλεῖστος ἐν πόλει λόγος.

8 *Μενάνδρου.*
Δεῖ τὸν πολιτῶν προστατεῖν αἱρούμενον
τὴν τοῦ λόγου μὲν δύναμιν οὐκ ἐπίφθονον,
ἤθει δὲ χρηστῷ συγκεκραμένην ἔχειν.

9 *Εὐριπίδου Ἀλκμήνης.*
Ἴστω δ' ἄφρων ὤν, ὅστις ἄνθρωπος γεγὼς
δῆμον κολούει χρήμασιν γαυρούμενος.

10 *Χρὴ δὲ ξένον μὲν κάρτα προσχωρεῖν πόλει.*
οὐδ' ἀστὸν ᾔνεσ' ὅστις αὐθάδης γεγὼς
πικρὸς πολίταις ἐστὶν ἀμαθίας ὕπο. (Med. 226.)

11 *Σοφοκλέους.*
Πολλῶν καλῶν δεῖ τῷ καλόν τι μωμένῳ·
μικροῦ δ' ἀγῶνος οὐ μέγ' ἔρχεται κλέος.

12 *Εὐριπίδου Ἀλκμήνῃ.*
Τὸν εὐτυχοῦντα χρὴ σοφὸν πεφυκέναι.

13 *Εὐριπίδου Αἰόλῳ.*
Λαμπροὶ δ' ἐν αἰχμαῖς Ἄρεος ἔν τε συλλόγοις
μή μοι τὰ κομψὰ ποικίλοι γενοίατο,
ἀλλ' ὧν πόλει δεῖ μεγάλα βουλεύοιντ' ἀεί.

14 *Αἰσχύλου.*
Κακοὶ γὰρ εὖ πράσσοντες οὐκ ἀνασχετοί.

15 *Σοφοκλέους* (Ant. 175).
Ἀμήχανον δὲ παντὸς ἀνδρὸς ἐκμαθεῖν
ψυχήν τε καὶ φρόνημα καὶ γνώμην, πρὶν ἂν

ἀρχαῖς τε καὶ νόμοισιν ἐντριβὴς φανῇ.
ἐμοὶ γὰρ ὅστις πᾶσαν εὐθύνων πόλιν
μὴ τῶν ἀρίστων ἅπτεται βουλευμάτων,
ἀλλ' ἐκ φόβου του γλῶσσαν ἐγκλείσας ἔχει,
κάκιστος εἶναι νῦν τε καὶ πάλαι δοκεῖ.
καὶ μείζον' εἴ τις ἀντὶ τῆς αὑτοῦ πάτρας
φίλον νομίζει, τοῦτον οὐδαμοῦ λέγω.
ἐγὼ γάρ, ἴστω Ζεὺς ὁ πάνθ' ὁρῶν ἀεί,
οὔτ' ἂν σιωπήσαιμι τὴν ἄτην ὁρῶν
στείχουσαν ἀστοῖς ἀντὶ τῆς σωτηρίας.

16 Ξενοφῶντος ἐν τετάρτῳ (6, 5) ἀπομνημονευμάτων.

Ἀνθρώποις δὲ ἄρα ἔστιν ὃν ἄν τις τρόπον βούληται χρῆσθαι; Οὔκ· ἀλλὰ καὶ περὶ τούτους ὁ εἰδὼς ἃ ἔστι νόμιμα, καθὰ δεῖ πρὸς ἀλλήλους χρῆσθαι, νόμιμος ἂν εἴη. Οὐκ οὖν οἱ κατὰ ταῦτα χρώμενοι ἀλλήλοις ὡς δεῖ χρῶνται; Πῶς γὰρ οὔ; Οὐκ οὖν οἵ γε ὡς δεῖ χρώμενοι καλῶς χρῶνται; Πάνυ μὲν οὖν, ἔφη. Οὐκ οὖν οἵ γε τοῖς ἀνθρώποις καλῶς χρώμενοι καλῶς πράττουσι τἀνθρώπεια πράγματα; Εἰκός, ἔφη. Οὐκ οὖν οἱ τοῖς νόμοις πειθόμενοι δίκαια οὗτοι ποιοῦσι; Πάνυ μὲν οὖν, ἔφη. Δίκαια δὲ οἶσθα, ἔφη, ὁποῖα καλεῖται; Ἃ οἱ νόμοι κελεύουσιν, ἔφη. Οἱ ἄρα ποιοῦντες ἃ οἱ νόμοι κελεύουσι, δίκαιά τε ποιοῦσι καὶ ἃ δεῖ; Πῶς γὰρ οὔ; Οὐκ οὖν οἵ γε τὰ δίκαια ποιοῦντες δίκαιοί εἰσι; Οἶμ' ἔγωγ', ἔφη. Οἴει οὖν τινας πείθεσθαι τοῖς νόμοις μὴ εἰδότας ἃ οἱ νόμοι κελεύουσιν; Οὐκ ἔγωγ', ἔφη. Εἰδότας δὲ καὶ ἃ δεῖ ποιεῖν οἴει τινὰς οἴεσθαι δεῖν μὴ ταῦτα ποιεῖν; Οὐκ οἴομαι, ἔφη. Οἶδας δέ τινας ἄλλα ποιεῖν, εἰ οἴονται ποιεῖν ἐθέλοντας δεῖν; Οὐκ

ἔγωγε, ἔφη. Οἱ ἄρα τὰ περὶ ἀνθρώπους νόμιμα εἰδότες οὗτοι τὰ δίκαια ποιοῦσι; Πάνυ μὲν οὖν, ἔφη. Οὐκ οὖν οἵ γε τὰ δίκαια ποιοῦντες δίκαιοί εἰσι; Τίνες γὰρ ἄλλοι; ἔφη. Ὀρθῶς ἄν ποτε ἄρα ὁριζοίμεθα, [ὁριζόμενοι] δικαίους εἶναι τοὺς εἰδότας τὰ περὶ ἀνθρώπους νόμιμα; Ἔμοιγε δοκεῖ, ἔφη.

17 Θουκυδίδου ἱστοριῶν ε′ (89).

Ἐπισταμένους πρὸς εἰδότας, ὅτι δίκαια μὲν ἐν τῷ ἀνθρωπίνῳ λόγῳ ἀπὸ τῆς ἴσης ἀνάγκης κρίνεται· δυνατὰ δὲ οἱ προύχοντες πράσσουσι καὶ οἱ ἀσθενεῖς ξυγχωροῦσι.

18 Ἀριστοτέλους.

Δεῖ τοὺς νοῦν ἔχοντας τῶν δυναστευόντων μὴ διὰ τὰς ἀρχὰς ἀλλὰ διὰ τὰς ἀρετὰς θαυμάζεσθαι, ἵνα τῆς τύχης μεταπεσούσης τῶν αὐτῶν ἐγκωμίων ἀξιῶνται.

19 Ἐπικτήτου.

Ὥσπερ οἱ ἐπὶ τῶν λιμένων πυρσοὶ δι' ὀλίγων φρυγάνων πολλὴν ἀνάψαντες φλόγα ταῖς ἀλωμέναις ἀνὰ τὸ πέλαγος ναυσὶν ἱκανὴν ἐργάζονται βοήθειαν, οὕτω καὶ ἀνὴρ λαμπρὸς ἐν πόλει χειμαζομένῃ αὐτὸς ὀλίγοις ἀρκούμενος μεγάλα τοὺς πολίτας εὐεργετεῖ.

20 Ἐκ τοῦ Πλουτάρχου εἰ πολιτευτέον πρεσβυτέρῳ (783 d).

Τῶν μέντοι πολιτικῶν ἀνδρῶν καλὸν ἐντάφιον ἡ πολιτεία [τὴν ἀπὸ τοῦ βίου δόξαν τῷ θανάτῳ προστίθησι]. "τοῦτο γὰρ ἔσχατον δύεται κατὰ γᾶν" ὥς φησι Σιμωνίδης, ὁ τῶν καλῶν ζῆλος. οὐ γὰρ τὸ φιλότιμον κατὰ Θουκυδίδην ἀγήρων μόνον, ἀλλὰ μᾶλλον τὸ κοινωνικὸν καὶ πολιτικόν, ὃ καὶ μύρμηξιν ἄχρι τέλους παραμένει καὶ μελίτταις. οὐδεὶς δὲ πώ-

ποτε κηφῆνα εἶδεν ἐκ μελίττης γιγνόμενον, ὥσπερ ἀξιοῦσι τοὺς πολιτικούς, ὅταν παρακμάσωσιν, οἴκοι καθημένους σιτεῖσθαι.

21 Ἐκ τῶν κοινῶν Ἀριστοτέλους διατριβῶν.

Αἱ πλεῖσται στάσεις διὰ φιλοτιμίαν ἐν ταῖς πόλεσι γίγνονται· περὶ τιμῆς γὰρ οὐχ οἱ τυχόντες ἀλλ' οἱ δυνατώτατοι διαμφισβητοῦσι.

22 Δημοσθένους.

Δημοσθένης εἶπε "πάντων ἐστὶ δυσχερέστατον τὸ πολλοῖς ἀρέσκειν."

23 Τοῦ αὐτοῦ.

Δημοσθένης δυοῖν ἔφησεν οὔσαιν ὁδοῖν, τῆς μὲν ἐπὶ τὸ βῆμα τῆς δὲ εἰς ᾅδου, μᾶλλον ἂν ἑλέσθαι τὴν εἰς ᾅδου τὸν εὖ φρονοῦντα.

24 Πλάτωνος ἐκ τῆς πρὸς Ἀρχύταν ἐπιστολῆς (357 e).

Τὰ δὲ παρὰ σοῦ διῆλθον ἡμῖν, λέγοντες ὑποδυσφορεῖν σε ὅτι οὐ δύνασαι τῆς περὶ τὰ κοινὰ ἀσχολίας ἀπολυθῆναι. ὅτι μὲν οὖν ἥδιστόν ἐστιν ἐν τῷ βίῳ τὸ τὰ αὑτοῦ πράττειν, ἄλλως τε καὶ εἴ τις ἕχοι τοιαῦτα πράττειν οἷα καὶ σύ, σχεδὸν παντὶ δῆλον· ἀλλὰ κἀκεῖνο δεῖ σε ἐνθυμεῖσθαι, ὅτι ἕκαστος ἡμῶν οὐχ αὑτῷ μόνον γέγονεν, ἀλλὰ τῆς γενέσεως ἡμῶν τὸ μέν τι ἡ πατρὶς μερίζεται, τὸ δέ τι οἱ γεννήσαντες, τὸ δὲ οἱ λοιποὶ φίλοι· πολλὰ δὲ καὶ τοῖς καιροῖς δίδοται τοῖς τὸν βίον ἡμῶν καταλαμβάνουσι. καλούσης δὲ τῆς πατρίδος αὐτῆς πρὸς τὰ κοινά, ἄτοπον ἴσως τὸ μὴ ὑπακούειν· ἅμα γὰρ συμβαίνει καὶ χώραν κα-

ταλιμπάνειν φαύλοις ἀνθρώποις, οἳ οὐκ ἀπὸ τοῦ βελτίστου πρὸς τὰ κοινὰ προσέρχονται.

25 Ζαλεύκου.

Ζάλευκος ὁ τῶν Λοκρῶν νομοθέτης τοὺς νόμους ἔφησε τοῖς ἀραχνίοις ὁμοίους εἶναι· ὥσπερ γὰρ εἰς ἐκεῖνα ἐὰν μὲν ἐμπέσῃ μυῖα ἢ κώνωψ κατέχεται, ἐὰν δὲ σφὴξ ἢ μέλιττα διαρρήξασα ἀφίπταται· οὕτω καὶ εἰς τοὺς νόμους ἐὰν μὲν ἐμπέσῃ πένης συνέχεται, ἐὰν δὲ πλούσιος ἢ δυνατὸς λέγειν διαρρήξας ἀποτρέχει.

26 Μητροδώρου.

Ἐν πόλει μήτε ὡς λέων ἀναστρέφου μήτε ὡς κώνωψ· τὸ μὲν γὰρ ἐκπατεῖται, τὸ δὲ καιροφυλακεῖται.

27 Δημοκρίτου.

Χαλεπὸν ἄρχεσθαι ὑπὸ χείρονος.

28 Ἀντισθένους.

Ἀντισθένης ἐρωτηθεὶς πῶς ἄν τις προσέλθοι πολιτείᾳ εἶπε, καθάπερ πυρί, μήτε λίαν ἐγγὺς ἵνα μὴ καῇς, μήτε πόρρω ἵνα μὴ ῥιγώσῃς.

29 Χρυσίππου (Aristot. Rhet. II, 23, 15).

Χρύσιππος ἐρωτηθεὶς διὰ τί οὐ πολιτεύεται εἶπε, διότι εἰ μὲν πονηρὰ πολιτεύεται, τοῖς θεοῖς ἀπαρέσει· εἰ δὲ χρηστά, τοῖς πολίταις.

30 Πλάτωνος ἐκ τοῦ Λάχητος (180 b).

Ὡς ὅ γε ἔλεγεν ὁ Λυσίμαχος ἄρτι περὶ τοῦ πατρὸς τοῦ αὑτοῦ καὶ τοῦ Μελησίου, πάνυ μοι δοκεῖ εὖ εἰρῆσθαι καὶ εἰς ἐκείνους καὶ εἰς ἡμᾶς καὶ εἰς ἅπαντας, ὅσοι τὰ τῶν πόλεων πράττουσιν, ὅτι αὐτοῖς σχεδόν τι ταυτὰ συμβαίνει, ἃ οὗτος λέγει, καὶ περὶ παῖδας καὶ περὶ τἄλλα τὰ ἴδια ὀλιγωρεῖσθαί τε καὶ ἀμελῶς διατίθεσθαι.

31 *Τοῦ αὐτοῦ ἐκ τοῦ Γοργίου* (466 d).

Λέγω τοίνυν σοι, ὅτι δύο ταῦτά ἐστι τὰ ἐρωτήματα, καὶ ἀποκρινοῦμαί γέ σοι πρὸς ἀμφότερα. φημὶ γάρ, ὦ Πῶλε, ἐγὼ καὶ τοὺς ῥήτορας καὶ τοὺς τυράννους δύνασθαι μὲν ἐν ταῖς πόλεσι σμικρότατον, ὥσπερ νῦν δὴ ἔλεγον· οὐδὲν γὰρ ποιεῖν ὧν βούλονται, ὡς ἔπος εἰπεῖν· ποιεῖν μέντοι ὅ,τι ἂν αὐτοῖς δόξῃ βέλτιστον εἶναι. Οὐκ οὖν τοῦτ' ἐστὶν τὸ μέγα δύνασθαι; Οὔχ, ὥς γέ φησιν ὁ Πῶλος. Ἐγὼ οὔ φημι; φημὶ μὲν οὖν ἔγωγε. Μὰ τὸν κύνα οὐ σύ γε, ἐπεὶ τὸ μέγα δύνασθαι ἔφης ἀγαθὸν εἶναι τῷ δυναμένῳ. Φημὶ γὰρ οὖν. Ἀγαθὸν οὖν οἴει εἶναι, ἐάν τις ποιῇ ταῦτα ἃ ἂν δοκῇ αὐτῷ βέλτιστα εἶναι νοῦν μὴ ἔχων, καὶ τοῦτο καλεῖς σὺ μέγα δύνασθαι; Οὐκ ἔγωγε. Οὐκ οὖν ἀποδείξεις τοὺς ῥήτορας νοῦν ἔχοντας καὶ τέχνην τὴν ῥητορικήν, ἀλλὰ μὴ κολακείαν, ἐμὲ ἐξελέγξας; εἰ δέ με ἐάσεις ἀνέλεγκτον, οἱ ῥήτορες οἱ ποιοῦντες ἐν ταῖς πόλεσιν ἃ δοκεῖ αὐτοῖς καὶ οἱ τύραννοι οὐδὲν ἀγαθὸν τοῦτο κεκτήσονται· εἰ δὲ δύναμίς ἐστιν, ὡς σὺ φής, ἀγαθόν, τὸ δὲ ποιεῖν ἄνευ νοῦ ἃ δοκεῖ, καὶ σὺ ὁμολογεῖς κακὸν εἶναι· ἢ οὔ; Ἔγωγε. Πῶς ἂν οὖν οἱ ῥήτορες μέγα δύναιντο ἢ οἱ τύραννοι ἐν ταῖς πόλεσιν, ἐὰν μὴ Σωκράτης ἐξελεγχθῇ ὑπὸ Πώλου ὅτι ποιοῦσιν ἃ βούλονται; Οὗτος ἀνὴρ Οὔ φημι ποιεῖν αὐτοὺς ἃ βούλονται· ἀλλά με ἔλεγχε. Οὐκ ἄρτι ὡμολόγεις ποιεῖν ἃ δοκεῖ αὐτοῖς βέλτιστα εἶναι τούτου πρόσθεν; Καὶ γὰρ νῦν ὁμολογῶ. Οὐκ οὖν ποιοῦσιν ἃ βούλονται; Οὔ φημι. Ποιοῦντες ἃ δοκεῖ αὐτοῖς; Φημί. Σχέτλιά γε λέγεις καὶ ὑπερφυῆ, ὦ Σώκρατες. Μὴ κατηγόρει, ὦ λῷστε Πῶλε, ἵνα προσείπω σε κατὰ σέ· ἀλλ' εἰ μὲν ἔχεις ἐμὲ ἐρωτᾶν, ἐπίδειξον ὅτι ψεύδομαι· εἰ δὲ μή, αὐτὸς ἀποκρίνου.

Ἀλλ' ἐθέλω ἀποκρίνεσθαι, ἵνα καὶ εἰδῶ ὅ τι λέγεις. Πότερον οὖν σοι δοκοῦσιν οἱ ἄνθρωποι τοῦτο βούλεσθαι ὃ ἂν πράττωσιν ἑκάστοτε, ἢ ἐκεῖνο οὗ ἕνεκα πράττουσι τοῦθ' ὃ πράττουσιν; οἷον οἱ τὰ φάρμακα πίνοντες παρὰ τῶν ἰατρῶν, πότερόν σοι δοκοῦσι τοῦτο βούλεσθαι ὅπερ ποιοῦσι, πίνειν τὸ φάρμακον καὶ ἀλγεῖν, ἢ ἐκεῖνο τὸ ὑγιαίνειν, οὗ ἕνεκα πίνουσι; Δηλονότι τὸ ὑγιαίνειν [οὗ ἕνεκα πίνουσιν]. Οὐκ οὖν καὶ οἱ πλέοντες καὶ τὸν ἄλλον χρηματισμὸν χρηματιζόμενοι, οὐ τοῦτ' ἐστὶν ὃ βούλονται, ὃ ποιοῦσιν ἑκάστοτε; τίς γὰρ βούλεται πλεῖν καὶ κινδυνεύειν καὶ πράγματα ἔχειν; ἀλλ' ἐκεῖνο οἶμαι οὗ ἕνεκα πλέουσι, πλουτεῖν· πλούτου γὰρ ἕνεκα πλέουσι. Πάνυ γε. Ἄλλο τι οὖν οὕτω καὶ περὶ ἁπάντων, ἐάν τις πράττῃ ἕνεκά του, οὐ τοῦτο βούλεται ὃ πράττει, ἀλλ' ἐκεῖνο οὗ ἕνεκα πράττει. Ναί. Ἆρ' οὖν ἔστι τι τῶν ὄντων, ὃ οὐχὶ ἤτοι ἀγαθόν γέ ἐστιν ἢ κακὸν ἢ μεταξὺ τούτων, οὔτε ἀγαθὸν οὔτε κακόν; Πολλὴ ἀνάγκη, ὦ Σώκρατες. Οὐκ οὖν λέγεις ἀγαθὰ μὲν σοφίαν καὶ ὑγείαν καὶ πλοῦτον καὶ τἆλλα τὰ τοιαῦτα, κακὰ δὲ τὰ ἐναντία τούτων; Ἔγωγε. Τὰ δὲ μήτε ἀγαθὰ μήτε κακὰ ἆρα τοιάδε λέγεις, ἃ ἐνίοτε μὲν μετέχει τοῦ ἀγαθοῦ, ἐνίοτε δὲ τοῦ κακοῦ, ἐνίοτε δὲ οὐδετέρου, οἷον καθῆσθαι καὶ βαδίζειν καὶ τρέχειν καὶ πλεῖν· καὶ οἷον αὖ λίθους καὶ ξύλα καὶ τἆλλα τὰ τοιαῦτα; οὐ ταῦτα λέγεις, ἢ ἄλλ' ἄττα καλεῖς τὰ μήτε ἀγαθὰ μήτε κακά; Οὔκ, ἀλλὰ ταῦτα. Πότερον οὖν τὰ μεταξὺ ταῦτα ἕνεκεν τῶν ἀγαθῶν πράττουσιν, ὅταν πράττωσιν, ἢ τἀγαθὰ τῶν μεταξύ; Τὰ μεταξὺ δήπου τῶν ἀγαθῶν. Τὸ ἀγαθὸν ἄρα διώκοντες καὶ βαδίζομεν, ὅταν βαδίζωμεν, οἰόμενοι βέλτιον εἶναι· καὶ τὸ ἐναντίον ἕσταμεν, ὅταν ἑστῶ-

μεν, τοῦ αὐτοῦ ἕνεκα τοῦ ἀγαθοῦ, ἢ οὔ; Ναί. Οὐκ οὖν καὶ ἀποκτίννυμεν, εἴ τινα ἀποκτίννυμεν, καὶ ἐκβάλλομεν καὶ ἀφαιρούμεθα χρήματα, οἰόμενοι ἄμεινον εἶναι ἡμῖν ταῦτα ποιεῖν ἢ μή; Πάνυ γε. Ἕνεκα ἄρα τοῦ ἀγαθοῦ ἅπαντα ταῦτα ποιοῦσιν οἱ ποιοῦντες. Φημί. Οὐκ οὖν ὡμολογήσαμεν, ἃ ἕνεκά του ποιοῦμεν, μὴ 'κεῖνα βούλεσθαι, ἀλλ' ἐκεῖνο οὗ ἕνεκα ταῦτα ποιοῦμεν; Μάλιστα. Οὐκ ἄρα σφάττειν βουλόμεθα οὐδ' ἐκβάλλειν ἐκ τῶν πόλεων οὐδὲ χρήματα ἀφαιρεῖσθαι ἁπλῶς οὕτως, ἀλλ' ἐὰν μὲν ὠφέλιμα ᾖ ταῦτα, βουλόμεθα πράττειν αὐτά, βλαβερὰ δ' ὄντα οὐ βουλόμεθα· τὰ γὰρ ἀγαθὰ βουλόμεθα, ὡς φὴς σύ, τὰ δὲ μήτε κακὰ μήτε ἀγαθὰ οὐ βουλόμεθα, οὐδὲ τὰ κακά· ἦ γὰρ ἀληθῆ σοι δοκῶ λέγειν, ὦ Πῶλε, ἢ οὔ; τί οὐκ ἀποκρίνῃ; Ἀληθῆ. Οὐκ οὖν εἴπερ ταῦτα ὁμολογοῦμεν, εἴ τις ἀποκτείνει τινὰ ἢ ἐκβάλλει ἐκ πόλεως ἢ ἀφαιρεῖται χρήματα, εἴτε τύραννος ὢν εἴτε ῥήτωρ, οἰόμενος ἄμεινον εἶναι αὐτῷ, τυγχάνει δὲ ὂν κάκιον, οὗτος δήπου ποιεῖ ἃ δοκεῖ αὐτῷ; ἦ γάρ; Ναί. Ἆρ' οὖν καὶ ἃ βούλεται, εἴπερ τυγχάνει ταῦτα κακὰ ὄντα; τί οὐκ ἀποκρίνῃ; Ἀλλ' οὔ μοι δοκεῖ ποιεῖν ἃ βούλεται. Ἔστιν οὖν ὅπως ὁ τοιοῦτος μέγα δύναται ἐν τῇ πόλει ταύτῃ, εἴπερ ἐστὶ τὸ μέγα δύνασθαι ἀγαθόν τι κατὰ τὴν σὴν ὁμολογίαν; Οὐκ ἔστιν. Ἀληθῆ ἄρα ἐγὼ ἔλεγον, λέγων ὅτι ἔστιν ἄνθρωπον ποιοῦντα ἐν πόλει ἃ δοκεῖ αὐτῷ μὴ μέγα δύνασθαι μηδὲ ποιεῖν ἃ βούλεται. Ὡς δὴ σύ, ὦ Σώκρατες, οὐκ ἂν δέξαιο ἐξεῖναί σοι ποιεῖν ὅ τι δοκεῖ σοι ἐν τῇ πόλει μᾶλλον ἢ μή, οὐδὲ ζηλοῖς ὅταν ἴδῃς τινα ἢ ἀποκτείναντα ὃν ἔδοξεν αὐτῷ ἢ ἀφελόμενον χρήματα ἢ δήσαντα; Δικαίως λέγεις ἢ ἀδίκως; Ὁπότερ' ἂν ποιῇ, οὐκ ἀμφοτέρως ζηλωτόν

ἐστιν; Εὐφήμει, ὦ Πῶλε. Τί δή; Ὅτι οὐ χρὴ οὔτε τοὺς ἀζηλώτους ζηλοῦν οὔτε τοὺς ἀθλίους, ἀλλ' ἐλεεῖν. Τί δέ; οὕτω σοι δοκεῖ ἔχειν περὶ ὧν ἐγὼ λέγω τῶν ἀνθρώπων; Πῶς γὰρ οὔ; Ὅστις οὖν ἀποκτίννυσιν ὃν ἂν δόξῃ αὐτῷ, δικαίως ἀποκτιννύς, ἄθλιος δοκεῖ σοι εἶναι καὶ ἐλεεινός; Οὐκ ἔμοιγε· οὐδὲ μέντοι ζηλωτός. Οὐκ ἄρτι ἄθλιον ἔφησθα εἶναι; Τὸν ἀδίκως γε, ὦ ἑταῖρε, ἀποκτείναντα, καὶ ἐλεεινόν γε πρός· τὸν δὲ δικαίως ἀζήλωτον. Ἦ που ὅ γε ἀποθνήσκων ἀδίκως ἐλεεινός τε καὶ ἄθλιός ἐστιν; Ἧττον ἢ ὁ ἀποκτιννύς, ὦ Πῶλε, καὶ ἧττον ἢ ὁ δικαίως ἀποθνήσκων. Πῶς δῆτα, ὦ Σώκρατες; Οὕτως ὡς μέγιστον τῶν κακῶν τυγχάνει ὂν τὸ ἀδικεῖν. Ἦ γὰρ τοῦτο μέγιστον; οὐ τὸ ἀδικεῖσθαι μεῖζον; Ἥκιστά γε. Σὺ ἄρα βούλοι' ἂν ἀδικεῖσθαι μᾶλλον ἢ ἀδικεῖν; Βουλοίμην μὲν ἂν ἔγωγε οὐδέτερα· εἰ δὲ ἀναγκαῖον εἴη ἀδικεῖν ἢ ἀδικεῖσθαι, ἑλοίμην ἂν μᾶλλον ἀδικεῖσθαι ἢ ἀδικεῖν.

ΠΕΡΙ ΑΡΧΗΣ ΚΑΙ ΤΟΥ ΟΠΟΙΟΝ ΧΡΗ ΕΙΝΑΙ ΤΟΝ ΑΡΧΟΝΤΑ. Μϛ.

1 *Εὐριπίδου ἐκ Συλέως.*

Τοῖς μὲν δικαίοις ἔνδικος, τοῖς δ' αὖ κακοῖς
πάντων μέγιστος πολέμιος κατὰ χθόνα.

2 *Εὐριπίδου Ἡρακλειδῶν* (180).

Τίς ἂν δίκην κρίνοιεν ἢ δοίη λόγον,
πρὶν ἂν παρ' ἀμφοῖν μῦθον ἐκμάθῃ σαφῶς;

3 *Εὐριπίδου.*

Ἐγὼ γάρ, ὅστις μὴ δίκαιος ὢν ἀνὴρ

βωμὸν προσίζει, τὸν νόμον χαίρειν ἐῶν
πρὸς τὴν δίκην ἄγοιμ' ἂν οὐ τρέσας θεούς.
κακὸν γὰρ ἄνδρα χρὴ κακῶς πάσχειν ἀεί.

4 *Εὐριπίδου Ἱκετίδων* (877).
Φίλων δὲ χρυσὸν πολλάκις δωρουμένων,
οὐκ εἰσεδέξατ' οἶκον, οὐδὲ τοὺς τρόπους
δούλους παρέσχε χρημάτων πεισθεὶς ὕπο.
τοὺς δ' ἐξαμαρτάνοντας, οὐχὶ τὴν τύχην,
ἤχθαιρ'. ἐπεί τοι κοὐδὲν αἰτία πέλει
κακῶς ἀκούειν διὰ κυβερνήτην κακόν.

5 *Τοῦ αὐτοῦ Ὀρέστῃ* (697).
Ὅταν γὰρ ὀργῇ δῆμος εἰς θυμὸν πέσῃ,
ὅμοιον ὥσπερ πῦρ κατασβέσαι λάβρον.
εἰ δ' ἡσύχως τις αὐτὸν ἐντείνοντι μὲν
χαλῶν ἕποιτο καιρὸν εὐλαβούμενος,
ἴσως ἂν ἐκπνεύσει'· ὅταν δ' ἀνῇ πνοάς,
τύχοις ἂν αὐτοῦ ῥᾳδίως ὅσον θέλεις.

6 *Σοφοκλέους Τυροῖ.*
Ἄκων δ' ἁμαρτὼν οὔ τις ἀνθρώπων κακός.

7 *Μενάνδρου.*
Ὁ προκαταγιγνώσκων δὲ πρὶν ἀκοῦσαι σαφῶς,
αὐτὸς πονηρός ἐστι πιστεύσας κακῶς.

8 *Χαιρήμονος.*
Σοφῶν γὰρ ἀνδρῶν τὰς ἁμαρτίας καλῶς
κρίνειν, τὸ δ' εἰκῇ καὶ μετὰ σπουδῆς κακόν.

9 *Εὐριπίδου ἐξ Αὔγης.*
Οὐ τῶν κακούργων οἶκτος, ἀλλὰ τῆς δίκης.

10 *Τοῦ αὐτοῦ Σκίρωνι.*
Ἔστι τοι καλὸν τοὺς κακοὺς κολάζειν.

11 *Μενάνδρου.*

Ἡ νῦν ὑπό τινων χρηστότης καλουμένη
μετέθηκε τὸν ὅλον εἰς πονηρίαν βίον·
οὐδεὶς γὰρ ἀδικῶν τυγχάνει τιμωρίας.

12 *Πινδάρου* (Nem. IV, 51).

Ἐπεὶ ῥέζοντά τι καὶ παθεῖν ἔοικε.

13 *Σοφοκλέους Ἰνάχῳ.*

Ἐπῄνεσ'· ἴσθι δ', ὥσπερ ἡ παροιμία,
ἐκ κάρτα βαιῶν γνωτὸς ἂν γένοιτ' ἀνήρ.

14 *Μοσχίωνος.*

Μόνον σὺ θυμοῦ χωρὶς ἔκδεξαι λόγους,
οὓς σοι κομίζω· τὸν κλύοντα γὰρ λαβὼν
ὁ μῦθος εὔνουν οὐ μάτην λεχθήσεται.

15 *Ἀπολλοδώρου.*

Δεῖ τὸν ἀκροατὴν καὶ συνετὸν ὄντως κριτὴν
πρὸ τοῦ λεγομένου τὸν βίον διασκοπεῖν,
ποῖός τις ὁ λέγων καὶ πόθεν, καὶ τὴν ἀκμὴν
ἐκ παιδὸς αὐτοῦ πρὸς τί κατατεθειμένος.
αὑτοῦ προδότης κακός τε τῆς ὥρας φύλαξ,
μάλισθ' ὁ τοιοῦτος ἀνατρέπει πᾶσαν πόλιν.
οὐδὲν γὰρ αἰσχρόν ἐστιν αὐτοῖς ἀποτυχεῖν
πράττουσι πάντα· τὴν γὰρ αἰσχύνην πάλαι
πᾶσαν ἀπολωλέκασι καθ' ἑτέρας θύρας.
ὅθεν ἐπιχειρεῖ πάντ' ἀπηρυθριακότως
ἕκαστος αὐτῶν, πρὸς δὲ πάντ' ἐστὶν θρασύς,
ψεύδετ' ἐπιορκεῖ μαρτυρεῖ δικορραφεῖ
κλέπτει τελωνεῖ ῥᾳδιουργεῖ· τὸ δὲ πέρας,
οὐ πόλιν ὅλην φυλὴν δὲ μαλακὸς ἀνατρέπει.
ἐπεὶ κατὰ μέρος τὰς πόλεις, ὦ φίλε, θεῶ·

ὑπὸ λαισποδιῶν εἰσὶν γὰρ ἀνατετραμμέναι·
σκόπει· νεῶν δὲ κατάλογον δόξεις μ' ἐρεῖν.

16 *Πλάτωνος ἐκ τοῦ Γοργίου* (478 d).

Οὐκ οὖν τὸ δίκην διδόναι μεγίστου κακοῦ ἀπαλλαγὴ ἦν, πονηρίας; Ἦν γάρ. Σωφρονίζει γάρ που καὶ δικαιοτέρους ποιεῖ, καὶ ἰατρικὴ γίνεται πονηρίας ἡ δίκη.

17 *Λυσίου.*

Τὴν αὐτὴν γνώμην ἔχειν δικάζοντας ἄξιον, ἥνπερ νομοθετοῦντας.

18 *Αἰσχίνου* (Ctesiph. p. 404).

Χρὴ τὸ αὐτὸ φθέγγεσθαι τὸν ῥήτορα καὶ τὸν νόμον. ὅταν δ' ἑτέραν μὲν φωνὴν ἀφίῃ ὁ νόμος, ἑτέραν δ' ὁ ῥήτωρ, τῷ τοῦ νόμου δικαίῳ διδόναι χρὴ τὴν ψῆφον, μὴ τῇ τοῦ λέγοντος ἀναισχυντίᾳ.

19 *Ἀντιφῶντος* (de caede Herodis p. 140).

Εἰ δέοι τι ἁμαρτεῖν, τὸ ἀδίκως ἀπολῦσαι ὁσιώτερον τοῦ ἀδίκως ἀπολέσαι. τὸ μὲν γὰρ ἁμάρτημά ἐστι, τὸ δὲ ἀδίκως ἀποκτεῖναι ἀσέβημα.

20 *Πλάτωνος ἐκ τοῦ Εὐθύφρονος* (p. 8 d).

Ἐπεὶ ἐκεῖνό γε δήπου, ὦ θαυμάσιε, οὐδεὶς οὔτε θεῶν οὔτ' ἀνθρώπων τολμᾷ λέγειν, ὡς οὐ τῷ γε ἀδικοῦντι οὐ δοτέον δίκην.

21 *Ἐκ τοῦ Ἰσοκράτους πρὸς Δημόνικον* (p. 9 Bens.).

Εἰς ἀρχὴν κατασταθεὶς μηδενὶ χρῶ πονηρῷ πρὸς τὰς διοικήσεις· ὧν γὰρ ἂν ἐκεῖνος ἁμάρτῃ, σοὶ τὰς αἰτίας ἀναθήσουσιν.

22 *Σόλωνος.*

Ἄρχε πρῶτον μαθὼν ἄρχεσθαι· ἄρχεσθαι γὰρ μαθὼν ἄρχειν ἐπιστήσῃ.

23 *Βίωνος.*

Βίων ἔφη δεῖν τὸν ἀγαθὸν ἄρχοντα παυόμενον τῆς ἀρχῆς μὴ πλουσιώτερον, ἀλλ' ἐνδοξότερον γεγονέναι.

24 *Ἀγάθωνος.*

Ἀγάθων ἔφη "τὸν ἄρχοντα τριῶν δεῖ μεμνῆσθαι· πρῶτον μὲν ὅτι ἀνθρώπων ἄρχει, δεύτερον ὅτι κατὰ νόμους ἄρχει, τρίτον ὅτι οὐκ ἀεὶ ἄρχει."

25 *Ἰσαίου.*

Ὅσοι τοὺς ἀδικοῦντας κολάζουσιν, οὗτοι τοὺς ἄλλους ἀδικεῖσθαι κωλύουσιν.

26 *Πλουτάρχου ἐκ τοῦ περὶ Ἴσιδος* (p. 355 a).

Ἐν δὲ Θήβαις εἰκόνες εἰσὶν ἀνακείμεναι δικαστῶν ἄχειρες· ἡ δὲ τοῦ ἀρχιδικαστοῦ καταμύουσα τοῖς ὄμμασιν, ὡς ἄδωρον ἅμα τὴν δικαιοσύνην καὶ ἀνέντευκτον οὖσαν.

27 *Θεμιστίου ἐκ τοῦ Μετριοπαθοῦς ἢ Φιλοτέκνου* (p. 414, 11 Dind.).

Ὅτι μοι δοκεῖ ὁ ἄρχων ἐκεῖνος ἐπαληθεύειν τοὔνομα τῆς ἀρχῆς, ὅστις δυσάλωτος μὲν ὑπὸ χρυσίου, εὐάλωτος δὲ ὑπὸ λόγου, ἐλευθερίας δὲ ἐραστής, μεγαλοφροσύνην δὲ ἐπαινῶν φυλάττεται ἐγγὺς οὖσαν τὴν αὐθάδειαν.

28 *Εὐσεβίου.*

Τὸν τοῖσι ἄλλοισι ἐπιστατεύοντα καὶ ἐπιτάσσοντα χρὴ οὐ τῇ ἐξουσίῃ μούνῃ τοῦ ἐπιστατεύειν τε καὶ

ἐπιτάσσειν, ἀλλ' ἀξίῃ καὶ γνώμῃ προέχειν τῶν ἐπιτασσομένων.

29 Τοῦ αὐτοῦ.

Πρὸς τοὺς παρὰ δίκην ζώοντας ἔπειτα ἀξιεῦντας ἄλλων ἡγέεσθαι ἀπειθέες ἄνθρωποι. εὐπειθηίην δὲ εὐπετέα ἐπὶ τὰ παραγγελλόμενα ἑωυτῷ καὶ ἄλλῳ παρὰ τῶν ἀρχομένων παρασκευάζει ἅπας ὅ γε παρ' ἑωυτοῦ τὰ δέοντα σπουδῇ ποιέειν ἐπιστάμενος, καὶ παραδείγματα τῶν περ χρὴ πρήσσειν τοῖσι ὑποτεταγμένοισι ἑωυτῷ παρεχόμενος.

30 Τοῦ αὐτοῦ.

Ἄρχοντος ἀγαθοῦ κέρδος μοῦνον τοῦτο οἰκήιον καὶ μυρίων κερδέων ἄλλων ἀντάξιον, πάντα μιν πρήσσειν ὥστε καὶ παρὰ τὸν καιρὸν τῆς ἀρχῆς καὶ παυσαμένῳ οἱ πάντα χρηστὰ καὶ δικαιοσύνην παρὰ τῶν ἀρχθέντων μαρτυρέεσθαι.

31 Τοῦ αὐτοῦ.

Ἀνὴρ δὲ ἄρχων, καὶ ἰδιώτης δὲ ἅπας, ἴστω ἀπὸ τῆς φύσιος τῶν πρηγμάτων, ὁκοῖα ἂν αὐτὰ παρέχηται, τοιαύτης καὶ τῆς ἐπ' αὐτοῖσι μνήμης ἤτοι ἀγαθῆς ἢ πονηρῆς τευξόμενος· καὶ τοῦτο ἐπιφρασθεὶς οὕτω κρινέτω ἐπ' ὁκοτέρην τῶν ὁδῶν καὶ τὴν ἐπ' ὁκοτέρην τῶν μνημέων ἄγουσαν τρέψηται, καὶ κοίην αὐτέων τῶν μνημέων αὐτῷ ἄμεινον προτετιμῆσθαι.

32 Τοῦ αὐτοῦ.

Ἀρχὴν ἔχων μὴ ἀπομνησικάκεε πρὸς τοὺς ἐν διχοστασίῃ σοι πρότερον γεγενημένους· οὐ γὰρ ὅκως ἀμύναι ἐχθροὺς ἐπὶ τὴν ἀρχὴν εἶ ἀραιρημένος, ἀλλ' ὅκως καὶ τῆς παρ' ἄλλων ἐπιβουλῆς ἀσφαλέας καὶ ἀνεπιβουλεύτους φυλάξῃς τοὺς ὑπὸ σοὶ τεταγμένους,

καὶ ὅκως τοῦ ὀρθοῦ φύλαξ ἔῃς καὶ θεοῦ μεγάλης, δικαιοσύνης, ὑπηρέτης τε καὶ ἐξηγητής. ὥστε παρὰ τὰ αὐτῇ δοκέοντα ποιέων καὶ αὐτῆς καταψευδόμενος, ὡς ἐς θεὸν μεγίστην ἁμαρτάνων, καὶ παρ' αὐτῆς καὶ τῶν περὶ αὐτὴν τεταγμένων δαιμόνων ἐφόρων τε καὶ τιμωρῶν τὴν τῶν ποιευμένων μῆνιν προσδέχεο.

33 Τοῦ αὐτοῦ.

Μεταξὺ ἐχθρῶν δικάζων τοῦ δικαίου γίνεο ἐξεταστής, καὶ πρὸς τοῦτο ῥέπε τῇ κρίσι· δικαιοσύνη γὰρ καὶ δαίμων ὁ ταύτης ἔφορος τοῦ ἔχθρῃ χαρίζεσθαι προτετιμῆσθαι δικαιότεροι.

34 Τοῦ αὐτοῦ.

Ἐν ἀρχῇ ἐὼν ἔπειτα ἔχθρης μεμνημένος τῇ χείρονι μοίρῃ σεωυτὸν νεμέεις καὶ τῆς ἀπαιτεομένης ἐν τῷ ἄρχοντι σεμνότητος σεωυτὸν ἀποστερήσεαι παρὰ τῶν ξυνεπισταμένων ὅτι ἔχθρῃ διδοῖς σεωυτόν, ἀντὶ τῶν σεμνοτάτων οὐνομάτων δικάστεω καὶ ἄρχοντος τὸ εὐδιαβλητότατον οὔνομα ἀντιλαβὼν τῶν δικαζομένων ἐχθρὸς κεκλῆσθαι.

35 Τοῦ αὐτοῦ.

Τοῦ ἐπιτιμᾶν τινι θανάτου ζημίην τὴν ἐξουσίην εἶναι ἡγέομαι οὐκ ἐν τῷ κύριόν τινα εἶναι τούτου [τοῦ καταψηφίσασθαι], ἀλλ' ἐν τῷ οἷόν τε εἶναι τὸν ἔχοντα τὴν ἐξουσίην ἑωυτοῦ κρατέειν ἐν οὕτω ἀσφαλεστάτῃ ὀφειλεύσῃ εἶναι κρίσι καὶ ἐς ὁμογενέας εἴ τι ἁμαρτηθείη, καὶ τὴν οὐκ οἷά τέ ἐστιν ἔτι ἀνακαλέσασθαι γιγνομένης τῆς ἁμαρτάδος.

36 Τοῦ αὐτοῦ.

Ἃ τοῖσι ἄλλοισι ὡς φαῦλα ἐπιτιμᾷς, ταῦτα πρότερος αὐτὸς ποιέειν φυλάσσεο.

37 Τοῦ αὐτοῦ.

Ἄνθρωποι ἀνθρώπων ἐπὶ κατηγορίας ἀφικνέονται οἳ μὲν ἐκ συγκειμένων ψευδέων ἐγκλημάτων οἳ δὲ ἀληθέα κατηγορέοντες, οἳ δ' αὖ ἐπαινέουσιν οἳ μὲν τὰ ἐόντα μαρτυρέοντες οἳ δὲ παρὰ τὸ ἀληθὲς χαριζόμενοι. ἄριστον ὦν ἐν τοῖσι τοιούτοισι καὶ ἰδιώτῃ καὶ ἄρχοντι μήτε αὐτὸν πιστεύειν αὐτόθεν μήτε ἀπιστέειν παντελέως, ἐκ δὲ τῶν πρηγμάτων ἐξεταζομένων ὅκως χρὴ περὶ αὐτῶν διανοέεσθαι καὶ τὸ ἀτρεκὲς αὐτῶν μανθάνειν.

38 Τοῦ αὐτοῦ.

Ἀρχὴν ἔχων κόσμεε, αὐτὸς δὲ μὴ μεταβάλλεο. οὐ γὰρ προσλελάβηκάς τι οὐκ ἐόν, οὐδὲ παυόμενος ἔλασσόν τι τῶν πρὶν καὶ λαβεῖν εἶχες, εἰ πενόμενος τὴν ἀρχὴν καταθήσεαι.

39 Τοῦ αὐτοῦ.

Ἀρχὴν λαβὼν μὴ ἐπαίρεο, ὡυτὸς δὲ διατέλεε· οὕτω γὰρ καὶ ἀποθέμενος οὐκ ἀφῃρῆσθαι τοῦ σεμνύνοντός σε νομισθήσεαι.

40 Τοῦ αὐτοῦ.

Ἀνὴρ ἀγαθὸς ἔθνεός τευ ἢ πόλιος ἀρχὴν εἰληφὼς οὐκ ἕνεκα τῶν δημοσίων χρημάτων καὶ τοῦ δωροδοκέεσθαι καὶ τοῦ παρὰ τῶν πλουσίων χρηματίζεσθαι, ἔοικε τῷ ἀνδρὶ παρακαταθήκην εἰληφότι μεγάλων χρημάτων· ὥσπερ γὰρ καὶ ἐκεῖνος οὐκ ἐπὶ τῷ κατασχεῖν λαμβάνει οὐδὲ κτῆμα ἴδιον ποιήσασθαι τὰ δοθέντα, ἀλλ' ὥστε φυλάξαι καὶ ἀποδοῦναι σῷα τῷ παραθεμένῳ, ἐπεὰν ἀπαιτέηται· οὕτω δὲ καὶ αὐτὸν χρὴ οὐκ ἐπὶ κέρδεσι οἰκηίοισι ἀλλ' ἐπὶ σωτηρίῃ καὶ φυλακῇ πάντα πρήσσειν τῶν ἀρχομένων, ὥστε αὐτοὺς τὸ

ἐς ἑωυτὸν ἧκον ἀσινέας καὶ εὐθηνέοντας ἀποδοῦναι τῷ καταπεπιστευκότι.

41 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Ἀνὴρ ἀνυποίστους καὶ ἀγρίας καὶ ἀμέτρους ζητέων τὰς τιμωρίας καὶ ταῖς κατὰ νόμον οὐκ ἀρκεόμενος θυμῷ ἀλόγῳ ξυγχωρέων καὶ γυναικηίως ἐμπικραινόμενος, οὐκ αἰσθάνεται ἔξω τῆς δίκης ἐς τὸ ὁμογενὲς ἐξυβρίζων, ἀγνοέει δὲ τὸ μέγιστον καὶ τόπερ χρὴ εἰδέναι πάντα τὸν μέλλοντα ἀνθρώπου καταδικᾶν, ὅτι καὶ ὁ θάνατος αὐτὸς παρὰ τῶν πρώτως δίκαια θέντων οὐκ ὥς τι κακὸν ἐπετιμήθη, ἀλλ' ὡς ἔσχατον καὶ ἐν φαρμάκου λόγῳ κατὰ τῶν οὐ δυναμένων τῆς κακίης ἐλευθερωθῆναι, ὅκως, ἐπειδὴ οὐκ οἷά τε ἦν ἄλλως, τούτῳ γῶν τῷ τρόπῳ ἀπολυθέντες τοῦ ἐνταῦθα δεσμοῦ αὐτῆς πορίσωνται φυγήν.

42 *Πυθαγόρου.*

Ποίει ἃ κρίνεις εἶναι καλά, κἂν ποιῶν μέλλῃς ἀδοξεῖν· φαῦλος γὰρ κριτὴς παντὸς καλοῦ πράγματος ὄχλος. διόπερ ὧν ἂν τῶν ἐπαίνων καταφρονῇς, καὶ τῶν ψόγων καταφρόνει.

43 *Δημοκρίτου.*

Ἀδικεομένοισι τιμωρέειν κατὰ δύναμιν χρὴ καὶ μὴ παριέναι· τὸ μὲν γὰρ τοιοῦτον δίκαιον καὶ ἀγαθόν, τὸ δὲ μὴ τοιοῦτον ἄδικον καὶ κακόν.

44 *Δημοκρίτου.*

Καὶ οἳ φυγῆς ἄξια ἔρδουσι ἢ δεσμῶν ἢ θωιῆς [ἄξιοι], καταψηφιστέον καὶ μὴ ἀπολύειν· ὃς δ' ἂν παρὰ νόμον ἀπολύῃ κέρδεϊ οὐρίζων ἢ ἡδονῇ, ἀδικέει· καί οἱ τοῦτο ἐγκάρδιον ἀνάγκη εἶναι.

45 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Δίκης καὶ ἀρετῆς μεγίστην μετέχει μοῖραν ὁ τιμὰς ἀξίας τάμνων.

46 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Μηδέν τι μᾶλλον τοὺς ἀνθρώπους αἰδέεσθαι ἑωυτοῦ, μηδέ τι μᾶλλον ἐξεργάζεσθαι κακὸν εἰ μέλλει μηδεὶς εἰδήσειν ἢ εἰ οἱ πάντες ἄνθρωποι· ἀλλ' ἑωυτὸν μάλιστα αἰδέεσθαι, καὶ τοῦτον νόμον τῇ ψυχῇ κατεστάναι ὥστε μηδὲν ποιέειν ἀνεπιτήδειον.

47 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Τῶν ἡμαρτημένων ἄνθρωποι μεμνέαται μᾶλλον ἢ τῶν εὖ πεποιημένων. καὶ γὰρ δίκαιον οὕτως ὥσπερ τὸν τὰς παρακαταθήκας ἀποδιδόντα οὐ χρὴ ἐπαινέεσθαι, τὸν δὲ μὴ ἀποδιδόντα κακῶς ἀκούειν καὶ πάσχειν, οὕτω καὶ τὸν ἄρχοντα. οὐ γὰρ ἐπὶ τούτῳ ἡρέθη ὡς κακῶς ποιήσων, ἀλλ' ὡς εὖ.

48 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Οὐδεμίη μηχανὴ τῷ νῦν κατεστεῶτι ῥυσμῷ μὴ οὐκ ἀδικέειν τοὺς ἄρχοντας, ἢν καὶ πάνυ ἀγαθοὶ ἔωσιν. οὐδενὶ γὰρ ἄλλῳ ἔοικεν ἢ ἑωυτῷ τὸν αὐτὸν ἐπ' ἑτέροισι αὖ γίγνεσθαι· δεῖ δέ κως οὕτω καὶ ταῦτα κοσμηθῆναι, ὅκως ὁ μηδὲν ἀδικέων, ἢν καὶ πάνυ ἐτάζῃ τοὺς ἀδικέοντας, μὴ ὑπ' ἐκείνους γενέσθαι, ἀλλά τις ἢ θεσμὸς ἢ ἄλλο τι ἀμυνέει τῷ τὰ δίκαια ποιεῦντι.*

49 *Θουκυδίδου ἱστορίας α' (69) δημηγορίας Κορινθίων β'.*

Οὐ γὰρ ὁ δουλωσάμενος, ἀλλ' ὁ δυνάμενος μὲν παῦσαι περιορῶν δὲ ἀληθέστερον αὐτὸ δρᾷ.

50 *Στωικῶν.*

Φασὶ μηδὲ συγγνώμην ἔχειν μηδενὶ τὸν νοῦν ἔχοντα. τοῦ γὰρ αὐτοῦ συγγνώμην ἔχειν καὶ νομίζειν τὸν ἡμαρτηκότα μὴ παρ' αὐτὸν ἡμαρτηκέναι, πάντων ἁμαρτανόντων παρὰ τὴν ἰδίαν κακίαν· διὸ καὶ δεόντως λέγεσθαι τὸ μηδὲ συγγνώμην ἔχειν τοῖς ἁμαρτάνουσιν. οὐκ ἐπιεικῆ δὲ φασὶν εἶναι τὸν ἀγαθὸν ἄνδρα· τὸν γὰρ ἐπιεικῆ παραιτητικὸν εἶναι τῆς κατ' ἀξίαν κολάσεως, καὶ τοῦ αὐτοῦ εἶναι ἐπιεικῆ τε εἶναι καὶ ὑπολαμβάνειν τὰς ἐκ τοῦ νόμου τεταγμένας κολάσεις τοῖς ἀδικοῦσι σκληροτέρας εἶναι καὶ τὸ ἡγεῖσθαι παρὰ τὴν ἀξίαν ἀπονέμειν τὰς κολάσεις τὸν νομοθέτην.

51 *Ἐκ τῆς Σωπάτρου ἐπιστολῆς πρὸς Ἡμέριον τὸν ἀδελφόν, τὸ πῶς δεῖ πράττειν τὴν ἐγκεχειρισμένην αὐτῷ ἡγεμονίαν.*

Τίς οὖν οὕτω κατὰ τὸν Σιμωνίδου λόγον τετράγωνος, ὃς κατὰ πᾶσαν τύχην καὶ πραγμάτων μετάστασιν ἀσφαλῶς ἐστήξεται, συναρμόζων μὲν ἑαυτὸν τοῖς τε ἄρχουσι καὶ τοῖς ἀρχομένοις καὶ πρὸς ἑαυτὸν ἁρμόζων ἅπαντας, πᾶσαν δὲ καὶ πάντων διαφορὰν πρὸς ἕνα τὸν τοῦ καλοῦ συνυφαίνων λόγον; τίς δὲ ἀνδρῶν καὶ πραγμάτων πολυειδεῖ δουλεύων φύσει τὸ τῆς ψυχῆς ἀδούλωτον διαφυλάξει φρόνημα; τῷ μέν γε τὸν λόγον διατιθεμένῳ χαλεπὸν οὐδὲν ἐκ τῶν ἄκρων παραγγελμάτων τὸν ὄρθιον τῆς ἀρετῆς ᾄδειν νόμον, τῷ δ' εἰς πράξεις ἀληθινὰς τοὺς λόγους ἐντείνειν μέλλοντι τὸν ἐκ τῶν δοθέντων ἄριστον ἀντὶ τοῦ πρώτου τὴν φύσιν δοκιμάζειν ὁ τῆς ὑποθέσεως προστάττει λόγος.

52 Ἐν ταυτῷ.

Τιμῆς μὲν ὁπόσης ἐν γράμμασί τε καὶ προσηγορίαις καὶ πάσῃ τῇ φαινομένῃ ταύτῃ τοῦ βίου δραματουργίᾳ οἱ μείζους τῶν ἀρχόντων μεταποιοῦνται, μὴ ὅπως ἐλλείπων τὸ μέτρον, ἀλλ' εἰ δυνατὸν καὶ πρὸς πλεονάζων φαίνου. γελοῖον γὰρ περὶ ὀνομάτων διαφερόμενον τῶν πραγμάτων, ἐφ' οἷς τὰ ὀνόματα κεῖται, μηδεμίαν ἔχειν φροντίδα, καὶ τῆς ψευδωνύμου τιμῆς ἀφιέμενον ὀλίγου μὲν ἄγαν ἑαυτὸν ἀξιοῦντα φαίνεσθαι, τοῖς δὲ ἀρχομένοις πολλὴν ἐνίοτε βλάβην προξενεῖν.

τῶν δ' ἔργων ἃ μὲν οὐκ ἔστι προσταττόντων ἀρνήσασθαι, τῷ τρόπῳ καὶ χρόνῳ τῆς πράξεως πειθοῖ τε ἐμμελεῖ τὸ φαινόμενον ἐπαχθὲς παραμυθητέον. ἔνια δ' οὐκ ἔστιν ἀναγκασθῆναι, φησὶν Ἀριστοτέλης, οὐδ' εἰ τὸν λεγόμενον Ταντάλου λίθον ἐπηρτημένον τις ἔχοι, ἀλλ' ὑπομενετέον πάντα ἑτοίμως τὸ δρᾶν κακῶς πρὸ τοῦ παθεῖν κακῶς εὐλαβουμένῳ. ἅ τινα δ' οὐκ ἔχει μὲν ἀπαραίτητον τὴν ἀποπλήρωσιν, λαθεῖν δὲ ἢ ἀγνοῆσαι τοὺς ἐπιτάξαντας συνέβη, διδασκαλίαν ἐμμελῆ προσάγων γνώσεσθαι παρασκευάζων, μὴ φανῇς ἐπισκήπτων (βαρὺ γὰρ ἔλεγχος ἐμφανὴς τοῖς ἐν ἐξουσίᾳ), ἀλλ' ὥσπερ εἰδότας ὑπομιμνήσκων ἢ προβάλλων εἰς κρίσιν ἢ καὶ πυνθανόμενος, ἅ τινα γιγνώσκων οὐδὲν ἧττον αὐτὸς τυγχάνεις, καὶ τούτους φιλοτίμους μὲν ὄντας τιμῇ καὶ θεραπείᾳ προσάγου, τῶν δὲ ἀρχομένων ἐπιστρεφομένους τῆς προαιρέσεως ὑπομνήσει.

53 Ἐν ταυτῷ.

Ἔστι δέ ποτε καὶ παρρησίας ἐλευθερίου καιρός, ἥτις μὴ βλάβην τοῖς ἀρχομένοις παρασκευάζειν μέλ-

λει. τὸ μὲν γὰρ αὐτόν τινα, ἤν τι καὶ δέῃ, παθεῖν αἱρετώτερον τῆς λεγομένης ἐστὶν εὐπραξίας πολλάκις· τὸ δ' ἐφ' οἷς ἂν αὐτὸς νεανιεύεσθαι δόξῃ λαθεῖν τοσούτους προδόντα κενοδοξίας ἐσχάτης ὑπεύθυνον ἀποφαίνει.

54 Ἐν ταυτῷ.

Αἰδοῦ πρὸς τὰς διημαρτημένας τῶν πολλῶν ἀποβλέπειν δόξας, τὸν δ' ἀπὸ τῆς ἀληθείας λόγον πάντων ἐπίπροσθεν ἄγειν· καὶ οὔτε φαινομένην εὐπρέπειαν μετὰ βλάβης τῶν ἀρχομένων αἱρεῖσθαι, οὔτε δοκοῦσαν ἀδοξίαν ἐπ' ὠφελείᾳ τῶν ὑπηκόων φεύγειν, εἰ μὴ τῆς τυχούσης φαντασίας, ἀλλὰ τῆς ἀρίστης ζωῆς μεταποιεῖσθαι μέλλοιμεν. τὴν μὲν πολιτικὴν τιμὴν ἣ τῆς πολιτείας ἀπονέμει τάξις τοῖς μείζοσι παρὰ τῶν ἐλαττόνων· τὴν δὲ ἄλλην θεραπείαν ἢ τυχεῖν αὐτῆς ἀξιώσουσιν ἢ δι' ὠφέλειαν τῶν ἀρχομένων ἐν εἴδει φαρμάκου προσάγομεν. ἐπεὶ κολακείας μὲν τὰ φαῦλα ἐπαινεῖν αὐτῆς ἕνεκα μόνης τῆς ἀρεσκείας, πολιτικῆς δὲ φρονήσεως τοῖς ἐν δυνάμει καθομιλεῖν πρὸς ὠφέλειαν ἀνθρώπων. ὁ μὲν γὰρ κόλαξ τὴν πονηρὰν ἀποδέχεται πρᾶξιν οὐδένα ὠφελῆσαι μέλλων, ὃ δ', ἵνα τῆς πονηρᾶς ἀπαγάγῃ προθέσεως, φιλότιμον ὄντα ἐπαινέσει. ὥσθ' ὃ μὲν δι' ὧν ἐπαινεῖ βλάπτει τὸν ἐπαινούμενον καὐτὸς καθ' ἑαυτοῦ πονηρίας ἐσχάτης ἐκφέρει δεῖγμα, ὃ δ' εἰς τὸ πράττειν ἄξια ἐπαίνου τῷ τρόπῳ τῆς θεραπείας ἐπάγεται.

55 Ἐν ταυτῷ.

Καὶ γίγνου μὲν ἄξιος τοῦ ἄρχειν οὐ θέσει πολιτείας, ἀλλ' ἀρετῆς καὶ προαιρέσεως τῇ πρὸς τοὺς ἀρχομένους ὑπεροχῇ· πλέον δ' ἔχειν ἑκάστου τῶν ὑπη-

κόων ταῖς κοιναῖς ὑπὲρ ἁπάντων ἐπιμελείαις καὶ τῇ μεμεριμνημένῃ τῶν ὅλων ἐπιστασίᾳ γίγνωσκε.

οὓς δὲ ἠγνόεις πρότερον καὶ σαυτῷ προσήκειν οὐδὲν ὑπελάμβανες, πλὴν ὅσον ὡς ἄνθρωπος τὴν κοινὴν φύσιν ἀνθρώπων αἰδούμενος, τούτους ὡς ἤδη γνωρίμους καὶ φίλους ἅπαντας θεώμενος εἶναι... Ὁμήρῳ γοῦν οὐκ ἀπέχρησε πατέρα ἁπλῶς τῶν ἀρχομένων τὸν ἄρχοντα προσειπεῖν· καίτοι τί ποτ' ἂν εὑρεθείη τούτου πραότερον ἀνθρώποις ὄνομα; ἀλλὰ καὶ τὸν ἤπιον φέρων ἐπέθηκε τῷ πατρί, ὁμοῦ μὲν γονεῦσιν ὁμοῦ δὲ ἄρχουσιν ἀγαθοῖς ταύτην πρέπειν τὴν προσηγορίαν ἡγούμενος.

τὴν μὲν οὖν ὡς ἀρχομένων πρόνοιαν κοινὴν ἀπονέμειν πᾶσι, τοῖς δ' ἐκ πείρας φαινομένοις χρηστοῖς δευτέραν τὴν ἐκ τῶν τρόπων οἰκειότητα προστιθέναι προαιροῦ. καὶ ὑπεροψίαν μὲν καὶ τὰς συνερίθους ταύτῃ κακίας, ἀλαζονείαν καὶ αὐθάδειαν, ὡς μικροπρεπεῖς τῆς ψυχῆς διαθέσεις ἀποδιδράσκωμεν· τὸ γὰρ ἑαυτῶν ἐπιλανθάνεσθαι διὰ τὴν ἐφήμερον τῆς ἀρχῆς φαντασίαν πολλὴν διανοίας ἀπελέγχει σμικρότητα. οὐ μὴν τὰς ἐπονειδίστους ταύτας τῆς κακίας ὑπερβολὰς ἀποδιδράσκοντες πρὸς θάτερον τῆς πονηρίας ἄκρον αἰσχρῶς ἂν μεταπίπτοιμεν, εὐτέλειαν καὶ ταπεινότητα ἤθους, φαῦλα ἀντὶ φαύλων τῶν πρόσθεν ἠθῶν ἀνταλλαττόμενοι· ἀλλ' ἥμερον χρὴ καὶ σεμνὸν τοῖς ὑπηκόοις δοκεῖν τε καὶ εἶναι τὸν ἀληθῶς ἄρχοντα.

56 Ἐν ταυτῷ.

Δεῖ δὲ μήτε ὀργῇ προσομιλεῖν τοῖς ἀρχομένοις μήτε ἀνεπίπληκτον τοῖς ἁμαρτάνουσι τὴν προαίρεσιν καταλείπειν. τὸ μὲν γὰρ οὐδὲν τῶν μαινομένων δια-

φέρειν τὸν ἄρχοντα δείκνυσι, τὸ δ' εὐχέρειαν ἁμαρτημάτων τοῖς ὑπηκόοις ἐντίκτει.

ἀνεξίκακον δὲ ὁμοῦ καὶ μισοπόνηρον σεαυτὸν ἐπιδείκνυε, τῷ μὲν ἠρέμα κολάζειν τὴν ἀνεξικακίαν, τῷ δ' ἀπεχθάνεσθαι τοῖς κακοῖς τὴν μισοπονηρίαν ἐλέγχων, ἵνα τὸ μὲν φεύγειν τὰ φαῦλα, τὸ δὲ μὴ λίαν ἀπαραμύθητον εἶναι τοῖς ἐπταικόσι τὴν τύχην ἀποδεικνύῃ.

ἀφεκτέον δὲ καὶ σκωμμάτων τοῖς ὡς ἀληθῶς ἄρχουσιν, ᾗ καθαιρήσει τις τὸ σεμνὸν τῆς ἀρχῆς γελωτοποιεῖν πειρώμενος.

καὶ λοιδοριῶν καθαρευτέον· ἰδιωτικῆς γὰρ ἀκροχολίας τοῦτο σύμβολον. νουθετήσεις δὲ καὶ παραινέσεων τὸ διττὸν εἶδος, πῇ μὲν σφοδρῶς καθαπτόμενον πῇ δὲ προσηνῶς θεραπεῦον, γνωρίσματα ἐμοὶ δοκεῖν ἐπιεικοῦς ἄρχοντος.

57 Ἐν ταυτῷ.

Συνάρμοζε δὲ τοῖς ἤθεσιν ἑκάστων τὸν πρόσφορον τῆς ἐπιστασίας τρόπον, τοῖς μὲν ἐπιεικέσιν ἐμμελῶς, τοῖς δ' ὑπτίοις συντόνως, αὐστηρῶς δὲ τοῖς θρασέσι, πράως δὲ τοῖς εὐλαβεστέροις προσιών.

58 Ἐν ταυτῷ.

Δεῖ δὲ ἀπείργειν μὲν τῶν ἁμαρτημάτων ἀνάγκῃ πειθὼ συναρμόσαντα, σφαλεῖσι δὲ σύμμετρον τῆς δίκης ἐπάγειν τὴν ἐπανόρθωσιν, ὅσα μὲν μικρὰ καὶ συνήθη τῶν ἁμαρτημάτων ἀγνοεῖν δοκοῦντα (οὔτε γὰρ ἐπὶ πᾶσιν ἁπλῶς καὶ τοῖς τυχοῦσιν ἐπεξιέναι οὔτε γιγνώσκοντα παρορᾶν ὠφέλιμον), τὰ δὲ ἤδη τοῖς ἀρχομένοις ἐπαχθῆ ταῖς ἐκ τῶν νόμων θεραπείαις ἰώμενον.

59 Ἐν ταυτῷ.

Καὶ βούλου μὲν ἁμαρτημάτων τὴν ψυχὴν ὡς δυ-

νατὸν καθαρεύειν· ἐννόει δὲ ὡς σύμφυτον τὸ ἁμαρτάνειν ἀνθρώποις· ὥσθ' ἕως ἄν τις ὡς ἀναμαρτήτους κολάζῃ, τὸ μέτρον ὑπερβαίνει τῆς κατὰ φύσιν ἐπανορθώσεως. ἀπόδειξον δὲ σαυτὸν τῆς ἀρχῆς πρέποντα κόσμον, ἀλλὰ μὴ ταῖς ἔξωθεν καὶ ἐφημέροις σκιαγραφίαις καλλωπίζου.

60 Ἐν ταυτῷ.

Χάριτας μὲν τὸ δίκαιον ὑπερβαινούσας οὐδ' ὀνομαστέον ἐμοὶ δοκεῖν χάριτας· τὰς δὲ τῆς δικαιοσύνης φίλας οὐδεὶς ἂν ὃς οὐκ ἀπὸ δρυός ἐστιν ἢ πέτρας ἑκὼν ἀρνησάμενος τύχοι. ἐπεὶ γὰρ πολλάκις ὁ νόμος πικροτέρας τῶν ἁμαρτημάτων ὁρίζει τὰς τιμωρίας, τὸ λεγόμενον ἐπιεικὲς δίκαιον, τὴν αὐστηρὰν τῶν νόμων φωνὴν παραμυθούμενον, ἀμεμφὴς ἐμοὶ δοκεῖ χαρίτων ἀληθινῶν καὶ ἐλευθέρων πρόφασις. τὸ μὲν οὖν περὶ τὰ συναλλάγματα τῆς δίκης ἐπανορθωτικὸν ἐκφεύγει παντελῶς τὸ τῶν χαρίτων γένος, τὸ δ' ἐπὶ τοῖς ἐγκλήμασι κείμενον οὐκ ἀναίνεται τὸ πρᾶον καὶ φιλάνθρωπον τῶν χαρίτων πρόσωπον.

61 Ἀρχύτα Πυθαγορείου ἐκ τοῦ περὶ νόμου καὶ δικαιοσύνης.

Δεῖ δὲ τὸν ἀλαθινὸν ἄρχοντα μὴ μόνον ἐπιστάμονά τε καὶ δυνατὸν ἦμεν [περὶ τὸ καλῶς ἄρχεν] ἀλλὰ καὶ φιλάνθρωπον· ἄτοπον γὰρ ἦμεν ποιμένα μισοπρόβατον καὶ τοιοῦτον οἷον καὶ δυσμενέως ἔχεν τοῖς αὐτῶ θρεμμάτεσι. δεῖ δ' αὐτὸν καὶ νόμιμον ἦμεν· οὕτω γὰρ ἐσεῖται τὰν τῶ ἄρχοντος ἐπίστασιν ἔχων. διὰ μὲν γὰρ τᾶς ἐπιστάμας κρίνεν ὀρθῶς δυνασεῖται, διὰ δὲ τᾶς δυνάμιος κολάζεν, διὰ δὲ τᾶς χρηστότατος τὸ εὐεργετέν, διὰ δὲ τῶν νόμων τὸ ποτὶ τὸν λόγον πάντα ταῦτα ποιέν. ἄριστος δέ κ' εἴη ἄρχων ὁ ἀγχο-

τάτω τῷ νόμῳ· οὗτος δέ κ' εἴη ὁ μηδὲν αὑτῶ ἕνεκα ποιέων ἀλλὰ τῶν ὑπ' αὐτόν, ἐπειδήπερ οὐδὲ νόμος αὑτῶ ἕνεκα ἀλλὰ τῶν ὑπ' αὐτόν.

62 *Ἰαμβλίχου.*

Πᾶν γὰρ τὸ τιμώμενον αὔξεται, ἐλαττοῦται δὲ τὸ ἀτιμαζόμενον· καὶ τοῦτό ἐστι τὸ διαφανέστατον σημεῖον ἀρχῆς τῆς εὖ διοικουμένης. προτρέπει τε γὰρ τοὺς ἀρχομένους ἐπὶ τὰ καλὰ ἐπιτηδεύματα καὶ τὴν ἐπιβάλλουσαν ἑκάστοις ἀξίαν διανέμει καὶ πληροῖ τὰς πόλεις τῶν ἀρίστων ἐπιτηδευμάτων.

63 *Ὑπερίδου.*

Ἀρχομένων δεῖ τῶν ἀδικημάτων ἐμφράσσειν τὰς ὁδούς· ὅταν δ' ἅπαξ ῥιζωθῇ κακία καὶ παλαιὰ γένηται καθάπερ σύντροφος ἀρρωστία, χαλεπὸν αὐτὴν κατασβέσαι.

64 *Πλάτωνος ἐκ τοῦ Δημοδόκου* (383 a).

Πῶς γὰρ ἄν τις ἢ δίκην καλῶς δικάσαι ἢ ἀνθρώπους κατὰ τρόπον κρῖναι δύναιτο, μὴ ἀμφοτέρων τῶν ἀντιδίκων ἀκούσας; τοὺς γὰρ λόγους παραβαλλομένους, ὥσπερ τὴν πορφύραν καὶ τὸ χρυσίον, ἄμεινον κρίνεσθαι· ἢ τίνος ἕνεκεν ἢ χρόνον ἀμφοτέροις δίδοσθαι τοῖς ἀντιδίκοις ἢ ὀμνύειν τοὺς δικαστὰς ἀκροάσασθαι ὁμοίως ἀμφοτέρων, εἰ μὴ ὑπελάμβανεν ὁ νομοθέτης τὰς δίκας δικαιότερον ἂν καὶ βέλτιον κρίνεσθαι ὑπὸ τῶν δικαστῶν; σὺ δέ μοι δοκεῖς οὐδὲ τοῦτο ὑπὸ τῶν πολλῶν λεγόμενον ἀκηκοέναι. Τὸ ποῖον; ἔφη.

'Μηδὲ δίκην δικάσῃς, πρὶν ἀμφοῖν μῦθον ἀκούσῃς.'

καίτοι οὐκ ἂν οὕτω τοῦτο περιεφέρετο, εἰ μὴ καλῶς ἐλέγετο καὶ ὡς προσήκει. ξυμβουλεύω οὖν σοι, ἔφη,

τοῦ λοιποῦ μὴ προπετῶς οὕτω τοὺς ἀνθρώπους μήτε μέμφεσθαι μήτε ἐπαινεῖν.

65 *Ἀντιφῶντος.*

Οὐ δίκαιον οὔτε ἔργῳ ἁμαρτόντα ῥήματι σωθῆναι οὔτε ἔργῳ ὀρθῶς πράξαντα διὰ ῥῆμα ἀπολέσθαι· τὸ μὲν γὰρ ῥῆμα τῆς γλώσσης ἁμάρτημά ἐστι, τὸ δὲ ἔργον τῆς γνώμης.

66 *Δημοσθένους* (c. Aphob. 835, 6).

Δίκαιόν ἐστιν ἐλεεῖν οὐ τοὺς ἀδίκους τῶν ἀνθρώπων, ἀλλὰ τοὺς παρὰ λόγον δυστυχοῦντας.

67 *Βίαντος.*

Βίας θανάτῳ μέλλων καταδικάζειν ἐδάκρυσεν. εἰπόντος δέ τινος 'τί παθὼν αὐτὸς καταδικάζεις καὶ κλαίεις;' εἶπεν 'ὅτι ἀναγκαῖόν ἐστι τῇ μὲν φύσει τὸ συμπαθὲς ἀποδοῦναι, τῷ δὲ νόμῳ τὴν ψῆφον.'

68 *Ἐκ τῆς [Πλουτάρχου] ἐπιστολῆς περὶ φιλίας.*

Κριτὴς δ' ἄριστος ὁ μηθὲν μὲν εὖ παθὼν ἀπὸ δὲ τῆς εἰς ἄλλους εὐνοίας κρίνων.

69 *Ὀβρίμου Πρωτογόνου κρινομένου φαρμάκων.*

Ἀεὶ δὲ ἐν πάσαις μὲν ταῖς δίκαις ἐξετάζειν χρὴ τὰ βεβιωμένα, μάλιστα δ' ἐν τοῖς τοιούτοις τῶν ἀγώνων ἐν οἷς ὁ βίος ἐστὶ τὸ ἔγκλημα.

70 *Ἰαμβλίχου ἐκ τῶν προτρεπτικῶν πρὸς φιλοσοφίαν λόγων* (c. 2).

Καθάπερ τῷ ὑποπύῳ βέλτιον τὸ κάεσθαι τοῦ διαμένειν, οὕτω καὶ τῷ μοχθηρῷ τὸ τεθνάναι τοῦ ζῆν.

71 *Διονυσίου ὑπὲρ τῶν παίδων.*

Ἀξιοπιστότερός ἐστιν ἀντιδίκων καταψευδομένων ἀληθεύων πατήρ.

72 Δημοσθένους (c. Steph. 1121, 27).

Μᾶλλον ἄξιον ὀργίλως ἔχειν τοῖς μετ' εὐπορίας πονηροῖς ἢ τοῖς μετ' ἐνδείας. τοῖς μὲν γὰρ ἡ τῆς ἀνάγκης χρεία φέρει τινὰ συγγνώμην παρὰ τοῖς ἀνθρωπίνως λογιζομένοις· οἱ δ' ἐκ περιουσίας πονηροὶ οὐδεμίαν δικαίαν πρόφασιν ἔχουσι. πολλὰ δ' οὖν κακὰ πράγματα τοὺς ἐλευθέρους ἡ πενία βιάζεται ποιεῖν, ἐφ' οἷς ἂν ἐλεοῖντο δικαιότερον ἢ προσαπολλύοιντο.

73 Ἰαμβλίχου.

Ἡ κακὴ κρίσις παντὸς κακοῦ αἰτία.

74 Ἰαμβλίχου ἐκ τῆς ἐπιστολῆς τῆς πρὸς Δυσκόλιον.

Προηγεῖται δ' ὡς ἀληθῶς ἄρχων μειζόνως αὐτῶν καὶ ἔτι βέλτιον, ὡς τὴν μεγαλοπρεπῆ δόσιν τῶν ἀγαθῶν παρέχει, χορηγίαν τε ἄπλετον τοῦ βίου καὶ σωτηρίαν πλείστην καὶ ζωῆς ῥαστώνην ἐντίθησιν. καὶ γὰρ δὴ καὶ τοῦτό ἐστι τέλος ἄρχοντος σπουδαίου τοὺς ἀρχομένους ποιεῖν εὐδαίμονας· καὶ τότε δὴ διαφερόντως εὐσθενεῖ ὁ προεστηκὼς τῶν ὑφ' ἑαυτοῦ διοικουμένων, ὅταν οἱ ἐπιτρέψαντες αὐτῷ ἑαυτοὺς μακαρίως διάγωσιν. οὐ γὰρ δὴ κεχώρισται τὸ κοινὸν συμφέρον τοῦ ἰδίου· πολὺ δὲ μᾶλλον ἐν τῷ ὅλῳ καὶ τὸ καθ' ἕκαστα λυσιτελοῦν περιέχεται καὶ σώζεται ἐν τῷ παντὶ τὸ κατὰ μέρος ἐπί τε τῶν ζῴων καὶ τῶν πόλεων καὶ τῶν ἄλλων φύσεων.

75 Ἐν τῷ αὐτῷ.

Ἄγαμαι δ' ἔγωγε καὶ τὴν μεγαλοφροσύνην καὶ τὴν μεγαλοπρέπειαν ἐν ἅπασι τοῖς τῆς ἀρχῆς ἔργοις,

καὶ διαφερόντως ἐν ταῖς τῶν ἀνθρώπων εὐεργεσίαις, ὅταν μήτε ἀκριβολογῶνται, μήτε φείδωνταί τινος ἐν ταῖς δόσεσι, μήτε ὥσπερ ἐν πλάστιγγι ζυγοῦ ἴσα ἀντὶ ἴσων ἀντικαταλλάττωνται, εὐγενῶς δὲ τὰς χάριτας ὀρέγωσι, μὴ μόνον ἐκ πίθου αὐτὰς προχέοντες, ὡς οἱ ποιηταὶ λέγουσιν, ἀλλὰ μηδ' ἄλλοις τισὶν ὀργάνοις τοιούτοις εἴσω κατεχομένας, γυμνὰς δὲ καὶ ἀπαρακαλύπτους καὶ χωρὶς τῶν ἔξωθεν παραπετασμάτων συνεχεῖς ἐχομένας ἀλλήλων προτείνωσι χρηστῶς καὶ εὐμενῶς, οἷα δὴ καὶ χαρίεντα. τῶν χαρίτων γὰρ δὴ τοιοῦτον κόσμον στέφανον ἂν εἰκότως εἴποιμι τῆς ἀρχῆς.

76 Τοῦ αὐτοῦ ἐκ τῆς ἐπιστολῆς τῆς πρὸς Ἀγρίππαν.

Ἐπίφθονος εἶναι δοκεῖ τοῖς πολλοῖς ἡ ὑπεροχὴ τῆς ἀρχῆς, καὶ τὸ ὑπέρογκον μισητὸν αὐτοῖς καθίσταται· ἀλλ' ὅταν χρηστότητι καὶ φιλανθρωπίᾳ κραθῇ τὸ σεμνὸν καὶ αὐστηρὸν τῆς ἐπικρατείας, ἐμμελὲς καὶ πρᾶον καὶ προσηνὲς καὶ εὐπρόσιτον καθίσταται. καὶ τοῦτο μάλιστα τὸ εἶδος ἡγεμονίας φιλεῖται ὑπὸ τῶν ἀρχομένων.

77 Τοῦ αὐτοῦ.

Λέγεται μὲν εἶναι πάντων βασιλεὺς ὁ νόμος· ὁ δὲ αὐτὸς δοκεῖ καὶ προστάττειν τἀγαθὰ καὶ τἀναντία ἀπαγορεύειν. τί δὴ οὖν οἰόμεθα τὴν παρισουμένην αὐτῷ εὐνομίαν οἵῳ δὴ κάλλει τινὶ προέχειν μεγέθει τε ἡλίκῳ καὶ δικαιοσύνῃ ὑπερβάλλειν πάντα πράγματα; ὅσα γὰρ δήπου καὶ οἷα γένη καὶ εἴδη τῶν ἀρετῶν ἐστί, κατὰ τοσαῦτα καὶ τοιαῦτα διήκει κάλλιστα τῶν νόμων ἐπιτάγματα, καὶ δὴ καθ' ὅλας τὰς διοικήσεις τῶν πόλεων καὶ τοὺς ὅλους τῶν ἀνθρώπων

βίους διατείνει τὸ ἀπ᾽ αὐτῶν ὄφελος. ἔστι μὲν οὖν κοινὸν ἀγαθὸν ὁ νόμος, καὶ ἄνευ τούτου οὐδὲν ἄν ποτε γένοιτο τῶν ἀγαθῶν· δεῖ γε μὴν τὸν προϊστάμενον τῶν νόμων ἄρχοντα εἰλικρινῶς ἀποκεκαθαρμένον εἶναι πρὸς αὐτὴν τὴν ἄκραν τῶν νόμων ὀρθότητα, καὶ μήτε παραγωγαῖς ἢ φενακισμοῖς ἐξαπατᾶσθαι δι᾽ ἄγνοιαν, μήτε βιαζομένοις τισὶ συγχωρεῖν, μήτε ἀδίκῳ προφάσει μηδεμιᾷ δελεάζεσθαι. τὸν γὰρ σωτῆρα καὶ φύλακα τῶν νόμων ἀδιάφθορον εἶναι δεῖ εἰς δύναμιν ἀνθρωπίνην.

78 Κάτωνος πρεσβυτέρου.

Κάκιστον ἔλεγε τὸν ἄρχοντα εἶναι τὸν ἄρχειν ἑαυτοῦ μὴ δυνάμενον.

79 Ἐπικτήτου.

Ὥσπερ εἰ ναῦν κυβερνᾶν ἐπεχείρεις, πάντως ἂν τὴν κυβερνητικὴν ἐξεμάνθανες τέχνην . . . . . ἐξέσται γάρ σοι ὥσπερ ἐκεῖσε πᾶσαν ναῦν, οὕτω κἀνθάδε πᾶσαν κυβερνᾶν πόλιν.

80 Τοῦ αὐτοῦ.

Εἰ πρόκειταί σοι τὴν πόλιν ἀναθήμασι κοσμεῖν, σεαυτῷ πρῶτον ἀνάθες τὸ κάλλιστον ἡμερότητος καὶ δικαιοσύνης καὶ εὐποιίας ἀνάθημα.

81 Τοῦ αὐτοῦ.

Εὖ ποιήσεις σὺ τὰ μέγιστα τὴν πόλιν, εἰ μὴ τοὺς ὀρόφους ὑψώσεις, ἀλλὰ τὰς ψυχὰς αὐξήσεις. ἄμεινον γὰρ ἐν μικροῖς οἰκήμασι μεγάλας οἰκεῖν ψυχὰς ἢ ἐν μεγάλαις οἰκίαις ταπεινὰ φωλεύειν ἀνδράποδα.

82 Τοῦ αὐτοῦ.

Μὴ τοῖς ἐξ Εὐβοίας καὶ Σπάρτης λίθοις τοὺς τοίχους τῆς κατασκευῆς ποίκιλλε, ἀλλὰ γὰρ τῇ ἐκ

τῆς Ἑλλάδος παιδείᾳ τὰ στέρνα τῶν πολιτῶν καὶ τῶν πολιτευομένων διακόσμει. γνώμαις γὰρ ἀνδρῶν εὖ οἰκοῦνται πόλεις, ἀλλ' οὐ λίθοις καὶ ξύλοις.

83 Τοῦ αὐτοῦ.

Ὥσπερ εἰ λέοντας ἐβούλου τρέφειν, οὐκ ἄν σοι τῆς πολυτελείας τῶν ζωγρείων ἔμελεν, ἀλλὰ τῆς πράξεως τῶν ζῴων· οὕτως εἰ πολιτῶν πειρᾷ προΐστασθαι, μὴ τοσοῦτον τῆς πολυτελείας τῶν ἀναστημάτων φρόντιζε, ὁπόσον τῆς ἀνδρίας τῶν ἐνδιατριβόντων ἐπιμελοῦ.

84 Τοῦ αὐτοῦ.

Καθάπερ ἀγαθὸς πωλοδάμνης οὐ τῶν πώλων τοὺς μὲν ἀγαθοὺς τρέφει τοὺς δὲ δυσηνίους λιμώττειν ἐᾷ, ἀλλὰ τρέφει μὲν ἐπίσης ἄμφω, κολάζει δὲ μᾶλλον θάτερον ἐξισοῦν θατέρῳ βιαζόμενος μέρει· οὕτω καὶ κηδεμονικὸς ἀνὴρ καὶ πολιτικῆς ἐπιστήμων δυνάμεως τῶν πολιτῶν τοὺς μὲν εὐγνώμονας εὖ ποιεῖν ἐπιχειρεῖ τοὺς δὲ ἔμπαλιν οὐ καθάπαξ διαφθείρεσθαι [ἐᾷ,] ἀλλὰ τροφῆς μὲν ἀμφοῖν ἥκιστα φθονεῖ, παιδεύει δὲ καὶ σφοδρότερον ἐπισπέρχει τὸν ἀντιβαίνοντα τῷ λόγῳ καὶ τῷ νόμῳ.

85 Τοῦ αὐτοῦ.

Καθάπερ οὔτε κλαγγῇ χὴν οὔτε βληχῇ καταπλήσσεται πρόβατον, οὕτω μηδὲ πλήθους ἀνοήτου σε δεδιττέσθω φωνή.

86 Τοῦ αὐτοῦ.

Ὥσπερ πλῆθος ἀκρίτως αἰτοῦν τί σε τῶν ἰδίων οὐ δυσωπεῖ, οὕτω μηδὲ ὄχλον ἀδίκως σε δυσωποῦντα διατραπῇς.

87 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Ὅπερ ἐπιβάλλει τῇ πόλει, τοῦτο εἴσφερε φθάνων, καὶ οὐδέποτε αἰτηθήσῃ τὰ μὴ ἐπιβάλλοντα.

88 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Ὥσπερ ὁ ἥλιος οὐ περιμένει λιτὰς καὶ γοητείας ἵν' ἀνατείλῃ, ἀλλ' εὐθὺς λάμπει καὶ πρὸς ἁπάντων ἀσπάζεται· οὕτω μηδὲ σὺ περίμενε κρότους καὶ ψόφους καὶ ἐπαίνους ἵν' εὖ ποιήσῃς, ἀλλ' ἑκοντὴς εὐεργέτει, καὶ ἴσα τῷ ἡλίῳ φιληθήσῃ.

89 *Πλάτωνος ἐκ τοῦ Λάχητος* (184 f).

Ἐπιστήμῃ γὰρ οἶμαι δεῖ κρίνεσθαι ἀλλ' οὐ πλήθει τὸ μέλλον καλῶς κριθήσεσθαι.

90 *Ἐν ταυτῷ* (197 d).

Πρέπει μέν που, ὦ μακάριε, τῷ τῶν μεγίστων προστατοῦντι μεγίστης φρονήσεως μετέχειν.

91 *Πλάτωνος ἐκ τοῦ Πρωταγόρου* (Gorg. 474 b).

Ἐγὼ γὰρ δὴ οἶμαι καὶ ἐμὲ καὶ σὲ καὶ τοὺς ἄλλους ἀνθρώπους τὸ ἀδικεῖν τοῦ ἀδικεῖσθαι κάκιον ἡγεῖσθαι καὶ τὸ μὴ διδόναι δίκην τοῦ διδόναι.

92 *Τοῦ αὐτοῦ ἐκ τοῦ Πρωταγόρου* (324 a).

Οὐδεὶς γὰρ κολάζει τοὺς ἀδικοῦντας πρὸς τοῦτο τὸν νοῦν ἔχων καὶ τούτου ἕνεκα, ὅτι ἠδίκησεν, ὅστις μὴ ὥσπερ θηρίον ἀλογίστως τιμωρεῖται· ὁ δὲ μετὰ λόγου ἐπιχειρῶν κολάζειν οὐ τοῦ παρεληλυθότος ἕνεκα ἀδικήματος τιμωρεῖται, οὐ γὰρ ἂν τό γε πραχθὲν ἀγένητον θείη, ἀλλὰ τοῦ μέλλοντος χάριν, ἵνα μὴ αὖθις ἀδικήσῃ μήτε αὐτὸς οὗτος μήτε ἄλλος ὁ τοῦτον ἰδὼν κολασθέντα.

93 *Ἐν ταυτῷ* (Gorg. 486 e).

Ἐννοῶ γὰρ ὅτι τὸν μέλλοντα βασανιεῖν ἱκανῶς ψυχῆς πέρι ὀρθῶς τε ζώσης καὶ μὴ τρία ἄρα δεῖ ἔχειν, ἃ σὺ πάντ' ἔχεις, ἐπιστήμην τε καὶ δόξαν καὶ παρρησίαν.

94 *Τοῦ αὐτοῦ νόμων ιβ'* (944 d).

Τὸν γὰρ κακὸν ἀεὶ δεῖ κολάζειν ἵν' ᾖ ἀμείνων, οὐ τὸν δυστυχῆ.

95 *Πλάτωνος πολιτείας γ'* (389 b).

Ἀλλὰ μὴν καὶ ἀλήθειάν γε περὶ πολλοῦ ποιητέον· εἰ γὰρ ὀρθῶς ἐλέγομεν ἄρτι, καὶ τῷ ὄντι θεοῖσι μὲν ἄχρηστον ψεῦδος, ἀνθρώποις δὲ χρήσιμον ὡς ἐν φαρμάκου εἴδει, δῆλον ὅτι τό γε τοιοῦτον ἰατροῖς δοτέον, ἰδιώταις δὲ οὐχ ἁπτέον. Δῆλον, ἔφη. Τοῖς ἄρχουσι δὴ τῆς πόλεως, εἴπερ τισὶν ἄλλοις, προσήκει ψεύδεσθαι ἢ πολεμίων ἢ πολιτῶν ἕνεκα ἐπ' ὠφελείᾳ τῆς πόλεως· τοῖς δ' ἄλλοις πᾶσιν οὐχ ἁπτέον τοῦ τοιούτου· ἀλλὰ πρός γε δὴ τοὺς [τοιούτους] ἄρχοντας ἰδιώτῃ ψεύσασθαι ταυτὸν καὶ μεῖζον ἁμάρτημα φήσομεν ἢ κάμνοντι πρὸς ἰατρὸν ἢ ἀσκοῦντι πρὸς παιδοτρίβην περὶ τῶν τοῦ αὑτοῦ σώματος παθημάτων μὴ τἀληθῆ λέγειν, ἢ πρὸς κυβερνήτην περὶ τῆς νηός τε καὶ ναυτῶν μὴ τὰ ὄντα λέγοντι, ὅπως ἢ αὐτὸς ἤ τις τῶν ξυνναυτῶν πράξεως ἔχει. Ἀληθέστατα, ἔφη. Ἂν ἄρ' ἄλλόν τινα λαμβάνῃ ψευδόμενον ἐν τῇ πόλει

τῶν οἳ δημιουργοὶ ἔασι,
μάντιν ἢ ἰητῆρα κακῶν ἢ τέκτονα δούρων,

κολάσει ὡς ἐπιτήδευμα εἰσάγοντα πόλεως ὥσπερ νεὼς ἀνατρεπτικόν τε καὶ ὀλέθριον. Ἐάν περ, ἦ δ' ὅς, ἐπὶ λόγῳ ἔργα τελῆται.

96 Ἐν τῷ αὐτῷ (408 c).

Ἀλλὰ περὶ τοῦδε τί λέγεις, ὦ Σώκρατες; ἆρα οὐκ ἀγαθοὺς δεῖ ἐν τῇ πόλει κεκτῆσθαι ἰατρούς; εἶεν δ' ἄν που μάλιστα τοιοῦτοι, ὅσοι πλείστους μὲν ὑγιεινοὺς πλείστους δὲ νοσώδεις μετεχειρίσαντο, καὶ δικασταὶ αὖ ὡσαύτως οἱ παντοδαπαῖς φύσεσιν ὡμιληκότες. Καὶ μάλα, εἶπον, ἀγαθοὺς λέγω. ἀλλ' οἶσθα οὓς ἡγοῦμαι τοιούτους; Ἐὰν εἴπῃς, ἔφη. Ἀλλὰ πειράσομαι, ἦν δ' ἐγώ· σὺ μέντοι οὐχ ὅμοιον πρᾶγμα τῷ αὐτῷ λόγῳ ἤρου. Πῶς; ἔφη. Ἰατροὶ μέν, εἶπον, δεινότατοι ἂν γένοιντο, εἰ ἐκ παίδων ἀρξάμενοι πρὸς τὸ μανθάνειν τὴν τέχνην ὡς πλείστοις τε καὶ πονηροτάτοις σώμασιν ὁμιλήσαιεν καὶ αὐτοὶ πάσας νόσους κάμοιεν καὶ εἶεν μὴ πάνυ ὑγιεινοὶ φύσει· οὐ γάρ, οἶμαι, σώματι σῶμα θεραπεύουσιν (οὐ γὰρ ἂν αὐτὰ εἶναι κακὰ ἐνεχώρει ποτὲ καὶ γενέσθαι) ἀλλὰ ψυχῇ σῶμα, ἣ οὐκ ἐγχωρεῖ κακὴν γενομένην τε καὶ οὖσαν εὖ τι θεραπεύειν. Ὀρθῶς, ἔφη. Δικαστὴς δέ γε, ὦ φίλε, ψυχῇ ψυχῆς ἄρχει, ἣ οὐκ ἐγχωρεῖ ἐκ νέας ἐν πονηραῖς ψυχαῖς τεθράφθαι τε καὶ ὡμιληκέναι καὶ πάντα ἀδικήματα αὐτὴν ἠδικηκυῖαν διεξεληλυθέναι, ὥστε ὀξέως ἀφ' ἑαυτῆς τεκμαίρεσθαι τὰ τῶν ἄλλων ἀδικήματα, οἷον κατὰ σῶμα νόσους· ἀλλ' ἄπειρον αὐτὴν καὶ ἀκέραιον δεῖ κακῶν ἠθῶν νέαν οὖσαν γεγονέναι, εἰ μέλλει καλὴ κἀγαθὴ οὖσα κρίνειν ὑγιῶς τὰ δίκαια. διὸ δὴ καὶ εὐήθεις νέοι ὄντες οἱ ἐπιεικεῖς φαίνονται καὶ εὐεξαπάτητοι ὑπὸ τῶν ἀδίκων, ἅτε οὐκ ἔχοντες ἐν αὑτοῖς παραδείγματα ὁμοιοπαθῆ τοῖς πονηροῖς. Καὶ μὲν δή, ἔφη, σφόδρα γε αὐτὸ πάσχουσι. Τοιγάρτοι, ἦν δ' ἐγώ, οὐ νέον ἀλλὰ γέροντα δεῖ τὸν ἀγαθὸν δικαστὴν εἶναι, ὀψιμαθῆ γεγονότα τῆς ἀδι-

κίας, οἷόν ἐστιν, οὐκ οἰκείαν ἐν τῇ αὑτοῦ ψυχῇ ἐνοῦσαν ᾐσθημένον, ἀλλ᾽ ἀλλοτρίαν ἐν ἀλλοτρίαις μεμελετηκότα ἐν πολλῷ χρόνῳ δεῖ αἰσθάνεσθαι, οἷον πέφυκε κακόν, ἐπιστήμῃ, οὐκ ἐμπειρίᾳ οἰκείᾳ κεχρημένον. Γενναιότατος γοῦν, ἔφη, ἔοικεν εἶναι ὁ τοιοῦτος δικαστής. Καὶ ἀγαθός, ἦν δ᾽ ἐγώ, ὃ σὺ ἐρωτᾷς. ὁ γὰρ ἔχων ψυχὴν ἀγαθὴν ἀγαθός· ὁ δὲ δεινὸς ἐκεῖνος καὶ καχύποπτος, [ὁ] πόλλ᾽ αὐτὸς ἠδικηκὼς καὶ πανοῦργός τε καὶ σοφὸς οἰόμενος εἶναι, ὅταν μὲν ὁμοίοις ὁμιλῇ, δεινὸς φαίνεται ἐξευλαβούμενος, πρὸς τὰ ἐν αὑτῷ παραδείγματα ἀποσκοπῶν· ὅταν δὲ ἀγαθοῖς καὶ πρεσβυτέροις ἤδη πλησιάσῃ, ἀβέλτερος αὖ φαίνεται ἀπιστῶν παρὰ καιρὸν καὶ ἀγνοῶν ὑγιὲς ἦθος, ἅτε οὐκ ἔχων παραδείγματα τοῦ τοιούτου· πλεονάκις δὲ πονηροῖς ἢ χρηστοῖς ἐντυγχάνων, σοφώτερος ἢ ἀμαθέστερος δοκεῖ εἶναι αὑτῷ τε καὶ ἄλλοις. Παντάπασι μὲν οὖν, ἔφη, ἀληθῆ. Οὐ τοίνυν, ἦν δ᾽ ἐγώ, τοιοῦτον χρὴ τὸν δικαστὴν ζητεῖν τὸν ἀγαθόν τε καὶ σοφόν, ἀλλὰ τὸν πρότερον· πονηρία μὲν γὰρ ἀρετήν τε καὶ αὑτὴν οὔ ποτ᾽ ἂν γνοίη· ἀρετὴ δὲ φύσεως παιδευομένης χρόνῳ ἅμα αὑτῆς τε καὶ πονηρίας ἐπιστήμην λήψεται· σοφὸς οὖν οὗτος, ὡς ἐμοὶ δοκεῖ, ἀλλ᾽ οὐχ ὁ κακὸς γίγνεται. Καὶ ἐμοί, ἔφη, ξυνδοκεῖ. Οὐκ οὖν καὶ ἰατρικὴν οἵαν εἴπομεν μετὰ τῆς τοιαύτης δικαστικῆς κατὰ πόλιν νομοθετήσεις, αἳ τῶν πολιτῶν σοι τοὺς μὲν εὐφυεῖς τὰ σώματα καὶ τὰς ψυχὰς θεραπεύουσι τοὺς δὲ μή, ὅσοι μὲν κατὰ τὸ σῶμα τοιοῦτοι, ἀποθνήσκειν ἐάσουσι, τοὺς δὲ κατὰ τὴν ψυχὴν κακοφυεῖς τε καὶ ἀνιάτους καὶ αὐτοὶ ἀποκτενοῦσι; Τὸ γοῦν ἄριστον, ἔφη, αὐτοῖς τε τοῖς πάσχουσι καὶ τῇ πόλει οὕτω πέφανται.

97 *Ὀβρίμου ὑπὲρ Σεβήρου.*

Πολλὰ γὰρ αὐτὰ μὲν καθ' ἑαυτὰ λεγόμενα ἕτερα ἔδοξε, συγκριθέντα δὲ ταῖς αἰτίαις ἀλλοιότερα ἐνομίσθη.

98 *Δημοσθένους Ὀλυνθιακῶν β'* (26, 1).

Τηνικαῦτα δὲ ἀπ' αὐτῶν τῶν ἔργων κρίναντας τοὺς μὲν ἀξίους ἐπαίνου τιμᾶν τοὺς δὲ ἀδικοῦντας κολάζειν.

99 *Ἐκ τοῦ Πλουτάρχου πρὸς ἡγεμόνα ἀπαίδευτον* (779 f).

Ὁ δὲ ἐκ φιλοσοφίας τῷ ἄρχοντι πάρεδρος καὶ φύλαξ ἐγκατοικισθεὶς λόγος ὥσπερ εὐεξίας τῆς δυνάμεως τὸ ἐπισφαλὲς ἀφαιρῶν ἀπολείπει τὸ ὑγιαῖνον. ἀλλὰ νοῦν οὐκ ἔχοντες οἱ πολλοὶ τῶν βασιλέων καὶ ἀρχόντων μιμοῦνται τοὺς ἀτέχνους ἀνδριαντοποιούς, οἳ νομίζουσι μεγάλους φαίνεσθαι τοὺς κολοσσούς, ἂν διαβεβηκότας σφόδρα καὶ διατεταμένους καὶ κεχηνότας πλάσωσι. καὶ γὰρ οὗτοι βαρύτητι φωνῆς καὶ βλέμματος τραχύτητι καὶ δυσκολίᾳ τρόπων καὶ ἀμιξίᾳ διαίτης ὄγκον οἰκονομίας καὶ σεμνότητα μιμεῖσθαι δοκοῦσι.

100 *Ἐν τῷ αὐτῷ* (780 b).

Δεῖ δὲ ὥσπερ ὁ κανὼν αὐτὸς ἀστραβὴς γενόμενος καὶ ἀδιάστροφος οὕτως ἀπευθύνει τὰ λοιπὰ τῇ πρὸς αὐτὸν ἐφαρμογῇ καὶ παραθέσει συνεξομοιῶν, παραπλησίως τὸν ἄρχοντα πρῶτον ἀρχὴν κτησάμενον ἐν ἑαυτῷ καὶ κατευθύναντα τὴν ψυχὴν καὶ καταστησάμενον τὸ ἦθος, οὕτω συναρμόττειν τὸ ὑπήκοον· οὔτε γὰρ πίπτοντος τρέχειν ἢ τάττειν ἀτακτοῦντος ἢ ἄρχειν μὴ ἀρχομένου.

101 *Ἐν τῷ αὐτῷ* (780 e).

Ἀλλὰ τῶν τοιούτων καὶ τοσούτων, ἃ θεοὶ χαρίζονται, δώρων καὶ ἀγαθῶν οὐκ ἔστιν ἀπόλαυσις οὐδὲ χρῆσις ὀρθὴ δίχα νόμου καὶ δίκης καὶ ἄρχοντος. δίκη μὲν οὖν νόμου τέλος ἐστί, νόμος δὲ ἄρχοντος ἔργον, ἄρχων δὲ εἰκὼν θεοῦ τοῦ πάντα κοσμοῦντος.

102 *Ἐν τῷ αὐτῷ* (782 b).

*Ἐν μὲν τοῖς ταπεινοῖς καὶ ἀσθενέσι καὶ ἰδιώταις τῷ ἀδυνάτῳ δεδεμένον τὸ ἀνόητον, εἰς τὸ * ἁμαρτάνειν, ὥσπερ ἐν ὀνείρασι φαύλοις τοῖς πάθεσι τὴν ψυχὴν διαταράττει συνεξαναστῆναι ταῖς ἐπιθυμίαις μὴ δυναμένην· ἡ δὲ ἐξουσία παραλαβοῦσα τὴν κακίαν νεῦρα τοῖς πάθεσι προστίθησι. καὶ τὸ Διονυσίου ἀληθές ἐστιν· ἔφη γὰρ ἀπολαύειν μάλιστα τῆς ἀρχῆς ὅταν ταχέως ὃ βούλεται ποιῇ. μέγας οὖν ὁ κίνδυνος βουλεύσασθαι ἃ μὴ δεῖ τὸν ἃ βούλεται ποιεῖν δυνάμενον. ὀξὺν ἡ κακία τῆς ἐξουσίας δρόμον ἔχουσα πᾶν πάθος ἐξωθεῖ, ποιοῦσα τὴν ὀργὴν φθόνον, τὸν ἔρωτα μοιχείαν, τὴν πλεονεξίαν δήμευσιν· ἐὰν μὴ βάρος ἔχων ὁ λόγος ἐπιθλίβῃ καὶ πιέζῃ τὴν ἐξουσίαν.*

103 *Πλάτωνος ἐκ τοῦ πολιτικοῦ* (311 a).

Τὰ μὲν γὰρ σωφρόνων ἀρχόντων ἤθη σφόδρα μὲν εὐλαβῆ καὶ δίκαια καὶ σωτήρια, δριμύτητος δὲ καί τινος ἰταμότητος ὀξείας καὶ πρακτικῆς ἐνδεῖται. Δοκεῖ γοῦν δή.

104 *Πλάτωνος νόμων δωδεκάτῳ* (957 c).

Πρὸς ἃ πάντα χρὴ τὸν μέλλοντα δικαστὴν ἴσον ἔσεσθαι κατὰ δίκην βλέπειν τε καὶ κεκτημένον γράμματα αὐτῶν πέρι μανθάνειν· πάντων γὰρ μαθημάτων κυριώτατον μανθάνοντα βελτίω γίγνεσθαι τὰ

περὶ τοὺς νόμους κείμενα, εἴπερ ὀρθῶς εἴη τεθέντα, γίγνοιτ' ἄν, ἢ μάτην τοὔνομα νῷ προσῆκον κέκτητ' ἂν ὁ θεῖος ἡμῖν καὶ θαυμαστὸς νόμος. καὶ δὴ καὶ τῶν ἄλλων λόγων ὅσοι τε ἐν ποιήμασιν ἔπαινοι καὶ ψόγοι περί τινων λέγονται καὶ ὅσοι καταλογάδην, εἴτ' ἐν γράμμασιν εἴτε καθ' ἡμέραν ἐν ταῖς ἄλλαις πάσαις ξυνουσίαις, διὰ φιλονεικίας τε ἀμφισβητοῦνται καὶ διὰ ξυγχωρήσεων ἔστιν ὅτε καὶ μάλα ματαίων, τούτων πάντων ἂν βάσανος εἴη σαφὴς τὰ τοῦ νομοθέτου γράμματα· ἃ δεῖ κεκτημένον ἐν αὐτῷ καθάπερ ἀλεξιφάρμακα τῶν ἄλλων λόγων τὸν ἀγαθὸν δικαστὴν αὐτόν τε ὀρθοῦν καὶ αὖ τὴν πόλιν, τοῖς μὲν ἀγαθοῖς μονὰς τῶν δικαίων καὶ ἐπαύξησιν παρασκευάζοντα, τοῖς δὲ κακοῖς ἐξ ἀμαθίας καὶ ἀκολασίας καὶ δειλίας καὶ ξυλλήβδην πάσης ἀδικίας εἰς τὸ δυνατὸν μεταβολήν, ὅσοις ἰάσιμοι δόξαι τῶν κακῶν· οἷσι δὲ ὄντως ἐπικεκλωσμέναι, θάνατον ἴαμα ταῖς οὕτω διατεθείσαις ψυχαῖς διανέμοντες (ὃ δικαίως εἴη πολλάκις ἂν εἰρημένον) ἄξιοι ἐπαίνου γίγνοιντ' ἂν τῇ πάσῃ πόλει τοιοῦτοι δικασταὶ καὶ δικαστῶν ἡγεμόνες.

105 Τοῦ αὐτοῦ ἐκ τῆς πρὸς Δίωνα ἐπιστολῆς (321 b).

Ἐνθυμοῦ δὲ καὶ ὅτι δοκεῖς τισὶν ἐνδεεστέρως τοῦ προσήκοντος θεραπευτικὸς εἶναι. μὴ οὖν λανθανέτω σε ὅτι διὰ τοῦ ἀρέσκειν τοῖς ἀνθρώποις καὶ τὸ πράττειν ἐστίν· ἡ δ' αὐθάδεια ἐρημίας ξύνοικος.

106 Ξενοφῶντος ἐκ τοῦ οἰκονομικοῦ (IV, 19).

Ἐγὼ δὲ καὶ τοῦτο ἡγοῦμαι μέγα τεκμήριον ἀρ-

χοντος ἀρετῆς εἶναι, ᾧ ἂν ἑκόντες ἕπωνται καὶ ἐν τοῖς δεινοῖς παραμένειν ἐθέλωσιν.

107 *Πλάτωνος ἐκ τοῦ πολιτικοῦ* (305 b).

Ἴθι δὴ καὶ τὴν τῶν δικαστῶν τῶν ὀρθῶς δικαζόντων θεασώμεθα δύναμιν. Πάνυ μὲν οὖν. Ἆρ' οὖν ἐπὶ πλέον τὶ δύναται τοῦ περὶ τὰ ξυμβόλαια πάνθ' ὅσα κεῖται νόμιμα παρὰ νομοθέτου βασιλέως παραλαβοῦσα κρίνειν, εἰς ἐκεῖνα σκοποῦσα τά τε δίκαια ταχθέντ' εἶναι καὶ ἄδικα, τὴν αὑτῆς ἰδίαν ἀρετὴν παρεχομένη, τοῦ μήθ' ὑπό τινων δώρων, μήθ' ὑπὸ φόβων μήτ' οἴκτων, μήθ' ὑπό τινος ἄλλης ἔχθρας μήτε φιλίας ἡττηθεῖσα παρὰ τὴν τοῦ νομοθέτου τάξιν ἐθέλειν ἂν τὰ ἀλλήλων ἐγκλήματα διαιρεῖν; Οὐκ ἀλλὰ σχεδὸν ὅσον εἴρηκας, ταύτης ἐστὶ τῆς δυνάμεως ἔργον.

108 *Ξενοφῶντος ἐν τῷ ὀγδόῳ* (1, 1) *τῆς Κύρου παιδείας.*

Πολλάκις μὲν δή, ὦ ἄνδρες, καὶ ἄλλοτε κατενόησα, ὅτι ἄρχων ἀγαθὸς οὐδὲν διαφέρει πατρὸς ἀγαθοῦ. οἵ τε γὰρ πατέρες προνοοῦσι τῶν παίδων, ὅπως μήποτε αὐτοὺς τἀγαθὰ ἐπιλείψῃ· Κῦρός τε μοι δοκεῖ νῦν συμβουλεύειν ἡμῖν ἀφ' ὧν ἂν μάλιστα εὐδαιμονοῦντας διατελοίημεν.

109 *Ξενοφῶντος ἐκ τοῦ Ἱέρωνος* (c. 9).

Ἐπιμέλειαί γε μέντοι μοι δοκοῦσιν αἱ μὲν πάνυ πρὸς ἔχθραν ἄγειν, αἱ δὲ πάνυ διὰ χαρίτων εἶναι. τὸ μὲν γὰρ διδάσκειν τε ἃ ἐστι βέλτιστα καὶ τὸν κάλλιστα ταῦτα ἐξεργαζόμενον ἐπαινεῖν καὶ τιμᾶν, αὕτη μὲν ἡ ἐπιμέλεια διὰ χαρίτων γίγνεται· τὸ δὲ τὸν ἐνδεῶς τι ποιοῦντα λοιδορεῖν τε καὶ ἀναγκάζειν καὶ ζημιοῦν καὶ κολάζειν, ταῦτα δ' ἀνάγκη δι' ἀπε-

χθείας μᾶλλον γίγνεσθαι. ἐγὼ οὖν φημι ἀνδρὶ ἄρχοντι τὸ μὲν ἀνάγκης δεόμενον ἄλλοις προστακτέον εἶναι κολάζειν, τὸ δὲ τὰ ἆθλα ἀποδιδόναι δι' ἑαυτοῦ ποιητέον. ὡς δὲ ταῦτα καλῶς ἔχει μαρτυρεῖ τὰ γιγνόμενα. καὶ γὰρ ὅταν χοροὺς βουλώμεθα ἡμῖν ἀγωνίζεσθαι, ἆθλα μὲν ὁ ἄρχων προτίθησιν, ἀθροίζειν δὲ αὐτοὺς προστέτακται χορηγοῖς, καὶ ἄλλοις διδάσκειν, καὶ ἀνάγκην προστιθέναι τοῖς ἐνδεῶς τι ποιοῦσιν. οὐκ οὖν εὐθὺς ἐν τούτοις τὰ μὲν ἐπιχάριτα διὰ ἄρχοντος ἐγένετο, τὰ δὲ ἀντίτυπα δι' ἄλλων; Τί οὖν κωλύει καὶ τἆλλα τὰ πολιτικὰ οὕτω περαίνεσθαι; [Διῄρηνται μὲν γὰρ ἅπασαι αἱ πόλεις, αἳ μὲν κατὰ φυλάς, αἳ δὲ κατὰ μοίρας, αἳ δὲ κατὰ λόχους, καὶ ἄρχοντες ἐφ' ἑκάστῳ μέρει ἐφεστήκασι· οὐκ οὖν εἴ τις καὶ τούτοις ὥσπερ τοῖς χοροῖς] καὶ ἆθλα προτεθείη εὐταξίας εὐοπλίας ἱππικῆς, καὶ ἀλκῆς ἐν τῷ πολέμῳ καὶ δικαιοσύνης ἐν τοῖς συμβόλοις, εἰκὸς καὶ ταῦτα πάντα διὰ φιλονεικίας εὐτόνως ἀσκεῖσθαι; καὶ νὴ Δία, ὁρμῷντό γ' ἂν θᾶσσον ὅπου δέοι τιμῆς ὀρεγόμενοι καὶ χρήματα θᾶσσον ἂν εἰσφέροιντο, ὁπότε τούτου καιρὸς εἴη, καὶ τὸ πάντων γε χρησιμώτατον, ἥκιστα δὲ εἰθισμένον διὰ φιλονεικίας πράσσεσθαι, ἡ γεωργία καὶ αὕτη ἂν πολὺ ἐπιδοίη, εἴ τις ἆθλα προτιθείη [κατ' ἀγροὺς ἢ κατὰ κώμας] τοῖς μάλιστα τὴν γῆν ἐξεργαζομένοις καὶ τοῖς εἰς τοῦτο τῶν πολιτῶν ἐρρωμένως τρεπομένοις πολλὰ ἂν ἀγαθὰ περαίνοιτο· καὶ γὰρ πρόσοδοι αὔξαιντ' ἄν, καὶ ἡ σωφροσύνη πολὺ μᾶλλον σὺν τῇ ἀσχολίᾳ συμπαρομαρτοῖ, καὶ μὴν κακουργίαι γε ἧσσον τοῖς ἐνεργοῖς ἐμφύονται. [Εἰ δὲ καὶ ἐμπορία ὠφελεῖ τι πόλιν, τιμώμενος ἂν ὁ πλεῖστα τοῦτο ποιῶν καὶ ἐμπόρους ἂν πλείους ἀγείροι· εἰ δὲ φανερὸν γένοιτο, ὅτι καὶ

ὁ πρόσοδόν τινα ἄλυπον ἐξευρίσκων τῇ πόλει τιμήσεται, οὐδ᾽ αὕτη ἂν ἡ σκέψις ἀργοῖτο.] Ὡς δὲ συνελόντι εἰπεῖν, εἰ καὶ κατὰ πάντων ἐμφανὲς εἴη, ὅτι ἀγαθόν τις εἰσηγούμενος οὐκ ἀτίμητος ἔσται, πολλοὺς ἂν καὶ τοῦτο ἐξορμήσειεν ἔργον ποιεῖσθαι τὸ σκοπεῖσθαι τὶ ἀγαθόν. καὶ ὅταν πολλοῖς περὶ τῶν ὠφελίμων μέλῃ, ἀνάγκη εὑρίσκεσθαι μᾶλλον καὶ ἐπιτελεῖσθαι.

110 *Λυσίου.*

Εἰ μὲν οἷόν τ᾽ ἦν ἐκ τῶν προτέρων λόγων τὰ δίκαια γιγνώσκειν, οὐδὲν ἂν ἔδει τοὺς φεύγοντας ἀπολογεῖσθαι ἀλλ᾽ ἀκρίτους ἀποθνήσκειν· ἐπεὶ δὲ τὰ ψευδῆ λέγειν δυνατόν ἐστι τοῖς κατηγοροῦσι, δίκαιον ἀμφοτέρων τῶν ἀντιδίκων ἀκούσαντας, τηνικαῦτα τὴν περὶ τοῦ δικαίου ψῆφον φέρειν.

111 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Προσήκει δ᾽ ἡμῖν περὶ φυγῆς δικάζουσι μὴ παρανομεῖν ἀλλ᾽ εὐσεβεῖν, μηδὲ θορύβῳ τὰ πράγματα κρίνειν ἀλλὰ σιωπῇ τὰ δίκαια γιγνώσκειν.

112 *Πυθαγόρου.*

Οἱ μὴ κολάζοντες τοὺς κακοὺς βούλονται ἀδικεῖσθαι τοὺς ἀγαθούς.

ΟΤΙ ΚΑΛΛΙΣΤΟΝ Η ΜΟΝΑΡΧΙΑ. ΜΖ.

1 *Ὁμήρου* (Il. β´ 204).

Οὐκ ἀγαθὸν πολυκοιρανίη, εἷς κοίρανος ἔστω,
εἷς βασιλεύς.

2 *Τοῦ αὐτοῦ* (Il. β´ 196).

Θυμὸς δὲ μέγας ἐστὶ διοτρεφέων βασιλήων·
τιμὴ δ᾽ ἐκ Διός ἐστι, φιλεῖ δέ ἑ μητιέτα Ζεύς.

3 Εὐριπίδου Φοινίσσαις (503).

Ἐγὼ γὰρ οὐδέν, μῆτερ, ἀποκρύψας ἐρῶ·
ἄστρων ἂν ἔλθοιμ᾽ αἰθέρος πρὸς ἀντολὰς
καὶ γῆς ἔνερθε δυνατὸς ὢν δρᾶσαι τάδε,
τὴν θεῶν μεγίστην ὥστ᾽ ἔχειν τυραννίδα.

4 Τοῦ αὐτοῦ Φοινίσσαις (524).

Εἴπερ γὰρ ἀδικεῖν χρή, τυραννίδος πέρι
κάλλιστον ἀδικεῖν, τἆλλα δ᾽ εὐσεβεῖν χρεών.

5 Τοῦ αὐτοῦ Ἀρχελάῳ.

Τυραννίδ᾽, ἣ θεῶν δευτέρα νομίζεται·
τὸ μὴ θανεῖν γὰρ οὐκ ἔχει, τὰ δ᾽ ἄλλ᾽ ἔχει.

6 Τοῦ αὐτοῦ Αἰγεῖ.

Ἀνδρὸς δ᾽ ὑπ᾽ ἐσθλοῦ καὶ τυραννεῖσθαι καλόν.

7 Ἡσίοδος ἐν Θεογονίᾳ (96).

Ἐκ δὲ Διὸς βασιλῆες· ὃ δ᾽ ὄλβιος, ὅντινα μοῦσαι
φίλωνται· γλυκερή οἱ ἀπὸ στόματος ῥέει αὐδή.

8 Πλάτωνος ἐκ τοῦ Κλειτοφῶντος (408 a).

[Ὅστις τῇ ψυχῇ μὴ ἐπίσταται χρῆσθαι, τῷ τοιούτῳ ἄμεινον δούλῳ ἢ ἐλευθέρῳ διάγειν τὸν βίον.] ἔστιν ἄρα καθάπερ πλοίου παραδόντι τὰ πηδάλια τῆς διανοίας ἄλλῳ τῳ μαθόντι τὴν τῶν ἀνθρώπων κυβερνητικήν, ἣν δὴ σὺ πολιτικὴν ὦ Σώκρατες ἐπονομάζεις πολλάκις, τὴν αὐτὴν δὲ ταύτην δικαστικήν τε καὶ δικαιοσύνην ὡς ἔστι λέγων.

9 Ἰσοκράτους Νικοκλῆς ἢ Κύπριοι (§. 5 sqq.).

Αἱ μὲν τοίνυν ὀλιγαρχίαι καὶ δημοκρατίαι τὰς ἰσότητας τοῖς μετέχουσι τῶν πολιτειῶν ζητοῦσι, καὶ τοῦτο εὐδοκιμεῖ παρ᾽ αὐταῖς, ἐὰν ἕτερος ἑτέρου μηδὲν δύνηται πλέον ἔχειν, ὃ τοῖς πονηροῖς συμφέρον ἐστίν. αἱ δὲ μοναρχίαι πλεῖστον μὲν νέμουσι τῷ

βελτίστῳ, δεύτερον δὲ τῷ μετ' ἐκεῖνον, τρίτον δὲ καὶ τέταρτον καὶ τοῖς ἄλλοις κατὰ τὸν αὐτὸν λόγον. καὶ ταῦτ' εἰ μὴ πανταχοῦ καθέστηκεν, ἀλλὰ τό γε βούλημα τῆς πολιτείας τοιοῦτόν ἐστι.

10 Τοῦ αὐτοῦ.

Καὶ μὴν εἰ δεῖ διορᾶν καὶ τὰς φύσεις τῶν ἀνθρώπων καὶ τὰς πράξεις, ἅπαντες ἂν τὰς τυραννίδας μᾶλλον ὁμολογήσαιεν. καίτοι τίς οὐκ ἂν εὔξαιτο τῶν εὖ φρονούντων τοιαύτης πολιτείας μετέχειν, ἐν ᾗ μὴ διαλήσει χρηστὸς ὤν, μᾶλλον ἢ φέρεσθαι μετὰ τοῦ πλήθους μὴ γιγνωσκόμενος ὁποῖός τις ἐστίν;

11 Τοῦ αὐτοῦ.

Ἀλλὰ μὴν καὶ πραοτέραν τοσούτῳ δικαίως ἂν αὐτὴν εἶναι κρίναιμεν, ὅσῳ περ ῥᾷόν ἐστιν ἑνὸς ἀνδρὸς γνώμῃ προσέχειν τὸν νοῦν μᾶλλον ἢ πολλαῖς καὶ παντοδαπαῖς διανοίαις ζητεῖν ἀρέσκειν.

12 Τοῦ αὐτοῦ.

Οἱ μὲν τοίνυν κατ' ἐνιαυτὸν εἰς τὰς ἀρχὰς εἰσιόντες πρότερον ἰδιῶται γίγνονται πρὶν αἰσθέσθαι τι τῶν τῆς πόλεως καὶ λαβεῖν ἐμπειρίαν αὐτῶν· οἱ δ' ἀεὶ τοῖς αὐτοῖς ἐπιστατοῦντες, ἢν καὶ τὴν φύσιν καταδεεστέραν ἔχωσιν, ἀλλὰ ταῖς ἐμπειρίαις πολὺ τῶν ἄλλων προέχουσιν.

13 Τοῦ αὐτοῦ.

Ἔπειθ' οἱ μὲν πολλῶν καταμελοῦσιν εἰς ἀλλήλους ἀποβλέποντες, οἱ δ' οὐδενὸς ὀλιγωροῦσιν εἰδότες ὅτι πάντα δεῖ δι' αὐτῶν γίγνεσθαι.

14 Τοῦ αὐτοῦ.

Πρὸς δὲ τούτοις, οἱ μὲν ἐν ταῖς ὀλιγαρχίαις καὶ ταῖς δημοκρατίαις διὰ τὰς πρὸς σφᾶς αὐτοὺς φιλο-

νεικίας λυμαίνονται τοῖς κοινοῖς· οἱ δ' ἐν ταῖς μοναρχίαις ὄντες, οὐκ ἔχοντες ὅτῳ φθονήσουσιν, περὶ ἁπάντων ὡς οἷόν τε ἐστι τὰ βέλτιστα πράττουσιν.

15 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Ἐπειθ' οἱ μὲν ὑστεροῦσι τῶν πραγμάτων· τὸν μὲν γὰρ πλεῖστον χρόνον ἐπὶ τοῖς ἰδίοις διατρίβουσιν, ἐπειδὰν δὲ εἰς τὰ συνέδρια συνέλθωσι, πλεονάκις ἂν τις αὐτοὺς εὕροι διαφερομένους ἢ κοινῇ βουλευομένους· οἱ δ' οὔτε συνεδρίων οὔτε χρόνων αὐτοῖς ἀποδεδειγμένων, ἀλλὰ καὶ τὰς ἡμέρας καὶ τὰς νύκτας ἐπὶ ταῖς πράξεσιν ὄντες, οὐκ ἀπολείπονται τῶν καιρῶν, ἀλλ' ἕκαστον ἐν τῷ δέοντι πράττουσιν.

Ἔτι δὲ οἱ μὲν [πρὸς ἀλλήλους] δυσμενῶς ἔχουσι καὶ βούλοιντ' ἂν καὶ τοὺς πρὸ αὐτῶν ἄρχοντας καὶ τὸν ἐφ' αὐτοῖς ὡς κάκιστα διοικῆσαι τὴν πόλιν, ἵν' ὡς μεγίστην δόξαν αὐτοὶ λαμβάνωσιν· οἱ δὲ διὰ παντὸς τοῦ βίου κύριοι τῶν πραγμάτων ὄντες εἰς ἅπαντα τὸν χρόνον καὶ τὰς εὐνοίας ἔχουσι.

16 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Τὸ δὲ μέγιστον· τοῖς γὰρ κοινοῖς οἱ μὲν ὡς ἰδίοις, οἱ δὲ ὡς ἀλλοτρίοις προσέχουσι τὸν νοῦν, καὶ συμβούλοις χρῶνται περὶ αὐτῶν οἱ μὲν τῶν ἀστῶν τοῖς τολμηροτάτοις, οἱ δὲ ἐξ ἁπάντων ἐκλεξάμενοι τοὺς φρονιμωτάτους· καὶ τιμῶσιν οἱ μὲν τοὺς ἐν τοῖς ὄχλοις εἰπεῖν δυναμένους, [οἱ δὲ τοὺς χρῆσθαι τοῖς πράγμασιν ἐπισταμένους.]

17 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Οὐ μόνον δὲ ἐν τοῖς ἐγκυκλίοις καὶ τοῖς κατὰ τὴν ἡμέραν ἑκάστην γιγνομένοις αἱ μοναρχίαι διαφέρουσιν, ἀλλὰ καὶ τὰς ἐν τῷ πολέμῳ πλεονεξίας ἁπάσας περιειλήφασι. Καὶ γὰρ παρασκευάσασθαι δυνάμεις

καὶ χρήσασθαι ταύταις, ὥστε καὶ λαθεῖν καὶ ὀφθῆναι· καὶ τοὺς μὲν πεῖσαι, τοὺς δὲ βιάσασθαι, [παρὰ δὲ τῶν ἐκπρίασθαι,] τοὺς δὲ ταῖς ἄλλαις θεραπείαις προσαγαγέσθαι, μᾶλλον αἱ τυραννίδες τῶν ἄλλων πολιτειῶν οἷαί τέ εἰσι· καὶ ταῦτα ἐκ τῶν ἔργων ἄν τις οὐχ ἧττον ἢ τῶν λόγων πιστεύσειεν.

18 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Μὴ μόνον δὲ τὰς φύσεις αὐτὰς νομίζετε τοῦ χαλεποὺς ἢ πράους εἶναι τοὺς τυράννους, ἀλλὰ καὶ τὸν τρόπον τὸν τῶν πολιτῶν. πολλοὶ γὰρ ἤδη διὰ τὴν κακίαν τὴν τῶν ἀρχομένων τραχύτερον ἢ κατὰ τὴν αὑτῶν γνώμην ἄρχειν ἠναγκάσθησαν.

19 *Δημοκρίτου.*

Φύσι τὸ ἄρχειν οἰκήιον τῷ κρέσσονι.

20 *Ἐκ τῶν Σερήνου ἀπομνημονευμάτων.*

Ὅτε Κροῖσος ἦρχε Λυδῶν, τὸν ἀδελφὸν μεθ' αὑτοῦ κατέστησεν ἄρχοντα· προσελθὼν δέ τις τῶν Λυδῶν "ὦ βασιλεῦ" εἶπε "πάντων ἐπὶ γῆς καλῶν ὁ ἥλιος τοῖς ἀνθρώποις αἴτιός ἐστι, καὶ οὐδὲν ἂν εἴη τῶν ἐπὶ γῆς μὴ τοῦ ἡλίου ἐπιλάμποντος· ἀλλ' εἰ θέλουσι δύο ἥλιοι γενέσθαι, κίνδυνος πάντα συμφλεχθέντα διαφθαρῆναι. οὕτως ἕνα μὲν βασιλεύοντα δέχονται Λυδοὶ καὶ σωτῆρα πιστεύουσιν εἶναι· δύο δὲ ἅμα οὐκ ἂν ἀνάσχοιντο."

21 *Κρισπίνου κατὰ Διονυσίου.*

Ὅτι βασιλέως μὲν καὶ τὸ βλέμμα ἀρκεῖ μόνον· κἂν ἴδῃ μόνον, τὸ ἀληθὲς βεβασάνισται.

22 *Ἐκφάντου ἐκ τοῦ περὶ βασιλείας.*

Ἐπὶ δὲ γᾶς ἄνθρωποι ἀπῳκισμένον χρῆμα καὶ πολὺ τᾶς καθαρωτέρας φύσιος ἐλαττεύμενον καὶ

πολλᾷ τᾷ γᾷ βαρυνόμενον, ὡς ἀπὸ τᾶς ματρὸς αὐτὸ μόγις ἐπᾶρθαι, αἰ μὴ θεόμοιρός τις ἐμπνοίησις ἐλέῳ ζῴῳ συνᾶψεν αὐτὸ τῷ κρέσσονι μέρει, δεικνῦσα τὰν ἱερὰν τῶ γεννάτορος πότοψιν, ὡς ἀδύνατον ἐκείναν θεάσασθαι. ἐν δὲ τᾷ γᾷ καὶ παρ' ἁμῖν ἀριστοφυέστατον μὲν ὤνθρωπος, θειότερον δὲ ὁ βασιλεὺς ἐν τᾷ κοινᾷ φύσει πλεονεκτέων τῷ κρέσσονι, τὸ μὲν σκᾶνος τοῖς λοιποῖς ὅμοιος, οἷα γεγονὼς ἐκ τᾶς αὐτᾶς ὕλας, ὑπὸ τεχνίτα δ' εἰργασμένος λῴστω, ὃς ἐτεχνίτευσεν αὐτὸν ἀρχετύπῳ χρώμενος ἑαυτῷ. ὡς εἴθε ἦν τᾶς ἀνθρωπίνας φύσιος δυνατὸν ἄφελὲν τὸ καὶ πειθοῦς τινος δέεσθαι· τάδε γὰρ τᾶς ἐπιγείω φαυλότατος λείψανον, καθ' ἂν ἐπίκαρον ὂν τὸ ζῷον αὐτᾶς οὐκ ἀμοιρεῖ· αἰ δέ πού τις καὶ ἐν αὐτῷ θειότερος ἢ κατ' ἄλλα συσταίη, ποτ' οὐδὲν ἂν τᾶς πειθοῦς δέοιτο.

23 *Πλάτωνος ἐκ τῆς πρὸς τοὺς οἰκείους Δίωνος ἐπιστολῆς* (354 a).

Λέγω γὰρ δὴ διαιτητοῦ τινα τρόπον διαλεγόμενος, ὡς δυοῖν τυραννεύσαντί τε καὶ τυραννευθέντι, ὡς ἑνὶ ἑκατέρῳ παλαιὰν ἐμὴν ξυμβουλήν. καὶ νῦν δὲ ὅ γ' ἐμὸς λόγος ἂν εἴη ξύμβουλος τυράννῳ παντί, φεύγειν μὲν τοὔνομά τε καὶ τοὖργον τοῦτο, εἰς βασιλείαν δέ, εἰ δυνατὸν εἴη, μεταλαβεῖν. δυνατὸν δέ, ὡς ἔδειξεν ἔργῳ σοφὸς ἀνὴρ καὶ ἀγαθὸς Λυκοῦργος, ὃς ἰδὼν τὸ τῶν οἰκείων γένος ἐν Ἄργει καὶ Μεσσήνῃ ἐκ βασιλέων εἰς τυράννων δύναμιν ἀφικομένους καὶ διαφθείραντας ἑαυτούς τε καὶ τὴν πόλιν ἑκατέρους ἑκατέραν, δείσας περὶ τῆς αὑτοῦ πόλεως ἅμα καὶ γένους, φάρμακον ἐνήνεγκε τὴν τῶν γερόντων ἀρχὴν καὶ τὸν τῶν ἐφόρων δεσμόν, τῆς βασιλικῆς ἀρχῆς

σωτήριον· ὥστε γενεὰς τοσαύτας ἤδη μετ᾽ εὐκλείας σώζεσθαι, νόμος ἐπειδὴ κύριος ἐγένετο [καὶ] βασιλεὺς τῶν ἀνθρώπων, ἀλλ᾽ οὐκ ἄνθρωποι τύραννοι νόμων.

24 *Ἡροδότου ἱστορίας τρίτης* (82) *Δαρείου δημηγορίας.*

Ὀστάνης μὲν ἐκέλευεν ἐς μέσον Πέρσῃσι καταθεῖναι τὰ πρήγματα. ἐμοὶ δὲ τὰ μὲν εἶπε Μεγάβυξος ἐς τὸ πλῆθος ἔχοντα δοκέει ὀρθῶς λέξαι· τὰ δὲ ἐς ὀλιγαρχίην οὐκ ὀρθῶς. τριῶν γὰρ προκειμένων καὶ πάντων τῶν λέγω ἀρίστων ἐόντων, δήμου τε ἀρίστου καὶ ὀλιγαρχίης καὶ μονάρχου, πολλῷ τοῦτο προέχειν λέγω· ἀνδρὸς γὰρ ἑνὸς τοῦ ἀρίστου οὐδὲν ἄμεινον ἂν φανείη· γνώμῃ γὰρ τοιαύτῃ χρώμενος ἐπιτροπεύοι ἂν ἀμωμήτως τοῦ πλήθεος, σιγῷτό τε ἂν βουλεύματα ἐπὶ δυσμενέας ἄνδρας οὕτω μάλιστα· ἐν δὲ ὀλιγαρχίῃ, πολλοῖσιν ἀρετὴν ἐπασκέουσιν ἐς τὸ κοινόν, ἔχθεα ἴδια ἰσχυρὰ φιλέει ἐγγίνεσθαι· αὐτὸς γὰρ ἕκαστος βουλόμενος κορυφαῖος εἶναι γνώμῃσί τε νικᾶν, ἐς ἔχθεα μεγάλα ἀλλήλοισιν ἀπικνέονται, ἐξ ὧν στάσεις ἐγγίνονται· ἐκ δὲ τῶν στάσεων φόνος, ἐκ δὲ τοῦ φόνου ἀπέβη εἰς μουναρχίην· καὶ ἐν τούτῳ διέδεξεν, ὅσῳ ἐστὶ τοῦτο ἄριστον. δήμου τε αὖ ἄρχοντος ἀδύνατον μὴ οὐ κακότητα ἐγγίνεσθαι· κακότητος τοίνυν ἐγγινομένης ἐς τὰ κοινά, ἔχθεα μὲν οὐκ ἐγγίνεται τοῖσι κακοῖσι, φιλίαι δὲ ἰσχυραί· οἱ γὰρ κακοῦντες τὰ κοινὰ συγκύψαντες ποιέουσι· τοῦτο δὲ τοιοῦτο γίνεται ἐς ὃ ἂν προστάς τις τοῦ δήμου τοὺς τοιούτους παύσῃ· ἐκ δὲ αὐτῶν θαυμάζεται. οὗτος δὴ ὑπὸ τοῦ δήμου θωυμαζόμενος ἐφάνη ἐὼν μούναρχος· καὶ ἐν τούτῳ δηλοῖ καὶ οὗτος,

ὡς ἡ μουναρχίη κράτιστον. ἑνὶ δ' ἔπει πάντα συλλαβόντα εἰπεῖν, κόθεν ἡμῖν ἡ ἐλευθερίη ἐγένετο καὶ τεῦ δόντος; κότερα παρὰ δήμου ἢ ὀλιγαρχίης ἢ μουνάρχου; ἔχω τοίνυν γνώμην ἡμέας ἐλευθερωθέντας διὰ ἕνα ἄνδρα τὸ τοιοῦτο περιστέλλειν· [χωρίς τε τούτου πατρίους νόμους μὴ λύειν ἔχοντας εὖ· οὐ γὰρ ἄμεινον.]

25 *Πλάτωνος ἐκ τοῦ πολιτικοῦ* (276 b).

Ἐπιμέλεια δέ γε ἀνθρωπίνης ξυμπάσης κοινωνίας οὐδεμία ἂν ἐθελήσειεν ἑτέρα μᾶλλον καὶ πρότερα τῆς βασιλικῆς φάναι, καὶ κατὰ πάντων ἀνθρώπων ἀρχῆς εἶναι τέχνη. Λέγεις ὀρθῶς. Μετὰ ταῦτα δέ γε, ὦ Σώκρατες, ἆρα ἐννοοῦμεν ὅτι πρὸς αὐτῷ δὴ τῷ τέλει συχνὸν αὖ διημαρτάνετο; Τὸ ποῖον; Τόδε· ὡς ἄρα εἰ καὶ διενοήθημεν ὅτι μάλιστα τῆς δίποδος ἀγέλης εἶναί τινα θρεπτικὴν τέχνην, οὐδέν τι μᾶλλον ἡμᾶς ἔδει βασιλικὴν αὐτὴν εὐθὺς καὶ πολιτικὴν ὡς ἀποτετελεσμένην προσαγορεύειν. Τί μήν; Πρῶτον μὲν ὃ λέγομεν τοὔνομα μετασκευωρήσασθαι πρὸς τὴν ἐπιμέλειαν μᾶλλον προσαγαγόντας, ἢ τὴν τροφήν· ἔπειτα ταύτην τέμνειν· οὐ γὰρ σμικρὰς ἂν ἔχοι τμήσεις ἔτι. Ποίας; Ἧιτε τὸν θεῖον ἄν που διελοίμεθα νομέα χωρίς, καὶ τὸν ἀνθρώπινον ἐπιμελητήν. Ὀρθῶς. Αὖθις δέ γε τὴν ἀπονεμηθεῖσαν ἐπιμελητικὴν δίχα τέμνειν ἀναγκαῖον ἦν. Τίνι; Τῷ βιαίῳ τε καὶ ἑκουσίῳ. Τί δή; Καὶ ταύτῃ που τὸ πρότερον ἁμαρτάνοντες, εὐηθέστερα τοῦ δέοντος εἰς ταυτὸν βασιλέα καὶ τύραννον ξυνέθεμεν, ἀνομοιοτάτους ὄντας αὐτούς τε καὶ τὸν τῆς ἀρχῆς ἑκατέρου τρόπον. Ἀληθῆ.

ΥΠΟΘΗΚΑΙ ΠΕΡΙ ΒΑΣΙΛΕΙΑΣ. ΜΗ.

1 *Εὐριπίδου Πλεισθένει.*

Δήμῳ δὲ μήτε πᾶν ἀναρτήσῃς κράτος,
μήτ' αὖ κακώσῃς πλοῦτον ἔντιμον τιθείς,
μηδ' ἄνδρα δήμῳ πιστὸν ἐκβάλῃς ποτέ,
μηδ' αὖξε καιροῦ μεῖζον, οὐ γὰρ ἀσφαλές,
μή σοι τύραννος λαμπρὸς ἐξ ἀστοῦ φανῇ.
κόλουε δ' ἄνδρα παρὰ δίκην τιμώμενον·
πόλει γὰρ εὐτυχοῦντες οἱ κακοὶ νόσος.

2 *Εὐριπίδου.*

Ἀλλ' οὐ πρέπει τύραννον, ὡς ἐγὼ φρονῶ,
οὐδ' ἄνδρα χρηστὸν νεῖκος αἵρεσθαι κακοῖς·
τιμὴ γὰρ αὕτη τοῖσιν ἀσθενεστέροις.

3 *Εὐριπίδου Ἀντιόπης.*

Ὁ δ' ἥσυχος φίλοισί τ' ἀσφαλὴς φίλος
πόλει τ' ἄριστος· μὴ τὰ κινδυνεύματα
αἰνεῖτ'· ἐγὼ γὰρ οὔτε ναυτίλον φιλῶ
τολμῶντα λίαν οὔτε προστάτην χθονός.

4 *Εὐριπίδου Ἀντιγόνης.*

Δεῖ τοῖσι πολλοῖς τὸν τύραννον ἁνδάνειν.

5 *Εὐριπίδου.*

Σοφοὶ τύραννοι τῶν σοφῶν συνουσίᾳ.

6 *Σοφοκλῆς Οἰδιπόδι* (Tyr. 54).

Ὡς εἴπερ ἄρξεις τῆσδε γῆς, ὥσπερ κρατεῖς,
σὺν ἀνδράσιν κάλλιον ἢ κενῆς κρατεῖν.
ὡς οὐδέν ἐστιν οὔτε πύργος οὔτε ναῦς
ἔρημος ἀνδρῶν μὴ ξυνοικούντων πόλιν.

7 *Μενάνδρου.*

Καλόν γε βασιλεὺς τῇ μὲν ἀνδρίᾳ κρατῶν,
τὰ δὲ τοῦ βίου δίκαια διατηρῶν κρίσει.

8 *Ὁμήρου* (Il. β' 24).

Οὐ χρὴ παννύχιον εὕδειν βουληφόρον ἄνδρα,
ᾧ λαοί τ' ἐπιτετράφαται καὶ τόσσα μέμηλε.

9 *Ὁμήρου* (Il. β' 53. Od. β' 234. δ' 690).

Βουλὴν μὲν πρῶτον μεγαθύμων ἷζε γερόντων.
Λαῶν, οἷσιν ἄνασσε, πατὴρ δ' ὣς ἤπιος ἦεν.
Οὔτε τινὰ ῥέξας κακὸν ἔξετον οὔτε τι εἰπὼν
ἐν δήμῳ, ἥτ' ἐστι δίκη θείων βασιλήων.

10 *Ἡσιόδου* (Theog. 88).

Τοὔνεκα γὰρ βασιλῆες ἐχέφρονες, οὕνεκα λαοῖς
βλαπτομένοις ἀγορῆφι μετάτροπα ἔργα τελεῦσι,
ῥηιδίως μαλακοῖσι παραιφάμενοι ἐπέεσσι.

11 *Θεοκρίτου* (XIV, 60).

Τὰ δ' ἄλλα δ' ἀνήρ τις ἐλευθέρῳ οἷος ἄριστος,
εὐγνώμων, φιλόμουσος, ἐρωτικός, εἰς ἄκρον ἁδύς,
εἰδὼς τὸν φιλέοντα, τὸν οὐ φιλέοντ' ἔτι μᾶλλον,
πολλοῖς πολλὰ διδούς, αἰτεύμενος οὐκ ἀνανεύων
οἷον χρὴ βασιλῆ' · αἰτεῖν δὲ χρὴ οὐκ ἐπὶ παντί.

12 *Ἡσιόδου Θεογονίας* (79).

Καλλιόπη τ' εἴδει προφερεστάτη ἐστὶν ἁπασέων·
ἣ μὲν γὰρ βασιλεῦσιν ἅμ' αἰδοίοισιν ὀπηδεῖ.
ὅντινα τιμήσουσι Διὸς κοῦραι μεγάλοιο,
γινόμενόν τε ἴδωσι διοτρεφέων βασιλήων,
τῷ μὲν ἐπὶ γλώσσῃ γλυκερὴν προχέουσιν ἀοιδήν,
τοῦ δ' ἔπη ἐκ στόματος ῥεῖ μείλιχα· οἱ δέ νυ λαοὶ
πάντες ἐς αὐτὸν ὁρῶσι διακρίνοντα θέμιστας

ἰθείῃσι δίκῃσιν· ὃ δ' ἀσφαλέως ἀγορεύων
αἶψά τε καὶ μέγα νεῖκος ἐπισταμένως κατέπαυσε.

13 *Δημοκρίτου.*

Φόβος κολακηΐην μὲν ἐργάζεται, εὔνοιαν δὲ οὐκ ἔχει.

14 *Μουσωνίου.*

Οὐ πολὺν διάγουσι χρόνον οἱ πρὸς τοὺς ὑπηκόους ὑπὲρ ὧν ἂν πράττωσι μὴ τὸ "καθήκει μοι" λέγειν μεμελετηκότες, ἀλλὰ τὸ "ἔξεστί μοι."

15 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Μὴ θέλε ἐπιτάσσειν τὰ καθήκοντα τοῖς συγγιγνώσκουσί σοι τὰ μὴ καθήκοντα πράττοντι.

16 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Πειρατέον καταπληκτικὸν μᾶλλον τοῖς ὑπηκόοις ἢ φοβερὸν θεωρεῖσθαι· τῷ μὲν γὰρ σεμνότης τῷ δὲ ἀπήνεια παρακολουθεῖ.

17 *Ἀναξιλάου.*

Ἀναξίλαος ὁ τύραννος ἐρωτηθεὶς τί τῆς τυραννίδος μακαριώτατον ἔφη "τὸ μηδέποτε εὐεργετοῦντα νικηθῆναι."

18 *Ξενοφῶντος.*

Ξενοφῶν ὁ Σωκρατικὸς φιλόσοφος ἔφη τῷ βασιλεῖ κάλλιον εἶναι τὸ τῶν χαρίτων ἀπολιπεῖν ἢ τροπαίων πλῆθος.

19 *Ἡροδότου ἱστορίας γ'* (127).

Ἔνθα γὰρ σοφίης δέει βίης ἔργον οὐδέν.

20 *Πυθαγόρου.*

Θέλε μᾶλλον τοὺς συνόντας σοι αἰδεῖσθαί σε ἢ φοβεῖσθαι· αἰδοῖ μὲν γὰρ πρόσεστι σέβας, φόβῳ δὲ μῖσος.

21 *Φιλίππου.*

Φίλιππος ὁ βασιλεὺς ἔλεγε δεῖν τὸν βασιλέα μνημονεύειν ὅτι ἄνθρωπος ὢν ἐξουσίαν εἴληφεν ἰσόθεον, ἵνα προαιρῆται καλὰ μὲν καὶ θεῖα, φωνῇ δὲ ἀνθρωπίνῃ χρῆται.

22 *Πλάτωνος ἐκ τοῦ πολιτικοῦ* (305 c).

Τόδε δὴ κατανοητέον ἰδόντι ξυναπάσας τὰς εἰρημένας ἐπιστήμας, ὅτι πολιτική γε αὐτῶν οὐδεμία ἀνεφάνη· τὴν γὰρ ὄντως [οὖσαν] βασιλικὴν οὐκ αὐτὴν δεῖ πράττειν, ἀλλὰ ἄρχειν τῶν δυναμένων πράττειν, γιγνώσκουσαν τὴν ἀρχήν τε καὶ ὁρμὴν τῶν μεγίστων ἐν ταῖς πόλεσιν, εὐκαιρίας τε πέρι καὶ ἀκαιρίας· τὰς δ' ἄλλας τὰ προσταχθέντα δρᾶν. Ὀρθῶς.

23 *Θεοβούλου.*

Φεῦγε μὲν τὸν φθόνον τῶν πολλῶν, φυλάσσου δὲ τὰς ἐπιβουλὰς τῶν μισούντων.

24 *Χείλωνος.*

Μετὰ τῆς ἰσχύος τὴν πραότητα σῶζε, ἵνα μὴ φοβερὸς ἀλλ' αἰδοῦς ἄξιος φαίνῃ τοῖς ἐντυγχάνουσιν.

25 *Ἰσαίου.*

Χρὴ τοὺς νόμους μὲν τίθεσθαι σφοδρῶς, πραοτέρως δὲ κολάζειν ἢ ὡς ἐκεῖνοι κελεύουσι.

26 *Σωκράτης.*

Σωκράτης ἔλεγεν ἀμείνονα βασιλέα εἶναι τὸν ἑαυτοῦ δυνάμενον ἄρχειν τῶν παθῶν.

27 *Δημητρίου.*

Δημήτριος ὁ Φαληρεὺς Πτολεμαίῳ τῷ βασιλεῖ παρῄνει τὰ περὶ βασιλείας καὶ ἡγεμονίας βιβλία

κτᾶσθαι καὶ ἀναγιγνώσκειν· ἃ γὰρ οἱ φίλοι τοῖς βασιλεῦσιν οὐ θαρροῦσι παραινεῖν, ταῦτα ἐν τοῖς βιβλίοις γέγραπται. Plut. Mor. p. 189 d.

28 *Ἰσοκράτους* (ad Nicocl. 27 sqq.).

Φίλους κτῶ μὴ πάντας τοὺς βουλομένους, ἀλλὰ τοὺς τῆς σῆς φύσεως ἀξίους ὄντας, μηδὲ μεθ' ὧν ἥδιστα συνδιατρίψεις, ἀλλὰ μεθ' ὧν ἄριστα τὴν πόλιν διοικήσεις.

29 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Τοιούτους ἐφίστη τοῖς πράγμασι τοῖς μὴ διὰ σοῦ γιγνομένοις, ὡς αὐτὸς τὰς αἰτίας ἕξων ὧν ἂν ἐκεῖνοι πράξωσι.

30 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Πιστοὺς ἡγοῦ μὴ τοὺς ἅπαν ὅ τι ἂν ποιῇς ἢ λέγῃς ἐπαινοῦντας, ἀλλὰ τοὺς τοῖς ἁμαρτανομένοις ἐπιτιμῶντας.

31 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Δίδου παρρησίαν τοῖς εὖ φρονοῦσιν, ἵνα περὶ ὧν ἂν ἀμφιγνοῇς ἔχῃς τοὺς ἐπιδοκιμάζοντας.

32 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Διόρα καὶ τοὺς τέχνῃ κολακεύοντας καὶ τοὺς μετ' εὐνοίας θεραπεύοντας, ἵνα μὴ πλεῖον οἱ πονηροὶ τῶν χρηστῶν ἔχωσιν.

33 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Ἄκουε τοὺς λόγους τοὺς περὶ ἀλλήλων, καὶ πειρῶ γνωρίζειν ἅμα τούς τε λέγοντας ὁποῖοί τινές εἰσι καὶ περὶ ὧν ἂν λέγωσι.

34 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Ταῖς αὐταῖς κόλαζε ζημίαις τοὺς ψευδῶς διαβάλλοντας αἷς περ τοὺς ἐξαμαρτάνοντας.

35 Τοῦ αὐτοῦ.

Ἄρχε σαυτοῦ μηδὲν ἧττον ἢ καὶ τῶν ἄλλων· καὶ τοῦτο ἡγοῦ βασιλικώτατον, ἐάν περ μηδεμιᾷ δουλεύῃς τῶν ἡδονῶν, ἀλλὰ κρατῇς τῶν ἐπιθυμιῶν μᾶλλον ἢ τῶν πολιτῶν.

36 Τοῦ αὐτοῦ.

Νόμιζε τῶν τιμῶν ἀληθεστάτας εἶναι μὴ τὰς ἐν τῷ φανερῷ μετὰ δέους γιγνομένας, ἀλλ' ὅταν αὐτοὶ παρ' αὑτοῖς ὄντες μᾶλλόν σου τὴν γνώμην ἢ τὴν τύχην θαυμάζωσι.

37 Τοῦ αὐτοῦ.

Μὴ τοὺς μὲν ἄλλους ἀξίου κοσμίως ζῆν, τοὺς δὲ βασιλέας ἀτάκτως· ἀλλὰ τὴν σεαυτοῦ σωφροσύνην παράδειγμα τοῖς ἄλλοις καθίστη, γιγνώσκων ὅτι τὸ τῆς πόλεως ὅλης ἦθος ὁμοιοῦται τοῖς ἄρχουσι.

38 Τοῦ αὐτοῦ.

Περὶ πλείονος ποιοῦ δόξαν καλὴν ἢ πλοῦτον μέγαν τοῖς παισὶ καταλιπεῖν· ὃ μὲν γὰρ θνητὸς ἣ δ' ἀθάνατος· καὶ δόξης μὲν χρήματα κτητὰ δόξα δὲ χρημάτων οὐκ ὠνητή· καὶ τὰ μὲν καὶ τοῖς φαύλοις παραγίγνεται, τὴν δὲ οὐχ οἷόν τε ἀλλ' ἢ τοὺς διενεγκόντας κτήσασθαι.

39 Τοῦ αὐτοῦ.

Κράτιστον μὲν τῆς ἀκμῆς τῶν καιρῶν τυγχάνειν· ἐπειδὴ δὲ δυσκαταμαθήτως ἔχουσιν, ἐλλείπειν αἱροῦ μᾶλλον ἢ πλεονάζειν· αἱ γὰρ μετριότητες μᾶλλον ἐν ταῖς ἐνδείαις ἢ ταῖς ὑπεροχαῖς ἰσχύουσιν.

40 Τοῦ αὐτοῦ.

Ὅ τι ἂν ἀκριβῶσαι βουληθῇς, ὧν ἐπίστασθαι προσήκει τοὺς βασιλέας, ἐμπειρίᾳ μέτιθι καὶ φιλο-

σοφίᾳ· τὸ μὲν γὰρ φιλοσοφεῖν τὰς ὁδούς σοι δείξει, τὸ δ' ἐπ' αὐτῶν τῶν ἔργων γυμνάζεσθαι ἄμεινόν σε χρῆσθαι τοῖς πράγμασι ποιήσει.

41 Τοῦ αὐτοῦ.

Θεώρει τὰ γιγνόμενα καὶ τὰ συμπίπτοντα καὶ τοῖς ἰδιώταις καὶ τοῖς τυράννοις· ἐὰν γὰρ τὰ παρεληλυθότα μνημονεύῃς, ἄμεινον καὶ περὶ τῶν μελλόντων βουλεύσῃ.

42 Πλουτάρχου ἐκ τῆς περὶ φιλίας.

Ἡμερότητι τοίνυν καὶ εὐεργεσίᾳ μᾶλλον ἢ φόβῳ πρὸς εὔνοιαν ὑπακτέον.

43 Ἐν ταυτῷ.

Ἠπίους οὖν εἶναι δεῖ μετὰ τοῦ ἔμφρονος εἰς τὸ κοινῇ λυσιτελές.

44 Ἀγριππίνου.

Ὁ Ἀγριππῖνος ἡγεμονεύων ἐπειρᾶτο τοὺς καταδικαζομένους ὑπ' αὐτοῦ πείθειν, ὅτι προσήκει αὐτοῖς καταδικασθῆναι. οὐ γὰρ ὡς πολέμιος αὐτοῖς, ἔφη, οὐδ' ὡς ληστὴς καταφέρω τὴν ψῆφον αὐτῶν, ἀλλ' ὡς ἐπιμελητὴς καὶ κηδεμών, ὥσπερ καὶ ὁ ἰατρὸς τὸν τεμνόμενον παραμυθεῖται καὶ πείθει παρέχειν ἑαυτόν.

45 Κότυς.

Κότυς ὁ τῶν Θρᾳκῶν βασιλεὺς πικρὸς ἦν τῶν ὑπηκόων κολαστής. τῶν οὖν φίλων τις πρὸς αὐτὸν εἶπε "μανία τοῦτό ἐστι, καὶ οὐ βασιλεία"· ὁ δὲ "ἀλλ' ἡ ἐμὴ" ἔφη "αὕτη μανία τοὺς ἀρχομένους σώφρονας ποιεῖ."

46 Δημοσθένους Ὀλυνθιακῶν δευτέρου (p. 25, 23).

Πολὺ γὰρ ῥᾷον ἔχοντας φυλάττειν ἢ κτήσασθαι πάντα πέφυκεν.

47 *Ἐκ τῶν ἑπτὰ σοφῶν* (Plut. Mor. p. 152 a).

Ἐμοὶ μέν, ἔφη ὁ Σόλων, δοκεῖ μάλιστ' ἂν ἔνδοξος γενέσθαι καὶ βασιλεὺς καὶ τύραννος, εἰ δημοκρατίαν ἐκ μοναρχίας κατασκευάσειε τοῖς πολίταις. δεύτερος δὲ Βίας εἶπεν, εἰ ἀτρόποις χρῷτο τοῖς νόμοις τῆς πατρίδος. ἐπὶ τούτῳ δὲ Θαλῆς ἔφησεν εὐδαιμονίαν ἄρχοντος νομίζειν, εἰ τελευτήσειε γηράσας κατὰ φύσιν. τέταρτος Ἀνάχαρσις, εἰ μὴ μόνος εἴη φρόνιμος. πέμπτος δὲ Κλεόβουλος, εἰ μηδενί, ἔφη, πιστεύοι τῶν συνόντων. ἕκτος δ' ὁ Πιττακός, εἰ τοὺς ὑπηκόους ὁ ἄρχων παρασκευάσειε φοβεῖσθαι μὴ αὐτόν, ἀλλ' ὑπὲρ αὐτοῦ. ὕστατος δ' ὁ Χείλων εἶπε κάλλιστον εἶναι βασιλέα τὸν μὴ μόνου τοῦ φοβερὸν εἶναι φροντίζοντα.

48 *Ἰσοκράτους Εὐαγόρου* (c. 19).

Ἀλλ' οὕτω θεοφιλῶς καὶ φιλανθρώπως διῴκει τὴν πόλιν ὥστε τοὺς ἀφικνουμένους μὴ μᾶλλον Εὐαγόραν τῆς ἀρχῆς ζηλοῦν ἢ τοὺς ἀρχομένους τῆς ἐκείνου βασιλείας. ἅπαντα γὰρ τὸν χρόνον διετέλεσεν οὐδένα μὲν ἀδικῶν, τοὺς δὲ χρηστοὺς τιμῶν· καὶ σφόδρα μὲν ἁπάντων ἄρχων, νομίμως δὲ τοὺς ἐξαμαρτάνοντας κολάζων.

49 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Οὐδὲν μὲν συμβούλων δεόμενος, ὅμως δὲ τοῖς φίλοις συμβουλευόμενος.

50 *Πολλὰ μὲν [τῶν ὁμιλούντων ἑταίρων] χρωμένων ἡττώμενος, ἁπάντων δὲ τῶν ἐχθρῶν περιγιγνόμενος.*

51 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Σεμνὸς ὢν οὐ ταῖς τοῦ προσώπου συναγωγαῖς,

ἀλλὰ ταῖς τοῦ βίου κατασκευαῖς· οὐδὲ πρὸς ἓν ἀτάκτως οὐδὲ ἀνωμάλως διακείμενος, ἀλλ' ὁμοίως τὰς ἐν τοῖς λόγοις ὁμολογίας, ὥσπερ τὰ ἐν τοῖς ἱεροῖς διαφυλάττων.

52 Τοῦ αὐτοῦ.

Τοὺς μὲν φίλους ταῖς εὐεργεσίαις ὑφ' αὑτὸν ποιούμενος, τοὺς δὲ ἄλλους τῇ μεγαλοψυχίᾳ καταδουλούμενος.

53 Τοῦ αὐτοῦ.

Φοβερὸς ὢν οὐ τῷ πολὺ χαλεπαίνειν, ἀλλὰ τῷ πολὺ τῶν ἄλλων ὑπερβάλλειν.

54 Τοῦ αὐτοῦ.

Μέγα φρονῶν οὐκ ἐπὶ τοῖς διὰ τύχην, ἀλλὰ ἐπὶ τοῖς δι' αὑτὸν γιγνομένοις.

55 Τοῦ αὐτοῦ.

Ἡγούμενος τῶν ἡδονῶν, οὐκ ἀγόμενος ὑπ' αὐτῶν.

56 Τοῦ αὐτοῦ.

Ὀλίγοις πόνοις πολλὰς ῥᾳστώνας κτώμενος, ἀλλ' οὐ διὰ μακρᾶς ῥᾳθυμίας μεγάλους πόνους ὑπολειπόμενος.

57 Τοῦ αὐτοῦ.

Ὅλως δὲ οὐδὲν παραλείπων ὧν προσεῖναι τοῖς βασιλεῦσι πρέπει, ἀλλ' ἐξ ἑκάστης πολιτείας ἐκλεγόμενος τὸ βέλτιστον· καὶ δημοτικὸς μὲν ὢν τῇ τοῦ πλήθους θεραπείᾳ, πολιτικὸς δὲ τῇ τῆς πόλεως διοικήσει, στρατηγικὸς δὲ τῇ πρὸς τοὺς κινδύνους εὐβουλίᾳ, τυραννικὸς δὲ τῷ πᾶσι τούτοις διαφέρειν.

58 Ἰσοκράτης Νικοκλεῖ (ad Nicocl. 7).

Ποίει μὲν μηδὲν μετ' ὀργῆς, δόκει δὲ τοῖς ἄλλοις,

ὅταν σοι καιρὸς ᾖ. καὶ δεινὸς μὲν φαίνου τῷ μηδέν σε λανθάνειν τῶν γιγνομένων, πρᾶος δὲ τῷ τὰς τιμωρίας ἐλάττους ποιεῖσθαι τῶν ἁμαρτανομένων.

59 Πλάτωνος ἐκ τῆς πρὸς τοὺς Δίωνος οἰκείους ἐπιστολῆς (354 e).

Δουλεία γὰρ καὶ ἐλευθερία ὑπερβάλλουσα μὲν ἑκατέρα πάγκακον, ἔμμετρος δὲ οὖσα πανάγαθον· μετρία δὲ ἡ θεῷ δουλεία, ἄμετρος δὲ ἡ τοῖς ἀνθρώποις. θεὸς δὲ ἀνθρώποις σώφροσι νόμος, ἄφροσι δὲ ἡδονή.

60 Ξενοφῶντος ἐν τῷ ὀγδόῳ (2, 14) τῆς Κύρου παιδείας.

Καὶ λόγος δὲ αὐτοῦ ἀπομνημονεύεται, ὡς λέγοι παραπλήσια ἔργα εἶναι νομέως ἀγαθοῦ καὶ βασιλέως ἀγαθοῦ. τόν τε γὰρ νομέα χρῆναι ἄρα ἔφη εὐδαίμονα ποιοῦντα τὰ κτήνη χρῆσθαι αὐτοῖς, ᾗ δὴ προβάτων εὐδαιμονία· τόν τε βασιλέα ὡσαύτως εὐδαίμονας πόλεις καὶ ἀνθρώπους ποιοῦντα χρῆσθαι αὐτοῖς.

61 Διωτογένεος Πυθαγορείου ἐκ τοῦ περὶ βασιλείας.

Βασιλεὺς κ' εἴη ὁ δικαιότατος, δικαιότατος δὲ ὁ νομιμώτατος. ἄνευ μὲν γὰρ δικαιοσύνας οὐδεὶς ἂν εἴη βασιλεύς, ἄνευ δὲ νόμω δικαιοσύνα. τὸ μὲν γὰρ δίκαιον ἐν τῷ νόμῳ ἐντί, ὁ δέ γε νόμος αἴτιος τῶ δικαίω, ὁ δὲ βασιλεὺς ἤτοι νόμος ἔμψυχός ἐντι ἢ νόμιμος ἄρχων· διὰ ταῦτ' ὦν ὁ δικαιότατος καὶ νομιμώτατος. ἔργα δὲ βασιλέως τρία, τό τε στραταγὲν καὶ δικασπολὲν καὶ θεραπεύεν θεώς· στραταγὲν μὲν ὦν καλῶς δυνασεῖται πολεμὲν καλῶς ἐπισταθείς, δικασπολὲν δὲ καὶ διακούεν πάντων τῶν ὑπ' αὐτὸν φύσιν δικαίω καὶ νόμω καλῶς ἐκμαθών, θεραπεύεν δὲ τὼς

θεὼς εὐσεβέως καὶ ὁσίως φύσιν θεῶ καὶ ἀρετὰν ἐκλογισάμενος. ὥστε ἀνάγκα τὸν τέλειον βασιλέα στραταγόν τε ἀγαθὸν ἦμεν καὶ δικαστὰν καὶ ἱερέα· ταῦτα γὰρ καὶ ἀκόλουθα καὶ πρέποντά ἐντι βασιλέως ὑπεροχᾷ τε καὶ ἀρετᾷ. κυβερνάτα μὲν γὰρ ἔργον ἐντὶ τὰν ναῦν σώζεν, ἁνιόχω δὲ τὸ ἅρμα, ἰατρῶ δὲ τὼς νοσίοντας, βασιλέως δὲ καὶ στραταγῶ τὼς ἐν πολέμῳ κινδυνεύοντας. ὧ γὰρ ἕκαστος ἁγεμών ἐντι συστάματος, τούτω καὶ ἐπιστάτας καὶ δαμιουργός. καὶ μὰν τό τε δικασπολὲν καὶ διανέμεν τὸ δίκαιον, ξυνᾷ μὲν καθόλω ἰδίᾳ δὲ καθ᾽ ἕκαστον, οἰκῆον βασιλέως ὥσπερ θεῶ ἐν τῷ κόσμῳ ὧ ἁγεμών τε καὶ προστάτας ἐντί, ξυνᾷ μὲν τῷ ποτὶ μίαν ἀρχάν τε καὶ ἁγεμονίαν τὸ ὅλον ξυναρμόσθαι, καθ᾽ ἕκαστον δὲ τῷ καὶ τὰ κατὰ μέρος ποττὰν αὐτὰν ἁρμονίαν τε καὶ ἁγεμονίαν συναρμόξεσθαι. ἔτι δ᾽ ἐν τῷ ποιὲν εὖ καὶ εὐεργετὲν τὼς ὑποτεταγμένως ὁ βασιλεύς ἐντι· ταῦτα δ᾽ οὐκ ἄνευ δικαιοσύνας καὶ νόμω. τό γε μὰν τρίτον, λέγω δὲ τὸ θεραπεύεν τὼς θεώς, βασιλέως ἀντάξιον. δεῖ γὰρ τὸ ἄριστον ὑπὸ τῶ ἀρίστω τιμᾶσθαι, καὶ τὸ ἁγεμονέον ὑπὸ τοῦ ἁγεμονέοντος. τῶν μὲν ὦν φύσει τιμιωτάτων ἄριστον ὁ θεός, τῶν δὲ περὶ γᾶν καὶ τὼς ἀνθρώπως ὁ βασιλεύς. ἔχει δὲ καὶ ὡς θεὸς ποτὶ κόσμον βασιλεὺς ποτὶ πόλιν, καὶ ὡς πόλις ποτὶ κόσμον βασιλεὺς ποτὶ θεόν. ἁ μὲν γὰρ πόλις ἐκ πολλῶν καὶ διαφερόντων συναρμοσθεῖσα κόσμω σύνταξιν καὶ ἁρμονίαν μεμίμαται, ὁ δὲ βασιλεὺς ἀρχὰν ἔχων ἀνυπεύθυνον, καὶ αὐτὸς ὢν νόμος ἔμψυχος, θεὸς ἐν ἀνθρώποις παρεσχαμάτισται.

62 Ἐν ταυτῷ.

Ὅθεν δεῖ τὸν βασιλέα μὴ νενικῆσθαι ὑφ᾽ ἁδονᾶς

ἀλλ' αὐτὸν νικῆν ταύταν, μηδ' ὅμοιον ἦμεν τοῖς πολλοῖς ἀλλὰ ἐπὶ πολλὸν διαφέροντα τούτων, μηδ' ἔργον ἀγεῖσθαι τὰν ἁδονὰν ἀλλὰ μᾶλλον τὰν ἀνδραγαθίαν· ἅμα δὲ καὶ πρέπον τὸν ἑτέρων ἄρχεν χρήζοντα τῶν αὐταύτω παθέων πρᾶτον δύνασθαι ἄρχεν. περί γε μᾶν τᾶς πλεονεκτίας ὅδε λόγος· δεῖ γὰρ ἐς τοῦτο πεπάσθαι τὰ χρήματα ὥστε φίλως εὐεργετὲν καὶ δεομένως ὑπολαμβάνεν καὶ ἐχθρὼς δὲ μετὰ δίκας ἀμύνεσθαι· ἁδίστα γὰρ ἁ μετ' ἀρετᾶς ἀπόλαυσις τᾶς εὐτυχίας. ὁ δ' αὐτὸς τρόπος καὶ ἐπὶ τᾶς ὑπεροχᾶς· δεῖ γὰρ καθυπερέχεν τὼς ἄλλως ἀρετᾷ καὶ κατταύταν ἄξιον κρίνεσθαι τῶ ἄρχεν, ἀλλὰ μὴ καττὸν πλοῦτον ἢ τὰν δύναμιν ἢ τὰν ῥώμαν τὰν τῶν ὅπλων· ὃ μὲν γάρ τι κοινόν ἐντι καὶ τῶν τυχόντων, ὃ δὲ κοινὸν καὶ τῶν ἀλόγων ζῴων, ὃ δὲ κοινὸν καὶ τῶν τυράννων, ὃ δὲ μόνον ἴδιον τῶν ἀγαθῶν ἀνθρώπων. ὥστε ὅστις βασιλεὺς σώφρων μὲν ἐντὶ περὶ τὰς ἁδονάς, κοινωνατικὸς δὲ περὶ τὰ χρήματα, φρόνιμος δὲ καὶ δεινὸς περὶ τὰν ἀρετάν, οὗτός κ' εἴη καττὰν ἀλάθηαν βασιλεύς. ἔχει δὲ καὶ ὁ δᾶμος τῶν μερέων τᾶς τῶ ἀνθρώπω ψυχᾶς τὰν ἀναλογίαν ταύταν τῶν ἀγαθῶν καὶ τῶν κακῶν· ἁ μὲν γὰρ πλεονεκτία γίνεται περὶ τὸ ἁγεόμενον μέρος τᾶς ψυχᾶς, λογικὰ γὰρ ἁ ἐπιθυμία· ἁ δὲ φιλοτιμία καὶ θηριότας περὶ τὸ θυμοειδές, τοῦτο γὰρ τὸ ζέον καὶ δυναμικὸν μέρος τᾶς ψυχᾶς· ἁ δὲ φιλαδονία περὶ τὸ ἐπιθυματικόν, τοῦτο γὰρ τὸ θῆλυ καὶ ὑγρὸν μέρος τᾶς ψυχᾶς· ἁ δέ γε ἀδικία τελειοτάτα κακία καὶ σύνθετος ἐᾶσα περὶ ὅλαν γίνεται τὰν ψυχάν. ὅθεν ὡς λύραν καὶ πόλιν εὐνομουμέναν δεῖ συναρμόσασθαι βασιλέα ὅρον δικαιότατον καὶ νόμω τάξιν ἐν αὑτῷ πρᾶτον καταστασάμενον, εἰδότα διότι τῶ πλάθεος, ᾧ δέδω-

κεν ὁ θεὸς αὐτῷ τὰν ἁγεμονίαν, ἁ συναρμογὰ ποτ' αὐτὸν ὀφείλει συναρμοσθῆμεν. ποτὶ δὲ τοῖς ἀγορευμένοις δεῖ καὶ θέσιας καὶ ἕξιας ἐπιπρεπέας ἐπιταδεύεν τὸν ἀγαθὸν βασιλέα, πολιτικῶς αὑτὸν πλάσσοντα καὶ πραγματωδέως, ὅπως μήτε τραχὺς φαίνηται τοῖς πλάθεσι μήτ' εὐκαταφρόνατος, ἀλλὰ καὶ ἁδὺς καὶ ἀμφιστραφής. τεύξεται δὲ τούτων, αἴκα πρᾶτον μὲν σεμνὸς ᾖ καὶ ἐκ τῶ ἰδὲν καὶ ἐκ τῶ ἀκοῦσαι καὶ ἐκ τῶ ἄξιος ἐπιφαίνεσθαι τᾶς ἀρχᾶς, δεύτερον δὲ χρηστὸς καὶ ἐκ τᾶς ἐντεύξιος καὶ ἐκ τᾶς ποτιβλέψιος καὶ ἐκ τᾶς εὐεργεσίας, τρίτον δὲ δεινὸς καὶ ἐκ τᾶς μισοπονηρίας καὶ ἐκ τᾶς ἀκολασίας καὶ ἐκ τᾶς ἐπιταδεύσιος καὶ ὅλως ἐκ τᾶς ἐμπειρίας καὶ τριβᾶς τᾶς περὶ τὸ βασιλεύεν. ἁ μὲν γὰρ σεμνότας θεόμιμον ὑπάρχοισα πρᾶγμα δύναται θαυμαζόμενον καὶ τιμώμενον αὐτὸν παρέχεσθαι τοῖς πλάθεσιν, ἁ δὲ χρηστότας φιλεύμενον καὶ ἀγαπαζόμενον, ἁ δὲ δεινότας φοβερὸν μὲν καὶ ἀνίκατον ποτὶ πολεμίως, μεγαλόψυχον δὲ καὶ θαρσαλέον ποτὶ φίλως. δεῖ δὲ τὰν σεμνότατα καθεστάσθαι περὶ αὐτὸν μηδὲν ταπεινὸν ἐπιταδεύοντα μηδὲ τῶν πολλῶν ἀντάξιον, ἀλλὰ τῶν θαυμαινομένων καὶ τῶν ἁγεμονίᾳ καὶ σκαπτουχίᾳ ποτιφυέων, ἁμιλλώμενον ἀεὶ μὴ τοῖς μηόνεσι μηδὲ τοῖς ἴσοις, ἀλλὰ τοῖς μεζόνεσι, καὶ καττὸ μέγεθος τᾶς ἁγεμονίας ἁδονὰς ὑπολαμβάνοντα μεγίστας ἦμεν τὰς ἐπὶ τοῖς καλοῖς ἔργοις καὶ μεγάλοις, ἀλλὰ μὴ τὰς ἐπὶ τοῖς ἀπολαύστοις, χωρίζοντα μὲν ἑαυτὸν ἀπὸ τῶν ἀνθρωπίνων παθέων συνεγγίζοντα δὲ τοῖς θεοῖς, οὐδὲ δι' ὑπεραφανίαν ἀλλὰ διὰ μεγαλοφροσύναν καὶ μέγεθος ἀρετᾶς ἀνυπέρβλατον τοιαύταν αὐτῷ ἐπιπρέπῃαν καὶ προστασίαν ἀμφιβαλλόμενον καὶ καττὰν ὄψιν καὶ καττὼς λογισμὼς καὶ καττὰ ἐνθυμάματα καὶ καττὸ

ἦθος τᾶς ψυχᾶς καὶ καττὰς πράξιας καὶ καττὰν κίνασιν καὶ καττὰν θέσιν τῶ σώματος, ὥστε τὼς ποταυγασμένως αὐτὸν κατακοσμαθῆμεν καταπεπλαγμένως αἰδοῖ καὶ σωφροσύνᾳ τε καὶ διαθέσει τε περὶ τὰν ἐπιπρέπηάν· οὐ γὰρ μῆον αὐλῶ καὶ ἁρμονίας ἁ τῶ ἀγαθῶ βασιλέως ποταύγασις ὀφείλει τρέπεν τὰς ψυχὰς τῶν ποταυγασμένων. καὶ περὶ μὲν σεμνότατος ἅλις εἰρήσθω· περὶ δὲ χρηστότατος νῦν ὑποθέσθαι πειρασοῦμαι. χραστὸς γὰρ ἐσσεῖται πᾶς βασιλεὺς τὸ μὲν καθόλω δίκαιός τε ὢν καὶ ἐπιεικὴς καὶ εὐγνώμων. ἔντι γὰρ ἁ δικαιότας κοινωνίας συνακτικὰ καὶ συνεκτικά, καὶ μόνα γε ὢν πρὸς τὼς πλατίον ἁ τοιαύτα διάθεσις ἅρμοσται τᾶς ψυχᾶς. ὃν λόγον γὰρ ἔχει ῥυθμὸς ποτὶ κίνασιν καὶ ἁρμονία ποτὶ φωνάν, τοῦτον ἔχει τὸν λόγον δικαιότας ποτὶ κοινωνίαν· κοινὸν γὰρ ἀγαθόν ἐντι καὶ ἀρχόντων καὶ ἀρχομένων, εἴγε δὴ συναρμοστικά ἐντι κοινωνίας πολιτικᾶς. ἁ δὲ ἐπιείκηα καὶ εὐγνωμοσύνα πάρεδροί τινές ἐντι τᾶς δικαιοσύνας, ἃ μὲν τὸ απότομον τᾶς βλάβας μαλθαίνοισα, ἃ δὲ τοῖς ἐπὶ ποσὸν ἀμπλακίσκουσι συγγνώμας ἀπομερίζοισα. δεῖ δὲ τὸν ἀγαθὸν βασιλέα βοηθατικόν τε ἦμεν τῶν δεομένων καὶ εὐχάριστον δέ, βοήθηαν δὲ μὴ καθ' ἕνα ποιήσασθαι τρόπον, ἀλλ' ὅπως ἂν δυνατὸν ᾖ· εὐχάριστον δ' ἦμεν δεῖ μὴ ποττὸ μέγεθος ἀποβλέποντα τᾶς τιμᾶς, ἀλλὰ ποττὸν τρόπον καὶ τὰν προαίρεσιν τῶ τιμέοντος· ἀβαρέα δὲ δεῖ ἦμεν ποτὶ πάντας ἀνθρώπως, μάλιστα δὲ ποττὼς μήονας καὶ καταδεεστέρως ταῖς τύχαις· οὗτοι γὰρ ὥσπερ τοὶ νοσίοντες τοῖς σώμασιν οὐδὲν ὑπομένεν δύνανται τῶν βαρέων. ἔχοντι γὰρ τὰς διαθέσιας τοιαύτας καὶ οἱ θεοὶ καὶ μάλιστα ὁ κρατέων πάντων Ζεύς· καὶ γὰρ οὗτος σεμνὸς μὲν ἐντὶ καὶ τίμιος διά τε τὰν ὑπεροχὰν καὶ τὸ μέγεθος

τᾶς ἀρετᾶς, χραστὸς δὲ διὰ τὸ εὐεργετικός τε ἦμεν καὶ ἀγαθοδότας, ὅκως δὴ καὶ λέγεται ὑπὸ τῶ Ἰωνικῶ ποιητᾶ ὥς κ' εἴη "πατὴρ ἀνδρῶν τε θεῶν τε·" δεινὸς δὲ διὰ τὸ κολάζεν τὼς ἀδικέοντας καὶ κρατὲν καὶ κυριεύεν πάντων· ἔχει δὲ καὶ τὸν κεραυνὸν μετὰ χεῖρα, σύμβολον τᾶς δεινότατος. ἐπὶ πᾶσι δὲ τούτοις μναμονεύεν δεῖ ὅτι θεόμιμόν ἐντι πρᾶγμα βασιλήα.

63 *Σθενίδα Λοκροῦ Πυθαγορείου περὶ βασιλείας.*

Χρὴ τὸν βασιλέα σοφὸν ἦμεν· οὕτω γὰρ ἐσεῖται ἀντίμιμος καὶ ζαλωτὰς τῶ πράτω θεῶ. οὗτος γὰρ καὶ φύσει ἐντὶ καὶ πρᾶτος βασιλεύς τε καὶ δυνάστας, ὃ δὲ γενέσει καὶ μιμάσει, καὶ ὃ μὲν ἐν τῷ παντὶ καὶ ὅλῳ, ὃ δὲ ἐπὶ γᾶς, καὶ ὃ μὲν ἀεὶ τὰ πάντα διοικεῖ τε καὶ ζώει αὐτὸς ἐν αὐτῷ κεκταμένος τὰν σοφίαν, ὃ δ' ἐν χρόνῳ ἐπιστάμαν. ἄριστα δέ κα μιμέοιτο τοῦτον, εἰ μεγαλόφρονά τε καὶ ἁδρόν καὶ ὀλιγοδεέα παρασκευάζοι αὑτόν, πατρικὰν διάθεσιν ἐνδεικνύμενος τοῖς ὑφ' αὑτῷ· διὰ τοῦτο γάρ που μάλιστα καὶ νενομίχθαι τὸν πρᾶτον θεὸν πατέρα μὲν θεῶν πατέρα δὲ ἀνθρώπων ἦμεν, ὅτι ἤπιος πρὸς πάντα τὰ ὑπ' αὑτῷ γενόμενα ἐντί, καὶ ἀμελούμενος τᾶς προστασίας οὐδέποκα παύεται, οὐδὲ ἤρκεσται τῷ ποιητὰς μόνον πάντων γεγονέναι, ἀλλὰ καὶ τροφεὺς διδάσκαλός τε τῶν καλῶν πάντων καὶ νομοθέτας πέφυκε πᾶσιν ἐπίσας. τοιοῦτον θέμις ἦμεν καὶ τὸν ἐπὶ γᾶς καὶ παρ' ἀνθρώποις ἁγεμονὲν μέλλοντα βασιλέα· οὐδὲν δὲ ἀβασίλευτον καλὸν οὐδὲ ἄναρχον· ἄνευ δὲ σοφίας καὶ ἐπιστάμας οὔτε μὰν βασιλέα οὔτε ἄρχοντα οἷόν τε ἦμεν. μιματὰς ἄρα καὶ ὑπαρέτας ἐσσεῖται νόμιμος τῶ θεῶ ὁ σοφός τε καὶ βασιλεύς.

64 Ἐκφάντου τοῦ Πυθαγορείου ἐκ τοῦ περὶ βασιλείας.

Ὅτι μὲν ἅπαντος ζῴω φύσις ποτί τε τὸν κόσμον ἅρμοκται καὶ τὰ ἐν τῷ κόσμῳ πολλοῖς μοι δοκεῖ τεκμαρίοις φανερὸν ἦμεν. συμπνείουσα γὰρ οὕτω καὶ συνδεδεμένα τὰν ἀρίσταν τε ἅμα καὶ ἀναγκαίαν ἀκολουθίαν ὀπαδεῖ ῥύμα τῶ παντὸς περιαγεομένα ποτί τε τὰν κοινὰν εὐκοσμίαν καὶ ποττὰν ἴδιον ἑκάστω διαμονάν· παρὸ καὶ τόδε κόσμος ποταγορεύεται καὶ ἔντι τῶν ὄντων ζῴων τελήοτατον. ἐν δὲ τοῖς μέρεσιν αὐτῶ πολλοῖς τε ὄντεσι καὶ διαφόροις τὰν φύσιν ἐξάρχει τι ζῷον καὶ οἰκηότατον ἐν γενοῖν καὶ διὰ τὸ μετέχεν πλῆον τῶ θείω. καὶ ἐν μὲν τᾷ τῶ θεῶ ὄντος ἀεὶ φύσει τὰ τὰν πράταν καὶ μεγίσταν ἀκολουθίαν ἔχοντα ἀσπάζεται... καὶ τοὶ πλάνατες ἀστέρες· ἐν δὲ τᾷ χώρᾳ τᾷ σελάνας ἔνερθεν τὰ δι' εὐθείας ἰόντα σώματα ἁ τῶ δαίμονος φύσις ἔχει τὰν διεξαγωγάν· ἐν δὲ τᾷ γᾷ καὶ παρ' ἁμῖν ἀριστοφυέστατον μὲν ὤνθρωπος, θειότατον δ' ὁ βασιλεύς, ἔν τε κοινᾷ φύσει πλεονεκτέων τῶ κρέσσονος, τὸ μὲν σκᾶνος τοῖς λοιποῖς ὅμοιος, οἷα γεγονὼς ἐκ τᾶς αὐτᾶς ὕλας, ὑπὸ τεχνίτα δ' εἰργασμένος λῴστω, ὃς ἐτεχνίτευσεν αὐτὸν ἀρχετύπῳ χρώμενος ἑαυτῷ· κατασκεύασμα δὴ ὢν ὁ βασιλεὺς ἓν καὶ μόνον ἐντὶ οἷα τύπος τῶ ἀνωτέρω βασιλέως, τῷ μὲν πεποιηκότι γνώριμον ἀεί, τοῖς δ' ἀρχομένοις ὡς ἐν φωτὶ τᾷ βασιλῄᾳ βλεπόμενον. τᾶδε γὰρ κρίνεταί τε καὶ δοκιμάζεται, ὡς τὸ κράτιστον ἐν πτανοῖς ζῷον ἀετὸς ἀντωπὸν ἁλίω γενόμενον· χὠπὶ τᾶς βασιλῄας δὲ λόγος ὡυτός, θείας τε ἐάσας καὶ δι' ὑπερβολὰν λαμπρότατος δυςοράτω, αἱ μὴ τοῖς γνασίοις· μαρμαρυγαί τε γὰρ πολλαὶ καὶ σκοτοδινιάσιες ὡς ἐφ' ὕψος ὀθνῆον ἐπιβάντας τὼς νόθως ἀπήλεγ-

ξαν· τοῖς δὲ προσηκόντως κατ' οἰκηότατα πρὸς αὐτὰν ἐπὶ τοῦτο ἀφιγμένοις οἰκήσιμος, κεχρῆσθαι δυναμένοις αὐτᾶ. ἁ μὲν ὦν βασιλήα χρῆμα εἰλικρινές τε καὶ ἀδιάφθορόν ἐντι καὶ δι' ὑπερβολὰν θειότατος δυσέφικτον ἀνθρώπῳ. δεῖ δὲ καὶ τὸν ἐς αὐτὰν καταστάντα καθαρώτατόν τε ἦμεν καὶ διαυγέστατον τὰν φύσιν, ὡς μὴ τὸ λαμπρότατον ἀφανίζῃ ἐν σπίλοις τοῖς ὑφ' αὐτῶ· καθὸ καὶ τὼς ἁγιωτάτως τόπως ἐκαλίδωσάν τινες καὶ τῶν ἀντιασάντων ἔνιοι μιαροὶ τὼς ἀντιάξαντας αὐτοῖς. βασιλήᾳ δὲ τὸν ὁμιλήσοντα φύσιός τε ἀχράντω δεῖ μετέχεν ἐπιστάμεν τε αὐτὸν ὅσῳ τῶν ἄλλων ἐντὶ θειότερος ὅσῳ τε ἅτεροι αὐτῶ, οἷς δὴ κατὰ λόγον ἀπεικάζων ἑαυτὸν ἄριστ' ἂν ἑαυτῷ τε χρῷτο καὶ τοῖς ὑποτεταγμένοις. καὶ τοῖς μὲν ἄλλοις ἀνθρώποις, αἴκα ἁμαρτάνωντι, ὁσιωτάτα κάθαρσις ἐξομοιωθῆμεν τοῖς ἀρχόντεσσιν, αἴτε νόμος αἴτε βασιλεὺς διέποι τὰ κατ' αὐτώς· οἳ δ' εἴ τι τῶ κρέσσονος δέοντος διὰ τὰν φύσιν ἀμπλακόντες οὐ μακρὰν οὐδ' ἀπῳκισμένως οἳ χρὴ θεῷ μὲν ὡς εὐθὺ τᾶς ὠφελείας τυγχάνεν. οὔτε γὰρ τὸν κόσμον δίζοιτο ἄν τις ἐν αὐτῷ τε ὢν καὶ μέρος ἐκείνω, οὔτ' ἂν ἀνόητος εἴη τῶ διέποντος αὐτὸν ὁ ἀτέρων αὐτὸς ἄρχων. ἁ δ' εὐκοσμία πολλὰ καὶ τὸ μηδὲν ἄναρχον εὑρὲν δύνασθαι καὶ τῷ τρόπῳ τᾶς ἀρχᾶς διδάσκαλον. ἐκλάμπει γὰρ αὐτᾶς εὐθὺ τὸ καλόν, ἃν ὁ μιμασόμενος δι' ἀρετὰν αὐτῷ τε φίλος, ὃν μεμίμαται, καὶ πολὺ πλέον τοῖς ὑπ' αὐτὸν τεταγμένοις. οὐ γὰρ ἄν τις θεοφιλὴς ὢν μισέοιτο ὑπ' ἀνθρώπων, ἐπεὶ οὐδὲ τὰ ἄστρα οὐδ' ὁ σύμπας κόσμος ἐχθαίρει τὸν θεόν· αἰ δέ κα ἐμίσει τὸν ἁγεμονεύοντα, οὔ κα εἵπετο πειθόμενος αὐτῷ· τὸ δ' ἐκεῖνον ἄρχεν εὖ αἴτιον τῶ καὶ τῶσδε ἄρχεσθαι καλῶς. ἐγὼ μὲν ὦν ὑπολαμβάνω καὶ τὸν ἐπὶ τᾶς γᾶς

βασιλέα δύνασθαι μηδεμιᾷ τᾶν ἀρετᾶν ἐλαττοῦσθαι τῶ κατ' ὠρανὸν βασιλέως· ἀλλ' ὥσπερ αὐτὸς ἀπόδαμόν τι ἐντὶ χρῆμα καὶ ξένον ἐκεῖθεν ἀφιγμένον πρὸς ἀνθρώπως, καὶ τὰς ἀρετὰς ἄν τις αὐτῶ ἔργα ὑπολάβοι τῶ θεῶ καὶ δι' ἐκεῖνον αὐτῶ. σκοπέοντι δ' ἀρχᾶθεν ἀλάθηα λόγος· κοινωνία τε γὰρ πράτα τε πάντων καὶ ἀναγκαιοτάτα τῷ τῶν ἀνθρώπων γένει, ἇς μετέχει μὲν ὁ παρ' ἁμῖν βασιλεύς, μετέχει δὲ καὶ ὁ ἐν τῷ παντὶ πάντα διέπων· συνεστάναι γὰρ χωρὶς φιλίας καὶ κοινωνίας ἀμάχανον· σκοποίη δ' ἄν τις ταῦτα καὶ ἐπὶ τῶν συμπολιτευομένων, ἐξελὼν τῶ λόγω τὰν κατὰ συνάθηαν κοινωνίαν· ἐλάττων γὰρ αὕτα τᾶς τε θείας φύσιος καὶ τᾶς βασιλικᾶς· οὐ γὰρ δέονται τὰν τοιαύταν δέησιν ἀλλάλων, καθ' ἃν συνεκπορεῦντες τῶν ὑστεροῦντι, ἀναπλαροῦντι κοινὰν τὰν βοήθηαν· τέλειοι γὰρ κατ' ἀρετάν· ἁ δ' ἐν τᾷ πόλει φιλία κοινῶ τινος τέλεος ἐχομένα τὰν τῶ παντὸς ὁμόνοιαν μεμίμαται· ἄνευ δὲ τᾶς περὶ τὰς ἀρχὰς διατάξιος οὐδεμία ἂν πόλις οἰκοῖτο· ἐς δὲ ταύταν νόμων τε δεῖται καὶ τινὸς προστασίας πολιτικᾶς τό τε ἄρχον καὶ τὸ ἀρχόμενον, εἴπερ σώζοιτο δι' αὐτό. ἐκ τούτων κοινὸν ἀγαθὸν εὐαρμοστία τις καὶ τῶν πολλῶν ὁμοφωνία μετὰ πειθοῦς συνᾳδοίσας. ὁ κατ' ἀρετὰν ἐξάρχων καλέεταί τε βασιλεὺς καὶ ἔντι, ταύταν ἔχων φιλίαν τε καὶ κοινωνίαν ποτὶ τὼς ὑπ' αὕταυτον, ἅνπερ ὁ θεὸς ἔχει ποτί τε τὸν κόσμον καὶ τὰ ἐν αὐτῷ. ὅλαν δὲ τὰν εὔνοιαν χρὴ παρασκευάζεσθαι πρᾶτον μὲν παρὰ τῶ βασιλέως ἐς τὼς βασιλευομένως, δεύτερον δὲ παρὰ τῶνδε ἐς τὸν βασιλέα, ὁποῖα γεννάτορος ποτὶ υἱέα καὶ ποτὶ ποίμναν νομέως καὶ νόμω ποτὶ χρωμένως αὐτῷ.

65 *Ἐν ταυτῷ.*

Μία γὰρ ἀρετὰ πρὸς τὸ ἄρχεν ἀνθρώπων καὶ πρὸς τὸν αὑτῶ βίον. χρήσεται δ' οὐδενὸς δι' ἔνδειαν ποτιλαμβάνων εἰς ὑπηρεσίαν τὰν αὐτὸς αὑτῶ, ἀλλ' ὡς κατὰ φύσιν ἐνεργῶν· κοινωνίας γὰρ ἐάσας οὐδὲν ἔλαττον ἕκαστος αὐτάρκως βιώσει καθ' αὑτόν. δοκεῖ μὲν γὰρ ὁ αὐτάρκης μηδενὸς [ἂν] ἄλλω πρός γε τὰν αὑτῶ διεξαγωγὰν ποτιδεήσεσθαι· αἰ δ' ἄρα δεῖ βίον ἐνεργέα ζώεν, δᾶλον ὡς καὶ ἅτερα ἂν προσλάβοι, οὐδέν τι ἔλαττον αὐτὸν αὐτάρκεα ποιήσει· φίλως τε γὰρ ἕξει διὰ τὰν αὑτῶ ἀρετάν, καὶ τοῖσδε χρώμενος οὐ κατ' ἄλλαν ἀρετὰν χρήσεται ἢ ᾇπερ καὶ ποττὸν αὑτῶ βίον. ἀνάγκα δὲ ἀκολουθὲν καὶ τὰ τοιάδε, οὐχ ἁτέρως τινὸς ἐξαιρέτω ποτταῦτα παρεσκευασμένως. χὠ μὲν θεὸς οὔτε διακόνως ἔχων οὔτε ὑπηρέτας οὔτ' αὖ προστάξει τινὶ χρώμενος οὐδὲ στεφανῶν ἢ ἀναγορεύων τὼς πειθομένως ἢ ἀτιμάζων τὼς ἀπειθέοντας, οὗτος αὐτὸς ἄρχει ποτὶ τοσόνδε μέγεθος ἀρχᾶς, ἀλλ' οἶμαι παρέχων ἀξιομίματον ἑωυτὸν ζᾶλον ἐντίθητι πᾶσι τᾶς αὑτῶ φύσιος. ἔντι δὲ αὐτὸς μὲν ἀγαθός, καὶ τόδε μόνον τε καὶ ῥᾴδιον ἔργον αὑτῶ· οἱ δὲ μιμεύμενοι τῶν ἄλλων κρέσσον τῷδε πάντα ἐργάζονται· ἁ δὲ ὁμοίωσις καὶ ἑκάστω τῶδε αὔταρκές ἐντι· οὐ γὰρ ἄλλα μὲν ἀρετὰ ποιεῖ τὰ ἀρεστὰ τῷ θεῷ, μιμέεται δ' αὐτὸν ἑτέρα. ὁ δ' ἐπίγῃος ἁμῖν βασιλεὺς πῶς οὐχ ὁμοίως αὐτάρκης; ἀπεικάζων τε γὰρ αὑτὸν ἑνὶ ἂν ἀπεικάσειε τῷ κρατίστῳ, καὶ πᾶς ἑωυτῷ πειρώμενος ὁμοιοῦν αἴθ' ὃς ἔσεται· τὰ δ' ὅσα βίας καὶ ἀνάγκας τὰς τῶν ὑποτεταγμένων, ἐνίοτε ἑκάστῳ τὰν περὶ τὰν μίμασιν προθυμίαν ἀφαιρέεται· χωρὶς εὐνοίας γὰρ ἀμάχανον ἐξομοιωθῆναι, ἃ μάλιστα πάντων ἀφανίζει τὸ φοβερόν. ὡς εἴθε ἦν τᾶς ἀνθρω-

πίνας φύσιος δυνατὸν ἀφελὲν τὸ καὶ πειθοῦς τινος δέεσθαι. τόδε γὰρ τᾶς ἐπιγήω φαυλότατος τὸ λείψανον, καθ᾽ ἂν ἐπίκαρον ὂν τὸ ζῷον ταύτας οὐκ ἀμοιρεῖ· ἐπειδήπερ πειθὼ ἔργον τι ἐντὶ παροικέον ἀνάγκᾳ· πράτα γὰρ ἀφ᾽ αὐτᾶς αὐτὰ κατεργάζεται τάπερ ἐκείναν διέφυγεν. ὅσα δ᾽ αὐτοφυῶς τῷ καλῷ χρῆται, τούτοις οὐδεμία πειθοῦς αἰδώς· ἐπειδήπερ οὐδὲ φόβος ἀνάγκας. ἐνεργάσαιτο δ᾽ ἂν μόνος ὁ βασιλεὺς ἀνθρώπω φύσει καὶ τόδε τὸ ἀγαθόν, ὡς διὰ μίμασιν αὐτῶ τῶ κρέσσονος ποτὶ τὸ δέον ἕπεσθαι. τὼς δὲ ὥσπερ ὑπὸ μέθας διεφθαρμένως καὶ διὰ κακὰν τροφὰν ἐς λάθαν ἐμπεσόντας αὐτῶ, παραλαφθεὶς ὁ λόγος ἐπέρρωσέν τε καὶ κάμνοντας ἰάσατο, καὶ τὰν ἐκ τᾶς κακίας ἐνοικεῦσαν αὐτοῖς λάθαν ἐκβαλὼν τὰν μνάμαν ἐσῴκισεν, ἐξ ἇς ἀπετέχθη ἁ καλεομένα πειθώ· καὶ τὰν ἀρχὰν ἐκ φαύλων σπερμάτων λαβοῖσα αὕτα τι σπουδαῖον ἐκφύει τὰν ἐπίγηον οἰκεῦσα χώραν, ἐν ᾇ δι᾽ ἀσθένειαν τᾶς ἁμῶν φύσιος ὁ λόγος ἀνθρώποις ὁμιλέων ἀναπλαροῖ τὰ τῶν διὰ κακίαν ὑστερούντων.

66 Ἐν ταυτῷ.

Ἅπερ ἱερὰν καὶ θείαν ἔχων ἔννοιαν τῷ ὄντι βασιλεὺς εἴη· τᾷδε γὰρ πεπεισμένος ἀγαθῶν μὲν πάντων αἴτιος ἐσεῖται, κακῶν δὲ οὐδενός. οὐ μὰν ἀλλ᾽ ὅτι γε δίκαιος ἐσεῖται κοινωνικὸς ὢν παντί τῳ δᾶλον· ἰσότατι γὰρ ἁ κοινωνία, καὶ ἐν τᾷ ταύτας ἀποδιανομᾷ ἐξάρχει μὲν ἁ δικαιοσύνα, μετέχει δ᾽ ἁ κοινωνία· οὐ γὰρ δυνατὸν ἄδικον μὲν ἦμεν, μεταδιδόμεν δὲ ἰσότατος, ἢ μεταδιδόμεν μὲν ἰσότατος, μὴ κοινωνικὸν δὲ ἦμεν. ἐγκρατέα δὲ πῶς οὐκ ἂν ὑπολάβοι τις τὸν αὐτάρκη; ἁ γὰρ πολυτέληα μάτηρ τᾶς ἀκρασίας, αὕτα δὲ τᾶς ὕβριος, ἐξ ἇς τῶν ἐν ἀνθρώποις κακῶν τὰ

πολλά. ἁ δ' αὐτάρκηα οὐδ' ἂν τέκοι πολυτέληαν, οὔτε τὰ ἀπ' αὐτᾶς· ἀλλ' αὐτά τις οὖσα ἀρχὰ πάντα μὲν ἄγοι, ἄγοιτο δ' ἂν ὑπ' οὐδενός. ὅπερ ἔντι μὲν τῷ θεῷ, ἔντι καὶ τῷ βασιλεῖ, αὐτῷ μὲν ἄρχεν (ἀφ' ὦπερ καὶ ὁ αὐτάρκης καλέεται) ἄρχεσθαι δ' ὑπ' οὐδενός· ταῦτα δ' ὅτι μὲν φρονάσιος χωρὶς οὐκ ἂν γένοιτο δᾶλον, ὅτι δ' ἁ τῶ κόσμω φρόνασις ὁ θεός ἐντι φανερόν· συνέχεται γὰρ εὐκοσμίᾳ τε καὶ τάξει τᾷ δεούσᾳ· νόω δὲ χωρὶς οὐκ ἂν αὐτὰ γενοίατο. οὐδ' ὁ βασιλεὺς δὴ χωρὶς φρονάσιος ταύτας ἂν ἔχοι τὰς ἀρετάς, δικαιοσύναν φαμὶ καὶ ἐγκράτηαν καὶ κοινωνίαν καὶ ὅσα τούτων ἀδελφά.

67 Μουσωνίου ἐκ τοῦ ὅτι φιλοσοφητέον καὶ τοῖς βασιλεῦσιν.

Εἰσελθόντος δέ ποτε ὡς αὐτὸν τῶν βασιλέων τινὸς τῶν ἀπὸ τῆς Συρίας (ἦσαν γὰρ ἔτι τότε ἐν Συρίᾳ βασιλεῖς Ῥωμαίων ὑπήκοοι), ἄλλα τε πολλὰ εἶπε πρὸς τὸν ἄνδρα καὶ δὴ καὶ ταῦτα. Μὴ οἴου, ἔφη, ἄλλῳ τινὶ μᾶλλον προσήκειν φιλοσοφεῖν ἢ σοί, μηδ' ἄλλου του χάριν μᾶλλον ἢ ὅτι βασιλεὺς τυγχάνεις ὤν. δεῖ μὲν γὰρ δήπου δύνασθαι τὸν βασιλέα σώζειν ἀνθρώπους καὶ εὐεργετεῖν· τὸν δέ γε σώσοντα καὶ εὐεργετήσοντα χρὴ ἐπίστασθαι, τί μὲν ἀγαθὸν ἀνθρώπῳ τί δὲ κακόν, καὶ τί μὲν ὠφέλιμον τί δὲ βλαβερόν, καὶ συμφέρον γε καὶ ἀσύμφορον· εἴ γε ἀπόλλυνται μὲν οἱ περιπίπτοντες τοῖς κακοῖς, σώζονται δὲ οἱ τυγχάνοντες τῶν ἀγαθῶν, καὶ εὐεργετοῦνται μὲν οἱ ἀξιούμενοι τῶν ὠφελίμων καὶ συμφερόντων, κακοποιοῦνται δὲ οἱ ἐμβαλλόμενοι τοῖς ἀσυμφόροις καὶ βλαβεροῖς. ἀγαθὸν μέντοι ἢ κακόν, ἢ συμφέρον ἢ ἀσύμφορον, ἢ ὠφέλιμον ἢ βλαβερόν,

οὐκ ἄλλου του διαγινώσκειν ἢ τοῦ φιλοσόφου ἐστίν, ὃς αὐτὸ τοῦτο διατελεῖ πραγματευόμενος, ὅπως μηδὲ ἓν τούτων ἀγνοήσει, καὶ τέχνην πεποίηται ταύτην εἰδέναι τί φέρει πρὸς ἀνθρώπου εὐδαιμονίαν ἢ κακοδαιμονίαν. διὸ φαίνεται δεῖν τὸν βασιλέα φιλοσοφεῖν. καὶ μὴν προσήκει μὲν τῷ βασιλεῖ, μᾶλλον δ' ἀνάγκη ἐστὶν αὐτῷ, τὰ δίκαια βραβεύειν τοῖς ὑπηκόοις, ὡς μήτε πλέον ἔχειν μήτε ἐλαττοῦσθαι μηδένα παρὰ τὴν ἀξίαν, ἀλλὰ καὶ τιμῆς καὶ τιμωρίας τυγχάνειν τοὺς ἀξίους. ταῦτα δὲ πῶς ποτε δυνηθείη ἄν τις δίκαιος οὐκ ὤν; δίκαιος δὲ πῶς ἂν εἴη τις μὴ ἐπιστάμενος δικαιοσύνην ὁποῖόν τι ἐστί; πάλιν οὖν καὶ ταύτῃ φιλοσοφητέον τῷ βασιλεῖ, ὅτι δικαιοσύνην καὶ τὸ δίκαιον οὐκ ἂν ἄλλως φαίνοιτο γνούς, εἰ μὴ φιλοσοφήσειεν. οὐ γὰρ οὔθ' ὡς οὐχὶ ὁ μαθὼν μᾶλλον εἰδήσει τὰ δίκαια τοῦ μὴ μαθόντος ἔστιν εἰπεῖν, οὔθ' ὡς οὐκ ἀμαθεῖς εἰσι τῶν τοιούτων πάντες οἱ μὴ φιλοσοφήσαντες. στασιάζουσι γοῦν καὶ πολεμοῦσι περὶ τῶν δικαίων πρὸς ἀλλήλους, οἳ μὲν ταῦτα φάσκοντες οἳ δ' ἐκεῖνα δικαιότερα εἶναι. καίτοι περί γε ὧν ἐπίστανται ἄνθρωποι, περὶ τούτων οὐ διαφέρονται, οὔτε περὶ λευκῶν ἢ μελάνων, ἢ θερμῶν ἢ ψυχρῶν, οὔτε περὶ μαλακῶν ἢ σκληρῶν· ἀλλὰ κατὰ τὰ αὐτὰ περὶ τούτων ἅπαντες φρονοῦσί τε καὶ λέγουσιν· ὥστε καὶ περὶ τῶν δικαίων ὡμονόουν ἂν παραπλησίως, εἴπερ ᾔδεσαν ἅ τινα ἐστίν· ἐν ᾧ δ' οὐχ ὁμονοοῦσιν, ἀγνοοῦντες φαίνονται. καὶ οὐδὲ σὺ ταύτης ἐκτὸς εἶ τῆς ἀγνοίας, ὡς ἐγὼ δοκῶ· ὅθεν ἐπιμελητέον σοι τῆς γνώσεως μᾶλλον ἢ ἄλλῳ ὁτῳοῦν, καὶ τοσούτῳ γε μᾶλλον ὅσῳ περ αἴσχιον ἀνδρὶ βασιλεῖ ἢ ἰδιώτῃ εἶναι ἐν ἀγνοίᾳ δικαιοσύνης.

ἔτι τοίνυν δεῖ τὸν βασιλέα μὲν σωφρονεῖν αὐτόν,

δεῖ δὲ τοὺς ὑπηκόους σωφρονίζειν, ἵν' ὃ μὲν ἄρχῃ σωφρόνως, οἳ δ' ἄρχωνται κοσμίως, μηδέτεροι δὲ τρυφῶσι· λυμαντικὸν γὰρ ἄρχοντός τε καὶ ἰδιώτου παντὸς ἡ τρυφή. πῶς δ' ἂν ἢ αὐτὸς σωφρονήσειέ τις μὴ μελετήσας κρατεῖν τῶν ἐπιθυμιῶν, ἢ ἀκόλαστος ὢν ἄλλους ποιήσειε σώφρονας; τίς μέντοι ἐπιστήμη πρὸς σωφροσύνην ἄγει πλὴν φιλοσοφίας, οὐκ ἔστιν εἰπεῖν· αὕτη γὰρ διδάσκει μὲν ἐπάνω ἡδονῆς εἶναι, διδάσκει δ' ἐπάνω πλεονεξίας, διδάσκει δὲ ἀγαπᾶν εὐτέλειαν, διδάσκει δὲ φεύγειν πολυτέλειαν, ἐθίζει δ' αἰδῶ ἔχειν, ἐθίζει δὲ γλώττης κρατεῖν, τάξιν τε καὶ κόσμον καὶ εὐσχημοσύνην περιποιεῖ καὶ ὅλως τὸ ἐν κινήσει καὶ σχέσει πρέπον. ταῦτα δὲ ἀνθρώπῳ προσόντα παρέχεται σεμνὸν καὶ σώφρονα αὐτόν. καὶ δὴ καὶ βασιλεύς, ὅτῳ ὑπάρχει ταῦτα, μάλιστα ἂν εἴη θεοπρεπής τε καὶ αἰδοῦς ἄξιος. τό γε μὴν ἄφοβον καὶ ἀνέκπληκτον καὶ θαρραλέον ἔστι μὲν ἀνδρίας ἔργον, πῶς δ' ἂν ἄλλως μᾶλλον ἀνθρώπῳ ὑπάρξειεν ἢ εἴ τις περὶ θανάτου καὶ πόνου λάβοι πίστιν ἰσχυρὰν ὡς οὐ κακοῖν ὄντοιν αὐτοῖν; ταῦτα γὰρ δὴ τὰ ἐξιστάντα καὶ φοβοῦντα τοὺς ἀνθρώπους ἐστίν, ὅ τε θάνατος καὶ ὁ πόνος, ὅταν ὡς περὶ κακῶν πεπεισμένοι ὦσιν αὐτῶν, μὴ κακὰ δέον εἰδέναι ταῦτα... φιλοσοφία διδάσκει μόνη. ὥστ' εἴπερ ἀνδρίαν γε κτητέον τοῖς βασιλεῦσι, κτητέον δὲ παντὸς ὁτουοῦν ἑτέρου, μᾶλλον ἐπιμελητέον τοῦ φιλοσοφεῖν αὐτοῖς, ὡς οὐκ ἂν ἑτέρως ἀνδρείοις γενομένοις. καὶ δὴ βασιλικὸν μέν, εἴ τι ἄλλο, καὶ τὸ ἀήττητον ἐν λόγῳ εἶναι καὶ δύνασθαι κρατεῖν ὥσπερ ὅπλοις τῶν μαχομένων, οὕτω λόγοις τῶν διαλεγομένων· ὡς ἂν γε ταύτῃ ἀσθενήσωσιν οἱ βασιλεῖς, ἀνάγκη πολλάκις περιάγεσθαι αὐτοὺς καὶ βιάζεσθαι τὰ ψευδῆ

ὡς ἀληθῆ προσίεσθαι, ὅπερ ἀφροσύνης ἔργον καὶ ἀμαθίας τῆς ἐσχάτης. φιλοσοφία δ' οὐκ οἶδα εἴ τι ἄλλο μᾶλλον ἢ τοῦτο παρέχειν τοῖς μετιοῦσιν αὐτὴν πέφυκεν, ὥστε περιεῖναι λόγῳ τῶν πλησίον καὶ τὰ ψευδῆ διακρίνειν ἀπὸ τῶν ἀληθῶν καὶ τὰ μὲν ἐλέγχειν τὰ δὲ βεβαιοῦν. οἱ γοῦν ῥήτορες ὁπόταν ἔλθωσιν εἰς ταυτὸ τοῖς φιλοσόφοις καὶ διδῶσι καὶ λαμβάνωσι λόγον, ἔστιν ὁρᾶν αὐτοὺς συγκρουομένους ἀπορουμένους, ἐναντία λέγειν αὑτοῖς ἀναγκαζομένους· καίτοι ὁπόταν οἱ ῥήτορες, οἱ τοῦτο πεποιημένοι ἔργον λόγους μελετᾶν, ἀσθενέστεροι περὶ λόγους ἁλίσκωνται τῶν φιλοσόφων ὄντες, τί χρὴ τοὺς ἄλλους ἀνθρώπους ὑπολαμβάνειν; ὅθεν εἴ τινι ὄντι βασιλεῖ ἔστιν ἐπιθυμία τοῦ ἐν λόγοις κράτους, φιλοσοφητέον αὐτῷ, ἵνα μὴ δεδίῃ μηδὲ ταύτῃ μηδένα ὡς περιγενησόμενον αὐτοῦ, δέον ἁπανταχοῦ ἀδεῆ εἶναι τὸν βασιλέα καὶ θαρραλέον καὶ ἀήττητον.

καθόλου δὲ τὸν μὲν βασιλέα τὸν ἀγαθὸν ἀνάγκη πᾶσα καὶ λόγῳ καὶ ἔργῳ εἶναι ἀναμάρτητον καὶ τέλειον, εἴ περ δεῖ αὐτόν, ὥσπερ ἐδόκει τοῖς παλαιοῖς, νόμον ἔμψυχον εἶναι, εὐνομίαν μὲν καὶ ὁμόνοιαν μηχανώμενον, ἀνομίαν δὲ καὶ στάσιν ἀπείργοντα, ζηλωτὴν δὲ τοῦ Διὸς ὄντα καὶ πατέρα τῶν ἀρχομένων ὥσπερ ἐκεῖνον. τοιοῦτος δὲ πῶς ἂν εἴη τις μὴ φύσει τε διαφερούσῃ κεχρημένος παιδείαν τε τὴν ἀρίστην πεπαιδευμένος ἀρετάς τε ἁπάσας ἔχων ὅσαι περ ἀνθρώπῳ προσήκουσιν; εἰ μὲν οὖν καὶ ἑτέρα ἐπιστήμη ἐστὶν ἡ ποδηγοῦσα πρὸς ἀρετὴν ἀνθρώπου φύσιν καὶ ἀσκεῖν καὶ μετιέναι τὰ καλὰ διδάσκουσα, παραβλητέον ἂν εἴη καὶ συγκριτέον, εἴτε ἐκείνη εἴτε φιλοσοφία κρείττων καὶ ἀποχρῶσα μᾶλλον ἀγαθὸν ἀποδεῖξαι βασιλέα· καὶ τῇ φανείσῃ κρείττονι χρῷτ'

ἂν εἰκότως ὁ βασιλεὺς βουλόμενός γε δὴ εἶναι ἀγαθός. εἰ δ' ἄλλη μὲν οὖν οὐδ' ὑπισχνεῖται τέχνη οὐδεμία παράδοσιν καὶ διδασκαλίαν ἀρετῆς, ἀλλ' αἱ μὲν περὶ τὸ σῶμα τὸ ἀνθρώπινον καὶ τὰ τούτῳ χρήσιμα πραγματεύονται μόνον, ὅσαι δὲ τῆς ψυχῆς ἐφάπτονται, πάντα σκοποῦνται μᾶλλον ἢ ὅθεν αὐτὴ σωφρονήσει, μόνη δὲ φιλοσοφία τοῦτο σκοπεῖ καὶ τοῦτο μηχανᾶται, πῶς ἂν ὁ ἄνθρωπος κακίαν μὲν ἐκφύγοι, κτήσαιτο δὲ ἀρετήν· εἰ ταῦτα ταύτῃ ἔχει, τί ἂν ἄλλο εἴη βασιλεῖ τῷ γε ἀγαθῷ εἶναι βουλομένῳ προυργιαίτερον τοῦ φιλοσοφεῖν; μᾶλλον δὲ πῶς καὶ τίνα τρόπον δύναιτο ἄν τις βασιλεῦσαι ἢ βιῶναι καλῶς, εἰ μὴ φιλοσοφήσειεν; ἐγὼ μὲν οἶμαι τὸν βασιλέα τὸν ἀγαθὸν εὐθὺς καὶ φιλόσοφον ἐξ ἀνάγκης εἶναι καὶ τόν γε φιλόσοφον εὐθὺς καὶ βασιλικὸν εἶναι.

πρῶτον δὲ τὸ πρότερον θεασώμεθα. ἆρ' ἔσθ' ὅπως βασιλεὺς ἀγαθὸς εἴη τις ἂν μὴ ἄνθρωπος ἀγαθὸς ὤν; οὐκ ἔστιν εἰπεῖν. ἀγαθὸς δέ τις ἀνὴρ ὢν οὐ καὶ φιλόσοφος εἴη ἄν; νὴ Δία, εἴ γε τὸ φιλοσοφεῖν καλοκαγαθίας ἐπιτήδευσίς ἐστιν. ὥσθ' ὁ βασιλεὺς ὁ ἀγαθὸς ἐξ ἀνάγκης εὐθὺς καὶ φιλόσοφος εὑρίσκεται ὤν. καὶ μὴν ὅ γε φιλόσοφος ὅτι πάντως καὶ βασιλικός, οὕτως ἂν μάθοις. τοῦ γὰρ βασιλικοῦ δήπου ἐστὶ τὸ δύνασθαι καλῶς ἐπιτροπεύειν ἔθνη καὶ πόλεις καὶ εἶναι ἄξιον ἀνθρώπων ἄρχειν. τίς δ' ἂν ἢ ἱκανώτερος εἴη πόλεως προστάτης ἢ ἀξιώτερος ἀνθρώπων ἄρχειν τοῦ φιλοσόφου; ᾧ γε προσήκει, ἄν περ ᾖ ἀληθῶς φιλόσοφος, εἶναι φρονίμῳ σώφρονι μεγαλόφρονι, τῶν δικαίων κριτικῷ καὶ τῶν πρεπόντων, καταπρακτικῷ τῶν νοηθέντων, καρτερικῷ τῶν ἐπιπόνων· πρὸς δὲ τούτοις θαρραλέος ἀδεὴς

ὑποστατικὸς τῶν δοκούντων δεινῶν εἴη ἄν, ἔτι δὲ εὐεργετικὸς φιλάνθρωπος χρηστός. τοῦ δὲ τοιούτου τίς ἂν εὑρεθείη ἄρχειν ἐπιτηδειότερος ἢ δυνατώτερος; οὐδείς. ἂν δὲ μὴ ἔχῃ πολλοὺς τοὺς ὑπακούοντας καὶ πειθομένους αὐτῷ, οὔπω διὰ τοῦτο τοῦ βασιλικὸς εἶναι ἐστέρηται· ἐξαρκεῖ γὰρ καὶ τὸ τῶν φίλων ἄρχειν τῶν ὑπαρχόντων ἢ γυναικός τε καὶ παίδων, ἢ καὶ νὴ Δία αὐτὸν αὐτοῦ μόνον. καὶ γὰρ ἰατρὸς οὐδὲν ἧττον τοῦ θεραπεύοντος πολλοὺς ὁ θεραπεύων ὀλίγους, εἴ γε ἔχει τὴν ἐμπειρίαν τὴν ἰατρικήν· καὶ μουσικὸς οὐδὲν ἧττον τοῦ διδάσκοντος πολλοὺς ὁ διδάσκων ὀλίγους, εἴ γε ἔχει τὴν μουσικήν· καὶ ἱππικὸς ὁμοίως τῷ χρωμένῳ πολλοῖς ἵπποις ὁ χρώμενος ἑνὶ ἢ δυοῖν, ἄν γε ἐπιστήμων τῆς ἱππικῆς ᾖ· καὶ δὴ καὶ βασιλικὸς παραπλησίως τῷ κεκτημένῳ πολλοὺς ὑπηκόους ὁ ἔχων ἕνα ἢ δύο τοὺς πειθομένους αὐτῷ· μόνον ἐχέτω τὴν τοῦ βασιλεύειν ἐμπειρίαν, ὥστε καὶ βασιλικὸς εἴη ἄν. διὰ τοῦτό μοι δοκεῖ καὶ Σωκράτης τὴν φιλοσοφίαν πολιτικήν τε καὶ βασιλικὴν ἐπιστήμην ὀνομάζειν, ὅτι ὁ ταύτην ἀναλαβὼν εὐθὺς πολιτικός ἐστι. Τοιαῦτα τοῦ Μουσωνίου εἰπόντος, ἡσθεὶς ὁ βασιλεὺς τοῖς λόγοις χάριν τε ἔχειν ὡμολόγει τῶν εἰρημένων αὐτῷ, καὶ ἀντὶ τούτων, ἔφη, αἴτησον ὅ τι βούλει με· οὐ γὰρ ἂν ἀντείποιμί σοι περὶ οὐδενός. ὁ οὖν Μουσώνιος, αἰτῶ σε, ἔφη, τούτοις στοιχεῖν καὶ ἕπεσθαι τοῖς λόγοις οὓς ἐπαινεῖς· καὶ γὰρ ἐμοὶ οὕτω χαριεῖ μάλιστα, καὶ ὠφεληθήσῃ αὐτὸς οὐχ ἑτέρως μᾶλλον.

68 Ξενοφῶντος ἐν τῇ Κύρου παιδείᾳ α΄ (6, 3).

Καὶ μὲν δή, ἔφη, ὦ πάτερ, ὁ Κῦρος, ὅπως ἂν

ἵλεῳ θεοὶ ὄντες ἡμῖν συμβουλεύειν ἐθέλωσιν, ὅσον δύναμαι κατὰ τὸν σὸν λόγον διατελέσω ἐπιμελούμενος. μέμνημαι γάρ ἀκούσας ποτέ σου, ὅτι εἰκότως ἂν καὶ παρὰ τῶν θεῶν πρακτικώτερος εἴη ὥσπερ καὶ παρ' ἀνθρώπων, ὅστις μὴ ὁπότε ἐν ἀπόροις εἴη, τότε κολακεύοι, ἀλλ' ὅτε ἄριστα πράττοι, τότε μάλιστα τῶν θεῶν μέμνηται· καὶ τῶν φίλων δ' ἔφησθα χρῆναι ὡσαύτως οὕτως ἐπιμελεῖσθαι. οὐκ οὖν νῦν, ἔφη, ὦ παῖ, δι' ἐκείνας τὰς ἐπιμελείας ἥδιον [μὲν] ἔρχῃ πρὸς τοὺς θεοὺς δεησόμενος, ἐλπίζεις δὲ μᾶλλον τεύξεσθαι ὧν ἂν δέῃ, ὅτι ξυνειδέναι ἑαυτῷ δοκεῖς οὐ πώποτε ἀμελήσας αὐτῶν; Πάνυ μὲν οὖν, ἔφη, ὦ πάτερ, ὡς προσφιλεῖς μοι τοὺς θεοὺς ὄντας οὕτω διάκειμαι. Τί γάρ, ἔφη, ὦ παῖ, ἐκεῖνα μέμνησαι, ἅ ποτε ἐδόκει ἡμῖν; ὁπόσα γὰρ δήπου δεδώκασιν ἡμῖν οἱ θεοί, μαθόντας ἀνθρώπους βέλτιον πράσσειν ἢ ἀνεπιστήμονας αὐτῶν ὄντας καὶ ἐργαζομένους μᾶλλον ἀνύειν ἢ ἀργοῦντας καὶ ἐπιμελομένους ἀσφαλέστερον ἂν διάγειν ἢ ἀφυλακτοῦντας καὶ παρέχοντας ἑαυτοὺς οἵους δεῖ, οὕτως ἡμῖν ἐδόκει δεῖν καὶ αἰτεῖσθαι τἀγαθὰ παρὰ τῶν θεῶν. Ναὶ μὰ Δί', ἔφη ὁ Κῦρος, [μέμνημαι μέντοι ταῦτα ἀκούσας σου·] καὶ γὰρ ἀνάγκη ἦν πείθεσθαι τῷ λόγῳ τούτῳ· καὶ οἶδα προστιθέντα αὐτῷ, ὡς οὐδὲ θέμις εἴη αἰτεῖσθαι παρὰ τῶν θεῶν οὔτε ἱππεύειν μὴ μαθόντας, ἱππομαχοῦντας νικᾶν· οὔτε μὴ ἐπισταμένους τοξεύειν, τοξεύοντας κρατεῖν τῶν ἐπισταμένων τοξεύειν· οὔτε μὴ ἐπισταμένους κυβερνᾶν, σώζειν εὔχεσθαι ναῦν κυβερνῶντας· οὔτε μὴ σπείραντάς γε σῖτον, εὔχεσθαι καλὸν αὐτοῖς σῖτον φύεσθαι· οὐδὲ μὴ φυλασσομένους γε ἐν πολέμῳ σωτηρίαν αἰτεῖσθαι· παρὰ γὰρ τοὺς τῶν θεῶν θεσμοὺς ταῦτα καὶ τὰ τοιαῦτα

πάντα εἶναι· τοὺς δὲ ἀθέμιστα εὐχομένους ὁμοίως ἔφησθα εἰκὸς εἶναι παρὰ θεῶν ἀτυχεῖν, ὥσπερ καὶ παρ' ἀνθρώπων ἀπρακτεῖν τοὺς παράνομα δεομένους.

69 *Ἐν ταυτῷ* (ib. 8).

Καὶ τοῦτό σου λέγοντος συνεδόκει καὶ ἐμοὶ ὑπερμέγεθες ἔργον εἶναι τὸ καλῶς ἄρχειν, καὶ νῦν, ἔφη, ταῦτά μοι δοκεῖ, ὅταν πρὸς αὐτὸ τὸ ἄρχειν σκοπῶν λογίζωμαι· ὅταν μέντοι πρὸς ἄλλους ἀνθρώπους ἰδὼν κατανοήσω, ἀρξάμενος ἀπὸ τῶν ἡμετέρων φίλων τούτων, ἡγουμένους δεῖν τὸν ἄρχοντα τῶν ἀρχομένων διαφέρειν τῷ πολυτελέστερον δειπνεῖν καὶ πλεῖον ἔχειν ἔνδον χρυσίον καὶ πλείονα χρόνον καθεύδειν καὶ πάντα ἀπονώτερον τῶν ἀρχομένων διάγειν. Ἐγὼ δ' οἴομαι, ἔφη, τὸν ἄρχοντα οὐ τῷ ῥᾳδιουργεῖν χρῆναι διαφέρειν τῶν ἀρχομένων, ἀλλὰ τῷ προνοεῖν καὶ φιλοπονεῖν.

70 *Ἐν ταυτῷ* (ib. 10).

Ἐρωτᾷς, ἔφη, τοῦτο, ὦ παῖ, εἴ τις ἀπὸ σοῦ πόρος προσγένοιτο. ἀπὸ τίνος δὲ μᾶλλον εἰκὸς πόρον γενέσθαι ἢ ἀπὸ τοῦ δύναμιν ἔχοντος;

71 *Ἐν ταυτῷ* (ib. 14).

Τόδε δὲ πάντων μάλιστά μοι μέμνησο· μηδέποτ' ἀναμένειν [τὸ] πορίζεσθαι τὰ ἐπιτήδεια, ἔς τ' ἂν ἡ χρεία σε ἀναγκάσῃ· ἀλλ' ὅταν μάλιστα εὐπορῇς, τότε πρὸ τῆς ἀπορίας μᾶλλον μηχανῶ. καὶ γὰρ τεύξει μᾶλλον παρ' ὧν ἂν δέῃ μὴ ἀπορεῖν δοκῶν, καὶ [ἔτι] ἀναίτιος ἔσῃ παρὰ τοῖς σαυτοῦ στρατιώταις· ἐκ τούτου δὲ μάλιστα καὶ ὑπὸ τῶν ἄλλων αἰδοῦς τεύξῃ, καὶ ἐάν τινα βούλῃ τῇ δυνάμει ἢ εὖ ποιῆσαι ἢ κακῶς,

μᾶλλον ὑπηρετήσουσιν οἱ στρατιῶται ἔχοντες τὰ δέοντα· καὶ πιστικωτάτους δὲ λόγους σάφ' ἴσθι τότε δυνήσῃ λέγειν, ὅταν περ καὶ ἐνδείκνυσθαι μάλιστα δύνῃ ποιεῖν ἱκανὸς ὢν καὶ εὖ καὶ κακῶς.

72 Ἐν ταυτῷ (ib. 14).

Τὸ τέλος δή με ἐπήρου, τί ποτε διδάσκων στρατηγίαν φαίη με διδάσκειν. κἀγὼ δὴ ἐνταῦθα ἀπεκρινάμην, ὅτι τὰ τακτικά. καὶ σὺ γελάσας διῆλθές μοι, παρατιθεὶς ἕκαστον, τί εἴη ὄφελος στρατηγίᾳ τακτικῶν ἄνευ τῶν ἐπιτηδείων; τί δὲ ἄνευ τοῦ ὑγιαίνειν; τί δὲ ἄνευ τοῦ ἐπίστασθαι τὰς εὑρημένας εἰς πόλεμον τέχνας; τί δὲ ἄνευ τοῦ πείθεσθαι; ὡς δὲ καταφανὲς ἐποίησας ὅτι μικρόν τι μέρος εἴη στρατηγίας τὰ τακτικά, ἐπηρόμην εἴ τι τούτων σύ με διδάξαι ἱκανὸς εἴης· [ἀπιόντα με ἐκέλευσας τοῖς στρατηγικοῖς ἀνδράσι νομιζομένοις διαλέγεσθαι.]

73 Ἐν ταυτῷ (ib. 17).

Δεῖ γὰρ δήπου στρατιάν, εἰ μέλλει πράξειν τὰ δέοντα, μήποτε παύεσθαι ἢ τοῖς πολεμίοις κακὰ πορσύνουσαν ἢ αὑτοῖς ἀγαθά, ὡς χαλεπὸν μὲν καὶ ἕνα ἄνθρωπον ἀργὸν τρέφεσθαι, πολὺ δ' ἔτι, ὦ παῖ, χαλεπώτερον οἶκον ὅλον, πάντων δὲ χαλεπώτατον στρατιὰν ἀργὴν τρέφειν. πλεῖστά τε γὰρ ἐσθίει στρατιὰ καὶ ἀπ' ἐλαχίστων ὁρμώμενα, καὶ οἷς ἂν λάβῃ δαψιλέστατα χρωμένη· ὥστε οὐδέποτε προσήκει στρατιὰν ἀργεῖν. Λέγεις σύ, ἔφη, πάτερ, ὡς ἐμοὶ δοκεῖ, ὥσπερ οὐδὲ γεωργοῦ ἀργοῦ οὐδὲν ὄφελος, οὕτως οὐδὲ στρατηγοῦ ἀργοῦ οὐδὲν ὄφελος εἶναι. Τὸν δέ γε ἐργάτην στρατηγὸν [ἐγώ,] ἔφη, ἀναδέχομαι, ἤν μή τις θεὸς βλάπτῃ, ἅμα καὶ τὰ ἐπιτήδεια μάλιστ' ἔχοντας τοὺς στρατιώτας ἀποδείξειν καὶ τὰ σώματα ἄριστα ἔχον-

τας παρασκευάσειν. Ἀλλὰ μέντοι τό γε, ἔφη, μελετᾶσθαι ἕκαστα τῶν πολεμίων ἔργων, ἀγῶνας ἄν τις μοι δοκεῖ, ὦ πάτερ, προειπὼν ἑκάστοις καὶ ἆθλα προτιθείς, μάλιστα ποιεῖν [εὖ] ἀσκεῖσθαι ἕκαστα, ὥστε ὁπότε δέοιτο ἔχειν ἂν παρεσκευασμένοις χρῆσθαι. Κάλλιστα λέγεις, ὦ παῖ, ἔφη· τοῦτο γὰρ ποιήσας, σαφ' ἴσθι, ὥσπερ χοροὺς τὰς τάξεις ἀεὶ τὰ προσήκοντα μελετώσας θεάσῃ. Ἀλλὰ μήν, ἔφη ὁ Κῦρος, τό γ' εὐθυμίαν ἐμβαλεῖν τοῖς στρατιώταις οὐδέν μοι δοκεῖ ἱκανώτερον εἶναι ἢ τὸ δύνασθαι ἐλπίδας ἀγαθὰς ἐμποιεῖν ἀνθρώποις. Ἀλλὰ μήν, ἔφη, ὦ παῖ, τοῦτό γε τοιοῦτόν ἐστιν, οἷόν περ εἴ τις κύνας ἐν θήρᾳ ἀνακαλοῖτο ἀεὶ τῇ κλήσει, οἵαπερ ὅταν τὸ θηρίον ὁρᾷ. τὸ μὲν γὰρ πρῶτον προθύμως οἶδ' ὅτι ἔχει ὑπακουούσας, ἂν δὲ πολλάκις ψεύδηται αὐτάς, τελευτῶσαι, οὐδ' ὁπόταν ἀληθῶς ὁρῶν καλῇ, πείθονται αὐτῷ. οὕτω καὶ τὸ περὶ τῶν ἐλπίδων ἔχει· ἢν πολλάκις προσδοκίας ἀγαθῶν ἐμβάλλων ψεύδηταί τις, τελευτῶν, οὐδ' ὁπόταν ἀληθεῖς ἐλπίδας λέγῃ, ὁ τοιοῦτος πείθειν δύναται. ἀλλὰ τοῦ μὲν αὐτὸν λέγειν, ἐὰν μὴ σαφῶς εἰδῇ, φείδεσθαι δεῖ, ὦ παῖ· [ἄλλοι δὲ ἐνίοτε λέγοντες ταυτὸ διαπράττοιεν ἄν·] τὴν δὲ αὐτοῦ παρόρμησιν εἰς τοὺς μεγίστους κινδύνους δεῖ ὡς μάλιστα ἐν πίστει διασώζειν.

74 Ἐν ταυτῷ (ib.).

Νόμοι δὲ δοκοῦσί μοι οἱ πολλοὶ δύο ταῦτα μάλιστα διδάσκειν, ἄρχειν τε καὶ ἄρχεσθαι. καὶ τοίνυν κατανοῶν περὶ τούτων ἐν πᾶσιν ὁρᾶν μοι δοκῶ τὸ προτερεῖον πείθεσθαι μάλιστα ὄν, τῷ τὸν μὲν πειθόμενον ἐπαινεῖν τε καὶ τιμᾶν, τὸν δὲ ἀπειθοῦντα ἀτιμάζειν τε καὶ κολάζειν. καὶ ἐπὶ μέν γε τὸ ἀνάγκῃ

πείθεσθαι, ἔφη, αὕτη ἡ ὁδός, ὦ παῖ, ἐστίν· ἐπὶ δὲ τὸ πολὺ κρεῖσσον τούτου, τὸ ἑκόντα πείθεσθαι, ἄλλη ἐστὶ συντομωτέρα [ὁδός]. ὃν γὰρ ἂν ἡγήσωνται περὶ τὰ συμφέροντα ἑαυτοῖς φρονιμώτερον εἶναι ἑαυτῶν, τούτῳ οἱ ἄνθρωποι ὑπερηδέως πείθονται. γνοίης δ' ἂν ὅτι τοῦθ' οὕτως ἔχει ἐν ἄλλοις τε πολλοῖς καὶ δὴ καὶ ἐν τοῖς κάμνουσιν, ὡς προθύμως τοὺς ἐπιτάξοντας ὅ τι χρὴ ποιεῖν καλοῦσι· καὶ ἐν θαλάσσῃ ὡς προθύμως τοῖς κυβερνήταις οἱ συμπλέοντες πείθονται.

75 Ἐν ταυτῷ (ib.).

Φρόνιμος δὲ περὶ τοῦ συνοίσειν μέλλοντος πῶς ἄν τις τῷ ὄντι γένοιτο; δῆλον ὅτι, ἔφη, ὦ παῖ, ὅσα μὲν ἐστὶ μαθόντα εἰδέναι, μαθὼν ἂν ὥσπερ τὰ τακτικὰ ἔμαθες· ὅσα δὲ ἀνθρώποις οὔτε μαθητὰ οὔτε προορατὰ ἀνθρωπίνῃ προνοίᾳ, διὰ μαντικῆς ἂν παρὰ θεῶν πυνθανόμενος φρονιμώτερος ἄλλων ἂν εἴης· ὅ τι δὲ γνοίης βέλτιον ἂν πραχθῆναι, ἐπιμελόμενος ἂν τούτου, ὡς πραχθείη. καὶ γὰρ τὸ ἐπιμελεῖσθαι τούτου, οὗ ἂν δέῃ, φρονιμωτέρου ἀνδρὸς ἢ τὸ ἀμελεῖν. ἀλλὰ μέντοι ἐπί γε τὸ φιλεῖσθαι ὑπὸ τῶν ἀρχομένων, ὅπερ ἐμοὶ ἐν τοῖς μεγίστοις δοκεῖ εἶναι, δῆλον ὅτι ἡ αὐτὴ ὁδὸς ἥπερ εἴ τις ὑπὸ τῶν φίλων στέργεσθαι ἐπιθυμοίη. εὖ γάρ, οἶμαι, δεῖ ποιοῦντα φανερὸν εἶναι. ἀλλὰ τοῦτο μέν, ἔφη, ὦ παῖ, χαλεπόν, τὸ ἀεὶ δύνασθαι εὖ ποιεῖν οὓς ἄν τις θέλῃ· τὸ δὲ συνηδόμενόν τε φαίνεσθαι, ἤν τι ἀγαθὸν αὐτοῖς συμβαίνῃ, καὶ συναχθόμενον, ἤν τι κακόν, καὶ συνεπικουρεῖν πρόθυμον ταῖς ἀπορίαις αὐτῶν, καὶ προφοβούμενον μή τι σφαλῶσι, καὶ προνοεῖν πειρώμενον, ὡς μὴ σφάλλωνται, [ἐπὶ] ταῦτα πῶς δεῖ παρομαρτεῖν. καὶ τὸ τῶν πράξεών γε, ἢν μὲν ἐν θέρει ὦσι, τὸν ἄρ-

χοντα δεῖ τοῦ ἡλίου πλεονεκτοῦντα [φανερὸν] εἶναι· ἢν δὲ χειμών, τοῦ ψύχους· ἢν δὲ δέῃ μοχθεῖν, τῶν πόνων· πάντα γὰρ ταῦτα εἰς τὸ φιλεῖσθαι ὑπὸ τῶν ἀρχομένων συλλαμβάνει. Λέγεις εὖ, ἔφη, ὦ πάτερ, ὡς καὶ καρτερὸν δεῖ πρὸς πάντα τὸν ἄρχοντα τῶν ἀρχομένων μᾶλλον εἶναι. Ἐγὼ γὰρ οὖν, ἔφη. θάρρει μέντοι, ἔφη, ὦ παῖ· εὖ γὰρ ἴσθι τοῦτο, ὅτι τῶν ὁμοίων σωμάτων οἱ αὐτοὶ πόνοι οὐχ ὁμοίως ἅπτονται, ἄρχοντός τε ἀνδρὸς καὶ ἰδιώτου· ἀλλὰ ἐπικουφίζει τι ἡ τιμὴ τοὺς πόνους τῷ ἄρχοντι, καὶ τὸ αὐτὸν εἰδέναι, ὅτι οὐ λανθάνει ὅ τι ἂν ποτε ποιῇ. Ὁπότε δέ, ὦ πάτερ, ἤδη ἔχοιεν μὲν τὰ ἐπιτήδεια οἱ στρατιῶται, ὑγιαίνοιεν δέ, πονεῖν δὲ δύναιντο, τὰς δὲ πολεμικὰς τέχνας ἠσκηκότες εἶεν, φιλοτίμως δὲ ἔχοιεν πρὸς τὸ ἀγαθοὶ φαίνεσθαι, τὸ δὲ πείθεσθαι αὐτοῖς ἥδιον εἴη τοῦ ἀπειθεῖν, οὐκ ἂν ἤδη τηνικαῦτα σωφρονεῖν ἄν τις σοι δοκοίη διαγωνίζεσθαι βουλόμενος πρὸς τοὺς πολεμίους ὡς τάχιστα; Ναὶ μὰ Δί', ἔφη, εἰ μέλλει γε πλέον ἕξειν· εἰ δὲ μή, ἔγωγ' ἂν ὅσῳ οἰοίμην καὶ αὐτὸς βελτίων εἶναι καὶ τοὺς ἑπομένους βελτίονας ἔχειν, τοσῷδ' ἂν μᾶλλον φυλαττοίμην, ὥσπερ καὶ τὰ ἄλλα, [ἃ] ἂν οἰώμεθα πλείστου ἄξια ἡμῖν εἶναι, ταῦτα πειρώμεθα ὡς ἐν ἐχυρωτάτῳ ποιεῖσθαι. Πλέον δ' ἔχειν, ὦ πάτερ, πολεμίων, πῶς ἄν τις δύναιτο [μάλιστα; Οὐ μὰ Δία, ἔφη,] οὐκέτι τοῦτο, ὦ παῖ, φαῦλον οὐδὲ ἁπλοῦν ἔργον ἐρωτᾷς· ἀλλ' εὖ ἴσθι ὅτι δεῖ τὸν μέλλοντα τοῦτο ποιήσειν καὶ ἐπίβουλον εἶναι καὶ κρυψίνουν [καὶ δολερὸν] καὶ ἀπατεῶνα καὶ κλέπτην καὶ ἅρπαγα καὶ ἐν παντὶ πλεονέκτην τῶν πολεμίων. Καὶ ὁ Κῦρος ἐπιγελάσας εἶπεν· ὦ Ἡράκλεις, οἷον αὖ λέγεις, ὦ πάτερ, δεῖν ἄνδρα με γενέσθαι; Οἷος ἄν, ἔφη, ὦ παῖ, δικαιότατός τε καὶ ἐννομώτατος ἀνὴρ

εἴη. Πῶς μήν, ἔφη, παῖδας ὄντας ἡμᾶς [καὶ ἐφήβους] ἐναντία τούτων ἐδιδάσκετε; Ναὶ μὰ Δί᾽, ἔφη, καὶ νῦν γε πρὸς τοὺς φίλους τε καὶ τοὺς πολίτας.

76 Ξενοφῶντος ἐν γʹ (9, 10) ἀπομνημονευμάτων.

Βασιλεῖς δὲ καὶ ἄρχοντας οὐ τοὺς τὰ σκῆπτρα ἔχοντας ἔφη εἶναι, οὐδὲ τοὺς ὑπὸ τῶν τυχόντων αἱρεθέντας οὐδὲ τοὺς κλήρῳ λαχόντας, οὐδὲ τοὺς βιασαμένους οὐδὲ τοὺς ἐξαπατήσαντας, ἀλλὰ τοὺς ἐπισταμένους ἄρχειν. ὁπότε γάρ τις ὁμολογήσειε τοῦ μὲν ἄρχοντος εἶναι τὸ προστάττειν ὅ τι χρὴ ποιεῖν, τοῦ δὲ ἀρχομένου τὸ πείθεσθαι, ἐπεδείκνυεν ἔν τε νηὶ τὸν μὲν ἐπιστάμενον ἄρχοντα, τὸν δὲ ναύκληρον καὶ τοὺς ἄλλους τοὺς ἐν τῇ νηὶ πάντας πειθομένους τῷ ἐπισταμένῳ· καὶ ἐν γεωργίᾳ τοὺς κεκτημένους ἀγρούς, καὶ ἐν νόσῳ τοὺς νοσοῦντας, καὶ ἐν σωμασκίᾳ τοὺς σωμασκοῦντας, καὶ τοὺς ἄλλους πάντας οἷς ὑπάρχει τι ἐπιμελείας δεόμενον, ἂν μὲν αὐτοὶ ἡγῶνται ἐπίστασθαι, ἐπιμελεῖσθαι· εἰ δὲ μή, τοῖς ἐπισταμένοις οὐ μόνον παροῦσι πειθομένους, ἀλλὰ καὶ ἀπόντας μεταπεμπομένους, ὅπως ἐκείνοις πειθόμενοι τὰ δέοντα πράττωσιν· ἐν δὲ ταλασίᾳ καὶ τὰς γυναῖκας ἐπεδείκνυεν ἀρχούσας τῶν ἀνδρῶν διὰ τὸ τὰς μὲν εἰδέναι ὅπως χρὴ ταλασιουργεῖν, τοὺς δὲ μὴ εἰδέναι. εἰ δέ τις πρὸς ταῦτα λέγοι, ὅτι τῷ τυράννῳ ἔξεστι μὴ πείθεσθαι τοῖς ὀρθῶς λέγουσι, καὶ πῶς ἄν, ἔφη, ἐξείη μὴ πείθεσθαι, ἐπικειμένης γε ζημίας, ἐάν τις τῷ εὖ λέγοντι μὴ πίθηται; ἐν ᾧ γὰρ ἄν τις πράγματι μὴ πίθηται τῷ εὖ λέγοντι ἁμαρτήσεται δήπου, ἁμαρτάνων δὲ ζημιωθήσεται. εἰ δὲ φαίη τις τῷ τυράννῳ ἐξεῖναι καὶ ἀποκτεῖναι τὸν εὖ φρονοῦντα, τὸν δὲ

χοντα δεῖ τοῦ ἡλίου πλεονεκτοῦντα [φα ν
ἦν δὲ χειμών, τοῦ ψύχους· ἦν δὲ δέ ό-
πόνων· πάντα γὰρ ταῦτα εἰς τὸ σ τα
ἀρχομένων συλλαμβάνει. Λέγει
ὡς καὶ καρτερὸν δεῖ πρὸς πάντ
χομένων μᾶλλον εἶναι. Ἐγὼ
μέντοι, ἔφη, ὦ παῖ· εὖ
ὁμοίων σωμάτων οἱ αὐτοὶ
ἄρχοντός τε ἀνδρὸς καὶ
τι ἡ τιμὴ τοὺς πόνους πόλει,
ναι, ὅτι οὐ λανθάν ν νόμοι
ὦ πάτερ, ἤδη ἔχοι ον κεκτημένος.
ὑγιαίνοιεν δέ, π ι (621).
τέχνας ἠσκηκότ ῆς πάλαι θρυλουμένης
ἀγαθοὶ φαίνε ἡδύ, τὰν δόμοισι δὲ
τοῦ ἀπειθεῖ γὰρ μακάριος, τίς εὐτυχής,
τις σοι δο ως καὶ περιβλέπων βίον
πολεμίου ει; δημότης ἂν εὐτυχὴς
πλέον ἔ θέλοιμι μᾶλλον ἢ τύραννος ὤν,
τὸς βε ς πονηροὺς ἡδονὴ φίλους ἔχειν,
τοσ ς δὲ μισεῖν, κατθανεῖν φοβουμένους.
[ἄ

ρ Εὐριπίδου Αὔγῃ.

Κακῶς δ' ὄλοιντο πάντες, οἳ τυραννίδι
χαίρουσιν ὀλίγῃ τ' ἐν πόλει μοναρχίᾳ.
τοὐλεύθερον γὰρ ὄνομα παντὸς ἄξιον,
κἂν μίκρ' ἔχῃ τις, μεγάλ' ἔχειν νομίζεται.

4 Εὐριπίδου Ἠλέκτρα (?).

Ἡ γὰρ τυραννὶς πάντοθεν τοξεύεται
δεινοῖς ἔρωσιν, ἧς φυλακτέον πέρι.

5 Εὐριπίδου Ἀντιγόνης.

...κὸς ἄρχειν οὔτ' ἐχρῆν εἶναι νόμον
... μωρία δὲ καὶ θέλειν
...ύλεται κρατεῖν μόνος.

...κμαίωνος.
...μεγάλα καὶ πάσχει κακά.

...
...υμαστὸν βροτοῖς
...λιώτερον.
...κατακτανεῖν χρεών,
...εστι μὴ δράσωσί τι.

...ου Ἀσπίδος.
Ὦ τρισάθλιοι,
... ἔχειν τῶν ἄλλων ζητοῦσι· βίον
...κτρὸν ἐξαντλοῦσιν οἱ τὰ φρούρια
...ηροῦντες, οἱ τὰς ἀκροπόλεις κεκτημένοι,
εἰ πάντας ὑπονοοῦσιν οὕτω ῥᾳδίως
ἐγχειρίδιον ἔχοντας αὐτοῖς προσιέναι,
οἵαν δίκην διδόασιν;

9 ***Διονυσίου τυράννου.***
Ἡ γὰρ τυραννὶς ἀδικίας μήτηρ ἔφυ.

10 *Σοφοκλέους Οἰδίποδι* (Τ. 380).
Ὦ πλοῦτε καὶ τυραννί, καὶ τέχνη τέχνης
ὑπερφέρουσα τῷ πολυζήλῳ βίῳ,
ὅσος παρ' ὑμῖν ὁ φθόνος φυλάσσεται.

11 *Ἐν ταυτῷ* (873).
Ὕβρις φυτεύει τύραννον,
ὕβρις, εἰ πολλῶν ὑπερπλησθῇ μάταν.

12 *Σοφοκλέους Αἴαντι* (1350).
Τόν τοι τύραννον εὐσεβεῖν οὐ ῥᾴδιον.

ἀποκτείναντα, ἔφη, τοὺς κρατίστους τῶν συμμάχων οἴει ἀζήμιον γίγνεσθαι ἢ ὡς ἔτυχε ζημιοῦσθαι; πότερα γὰρ ἂν μᾶλλον οἴει σώζεσθαι τὸν τοῦτο ποιοῦντα ἢ οὕτως καὶ τάχιστ᾽ ἂν ἀπολεῖσθαι;

ΨΟΓΟΣ ΤΥΡΑΝΝΙΔΟΣ. ΜΘ.

1 *Εὐριπίδου Ἱκετίσιν* (429).

Οὐδὲν τυράννου δυσμενέστερον πόλει,
ὅπου τὸ μὲν πρώτιστον οὐκ εἰσὶν νόμοι
κοινοί, κρατεῖ δ᾽ εἷς τὸν νόμον κεκτημένος.

2 *Εὐριπίδου Ἴωνι* (621).

Τυραννίδος δὲ τῆς πάλαι θρυλουμένης
τὸ μὲν πρόσωπον ἡδύ, τἀν δόμοισι δὲ
λυπηρά. τίς γὰρ μακάριος, τίς εὐτυχής,
ὅστις δεδοικὼς καὶ περιβλέπων βίον
αἰῶνα τείνει; δημότης ἂν εὐτυχὴς
ζῆν ἂν θέλοιμι μᾶλλον ἢ τύραννος ὤν,
οἷς τοὺς πονηροὺς ἡδονὴ φίλους ἔχειν,
ἐσθλοὺς δὲ μισεῖν, κατθανεῖν φοβουμένους.

3 *Εὐριπίδου Αὔγῃ.*

Κακῶς δ᾽ ὄλοιντο πάντες, οἳ τυραννίδι
χαίρουσιν ὀλίγῃ τ᾽ ἐν πόλει μοναρχίᾳ.
τοὐλεύθερον γὰρ ὄνομα παντὸς ἄξιον,
κἂν μίκρ᾽ ἔχῃ τις, μεγάλ᾽ ἔχειν νομίζεται.

4 *Εὐριπίδου Ἠλέκτρᾳ* (?).

Ἡ γὰρ τυραννὶς πάντοθεν τοξεύεται
δεινοῖς ἔρωσιν, ἧς φυλακτέον πέρι.

5 *Εὐριπίδου Ἀντιγόνης.*

Οὔτ' εἰκὸς ἄρχειν οὔτ' ἐχρῆν εἶναι νόμον
τύραννον εἶναι, μωρία δὲ καὶ θέλειν
ὃς τῶν ὁμοίων βούλεται κρατεῖν μόνος.

6 Εὐριπίδου Ἀλκμαίωνος.
Φεῦ φεῦ, τὰ μεγάλα μεγάλα καὶ πάσχει κακά.

7 Εὐριπίδου Πελιάδων.
Τὸ δ' ἔσχατον δὴ τοῦτο θαυμαστὸν βροτοῖς
τυραννίς, οὐχ εὕροις ἂν ἀθλιώτερον.
φίλους τε πορθεῖν καὶ κατακτανεῖν χρεών,
πλεῖστος φόβος πρόσεστι μὴ δράσωσί τι.

8 Μενάνδρου Ἀσπίδος.
Ὦ τρισάθλιοι,
οἳ πλέον ἔχειν τῶν ἄλλων ζητοῦσι· βίον
ὡς οἰκτρὸν ἐξαντλοῦσιν οἱ τὰ φρούρια
τηροῦντες, οἱ τὰς ἀκροπόλεις κεκτημένοι,
εἰ πάντας ὑπονοοῦσιν οὕτω ῥᾳδίως
ἐγχειρίδιον ἔχοντας αὐτοῖς προσιέναι,
οἵαν δίκην διδόασιν;

9 Διονυσίου τυράννου.
Ἡ γὰρ τυραννὶς ἀδικίας μήτηρ ἔφυ.

10 Σοφοκλέους Οἰδίποδι (T. 380).
Ὦ πλοῦτε καὶ τυραννί, καὶ τέχνη τέχνης
ὑπερφέρουσα τῷ πολυζήλῳ βίῳ,
ὅσος παρ' ὑμῖν ὁ φθόνος φυλάσσεται.

11 Ἐν ταυτῷ (873).
Ὕβρις φυτεύει τύραννον,
ὕβρις, εἰ πολλῶν ὑπερπλησθῇ μάταν.

12 Σοφοκλέους Αἴαντι (1350).
Τόν τοι τύραννον εὐσεβεῖν οὐ ῥᾴδιον.

13 *Τοῦ αὐτοῦ Πολυξένῃ.*

Οὐ γάρ τις ἂν δύναιτο πρωρατὴς στρατοῦ
τοῖς πᾶσι δεῖξαι καὶ προσαρκέσαι χάριν,
ἐπεὶ οὐδ' ὁ κρείσσων Ζεὺς ἐμοῦ τυραννίδι
οὔτ' ἐξεπομβρῶν οὔτ' ἐπαυχμήσας φίλος,
βροτοῖς δ' ἂν ἐλθὼν ἐς λόγον δίκην ὄφλοι.
πῶς δῆτ' ἐγὼ θνητός γ' ἂν ἐκ θνητῆς τε φὺς
Διὸς γενοίμην εὖ φρονεῖν σοφώτερος;

14 *Φαβωρίνου.*

Ὥσπερ γὰρ τὰ θηρία τὴν σαγήνην ὑποχωροῦντ' ἀεὶ εἰς ἐλάττω τόπον συνάγεται, οὕτω δὲ καὶ τοὺς τυράννους ἔστιν ἰδεῖν ἐπαναχωροῦντας ἐκ μὲν τῆς Ἑλλάδος εἰς τὴν πόλιν, ἐκ δὲ τῆς πόλεως εἰς τὴν ἀκρόπολιν, εἶτ' εἰς τὴν οἰκίαν, εἶτ' εἰς τὸ δωμάτιον. εἶτα δύναται ἀποφυγεῖν ἄνθρωπος θεὸν φεύγων; ὅποι γὰρ ἂν καταφύγῃ, ἡ δίκη αὐτὸν εὑρήσει.

15 *Δημοσθένους ἐκ τῶν Φιλιππικῶν ά* (p. 10, 20).

Καὶ ὅλως ἄπιστον οἶμαι ταῖς πολιτείαις ἡ τυραννίς.

16 *Ἐκ τῆς Φαλάριδος πρὸς Δημοτέλη ἐπιστολῆς* (81).

Συγγνώμην ἔχω σοι τῶν παραινέσεων· τύραννος γὰρ οὐ γεγονὼς τυράννῳ συμβουλεύεις καταθέσθαι τὴν τυραννίδα, οὐκ εἰδὼς ὅτι τοῦ κτήσασθαι τὴν ἀρχὴν ἐπισφαλέστερόν ἐστι τὸ καταθέσθαι.

17 *Ἀναξιμένους.*

Ἀναξιμένης ὁ Λαμψακηνὸς ῥήτωρ ἐρωτηθεὶς ὑπὸ τοῦ βασιλέως Φαίδρου τί ἀκοινώνητόν ἐστιν, εἶπε "τυραννίς."

18 *Ἀριστίππου.*

Ἀρίστιππος ὁ Κυρηναῖος φιλόσοφος τοσοῦτον ἔφη διαφέρειν βασιλείαν τυραννίδος, ὅσον νόμος ἀνομίας καὶ ἐλευθερία δουλείας.

19 *Φιλιππίδου.*

Λυσίμαχος ὁ τύραννος πρὸς Φιλιππίδην τὸν κωμῳδιοποιὸν φίλον ὄντα καὶ συνήθη "τίνος σοὶ" εἶπε "μεταδῶ;" κἀκεῖνος "οὗ βούλει πλὴν τῶν ἀπορρήτων."

20 *Ἀντιγόνου.*

Ἀντίγονος πρός τινα μακαρίζουσαν αὐτὸν γραῦν "εἰ ᾔδεις" ἔφη "ὦ μῆτερ, ὅσων κακῶν μεστόν ἐστι τουτὶ τὸ ῥάκος" δείξας τὸ διάδημα "οὐκ ἂν ἐπὶ κοπρίας αὐτὸ κείμενον ἐβάστασας."

21 *Πτολεμαίου.*

Πτολεμαῖος ὁ ἐπικληθεὶς φιλάδελφος ἔλεγε την τυραννίδα ἄλλα τε πολλὰ δύσκολα ἔχειν καὶ τὸ μέγιστον τὸ ἀναγκάζεσθαι τοὺς μηθὲν ἀδικοῦντας κτείνειν τοῦ συμφέροντος εἵνεκα.

22 *Ἀριστίππου.*

Τοῦ Διονυσίου λέγοντος πρὸς Ἀρίστιππον "οὐδὲν ὠφέλημαι ὑπὸ σοῦ," "ἀληθῆ λέγεις" εἶπεν· "εἰ γὰρ ὠφελήσο, πέπαυσο ἂν τῆς τυραννίδος ὥσπερ ἱερᾶς νόσου."

23 *Δημοσθένους Φιλιππικῶν* (p. 72, 2).

Βασιλεὺς γὰρ καὶ τύραννος ἅπας ἐχθρὸν ἐλευθερίᾳ καὶ νόμοις ἐναντίον.

24 *Αἰλιανοῦ* (VH. 10, 5).

Φρύγιος οὗτος ὁ λόγος· ἔστι γὰρ Αἰσώπου τοῦ Φρυγός. ὁ δὲ λόγος φησὶ τὴν ὗν, ἐὰν αὐτῆς τις ἅψηται, βοᾶν· καὶ μάλα γε εἰκότως· οὔτε γὰρ ἔρια ἔχει

ὗς οὔτε γάλα οὔτε ἄλλο τι πλὴν τῶν κρεῶν. παραχρῆμα οὖν ὀνειροπολεῖν τὸν θάνατον εἰδυῖαν εἰς ὅ τι τοῖς χρησομένοις αὐτὴ πέφυκε λυσιτελὴς εἶναι. ἐοίκασι δὲ τῇ ὑὶ τῇ Αἰσώπου οἱ τύραννοι ὑποπτεύοντες καὶ δεδοικότες πάντα· ἴσασι γὰρ ὅτι ὥσπερ οὖν αἱ ὗς, ὀφείλουσι καὶ ἐκεῖνοι τὴν ψυχὴν πᾶσι.

25 **Ἰσοκράτης Νικοκλεῖ** (ad Nicocl. 1).

Τοὺς μὲν ἰδιώτας ἔστι πολλὰ τὰ παιδεύοντα· καὶ μάλιστα μὲν τὸ μὴ τρυφᾶν, ἀλλ' ἀναγκάζεσθαι περὶ τοῦ βίου καθ' ἑκάστην βουλεύεσθαι τὴν ἡμέραν· ἔπειθ' οἱ νόμοι καθ' οὓς ἕκαστοι πολιτευόμενοι τυγχάνουσιν· ἔτι δὲ ἡ παρρησία, καὶ τὸ μὴ φανερῶς ἐξεῖναι τοῖς φίλοις ἐπιπλῆξαι, καὶ τοῖς ἐχθροῖς ἐπιθέσθαι ταῖς ἀλλήλων ἁμαρτίαις· πρὸς δὲ τούτοις καὶ τῶν ποιητῶν τινες τῶν προγεγενημένων ὑποθήκας ὡς χρὴ ζῆν καταλελοίπασιν, ὥστ' ἐξ ἁπάντων τούτων εἰκὸς αὐτοὺς βελτίους γίγνεσθαι. τοῖς δὲ τυράννοις οὐδὲν ὑπάρχει τοιοῦτον· ἀλλ' οὓς μᾶλλον ἔδει τῶν ἄλλων παιδεύεσθαι, ἐπειδὰν εἰς τὴν ἀρχὴν κατασταθῶσιν, ἀνουθέτητοι διατελοῦσιν. οἱ μὲν γὰρ πλεῖστοι τῶν ἀνθρώπων αὐτοῖς οὐ πλησιάζουσιν, οἱ δὲ συνόντες πρὸς χάριν ὁμιλοῦσιν.

26 **Φαλάριδος ἐκ τῆς πρὸς Παυρόλαν τὸν υἱὸν ἐπιστολῆς.**

Ὁ γὰρ ἀμφοτέρων πεπειραμένος τυραννηθῆναι μᾶλλον εὐξαίμην ἂν ἢ τυραννῆσαι. ὁ μὲν γὰρ ἕνα φοβεῖται τῶν ἄλλων χαλεπῶν ἀπηλλαγμένος τὸν τύραννον· ὁ τύραννος δὲ τοὺς ἔξωθεν ἐπιβουλεύοντας καὶ δι' οὓς σώζεται.

27 **Ἐκ τῶν Διογένους διατριβῶν** (Dio Chrys. p. 95).

Δοκεῖ δὲ τοῖς μὲν εὖ πράττουσι τῶν ἀνθρώπων ὁ μὲν βίος ἀμείνων, ὁ δὲ θάνατος διὰ τοῦτο λυπηρότερος· οἱ δ' αὖ κακῶς ζῶντες τὸν μὲν βίον δυσχερέστερον φέρουσι, τὸν δὲ θάνατον ἥδιον προσδέχονται. τοῖς δὲ τυράννοις ἀμφότερα ταῦτα χαλεπώτερα ἢ τοῖς ἄλλοις· ζῶσι μὲν γὰρ πολὺ ἀηδέστερον τῶν πάνυ ἐπιθυμούντων τεθνάναι, τὸν δὲ θάνατον οὕτω δεδοίκασιν, ὡς ἥδιστα διάγοντες ἐν τῷ βίῳ.

28 [Ἡροδότου.

Τυραννὶς χρῆμα σφαλερόν, πολλοὶ δὲ αὐτῆς ἐρασταί εἰσιν.]

29 Ἡροδότου ἱστορίας τρίτης (80) δημηγορίας Ὀτάνου.

Πῶς δ' ἂν εἴη χρῆμα κατηρτημένον μουναρχίη, τῇ ἔξεστιν ἀνευθύνῳ ποιεῖν τὰ βούλεται; καὶ γὰρ ἂν τὸν ἄριστον ἀνδρῶν πάντων στάντα ἐς ταύτην τὴν ἀρχὴν ἐκτὸς τῶν ἐωθότων νοημάτων στήσειεν. ἐγγίνεται μὲν γάρ οἱ ὕβρις ὑπὸ τῶν παρόντων ἀγαθῶν· φθόνος δὲ ἀρχῆθεν ἐμφύεται ἀνθρώπῳ. δύο δ' ἔχων ταῦτα ἔχει πᾶσαν κακότητα. τὰ μὲν γὰρ ὕβρι κεκορημένος ἔρδει πολλὰ καὶ ἀτάσθαλα, τὰ δὲ φθόνῳ. καίτοι ἄνδρα γε τύραννον ἄφθονον ἔδει εἶναι ἔχοντά γε πάντα τὰ ἀγαθά· τὸ δὲ ὑπεναντίον τούτου ἐς τοὺς πολιήτας πέφυκε. φθονέει γὰρ τοῖσιν ἀρίστοισι περιεοῦσί τε καὶ ζώουσι, χαίρει δὲ τοῖσι κακίστοισι τῶν ἀστῶν· διαβολὰς δὲ ἄριστον ἐνδέκεσθαι, ἀναρμοστότατον πάντων· ἤν τε γὰρ αὐτὸν μετρίως θαυμάζῃς, ἄχθεται ὅτι οὐ κάρτα θεραπεύεται· ἤν τε θεραπεύῃ τις κάρτα, ἄχθεται ἅτε θωπί. τὰ δὲ δὴ μέγιστα ἔρχομαι ἐρέων, νόμαιά τε κινεῖ πάτρια καὶ βιᾶται γυναῖκας κτείνει τε ἀκρίτους. πλῆθος δὲ ἄρ-

χου πρῶτα μὲν ὄνομα πάντων κάλλιστον ἔχει, ἰσονομίην· δεύτερα δὲ τούτων τῶν ὁ μούναρχος ποιέει οὐδέν· πάλῳ μὲν [γὰρ] ἀρχὰς ἄρχει, ὑπεύθυνον δὲ ἀρχὴν ἔχει, βουλεύματα δὲ πάντα ἐς τὸ κοινὸν ἀναφέρει. τίθεμαι οὖν γνώμην μεθέντας ἡμέας μουναρχίην τὸ πλῆθος ἀέξειν· ἐν γὰρ τῷ πολλῷ ἔνι τὰ πάντα.

30 Ξενοφῶντος ἐκ τοῦ Ἱέρωνος (in.).

Σιμωνίδης ὁ ποιητὴς ἀφίκετό ποτε πρὸς Ἱέρωνα τὸν τύραννον, σχολῆς δὲ γενομένης ἀμφοῖν εἶπεν ὁ Σιμωνίδης· Ἆρ' ἄν μοι ἐθελήσαις, ὦ Ἱέρων, διηγήσασθαι ἃ εἰκὸς εἰδέναι σε βέλτιον ἐμοῦ; Καὶ ποῖα ταῦτ' ἐστίν, ἔφη ὁ Ἱέρων, ὁποῖ' ἂν ἐγὼ βέλτιον εἰδείην σου οὕτως ὄντος σοφοῦ ἀνδρός; Οἶδά σε, ἔφη, ἐγὼ καὶ ἰδιώτην γεγενημένον καὶ νῦν τύραννον ὄντα· εἰκὸς οὖν ἀμφοτέρων πεπειραμένον καὶ εἰδέναι σε μᾶλλον ἐμοῦ, πῇ διαφέρει ὁ τυραννικός τε καὶ ἰδιωτικὸς βίος εἰς εὐφροσύνας τε καὶ λύπας ἀνθρώπων. Τί οὖν, ἔφη ὁ Ἱέρων, οὐχὶ [καὶ] σύ, ἐπεὶ νῦν ἔτι ἰδιώτης εἶ, ὑπομνήσειάς με τὰ ἐν τῷ ἰδιωτικῷ βίῳ; οὕτω γὰρ ἄν σοι οἶμαι μάλιστα ἐγὼ δύνασθαι δηλοῦν τὰ διαφέροντα ἐν ἑκατέρῳ. Οὕτω δὴ ὁ Σιμωνίδης εἶπε· Τοὺς μὲν δὴ ἰδιώτας ἔγωγε, ὦ Ἱέρων, δοκῶ μοι καταμεμαθηκέναι, διὰ μὲν τῶν ὀφθαλμῶν ὁράμασιν ἡδομένους τε καὶ ἀχθομένους, διὰ δὲ τῶν ὤτων ἀκούσμασι, διὰ δὲ τῶν ῥινῶν ὀσμαῖς, διὰ δὲ τοῦ στόματος σίτοις καὶ ποτοῖς, τὰ δὲ ἀφροδίσια δι' ὧν δὴ πάντες ἐπιστάμεθα, τὰ δὲ ψύχη καὶ θάλπη καὶ σκληρὰ καὶ στρυφνὰ καὶ μαλθακὰ καὶ βαρέα καὶ κοῦφα, ὅλῳ τῷ σώματί μοι δοκοῦμεν, ἔφη, κρίνοντες καὶ ἥδεσθαι καὶ λυπεῖσθαι ἐπ' αὐτοῖς ἀγα-

θοῖς τε καὶ κακοῖς. ἔστι μὲν ὅτε δι' αὐτῆς τῆς ψυχῆς μοι δοκοῦμεν ἥδεσθαί τε καὶ λυπεῖσθαι, ἔστι δὲ ὅτε κοινῇ διὰ τῆς ψυχῆς καὶ τοῦ σώματος. τῷ δὲ ὕπνῳ ὅτι μὲν ἡδόμεθα δοκῶ αἰσθάνεσθαι, ὅπως δὲ καὶ ᾧτινι καὶ ὁπότε,ταῦτα μᾶλλον πως, ἔφη, δοκῶ μοι ἀγνοεῖν. καὶ οὐδὲν δὴ ἴσως τοῦτο θαυμαστόν, εἰ τὰ ἐν τῷ ἐγρηγορέναι σαφεστέρας ἡμῖν τὰς αἰσθήσεις παρέχεται ἢ τὰ ἐν τῷ ὕπνῳ. Πρὸς ταῦτα δὴ ὁ Ἱέρων ἀπεκρίνατο· Ἐγὼ μὲν τοίνυν, ἔφη, ὦ Σιμωνίδη, ἔξω τούτων ὧν εἴρηκας σύ, οὐδ' ὅπως ἂν αἴσθοιτό τινος [ἄλλου] ὁ τύραννος ἔχοιμ' ἂν εἰπεῖν· ὥστε μέχρι γε τούτων οὐκ οἶδα ὅ τι διαφέρει ὁ τυραννικὸς τοῦ ἰδιωτικοῦ βίου. Καὶ ὁ Σιμωνίδης εἶπεν· Ἀλλὰ ἐν μὲν τοῖσδε διαφέροι ἄν, εἰ πολλαπλάσια μὲν δι' ἑκάστου τούτων εὐφραίνεται,πολὺ δὲ μείω τὰ λυπηρὰ ἔχει. Καὶ ὁ Ἱέρων εἶπεν, Οὐχ οὕτως ἔχει ταῦτα· ἀλλ' εὖ ἴσθι ὅτι πολὺ μείω εὐφραίνονται οἱ τύραννοι τῶν μετρίως διαγόντων ὑπηρετῶν, πολὺ δὲ πλείω καὶ μείζω λυποῦνται. Ἄπιστα, ἔφη, λέγεις, ὁ Σιμωνίδης. εἰ γὰρ οὕτω ταῦτα εἶχε, πῶς ἂν πολλοὶ μὲν ἐπεθύμουν τυραννεῖν καὶ ταῦτα τῶν δοκούντων ἱκανωτάτων ἀνδρῶν εἶναι; πῶς δὲ πάντες ἐζήλουν ἂν τοὺς τυράννους; Ὅτι ναὶ μὰ Δί', ἔφη ὁ Ἱέρων, ἄπειροι ὄντες ἀμφοτέρων τῶν ἔργων σκοποῦνται περὶ αὐτοῦ. ἐγὼ δὲ πειράσομαί σε διδάσκειν, ὡς ἀληθῆ λέγω.

31 Πρῶτον μὲν γὰρ ἐν τοῖς διὰ τῆς ὄψεως θεάμασιν εὑρίσκω λογιζόμενος μειονεκτοῦντας τοὺς τυράννους. ἄλλα μέν γε ἐν ἄλλῃ χώρᾳ ἐστὶν ἀξιοθέατα· ἐπὶ δὲ τούτων ἕκαστα οἱ μὲν ἰδιῶται ἔρχονται καὶ εἰς πόλεις ἃς ἂν βούλωνται, θεαμάτων ἕνεκα, καὶ ἐς τὰς κοινὰς πανηγύρεις. οἱ δὲ τύραννοι οὐ μάλα ἀμφὶ θεωρίας ἔχουσιν· οὔτε γὰρ ἰέναι αὐτοῖς ἀσφαλές.

32 *Ἀλλ' ἄρα ἔρχεται αὐτοῖς τὰ τοιαῦτα, καὶ οἴκοι μένουσιν. [Ναὶ μὰ Δία, ὦ Σιμωνίδη,] ὀλίγα γε τῶν πολλῶν· καὶ ταῦτα τοιαῦτα ὄντα, οὕτω τίμια πωλεῖται τοῖς τυράννοις. Καὶ ὁ Σιμωνίδης εἶπεν· Ἀλλὰ εἰ ἐν τοῖς θεάμασι μειονεκτεῖτε, ἐν ταῖς ἀκοαῖς πλεονεκτεῖτε· ἐπειδὴ τοῦ μὲν ἡδίστου ἀκροάματος, ἐπαίνου, οὔ ποτε σπανίζετε· πάντες γὰρ οἱ παρόντες πάντα καὶ ὅσα ἂν λέγητε καὶ ὅσα ἂν ποιῆτε ἐπαινοῦσι· τοῦ δ' αὖ χαλεπωτάτου ἀκροάματος, λοιδορίας, ἀνήκοοι ἐστέ· οὐδεὶς γὰρ ἐθέλει τυράννου κατ' ὀφθαλμοὺς κατηγορεῖν. Καὶ ὁ Ἱέρων εἶπε· Καὶ τί οἴει, ἔφη, τοὺς μὴ λέγοντας κακῶς εὐφραίνειν; ὅταν εἰδῇ τις σαφῶς, ὅτι οἱ σιωπῶντες οὗτοι πάντα κακὰ νοοῦσι τῷ τυράννῳ. ἢ τοὺς ἐπαινοῦντάς τι δοκεῖς εὐφραίνειν, ὅταν ὕποπτοι ὦσιν ἕνεκα τοῦ κολακεύειν τοὺς ἐπαίνους ποιούμενοι; Καὶ ὁ Σιμωνίδης εἶπε· Συγχωρῶ τοὺς ἐπαίνους παρὰ τῶν ἐλευθεριωτάτων ἡδίστους εἶναι. ἀλλ' ὁρᾷς; ἐκεῖνο οὐκ ἂν ἔτι πείσαις οὐδένα ἀνθρώπων, ὡς οὐχὶ δι' ὧν τρεφόμεθα οἱ ἄνθρωποι, πολὺ πλείω ὑμεῖς ἐν αὐτοῖς εὐφραίνοισθε. Καὶ οἶδά γε, ἔφη, ὦ Σιμωνίδη, ὅτι τοῦτο κρίνουσιν οἱ πλεῖστοι ἥδιον ἡμᾶς καὶ ἐσθίειν καὶ πίνειν τῶν ἰδιωτῶν.*

33 Τὸ γὰρ εἰωθότα ὑπερβάλλον, τοῦτο παρέχει τὰς ἡδονάς. διὸ καὶ πάντες ἄνθρωποι τὰς ἑορτὰς ἡδέως προσδέχονται, πλὴν οἱ τύραννοι· ἔκπλεῳ γὰρ αὐτοῖς ἀεὶ παρεσκευασμέναι, οὐδεμίαν ἐν ταῖς ἑορταῖς ἔχουσιν αἱ τράπεζαι αὐτῶν ἐπίδοσιν· ὥστε ταύτῃ πρῶτον τῇ εὐφροσύνῃ τῆς ἐλπίδος μειονεκτοῦσιν. ἔπειτα δέ, ἔφη, ἐκείνου εὖ οἶδ' ὅτι καὶ σὺ ἔμπειρος εἶ, ὅτι ὅσῳ ἂν πλείω παραθῆτε τὰ περισσὰ τῶν ἱκανῶν,

τοσούτῳ καὶ θᾶσσον κόρος ἐμπίπτει τῆς ἐδωδῆς· ὥστε καὶ τῷ χρόνῳ τῆς ἐδωδῆς μειονεκτεῖ ὁ πολλὰ παρατιθέμενος τῶν μετρίως διαιτωμένων. Ἀλλὰ ναὶ μὰ Δί', ἔφη ὁ Σιμωνίδης, ὅσον ἂν χρόνον ἡ ψυχὴ προσίηται, τοῦτον πολὺ μᾶλλον ἥδονται οἱ ταῖς πολυτελεστέραις παρασκευαῖς τρεφόμενοι. Οὐκ οὖν, ἔφη ὁ Ἱέρων, [ὦ Σιμωνίδη, τὸν ἑκάστῳ ἡδόμενον, μάλιστα τοῦτον οἴει καὶ ἐρωτικώτατα ἔχειν τοῦ ἔργου τούτου; Πάνυ μὲν οὖν, ἔφη. Ἦ οὖν] ὁρᾷς τι [καὶ] τοὺς τυράννους ἥδιον ἐπὶ τὴν αὐτῶν παρασκευὴν ἰόντας ἢ τοὺς ἰδιώτας; Οὐ μὰ τὸν Δί', ἔφη, οὐ μὲν δή.

34 Ἀλλὰ τί οὖν, ἔφη ὁ Ἱέρων, οἴει ταῦτα ζητήματα εἶναι, ἢ ἅμα κακῆς καὶ ἀσθενοῦς τῆς ψυχῆς [τροφῆς] ἐπιθυμήματα; ἐπεὶ εὖ οἶδ' ἔγωγε, ὅτι οἱ ἡδέως ἐσθίοντες, καὶ σύ που οἶσθα, ὅτι οὐδὲν προσδέονται τούτων τῶν σοφισμάτων. Ἀλλὰ μέντοι, ἔφη ὁ Σιμωνίδης, τῶν γε πολυτελῶν τούτων ὀσμῶν αἷς χρίεσθε τοὺς πλησιάζοντας μᾶλλον οἶμαι ἀπολαύειν ἢ αὐτοὺς ὑμᾶς· ὥσπερ γε καὶ τῶν ἀχαρίστων ὀσμῶν οὐκ αὐτὸς ὁ βεβρωκὼς αἰσθάνεται, ἀλλὰ μᾶλλον οἱ πλησιάζοντες. Οὕτω μέν τοι, ἔφη ὁ Ἱέρων, καὶ τῶν σίτων ὁ μὲν ἔχων παντοδαπὰ ἀεί, οὐδὲν μετὰ πόθου αὐτῶν λαμβάνει· ὁ δὲ σπανίσας τινός, οὗτός ἐστιν ὁ καὶ χαρμονῆς ἐμπιπλάμενος, ὅταν αὐτῷ προσεπιφανῇ τι. Κινδυνεύουσιν, ἔφη ὁ Σιμωνίδης, αἱ τῶν ἀφροδισίων μόνον ὑμῖν ἀπολαύσεις τοῦ τυραννεῖν τὰς ἐπιθυμίας παρέχειν· ἐν γὰρ τούτῳ ἔξεστιν ὑμῖν, ὅ τι ἂν κάλλιστον ἴδητε, τούτῳ συνεῖναι. Νῦν γε, ἔφη ὁ Ἱέρων, εἴρηκας ἐν ᾧ δὴ πλεῖστον μειονεκτοῦμεν.

35 Ὅτι μὲν γὰρ τὰ μετ' ἔρωτος ἀφροδίσια πολὺ διαφερόντως εὐφραίνει, πάντες δήπου ἐπιστάμεθα·

ὁ δὲ ἔρως πολὺ ἥκιστα ἐθέλει τυράννῳ ἐμφύεσθαι. οὐ γὰρ τῶν ἑτοίμων ἥδεται ὁ ἔρως ἐφιέμενος, ἀλλὰ τῶν ἐλπιζομένων. ὥσπερ οὖν εἴ τις ἄπειρος ὢν δίψης τοῦ πιεῖν ἀπολαύοι, οὕτω καὶ ὁ ἄπειρος ὢν ἔρωτος, ἄπειρός ἐστι τῶν ἡδίστων ἀφροδισίων.

36 Ἀλλ' ἐν ἐκείνοις γε, ἔφη ὁ Σιμωνίδης, πολὺ διαφέρετε τῶν ἰδιωτῶν, ὅτι μεγάλα μὲν ἐπινοεῖτε, ταχὺ δὲ ταῦτα κατεργάζεσθε, πλεῖστα δὲ περισσὰ ἔχετε, κέκτησθε δὲ διαφέροντας ἀρετῇ ἵππους, διαφέροντα ὅπλα κάλλει, ὑπερέχοντα κόσμον γυναιξί, μεγαλοπρεπεστέρας οἰκίας· ἔτι δὲ πλήθει τε καὶ ἐπιστήμῃ θεράποντας ἀρίστους· ἱκανώτατοι δέ ἐστε ὀνῆσαι φίλους, κακῶσαι δὲ ἐχθρούς. Πρὸς ταῦτα δὴ ὁ Ἱέρων εἶπεν·

37 Ἡ τυραννὶς τὰ μὲν δοκοῦντα πολλοῦ ἄξια κτήματα εἶναι ἀνεπτυγμένα θεάσασθαι φανερῶς πᾶσι παρέχεται· τὰ δὲ χαλεπὰ ἐν ταῖς ψυχαῖς τῶν τυράννων [κέκτηται] ἀποκεκρυμμένα, ἐν αἷσπερ καὶ τὸ εὔδαιμον καὶ τὸ κακόδαιμον τοῖς ἀνθρώποις ἀπόκειται.

38 Αὐτίκα γὰρ εἰρήνη δοκεῖ μέγα ἀγαθὸν ἀνθρώποις εἶναι, ταύτης ἐλάχιστον μέρος μέτεστι τοῖς τυράννοις· ὁ δὲ πόλεμος μέγα κακόν, τούτου πλεῖστον μετέχομεν οἱ τύραννοι.

39 Ἔπειτα δὲ τοῖς μὲν ἰδιώταις καὶ διὰ σπονδῶν καὶ δι' εἰρήνης γίνεται πολέμου ἀνάπαυσις· τοῖς δὲ τυράννοις οὐδὲ εἰρήνη ποτὲ πρὸς τοὺς τυραννευομένους γίνεται, οὔτε σπονδαῖς ἄν ποτε πιστεύσας ὁ τύραννος θαρρήσειε.

40 Τοσοῦτον δέ τι ἀγαθὸν κρίνω ἔγωγε τὸ φιλεῖσθαι εἶναι, ὡς νομίζω τῷ ὄντι ὡς αὐτόματα τἀγαθὰ

τῷ φιλουμένῳ γίνεσθαι καὶ παρὰ θεῶν καὶ παρὰ ἀνθρώπων.

41 Βεβαιόταται μὲν δήπου δοκοῦσι φιλίαι γονεῦσι πρὸς παῖδας, καὶ παισὶν πρὸς γονέας, καὶ ἀδελφοῖς πρὸς ἀδελφούς, καὶ γυναιξὶ πρὸς ἄνδρας, καὶ ἑταίροις πρὸς ἑταίρους. εἰ τοίνυν ἐθέλεις κατανοεῖν, εὑρήσεις τοὺς μὲν ἰδιώτας ὑπὸ τούτων πάντων μάλιστα φιλουμένους, τοὺς δὲ τυράννους πολλοὺς μὲν παῖδας ἑαυτῶν ἀπεκτονότας, πολλοὺς δὲ ὑπὸ παίδων αὐτοὺς ἀπολωλότας, πολλοὺς δὲ ἀδελφοὺς ἐν τυραννίσιν ἀλληλοφόνους γιγνομένους, πολλοὺς δὲ καὶ ὑπὸ γυναικῶν τῶν ἑαυτῶν τυράννους διεφθαρμένους, καὶ ὑπὸ ἑταίρων γε μάλιστα δοκούντων φίλων εἶναι. οἵ τινες οὖν ὑπὸ τῶν φύσει πεφυκότων μάλιστα φιλεῖσθαι [καὶ νόμῳ συνηναγκασμένων] οὕτω μισοῦνται, πῶς ὑπό γε ἄλλου τινος οἴεσθαι χρῆν αὐτοὺς φιλεῖσθαι; ἀλλὰ μὴν καὶ πίστεως ὅστις ἐλάχιστον μετέχει, πῶς οὐχὶ μεγάλου ἀγαθοῦ μειονεκτεῖ;

42 Καὶ τούτου τοίνυν, τοῦ πιστῶς πρός τινας ἔχειν, ἐλάχιστον μέρος τυράννῳ μέτεστιν· ὁπότε γε οὐδὲ σίτοις οὐδὲ ποτοῖς πιστεύων διάγει· ἀλλὰ καὶ τούτων [πρὶν ἀπάρχεσθαι τοῖς θεοῖς], τοὺς διακόνους πρῶτον κελεύουσιν ἀπογεύεσθαι.

43 [Οἱ δὲ πολῖται δορυφοροῦσιν ἀλλήλους ὑπὲρ] τοῦ δὲ μηδένα τῶν πολιτῶν βιαίῳ θανάτῳ ἀποθνήσκειν, οὕτω [δὲ] πόρρω προεληλύθασι φυλακῆς, ὥστε πεποίηνται πολλοὶ νόμοι τῷ μιαιφόνῳ μηδὲ τὸν συνόντα καθαρεύειν· ὅθεν διὰ τὰς πατρίδας ἀσφαλῶς ἕκαστος βιοτεύει τῶν πολιτῶν. τοῖς δὲ τυράννοις καὶ τοῦτο ἔμπαλιν ἀνέστραπται. ἀντὶ γὰρ τοῦ τιμωρεῖν αἱ πόλεις αὐτοῖς μεγάλως τιμῶσι τὸν κατακτείναντα

τὸν τύραννον· καὶ ἀντί γε τοῦ εἴργειν ἐκ τῶν ἱερῶν, [ὥσπερ τοὺς τῶν ἰδιωτῶν φονέας,] ἀντὶ τούτου καὶ εἰκόνας ἐν τοῖς ἱεροῖς ἱστᾶσιν αἱ πόλεις [τῶν τοιοῦτο ποιησάντων.]

44 *Οὐδέ γε θᾶσσόν τι γίνεται τῷ τυράννῳ ἢ τῷ ἰδιώτῃ ὧν ἐπιθυμεῖ.* ὁ μὲν γὰρ ἰδιώτης οἰκίας ἢ ἀγροῦ ἢ οἰκέτου ἐπιθυμεῖ· ὁ δὲ τύραννος ἢ πόλεως ἢ χώρας πολλῆς ἢ λιμένων ἢ ἀκροπόλεων ἰσχυρῶν, ἃ πολύ ἐστι χαλεπώτερα καὶ ἐπικινδυνότερα κατεργάζεσθαι τῶν ἰδιωτικῶν ἐπιθυμημάτων. ἀλλὰ μὴν καὶ πένητας ὄψει ὀλίγους τῶν ἰδιωτῶν, πολλοὺς δὲ τῶν τυράννων. οὐ γὰρ τῷ ἀριθμῷ οὔτε τὰ πολλὰ κρίνεται οὔτε τὰ ἱκανά, ἀλλὰ πρὸς τὰς χρήσεις· ὥστε τὰ μὲν ὑπερβάλλοντα τὰ ἱκανὰ πολλά ἐστι, τὰ δὲ τῶν ἱκανῶν ἐλλείποντα ὀλίγα. τῷ οὖν τυράννῳ τὰ πολλαπλάσια ἧττον ἱκανά ἐστιν ἢ τἀναγκαῖα δαπανήματα τῷ ἰδιώτῃ. καὶ γὰρ τοῖς μὲν ἰδιώταις ἔξεστι τὰς δαπάνας συντέμνειν εἰς τὰ καθ' ἡμέραν, [ὅπῃ βούλονται·] τοῖς δὲ τυράννοις μέγισται μέν εἰσι δαπάναι εἰς τὰς τῆς ψυχῆς φυλακάς· τὸ δὲ τούτων τὶ συντέμνειν ὄλεθρος δοκεῖ εἶναι. ἔπειτα δὲ ὅσοι μὲν δύνανται ἀπὸ τοῦ δικαίου ἔχειν ὧν δέονται, τί ἂν τούτους οἰκτείροις ὡς πένητας; ὅσοι δὲ ἀναγκάζονται δι' ἔνδειαν κακόν τι καὶ αἰσχρὸν μηχανώμενοι ζῆν, πῶς οὐ τούτους ἀθλίους ἄν τις δικαίως καὶ πένητας νομίζοι; οἱ τύραννοι τοίνυν πάντα ἀναγκάζονται συλᾶν ἀδίκως, διὰ τὸ εἰς τὰς ἀναγκαίας δαπάνας ἀεὶ προσδεῖσθαι χρημάτων.

45 *Γιγνώσκουσι δὲ οὐδὲν ἧττον τῶν ἰδιωτῶν καὶ τοὺς ἀλκίμους καὶ τοὺς σοφοὺς καὶ τοὺς δικαίους·* τούτους δὲ ἀντὶ τοῦ ἄγασθαι φοβοῦνται· τοὺς μὲν

ἀνδρείους, μή [τι] τολμήσωσι τῆς ἐλευθερίας ἕνεκα· τοὺς δὲ σοφούς, μή τι μηχανήσωνται· τοὺς δὲ δικαίους, μὴ ἐπιθυμήσῃ τὸ πλῆθος ὑπ' αὐτῶν προστατεῖσθαι.

46 *Τὸ δὲ φοβεῖσθαι μὲν ὄχλον, φοβεῖσθαι δὲ ἐρημίαν, φοβεῖσθαι δὲ ἀφυλαξίαν, φοβεῖσθαι δὲ καὶ αὐτοὺς τοὺς φύλακας, καὶ μήτε ἀόπλους ἔχειν ἐθέλειν [περὶ αὐτὸν] μήτε ὡπλισμένους ἡδέως θεᾶσθαι, πῶς οὐ χαλεπόν ἐστι πρᾶγμα; ἔτι δὲ ξένοις μᾶλλον ἢ πολίταις πιστεύειν, βαρβάροις [τε] μᾶλλον ἢ Ἕλλησιν, ἐπιθυμεῖν δὲ τοὺς μὲν ἐλευθέρους δούλους ἔχειν, τοὺς δὲ δούλους ἐλευθέρους ἀναγκάζεσθαι ποιεῖν, οὐ πάντα ταῦτά σοι δοκεῖ ψυχῆς ὑπὸ φόβων παραπεπληγμένης τεκμήρια εἶναι; ὁ δέ τοι φόβος οὐ μόνον αὐτὸς ἐνὼν ταῖς ψυχαῖς λυπηρός ἐστιν, ἀλλὰ καὶ πάντων τῶν ἡδέων συμπαρομαρτῶν λυμαντὴρ ἐστιν.*

47 *Ἀντισθένους.*

Ἀντισθένης ὁ φιλόσοφος τοὺς δημίους εὐσεβεστέρους ἔλεγεν εἶναι τῶν τυράννων· πυθομένου δέ τινος τὴν αἰτίαν, ἔφη ὅτι ὑπὸ μὲν τῶν δημίων οἱ ἀδικοῦντες ἀναιροῦνται, ὑπὸ δὲ τῶν τυράννων οἱ μηδὲν ἁμαρτάνοντες.

48 *Φαβωρίνου.*

Ἀλλ' ἐγὼ βούλομαι ἡδονήν τινα τῷ τυράννῳ μηνῦσαι, εἰ μὲν ἀνθρωπίνην θέλεις, ὦ Διονύσιε, πείνησον ἵνα φάγῃς, δίψησον ἵνα πίῃς· εἰ δὲ δεξιάν τινα καὶ ὑπέρσπουδον καὶ τηλικαύτην ἡλίκην οὐδεὶς πρὸ σοῦ, ἀπόθου τὴν τυραννίδα. τὸν γὰρ μυρίων καὶ πεντακισχιλίων χλαμύδων δεόμενον οὐκ ἔστι μὴ πλειόνων δεῖσθαι· οἷς γὰρ ἔχω προσδεόμενος, ἀφελὼν ὧν ἔχω, ἀρκοῦμαι οἷς ἔχω.

49 *Δωροθέου ἐν α' Σικελικῶν.*

Φάλαρις Ἀκραγαντίνων τύραννος, ἀπότομος καὶ ἀπαθὴς ὑπάρχων, ξέναις καὶ παρευρημέναις βασάνοις ἔτρυχε καὶ ἐστρέβλου τοὺς ὁμοφύλους. Πέριλλος δὲ τῇ τέχνῃ χαλκουργὸς κατασκευάσας δάμαλιν ἔδωκε τῷ βασιλεῖ δῶρον, ἵνα τοὺς ξένους εἰς αὐτὴν βάλλων κατακαίῃ ζῶντας· μυκηθμὸν δ' ἡ δάμαλις ἀνεδίδου τῷ φυσικῷ παρόμοιον. Φάλαρις δὲ τότε μόνον γενόμενος δίκαιος αὐτὸν τὸν τεχνίτην πρῶτον ἐνέβαλεν.

50 *Πλάτωνος πολιτείας θ'* (579 b).

Ἆρ' οὖν οὐκ ἐν τοιούτῳ δεσμωτηρίῳ δέδεται ὁ τύραννος, φύσει ὢν οἷον διεληλύθαμεν, πολλῶν καὶ παντοδαπῶν φόβων καὶ ἐρώτων μεστός; λίχνῳ δὲ ὄντι αὐτῷ τὴν ψυχὴν μόνῳ τῶν ἐν τῇ πόλει οὔτε ἀποδημῆσαι ἔξεστιν οὐδαμόσε οὔτε θεωρῆσαι ὅσων δὴ καὶ οἱ ἄλλοι ἐλεύθεροι ἐπιθυμηταί εἰσι· καταδεδυκὼς δὲ ἐν τῇ οἰκίᾳ τὰ πολλὰ ὥσπερ γυνὴ ζῇ, φθονῶν καὶ τοῖς ἄλλοις πολίταις ἐάν τις ἔξω ἀποδημῇ καί τι ἀγαθὸν ὁρᾷ. Παντάπασι μὲν οὖν, ἔφη. Οὐκ οὖν τοῖς τοιούτοις κακοῖς πλείω καρποῦται ἀνήρ, ὃς ἂν κακῶς ἐν ἑαυτῷ πολιτευόμενος, ὃν νῦν δὴ σὺ ἀθλιώτατον ἔκρινας τὸν τυραννικόν, μὴ ὡς ἰδιώτης καταβιῷ, ἀλλ' ἀναγκασθῇ ὑπό τινος τύχης τυραννεῦσαι καὶ ἑαυτοῦ ὢν ἀκράτωρ ἄλλων ἐπιχειρήσῃ ἄρχειν, ὥσπερ εἴ τις κάμνοντι σώματι καὶ ἀκράτορι ἑαυτοῦ, μὴ ἰδιωτεύων, ἀλλ' ἀγωνιζόμενος πρὸς ἄλλα σώματα καὶ μαχόμενος ἀναγκάζοιτο διάγειν τὸν βίον; Παντάπασιν, ἔφη, ὁμοιότατά τε καὶ ἀληθέστατα λέγεις, ὦ Σώκρατες. Οὐκ οὖν, ἦν δ' ἐγώ, ὦ φίλε Γλαύκων, παντελῶς τὸ πάθος ἄθλιον, καὶ τοῦ ὑπὸ

σοῦ κριθέντος χαλεπώτατα ζῆν χαλεπώτερον ἔτι ζῇ ὁ τυραννῶν; Κομιδῇ γε, ἔφη. Ἔστιν ἄρα τῇ ἀληθείᾳ, κἂν εἰ μή τῳ δοκῇ, ὁ τῷ ὄντι τύραννος τῷ ὄντι δοῦλος τὰς μεγίστας θωπείας καὶ δουλείας, καὶ κόλαξ τῶν πονηροτάτων, καὶ τὰς ἐπιθυμίας οὐδ᾽ ὁπωστιοῦν ἀποπιμπλάς, ἀλλὰ πλείστων ἐπιδεέστατος καὶ πένης τῇ ἀληθείᾳ φαίνεται, ἐὰν δέ τις ὅλην ψυχὴν ἐπίστηται θεάσασθαι, καὶ φόβου γέμων διὰ παντὸς τοῦ βίου, σφαδασμῶν τε καὶ ὀδυνῶν πλήρης, εἴπερ τῇ τῆς πόλεως διαθέσει, ἧς ἄρχει, ἔοικεν· ἔοικε δέ, ἢ γάρ; Καὶ μάλα, ἔφη. Οὐκ οὖν καὶ πρὸς τούτοις ἔτι ἀποδώσομεν τῷ ἀνδρὶ καὶ ἃ τὸ πρότερον εἴπομεν, ὅτι ἀνάγκη καὶ εἶναι καὶ ἔτι μᾶλλον γίγνεσθαι αὐτῷ, ἢ πρότερον διὰ τὴν ἀρχήν, φθονερῷ, ἀπίστῳ, ἀδίκῳ, ἀφίλῳ, ἀνοσίῳ, καὶ πάσης κακίας πανδοκεῖ τε καὶ τροφεῖ, καὶ ἐξ ἁπάντων τούτων μάλιστα μὲν αὐτῷ δυστυχεῖ εἶναι, ἔπειτα δὲ καὶ τοὺς πλησίον αὐτῷ τοιούτους ἀπεργάζεσθαι. Οὐδείς σοι, ἔφη, τῶν νοῦν ἐχόντων ἀντερεῖ.

ΠΕΡΙ ΠΟΛΕΜΟΥ. Ν.

1 *Εὐριπίδου Τημενιδῶν.*

Φιλεῖ τοι πόλεμος οὐ πάντ᾽ εὐτυχεῖν,
ἐσθλῶν δὲ χαίρει πτώμασιν νεανιῶν,
κακοὺς δὲ μισεῖ. τῇ πόλει μὲν οὖν νόσος
τόδ᾽ ἐστί, τοῖς δὲ κατθανοῦσιν εὐκλεές.

2 *Ἀράτου φαινομένων* (130).

Χαλκείη γενεή, προτέρων ὀλοώτεροι ἄνδρες,
οἳ πρῶτοι κακόεργον ἐχαλκεύσαντο μάχαιραν,
εἰνοδίην· πρῶτοι δὲ βοῶν ἐπάσαντ᾽ ἀροτήρων.

3 *Πινδάρου ὑπορχημάτων.*

Γλυκὺ δὲ πόλεμος ἀπείροισιν· ἐμπείρων δέ τις ταρβεῖ προσιόντα νιν καρδίᾳ περισσῶς.

4 *Ὅμηρος Ἰλιάδος ι'* (63).

Ἀφρήτωρ ἀθέμιστος ἀνέστιος ἔστιν ἐκεῖνος,
ὃς πολέμου ἔραται ἐπιδημίου ὀκρυόεντος.

5 *Ἄνδρας μὲν κτείνουσι, πόλιν δέ τε πῦρ ἀμαθύνει,*
τέκνα δέ τ' ἄλλοι ἄγουσι, βαθυζώνους τε γυναῖκας.
(Ib. 583.)

6 *Εὐριπίδου Αἰόλου.*

Τὰ πόλλ' ἀνάγκη διαφέρει τολμήματα.

7 *Τυρταίου.*

Ἀλλ' Ἡρακλῆος γὰρ ἀνικήτου γένος ἐστέ·
θαρσεῖτ', οὔπω Ζεὺς αὐχένα λοξὸν ἔχει.
μηδ' ἀνδρῶν πληθὺν δειμαίνετε μηδὲ φοβεῖσθε,
ἰθὺς δ' εἰς προμάχους ἀσπίδ' ἀνὴρ ἐχέτω,
ἐχθρὰν μὲν ψυχὴν θέμενος, θανάτου δὲ μελαίνας
κῆρας... αὐγαῖς ἠελίοιο φίλας,
ἴστε γὰρ Ἄρηος πολυδακρύου ἔργ' ἀίδηλα,
εὖ δ' ὀργὴν ἐδάητ' ἀργαλέου πολέμου.
καὶ παρὰ φευγόντων τε διωκόντων τε γέγευσθε
ὦ νέοι, ἀμφοτέρων δ' εἰς κόρον ἠλάσατε.
οἳ μὲν γὰρ τολμῶσι παρ' ἀλλήλοισι μένοντες
ἔς τ' αὐτοσχεδίην καὶ προμάχους ἰέναι,
παυρότεροι θνήσκουσι, σαοῦσι δὲ λαὸν ὀπίσσω·
τρεσσάντων δ' ἀνδρῶν πᾶσ' ἀπόλωλ' ἀρετή.
οὐδεὶς ἄν ποτε ταῦτα λέγων ἀνύσειεν ἕκαστα,
ὅσσ' ἢν αἰσχρὰ πάθῃ γίνεται ἀνδρὶ κακά.
ἀργαλέον γὰρ ὄπισθε μετάφρενόν ἐστι δαΐζειν
ἀνδρὸς φεύγοντος δηίῳ ἐν πολέμῳ,
αἰσχρὸς δ' ἔστι νέκυς κατακείμενος ἐν κονίῃσι

νῶτον ὄπισθ' αἰχμῇ δουρὸς ἐληλαμένος.
ἀλλά τις εὖ διαβὰς μενέτω ποσὶν ἀμφοτέροισι
στηριχθεὶς ἐπὶ γῆς, χεῖλος ὀδοῦσι δακών,
μηρούς τε κνήμας τε κάτω καὶ στέρνα καὶ ὤμους
ἀσπίδος εὐρείης γαστρὶ καλυψάμενος·
δεξιτερῇ δ' ἐν χειρὶ τινασσέτω ὄβριμον ἔγχος,
κινείτω δὲ λόφον δεινὸν ὑπὲρ κεφαλῆς·
ἔρδων δ' ὄβριμα ἔργα διδασκέσθω πολεμίζειν,
μηδ' ἐκτὸς βελέων ἑστάτω ἀσπίδ' ἔχων,
ἀλλά τις ἐγγὺς ἰὼν αὐτοσχεδὸν ἔγχεϊ μακρῷ
ἢ ξίφει οὐτάζων δήιον ἄνδρ' ἑλέτω·
καὶ πόδα πὰρ ποδὶ θεὶς καὶ ἐπ' ἀσπίδος ἀσπίδ' ἐρείσας,
ἐν δὲ λόφον τε λόφῳ καὶ κυνέην κυνέῃ
καὶ στέρνον στέρνῳ πεπλημένος ἀνδρὶ μαχέσθω,
ἢ ξίφεος κώπην ἢ δόρυ μακρὸν ἑλών.
ὑμεῖς δ', ὦ γυμνῆτες, ὑπ' ἀσπίδος ἄλλοθεν ἄλλος
πτώσσοντες μεγάλοις βάλλετε χερμαδίοις,
δούρασί τε ξεστοῖσιν ἀκοντίζοντες ἐς αὐτούς,
τοῖσι πανόπλοισι πλησίον ἱστάμενοι.

8 *Θουκυδίδου ἱστορίας α'* (78) *δημηγορίας Ἀθηναίων.*

Τοῦ πολέμου τὸ παράλογον ὅσον ἐστὶ πρὶν ἐν αὐτῷ γενέσθαι προδιάγνωτε· μηκυνόμενος γὰρ φιλεῖ εἰς τύχας τὰ πολλὰ περιίστασθαι.

9 *Θουκυδίδου ἱστορίας α'* (122) *δημηγορίας Κορινθίων.*

Ἄλλα τε ὅσα οὐκ ἄν τις νῦν προΐδοι· ἥκιστα γὰρ πόλεμος ἐπὶ ῥητοῖς χωρεῖ, αὐτὸς δ' ἀφ' αὑτοῦ τὰ πολλὰ τεχνᾶται πρὸς τὸ παρατυγχάνον· ἐν ᾧ ὁ μὲν

εὐοργήτως αὐτῷ προσομιλήσας βεβαιότερος, ὁ δὲ ὀργισθεὶς περὶ αὐτὸν οὐκ ἐλάσσω πταίει.

10 *Δημοσθένους.*

Πόλεμος ἔνδοξος εἰρήνης αἰσχρᾶς αἱρετώτερος.

11 *Ἀντισθένους.*

Ἀντισθένης ὁ Σωκρατικός, εἰπόντος τινὸς ὅτι ὁ πόλεμος ἀπολεῖ τοὺς πένητας, "πολλοὺς μὲν οὖν ποιήσει" ἔφη.

12 *Ἀρχιδάμου* (Plut. mor. 191 d).

Ἀρχίδαμος ὁ Ἀγησιλάου [καταπελτικὸν] ἰδὼν βέλος τότε πρῶτον ἐκ Σικελίας κομισθὲν ἀνεβόησεν "ὦ Ἡράκλεις, ἀπόλωλεν ἀνδρὸς ἀρετά."

13 *Θουκυδίδου δημηγορίας Κορινθίων* (I, 120).

Ἀνδρῶν γὰρ σωφρόνων μέν ἐστιν, εἰ μὴ ἀδικοῖντο, ἡσυχάζειν, ἀγαθῶν δέ, ἀδικουμένους ἐκ μὲν εἰρήνης πολεμεῖν, εὖ δὲ παρασχὸν ἐκ πολέμου πάλιν ξυμβῆναι, καὶ μήτε τῇ κατὰ πόλεμον εὐτυχίᾳ ἐπαίρεσθαι, μήτε τῷ ἡσύχῳ τῆς εἰρήνης ἡδόμενον ἀδικεῖσθαι. ὅ τε γὰρ διὰ τὴν ἡδονὴν ὀκνῶν τάχιστ' ἂν ἀφαιρεθείη τῆς ῥᾳστώνης τὸ τερπνόν, δι' ὅπερ ὀκνεῖ, εἰ ἡσυχάζοι· ὅ τε ἐν πολέμῳ εὐτυχίᾳ πλεονάζων οὐκ ἐντεθύμηται θράσει ἀπίστῳ ἐπαιρόμενος. πολλὰ γὰρ κακῶς γνωσθέντα, ἀβουλοτέρων τῶν ἐναντίων τυχόντα, κατώρθωκε, καὶ ἔτι πλέω τὰ καλῶς δοκοῦντα βουλευθῆναι, ἐς τοὐναντίον αἰσχρῶς περιέστη. ἐνθυμεῖται γὰρ οὐδεὶς ὅμοια τῇ πίστει καὶ ἔργῳ ἐπεξέρχεται, ἀλλὰ μετ' ἀσφαλείας μὲν δοξάζομεν, μετὰ δέους δ' ἐν τῷ ἔργῳ ἐλλείπομεν.

14 *Πλάτωνος νόμων α'* (626 a).

Ἣν γὰρ καλοῦσι τῶν ἀνθρώπων οἱ πλεῖστοι εἰρήνην, τοῦτ᾽ εἶναι μόνον ὄνομα, τῷ δὲ ἔργῳ πάσαις πρὸς πάσας ἀεὶ τὰς πόλεις πόλεμον ἀκήρυκτον κατὰ φύσιν εἶναι. καὶ σχεδὸν ἀνευρήσεις οὕτω σκοπῶν τὸν Κρητῶν νομοθέτην, ὡς εἰς τὸν πόλεμον ἅπαντα δημοσίᾳ καὶ ἰδίᾳ τὰ νόμιμα ἡμῖν ἀποβλέπων ξυνετάξατο, καὶ κατὰ ταῦτα οὕτω φυλάττειν παρέδωκε τοὺς νόμους, ὡς τῶν ἄλλων οὐδενὸς οὐδὲν ὄφελος ὄν, οὔτε κτημάτων οὔτε ἐπιτηδευμάτων, ἂν μὴ τῷ πολέμῳ ἄρα κρατῇ τις, πάντα δὲ τὰ τῶν νικωμένων ἀγαθὰ τῶν νικώντων γίγνεσθαι.

15 Ξενοφῶντος ἐν γ΄ (1, 42) τῆς Κύρου ἀναβάσεως.

Ἐπίστασθε γὰρ δὴ ὅτι οὔτε πλῆθός ἐστιν οὔτε ἰσχὺς ἡ ἐν τῷ πολέμῳ τὰς νίκας ποιοῦσα· ἀλλ᾽ ὁπότεροι ἂν σὺν τοῖς θεοῖς ταῖς ψυχαῖς ἐρρωμενέστεροι ἴωσιν ἐπὶ τοὺς πολεμίους, τούτους ὡς ἐπιπολὺ οἱ ἐναντίοι οὐ δέχονται.

16 Πλάτωνος ἐκ τοῦ Μενεξένου ἢ ἐπιταφίου (234 c).

Καὶ μήν, ὦ Μενέξενε, πολλαχῇ κινδυνεύει καλὸν εἶναι τὸ ἐν πολέμῳ ἀποθνήσκειν. καὶ γὰρ ταφῆς καλῆς τε καὶ μεγαλοπρεποῦς τυγχάνει καὶ ἐὰν πένης τις ὢν τελευτήσῃ, καὶ ἐπαίνου αὖ ἔτυχε καὶ ἐὰν φαῦλος ᾖ ὑπ᾽ ἀνδρῶν σοφῶν τε καὶ οὐκ εἰκῇ ἐπαινούντων, ἀλλ᾽ ἐκ πολλοῦ χρόνου λόγους παρεσκευασμένων.

ΠΕΡΙ ΤΟΛΜΗΣ. ΝΑ.

1 Τυρταίου.

Οὔτ᾽ ἂν μνησαίμην οὔτ᾽ ἐν λόγῳ ἄνδρα τιθείην,

οὔτε ποδῶν ἀρετῆς οὔτε παλαισμοσύνης·
οὐδ' εἰ Κυκλώπων μὲν ἔχοι μέγεθός τε βίην τε,
νικῴη δὲ θέων Θρηίκιον βορέην·
οὐδ' εἰ Τιθωνοῖο φυὴν χαριέστερος εἴη,
πλουτοίη δὲ Μίδεω καὶ Κινύρεω μάλιον·
οὐδ' εἰ Ταντάλίδεω Πέλοπος βασιλεύτερος εἴη,
γλῶσσαν δ' Ἀδρήστου μειλιχόγηρυν ἔχοι,
οὐδ' εἰ πᾶσαν ἔχοι δόξαν, πλὴν θούριδος ἀλκῆς.
οὐ γὰρ ἀνὴρ ἀγαθὸς γίγνεται ἐν πολέμῳ,
εἰ μὴ τετλαίη μὲν ὁρῶν φόνον αἱματόεντα,
καὶ δηίων ὀρέγοιτ' ἐγγύθεν ἱστάμενος.
ἡ δ' ἀρετὴ τόδ' ἄεθλον ἐν ἀνθρώποισιν ἄριστον,
κάλλιστόν τε φέρειν γίγνεται ἀνδρὶ νέῳ.

2 Εὐριπίδου Τημενιδῶν.
Οὐκ ἔστι κρεῖττον ἄλλο πλὴν κρατεῖν δορί.

3 Εὐριπίδου Τημένῳ.
Τολμᾶν δὲ χρεών. ὁ γὰρ ἐν καιρῷ
μόχθος πολλὴν εὐδαιμονίαν
τίκτει θνητοῖσι τελευτῶν.

4 Εὐριπίδου Ἀρχελάῳ.
Νεανίαν γὰρ ἄνδρα χρὴ τολμᾶν ἀεί.
οὐδεὶς γὰρ ὢν ῥᾴθυμος εὐκλεὴς ἀνήρ,
ἀλλ' οἱ πόνοι τίκτουσι τὴν εὐδοξίαν.

5 Τυρταίου.
Ξυνὸν δ' ἐσθλὸν τοῦτο πόληί τε παντί τε δήμῳ,
ὅστις ἀνὴρ διαβὰς ἐν προμάχοισι μένῃ
νωλεμέως, αἰσχρᾶς δὲ φυγῆς ἐπὶ πάγχυ λάθηται,
ψυχὴν καὶ θυμὸν τλήμονα παρθέμενος,
θαρσύνῃ δ' ἔπεσιν τὸν πλησίον ἄνδρα παρεστώς·
οὗτος ἀνὴρ ἀγαθὸς γίγνεται ἐν πολέμῳ,

αἶψα δὲ δυσμενέων ἀνδρῶν ἔτρεψε φάλαγγας
τρηχείας, σπουδῇ δ' ἔσχεθε κῦμα μάχης.
αὐτὸς δ' ἐν προμάχοισι πεσὼν φίλον ὤλεσε θυμὸν
ἄστυ τε καὶ λαοὺς καὶ πατέρ' εὐκλεΐσας,
πολλὰ διὰ στέρνοιο καὶ ἀσπίδος ὀμφαλοέσσης
καὶ διὰ θώρηκος πρόσθεν ἐληλαμένος.
τὸν δ' ὀλοφύρονται μὲν ὁμῶς νέοι ἠδὲ γέροντες,
ἀργαλέῳ δὲ πόθῳ πᾶσα κέκηδε πόλις.
καὶ τύμβος, καὶ παῖδες ἐν ἀνθρώποις ἀρίσημοι,
καὶ παίδων παῖδες καὶ γένος ἐξοπίσω.
οὐδέποτε κλέος ἐσθλὸν ἀπόλλυται οὐδ' ὄνομ' αὐτοῦ,
ἀλλ' ὑπὸ γῆς περ ἐὼν γίγνεται ἀθάνατος,
ὅντιν' ἀριστεύοντα μένοντά τε μαρνάμενόν τε
γῆς πέρι καὶ παίδων θοῦρος Ἄρης ὀλέσῃ.
εἰ δὲ φύγῃ μὲν κῆρα τανηλεγέος θανάτοιο,
νικήσας δ' αἰχμῆς ἀγλαὸν εὖχος ἕλῃ,
πάντες μιν τιμῶσιν ὁμῶς νέοι ἠδὲ παλαιοί,
πολλὰ δὲ τερπνὰ παθὼν ἔρχεται εἰς ἀίδην,
γηράσκων δ' ἀστοῖσι μεταπρέπει, οὐδέ τις αὐτὸν
βλάπτειν οὔτ' αἰδοῦς οὔτε δίκης ἐθέλει.
πάντες δ' ἐν θώκοισιν ὁμῶς νέοι οἵ τε κατ' αὐτὸν
εἴκουσ' ἐκ χώρης οἵ τε παλαιότεροι.
ταύτης νῦν τις ἀνὴρ ἀρετῆς εἰς ἄκρον ἱκέσθαι
πειράσθω θυμῷ, μὴ μεθιεὶς πόλεμον.

6 Εὐριπίδου.

Σὺν τοῖσι δεινοῖς αὔξεται κλέος βροτοῖς.

7 Τοῦ αὐτοῦ Ἀρχελάῳ.

Ἐμὲ δ' ἄρ' οὐ
μοχθεῖν δίκαιον; τίς δ' ἄμοχθος εὐκλεής;
τίς τῶν μεγίστων δειλὸς ὢν ὠρέξατο;

8 **Εὐριπίδου ἐκ Τηλέφου.**
Τόλμης δεῖ, κἂν τι τρηχὺ νέμωσι θεοί.

9 **Τοῦ αὐτοῦ Ἀρχελάῳ.**
Ὀλίγοι γὰρ ἐσθλοὶ κρείσσονες πολλῶν κακῶν.

10 *Εὐριπίδου Ἱππολύτῳ.*
Οὐ γὰρ κατ' εὐσέβειαν αἱ θνητῶν τύχαι,
τολμήμασιν δὲ καὶ χερῶν ὑπερβολαῖς
ἁλίσκεταί τε πάντα καὶ θηρεύεται.

11 *Τοῦ αὐτοῦ Ἰξίονι.*
Τά τοι μέγιστα πάντ' ἀπείργασται βροτοῖς
τόλμ' ὥστε νικᾶν. οὔτε γὰρ τυραννίδες
χωρὶς πόνου γένοιντ' ἂν οὔτ' οἶκος μέγας.

12 *Εὐριπίδου Ἐρεχθεῖ.*
Ὀλίγους ἐπαινῶ μᾶλλον ἢ πολλοὺς κακούς.

13 *Τοῦ αὐτοῦ Ἀνδρομάχης* (765).
Πολλῶν νέων γὰρ κἂν γέρων εὔψυχος ᾖ
κρείσσων· τί γὰρ δεῖ δειλὸν ὄντ' εὐσωματεῖν;
13 a *Κρεῖσσόν τ' ἀμύνειν. κατθανεῖν γὰρ εὐκλεῶς*
ἢ ζῆν θέλοιμ' ἂν δυσκλεῶς γε κατθανών.

14 **Εὐριπίδου.**
Νεανίας γὰρ ὅστις ὢν Ἄρη στυγεῖ,
κόμη μόνον καὶ σάρκες, ἔργα δ' οὐδαμοῦ.
ὁρᾷς τὸν εὐτράπεζον ὡς ἡδὺς βίος,
ὅ τ' ὄλβος ὡς ἔξωθέν ἐστι πραγμάτων·
ἀλλ' οὐκ ἔνεστι στέφανος οὐδ' εὐανδρία,
εἰ μή τι καὶ τολμῶσι κινδύνου μέτα·
οἱ γὰρ πόνοι τίκτουσι τὴν εὐδοξίαν,
ἡ δ' εὐλάβεια σκότον ἔχει καθ' Ἑλλάδα,
τὸ διαβιῶναι μόνον ἀεὶ θηρωμένη.

15 **Ὁμήρου** (Il. ν' 279).

Τοῦ μὲν γάρ τε κακοῦ τρέπεται χρὼς ἄλλυδις ἄλλῃ,
οὐδέ οἱ ἀτρέμας ἧσθαι ἐρητύετ' ἐν φρεσὶ θυμός,
[ἀλλὰ μετοκλάζει καὶ ἐπ' ἀμφοτέρους πόδας ἵζει.]
ἐν δέ τέ οἱ κραδίη μεγάλα στέρνοισι πατάσσει,
κῆρας ὀιομένῳ, πάταγος δέ τε γίνετ' ὀδόντων.
τοῦ δ' ἀγαθοῦ οὔτ' ἂρ τρέπεται χρὼς οὔτε τι λίην
ταρβεῖ.

16 *Δημοκρίτου.*

Τόλμα πρήξιος ἀρχή, τύχη δὲ τέλεος κυρίη.

17 *Εὐήνου.*

Πρὸς σοφίᾳ μὲν ἔχειν τόλμαν μάλα σύμφορόν ἐστι·
χωρὶς δὲ βλαβερὴ καὶ κακότητα φέρει.

18 *Ἀντιφάνους.*

Ἐπεὶ γὰρ ἀποθνήσκειν ἀνάγκη γίγνεται,
τὸ προῖκ' ἀποθανεῖν ἔστι φανερὰ ζημία.

19 *Καλλίνου.*

Μέχρις τεῦ κατάκεισθε; κότ' ἄλκιμον ἕξετε θυμόν,
ὦ νέοι; οὐδ' αἰδεῖσθ' ἀμφιπερικτίονας,
ὧδε λίην μεθιέντες; ἐν εἰρήνῃ δὲ δοκεῖτε
ἧσθαι, ἀτὰρ πόλεμος γαῖαν ἅπασαν ἔχει.
* * * * * * * * * *
καί τις ἀποθνήσκων ὕστατ' ἀκοντισάτω.
τιμῆέν τε γάρ ἐστι καὶ ἀγλαὸν ἀνδρὶ μάχεσθαι
γῆς πέρι καὶ παίδων κουριδίης τ' ἀλόχου
δυσμενέσιν· θάνατος δὲ τότ' ἔσσεται, ὁππότε κεν δὴ
μοῖραι ἐπικλώσωσ'· ἀλλά τις ἰθὺς ἴτω
ἔγχος ἀνασχόμενος καὶ ὑπ' ἀσπίδος ἄλκιμον ἦτορ
ἔλσας τὸ πρῶτον μιγνυμένου πολέμου.
οὐ γάρ κως θάνατόν γε φυγεῖν εἱμαρμένον ἐστὶν
ἄνδρ', οὐδ' εἰ προγόνων ᾖ γένος ἀθανάτων.

πολλάκι δηιοτῆτα φυγὼν καὶ δοῦπον ἀκόντων
ἔρχεται, ἐν δ᾽ οἴκῳ μοῖρα κίχεν θανάτου.
ἀλλ᾽ ὃ μὲν οὐκ ἔμπας δήμῳ φίλος οὐδὲ ποθεινός·
τὸν δ᾽ ὀλίγος στενάχει καὶ μέγας, ἤν τι πάθῃ.
λαῷ γὰρ σύμπαντι πόθος κρατερόφρονος ἀνδρὸς
θνήσκοντος, ζώων δ᾽ ἄξιος ἡμιθέων.
ὥσπερ γάρ μιν πύργον ἐν ὀφθαλμοῖσιν ὁρῶσιν,
ἔρδει γὰρ πολλῶν ἄξια μοῦνος ἐών.

20 **Μενάνδρου.**
Οὐκ ἔστι τόλμης ἐφόδιον μεῖζον βίου.

21 *Μοσχίωνος ἐκ Θεμιστοκλέους.*
Καὶ γὰρ ἐν νάπαις βραχεῖ
πολὺς σιδήρῳ κείρεται πεύκης κλάδος·
καὶ βαιὸς ὄχλος μυρίας λόγχης κρατεῖ.

22 *Πινδάρου ὀλυμπιονικῶν* (I, 129).
Ὁ μέγας δὲ κίνδυνος ἄναλκιν οὐ φῶτα λαμβάνει.

23 *Σωσιθέου ἐξ Ἀεθλίου.*
Εἷς μυρίους ὄρνιθας ἀετὸς σοβεῖ,
λαῶν τε δειλῶν πλῆθος εὖ τραφεὶς ἀνήρ.

24 **Σοφοκλῆς Σκυρίοις.**
Φιλεῖ γὰρ ἄνδρας πόλεμος ἀγρεύειν νέους.

25 **Μενάνδρου.**
Οὐκ ἔστι τόλμης ἐπιφανεστέρα θεός.

26 *Αἰσχύλου Καρῶν.*
Ἀλλ᾽ Ἄρης φιλεῖ
ἀεὶ τὰ λῷστα πάντ᾽ ἀπανθίζειν στρατοῦ.

27 *Μενάνδρου Ἐπαγγελλόμενος.*
Τὰ γὰρ τολμηρὰ τῶν ὄχλων ἔχει
ἐν τοῖς λόγοις μὲν τὰς ἐπιδείξεις δυσκόλους·

ἐν τῷ δὲ πράττειν, ἂν λάβῃς τὸν καιρὸν εὖ, ἀπροσδόκητον τὴν τύχην ἐξηύρατο.

28 Ἰσοκράτους πρὸς Δημόνικον (p. 10 Bens.).

Μᾶλλον εὐλαβοῦ ψόγον ἢ κίνδυνον· δεῖ γὰρ εἶναι τοῖς μὲν φαύλοις φοβερὰν τὴν τοῦ βίου τελευτήν, τοῖς δὲ σπουδαίοις τὴν ἐν τῷ βίῳ ἀδοξίαν. [μάλιστα μὲν πειρῶ ζῆν κατὰ τὴν ἀσφάλειαν·] ἐὰν δέ ποτέ σοι συμβῇ κινδυνεύειν, ζήτει τὴν ἐκ τοῦ πολέμου σωτηρίαν μετὰ καλῆς δόξης, ἀλλὰ μὴ μετ' αἰσχρᾶς φήμης. τὸ μὲν γὰρ τελευτῆσαι πάντων ἡ πεπρωμένη κατέκρινεν, τὸ δὲ καλῶς ἀποθανεῖν ἴδιον τοῖς σπουδαίοις ἡ φύσις ἀπένειμεν.

29 Ἰσοκράτους Εὐαγόρα (in.).

Εὑρήσομεν γὰρ τοὺς φιλοτίμους καὶ μεγαλοψύχους τῶν ἀνδρῶν οὐ μόνον ἀντὶ τῶν τοιούτων ἐπαινεῖσθαι βουλομένους, ἀλλ' ἀντὶ τοῦ ζῆν ἀποθνήσκειν εὐκλεῶς αἱρουμένους, καὶ μᾶλλον περὶ τῆς δόξης ἢ τοῦ βίου σπουδάζοντας, καὶ πάντα ποιοῦντας ὅπως ἀθάνατον τὴν περὶ αὑτῶν μνήμην καταλείψωσιν.

30 Πλάτωνος ἐκ τοῦ Μενεξένου ἢ ἐπιταφίου (246 c).

Ἐν δὲ τῷ παρόντι δίκαιός εἰμι εἰπεῖν, ἃ οἱ πατέρες ἡμῖν ἐπέσκηπτον ἀπαγγέλλειν τοῖς ἀεὶ λειπομένοις εἴ τι πάσχοιεν, ἡνίκα κινδυνεύσειν ἔμελλον. [φράσω δὲ ὑμῖν ἅ τε αὐτῶν ἤκουσα ἐκείνων, καὶ οἷα νῦν ἡδέως ἂν εἴποιεν ἡμῖν λαβόντες δύναμιν, τεκμαιρόμενος ἐξ ὧν τότε ἔλεγον·] ἀλλὰ νομίζειν χρὴ αὐτῶν ἀκούειν ἐκείνων, ἃ ἂν ἀπαγγέλλω· ἔλεγον δὲ τάδε· Ὦ παῖδες, ὅτι μὲν ἐστὲ πατέρων ἀγαθῶν, αὐτὸ μηνύει τὸ νῦν παρὸν ἡμῖν· ἐξὸν ζῆν μὴ καλῶς

καλῶς αἱρούμεθα μᾶλλον τελευτᾶν, πρὶν ὑμᾶς τε καὶ τοὺς ἔπειτα εἰς ὀνείδη καταστῆσαι, καὶ πρὶν τοὺς ἡμετέρους πατέρας καὶ πᾶν τὸ πρόσθεν γένος αἰσχῦναι· ἡγούμενοι τῷ τοὺς αὐτοῦ αἰσχύνοντι ἀβίωτον εἶναι καὶ τῷ τοιούτῳ οὔτε τινὰ ἀνθρώπων οὔτε θεῶν φίλον εἶναι, οὔτ' ἐπὶ γῆς οὔθ' ὑπὸ γῆς τελευτήσαντι. χρὴ οὖν μεμνημένους τῶν ἡμετέρων λόγων, ἐάν τι καὶ ἄλλο ἀσκῆτε, ἀσκεῖν μετ' ἀρετῆς, εἰδότας ὅτι τούτου λειπόμενα πάντα, καὶ κτήματα καὶ ἐπιτηδεύματα, αἰσχρὰ καὶ κακά. οὔτε γὰρ πλοῦτος κάλλος φέρει τῷ κεκτημένῳ μετὰ ἀνανδρίας· ἄλλῳ γὰρ ὁ τοιοῦτος πλουτεῖ καὶ οὐχ ἑαυτῷ· οὔτε κάλλος σώματος καὶ ἰσχὺς δειλῷ καὶ κακῷ ξυνοικοῦντα πρέποντα φαίνεται, ἀλλ' ἀπρεπῆ καὶ ἐπιφανέστερον ποιεῖ τὸν ἔχοντα καὶ ἐκφαίνει τὴν δειλίαν· πᾶσά τε ἐπιστήμη χωριζομένη δικαιοσύνης καὶ τῆς ἄλλης ἀρετῆς πανουργία οὐ σοφία φαίνεται. ὧν ἕνεκα καὶ πρῶτον καὶ ὕστερον καὶ διὰ παντὸς πᾶσαν πάντως προθυμίαν πειρᾶσθε ἔχειν, ὅπως μάλιστα μὲν ὑπερβάλησθε καὶ ἡμᾶς καὶ τοὺς πρόσθεν εὐκλείᾳ· εἰ δὲ μή, ἴστε ὡς ἡμῖν, ἐὰν μὲν νικῶμεν ὑμᾶς ἀρετῇ, ἡ νίκη αἰσχύνην φέρει, ἡ δὲ ἧττα, ἐὰν ἡττώμεθα, εὐδαιμονίαν. μάλιστα δ' ἂν νικῴμεθα καὶ ὑμεῖς νικῷτε, εἰ παρασκευάσεσθε τῇ τῶν προγόνων δόξῃ μὴ καταχρησάμενοι μηδ' ἀναλώσαντες αὐτήν, γνόντες ὅτι ἀνδρὶ οἰομένῳ τὶ εἶναι οὐκ ἔστιν αἴσχιόν [τι ἢ] παρέχειν ἑαυτὸν τιμώμενον μὴ δι' ἑαυτόν, ἀλλὰ διὰ δόξαν προγόνων. εἶναι μὲν γὰρ τιμὰς γονέων ἐκγόνοις καλὸς θησαυρὸς καὶ μεγαλοπρεπής· χρῆσθαι δὲ καὶ χρημάτων καὶ τιμῶν θησαυρῷ, καὶ μὴ τοῖς ἐκγόνοις παραδιδόναι, αἰσχρὸν καὶ ἄνανδρον, ἀπορίᾳ ἰδίων αὐτοῦ κτημάτων τε καὶ εὐδοξιῶν. καὶ

ἐὰν μὲν ταῦτα ἐπιτηδεύσητε, φίλοι παρὰ φίλους ἡμᾶς ἀφίξεσθε, ὅταν δὴ ὑμᾶς ἡ προσήκουσα μοῖρα κομίσῃ· ἀμελήσαντας δὲ ὑμᾶς καὶ κακισθέντας οὐδεὶς εὐμενῶς δέξεται.

ΠΕΡΙ ΝΕΟΤΗΤΟΣ. ΝΒ.

1 *Εὐριπίδου Ἀνδρομάχης* (184).

Κακόν γε θνητοῖς τὸ νέον, ἐν δὲ τῷ νέῳ
τὸ μὴ δίκαιον ὅστις ἀνθρώπων ἔχει.

2 *Εὐριπίδου Ἀνδρομέδας.*

Νεότης μ' ἐπῆρε καὶ σθένος τοῦ νοῦ πλέον.

3 *Εὐριπίδου Μελανίππῃ.*

Παπαῖ, νέος καὶ σκαιὸς οἷος ἔστ' ἀνήρ.

4 *Εὐριπίδου Ἀρχελάῳ.*

Νεανίας τε καὶ πένης σοφός θ' ἅμα,
ταῦτ' εἰς ἓν ἐλθόντ' ἄξι' ἐνθυμήσεως.

5 *Τοῦ αὐτοῦ Δίκτυϊ.*

Νέος, πόνοις δέ γ' οὐκ ἀγύμναστος φρένας.

6 *Ἀγάθωνος.*

Νέων γὰρ ἀνδρῶν πολλὰ κάμπτονται φρένες.

7 *Μητροδώρου.*

Νέος φιλοδοξῶν πρώιμος πονηρία.

8 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Τὸ νέον ἅπαν ὑψηλόν ἐστι καὶ θρασύ.

9 *Μενάνδρου.*

Μὴ τοῦτο βλέψῃς, εἰ νεώτερος λέγω,
ἀλλ' εἰ φρονοῦντος τοὺς λόγους ἀνδρὸς φέρω.

10 *Μενάνδρου.*

Οὐχ αἱ τρίχες ποιοῦσιν αἱ λευκαὶ φρονεῖν,
ἀλλ' ὁ τρόπος ἐνίων ἐστὶ τῇ φύσει γέρων.

11 *Κρατῖνος ἐν Εὐνείδαις.*

Ἥβης ἐκείνης, νοῦ δὲ τοῦδε καὶ φρενῶν [κατάλληλος].

12 *Θεόγνιδος* (629).

Ἥβη καὶ νεότης ἐπικουφίζει νόον ἀνδρός·
πολλῶν δ' ἐξαίρει θυμὸν ἐς ἀμπλακίην.

13 *Πλάτωνος ἐκ τοῦ Θεαιτήτου* (146 b).

Τῷ γὰρ ὄντι ἡ νεότης εἰς πᾶν ἐπίδοσιν ἔχει.

14 *Πλάτωνος νόμων β'* (672 b).

Τὸ δὲ τοσόνδε οἶδα, ὅτι πᾶν ζῷον ὅσον αὐτῷ προσήκει νοῦν ἔχειν τελεωθέντι, τοῦτον καὶ τοσοῦτον οὐδὲν ἔχον ποτὲ φύεται· ἐν τούτῳ δὴ τῷ χρόνῳ ἐν ᾧ μή πω κέκτηται τὴν οἰκείαν φρόνησιν, πᾶν μαίνεταί τε καὶ βοᾷ ἀτάκτως· καὶ ὅταν ἀκταινώσῃ ἑαυτὸ τάχιστα, ἀτάκτως αὖ πηδᾷ.

15 *Θεοφράστου.*

Χαλεπὸν καταμαντεύεσθαι περὶ τῶν νέων· ἀστόχαστος γὰρ ἡλικία καὶ πολλὰς ἔχουσα μεταβολὰς ἄλλοτ' ἐπ' ἄλλο φερομένη.

16 *Πλάτωνος νόμων ια'* (929 c).

Τὰ γὰρ τῶν νέων ἤθη πολλὰς μεταβολὰς ἐν τῷ βίῳ μεταβάλλειν ἑκάστοτε πέφυκε.

17 *Πλάτωνος ἐκ τοῦ συμποσίου* (181 d).

Χρῆν δὲ καὶ νόμον εἶναι μὴ ἐρᾶν παίδων, ἵνα μὴ εἰς ἄδηλον πολλὴ σπουδὴ ἀνηλίσκετο. τὸ γὰρ τῶν παίδων τέλος ἄδηλον οἷ τελευτᾷ κακίας ἢ ἀρετῆς, ψυχῆς τε πέρι καὶ σώματος.

18 Ὁμήρου (Il. γ′ 108).
Αἰεὶ δ᾽ ὁπλοτέρων ἀνδρῶν φρένες ἠερέθονται.

ΨΟΓΟΣ ΤΟΛΜΗΣ ΣΤΡΑΤΕΙΑΣ ΚΑΙ ΙΣΧΥΟΣ. ΝΓ.

1 Μενάνδρου.
Οἴκοι μένειν χρὴ καὶ μένειν ἐλεύθερον.

2 Μενάνδρου Παρακαταθήκη.
Στρατεία δ᾽ οὐ φέρει περιουσίαν
οὐδεμί᾽, ἐφήμερον δὲ καὶ προπετῆ βίον,
οὗ πεῖραν ἔχομεν ὄντος οὐ σωτηρίου.

3 Μενάνδρου Σικυωνίῳ.
Εὐλοιδόρητον, ὡς ἔοικε, φαίνεται
τὸ τοῦ στρατιώτου σχῆμα καὶ τὸ τοῦ ξένου.

4 Ἀπολλοδώρου ἐξ Ἀφανιζομένου.
Στρατιώτην ἔργον ἄχρι γήρως λαβεῖν
ἔστιν διευτυχηκότ᾽, ἂν μὴ δειλὸς ᾖ.

5 Μενάνδρου Ἀσπίδος.
Στρατιώτην, Σμικρίνη, σωτηρίας
ἔστ᾽ ἔργον εὑρεῖν πρόφασιν, ὀλέθρου δ᾽ εὔπορον.

6 Μενάνδρου.
Κομψὸς στρατιώτης οὐδ᾽ ἐὰν πλάττῃ θεὸς
οὐδεὶς γένοιτ᾽ ἄν.

7 Ἀπολλοδώρου Παιδίου.
Ταχύ γε στρατιώτης γέγονας ἀντ᾽ ἐλευθέρου.

8 Φιλήμονος.
Στρατιῶτα, κοὐκ ἄνθρωπε, καὶ σιτούμενε
ὥσπερ ἱερεῖον, ἵν᾽ ὅταν ᾖ καιρὸς τυθῇς.

9 *Ἀντιφάνους.*

Τίς δ' οὐχὶ θανάτου μισθοφόρων, ὦ φιλτάτη,
ὃς ἕνεκα τοῦ ζῆν ἔρχετ' ἀποθανούμενος;

10 *Ἰσοκράτους πρὸς Δημόνικον* (c. 2).

Ῥώμη δὲ μετὰ μὲν φρονήσεως ὠφέλησεν, ἄνευ δὲ ταύτης πλείω τοὺς ἔχοντας ἔβλαψε· καὶ τὰ μὲν σώματα τῶν ἀσκούντων ἐκόσμησε, ταῖς δὲ τῆς ψυχῆς ἐπιμελείαις ἐπεσκότησεν.

11 *[Πλουτάρχου] ἐκ τῆς ἐπιστολῆς τῆς περὶ φιλίας.*

Ἔτι δὲ κολάσεως ἀπαραίτητος φόβος αἴτιός ἐστιν ἀπονοίας· ὁ γὰρ ὄλεθρον αὐτοῦ προλαβὼν ὁμόσε χωρεῖ κινδύνοις.

12 *Ἀρχιδάμου.*

Ἀρχίδαμος ὁ τῶν Λακεδαιμονίων βασιλεὺς θεασάμενος τὸν ἴδιον παῖδα ἄγαν προπετῶς μαχόμενον τοῖς Ἀθηναίοις εἶπεν "ἢ τῇ δυνάμει πρόσθες, ἢ τοῦ θράσους ἄφελε."

13 *Κλειτάρχου.*

Κλείταρχος ὁ ἱστοριογράφος εἶπε "πᾶσα τόλμη ... καὶ τὰ τῆς δυνάμεως ὑπερβαίνει μέτρα."

14 *Πλουτάρχου ἐκ τοῦ κατ' ἰσχύος.*

Τί δέ σοι τοιοῦτον ἀγαθὸν εὐτυχεῖται μᾶλλον, ὡς ἕνεκα τούτου μητρυιὰν μὲν τῶν ἀνθρώπων, μητέρα δὲ τῶν ἀλόγων ζῴων γεγενῆσθαι τὴν φύσιν, μεγέθους καὶ ὀξύτητος καὶ ὀξυωπίας χάριν; ἡ δὲ ἀνθρώπων ἴδιος ἰσχὺς ὁ ψυχῆς ἐστι λογισμός, ᾧ καὶ ἵππους ἐχαλίνωσε καὶ βόας ἀρότροις ὑπέζευξε καὶ "ἐλέφαντας ὑπὸ δρυμὸν εἷλε ποδάγραις" καὶ τὰ ἐν ἀέρι κατέσπασε καλάμοις καὶ τὰ βύθια δεδυκότα δι-

κτύοις ἀνήγαγε· τοῦτ' ἔστιν ἰσχύς. ἡ δ' ἔτι μείζων, ὅταν γῆς περιόδους καὶ οὐρανοῦ μεγέθη καὶ ἀστέρων κύκλους διώκουσα μὴ κάμῃ· ταῦτ' ἦν Ἡρακλέους ἄξια. τίς γὰρ οὐκ ἂν βούλοιτο μᾶλλον Ὀδυσσεὺς εἶναι ἢ Κύκλωψ;

15 *Ἀράτου.*

Ἄρατος ὁ Σικυώνιος, ἐπαινοῦντός τινος ἄνθρωπον ἀπονενοημένον καὶ θρασὺν καὶ διὰ τοῦτο καὶ ἐν τοῖς πολέμοις ἐκπρεπῆ, "διαφέρειν" ἔφη "τὸ πολλοῦ τινα τὴν ἀρετὴν ἀξίαν εἶναι νομίζειν καὶ τὸ ζῆν τοῦ μηδενός."

16 *Εὐσεβίου.*

Ἄνθρωποι ἰσχὺν καὶ ῥώμην καὶ τάχος μοῦνα ἀσκέοντες, καὶ ὅκως ταῦτα ἔχοντες ἀπὸ μούνων τούτων εὐδοκιμέωσιν ἐσπουδακότες, τοῦ [δὲ] τῆς ψυχῆς ἐπιμέλεσθαι [οὗ] ἕκητι γιγνόμενοι ἀγνοεῦσι, [καὶ] τούτων μὲν ὁκόσα κοινὰ πρὸς θηρία ἔχουσι καὶ τῶν πολλῶν ἀσθενέστερον, τούτων μὲν ἐπιμελόμενοι, τοῦ δὲ ἐν ἑωυτοῖσι θειοτάτου καὶ κατ' ὅ τι αὐτοῖσι ἔστιν εἰ οἷόν τε τοῖσι θεοῖσι ἐξομοιόεσθαι, ἀμελέοντες.

17 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Θάρσος τὸ πρὸς τὰ φοβερὰ σὺν λόγῳ αἴνεε· ἀνδρηίη γάρ· τὴν δὲ μετὰ ἀλογίης ἐπ' αὐτὰ ὁρμὴν θράσος νόμιζε καὶ ἀποστύγεε.

ΠΕΡΙ ΣΤΡΑΤΗΓΩΝ ΚΑΙ ΠΕΡΙ ΤΩΝ ΚΑΤΑ ΠΟΛΕΜΟΝ ΧΡΕΙΩΝ ΥΠΟΘΗΚΑΙ. ΝΔ.

1 Γνῶμαι γὰρ ἔργων τῶν ἐν ἀνθρώποις τροφοί.

2 Βουλαὶ τάδ' ἐξέπραξαν, οὐ χερῶν σθένος.

3 *Σοφοκλέους.*

Γνῶμαι πλέον κρατοῦσιν ἢ σθένος χερῶν.

4 Ἀγάθωνος.

Γνώμη δὲ κρεῖσσόν ἐστιν ἢ ῥώμη χερῶν.

5 Εὐριπίδου Ἀντιόπη.

Γνώμη γὰρ ἀνδρὸς εὖ μὲν οἰκοῦνται πόλεις,
εὖ δ' οἶκος, ἔς τ' αὖ πόλεμον ἰσχύει μέγα.
σοφὸν γὰρ ἓν βούλευμα τὰς πολλὰς χέρας
νικᾷ· σὺν ὄχλῳ δ' ἀμαθία πλέον κακόν.

6 Εὐριπίδου Αἰόλῳ.

Βραχύ τοι σθένος ἀνδρός,
ἀλλὰ ποικιλίαι πραπίδων.

7 Τοῦ αὐτοῦ Βελλεροφόντῃ.

Ἀεὶ γὰρ ἄνδρα σκαιὸν ἰσχυρὸν φύσει
ἧσσον δέδοικα τἀσθενοῦς τε καὶ σοφοῦ.

8 Εὐριπίδου Παλαμήδει.

Στρατηλάται τἂν μυρίοι γενοίμεθα,
σοφὸς δ' ἂν εἷς τις ἢ δύ' ἐν μακρῷ χρόνῳ.

9 Εὐριπίδου Ῥήσῳ (105).

Εἴθ' ἦσθ' ἀνὴρ εὔβουλος ὡς δρᾶσαι χερί.
ἀλλ' οὐ γὰρ αὐτὸς πάντ' ἐπίστασθαι βροτῶν
πέφυκεν· ἄλλῳ δ' ἄλλο πρόσκειται γέρας·
σὲ μὲν μάχεσθαι, τοὺς δὲ βουλεύειν καλῶς.

10 Εὐριπίδης Ἀρχελάῳ.

Ὀλίγον ἄλκιμον δόρυ
κρεῖσσον στρατηγῷ μυρίου στρατεύματος.

11 Ἐν ταυτῷ.

Ἔχει δὲ καὶ τοῦτ' οὐχὶ μικρὸν εὐγενὴς
ἀνὴρ στρατηγῶν εὐκλεᾶ τ' ἔχων φάτιν.

12 Εὐριπίδου Ἐρεχθεῖ.

Ὡς σὺν θεοῖσι τοὺς σοφοὺς κινεῖν δόρυ
στρατηλάτας χρή, τῶν θεῶν δὲ μὴ βίᾳ.

13 *Ἐν ταυτῷ.*

Οὐδεὶς στρατεύσας ἄδικα σῶς ἦλθεν πάλιν.

14 *Εὐριπίδου.*

Μισῶ δ' ὅταν τις καὶ χθονὸς στρατηλάτης
μὴ πᾶσι πάντων προσφέρῃ μειλίγματα.
τοῖς πράγμασιν γὰρ οὐχὶ θυμοῦσθαι χρεών·
μέλει γὰρ αὐτοῖς οὐδέν· ἀλλ' οὑντυγχάνων,
τὰ πράγματ' ὀρθῶς ἢν τιθῇ, πράσσει καλῶς. (Eurip. Beller.)

15 *Εὐριπίδου Τημένῳ.*

Τὸ δὲ στρατηγεῖν τοῦτ' ἐγὼ κρίνω καλῶς,
γνῶναι τὸν ἐχθρὸν ᾗ μάλισθ' ἁλώσιμος.

16 *Ἐν ταυτῷ.*

Ἄρξεις γὰρ οὕτω· χρὴ δὲ τὸν στρατηλάτην
ὁμῶς δίκαιον ὄντα ποιμαίνειν στρατόν.

17 *Εὐριπίδου Τημενίδαις.*

Ῥώμη δέ γ' ἀμαθὴς πολλάκις τίκτει βλάβην.

18 *Εὐριπίδου Φοινίσσαις* (602).

Ἀσφαλὴς γὰρ ἔστ' ἀμείνων ἢ θρασὺς στρατηλάτης.

19 *Εὐριπίδου ἐκ Βελλεροφόντου.*

Νείκη γὰρ ἀνδρῶν φόνια καὶ μάχας χρεὼν
δόλοισι κλέπτειν· τῆς δ' ἀληθείας ὁδὸς
φαύλη τίς ἐστι· ψεύδεσιν δ' Ἄρης φίλος.

20 *Εὐριπίδου Ἑλένης* (817).

Εἴσει· τὸ τολμᾶν δ' ἀδύνατ' ἀνδρὸς οὐ σοφοῦ.

21 *Σοφοκλέους Ἀλεαδῶν.*

Δοκῶ μὲν οὐδείς. ἀλλ' ὅρα μὴ κρεῖσσον ᾖ

καὶ δυσσεβοῦντα τῶν ἐναντίων κρατεῖν
ἢ δοῦλον αὐτὸν ὄντα τῶν πέλας κλύειν.

22 Εὐριπίδου Ἴωνι (1045).

Τὴν δ' εὐσέβειαν εὐτυχοῦσι μὲν καλὸν
τιμᾶν· ὅπου δὲ πολεμίους δρᾶσαι κακῶς
θέλει τις, οὐδεὶς ἐμποδὼν κεῖται νόμος.

23 Μενάνδρου.

Ὅστις στρατηγεῖ μὴ στρατιώτης γενόμενος,
οὗτος ἑκατόμβην ἐξάγει τοῖς πολεμίοις.

24 Θουκυδίδου ἱστορίας α' (124) δημηγορίας Κορινθίων.

Ἐκ πολέμου μὲν γὰρ εἰρήνη μᾶλλον βεβαιοῦται· ἀφ' ἡσυχίας δὲ μὴ πολεμῆσαι οὐχ ὁμοίως ἀκίνδυνον.

25 Θουκυδίδου ἱστορίας δ' (10) δημηγορίας Δημοσθένους.

Ὅσα γὰρ ἐς ἀνάγκην ἀφῖκται ὥσπερ τόδε, λογισμὸν ἥκιστα ἐνδεχόμενα κινδύνου τοῦ ταχίστου προσδεῖται.

26 Ξενοφῶντος ἐν β' (6, 10) τῆς Κύρου ἀναβάσεως.

Καὶ λέγειν αὐτὸν ἔφασαν, ὡς δέοι τὸν στρατιώτην φοβεῖσθαι μᾶλλον τὸν ἄρχοντα ἢ τοὺς πολεμίους, εἰ μέλλοι ἢ φύλακας φυλάξειν ἢ φίλων ἀφέξεσθαι ἢ ἀπροφασίστως ἰέναι εἰς τοὺς πολεμίους.

27 Ξενοφῶντος ἐν γ' (1) ἀπομνημονευμάτων.

Ἀκούσας δέ ποτε Διονυσόδωρον εἰς τὴν πόλιν ἥκειν ἐπαγγελλόμενον στρατηγεῖν διδάξειν, ἔλεγε πρός τινα τῶν συνόντων, ὃν ᾐσθάνετο βουλόμενον τῆς τιμῆς ταύτης ἐν τῇ πόλει τυχεῖν, ἵνα κἂν ἡμῶν τις ἢ

ταξιαρχῇ ἢ λοχαγήσῃ, ἐπιστημονέστεροι τῶν πολεμικῶν ὦμεν, λέξον ἡμῖν πόθεν ἤρξατό σε διδάσκειν τὴν στρατηγίαν. καὶ ὅς, Ἐκ τοῦ αὐτοῦ, ἔφη, εἰς ὅπερ καὶ ἐτελεύτα· τὰ γὰρ τακτικὰ ἐμέ γε καὶ ἄλλ' οὐδὲν ἐδίδαξεν. Ἀλλὰ μήν, ἔφη ὁ Σωκράτης, τοῦτό γε πολλοστὸν μέρος ἐστὶ στρατηγίας· καὶ γὰρ παρασκευαστικὸν τῶν εἰς πόλεμον τὸν στρατηγὸν εἶναι χρὴ καὶ ποριστικὸν τῶν ἐπιτηδείων τοῖς στρατιώταις καὶ μηχανικόν, καὶ ἐργαστικὸν καὶ ἐπιμελῆ, καὶ καρτερικὸν καὶ ἀγχίνουν, καὶ φιλόφρονά τε καὶ ὠμόν, καὶ ἁπλοῦν καὶ ἐπίβουλον, καὶ φυλακτικόν τε καὶ κλέπτην, καὶ προετικὸν καὶ ἅρπαγα, καὶ φιλόδωρον καὶ πλεονέκτην, καὶ ἀσφαλῆ καὶ ἐπιθετικόν, καὶ ἄλλα πολλὰ καὶ φύσει καὶ ἐπιστήμῃ δεῖ τὸν εὖ στρατηγήσοντα ἔχειν. καλὸν δὲ καὶ τὸ τακτικὸν εἶναι· πολὺ γὰρ διαφέρει στράτευμα τεταγμένον ἀτάκτου· ὥσπερ λίθοι τε καὶ πλίνθοι καὶ ξύλα καὶ κέραμος ἀτάκτως μὲν ἐρριμμένα οὐδὲν χρήσιμά ἐστιν, ἐπειδὰν δὲ ταχθῇ κάτω μὲν καὶ ἐπιπολῆς τὰ μήτε σηπόμενα μήτε τηκόμενα, οἵ τε λίθοι καὶ ὁ κέραμος, ἐν μέσῳ δὲ αἵ τε πλίνθοι καὶ τὰ ξύλα, ὥσπερ ἐν οἰκοδομίᾳ συντίθεται, τότε γίγνεται πολλοῦ ἄξιον κτῆμα οἰκία. Ἀλλὰ πάνυ, ἔφη ὁ νεανίσκος, ὦ Σώκρατες, ὅμοιον εἴρηκας· καὶ γὰρ ἐν τῷ πολέμῳ τούς τε πρώτους ἀρίστους δεῖ τάττειν καὶ τοὺς τελευταίους, ἐν μέσῳ δὲ τοὺς χείρους, ἵνα ὑπὸ μὲν τῶν ἄγωνται, ὑπὸ δὲ τῶν ὠθῶνται. Εἰ μὲν τοίνυν, ἔφη, καὶ διαγιγνώσκειν σε τοὺς ἀγαθοὺς καὶ τοὺς κακοὺς ἐδίδαξεν· εἰ δὲ μή, τί σοι ὄφελος ὧν ἔμαθες; οὐδὲ γὰρ εἴ σε ἀργύριον ἐκέλευσε πρῶτον μὲν καὶ τελευταῖον τὸ κάλλιστον τάττειν, μέσον δὲ τὸ χείριστον, μὴ διδάξας διαγιγνώσκειν τό τε καλὸν καὶ τὸ κίβδηλον, οὐδὲν

ἄν σοι ὄφελος ἦν. Ἀλλὰ μὰ Δί', ἔφη, οὐκ ἐδίδαξεν, ὥστε αὐτοὺς ἂν ἡμᾶς δέοι τούς τε ἀγαθοὺς καὶ τοὺς κακοὺς κρίνειν. Τί οὖν οὐ σκοποῦμεν, ἔφη, πῶς ἂν αὐτῶν μὴ διαμάρτοιμεν; Βούλομαι, ἔφη ὁ νεανίσκος. Οὐκ οὖν, ἔφη, εἰ μὲν ἀργύριον δέοι ἁρπάζειν, τοὺς φιλαργυρωτάτους πρώτους καθιστάντες ὀρθῶς ἂν τάττοιμεν; Ἔμοιγε δοκεῖ. Τί δαὶ τοὺς κινδυνεύειν μέλλοντας, ἆρα τοὺς φιλοτιμοτάτους προτακτέον; Οὗτοι γοῦν εἰσίν, ἔφη, οἱ ἕνεκα ἐπαίνου κινδυνεύειν ἐθέλοντες· οὐ τοίνυν οὗτοί γε ἄδηλοι, ἀλλ' ἐπιφανεῖς πανταχοῦ ὄντες εὐαίρετοι ἂν εἶεν. Αὐτάρ, ἔφη, πότερά σε τάττειν μόνον ἐδίδαξεν, ἢ καὶ ὅποι, καὶ ὅπως χρηστέον ἑκάστῳ τῶν ταγμάτων; Οὐ πάνυ, ἔφη. Καὶ μὴν πολλά γ' ἐστί, πρὸς ἃ οὔτε ἄγειν οὔτε τάττειν ὡσαύτως προσήκει. Μὰ Δί', ἔφη, οὐ διεσαφήνιζεν.

28 Ἐν ταυτῷ (III, 2).

Ἐντυχὼν δέ ποτε στρατηγεῖν ᾑρημένῳ τῳ, Τοῦ ἕνεκα, ἔφη, Ὅμηρον οἴει τὸν Ἀγαμέμνονα προσαγορεῦσαι ποιμένα λαῶν; ἆρά γε ὅτι ὥσπερ τὸν ποιμένα δεῖ ἐπιμελεῖσθαι ὅπως σῶαί τε ἔσονται, αἱ οἶες καὶ τὰ ἐπιτήδεια ἕξουσι, καὶ οὗ ἕνεκα τρέφονται, τοῦτό ἔσται· οὕτω καὶ τὸν στρατηγὸν ἐπιμελεῖσθαι δεῖ ὅπως σῶοί τε οἱ στρατιῶται ἔσονται καὶ τὰ ἐπιτήδεια ἕξουσι, καὶ οὗ ἕνεκα στρατεύονται, τοῦτο ἔσται; στρατεύονται δέ, ἵνα κρατοῦντες τῶν πολεμίων εὐδαιμονέστεροι ὦσιν· ἢ τί δή ποτε οὕτως ἐπήνεσε τὸν Ἀγαμέμνονα εἰπών,

ἀμφότερον βασιλεύς τ' ἀγαθὸς κρατερός τ' αἰχμητής;

ἆρά γε ὅτι αἰχμητής τε [καὶ] κρατερὸς ἂν εἴη, οὐκ εἰ μόνος αὐτὸς εὖ ἀγωνίζοιτο πρὸς τοὺς πολεμίους, ἀλλ'

εἰ καὶ παντὶ τῷ στρατοπέδῳ τούτου αἴτιος εἴη; καὶ βασιλεὺς ἀγαθός, οὐκ εἰ μόνον τοῦ ἑαυτοῦ βίου καλῶς προεστήκοι, ἀλλ' εἰ καὶ ὧν βασιλεύει, τούτοις εὐδαιμονίας αἴτιος εἴη; καὶ γὰρ βασιλεὺς αἱρεῖται οὐχ ἵνα ἑαυτοῦ καλῶς ἐπιμελῆται, ἀλλ' ἵνα καὶ οἱ ἑλόμενοι διὰ τοῦτον εὖ πράττωσιν· καὶ στρατεύονται δὲ πάντες ἵνα ὁ βίος αὐτοῖς ὡς βέλτιστος ᾖ, καὶ στρατηγοὺς αἱροῦνται τούτου ἕνεκα, ἵνα πρὸς τοῦτο αὐτοῖς ἡγεμόνες ὦσιν. δεῖ οὖν τὸν στρατηγοῦντα τοῦτο παρασκευάζειν τοῖς ἑλομένοις αὐτὸν στρατηγόν· καὶ γὰρ οὔτε κάλλιον τούτου ἄλλο ῥᾴδιον εὑρεῖν, οὔτε αἴσχιον τοῦ ἐναντίου. καὶ οὕτως ἐπισκοπῶν τίς εἴη ἀγαθοῦ ἡγεμόνος ἀρετή, τὰ μὲν ἄλλα περιῄρει, κατέλειπε δὲ τὸ εὐδαίμονας ποιεῖν ὧν ἂν ἡγῆται.

29 Ἐν ταυτῷ (III, 3).

Καὶ ἱππαρχεῖν δέ τινι ᾑρημένῳ οἶδά ποτε αὐτὸν τοιάδε διαλεχθέντα. Ἡ ἀρχή που, ἔφη, ἐφ' ἧς ᾕρησαι, ἵππων τε καὶ ἀμβατῶν ἐστιν. Ἔστι γὰρ οὖν, ἔφη. Ἴθι δὴ λέξον ἡμῖν τοῦτο πρῶτον, ὅπως διανοῇ τοὺς ἵππους βελτίους ποιῆσαι; Καὶ ὅς, Ἀλλὰ τοῦτο μέν, ἔφη, οὐκ ἐμὸν εἶναι τὸ ἔργον οἶμαι, ἀλλὰ ἰδίᾳ ἕκαστον δεῖν τοῦ ἑαυτοῦ ἵππου ἐπιμελεῖσθαι. Ἐὰν οὖν, ἔφη ὁ Σωκράτης, παρέχωνταί σοι τοὺς ἵππους οἱ μὲν οὕτω κακόποδας ἢ κακοσκελεῖς ἢ ἀσθενεῖς, οἱ δὲ οὕτως ἀτρόφους ὥστε μὴ δύνασθαι ἀκολουθεῖν, οἱ δὲ οὕτως ἀναγώγους ὥστε μὴ μένειν ὅπου ἂν σὺ τάξῃς, οἱ δὲ οὕτω λακτιστὰς ὥστε μηδὲ τάξαι δυνατὸν εἶναι, τί σοι τοῦ ἱππικοῦ ὄφελος ἔσται; ἢ πῶς δυνήσῃ τοιούτων ἡγούμενος ἀγαθόν τι ποιῆσαι τὴν πόλιν; [Καὶ ὅς,] Ἀλλὰ καλῶς τε λέγεις, ἔφη, καὶ πειράσομαι τῶν ἵππων εἰς τὸ δυνατὸν ἐπιμελεῖσθαι. Τί

δέ, τοὺς ἱππέας οὐκ ἐπιχειρήσεις, ἔφη, βελτίονας ποιῆσαι; Ἔγωγ᾽, ἔφη. Οὐκ οὖν πρῶτον μὲν ἀναβατικωτέρους ἐπὶ τοὺς ἵππους ποιήσεις; Δεῖ γοῦν, ἔφη, καὶ γὰρ εἴ τις αὐτῶν καταπέσοι, μᾶλλον ἂν οὕτω σώζοιτο. Τί γάρ; ἐάν που κινδυνεύειν δέῃ, πότερον ἐπάγειν τοὺς πολεμίους ἐπὶ τὴν ἄμμον κελεύσεις, ἔνθα περ εἰώθατε ἱππεύειν, ἢ πειράσῃ τὰς μελέτας ἐν τοιούτοις ποιεῖσθαι χωρίοις, ἐν οἷοις περ οἱ πόλεμοι γίγνονται; Βέλτιον γοῦν, ἔφη, καὶ τοῦτο. Τί δέ; τοῦ βάλλειν ὡς πλείστους ἀπὸ τῶν ἵππων ἐπιμέλειάν τινα ποιήσει; Ἔφη καὶ τοῦτο. Θήγειν δὲ τὰς ψυχὰς τῶν ἱππέων καὶ ἐξοργίζειν πρὸς τοὺς πολεμίους, ἅπερ ἀλκιμωτέρους ποιεῖ, διανενόησαι; [Εἰ δὲ μή,] ἀλλὰ νῦν γε πειράσομαι, ἔφη. Ὅπως δέ σοι πείθονται οἱ ἱππεῖς, πεφρόντικάς τι; ἄνευ γὰρ δὴ τούτου οὔτε ἵππων οὔτε ἱππέων ἀγαθῶν καὶ ἀλκίμων οὐδὲν ὄφελος. Ἀληθῆ λέγεις, ἔφη. ἀλλὰ πῶς ἄν τις μάλιστα, ἔφη, ὦ Σώκρατες, ἐπὶ τοῦτο αὐτοὺς προτρέψαιτο; Ἐκεῖνο μὲν δήπου οἶσθα, ὅτι ἐν παντὶ πράγματι οἱ ἄνθρωποι τούτοις μάλιστα ἐθέλουσι πείθεσθαι, οὓς ἂν ἡγῶνται βελτίστους εἶναι· καὶ γὰρ ἐν νόσῳ, ὃν ἂν ἡγῶνται ἰατρικώτατον εἶναι, τούτῳ μάλιστα πείθονται· καὶ ἐν πλοίῳ οἱ πλέοντες, ὃν ἂν κυβερνητικώτατον· καὶ ἐν γεωργίᾳ, ὃν ἂν γεωργικώτατον. Καὶ μάλα, ἔφη. Οὐκ οὖν εἰκός, ἔφη, καὶ ἐν ἱππικῇ ὃς ἂν μάλιστα εἰδὼς φαίνηται ἃ δεῖ ποιεῖν, τούτῳ μάλιστα ἐθέλειν τοὺς ἄλλους πείθεσθαι; Ἐὰν οὖν, ἔφη, ἐγώ, ὦ Σώκρατες, βέλτιστος ὢν αὐτῶν δῆλος ὦ, ἀρκέσει μοι τοῦτο εἰς τὸ πείθεσθαι αὐτοὺς ἐμοί; Ἐάν γε πρὸς τοῦτο, ἔφη, διδάξῃς αὐτούς, ὡς τὸ πείθεσθαί σοι κάλλιόν τε καὶ σωτηριώτερον αὐτοῖς ἔσται. Πῶς οὖν, ἔφη, τοῦτο διδάξω; Πολὺ νὴ Δί᾽, ἔφη, ῥᾷον, ἢ εἴ σε

δέοι διδάσκειν, ὡς τὰ κακὰ τῶν ἀγαθῶν ἀμείνω καὶ λυσιτελέστερά ἐστι. Λέγεις, ἔφη, σὺ τὸν ἵππαρχον πρὸς τοῖς ἄλλοις ἐπιμελεῖσθαι δεῖν καὶ τοῦ δύνασθαι λέγειν; Σὺ δ' ᾤου, ἔφη, χρῆναι σιωπῇ ἱππαρχεῖν; ἢ οὐκ ἐντεθύμησαι, ὅτι ὅσα τε νόμῳ μεμαθήκαμεν κάλλιστα ὄντα, δι' ὧν γε ζῆν ἐπιστάμεθα, ταῦτα πάντα διὰ λόγου ἐμάθομεν; καὶ εἴ τι ἄλλο καλὸν μανθάνει τις μάθημα, διὰ λόγου μανθάνει· καὶ οἱ ἄριστα διδάσκοντες μάλιστα λόγῳ χρῶνται· καὶ οἱ τὰ σπουδαιότατα μάλιστα ἐπιστάμενοι κάλλιστα διαλέγονται.

30 *Ἐν ταυτῷ* (III, 4, 7).

Καὶ ὁ Νικομαχίδης, Μὰ Δί', ἔφη, ὦ Σώκρατες, οὐκ ἄν ποτε ᾤμην ἐγώ σου ἀκοῦσαι, ὡς οἱ ἀγαθοὶ οἰκονόμοι ἀγαθοὶ στρατηγοὶ ἂν εἶεν. Ἴθι δή, ἔφη, ἐξετάσωμεν τὰ ἔργα ἑκατέρου αὐτῶν, ἵνα εἰδῶμεν, πότερον τὰ αὐτά ἐστιν, ἢ διαφέρει τι. Πάνυ γε, ἔφη. Οὐκ οὖν, ἔφη, τὸ μὲν τοὺς ἀρχομένους κατηκόους τε καὶ εὐπειθεῖς ἑαυτοῖς κατασκευάζειν ἀμφοτέρων ἐστὶν ἔργον; Καὶ μάλα ἔφη. Τί δέ; τὸ προστάττειν ἕκαστα τοῖς ἐπιτηδείοις πράττειν; Καὶ τοῦτο, ἔφη. Καὶ μὴν [τὸ] τοὺς κακοὺς κολάζειν καὶ τοὺς ἀγαθοὺς τιμᾶν, ἀμφοτέροις οἶμαι προσήκειν. Πάνυ μὲν οὖν, ἔφη. Τὸ δὲ τοὺς ὑπηκόους εὐμενεῖς ποιεῖσθαι, πῶς οὐκ ἀμφοτέροις; Καὶ τοῦτ', ἔφη. Συμμάχους δὲ καὶ βοηθοὺς προσάγεσθαι δοκεῖ [σοι] συμφέρειν ἀμφοτέροις, ἢ οὔ; Πάνυ μὲν οὖν, ἔφη. Ἀλλὰ φυλακτικοὺς τῶν ὄντων οὐκ ἀμφοτέρους εἶναι προσήκει περὶ τὰ αὐτῶν ἔργα; Ταῦτα μέν, ἔφη, πάντα ὁμοίως ἀμφοτέρων ἐστίν· ἀλλὰ τὸ μάχεσθαι οὐκέτι ἀμφοτέρων. Ἀλλὰ ἐχθροί γέ τοι ἀμφοτέροις γίγνονται. Καὶ μάλα, ἔφη,

τοῦτό γε. Οὐκ οὖν [τὸ] περιγενέσθαι τούτων ἀμφοτέροις συμφέρει; Πάνυ [γε,] ἔφη. Ἀλλ' ἐκεῖνο παριείς, ἂν δέῃ μάχεσθαι, τί ὠφελήσει ἡ οἰκονομική; Ἐνταῦθα δήπου καὶ πλεῖστον, ἔφη. Ὁ γὰρ ἀγαθὸς οἰκονόμος εἰδὼς ὅτι οὐδὲν οὕτω λυσιτελές τε καὶ κερδαλέον ἐστὶν ὡς τὸ μαχόμενον τοὺς πολεμίους νικᾶν, οὐδὲ οὕτως ἀλυσιτελές τε καὶ ζημιῶδες ὡς τὸ ἡττᾶσθαι, προθύμως μὲν τὰ πρὸς τὸ νικᾶν συμφέροντα ζητήσει καὶ παρασκευάσεται, ἐπιμελῶς δὲ τὰ πρὸς τὸ ἡττᾶσθαι φέροντα σκέψεται καὶ διασκευάσεται, ἐνεργῶς δ', ἂν τὴν παρασκευὴν ὁρᾷ νικητικὴν οὖσαν, μαχεῖται· οὐχ ἥκιστα δὲ τούτων, ἐὰν ἀπαράσκευος ᾖ, φυλάξεται συνάπτειν μάχην. Μὴ καταφρόνει εὖ, ἔφη, ὦ Νικομαχίδη, τῶν οἰκονομικῶν ἀνδρῶν· ἡ γὰρ τῶν ἰδίων ἐπιμέλεια πλήθει μόνον διαφέρει τῆς τῶν κοινῶν, τὰ δὲ ἄλλα παραπλήσια ἔχει.

31 Ἡροδότου ἱστορίας ζ (VII, 49).

Ὁ δὲ Ἀρτάβανος ἀμείβετο λέγων· Ὦ βασιλεῦ, οὔτε στρατὸν τοῦτον, ὅστις γε σύνεσιν ἔχει, μέμφοιτ' ἄν, οὔτε τῶν νεῶν τὸ πλῆθος. ἤν τε πλεῦνας συλλέξῃς, τὰ δύο τοι ταῦτα λέγω πολλῷ ἔτι πολεμιώτερα γίνονται· τὰ δὲ δύο ταῦτα ἔστι γῆ τε καὶ θάλασσα· οὔτε γὰρ τῆς θαλάσσης ἔστι λιμὴν τοσοῦτος [οὐδαμόθι, ὡς ἐγὼ εἰκάζω,] ὅστις ἐγειρομένου χειμῶνος δεξάμενος σεῦ τοῦτο τὸ ναυτικόν, φερέγγυος ἔσται διασῶσαι τὰς νέας· καίτοι οὐκὶ ἕνα αὐτὸν δεῖ εἶναι τὸν λιμένα, ἀλλὰ παρὰ πᾶσαν τὴν ἤπειρον παρ' ἣν δὴ κομίεαι· οὐκ ὦν δὴ ἐόντων τῶν λιμένων ὑποδεξίων, μάθε ὅτι αἱ συμφοραὶ τῶν ἀνθρώπων ἄρχουσι καὶ οὐκὶ ἄνθρωποι τῶν συμφορέων. καὶ δὴ τῶν δύο τοι τοῦ ἑτέρου εἰρημένου, τὸ ἕτερον ἔρχομαι ἐρέων·

γῆ δὲ πολεμίη τῆδέ τοι καθίσταται, εἰ θέλει τοι μηδὲν ἀντίξοον καταστῆναι, τοσούτῳ τοι γίνεται πολεμιωτέρη, ὅσῳ ἂν προβαίνῃς ἑκατέρω τὸ πρόσω αἰεὶ κλεπτόμενος· εὐπρηξίης δὲ οὐκ ἔστιν ἀνθρώποις οὐδὲ μίη πληθώρη· καὶ δή τοι ὡς οὐδενὸς ἐναντιευμένου, λέγω τὴν χώραν πλεῦνα ἐν πλεῦνι χρόνῳ γιγνομένην λιμὸν τέξεσθαι· ἀνὴρ δὲ οὕτως ἂν εἴη ἄριστος, εἰ βουλευόμενος μὲν ἀρρωδέοι πᾶν ἐπιλεγόμενος πείσεσθαι χρῆμα, ἐν δὲ τῷ ἔργῳ θρασὺς εἴη.

32 *Θουκυδίδου ἱστορίας δ'* (61) *δημηγορίας Ἑρμοκράτους.*

Πέφυκε γὰρ τὸ ἀνθρώπειον διὰ παντὸς ἄρχειν μὲν τοῦ εἴκοντος, φυλάσσεσθαι δὲ τὸ ἐπιόν.

33 *Δημοσθένους περὶ τῆς Ῥοδίων ἐλευθερίας* (193, 8).

Οὐ γὰρ ὁμοίως οὐδεὶς ὑπέρ τε τοῦ πλεονεκτεῖν πολεμήσειεν ἂν καὶ τῶν ἑαυτοῦ, ἀλλ' ὑπὲρ μὲν ὧν ἂν ἐλαττῶνται μέχρι τοῦ δυνατοῦ πάντες πολεμοῦσιν, ὑπὲρ δὲ τοῦ πλεονεκτεῖν οὐχ οὕτως· ἀλλ' ἐφίενται μέν, ἐάν τις ἐᾷ, ἐὰν δὲ κωλυθῶσιν, οὐδὲν ἠδικηκέναι τοὺς ἐναντιωθέντας ἑαυτοὺς ἡγοῦνται.

34 *Θουκυδίδου ἱστορίας δ'* (92) *δημηγορίας Παγώνδου.*

Εἰώθασί τε οἱ ἰσχύος που θράσει τοῖς πέλας, ὥσπερ Ἀθηναῖοι νῦν, ἐπιόντες τὸν μὲν ἡσυχάζοντα καὶ ἐν τῇ ἑαυτοῦ μόνον ἀμυνόμενον ἀδεέστερον ἐπιστρατεύειν, τὸν δὲ καὶ ἔξω ὅρων προαπαντῶντα καὶ ἢν καιρὸς ᾖ πολέμου ἄρχοντα, ἧσσον ἑτοίμως κατέχειν.

35 *Θουκυδίδου ἱστορίας ε'* (9) *δημηγορίας Βρασίδου.*

Καὶ νομίσατε τρία εἶναι τοῦ καλῶς πολεμεῖν, τὸ ἐθέλειν καὶ [τὸ] αἰσχύνεσθαι καὶ τοῖς ἄρχουσι πείθεσθαι.

36 Θουκυδίδου ἱστορίας ε' (103) δημηγορίας Ἀθηναίων.

Ἐλπὶς δὲ κινδύνου παραμύθιον οὖσα, τοὺς μὲν ἀπὸ περιουσίας χρωμένους αὐτῇ, κἂν βλάψῃ, οὐ καθεῖλε· τοῖς δὲ ἐς ἅπαν τὸ ὑπάρχον ἀναρριπτοῦσι, δάπανος γὰρ φύσει, ἅμα τε γιγνώσκεται σφαλέντων, καὶ ἐν ὅτῳ ἔτι φυλάξεταί τις αὐτὴν γνωρισθεῖσαν, οὐκ ἐλλείπει.

37 Θουκυδίδου ἱστορίας ε' (102) δημηγορίας Ἀθηναίων.

Ἀλλ' ἐπιστάμεθα τὰ τῶν πολεμίων ἔστιν ὅτε καινοτέρας τὰς τύχας λαμβάνοντα ἢ κατὰ τὸ διαφέρον ἑκατέρων πλῆθος.

38 Θουκυδίδου ἱστορίας ε' (9) δημηγορίας Βρασίδου.

Τὸ γὰρ ἐπιὸν ὕστερον δεινότερον τοῖς πολεμίοις τοῦ παρόντος καὶ μαχομένου.

39 Ἐκ τῆς Νικολάου ἐθῶν συναγωγῆς.

Αὐταριᾶται τοὺς ἀδυνάτους τῶν στρατιωτῶν ἐν ταῖς ὁδοιπορίαις οὐδέποτε ζῶντας ἀπολείπουσι.

40 Τοῦ αὐτοῦ.

Τριβαλλοὶ τέτταρας φάλαγγας ἐν ταῖς μάχαις ποιοῦνται· τὴν πρώτην τῶν ἀσθενῶν, τὴν ἐχομένην τῶν κρατίστων, τὴν τρίτην τῶν ἱππέων, τελευταίαν τὴν τῶν γυναικῶν, αἳ αὐτοὺς εἰς φυγὴν τρεπομένους κωλύουσι βλασφημοῦσαι.

41 Ἀντισθένους (Plutarch. Mor. 336 a).

Ἀντισθένης ἔλεγεν, ὅτι πάντα δεῖ τοῖς πολεμίοις εὔχεσθαι τἀγαθὰ παρεῖναι χωρὶς ἀνδρείας· γίγνεται γὰρ οὕτως οὐ τῶν ἐχόντων, ἀλλὰ τῶν κρατούντων.

42 Δημοσθένους κατὰ Φιλίππου (51, 10).

Αἰσχρόν ἐστι φενακίζειν ἑαυτοὺς καὶ ἅπαντα ἀναβαλλομένους ὅσα ἂν ᾖ δυσχερῆ, πάντων ὑστερεῖν τῶν ἔργων, καὶ μηδὲ τοῦτο δύνασθαι μαθεῖν, ὅτι δεῖ τοὺς ὀρθῶς πολέμῳ χρωμένους οὐκ ἀκολουθεῖν τοῖς πράγμασιν, ἀλλ' αὐτοὺς ἔμπροσθεν εἶναι τῶν πραγμάτων· καὶ τὸν αὐτὸν τρόπον ὥσπερ τῶν στρατευμάτων ἀξιώσειέ τις ἂν τὸν στρατηγὸν ἡγεῖσθαι, οὕτω καὶ τῶν πραγμάτων τοὺς βουλευομένους ἡγεῖσθαι, ἵν' ἃ ἂν ἐκείνοις δοκῇ, ταῦτα πράττηται, καὶ μὴ τὰ συμβάντα ἀναγκάζωνται διώκειν.

43 Πλουτάρχου ἐκ τοῦ εἰ πολιτευτέον πρεσβυτέρῳ (788 d).

Οἱ ῥήτορες Ἀθήνησιν Ἰφικράτει καὶ Τιμοθέῳ Χάρητα παρέφερον ἰσχυρὸν ὄντα καὶ τοιοῦτον ἠξίουν εἶναι τὸν στρατηγόν. ὁ δὲ Τιμόθεος "Οὐ μὰ τοὺς θεοὺς" εἶπεν "ἀλλὰ τοιοῦτον μὲν εἶναι τὸν μέλλοντα τῷ στρατηγῷ τὰ στρώματα κομίζειν, τὸν δὲ στρατηγὸν ἅμα πρόσσω καὶ ὀπίσσω ὁρᾶν."

44 Ἀντιγόνου (Plutarch. Mor. 183 d).

Ἀντίγονος ὑποχωρῶν ποτε τοῖς πολεμίοις ἐπερχομένοις οὐκ ἔφη φεύγειν, ἀλλὰ διώκειν τὸ συμφέρον ὀπίσω κείμενον.

45 Λαμάχου (Plutarch. l. l. 186 f).

Λάμαχος ἐπετίμα τινὶ τῶν λοχαγῶν ἁμαρτάνοντι· τοῦ δὲ φήσαντος μηκέτι τοῦτο ποιήσειν "Οὐκ ἔστιν" εἶπεν "ἐν πολέμῳ δὶς ἁμαρτάνειν."

46 *Ἀντιγόνου.*

Ἀντιγόνος ἐρωτηθεὶς πῶς ἂν τις ἐπιθοῖτο τοῖς πολεμίοις, εἶπεν "ἢ δόλῳ ἠὲ βίῃ ἢ ἀμφαδὸν ἠὲ κρυφηδόν."

47 *Δημάδης* (Pseudoplut. de nobil. 2).

Δημάδης ὁ ῥήτωρ ληφθεὶς αἰχμάλωτος ἐν τῇ κατὰ Χαιρώνειαν μάχῃ ὑπὸ Φιλίππου καὶ συσταθεὶς αὐτῷ, ἐκείνου παρὰ πότον σεμνυνομένου "ποῦ ἡ εὐγένεια καὶ ἡ ὑπεροχὴ τῆς Ἀθηναίων πόλεως;" "ἔγνως ἂν" ἔφη "ὦ βασιλεῦ, τὴν τῆς πόλεως δύναμιν, εἰ Ἀθηναίων μὲν Φίλιππος, Μακεδόνων δὲ Χάρης ἐστρατήγει."

48 *Ἀλεξάνδρου.*

Ἀλέξανδρος ἐρωτηθεὶς ὑπό τινος πῶς ἐν ὀλίγῳ χρόνῳ τῆς οἰκουμένης ἐκυρίευσεν, εἶπε "βουλῇ καὶ μύθοισι καὶ ἠπεροπηΐδι τέχνῃ."

49 *Ἀγησιλάου.*

Ἀγησίλαος ὁ τῶν Λακεδαιμονίων βασιλεὺς ἐρωτηθεὶς ὑπό τινος τίνα δεῖ τὸν στρατηγὸν ἔχειν εἶπεν ὅτι πρὸς μὲν τοὺς πολεμίους τόλμαν, πρὸς δὲ τοὺς ὑποτεταγμένους εὔνοιαν, πρὸς δὲ τοὺς καιροὺς λογισμόν.

50 *Ἐπαμινώνδου.*

Ἐπαμινώνδας ὁ Θηβαῖος ἰδὼν στρατόπεδον μέγα καὶ καλὸν στρατηγὸν οὐκ ἔχον "ἡλίκον" ἔφη "θηρίον καὶ κεφαλὴν οὐκ ἔχει."

51 *Ἰφικράτους* (Plut. Mor. 87 a).

Ἰφικράτης ἐν συμμάχων χώρᾳ στρατοπεδεύων καὶ χάρακα βαλλόμενος καὶ τάφρον ὀρύττων, πρὸς

τὸν εἰπόντα "τί γὰρ φοβούμεθα;" χειρίστην ἔφη φωνὴν στρατηγοῦ εἶναι τὴν "οὐκ ἂν προσεδόκησα."

52 *Τοῦ αὐτοῦ* (ib. 187 b).

Ῥήτορος δέ τινος ἐρωτῶντος αὐτὸν ἐν ἐκκλησίᾳ "τίς ὢν μέγα φρονεῖς, πότερον ἱππεὺς ἢ ὁπλίτης ἢ τοξότης ἢ πελταστής;" "οὐδεὶς" ἔφη "τούτων, ἀλλὰ τούτοις ἐπιτάττειν πᾶσιν ἐπιστάμενος."

53 *Χαβρίου* (Plut. l. l. 187 c).

Χαβρίας ἔλεγε κάλλιστα στρατηγεῖν τοὺς μάλιστα γιγνώσκοντας τὰ τῶν πολεμίων.

54 *Θουκυδίδου ἱστορίας γ'* (III, 48) *δημηγορίας Διοδότου.*

Ὅστις γὰρ εὖ βουλεύεται πρὸς τοὺς ἀντιπάλους κρείσσων ἐστὶν ἢ μετ' ἔργων ἰσχύος ἀνοίᾳ ἐπιών.

55 *Τοῦ αὐτοῦ ἱστορίας δ'* (86) *δημηγορίας Βρασίδου.*

Ἀπάτῃ γὰρ εὐπρεπεῖ αἴσχιόν τι τοῖς γε ἐν ἀξιώματι πλεονεκτῆσαι ἢ βίᾳ ἐμφανεῖ· τὸ μὲν γὰρ ἰσχύος δικαιώσει ἣν ἡ τύχη ἔδωκεν ἐπέρχεται, τὸ δὲ γνώμης ἀδίκου ἐπιβουλῇ.

56 *Θουκυδίδου* (VI, 91) *δημηγορίας Ἀλκιβιάδου.*

Βεβαιότατα δ' ἂν τις τοὺς πολεμίους οὕτω βλάπτοι, εἰ ἃ μάλιστα δεδιότας αὐτοὺς αἰσθάνοιτο, ταῦτα σαφῶς πυνθανόμενος ἐπιφέροι. εἰκὸς γὰρ αὐτοὺς ἀκριβέστατα ἑκάστους τὰ σφέτερα αὐτῶν δεινὰ ἐπισταμένους φοβεῖσθαι.

57 *Πύρρου.*

Πύρρος ἐπιζητούντων τινῶν παρὰ πότον πότερος κρείσσων αὐλητὴς Ἀντιγενίδας ἢ Σάτυρος "ἐμοὶ

μὲν" εἶπε "στρατηγὸς Πολυσπέρχων," διδάσκων ὅτι ἀναγκαῖα δεῖ ζητεῖν καὶ μὴ ἄχρηστα.

58 *Ἀννίβαλος.*

Ἀννίβαλ ἀκούσας στωικοῦ τινος ἐπιχειροῦντος ὅτι ὁ σοφὸς μόνος στρατηγικός ἐστιν, ἐγέλασε, νομίζων ἀδύνατον εἶναι ἐκτὸς τῆς δι' ἔργων ἐμπειρίας τὴν ἐν τούτοις ἐπιστήμην σχεῖν.

59 *Λυκούργου.*

Λυκοῦργος ἐκέλευσε Λακεδαιμονίοις μὴ πολλάκις τοῖς αὐτοῖς πολεμεῖν, ἵνα μὴ ἄκοντας πολεμεῖν διδάξωσιν.

60 *Πύρρου.*

Πύρρος πρὸς τὸν ὑπισχνούμενον τὰ τακτικὰ διδάξειν ἐν δὲ παρατάξει οὐδέποτε γεγονότα οὐκ ἔφη δεῖσθαι ἀπερισαλπίγκτου στρατηγοῦ.

61 *Φιλίππου.*

Φίλιππος ἔλεγε κρεῖττον εἶναι στρατόπεδον ἐλάφων λέοντος στρατηγοῦντος ἢ λεόντων ἐλάφου.

62 *Ἰφικράτους.*

Ἰφικράτης τὸ στράτευμα οὕτως ἔφασκε δεῖν συντετάχθαι ὡς ἓν σῶμα, θώρακα μὲν ἔχον τὴν φάλαγγα, χεῖρας δὲ τοὺς ψιλούς, πόδας δὲ τοὺς ἱππέας, κεφαλὴν δὲ τὸν στρατηγόν.

63 *Φιλίππου.*

Φίλιππος ἐρωτώμενος οὕς τινας μάλιστα φιλεῖ καὶ οὕς τινας μάλιστα μισεῖ "τοὺς μέλλοντας" ἔφη "προδιδόναι μάλιστα φιλῶ, τοὺς δ' ἤδη προδεδωκότας μάλιστα μισῶ."

64 *Τιμοθέου.*

Τιμόθεος πρὸς τὸν ἐρόμενον ᾧ διαφέρει στρατηγικὴ ῥητορικῆς "ᾧ πόλεμος" ἔφη "εἰρήνης."

65 *Εὐδαιμονίδου* (Plut. Mor. p. 192 b).

Εὐδαμονίδας ἀκούσας φιλοσόφου διαλεχθέντος ὅτι μόνος ἀγαθὸς στρατηγὸς ὁ σοφός ἐστιν "ὁ μὲν λόγος" ἔφη "θαυμαστός, ὁ δὲ λέγων οὐ περισεσάλπιγκται."

66 *Ξενοφῶντος ἐν τῷ ε´* (3, 9) *τῆς Κύρου παιδείας.*

Οὔτε γὰρ ἂν φίλους τις ποιήσειεν ἄλλως πως πλείονα ἀγαθὰ ἐν πολέμῳ ἢ πολέμιος δοκῶν εἶναι, οὔτ' ἂν ἐχθροὺς πλείους τις βλάψειεν ἄλλως πως ἢ φίλος δοκῶν εἶναι.

ΠΕΡΙ ΕΙΡΗΝΗΣ. ΝΕ.

1 *Εὐριπίδου Κρεσφόντου. Χορός.*

Εἰρήνη βαθύπλουτε καὶ
καλλίστα μακάρων θεῶν,
ζῆλός μοι σέθεν, ὡς χρονίζεις.
δέδοικα δὲ μὴ πρὶν πόνοις
ὑπερβάλῃ με γῆρας,
πρίν περ χαρίεσσαν προσιδεῖν ὥραν
καὶ καλλιχόρους ἀοιδὰς
φιλοστεφάνους τε κώμους.
ἴθι μοι πότνα πόλιν,
τὰν δ' ἐχθρὰν στάσιν εἶργ' ἀπ' οἴ-
κων τὰν μαινομέναν τ' ἔριν,
θηκτῷ τερπομέναν σιδάρῳ.

2 *Ἀριστοφάνους Γεωργῶν.*

Εἰρήνη βαθύπλουτε καὶ ζευγάριον βοεικόν·

εἰ γάρ ἐμοὶ παυσαμένῳ τοῦ πολέμου γένοιτο
σκάψαι κἀποκλάσαι τε καὶ λουσαμένῳ διελκύσαι
τῆς τρυγός, ἄρτον λιπαρὸν καὶ ῥάφανον φέροντι.

3 Βακχυλίδου παιάνων.

Τίκτει δέ τε θνατοῖσιν εἰράνα μεγάλα,
πλοῦτον καὶ μελιγλώσσων ἀοιδᾶν ἄνθεα,
δαιδαλέων τ' ἐπὶ βωμῶν θεοῖσιν αἴθεσθαι βοῶν
ξανθᾷ φλογὶ μῆρα τανυτρίχων τε μήλων,
γυμνασίων τε νέοις αὐλῶν τε καὶ κώμων μέλειν.
ἐν δὲ σιδαροδέτοισι πόρπαξιν αἰθᾶν ἀραχνᾶν
ἱστοὶ πέλονται, ἔγχεά τε λογχωτὰ
ξίφεά τ' ἀμφάκε' [εὐρὼς] δάμναται· χαλκέων δ'
οὐκέτι σαλπίγγων κτύπος, οὐδὲ συλᾶται μελίφρων
ὕπνος ἀπὸ βλεφάρων, ἀμὸν ὃς θάλπει κέαρ.
συμποσίων δ' ἐρατῶν βρίθοντ' ἀγυιαί,
παιδικοί θ' ὕμνοι φλέγονται.

4 Εὐριπίδου Ἐρεχθέως.

Κείσθω δόρυ μοι μίτον ἀμφιπλέκειν ἀράχνᾳ,
μετὰ δ' ἁσυχίας πολιῷ γήραι συνοικοίην,
ἀείδοιμι δὲ στεφάνοισι κάρα πολιὸν στεφανώσας,
Θρηίκιον πέλταν πρὸς Ἀθάνας
περικίοσιν ἀγκρεμάσας θαλάμοις,
δέλτων τ' ἀναπτύσσοιμι γῆρυν,
ἃν σοφοὶ κλέονται.

5 Φιλήμονος ἐκ Πύρρου.

Οἱ φιλόσοφοι ζητοῦσιν, ὡς ἀκήκοα,
περὶ τοῦτό τ' αὐτοῖς πολὺς ἀναλοῦται χρόνος,
τί ἐστι τἀγαθόν· οὐ δὲ εἷς εὕρηκέ πω
τί ἐστιν· ἀρετὴν καὶ φρόνησίν φασι, καὶ
λέγουσι πάντα μᾶλλον ἢ τί τἀγαθόν.
ἐν ἀγρῷ διατρίβων τήν τε γῆν σκάπτων ἐγὼ

νῦν εὗρον· εἰρήνη'στίν· ὦ Ζεῦ φίλτατε,
τῆς ἐπαφροδίτου καὶ φιλανθρώπου θεοῦ.
γάμους ἑορτὰς συγγενεῖς παῖδας φίλους
πλοῦτον ὑγίειαν σῖτον οἶνον ἡδονὴν
αὕτη δίδωσι. ταῦτα πάντ' ἂν ἐκλίπῃ,
τέθνηκε κοινῇ πᾶς ὁ τῶν ζώντων βίος.

6 *Εὐριπίδου* (Suppl. 481).

Ὅταν γὰρ ἔλθῃ πόλεμος εἰς ψῆφον λεώ,
οὐδεὶς ἔθ' αὑτοῦ θάνατον ἐκλογίζεται,
τὸ δυστυχὲς δὲ τοῦτ' ἐς ἄλλον ἐκτρέπει.
εἰ δ' ἦν παρ' ὄμμα θάνατος ἐν ψήφου φορᾷ,
οὐκ ἄν ποθ' Ἑλλὰς δορυμανὴς ἀπώλλυτο.
καίτοι δυοῖν γὰρ πάντες ἄνθρωποι λόγοιν
τὸν κρείττον' ἴσμεν, καὶ τὰ χρηστὰ καὶ κακά,
ὅσῳ τε πολέμου κρεῖττον εἰρήνη βροτοῖς·
ἣ πρῶτα μὲν μούσαισι προσφιλεστάτη,
γόοισι δ' ἐχθρά, τέρπεται δ' εὐπαιδίᾳ,
χαίρει δὲ πλούτῳ. ταῦτ' ἀφέντες οἱ κακοὶ
πολέμους ἀναιρούμεσθα, καὶ τὸν ἥττονα
δουλούμεθ' ἄνδρες ἄνδρα καὶ πόλις πόλιν.

7 *Ἀριστοφάνους Νήσων.*

Ὦ μῶρε μῶρε, ταῦτα πάντ' ἐν τῇδ' ἔνι·
οἰκεῖν μὲν ἐν ἀγρῷ πρῶτον ἐν τῷ γῃδίῳ
ἀπαλλαγέντα τῶν κατ' ἀγορὰν πραγμάτων,
κεκτημένον ζευγάριον οἰκεῖον βοοῖν,
ἔπειτ' ἀκούειν προβατίων βληχωμένων,
τρυγός τε φωνὴν εἰς λεκάνην ὠθουμένης,
ὄψῳ δὲ χρῆσθαι σπινιδίοις τε καὶ κίχλαις,
καὶ μὴ περιμένειν ἐξ ἀγορᾶς ἰχθύδια
τριταῖα, πολυτίμητα, βεβασανισμένα
ἐπ' ἰχθυοπώλου χειρὶ παρανομωτάτῃ.

8 *Τοῦ αὐτοῦ Εἰρήνης* (519).
Ὦ πότνια βοτρυόδωρε, τί προσείπω σ᾽ ἔπος;
πόθεν λάβοιμ᾽ ἂν ῥῆμα μυριάμφορον;

9 *Μενάνδρου.*
Εἰρήνη γεωργὸν κἂν πέτραις
τρέφει καλῶς, πόλεμος δὲ κἂν πεδίῳ κακῶς [ἔφυ].

10 *Ἡροδότου ἱστορίας α΄* (87).
Οὐδεὶς γὰρ οὕτως ἀνόητός ἐστιν, ὅστις πόλεμον πρὸ εἰρήνης αἱρέεται.

ΠΕΡΙ ΓΕΩΡΓΙΑΣ ΟΤΙ ΑΓΑΘΟΝ. Νϛ.

1 *Ἀριστοφάνους Εἰρήνης.*
Τοῖς πᾶσιν ἀνθρώποισιν εἰρήνης φίλης
πιστὴ τροφός, ταμία συνεργὸς ἐπίτροπος
θυγάτηρ ἀδελφή· πάντα ταῦτ᾽ ἐχρῆτό μοι.
β΄. σοὶ δ᾽ ὄνομα δὴ τί ἐστιν; α΄. ὅ τι; Γεωργία.

2 *Ὦ ποθεινὴ τοῖς δικαίοις καὶ γεωργοῖς ἡμέρα,*
ἄσμενός σ᾽ ἰδὼν προσειπεῖν βούλομαι τὰς ἀμπέλους.

3 *Μενάνδρου Ἀδελφῶν.*
Χαῖρ᾽, ὦ φίλη γῆ, διὰ χρόνου πολλοῦ σ᾽ ἰδὼν
ἀσπάζομαι· τουτὶ γὰρ οὐ πᾶσαν ποιῶ
τὴν γῆν, ὅταν δὲ τοὐμὸν ἐσίδω χωρίον.
τὸ γὰρ τρέφον με, τοῦτ᾽ ἐγὼ κρίνω θεόν.

4 *Ἄμφιδος Ἐρίθων.*
Εἶτ᾽ οὐχὶ χρυσοῦν ἐστι πρᾶγμ᾽ ἐρημία;
ὁ πατήρ γε τοῦ ζῆν ἐστιν ἀνθρώποις ἀγρός,
πενίαν τε συγκρύπτειν ἐπίσταται μόνος·
ἄστυ δὲ θέατρόν [ἐστιν] ἀτυχίας σαφῶς γέμον.

5 *Μενάνδρου Πλοκίῳ.*
Ἆρ' ἐστὶν ἀρετῆς καὶ βίου διδάσκαλος
ἐλευθέρου τοῖς πᾶσιν ἀνθρώποις ἀγρός.

6 *Φωκυλίδου.*
Χρηΐζων πλούτου μελέτην ἔχε πίονος ἀγροῦ,
ἀγρὸν γάρ τε λέγουσιν Ἀμαλθείης κέρας εἶναι.

7 *Μενάνδρου Ἀνεψιοί.*
Τὰ κακῶς τρέφοντα χωρί' ἀνδρείους ποιεῖ.

8 *Ἀριστοφάνους Ἀχαρνέων* (32).
Ἀποβλέπων εἰς τὸν ἀγρὸν εἰρήνης ἐρῶν,
στυγῶν μὲν ἄστυ, τὸν δ' ἐμὸν δῆμον ποθῶν,
ὃς οὐδεπώποτ' εἶπεν, ἄνθρακας πρίω,
οὐκ ὄξος, οὐκ ἔλαιον, οὐδ' ᾔδη πρίω,
ἀλλ' αὐτὸς ἔφερε πάντα χὠ πρίων ἀπῆν.

9 *Μενάνδρου.*
Ἀγροῖκος εἶναι προσποιεῖ πονηρὸς ὤν.

10 *Ἀράτου φαινομένων* (108).
Οὔπω λευγαλέου ποτὲ νείκεος ἠπίσταντο,
οὐδὲ διακρίσιος περιμεμφέος οὐδὲ κυδοιμοῦ,
αὔτως δ' ἔζωον, χαλεπὴ δ' ἀπέκειτο θάλασσα,
καὶ βίον οὔπω νῆες ἀπόπροθεν ἠγίνεσκον·
ἀλλὰ βόες καὶ ἄροτρα, καὶ αὐτὴ πότνια λαῶν
μυρία πάντα παρεῖχε δίκη δώτειρα δικαίων.

11 *Μενάνδρου Ὑδρίᾳ.*
Ὡς ἡδὺ τῷ μισοῦντι τοὺς φαύλους [τρόπους]
ἐρημία.

12 *Ἀριστοφάνους Νεφελῶν* (43).
Ἐμοὶ γὰρ ἦν ἀγροῖκος ἥδιστος βίος,
εὐρωτιῶν ἀκόρητος εἰκῆ κείμενος,
βρύων μελίτταις καὶ προβάτοις καὶ στεμφύλοις.

13 *Εὐριπίδου Ἀντιόπης.*

Τοιαῦτ' ἄειδε, καὶ δόξεις φρονεῖν,
σκάπτων, ἀρῶν γῆν, ποιμνίων ἐπιστατῶν,
ἄλλοις τὰ κομψὰ ταῦτ' ἀφεὶς σοφίσματα.

14 *Εὐριπίδου * Βουτημένῳ.*

Ἄλλη πρὸς ἄλλο γαῖα χρησιμωτέρα.

15 *Φιλήμονος.*

Δικαιότατον κτῆμ' ἐστὶν ἀνθρώποις ἀγρός·
ὧν ἡ φύσις δεῖται γὰρ ἐπιμελῶς φέρει,
πυροὺς ἔλαιον οἶνον ἰσχάδας μέλι.
τὰ δ' ἀργυρώματ' ἐστὶν ἥ τε πορφύρα
ἐς τοὺς τραγῳδοὺς εὔθετ', οὐκ ἐς τὸν βίον.

16 *Σωκράτους.*

Ὁ Σωκράτης τὸ τῆς ἀμαλθείας κέρας ἐξηγούμενος τοιαύτης τινὸς ἀναφορᾶς ἠξίωσεν· εἶναι γὰρ σύμβολον, ἂν μή τις ᾖ μάλθων ἀλλὰ ἐργάτης, πάντα ἕξειν τἀγαθά· κατὰ μὲν τὴν ἀμάλθειαν τοῦ μὴ μάλθωνος ταττομένου, κατὰ δὲ τὸ κέρας τοῦ βοὸς ἐργατικωτάτου ὄντος τὸν ἐργάτην ἐνσημαίνεσθαι· βότρυς δὲ ἐν τῷ κέρατι εἶναι καὶ τὰ ὅμοια, ὅτι ἐν τῇ γεωργίᾳ πάντα ἔνεστιν ὧν χρείαν ἔχομεν. διὸ καὶ ἔχοντες αὐτὸ εἰσάγονται ὅ τε ἀγαθὸς δαίμων καὶ ἡ ἀγαθὴ τύχη.

17 *Ξενοφῶντος* (Symp. II, 24).

Οἶνος τὰς μὲν λύπας ὥσπερ μανδραγόρας ἄνδρα κοιμίζει, τὰς δὲ φιλοφροσύνας ὥσπερ ἔλαιον φλόγα ἐγείρει.

18 *Μουσωνίου ἐκ τοῦ τίς ὁ φιλοσόφῳ προσήκων πόρος.*

Ἔστι καὶ ἕτερος πόρος οὐδὲν τούτου κακίων, τάχα

δὲ καὶ ἀμείνων νομισθεὶς ἂν οὐκ ἀλόγως ἀνδρί γ' εὐρώστῳ τὸ σῶμα, ὁ ἀπὸ γῆς, ἄν τ' οὖν ἰδίαν ἔχῃ τις ἄν τε καὶ μή. πολλοὶ γὰρ δὴ καὶ ἀλλοτρίαν γῆν γεωργοῦντες, ἢ δημοσίαν ἢ ἰδιωτικήν, δύνανται τρέφειν οὐ μόνον αὐτούς, καὶ τέκνα δὲ καὶ γυναῖκας· ἔνιοί γε δὴ καὶ εἰς ἄγαν ἀπὸ τούτου εὐποροῦσιν αὐτουργικοὶ καὶ φιλόπονοι ὄντες. ἀμείβεται γὰρ ἡ γῆ κάλλιστα καὶ δικαιότατα τοὺς ἐπιμελομένους αὐτῆς, πολλαπλάσια ὧν λαμβάνει διδοῦσα καὶ ἀφθονίαν παρέχουσα πάντων τῶν ἀναγκαίων πρὸς τὸν βίον τῷ βουλομένῳ πονεῖν, καὶ ταῦτα μὲν σὺν τῷ πρέποντι, σὺν αἰσχύνῃ δ' οὐδὲν αὐτῶν. οὐ γάρ ἐστιν ἀνθρώπων οὐδείς, μὴ θρυπτικός γε μηδὲ μαλακὸς ὤν, ὃς ἂν φαίη τῶν γεωργικῶν ἔργων ὁτιοῦν αἰσχρὸν ἢ ἀνάρμοστον ἀνδρὶ ἀγαθῷ εἶναι. πῶς μὲν γὰρ οὐ καλὸν τὸ φυτεύειν; πῶς δὲ τὸ ἀροῦν; πῶς δὲ τὸ ἀμπελουργεῖν; τὸ δὲ σπείρειν, τὸ δὲ θερίζειν, τὸ δὲ ἀλοᾶν, οὐ πάντ' ἐλευθέρια ταῦτα καὶ ἀνδράσιν ἀγαθοῖς πρέποντα; καὶ μὴν τὸ ποιμαίνειν ὥσπερ Ἡσίοδον οὐ κατῄσχυνεν οὐδὲ ἐκώλυεν εἶναι θεοφιλῆ τε καὶ μουσικόν, οὕτως οὐδ' ἂν ἄλλον οὐδένα κωλύσειεν. ἐμοὶ μὲν δοκεῖ ἄριστον τοῦτο πάντων τῶν ἐν γεωργίαις ἔργων, ὅτι τῇ ψυχῇ παρέχει σχολὴν πλείονα διανοεῖσθαί τι καὶ ζητεῖν παιδείας ἐχόμενον. ὅσα μὲν γὰρ ἔργα πάνυ ἐντείνει τὸ σῶμα καὶ κάμπτει, ταῦτα καὶ τὴν ψυχὴν ἀναγκάζει πρὸς αὐτοῖς εἶναι μόνοις ἢ μάλιστα συνεντεινομένην τῷ σώματι· ὅσα δὲ τῶν ἔργων ἐφίησι μὴ ἄγαν ἐντετάσθαι τὸ σῶμα, ταῦτ' οὐκ ἀπείργει τὴν ψυχὴν ἐκλογίζεσθαί τι τῶν κρειττόνων κἀκ τῶν τοιούτων λογισμῶν αὐτὴν αὑτῆς γίνεσθαι σοφωτέραν, οὗ δὴ καὶ μάλιστα πᾶς φιλόσοφος ἐφίεται. διὰ ταῦτ' ἐγὼ τὴν ποιμενι-

κὴν ἀσπάζομαι μάλιστα· εἴ γε μὴν ἅμα φιλοσοφεῖ τις καὶ γεωργεῖ, οὐκ ἄλλον ἂν παραβάλοιμι τούτῳ βίον οὐδὲ πορισμὸν ἕτερον προτιμήσαιμι ἄν. πῶς μὲν γὰρ οὐ κατὰ φύσιν μᾶλλον ἀπὸ γῆς, ἣ τροφός τε καὶ μήτηρ ἐστὶν ἡμῶν, ἢ ἀπ' ἄλλου του τρέφεσθαι; πῶς δ' οὐκ ἀνδρικώτερον τοῦ καθῆσθαι ἐν πόλει [ὥσπερ οἱ σοφισταὶ] τὸ ζῆν ἐν χωρίῳ; πῶς δ' οὐχ ὑγιεινότερον τοῦ σκιατροφεῖσθαι τὸ ἔξω διαιτᾶσθαι; τί δέ; ἐλευθεριώτερον αὐτὸν αὑτῷ μηχανᾶσθαι τὰ ἀναγκαῖα ἢ παρ' ἑτέρων λαμβάνειν; ἀλλὰ φαίνεται τὸ μὴ δεῖσθαι ἄλλου πρὸς τὰς χρείας τὰς αὑτοῦ πολὺ σεμνότερον ἢ τὸ δεῖσθαι. οὕτως ἄρα καλὸν καὶ εὐδαιμονικὸν καὶ θεοφιλὲς τὸ ζῆν ἀπὸ γεωργίας ἐστί, σύν γε τῷ καλοκαγαθίας μὴ ὀλιγωρεῖν, ὥστε Μύσωνα τὸν Χηναῖον ὁ θεὸς ἀνεῖπε σοφόν, καὶ τὸν Ψωφίδιον Ἀγλαὸν εὐδαίμονα προσηγόρευσε, χωριτικῶς ἑκάτερον αὐτῶν βιοῦντα καὶ αὐτουργίᾳ χρώμενον καὶ τῆς ἐν ἄστει διατριβῆς ἀπεχόμενον. ἆρ' οὖν οὐκ ἄξιον ζηλοῦν τε καὶ μιμεῖσθαι τούτους, καὶ περιέχεσθαι σπουδῆς τῆς τοῦ γεωργεῖν;

τί δέ; οὐ δεινόν, φαίη τις ἂν ἴσως, ἄνδρα παιδευτικὸν καὶ δυνάμενον προβιβάζειν νέους εἰς φιλοσοφίαν ἐργάζεσθαι γῆν καὶ τῷ σώματι πονεῖν τοῖς χωρίταις παραπλησίως; ναί· δεινὸν γὰρ ἂν τοῦτο τῷ ὄντι ἦν, εἴπερ ἐκώλυεν ἡ ἐργασία τῆς γῆς φιλοσοφεῖν ἢ ἄλλους πρὸς φιλοσοφίαν ὠφελεῖν. νῦν δὲ καὶ μᾶλλον ἄν μοι δοκοῦσιν ὠφελεῖσθαι οἱ νέοι οὐκ ἐν πόλει τῷ διδασκάλῳ συνόντες οὐδ' ἐν τῇ διατριβῇ ἀκούοντες αὐτοῦ λέγοντος, ἀλλ' ἐργαζόμενον ἐπὶ τῆς ἀγροικίας ὁρῶντες καὶ ἔργῳ ἐνδεικνύμενον ἅπερ ὑφηγεῖται ὁ λόγος, ὅτι χρὴ πονεῖν καὶ κακοπαθεῖν τῷ σώματι μᾶλλον ἢ ἑτέρου δεῖσθαι τοῦ τρέφοντος.

τί δὲ τὸ κωλύον ἐστὶ καὶ ἐργαζόμενον μετὰ τοῦ διδασκάλου τὸν μαθητὴν ἀκούειν τι ἅμα περὶ σωφροσύνης ἢ δικαιοσύνης ἢ καρτερίας λέγοντος; πολλῶν μὲν γὰρ λόγων οὐ δεῖ τοῖς φιλοσοφήσουσι καλῶς, οὐδὲ τὸν ὄχλον τούτων τῶν θεωρημάτων ἀναληπτέον πάντως τοῖς νέοις, ἐφ' ᾧ φυσωμένους τοὺς σοφιστὰς ὁρῶμεν· ταῦτα γὰρ δὴ τῷ ὄντι ἱκανὰ κατατρῖψαι βίον ἀνθρώπου ἐστί· τὰ δ' ἀναγκαιότατα καὶ χρησιμώτατα μαθεῖν οὐκ ἀδύνατον καὶ πρὸς ἐργασίᾳ γεωργικῇ ὄντας, ἄλλως τε καὶ οὐ διὰ παντὸς ἐργασομένους ἀλλ' ἀναπαύλαις χρησομένους. ὀλίγοι μὲν οὖν τὸν τρόπον τοῦτον ἐθελήσουσι μανθάνειν, οἶδ' ἀκριβῶς ἐγώ· ἔστι δὲ ἄμεινον μηδὲ προσιέναι τῷ φιλοσόφῳ τοὺς πλείονας τῶν φιλοσοφεῖν λεγόντων νέων, ὅσοι σαθροί τε καὶ μαλακοί, δι' οὓς προσιόντας ἀναπίμπλαται κηλίδων φιλοσοφία. τῶν μὲν γὰρ ἀληθινῶν ἐραστῶν φιλοσοφίας οὐκ ἔστιν οὐδεὶς ὃς οὐκ ἂν ἐθελήσειε μετ' ἀνδρὸς ἀγαθοῦ διάγειν ἐν χωρίῳ, καὶ εἰ χαλεπώτατον τύχοι ὂν τὸ χωρίον, μέλλων γε ἀπολαύειν μεγάλα ταύτης τῆς διατριβῆς τῷ συνεῖναι τῷ διδασκάλῳ νύκτωρ καὶ μεθ' ἡμέραν, τῷ ἀπεῖναι τῶν ἀστικῶν κακῶν ἅπερ ἐμπόδιον τῷ φιλοσοφεῖν, τῷ μὴ δύνασθαι λανθάνειν εὖ ἢ κακῶς τι ποιῶν, ὃ δὴ μέγιστον τοῖς παιδευομένοις ὄφελος· καὶ ἐσθίειν δὲ καὶ πίνειν καὶ καθεύδειν ἐφορώμενον ὑπ' ἀνδρὸς ἀγαθοῦ μέγα ὄφελος. ἃ δὲ γένοιτ' ἂν ἐξ ἀνάγκης ἐν τῇ συνουσίᾳ τῇ κατ' ἀγρόν, ταῦτα ἐπαινεῖ καὶ Θέογνις ἐν οἷς φησί

καὶ μετὰ τῶν σύ γε πῖνε καὶ ἔσθιε, καὶ μετὰ τοῖσιν
ἷζε, καὶ ἅνδανε τοῖς ὧν μεγάλη δύναμις.

ὅτι γε μὴν οὐκ ἄλλους τινας ἢ τοὺς ἀγαθοὺς ἄνδρας λέγει μεγάλην ἔχειν δύναμιν πρὸς ἀνθρώπων ὠφέ-

λειαν, εἰ συνεσθίοι καὶ συμπίνοι τις αὐτοῖς καὶ συγκαθέζοιτο, δεδήλωκεν συμμίσγῃς.

ἐσθλῶν μὲν γὰρ ἀπ' ἐσθλὰ μαθήσεαι· ἢν δὲ κακοῖσι
συμμίσγῃς, ἀπολεῖς καὶ τὸν ἐόντα νόον.

μηδὲ λεγέτω τις ὅτι τῷ μανθάνειν ἢ τῷ διδάσκειν ἃ χρὴ τὸ γεωργεῖν ἐμπόδιον· οὐ γὰρ ἔοικεν οὕτως ἔχειν, εἰ δὴ μάλιστά γ' οὕτω καὶ ἐπὶ πλεῖστον ὁ μὲν μανθάνων συνείη τῷ διδάσκοντι ὁ δὲ διδάσκων διὰ χειρὸς ἔχοι τὸν μανθάνοντα. τούτου δὲ τοιούτου ὄντος, ὁ πόρος ἐκ γεωργίας φαίνεται ὢν τῷ φιλοσόφῳ χρησιμώτατός τε καὶ πρεπωδέστατος.

19 *Ξενοφῶντος ἐκ τῶν ἀπομνημονευμάτων* (Oecon. 5).

Ταῦτα δέ, ὦ Κριτόβουλε, ἐγὼ διηγοῦμαι, ἔφη ὁ Σωκράτης, ὅτι περ τῆς γεωργίας οὐδὲ οἱ πάνυ μακάριοι δύνανται ἀπέχεσθαι. ἔοικε γὰρ αὐτῆς ἡ ἐπιμέλεια εἶναι ἅμα τε ἡδυπάθειά τις καὶ οἴκου αὔξησις καὶ σωμάτων ἄσκησις εἰς τὸ δύνασθαι ὅσα ἀνδρὶ ἐλευθέρῳ προσήκει. πρῶτον μὲν γὰρ ἀφ' ὧν ζῶσιν ἄνθρωποι, ταῦτα ἡ γῆ φέρει ἐργαζομένοις, καὶ ἀφ' ὧν τοίνυν ἡδυπαθοῦσι προσεπιφέρει· ἔπειτα δὲ καὶ θεοὺς κοσμοῦσι καὶ βωμοὺς καὶ ἀγάλματα, καὶ οἷοις αὐτοὶ κοσμοῦνται, καὶ ταῦτα μετὰ ἡδίστων ὀσμῶν καὶ θεαμάτων παρέχει· ἔπειτα δὲ ὄψα τὰ μὲν πολλὰ φύει τὰ δὲ τρέφει. καὶ γὰρ ἡ προβατικὴ τέχνη συνῆπται τῇ γεωργίᾳ, ὥστ' ἔχειν καὶ θεοῖς ἐξαρέσκεσθαι θύοντας καὶ αὐτοὺς χρῆσθαι. παρέχουσα δὲ ἀφθονώτατα [ἀγαθὰ] οὐκ ἐᾷ ταῦτα μετὰ μαλακίας λαμβάνειν, ἀλλὰ ψύχη τε χειμῶνος καὶ θάλπη θέρους ἐθίζει καρτερεῖν. καὶ τοὺς μὲν αὐτουργοὺς γυμνάζουσα

διὰ τῶν χειρῶν ἰσχὺν αὐτοῖς προστίθησι, τοὺς δὲ τῇ ἐπιμελείᾳ γεωργοῦντας ἀνδρίζει, πρωί τε ἐγείρουσα καὶ πορεύεσθαι σφοδρῶς ἀναγκάζουσα· καὶ γὰρ ἐν τῷ χωρίῳ καὶ ἐν τῷ ἄστει ἐν ὥρᾳ αἱ ἐπικαιρόταται πράξεις εἰσίν. ἔπειτα δὲ ἤν τε σὺν ἵππῳ ἀρήγειν τῇ χώρᾳ βουληθῇ τις, τὸν ἵππον ἱκανωτάτη ἡ γεωργία τρέφειν· ἤν τε πεζῇ, σφοδρὸν παρέχει τὸ σῶμα ἐν ταῖς θήραις φιλοπονεῖσθαι, συνεπαίρει τε ἡ γῆ, καὶ κυσὶν εὐπέτειαν τροφῆς παρέχουσα καὶ θηρία συμπαρατρέφουσα. ὠφελούμενοι δὲ ἀπὸ τῆς γεωργίας καὶ οἱ κύνες καὶ οἱ ἵπποι ἀντωφελοῦσι τὸν χῶρον· ὁ μὲν ἵππος πρωί τε κομίζων τὸν κηδόμενον εἰς τὴν ἐπιμέλειαν, καὶ ἐξουσίαν παρέχων τοῦ δείλης ἀπιέναι· αἱ δὲ κύνες τά τε θηρία συνεξαίρουσαι κωλύουσιν ἀπὸ λύμης καρπῶν καὶ προβάτων, καὶ τῇ ἐρημίᾳ τὴν ἀσφάλειαν συμπαρέχουσαι. συμπαρορμᾷ δέ τι καὶ εἰς τὸ ἀρήγειν σὺν ὅπλοις τῇ χώρᾳ ἡ γεωργία, [καὶ ἡ γῆ τοὺς γεωργοὺς] ἐν τῷ μέσῳ τοὺς καρποὺς τρέφουσα τῷ κρατοῦντι λαμβάνειν. καὶ δραμεῖν τε καὶ βαλεῖν καὶ πηδῆσαι τίς ἱκανωτέρους τέχνη γεωργίας παρέχεται; τίς δὲ τοῖς ἐργαζομένοις τέχνη πλείω ἀντιχαρίζεται; τίς δ' ἥδιον τὸν ἐπιμελούμενον δέχεται, προτείνουσα προσιόντι λαβεῖν ὅ τι χρήζει; τίς δὲ ξένους ἥδιον ἢ ἀφθονώτερον δέχεται; χειμάσαι δὲ πυρὶ ἀφθόνῳ καὶ θερμοῖς λουτροῖς ποῦ πλείων εὐχέρεια ἢ ἐν χωρίῳ; ποῦ δὲ ἥδιον θερίσαι ὕδασί τε καὶ πνεύμασι καὶ σκιαῖς ἢ κατ' ἀγρόν; τίς δὲ ἄλλη θεοῖς ἀπαρχὰς πρεπωδεστέρας παρέχει ἢ ἑορτὰς πληρεστέρας ἀποδεικνύει; τίς δὲ οἰκέταις προσφιλεστέρα ἢ γυναικὶ ἡδίων ἢ τέκνοις ποθεινοτέρα ἢ φίλοις εὐχαριστοτέρα; ἐμοὶ μὲν θαυμαστὸν δοκεῖ εἶναι, εἴ τις ἐλεύθερος ἄνθρωπος ἢ κτῆμά τι τούτου

ἥδιον κτᾶται ἢ ἐπιμέλειάν τινα ταύτης εὕρηκεν ἡδίω ἢ ὠφελιμωτέραν εἰς τὸν βίον. ἔτι δὲ ἡ γῆ θεὸς οὖσα τοὺς δυναμένους καταμανθάνειν καὶ δικαιοσύνην διδάσκει· τοὺς γὰρ ἄριστα θεραπεύοντας αὐτὴν πλεῖστα ἀγαθὰ ἀντιποιεῖ. ἢν δ' ἄρα ὑπὸ πλήθους ποτε στρατευμάτων τῶν ἔργων στερηθῇ ἡ γῆ, οἱ ἐν τῇ γεωργίᾳ ἀναστρεφόμενοι καὶ σφοδρῶς καὶ ἀνδρικῶς παιδευόμενοι, οὗτοι εὖ παρεσκευασμένοι τὰ σώματα καὶ τὰς ψυχάς, ἐὰν μὴ θεὸς κωλύῃ, δύνανται ἰόντες εἰς τὰ τῶν κωλυόντων λαμβάνειν ἀφ' ὧν θρέψονται· πολλάκις δ' ἐν τῷ πολέμῳ καὶ ἀσφαλέστερόν ἐστι σὺν τοῖς ὅπλοις τὴν τροφὴν μαστεύειν ἢ σὺν τοῖς γεωργικοῖς ὀργάνοις. συμπαιδεύει δὲ καὶ εἰς τὸ ἄρχειν ἡ γεωργία· ἐπί τε γὰρ τοὺς πολεμίους μετ' ἀνθρώπων δεῖ ἰέναι, τῆς τε γῆς σὺν ἀνθρώποις ἐστὶν ἡ ἐργασία. τὸν οὖν μέλλοντα γεωργήσειν εὖ δεῖ τοὺς ἐργαστῆρας καὶ προθύμους παρασκευάζειν καὶ πείθεσθαι ἐθέλοντας· τόν τε ἐπὶ πολεμίους ἄγοντα ταῦτα δεῖ μηχανᾶσθαι, δωρούμενόν τε οἷς δεῖ τοὺς ἀγαθοὺς καὶ κολάζοντα τοὺς ἀτακτοῦντας. καὶ παρακελεύεσθαι δὲ πολλάκις οὐδὲν ἧττον δεῖ τοῖς ἐργάταις τὸν γεωργὸν ἢ τὸν στρατηγὸν τοῖς στρατιώταις· καὶ ἐλπίδων δὲ ἀγαθῶν οὐδὲν ἧττον τῶν ἐλευθέρων οἱ δοῦλοι δέονται, ἀλλὰ καὶ μᾶλλον ὅπως μένειν ἐθέλωσι. καλῶς δὲ κἀκεῖνος εἶπεν, ὃς ἔφη τὴν γεωργίαν τῶν ἄλλων τεχνῶν μητέρα καὶ τροφὸν εἶναι· εὖ μὲν γὰρ φερομένης τῆς γεωργίας ἔρρωνται καὶ ἄλλαι τέχναι ἅπασαι, ὅπου δὲ ἀναγκασθῇ ἡ γῆ χερσεύειν, ἀποσβέννυνται καὶ αἱ ἄλλαι τέχναι σχεδόν τι καὶ κατὰ γῆν καὶ κατὰ θάλατταν.

ΕΤΙ ΠΕΡΙ ΓΕΩΡΓΙΑΣ, ΕΙΣ ΤΟ ΕΝΑΝΤΙΟΝ. ΝΖ.

1 *Μενάνδρου.*

Ὁ τῶν γεωργῶν ἡδονὴν ἔχει βίος,
ταῖς ἐλπίσιν τἀλγεινὰ παραμυθούμενος.

2 *Διφίλου.*

Ἓν ὀνάριον καταβαίνει μοὐξ ἀγροῦ
καθ' ἕκαστον ἐνιαυτὸν ἀγαπητῶς ὡσπερεὶ
κανοῦν ὁμοῦ τι πάντ' ἐνεσκευασμένον,
σπονδὴν ὀλὰς ἔλαιον ἰσχάδας μέλι.

3 *Μενάνδρου.*

Ἐν τοῖς πολεμίοις ὑπερέχειν τὸν ἄνδρα δεῖ·
τὸ γὰρ γεωργεῖν ἔργον ἐστὶν οἰκέτου.

4 *Ἀναξιλάου ἐκ Λυροποιοῦ.*

Πῶς ἔχεις; ὡς ἰσχνὸς εἶ.
Ἀπόλλυμαι· τρέφω γὰρ ἐν ἀγρῷ χωρίον.

5 *Μενάνδρου Γεωργοῦ.*

Ἀγρὸν εὐσεβέστερον γεωργεῖν οὐδένα
οἶμαι· φέρει γὰρ ὅσα θεοῖς ἄνθη καλά,]
κιττόν, δάφνην· κριθὰς δ' ἐὰν σπείρω, πάνυ
δίκαιος ὢν ἀπέδωχ' ὅσας ἂν καταβάλω.

6 *Φιλήμονος.*

Ἐγὼ τὸν ἀγρὸν ἰατρὸν ἐλελήθειν ἔχων·
τρέφει γὰρ οὗτος ὥσπερ ἀρρωστοῦντά με,
σιτάρια μικρὰ προσφέρων, οἴνου θ' ὅσον
ὀσμήν. λαχάνων ἄγει τι, καὶ νὴ τὸν Δία
τὰ πετραῖα ταῦτ' ὀψάρια, κάππαριν θύμον
ἀσπάραγον, αὐτὰ ταῦτα· καὶ δέδοικα μὴ
λίαν ἀπισχναίνων με ποιήσῃ νεκρόν.

7 *Κωμικοῦ ποιητοῦ.*

Ἐγὼ γεωργῶ τὸν ἀγρόν, οὐχ ὅπως τρέφῃ
αὐτός με, παρ' ἐμοῦ δ' ἵνα τροφὴν προσλαμβάνῃ.
σκάπτω γὰρ αὐτὸς ἐπιμελῶς σπείρω τ' ἀεί,
καὶ πάντα ποιῶ πρὸς τὸ δοῦναι καὶ λαβεῖν.
ὃ δὲ λαμβάνει μέν, ἀποδίδωσι δ' οὐδὲ ἕν.

7a *Ἀποστερητὴν ἔλαθον ἀγοράσας ἀγρόν.*
ἔσπειρα μὲν κριθῶν μεδίμνους εἴκοσι,
τούτων ἀπέδωκεν οὐδ' ὅλους τρισκαίδεκα,
οἱ δ' ἕπτ' ἐπὶ Θήβαις ἐστράτευσάν μοι δοκῶ.
τὸ τῶν γυναικῶν ῥῆμα διατηρεῖ μόνον
"ὀνησιφόρα γένοιτο." τοῦτο γίγνεται·
ὃ γὰρ φέρει νῦν οὗτος, εἷς ὄνος φέρει.

8 *Φιλήμων ἐν Ὑποβολιμαίῳ.*

Ἀεὶ γεωργὸς εἰς νέωτα πλούσιος.

9 *Μενάνδρου.*

Ἔχει τι τὸ πικρὸν τῆς γεωργίας γλυκύ.

10 *Φαβωρίνου.*

Φασὶ δὲ καὶ ἑταιρικόν τινα ἀναγκαζόμενον ὑπὸ τοῦ πατρὸς γεωργεῖν ἀπάγξασθαι, γράψαντα ἐν γραμματειδίῳ ὅτι ἀπέραντόν τι καὶ ἀκατάστροφον ἡ γεωργία ἦν· σπείρειν, ὅπως θερίσωμεν, εἶτα θερίζειν, ὅπως σπείρωμεν· ἄτοπόν τι τὸ χρῆμα τῆς περιόδου.

11 *Ξενοφῶντος ἐκ τοῦ τῆς παιδείας* (VIII, 3, 38).

Σκάπτω καὶ σπείρω καὶ μάλα μικρὸν γήδιον, οὐ μέντοι πονηρόν γε, ἀλλὰ πάντων δικαιότατον· ὅ τι γὰρ [ἂν] λάβοι σπέρμα, καλῶς καὶ δικαίως ἀπεδίδου αὐτό τε καὶ τόκον οὐδέν τι πολύν, ἤδη δέ ποτ' . . . ἔδωκεν ὧν ἔλαβε.

12 *Ἐκ τῶν Ἀριστοτέλους χρειῶν.*

Ζήνων ὁ στωικὸς φιλόσοφος ὁρῶν τινα τῶν γνωρίμων ὑπὸ τοῦ ἀγροῦ περισπώμενον εἶπεν "ἐὰν μὴ σὺ τοῦτον ἀπολέσῃς, οὗτος σὲ ἀπολέσει."

13 *Ἀριστίππου.*

Ἀρίστιππος λέγοντός τινος αὐτῷ "διὰ σὲ ἀπόλωλεν ὁ ἀγρός" "οὐκ οὖν" ἔφη "κάλλιον δι' ἐμὲ τὸν ἀγρὸν ἢ διὰ τὸν ἀγρὸν ἐμέ;"

ΠΕΡΙ ΗΣΥΧΙΑΣ. ΝΗ.

1 *Εὐριπίδου Ἀντιόπη.*

Ὅστις δὲ πράσσει πολλὰ μὴ πράσσειν παρόν,
μῶρος, παρὸν ζῆν ἡδέως ἀπράγμονα.

2 *Εὐριπίδου Ἰφιγενείας* (Aul. 16).

Ζηλῶ σε γέρον,
ζηλῶ δ' ἀνδρῶν ὃς ἀκίνδυνον
βίον ἐξεπέρασ' ἀγνὼς ἀκλεής·
τοὺς δ' ἐν τιμαῖς ἧσσον ἐπαινῶ.

3 *Εὐριπίδου Βακχῶν* (388) *χορός.*

Ὁ δὲ τᾶς ἡσυχίας
βίοτος, καὶ τὸ φρονεῖν
ἀσάλευτόν τε μένει καὶ
ξυνέχει δώματα· πόρσω
γὰρ ὅμως αἰθέρα ναίοντες ὁρῶσι
τὰ βροτῶν οὐρανίδαι.

4 *Εὐριπίδου Ἡρακλειδῶν* (110).

Καλὸν δέ γ' ἔξω πραγμάτων ἔχειν πόδα
εὐβουλίας τυχόντα τῆς ἀμείνονος.

5 *Εὐριπίδου Οἰνόμαος.*

Ὁ πλεῖστα πράσσων πλεῖσθ' ἁμαρτάνει βροτῶν.

6 *Αἰσχύλου Προμηθέως δεσμώτου* (44).
Τὰ μηδὲν ὠφελοῦντα μὴ πόνει μάτην.

7 *Ἐπιχάρμου ἐξ Αὐτομόλου.*
Ἁ δ᾽ ἁσυχία χαρίεσσα, γυνά,
καὶ σωφροσύνας πλατίον οἰκεῖ.

8 *Μενάνδρου Ὑδρίας.*
Ὡς ἡδὺ τῷ μισοῦντι τοὺς φαύλους τρόπους
ἐρημία, καὶ τῷ μελετῶντι μηδὲ ἓν
πονηρὸν ἱκανὸν κτῆμ᾽ ἀγρὸς τρέφων καλῶς.
ἐκ τῶν ὄχλων δὲ ζῆλος, ἥ τε κατὰ πόλιν
αὕτη τρυφὴ λάμπει μέν, ἐς δ᾽ ὀλίγον χρόνον.

9 *Πινδάρου ὑπορχημάτων.*
Τὸ κοινόν τις ἀστῶν ἐν εὐδίᾳ καταθεὶς
ἐρευνησάτω μεγαλάνορος ἁσυχίας
ἱερὸν φάος, στάσιν ἀπὸ πραπίδος
ἐπίκοτον ἀνελών, πενίας δότειραν,
ἐχθρὰν κουροτρόφον.

10 *Κερκίδα μελιάμβων.*
Ὁ τᾶς ῥικνᾶς χελώνας ἀμναμονεῖ.
οἶκος γὰρ ἄριστος ἀλαθέως καὶ φίλος.

11 *Ἐκ τῶν Βίωνος βουκολικῶν.*
Οὐκ ἔστ᾽ οὐδ᾽ ἐπέοικεν ἃ μὴ μάθομεν πονέεσθαι...
εἴ μοι καλὰ πέλει τὰ μελύδρια, καὶ τάδε μῶνα
κῦδος ἐμοὶ θήσοντι, τά μοι πάρος ὤπασε μοῖσα.
εἰ δ᾽ οὐχ ἁδέα ταῦτα, τί μοι γλυκὺ πλείονα μοχθεῖν;...
εἰ μὲν γὰρ βιότω διπλόον χρόνον ἄμμιν ἔδωκεν
ἢ Κρονίδας ἢ μοῖρα πολύτροπος, ὥστ᾽ ἀνύεσθαι
τὸν μὲν ἐς εὐφροσύναν καὶ χάρματα, τὸν δ᾽ ἐνὶ μόχθῳ,
ἦν τάχα μοχθήσαντι μεθύστερον ἐσθλὰ δέχεσθαι·
εἰ δὲ θεοὶ κατένησαν ἕνα χρόνον ἐς βίον ἐλθεῖν

ἀνθρώποις, καὶ τόνδε βραχὺν καὶ μήονα πάντων,
ἐς πόσον οἱ δειλοὶ καματώδεες ἔργα πονεῦμες;
ψυχὰν δ' ἄχρι τίνος ποτὶ κέρδεα καὶ ποτὶ τέχνας
βάλλομες, ἱμείροντες ἀεὶ πολὺ πλήονος ὄλβω;
λαθόμεθ' ἦ ἄρα πάντες ὅτι θνατοὶ γενόμεσθα,
χὡς βραχὺν ἐκ μοίρας λάχομεν χρόνον.

12 Ἀπολλώνιος Διονυσίῳ.

Καλὸν πρὶν παθεῖν διδαχθῆναι πηλίκον ἐστὶν ἡσυχία.

13 Πλάτωνος ἐκ τῆς Σωκράτους ἀπολογίας (31 e).

Οὐ γάρ ἔστιν ὅστις ἀνθρώπων σωθήσεται οὔτε ὑμῖν οὔτε ἄλλῳ πλήθει οὐδενὶ γνησίως ἐναντιούμενος, καὶ διακωλύων πολλὰ ἄδικα καὶ παράνομα ἐν τῇ πόλει γίγνεσθαι· ἀλλ' ἀναγκαῖόν ἐστι τὸν τῷ ὄντι μαχούμενον ὑπὲρ τοῦ δικαίου, καὶ εἰ μέλλει ὀλίγον χρόνον σωθήσεσθαι, ἰδιωτεύειν, ἀλλὰ μὴ δημοσιεύειν.

14 Πλουτάρχου ἐκ τοῦ περὶ ἡσυχίας.

Σοφὸν ἔοικε χρῆμα τὸ τῆς ἡσυχίας πρός τ' ἄλλα καὶ εἰς ἐπιστήμην καὶ φρονήσεως μελέτην. λέγω δὲ οὐ τὴν καπηλικὴν καὶ ἀγοραίαν, ἀλλὰ τὴν μεγάλην ἣ τις ἐξομοιοῖ θεῷ τὸν αὐτὴν ἀναλαβόντα. αἱ μὲν γὰρ ἐν ταῖς πόλεσι καὶ τοῖς τῶν ἀνθρώπων ὄχλοις γιγνόμεναι μελέται γυμνάζουσι τὴν λεγομένην δριμύτητα πανουργίαν οὖσαν· ὥστε τοὺς ἐν αὐταῖς ἄκρους οἷον ὑπὸ μαγείρων τῶν ἐν ταῖς πόλεσι χρειῶν διαπεποικιλμένους .... πόσα δ' οὐχὶ καὶ διακονήματα δεινὰ ἐργάζεσθαι· ἡ δ' ἐρημία σοφίας οὖσα γυμνάσιον, ἠθοποιὸς ἀγαθή, καὶ πλάττει καὶ μετευθύνει τῶν ἀνδρῶν τὰς ψυχάς. οὐδὲν γὰρ αὐταῖς ἐμπόδιόν ἐστι τῆς

αὐξήσεως, οὐδὲ πρὸς πολλὰ καὶ μικρὰ νόμιμα προσπταίουσαι κάμπτονται εὐθύ, καθάπερ αἱ ταῖς πόλεσιν ἐναπειλημμέναι ψυχαί· ἀλλ' ἐν ἀέρι καθαρῷ καὶ τὰ πολλὰ ἔξω διαιτωμένων τῶν ἀνθρώπων ἀνίασιν ὀρθαὶ καὶ πτεροφυοῦσιν, ἀρδόμεναι τῷ διαυγεστάτῳ τε καὶ λειοτάτῳ ῥεύματι τῆς ἡσυχίας, ἐν ᾧ τά τε μαθήματα τοῦ νοῦ θεωδέστερα καὶ καθαρώτερον τὸ δρᾶν. διὰ τοῦτό τοι καὶ τῶν θεῶν τὰ ἱερά, ὅσα ἐκ τοῦ πάνυ ἀρχαίου νενόμισται, τοῖς ἐρημοτάτοις χωρίοις οἱ πρῶτοι [ἐνίδρυσαν], μάλιστα δὲ Μουσῶν τε καὶ Πανὸς καὶ Νυμφῶν καὶ Ἀπόλλωνος καὶ ὅσοι μουσικῆς ἡγεμόνες θεοί, διακρίναντες ὡς οἶμαι τὰ παιδείας καλὰ τῶν ἐν ταῖς πόλεσι δεινῶν τε καὶ μιαροτήτων.

ΠΕΡΙ ΝΑΥΤΙΛΙΑΣ ΚΑΙ ΝΑΥΑΓΙΟΥ. ΝΘ.

1 *Ὁμήρου Ὀδυσσείας θ'* (138).

Οὐ μὲν γάρ τί που ἐστὶ κακώτερον ἄλλο θαλάσσης
ἄνδρα τε συγχεῦαι, εἰ καὶ μάλα καρτερὸς εἴη.

2 *Ἀλέξιδος ἐκ Συναποθνησκόντων.*

Ὅστις διαπλεῖ θάλασσαν ἢ μελαγχολᾷ
ἢ πτωχός ἐστιν ἢ θανατᾷ. τούτων τριῶν
ἑνός γ' ἀποτυχεῖν τοὐλάχιστον οὐκ ἔνι.

3 *Σοφοκλέους Σκυρίων.*

Ἠ ποντοναῦται τῶν ταλαιπώρων βροτῶν,
οἷς οὔτε δαίμων οὔτε τις βροτῶν γέμων
πλούτου ποτ' ἂν νείμειεν ἀξίαν χάριν.
λεπταῖς ἐπὶ ῥιπῖσιν ἐμπολὰς μακρὰς
ἀεὶ παραρρίπτοντες οἱ πολύφθοροι
ἢ 'σωσαν ἢ 'κέρδαναν ἢ διώλεσαν.

4 Ἐκ τοῦ Ἀράτου Φαινομένων (292).
Τῆμος ἐπιρρήσσουσι νότοι, ὁπότ' αἰγοκερῆι
ἐμφέρετ' ἠέλιος· τότε δὲ κρύος ἐκ Διός ἐστι
ναύτῃ μαλκίοντι κακώτατον· ἀλλὰ καὶ ἔμπης
ἤδη πάντ' ἐνιαυτὸν ὑπὸ στείρῃσι θάλασσα
πορφύρει· ἴκελοι δὲ κολυμβάσιν αἰθυίῃσι
πολλάκις ἐκ νηῶν πέλαγος περιπαπταίνοντες
ἥμεθ' ἐπ' αἰγιαλοὺς τετραμμένοι· οἱ δ' ἔτι πόρσω
κλύζονται, ὀλίγον δὲ διὰ ξύλον ἄιδ' ἐρύκει.

5 Φιλητᾶ ἐπιγραμμάτων.
Γαῖαν μὲν φανέουσι θεοί ποτε· νῦν δὲ πάρεστιν
λαιψηρῶν ἀνέμων μοῦνον ὁρᾶν τέμενος.

6 Ἀντιφάνους Ἐφεσίας.
Δύστηνος ὅστις ζῇ θαλάττιον βίον.
τῶν γὰρ πλεόντων ζῆν τιν' . . . .
Ἑκατὸν στάδι' ἐλθεῖν κρεῖττον ἢ πλεῦσαι πλέθρον.
Πλεῖς τὴν θάλατταν σχοινίων πωλουμένων;

7 Ἀρχίππου.
Ὡς ἡδὺ τὴν θάλατταν ἀπὸ τῆς γῆς ὁρᾶν
ὦ μῆτερ ἐστί, μὴ πλέοντα μηδαμοῦ.

8 Ὁμήρου (Il. ο' 628).
Τυτθὸν γὰρ ὑπ' ἐκ θανάτοιο φέρονται.

9 Μενάνδρου ἐκ Θρασυλέοντος.
Ὁ δεύτερος πλοῦς ἐστὶ δήπου λεγόμενος,
ἂν ἀποτύχῃ τις οὐρίου κώπαισι πλεῖν.

10 Καλλιμάχου.
Ἔνθ' ἀνέμων μεγάλων κῦμα διωλύγιον.

11 Τοῦ αὐτοῦ.
Τρισμάκαρ ἢ παύρων ὄλβιός ἐσσι μέτα,

ναυτιλίης εἰ νῆιν ἔχεις βίον· ἀλλ' ἐμὸς αἰὼν
κύμασιν αἰθυίης μᾶλλον ἐσῳκίσατο.

12 Σοφοκλέους Τυμπανιστῶν.

Τί τούτου χάρμα μεῖζον ἂν λάβοις
τοῦ γῆς ἐπιψαύσαντα κᾆθ' ὑπὸ στέγῃ
πυκνῆς ἀκοῦσαι ψακάδος εὑδούσῃ φρενί;

13 Εὐριπίδου Ἐρεχθέως.

Ναῦς ἡ μεγίστη κρεῖσσον ἢ σμικρὸν σκάφος.

14 Μενάνδρου.

Τὰ μεγάλα κέρδη ῥᾳδίως ἢ πλουσίους
τοὺς παραβόλως πλέοντας ἢ νεκροὺς ποιεῖ.

15 Ἀντιφάνους.

Ἐν γῇ πένεσθαι κρεῖττον ἢ πλουτοῦντα πλεῖν.

16 Εὐφορίωνος Φιλοκτήτου.

Τὸν δ' ἐκάλυψε θάλασσα λιλαιόμενον βιότοιο,
καί οἱ πήχεες ἄκρον ὑπερφαίνοντο ταθέντες
ἀχρεῖ' ἀσπαίροντος ἅλις Δολοπιονίδαο
δυστήνου, ζωὴν δὲ μεθ' ὕδατος ἔκβαλε πᾶσαν,
χεῖρας ὑπερπλάζων, ἅλμη δ' ἐκάλυψε θανόντα.

17 Ἀντιφάνους Μελίττης.

Ἐπὶ χρήμασιν δ' ὢν ἔμπορος φρονεῖς μέγα,
ὧν ἐστὶ πάντων ἐνίοτ' ἄνεμος κύριος.

18 Εὐριπίδου Φιλοκτήτης.

Μακάριος ὅστις εὐτυχῶν οἴκοι μένει·
ἐν γῇ δ' ὁ φόρτος, καὶ πάλιν ναυτίλλεται.

19 Ἐκ τῶν Μόσχου βουκολικῶν.

Τὰν ἅλα τὰν γλαυκὰν ὅταν ὤνεμος ἀτρέμα βάλλῃ,
τὰν φρένα τὰν δειλὰν ἐρεθίζομαι, οὐδ' ἔτι μοι γᾶ
ἐντὶ φίλα, ποθέει δὲ πολὺ πλέονα μεγάλαν ἅλα.

ἀλλ' ὅταν ἀχήσῃ πολιὸς βυθός, ἁ δὲ θάλασσα
κυρτὸν ἐπαφρίζῃ, τὰ δὲ κύματα μακρὰ μεμήνῃ,
ἐς χθόνα παπταίνω καὶ δένδρεα, τὰν δ' ἅλα φεύγω·
γᾶ δέ μοι ἀσπαστὰ χἀ δάσκιος εὔαδεν ὕλα,
ἔνθα καὶ ἢν πνεύσῃ πολὺς ὤνεμος, ἁ πίτυς ᾄδει.
ἦ κακὸν ὁ γριπεὺς ζώει βίον, ᾧ δόμος ἁ ναῦς
καὶ πόνος ἐντὶ θάλασσα καὶ ἰχθύες ἁ πλάνος ἄγρα.
αὐτὰρ ἐμοὶ γλυκὺς ὕπνος ὑπὸ πλατάνῳ βαθυφύλλῳ,
καὶ παγᾶς φιλέοιμι τὸν ἐγγύθεν ἦχον ἀκούειν,
ἃ τέρπει ψοφέοισα τὸν ἀγρικόν, οὐχὶ ταράσσει.

20 *Δημοσθένους Ὀλυνθιακῶν* (p. 128, 21).

Ἕως ἂν σώζηται τὸ σκάφος, ἄν τε μεῖζον ἄν τ' ἔλαττον ᾖ, τότε χρὴ καὶ ναύτην καὶ κυβερνήτην καὶ πάντ' ἄνδρα ἑξῆς προθύμους εἶναι, καὶ ὅπως μήθ' ἑκὼν μήτ' ἄκων μηδεὶς ἀνατρέψῃ, τοῦτο σκοπεῖσθαι· ἐπειδὰν δ' ἡ θάλαττα ὑπέρσχῃ, μάταιος ἡ σπουδή.

21 *Γλαύκωνος.*

Γλαύκων ὁ κωμῳδὸς ἥδιον ἔλεγε παρὰ τὴν ἅλα πεζεύειν ἢ παρὰ τὴν γῆν πλεῖν.

ΥΠΕΡ ΤΕΧΝΩΝ. Ξ.

1 *Ἄμφιδος ἐξ Ἀμπελουργοῦ.*

Οὐκ ἔστιν οὐδὲν ἀτυχίας ἀνθρωπίνης
παραμύθιον γλυκύτερον ἐν βίῳ τέχνης.
ἐπὶ τοῦ μαθήματος γὰρ ἑστηκὼς ὁ νοῦς
αὑτὸν λέληθε παραπλέων τὰς συμφοράς.

2 *Ἱππάρχου ἐκ Ζωγράφου.*

Πολύ γ' ἐστὶ πάντων κτῆμα τιμιώτατον

ἅπασιν ἀνθρώποισιν εἰς τὸ ζῆν τέχνη.
τὰ μὲν γὰρ ἄλλα καὶ πόλεμος καὶ μεταβολὴ
τύχης ἀνήλωσεν, τέχνη δὲ σώζεται.

3 Ἑρμοδότου.

Οὐχ ὁ λόγος αὔξει τὴν τέχνην περισσὸς ὤν,
ἀλλ' αὐτὰ κοσμεῖ τὴν τέχνην τὰ πράγματα.

4 Σιμύλου.

Οὔτε φύσις ἱκανὴ γίγνεται τέχνης ἄτερ
πρὸς οὐδὲν ἐπιτήδευμα παράπαν οὐδενί,
οὔτε πάλι τέχνη μὴ φύσιν κεκτημένη.
τούτων ὁμοίως τοῖν δυοῖν συνηγμένων
εἰς ταυτόν, ἔτι δεῖ προσλαβεῖν χορηγίαν,
ἔρωτα μελέτην καιρὸν εὐφυῆ χρόνον
κριτὴν τὸ ῥηθὲν δυνάμενον συναρπάσαι.
ἐν ᾧ γὰρ ἂν τούτων τις ἀπολειφθεὶς τύχῃ,
οὐκ ἔρχετ' ἐπὶ τὸ τέρμα τοῦ προκειμένου.
φύσις θέλησις ἐπιμέλει' εὐταξία
σοφοὺς τίθησι κἀγαθούς· ἐτῶν δέ τοι
ἀριθμὸς οὐδὲν ἄλλο πλὴν γῆρας ποιεῖ.

5 Μενάνδρου Αὐλητρίδος.

Τὰ πατρῷα μὲν ποιεῖ καιρός ποτε
ἀλλότρια, σώζει δ' αὐτά που τὰ σώματα·
βίου δ' ἔνεστι μί' ἀσφάλει' ἐν ταῖς τέχναις.

6 Πλάτωνος ἐκ τοῦ Σοφιστοῦ (219 a).

Ἀλλὰ μήν γε τῶν τεχνῶν σχεδὸν πασῶν εἴδη δύο. Πῶς; Γεωργία μὲν καὶ ὅση περὶ τὸ θνητὸν πᾶν σῶμα θεραπεία, τό τ' αὖ περὶ τὸ σύνθετον καὶ πλαστόν, ὃ δὴ σκεῦος ὠνομάκαμεν, ἥ τε μιμητική, ξύμπαντα ταῦτα δικαιότατα ἑνὶ προσαγορεύοιτο ἂν ὀνόματι. Πῶς καὶ τίνι; Πᾶν ὅπερ ἂν μὴ πρότερόν [τις

ὄν, ὕστερον] εἰς οὐσίαν ἄγῃ, τὸν μὲν ἄγοντα ποιεῖν, τὸ δὲ ἀγόμενον ποιεῖσθαί που φαμέν. Ὀρθῶς. Τὰ δέ γε νῦν [ἃ δὴ] διήλθομεν ἅπαντα εἶχεν εἰς τοῦτο τὴν αὐτῶν δύναμιν. Εἶχε γὰρ οὖν. Ποιητικὴν τοίνυν αὐτὰ συγκεφαλαιωσάμενοι προσείπωμεν. Ἔστω. Τὸ δὴ μαθητικὸν αὖ μετὰ τοῦτο εἶδος ὅλον καὶ τὸ τῆς γνωρίσεως τό τε χρηματιστικὸν καὶ ἀγωνιστικὸν καὶ θηρευτικόν, ἐπειδὴ δημιουργεῖ μὲν οὐδὲν τούτων, τὰ δὲ ὄντα καὶ γεγονότα, τὰ μὲν χειροῦται λόγοις καὶ πράξεσι, τὰ δὲ τοῖς χειρουμένοις οὐκ ἐπιτρέπει, μάλιστ᾽ ἄν που διὰ ταῦτα ξυνάπαντα τὰ μέρη τέχνη τις κτητικὴ λεχθεῖσα ἂν πρέψειεν. Ναί· πρέποι γὰρ ἄν. Κτητικῆς δὴ καὶ ποιητικῆς ξυμπασῶν οὐσῶν τῶν τεχνῶν, ἐν ποτέρᾳ τὴν ἀσπαλιευτικήν, ὦ Θεαίτητε, τιθῶμεν; Ἐν κτητικῇ δήπου δῆλον. Κτητικῆς δὲ ἆρ᾽ οὐ δύο εἴδη; τὸ μὲν ἑκόντων πρὸς ἑκόντας μεταβλητικὸν ὄν, διά τε δωρεῶν [καὶ ἀγοράσεων] καὶ μισθώσεων· τὸ δὲ λοιπὸν ἢ κατ᾽ ἔργα ἢ κατὰ λόγους χειρούμενον ξύμπαν, χειρωτικὸν ἂν εἴη; Φαίνεται γοῦν ἐκ τῶν εἰρημένων. Τί δὲ τὴν χειρωτικήν; ἆρ᾽ οὐ διχῇ τμητέον; Πῇ; Τὸ μὲν ἀμφαδὸν ὅλον ἀγωνιστικὸν τιθέντας, τὸ δὲ κρυφαῖον αὐτῆς πᾶν θηρευτικόν; Ναί. Τήν γε μὴν θηρευτικὴν ἄλογον τὸ μὴ οὐ τέμνειν διχῇ. Λέγε ὅπῃ. Τὸ μὲν ἀψύχου γένους διελομένους τὸ δὲ ἐμψύχου. Τί μήν; εἴπερ ἐστόν γε ἄμφω. Πῶς δ᾽ οὐκ ἐστόν; καὶ δεῖ γε ἡμᾶς τὸ μὲν τῶν ἀψύχων ἀνώνυμον, πλὴν κατ᾽ ἔνια τῆς κολυμβητικῆς ἄττα μέρη καὶ τοιαῦτ᾽ ἄλλα βραχέα, χαίρειν ἐᾶσαι· τὸ δὲ τῶν ἐμψύχων, ζῴων οὖσαν θήραν, προσειπεῖν ζῳοθηρικήν. Ἔστω. Ζῳοθηρικῆς δὲ ἆρα οὐ διπλοῦν εἶδος ἂν λέγοιτο ἐν δίκῃ; τὸ μὲν πεζοῦ γένους πολλοῖς εἴδεσι καὶ ὀνόμασι διῃρημένον πεζοθηρικόν· [τὸ δ᾽

ἕτερον] νευστικοῦ ζῴου πᾶν ἐνυγροθηρικόν; Πάνυ γε. Νευστικοῦ μὴν τὸ μὲν πτηνὸν φῦλον ὁρῶμεν, τὸ δὲ ἔνυδρον. Πῶς δ' οὔ; Καὶ τοῦ πτηνοῦ μὲν γένους πᾶσα ἡμῖν ἡ θήρα ἡμῖν ἡ θήρα λέγεταί που ὀρνιθευτική. Λέγεται [γὰρ οὖν]. Τοῦ δ' ἐνύδρου σχεδὸν ἁλιευτικὴ τὸ σύνολον. [Ναί.] Τί δέ; ταύτην αὖ τὴν θήραν ἆρα οὐκ ἂν κατὰ τὰ μέγιστα μέρη δύο διέλοιμεν; Κατὰ ποῖα; Καθ' ἃ τὸ μὲν ἕρκεσιν αὐτόθι ποιεῖται τὴν θήραν τὸ δὲ πληγῇ; Πῶς λέγεις; καὶ πῇ διαιρούμενος ἑκάτερον; Τὸ μέν, ὅτι πᾶν ὅσον ἂν ἕνεκα κωλύσεως εἴργῃ τι περιέχον, ἕρκος εἰκὸς ὀνομάζειν. Πάνυ μὲν οὖν. Κύρτους δὴ καὶ δίκτυα καὶ πόρκους καὶ βρόχους καὶ τὰ τοιαῦτα μῶν ἄλλο τι πλὴν ἕρκη χρὴ προσαγορεύειν; Οὐδὲν [ἄλλο]. Τοῦτο μὲν ἄρα ἑρκοθηρικὸν τῆς ἄγρας τὸ μέρος φήσομεν ἤ τι τοιοῦτον. Ναί. Τὸ δὲ ἀγκίστροις καὶ τριόδουσι πληγῇ γιγνόμενον, ἕτερον μὲν ἐκείνου, πληκτικὴν δέ τινα θήραν ἡμᾶς προσειπεῖν ἐν τῷ νῦν χρεών, ἢ τί τις ἄν, ὦ Θεαίτητε, εἴποι κάλλιον; Ἀμελῶμεν τοῦ ὀνόματος, ἀρκεῖ γὰρ καὶ τοῦτο. Τῆς μὲν τοίνυν πληκτικῆς, τὸ μὲν νυκτερινὸν οἶμαι πρὸς πυρὸς φῶς γιγνόμενον ὑπ' αὐτῶν τῶν περὶ τὴν θήραν πυρευτικὴν ῥηθῆναι [συμβέβηκε]. Πάνυ γε. Τὸ δέ γε μεθημερινὸν ὡς ἐχόντων ἐν ἄκροις ἄγκιστρα καὶ τῶν τριοδόντων πᾶν ἀγκιστρευτικόν; Λέγεται γὰρ οὖν. Τοῦ τοίνυν ἀγκιστρευτικοῦ τῆς πληγῆς τὸ μὲν ἄνωθεν εἰς τὸ κάτω γινόμενον διὰ τὸ τοῖς τριόδουσιν οὕτω μάλιστα χρῆσθαι, τριοδοντικά τις, οἶμαι, κέκληται. Φασὶ γοῦν τινες. Τὸ δέ γε λοιπὸν ἐστὶν ἓν ἔτι μόνον ὡς εἰπεῖν εἶδος. Ποῖον; Τὸ τῆς ἐναντίας ταύτῃ πληγῆς ἀγκίστρῳ τε γιγνόμενον καὶ τῶν ἰχθύων, οὐχ ᾗ τις ἂν τύχῃ τοῦ σώματος ὥσπερ τοῖς τριόδουσιν, ἀλλὰ

περὶ τὴν κεφαλὴν καὶ τὸ στόμα τοῦ θηρευθέντος ἑκάστοτε, καὶ κάτωθεν εἰς τοὐναντίον ἄνω, ῥάβδοις καὶ καλάμοις ἀνασπώμενον, οὗ τί φήσομεν, ὦ Θεαίτητε, δεῖν τοὔνομα λέγεσθαι; Δοκῶ μέν, ὅπερ ἄρτι προυθέμεθα δεῖν ἐξευρεῖν, τοῦτο αὐτὸ νῦν ἀποτετελέσθαι. Νῦν ἄρα τῆς ἀσπαλιευτικῆς, περὶ οὗ σύ τε κἀγὼ συνωμολογήκαμεν, οὐ μόνον τοὔνομα ἀλλὰ καὶ τὸν λόγον, περὶ αὐτὸ τοὔργον εἰλήφαμεν ἱκανῶς. ξυμπάσης τοιγαροῦν τέχνης τὸ μὲν ἥμισυ μέρος κτητικὸν ἦν, κτητικοῦ δὲ χειρωτικόν, χειρωτικοῦ δὲ θηρευτικόν, τοῦ δὲ θηρευτικοῦ ζῳοθηρικόν, ζῳοθηρικοῦ δὲ ἐνυγροθηρικόν, ἐνυγροθηρικοῦ δὲ τὸ κάτωθεν τμῆμα ὅλον ἁλιευτικόν, ἁλιευτικῆς δὲ πληκτικόν, πληκτικῆς δὲ ἀγκιστρευτικόν· τούτου δὲ τὸ περὶ τὴν κάτωθεν ἄνω πληγὴν ἀνασπωμένην ἀπ' αὐτῆς τῆς πράξεως ἀφομοιωθὲν τοὔνομα ἡ νῦν ἀσπαλιευτικὴ ζητηθεῖσα ἐπίκλην γέγονε. Πάντως μὲν οὖν τοῦτό γε ἱκανῶς δεδήλωται.

7 Ἐν ταυτῷ (235).

Κατὰ δὴ τὸν παρεληλυθότα τρόπον τῆς διαιρέσεως ἔγωγέ μοι καὶ νῦν φαίνομαι δύο καθορᾶν εἴδη τῆς μιμητικῆς. τὴν δὲ ζητουμένην ἰδέαν ἐν ὁποτέρῳ ποθ' ἡμῖν οὖσα τυγχάνει καταμαθεῖν οὐδέ πω μοι δοκῶ νῦν δυνατὸς εἶναι. σὺ δ' ἀλλ' εἰπὲ πρῶτον καὶ δίελε ἡμῖν τίνε τὼ δύο λέγεις. Μίαν μὲν τὴν εἰκαστικὴν ὁρῶν ἐν αὐτῇ τέχνην· ἔστι δ' αὕτη μάλιστα, ὁπόταν κατὰ τὰς τοῦ παραδείγματος συμμετρίας τις ἐν μήκει καὶ βάθει καὶ πλάτει καὶ πρὸς τούτοις ἔτι χρώματα ἀποδιδοὺς τὰ προσήκοντα ἑκάστοις τὴν τοῦ μιμήματος γένεσιν ἀπεργάζηται. Τί δ', οὐ πάντες οἱ μιμούμενοί τι τοῦτ' ἐπιχειροῦσι δρᾶν; Οὔκ οὖν ὅσοι

γε τῶν μεγάλων πού τι πλάττουσιν ἔργων ἢ γράφουσιν. εἰ γὰρ ἀποδιδοῖεν τὴν τῶν καλῶν ἀληθινὴν συμμετρίαν, οἶσθ' ὅτι σμικρότερα μὲν τοῦ δέοντος τὰ ἄνω, μείζω δὲ τὰ κάτω φαίνοιτ' ἄν, διὰ τὸ τὰ μὲν πόρρωθεν τὰ δ' ἐγγύθεν ὑφ' ἡμῶν ὁρᾶσθαι. Πάνυ μὲν οὖν. Ἆρ' οὖν οὐ χαίρειν τὸ ἀληθὲς ἐάσαντες οἱ δημιουργοὶ νῦν, οὐ τὰς οὔσας συμμετρίας, ἀλλὰ τὰς δοξούσας εἶναι καλὰς τοῖς εἰδώλοις ἐναπεργάζονται; Πάνυ μὲν οὖν. Τὸ μὲν ἄρα ἕτερον οὐδὲ δίκαιον, εἰκός γε ὄν, εἰκόνα καλεῖν; [Παντάπασί γε. Ἆρ' οὖν τὸ μὲν ἕτερον δίκαιον εἰκαστικὸν καλεῖν;] Ναί. Καὶ τῆς γε μιμητικῆς τὸ ἐπὶ τούτῳ μέρος κλητέον ὅπερ εἴπομεν ἐν τῷ πρόσθεν, εἰκαστικήν; Κλητέον. Τί δαί, τὸ φαινόμενον μὲν διὰ τὴν τοῦ καλοῦ θέαν εἰκέναι τῷ καλῷ, δύναμιν δὲ εἴ τις λάβοι τὰ τηλικαῦτα ἱκανῶς ὁρᾶν, μηδὲ ἐοικὸς ᾗ ᾧ φησιν ἐοικέναι, τί καλοῦμεν; ἆρ' οὐκ, ἐπείπερ φαίνεται μέν, ἔοικε δὲ οὔ, φάντασμα; Τί μήν; Οὐκ οὖν πάμπολυ καὶ κατὰ τὴν ζωγραφίαν τοῦτο τὸ μέρος ἐστὶ καὶ κατὰ τὴν ξύμπασαν μιμητικήν; Πῶς δ' οὔ; Τὴν δὴ φάντασμα ἀλλ' οὐκ εἰκόνα ἀπεργαζομένην τέχνην ἆρ' οὐ φανταστικὴν ὀρθότατ' ἂν προσαγορεύοιμεν; Πολύ γε. Τούτω τοίνυν τὼ δύο ἔλεγον εἴδη τῆς εἰδωλοποιητικῆς εἰκαστικὴν καὶ φανταστικήν. Ὀρθῶς.

8 Τοῦ αὐτοῦ (Leg. IV p. 709).

Θεὸς μὲν πάντα καὶ μετὰ θεοῦ τύχη καὶ καιρὸς τἀνθρώπινα διακυβερνῶσι ξύμπαντα· ἡμερώτερον μὴν τρίτον συγχωρῆσαι τούτοις ἕπεσθαι δεῖν, τέχνην.

9 Πλάτωνος ἐκ τοῦ πολιτικοῦ (281 d).

Πρῶτον μὲν τοίνυν δύο τέχνας οὔσας περὶ πάντα τὰ δρώμενα θεασώμεθα. Τίνας; Τὴν μὲν τῆς γενέ-

σεως οὖσαν συναίτιον τὴν δὲ αὐτὴν αἰτίαν. Πῶς; Ὅσαι μὲν τὸ πρᾶγμ' αὐτὸ μὴ δημιουργοῦσι, ταῖς δὲ δημιουργούσαις ὄργανα παρασκευάζουσιν, ὧν μὴ παραγενομένων οὐκ ἂν ποτ' ἐργασθείη τὸ προστεταγμένον ἑκάστῃ τῶν τεχνῶν, ταύτας μὲν οὖν ξυναιτίους, τὰς δ' αὐτὸ τὸ πρᾶγμ' ἀπεργαζομένας, αἰτίας. Ἔχει γὰρ οὖν λόγον.

10 *Πλουτάρχου ἐκ τοῦ περὶ μαντικῆς.*

Τῶν τεχνῶν ὡς ἔοικε τὰς μὲν ἡ χρεία συνέστησεν ἐξ ἀρχῆς καὶ μέχρι νῦν διαφυλάσσει· "χρειὼ πάντ' ἐδίδαξε· τί δ' οὐ χρειώ κεν ἀνεύροι" τῶν ἀναγκαίων; ὑφαντικὴν οἰκοδομικὴν ἰατρικὴν γεωργίαν καὶ ὅσαι περὶ γεωργίαν ἀναστρέφονται· τὰς δ' ἡδονή τις προσηγάγετο καὶ κατέσχε, τὴν τῶν μυρεψῶν καὶ τῶν ὀψοποιῶν καὶ κομμωτικὴν πᾶσαν καὶ ἀνθοβαφίαν. ἔστι δ' ὧν τὴν πιθανότητα καὶ τὴν ἀκρίβειαν καὶ τὸ καθάρειον ἀγαπῶντες ἐκμανθάνουσι καὶ περιέπουσιν, ὡς ἀριθμητικὴν καὶ γεωμετρίαν καὶ κανονικὴν πᾶσαν καὶ ἀστρολογίαν, ἃς φησὶν ὁ Πλάτων καίπερ ἀμελουμένας βίᾳ ὑπὸ χάριτος αὔξεσθαι.

11 *Ξενοφῶντος ἐν γ' (10) ἀπομνημονευμάτων.*

Εἰσελθὼν ποτε πρὸς τὸν Παρράσιον τὸν ζωγράφον, Ἆρα, ἔφη, ὦ Παρράσιε, ἡ γραφική ἐστιν εἰκασία τῶν ὁρωμένων; τὰ γοῦν κοῖλα καὶ τὰ ὑψηλὰ καὶ τὰ σκοτεινὰ καὶ τὰ φωτεινὰ καὶ τὰ σκληρὰ καὶ τὰ μαλακὰ καὶ τὰ τραχέα καὶ τὰ λεῖα καὶ τὰ νέα καὶ τὰ παλαιὰ σώματα διὰ τῶν χρωμάτων ἀπεικάζοντες ἐκμιμεῖσθε. Ἀληθῆ λέγεις, ἔφη. Καὶ μὴν τά γε καλὰ εἴδη ἀφομοιοῦντες, ἐπειδὴ οὐ ῥᾴδιον ἑνὶ ἀνθρώπῳ περιτυχεῖν ἄμεμπτα πάντα ἔχοντι, ἐκ πολλῶν συν-

ἄγοντες τὰ ἐξ ἑκάστου κάλλιστα οὕτως ὅλα τὰ σώματα καλὰ ποιεῖτε φαίνεσθαι. Ποιοῦμεν γάρ, ἔφη, οὕτω. Τί γάρ, ἔφη, τὸ πιθανώτατον καὶ ἥδιστον καὶ φιλικώτατον καὶ ποθεινότατον καὶ ἐρασμιώτατον ἀπομιμεῖσθε τῆς ψυχῆς ἦθος ἢ οὐδὲ μιμητὸν τοῦτο; Πῶς γὰρ ἄν, ἔφη, μιμητὸν εἴη, ὦ Σώκρατες, ὃ μήτε συμμετρίαν μήτε χρῶμα μήτε ὧν σὺ εἶπας ἄρτι μηδὲν ἔχει μηδὲ ὅλως ὁρατόν ἐστιν; Ἆρ' οὖν, ἔφη, γίγνεται ἐν ἀνθρώπῳ τό τε φιλοφρόνως καὶ τὸ ἐχθρῶς βλέπειν πρός τινας; Ἔμοιγε δοκεῖ, ἔφη. Οὐκ οὖν τό γε μιμητὸν ἐν τοῖς ὄμμασι; Καὶ μάλα, ἔφη. Ἐπὶ δὲ τοῖς τῶν φίλων ἀγαθοῖς καὶ τοῖς κακοῖς ὁμοίως σοι δοκοῦσιν ἔχειν τὰ πρόσωπα οἵ τε φροντίζοντες καὶ οἱ μή; Μὰ Δί' οὐ δῆτα, ἔφη. ἐπὶ μὲν γὰρ τοῖς ἀγαθοῖς φαιδροί, ἐπὶ δὲ τοῖς κακοῖς σκυθρωποὶ γίνονται. Οὐκ οὖν, ἔφη, καὶ ταῦτα δυνατὸν ἀπεικάζειν; Καὶ μάλα, ἔφη. Ἀλλὰ μὴν καὶ τὸ μεγαλοπρεπές τε καὶ τὸ ἐλευθέριον, [καὶ τὸ ταπεινόν τε καὶ ἀνελεύθερον,] καὶ τὸ σωφρονικόν τε καὶ φρόνιμον, καὶ τὸ ὑβριστικόν τε καὶ τὸ ἀπειρόκαλον, καὶ διὰ τοῦ προσώπου καὶ διὰ τῶν σχημάτων καὶ ἑστώτων καὶ κινουμένων ἀνθρώπων διαφαίνει. Ἀληθῆ λέγεις, ἔφη. Οὐκ οὖν καὶ ταῦτα μιμητά; Καὶ μάλα, ἔφη. Πότερον οὖν, ἔφη, νομίζεις ἥδιον ὁρᾶν τοὺς ἀνθρώπους δι' ὧν τὰ καλά τε καὶ τὰ ἀγαθὰ καὶ ἀγαπητὰ ἤθη φαίνεται, ἢ δι' ὧν τὰ αἰσχρά τε καὶ πονηρὰ καὶ μισητά; Πολὺ νὴ Δί', ἔφη, διαφέρει, ὦ Σώκρατες.

Πρὸς δὲ Κλίτωνα τὸν ἀνδριαντοποιὸν εἰσελθών ποτε καὶ διαλεγόμενος αὐτῷ, Ὅτι μέν, ἔφη, ὦ Κλίτων, ἀλλοίους ποιεῖς δρομεῖς τε καὶ παλαιστὰς καὶ πύκτας καὶ παγκρατιαστὰς ὁρῶ γε καὶ οἶδα· ὃ δὲ μάλιστα ψυχαγωγεῖ διὰ τῆς ὄψεως τοὺς ἀνθρώπους

τὸ ζωτικὸν φαίνεσθαι, πῶς τοῦτο ἐνεργάζῃ τοῖς ἀνδριάσιν; Ἐπεὶ δὲ ἀπορῶν ὁ Κλίτων οὐ ταχὺ ἀπεκρίνατο, Ἆρα, ἔφη, τοῖς τῶν ζώντων εἴδεσιν ἀπεικάζων τὸ ἔργον ζωτικώτερον ποιεῖς φαίνεσθαι τοὺς ἀνδριάντας; Καὶ μάλα, ἔφη. Οὐκ οὖν τά τε ὑπὸ τῶν σχημάτων καταρτώμενα καὶ τὰ ἀνασπώμενα ἐν τοῖς σώμασι καὶ τὰ συμπιεζόμενα καὶ τὰ διελκόμενα καὶ ἐντεινόμενα καὶ τὰ ἀνειμένα ἀπεικάζων, ὁμοιότερά τε τοῖς ἀληθινοῖς καὶ πιθανώτερα ποιεῖς φαίνεσθαι; Πάνυ μὲν οὖν, ἔφη. Τὸ δὲ καὶ τὰ ἤθη τῶν ποιούντων τι σωμάτων ἀπομιμεῖσθαι οὐ ποιεῖ τινα τέρψιν τοῖς θεωμένοις; Εἰκὸς γοῦν, ἔφη. Οὐκ οὖν καὶ τῶν μὲν μαχομένων ἀπειλητικὰ τὰ ὄμματα εἰκαστέον, τῶν δὲ νενικηκότων εὐφραινομένων ἡ ὄψις μιμητέα; Σφόδρα γ', ἔφη. Δεῖ ἄρα, ἔφη, τὸν ἀνδριαντοποιὸν τὰ τῆς ψυχῆς ἔργα τῷ εἴδει προσεικάζειν.

ΕΤΙ ΠΕΡΙ ΤΕΧΝΩΝ ΕΙΣ ΤΟ ΕΝΑΝΤΙΟΝ. ΞΑ.

1 Μενάνδρου Ἁλιέως.

Ὁ πρῶτος εὑρὼν διατροφὴν πτωχῷ τέχνην
πολλοὺς ἐποίησεν ἀθλίους· ἁπλοῦν γὰρ ἦν
τὸν μὴ δυνάμενον ζῆν ἀλύπως ἀποθανεῖν.

2 Ἀντιφάνους ἐκ Κναφέως.

Ὅστις τέχνην πρῶτος κατέδειξε τῶν θεῶν,
οὗτος μέγιστον εὗρεν ἀνθρώποις κακόν.
ὅταν γὰρ ἀπορῆταί τις, ἂν μὲν ἀργὸς ᾖ,
ἐλθὼν ἀπεκινδύνευσεν ἡμέραν μίαν,
ὥστ' ἢ γεγονέναι λαμπρὸν ἢ τεθνηκέναι.
ἡμεῖς δ' ἔχοντες ἀρραβῶνα τὴν τέχνην
τοῦ ζῆν ἀεὶ πεινῶμεν ἐπὶ ταῖς ἐλπίσιν,

ἐξόν τε μικρὸν διαπορηθῆναι χρόνον,
τὸν βίον ἅπαντα τοῦτο δρᾶν αἱρούμεθα.

3 *Μενάνδρου Ὑμνίδος.*
Οὐ πάνυ τι γηράσκουσιν αἱ τέχναι καλῶς,
ἂν μὴ λάβωσι προστάτην φιλάργυρον.

4 *Εὐριπίδου Πολυίδου.*
Οἱ τὰς τέχνας δ' ἔχοντες ἀθλιώτεροι
τῆς φαυλότητος· καὶ γὰρ ἐν κοινῷ ψέγειν
ἅπασι κεῖσθαι δυστυχὲς κοὐκ εὐτυχές.

5 *Ξενοφῶντος ἐκ τοῦ οἰκονομικοῦ* (IV, 2).
Καλῶς, ἔφη, λέγεις, ὦ Κριτόβουλε. καὶ γὰρ αἵ βαναυσικαὶ καλούμεναι καὶ ἐπίρρητοί εἰσι καὶ εἰκότως μὲν δὴ πάνυ ἀδοξοῦνται ὑπὸ τῶν πόλεων· καταλυμαίνονται γὰρ τὰ σώματα τῶν τε ἐργαζομένων καὶ ἐπιμελουμένων καὶ τὰς ψυχὰς ἀναγκάζουσι καθῆσθαι καὶ σκιατραφεῖσθαι, ἔνιαι δὲ καὶ πρὸς πῦρ ἡμερεύειν. τῶν δὲ σωμάτων θηλυνομένων καὶ αἱ ψυχαὶ ἐπιπολὺ ἀρρωστότεραι γίγνονται. καὶ ἀσχολίας δὲ μάλιστα ἔχουσι καὶ φίλων καὶ πόλεων συνεπιμελεῖσθαι βαναυσικαὶ καλούμεναι. ὥστε εἰκότως σοι δοκοῦσι κακοὶ ἂν καὶ φίλοις χρῆσθαι καὶ ταῖς πατρίσιν ἀλεξητῆρες εἶναι. καὶ ἐν ἐνίαις μὲν τῶν πόλεων, μάλιστα δὲ ἐν ταῖς εὐπολέμοις δοκούσαις εἶναι, οὐδ' ἔξεστι τῶν πολιτῶν οὐδενὶ βαναυσικὰς τέχνας ἐργάζεσθαι.

6 *Πλάτωνος ἐκ τοῦ πολιτικοῦ* (258 d).
Ἆρ' οὖν οὐκ ἀριθμητικὴ μὲν καί τινες ἕτεραι ταύτῃ συγγενεῖς τέχναι ψιλαὶ τῶν πράξεών εἰσι, τὸ δὲ γνῶναι παρέσχοντο μόνον; Ἔστιν οὕτως. Αἱ δέ γε περὶ τεκτονικὴν αὖ καὶ ξύμπασαν χειρουργίαν,

ὥσπερ ἐν ταῖς πράξεσιν ἐνοῦσαν ξύμφυτον τὴν ἐπιστήμην κέκτηνται, καὶ συναποτελοῦσι τὰ γιγνόμενα ὑπ᾽ αὐτῶν σώματα, πρότερον οὐκ ὄντα; Τί μήν; Ταύτῃ τοίνυν ξυμπάσας ἐπιστήμας διαίρει· τὴν μὲν πρακτικὴν προσειπών, τὴν δὲ μόνον γνωστικήν. ἔστω σοι ταῦθ᾽ ὡς μιᾶς ἐπιστήμης τῆς ὅλης εἴδη δύο.

7 *Τοῦ αὐτοῦ ἐκ τοῦ Φιλήβου* (55 d).

Ἐν δὴ ταῖς χειροτεχνικαῖς διανοηθῶμεν πρῶτον, εἰ τὸ μὲν ἐπιστήμης αὐτῶν μᾶλλον ἐχόμενον, τὸ δὲ ἧττον ἔνι. καὶ δεῖ τὰ μὲν ὡς καθαρώτατα νομίζειν, τὰ δὲ ὡς ἀκαθαρτότερα. Οὐκ οὖν χρή. Τὰς τοίνυν ἡγεμονικὰς διαληπτέον ἑκάστων αὐτῶν χωρίς. Ποίας καὶ πῶς; Οἷον πασῶν που τεχνῶν ἄν τις ἀριθμητικὴν χωρίζῃ καὶ μετρητικὴν καὶ στατικήν, ὡς ἔπος εἰπεῖν, φαῦλον τὸ καταλειπόμενον ἑκάστης ἂν γίγνοιτο. Φαῦλον μὲν δή. Τό γ᾽ οὖν μετὰ ταῦτα εἰκάζειν λείποιτ᾽ ἄν, καὶ τὰς αἰσθήσεις καταμελετᾶν ἐμπειρίᾳ καί τινι τριβῇ, ταῖς τῆς στοχαστικῆς προσχρωμένους δυνάμεσιν, ἃς οἱ πολλοὶ τέχνας ἐπονομάζουσι, μελέτῃ καὶ πόνῳ τὴν ῥώμην ἀπειργασμένας. Ἀναγκαιότατα λέγεις.

ΠΕΡΙ ΔΕΣΠΟΤΩΝ ΚΑΙ ΔΟΥΛΩΝ. ΞΒ.

1. 2. *Εὐριπίδου Ἑλένη* (732).

Κακὸς γὰρ ὅστις μὴ σέβει τὰ δεσποτῶν
καὶ ξυγγέγηθε καὶ ξυνωδίνει κακοῖς.
ἐγὼ μὲν εἴην, κεἰ πέφυχ᾽ ὅμως λάτρις,
ἐν τοῖσι γενναίοισιν ἠριθμημένος
δούλοισι, τοὔνομ᾽ οὐκ ἔχων ἐλεύθερον,
τὸν νοῦν δέ. κρεῖσσον γὰρ τόδ᾽ ἢ δυοῖν κακοῖν

ἕν' ὄντα χρῆσθαι τὰς φρένας τ' ἔχειν κακάς,
ἄλλων τ' ἀκούειν δοῦλον ὄντα τῶν πέλας.

3 *Εὐριπίδου Μελεάγρῳ.*
Ὡς ἡδὺ δούλοις δεσπότας χρηστοὺς λαβεῖν,
καὶ δεσπόταισι δοῦλον εὐμενῆ δόμοις.

4 *Εὐριπίδου Ἀντιόπῃ.*
Οὐ χρή ποτ' ἄνδρα δοῦλον ὄντ' ἐλευθέρας
γνώμας διώκειν οὐδ' ἐς ἀργίαν βλέπειν.

5 *Μενάνδρου.*
Λυπεῖ με δοῦλος μεῖζον οἰκέτου φρονῶν.

6 *Τοῦ αὐτοῦ.*
Ὅταν τύχῃ τις εὐνοοῦντος οἰκέτου,
οὐκ ἔστιν οὐδὲν κτῆμα κάλλιον βίῳ.

7 *Τοῦ αὐτοῦ.*
Ὡς κρεῖττόν ἐστι δεσπότου χρηστοῦ τυχεῖν
ἢ ζῆν ταπεινῶς καὶ κακῶς ἐλεύθερον.

8 *Φιλήμονος Θηβαίων.*
Ἐμοῦ γάρ ἐστι κύριος μὲν εἷς ἀνήρ,
τούτου δὲ καὶ σοῦ μυρίων τ' ἄλλων νόμος,
ἑτέρων τύραννος, τῶν τυραννούντων φόβος·
δοῦλοι βασιλέων εἰσίν, ὁ βασιλεὺς θεῶν,
ὁ θεὸς ἀνάγκης. πάντα δ' ἂν σκοπῇς ὅλως
ἑτέρων πέφυκεν ἥττον', ὧν δὲ μείζονα·
οὕτως ἀνάγκη πάντα δουλεύειν ἀεί.

9 *Ἀντιφάνους.*
Δούλῳ γὰρ οἶμαι πατρίδος ἐστερημένῳ
χρηστὸς γενόμενός ἐστι δεσπότης πατρίς.

10 *Μενάνδρου.*
Τί διακενῆς εἶ χρηστός; [εἰ γὰρ] ὁ δεσπότης

αὐτὸς ἀπολάπτει πάντα, σὺ δὲ μὴ λαμβάνεις,
σαυτὸν ἐπιτρίβεις, οὐκ ἐκεῖνον ὠφελεῖς.

11 Εὐριπίδου Ἀρχελάῳ.

Κρείσσω γὰρ οὔτε δοῦλον οὔτ᾽ ἐλεύθερον
τρέφειν ἐν οἴκοις ἀσφαλὲς τοῖς σώφροσι.

12 Εὐριπίδου Ἀντιόπῃ.

Τὸ δοῦλον οὐχ ὁρᾷς ὅσον κακόν;

13 Εὐριπίδου Ἀρχελάου χορός.

Ἔσωσα δούλην οὖσαν. οἱ γὰρ ἥσσονες
τοῖς κρείσσοσιν φιλοῦσι δουλεύειν βροτῶν.

14. 15. Εὐριπίδου Ἀλεξάνδρου.

Σοφὸς μὲν οὖν εἶ, Πρίαμ᾽, ὅμως δέ σοι λέγω,
δούλου φρονοῦντος μᾶλλον ἢ φρονεῖν χρεὼν
οὐκ ἔστιν ἄχθος μεῖζον, οὐδὲ δώμασι
κτῆσις κακίων οὐδ᾽ ἀνωφελεστέρα.
Ἤλεγχον· οὕτω γὰρ κακὸν δοῦλον γένος.
γαστὴρ ἅπαντα, τοὐπίσω δ᾽ οὐδὲν σκοπεῖ.

16 Εὐριπίδου ἐν ταυτῷ.

Δούλων ὅσοι φιλοῦσι δεσποτῶν γένος,
πρὸς τῶν ὁμοίων πόλεμον αἴρονται μέγαν.

17 Μενάνδρου Προεγκαλῶν.

Τὸ δ᾽ εὖ
κελευόμενον μέν ἐστιν ἀσφαλέστατον
δούλῳ ποιεῖν, ὥς φασίν.

18 Εὐριπίδου Ἀλεξάνδρου.

Ὦ παγκάκιστοι καὶ τὸ δοῦλον οὐ λόγῳ
ἔχοντες, ἀλλὰ τῇ τύχῃ κεκτημένοι.

19 Εὐριπίδου Ἀλεξάνδρου.

Δούλους γὰρ οὐ
καλὸν πεπᾶσθαι κρείσσονας τῶν δεσποτῶν.

20 *Εὐριπίδου Ἀλκμαίωνος.*
Μέτεστι τοῖς δούλοισι δεσποτῶν νόσου.

21 *Εὐριπίδου Βουσίριδος.*
Δούλῳ γὰρ οὐχ οἷόν τε τἀληθῆ λέγειν,
εἰ δεσπόταισι μὴ πρέποντα τυγχάνοι.

22 *Εὐριπίδου Ἀλκμαίωνος.*
Ὅστις δὲ δούλῳ φωτὶ πιστεύει βροτῶν,
πολλὴν παρ᾽ ἡμῖν μωρίαν ὀφλισκάνει.

23 *Εὐριπίδου Εὐρυσθέως.*
Πιστὸν μὲν οὖν εἶναι χρὴ τὸν διάκονον
τοιοῦτον εἶναι καὶ στέγειν τὰ δεσποτῶν.

24 *Εὐριπίδου Ἀλκμήνης.*
Ἀεὶ δ᾽ ἀρέσκειν τοῖς κρατοῦσι, ταῦτα γὰρ
δούλοις ἄριστα, κἀφ᾽ ὅτῳ τεταγμένος
εἴη τις ἀνδάνοντα δεσπόταις ποιεῖν.

25 *Εὐριπίδου Ἑκάβης* (332).
Αἰαῖ τὸ δοῦλον ὡς κακὸν πέφυκ᾽ ἀεί,
τολμᾷ θ᾽ ἃ μὴ χρὴ τῇ βίᾳ κρατούμενον.

26 *Εὐριπίδου Ἴωνος* (872).
Ἓν γάρ τι τοῖς δούλοισιν αἰσχύνην φέρει
τοὔνομα· τὰ δ᾽ ἄλλα πάντα τῶν ἐλευθέρων
οὐδεὶς κακίων δοῦλος, ὅστις ἐσθλὸς ᾖ.

27 *Μενάνδρου Παιδίου.*
Ἂν πάντα δουλεύειν ὁ δοῦλος μανθάνῃ,
πονηρὸς ἔσται. μεταδίδου παρρησίας,
βελτίον᾽ αὐτὸν τοῦτο ποιήσει πολύ.

28 *Φιλήμονος Ἐξοικιζομένου.*
Κἂν δοῦλος ᾖ τις, οὐδὲν ἧττον, δέσποτα,
ἄνθρωπος οὗτός ἐστιν, ἂν ἄνθρωπος ᾖ.

29 *Φιλήμονος Παίδων.*
Κακόν ἐστι δούλῳ δεσπότης πράσσων κακῶς·
μετέχειν ἀνάγκη τῶν κακῶν γὰρ γίγνεται.

30 *Σοφοκλέους Ἀκρισίῳ.*
Δῆλον γάρ, ἐν δεσμοῖσι δραπέτης ἀνὴρ
κῶλον ποδισθεὶς πᾶν πρὸς ἡδονὴν λέγει.

31 *Μενάνδρου Θεττάλῃ.*
Εὐθυμία βίε τὸν δοῦλον τρέφει.

32 *Εὐβούλου.*
Πολλοὶ φυγόντες δεσπότας, ἐλεύθεροι
ὄντες, πάλιν ζητοῦσι τὴν αὐτὴν φάτνην.

33 *Σοφοκλέους.*
Εἰ σῶμα δοῦλον, ἀλλ' ὁ νοῦς ἐλεύθερος.

34 *Μενάνδρου.*
Ἐμοὶ πόλις ἐστὶ καὶ καταφυγὴ καὶ νόμος
καὶ τοῦ δικαίου τοῦ τ' ἀδίκου παντὸς κριτὴς
ὁ δεσπότης· πρὸς τοῦτον ἕνα δεῖ ζῆν ἐμέ.

35 *Φιλίππου.*
Ὡς κρεῖττόν ἐστι δεσπότου χρηστοῦ τυχεῖν
ἢ ζῆν ταπεινῶς καὶ κακῶς ἐλεύθερον.

36 *Θεόγνιδος* (535).
Οὔ ποτε δουλείη κεφαλὴ εὐθεῖα πέφυκεν,
ἀλλ' αἰεὶ σκολιή, καὐχένα λοξὸν ἔχει.

37 *Εὐριπίδου Μηδείας* (54).
Χρηστοῖσι δούλοις ξυμφορὰ τὰ δεσποτῶν
κακῶς πίτνοντα καὶ φρενῶν ἀνθάπτεται.

38 *Εὐριπίδου Μελανίππης.*

*Δοῦλον γὰρ ἐσθλὸν τοὔνομ᾽ οὐ διαφθερεῖ·
πολλοὶ δ᾽ ἀμείνους εἰσὶ τῶν ἐλευθέρων.*

39 *Εὐριπίδου Φρίξος.*

*Πολλοῖσι δούλοις τοὔνομ᾽ αἰσχρόν, ἡ δὲ φρὴν
τῶν οὐχὶ δούλων ἔστ᾽ ἐλευθερωτέρα.*

40 *Ἀλέξιδος.*

*Ἀλλ᾽ ἐπὶ τὸ πλῆθος ἐμφερεῖς τοὺς οἰκέτας
ἔχοντας ὄψει τοὺς τρόπους τοῖς δεσπόταις.
τοῖς ἤθεσιν γὰρ οἷς ὑπηρετοῦσ᾽ ἀεὶ
προσέχουσα τούτοις ἡ φύσις κεράννυται.*

41 *Εὐριπίδου Ἀντιόπης.*

*Φεῦ φεῦ· τὸ δοῦλον ὡς ἁπανταχῇ γένος
πρὸς τὴν ἐλάσσω μοῖραν ὥρισεν θεός.*

42 *Δίωνος ἐν τῷ περὶ δουλείας.*

Φησὶν ὁ Δίων "οἱ ἀγαθοὶ οἰκέται ἐλεύθεροι, οἱ πονηροὶ ἐλεύθεροι δοῦλοι πολλῶν ἐπιθυμιῶν."

43 *Φαβωρίνου.*

Ζάμολξις οἰκέτης ἦν Πυθαγόρου, καὶ προσεκύνησαν αὐτὸν οἱ Γέται.

44 *Μητροδώρου.*

Δοῦλος ἀναγκαῖον μὲν κτῆμα, οὐχ ἡδὺ δέ.

45 *Δημοκρίτου.*

Οἰκέτῃσι ὡς μέρεσι τοῦ σκήνεος χρῶ ἄλλῳ πρὸς ἄλλο.

46 *Δίωνος ἐκ τοῦ Οἰκονομικοῦ.*

Χρὴ οὖν δεσπόζειν ἐπιεικῶς καὶ ἀνεθῆναί ποτε βουλομένοις ἐπιτρέπειν. αἱ γὰρ ἀνέσεις παρασκευαστικαὶ πόνων εἰσί· καὶ τόξον καὶ λύρα καὶ ἄνθρωπος ἀκμάζει δι᾽ ἀναπαύσεως.

47 Διογένους.

Διογένης ἀποδράντος τοῦ οἰκέτου οὐκ ἐφρόντιζε, δεινὸν εἶναι λέγων, εἰ Διογένης μὲν χωρὶς αὐτοῦ ζῆν οὐ δύναται, αὐτοῦ δ' ἐκεῖνος χωρὶς δύναται.

48 Ἐκ τῶν Σερήνου ἀπομνημονευμάτων.

Πόλλις ὁ Ἀκραγαντῖνος ἐπιξενωθεὶς ἀνδρὶ σκληρῷ καὶ ἀπὸ παντὸς πορίζοντι, ὃς οὐδὲ καθεύδειν τοῖς οἰκέταις ἐπέτρεπεν, ἀλλ' ἄλλος ἄλλο τι τὴν νύκτα εἰργάζετο, ὑποδεξάμενος καὶ αὐτὸς τοῦτον εἰς Ἀκράγαντα ἀφικόμενον μετὰ δεῖπνον συνεκάλει τὰ παιδία τῶν οἰκετῶν (τὰ δὲ ἦν πάμπολλα) καὶ τοῖς μὲν ἐδίδου κάρυα τοῖς δὲ σῦκα ξηρά. ἐρομένου δ' ἐκείνου πόθεν παιδία τοσαῦτα; "ταῦτα" ἔφη "οἱ ἐμοὶ οἰκέται ἐν νυξὶ ποιοῦσι."

49 Πλάτωνος (Epist. 8 p. 354 e).

Δουλεία γὰρ καὶ ἐλευθερία ὑπερβάλλουσα μὲν ἑκατέρα πάγκακον, ἔμμετρος δὲ οὖσα πανάγαθον. μετρία δὲ ἡ θεῶν δουλεία· ἄμετρος δὴ ἡ τοῖς ἀνθρώποις. θεὸς δὲ ἀνθρώποις σώφροσι νόμος.

50 Ὁ μὴ δουλεύσας οὐδ' ἂν δεσπότης γένοιτο ἄξιος ἐπαίνου. (Plato Leg. VI 762 e.)

51 Ἡροδότου ἱστορίας η' (68).

Πρὸς δέ, ὦ βασιλεῦ, καὶ τόδε ἐς θυμὸν βάλεο, ὡς τοῖσι μὲν χρηστοῖσι τῶν ἀνθρώπων κακοὶ δοῦλοι φιλέουσι γίγνεσθαι, τοῖσι δὲ κακοῖσι χρηστοί.

52 Πλάτωνος νόμων ϛ' (777).

Ἐπειδὴ δύσκολόν ἐστι τὸ θρέμμα ἄνθρωπος καὶ πρὸς τὴν ἀναγκαίαν διόρισιν, τὸ δοῦλόν τε ἔργῳ διορίζεσθαι καὶ ἐλεύθερον καὶ δεσπότην, οὐδαμῶς εὔχρηστον ἐθέλειν εἶναί τε καὶ γίγνεσθαι φαίνεται,

χαλεπὸν δὴ τὸ κτῆμα· ἔργῳ γὰρ πολλάκις ἐπιδέδεικται περὶ τὰς Μεσσηνίων συχνὰς εἰωθυίας ἀποστάσεις γίγνεσθαι, [καὶ περί γε τὰς τῶν ἐκ μιᾶς φωνῆς πολλοὺς οἰκέτας κτωμένων πόλεις, ὅσα κακὰ ξυμβαίνει,] καὶ ἔτι τὰ τῶν λεγομένων περιδείνων, τῶν περὶ τὴν Ἰταλίαν γιγνομένων παντοδαπῶν καὶ κλοπῶν ἔργά τε καὶ παθήματα· πρὸς ἅ τις ἂν πάντα βλέψας διαπορήσαι τί χρὴ δρᾶν περὶ πάντων τῶν τοιούτων. δύο δὴ λείπεσθον μόνω μηχανά, μήτε πατριώτας ἀλλήλων εἶναι τοὺς μέλλοντας ῥᾷον δουλεύσειν, ἀσυμφώνους τε εἰς δύναμιν ὅτι μάλιστα, τρέφειν δὲ αὐτοὺς ὀρθῶς, μὴ μόνον ἐκείνων οὕνεκα, πλέον δὲ αὑτῶν προτιμῶντας. ἡ δὲ τροφὴ τῶν τοιούτων μήτε τινὰ ὕβριν ὑβρίζειν εἰς τοὺς οἰκέτας, ἧττον δὲ εἰ δυνατὸν ἀδικεῖν ἢ τοὺς ἐξ ἴσου· διάδηλος γὰρ ὁ φύσει καὶ μὴ πλαστῶς σέβων τὴν δίκην, μισῶν δὲ ὄντως τὸ ἄδικον ἐν τούτοις τῶν ἀνθρώπων, ἐν οἷς αὐτῷ ῥᾴδιον ἀδικεῖν. [ὁ] περὶ τὰ τῶν δούλων οὖν ἤθη καὶ πράξεις γιγνόμενός τις ἀμίαντος, τοῦ τε ἀνοσίου πέρι καὶ ἀδίκου, σπείρειν εἰς ἀρετῆς ἔκφυσιν ἱκανώτατος ἂν εἴη· ταυτὸν δ᾽ ἔστιν εἰπεῖν τοῦτο ὀρθῶς ἅμα λέγοντα ἐπί τε δεσπότῃ καὶ τυράννῳ καὶ πᾶσαν δυναστείαν δυναστεύοντι πρὸς ἀσθενέστερον ἑαυτοῦ. κολάζειν γε μὴν ἐν δίκῃ δούλους δεῖ καὶ μὴ νουθετοῦντας ὡς ἐλευθέρους θρύπτεσθαι ποιεῖν· τὴν δὲ οἰκέτου πρόσρησιν χρὴ σχεδὸν ἐπίταξιν πᾶσαν γίγνεσθαι, μὴ προσπαίζοντας μηδαμῇ μηδαμῶς οἰκέταις, μήτ᾽ οὖν θηλείαις μήτ᾽ ἄρρεσιν· ἃ δὴ πρὸς δούλους φιλοῦσι πολλοὶ σφόδρα ἀνοήτως θρύπτοντες χαλεπώτερον ἀπεργάζεσθαι τὸν βίον ἐκείνοις τε ἄρχεσθαι καὶ ἑαυτοῖς ἄρχειν.

ΠΕΡΙ ΑΦΡΟΔΙΤΗΣ ΠΑΝΔΗΜΟΥ ΠΑΡΕΧΟΥΣΗΣ ΤΗΝ ΑΙΤΙΑΝ ΤΗΣ ΓΕΝΕΣΕΩΣ ΤΟΙΣ ΑΝΘΡΩΠΟΙΣ ΚΑΙ ΠΕΡΙ ΕΡΩΤΟΣ ΤΩΝ ΚΑΤΑ ΤΟ ΣΩΜΑ ΗΔΟΝΩΝ. ΞΓ.

1 *Εὐριπίδου Αἰόλῳ.*
Τῇ δ' ἀφροδίτῃ πόλλ' ἔνεστι ποικίλα·
τέρπει τε γὰρ μάλιστα καὶ λυπεῖ βροτούς.
τύχοιμι δ' αὐτῆς, ἡνίκ' ἐστὶν εὐμενής.

2 *Εὐριπίδου Ἀντιόπῃ.*
Κόρος δὲ πάντων· καὶ γὰρ ἐκ καλλιόνων
λέκτροις ἐπ' αἰσχροῖς εἶδον ἐκπεπληγμένους,
δαιτὸς δὲ πληρωθείς τις ἄσμενος πάλιν
φαύλῃ διαίτῃ προσβαλὼν ἥσθη στόμα.

3 *Εὐριπίδου Ἱππολύτῳ.*
Οἵ γὰρ κύπριν φεύγοντες ἀνθρώπων ἄγαν
νοσοῦσ' ὁμοίως τοῖς ἄγαν θηρωμένοις.

4 *Εὐριπίδου Ἀντιγόνῃ.*
Ἀνδρὸς δ' ὁρῶντος εἰς κύπριν νεανίου
ἀφύλακος ἡ τήρησις· ὡς κἂν φαῦλος ᾖ
τἄλλ', εἰς ἔρωτας πᾶς ἀνὴρ σοφώτερος·
ἣν δ' ἂν προσῆται Κύπρις, ἥδιστον λαβεῖν.

5 *Εὐριπίδου Ἱππολύτῳ* (443).
Κύπρις γὰρ οὐ φορητὸν ἢν πολλὴ ῥυῇ·
ἣ τὸν μὲν εἴκονθ' ἡσυχῇ μετέρχεται,
ὃν δ' ἂν περισσὰ καὶ φρονοῦνθ' εὕρῃ μέγα,
τοῦτον λαβοῦσα πῶς δοκεῖς καθύβρισεν.

6 *Σοφοκλέους.*
Ὦ παῖδες, ἥ τοι Κύπρις οὐ Κύπρις μόνον,
ἀλλ' ἔστι πάντων ὀνομάτων ἐπώνυμος.

ἔστιν μὲν ᾅδης, ἔστι δ' ἄφθιτος βίος,
ἔστιν δὲ λύσσα μανιάς, ἔστι δ' ἵμερος
ἄκραντος, ἔστ' οἰμωγμός· ἐν κείνῃ τὸ πᾶν,
σπουδαῖον, ἡσυχαῖον, εἰς βίαν ἄγον.
ἐντήκεται γὰρ πλευμόνων ὅσοις ἔνι
ψυχή. τίς οὐχὶ τῆσδε τῆς θεοῦ βορά;
εἰσέρχεται μὲν ἰχθύων πλωτῷ γένει·
ἔνεστι δ' ἐν χέρσου τετρασκελεῖ γονῇ·
νωμᾷ δ' ἐν οἰωνοῖσι τοὐκείνης πτερόν,
ἐν θηρσίν, ἐν βροτοῖσιν, ἐν θεοῖς ἄνω.
τίν' οὐ παλαίουσ' ἐς τρὶς ἐκβάλλει θεῶν;
εἴ μοι θέμις, θέμις δὲ τἀληθῆ λέγειν,
Διὸς τυραννεῖ πλευμόνων· ἄνευ δορός,
ἄνευ σιδήρου πάντα τοι συντέμνεται
Κύπρις τὰ θνητῶν καὶ θεῶν βουλεύματα.

7 Ἐκ τῶν Βίωνος βουκολικῶν.

Ταὶ Μοῖσαι τὸν Ἔρωτα τὸν ἄγριον οὐ φοβέονται,
ἐκ θυμῶ δὲ φιλεῦντι καὶ ἐκ ποδὸς αὐτῷ ἕπονται.
κἢν μὲν ἄρα ψυχάν τις ἔχων ἀνέραστον ἀείδῃ,
τῆνον ὑπεκφεύγοντι καὶ οὐκ ἐθέλοντι διδάσκειν·
ἢν δὲ νόον τις ἔρωτι δονεύμενος ἁδὺ μελίσδῃ,
ἐς τῆνον μάλα πᾶσαι ἐπειγόμεναι προρέοντι.
μάρτυς ἐγών, ὅτι μῦθος ὅδ' ἔπλετο πάμπαν ἀληθής.
ἢν μὲν γὰρ βροτὸν ἄλλον ἢ ἀθανάτων τινα μέλπω,
βαμβαίνει μευ γλῶσσα καὶ ὡς πάρος οὐκ ἔτ' ἀείδει·
ἢν δ' αὖτ' ἐς τὸν Ἔρωτα καὶ ἐς Λυκίδαν τι μελίσδω,
καὶ τόκα μοι χαίροισα διὰ στόματος ῥέει ᾠδά.

8 Ζωπύρου.

Μηδεὶς ἄπειρος τῶν ἐμῶν εἴη φίλων
ἔρωτος· ἐντυχὼν δὲ τὸν θεὸν λάβοι.

9 *Ἀριστάρχου.*

Ἔρωτος ὅστις μὴ πεπείραται βροτῶν,
οὐκ οἶδ' ἀνάγκης θεσμόν, ᾧ πεισθεὶς ἐγὼ
πόθῳ κρατηθεὶς τάσδ' ἀπεστάλην ὁδούς.
οὗτος γὰρ ὁ θεὸς καὶ τὸν ἀσθενῆ σθένειν
τίθησι καὶ τὸν ἄπορον εὑρίσκειν πόρον.

10 *Ἀναξανδρίδου.*

Ἔρως σοφιστοῦ γίγνεται διδάσκαλος
Κείου πολὺ κρείττων πρὸς τὸν ἀνθρώπων βίον.

11 *Εὐριπίδου Αὔγη.*

Ἔρωτα δ' ὅστις μὴ θεὸν κρίνει μέγαν
καὶ τῶν ἁπάντων δαιμόνων ὑπέρτατον,
ἢ σκαιός ἐστιν ἢ καλῶν ἄπειρος ὢν
οὐκ οἶδε τὸν μέγιστον ἀνθρώποις θεόν.

12 *Ἀντιφάνους.*

Εἴ τις φησὶ τοὺς ἐρῶντας οὐχὶ νοῦν ἔχειν,
ἤ πού τίς ἐστι τοὺς τρόπους ἀβέλτερος.
εἰ γὰρ ἀφέλοι τις τοῦ βίου τὰς ἡδονάς,
καταλείπετ' οὐδὲν ἕτερον ἢ τεθνηκέναι.

13 *Ἀλέξιδος.*

Οὐκ ἔστι παιδαγωγὸς ἀνθρώποις ἄρα
ἔρωτος οὐδεὶς ἄλλος ἐπιμελέστερος.

14 *Μένανδρος Θησαυρῷ.*

Εἶτ' οὐ μέγιστός ἐστι τῶν θεῶν ἔρως
καὶ τιμιώτατός γε τῶν πάντων πολύ;
οὐδεὶς γὰρ οὕτως ἐστὶ φειδωλὸς σφόδρα
ἄνθρωπος οὐδ' οὕτως ἀκριβὴς τοὺς τρόπους,
ὃς οὐχὶ τούτῳ μερίδα τῷ θεῷ νέμει
τῆς οὐσίας· ὅσοις μὲν οὖν πρᾴως ἔχει,
νέοις ἔτ' οὖσι τοῦτο προστάττει ποιεῖν,

οἱ δ' εἰς τὸ γῆρας ἀναβολὰς ποιούμενοι,
οὗτοι προσαποτίνουσι τοῦ χρόνου τόκους.

15 Μενάνδρου Συναριστώσαις.
Ἔρως δὲ τῶν θεῶν
ἰσχὺν ἔχων πλείστην ἐπὶ τούτου δείκνυται·
διὰ τοῦτον ἐπιορκοῦσι τοὺς ἄλλους θεούς.

16 Μιμνέρμου.
Τίς δὲ βίος, τί δὲ τερπνὸν ἄτερ χρυσέης Ἀφροδίτης;
τεθναίην, ὅτε μοι μηκέτι ταῦτα μέλοι,
κρυπταδίη φιλότης καὶ μείλιχα δῶρα καὶ εὐνή·
ἡλικίης ἄνθεα γίγνεται ἁρπαλέα
ἀνδράσιν ἠδὲ γυναιξίν· ἐπεὶ δ' ὀδυνηρὸν ἐπέλθῃ
γῆρας, ὅ τ' αἰσχρὸν ὅμως καὶ καλὸν ἄνδρα τιθεῖ,
αἰεὶ μὲν φρένας ἀμφὶ κακαὶ τείρουσι μέριμναι,
οὐδ' αὐγὰς προσορῶν τέρπεται ἠελίου·
ἀλλ' ἐχθρὸς μὲν παισίν, ἀτίμαστος δὲ γυναιξίν.
οὕτως ἀργαλέον γῆρας ἔθηκε θεός.

17 Μενάνδρου Ναυκλήρῳ.
Καὶ φύσει πως εὐάγωγόν ἐστι πᾶς ἀνὴρ ἐρῶν.

18 Μενάνδρου Θησαυρῷ.
Πολλοῖς ὑπέκκαυμ' ἐστ' ἔρωτος μουσική.

19 Θεοκρίτου (III, 20. XXVII, 4).
Ἔστι καὶ ἐν κενεοῖσι φιλήμασιν ἁδέα τέρψις.

20 Μενάνδρου.
Ὀργὴ φιλούντων ὀλίγον ἰσχύει χρόνον.

21 Μενάνδρου Ἥρωι.
Δέσποιν', ἔρωτος οὐδὲν ἰσχύει πλέον·
οὐδ' αὐτὸς ὁ κρατῶν τῶν ἐν οὐρανῷ θεῶν
Ζεύς, ἀλλ' ἐκείνῳ πάντ' ἀναγκασθεὶς ποιεῖ.

22 Εὐριπίδου Ἀνδρομέδας.

Ὅσοι γὰρ εἰς ἔρωτα πίπτουσιν βροτῶν,
ἐσθλῶν ὅταν τύχωσι τῶν ἐρωμένων,
οὐκ ἔσθ' ὁποίας λείπεται τόδ' ἡδονῆς.

23 Εὐριπίδου Ἱππολύτῳ.

Ἔχω δὲ τόλμης καὶ θράσους διδάσκαλον
ἐν τοῖς ἀμηχάνοισιν εὐπορώτατον,
ἔρωτα, πάντων δυσμαχώτατον θεόν.

24 Σοφοκλέους Τραχινίαις (441).

Ἔρωτι μὲν γοῦν ὅστις ἀντανίσταται
πύκτης ὅπως ἐς χεῖρας, οὐ καλῶς φρονεῖ.
οὗτος γὰρ ἄρχει καὶ θεῶν ὅπως θέλει.

25 Σοφοκλέους Φαίδρα.

Ἔρως γὰρ ἄνδρας οὐ μόνους ἐπέρχεται,
οὐδ' αὖ γυναῖκας, ἀλλὰ καὶ θεῶν ἄνω
ψυχὰς χαράσσει κἀπὶ πόντον ἔρχεται.
καὶ τόνδ' ἀπείργειν οὐδ' ὁ παγκρατὴς σθένει
Ζεύς, ἀλλ' ὑπείκει καὶ θέλων ἐγκλίνεται.

26 Ἐκ τῶν Βίωνος βουκολικῶν.

Ἁ μεγάλα μοι Κύπρις ἔθ' ὑπνώοντι παρέστα,
νηπίαχον τὸν Ἔρωτα καλᾶς ἐκ χειρὸς ἄγοισα
ἐς χθόνα νευστάζοντα, τόσον δέ μοι ἔφρασε μῦθον
"μέλπειν μοι φίλε βοῦτα λαβὼν τὸν Ἔρωτα δίδασκε."
ὣς λέγε· χἃ μὲν ἀπῆλθεν· ἐγὼ δ' ὅσα βουκολίασδον,
νήπιος, ὡς ἐθέλοντα μαθεῖν τὸν Ἔρωτα δίδασκον·
ὡς εὗρεν πλαγίαυλον ὁ Πάν, ὡς αὐλὸν Ἀθάνα,
ὡς χέλυν Ἑρμάων, κιθάραν ὡς ἅνυσ' Ἀπόλλων.
ταῦτά νιν ἐξεδίδασκον· ὃ δ' οὐκ ἐμπάζετο μύθων,
ἀλλά μοι αὐτὸς ἄειδεν ἐρωτύλα, καί μ' ἐδίδασκε
θνατῶν ἀθανάτων τε πόθους καὶ ματέρος ἔργα.

κἠγὼν ἐκλαθόμαν μὲν ὅσων τὸν Ἔρωτα δίδασκον,
ὅσσα δ' Ἔρως με δίδαξεν ἐρωτύλα πάντ' ἐδιδάχθην.

27 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Ἕσπερε, τᾶς ἐρατᾶς χρύσεον φάος Ἀφρογενήας,
Ἕσπερε κυανέας ἱερὸν φίλε νυκτὸς ἄγαλμα,
τόσσον ἀφαυρότερος μήνας, ὅσον ἔξοχος ἄστρων,
χαῖρε φίλος, καί μοι ποτὶ ποιμένα κῶμον ἄγοντι
ἀντὶ σελαναίας τὺ δίδου φάος, ὥνεκα τήνα
σάμερον ἀρχομένα τάχιον δύεν. οὐκ ἐπὶ φωρὰν
ἔρχομαι, οὐδ' ἵνα νυκτὸς ὁδοιπορέοντα λοχάσω·
ἀλλ' ἐράω· καλὸν δέ τ' ἐρασσαμένῳ συνέρασθαι.

28 *Τοῦ αὐτοῦ.*

Ὄλβιοι οἱ φιλέοντες, ἐπὴν ἴσον ἀντεράωνται.
ὄλβιος ἦν Θησεὺς τῶ Πειριθόω παρεόντος,
ὢ καὶ ἄμ' ἀλλίστοιο κατήλυθεν εἰς Ἀίδαο.
ὄλβιος ἦν χαλεποῖσι ἐνὶ ξείνοισιν Ὀρέστας,
οὕνεκά οἱ ξυνὰς Πυλάδας αἵρητο κελεύθους.
ἦν μάκαρ Αἰακίδας ἑτάρω ζώοντος Ἀχιλλεύς,
ὄλβιος ἦν θνάσκων ὅ οἱ οὐ μόρον αἰνὸν ἄμυνεν.

29 *Ἐκ τῶν Μόσχου τοῦ Σικελιώτου βουκολικῶν.*

Ἤρατο Πὰν Ἀχῶς τᾶς γείτονος, ἤρατο δ' Ἀχὼ
σκιρτητᾶ Σατύρω, Σάτυρος δ' ἐπεμήνατο Λύδᾳ.
ὡς Ἀχὼ τὸν Πᾶνα, τόσον Σάτυρος φλέγεν Ἀχῶ,
καὶ Λύδα Σατυρίσκον· ἔρως δ' ἐσμύχετ' ἀμοιβᾷ.
ὅσσον γὰρ τήνων τις ἐμίσεε τὸν φιλέοντα,
τόσσον ὁμῶς φιλέων ἠχθαίρετο, πάσχε δ' ἃ ποίει.
ταῦτα λέγω πᾶσιν τὰ διδάγματα τοῖς ἀνεράστοις·
στέργετε τοὺς φιλέοντας, ἵν' ἢν φιλέητε φιλῆσθε.

30 *Πλάτωνος ἐκ τοῦ συμποσίου* (183 b).

Ὃ δὲ δεινότατον, ὥς γε λέγουσι οἱ πολλοί, ὅτι καὶ ὀμνύντι μόνῳ ξυγγνώμη παρὰ θεῶν ἐκβάντι τὸν ὅρκον· ἀφροδίσιον γὰρ ὅρκον οὔ φασιν εἶναι. οὕτω καὶ οἱ θεοὶ καὶ οἱ ἄνθρωποι πᾶσαν ἐξουσίαν πεποιήκασι τῷ ἐρῶντι, ὡς ὁ νόμος φησὶν ὁ ἐνθάδε.

31 Χρυσίππου.

Εἰπόντος τινός "οὐκ ἐρασθήσεται ὁ σοφός· μαρτυρεῖ γοῦν Μενέδημος Ἐπίκουρος Ἀλεξῖνος," "τῇ αὐτῇ" ἔφη "χρήσομαι ἀποδείξει· εἰ γὰρ Ἀλεξῖνος ὁ ἀνάγωγος καὶ Ἐπίκουρος ὁ ἀναίσθητος καὶ Μενέδημος [ὁ λῆρος] οὔ φασιν, ἐρασθήσεται ἄρα."

32 Ἀριστίππου.

Ἀρίστιππος ὁ Κυρηναῖος φιλόσοφος ἐρωτηθεὶς εἰ ὁ ἔρως ἕνεκα τῆς συνουσίας γίγνεται, "οὔτ'" ἔφη "διὰ τοῦτο οὔτ' ἄνευ τούτου."

33 Δημοκρίτου.

Ἐρωτικὴν μέμψιν ἡ ἀγαπωμένη λύει.

34 Ἐκ τῶν Πλουτάρχου περὶ ἔρωτος.

Τῶν Μενάνδρου δραμάτων οὐκ ἴσως ἁπάντων ἓν συνεκτικόν ἐστιν ὁ ἔρως οἷον πνεῦμα κοινὸν διακεχυκώς; ὃν οὖν μάλιστα θιασώτην τοῦ θεοῦ καὶ ὀργιαστὴν [ἴσμεν] τὸν ἄνδρα συνεπιλαμβάνωμεν εἰς τὴν ζήτησιν, ἐπεὶ καὶ λελάληκε περὶ τοῦ πάθους φιλοσοφώτερον. ἄξιον γὰρ εἶναι θαύματος φήσας τὸ περὶ τοὺς ἐρῶντας, ὥσπερ ἐστὶν ἅμα λαλεῖ· εἶτα ἀπορεῖ καὶ ζητεῖ πρὸς ἑαυτόν

τίνι δεδούλωνταί ποτε;
ὄψει; φλύαρος· τῆς γὰρ αὐτῆς πάντες ἂν
ἤρων· κρίσιν γὰρ τὸ βλέπειν ἴσην ἔχει.
ἀλλ' ἡδονή τις τοὺς ἐρῶντας ἐπάγεται

συνουσίας; πῶς οὖν ἕτερος ταύτην ἔχων
οὐδὲν πέπονθεν, ἀλλ' ἀπῆλθε καταγελῶν,
ἕτερος δ' ἀπόλωλε; καιρός ἐστιν ἡ νόσος
ψυχῆς· ὁ πληγεὶς δ' ἔνδοθεν τιτρώσκεται.

ταῦτα τίν' ἐστὶ σκεψώμεθα· καὶ γὰρ ἔχει τι κρουστικὸν καὶ κινητικὸν αἴτιον, [εἰ μήτε τὴν ὄψιν] μήτε τὴν συνουσίαν αἰτίαν εἶναι πιθανόν ἐστιν· ἀρχαὶ γὰρ αὖταί τινες ἴσως, ἡ δ' ἰσχὺς καὶ ῥίζωσις τοῦ πάθους ἐν ἑτέροις. ἡ δ' ἀπόδειξις ἐλαφρὰ καὶ οὐδ' ἀληθής· οὐ γὰρ ἔχει κρίσιν [ἴσην] τὸ βλέπειν, ὥσπερ οὐδὲ τὸ γεύεσθαι. καὶ γὰρ ὄψις ὄψεως καὶ ἀκοῆς ἀκοὴ φύσει τε μᾶλλον διήρθρωται καὶ τέχνῃ συγγεγύμνασται πρὸς τὴν τοῦ καλοῦ διάγνωσιν, ἐν μὲν ἁρμονίαις καὶ μέλεσιν αἱ τῶν μουσικῶν, ἐν δὲ μορφαῖς καὶ ἰδέαις αἱ τῶν ζωγράφων· ὥσπερ εἰπεῖν ποτε Νικόμαχον λέγουσι πρὸς ἄνθρωπον ἰδιώτην φήσαντα μὴ καλὴν αὐτῷ φανῆναι τὴν Ζεύξιδος Ἑλένην· "λάβε" γὰρ ἔφη "τοὺς ἐμοὺς ὀφθαλμούς, καὶ θεός σοι φανήσεται." πολὺ δὲ καὶ μυρεψοὶ περὶ τὰ ὀσφραντὰ καὶ νὴ Δία ὀψοποιοὶ περὶ τὰ γευστὰ διατριβῇ καὶ συνηθείᾳ διαφέρουσαν ἡμῶν κρίσιν ἔχουσι. πάλιν δὲ τὸ συνουσίᾳ τὸν ἐρῶντα μὴ κρατεῖσθαι, διὰ τὸ τῇ αὐτῇ συγγενόμενον ἄλλον ἀπαλλαγῆναι καὶ καταφρονῆσαι . . . ., τοιοῦτόν ἐστιν οἷον εἰ λέγοι τις μηδὲ χυμῶν ἡδονῇ δεδουλῶσθαι Φιλόξενον τὸν ὀψοφάγον, ὅτι τῶν αὐτῶν Ἀντισθένης γευσάμενος οὐδὲν ἔπαθε τοιοῦτον, μηδὲ ὑπ' οἴνου μεθύειν Ἀλκιβιάδην, ὅτι Σωκράτης πίνων τὸν ἴσον οἶνον ἔνηφεν. ἀλλὰ ταῦτα μὲν ἐάσωμεν, τὰ δ' ἐφεξῆς ἐν οἷς ἤδη τὴν αὑτοῦ δόξαν ἀποφαίνεται σκοπῶμεν. "καιρός ἐστιν ἡ νόσος ψυχῆς." εὖ καὶ ὀρθῶς. δεῖ γὰρ ἅμα τοῦ πάσχοντος εἰς ταυτὸ καὶ τοῦ ποιοῦντος ἀπάντησιν

γενέσθαι πρὸς ἄλληλά πως ἐχόντων· ὡς ἄκυρον εἰς τὴν τοῦ τέλους ἀπεργασίαν ἡ δραστικὴ δύναμις, ἂν μὴ παθητικὴ διάθεσις ᾖ. τοῦτο δ᾽ εὐστοχίας ἐστὶ καιροῦ τῷ παθεῖν ἑτοίμῳ συνάπτοντος ἐν ἀκμῇ τὸ ποιεῖν πεφυκός.

35 *Πλάτωνος ἐκ τοῦ συμποσίου* (189).

Ἡ γὰρ πάλαι ἡμῶν φύσις οὐχ αὕτη ἦν ἥπερ νῦν, ἀλλὰ ἀλλοία. πρῶτον μὲν γὰρ τρία ἦν γένη τὰ τῶν ἀνθρώπων, οὐχ ὥσπερ νῦν δύο, ἄρρεν καὶ θῆλυ, ἀλλὰ τρίτον προσῆν κοινὸν ἀμφοτέρων τούτων, οὗ νῦν ὄνομα λοιπόν, αὐτὸ δὲ ἠφάνισται. ἀνδρόγυνον γὰρ τότε μὲν ἦν, καὶ εἶδος καὶ ὄνομα ἐξ ἀμφοτέρων κοινὸν τοῦ τε ἄρρενος καὶ θήλεος· νῦν δὲ οὐκ ἔστιν ἀλλ᾽ ἢ ἐν ὀνείδει ὄνομα κείμενον. ἔπειτα ὅλον ἦν ἑκάστου τοῦ ἀνθρώπου τὸ εἶδος στρογγύλον νῶτόν τε καὶ πλευρὰς κύκλῳ ἔχον, χεῖρας δὲ τέσσαρας εἶχε καὶ σκέλη τὰ ἴσα ταῖς χερσί, καὶ πρόσωπα δύο ἐπὶ αὐχένι κυκλοτερεῖ ὅμοια πάντῃ· κεφαλὴν δὲ ἐπ᾽ ἀμφοτέροις τοῖς προσώποις ἐναντίοις [κειμένοις] μίαν καὶ ὦτα τέτταρα καὶ αἰδοῖα δύο καὶ τἄλλα πάντα ὅσα ἀπὸ τούτων ἄν τις εἰκάσειεν· ἐπορεύετο δὲ καὶ ὀρθὸν ὥσπερ νῦν ὁποτέρως βουληθείη καὶ ὁπότε ταχὺ ὁρμήσειε θεῖν, ὥσπερ οἱ κυβιστῶντες καὶ εἰς ὀρθὰ ὄντα σκέλη περιφερόμενοι κυβιστῶσι κύκλῳ, τότε ὀκτὼ οὖσι τοῖς μέλεσιν ἀπερειδόμενοι ταχὺ ἐφέροντο κύκλῳ. ἦν δὲ διὰ ταῦτα τρία τὰ γένη καὶ τοιαῦτα, ὅτι τὸ μὲν ἄρρεν ἦν τοῦ ἡλίου τὴν ἀρχὴν ἔκγονον, τὸ δὲ θῆλυ τῆς γῆς· τὸ δὲ ἀμφοτέρων μετέχον τῆς σελήνης, ὅτι καὶ ἡ σελήνη ἀμφοτέρων μετεῖχεν. περιφερῆ δὲ δὴ ἦν καὶ αὐτὰ καὶ ἡ πορεία αὐτῶν διὰ τὸ τοῖς γονεῦσιν ὅμοια εἶναι. ἦν οὖν τὴν

ἰσχὺν δεινὰ καὶ τὴν ῥώμην καὶ τὰ φρονήματα μεγάλα εἶχον. ἐπεχείρησαν δὲ τοῖς θεοῖς, καὶ ὃ λέγει Ὅμηρος περὶ Ἐφιάλτου τε καὶ Ὤτου περὶ ἐκείνων λέγεται, τὸ εἰς τὸν οὐρανὸν ἀνάβασιν ἐπιχειρεῖν ποιεῖν, ὡς ἐπιθησομένων τοῖς θεοῖς. ὁ οὖν Ζεὺς καὶ οἱ ἄλλοι θεοὶ ἐβουλεύοντο ὅ τι χρὴ αὐτοὺς ποιῆσαι, καὶ ἠπόρουν· οὔτε γὰρ ὅπως ἀποκτείναιεν εἶχον καὶ ὥσπερ τοὺς γίγαντας κεραυνώσαντες τὸ γένος ἀφανίσαιεν· αἱ τιμαὶ γὰρ αὐτοῖς καὶ τὰ ἱερὰ τὰ παρὰ τῶν ἀνθρώπων ἠφανίζετο, οὔτε ὅπως ἐῷεν ἀσελγαίνειν. μόλις δὲ ὁ Ζεὺς ἐννοήσας λέγει ὅτι Δοκῶ μοι, ἔφη, ἔχειν μηχανὴν ὡς ἂν εἶέν τε ἄνθρωποι καὶ παύσαιντο τῆς ἀκολασίας ἀσθενέστεροι γενόμενοι. νῦν μὲν γὰρ αὐτούς, ἔφη, διατεμῶ δίχα ἕκαστον, καὶ ἅμα μὲν ἀσθενέστεροι ἔσονται ἅμα δὲ χρησιμώτεροι ἡμῖν διὰ τὸ πλείους τὸν ἀριθμὸν γεγονέναι, καὶ βαδιοῦνται ὀρθοὶ ἐπὶ δυοῖν σκελοῖν· ἐὰν δὲ ἔτι δοκῶσιν ἀσελγαίνειν καὶ μὴ θέλωσιν ἡσυχίαν ἄγειν, πάλιν αὖ, ἔφη, τεμῶ δίχα, ὥστε ἐφ' ἑνὸς πορεύσονται σκέλους ἀσκωλίζοντες. ταῦτα εἰπὼν ἔτεμνε τοὺς ἀνθρώπους δίχα, ὥσπερ οἱ τὰ ὠὰ τέμνοντες καὶ μέλλοντες ταριχεύειν ἢ ὥσπερ οἱ τὰ ὠὰ ταῖς θριξίν· ὅντινα δὲ τέμοι, τὸν Ἀπόλλω ἐκέλευε τό τε πρόσωπον μεταστρέφειν καὶ τὸ τοῦ αὐχένος ἥμισυ πρὸς τὴν τομήν, ἵνα θεώμενος τὴν αὐτοῦ τμῆσιν κοσμιώτερος εἴη ὁ ἄνθρωπος, καὶ τἄλλα ἰᾶσθαι ἐκέλευεν. ὁ δὲ τό τε πρόσωπον μετέστρεφε, καὶ ξυνέλκων πανταχόθεν τὸ δέρμα ἐπὶ τὴν γαστέρα νῦν καλουμένην, ὥσπερ τὰ σύσπαστα βαλάντια, ἓν στόμα ποιῶν, ἀπέδει κατὰ μέσην τὴν γαστέρα, ὃ δὴ τὸν ὀμφαλὸν καλοῦσι. καὶ τὰς μὲν ἄλλας ῥυτίδας πολλὰς ἐξελέαινε καὶ τὰ στήθη διήρθρου, ἔχων τι τοιοῦτον ὄργανον οἷον οἱ σκυτοτόμοι περὶ

τὸν καλάποδα λεαίνοντες τὰς τῶν σκυτῶν ῥυτίδας· ὀλίγας δὲ κατέλιπε τὰς περὶ αὐτὴν τὴν γαστέρα καὶ τὸν ὀμφαλόν, μνημεῖον εἶναι τοῦ παλαιοῦ πάθους. ἐπεὶ οὖν ἡ φύσις δίχα ἐτμήθη, ποθοῦν ἕκαστον τὸ ἥμισυ τὸ αὑτοῦ ξυνῄει, καὶ περιβάλλοντες τὰς χεῖρας καὶ συμπλεκόμενοι ἀλλήλοις, ἐπιθυμοῦντες ξυμφῦναι, ἀπέθνησκον ὑπὸ τοῦ λιμοῦ καὶ τῆς ἄλλης ἀργίας, διὰ τὸ μηδὲν ἐθέλειν χωρὶς ἀλλήλων ποιεῖν. καὶ ὁπότε τι ἀποθάνοι τῶν ἡμίσεων, τὸ δὲ λειφθείη, τὸ λειφθὲν ἄλλο ἐζήτει καὶ ξυνεπέπλεκτο, εἴτε γυναικὸς τῆς ὅλης ἐντύχοι ἡμίσει, ὃ δὴ νῦν γυναῖκα καλοῦμεν, εἴτε ἀνδρός· καὶ οὕτως ἀπώλλυντο. ἐλεήσας δὲ ὁ Ζεὺς ἄλλην μηχανὴν πορίζεται καὶ μετατίθησιν αὐτῶν τὰ αἰδοῖα εἰς τὸ πρόσθεν· τέως γὰρ καὶ ταῦτα ἐκτὸς εἶχον, καὶ ἐγέννων καὶ ἔτικτον οὐκ εἰς ἀλλήλους ἀλλ' εἰς γῆν, ὥσπερ οἱ τέττιγες. μετέθηκέ τε οὖν οὕτως αὐτῶν εἰς τὸ ἔμπροσθεν, καὶ διὰ τοῦτο τὴν γένεσιν νέαν ἀλλήλοις ἐποίησε, διὰ τοῦ ἄρρενος ἐν τῷ θήλει, τῶνδε ἕνεκα, ἵνα ἐν τῇ συμπλοκῇ ἅμα μὲν εἰ ἀνὴρ γυναικὶ ἐντύχοι, γεννῷεν, καὶ γίγνοιτο τὸ γένος· ἅμα δ' εἰ καὶ ἄρρεν ἄρρενι, πλησμονὴ γοῦν γίγνοιτο τῆς συνουσίας καὶ διαπαύοιντο καὶ ἐπὶ τὰ ἔργα τρέποιντο καὶ τοῦ ἄλλου βίου ἐπιμελοῖντο. ἔστι δὴ οὖν ἐκ τόσου ὁ ἔρως ἔμφυτος ἀλλήλων τοῖς ἀνθρώποις καὶ τῆς ἀρχαίας φύσεως συναγωγὸς καὶ ἐπιχειρῶν ποιῆσαι ἓν ἐκ δυοῖν καὶ ἰάσασθαι τὴν φύσιν τὴν ἀνθρωπίνην. ἕκαστος οὖν ἡμῶν ἐστὶν ἀνθρώπου σύμβολον, ἅτε τετμημένος, ὥσπερ αἱ ψῆτται ἐξ ἑνὸς δύο. ζητεῖ δὴ ἀεὶ τὸ αὑτοῦ ἕκαστον σύμβολον. ὅσοι μὲν οὖν τῶν ἀνδρῶν τοῦ κοινοῦ τμήματός εἰσιν, ὃ δὴ τότε ἀνδρόγυνον ἐκαλεῖτο, φιλογύναικές τέ εἰσι, καὶ οἱ πολλοὶ τῶν μοιχῶν ἐκ τούτου τοῦ γένους γε-

γόνασι· καὶ ὅσαι αὖ γυναῖκες φίλανδροί τε καὶ μοιχεύτριαι, ἐκ τούτου τοῦ γένους γίγνονται. ὅσαι δὲ τῶν γυναικῶν γυναικὸς τμῆμά εἰσιν, οὐ πάνυ αὗται τοῖς ἀνδράσι τὸν νοῦν προσέχουσιν, ἀλλὰ μᾶλλον πρὸς τὰς γυναῖκας τετραμμέναι εἰσί, καὶ ἑταιρίστριαι ἐκ τούτου τοῦ γένους γίγνονται. ὅσοι δ' ἄρρενος τμῆμά εἰσι, τὰ ἄρρενα διώκουσι· καὶ τέως μὲν ἂν παῖδες ὦσιν, ἅτε [τεμάχια] ὄντα τοῦ ἄρρενος, φιλοῦσι τοὺς ἄνδρας καὶ χαίρουσι ξυγκατακείμενοι καὶ ξυμπλεκόμενοι τοῖς ἀνδράσι· καὶ εἰσὶν οὗτοι βέλτιστοι τῶν παίδων καὶ μειρακίων, ἅτε ἀνδρειότατοι ὄντες φύσει. φασὶ δὲ δή τινες αὐτοὺς ἀναισχύντους εἶναι, ψευδόμενοι· οὔτε γὰρ ὑπ' ἀναισχυντίας δρῶσι τοῦτο, ἀλλ' ὑπὸ θάρρους καὶ ἀνδρείας καὶ ἀρρενωπίας τὸ ὅμοιον αὐτοῖς ἀσπαζόμενοι. μέγα δὲ τεκμήριον· καὶ γὰρ τελεωθέντες μόνοι ἀποβαίνουσιν εἰς τὰ πολιτικὰ ἄνδρες οἱ τοιοῦτοι· ἐπειδὰν δὲ ἀνδρωθῶσι, παιδεραστοῦσι καὶ πρὸς γάμους καὶ παιδοποιίας οὐ προσέχουσι τὸν νοῦν φύσει, ἀλλ' ὑπὸ τοῦ νόμου ἀναγκάζονται· ἀλλ' ἐξαρκεῖ αὐτοῖς μετ' ἀλλήλων καταζῆν ἀγάμοις οὖσι. πάντως μὲν οὖν ὁ τοιοῦτος παιδεραστής τε καὶ φιλεραστὴς γίγνεται, ἀεὶ τὸ ξυγγενὲς ἀσπαζόμενος. ὅταν μὲν οὖν αὐτῷ ἐκείνῳ ἐντύχῃ τῷ αὐτοῦ ἡμίσει καὶ ὁ παιδεραστὴς καὶ ἄλλος πᾶς, τότε καὶ θαυμαστὰ ἐκπλήττονται, φιλίᾳ τε καὶ οἰκειότητι καὶ ἔρωτι οὐκ ἐθέλοντες ὡς ἔπος εἰπεῖν χωρίζεσθαι ἀλλήλων οὐδὲ ἐπὶ σμικρὸν χρόνον· καὶ οἱ διατελοῦντες μετ' ἀλλήλων διὰ βίου, οὗτοί εἰσιν οἳ οὐδ' ἂν ἔχοιεν εἰπεῖν ὅ τι βούλονται σφίσι παρ' ἀλλήλων γίγνεσθαι· οὐδενὶ γὰρ ἂν δόξειε τοῦτ' εἶναι ἡ τῶν ἀφροδισίων ξυνουσία, ὡς ἄρα τούτου ἕνεκα ἕτερος ἑκατέρῳ χαίρει

συνὼν οὕτως ἐπὶ μεγάλης σπουδῆς· ἀλλ' ἄλλο τι βουλομένη ἡ ψυχὴ ἑκατέρου δήλη ἐστὶν ὃ οὐ δύναται εἰπεῖν, ἀλλὰ μαντεύεται ὃ βούλεται, καὶ αἰνίττεται.

36 Ἐν ταυτῷ (195).

Φημὶ οὖν ἐγὼ πάντων θεῶν εὐδαιμόνων ὄντων Ἔρωτα, εἰ θέμις καὶ ἀνεμέσητον εἰπεῖν, εὐδαιμονέστατον εἶναι αὐτῶν, κάλλιστον ὄντα καὶ ἄριστον. ἔστι δὲ κάλλιστος ὢν τοιόσδε. πρῶτον μὲν νεώτατος θεῶν, ὦ Φαῖδρε· μέγα δὲ τεκμήριον τῷ λόγῳ αὐτὸς παρέχεται, φεύγων φυγῇ τὸ γῆρας ταχὺ ὂν δῆλον ὅτι, θᾶττον γοῦν τοῦ δέοντος ἡμῖν προσέρχεται· ὃ δὴ πέφυκεν Ἔρως μισεῖν καὶ οὐδ' ἐντὸς πολλοῦ πλησιάζειν. μετὰ δὲ νέων ἀεὶ ξύνεστί τε καὶ ἔστιν· ὁ γὰρ παλαιὸς λόγος εὖ ἔχει, ὡς ὅμοιον ὁμοίῳ δεῖ πελάζειν. ἐγὼ δὲ Φαίδρῳ πολλὰ ἄλλα ὁμολογῶν τοῦτο οὐχ ὁμολογῶ, ὡς Ἔρως Κρόνου καὶ Ἰαπετοῦ ἀρχαιότερός ἐστιν· ἀλλὰ φημὶ νεώτατόν τε αὐτὸν εἶναι θεῶν καὶ ἀεὶ νέον· τὰ δὲ παλαιὰ πράγματα περὶ θεούς, ἃ Ἡσίοδος καὶ Παρμενίδης λέγουσιν, ἀνάγκῃ καὶ οὐκ Ἔρωτι γεγονέναι, [εἰ ἐκεῖνοι] ἀληθῆ λέγουσι. οὐ γὰρ ἂν ἐκτομαὶ οὐδὲ δεσμοὶ ἀλλήλων ἐγένοντο καὶ ἄλλα πολλὰ καὶ βίαια, εἰ Ἔρως ἐν αὐτοῖς ἦν, ἀλλὰ φιλία καὶ εἰρήνη, ὥσπερ νῦν, ἐξ οὗ Ἔρως τῶν θεῶν βασιλεύει. νέος μὲν οὖν ἐστι, πρὸς δὲ τῷ νέῳ ἁπαλός. ποιητοῦ δέ ἐστιν ἐνδεής, οἷός περ ἦν ὁ Ὅμηρος, πρὸς τὸ ἐπιδεῖξαι θεοῦ ἁπαλότητα. Ὅμηρος γὰρ Ἄτην θεόν τε φησὶν εἶναι καὶ ἁπαλήν· τοὺς γοῦν πόδας αὐτῆς ἁπαλούς φησιν εἶναι λέγων·

τῆς μέν θ' ἁπαλοὶ πόδες· οὐ γὰρ ἐπ' οὔδεος
πίλναται, ἀλλ' ἄρα ἥγε κατ' ἀνδρῶν κράατα βαίνει.

καλῷ οὖν μοι δοκεῖ τεκμηρίῳ τὴν ἁπαλότητα ἀπο-

φαίνειν, ὅτι οὐκ ἐπὶ σκληροῦ βαίνει ἀλλ' ἐπὶ μαλθακοῦ. τῷ αὐτῷ δὴ καὶ ἡμεῖς χρησόμεθα τεκμηρίῳ περὶ Ἔρωτος ὅτι ἁπαλός· οὐ γὰρ ἐπὶ γῆς βαίνει οὐδ' ἐπὶ κρανίων ἅ ἐστιν οὐ πάνυ μαλακά, ἀλλ' ἐν τοῖς μαλακωτάτοις τῶν ὄντων βαίνει καὶ οἰκεῖ. ἐν γὰρ ἤθεσι καὶ ψυχαῖς θεῶν καὶ ἀνθρώπων τὴν οἴκησιν ἵδρυται· καὶ οὐκ αὖ ἐν πάσαις ἑξῆς ταῖς ψυχαῖς, ἀλλὰ ἥτινι ἂν σκληρὸν ἦθος ἐχούσῃ ἐντύχῃ ἀπέρχεται, ᾗ δ' ἂν μαλακὸν οἰκίζεται. ἁπτόμενον οὖν ἀεὶ καὶ ποσὶ καὶ πάντῃ ἐν μαλακωτάτοις τῶν μαλακωτάτων [ἁπαλώτατον] ἀνάγκη εἶναι. νεώτατος μὲν δή ἐστι καὶ ἁπαλώτατος· πρὸς δὲ τούτοις ὑγρὸς τὸ εἶδος. οὐ γὰρ ἂν οἷός τε ἦν πάντῃ περιπτύσσεσθαι οὐδὲ διὰ πάσης τῆς ψυχῆς καὶ εἰσιὼν τὸ πρῶτον λανθάνειν καὶ ἐξιών, εἰ σκληρὸς ἦν. συμμέτρου δὲ καὶ ὑγρᾶς οὐσίας μέγα τεκμήριον ἡ εὐσχημοσύνη, ὃ δὴ [καὶ] διαφερόντως ἐκ πάντων ὁμολογουμένως Ἔρως ἔχει· ἀσχημοσύνῃ γὰρ καὶ Ἔρωτι πρὸς ἀλλήλους ἀεὶ πόλεμος. χρόας δὲ κάλλος ἡ κατ' ἄνθη δίαιτα τοῦ θεοῦ σημαίνει· ἀνανθεῖ γὰρ καὶ ἀπηνθηκότι καὶ σώματι καὶ ψυχῇ καὶ ἄλλῳ ὁτῳοῦν οὐκ ἐνίζει Ἔρως, οὗ δ' ἂν εὐώδης τε καὶ εὐανθὴς τόπος ᾖ, ἐνταῦθα δὲ καὶ ἵζει καὶ μένει.

περὶ μὲν οὖν κάλλους τοῦ θεοῦ καὶ ταῦτα ἱκανὰ καὶ ἔτι πολλὰ λείπεται· περὶ δὲ ἀρετῆς ἔρωτος μετὰ ταῦτα λεκτέον. τὸ μὲν μέγιστον, ὅτι Ἔρως οὔτε ἀδικεῖ οὔτε ἀδικεῖται οὔτε ὑπὸ θεοῦ οὔτε θεῶν οὔτε ὑπ' ἀνθρώπου οὔτε ἀνθρώπων· οὐδὲ γὰρ αὐτὸς βίᾳ πάσχει εἴ τι πάσχει, βία γὰρ Ἔρωτος οὐχ ἅπτεται, οὔτε [βίᾳ] ποιῶν ποιεῖ· πᾶς γὰρ ἑκὼν Ἔρωτι πάνθ' ὑπηρετεῖ· ἃ δ' ἂν [τις] ἑκὼν ἑκοντὶ ὁμολογήσῃ, φασὶν οἱ τῶν πόλεων βασιλεῖς νόμοι δίκαια εἶναι. πρὸς δὲ τῇ δικαιοσύνῃ σωφροσύνης πλείστης μετέχει· εἶναι

γὰρ ὁμολογεῖται σωφροσύνη τὸ κρατεῖν ἡδονῶν καὶ ἐπιθυμιῶν· ἔρωτος δὲ μηδεμίαν ἡδονὴν κρείττω εἶναι. εἰ δὲ ἥττους κρατοῖντ' ἂν ὑπὸ [τοῦ] Ἔρωτος, ὃ δὲ κρατεῖ, κρατῶν δὲ ἡδονῶν καὶ ἐπιθυμιῶν ὁ Ἔρως διαφερόντως ἂν σωφρονοίη. καὶ μὴν εἴς γε ἀνδρίαν Ἔρωτι οὐδὲ Ἄρης ἀνθίσταται· οὐ γὰρ ἔχει Ἔρωτα Ἄρης, ἀλλὰ Ἔρως Ἄρην Ἀφροδίτης, ὡς λόγος· κρείττων δὲ ὁ ἔχων τοῦ ἐχομένου· τοῦ δὲ ἀνδρειοτάτου τῶν ἄλλων κρατῶν πάντων ἂν ἀνδρειότατος εἴη.

περὶ μὲν οὖν δικαιοσύνης καὶ σωφροσύνης καὶ ἀνδρίας τοῦ θεοῦ εἴρηται· περὶ δὲ σοφίας λείπεται. ὅσον οὖν δυνατὸν πειρατέον μὴ ἐλλείπειν· καὶ πρῶτον μέν, ἵν' αὖ καὶ ἐγὼ τὴν ἡμετέραν τέχνην τιμήσω ὥσπερ Ἐρυξίμαχος τὴν αὑτοῦ, ποιητὴς ὁ θεὸς σοφὸς οὕτως ὥστε καὶ ἄλλον ποιῆσαι. πᾶς γοῦν ποιητὴς γίγνεται "κἂν ἄμουσος ᾖ τὸ πρίν," οὗ ἂν Ἔρως ἅψηται. ᾧ δὴ πρέπει ἡμᾶς μαρτυρίῳ χρήσασθαι, ὅτι ποιητὴς ὁ Ἔρως ἀγαθὸς ἐν κεφαλαίῳ πᾶσαν ποίησιν τὴν κατὰ μουσικήν. ἃ γάρ τις ἢ μὴ ἔχει ἢ μὴ οἶδεν, οὔτ' ἂν ἑτέρῳ δοίη οὔτε ἂν ἄλλον διδάξειε. καὶ μὴν τήν γε τῶν ζῴων ποίησιν πάντων τίς ἐναντιώσεται μὴ οὐχὶ Ἔρωτος εἶναι σοφίαν, ᾗ γίγνεται καὶ φύεται πάντα ζῷα; ἀλλὰ τὴν τῶν τεχνῶν δημιουργίαν οὐκ ἴσμεν, ὅτι οὗ μὲν ἂν ὁ θεὸς οὗτος διδάσκαλος γένηται, ἐλλόγιμος καὶ φανὸς ἀπέβη, οὗ δ' ἂν Ἔρως μὴ ἐφάψηται, σκοτεινός; τοξικήν γε μὴν καὶ ἰατρικὴν καὶ μαντικὴν Ἀπόλλων ἀνεῦρεν, ἐπιθυμίας καὶ ἔρωτος ἡγεμονεύσαντος· ὥστε καὶ οὗτος Ἔρωτος ἂν εἴη μαθητὴς καὶ Μοῦσαι μουσικῆς καὶ Ἥφαιστος χαλκείας καὶ Ἀθηνᾶ ἱστουργίας καὶ Ζεὺς κυβερνᾶν θεῶν τε καὶ ἀνθρώπων· ὅθεν δὴ καὶ κατεσκευάσθη τῶν θεῶν τὰ

πράγματα, Ἔρωτος ἐγγιγνομένου δῆλον ὅτι κάλλους· αἴσχει γὰρ οὐκ ἔπεστιν Ἔρως. πρὸ τοῦ δέ, ὥσπερ ἐν ἀρχῇ εἶπον, πολλὰ καὶ δεινὰ θεοῖς ἐγίγνετο, ὡς λέγεται, διὰ τὴν τῆς ἀνάγκης βασιλείαν· ἐπειδὴ δ' ὁ θεὸς οὗτος ἔφυ ἐκ τοῦ ἐρᾶν τῶν καλῶν, πάντ' ἀγαθὰ γέγονε καὶ θεοῖς καὶ ἀνθρώποις. οὕτως ἐμοὶ δοκεῖ, ὦ Φαῖδρε, Ἔρως πρῶτον αὐτὸς ὢν κάλλιστος καὶ ἄριστος, μετὰ τοῦτο τοῖς ἄλλοις ἄλλων τοιούτων αἴτιος εἶναι. ἐπέρχεται δέ μοί τι καὶ ἔμμετρον εἰπεῖν, ὅτι οὗτός ἐστιν ὁ ποιῶν

εἰρήνην μὲν ἐν ἀνθρώποις, πελάγει δὲ γαλήνην,
νηνεμίαν τ' ἀνέμων, κοίτην θ' ὕπνον τ' ἐνὶ κήδει.

οὗτος γὰρ ἡμᾶς ἀλλοτριότητος μὲν κενοῖ, οἰκειότητος δὲ πληροῖ· τὰς τοιάσδε ξυνόδους μετ' ἀλλήλων πάσας τιθεὶς ξυνιέναι, ἐν ἑορταῖς ἐν χοροῖς ἐν εὐθυμίαις γιγνόμενος ἡγεμών, πραότητα μὲν πορίζων, ἀγριότητα δὲ ἐξορίζων, φιλόδωρος εὐμενείας, ἄδωρος δυσμενείας· ἵλεως ἀγαθοῖς, θεατὸς σοφοῖς, ἀγαστὸς θεοῖς, ζηλωτὸς ἀμοίροις, κτητὸς εὐμοίροις· τρυφῆς ἁβρότητος χλιδῆς χαρίτων ἱμέρου πόθου πατήρ· ἐπιμελὴς ἀγαθῶν ἀμελὴς κακῶν· ἐν πόνῳ ἐν φόβῳ ἐν πόθῳ ἐν λόγῳ κυβερνήτης ἐπιβάτης παραστάτης τε καὶ σωτὴρ ἄριστος· ξυμπάντων τε θεῶν καὶ ἀνθρώπων κόσμος, ἡγεμὼν κάλλιστος καὶ ἄριστος, ᾧ χρὴ ἕπεσθαι πάντ' ἄνδρα ἐφυμνοῦντα [καλῶς] καλῆς ᾠδῆς μετέχοντα, ἣν ᾄδει θέλγων πάντων θεῶν τε καὶ ἀνθρώπων νόημα.

ΨΟΓΟΣ ΑΦΡΟΔΙΤΗΣ· ΚΑΙ ΟΤΙ ΦΑΥΛΟΝ Ο ΕΡΩΣ ΚΑΙ ΠΟΣΩΝ ΕΙΗ ΚΑΚΩΝ ΓΕΓΟΝΩΣ ΑΙΤΙΟΣ. ΞΔ.

1 Διογένους.

Ὅταν δ' ἔρωτος ἐνδεθῶμεν ἄρκυσι,

θᾶσσον θυραίοις τὴν χάριν ποιούμεθα
ἢ τοῖσιν ἄγχιστ' ἐν γένει πεφυκόσι.

2 Μενάνδρου Ἀφροδισίων.
Ἀλλ' ὅταν ἐρῶντα νοῦν ἔχειν τις ἀξιοῖ,
παρὰ τίνι τἀνόητον οὗτος ὄψεται;

3 Μενάνδρου.
Μόνος ἔστ' ἀπαρηγόρητον ἀνθρώποις ἔρως.

4 Εὐριπίδου Ἀντιγόνη.
Ἤρων· τὸ μαίνεσθαι δ' ἄρ' ἦν ἔρως βροτοῖς.

5 Εὐριπίδου Δανάη.
Ἔρως γὰρ ἀργὸν κἀπὶ τοῖς ἀργοῖς ἔφυ.
φιλεῖ κάτοπτρα καὶ κόμης ξανθίσματα,
φεύγει δὲ μόχθους· ἓν δέ μοι τεκμήριον,
οὐδεὶς προσαιτῶν βίοτον ἠράσθη βροτῶν,
ἐν τοῖς δ' ἔχουσιν ἡβητὴς πέφυχ' ὅδε.

6 Εὐριπίδου.
Σὺ δ', ὦ κάκιστε θεῶν τε κἀνθρώπων ἔρως,
ἢ μὴ δίδασκε τὰ καλὰ φαίνεσθαι καλά,
ἢ τοῖς ἐρῶσιν εὐμενὴς παρίστασο.

7 Εὐριπίδου Ἀνδρομέδας.
Ἔρωτα δεινὸν ἔχομεν· ἐκ δὲ τῶν λόγων
ἑλοῦ τὰ βέλτισθ', ὥστ' ἄπιστον ἔστ' ἔρως,
κἂν τῷ κακίστῳ τῶν φρενῶν ἄρχειν φιλεῖ.

8 Εὐριπίδου Δίκτυϊ.
Κύπρις γὰρ οὔτε νουθετουμένη χαλᾷ,
ἄν τ' αὖ βιάζῃ, μᾶλλον ἐντείνειν φιλεῖ,
κἄπειτα τίκτει πόλεμον· εἰς δ' ἀνάστασιν
δόμων περαίνει πολλάκις τὰ τοιάδε.

9 *Θεοκρίτου* (I, 100).

Τὰν δ' ἄρα χὠ Δάφνις ποταμείβετο "Κύπρι βαρεῖα,
Κύπρι νεμεσσατά, Κύπρι θνατοῖσιν ἀπεχθής."

10 *Εὐριπίδου ἐκ Μελεάγρου.*

Ἡ γὰρ Κύπρις πέφυκε τῷ σκότῳ φίλη·
τὸ φῶς δ' ἀνάγκην προστίθησι σωφρονεῖν.

11 *Ἀρχιλόχου.*

Τοῖος γὰρ φιλότητος ἔρως ὑπὸ καρδίην ἐλυσθεὶς
πολλὴν κατ' ἀχλὺν ὀμμάτων ἔχευε,
κλέψας ἐκ στηθέων ἁπαλὰς φρένας.

12 *Ἀρχιλόχου.*

Δύστηνος ἔγκειμαι πόθῳ
ἄψυχος, χαλεπῇσι θεῶν ὀδύνῃσιν ἕκητι
πεπαρμένος δι' ὀστέων.

13 *Σοφοκλέους ἐν Ἀχιλλέως ἐρασταῖς.*

Τὸ γὰρ νόσημα τοῦτ' ἐφίμερον κακόν·
ἔχοιν δ' ἂν αὐτὸ μὴ κακῶς ἀπεικάσαι,
ὅταν πάγου φανέντος αἰθρίου χεροῖν
κρύσταλλον ἁρπάσωσι παῖδες ἀσταγῆ,
τὰ πρῶτ' ἔχουσιν ἡδονὰς ποταινίους,
τέλος δ' ὁ χυμὸς οὔθ' ὅπως ἀφῇ θέλει,
οὔτ' ἐν χεροῖν τὸ κτῆμα σύμφορον μένειν·
οὕτω δὲ τοὺς ἐρῶντας αὐτὸς ἵμερος
δρᾶν καί τι μὴ δρᾶν πολλάκις προσίεται.

14 *Φανοκλέους.*

Ἢ ὡς Οἰάγροιο πάις Θρηίκιος Ὀρφεὺς
ἐκ θυμοῦ Κάλαϊν στέρξε Βορηιάδην,
πολλάκι δὲ σκιεροῖσιν ἐν ἄλσεσιν ἕζετ' ἀείδων
ὃν πόθον, οὐδ' ἦν οἱ θυμὸς ἐν ἡσυχίῃ,
ἀλλ' αἰεί μιν ἄγρυπνοι ὑπὸ ψυχῇ μελεδῶναι

ἔτρυχον, θαλερὸν δερκομένου Κάλαϊν.
τὸν μὲν Βιστονίδες κακομήχανοι ἀμφιχυθεῖσαι
ἔκτανον, εὐήκη φάσγανα θηξάμεναι,
οὕνεκα πρῶτος δεῖξεν ἐνὶ Θρήκεσσιν ἔρωτας
ἄρρενας, οὐδὲ πόθους ᾔνεσε θηλυτέρων.
τοῦ δ' ἀπὸ μὲν κεφαλὴν χαλκῷ τάμον, αὐτίκα δ' αὐτὴν
εἰς ἅλα Θρηικίην ῥῖψαν ὁμοῦ χέλυϊ
ἥλῳ καρτύνασαι, ἵν' ἐμφορέοιντο θαλάσσῃ
ἄμφω ἅμα, γλαυκοῖς τεγγόμεναι ῥοθίοις.
τὰς δ' ἱερῇ Λέσβῳ πολιὴ ἐπέκελσε θάλασσα·
ἠχὴ δ' ὣς λιγυρῆς πόντον ἐπέσχε λύρης,
νήσους τ' αἰγιαλούς θ' ἁλιμυρέας, ἔνθα λίγειαν
ἀνέρες Ὀρφείην ἐκτέρισαν κεφαλήν.
ἐν δὲ χέλυν τύμβῳ λιγυρὴν θέσαν, ἣ καὶ ἀναύδους
πέτρας καὶ Φόρκου στυγνὸν ἔπειθεν ὕδωρ.
ἐκ κείνου μολπαί τε καὶ ἱμερτὴ κιθαριστὺς
νῆσον ἔχει, πασέων δ' ἐστὶν ἀοιδοτάτη.
Θρῆκες δ' ὡς ἐδάησαν ἀρήιοι ἔργα γυναικῶν
ἄγρια, καὶ πάντας δεινὸν ἐσῆλθεν ἄχος,
ἃς ἀλόχους ἔστιζον, ἵν' ἐν χροῒ σήματ' ἔχουσαι
κυάνεα στυγεροῦ μὴ λελάθοιντο φόνου.
ποινὰς δ' Ὀρφῆι κταμένῳ στίζουσι γυναῖκας
εἰς ἔτι νῦν κείνης εἵνεκεν ἀμπλακίης.

15 *Μενάνδρου Ἀνδρίᾳ.*

Τὸ δ' ἐρᾶν ἐπισκοτεῖ
ἅπασιν, ὡς ἔοικε, καὶ τοῖς εὖ λόγων
καὶ τοῖς κακῶς ἔχουσιν.

16 *Κλεινίου.*

Μή τις ἀτιμάτω θνητῶν πολύδακρυν ἔρωτα,
μηδὲ πόθον παίδων μηδ' ἱμερτὴν φιλότητα,
τῶν ἰότητι Μύρων κατέβη πολύκλαυτον ἐς ᾅδην.

17 Μενάνδρου Ἀνεψιοί.

Φύσει γὰρ ἔστ' ἔρως
τοῦ νουθετοῦντος κωφόν, ἅμα δ' οὐ ῥάδιον
νεότητα νικᾶν ἐστὶ καὶ θεὸν λόγῳ.

18 Τοῦ αὐτοῦ Θησαυρῷ.

Ὅταν δ' ἐρῶντος τόλμαν ἀφέλῃς, οἴχεται,
εἰς τοὺς ἰαλέμους τε τοῦτον ἔγγραφε.

19 Ἐκ τῶν Μόσχου Σικελιώτου βουκολικῶν.

Ἀλφειὸς μετὰ Πῖσαν ἐπὴν κατὰ πόντον ὁδεύῃ,
ἔρχεται εἰς Ἀρέθοισαν ἄγων κοτινηφόρον ὕδωρ,
ἕδνα φέρων καλὰ φύλλα καὶ ἄνθεα καὶ κόνιν ἱράν·
καὶ βαθὺς ἐμβαίνει τοῖς κύμασι, τὰν δὲ θάλασσαν
νέρθεν ὑποτροχάει, κοὐ μίγνυται ὕδασιν ὕδωρ.
ἁ δ' οὐκ οἶδε θάλασσα διερχομένω ποταμοῖο.
κῶρος δεινοθέτας, κακομάχανος, αἰνὰ διδάσκων,
καὶ ποταμὸν διὰ φίλτρον Ἔρως ἐδίδαξε κολυμβῆν.

20 Τοῦ αὐτοῦ.

Χρῶτα μὲν οὐ λευκός, πυρὶ δ' εἴκελος· ὄμματα δ' αὐτῷ
δριμύλα καὶ φλογόεντα, κακαὶ φρένες, ἁδὺ λάλημα·
οὐ γὰρ ἴσον νοέει καὶ φθέγγεται· ὡς μέλι φωνά,
ἓν δὲ χολά· ὅλος ἐστὶν ἀνάμερος, ἠπεροπευτάς.
καὶ πτερόεις ὡς ὄρνις ἐφίπταται ἄλλοτ' ἐπ' ἄλλως
ἀνέρας ἠδὲ γυναῖκας, ἐπὶ σπλάγχνοις δὲ κάθηται.

21 Ἐκ τῶν Βίωνος Σμυρναίου βουκολικῶν.

Ἰξευτὰς ἔτι κῶρος ἐν ἄλσεϊ δενδράεντι
ὄρνεα θηρεύων τὸν ὑπόπτερον εἶδεν Ἔρωτα
ἑσδόμενον πύξοιο ποτὶ κλάδον· ὡς δ' ἐνόησεν,

χαίρων, ὥνεκα δὴ μέγα φαίνετο τὤρνεον αὐτῷ,
τὼς καλάμως ἅμα πάντας ἐπ' ἀλλάλοισι συνάπτων
τᾷ καὶ τᾷ τὸν Ἔρωτα μετάλμενον ἀμφεδόκευεν.
χὠ παῖς ἀσχαλάων, ὅκα οἱ τέλος οὐδὲν ἀπάντη,
τὼς καλάμως ῥίψας ποτ' ἀροτρέα πρέσβυν ἵκανεν,
ὅς νιν τάνδε τέχναν ἐδιδάξατο, καὶ λέγεν αὐτῷ,
καί οἱ δεῖξεν Ἔρωτα καθήμενον· αὐτὰρ ὁ πρέσβυς
μειδιάων κίνησε κάρη καὶ ἀμείβετο παῖδα·
"φείδεο τᾶς θήρας, μηδ' ἐς τόδε τὤρνεον ἔρχευ.
φεῦγε μακράν· κακόν ἐντι τὸ θηρίον· ὄλβιος ἐσσῇ,
εἰσόκα μή νιν ἕλῃς· ἢν δ' ἀνέρος ἐς μέτρον ἔλθῃς,
οὗτος ὁ νῦν φεύγων καὶ ἀπάλμενος αὐτὸς ἀφ' αὐτῶ
ἐλθὼν ἐξαπίνας κεφαλὰν ἐπὶ σεῖο καθιξεῖ."

22 Τοῦ αὐτοῦ.

Ἄμερε Κυπρογένεια, Διὸς τέκος οὐδὲ θαλάσσας,
τίπτε τόσον θνατοῖσι καὶ ἀθανάτοισι χαλέπτεις;
τυτθὸν ἔφαν, τί νυ τόσσον ἀπήχθεο καὶ τεῖν αὐτᾷ,
ταλίκον ὡς πάντεσσι κακὸν τὸν Ἔρωτα τεκέσθαι,
ἄγριον, ἄστοργον, μορφᾷ νόον οὐδὲν ὅμοιον;
προὶ δ' ἔτι νιν πτανὸν καὶ ἑκαβόλον ὤπασας ἦμεν,
ὡς μὴ πικρὸν ἐόντα δυναίμεθα τῆνον ἀλύξαι.

23 Θεοκρίτου (Id. III, 16).

Νῦν ἔγνων τὸν Ἔρωτα· βαρὺς θεός· ἦ ῥα λεαίνης
μαστὸν ἐθήλαξεν, δρυμῷ τέ νιν ἔτραφε μάτηρ,
ὅς με κατασμύχων καὶ ἐς ὀστέον ἄχρις ἰάπτει.

23a Εὐριπίδου Μηδείας (330).

Φεῦ φεῦ· βροτοῖς ἔρωτες ὡς κακὸν μέγα.

24 Εὐριπίδου Ῥαδάμανθυς.

Ἔρωτες ἡμῖν εἰσι παντοῖοι βίου.
ὁ μὲν γὰρ εὐγένειαν ἱμείρει λαβεῖν·

τῷ δ' οὐχὶ τούτου φροντίς, ἀλλὰ χρημάτων
πολλῶν κεκλῆσθαι βούλεται πάτωρ δόμοις·
ἄλλῳ δ' ἀρέσκει μηδὲν ὑγιὲς ἐκ φρενῶν
λέγοντι πείθειν τοὺς πέλας τόλμῃ κακῇ·
οἳ δ' αἰσχρὰ κέρδη πρόσθε τοῦ καλοῦ βροτῶν
ζητοῦσιν. οὕτω βίοτος ἀνθρώπων πλάνη.

25 *Ξενοφῶντος ἐν τῷ α (3, 11) ἀπομνημονευμάτων.*

Ὦ τλῆμον, ἔφη ὁ Σωκράτης, καὶ τί ἂν οἴει παθεῖν καλὸν φιλήσας; ἆρα οὐκ ἂν αὐτίκα μάλα δοῦλος μὲν εἶναι ἀντ' ἐλευθέρου; πολλὰ δὲ δαπανᾶν εἰς βλαβερὰς ἡδονάς; πολλὴν δ' ἀσχολίαν ἔχειν τοῦ ἐπιμεληθῆναί τινος καλοῦ κἀγαθοῦ; σπουδάζειν δ' ἀναγκασθῆναι ἐφ' οἷς οὐδ' ἂν μαινόμενος σπουδάσειεν; Ἡράκλεις, ἔφη ὁ Ξενοφῶν, ὡς δεινήν τινα λέγεις δύναμιν τοῦ φιλήματος εἶναι. Καὶ τοῦτο, ἔφη ὁ Σωκράτης, θαυμάζεις; οὐκ οἶσθα ὅτι τὰ φαλάγγια οὐδ' ἡμιωβολιαῖα τὸ μέγεθος ὄντα προσαψάμενα μόνον τῷ στόματι ταῖς ὀδύναις ἐπιτρίβει τοὺς ἀνθρώπους καὶ τοῦ φρονεῖν ἐξίστησι; Ναὶ μὰ Δί', ἔφη ὁ Ξενοφῶν· ἐνίησι γάρ τι τὰ φαλάγγια κατὰ τὸ δῆγμα. Ὦ μωρέ, ἔφη ὁ Σωκράτης, τοὺς δὲ καλοὺς οὐκ οἴει φιλοῦντας ἐνιέναι τι ὃ σὺ οὐχ ὁρᾷς; οὐκ οἶσθα ὅτι τοῦτο τὸ θηρίον ὃ καλοῦσι καλὸν καὶ ὡραῖον τοσούτῳ δεινότερόν ἐστι τῶν φαλαγγίων, ὅσῳ ἐκεῖνα μὲν ἁψάμενα, τοῦτο δὲ οὐδ' ἁπτόμενον, ἐὰν δέ τις αὐτὸ θεᾶται, ἐνίησί τι καὶ πάνυ πρόσωθεν τοιοῦτον ὥστε μαίνεσθαι ποιεῖν· ἴσως δὲ καὶ οἱ ἔρωτες τοξόται διὰ τοῦτο καλοῦνται, ὅτι καὶ πόρρωθεν οἱ καλοὶ τιτρώσκουσιν. ἀλλὰ ξυμβουλεύω σοι, ὦ Ξενοφῶν, ὁπόταν ἴδῃς τινὰ καλόν,

φεύγειν προτροπάδην· σοὶ δ', ὦ Κριτόβουλε, συμβουλεύω ἀπενιαυτίσαι· μόγις γὰρ ἂν ἴσως ἐν τοσούτῳ χρόνῳ τὸ δῆγμα ὑγιὲς γένοιτο.

26 *Φαβωρίνου.*

Πάθος τί μοι προσέπεσε τῇ ψυχῇ, καὶ ὅ τι μὲν ἔστιν οὐκ οἶδα· ἔρωτα δ' αὐτὸ λέγουσιν εἶναι οἱ μεμυημένοι. βάσκανε δαῖμον καὶ ἀλόγιστε, ἀσθενεῖ προσελήλυθας σώματι, φέρειν σε μὴ δυναμένῳ· ἐξίσταμαί σοι, δαῖμον, παραχωρῶ σοι τῆς μάχης· οὐκ εἰμί σοι στρατιώτης.

27 *Θεοφράστου.*

Ἔρως δ' ἐστὶν ἀλογίστου τινὸς ἐπιθυμίας ὑπερβολή, ταχεῖαν μὲν ἔχουσα τὴν πρόσοδον, βραδεῖαν δὲ τὴν ἀπόλυσιν.

28 *Προδίκου.*

Ἐπιθυμίαν μὲν διπλασιασθεῖσαν ἔρωτα εἶναι, ἔρωτα δὲ διπλασιασθέντα μανίαν γίγνεσθαι.

29 *Θεοφράστου.*

Θεόφραστος ἐρωτηθεὶς τί ἐστιν ἔρως "πάθος" ἔφη "ψυχῆς σχολαζούσης."

30 *Ἐκ τῶν Πλουτάρχου ὅτι οὐ κρίσις ὁ ἔρως.*

Οἱ μὲν γὰρ νοῦν τὸν ἔρωτα, οἱ δ' ἐπιθυμίαν, οἱ δὲ μανίαν, οἱ δὲ θεῖόν τι κίνημα τῆς ψυχῆς καὶ δαιμόνιον, οἱ δὲ ἄντικρυς θεὸν ἀναγορεύουσιν. ὅθεν ὀρθῶς ἐνίοις ἔδοξε τὸ μὲν ἀρχόμενον ἐπιθυμίαν εἶναι, τὸ δ' ὑπερβάλλον μανίαν, τὸ δὲ ἀντίστροφον φιλίαν, τὸ δὲ ταπεινότερον ἀρρωστίαν, τὸ δ' εὐημεροῦν ἐνθουσιασμόν. διὸ καὶ πυρφόρον αὐτὸν οἵ τε ποιηταὶ λέγουσιν οἵ τε πλάσται καὶ γραφεῖς δημιουργοῦσιν,

ὅτι καὶ τοῦ πυρὸς τὸ μὲν λαμπρὸν ἥδιστόν ἐστι, τὸ δὲ καυστικὸν ἀλγεινότατον.

31 Ἐν ταυτῷ.

Ὥσπερ γὰρ τοὺς φίλους ὑγιαίνοντας μέν, ἂν πλημμελῶσιν, ἐξελέγχειν καὶ νουθετεῖν κράτιστόν ἐστιν, ἐν δὲ ταῖς παρακοπαῖς καὶ τοῖς φρενετισμοῖς εἰώθαμεν μὴ διαμάχεσθαι μηδὲ ἀντιτείνειν, ἀλλὰ συμπεριφέρεσθαι καὶ συνεπινεύειν· οὕτω τοὺς μὲν δι' ὀργὴν ἢ πλεονεξίαν ἁμαρτάνοντας ἀνακόπτειν τῇ παρρησίᾳ δεῖ καὶ κωλύειν, τοῖς δ' ἐρῶσιν ὥσπερ νοσοῦσι συγγνώμην ἔχειν. διὸ κράτιστον μὲν ἐξ ἀρχῆς τοιούτου πάθους σπέρμα μὴ παραδέχεσθαι μηδ' ἀρχήν, ἂν δ' ἐγγένηται, ἴθι ἐπὶ ἀποτροπαίων βωμοὺς θεῶν κατὰ τὸν Πλάτωνα, ἴθι ἐπὶ τὰς τῶν σοφῶν ἀνδρῶν συνουσίας, ἐξέλασον σαυτοῦ τὸ θηρίον πρὶν ὄνυχας φῦσαι καὶ ὀδόντας· εἰ δὲ μή, μαχέσῃ τελείῳ κακῷ τὸ παιδίον τοῦτο νήπιον ἐναγκαλιζόμενος. τίνες δ' εἰσὶν οἱ τοῦ ἔρωτος ὄνυχες καὶ ὀδόντες; ὑποψία, ζηλοτυπία. ἀλλ' ἔχει τι πιθανὸν καὶ ἀνθηρόν· ἀμέλει καὶ ἡ σφὶγξ εἶχεν ἐπαγωγὸν τὸ ποίκιλμα τοῦ πτεροῦ καὶ

εἰ μὲν πρὸς αὐγὰς ἡλίου, χρυσωπὸν ἦν
νώτισμα θηρός, εἰ δὲ πρὸς νέφη βάλοι,
κυανωπὸν ὥς τις ἶρις ἀντηύγει σέλας.

οὕτω δὴ καὶ ὁ ἔρως ἔχει τι χάριεν καὶ οὐκ ἄμουσον, ἀλλ' αἱμύλον καὶ ἐπιτερπές· ἁρπάζει δὲ καὶ βίους καὶ οἴκους καὶ γάμους καὶ ἡγεμονίας, οὐκ αἰνίγματα προβάλλων, ἀλλ' αὐτὸς αἴνιγμα δυσεύρετον ὢν καὶ δύσλυτον, εἰ βούλοιτό τις προτείνειν τί μισεῖ καὶ φιλεῖ, τί φεύγει καὶ διώκει, τί ἀπειλεῖ καὶ ἱκετεύει, τί ὀργίζεται καὶ ἐλεεῖ, τί βούλεται παύσασθαι καὶ οὐ

βούλεται, τί χαίρει τῷ αὐτῷ μάλιστα καὶ ἀνιᾶται, τοῦτο λῦσαι καὶ θεραπεῦσαι. τῆς μὲν γὰρ σφιγγὸς τὸ αἴνιγμα τὰ πλεῖστα καὶ πεπλασμένα ἔχει· οὔτε γὰρ τρίπους ὁ γέρων ἀληθῶς, εἴ τι προσείληφε τοῖς ποσὶ βοηθεῖν· οὔτε τετράπους ὁ νήπιος, ἐπεὶ ταῖς χερσὶν ὑπερείδει τὴν τῶν βάσεων ὑγρότητα καὶ ἀσθένειαν. τὰ δὲ τῶν ἐρώντων πάθη ἀληθῆ· στέργουσιν ἐχθραίνουσι τὸν αὐτόν, ποθοῦσιν ἀπόντα τρέμουσι παρόντος, κολακεύουσι λοιδοροῦσι, προαποθνήσκουσι φονεύουσιν, εὔχονται μὴ φιλεῖν καὶ παύσασθαι φιλοῦντες οὐ θέλουσι, σωφρονίζουσι καὶ πειρῶσι, παιδεύουσι καὶ διαφθείρουσιν, ἄρχειν θέλουσι καὶ δουλεύειν ὑπομένουσι. τοῦτο αἴτιον γέγονε μάλιστα τοῦ μανίαν ὑποληφθῆναι τὸ πάθος. "ἤρων· τὸ μαίνεσθαι δ' ἄρ' ἦν ἔρως βροτοῖς," ἐρωτικὸς ἀνὴρ Εὐριπίδης φησίν.

32 Τοῦ αὐτοῦ περὶ ἔρωτος.

Ὁ ἔρως οὔτε τὴν γένεσιν ἐξαίφνης λαμβάνει καὶ ἀθρόαν ὡς ὁ θυμός, οὔτε παρέρχεται ταχέως καίπερ εἶναι πτηνὸς λεγόμενος, ἀλλ' ἐξάπτεται μαλακῶς καὶ σχεδὸν οἷον ἐντήκων ἑαυτόν, ἁψάμενός τε τῆς ψυχῆς παραμένει πολὺν χρόνον, οὐδ' ἐν γηρῶσιν ἐνίοις ἀναπαυόμενος, ἀλλ' ἐν πολιαῖς ἀκμάζων ἔτι πρόσφατος καὶ νεαρός. ἂν δὲ καὶ λήξῃ καὶ διαλυθῇ χρόνῳ μαρανθεὶς ἢ λόγῳ τινὶ κατασβεσθείς, οὔπω παντάπασιν ἐξαπήλλακται τῆς ψυχῆς, ἀλλ' ἐναπολείπει πυρίκαυτον ὕλην καὶ σημεῖα θερμὰ καθάπερ οἱ κεραυνοὶ τυφόμενοι. λύπης μὲν γὰρ οὐδὲν ἀπαλλαγείσης ἴχνος ἐν τῇ ψυχῇ παραμένει συνοικοῦν, οὐδ' ὀργῆς τραχείας πεσούσης, στέλλεται δὲ καὶ φλεγμονή, ἐπιθυμίας παρεχούσης τραχὺ κίνημα· τὰ δ' ἐρωτικὰ

δήγματα, κἂν ἀποστῇ τὸ θηρίον, οὐκ ἐξανίησι τὸν ἰόν· ἀλλ' ἐνοιδεῖ τὰ ἐντὸς σπαράγματα, καὶ ἀγνοεῖται τί ἦν, πῶς συνέστη, πόθεν εἰς τὴν ψυχὴν ἐνέπεσεν.

33 Σωστράτου ἐν β' κυνηγετικῶν (Plut. Mor. p. 310 e).

Κυάνιππος τῷ γένει Θεσσαλὸς γήμας Λευκώνην τὰ πολλὰ διὰ φιλοκύνηγον ἐνέργειαν ἐν ὕλαις διέτριβεν. ἡ δὲ νεόνυμφος ὑπολαμβάνουσα συνήθειαν αὐτὸν ἔχειν μεθ' ἑτέρας γυναικὸς κατ' ἴχνος ἠκολούθησε τῷ προειρημένῳ, καὶ ἔν τινι κατακρυβεῖσα συνδένδρῳ τὸ μέλλον ἀπεκαραδόκει. τῶν δὲ πέριξ κλάδων αἰφνιδίως σεισθέντων, οἱ στιβευταὶ κύνες [θηρίον] δόξαντες καὶ αὐτὴν ἀλόγου ζῴου δίκην διεσπάραξαν. τῆς δὲ πράξεως αὐτόπτης γενόμενος Κυάνιππος ἑαυτὸν ἐπικατέσφαξεν.

34 Ἐκ τῶν Θεοδώρου μεταμορφώσεων (Plut. l. l. 310 f).

Σμύρνα Κινύρου θυγάτηρ εἰς ἐπιθυμίαν ἐμπεσοῦσα τοῦ γεννήσαντος τῇ τροφῷ τὴν ἀνάγκην ἐδήλωσεν· ἣ δὲ δόλῳ τὸν δεσπότην ἐνήδρευσεν, εἶπε γὰρ ἐρᾶν τινὰ αὐτοῦ γείτονα παρθένον. ἀσεβῶς οὖν κατ' ἄγνοιαν ἀναστρεφόμενος καὶ γνοὺς ὕστερον ξιφήρης τὴν ἀσελγεστάτην ἐπεδίωκεν· ἣ δὲ περικατάληπτος γενομένη κατὰ πρόνοιαν Ἀφροδίτης εἰς ὁμώνυμον δένδρον μετεμορφώθη.

35 Σωστράτου ἐν δευτέρῳ Τυρρηνικῶν (Plut. l. l. 312 c).

Αἴολος τῶν κατὰ Τυρρηνίαν βασιλεὺς τόπων ἔσχεν ἐξ Ἀμφιθέας θυγατέρας ἓξ καὶ τὸν αὐτὸν ἀριθμὸν ἀρρένων παίδων, ὧν ὁ πρεσβύτατος Μακαρεὺς

Κανάκης τῆς ἀδελφῆς ἐρασθεὶς ἐβιάσατο τὴν προειρημένην. Αἴολος δὲ περὶ τούτων μαθὼν τῇ θυγατρὶ ξίφος ἔπεμψεν· ἣ δὲ ὡς νόμον δεξαμένη τὸν σίδηρον αὑτὴν ἀνεῖλε. Μακαρεὺς δὲ τὸν γεννήσαντα προεξιλεωσάμενος ἔδραμεν εἰς τὸν θάλαμον· εὑρὼν δὲ τὴν ἀγαπωμένην αἱμορραγοῦσαν τῷ αὐτῷ ξίφει τὸν βίον περιέγραψε.

36 *Κλείταρχος ἐν ε΄ περὶ Ἀλεξάνδρου.*

Θε..βυβλι.. οὗπερ κάλλει τὴν ἀνθρωπίνην διενεγκόντος φύσιν τὴν ἰδίαν ἐρασθῆναι θυγατέρα Μύρραν ὀνόματι ....

37 *Ἀριστοκλέους ἐν β΄ παραδόξων* (Plut. l. l. 312 e).

[*Ἀριστώνυμος*] *Ἐφέσιος τῷ γένει νεανίας τῶν ἐπισήμων, υἱὸς Δημοστράτου, ταῖς δ' ἀληθείαις Ἄρεως· οὗτος τὸ θῆλυ μισῶν γένος νυκτὸς βαθείας εἰς τὰς πατρῴας ἔτρεχεν ἀγέλας καὶ ὄνῳ συνεγένετο θηλείᾳ. ἣ δὲ ἔγκυος γενομένη ἔτεκε κόρην εὐειδεστάτην Ὀνοσκελίδα τοὔνομα, τὴν προσηγορίαν λαβοῦσαν ἀπὸ τοῦ συμπτώματος.*

38 *Ζωπύρου ἐν γ΄ Θησηίδος* (Plut. l. l. 314 b).

Θησεὺς Αἰγέως καὶ Αἴθρας παῖς, ταῖς δ' ἀληθείαις Ποσειδῶνος, ἔχων υἱὸν ἐξ Ἱππολύτης Ἀμάζονος Ἱππόλυτον, ἐπέγημεν αὐτῷ μητρυιὰν Φαίδραν τὴν Μίνωος θυγατέρα καὶ Πασιφάης. αὕτη τοῦ προγόνου εἰς ἐπιθυμίαν ἐμπεσοῦσα τὴν τροφὸν αὐτῷ περὶ συνόδων ἀπέστειλεν· ὃ δ' ὡς κατέλιπε τὰς Ἀθήνας κυνηγίαις προσευκαίρει· τῆς δὲ προαιρέσεως ἡ ἀσελγὴς ἀποτυχοῦσα ψευδεῖς κατὰ τοῦ σώφρονος ἐπιστολὰς ἐχάραξε, καὶ διὰ τὴν ὑπερβολὴν τῶν ἐρώτων βρόχῳ τὸν βίον περιέγραψε. Θησεὺς δὲ ἐκ Θη-

βῶν ὑποστρέψας καὶ τὰς διαβολὰς ἀναγνοὺς ἐκ τῶν τριῶν εὐχῶν ἃς εἶχε παρὰ Ποσειδῶνος μίαν εἰς τὸν υἱὸν ἐδαπάνησεν· ἐαριζομένου δὲ τοῦ Ἱππολύτου παρὰ τὸν αἰγιαλὸν τῆς θαλάσσης ταῦρος ἐπιφανεὶς ἐπτοίησε τοὺς ἵππους, οἵ τινες ἀνατρέψαντες τὸ ἅρμα καὶ σύροντες τὸν δεσπότην ἀπέκτειναν.

39 *Πλάτωνος ἐκ τοῦ Φαίδρου* (233).

Καὶ μὲν δὴ βελτίονί σοι προσήκει γίγνεσθαι ἐμοὶ πειθομένῳ ἢ ἐραστῇ. ἐκεῖνοι μὲν γὰρ καὶ παρὰ τὸ βέλτιστον τά τε λεγόμενα καὶ τὰ πραττόμενα ἐπαινοῦσι, τὰ μὲν δεδιότες μὴ ἀπέχθωνται, τὰ δὲ καὶ αὐτοὶ χεῖρον διὰ τὴν ἐπιθυμίαν γιγνώσκοντες. τοιαῦτα γὰρ ὁ ἔρως ἐπιδείκνυται· δυστυχοῦντας μὲν ἃ μὴ λύπην τοῖς ἄλλοις παρέχει ἀνιαρὰ ποιεῖ νομίζειν, εὐτυχοῦντας δὲ καὶ τὰ μὴ ἡδονῆς ἄξια παρ' ἐκείνων ἐπαίνων ἀναγκάζει τυγχάνειν. ὥστε πολὺ μᾶλλον ἐλεεῖν τοὺς ἐρωμένους ἢ ζηλοῦν αὐτοὺς προσήκει.

40 *Ἐν ταὐτῷ* (237 sqq.).

Ἄγετε δή, ὦ Μοῦσαι, εἴτε δι' ᾠδῆς εἶδος λίγειαι εἴτε διὰ γένος μουσικὸν τὸ λιγὺ ὂν ταύτην ἔσχετ' ἐπωνυμίαν, ξύμμοι λάβεσθε τοῦ μύθου, ὅν με ἀναγκάζει ὁ βέλτιστος οὑτοσὶ λέγειν.

41 *Ὅτι μὲν οὖν δὴ ἐπιθυμία τις ὁ ἔρως ἅπαντι δῆλον· ὅτι δ' αὖ καὶ μὴ ἐρῶντες ἐπιθυμοῦσι τῶν καλῶν ἴσμεν. τῷ δὴ τὸν ἐρῶντά τε καὶ μὴ κρινοῦμεν; δεῖ αὖ νοῆσαι ὅτι ἡμῶν ἐν ἑκάστῳ δύο τινὲ ἐστὸν ἰδέα ἄρχοντε καὶ ἄγοντε, οἷν ἑπόμεθα ᾗ ἂν ἄγητον· ἣ μὲν ἔμφυτος οὖσα ἐπιθυμία ἡδονῶν, ἄλλη δὲ ἐπίκτητος δόξα ἐφιεμένη τοῦ ἀρίστου. τούτω δὲ ἐν ἡμῖν τοτὲ μὲν ὁμονοεῖτον, ἔστι δὲ ὅτε στασιάζετον, καὶ ποτὲ μὲν ἡ ἑτέρα, ἄλλοτε δὲ ἡ ἑτέρα κρατεῖ. δόξης μὲν*

οὖν ἐπὶ τὸ ἄριστον λόγῳ ἀγούσης καὶ κρατούσης, τῷ κράτει σωφροσύνη ὄνομα· ἐπιθυμίας δὲ ἀλόγως ἑλκούσης ἐπὶ ἡδονὰς καὶ ἀρξάσης ἐν ἡμῖν, τῇ ἀρχῇ ὕβρις ἐπωνομάσθη. ὕβρις δὲ δὴ πωλυώνυμον, πολυμελὲς γὰρ καὶ πολυειδές. καὶ τούτων τῶν ἰδέων ἐκπρεπὴς ἣ ἂν τύχῃ γενομένη τὴν αὐτῆς ἐπωνυμίαν ἐπονομαζόμενον τὸν ἔχοντα παρέχεται οὔτε τινὰ καλὴν οὔτε ἐπαξίαν κεκλῆσθαι. περὶ μὲν γὰρ ἐδωδὴν κρατοῦσα τοῦ λόγου τε τοῦ ἀρίστου καὶ τῶν ἄλλων ἐπιθυμιῶν ἐπιθυμία, γαστριμαργία τε καὶ τὸν ἔχοντα ταυτὸν τοῦτο κεκλημένον παρέξεται· περὶ δὲ αὖ μέθας τυραννεύσασα, τὸν κεκτημένον ταύτῃ ἄγουσα, δῆλον οὗ τεύξεται προσρήματος· καὶ τἄλλα δὴ τὰ τούτων ἀδελφὰ καὶ ἀδελφῶν ἐπιθυμιῶν ὀνόματα, τῆς ἀεὶ δυναστευούσης, ὃ προσήκει καλεῖσθαι, πρόδηλον. ἧς δ' ἕνεκα πάντα τὰ πρόσθεν εἴρηται σχεδὸν μὲν ἤδη φανερόν· λεχθὲν δὲ ἢ μὴ λεχθὲν πάντως σαφέστερον. ἡ γὰρ ἄνευ λόγου δόξης ἐπὶ τὸ ὀρθὸν ὁρμώσης κρατήσασα ἐπιθυμία, πρὸς ἡδονὴν ἀχθεῖσα κάλλους, καὶ ὑπὸ αὖ τῶν ἑαυτῆς συγγενῶν ἐπιθυμιῶν ἐπὶ σωμάτων κάλλος ἐρρωμένως ῥωσθεῖσα νικήσασα ἀγωγή, ἀπ' αὐτῆς τῆς ῥώμης ἐπωνυμίαν λαβοῦσα ἔρως ἐκλήθη.

42 Εἶεν, ὦ φέριστε. ὃ μὲν δὴ τυγχάνει ὂν περὶ οὗ βουλευτέον, εἴρηταί τε καὶ ὥρισται. βλέποντες δὲ δὴ πρὸς αὐτὸ τὰ λοιπὰ λέγωμεν, τίς ὠφέλεια ἢ βλάβη ἀπό τε ἐρῶντος καὶ μὴ τῷ χαριζομένῳ ἐξ εἰκότος συμβήσεται. τῷ μὲν δὴ ὑπὸ ἐπιθυμίας ἀρχομένῳ δουλεύοντί τε ἡδονῇ ἀνάγκη που τὸν ἐρώμενον ὡς ἥδιστον ἑαυτῷ παρασκευάζειν. νοσοῦντι δὲ πᾶν ἡδὺ [τὸ] μὴ ἀντιτεῖνον· κρεῖττον δὲ καὶ ἴσον ἐχθρόν.

οὔτε δὴ κρείττω οὔτε ἰσούμενον ἑκὼν ἐραστὴς παιδικὰ ἀνέξεται, ἥττω δὲ καὶ ὑποδεέστερον ἀεὶ ἀπεργάζεται. ἥττων δὲ ἀμαθὴς σοφοῦ, δειλὸς ἀνδρείου, ἀδύνατος εἰπεῖν ῥητορικοῦ, βραδὺς ἀγχίνου. τοσούτων κακῶν καὶ ἔτι πλειόνων κατὰ τὴν διάνοιαν ἐραστὴν ἐρωμένῳ ἀνάγκη γιγνομένων τε καὶ φύσει ἐνόντων, τῶν μὲν ἥδεσθαι, τὰ δὲ παρασκευάζειν ἢ στέρεσθαι τοῦ παραυτίκα ἡδέος. φθονερὸν δὴ ἀνάγκη εἶναι καὶ πολλῶν μὲν ἄλλων συνουσιῶν ἀπείργοντα καὶ ὠφελίμων, ὅθεν ἂν μάλιστ᾽ ἀνὴρ γίγνοιτο, μεγάλης αἴτιον εἶναι βλάβης, μεγίστης δὲ τῆς ὅθεν ἂν φρονιμώτατος εἴη. τοῦτο δὲ ἡ θεία φιλοσοφία τυγχάνει ὄν, ἧς ἐραστὴν παιδικὰ ἀνάγκη πόρρωθεν εἴργειν, περίφοβον ὄντα τοῦ καταφρονηθῆναι, τά τε ἄλλα μηχανᾶσθαι, ὅπως ἂν ᾖ πάντα ἀγνοῶν καὶ πάντα ἀποβλέπων εἰς τὸν ἐραστήν, οἷος ὢν τῷ μὲν ἥδιστος ἑαυτῷ δὲ βλαβερώτατος εἴη. τὰ μὲν οὖν κατὰ διάνοιαν ἐπίτροπός τε καὶ κοινωνὸς οὐδαμῇ λυσιτελὴς ἀνὴρ ἔχων ἔρωτα. τὴν δὲ τοῦ σώματος ἕξιν τε καὶ θεραπείαν οἵαν τε καὶ ὡς θεραπεύσει, οὗ ἂν γένηται κύριος, ὃς ἡδὺ πρὸ ἀγαθοῦ ἠνάγκασται διώκειν, δεῖ μετὰ ταῦτα ἰδεῖν. ὀφθήσεται δὲ μαλθακόν τινα καὶ οὐ στερεὸν διώκων οὐδ᾽ ἐν ἡλίῳ καθαρῷ τεθραμμένον, ἀλλ᾽ ὑπὸ συμμιγεῖ σκιᾷ, πόνων μὲν ἀνδρείων καὶ ἱδρώτων ξηρῶν ἄπειρον, ἔμπειρον δὲ ἁπαλῆς καὶ ἀνάνδρου διαίτης, ἀλλοτρίοις [τε] χρώμασι καὶ κόσμοις χήτει οἰκείων κοσμούμενον, ὅσα τε καὶ ἄλλα τούτοις ἕπεται πάντα ἐπιτηδεύοντα: ἃ δῆλα, καὶ οὐκ ἄξιον περαιτέρω προβαίνειν, ἀλλ᾽ ἓν κεφάλαιον ὁρισαμένους ἐπ᾽ ἄλλο ἰέναι· τὸ γὰρ τοιοῦτον σῶμα ἐν πολέμῳ τε καὶ ἄλλαις χρείαις ὅσαι μεγάλαι οἱ μὲν ἐχθροὶ θαρροῦσιν οἱ δὲ φίλοι καὶ αὐτοὶ οἱ ἐρα-

σται φοβοῦνται. τοῦτο μὲν οὖν, ὡς δῆλον, ἐατέον· τὸ δ' ἐφεξῆς ῥητέον, τίνα ἡμῖν ὠφέλειαν ἢ τίνα βλάβην περὶ τὴν κτῆσιν ἡ τοῦ ἐρῶντος ὁμιλία τε καὶ ἐπιτροπία παρέξεται. σαφὲς δὴ τοῦτό γε παντὶ μέν, μάλιστα δὲ τῷ ἐραστῇ, ὅτι τῶν φιλτάτων καὶ εὐνουστάτων καὶ θειοτάτων κτημάτων ὀρφανὸν πρὸ παντὸς εὔξαιτ' ἂν εἶναι τὸν ἐρώμενον. πατρὸς γὰρ καὶ μητρὸς καὶ συγγενῶν καὶ φίλων στέρεσθαι ἂν αὐτὸν δέξαιτο διακωλυτὰς καὶ ἐπιτιμητὰς ἡγούμενος τῆς ἡδίστης πρὸς αὐτὸν ὁμιλίας. ἀλλὰ μὴν οὐσίαν γ' ἔχοντα χρυσοῦ ἢ τινος ἄλλης κτήσεως, οὔτε εὐάλωτον ὁμοίως οὔτε ἁλόντα εὐμεταχείριστον ἡγήσεται. ἐξ ὧν πᾶσα ἀνάγκη ἐραστὴν παιδικοῖς φθονεῖν μὲν οὐσίαν κεκτημένοις, ἀπολλυμένης δὲ χαίρειν. ἔτι τοίνυν ἄγαμον ἄπαιδα ἄοικον ὅτι πλεῖστον χρόνον παιδικὰ ἐραστὴς εὔξαιτ' ἂν γενέσθαι, τὸ αὑτοῦ γλυκὺ ὡς πλεῖστον χρόνον καρποῦσθαι ἐπιθυμῶν. ἔστι μὲν δὴ καὶ ἄλλα κακά, ἀλλά τις δαίμων ἔμιξε τοῖς πλείστοις τῷ παραυτίκα ἡδονήν· οἷον κόλακι δεινῷ θηρίῳ καὶ βλάβῃ μεγάλῃ ὅμως ἐπέμιξεν ἡ φύσις ἡδονήν τινα οὐκ ἄμουσον· καί τις ἑταίραν ὡς βλαβερὸν ψέξειεν ἂν καὶ ἄλλα πολλὰ τῶν τοιουτοτρόπων θρεμμάτων τε καὶ ἐπιτηδευμάτων, οἷς τό γε καθ' ἡμέραν ἡδίστοις εἶναι ὑπάρχει· παιδικοῖς δὲ ἐραστὴς πρὸς τῷ βλαβερῷ καὶ εἰς τὸ συνημερεύειν πάντων ἀηδέστατον. ἥλικα γὰρ δὴ καὶ ὁ παλαιὸς λόγος τέρπειν τὸν ἥλικα. ἡ γὰρ οἶμαι χρόνου ἰσότης ἐπὶ ἴσας ἡδονὰς ἄγουσα δι' ὁμοιότητα φιλίαν παρέχεται· ἀλλ' ὅμως κόρον γε καὶ ἡ τούτων συνουσία ἔχει. καὶ μὴν τό γε ἀναγκαῖον αὖ βαρὺ παντὶ περὶ πᾶν λέγεται.

43 Οὐκ ἄρα ἔδει ποτὲ ἐρῶντι καὶ ὑπ' ἀνάγκης ἀνοήτῳ χαρίζεσθαι, ἀλλὰ πολὺ μᾶλλον μὴ ἐρῶντι καὶ νοῦν ἔχοντι· εἰ δὲ μή, ἀναγκαῖον εἴη ἐνδοῦναι αὐτὸν ἀπίστῳ δυσκόλῳ φθονερῷ ἀηδεῖ, βλαβερῷ μὲν πρὸς οὐσίαν βλαβερῷ δὲ πρὸς τὴν τοῦ σώματος ἕξιν, πολὺ δὲ βλαβερωτάτῳ πρὸς τὴν τῆς ψυχῆς παίδευσιν, ἧς οὔτε ἀνθρώποις οὔτε θεοῖς τῇ ἀληθείᾳ τιμιώτερον οὔτε ἐστὶν οὔτε ποτὲ ἔσται. ταῦτά τε οὖν χρή, ὦ παῖ, ξυννοεῖν καὶ εἰδέναι τὴν ἐραστοῦ φιλίαν, ὅτι οὐ μετ' εὐνοίας γίγνεται, ἀλλὰ σιτίου τρόπον χάριν πλησμονῆς.

ΥΠΕΡ ΚΑΛΛΟΥΣ. ΞΕ.

1 Εὐριπίδου Αἰόλῳ.

Ἴδοιμι δ' αὐτῶν ἔκγον' ἄρσεν' ἀρσένων,
πρῶτον μὲν εἶδος ἀξίους τυραννίδος·
πλείστη γὰρ ἀρετὴ τοῦθ' ὑπάρχον ἐν βίῳ,
τὴν ἀξίωσιν τῶν καλῶν τὸ σῶμ' ἔχειν.

2 Μενάνδρου.

Ὅταν φύσει τὸ κάλλος ἐπικοσμῇ τρόπον
χρηστόν, διπλασίως ὁ προσιὼν ἁλίσκεται.

3 Ὁμήρου (Il. β' 671).

Νιρεὺς αὖ Σύμηθεν ἄγεν τρεῖς νῆας ἐίσας·
Νιρεὺς Ἀγλαΐης υἱὸς Χαροποῖο τ' ἄνακτος,
Νιρεύς, ὃς κάλλιστος ἀνὴρ ὑπὸ Ἴλιον ἦλθε.

4 Ἐκ τῶν Βίωνος βουκολικῶν.

Μορφὰ θηλυτέρῃσι πέλει καλόν, ἀνέρι δ' ἀλκά.

5 Φιλήμονος Πυρφόρου.

Οὐκ ἔστιν οὔτε ζωγράφος μὰ τοὺς θεοὺς

οὔτ' ἀνδριαντοποιός, ὅστις ἂν πλάσαι
κάλλος τοιοῦτον οἷον ἀλήθει' ἔχει.
οὔτ' ἀνδριάντος γὰρ καλῶς πεπλασμένου . . .
ἂν μὴ τὸν αἰσθησόμενον ἡ τέχνη λάβῃ.

6 Ὁμήρου (Od. ρ' 36).
Ἤιεν ἐκ θαλάμοιο περίφρων Πηνελόπεια
Ἀρτέμιδι ἰκέλη ἠδὲ χρυσῇ Ἀφροδίτῃ.

7 Μηνοφίλου Δαμασκηνοῦ Πλοκαμίδων.
Εὐρώπην Λιβύην τε καὶ Ἀσίδα πᾶσαν ἀμείψας
θαύμασα μυρία καλὰ πολυπλανίης ὑπὸ λυγρῆς,
ἀλλ' οὔπω τοιοῦτον ἴδον σέλας, οὐδ' ἐν ὀλύμπῳ
αὐτοὺς ἀθανάτους περ ὀίομαι ἶσον ἰδέσθαι,
οἷον ἄελπτον ἄπιστον ἐμὸν νόον ἥρπασε φάσμα,
καρτερόν, οὔ τι φατειόν· ὑπ' ἀμφασίῃ δ' ἀλεγεινῇ
θυμὸς ἄδην πεπότητο, λύθεν δέ μοι ἅψεα πάντα
ἐκ κεφαλῆς εἰς ἴχνος, ἀπώλετο δ' Ἑλλὰς ἅπασα
ἐκ στηθέων, καὶ πάντα χαμαὶ πέσεν, ὅσσα περ ἔτλην
ὑγρῇ τε τραφερῇ τε κυλινδόμενος περὶ νόστον.
τόσσον γὰρ περὶ θυμὸν ἀπείριτον ἵκετο θάμβος . .
μέλψαι δὲ μνήσειας ἀειθαλέας πλοκαμῖδας,
οἷαις κυδιόωσαν ἀπ' ὀλβίστων σε λοετρῶν
φαιδρὴν εἶδον ἅπασαν ἐειδομένην Χαρίτεσσιν
ἐρχομέναις πρὸς ὄλυμπον Ἀκιδαλίης ἀπὸ πηγῆς.

8 Φαβωρίνου.
Ἱκανὸν μὲν οὖν ἴσως καὶ τὸ τῆς ὄψεως, ἄν γε ὁ καλὸς καὶ αἱμύλος ᾖ καὶ λεκτικός. λέγε ὦ νεανίσκε· λέγε Ἀντίλοχε· γλυκερώτερον Νέστορος ἐρεῖς· λέγε Τηλέμαχε· σφοδρότερον Ὀδυσσέως ἐρεῖς· λέγε Ἀλκιβιάδη· κἂν μεθύῃς, ἀκουσόμεθα τοῦ μεθύοντος ἡδέως. τοιοῦτόν ἐστι τὸ καλὸν εἶναι· εὐφραίνει μὲν βλεπόμενος, εὐφραίνει δ' ἀκουόμενος. εἰ δέ τῳ κατὰ

Πλάτωνα τὸ θάρρος ἦν, εἶπον ἂν ὅτι καὶ πάσας τὰς αἰσθήσεις ὁ καλὸς εὐφραίνει, καὶ οὐκ ἂν ἔδεισα τὴν εὐωχίαν τὴν τῶν καλῶν. τί γὰρ ἄλλο ποιοῦσιν οἱ τῷ στόματι ψαύοντες; συνάπτουσι τὰς ψυχάς· εἰ γὰρ θέμις ἦν τὸ σῶμα ὑπερβῆναι! νῦν δὲ ἐοίκασιν περὶ τὸ στόμα λιπαρεῖν ὡς περὶ θύρας.

9 *Ἐκ τοῦ Μελαγκόμα* (Dio Chrys. XXIX p. 293).

Ἐγὼ οὖν πρῶτον αὐτὸν εὐδαιμονίζω τοῦ κάλλους, ὃ δὴ τῶν ἀνθρωπίνων ἐστὶν ἀγαθῶν ἀριδηλότατον μὲν καὶ ἥδιστον θεοῖς, ἥδιστον δὲ ἀνθρώποις, ἀλυπότατον δὲ τῷ ἔχοντι, καὶ ἐπιγνωσθῆναι ῥᾷστον. τὰ μὲν γὰρ ἄλλα ἀγαθὰ κἂν λάθοι προσόντα, καὶ ἀνδρία καὶ φρόνησις, εἰ μὴ τύχοι ἔργου τινὸς ἀποδεικνύντος· τὸ δὲ κάλλος οὐχ οἷόν τε λαθεῖν, ἅμα γὰρ τῷ ἔχοντι φαίνεται· εἴποι δ' ἄν τις ὅτι καὶ πρότερον, οὕτως ὀξεῖαν αἴσθησιν ἑαυτοῦ παρέχει. ἔτι δὲ τοῖς μὲν ἀγαθοῖς οἱ πλεῖστοι φθονοῦσι καὶ δυσμενεῖς γίγνονται· τὸ δὲ κάλλος τοὺς αἰσθανομένους ἑαυτοῦ φίλους ποιεῖται καὶ οὐδένα ἐχθρὸν ἐᾷ γίγνεσθαι.

10 *Ἀγησιλάου.*

Ἀγησίλαος πυθομένου τινὸς διὰ τί κομῶσιν [οἱ Λάκωνες], εἶπεν ὅτι τῶν κόσμων ἀδαπανώτατός ἐστι.

11 *Ἀριστοτέλους* (Polyb. Exc. Maii 438).

Ἀριστοτέλης ἔφη τὸ κάλλος πάσης ἐπιστολῆς συστατικώτερον εἶναι.

12 *Πλουτάρχου ὑπὲρ κάλλους.*

Τί γάρ; οὐ σύνθετος φύσις ἀνθρώπων ἐκ σώματος καὶ ψυχῆς; ἢ θάτερον ἀρκοῦν ἡμῖν; καὶ πῶς οἷόν τε; τὸ μὲν γὰρ οὐκ ἂν εἴη μὴ χρώμενον ψυχῇ,

ψυχὴ δ' οὐκ ἂν εἴη μὴ ἔχουσα τὸ συνερεῖδον. τί οὖν; ὥσπερ ἐξ ἴσου κοσμεῖται ἑκάτερα τοῖς συγγενέσιν, ἡ μὲν δικαιοσύνῃ καὶ σωφροσύνῃ καὶ φρονήσει, τὸ δὲ ἰσχύι καὶ κάλλει καὶ ὑγείᾳ· καὶ πῶς οὐ θαυμαστὸν λέγειν τὰ τῆς ψυχῆς καλὰ τὰ τοῦ σώματος ὑπερορῶντα;

13 Ἐν ταυτῷ.

Ἡ γοῦν τοῦ σώματος εὐμορφία ψυχῆς ἐστὶν ἔργον σώματι χαριζομένης δόξαν εὐμορφίας· πεσέτω γοῦν θανάτῳ τὸ σῶμα, καὶ τῆς ψυχῆς μετῳκισμένης οὐ στάσις, οὐ χρῶμα, οὐκ ὀφθαλμὸς, οὐ φωνή, οὐδὲν ἔτι καταλείπεται τῶν ἐρασμίων, προδεδομένον ὑπὸ τῶν ἀρχαίων οἰκητόρων· ὥστε καὶ τὴν ψυχὴν συνυβρίζεις λανθάνων, ἧς ἐστὶν ἀνθρώπου κάλλος.

14 Ἀριστοτέλους.

Ἀριστοτέλης ἐρωτηθεὶς διὰ τί τῶν καλῶν ὁ ἔρως; "τυφλοῦ" εἶπεν "ἡ ἐρώτησις."

15 Διογένους.

Διογένης τὰς εὐμόρφους τῶν ἑταιρῶν ἐκάλει βασιλίσσας, πολλοὺς γὰρ πράττειν ἃ ἂν προστάττωσι.

16 Δίου Πυθαγορείου ἐκ τοῦ περὶ καλλονῆς.

Τίς ἀγωγὰ βιοτᾶς [ὄντως] ναμερτὲς εὐδαίμων ζωά; καὶ τίνας ποκὰ χρὴ κρίνεν εὐδαίμονας; ἢ νὴ Δία τὼς σκάνεος καλλονὰν ἔχοντας, δώρημα φύσιος; τούτως γὰρ ὡς ἔνι μασσότερον οἱ πλεῦνες ὡς θεὼς ἢ θεῶν ἱδρύματα ὑποτρέχοντι καὶ θεραπεύοντι θρησκεύοντες οὐ καλὰν θρησκείαν. καὶ ὄντως ἔμοιγε κατοπτίλλεται ἔχεν τι σεμνὸν καὶ θαυμασμῶ ἄξιον

τὼς μὲν γὰρ ἀτέρως τῶν ἀνθρώπων χάριν ἀπαιτεῦντι οἱ εὖ ἔρξαντες· τοῖς δ' εὐμόρφοις τοὐναντίον οἱ εὖ ἔρξαντες χάριν ἔχοντι, ὅτι καὶ ὑπέμειναν εὖ παθὲν παρ' αὐτῶν. τούτως ὦν εὐδαίμονες οἶδα ὅτι ἔμμεν δοκεῦντι τοῖς τὰν ὥραν αὐτῶν βολλομένοις ὀπωρίξασθαι· ποθ' ὧς ὑπὸ νομοθέτα τοιόσδε ἀπαντασεῖται λόγος οὐκ ἀσυφάλως μυθεύμενος τάδε· "ἐγών, ὦ κράτιστοι ἀνδρῶν, ποτιβλέπων ἅπαντα τὰ νέα φυλακᾶς τε καὶ ταμελείας δεόμενα, καθάπερ τὰ ζωύφια περὶ τὸν πρᾶτον καιρὸν τᾶς αὐξήσιος, τῷ ἀκροσφαλέως ἔχεν ποτὶ σωτηρίαν, ὑπέλαβον μὴ παρέργως δεῖν αὐτῶν με φυλάσσεν τὰν ἀσθένειαν· ὑμεῖς δέ γ' οἱ ὀρίγνεσθε σωματικᾶς ἁδονᾶς, τέλος ποιεύμενοι καθάπερ κνώδαλα τὸν κόρον τῶ πλατιασμῶ, οὐχ ὅτι χάριτος ἢ τιμᾶς ἀλλὰ καὶ μέμψιος ποτὶ κολάσει δικαίως ἐστὲ ἄξιοι τυγχάνεν, διὰ τὰς αὐταυτῶν ἀκολασίας ἐμβαλλόμενοι ῥύπον ἐν ζωὰν ἐλευθέρων παίδων."

17 Ἐν ταυτῷ.

Ἁ δέ γα εὐμορφία τοῖς ποτοκέλλουσιν ἁδονὰς παρέχει ποθερπύζοισα, καθάπερ ἄγαλμα ἢ γραφὰ ἢ ἅτερον χειρόκματον ἐπιτάδευμα. διὸ κἂν θέλοιμι ἔγωγα ἅτερον ἔχεν τὸ κάλλος ἢ αὐτὸς εἶμεν εὔμορφος· ὥσπερ καὶ οἶνον πιὲν ἁδὺν καὶ πολύωρον ἢ αὐτὸς εἶμεν βουνός, καὶ χιλὸν ποτιφέρεσθαι ἁδὺν καὶ ἀμπέχεσθαι ἀμπεχόναν καλὰν ἢ εἶμεν [αὐτὸς] χιλὸς ἢ ἀμπεχόνα. ἀλλ' ὑποδραμών τις σχεδὸν φάσει "ἀλλ' ἐγὼ χαίρω ἐπὶ ταμαυτῶ εὐμορφίᾳ τῷ καὶ ἀτρεκῶς ἀγάλλεσθαι." ποθ' ὃν ὑποβλήδαν φατίξω πάλιν "ἀγάλλευ μειράκιον· εὐδαίμονα μὲν γὰρ οὐκ ἔχω ὅπως τυ φατίξω ναμαρτέως μυθαρευόμενος."

18 *Πλάτωνος πολιτείας γ'* (402).

Οὐκ οὖν, ἦν δ' ἐγώ, ὅτου ἂν ξυμπίπτῃ ἔν τε τῇ ψυχῇ καλὰ ἤθη ἐνόντα, καὶ ἐν τῷ εἴδει ὁμολογοῦντα ἐκείνοις καὶ ξυμφωνοῦντα τοῦ αὐτοῦ μετέχοντα τύπου, τοῦτ' ἂν εἴη κάλλιστον θέαμα τῷ δυναμένῳ θεᾶσθαι; Πάνυ γε. Καὶ μὴν τό γε κάλλιστον ἐρασμιώτατον. Πῶς δ' οὔ; Τῶν δὴ ὅτι μάλιστα τοιούτων ἀνθρώπων ὅ γε μουσικὸς ἐρῴη ἄν· εἰ δὲ ἀξύμφωνος εἴη, οὐκ ἂν ἐρῴη. Οὐκ ἂν εἴγε τι, ἔφη, κατὰ τὴν ψυχὴν ἐλλίποι. εἰ μέντοι κατὰ τὸ σῶμα, ὑπομείνειεν ἂν ὥστε θέλειν ἀσπάζεσθαι. Μανθάνω, ἦν δ' ἐγώ, ὅτι ἔστι σοι ἢ γέγονε παιδικὰ τοιαῦτα, καὶ συγχωρῶ· ἀλλὰ τόδε μοι εἰπέ· σωφροσύνῃ καὶ ἡδονῇ ὑπερβαλλούσῃ ἔστι τις κοινωνία; Καὶ πῶς; ἔφη· εἴγε ἔκφρονα ποιεῖ οὐχ ἧττον ἢ λύπη. Ἀλλὰ τῇ ἄλλῃ ἀρετῇ; Οὐδαμῶς. Τί δέ; ὕβρει τε καὶ ἀκολασίᾳ; Πάντων μάλιστα. Μείζω δέ τινα καὶ ὀξυτέραν ἔχεις εἰπεῖν ἡδονὴν τῆς περὶ τὰ ἀφροδίσια; Οὐκ ἔχω, ἦ δ' ὅς, οὐδέ γε μανικωτέραν. Ὁ δὲ ὀρθῶς ἔρως πέφυκε κοσμίου τε καὶ καλοῦ σωφρόνως τε καὶ μουσικῶς ἐρᾶν. Καὶ μάλα, ἦ δ' ὅς. Οὐδὲν ἄρα προσοιστέον μανικὸν οὐδὲ ξυγγενὲς ἀκολασίας τῷ ὀρθῶς ἔρωτι. Οὐ προσοιστέον.

ΚΑΤΑ ΚΑΛΛΟΥΣ. Ξϛ.

1 *Εὐριπίδου Οἰδίποδος.*

Νοῦν χρὴ θεᾶσθαι, νοῦν· τί τῆς εὐμορφίας
ὄφελος, ὅταν τις μὴ φρένας καλὰς ἔχῃ;

2 *Εὐριπίδου Χρυσίππῳ.*

Γνώμῃ σοφός μοι καὶ χέρ' ἀνδρείαν ἔχοι.
δύσμορφος εἴην μᾶλλον ἢ καλὸς κακός.

3 *Φαβωρίνου.*

Ἔτι καὶ νῦν Σωκράτης καλός· Ἀλκιβιάδην δὲ καὶ ζῶντα ἐπιλελοίπει τὸ κάλλος, καὶ πολλοὶ κατόπιν τῆς ὥρας ἀφιγμένοι, ἔνιοι δὲ καὶ τῶν τεθεαμένων αὐτὸν [καὶ νῦν ὁρώντων] ἐζήτουν τὸν Ἀλκιβιάδην.

4 *Πλουτάρχου.*

Ἀλλὰ μὴν ὥσπερ ἔφην οὐδενὸς τῶν ἄλλων κινδύνων γένεσίς ἐστιν, ἀλλὰ μόνου τοῦ σώματος. τὰ μὲν γὰρ τῆς ψυχῆς κάλλη καὶ σωτηρίας ἐλπίδες εἰσί, φρόνησις εὐσέβεια δικαιοπραγία· καὶ τὸ παιδείας εὐπρόσωπον κάλλος οἴκου καὶ πόλεως καὶ ἐθνῶν ἀθόρυβος εἰρήνη διατελεῖ γενομένη· ἡ δὲ γυναικῶν εὐμορφία ἀφορμὴ τοῖς πάθεσι καὶ ταῖς ἐπιθυμίαις.

5 *Βίωνος.*

Βίων πρὸς τοὺς λέγοντας ὅτι τυραννίδα ἔχει τὸ κάλλος, "φεῦ" ἔλεγε "τυραννίδος τριχὶ καταλυομένης."

6 *Φαβωρίνου.*

Ἡ φύσις ἢ ἑστῶσα σώζεται ἢ φερομένη, ἑστῶσα μὲν ἐξ ἀθανασίας, φερομένη δὲ ἐξ ἐπιγονῆς. πρὸς ταῦτα γελοῖος ἂν φανείη ὁ Ἀνακρέων καὶ μικρολόγος τῷ παιδὶ μεμφόμενος ὅτι τῆς κόμης ἀπεκείρατο, λέγων ταῦτα "ἀπέκειρας δ' ἁπαλῆς κόμης ἄμωμον ἄνθος." ἀλλ', ὦ Ἀνάκρεον, μικρὸν ἐπίμεινον καὶ ὄψει πάντα ἀποκεκαρμένα· ἀποκεκαρμένην μὲν τὴν τῶν ὀμμάτων αὐγήν, ἀποκεκαρμένην δὲ τὴν τοῦ μετώπου χάριν, ἀτεχνῶς κατὰ τὸν Ὅμηρον

Κάρψε μέν οἱ χρόα καλὸν ἐπὶ γναπτοῖσι μέλεσσι,
ξανθὰς δ' ἐκ κεφαλῆς ὄλεσε τρίχας· ἀμφὶ δὲ δέρμα
πάντεσσιν μελέεσσι παλαιοῦ θῆκε γέροντος.

ταῦτα δ' Ἀθηνᾶ μὲν διέθηκε τὸν Ὀδυσσέα, ὁ δὲ χρόνος πάντας τοὺς καλούς. εἶτα Ὀδυσσεὺς μὲν ἀναλήψεται καὶ σάρκας καὶ κόμην καὶ χρῶμα· σὺ δέ, ω καλὲ παίδων, ἐπειδὰν ἅπαξ ταῦτα ἀποβάλῃς, οὐκ ἔστι σοι πάλιν ἀνηβῆσαι.

7 *Πλουτάρχου ἐκ τοῦ περὶ ἔρωτος.*

Τοὺς καλοὺς ὁρᾶν μὲν ἐπιτερπέστατον, ἅψασθαι δὲ καὶ λαβεῖν οὐκ ἀκίνδυνον. μᾶλλον δέ, ὥς φησὶν ὁ Ξενοφῶν, τὸ μὲν πῦρ τοὺς ἁψαμένους καίει μόνον, οἱ δὲ καλοὶ τοὺς μακρὰν ἑστῶτας ὑφάπτουσιν· ἡ γὰρ ὄψις λαβὴ τοῦ πάθους ἐστί.

8 *Ξενοφῶντος ἐκ τῆς πρὸς Ἀγλαϊτάδαν ἐπιστολῆς.*

Τὸ χαυνοῦσθαι ἐπὶ τῆς ὥρας τῷ κάλλει οὐ μόνον Φυλλίδα τοῦ υἱέως σου φαῖμεν ἂν εἶναι ἁμάρτημα, ἀλλὰ καὶ σόν. δοκεῖς γάρ μοι οὔτε λακωνικὸν παθεῖν οὔθ', ὅπερ χρὴ ἐννοεῖν τὸν σώφρονα, ἀληθεῖ καὶ δικαίῳ ἐπαίνῳ τὸν νοῦν προσέχειν. τίς γὰρ σαρκὸς οὐ πρὸς ἰσχὺν ἐρρωμένης, ἡδονῆς δὲ ὑπομνήσει ἐπαινουμένης, ἐν δικαίῳ γένοιτ' ἂν λόγος; σώματος γὰρ ἄνθρωποι ἠγάσθησαν διὰ τὸ ἐπὶ ψυχῇ εἶναι· τῶν δὲ μικρὸν ὕστερον τὸν ἔπαινον ἀποδρασομένων δι' ὥρας ἀπάνθησιν ἥκιστα χρὴ φροντίζειν τὸν τῷ ὄντι Λάκωνα. ποιητῶν τε ὅσοι ἀρετὴν ἐπῄνεσαν σώματος ἢ οὐδὲν ἢ ὀλίγιστον ἐπαίνου πέρι ὕμνησαν, ἔργα δὲ ψυχῆς μεγάλα τε καὶ σοφίας ἐγγὺς δι' ᾠδῆς αἰῶνι ἔδοσαν. σκόπει δέ, ὦ Ἀγλαϊτάδα, καὶ ἕπου θείῳ λόγῳ, ὃς πιστοῦται ὅτι ψυχὴν μετὰ θεοὺς χρὴ τιμᾶν, τρίτον δὲ ὀλυμπίων τὸ σῶμα. ψυχῆς δὲ τιμὴ μάθησις καὶ νοῦς συντεταγμένος ἐπὶ φρόνησιν· ὡς οὐκ ἔστιν ὡς ἐπιπολὺ ἀνθρώποις ἄλλο συγγενὲς πρὸς

θεοὺς παίδευμα. καὶ τοίνυν τῶν μὲν ἀφρόνων τὸ σῶμα οὐδ' ἂν εὖ ἡρμοσμένον ἴδῃς φήσεις καλὸν εἶναι· ἀνδρία γὰρ κάλλους ἔλαχεν ἔπαινον ἐπὶ φρονήσει τέχνης. τῷ γὰρ ὄντι ἂν φαίην τὰ στερόμενα νοῦ ἔμφρονος αἰσχρὰ πάντα καὶ ἄδικα ἐν ἀνθρώποις ἔσεσθαι. γεγενῆσθαι οὖν ἐν Λάκωσι τότε σοι ἔσται, ἐπειδὰν νόμων λακωνικῶν ὑπηρέτην τὸν παῖδα ἀποδείξῃς. ἀὴρ δὲ οὔτε τις λάκων οὔτε ἀττικὸς ἐγένετο, ῥεῦμα δὲ ὑπὸ θεῶν ἐπὶ ζῴων γενέσει τῶν τε ἄλλων ὅσα ἡ γῆ ἀνίησι μετηγμένον.




Digitized by Google